بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सहीह बुख़ारी

मय तर्जुमा व तफ़्सीर

जिल्द : चार

मुरत्तिब

अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष़ सैयदुल फ़ुक़्हा हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)

उर्दू तर्जुमा व तशरीह

हज़रत मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)

हिन्दी तर्जुमा

सलीम ख़िलजी

प्रकाशक : शो'बा नश्रो इशाअ़त

जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

नाम किताब : सहीह बुख़ारी (हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीर)
मुरत्तिब (अरबी) : अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)
उर्दू तर्जुमा व शरह : अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)
हिन्दी तर्जुमा व नज़रे-ष़ानी : सलीम ख़िलजी
तस्हीह (Proof Checking) : जमशेद आलम सलफ़ी

कम्प्यूटराइज़ेशन, डिज़ाइनिंग एवं लेज़र टाइपसेटिंग : ख़लीज मीडिया, जोधपुर (राज.)
khaleejmedia78@yahoo.in # 91-98293-46786
हिन्दी टाइपिंग : मुहम्मद अकबर
ले-आउट व कवर डिज़ाइन : मुहम्मद निसार खिलजी, बिलाल ख़िलजी
मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव : फ़ैसल मोदी

ता'दाद पेज (जिल्द-4) : 732 पेज
प्रकाशन (प्रथम संस्करण) : ज़ीक़अद: 1432 हिजरी (अक्टूबर 2011 ईस्वी)
ता'दाद (प्रथम संस्करण) : 2400
क़ीमत (जिल्द-4) : 500/-
प्रिण्टिंग : अनमोल प्रिण्ट्स, जोधपुर (0291-2742426)
प्रकाशक : जमीयत अहले हदीष़ जोधपुर (राज.)

मिलने के पते

मुहम्मदी एण्टरप्राइजेज़
तेलियों की मस्जिद के पीछे, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-1
(फ़ोन): 99296-77000, 92521-83249,
93523-63678, 90241-30861

अल किताब इण्टरनेशल
जामिया नगर, नई दिल्ली-25
(फ़ोन): 011-6986973
93125-08762

मज़मून	सफ़ा नं.
मुश्तरक चीज़ों की इन्साफ़ के साथ......	19
तक़्सीम में क़ुर्आ डाल कर......	20
तयम्मुम का दूसरे वारिसों का......	22
ज़मीन मकान वग़ैरह में शिरकत का बयान	23
जब शरीक लोग घरों वग़ैरह को.......	23
सोने, चाँदी और उन तमाम चीज़ों में......	24
मुसलमान का मुश्रिकीन और ज़िम्मियों के साथ.....	24
बकरियों का इन्साफ़ के साथ तक़्सीम करना	25
अनाज वग़ैरह में शिरकत का बयान	25
ग़ुलाम-लौण्डी में शिरकत का बयान	27
क़ुर्बानी के जानवरों और ऊँटों में शिरकत	27
तक़्सीम में एक ऊँट को दस.....	29
किताबुर् रहन	
आदमी अपनी बस्ती में हो और गिरवी रखे....	30
ज़ेवर को गिरवी रखना	32
हथियार गिरवी रखना	32
गिरवी जानवर पर सवारी करना......	34
यहूद वग़ैरह के पास कोई चीज़ गिरवी रखना	35
राहिन और मुरतहिन में अगर......	35
किताबुल इत्क़	
ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब	37
क्या ग़ुलाम आज़ाद करना अफ़्ज़ल है?	38
सूरज ग्रहन और दूसरी निशानियों	39
अगर मुश्तरक ग़ुलाम या लौण्डी को......	39
अगर किसी शख़्स ने साझे के ग़ुलाम में	42
अगर भूल-चूक कर किसी की ज़बान से.....	43
एक शख़्स ने आज़ाद करने की निय्यत	44
उम्मे वलद का बयान	47
मुदब्बर की बैअ का बयान	48
अगर किसी मुसलमान का मुश्रिक भाई....	49
मुश्रिक ग़ुलाम को आज़ाद करने......	50
अगर अरबों पर जिहाद हो......	51
जो शख़्स अपनी लौण्डी को अदब......	56
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि ग़ुलाम तुम्हारे भाई है	56
जब ग़ुलाम अपने रब की इबादत.....	57
ग़ुलाम पर दस्तदराज़ी करना.....	59
जब किसी का ख़ादिम खाना लेकर आए	62
ग़ुलाम अपने आक़ा के माल का निगहबान......	63
अगर कोई ग़ुलाम-लौण्डी को मारे.......	64
किताबुल मुकातब	
जिसने अपने लौण्डी-ग़ुलाम को ज़िना की.....	66
मुकातब और उसकी किस्तों	66
मुकातब से कौनसी शर्तें......	67
अगर मुकातब दूसरों से......	70
अगर मुकातब अपने तईं बेच....	71
अगर मुकातब किसी शख़्स से कहे......	71
किताबुल हिबा.....	
थोड़ी चीज़ हिबा करना	74
जो शख़्स अपने दोस्तों को कोई चीज़.....	75
पानी (या दूध) माँगना	77
शिकार का तोहफ़ा क़ुबूल करना	78
हदिया का क़ुबूल करना	79
अपने किसी दोस्त को ख़ास उस दिन में तोहफ़ा...	82
जो तोहफ़ा वापस ना किया जाना चाहिये	85
जिन के नज़दीक ग़ायब चीज़ का हिबा करना...	85
हिबा का मुआवज़ा अदा करना	87
अपने लड़के को कुछ हिबा करना	88
हिबा के ऊपर गवाह करना	89

मज़मून	सफ़ा नं.
ख़ाविन्द का अपनी बीवी को......	90
अगर औरत अपने ख़ाविन्द के सिवा....	91
हदिया का अव्वलीन हक़दार कौन है?	92
जिसने किसी उ़ज़्र से हदिया क़ुबूल नहीं किया	93
अगर हिबा का वादा करके कोई मर जाए.....	94
ग़ुलाम-लौण्डी और सामान पर क्यों कर क़ब्ज़ा	95
अगर कोई हिबा करे और मौहूब लहू का	95
अगर कोई अपना क़र्ज़ किसी को हिबा कर दे	96
एक चीज़ कई आदमियों को हिबा करे....	98
जो चीज़ क़ब्ज़े में हो या न हो.....	98
जो शख़्स कई शख़्सों को हिबा करे	101
अगर किसी को कुछ हदिया दिया जाए.....	102
अगर कोई शख़्स ऊँट पर सवार हो...	103
ऐसे कपड़े का तोहफ़ा......	103
मुश्रिकीन का हदिया क़ुबूल करना	105
मुश्रिकों को हदिया देना	108
किसी के लिए हलाल नहीं	109
उ़मरा और रुक़्बा के बारे में रिवायात	111
जिसने किसी से घोड़ा आ़रियतन लिया	112
शबे उ़रूसी में दुल्हन के लिए कोई चीज़ आ़रियतन लेना	113
तोहफ़ा मनीहा की फ़ज़ीलत के बारे में	113
आ़म दस्तूर के मुताबिक़ किसी ने......	117
जब किसी शख़्स को कोई घोड़ा.....	18

किताबुश्शहादात

मज़मून	सफ़ा नं.
गवाहों का पेश करना	118
अगर एक शख़्स दूसरे के....	120
जो अपने तईं छुपाकर गवाह बना.....	122
जब एक या कई गवाह....	124
गवाह आ़दिल मुअ़तबर होने ज़रूरी हैं	125
किसी गवाह को आ़दिल षाबित करने......	126
नसब और रज़ाअ़त में......	127
ज़िना की तुहमत लगाने वाले.....	129
अगर ज़ुल्म की बात पर लोग....	132
झूठी गवाही देना बड़ा गुनाह है	134
अंधे आदमी की गवाही....	136
औरतों की गवाही का बयान	138
बाँदियों और ग़ुलामों की गवाही......	139
दूध की माँ की गवाही.....	140
औरतों का आपस में......	140
जब एक मर्द दूसरे....	149
किसी की तारीफ़ में मुबालग़ा करना....	149
बच्चों का बालिग़ होना...	150
मुद्दआ़ अलैह को क़सम दिलाने से पहले.....	151
दीवानी और फौजदारी.....	152
अगर किसी ने कोई दा'वा किया.....	154
अ़स्र की नमाज़ के बाद......	155
मुद्दआ़ अलैह पर जहाँ.....	156
जब चन्द आदमी हों और......	157
सूरह आले इ़म्रान की एक आयते शरीफ़ा की तश्रीह	158
क्योंकर क़सम ली जाए?	159
जिस मुद्दई ने	160
जिसने वादा पूरा करने का हुक्म दिया	161
मुश्रिकों की गवाही क़ुबूल न होगी	164
मुश्किलात के वक़्त क़ुर्आ अन्दाज़ी करना	166

10

किताबुस्सुलह

मज़मून	सफ़ा नं.
लोगों में सुलह कराने का ष़वाब	169
दो आदमियों में मेल मिलाप करने के लिए	172
हाकिम लोगों से कहे हमको ले चलो.....	172
सूरह निसा में एक इर्शादे इलाही	173
अगर ज़ुल्म की बात पर सुलह करें......	173
सुलहनामा में ये लिखवाना काफ़ी है......	175
मुश्रिकीन के साथ सुलह करना	178

मज़मून	सफ़ा नं.
दीयत पर सुलह करना	179
हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) के मुताल्लिक़....	180
क्या इमाम सुलह के लिए फ़रीक़ैन को इशारा कर सकता है?	182
लोगों में आपस में मेल मिलाप.....	183
अगर हाकिम सुलह करने के लिए......	183
मय्यित के क़र्ज़ ख़्वाहों और वारिषों......	185
कुछ नक़द दे कर क़र्ज़ के बदले.......	186
किताबुश्शुरूत	
इस्लाम में दाख़िल होते वक़्त....	187
पैवन्द लगाने के बाद	189
बैअ में शर्तें....	189
अगर बेचने वाले ने......	190
मामलात में शर्तें लगाने का बयान	192
निकाह के वक़्त मेहर की शर्तें	192
मुज़ारअत में शर्तें.....	193
जो शर्तें निकाह में जाइज़ नहीं हैं......	194
अगर मुकातब अपनी बैअ पर.......	195
तलाक़ की शर्तें	196
लोगों से ज़बानी शर्तें करना	198
दलाइल में शर्त लगाना	199
मुज़ारअत में मालिक ने काश्तकार.......	200
जिहाद में शर्तें लगाना......	201
क़र्ज़ में शर्तें लगाना	212
मुकातब का बयान और.....	213
इक़रार में शर्त लगाना या इस्तिषनाअ करना जाइज़ है	214
वक़्फ़ में शर्तें लगाने का बयान	215
किताबुल वसाया	
इस बारे में कि वसिय्यत ज़रूरी है	216
अपने वारिषों को छोड़ना......	219
तिहाई माल की वसिय्यत करने का बयान	220
वसिय्यत करने वाला अपने वसी से कहे.......	221

मज़मून	सफ़ा नं.
अगर मरीज़ अपने सर से कोई साफ़ इशारा करे......	222
वारिष के लिए वसिय्यत करना......	223
मौत के वक़्त सदक़ा करना	223
सूरह निसा में एक इर्शाद बारी	224
एक आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर	226
अगर किसी ने अपने अज़ीज़ों पर.....	228
क्या अज़ीज़ों में औरतें और बच्चे भी दाख़िल हैं	229
क्या वक़्फ़ करने वाला अपने वक़्फ़ से......	230
क्या वक़्फ़ करने वाला माल वक़्फ़ को अपने.....	231
अगर किसी ने यूँ कहा......	232
किसी ने कहा कि मेरी ज़मीन या मेरा बाग़......	233
किसी ने अपनी कोई चीज़ या लौण्डी.....	233
अगर सदक़े के लिए किसी को वकील करे......	234
आयते शरीफ़ा बाबत तक़सीमे विर्षा	236
अगर किसी को अचानक मौत आ जाए....	237
वक़्फ़ और सदक़े पर गवाह करना	238
सूरह निसा में एक इर्शादे बारी	239
तयम्मुम के मुताल्लिक़ एक हिदायते इलाही	240
वसी के लिए तयम्मुम के माल में	241
एक और हिदायते क़ुर्आनी	242
सफ़र और हज़र में तयम्मुम से काम लेना.....	245
अगर किसी ने एक ज़मीन वक़्फ़ की......	245
अगर कई आदमियों ने अपनी मुश्तरक ज़मीन.....	247
वक़्फ़ की सनद क्योंकर लिखी जाए	248
मालदार और मुहताज और मेहमान	248
मस्जिद के लिए ज़मीन का वक़्फ़ करना	249
जानवर और घोड़े और सामान.....	249
वक़्फ़ की जायदाद का इहतिमाम करना करने वाला	250
किसी ने कोई कुआँ वक़्फ़ किया......	251
अगर कोई वक़्फ़ करने वाला यूँ कहे.....	253
सूरह माइदा में एक इर्शादे बारी	253

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
मय्यित पर जो क़र्ज़ हो वो उसका......	254
किताबुल जिहाद	
जिहाद की फ़ज़ीलत और रसूले अकरम (ﷺ).......	256
सब लोगों में अफ़ज़ल वो शख़्स है.....	259
जिहाद और शहादत के लिए.....	261
मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह के दर्जात का बयान	262
अल्लाह के रास्ते में सुबह व शाम चलने की.....	264
बड़ी आँख वाली हूरों का बयान	265
शहादत की आरज़ू करना	266
अगर कोई शख़्स जिहाद में सवारी से गिरकर मर जाए.....	267
जिसको अल्लाह की राह में तकलीफ़ पहुँचे	268
जो अल्लाह के रास्ते में ज़ख़्मी हुआ.....	270
सूरह तौबा की एक आयते शरीफ़ा	270
जंग से पहले कोई नेक अमल करना	274
किसी को अचानक नामा'लूम तीर लगा......	274
जिस शख़्स ने इस इर्शाद से....	275
जिसके क़दम अल्लाह के रास्ते में	276
अल्लाह के रास्ते में जिन लोगों पर......	277
जंग और गर्दो-गुबार के बाद ग़ुस्ल करना	277
सूरह आले इम्रान की एक आयत की तफ़्सीर	278
शहीदों पर फ़रिश्तों का साया करना	279
शहीद का दोबारा दुनिया में वापस आने की आरज़ू करना	280
जन्नत का तलवारों की चमक के नीचे होना	280
जो जिहाद करने के लिए अल्लाह से औलाद माँगे.......	281
जंग के मौक़े पर बहादुरी और बुजदिली का बयान	282
बुजदिली से अल्लाह की पनाह माँगना	283
जो शख़्स अपनी लड़ाई के कारनामे बयान करे......	284
जिहाद के लिए निकल खड़े होना......	285
काफ़िर अगर कुफ़्र की हालत में	286
जिहाद को (नफ़्ली) रोज़ों पर मुक़द्दम रखना	288
अल्लाह की राह में मारे जाने के सिवा......	288
काफ़िरों से लड़ते वक़्त सब्र करना	292
मुसलमानों को काफ़िरों से लड़ने की........	292
ख़न्दक़ खोदने का बयान	293
जो शख़्स मा'क़ूल उज़्र की	295
जिहाद में रोज़े रखने की फ़ज़ीलत	295
अल्लाह की राह में खर्च करने की फ़ज़ीलत	296
जो शख़्स ग़ाज़ी का सामान तैयार करे....	297
जंग के मौक़े पर खुश्बू मलना	298
दुश्मनों की ख़बर लाने वाला दस्ता	299
क्या जासूसी के लिए.......	299
दो आदमियों का मिलकर सफ़र करना	299
क़यामत तक घोड़े की पेशानी	300
मुसलमानों का अमीर आदिल हो या ज़ालिम.....	301
जो शख़्स जिहाद की निय्यत से (घोड़े पाले).....	302
घोड़ों और गधों का नाम रखना	302
इस बयान में कि बाज़ घोड़े मनहूस होते हैं	305
घोड़े के रखने वाले......	306
जिहाद में दूसरे के जानवर को मारना	307
सख़्त सरकश जानवर और निगोड़े की सवारी करना	308
(ग़नीमत के माल से) घोड़े का हिस्सा.....	309
अगर कोई लड़ाई में.......	309
जानवर का रिकाब या ग़रज़ लगाना	310
घोड़े की नंगी पीठ पर सवार होना	310
सुस्त रफ़्तार घोड़े पर सवार होना	311
घुड़दौड़ का बयान	311
घुड़दौड़ के लिए घोड़ों को तैयार करना	312
तैयार किये हुए घोड़ों की दौड़ की हद......	312
नबी करीम (ﷺ) की ऊँटनी का बयान	313
गधे पर बैठकर जंग करना	315
नबी करीम (ﷺ) के सफ़ेद ख़च्चर का बयान	315
औरतों का जिहाद क्या है	316

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
दरिया में सवार होकर......	317
आदमी जिहाद में अपनी एक बीवी को......	318
औरतों का जंग करना.......	318
जिहाद में औरतों का.......	319
जिहाद में औरतें ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी......	320
ज़ख़्मियों और शहीदों को औरतें....	320
(मुजाहिदीन) के जिस्म से तीर का.......	320
अल्लाह के रास्ते में जिहाद में पहरा देना...	321
जिहाद में ख़िदमत करने की फ़ज़ीलत	322
उस शख़्स की फ़ज़ीलत जिसने सफ़र में अपने साथी......	324
अल्लाह के रास्ते में सरहद पर....	325
अगर किसी बच्चे को ख़िदमत के लिए........	325
जिहाद के लिए समन्दर में सफ़र करना	327
लड़ाई में कमज़ोर नातवाँ.......	328
क़तई तौरपर ये न कहा जाए.....	329
तीरन्दाज़ी की तर्ग़ीब दिलाने......	331
बर्छे से (मश्क़ करने के लिए) खेलना	332
ढाल का बयान......	333
एक और बयान ढाल के बारे में	335
तलवारों की हमाइल और तलवार का गले में लटकाना	336
तलवार की आराइश करना	336
जिसने सफ़र में दोपहर के आराम.......	336
ख़ूद पहनना	337
किसी की मौत पर उसके हथियार वग़ैरह.....	338
दोपहर के वक़्त दरख़्तों का.......	339
भालों (नेज़ों) का बयान	339
आँहज़रत (ﷺ) का लड़ाई में ज़िरह पहनना	341
सफ़र में और लड़ाई में चोगा पहनने का बयान	343
सफ़र में हरीर यानी......	343
छुरी का इस्तेमाल करना दुरुस्त है	344
नसारा से लड़ने की फ़ज़ीलत का बयान	345
यहूदियों से लड़ाई होने का बयान	346
तुर्कों से जंग का बयान	346
उन लोगों से लड़ाई का बयान जो......	348
हार जाने के बाद.....	349
मुश्रिकीन के लिए शिकस्त......	350
मुसलमान अहले किताब को दीन की बात बतलाए.....	352
मुश्रिकीन का दिल मिलाने के लिए......	352
यहूद और नसारा को क्योंकर दा'वत दी जाए......	353
नबी करीम (ﷺ) का ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम की दावत देना	354
लड़ाई का मक़ाम छुपाना.....	362
ज़ुहर की नमाज़ के बाद सफ़र करना	364
महीने के आख़िरी दिनों में सफ़र करना	364
रमज़ान के महीने में सफ़र करना	368
सफ़र शुरू करते वक़्त मुसाफ़िर को रुख़्सत करना	368
इमाम की इताअत करना	369
इमाम के साथ होकर लड़ना	370
बादशाहे इस्लामी की इताअत लोगों पर वाजिब है.....	374
नबी करीम (ﷺ) दिन होते ही.......	375
अगर कोई जिहाद में से लौटना.......	376
नई-नई शादी होने के	378
ख़ौफ़ और दहशत के वक़्त.....	378
ख़ौफ़ के मौक़े पर.......	368
किसी को उजरत देकर.....	379
जो शख़्स मज़दूरी के लिए जिहाद..	381
आँहज़रत (ﷺ) के झण्डे का बयान	382
एक इर्शादे नबवी (ﷺ)	383
सफ़रे-जिहाद में तौशा साथ रखना	385
तौशा अपने कंधों पर.......	388
औरत का अपने भाई के पीछे.......	388
जिहाद और हज्ज के सफ़र में	389
एक गधे पर दो आदमियों.......	389

मज़मून	सफ़ा नं.
जो रिकाब पकड़कर किसी को सवारी पर चढ़ा दे......	391
मुसहफ़ यानी लिखा हुआ क़ुर्आन शरीफ़ लेकर दुश्मन...	391
जंग के वक़्त नारा-ए-तक्बीर बुलन्द करना	392
बहुत चिल्ला कर तक्बीर कहना मना है	393
किसी नशेब की जगह में उतरते वक़्त......	394
जब बुलन्दी पर चढ़े......	394
मुसाफ़िर को उस इबादत का......	395
अकेले सफ़र करना	396
सफ़र में तेज़ चलना	397
अगर अल्लाह की राह में सवारी के लिए......	398
माँ-बाप की इजाज़त लेकर जिहाद में जाना	399
ऊँटों की गर्दन में घण्टी.......	399
एक शख़्स अपना नाम मुजाहिदीन.....	400
जासूसी का बयान	401
क़ैदियों को कपड़े पहनाना	403
उस शख़्स की फ़ज़ीलत.....	403
क़ैदियों को ज़ंजीरों में बाँधना	405
यहूद या नसारा मुसलमान हो जाएँ.....	405
अगर काफ़िरों पर रात को छापा मारें......	406
जंग में बच्चों का क़त्ल करना......	408
जंग में औरतों का क़त्ल करना.......	408
अल्लाह के अ़ज़ाब (आग) से किसी को अ़ज़ाब न करना	408
सूरह मुहम्मद की एक आयते शरीफ़ा	409
अगर कोई मुसलमान काफ़िर की क़ैद में हो......	410
अगर कोई मुश्रिक किसी मुसलमान को....	410
(हर्बी काफ़िरों के) घरों और बाग़ों.....	412
(हर्बी) मुश्रिक सो रहा हो तो......	413
दुश्मन से मुठभेड़ होने की आरज़ू न करना	415
लड़ाई मक्रो-फ़रेब का नाम है	416
जंग में झूठ बोलना.....	417
जंग में हर्बी काफ़िर को अचानक धोखे से......	418
अगर किसी से फ़साद या........	419
जंग में शेर पढ़ना......	419
जो घोड़े पर अच्छी तरह न जम......	421
बोरिया जलाकर ज़ख़्म की दवा करना......	421
जंग में झगड़ा और इख़्तिलाफ़.......	422
अगर रात के वक़्त दुश्मन......	425
दुश्मन को देखकर बुलन्द आवाज़ से.......	426
हमला करते वक़्त यूँ कहना अच्छा........	427
अगर काफ़िर लोग एक मुसलमान.......	428
क़ैदी को क़त्ल करना......	429
अपने तईं क़ैद कर देना......	429
मुसलमान क़ैदियों को आज़ाद करना	432
मुश्रिकीन से फ़िदया लेना	433
अगर हर्बी काफ़िर मुसलमानों के......	434
ज़िम्मी काफ़िरों को बचाने के लिए लड़ना.....	435
जो काफ़िर दूसरे मुल्कों से एलची.....	435
ज़िम्मियों की सिफ़ारिश.......	436
वुफ़ूद से मुलाक़ात के लिए	437
बच्चे पर इस्लाम किस तरह पेश किया जाए	438
रसूले करीम (ﷺ) का यहूद से यूँ फ़र्माना......	440
अगर कुछ लोग जो दारुल हरब में.......	440
ख़लीफ़-ए-इस्लाम की तरफ़ से मर्दुम शुमारी करना	442
अल्लाह तआ़ला कभी अपने दीन की मदद.....	444
जो शख़्स मैदाने जंग में......	445
मदद के लिए फ़ौज रवाना करना.....	445
जिसने दुश्मन पर फ़तह पाई.......	446
सफ़र में और जिहाद में माले ग़नीमत.......	446
किसी मुसलमान का माल........	447
फ़ारसी या और किसी भी अजमी ज़बान में बोलना	448
माले ग़नीमत में से तक़्सीम........	450
माले ग़नीमत के ऊँट........	452

मज़मून	सफ़ा नं.
फ़तह की ख़ुशख़बरी देना	453
ख़ुशख़बरी देने वाले को ईनाम देना	454
फ़तहे मक्का के बाद वहाँ से हिजरत....	454
ज़िम्मी या मुसलमान औरतों......	456
ग़ाज़ियों के इस्तिक़बाल को जाना	457
जिहाद से वापस होते हुए क्या करे	458
सफ़र से वापसी पर नफ़्ल नमाज़	460
मुसाफ़िर जब सफ़र से लौटकर......	461
किताब फ़र्ज़ुल्ख़ुम्स	
ख़ुम्स के फ़र्ज़ होने का बयान	462
माले ग़नीमत में से पाँचवा हिस्सा अदा करना	470
नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद अज़वाजे मुतह्हरात	471
रसूले करीम (ﷺ) की बीवियों के घरों का उनकी तरफ़....	472
नबी करीम (ﷺ) की ज़िरह.....	475
इस बात की दलील की ग़नीमत का पाँचवा हिस्सा.....	479
सूरह अन्फ़ाल में एक आयत ग़नीमत के मुता'ल्लिक़	481
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि तुम्हारे लिए ग़नीमत...	484
माले ग़नीमत उन लोगों को मिलेगा.....	488
अगर कोई ग़नीमत हासिल करने के लिए लड़े....	488
ख़लीफ़तुल-मुस्लिमीन के पास.........	489
नबी करीम (ﷺ) ने बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर की जायदाद	490
अल्लाह पाक ने मुजाहिदीने किराम को.......	490
अगर इमाम किसी शख़्स को......	494
इस बात की दलील क्या पाँचवा हिस्सा मुसलमानों की...	494
आँहज़रत (ﷺ) का एहसान....	501
इसकी दलील कि ख़ुम्स में......	501
मक़्तूल के जिस्म पर जो सामान हो.....	502
तालिफ़े क़ुलूब के लिए.....	505
अगर खाने की चीज़ें	513
किताबुल जिज़्या वल मुवादिअत	
जिज़्या का और काफ़िरों से.......	514
अगर बस्ती के हाकिम से सुलह हो जाए.....	519
आँहज़रत (ﷺ) ने जिन काफ़िरों को.......	519
आँहज़रत (ﷺ) का बहरीन से......	521
किसी ज़िम्मी काफ़िर को नाहक़ मार डालना.....	523
यहूदियों को अरब के मुल्क	524
अगर काफ़िर मुसलमान से दग़ा करें	526
वादा तोड़ने वाले के	527
मुसलमान औरतें अगर.......	528
मुसलमान सब बराबर हैं.......	529
अगर काफ़िर लड़ाई के वक़्त घबराकर......	529
मुश्रिकों से माल वग़ैरह पर सुलह करना......	538
नामा'लूम मुद्दत के लिए सुलह करना	539
मुश्रिकों की लाशों को.......	540
दग़ाबाज़ी करने वाले पर गुनाह........	541
किताब बदउल-ख़ल्क़	
सूरह रूम की आयत की तश्रीह	544
सात ज़मीनों का बयान	548
सितारों का बयान	550
एक आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर	551
सूरह आराफ़ की आयत की तफ़्सीर	551
फ़रिश्तों का बयान	556
उस हदीष़ के बयान में कि जब एक तुम्हारा.......	569
जन्नत का बयान	577
जन्नत के दरवाज़ों का बयान	585
दोज़ख़ का बयान	586
इब्लीस और उसकी फ़ौज का बयान	590
जिन्नों का बयान	604
सूरह जिन्न में जिन्नात का ज़िक्र	605

१२

१३

मज़मून	सफ़ा नं.
एक आयते कुर्आनी की तफ़्सीर	605
मुसलमानों का बेहतरीन माल बकरियाँ हैं	606
पाँच बहुत ही बुरे जानवर हैं जिनको हरम में भी मार....	611
उस हदीष़ का बयान मक्खी पानी.....	614
किताबुल अम्बिया	
हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और उनकी औलाद की पैदाइश के बयान में	617
आयत व इज़ क़ाल रब्बुक लिल्मलाइकति की तफ़्सीर	617
रूहों के जत्थे हैं.........	625
हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बयान में	626
सूरह नूह की आयत की तफ़्सीर	627
इलयास अलैहिस्सलाम पैग़म्बर का बयान	630
हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का बयान	631
हज़रत हूद का ज़िक्रे ख़ैर 13	634
याजूज माजूज का बयान	636
एक आयते शरीफ़ा अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को अपना ख़लील बनाया	640
सूरह साफ़्फ़ात के एक लफ़्ज़ की तश्रीह	647
हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मेहमानों का क़िस्सा	661
हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) का बयान	663
हज़रत इस्हाक़ बिन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का बयान	663
हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) का बयान	663
हज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) का बयान	664
सूरह हिज्र में आले लूत का ज़िक्र	665
क़ौमे ष़मूद और हज़रत स़ालेह (अलैहिस्सलाम) का बयान	666
हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) का बयान	668
हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का बयान	669
अल्लाह तआला का फ़र्मान, और अय्यूब को याद करो	674
हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का बयान	674
अल्लाह तआला ने फ़र्माया, और फ़िरऔन के खानदान के एक मोमिन...............	675
कुछ अल्फ़ाज़े-कुर्आनी की वज़ाहत	675
सूरह ताहा में ज़िक्रे हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम)	677
हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) से चालीस रातों का वादा	679
सूरह आराफ़ में तूफ़ान से मुराद.......	680
हज़रत ख़िज्र और हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के वाक़िआत................	681
हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की वफ़ात	690
अल्लाह तआला ने फ़र्माया, और ईमानवालों के लिए...	693
क़ारून का बयान	693
इस बयान में कि	694
हज़रत यूनुस (अलैहिस्सलाम) का बयान	694
अल्लाह पाक का ये फ़र्माना, इन यहूदियों से........	697
अल्लाह तआला का इर्शाद, और दी हमने दाऊद अलैहिस्सलाम को ज़बूर	697
हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का बयान	699
अल्लाह तआला का इर्शाद, और हमने दाऊद को सुलैमान..	702
हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम का बयान	705
और उनके सामने बस्तीवालों की मिष़ाल बयान करो	706
हज़रत ज़करिया (अलैहिस्सलाम) का बयान	706
हज़रत ईसा और हज़रत मरयम (अलै.) का बयान	708
सूरह आले इम्रान में एक आयते करीमा	709
जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम!	709
अल्लाह पाक का सूरह मरयम में फ़र्माना, ऐ अहले किताब..	711
सूरह मरयम में एक और ज़िक्रे ख़ैर	712
हज़रत ईसा बिन मरयम (अले.) का आसमान से उतरना	719
बनी इस्राईल के वाक़िआत का बयान 13	720
बनी इस्राईल के एक कोढ़ी.......	426
अस्हाबे कहफ़ के बयान में	729
अर्ज़े-मुतर्जिम	730

मज़मून	सफ़ा नं.
मुश्तरक चीज़ों की तक़्सीम से मुता'ल्लिक़ हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) की वज़ाहत	19
मुश्तरक ग़ुलाम के बारे में एक तशरीह	19
एक हदीष़ जो बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल है	21
बाज़ फ़ुक़हा-ए-कूफ़ा का एक क़यासे बातिल	21
ग़ैर मुस्लिमों की शिरकत में कारोबार करना जाइज़ है	24
एक हदीष़ पर तफ़्सीली तब्सरा	26
तशरीह बाबत रहन अश्या मुतफ़र्रक़ा	30
शैख़ निज़ामुद्दीन देहलवी का वाक़िआ	31
हदीष़ की एक क़ाबिले मुतालआ तशरीह	31
एक सरमायादार यहूदी का वाक़िआ	33
गिरवी रखी हुई चीज़ से नफ़ा उठाने के बारे में	34
अहमदाबाद भिवण्डी वग़ैरह के फ़सादात का ज़िक्र	37
ज़िक्रे ख़ैर इमाम ज़ैनुलआबेदीन (रह.)	38
मग़्रिबज़दा लोगों का एक ख़्याले-बातिल	39
मुआनिदीने हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) पर एक इशारा	42
उम्मे वलद पर एक तफ़्सीली बयान	
हज़रत अब्बास (रज़ि.) से मुता'ल्लिक़ एक इर्शादे नबवी	50
ख़िलाफ़े हदीष़ राएज़नी की मज़म्मत	51
वफ़्दे हवाज़िन का एक वाक़िआ	53
मुरव्वजा फैमिली प्लानिंग की मज़म्मत हदीष़ की रोशनी में	54
अल्फ़ाज़ लौण्डी-गुलाम, सय्यिद वग़ैरह की वज़ाहत	59
लफ़्ज़ रब के इस्तेमाल पर एक तशरीह	61
इमाम बुख़ारी (रह.) मुज्तहिदे-मुत्लक़ थे	63
चेहरे की शराफ़त पर एक वज़ाहती बयान	64
सिफ़ाते बारी और मस्लके अहले हदीष़ का बयान	65
कुछ हालात हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.)	68
लफ़्ज़ हिबा की वज़ाहत	73
गोह की हिल्लत पर फ़ाज़िलाना तब्सरा	79
अज़्वाजे मुतह्हरा से मुताल्लिक़ एक तफ़्सीली बयान	84
हालात हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा (रह.)	86
औलाद को कुछ हिबा करने के बारे में	88
हालात हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.)	97
नाम निहाद तबर्रुकात पर एक इशारा	99
हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की नज़रे बसीरत का बयान	103
बददीन लोग जो अपने अज़ीज़ हो उनके साथ एहसान	104
ग़ैर मुस्लिम के हदाया को क़ुबूल किया जा सकता है	106
अहले बिदअत की मज़म्मत का बयान	107
ग़ैर मुस्लिमों को तहाइफ़ दे सकते हैं	109
उम्रा व रुक़्बा की तशरीहात	111
कुछ मनाक़िबे मुहम्मदी का बयान	112
लफ़्ज़ मन्हा की तशरीह	114
बेकार ज़मीन को आबाद करने की तग़ीब	117
इस्लाम और सियासत पर एक क़ाबिले मुतालआ वज़ाहत	120
हादष़-ए-इफ़्क पर चन्द इशारे	121
हदीष़े इब्ने सय्याद यहूदी बच्चे के बारे में	122
तअदील और तज़किया के बारे में	127
मुद्दते रज़ाअत सिर्फ़ दो साल दूध पिलाना है	129
शहादते क़ाज़िफ़ के बारे में बाज़ुन्नास की तर्दीद	130
गुनाहों की तक़्सीम सग़ीरा और क़बीरा में	135
हज़रत इमाम शाफ़िई की वालदा मुहतरमा का एक ज़िक्रे ख़ैर	139
फ़ज़ाइल हज़रत आइशा (रज़ि.)	148
अदालत के लिए इस्लामी हिदायात	152
चन्द इस्लामी क़ुज़ात का ज़िक्रे ख़ैर	153

मज़मून	सफ़ा नं.
क़ाज़ी का ग़लत फ़ैसला इन्दल्लाह नाफ़िज़ नहीं	159
एक ग़लत ख़्याल की तर्दीद	161
हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ख़ुद मुज्तहिदे मुतलक़ हैं	162
महकमा अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर	166
पादरियों का एक लग्व ऐतराज़ और उसका जवाब	167
अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ का बयान	171
सुलह सफ़ाई के लिए झूठ बोलना जायज़ है	172
आयत फ़स्अलू अहलज़्ज़िक्र का मतलब?	174
बिदआते मुरव्वजा की पुरज़ोर तर्दीद	175
मुक़ल्लिदीने जामिदीन के लिए हज़रत शाह वलीउल्लाह की नसीहत	184
औरत से बैअत लेने का तरीक़ा......	188
हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इल्म के दरियाए-बेपाया थे	192
इस्लामी शरई स्टेट और इजराए-हुदूदुल्लाह	195
तलाक़ की शर्तें जो मना हैं	196
यहूद एक बेवफ़ा क़ौम	201
अस्मा-उल-हुस्ना पर एक इशारा	215
वक़्फ़ के मुताल्लिक़ कुछ तफ़्सीलात	215
हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) के बारे में	220
मर्ज़ुल मौत के इक़रार के बारे में	225
ज़िक्रे शहादत हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.)	236
हज्जाज क़ातिल की इबरतनाक मौत पर एक इशारा	237
औरतों की हैषियत पर एक अहम इल्मी मक़ाला	241
सात मुहलिक गुनाहों का बयान	243
इस्लाहाते-हदीष पर एक तफ़्सीली तब्सरा	244
हज़रत उमर (रज़ि.) का एक वक़्फ़नामा	247
हज़रत जाबिर (रज़ि.) का एक अदायगी क़र्ज़ा का वाक़िआ	255
इस्लामी जिहाद के हक़ाइक़ के बारे में	257
लफ़्ज़ जिहाद की तशरीह हाफ़िज़ इब्ने हजर के लफ़्ज़ों में	258
इस्लाम का अव्वलीन बहरी बेड़ा अहदे उष्मानी में	262
लफ़्ज़ सबील की वज़ाहत	262
बाज़ मुल्हिदीन का जवाब	266
फ़ज़ीलत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.)	267
सत्तर क़ारी सहाबा (रज़ि.) की शहादत का बयान	268
एक क़ाबिले सद्रे-शक शहीद का ज़िक्रे ख़ैर	271
दो सफ़ें जो इन्दल्लाह बहुत महबूब हैं	274
एक बेहद नफ़ीस व बलीग़ कलामे नबवी	280
ग़ज़्वाए-तबूक पर चन्द इशारात	285
ख़ुदसाख़्ता दुरूद व वज़ाइफ़ की तर्दीद	288
इक़्सामे शहादत का बयान	289
शहीद की वजहे-तस्मिया इमाम नववी के लफ़्ज़ों में	289
जिहाद फ़र्ज़े किफ़ाया है	290
जंगे ख़न्दक़ पर कुछ बयानात	293
दौरे हाज़िरा के आलाते-जंग पर एक इशारा	300
मुश्रिक मुसलमानों पर एक इशारा	304
नहूसत के मुता'ल्लिक़ एक तफ़्सीली बयान	305
क़ाबिले तवज्जह उलमा, इमाम व मशाइख़ अज़्ज़ाम	311
रेस की दौड़ में हिस्सा लेना जाइज़ नहीं है	312
मुसलमानों की अव्वलीन बहरी जंग का ज़िक्रे-ख़ैर	317
ज़िन्दा क़ौमों की मस्तूरात पर एक इशारा	319
नेक ज़ईफ़ लोगों से दुआ कराना सआदत है	329
औलादे इब्लीस पर एक तफ़्सीली तब्सरा	329
आयते शरीफ़ा अइद्दु लहुम मस्ततअतुम की तफ़्सीर	331
इस्लाम सिपाहियाना ज़िन्दगी का मुअल्लिम है	332
मसाजिद को बतौर मर्कज़े-मिल्लत क़रारा देना	333
दन्दाने मुबारक को सदमा पहुँचाने वाला मर्दूद	334
फ़ुनूने हर्ब में महारत पैदा करने की तर्ग़ीब	335
एक दस्तूरे जाहिलिय्यत की नफ़ी	338
तातारियों का क़ुबूले इस्लाम क्यों कर हुआ	346
तर्के क़ौम के बारे में बशारते नबवी	348

मज़मून	सफ़ा नं.
किसरा की तबाही का बयान	354
अहवाले इमाम मालिक (रह.)	365
दो मर्दूद डाकुओं का बयान	369
मज़म्मत तक़्लीदे जामिद	370
हक़ीक़ी इमाम के औसाफ़	371
लफ़्ज़े बैअ़त की तहक़ीक़	371
एक अ़ज़ीम इस्लामी तारीख़ी वाक़िआ	371
तक़्लीदे जामिद पर एक और तब्सरा	375
फ़ुतूहाते इस्लामी के लिए बशारात	384
मोअ़जज़ात का वजूद बरहक़ है	387
नारा-ए-रिसालत वग़ैरह की तर्दीद	393
ख़ुसूसियाते उम्मते मुहम्मदिया	396
हज़रत हातिब (रह.) का ख़त बनाम मुश्रिकीने मक्का	402
तर्ग़ीबे तब्लीग़ का बयान	404
अबू राफ़ेअ यहूदी के क़त्ल का वाक़िआ	413
कअ़ब बिन अशरफ़ यहूदी के क़त्ल का वाक़िआ	418
हदीषे मुआ़ज़ के फ़वाइद का बयान	422
हादषा जंगे उहुद का बयान	425
हज़रत ख़ुबैब (रज़ि.) का वाक़िआ-ए-शहादत	431
शीओं की एक ग़लत बात की तर्दीद	433
मुश्रिकीन से फ़िदया की उ़मूमियत	434
ज़िम्मियों के हुक़ूक़ का बयान	435
वाक़िआ क़िर्तास पर एक तफ़्सील	436
इब्ने सय्याद का ज़िक्र	440
मक्का शरीफ़ में जायदादे नबवी का बयान	441
ग़रीबों को बहरहाल मुक़द्दम रखना	442
मुजाहिदीन की फ़ेहरिस्त तैयार करना	443
एक मुजाहिद का दोज़ख़ी होना	444
फ़ारसी की एक वजहे तस्मीया	450
माले ग़नीमत की चोरी की सज़ा का बयान	452
हिजरत के मतालिब का बयान	455
बवक़्त ज़रूरते ख़ास औरत की जामा तलाशी	457
सहाबा (रज़ि.) के बारे में अहले सुन्नत का अ़क़ीदा	457
बिद्अ़त और अहले बिद्अ़त से सख़्त नफ़रत करना	462
एक अहमतरीन मुक़द्दमे का बयान	465
वराषते नबवी से मुताल्लिक़ एक मुफ़स्सल हदीष	469
हज़रत अ़ली (रज़ि.) के वसी होने की तर्दीद	473
क़र्नुश्शैतान की तफ़्सीर	475
मुहरे नबवी का बयान	476
हज़रत अ़ली (रज़ि.) के लिए एक फ़हमाइशे रिसालत	478
कुन्नियत अबुल क़ासिम के बारे में	482
राय और क़यास की मज़म्मत का बयान	483
किसरा व क़ैसर के बारे में पेशगोई	485
पादरियों का एक ख़्याले बातिल	487
मुजाहिदीन को जो बरकात हासिल हों उनका बयान	490
हज़रत ज़ैद बिन अव्वाम (रज़ि.) का तज़्करा	493
हिकमते जिहाद का तफ़्सीली बयान	520
सब चीज़ें हादिष और मख़्लूक़ हैं	547
अंबिया किराम का एक मुत्तफ़क़ा अ़क़ीदा	547
अल्लाह की रहमत उसके ग़ज़ब पर ग़ालिब है	547
अ़रबों की एक जहालत का बयान	550
मुन्किरीने हदीष को जवाबात	553
हवा भी अल्लाह की एक मख़्लूक़ है	556
फ़रिश्ते अजसामे लतीफ़ हैं	556
वाक़िआ-ए-मेअ़राज की कुछ तफ़्सीलात	560
क़िरआते सबआ पर एक इशारा	566
फ़रिश्तों का वजूद बरहक़ है	568
जहरी नमाज़ों में आमीन बिलजहर का बयान	569
तस्वीरसाजी पर एक हदीष	570
वाक़िआ-ए-ताइफ़ का बयान	573

मज़मून	सफ़ा नं.
शबे मे'राज में दीदारे इलाही का बयान	575
जन्नत अब मौजूद है मुअतज़िला की तर्दीद	577
जन्नती ने'मतों का वजूद बरहक़ है	580
मुन्किरीने हदीष़ की तर्दीद	588
दोज़ख़ में एक बेअमल वाइज़ का हाल	590
शैतान का वजूद बरहक़ है	591
जादू बरहक़ है	592
सुबह सवेरे खड़ा होना	593
वसाविसे शैतानी का बयान	595
मुख़्तलिफ़ हरकाते शैतान का बयान	599
फ़ज़ीलते कलिमा-ए-तौहीद	602
नेचरियों और दहरियों की तर्दीद	604
दो हदीष़ों में ततबीक़	611
ग़लत तर्जुमे का नमूना	614
किताबुल अंबिया का आग़ाज़	616
लफ़्ज़े अंबिया की तह़क़ीक़	617
चन्द अल्फ़ाज़े कुर्आनी की तश्रीह	618
ह़ज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) का हुलिया	620
आग निकलने की पेशगोई	622
दा'वते अंबिया का बयान	625
एक संगीन जुर्म का बयान	625
रूहें आलमे अज़ल में	626
क़ौम याजूज व माजूज के कुछ हालात	636
वफ़ाते नबवी के बाद कुछ मुर्तदों का बयान	641
बुज़ुर्गाने दीन के मुताल्लिक़ कुछ झूठे क़िस्से	641
मुन्किरीने हदीष़ के लिए एक ऐतराज़ का जवाब	644
ह़ज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का ख़तना करना	644
कज़्बाते इब्राहीमी की तश्रीह	646
गिरगिट नामी ज़हरीले जानवर का बयान	647
चश्म-ए-ज़मज़म के ज़ुहूर का बयान	649
ह़ज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) का कुछ ज़िक्रे ख़ैर	657
मुन्किरीने हदीष़ व तामीरे कअबा व बैतुल मक़दिस	658
दुरूद से क्या मुराद है	661
ह़ज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के एक सवाल की तश्रीह	662
ह़ज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) के एक क़ौल की तश्रीह	665
कुछ अल्फ़ाज़े कुर्आनी की तश्रीह	665
मुहद्दीष़ीने किराम की एक ख़ूबी का बयान	670
ह़ज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर कुछ तफ़्सीलात	675
फ़िरऔनियों पर अज़ाबात की तफ़्सील	681
ह़ज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) की तफ़्सीलात	682
ह़ज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और मलिकुल मौत का एक वाक़िआ	691
ख़्वातीन जिनको कामिल कहा गया है	693
ह़ज़रत युनुस (अलैहिस्सलाम) को ज़ुन्नून क्यों कहा गया	695
ह़ज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) का एक मोअजज़ा	698
ह़ज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) के नाम पर एक झूठा क़िस्सा	701
एक आयत की तफ़्सीर	702
ह़ज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के गाँव नासरह का बयान	708
ह़ालते शीरख़्वारी में बोलने वाले बच्चे	712
इन्जील में बशारते मुहम्मदी का बयान	716
कुछ मुर्तदीन का ज़िक्र	719
अक़ीदा नुज़ूले-ईसा (अलैहिस्सलाम) उम्मत का इज्तिमाई अक़ीदा है	720
आज के जुम्हूरी दौर पर एक इशारा	722
मुसलमानों के मौजूदा इन्तिशार पर एक आँसू	723
अज़ान की ख़ूबियाँ	723
मेहंदी के ख़िज़ाब का बयान	726
फ़ितरते इन्सानी पर एक इशारा	729

पेश लफ़्ज़

सहीह बुख़ारी का दीबाचा लिखने की सआदत एक ख़ज़ाना पाने से कम क्या हो सकती है? इसकी अहमियत वही जान सकते हैं जो इस अज़ीमुश्शान किताब के सहीह मक़ाम से आश्ना हैं। जमाअत ने मुझ नाचीज़ से इस बात का तक़ाज़ा किया कि **सहीह बुख़ारी हिन्दी तर्जुमा** चौथी जिल्द का पेश लफ़्ज़ मैं तहरीर करूं, इस काम के लिये ज़बान व क़लम ने कई मर्तबा साथ देने से इन्कार किया। आख़िर ये चन्द अल्फ़ाज़ आपकी ख़िदमत में पेश हैं।

ये बात हर आदमी को याद रखनी चाहिये कि क़ुर्आन व हदीष़ को समझने के लिये सरसरी मुतालआ काफ़ी नहीं है। जो लोग महज़ सरसरी मुतालआ करके इन पाकीज़ा उलूम के माहिर बनना चाहते हैं वो एक ख़तरनाक ग़लती में मुब्तला हैं। क़ुर्आन व हदीष़ को गहरी नज़र से बार-बार मुतालआ करने की ज़रूरत है। इसके बाद भी अगर कोई मसला समझ में न आए तो उलमा-ए-हक़ से रुजूअ करना चाहिये। ये कोशिश जद्दोजहद करना हर कलिमा-गो के लिये ज़रूरी है। दीन मा'लूम करने और अमल करने के लिये ही अल्लाह तआला ने हमें पैदा किया है। जो लोग इस रास्ते में कोशिश करेंगे इंशाअल्लाह वो कामयाब होंगे और हिदायत-याफ़्ता गिरोह में शामिल होंगे।

सहीह बुख़ारी के हिन्दी तर्जुमे की चौथी जिल्द अल्लाह के फ़ज़्लो-करम से मुकम्मल होकर आपके हाथों में है। किताब शाए होने के बाद आपके हिस्से का काम बाक़ी रह जाता है या'नी इसकी इशाअत व फ़रोख़्त में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना ताकि **सहीह बुख़ारी हिन्दी** की आख़री जिल्द शाए होने से पहले ही स्टॉक ख़त्म हो जाए और माँग बाक़ी रह जाए। लाखों की ता'दाद में राजस्थान में जमाअत के अफ़राद हैं और किताबें सिर्फ़ 2000 हैं। एक ज़िन्दा क़ौम और जमाअत के लिये चन्द दिनों की बात है। तहिय्या कर लीजिये कि जमाअत का हर घर सहीह बुख़ारी से ख़ाली न रहेगा। जैसे क़ुर्आन हर घर की ज़ीनत है, उसी तरह क़ुर्आन के बाद सबसे सहीह किताब बुख़ारी शरीफ़ भी हर घर की ज़रूरत है। शादी के मौक़े पर अपने हर नौनिहाल को सहीह बुख़ारी का नुस्ख़ा तोहफ़ा दें; अपने अज़ीज़ दोस्तों को तोहफ़तन किताब भिजवाई जाए; मसाजिद में दर्से बुख़ारी का मुसलसल इन्तज़ाम किया जाए।

मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि कामिल यक़ीन है कि इन तमाम उमूर में आपका तआवुन हस्बे-दस्तूर हासिल रहेगा। अल्लाह तआला हर मुसलमान मर्द व औरत को क़ुर्आन पाक और अहादीषे-सहीहा का मुतालआ करने और ग़ौरो-तदब्बुर करने के साथ उनको समझने और बाद अज़ां अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए, आमीन!! ख़ैर-अन्देश व तालिबे-दुआ,

डॉ. गुलाम रब्बानी

जनरल सेक्रेटरी, मारवाड़ मुस्लिम एज्यूकेशनल एण्ड वेलफेयर सोसायटी, जोधपुर

ता'षुरात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम.

सारी ता'रीफ़ें, बड़ाइयाँ, हम्दो-षना अल्लाह तबारक व तआला ही के लिये है जो हमारा ख़ालिक़, मालिक, रब और इलाह है। बेशुमार दरूदो-सलाम नाज़िल हो अल्लाह के तमाम नबियों और रसूलों पर, ख़ुसूसी तौर पर अल्लाह के आख़री रसूल, नबी-ए-रहमत हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर बेशुमार दरूदो-सलाम नाज़िल हों।

अल्लाह पाक की यह सुन्नत है कि अल्लाह उसको हिदायत देता है जिसमें हिदायत के लिये तड़प व प्यास होती है। जिसके अन्दर यह तड़प और प्यास न हो उसे अल्लाह तआला हर्गिज़ हिदायत नहीं देता। पूरी इन्सानी तारीख़ और नबियों की दा'वत इस पर गवाह है। क़ुर्आन मजीद की बेशुमार आयतें इस हक़ीक़त को बयान करती हैं। अल्लाह तआला ऐसा कभी नहीं करता कि मछली चाहने वाले को साँप दे दे और साँप पसन्द करने वाले को मछली दे दे। जब कोई बन्दा ये चाहता है कि उसे हिदायत मिले तो अल्लाह तआला उसे अपने रास्ते पर लगाता है और लगाकर छोड़ नहीं देता बल्कि उसे बराबर अपनी ओर खींचता और आगे बढ़ाता रहता है। जिसके अन्दर हिदायत की तलब नहीं होती, अल्लाह उससे बेपरवाह हो जाता है। उसे छोड़ देता है, जिस गुमराही के रास्ते पर चलना चाहे, चले और जिस गड्ढे में गिरना चाहे गिरे। अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र व एहसान है कि अल्लाह ने हमको मुसलमान बनाया, हम पर अपने फ़ज़्लो-करम की बारिश की कि हमको हिदायत के रास्ते पर लगा दिया।

अल्लाह तआला ने हमको हिदायत के रास्ते पर बने रहने के लिये पूरी ज़िन्दगी दो चीज़ों से मज़बूती से चिमटे रहने की तल्क़ीन की है वो है, अल्लाह की किताब क़ुर्आन मजीद और अल्लाह के आख़री रसूल (ﷺ) की सुन्नत जो कि अहादीष की किताबों में मुकम्मल तौर पर महफ़ूज़ हैं। हदीष की किताबों में सबसे अफ़ज़ल किताब पूरी उम्मत के नज़दीक इमाम बुख़ारी (रह.) की **'अल जामेउस्सहीह अल बुख़ारी'** है। इस अज़ीम किताब के यूँ तो कई तर्जुमे शाए हुए हैं जिनमें मौलाना दाऊद 'राज़' साहब के तीस पारे इस मुल्क में बहुत मशहूर हुए। यह यक़ीनी तौर पर इल्म, हिदायत व नूर का ख़ज़ाना है। आठ जिल्दों वाले इस उर्दू तर्जुमे को हिन्दी ज़बान में शाए करने का अज़ीम काम जमीअत अहले हदीष जोधपुर कर रही है।

अल्लाह पाक हमें इस कारे-ख़ैर की क़दर करने और इस हिदायत के ज़रिये को दिल से लगाने की तौफ़ीक़ बख़्शे। अल्लाह से दुआ है कि इस अज़ीम किताब से हिन्दी जानने वाले लोग ज़्यादा से ज़्यादा फ़ैज़याब हों और जो भी हज़रात इस नेक काम में जुड़े हुए हैं अल्लाह पाक उन सब के लिये तोशा-ए-आख़िरत बनाए, आमीन!!

ख़ैर-अन्देश व तालिबे-दुआ,

डॉ. मुहम्मद अब्दुल हई (जय नारायण व्यास यूनिवर्सिटी जोधपुर)

ता'ष्पुरात

सरवरे-अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) को अल्लाह तआला ने दुनिया में अपना आख़िरी पैग़म्बर बनाकर मबऊस फ़रमाया और आप (ﷺ) ही पर आसमानी हिदायतों का सिलसिला ख़त्म करके यह ऐलान कर दिया गया कि अब दीन मुकम्मल हो गया, बन्दों पर अल्लाह तआला की नेअमत पूरी हो गई और अब क़यामत तक के लिये इस्लाम ही है जिसे अल्लाह तआला ने अपने दीन की हैसियत से पसन्द फ़र्मा लिया है। क़ुर्आन करीम तो क़ादिरे-मुतलक़ का कलाम है उसके हुस्नो-ख़ूबी को अल्फ़ाज़ में बयान ही नहीं किया जा सकता है यह तो पढ़ने और सुनने वाले के दिल में सीधा पैवस्त हुआ चला जाता है और '**अलहुदा**' बन्दगाने-ख़ुदा की हिदायत का सामान बन जाता है। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़ुर्आनी हिदायातो-तालीमात की अपने अल्फ़ाज़ में जिस खूबसूरती के साथ तशरीह व तौज़ीह फर्माई है, वो भी किसी और इन्सान के बस की बात नहीं। '**हदीष़ की किताबों में**' हज़ारों सफ़हात पर आप (ﷺ) के अक़वाल हीरे मोतियों की तरह बिखरे हुए हैं, जिनका एक-एक लफ़्ज़ अपनी जगह ख़ूबसूरती से जड़ा हुआ नज़र आता है। अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को अपनी बात इन्तिहाई फ़सीह व बलीग़ अन्दाज़ में कहने का ख़ास मलका अता फ़रमाया था। बहुत मुख़्तसर जुम्लों व अल्फ़ाज़ में आप (ﷺ) ने अपनी हिदायात व तालीमात को इस तरह से समोया है जैसे कोज़े में दरिया को बन्द कर दिया गया हो। हदीष़ों में एक क़िस्म जामेअ के मर्तबे को पहुंची हुई होती है जिनमें रसूलुल्लाह (ﷺ) के अक़वाल कमाल दर्जे को पहुंचे हुए होते हैं और अल-जामेउस्सहीह लिल बुख़ारी में तो यह कमाल और भी ज़्यादा नुमायां है और यहाँ पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के फर्मूदाद अक़वाल के बिखरे हुए मोतियों को चुन-चुनकर एक हार की शक्ल में पिरो देने वाले हज़रत मुहम्मद इस्माईल बुख़ारी (रह.) ही का तज़्किरा किया जा रहा है।

क़ारिईने-किराम! हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का तआरुफ़ मुहताजे-कलम नहीं है। मुहताजे-क़लम लफ़्ज़ यूं काम में लेने की ज़ुर्रत की है कि आसमान वाले ने जिनके लिये अपने कलामे-मुबीन में '**वरफ़अना लका ज़िकरक**' का ऐजाज़ बख़्शा,उस पाक व मुकर्रमो-मुहतरम हस्ती का **ज़िक्र करने वाले** क्या फिर किसी साहिबे-क़लम से मुतअर्रिफ़ करवाए जाने के मुहताज रहेंगे? यक़ीनन नहीं।

साहिबे-किताब ने अल्लाह सुब्हानहू तआला की मेहरबानी के साथ लफ़्ज़ '**किताबो-सुन्नत**' को भी सही मफ़हूम दिया। '**किताब**' तो चूंकि हुफ़्फ़ाज़े-किराम के सीनों में और अलग-अलग दूसरी शक्लोंमें मौजूद थी, मगर '**सुन्नत**' लफ़्ज़ अपने सही मअनो-मफ़हूम के लिहाज़ से '**अलजामेउस्सहीह लिल बुख़ारी**' के बाद ही लोगों की नज़र में आया। '**हदीष़ की किताबों में**' अगर कहीं यह लाइन पढ़ने को हमें मिलती है तो पढ़ने वाले का ध्यान सबसे पहले हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ओर चला जाता है और नज़र जामेउस्सहीह बुख़ारी पर जाकर ठहर जाती है ***गोया हदीष़ की किताबों के नाम का मजमूआ सहीह बुख़ारी है।***

साहिबे-किताब ने अपने हमज़माना व आने वाले ज़माने के उलम-ए-हदीष़ व तुलब-ए-हदीष़ के लिये एक ऐसा मैयार क़ायम कर दिया कि उस मैयार को इख़्तियार करने के बाद ही 'जामेअ या सहीह' की ख़ुसूसियात साहिबे-किताब के साथ जुड़ सकती थी। जिस तरह अक़ीदे की दुरूस्तगी लाज़मी है कि उसके बग़ैर इन्सान न तो अपने मअबूदे-हक़ीक़ी की सही मअरिफ़त हासिल कर सकता है न अपने मक़सदे-वजूद की और न दुनिया में अपने क़िरदार और चाहे गए तर्ज़े-अमल से वाक़िफ़ो-

आगाह हो सकता है ठीक इसी तरह अमल की दुरूस्तगी भी नागुज़ीर है कि उसके बग़ैर अक़ीदे की दुरूस्तगी बेमअनी बन कर रह जाती है। साहिबे-किताब का अपनी जामेअ का इब्तिदाई बाब ही उनकी दीनी बसीरत को उम्मत के सामने वाज़ेह कर देता है। '**सारे आमाल का दारोमदार नियत पर है।**' यह उम्मते-मुस्लिमा को उसके ज़रिये किये जाने वाले सारे अमली तौर-तरीक़ों की बेहद साफ़ो-शफ़्फ़ाफ़ और लिल्लाहियत के जामेअ ही में रखने का दर्स देता है। ठीक इसी तरह, अपनी जामेअ की इख़्तितामी हदीष, इंसानी अमली ज़िन्दगी के हर छोटे-बड़े लम्हात को ज़ेरे-निगाह रखने का दर्स देती है। अल्लाह तआला के मोमिन बन्दे को अपने किसी भी अमल को छोटा या हक़ीर समझकर तर्क नहीं करना चाहिये।

'सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही, सुब्हानल्लाहिल अज़ीम।' ज़बान पर हल्के मगर मीज़ान में बहुत भारी हैं। एक मोमिन अज़कार के तौर पर अपनी सुबहो-शाम की ज़िन्दगी में अगर नबी-ए-रहमत (ﷺ) की इस अमली ज़िन्दगी को उतारेगा तो यक़ीनन, वो मैदाने-महशर में रूस्वा, नामुराद व तबाहो-बर्बाद नहीं होगा, उसके यह छोटे-छोटे अमल उसको जन्नत में ले जाने के बाइस बनेंगे। इंशाअल्लाह!

इमाम बुख़ारी (रह.) की यह दीनी कोशिश जो कि अपने इब्तिदाई दौर ही से सही इस्लाम को समझने का एक अमली मैयार बन गई, बाद के दौर के फ़ित्नों का सामना उलम-ए-रब्बानी बड़े आराम से कर सकें, ऐसे इन्तज़ामात अल्लाह रब्बुल आलमीन ने अपने उस बन्दे से करवाकर इस्लाम की बक़ा व मुहाफ़िज़त व अपने नबी-ए-बरहक़ के लिये इस्तेमाल ***'वरफ़अना लका ज़िकरक'*** के ऐजाज़ को मुस्तहकम व क़यामत की सुबह तक के लिये क़ायमो-दायम फ़र्मा दिया।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की दीनी कोशिशों में से सबसे उम्दा व आ'ला शाहकार '**अल जामेउस्सहीह बुख़ारी**' के हिन्दी तर्जुमा हूबहू अरबी मतन की सैटिंग के साथ जब किये जाने का मैंने सुना तो दिल बाग़-बाग़ हो गया। अल्लाह इस कारे-ख़ैर में लगे हुए सभी हज़रात की ख़ुसूसन अब्दुल्लाह फ़ारूक़ साहब ग़ौरी व भाई सलीम ख़िलजी की उम्र दराज़ करे ताकि वो अल्लाह के इस दीन की ख़िदमात को यूं हीं अन्जाम देते रहें।

अपनी बात को तिर्मिज़ी व अबूदाऊद में मन्कूल एक हदीष पर ख़त्म करना चाहूंगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, '**अल्लाह उस बन्दे को शादाब रखे जिसने मेरी बात सुनी, उसे याद रखा और उसे (सही तौर पर लोगों तक) पहुंचाया, क्योंकि कभी-कभी ऐसा होता है कि समझ और फ़हम की बात का हामिल ऐसे शख़्स तक बात पहुंचा देता है जो उससे कहीं ज़्यादा फ़हम रखता है।**' रसूलुल्लाह (ﷺ) के इन दुआइया कलिमात के अगर इमाम बुख़ारी मुस्तहिक़ नहीं हैं तो फिर कौन हो सकता है? अल्लाह रब्बुल आलमीन उनके मरातिब को बुलन्द करे, इल्मे-दीन व इशाअते-दीन की उनकी कोशिशों को क़ुबूल फ़र्माए और उन्हें करवट-करवट चैन अता फ़रमाए। आमीन!

ऐ अल्लाह! तमाम मोमिनीन को अज़ाबे-कब्र व अज़ाबे-जहन्नम से महफ़ूज़ फर्मा और तेरे दीन के हमें सच्चे व पक्के ख़िदमतगुज़ार बन्दे बना। आमीन!

अशरफ़ अली ख़ान

पब्लिशर, माहनामा निदा-ए-हक़,

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

दसवां पारा

बाब 5 : मुश्तरक (संयुक्त) चीज़ों की इंसाफ़ के साथ ठीक क़ीमत लगाकर उसे शरीकों में बांटना

٥- بَابُ تَقْوِيمِ الأَشْيَاءِ بَيْنَ الشُّرَكَاءِ بِقِيْمَةِ عَدْلٍ

बाब के ज़ेल हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **क़ाल इब्नु बत्ताल ला ख़िलाफ़ बैनल उलमाइ अन्न किस्मल अरूज़ि व साइरिल अम्तिअति बअ़दत्तक़्वीमि जायज़ुन व इन्नमा इख़्तलफ़ू फ़ी किस्मतिहा बिग़ैरि तक़्वीमिन फअजाज़हुल अक्षरू इज़ा कान अ़ला सबीलित्तरांज़ी** (फ़त्हुल बारी) या'नी सारे सामान व अस्बाब का जब ठीक तौर पर अंदाज़ा कर लिया जाए तो उसकी तक़्सीम तमाम उलमा के नज़दीक जाइज़ है और उसमें किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है। हाँ बग़ैर अंदाज़े किये तक़्सीम में इख़्तिलाफ़ है। जब बाहमी तौर पर किसी को ए'तिराज़ न हो और सब राज़ी हों तो अकषर के नज़दीक ये भी जाइज़ है।

किताबुश्शिर्कतः के इस बाब से ये दसवाँ पारा शुरू हो रहा है जिसमें शिर्कत से मुता'ल्लिक़ बक़ाया मसाइल बयान किये जा रहे हैं। दुआ है कि अल्लाह पाक क़लम को लग़्ज़िश से बचाए और ख़ैरियत के साथ इस पारे को भी तक्मील कराए आमीन।

2491. हमसे इमरान बिन मैसरा अबुल हसन बसरी ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल वारिष बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, कहा उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स मुश्तरक (साझे के) गुलाम में अपना हिस्सा आज़ाद कर दे और उसके पास सारे गुलाम की क़ीमत के मुवाफ़िक़ माल हो तो वो पूरा आज़ाद हो जाएगा। अगर इतना माल न हो तो बस जितना हिस्सा उसका था इतना ही आज़ाद हुआ। अय्यूब ने कहा कि ये मुझे मा'लूम नहीं कि रिवायत का ये आख़िरी हिस्सा गुलाम का वही हिस्सा आज़ाद होगा जो उसने आज़ाद किया है। ये नाफ़ेअ का अपना क़ौल है या नबी करीम (ﷺ) की हदीष में दाख़िल है। (दीगर मक़ाम : 2503, 2522, 2523, 2524, 2525, 3521,)

٢٤٩١- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ أَعْتَقَ شِقْصًا لَهُ مِنْ عَبْدٍ - أَوْ شِرْكًا، أَوْ قَالَ نَصِيبًا - وَكَانَ لَهُ مَا يَبْلُغُ ثَمَنَهُ بِقِيمَةِ الْعَدْلِ فَهُوَ عَتِيقٌ، وَإِلاَّ فَقَدْ عَتَقَ مِنْهُ مَا عَتَقَ)). وَقَالَ: لاَ أَدْرِي قَوْلُهُ: ((عَتَقَ مِنْهُ مَا عَتَقَ)) قَوْلٌ مِنْ نَافِعٍ، أَوْ فِي الْحَدِيْثِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [أطرافه في: ٢٥٠٣، ٢٥٢١، ٢٥٢٢، ٢٥٢٣، ٢٥٢٤، ٢٥٢٥].

तश्रीह : या'नी सारे गुलाम की हालत में क़ीमत लगाएँगे। या'नी जो हिस्सा आज़ाद हुआ अगर वो भी आज़ाद न होता तो उसकी क़ीमत क्या होती अगर इतना माल न हो तो बस जितना हिस्सा उसका था इतना ही आज़ाद हुआ।

ऐनी ने इस मसले में चौदह मज़हब बयान किये हैं। लेकिन इमाम अहमद और शाफ़िई और इस्हाक़ ने इसी हदीष के

मुवाफ़िक़ हुक्म दिया है और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा कहते हैं कि ऐसी सूरत में दूसरे शरीक को इख़्तियार रहेगा कि चाहे तो अपना हिस्सा भी आज़ाद कर दे और चाहे तो गुलाम से मेहनत मशक़्क़त कराकर अपने हिस्से के दाम वसूल करे। ख़्वाह अगर आज़ाद करने वाला मालदार हो तो अपने हिस्से की क़ीमत उससे भर ले। पहली और दूसरी सूरत में गुलाम का तरका दोनों को मिलेगा और तीसरी सूरत में सिर्फ़ आज़ाद करने वाले को। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है कि गुलाम की ठीक-ठीक क़ीमत लगाकर उसके तमाम मालिकों पर उसे तक़्सीम कर दिया जाए।

2492. हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको सईद बिन अबी उ़रूबा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने, उन्हें नज़र बिन अनस ने, उन्हें बशीर बिन नहीक ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स मुश्तरक गुलाम में से अपना हिस्सा आज़ाद कर दे तो उसके लिये ज़रूरी है कि अपने माल से गुलाम को पूरी आज़ादी दिला दे। लेकिन अगर उसके पास इतना माल नहीं है तो इंसाफ़ के साथ गुलाम की क़ीमत लगाई जाए। फिर गुलाम से कहा जाए कि (अपनी आज़ादी की) कोशिश में वो बाक़ी हिस्से की क़ीमत ख़ुद कमाकर अदा कर ले। लेकिन गुलाम पर उसके लिये कोई दबाव न डाला जाए। (दीगर मक़ाम : 2504, 2626, 2527)

٢٤٩٢- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي عُرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ بَشِيْرِ بْنِ نَهِيْكٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَعْتَقَ شَقِيْصًا مِنْ مَمْلُوكِهِ فَعَلَيْهِ خَلاَصُهُ فِي مَالِهِ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ قُوِّمَ الْمَمْلُوكُ قِيْمَةَ عَدْلٍ، ثُمَّ اسْتُسْعِيَ غَيْرَ مَشْقُوقٍ عَلَيْهِ)).

[أطرافه في: ٢٥٠٤، ٢٥٢٦، ٢٥٢٧].

तश्रीह : या'नी ऐसी तकलीफ़ न दें जिसका वो तहम्मुल (बर्दाश्त) न कर सके जब वो बाक़ी हिस्सों की क़ीमत अदा कर देगा तो आज़ाद हो जाएगा। इब्ने बत्ताल ने कहा शरका में तक़्सीम करते वक़्त उनकी क़त्अ़-नज़ाअ़ के लिये क़ुर्आ डालना दुरुस्त है और तमाम फ़ुक़हा उसके क़ाइल हैं। सिर्फ़ कूफ़ा के कुछ फ़ुक़हा ने उससे इंकार किया है और कहा है कि क़ुर्आ अज़्लाम की तरह है जिसकी मुमानअ़त क़ुर्आन में वारिद है। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने भी उसको जाइज़ रखा है। दूसरी सहीह हदीष में है कि आँहज़रत (ﷺ) सफ़र में जाते वक़्त अपनी बीवियों के लिये क़ुर्आ डालते, जिसका नाम उसमें निकलता उसको साथ ले जाते। आजकल तो क़ुर्आ इस क़दर आ़म है कि सफ़र के लिये भी हाजियों के नाम क़ुर्आ-अंदाज़ी से छांटे जाते हैं।

बाब 6 : तक़्सीम में क़ुर्आ डालकर हिस्से कर लेना

٦- بَابُ هَلْ يُقْرَعُ فِي الْقِسْمَةِ؟ وَالاسْتِهَامِ فِيْهِ

2493. हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़करिया ने, कहा मैंने आ़मिर बिन शुअ़बा से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की हुदूद पर क़ायम रहने वाले और उसमें घुस जाने वाले (या'नी ख़िलाफ़ करने वाले) की मिष़ाल ऐसे लोगों की सी है जिन्होंने एक कश्ती के सिलसिले में क़ुर्आ डाला। जिसके नतीजे में कुछ लोगों को कश्ती के ऊपर का हिस्सा मिला और कुछ को नीचे का। पस जो लोग नीचे वाले

٢٤٩٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ قَالَ: سَمِعْتُ عَامِرًا يَقُولُ: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُ الْقَائِمِ عَلَى حُدُودِ اللهِ وَالْوَاقِعِ فِيْهَا كَمَثَلِ قَوْمٍ اسْتَهَمُوا عَلَى سَفِيْنَةٍ فَأَصَابَ بَعْضُهُمْ

أَعْلاَهَا وَبَعْضُهُمْ أَسْفَلَهَا، فَكَانَ الَّذِيْنَ فِي أَسْفَلِهَا إِذَا اسْتَقَوا مِنَ الْمَاءِ مَرُّوا عَلَى مَنْ فَوقَهُم، فَقَالُوا: لَوْ أَنَّا خَرَقْنَا فِي نَصِيْبِنَا خَرْقًا وَلَمْ نُؤْذِ مَنْ فَوْقَنَا، فَإِنْ يَتْرُكُوهُمْ وَمَا أَرَادُوا هَلَكُوا جَمِيْعًا، وَإِنْ أَخَذُوا عَلَى أَيْدِيْهِمْ نَجَوا وَنَجَوا جَمِيْعًا)).

[طرفه في: ٢٦٨٦].

थे, उन्हें (दरिया से) पानी लेने के लिये ऊपर वालों के ऊपर से गुज़रना पड़ता। उन्होंने सोचा कि क्यूँ न हम अपने ही हिस़्से में एक सूराख़ कर लें ताकि ऊपर वालों को हम कोई तकलीफ़ न दें। अब अगर ऊपर वाले भी नीचे वालों को मनमानी करने देंगे तो कश्ती वाले तमाम लोग हलाक हो जाएँगे और अगर ऊपर वाले नीचे वालों का हाथ पकड़ लें तो ये ख़ुद भी बचेंगे और सारी कश्ती भी बच जाएगी। (दीगर मक़ाम : 2686)

तश्रीह : इस ह़दीष़ में जहाज़-कश्ती में जगह ह़ासिल करने के लिये क़ुर्आ-अंदाज़ी का ज़िक्र किया गया। इसी से मक़्सदे बाब ष़ाबित हुआ है। वैसे ये ह़दीष़ बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल (आधारित) है। ख़ास़ त़ौर पर नेकी का हुक्म करना और बुराई से रोकना क्यूँ ज़रूरी है? इसी सवाल पर इसमें रोशनी डाली गई है कि दुनिया की मिष़ाल एक कश्ती की सी है, जिसमें सवार होने वाले अफ़राद में से एक फ़र्द की ग़लती जो कश्ती के बारे में हो सारे अफ़राद ही को ले डूब सकती है। क़ुर्आन मजीद में यही मज़्मून इस त़ौर पर बयान हुआ। **वत्तक़ू फ़ित्नतल् ला तुसीबन्नल्लज़ीन ज़लमू मिन्कुम ख़ास़्सतन** (अल् अन्फ़ाल : 25) या'नी फ़ित्ने से बचने की कोशिश करो जो अगर वक़ूअ (अस्तित्व) में आ गया तो वो ख़ास़ ज़ालिमों ही पर नहीं पड़ेगा बल्कि उनके साथ बहुत से बेगुनाह भी पिस जाएँगे। जैसे ह़दीष़े हाज़ा में बत़ौरे मिष़ाल नीचे वालों का ज़िक्र किया गया कि अगर ऊपर वाले नीचे वालों को कश्ती के नीचे सूराख़ करने से नहीं रोकेंगे तो नतीजा ये होगा कि नीचे वाला ह़िस़्सा पानी से भर जाएगा और नीचे वालों के साथ ऊपर वाले भी डूबेंगे।

इर्शादे बारी तआ़ला है, **वल तकुम् मिन्कुम उम्मतुय् यदऊ़न इलल् ख़ैरि व यामुरूना बिल मअ़रूफ़ि व यन्हौन अ़निल् मुन्कर** (आले इमरान : 104) या'नी ऐ मुसलमानों ! तुममें से एक जमाअ़त ऐसी मुक़र्रर होनी चाहिये जो लोगों को भलाई का हुक्म करती रहे और बुराइयों से रोकती रहे। इस आयत के आधार पर तमाम अहले इस्लाम पर फ़र्ज़ है कि **अम्र बिल मअ़रूफ़ और नही अ़निल मुन्कर** के लिये एक ख़ास़ जमाअ़त मुक़र्रर करें।

अल्ह़म्दुलिल्लाह हुकुमते सऊ़दी अरबिया में ये मह़कमा इसी नाम से क़ायम है और पूरी मम्लकत में इसकी शाखें हैं जो ये फ़र्ज़ अंजाम दे रही हैं। ज़रूरत है कि इज्तिमाई त़ौर पर हर जगह मुसलमान ऐसे इदारे क़ायम करके अ़वाम की फ़लाह़ व बहबूद का काम अंजाम दिया करें।

ख़ुलास़ा ये कि तक़्सीम के लिये क़ुर्आ-अंदाज़ी करना, एक बेहतरीन त़रीक़ा है जिसमें शुरका में से किसी को भी इंकार की गुंजाइश नहीं रह सकती। अ़ल्लामा क़स्त़लानी (रह.) फ़र्माते हैं, **व मुताबक़त ह़दीष़ि लित्तर्जुमति ग़ैर ख़फ़िय्यतिन व फ़ीहि वुजूबुस्सब्रि अ़ला अजल जारि इज़ा ख़शिय वुक़ूअ़ मा हुव अशद्द जररन व अन्नहू लैस लिसाहिबिस्सुफ़लि अय्युह़दिष़ अ़ला साहिबिलउलुव्वि मा यज़ुर्रू बि वअन्नहू अन अह़दष़ अ़लैहि ज़ररून अल्ज़महू इस्लाहहू व अन्न लिस़ाहिबिल उलुव्वि मनअ़हू मिनज़्ज़ररि व फ़ीहि जवाज़ु किस्मतिल इक़ारिल मुतफ़ावति बिल क़ज़्अ़ति क़ाल इब्नु बत्ताल वल उलमाउ मुत्तफ़िक़ून अ़लल्क़ौलि बिल्क़ुज्अ़ति इल्लल कूफ़िय्यून फ़इन्नहुम क़ालू ला मअ़ना लहा लिअन्नहा तशब्बहल अज़्लामल्लती नहल्लाहु अन्हा.** (क़स्त़लानी) ह़दीष़ की बाब से मुताबक़त ज़ाहिर है और इससे पड़ौसी की तकलीफ़ पर स़ब्र करना बत़ौरे वुजूब ष़ाबित हुआ, जबकि स़ब्र न करने की सूरत में इससे भी किसी बड़ी मुसीबत के आने का ख़त़रा है और ये भी ष़ाबित हुआ कि नीचे वाले के लिये जाइज़ नहीं कि ऊपर वाले के लिये कोई ज़रर का काम करे। अगर वो ऐसा कर बैठे तो उसको उसकी दुरुस्तगी करना वाजिब है और ऊपर वाले को ह़क़ है कि वो ऐसे ज़रर के काम से उसको रोके और सामान व अस्बाबे मुतफ़र्रिक़ा (संयुक्त सम्पत्ति) का क़ुर्आ-अंदाज़ी से तक़्सीम करना भी ष़ाबित हुआ। इब्ने बत्त़ाल ने कहा उ़लमा का क़ुर्आ के जवाज़ पर इत्तिफ़ाक़ है सिवाय अहले कूफ़ा के।

वो कहते हैं कि क़ुर्आ-अंदाज़ी उन तीरों के मुशाबे (समान) ही है जो कुफ़्फ़ारे मक्का बतौरे फ़ाल निकाला करते थे। इसलिये ये जाइज़ नहीं हैं क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने अज़्लाम से मना किया है। मुतर्जिम कहता है कि अहले कूफ़ा का ये क़यास बातिल है। अज़्लाम और क़ुर्आ-अंदाज़ी में बहुत फ़र्क़ है और जब क़ुर्आ का षुबूत सह़ीह़ ह़दीष़ से मौजूद है तो उसको अज़्लाम से तश्बीह (उपमा) देना स़ह़ीह़ नहीं है।

बाब 7 : यतीम का दूसरे वारिषों के साथ शरीक करना

٧– بَابُ شَرِكَةِ الْيَتِيمِ وَأَهْلِ الْمِيرَاثِ

इत्तफ़क़ू अ़ला अन्नहू ला तजूज़ुल्मुशारकतु फ़ी मालिल्यतीमि इल्ला इन कान लिल्यतीमि फी ज़ालिक मस्लहतुन राज़िहतुन(फ़तह़) या'नी इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि यतीम के माल में शिर्कत करना जाइज़ नहीं। हाँ, अगर यतीम के मफ़ाद (लाभ) के लिये कोई मस्लिहते राजेह़ (अच्छी नीति) हो तो जाइज़ है। अल्लाह ने फ़र्माया कि जो लोग ज़ुल्म से यतीमों का माल खा जाते हैं वो अपने पेट में जहन्नम की आग भर रहे हैं। लिहाज़ा मामला बहुत ही नाज़ुक है।

2494. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह आमिरी उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कि मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्होंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से पूछा था (दूसरी सनद) और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी कि उन्होंने आ़इशा (रज़ि.) से (सूरह निसा में) इस आयत के बारे में पूछा, अगर तुमको यतीमों में इंस़ाफ़ न करने का डर हो तो जो औ़रतें पसन्द आएँ दो-दो, तीन-तीन, चार-चार निकाह़ कर लो। उन्होंने कहा, मेरे भांजे! ये आयत उस यतीम लड़की के बारे में है जो अपने वली (मुह़ाफ़िज़ रिश्तेदार जैसे चचेरा भाई, फूफ़ीज़ाद या मामूज़ाद भाई) की परवरिश में हो और तरके के माल में उसकी साझी हो और वो उसकी मालदारी और ख़ूबसूरती पर फ़रेफ़्ता (आकर्षित) होकर उससे निकाह़ कर लेना चाहता हो लेकिन पूरा महर इंस़ाफ़ से जितना उसको और जगह मिलता, वो अदा न करे, तो उससे मना कर दिया गया कि वो ऐसी यतीम लड़कियों से निकाह़ करे। अल्बत्ता उनके साथ उनके वली इंस़ाफ़ कर सकें और उनकी ह़स्बे हैषियत बेहतर से बेहतर तर्ज़े अ़मल महर के बारे में इख़्तियार करें (तो इस सूरत में निकाह़ करने की इजाज़त है)। और उनसे ये भी कह दिया गया कि उनके सिवा जो भी औ़रत उन्हें पसन्द हो उनसे वो निकाह़ कर सकते हैं। उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने कहा कि आ़इशा (रज़ि.) ने बतलाया। फिर लोगों ने इस आयत के नाज़िल होने के बाद (ऐसी लड़कियों से निकाह़ की इजाज़त के बारे में) मसला पूछा तो अल्लाह तआ़ला ने ये

٢٤٩٤– حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْعَامِرِيّ الأُوَيْسِيُّ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا .. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا – إِلَى قوله – وَرُبَاعَ﴾ فَقَالَتْ: يَا ابْنَ أُخْتِي، هِيَ الْيَتِيمَةُ تَكُونُ فِي حَجْرِ وَلِيِّهَا تُشَارِكُهُ فِي مَالِهِ، فَيُعْجِبُهُ مَالُهَا وَجَمَالُهَا، فَيُرِيدُ وَلِيُّهَا أَنْ يَتَزَوَّجَهَا بِغَيْرِ أَنْ يُقْسِطَ فِي صَدَاقِهَا، فَيُعْطِيَهَا مِثْلَ مَا يُعْطِيهَا غَيْرُهُ، فَنُهُوا أَنْ يَنْكِحُوهُنَّ إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا لَهُنَّ وَيَبْلُغُوا بِهِنَّ أَعْلَى سُنَّتِهِنَّ مِنَ الصَّدَاقِ، وَأُمِرُوا أَنْ يَنْكِحُوا مَا طَابَ لَهُمْ مِنَ النِّسَاءِ سِوَاهُنَّ. قَالَ عُرْوَةُ قَالَتْ عَائِشَةُ: ثُمَّ إِنَّ النَّاسَ اسْتَفْتَوا رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعْدَ هَذِهِ الآيَةِ، فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ – إِلَى قَوْلِهِ – وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ﴾، وَالَّذِي ذَكَرَ اللهُ أَنَّهُ يُتْلَى

عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ الآيَةُ الأُولَى الَّتِي قَالَ فِيهَا: ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ﴾ قَالَتْ عَائِشَةُ : وَقَوْلُ اللهِ فِي الآيَةِ الأُخْرَى: ﴿وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ﴾ يَعْنِيْ هِيَ رَغْبَةُ أَحَدِكُمْ لِيَتِيمَتِهِ الَّتِي تَكُونُ فِي حَجْرِهِ حِينَ تَكُونُ قَلِيْلَةَ الْمَالِ وَالْجَمَالِ، فَنُهُوا أَنْ يَنْكِحُوا مَا رَغِبُوا فِي مَالِهَا وَجَمَالِهَا مِنْ يَتَامَى النِّسَاءِ إِلاَّ بِالْقِسْطِ مِنْ أَجْلِ رَغْبَتِهِمْ عَنْهُنَّ)).

[أطرافه في : ٢٧٦٣، ٤٥٧٣، ٤٥٧٤، ٤٦٠٠، ٥٠٦٤، ٥٠٩٢، ٥٠٩٨، ٥١٢٨، ٥١٣١، ٥١٤٠، ٦٩٦٥].

आयत नाज़िल फ़र्माई, और आपसे औरतों के बारे में ये लोग सवाल करते हैं। आगे फ़र्माया, और तुम उनसे निकाह करना चाहते हो। ये जो इस आयत में है और जो क़ुर्आन में तुम पर पढ़ा जाता है उससे मुराद पहली आयत है या'नी, अगर तुमको यतीमों में इंसाफ़ न हो सकने का डर हो तो दूसरी औरतें जो भली लगें उनसे निकाह कर लो। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा ये जो अल्लाह ने दूसरी आयत में फ़र्माया और तुम उनसे निकाह करना चाहते हो उससे ये ग़र्ज़ है कि जो यतीम लड़की तुम्हारी परवरिश में हो और माल और जमाल कम रखती हो उससे तो तुम नफ़रत करते हो, इसलिये जिस यतीम लड़की के माल और जमाल में तुमको रग़बत हो उससे भी निकाह न करो मगर इस सूरत में जब इंसाफ़ के साथ उनका पूरा महर देना।

(दीगर मक़ाम : 2763, 4573, 4574, 4600, 5064, 5092, 5098, 5128, 5131, 5140, 6965)

٨- بَابُ الشَّرِكَةِ فِي الأَرَضِينَ وَغَيْرِهَا

बाब 8 : ज़मीन मकान वग़ैरह में शिर्कत का बयान

٢٤٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِنَّمَا جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ الشُّفْعَةَ فِي كُلِّ مَا لَمْ يُقْسَمْ، فَإِذَا

2495. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने शफ़्आ का हक़ ऐसे अम्वाल (ज़मीन व जायदाद वग़ैरह) में दिया था जिनकी तक़्सीम न हुई हो। लेकिन जब उसकी हदबन्दी हो जाए और रास्ते भी बदल जाएँ तो फिर शुफ़्आ का कोई हक़ बाक़ी नहीं रह जाता।

क़स्तलानी (रह.) ने कहा, इससे ये निकलता है कि शुफ़्आ ग़ैर-मन्क़ूला (अचल) जायदाद में है कि मन्क़ूला (चल सम्पत्ति) में? इसकी बह़्स पहले भी गुज़र चुकी है।

٩- بَابُ إِذَا اقْتَسَمَ الشُّرَكَاءُ الدُّوْرَ أَوْ غَيْرَهَا فَلَيْسَ لَهُمْ رُجُوعٌ وَلاَ شُفْعَةٌ

बाब 9 : जब शरीक लोग घरों वग़ैरह को तक़्सीम कर लें तो अब उससे फिर नहीं सकते और न उनको शुफ़्आ का हक़ रहेगा

बाब का तर्जुमा इस तरह निकलता है कि जब शुफ़आ का हक़ तक़्सीम के बाद न रहा तो मा'लूम हुआ कि तक़्सीम भी फिर नहीं हो सकती क्योंकि अगर तक़्सीम बातिल हो जाए तो जायदाद फिर मुश्तरक हो जाएगी और शुरका को शुफ़आ का हक़ पैदा होगा।

٢٤٩٦ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَضَى النَّبِيُّ ﷺ بِالشُّفْعَةِ فِي كُلِّ مَا لَمْ يُقْسَمْ، فَإِذَا وَقَعَتِ الْحُدُودُ وَصُرِّفَتِ الطُّرُقُ فَلاَ شُفْعَةَ)). [راجع: ٢٢١٣]

2496. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने हर उस जायदाद में शुफ़आ का हक़ दिया था जिसकी शुरका में अभी तक़्सीम न हुई हो। लेकिन अगर हदबन्दी हो जाए और रास्ते अलग हो जाएँ तो फिर शुफ़आ का हक़ बाक़ी नहीं रहता। (राजेअ : 2213)

١٠ - بَابُ الإِشْتِرَاكِ فِي الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَمَا يَكُونُ فِيهِ الصَّرْفُ

बाब 10 : सोने, चाँदी और उन तमाम चीज़ों में शिर्कत जिनमें बेअ़े सरिफ़ होती है

बेअ़े सरिफ़ का बयान ऊपर गुज़र चुका है या'नी सोने चाँदी और नक़द की बेअ़ सोने चाँदी और नक़द के ऐवज़ में।

٢٤٩٧، ٢٤٩٨ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ عُثْمَانَ - يَعْنِي ابْنَ الأَسْوَدِ - قَالَ: أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ أَبِي مُسْلِمٍ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا الْمِنْهَالِ عَنِ الصَّرْفِ يَدًا بِيَدٍ فَقَالَ: اشْتَرَيْتُ أَنَا وَشَرِيكٌ لِي شَيْئًا يَدًا بِيَدٍ وَنَسِيئَةً، فَجَاءَنَا الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ فَسَأَلْنَاهُ فَقَالَ: فَعَلْتُ أَنَا وَشَرِيكِي زَيْدُ بْنُ أَرْقَمَ وَسَأَلْنَا النَّبِيَّ ﷺ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: ((مَا كَانَ يَدًا بِيَدٍ فَخُذُوهُ، وَمَا كَانَ نَسِيئَةً فَذَرُوهُ)). [راجع: ٢٠٦٠، ٢٠٦١]

2497,98. हमसे अम्र बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे उ़स्मान ने जो अस्वद के बेटे हैं, कहा कि मुझे सुलैमान बिन अबी मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अबुल मिन्हाल से बेअ़े सरिफ़ नक़द के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मैंने और मेरे एक शरीक ने कोई चीज़ (सोने और चाँदी की) ख़रीदी नक़द पर भी और उधार पर भी। फिर हमारे यहाँ बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) आए तो हमने उनसे इसके बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि मैंने और मेरे शरीक ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने भी ये बेअ़ की थी और हमने इसके बारे में नबी करीम (ﷺ) से पूछा था तो आपने फ़र्माया था कि जो नक़द हो वो ले लो और जो उधार हो उसे छोड़ दो। (राजेअ : 2060, 2061)

١١ - بَابُ مُشَارَكَةِ الذِّمِّيِّ وَالْمُشْرِكِينَ فِي الْمُزَارَعَةِ

बाब 11 : मुसलमानों का मुश्रिक़ीन और ज़िम्मियों के साथ मिलकर खेती करना

तश्रीह : बाब की हदीष़ से ज़िम्मी की शिर्कत का जवाज़ खेती में मिलता है और जब खेती में शिर्कत जाइज़ होती है तो और चीज़ों में भी जाइज़ होगी। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **वहतज्जल्जुम्हूरु बिमुआमलतिन्नबिय्यि (ﷺ)**

यहूद ख़ैबर व इज़ा जाज़ फ़िल्मुज़ारअति जाज़ फी गैरिहा व बिमश्रूइयति अख़्ज़िल्जिज़्यति मिन्हुम मअ अन्न फ़ी अम्वालिहिम मा फ़ीहा या'नी उसके जवाज़ पर जुम्हूर उलमा ने नबी करीम (ﷺ) के यहूदे ख़ैबर से मामला करने से दलील पकड़ी है और उनसे जिज़्या की मशरूइय्यत पर भी। हालाँकि उनके अम्वाल का हाल मा'लूम है कि उनमें सूद व ब्याज वग़ैरह नाजाइज़ आमदनी भी उनके यहाँ होती थी, फिर भी उनसे जिज़्या मे उनका माल हासिल करना जाइज़ क़रार दिया गया।

2499. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिन्ते अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ैबर की ज़मीन यहूदियों को इस शर्त पर दे दी कि वो उसमें मेहनत करें और बोएँ जोतें। पैदावार का आधा हिस्सा उन्हें मिला करेगा। (राजेअ : 2285)

٢٤٩٩ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَعْطَى رَسُولُ اللهِ ﷺ خَيْبَرَ الْيَهُودَ أَنْ يَعْمَلُوهَا وَيَزْرَعُوهَا، وَلَهُمْ شَطْرُ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا)). [راجع: ٢٢٨٥]

इस्लाम मुआशरती, तमद्दुनी उमूर (सांस्कृतिक मामलों) में मुसलमानों को इजाज़त देता है कि वो दूसरी ग़ैर-मुस्लिम क़ौमों से मिलकर अपने मआशी मसाइल हल कर सकते हैं। इसमें न सिर्फ़ खेती-क्यारी बल्कि तमाम दुनियावी उमूर इस इजाज़त में शामिल हैं। इस तरह मुसलमानों को बहुत से दीनी व दुनियावी फ़ायदे भी हासिल होंगे।

बाब 22 : बकरियों का इंसाफ़ के साथ तक़्सीम करना

١٢ - بَابُ قِسْمَةِ الْغَنَمِ وَالْعَدْلِ فِيهَا

2500. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें बकरियाँ दी थीं कि क़ुर्बानी के लिये उनको सहाबा में तक़्सीम कर दें। फिर एक साल का बकरी का बच्चा बच गया तो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया। आप (ﷺ) ने उक़्बा से फ़र्माया तू इसकी क़ुर्बानी कर ले। (राजेअ : 2300)

٢٥٠٠ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَعْطَاهُ غَنَمًا يَقْسِمُهَا عَلَى صَحَابَتِهِ ضَحَايَا، فَبَقِيَ عَتُودٌ، فَذَكَرَهُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((ضَحِّ بِهِ أَنْتَ)). [راجع: ٢٣٠٠]

बाब 13 : अनाज वग़ैरह में शिर्कत का बयान

١٣ - بَابُ الشَّرِكَةِ فِي الطَّعَامِ وَغَيْرِهِ

और मन्क़ूल है कि एक शख़्स ने कोई चीज़ चुकाई, दूसरे ने उसको आँख से इशारा किया, तब उसने मोल ले लिया, इससे हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये समझ लिया कि वो शरीक है।

وَيُذْكَرُ أَنَّ رَجُلاً سَاوَمَ شَيْئًا فَغَمَزَهُ آخَرُ، فَرَأَى عُمَرُ أَنَّ لَهُ شَرِكَةً.

2501, 02. हमसे अस्बग़ बिन फ़रज ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, कहा मुझे सईद बिन अबी अय्यूब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री बिन मअबद ने, उन्हें उनके दादा अब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को

٢٥٠١، ٢٥٠٢ - حَدَّثَنَا أَصْبَغُ بْنُ الْفَرَجِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنِ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدٌ عَنْ زُهْرَةَ بْنِ مَعْبَدٍ

عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللهِ بْنِ هِشَامٍ - وَكَانَ قَدْ أَدْرَكَ النَّبِيَّ ﷺ، وَذَهَبَتْ بِهِ أُمُّهُ زَيْنَبُ بِنْتُ حُمَيْدٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ بَايِعْهُ، فَقَالَ: هُوَ صَغِيرٌ. فَمَسَحَ رَأْسَهُ وَدَعَا لَهُ - وَعَنْ زُهْرَةَ بْنِ مَعْبَدٍ أَنَّهُ كَانَ يَخْرُجُ بِهِ جَدُّهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ هِشَامٍ إِلَى السُّوقِ فَيَشْتَرِي الطَّعَامَ، فَيَلْقَاهُ ابْنُ عُمَرَ وَابْنُ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فَيَقُولاَنِ لَهُ: أَشْرِكْنَا، فَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَدْ دَعَا لَكَ بِالْبَرَكَةِ، فَيَشْرَكُهُمْ فَرُبَّمَا أَصَابَ الرَّاحِلَةَ كَمَا هِيَ فَيَبْعَثُ بِهَا إِلَى الْمَنْزِلِ)). [طرفه في : ٧٢٠١].

[طرفه في : ٦٣٥٣].

पाया था। उनकी वालिदा ज़ैनब बिन्ते हुमैद (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आपको लेकर ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इससे बेअ़त ले लीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तो अभी बच्चा है। फिर आपने उनके सर पर हाथ फेरा और उनके लिये दुआ़ की और ज़ुह्रा बिन मअ़बद से रिवायत है कि उनके दादा अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) उन्हें अपने साथ बाज़ार ले जाते, वहाँ अनाज ख़रीदते। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) उनसे मिलते तो वो कहते कि हमें भी इस अनाज में शरीक कर लो क्योंकि आपके लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बरकत की दुआ़ की है। चुनाँचे अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) उन्हें भी शरीक कर लेते और कभी पूरा एक ऊँट (साथ ग़ल्ले के) नफ़ा पैदा कर लेते और उसको घर भेज देते। (दीगर मक़ाम : 7201)

तश्रीह : कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है कभी एक ऊँट के लादने के मुवाफ़िक़ अनाज पैदा करते। बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि हमको भी उस अनाज में शरीक कर लो। त़आ़म से खाने के ग़ल्ला-जात (अनाज) से गेहूँ, चावल, वग़ैरह मुराद है। शिर्कत में इनका कारोबार करना भी जाइज़ है। जैसा कि इस ह़दीष़ में अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) नामी एक स़ह़ाबी का ज़िक्र है, जिनके लिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने बचपन में दुआ़ फ़र्माई थीं और आपकी दुआ़ओं की बरकत से अल्लाह ने उनको बहुत कुछ नवाज़ा था। उनके दादा जब अनाज वग़ैरह ख़रीदने बाज़ार जाते तो उनको साथ ले लेते ताकि हुज़ूर (ﷺ) की दुआ़ओं की बरकत शामिले-ह़ाल रहे। कुछ बार रास्ते में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) मिल जाते तो वो भी दरख़्वास्त करते कि हमको भी इस तिजारत में शरीक कर लीजिए ताकि दुआ़-ए-नबवी की बरकतों से हम भी फ़ायदा ह़ासिल करें। चुनाँचे अक्षर ऐसा हुआ करता था कि ये सब बहुत कुछ नफ़ा कमाकर वापस लौटते।

इस ह़दीष़ पर ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **व फिल्ह़दीषि मस्ह़ु रासिस्सग़ीरि व तर्कु मुबायअ़ति मंल्लम यब्लुग वदुख़ूलु फिस्सूक़ि लितलबिल्मआ़शि व त़लबिल्बर्कति हैषु कानत वर्रद्दु अ़ला मन ज़अ़म अन्नस्सिअ़त मिनल्ह़लालि मज़्मूमतुन व तुवक़्क़ुरू दवाइस्सह़ाबति अ़ला इज़्हारि औलादिहिम इन्दन्नबिय्यि (ﷺ) लिइल्तिमासि बर्कतिही व अ़लमुम्मिन आलामिनुबुव्वतिही (ﷺ) लिइजाबति दुआ़इही फी अ़ब्दिल्लहिब्नि हिशाम** या'नी इस ह़दीष़ से ये निकलता है कि छोटे बच्चे के सर पर दस्ते शफ़क़त फेरना सुन्नते नबवी है और नाबालिग़ बच्चे से बेअ़त लेना ष़ाबित नहीं हुआ और त़लबे मआ़श के लिये बाज़ार जाने की मशरूइ़यत भी ष़ाबित हुई और बरकत त़लब करना भी ष़ाबित हुआ वो जहाँ से भी ह़ासिल हो और उन लोगों की तर्दीद भी हुई जो रिज़्क़े ह़लाल की कोशिश को मज़्मूम जानते हैं। और ये भी ष़ाबित हुआ कि बेशतर स़ह़ाबा-ए-किराम (रज़ि.) बरकत ह़ासिल करने के लिये अपनी औलाद को आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमते-अक़्दस में लाया करते थे ताकि आपकी दुआ़एँ उन बच्चों के शामिले-ह़ाल हों। और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम के ह़क़ में दुआ़-ए-नबवी की बरकात ह़ासिल हुईं ये सब आँह़ज़रत (ﷺ) की स़दाक़त की निशानियों में से अहम निशानियाँ हैं।

ऐसा ही वाक़िया उ़र्वा बारक़ी (रज़ि.) का है जो बाज़ार में जाते और कभी तो चालीस हज़ार का नफ़ा कमाकर बाज़ार

से वापस आते। जो सब कुछ नबी करीम (ﷺ) की दुआओं की बरकत थी। आपने एक बार उनको एक दीनार देकर क़ुर्बानी का जानवर ख़रीदने भेजा था। और ये उस एक दीनार की दो क़ुर्बानियाँ ख़रीदकर लाए और रास्ते ही में उनमें से एक को फ़रोख़्त करके एक दीनार वापस ह़ासिल कर लिये। फिर हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में क़ुर्बानी का जानवर पेश किया और नफ़ा में ह़ासिल होने वाला दीनार भी और साथ में तफ़्सीली वाक़िया सुनाया। जिसे सुनकर नबी करीम (ﷺ) बेह़द ख़ुश हुए और उनके कारोबार में बरकत की दुआ फ़र्माई।

अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, **व मुताबक़तुल्ह़दीष़ि लित्तर्जुमति फ़ी क़ौलिही अश्रिकना लिक़ौनिहिमा त़लबन मिन्हु अल्इश्तिराकु फ़ित्तआमिल्लज़ी इश्तराहु अजाबहुमा इला ज़ालिक व हुम मिनस्सह़ाबति व लम युन्क़ल अन ग़ैरिहिम मा युख़ालिफ़ु ज़ालिक फ़यकूनु हुज्जतुन वल्जुम्हूरु अ़ला सिह़्ह़तिश्शिर्कति फ़ी कुल्लि मा यतमल्लकु** (क़स्तलानी) या'नी ह़दीष़ की बाब में मुताबक़त लफ़्ज़ अश्रिकना से है। उन दोनों बुज़ुर्ग स़ह़ाबियों ने उनसे इस ख़रीदे हुए अनाज में शिर्कत का सवाल किया और उन्होंने दोनों की इस दरख़्वास्त को क़ुबूल कर लिया। वो सब अस्ह़ाबे नबवी थे और किसी से भी उसकी मुख़ालफ़त मन्क़ूल नहीं हुई। पस ये हुज्जत है और जुम्हूर हर उस चीज़ में शिर्कत के जवाज़ के क़ाइल हैं जो चीज़ मिल्कियत में आ सकती है।

बाब 14 : ग़ुलाम लौण्डी में शिर्कत का बयान

١٤- بَابُ الشَّرِكَةِ فِي الرَّقِيقِ

2503. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा कि हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी साझे के ग़ुलाम का अपना हिस़्सा आज़ाद कर दिया तो उसके लिये ज़रूरी है कि अगर ग़ुलाम की, इंस़ाफ़ के मुवाफ़िक़ क़ीमत के बराबर उसके पास माल हो तो वो सारे ग़ुलाम को आज़ाद करा दे। इस त़रह दूसरे साझियों को उनके हिस़्से की क़ीमत अदा कर दी जाए और इस आज़ाद किये हुए ग़ुलाम का पीछा छोड़ दिया जाए। (राजेअ़ : 2491)

٢٥٠٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَعْتَقَ شِرْكًا لَهُ فِي مَمْلُوكٍ وَجَبَ عَلَيْهِ أَنْ يَعْتِقَ كُلَّهُ إِنْ كَانَ لَهُ مَالٌ قَدْرَ ثَمَنِهِ يُقَامُ قِيمَةَ عَدْلٍ وَيُعْطَى شُرَكَاؤُهُ حِصَّتَهُمْ وَيُخَلَّى سَبِيلُ الْمُعْتَقِ)). [راجع: ٢٤٩١]

2504. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे नज़्र बिन अनस ने, उनसे बशीर बिन नहीक ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने किसी (साझे के) ग़ुलाम का अपना हिस़्सा आज़ाद कर दिया तो अगर उसके पास माल है तो पूरा ग़ुलाम आज़ाद हो जाएगा। वरना बाक़ी हिस़्सों को आज़ाद कराने के लिये उससे मेह़नत मज़दूरी कराई जाए। लेकिन इस सिलसिले में इस पर कोई दबाव नहीं डाला जाए। (राजेअ़ : 2492)

٢٥٠٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ بَشِيرِ بْنِ نَهِيكٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَعْتَقَ شِقْصًا لَهُ فِي عَبْدٍ أُعْتِقَ كُلُّهُ إِنْ كَانَ لَهُ مَالٌ، وَإِلاَّ يُسْتَسْعَ غَيْرَ مَشْقُوقٍ عَلَيْهِ)). [راجع: ٢٤٩٢]

बाब 15 : क़ुर्बानी के जानवरों और ऊँटों में शिर्कत और अगर कोई मक्का को क़ुर्बानी भेज चुके फिर

١٥ - بَابُ الاشْتِرَاكِ فِي الْهَدْيِ وَالْبُدْنِ وَإِذَا أَشْرَكَ الرَّجُلُ الرَّجُلَ فِي

उसमें किसी को शरीक कर ले तो जाइज़ है

هَدْيِهِ بَعْدَ مَا أَهْدَى

2505, 06. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुल मलिक बिन जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें अ़ता ने और उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने और (इब्ने जुरैज इसी ह़दीष़ की दूसरी रिवायत) ताऊस से करते हैं कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) चौथी ज़िल्हिज्ज की सुबह को ह़ज्ज का तल्बिया कहते हुए जिसके साथ कोई और चीज़ (उ़मरह) न मिलाते हुए (मक्का में) दाख़िल हुए। जब हम मक्का पहुँचे तो आपके हुक्म से हमने अपने ह़ज्ज को उ़मरह कर डाला। आपने ये भी फ़र्माया था कि (उ़मरह के अफ़आल अदा करने के बाद ह़ज्ज के एह़राम तक) हमारी बीवियाँ हमारे लिये हलाल रहेंगी। इस पर लोगों में चर्चा होने लगा। अ़ता ने बयान किया कि जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि कुछ लोग कहने लगे क्या हम में से कोई मिना इस त़रह जाए कि मनी उसके ज़कर से टपक रही हो। जाबिर ने हाथ से इशारा भी किया। ये बात नबी करीम (ﷺ) तक पहुँची तो आप ख़ुत्बा देने खड़े हुए और फ़र्माया मुझे मा'लूम हुआ है कि कुछ लोग इस त़रह की बातें कर रहे हैं। अल्लाह की क़सम! मैं उन लोगों से ज़्यादा नेक और अल्लाह से डरने वाला हूँ। अगर मुझे वो बात पहले ही मा'लूम होती जो अब मा'लूम हुई है तो मैं क़ुर्बानी के जानवर अपने साथ न लाता और अगर मेरे साथ क़ुर्बानी के जानवर न होते तो मैं भी एह़राम खोल देता। इस पर सुराक़ा बिन मालिक बिन जअ़शम खड़े हुए और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या ये हुक्म (ह़ज्ज के दिनों में उ़मरह) ख़ास़ हमारे ही लिये है या हमेशा के लिये? आपने फ़र्माया, नहीं! बल्कि हमेशा के लिये है। जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) (यमन से) आए। अब अ़ता और त़ाऊस में से एक तो यूँ कहता है ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने एह़राम के वक़्त यूँ कहा था, लब्बैक बिमा अहल्ल बिही रसूलुल्लाह (ﷺ) और दूसरा यूँ कहता है कि उन्होंने लब्बैक बिहज्जति रसूलुल्लाह (ﷺ) कहा था। नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया कि वो अपने एह़राम पर क़ायम रहें (जैसा भी उन्होंने बाँधा है) और उन्हें अपनी क़ुर्बानी में शरीक

٢٥٠٥، ٢٥٠٦- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ. وَعَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ صُبْحَ رَابِعَةٍ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ مُهِلِّينَ بِالْحَجِّ لاَ يَخْلِطُهُمْ شَيْءٌ. فَلَمَّا قَدِمْنَا أَمَرَنَا فَجَعَلْنَاهَا عُمْرَةً، وَأَنْ نَحِلَّ إِلَى نِسَائِنَا. فَفَشَتْ فِي ذَلِكَ الْقَالَةُ. قَالَ عَطَاءٌ: فَقَالَ جَابِرٌ فَيَرُوحُ أَحَدُنَا إِلَى مِنًى وَذَكَرُهُ يَقْطُرُ مَنِيًّا - فَقَالَ جَابِرٌ بِكَفِّهِ - فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ، فَقَامَ خَطِيبًا فَقَالَ: ((بَلَغَنِي أَنَّ أَقْوَامًا يَقُولُونَ كَذَا وَكَذَا، وَاللهِ لأَنَا أَبَرُّ وَأَتْقَى للهِ مِنْهُمْ، وَلَوْ أَنِّي اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا أَهْدَيْتُ، وَلَوْ لاَ أَنَّ مَعِيَ الْهَدْيَ لأَحْلَلْتُ)). فَقَامَ سُرَاقَةُ بْنُ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، هِيَ لَنَا أَوْ لِلأَبَدِ؟ فَقَالَ: ((لاَ، بَلْ لِلأَبَدِ)). قَالَ: وَجَاءَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ، فَقَالَ أَحَدُهُمَا يَقُولُ: لَبَّيْكَ بِمَا أَهَلَّ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ، وَقَالَ الآخَرُ: لَبَّيْكَ بِحَجَّةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُقِيمَ عَلَى إِحْرَامِهِ وَأَشْرَكَهُ فِي الْهَدْيِ)).

[راجع: ١٠٨٥، ١٥٥٧]

कर लिया।

इसी से बाब का मज़्मून ष़ाबित हुआ। सनद में इब्ने जुरैज का इस ह़दीष़ को अ़ता और ताऊस दोनों से सुनना मज़्कूर है। ह़ाफ़िज़ ने कहा मेरे नज़दीक तो त़ाऊस से रिवायत मुन्क़त़अ है क्योंकि इब्ने जुरैज ने मुजाहिद और इक्रिमा से नहीं सुना और त़ाऊस उन्हीं के हम अ़स़र (समकालीन) हैं, अल्बत्ता अ़त़ा से सुना है क्योंकि अ़त़ा उन लोगों के दस बरस बाद हुए थे। बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि रसूले करीम (ﷺ) ने मदीना से क़ुर्बानी के लिये 63 ऊँट लिये और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) यमन से 37 ऊँट लाए। सब मिलकर सौ ऊँट हुए और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने आपको उन ऊँटों में शरीक कर लिया।

बाब 16 : तक़्सीम में एक ऊँट को दस बकरियों के बराबर समझना

١٦– بَابُ مَنْ عَدَلَ عَشْرَةً مِنَ الْغَنَمِ بِجَزُورٍ فِي الْقَسْمِ

2507. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमको वकीअ़ ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान ष़ौरी ने, उन्हें उनके वालिद सईद बिन मसरूक़ ने, उन्हें अ़बाया बिन रफ़ाआ़ ने और उनसे उनके दादा राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ तहामा के मुक़ाम ज़ुल् हुलैफ़ह में थे। (ग़नीमत में) हमें बकरियाँ और ऊँट मिले थे। कुछ लोगों ने जल्दी की और (जानवर ज़िब्ह़ करके) गोश्त को हाँडियों में चढ़ा दिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। आपके हुक्म से गोश्त की हांडियों को उलट दिया गया। फिर (आपने तक़्सीम में) दस बकरियों का एक ऊँट के बराबर हिस़्सा रखा। एक ऊँट भाग खड़ा हुआ। क़ौम के पास घोड़ों की कमी थी। एक शख़्स ने ऊँट को तीर मारकर रोक लिया। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन जानवरों में भी जंगली जानवरों की त़रह वहशत होती है। इसलिये जब तुम उनको न पकड़ सको तो तुम उनके साथ ऐसा किया करो। अ़बाया ने बयान किया कि मेरे दादा ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमें उम्मीद है या ख़त़रा है कि कहीं कल दुश्मन से मुठभेड़ न हो जाए और छुरी हमारे साथ नहीं है। क्या धारदार लकड़ी से हम ज़िब्ह़ कर सकते हैं? आपने फ़र्माया, लेकिन ज़िब्ह़ करने में जल्दी करो। जो चीज़ ख़ून बहा दे (उसी से काट डालो) अगर इस पर अल्लाह का नाम लिया जाए तो उसको खाओ और नाख़ून और दांत से ज़िब्ह़ न करो। उसकी वजह मैं बतलाऊँ, सुनो

٢٥٠٧– حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيْجٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِذِي الْحُلَيْفَةِ مِنْ تِهَامَةَ فَأَصَبْنَا غَنَمًا وَ إِبِلاً، فَعَجِلَ الْقَوْمُ فَأَغْلَوا بِهَا الْقُدُورَ، فَجَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَأَمَرَ بِهَا فَأُكْفِئَتْ، ثُمَّ عَدَلَ عَشْرًا مِنَ الْغَنَمِ بِجَزُورٍ. ثُمَّ إِنَّ بَعِيْرًا نَدَّ وَلَيْسَ فِي الْقَوْمِ إِلاَّ خَيْلٌ يَسِيْرَةٌ فَرَمَاهُ رَجُلٌ فَحَبَسَهُ بِسَهْمٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ لِهَذِهِ الْبَهَائِمِ أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ، فَمَا غَلَبَكُمْ مِنْهَا فَاصْنَعُوا بِهِ هَكَذَا)). قَالَ: قَالَ جَدِّي: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا نَرْجُو – وَ نَخَافُ – أَنْ نَلْقَى الْعَدُوَّ غَدًا، وَلَيْسَ مَعَنَا مُدًى، أَفَنَذْبَحُ بِالْقَصَبِ؟ فَقَالَ: ((اعْجَلْ، أَوْ أَرِنِي. مَا أَنْهَرَ الدَّمَ وَذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ فَكُلُوا، لَيْسَ السِّنَّ وَالظُّفُرَ، وَسَأُحَدِّثُكُمْ عَنْ ذَلِكَ: أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ، وَأَمَّا الظُّفُرُ فَمُدَى الْحَبَشَةِ)).

दांत तो हड्डी है और नाख़ुन हब्शियों की छुरियाँ हैं। (राजेअ : 2488) [راجع: ٢٤٨٨]

रावी को शुब्हा है कि आपने लफ़्ज़ अअ़जल फ़र्माया, या लफ़्ज़ अरन फ़र्माया। ख़त्ताबी ने कहा कि लफ़्ज़ अरन अस़्ल में अअरन था जो अरन यारिनु से है और जिसके मा'नी भी अअ़जल या'नी जल्दी करने के हैं।

48. किताबुर् रहन

किताब रहन के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह : रहन के मा'नी षुबूत या रुकना और इस्तिलाहे शरअ़ में रहन कहते हैं, क़र्ज़ के बदल कोई चीज़ रखवा देने को मज़बूती के लिये कि अगर क़र्ज़ अदा न हो तो क़र्ज़ देने वाला उस चीज़ से अपना क़र्ज़ वसूल कर ले। जो शख़्स रहन की चीज़ का मालिक हो उसको राहिन और जिसके पास रखा जाए उसको मुर्तहिन और उस चीज़ को मरहून कहते हैं।

रहन के लग़्वी मा'नी गिरवी रखना, इक़ामत करना, हमेशा रहना। मस़्दर इरहान के मा'नी गिरवी करना। क़ुर्आन मजीद की आयत, **कुल्लु नफ़्सिम बिमा कसबत रहीना** (अल् मुद्दष्षिर : 38) में गिरवी मुराद है। या'नी हर नफ़्स अपने अअ़माल के बदल में अपने आपको गिरवी कर चुका है। ह़दीषे नबवी, **कुल्लु ग़ुलामिन रहीनतुन बि अक़ीक़तिही** में भी गिरवी मुराद है या'नी हर बच्चा अपने अक़ीक़े के हाथ में गिरवी है। कुछ ने कहा कि मुराद इससे ये है कि जिस बच्चे का अक़ीक़ा न हुआ और वो मर गया तो वो अपने वालिदैन की सिफ़ारिश नहीं करेगा। कुछ ने अक़ीक़ा होने तक बच्चे का बालों की गंदगी वग़ैरह में मुब्तला रहना मुराद लिया है।

मुज्तहिदे मुत्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी आदत के मुताबिक़ रहन के जवाज़ के लिये आयते क़ुर्आनी से इस्तिश्हाद फ़र्माया। फिर सफ़र की ख़ुसूसियत का शुब्हा पैदा हो रहा था कि रहन स़िर्फ़ के बारे में है, इसलिये लफ़्ज़े ह़ज़र का भी इज़ाफ़ा फ़र्माकर इस शुब्हा को रद्द किया और ह़ज़र में रहन का षुबूत ह़दीषे नबवी से पेश फ़र्माया जो कि आगे मज़्कूर है जिसमें यहूदी के यहाँ आपने अपनी ज़िरहे मुबारक गिरवी रखी। उसका नाम अबू शह़म था और ये बनू ज़फ़र से ता'ल्लुक़ रखता था जो क़बील-ए-ख़ज़रज़ की एक शाख़ का नाम है।

बाब 1 : आदमी अपनी बस्ती में हो और गिरवी रखे और अल्लाह पाक ने सूरह बक़र: में फ़र्माया अगर तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला न

١- بَابُ فِي الرَّهْنِ فِي الْحَضَرِ، وَقَوْلُهُ تَعَالَى

﴿ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا

## मिले तो हाथ गिरवी रख लो (अल बक़र : 283) 		فَرِهَانٌ مَقْبُوضَةٌ ﴾ [البقرة: ٢٨٣]

ये बाब लाकर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बतलाया कि क़ुर्आन मजीद में जो ये क़ैद है, **व इन कुन्तुम अला सफ़रिन** (अल् बक़रः : 283) ये क़ैद इत्तिफ़ाक़ी है इसलिये कि अक्षर सफ़र में कोई गिरवी की ज़रूरत पड़ती है और उसका ये मतलब नहीं है कि हज़र में गिरवी रखना जाइज़ नहीं।

2508. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपनी ज़िरह, जौ के बदले गिरवी रखी थी। एक दिन मैं ख़ुद आपके पास जौ की रोटी और बासी चर्बी लेकर हाज़िर हुआ था। मैंने ख़ुद आपसे सुना था, आप फ़र्मा रहे थे कि आले मुहम्मद (ﷺ) पर कोई सुबह और कोई शाम ऐसी नहीं आई कि एक साअ से ज़्यादा कुछ और मौजूद रहा हो, आप (ﷺ) के नौ घर थे। (राजेअ : 2069)

٢٥٠٨- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : وَلَقَدْ رَهَنَ رَسُولُ اللهِ ﷺ دِرْعَهُ بِشَعِيْرٍ، وَمَشَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِخُبْزِ شَعِيْرٍ وَإِهَالَةٍ سَنِخَةٍ. وَلَقَدْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَا أَصْبَحَ لآلِ مُحَمَّدٍ ﷺ إِلاَّ صَاعٌ وَلاَ أَمْسَى، وَإِنَّهُمْ لَتِسْعَةُ أَبْيَاتٍ)). [راجع: ٢٠٦٩]

तश्रीह : ये आप (ﷺ) ने अपना वाक़िया बयान फ़र्माया, दूसरे मोमिनीन को तसल्ली देने के लिये न कि बतौर शिकवा और शिकायत के। अल्लाह वाले तो फ़क़्र और फ़ाक़ा पर ऐसी ख़ुशी करते हैं जो ग़िना और तवंगरी पर नहीं करते वो कहते हैं, फ़क़्र और फ़ाक़ा और दुख और बीमारी ख़ालिस महबूब या'नी अल्लाह करीम की मुराद है और ग़िना और तवंगरी में बन्दे की मुराद भी शरीक होती है।

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ निज़ामुद्दीन औलिया क़द्दस सिर्रुहु से मन्क़ूल है। जब वो अपने घर में जाते और वालिदा से पूछते, कुछ खाने को है? वो कहती, **बाबु निज़ामुद्दीन मा इम्रोज़ मेहमाने ख़ुदाएम** तो बेहद ख़ुशी करते और जिस दिन वो कहती कि हाँ! खाना ज़रूर है, तो कुछ ख़ुशी न होती। (वहीदी)

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **व फिल्हदीषि जवाज़ु मुआमलतिल्कुफ़्फ़ारि फ़ीमा लम यतहक्कक तहरीमु ऐनिल्मुतआमिलि फीहि व अदमुल्इतिबारि बिफसादि मुअतकिदिहिम व मुआमलातिहिम फीमा बैनहुम बस्तुम्बित मिन्हु जवाज़ु मुआमलातिम्मिन अक्षरि मालिही हरामुन व फीहि जवाज़ु बैइस्सलाहि व रिहनिही व इजारतिही व गैरि ज़ालिक मिनल्काफ़िरि मा लम यकुन हरबिय्यन व फीहि षुबूतु इम्लाकि अहलिज़्ज़िम्मति फ़ी अयदीहिम व जवाज़ुश्शराइ बिष्षुम्निलमुअज्जलि वत्तिखाज़िद्दुरूइ वल्अददि व गैरहा मिन आलातिल्हरबि व अन्नहू गैर कादिहिन फित्तवक्कुलि व अन्न कीनत आलतिल्हरबि ला तदुल्लु अला तहबीसिहा क़ालहू इब्नुलमुन्ज़िर व अन्न अक्षर कूति ज़ालिकल्अस्रि अश्शईरू क़ालहुद्दाऊदी व अन्नल्क़ौल क़ौलुल्मुर्तहिनि फी क़मतिल्मर्हुनि मअयमीनिही हकाहु इब्नुत्तीन व फीहि मा कान अलैहिन्निबिय्यु (ﷺ) मिनत्तवाज़ुहू वज़्ज़हदि फिद्दुनिया वत्तक़ल्लुलि मिन्हा क़ुदरतिही वल्करमुल्लज़ी उफ़्ज़िय बिही इला अदमिल्इदखारि हत्ता इहताज इला रिहनिदिरइही वस्सबरू अला ज़ैक़िल्ऐशि वल्कनाअति बिल्यसीरि व फ़ज़ीलतु लिअज़्वाजिही लिसबरिहिन्न मअहू अला ज़ालिक व फीहि गैर ज़ालिक मिम्मा मज़ा व याती क़ालल्उलमाउ अल्हिक्मतु फी उदूलिही (ﷺ) अन मुआमलति मयासीरस् सहाबति इला मुआमलतिल्यहूदि अम्मा लिबयानिल्जवाज़ि औ लिअन्नहुम लम यकुन इन्दहुम इज़ ज़ाक तआमुन फाज़िलुन अन हाजति गैरिहिम औ खशिय अन्नहुम ला याखुज़ून मिन्हु षमनन औ इवज़न फलम युरिदितज़य्युक़ अलैहिम फइन्नहू ला यब्अदु अंय्यकून फीहिम इज़ ज़ाक मंय्यक्दिरू अला ज़ालिक व अक्षरु मिन्हु फलअल्लहू लम यत्तलिअ अला ज़ालिक व इन्नमा इत्तलअ अलैहि मंल्लम यकुन मूसिरन बिही मिम्मन नुक़िल ज़ालिक वल्लाहु आलम** (फ़त्हुल्बारी)

या'नी इस हदीष से कुफ़्फ़ार के साथ ऐसी चीज़ों में जिनकी हुर्मत मुतहक़्क़क़ (खोजबीन की हुई) न हो, तो मामला

करने का जवाज़ षाबित हुआ। इस बारे में उनके मुअतक़िदात और बाहमी मामलात के बिगाड़ का ए'तिबार नहीं किया जाएगा और उससे उनके साथ भी मामला करने का जवाज़ षाबित हुआ जिनके माल का अकषर हिस्सा हराम से ता'ल्लुक़ रखता है और उससे काफ़िर के हाथ हथियार का रहन रखना और बेचना भी षाबित हुआ जब तक वो हर्बी (दुश्मन देश का निवासी) न हो और इससे ज़िम्मियों के इम्लाक का भी षुबूत हुआ जो उनके क़ाबू में हों और उनसे उधार क़ीमत पर ख़रीद करना भी षाबित हुआ और ज़िरह वग़ैरह आलाते हर्ब का तैयार करना भी षाबित हुआ, और ये कि इस क़िस्म की तैयारियाँ तवक्कल के मनाफ़ी (विपरीत) नहीं हैं और ये कि आलाते हर्ब (युद्धक सामग्री) का ज़ख़ीरा जमा करना उनके रोकने पर दलालत नहीं करता।

और ये भी षाबित हुआ कि उस ज़माने में ज़्यादातर खाने में जौ का रिवाज था। और ये भी षाबित हुआ कि रहन रखी गई शय के बारे में क़सम के साथ मुर्तहिन का क़ौल ही मो'तबर माना जाएगा और इस हदीष से आँहज़रत (ﷺ) का ज़ुहद व तवक्कल भी बदर्ज-ए-अतम षाबित हुआ। हालाँकि आपको हर क़िस्म की आसानियाँ बहम (उपलब्ध) थीं। उनके बावजूद आप (ﷺ) ने दुनिया में हमेशा कमी ही को महबूब रखा और आपका करम व सख़ा और अदमे ज़ख़ीराअंदोज़ी (जमाखोरी न करना) भी षाबित हुआ। जिसके नतीजे में आपको मजबूरन अपनी ज़िरह को रहन रखना ज़रूरी हुआ और आपका सब्र भी षाबित हुआ जो आप मआश की तंगी में फ़र्माया करते थे और कम से कम पर आपका क़नाअत करना भी षाबित हुआ और आपकी बीवियों की भी फ़ज़ीलत षाबित हुई जो वो आपके साथ करती थीं और इस बारे में कि आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा के बजाय यहूदियों से उधार का मामला क्यूँ फ़र्माया? उलमा ने एक हिक्मत बयान की है कि आपने ये मामला जवाज़ के इज़्हार के लिये फ़र्माया, या इसलिये कि उन दिनों सहाबा किराम के पास अतिरिक्त अनाज न था। लिहाज़ा मजबूरन यहूद से आपको मामला करना पड़ा। या इसलिये कि आप जानते थे कि सहाबा किराम उधार मामला करने के बजाय बिला क़ीमत ही वो अनाज आपके घर भिजवा देंगे और ख़्वाह-मख़्वाह उनको तंग होना पड़ेगा, इसलिये ख़ामोशी से आपने यहूद से ही काम चला लिया।

बाब 2 : ज़िरह को गिरवी रखना

٢- بَابُ مَنْ رَهَنَ دِرْعَهُ

2509. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया कि हमने इब्राहीम नख़ई (रह.) के यहाँ क़र्ज़ में रहन और ज़ामिन का ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा कि हमसे अस्वद ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक यहूदी से अनाज ख़रीदा एक मुक़र्ररा मुद्दत के क़र्ज़ पर और अपनी ज़िरह उसके यहाँ गिरवी रखी थी। (राजेअ : 2028)

٢٥٠٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: ((تَذَاكَرْنَا عِنْدَ إِبْرَاهِيْمَ الرَّهْنَ وَالْقَبِيْلَ فِي السَّلَفِ، فَقَالَ إِبْرَاهِيْمُ: حَدَّثَنَا الأَسْوَدُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اشْتَرَى مِنْ يَهُودِيٍّ طَعَامًا إِلَى أَجَلٍ وَرَهَنَهُ دِرْعَهُ)). [راجع: ٢٠٦٨]

बाब 3 : हथियार गिरवी रखना

٣- بَابُ رَهْنِ السِّلاَحِ

2510. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया कि अम्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना। वो कह रहे थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कअब बिन अशरफ़ (यहूदी इस्लाम का पक्का दुश्मन) का काम कौन तमाम करता है कि उसने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को बहुत तकलीफ़ दे रखी

٢٥١٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ لِكَعْبِ بْنِ الأَشْرَفِ؟ فَإِنَّهُ آذَى اللهَ وَرَسُولَهُ ﷺ)).

है। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा कि मैं (ये ख़िदमत अंजाम दूँगा) चुनाँचे वो उसके पास गए और कहा कि एक या दो वस्क़ अनाज क़र्ज़ लेने के इरादे से आया हूँ। कअ़ब ने कहा लेकिन तुम्हें अपनी बीवियों को मेरे यहाँ गिरवी रखना होगा। मुहम्मद बिन मस्लमा और उसके साथियों ने कहा कि हम अपनी बीवियों को तुम्हारे पास किस तरह गिरवी रख सकते हैं जबकि तुम सारे अ़रब में ख़ूबसूरत हो। उसने कहा कि फिर अपनी औलाद गिरवी रख दो। उन्होंने कहा कि अपनी औलाद किस तरह रहन रख सकते हैं उसी पर उन्हें गाली दी जाया करेगी कि एक दो वस्क़ ग़ल्ले के लिये रहन रख दिये गये थे तो हमारे लिये बड़ी शर्म की बात होगी। अल्बत्ता हम अपने हथियार तुम्हारे यहाँ रहन रख सकते हैं। सुफ़यान ने कहा कि लफ़्ज़ लअमा से मुराद हथियार हैं। फिर मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) इससे दोबारा मिलने का वा'दा करके (चले आए और रात में उसके यहाँ पहुँचकर) उसे क़त्ल कर दिया। फिर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपको ख़बर दी। (दीगर मक़ाम : 3031, 2032, 4037)

فَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ: أَنَا. فَأَتَاهُ فَقَالَ: أَرَدْنَا أَنْ تُسْلِفَنَا وَسْقًا أَوْ وَسْقَيْنِ. فَقَالَ: ارْهَنُونِي نِسَاءَكُمْ. قَالُوا: كَيْفَ نَرْهَنُكَ نِسَاءَنَا وَأَنْتَ أَجْمَلُ الْعَرَبِ؟ قَالَ: فَارْهَنُونِي أَبْنَاءَكُمْ. قَالُوا: كَيْفَ نَرْهَنُ أَبْنَاءَنَا فَيُسَبُّ أَحَدُهُمْ فَيُقَالُ: رُهِنَ بِوَسْقٍ أَوْ وَسْقَيْنِ؟ هَذَا عَارٌ عَلَيْنَا، وَلَكِنَّا نَرْهَنُكَ اللأْمَةَ - قَالَ سُفْيَانُ : يَعْنِي السِّلاَحَ - فَوَعَدَهُ أَنْ يَأْتِيَهُ، فَقَتَلُوهُ، ثُمَّ أَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ، فَأَخْبَرُوهُ)).

[أطرافه في: ٣٠٣١، ٢٠٣٢، ٤٠٣٧].

तश्रीह : कअ़ब बिन अशरफ़ मदीना का दौलतमंद यहूदी था। इस्लाम आने से उसको अपने सरमायादाराना वक़ार के लिये एक बड़ा धक्का महसूस हुआ और ये रात-दिन इस्लाम की बढ़त रोकने के लिये तदबीरें सोचता रहता था। बद्र में जो काफ़िर मारे गए थे उनका नोहा करके कुफ़्फ़ारे मक्का को नबी करीम (ﷺ) से लड़ने के लिये उभारता रहता और आपकी शान में हिज्व और तन्क़ीस के अश्आर गढ़ता। इस नापाक मिशन पर वो जंगे बद्र के बाद मक्का भी गया था। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी नाशाइस्ता हरकतों से तंग आकर उसका मसला मज्मओ में रखा। जिस पर हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने अपने आपको पेश किया। उन्होंने आपसे इजाज़त ली कि मैं उसके पास जाकर आपके बाब में जो कुछ मुनासिब होगा, उसके सामने कहूँगा, इसकी इजाज़त दीजिए। आपने उन्हें इजाज़त दे दी तो हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) उसके पास पहुँचे और ये बातें हुईं जो कि यहाँ मज़्कूर हैं। आख़िर उस यहूदी ने हथियारों के रहन को मन्ज़ूर कर लिया। फिर मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कअ़ब के रज़ाई (दूधशरीक) भाई अबू नायला को साथ लेकर रात को उसके पास गए। उसने क़िले के अंदर बुला लिया और जब उनके पास जाने लगा तो उसकी औरत ने मना कर दिया, वो बोला कोई ग़ैर नहीं है। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) है और मेरा भाई अबू नायला मुहम्मद बिन मस्लमा के साथ है और भी दो या तीन शख़्स थे। अबू अ़बस बिन जबर, हारिष़ बिन औस, अ़ब्बाद बिन बिश्र।

मुहम्मद बिन मस्लमा (रह.) ने कहा कि मैं कअ़ब के बाल सूँघने के बहाने उसका सर थामूँगा। तुम उस वक़्त जब देखो कि मैं सर को मज़बूत थामे हुआ हूँ, उसका सर तलवार से क़लम कर देना। फिर मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने जब कअ़ब आया, यही कहा कि ऐ कअ़ब! मैंने तुम्हारे सर जैसी ख़ुश्बू तमाम उम्र में नहीं सूँघी। वो कहने लगा कि मेरे पास एक औरत है जो अ़रब की सारी औरतों से ज़्यादा मुअत्तर और ख़ुश्बूदार रहती है। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उसका सर सूँघने की इजाज़त मांगी और कअ़ब के सर को मज़बूत थामकर अपने साथियों को इशारा किया। उन्होंने तलवार से सर उड़ा दिया और लौटकर दरबारे रिसालत में ये बशारत पेश की। आप बहुत ख़ुश हुए और उन मुजाहिदीने इस्लाम के हक़ में दुआ-ए-ख़ैर फ़र्माई।

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह अंसारी है और ये बद्र में शरीक होने वालों में से हैं। कअब बिन अशरफ़ के क़त्ल की एक वजह ये भी बतलाई गई कि उसने अपना अहद तोड़ दिया था। इस तौर पर वो मुल्क का ग़द्दार बन गया और बार-बार ग़द्दारी की हरकतें करता रहा। लिहाज़ा उसकी आख़िरी सज़ा यही थी जो उसे दी गई।

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कअब के यहाँ हथियार रहन रखने का ज़िक्र फ़र्माया। इसी से बाब का मतलब षाबित हुआ।

बाब 4 : गिरवी जानवर पर सवारी करना उसका दूध पीना दुरुस्त है

٤- بَابُ الرَّهْنُ مَرْكُوبٌ وَمَحْلُوبٌ

وَقَالَ مُغِيرَةُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ: تُرْكَبُ الضَّالَّةُ بِقَدْرِ عَلَفِهَا، وَتُحْلَبُ بِقَدْرِ عَلَفِهَا. وَالرَّهْنُ مِثْلُهُ.

और मुग़ीरह ने बयान किया और उनसे इब्राहीम नख़्ई ने कि गुम होने वाले जानवर पर (अगर किसी को मिल जाए तो) उस पर चारा देने के बदले सवारी की जाए (अगर वो सवारी का जानवर है) और (चारे के मुताबिक़) उसका दूध भी दूहा जाए। (अगर वो दूध देने वाला जानवर है) ऐसे ही गिरवी जानवर पर भी।

٢٥١١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ عَنْ عَامِرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: ((الرَّهْنُ يُرْكَبُ بِنَفَقَتِهِ، وَيُشْرَبُ لَبَنُ الدَّرِّ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا)). [طرفه في : ٢٥١٢].

2511. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़करिया बिन अबी जायदा ने बयान किया, उनसे आमिर शुअबी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि गिरवी जानवर पर उसका ख़र्च निकालने के लिये सवारी की जाए, दूध वाला जानवर गिरवी हो तो उसका दूध पीया जाए। (दीगर मक़ाम : 2512)

٢٥١٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّاءُ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الرَّهْنُ يُرْكَبُ بِنَفَقَةِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا، وَلَبَنُ الدَّرِّ يُشْرَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا، وَعَلَى الَّذِي يَرْكَبُ وَيَشْرَبُ النَّفَقَةُ)).

[راجع: ٢٥١١]

2512. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें ज़करिया ने ख़बर दी, उन्हें शअबी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, गिरवी जानवर पर उसके खर्च के बदल सवारी की जाए। इसी तरह दूध वाले जानवर का जब वो गिरवी हो तो खर्च के बदल उसका दूध पिया जाए और जो कोई सवारी करे या दूध पिये वही उसका खर्च उठाए। (राजेअ : 2511)

तश्रीह : शैख़ुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया (रह.), इमाम इब्ने क़य्यिम (रह.) और अस्हाबे हदीष का मज़हब यही है कि मुर्तहिन गिरवी रखी गई शय से नफ़ा उठा सकता है। जब उसकी दुरुस्ती और इस्लाह और ख़बरगिरी करता रहे। भले ही मालिक ने उसको इजाज़त न दी हो और जुम्हूर फ़ुक़हा ने उसके ख़िलाफ़ कहा है कि मुर्तहिन को गिरवीशुदा चीज़ से कोई फ़ायदा उठाना दुरुस्त नहीं। अहले हदीष के मज़हब पर मुर्तहिन को गिरवी रखे गये मकान की हिफ़ाज़त व सफ़ाई के बदले उसमें रहना, उसी तरह ग़ुलाम-लौण्डी से उनके खाने-पीने के ऐवज़ में ख़िदमत लेना दुरुस्त होगा। जुम्हूर फ़ुक़हा इस हदीष से दलील लेते हैं कि जिस क़र्ज़ से कुछ फ़ायदा हासिल किया जाए वो सूद है। अहले हदीष कहते हैं अव्वल तो ये हदीष ज़ईफ़

है, इस सहीह हदीष के मुआरिज़ा के लायक़ नहीं। दूसरे इस हदीष में मुराद वो क़र्ज़ा है जो बिला गिरवी के बतौरे क़र्ज़े हसना हो। तहावी ने अपने मज़हब की ताईद के लिये इस हदीष में ये तावील की है कि मुराद ये है कि राहिन उस पर सवारी कर सकता है और उसका दूध पिये और वही उसका दाना चारा करे।

और हम कहते हैं कि ये तावील ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है क्योंकि गिरवीशुदा जानवर मुर्तहिन के क़ब्ज़े में और उसकी हिरासत में रहता है न कि राहिन के। उसके अलावा हम्माद बिन सलमा ने अपनी जामेअ में हम्माद बिन अबी सुलैमान से जो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के उस्ताद हैं, रिवायत की, उन्होंने इब्राहीम नख़्अी से, उसमें साफ़ यूँ है कि जब कोई बकरी रहन करे तो मुर्तहिन उसके दाने चारे के बराबर उसका दूध पिये। अगर दूध उसके दाने-चारे के खर्च के बाद बच रहा है तो उसका लेना दुरुस्त नहीं वो सूद है। (अज़् मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम)

बाब 5 : यहूद वग़ैरह के पास कोई चीज़ गिरवी रखना

٥- بَابُ الرَّهْنِ عِنْدَ الْيَهُودِ وَغَيْرِهِمْ

2513. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुछ मुद्दत ठहराकर एक यहूद से अनाज ख़रीदा और अपनी ज़िरह उसके पास गिरवी रखी। (राजेअ : 2068)

٢٥١٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اشْتَرَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مِنْ يَهُوْدِيٍّ طَعَامًا وَرَهَنَهُ دِرْعَهُ)). [راجع: ٢٠٦٨]

यहूदी का नाम अबुश्शहम था। आप (ﷺ) ने उस यहूदी से जौ के तीस साअ क़र्ज़ लिये थे और जो ज़िरह गिरवी रखी थी उसका नाम ज़ातुल फ़ुज़ूल था। कुछ लोगों ने कहा आप (ﷺ) ने वफ़ात से पहले ये ज़िरह छुड़ा ली थी। एक रिवायत में है कि आपकी वफ़ात तक वो गिरवी रही। (वहीदी)

बाब 6 : राहिन और मुर्तहिन में अगर किसी बात में इख़्तिलाफ़ हो जाए या उनकी तरह दूसरे लोगों में तो गवाही पेश करना मुद्दई के ज़िम्मे है, वरना (मुन्किर) मुद्दआ अलैह से क़सम ली जाएगी

٦- بَابُ إِذَا اخْتَلَفَ الرَّاهِنُ وَالْمُرْتَهِنُ وَنَحْوِهِ فَالْبَيِّنَةُ عَلَى الْمُدَّعِي، وَالْيَمِيْنُ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ

2514. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ बिन उमर ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में (दो औरतों के मुक़द्दमे में) लिखा तो उसके जवाब में उन्होंने तहरीर फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़ैसला किया था कि (अगर मुद्दई गवाह न पेश कर सके) तो मुद्दआ अलैह से क़सम ली जाएगी। (दीगर मक़ाम : 2668, 4552)

٢٥١٤- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: ((كَتَبْتُ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَكَتَبَ إِلَيَّ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَضَى أَنَّ الْيَمِيْنَ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ)).

[طرفاه في : ٢٦٦٨، ٤٥٥٢].

ये इख़्तिलाफ़ ख़्वाह असल रहन में हो या गिरवी रखी गई शय की कुछ मिक़्दार में; मष़लन मुर्तहिन कहे तूने ज़मीन पेड़ों समेत गिरवी रखी थी और राहिन कहे मैंने सिर्फ़ ज़मीन गिरवी रखी थी तो मुर्तहिन ज़ियादती का मुद्दई हुआ, उसको गवाह लाना चाहिये। अगर गवाह न लाए तो राहिन का क़ौल क़सम के साथ क़ुबूल किया जाएगा। शाफ़िइया कहते हैं कि रहन में जब गवाह न हों तो हर सूरत में राहिन का क़ौल क़सम के साथ क़ुबूल किया जाएगा। (वहीदी)

2515. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे अबू वाइल ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि जो शख़्स जान—बूझकर इस निय्यत से झूठी क़सम खाए कि इस त़रह़ दूसरे के माल पर अपनी मिल्कियत जमाए तो वो अल्लाह तआ़ला से इस ह़ाल मे मिलेगा कि अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़बनाक होगा। इस इर्शाद की तस्दीक़ में अल्लाह तआ़ला ने (सूरह आले इमरान में) ये आयत नाज़िल फ़र्माई, वो लोग जो अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों के ज़रिये दुनिया की थोड़ी पूँजी ख़रीदते हैं, आख़िर तक उन्होंने तिलावत की। अबू वाइल ने कहा उसके बाद अश्अ़ष़ बिन क़ैस (रज़ि.) हमारे घर तशरीफ़ लाए और पूछा कि अबू अ़ब्दुर्रह़मान (अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने तुमसे कौनसी ह़दीष़ बयान की है? उन्होंने कहा कि हमने ह़दीष़े बाला उनके सामने पेश कर दी। इस पर उन्होंने कहा कि उन्होंने सच बयान किया। मेरा एक (यहूदी) शख़्स से कुँए के मामले में झगड़ा हुआ था। हम अपना झगड़ा लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम अपने गवाह लाओ वरना दूसरे फ़रीक़ से क़सम ली जाएगी। मैंने अ़र्ज़ किया कि ये तो क़सम खा लेगा और (झूठ बोलने पर) उसे कुछ परवाह न होगी। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स जान—बूझकर किसी का माल हड़प करने के लिये झूठी क़सम खाए तो अल्लाह तआ़ला से वो इस ह़ाल में मिलेगा कि वो उस पर निहायत ही ग़ज़बनाक होगा। अल्लाह तआ़ला ने उसकी तस्दीक़ में ये आयत नाज़िल की। उसके बाद उन्होंने वही आयत पढ़ी, जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों के ज़रिये पूँजी ख़रीदते हैं। आयत (वलहुम अ़ज़ाबुन् अलीम) तक।

(राजेअ : 2357)

٢٥١٥، ٢٥١٦– حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: ((قَالَ عَبْدُ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِيْنٍ يَسْتَحِقُّ بِهَا مَالاً وَهُوَ فِيْهَا فَاجِرٌ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ، ثُمَّ أَنْزَلَ اللهُ تَصْدِيْقَ ذَلِكَ: ﴿إِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلاً – فَقَرَأَ إِلَى وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ﴾ [آل عمران : ٧٧].

ثُمَّ إِنَّ الأَشْعَثَ بْنَ قَيْسٍ خَرَجَ إِلَيْنَا فَقَالَ: مَا يُحَدِّثُكُمْ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ؟ قَالَ : فَحَدَّثْنَاهُ، قَالَ : فَقَالَ : صَدَقَ، لَفِيَّ وَاللهِ أُنْزِلَتْ، كَانَتْ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ خُصُومَةٌ فِي بِئْرٍ، فَاخْتَصَمْنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((شَاهِدُكَ أَوْ يَمِيْنُهُ)). قُلْتُ: إِنَّهُ إِذًا يَحْلِفُ وَلاَ يُبَالِي. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِيْنٍ يَسْتَحِقُّ بِهَا مَالاً وَهُوَ فِيْهَا فَاجِرٌ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)). فَأَنْزَلَ اللهُ تَصْدِيْقَ ذَلِكَ. ثُمَّ قَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ: ﴿إِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلاً – إِلَى – وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ﴾)).

[راجع: ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]

इस हदीष़ से ये षाबित करना मक़सूद है कि मुद्दआ अलैह अगर झूठी क़सम खाकर किसी का माल हड़प कर जाए तो वो अल्लाह के नज़दीक बहुत ही बड़ा मुजरिम, गुनाहगार, मल्ऊन क़रार पाएगा अगरचे क़ानूनन वो अदालत से झूठी क़सम खाकर डिक्री (अपने पक्ष में आदेश) हासिल कर चुका है मगर अल्लाह के नज़दीक वो आग के अंगारे अपने पेट में दाख़िल कर रहा है। पस मुद्दआ अलैह का फ़र्ज़ है कि वो बहुत ही सोच-समझकर क़सम खाए और दुनियावी अदालत के फ़ैसले को आख़िरी फ़ैसला न समझे कि अल्लाह की अदालते आलिया का मामला बहुत ही सख़्त है।

49. किताबुल इत्क़

किताब ग़ुलामों की आज़ादी के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : ग़ुलाम आज़ाद करने का षवाब

١ - بَابٌ فِي الْعِتْقِ وَفَضْلِهِ قَوْلِهِ تَعَالَى :

और अल्लाह तआला ने (सूरह बलद में) फ़र्माया, किसी गर्दन को आज़ाद करना या भूख के दिनों में किसी क़राबतदार यतीम बच्चे को खाना खिलाना. (सूरह बलद : 13-15)

﴿فَكُّ رَقَبَةٍ. أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ. يَتِيماً ذَا مَقْرَبَةٍ﴾ [البلد : ١٣-١٥].

तश्रीह : हर चंद हर यतीम को भूख के वक़्त खाना खिलाना षवाब है मगर यतीम बच्चा अगर रिश्तेदार हो तो उसकी परवरिश करने में दुगुना षवाब है। आयते कुर्आनी में किसी ग़ुलाम को आज़ाद करना या ग़रीब यतीम को भूख के वक़्त खाना खिलाना दोनों काम एक ही दर्जे में बयान किये गए हैं। दौरे हाज़िर में अहदे अतीक़ की ग़ुलामी का दौर ख़त्म हो गया। फिर भी आज मआशी इक़्तिसादी (आर्थिक) ग़ुलामी मौजूद है जिसमें एक आलम गिरफ़्तार है। इसलिये अब भी किसी क़र्ज़दार का क़र्ज़ अदा करा देना, किसी नाहक़ शिकन्जे में फंसे हुए इंसान को आज़ाद करा देना और यतीम-मिस्कीनों की ख़बर लेना बड़े भारी कारे षवाब हैं। जगह जगह के फ़सादात में कितने मुस्लिम बच्चे लावारिष यतीम हो रहे हैं। कितने अमीर-उमरा, मसाकीन व फ़ुक़रा की सफ़ों में आ रहे हैं। जैसा कि हाल ही में अहमदाबाद, चाए बासा, चक्रधरपुर, फिर भिवन्डी और जलगांव के हालात सामने हैं। ऐसे मुसीबतज़दा मुसलमानों की मदद करना और उनको ज़िन्दगी के लिये सहारा देना वक़्त का बड़ा भारी कारे ख़ैर है। अल्लाह तआला यहाँ सबको अमन व अमान अता करे। आमीन। लफ़्ज़ **मस्ग़बा सग़ब यस्ग़ुबु सुग़ूबन** सग़ूबा से जाअ भूख के मा'नी में है।

2517. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे आसिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे वाक़िद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अली

٢٥١٧ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: قَالَ حَدَّثَنِي

واقِدُ بنُ محمدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدُ بْنُ مَرْجَانَةَ صَاحِبُ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ قَالَ: قَالَ لِي أَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيُّمَا رَجُلٍ أَعْتَقَ امْرَأً مُسْلِمًا اسْتَنْقَذَ اللهُ بِكُلِّ عُضْوٍ مِنْهُ عُضْوًا مِنْهُ مِنَ النَّارِ)). قَالَ سَعِيْدُ بْنُ مَرْجَانَةَ: فَانْطَلَقْتُ إِلَى عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ، فَعَمَدَ عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِلَى عَبْدٍ لَهُ قَدْ أَعْطَاهُ بِهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ عَشْرَةَ آلاَفِ دِرْهَمٍ - أَوْ أَلْفَ دِينَارٍ - فَأَعْتَقَهُ)).

[طرفه في: ٦٧١٥].

बिन हुसैन के साथी सईद बिन मरजाना ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स ने भी किसी मुसलमान (गुलाम) को आज़ाद किया तो अल्लाह तआला उस गुलाम के जिस्म के हर अ़ज़्व (अंग) की आज़ादी के बदले उस शख़्स के जिस्म के भी एक एक अ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद करेगा। सईद बिन मरजाना ने बयान किया कि फिर मैं अ़ली बिन हुसैन (ज़ैनुल आ़बेदीन रह) के यहाँ गया (और उनसे ह़दीष़ बयान की) वो हजार दिरहम या एक हजार दीनार क़ीमत दे रहे थे और आपने उसे आज़ाद कर दिया। (दीगर मक़ाम : 6715)

ह़ज़रत जैनुल आ़बेदीन बिन हुसैन (रज़ि.) ने सईद बिन मरजाना से ये ह़दीष़ सुनकर उस पर फ़ौरन अ़मल कर दिखाया और अपना एक ऐसा क़ीमती गुलाम आज़ाद कर दिया जिसकी क़ीमत के तौर पर दस हज़ार दिरहम मिल रहे थे। जिसका नाम मुत्रिफ़ था। मगर ह़ज़रत ज़ैनुल आ़बेदीन ने रुपये की त़रफ़ न देखा और एक अ़ज़ीम नेकी की तरफ़ देखा। अल्लाह वालों की यही शान होती है कि वो इंसान परवरी और हमदर्दी को हर क़ीमत पर ह़ासिल करने के लिये तैयार रहते हैं। ऐसे ही लोग हैं जिनको औलिया अल्लाह या इ़बादुर्रह़मान होने का शर्फ़ (श्रेय) ह़ासिल है।

٢- بَابُ أَيُّ الرِّقَابِ أَفْضَلُ

बाब 2 : कैसा गुलाम आज़ाद करना अफ़ज़ल है?

٢٥١٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي مُرَاوِحٍ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: ((إِيْمَانٌ بِاللهِ وَجِهَادٌ فِي سَبِيْلِهِ)). قُلْتُ فَأَيُّ الرِّقَابِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: ((أَغْلاهَا ثَمَنًا، وَأَنْفَسُهَا عِنْدَ أَهْلِهَا)). قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ أَفْعَلْ؟ قَالَ: ((تُعِينُ صَانِعًا، أَوْ تَصْنَعُ لأَخْرَقَ)). قَالَ: فَإِنْ لَمْ أَفْعَلْ؟ قَالَ: ((تَدَعُ النَّاسَ مِنَ الشَّرِّ، فَإِنَّهَا صَدَقَةٌ تَصَدَّقُ بِهَا عَلَى نَفْسِكَ)).

2518. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू मुरावेह ने और उनसे अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि कौनसा अ़मल अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह पर ईमान लाना और उसकी राह में जिहाद करना। मैंने पूछा और किस त़रह का गुलाम आज़ाद करना अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जो सबसे ज़्यादा क़ीमती हो और मालिक की नज़र में जो बहुत ज़्यादा पसन्द हो। मैंने अ़र्ज़ किया कि अगर मुझसे ये न हो सका? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि फिर किसी मुसलमान कारीगर की मदद कर या किसी बेहुनर की। उन्होंने कहा कि अगर मैं ये भी न कर सका? इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर लोगों को अपने शर से महफ़ूज़ कर दे कि ये भी एक स़दक़ा है जिसे तुम ख़ुद अपने ऊपर करोगे।

क़ीमती गुलाम, अच्छा बेहतरीन माहिर कारीगर, ख़्वाह किसी भी मुफ़ीद फ़न का माहिर हो ऐसा गुलाम मालिक की नज़र में इसलिये प्यारा होता है कि वो रोज़ाना अच्छी कमाई कर लेता है। ऐसे को आज़ाद करना बड़ा कारे ष़वाब है या फिर ऐसे इंसान की मदद करना जो बेहुनर होने की वजह से परेशान ह़ाल हो, **अल्लाहुम्म अय्यिदिल्इस्लाम वल्मुस्लिमीन. आमीन।** ह़दीष़ मे सानेअ़ का लफ़्ज़ बमा'नी कारीगर है कोई भी ह़लाल पेशा करने वाला मुराद है। कुछ ने लफ़्ज़ ज़ाइग़ा रिवायत किया है ज़ादे मुअ़ज्जमा से तो उसके मा'नी ये होंगे जो कोई तबाह ह़ाल हो या'नी फ़क़्र व फ़ाक़ा में मुब्तला होकर हलाक व बर्बाद हो रहा हो)।

बाब 3 : सूरज ग्रहण और दूसरी निशानियों के वक़्त गुलाम आज़ाद करना मुस्तह़ब है

٣- بَابُ مَا يُسْتَحَبُّ مِنَ الْعَتَاقَةِ فِي الْكُسُوفِ أَوْ الآيَاتِ

2519. हमसे मूसा बिन मसऊ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ज़ायदा बिन क़ुदामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे फ़ात़िमा बिन्ते मुंज़िर ने और उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सूरज ग्रहण के वक़्त गुलाम आज़ाद करने का हुक्म फ़र्माया है। मूसा के साथ इस ह़दीष़ को अ़ली बिन मदीनी ने भी अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दरवारदी से रिवायत किया है, उन्होंने हिशाम से। (राजेअ़ : 86)

٢٥١٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ مَسْعُودٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ بْنُ قُدَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُنْذِرِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْعَتَاقَةِ فِي كُسُوفِ الشَّمْسِ)). [راجع: ٨٦]
تَابَعَهُ عَلِيٌّ عَنِ الدَّرَاوَرْدِيِّ عَنْ هِشَامٍ.

2520. हमसे मुह़म्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इ़ष़ाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे फ़ात़िमा बिन्ते मुंज़िर ने बयान किया और उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें सूरज ग्रहण के वक़्त गुलाम आज़ाद करने का हुक्म दिया जाता था। (राजेअ़ : 86)

٢٥٢٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَثَّامٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُنْذِرِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: ((كُنَّا نُؤْمَرُ عِنْدَ الْخُسُوفِ بِالْعَتَاقَةِ)). [راجع: ٨٦]

चाँद–सूरज का ग्रहण आष़ारे क़ुदरत में से है। जिनसे अल्लाह पाक अपने बन्दों को डराता और बतलाता है कि ये सारा आ़लम एक न एक दिन उसी त़रह तहो-बाला होने वाला है। ऐसे मौक़े पर गुलाम आज़ाद करने का हुक्म दिया गया जो बड़ी नेकी है और नोऐ इंसानी की बड़ी ख़िदमत जिसका सिला ये है कि अल्लाह पाक इस गुलाम के हर अ़ज़्व के बदले आज़ाद करने वाले के हर अ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद कर देता है। अल्ह़म्दुलिल्लाह इस्लाम की उसी पाक ता'लीम का ष़मरह (नतीजा) है कि आज दुनिया से ऐसी गुलामी तक़रीबन नापेद हो चुकी है, नेकियों की तरग़ीब के सिलसिले में क़ुर्आन पाक व अह़ादीष़े नबवी का एक बड़ा ह़िस्सा गुलाम आज़ाद कराने की तर्ग़ीबात से भरपूर है। इससे ये भी अंदाज़ा किया जा सकता है कि इस्लाम की निगाह में इंसानी आज़ादी की किस क़दर क़द्रो-क़ीमत है और इंसानी गुलामी कितनी मज़्मूम शय है। तअ़ज्जुब है उन मग़्रिब ज़दा ज़हनों पर जो इस्लाम पर रज्अ़त पसन्दी का इल्ज़ाम लगाते और इस्लाम को इंसानी तरक़्क़ी व आज़ादी के ख़िलाफ़ तसव्वुर करते हैं। ऐसे लोगों को इंसाफ़ की आँखों से ता'लीमाते इस्लाम का मुत़ालआ़ करना चाहिये।

बाब 4 : अगर मुश्तरक गुलाम या लौण्डी को

٤ - بَابُ إِذَا أُعْتِقَ عَبْدًا بَيْنَ اثْنَيْنِ،

आज़ाद कर दे

أَوْ أَمَةً بَيْنَ الشُّرَكَاءِ

2521. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दो साझियों के दरम्यान साझे के गुलाम को अगर किसी एक साझी ने आज़ाद कर दिया तो अगर आज़ाद करने वाला मालदार है तो बाक़ी हिस्सों की क़ीमत का अंदाज़ा किया जाएगा फिर (उसी की तरफ़ से) पूरे गुलाम को आज़ाद कर दिया जाएगा। (राजेअ़ : 2491)

٢٥٢١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((قَالَ مَنْ أَعْتَقَ عَبْدًا بَيْنَ اثْنَيْنِ فَإِنْ كَانَ مُوسِرًا قُوِّمَ عَلَيْهِ ثُمَّ يُعْتَقُ)). [راجع: ٢٤٩١]

2522. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी मुश्तरक गुलाम में अपने हिस्से को आज़ाद कर दिया और उसके पास इतना माल है कि गुलाम की पूरी क़ीमत अदा हो सके तो उसकी क़ीमत इंसाफ़ के साथ लगाई जाएगी और बाक़ी साझियों को उनके हिस्से की क़ीमत (उसी के माल से) देकर गुलाम को उसी की तरफ़ से आज़ाद कर दिया जाएगा। वरना गुलाम का जो हिस्सा आज़ाद हो चुका हो। बाक़ी हिस्सों की आज़ादी के लिये गुलाम को ख़ुद कोशिश करके क़ीमत अदा करनी होगी। (राजेअ़ : 2491)

٢٥٢٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ: ((مَنْ أَعْتَقَ شِرْكًا لَهُ فِي عَبْدٍ، فَكَانَ لَهُ مَالٌ يَبْلُغُ ثَمَنَ الْعَبْدِ قُوِّمَ الْعَبْدُ قِيْمَةَ عَدْلٍ فَأَعْطَى شُرَكَاءَهُ حِصَصَهُمْ وَعَتَقَ عَلَيْهِ، وَإِلاَّ فَقَدْ عَتَقَ مِنْهُ مَا عَتَقَ)). [راجع: ٢٤٩١]

2523. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी मुश्तरक गुलाम के अपने हिस्से को आज़ाद किया और उसके पास गुलाम की पूरी क़ीमत अदा करने के लिये माल भी है तो पूरा गुलाम उसे आज़ाद कराना लाज़िम है लेकिन अगर उसके पास इतना माल न हो जिससे पूरे गुलाम की सहीह क़ीमत अदा की जा सके। तो फिर गुलाम का जो हिस्सा आज़ाद हो गया वही आज़ाद हुआ है। (राजेअ़ : 2491)

٢٥٢٣- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ عَنْ أَبِي أُسَامَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ أَعْتَقَ شِرْكًا لَهُ فِي مَمْلُوكٍ فَعَلَيْهِ عِتْقُهُ كُلُّهُ إِنْ كَانَ لَهُ مَالٌ يَبْلُغُ ثَمَنَهُ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ يُقَوَّمُ عَلَيْهِ قِيْمَةَ عَدْلٍ، فَأُعْتِقَ مِنْهُ مَا أَعْتَقَ)). [راجع: ٢٤٩١]

हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे बिश्र ने बयान किया और उनसे उ़बैदुल्लाह ने इख़्तिसार के साथ।

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بِشْرٌ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ . . اخْتَصَرَهُ.

2524. हमसे अबू नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़रमाया जिसने किसी (साझे के) गुलाम का अपना हिस्सा आज़ाद कर दिया। या (आप ﷺ ने) ये अल्फ़ाज़ फ़र्माए शिरका लहू फ़ी अब्दिन् (शक रावी हदीष़ अय्यूब सुख़्तियानी को हुआ) और उसके पास इतना माल भी था जिससे पूरे गुलाम की मुनासिब क़ीमत अदा की जा सकती थी तो वो गुलाम पूरी तरह आज़ाद समझा जाएगा। (बाक़ी हिस्सों की क़ीमत उसको देनी होगी) नाफ़ेअ ने बयान किया वरना उसका जो हिस्सा आज़ाद हो गया बस वो आज़ाद हो गया। अय्यूब ने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं ये (आख़िरी टुकड़ा) ख़ुद नाफ़ेअ ने अपनी तरफ़ से कहा था या ये भी हदीष़ में शामिल है।

٢٥٢٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَعْتَقَ نَصِيبًا لَهُ فِي مَمْلُوكٍ أَوْ شِرْكًا لَهُ فِي عَبْدٍ وَكَانَ لَهُ مِنَ الْمَالِ مَا يَبْلُغُ قِيمَتَهُ بِقِيمَةِ الْعَدْلِ فَهُوَ عَتِيقٌ. قَالَ نَافِعٌ : وَإِلاَّ فَقَدْ عَتَقَ مِنْهُ مَا عَتَقَ. قَالَ أَيُّوبُ: لاَ أَدْرِي أَشَيْءٌ قَالَهُ نَافِعٌ، أَوْ شَيْءٌ فِي الْحَدِيثِ)).

या'नी ये इबारत **व इल्ला फ़क़द अतक़ मिन्हु मा अतक़** हदीष़ में दाख़िल है या नाफ़ेअ का क़ौल है। मगर और दूसरे रावियों ने जैसे उबैदुल्लाह और मालिक वग़ैरह हैं, इस फ़िक़रे को हदीष़ में दाख़िल किया है और वही राजेह है।

2525. हमसे अहमद बिन मिक़्दाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको नाफ़ेअ ने ख़बर दी कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) गुलाम या बांदी के बारे में ये फ़त्वा दिया करते थे कि अगर वो कई साझियों के बीच मुश्तरक हो और एक शरीक अपना हिस्सा आज़ाद कर दे तो इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माते थे कि उस शख़्स पर पूरे गुलाम के आज़ाद कराने की ज़िम्मेदारी होगी लेकिन ये उस सूरत में कि जब शख़्से मज़्कूर के पास इतना माल हो जिससे पूरे गुलाम की क़ीमत अदा की जा सके। गुलाम की मुनासिब क़ीमत लगाकर दूसरे साझियों को उनके हिस्सों के मुताबिक़ अदायगी कर दी जाएगी और गुलाम को आज़ाद कर दिया जाएगा। इब्ने उमर (रज़ि.) ये फ़त्वा नबी करीम (ﷺ) से नक़ल करते थे। और लैष़ बिन अबी ज़िब, इब्ने इस्हाक़, जुवैरिया, यह्या बिन सईद और इस्माईल बिन उमय्या भी नाफ़ेअ से इस हदीष़ को रिवायत करते हैं, वो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से और वो नबी करीम (ﷺ) से मुख़्तसर तौर पर।

٢٥٢٥- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مِقْدَامٍ قَالَ حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يُفْتِي فِي الْعَبْدِ أَوِ الأَمَةِ يَكُونُ بَيْنَ الشُّرَكَاءِ فَيُعْتِقُ أَحَدُهُمْ نَصِيبَهُ مِنْهُ يَقُولُ: قَدْ وَجَبَ عَلَيْهِ عِتْقُهُ كُلِّهِ إِذَا كَانَ لِلَّذِي أَعْتَقَ مِنَ الْمَالِ مَا يَبْلُغُ يُقَوَّمُ مِنْ مَالِهِ قِيمَةَ الْعَدْلِ، وَيُدْفَعُ إِلَى الشُّرَكَاءِ أَنْصِبَاؤُهُمْ وَيُخَلَّى سَبِيلُ الْمُعْتَقِ، يُخْبِرُ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ)). وَرَوَاهُ اللَّيْثُ وَابْنُ أَبِي ذِئْبٍ وَابْنُ إِسْحَاقَ وَجُوَيْرِيَةُ وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ وَإِسْمَاعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.. مُخْتَصَرًا.

बाब 5 : अगर किसी शख़्स ने साझे के गुलाम में अपना हिस्सा आज़ाद कर दिया और वो नादार है तो दूसरे साझे वालों के लिये उससे मेहनत मज़दूरी कराई जाएगी जैसे मुकातब कराते हैं, उस पर सख़्ती नहीं की जाए

٥- بَابُ إِذَا أَعْتَقَ نَصِيبًا فِي عَبْدٍ وَلَيْسَ لَهُ مَالٌ اسْتُسْعِيَ الْعَبْدُ غَيْرَ مَشْقُوقٍ عَلَيْهِ، عَلَى نَحْوِ الْكِتَابَةِ

तशरीह : या'नी ख़्वाह मख़्वाह उस पर ज़ोर-जबर नहीं किया जाएगा बल्कि उससे मेहनत न हो सके तो जितना आज़ाद हुआ उतना आज़ाद, बाक़ी हिस्सा गुलाम रहेगा। ये बाब लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष़ के दोनों अल्फ़ाज़ में तत्बीक़ दी, या'नी कुछ रिवायतों में यूँ आया है, **व इल्ला फ़क़द अतक़ मिन्हु मा अतक़** और कुछ में यूँ आया है, **इस्तस्आ गैर मश्क़ूक़िन अलैहि** इमाम बुख़ारी (रह.) का मतलब ये है कि पहली सूरत जब है कि गुलाम मेहनत मशक़्क़त के क़ाबिल न हो और आज़ाद करने वाला नादार हो और दूसरी सूरत जब है कि वो मेहनत मशक़्क़त और कमाई के क़ाबिल हो।

एक दौर वो भी था कि किसी एक गुलाम को कई आदमी मिलकर ख़रीद लिया करते थे। अब अगर उन साझियों में से कोई शख़्स उस गुलाम के अपने हिस्से को आज़ाद करना चाहता तो उसके लिये इस्लाम ने ये हुक्म सादिर किया कि पहले उस गुलाम की सहीह क़ीमत तजवीज़ की जाए। फिर अपना हिस्सा आज़ाद करने वाला अगर मालदार है तो बाक़ी हिस्सेदारों को तख़्मीना के मुताबिक़ उनके हिस्सों की क़ीमतें अदा कर दे उस सूरत में वो गुलाम मुकम्मल आज़ाद हो गया। अगर वो शख़्स मालदार नहीं है तो फिर सिर्फ़ उसी का हिस्सा आज़ाद हुआ है। बाक़ी हिस्सा गुलाम ख़ुद मेहनत मज़दूरी करके अदा करे। उसी सूरत में वो पूरी आज़ादी हासिल कर सकेगा।

इस हदीष़ को हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने मुख़्तलिफ़ तुरुक़ से कई जगह ज़िक्र फ़र्माया है और उससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात किया है (निष्कर्ष निकाले हैं)। इस रोशन हक़ीक़त के होते हुए कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) आयात व अहादीष़ से मसाइल के इस्तिम्बात करने में महारते ताम्मा रखते हैं कुछ ऐसे मुतअस्सिब क़िस्म के लोग भी हैं जो हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) को ग़ैर फ़क़ीह क़रार देते हैं जो उनके तअस्सुब और कारे बातिनी का खुला षुबूत है।

हज़रत मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) को ग़ैर फ़क़ीह क़रार देना इंतिहाई कोरे बातिनी का षुबूत है मगर जो लोग बड़ी दिलेरी से सहाबी-ए-रसूल हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) तक को ग़ैर फ़क़ीह क़रार देकर राय और क़यास के ख़िलाफ़ उनकी सहीह अहादीष़ रद्द कर देने का फ़त्वा दे देते हैं, उनके लिये हज़रत इमामुद्दुनिया फ़िल् हदीष़ इमाम बुख़ारी (रह.) के लिये ऐसा कहना कुछ बईद अज़ क़यास (कल्पना से परे) नहीं है।

2526. हमसे अहमद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, कहा मैंने क़तादा से सुना, कहा कि मुझसे नज़्र बिन अनस बिन मालिक ने बयान किया, उनसे बशीर बिन नहीक ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने किसी गुलाम का एक हिस्सा आज़ाद किया। (राजेअ : 2492)

٢٥٢٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي النَّضْرُ بْنُ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ بَشِيْرِ بْنِ نَهِيْكٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَعْتَقَ شَقِيْصًا مِنْ عَبْدٍ... ح)). [راجع: ٢٤٩٢]

2527. (दूसरी सनद) हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे

٢٥٢٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ

यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी उ़रूबा ने, उनसे क़तादा ने उनसे नज़्र बिन अनस ने, उनसे बशीर बिन नहीक ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी साझे के गुलाम का अपना हिस्सा आज़ाद किया तो उसकी पूरी आज़ादी उसी के ज़िम्मे है। बशर्ते कि उसके पास माल हो। वरना गुलाम की क़ीमत लगाई जाएगी और (इससे अपने बक़िया हिस्सों की क़ीमत अदा करने की) कोशिश के लिये कहा जाएगा। लेकिन उस पर कोई सख़्ती न की जाएगी। सईद के साथ इस ह़दीष़ को हज्जाज बिन हज्जाज और अबान और मूसा बिन ख़ल्फ़ ने भी क़तादा से रिवायत किया। शुअबा ने उसे मुख़्तसर कर दिया है। (राजेअ़ : 2492)

بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ بَشِيْرِ بْنِ نَهِيْكٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَعْتَقَ نَصِيْبًا - أَوْ شَقِيْصًا - فِي مَمْلُوكٍ فَخَلاَصُهُ عَلَيْهِ فِي مَالِهِ إِنْ كَانَ لَهُ مَالٌ، وَإِلاَّ قُوِّمَ عَلَيْهِ فَاسْتُسْعِيَ بِهِ غَيْرَ مَشْقُوقٍ عَلَيْهِ)). [راجع: ٢٤٩٢]
تَابَعَهُ حَجَّاجُ بْنُ حَجَّاجٍ وَأَبَانُ وَمُوسَى بْنُ خَلَفٍ عَنْ قَتَادَةَ.. اخْتَصَرَهُ شُعْبَةُ.

बाब 6 : अगर भूल-चूक कर किसी की ज़ुबान से इताक़ (आज़ादी) या त़लाक़ या और कोई ऐसी ही चीज़ निकल जाए

٦- بَابُ الْخَطَإِ وَالنِّسْيَانِ فِي الْعَتَاقَةِ وَالطَّلاَقِ وَنَحْوِهِ

और आज़ादी सिर्फ़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये की जाती है और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर इंसान को उसकी निय्यत के मुताबिक़ अज्र मिलता है, और भूलने वाले और ग़लती से कोई काम कर बैठने वाले की कोई निय्यत नहीं होती।

وَلاَ عَتَاقَةَ إِلاَّ لِوَجْهِ اللهِ تَعَالَى
وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى)).
وَلاَ نِيَّةَ لِلنَّاسِي وَالْمُخْطِئِ.

2528. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अर ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे ज़ुरारह बिन औफ़ा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के दिलों में पैदा होने वाले वस्वसों को मुआफ़ कर दिया है जब तक वो उन्हें अमल या ज़ुबान पर न लाएँ। (राजेअ़ : 5269, 6664)

٢٥٢٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ تَجَاوَزَ لِي عَنْ أُمَّتِي مَا وَسْوَسَتْ بِهِ صُدُورُهَا مَا لَمْ تَعْمَلْ أَوْ تَكَلَّمْ)).
[طرفاه في: ٥٢٦٩، ٦٦٦٤].

तश्रीह : इस ह़दीष़ से बाब का मत़लब इस त़रह़ निकला कि जब वस्वसे और दिल के ख़्याल पर मुवाख़ज़ा (पकड़) न हुआ तो जो चीज़ ख़ाली ज़ुबान से भूल-चूक कर निकल जाएँ उन पर बत़रीक़े औला मुवाख़ज़ा न होगा। या वस्वसे और दिल के ख़्याल पर मुवाख़ज़ा इस वजह से नहीं है कि वो दिल आकर गुज़र जाता है जमता नहीं। इसी त़रह़ जो कलाम ज़ुबान से गुज़र जाए क़स्द (इरादा) न किया जाए तो उसका हुक्म भी वस्वसे की त़रह़ होगा क्योंकि दिल और ज़ुबान दोनों इंसानी हिस्से हैं और दोनों का हुक्म एक है।

2529. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैयना ने बयान किया उन्होंने कहा हमसे यह़्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी ने, उनसे अल्क़मा बिन वक़्क़ास लैष़ी ने, कहा कि मैंने उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आमाल का दारोमदार निय्यत पर है और हर शख़्स को उसकी निय्यत के मुताबिक़ फल मिलता है। पस जिसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिये हो, वो अल्लाह और उसके रसूल के लिये समझी जाएगी और जिसकी हिजरत दुनिया के लिये होगी या किसी औरत से शादी करने के लिये तो ये हिजरत महज़ उसी के लिये होगी जिसकी निय्यत से उसने हिजरत की है। (राजेअ : 1)

٢٥٢٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ عَنْ سُفْيَانَ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ التَّيْمِيِّ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ اللَّيْثِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ وَلاِمْرِيءٍ مَا نَوَى: فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُوْلِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُوْلِهِ، وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيْبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ)). [راجع: ١]

इस ह़दीष़ की शरह ऊपर गुज़र चुकी है। इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस ह़दीष़ से ये निकाला है कि जब हर काम के दुरुस्त होने के लिये निय्यत शर्त हुई तो अगर किसी शख़्स की त़लाक़ की निय्यत न थी लेकिन बेइख़्तियार कहना कुछ चाहता था ज़ुबान से ये निकल गया **अन्ता त़ालिक़** तो त़लाक़ न पड़ेगी (वह़ीदी)

मुतर्जिम कहता है कि ये दिल की बात और निय्यत का मामला है। साह़िबे मामला के लिये ज़रूरी है कि वो इस बारे में ख़ुद अपने दिल से फ़ैसला करे और अल्लाह को ह़ाज़िर नाज़िर जानकर करे और फिर ख़ुद ही अपने बारे में फ़त्वा ले कि वो ऐसी मुत़ल्लक़ा को वापस ला सकता है या नहीं। जो लोग बह़ालते होश व ह़वाश अपनी औरतों को साफ़ त़ौर पर त़लाक़ देते हैं, बाद में ह़ीले बहाने करके वापस लाना चाहते हैं। उनको जान लेना चाहिये कि ह़लाल होने के बावजूद त़लाक़ अल्लाह के नज़दीक निहायत ही मब्ग़ूज़ है।

बाब 7 : एक शख़्स ने आज़ाद करने की निय्यत से अपने ग़ुलाम से कह दिया कि वो अल्लाह के लिये है (तो वो आज़ाद हो गया) और आज़ादी के षु़बूत के लिये गवाह (ज़रूरी हैं)

٧- بَابُ إِذَا قَالَ لِعَبْدِهِ هُوَ لِلّهِ وَنَوَى الْعِتْقَ، الإِشْهَادُ فِي الْعِتْقِ

2530. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया उनसे मुहम्मद बिन बिश्र ने, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि जब वो इस्लाम क़ुबूल करने के इरादे से (मदीना के लिये) निकले तो उनके साथ उनका ग़ुलाम था (रास्ते में) वो दोनों एक–दूसरे से बिछड़ गये। फिर जब अबू हुरैरह (रज़ि.) (मदीना पहुँचने के बाद) हुज़ूर अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में बैठे हुए थे तो उनका ग़ुलाम भी अचानक आ गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अबू हुरैरह (रज़ि.)! ये लो तुम्हारा ग़ुलाम आ गया।

٢٥٣٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ نُمَيْرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ بِشْرٍ عَنْ إِسْمَاعِيْلَ عَنْ قَيْسٍ ((عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ لَمَّا أَقْبَلَ يُرِيْدُ الإِسْلاَمَ - وَمَعَهُ غُلاَمُهُ - ضَلَّ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِنْ صَاحِبِهِ، فَأَقْبَلَ بَعْدَ ذَلِكَ وَأَبُوهُرَيْرَةَ جَالِسٌ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ

अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, हुज़ूर! मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि ये गुलाम अब आज़ाद है। रावी ने कहा कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने मदीना पहुँचकर ये शे'र कहे थे

है प्यारी गो कठिन है और लम्बी मेरी रात
पर दिलाई उसने दारुल कुफ़्र से मुझको नजात

(दीगर मक़ाम : 2531, 2532, 4393)

هَذَا غُلاَمُكَ قَدْ أَتَاكَ))، فَقَالَ: أَمَا إِنِّي أُشْهِدُكَ أَنَّهُ حُرٌّ. قَالَ فَهُوَ حِيْنَ يَقُولُ:يَا لَيْلَةً مِنْ طُولِهَا وَعَنَائِهَا عَلَى أَنَّهَا مِنْ دَارَةِ الْكُفْرِ نَجَّتِ

[أطرافه في : ٢٥٣١، ٢٥٣٢، ٤٣٩٣].

तश्रीह : हालाँकि आज़ादी के लिये गवाह करने की ज़रूरत नहीं है। मगर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसको इसलिये बयान किया कि बाब की ह़दीष़ में ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) को गवाह करके अपने गुलाम को आज़ाद किया था। कुछ ने कहा इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि गुलाम को यूँ कहना वो अल्लाह का है उस वक़्त आज़ाद होगा जब कहने वाले की निय्यत आज़ाद करने की हो अगर कुछ और मतलब मुराद रखे तो वो आज़ाद न होगा। आज़ाद करने के लिये कुछ अल्फ़ाज़ तो स़रीह़ हैं जैसे कि वो आज़ाद है या मैंने तुझको आज़ाद कर दिया। कुछ किनाया हैं जैसे वो अल्लाह का है या'नी अब मेरी मिल्क उस पर नहीं रही, वो अल्लाह की मिल्क है।

2531. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन स़ईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे क़ैस ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि जब मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ था तो आते हुए रास्ते में ये शे'र कहा था,

है प्यारी कठिन है और लम्बी मेरी रात
पर दिलाई उसने दारुल कुफ़्र से मुझको नजात

उन्होंने बयान किया कि रास्ते में मेरा गुलाम मुझसे बिछड़ गया था। फिर जब मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो इस्लाम पर क़ायम रहने के लिये मैंने आप (ﷺ) से बेअ़त कर ली। मैं अभी आपके पास बैठा ही हुआ था कि वो गुलाम दिखाई दिया। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अबू हुरैरह (रज़ि.)! ये देख तेरा गुलाम भी आ गया। मैंने कहा, हुज़ूर वो अल्लाह के लिये आज़ाद है। फिर मैंने उसे आज़ाद कर दिया। इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं कि अबू कुरैब ने (अपनी रिवायत में) अबू उसामा से ये लफ़्ज़ नहीं रिवायत किया कि वो आज़ाद है। (राजेअ़ : 2530)

٢٥٣١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ عَنْ قَيْسٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((لَمَّا قَدِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قُلْتُ فِي الطَّرِيْقِ: يَا لَيْلَةً مِنْ طُولِهَا وَعَنَائِهَاعَلَى أَنَّهَا مِنْ دَارَةِ الْكُفْرِ نَجَّتِ قَالَ: وَأَبَقَ مِنِّي غُلاَمٌ لِي فِي الطَّرِيْقِ، قَالَ: فَلَمَّا قَدِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَبَايَعْتُهُ، فَبَيْنَا أَنَا عِنْدَهُ إِذْ طَلَعَ الْغُلاَمُ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، هَذَا غُلاَمُكَ)). فَقُلْتُ : هُوَ حُرٌّ لِوَجْهِ اللهِ، فَأَعْتَقْتُهُ)). لَمْ يَقُلْ أَبُو كُرَيْبٍ عَنْ أَبِي أُسَامَةَ ((حُرٌّ)).

[راجع: ٢٥٣٠]

कुछ कहते हैं कि ये शे'र अबू हुरैरह (रज़ि.) के गुलाम ने कहा था। कुछ ने उसे अबू मरष़द ग़न्वी का बतलाया है। अबू उसामा की रिवायत में इतना ही है कि वो अल्लाह के लिये है। अबू कुरैब वाली रिवायत को ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल मग़ाज़ी में वस्ल किया है।

2532. हमसे शिहाब बिन अ़ब्बाद ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन हुमैद ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने कि जब अबू हुरैरह (रज़ि.) आ रहे थे तो उनके साथ उनका

٢٥٣٢- حَدَّثَنَا شِهَابُ بْنُ عَبَّادٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ حُمَيْدٍ عَنْ إِسْمَاعِيْلَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: ((لَمَّا أَقْبَلَ أَبُوهُرَيْرَةَ

गुलाम भी था, आप इस्लाम के इरादे से आ रहे थे। अचानक रास्ते में वो गुलाम भूलकर अलग हो गया। (फिर यही ह़दीष़ बयान की) उसमें यूँ है और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा था, आप (ﷺ) को गवाह बनाता हूँ कि वो अल्लाह के लिये है। (राजेअ : 2530)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - وَمَعَهُ غُلاَمُهُ - وَهُوَ يَطْلُبُ الإِسْلاَمَ، فَضَلَّ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ. - بِهَذَا وَقَالَ - أَمَا إِنِّي أُشْهِدُكَ أَنَّهُ لِلَّهِ)).[راجع: ٢٥٣٠]

ह़ज़रत अबू हुरैरह (रह.) की निय्यत आज़ाद करने ही की थी, इसलिये उन्होंने ये लफ़्ज़ इस्ते'माल किये और आँह़ज़रत (ﷺ) को इस मामले पर गवाह बनाया, उसी से बाब का मज़्मून ष़ाबित हुआ।

बाब 8 : उम्मे वलद का बयान

٨- بَابُ أُمِّ الْوَلَدِ

अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि क़यामत की निशानियों में से एक ये भी है कि लौण्डी अपने मालिक को जने।

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ تَلِدَ الأَمَةُ رَبَّهَا)).

तश्रीह : उम्मे वलद वो लौण्डी है जो अपने मालिक को जने। अकष़र उ़लमा ये कहते हैं कि वो मालिक के मरने के बाद आज़ाद हो जाती है। इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) और इमाम शाफ़िई का यही क़ौल है और हमारे इमाम अह़मद और इस्ह़ाक़ भी उसी त़रफ़ गए हैं। कुछ उ़लमा ने कहा वो आजाद नहीं होती और उसकी बेअ़ जाइज़ है। तरजीह़ क़ौले अव्वल को ह़ासिल है। क़यामत की निशानी वाली ह़दीष़ इमाम बुख़ारी (रह.) इसलिये लाए ताकि इशारा उम्मे वलद की बेअ़ जाइज़ नहीं और उम्मे वलद का बिकना या उसका अपनी औलाद की मिल्क में रहना क़यामत की निशानी है।

इमाम क़स्त़लानी (रह.) फ़र्माते हैं, **व क़द इख़्तलफ़स्सलफु वल्ख़लफु फी इत्क़ि उम्मिल्वलदि व फी जवाज़ि बैइहा फष़्ष़ाबितु अन उ़मर अ़दमु जवाज़ि बैइहा अल्ख़** या'नी सल्फ़ और ख़ल्फ़ का उम्मे वलद की आज़ादी और उसकी बेअ़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से उसका अदमे जवाज़ ष़ाबित है। ये भी मरवी है कि अ़हदे रिसालत में फिर अ़हदे सिद्दीक़ी में उम्मे वलद की ख़रीद व फ़रोख़्त हुआ करती थी। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने अ़हद में कुछ मस़ालेह़ की बिना पर उनकी बेअ़ को मम्नूअ़ क़रार दे दिया। और बाद में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के इस फ़ैसले से किसी ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया। इस लिहाज़ से ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ये वक़्ती फ़ैसला एक इज्माई मसला बन गया है।

क़ालत्तीबी हाज़ा मिन अक्वह़लाइलि अ़ला बुत़्लानि बैइ उम्महातिल्औलादि व ज़ालिक अन्नस्सहाबत लौ लम यअ़लमू अन्नल्हक़्क़ु मअ़ उ़मर लम यताबअ़ूहू अ़लैहि व लम यस्कुतू अ़न्हू (हाशिया बुख़ारी, जिल्द 1 पेज 344) या'नी त़ीबी ने कहा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ये फ़ैसला इस बात की क़वी दलील है कि औलाद वाली लौण्डी का बेचना बात़िल है। अगर स़ह़ाबा किराम ये न जानते कि ह़क़ उ़मर (रज़ि.) के साथ है तो वो न उस बारे में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की इत्तिबाअ़ करते और न उस फ़ैस़ला पर ख़ामोश रहते। पस ष़ाबित हुआ कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का फ़ैस़ला ही ह़क़ था।

अल्फ़ाज़े ह़दीष़ **अन तलिदल्अमतु रब्बहा** के ज़ेल शारेह़ीन लिखते हैं, **अर्रब्बु लुगतन अस्सय्यिद वल्मालिक वल्मुरब्बी वल्मुन्इम वल्मुरादु हाहुना अल्मौला मअ़नाहु इत्तिसाउल्इस्लामि व इस्तीलाउ अहलिही अलत्तुर्कि वत्तिख़ाज़िहिम सिरारी व इज़ा इस्तौलदल्जारियतु कानल्वलदु बिमन्ज़िलति रब्बिहा लिअन्नहू वलदु सय्यिदिहा व लिअन्नहू फिल्हसबि कअबीहि व लिअन्नल्अमाअ यलिदनल्मुलूक फतसीरुल्इमामु मिन जुम्लतिर्रआया औ हुव किनायतन उन उक़ूक़िल्औलादि बिअंय्युमिलल्वलदु उम्महू मुआमलतस्सय्यिदि अमतहू** (शरह बुख़ारी) या'नी रब लुग़त में सय्यद और मालिक और मुरब्बी और मुन्इम को कहा जाता है यहाँ मौला मुराद है। या'नी ये कि इस्लाम बहुत से वसीअ़ हो जाएगा और मुसलमान तुर्कों पर ग़ालिब आकर उनको गुलाम बना लेंगे और जब लौण्डी बच्चा जने तो गोया उसने ख़ुद अपने मालिक को जन्म दिया। इसलिये कि वो उसके मालिक का बच्चा है या वो हसब में अपने बाप की तरह़ है या ये कि लौण्डियाँ बादशाहों को जनेंगी पस इमाम भी रिआ़या में हो जाएँगी। या इस जुम्ले में औलाद की नाफ़र्मानियों पर इशारा है कि

औलाद अपनी माँ के साथ ऐसा करेगी जैसाकि एक लौण्डी के साथ उसका अक़ाबिर बर्ताव करता है। ये भी हो सकता है कि कुर्बे क़यामत की एक ये भी निशानी है कि लौण्डियों की औलाद बादशाह बन जाएगी। वल्लाहु आलम बिस्सवाब

२٥٣٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((أَنَّ عُتْبَةَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ عَهِدَ إِلَى أَخِيْهِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَنْ يَقْبِضَ إِلَيْهِ ابْنَ وَلِيْدَةِ زَمْعَةَ قَالَ عُتْبَةُ : إِنَّهُ ابْنِي. فَلَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ زَمَنَ الْفَتْحِ أَخَذَ سَعْدٌ ابْنَ وَلِيْدَةِ زَمْعَةَ فَأَقْبَلَ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَأَقْبَلَ مَعَهُ بِعَبْدِ بْنِ زَمْعَةَ. فَقَالَ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا ابْنُ أَخِي، عَهِدَ إِلَيَّ أَنَّهُ ابْنُهُ. فَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا أَخِي، ابْنُ وَلِيْدَةِ زَمْعَةَ، وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ، فَنَظَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى ابْنِ وَلِيْدَةِ زَمْعَةَ فَإِذَا هُوَ أَشْبَهُ النَّاسِ بِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: هُوَ لَكَ يَا عَبْدَ بْنَ زَمْعَةَ، مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ وُلِدَ عَلَى فِرَاشِ أَبِيْهِ. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((احْتَجِبِي مِنْهُ يَا سَوْدَةَ بِنْتَ زَمْعَةَ)). مِمَّا رَأَى مِنْ شَبَهِهِ بِعُتْبَةَ. وَكَانَتْ سَوْدَةُ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ)). [راجع: ٢٠٥٣]

2533. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया उत्बा बिन अबी वक़्क़ास ने अपने भाई सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) को वसिय्यत की थी कि ज़म्आ की बांदी के बच्चे को अपने क़ब्ज़े में ले लें। उसने कहा था कि वो लड़का मेरा है। फिर जब फ़तहे मक्का के मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) (मक्का) तशरीफ़ लाए, तो सअद (रज़ि.) ने ज़म्आ की बांदी के लड़के को ले लिया और रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, अब्द बिन ज़म्आ भी साथ थे। सअद (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरे भाई का लड़का है। उन्होंने मुझे वसिय्यत की थी कि ये उन्हीं का लड़का है। लेकिन अब्द बिन ज़म्आ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरा भाई है। जो ज़म्आ (मेरे वालिद) की बांदी का लड़का है। उन्हीं के फ़ेराश पर पैदा हुआ है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़म्आ की बांदी के लड़के को देखा तो वाक़ई वो उत्बा की सूरत पर था। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अब्द बिन ज़म्आ! ये तुम्हारी परवरिश में रहेगा क्योंकि बच्चा तुम्हारी वालिद ही के फ़ेराश में पैदा हुआ है। आपने साथ ही ये भी फ़र्मा दिया कि, ऐ सौदा बिन्ते ज़म्आ! (उम्मुल मोमिनीन) इससे पर्दा किया कर, ये हिदायत आपने इसलिये की थी कि बच्चे में उत्बा की शबाहत देख ली थी, सौदा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की बीवी थीं। (राजेअ : 2053)

इस हृदीष़ में उम्मे वलद का ज़िक्र है, यहाँ ये हृदीष़ लाने का यही मतलब है।

बाब 9 : मुदब्बर की बेअ का बयान

٩- بَابُ بَيْعِ الْمُدَبَّرِ

मुदब्बर वो गुलाम जिसके लिये आक़ा का फ़ैसला हो कि वो उसकी वफ़ात के बाद आज़ाद हो जाएगा। हृज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का रुज्हान और हृदीष़ का मफ़्हूम यही बतलाता है कि मुदब्बर की बेअ जाइज़ है। इस बारे में इमाम क़स्तलानी (रह.) ने छः अक़्वाल नक़ल किये हैं। आख़िर में लिखते हैं, **व क़ालन्नववी अस्सहीहु अन्नल हृदीष़ अला ज़ाहिरिही व अन्नहू यजूज़ु बैअल मुदब्बरि बि कुल्लि हालिम मा लम यमुतिस सय्यदु** (क़स्तलानी) या'नी नववी ने कहा कि सहीह यही है कि हृदीष़ अपने

ज़ाहिर पर है और हर ह़ाल में मुदब्बर की बेअ़ जाइज़ है जब तक उसका आक़ा ज़िन्दा है।

2534. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि हममें से एक शख़्स ने अपनी मौत के बाद अपने गुलाम की आज़ादी के लिये कहा था। फिर नबी करीम (ﷺ) ने उस गुलाम को बुलाया और उसे बेच दिया। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर वो गुलाम अपनी आज़ादी के पहले ही साल मर गया था। (राजेअ़ : 2141)

٢٥٣٤ - حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَعْتَقَ رَجُلٌ مِنَّا عَبْدًا لَهُ عَنْ دُبُرٍ، فَدَعَا النَّبِيُّ ﷺ بِهِ فَبَاعَهُ. قَالَ جَابِرٌ: مَاتَ الْغُلاَمُ عَامَ أَوَّلَ)). [راجع: ٢١٤١]

तश्रीह़ : उसका नाम यअ़क़ूब था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने आठ सौ दिरहम पर या सात सौ या नौ सौ दिरहम पर नईम के हाथ उसको बेच डाला। इमाम शाफ़िई और इमाम अह़मद का मशहूर मज़हब यही है कि मुदब्बर की बेअ़ जाइज़ है। ह़न्फ़िया के नज़दीक मुत्लक़न मना है और मालिकिया का मज़हब है कि अगर मौला क़र्ज़दार हो और दूसरी कोई ऐसी जायदाद न हो जिससे क़र्ज़ अदा हो सके तो मुदब्बर बेचा जाएगा वरना नहीं। ह़न्फ़िया ने मुमानअ़ते बेअ़ पर जिन ह़दीष़ों से दलील ली है वो ज़ईफ़ हैं और स़ह़ीह़ ह़दीष़ से मुदब्बर की बेअ़ का जवाज़ निकलता है मौला की ह़यात में (वह़ीदी)

ह़दीष़े हाज़ा से मालिकिया के मसलक को तरजीह़ मा'लूम होती है क्योंकि ह़दीष़ मे जिस गुलाम का ज़िक्र है उसकी सूरत तक़रीबन ऐसी ही थी। बहरह़ाल मुदब्बर को उसका आक़ा अपनी ह़यात में अगर चाहे तो बेच भी सकता है क्योंकि उसकी आज़ादी मौत के साथ मशरूत़ है। मौत से पहले उस पर जुम्ला अह़काम बेअ़ व शरा लागू रहेंगे। वल्लाहु आ़लम।

बाब 10 : विलाअ (गुलाम लौण्डी का तरका) बेचना या हिबा करना

١٠ - بَابُ بَيْعِ الْوَلاَءِ وَهِبَتِهِ

तश्रीह़ : **यअ़नी वलाउल्मुअ़तिक़ व हुव मा इज़ा मातल्मुअ़तिक़ वरष़तुन मुअ़तक़तुन औ वरष़तु मुअ़तिकिही कानतिल्अ़रबु तबीउ़हू व तहिबुहू फनहा अन्हुश्शारिउ लिअन्नल्वलाअ कन्नसबि फला यज़ूलु बिइज़ालतिन व फुक़हाउल्हिजाज़ि वल्इराक़ि मज्मुऊ़न अ़ला अन्नहू ला यजूज़ु बैउ़ल्वलाइ व हिबतिही** (हाशिया बुख़ारी) या'नी विलाअ का मा'नी गुलाम या लौण्डी का तरका जब वो मर जाए तो उसका आज़ाद करने वाला उसका वारिष़ बने। अ़रब में गुलाम और आक़ा के इस रिश्ते को बेअ़ करने या हिबा करने का रिवाज था। शारेअ़ ने इससे मना कर दिया। इसलिये कि विलाअ नसब की त़रह़ है जो किसी त़ौर पर भी ज़ाइल नहीं हो सकता। इस पर तमाम फ़ुक़हा-ए-इ़राक़ और ह़िजाज़ का इत्तिफ़ाक़ है।

2535. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, आप बयान किया करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने विलाअ के बेचने और उसके हिबा करने से मना फ़र्माया था। (दीगर मक़ाम : 6756)

٢٥٣٥ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ بَيْعِ الْوَلاَءِ وَعَنْ هِبَتِهِ)). [طرفه في: ٦٧٥٦].

क्योंकि विलाअ एक ह़क़ है जो आज़ाद करने वाले को उस गुलाम पर ह़ासिल होता है जिसको आज़ाद करे। ऐसे ह़ुक़ूक़ की बेअ़ नहीं हो सकती। मा'लूम नहीं मरते वक़्त उस गुलाम के पास कुछ माल वग़ैरह रहता है या नहीं।

2536. हमसे उ़ष़्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे

٢٥٣٦ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ

जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बरीरा (रज़ि.) को मैंने ख़रीदा तो उनके मालिकों ने विलाअ की शर्त लगाई (कि आज़ादी के बाद वो उन्हीं के हक़ में क़ायम रहेगी) मैंने रसूले करीम (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उन्हें आज़ाद कर दो, विलाअ तो उसकी होती है जो क़ीमत अदा करके किसी गुलाम को आज़ाद कर दे। फिर मैंने उन्हें आज़ाद कर दिया। फिर नबी करीम (ﷺ) ने बरीरा (रज़ि.) को बुलाया और उनके शौहर के सिलसिले में उन्हें इख़्तियार दिया। बरीरा ने कहा कि अगर वो मुझे फ़लाँ फलाँ चीज़ भी दें तब भी मैं उसके पास न रहूँगी। चुनाँचे वो अपने शौहर से जुदा हो गईं। (राजेअ : 456)

حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اشْتَرَيْتُ بَرِيْرَةَ، فَاشْتَرَطَ أَهْلُهَا وَلاَءَهَا، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((أَعْتِقِيْهَا، فَإِنَّ الْوَلاَءَ لِمَنْ أَعْطَى الْوَرِقَ)). فَأَعْتَقْتُهَا، فَدَعَاهَا النَّبِيُّ ﷺ فَخَيَّرَهَا مِنْ زَوْجِهَا فَقَالَتْ: لَوْ أَعْطَانِي كَذَا وَكَذَا مَا ثَبَتُّ عِنْدَهُ. فَاخْتَارَتْ نَفْسَهَا)).

[راجع: ٤٥٦]

उसके शौहर का नाम मुग़ीष़ था। वो गुलाम था। लौण्डी जब आज़ाद हो जाए तो उसको अपने शौहर की निस्बत जो गुलाम हो इख़्तियार होता है ख़्वाह निकाह़ बाक़ी रखे या फ़स्ख़ कर दे। एक रिवायत ये भी है कि मुग़ीष़ आज़ाद था मगर क़स्तलानी ने उसके गुलाम होने को स़ह़ीह़ माना है। ये मुग़ीष़ बरीरा की जुदाई पर रोता फिरता था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने भी बरीरा (रज़ि.) से सिफ़ारिश की कि मुग़ीष़ का निकाह़ बाक़ी रखे मगर बरीरा ने किसी भी त़रह़ उसके निकाह़ में रहना मंज़ूर नहीं किया।

बाब 11 : अगर किसी मुसलमान का मुश्रिक भाई या चचा क़ैद होकर आए तो क्या (उनको छुड़ाने के लिये) उसकी त़रफ़ से फ़िदया दिया जा सकता है?

١١- بَابُ إِذَا أُسِرَ أَخُو الرَّجُلِ أَوْ عَمُّهُ هَلْ يُفَادَى إِذَا كَانَ مُشْرِكًا؟

अनस (रज़ि.) ने कहा कि ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैंने (जंगे बद्र के बाद क़ैद से आज़ाद होने के लिये) अपना भी फ़िदया दिया था और अ़क़ील (रज़ि.) का भी ह़ालाँकि उस ग़नीमत में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) का भी ह़िस्सा था जो उनके भाई अ़क़ील (रज़ि.) और चचा अ़ब्बास (रज़ि.) से मिली थी।

وَقَالَ أَنَسٌ: ((قَالَ الْعَبَّاسُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: فَادَيْتُ نَفْسِي وَفَادَيْتُ عَقِيْلاً)) وَكَانَ عَلِيٌّ لَهُ نَصِيْبٌ فِي تِلْكَ الْغَنِيْمَةِ الَّتِي أَصَابَ مِنْ أَخِيْهِ عَقِيْلٍ وَعَمِّهِ عَبَّاسٍ.

तश्रीह : ये इबारत लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने ह़न्फ़िया के क़ौल को रद्द किया है जो कहते हैं कि आदमी अगर अपने महरम का मालिक हो जाए तो मालिक होते ही वो आज़ाद हो जाएगा क्योंकि जंगे बद्र में अ़ब्बास (रज़ि.) और अ़क़ील (रज़ि.) क़ैद हुए थे और अ़ली (रज़ि.) को उन पर मिल्क का एक ह़िस्सा ह़ासिल हुआ था। इसी त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) को ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) पर मगर उनकी आज़ादी का हुक्म नहीं दिया गया। ह़न्फ़िया ये कह सकते हैं कि जब तक ग़नीमत का माल तक़्सीम न हो उस पर मिल्क ह़ासिल नहीं हो सकती। (वह़ीदी)

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का बाब का मंशा ये है कि ज़ी रह़्म महरम सिर्फ़ मिल्कियत में आ जाने से फ़ौरन आज़ाद नहीं हो जाता क्योंकि जंगे बद्र में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) और ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) के हाथों आपके मुह़तरम चचा ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) लगे और ह़ज़रत अ़क़ील (रज़ि.) जो अभी दोनों मुसलमान नहीं हुए थे और ये इस्लामी हुकूमत के क़ैदी थे। जिनको बाद में फ़िदया ही लेकर आज़ाद किया गया। पस ष़ाबित हुआ कि आदमी अगर किसी अपने ही मह़रम ग़ैर–मुस्लिम का मालिक हो जाए तो वो भी बग़ैर आज़ाद किए आज़ादी नहीं पा सकता। यही बाब का मक़्स़द है। ज़रकशी फ़र्माते हैं, **मुरादुहू अन्नल्अम्म वब्नल्अम्मि व नहवुहुमा मिन जर्विरहमि ला यअतिक़ानि अ़ला मिम्मिल्किहिमा मिन ज़वय रहमिहिमा**

लिअन्नन्नबिय्य (ﷺ) क़द मलक अम्मुहूल्अब्बास वब्नु अम्मिही अक़ील बिल्ग़नीमतिल्लती लहू फीहिमा नसीबुन व कज़ालिक अ ला व लम यअतिका अलैहिमा ख़ुलासा मतलब वही है जो ऊपर गुज़र चुका है।

2537. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम बिन उक़्बा ने बयान किया, उनसे मूसा ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार के कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुलाक़ात की और इजाज़त चाही और आकर अर्ज़ किया कि आप हमें इसकी इजाज़त दीजिए कि हम अपने भांजे अब्बास का फ़िदया मुआफ़ कर दें आपने फ़र्माया कि नहीं एक दिरहम भी न छोड़ो।
(दीगर मक़ाम : 3048, 4018)

٢٥٣٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عُقْبَةَ عَنْ مُوسَى عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رِجَالاً مِنَ الأَنْصَارِ اسْتَأْذَنُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: ائْذَنْ فَلْنَتْرُكْ لاِبْنِ أُخْتِنَا عَبَّاسٍ فِدَاءَهُ، فَقَالَ: لاَ تَدَعُونَ مِنْهُ دِرْهَمًا)).
[طرفاه في : ٣٠٤٨، ٤٠١٨].

तश्रीह : हज़रत अब्बास (रज़ि.) के वालिद अब्दुल मुत्तलिब की वालिदा सलमा अंसार में से थीं, बनी नज्जार के क़बीले की। इसलिये उनको अपना भांजा कहा। सुब्हानल्लाह! अंसार का अदब! यूँ नहीं अर्ज़ किया, अगर आप इजाज़त दें तो आपके चचा को फ़िदया मुआफ़ कर दें। क्योंकि ऐसा कहने से गोया आँहज़रत (ﷺ) पर एहसान रखना होता। आँहज़रत (ﷺ) ख़ूब जानते थे कि हज़रत अब्बास (रज़ि.) मालदार हैं। इसलिये फ़र्माया कि एक रुपया भी उनको न छोड़ो। ऐसा अदल इंसाफ़ कि अपना सगे चचा तक को भी कोई रिआयत न की पैग़म्बर की खुली हुई दलील है। समझदार आदमी को पैग़म्बरी के षुबूत के लिये किसी बड़े मुअजिज़े की ज़रूरत नहीं। आपकी एक एक ख़स्लत हज़ार हज़ार मुअजिज़ों के बराबर थी। इंसाफ़ ऐसा, अदल ऐसा, सख़ावत ऐसी, शुजाअत ऐसी, सब्र ऐसा, इस्तिक़्लाल ऐसा कि सारा मुल्क मुख़ालिफ़ हर कोई जान का दुश्मन, मगर इलानिया तौहीद का वा'ज़ फ़र्माते रहे, बुतों की हिज्व (बुराई) करते रहे। आख़िर में अरबों ऐसे सख़्त लोगों की कायापलट दी, हज़ारों बरस की आदत बुत-परस्ती छुड़ाकर उन्हीं के हाथों उनके बु तों को तुड़वाया। फिर आज तेरह सौ बरस गुज़र चुके, आपका दीन शरक़न व ग़र्बन फैल रहा है। क्या कोई झूठा आदमी ऐसा कर सकता है झूठे आदमी का नाम नेक इस तरह पर क़ायम रह सकता है। (वहीदी)

ऐनी फ़र्माते हैं **वख़्तुलिफ़ फी इल्लतिल्मनइ फक़ील अन्नहू कान मुश्रिकन व क़ील मनअहुम ख़श्यतन अंय्यक़अ फी क़ुलूबि बअज़िल्मुस्लिमीन शैउन** या'नी आप (ﷺ) ने क्यूँ मना फ़र्माया उसकी इल्लत में इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने कहा इसलिये कि उस वक़्त हज़रत अब्बास (रज़ि.) मुश्रिक थे। और ये भी कहा गया कि आपने इसलिये मना फ़र्माया कि किसी मुसलमान के दिन में कोई बदगुमानी पैदा न हो कि आप (ﷺ) ने अपने चचा के साथ नारवा रिआयत का बर्ताव किया।

बाब 12 : मुश्रिक गुलाम को आज़ाद करने का षवाब मिलेगा या नहीं ?

١٢- بَابُ عِتْقِ الْمُشْرِكِ

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्सद ये है कि ख़्वाह गुलाम मुश्रिक काफ़िर ही क्यूँ न हो, उसको आज़ाद करना भी नेकी है। मा'लूम हुआ कि जो मसाइल इंसानी मफ़ादे आम्मा (सार्वजनिक हित) के बारे में हैं उनमें इस्लाम ने मज़हबी तअस्सुब से बाला होकर महज़ इंसानी नुक़्त-ए-नज़र से देखा है। यही इस्लाम के दीने फ़ित्रत होने की दलील है, काश! मग़्रिबज़दा (पाश्चात्य) लोग इस्लाम का बग़ौर मुतालआ करके हक़ीक़ते हक़ से वाक़फ़ियत (जानकारी) हासिल करें।

2538. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी कि हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) ने अपने कुफ़्र के ज़माने

٢٥٣٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي أَنَّ حَكِيمَ بْنَ حِزَامٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

أَعْتَقَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ مِائَةَ رَقَبَةٍ، وَحَمَلَ عَلَى مِائَةِ بَعِيرٍ. فَلَمَّا أَسْلَمَ حَمَلَ عَلَى مِائَةِ بَعِيرٍ وَأَعْتَقَ مِائَةَ رَقَبَةٍ. قَالَ: فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَرَأَيْتَ أَشْيَاءَ كُنْتُ أَصْنَعُهَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ كُنْتُ أَتَحَنَّثُ بِهَا - يَعْنِي أَتَبَرَّرُ بِهَا - قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَسْلَمْتَ عَلَى مَا سَلَفَ لَكَ مِنْ خَيْرٍ)).

[راجع: ١٤٣٦]

में सौ गुलाम आज़ाद किये थे और सौ ऊँट लोगों को सवारी के लिये दिये थे। फिर जब इस्लाम लाए तो सौ ऊँट लोगों को सवारी के लिये दिये और सौ गुलाम आज़ाद किये। फिर उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, या रसूलल्लाह! कुछ उन नेक आमाल के बारे में आपका फ़त्वा क्या है जिन्हें मैं बनिय्यते षवाब कुफ़्र के ज़माने में किया करता था। (हिशाम बिन उर्वा ने कहा कि अतहन्नषु बिहा के मा'नी अतबर्रूरू बिहा के हैं) उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया, जो नेकियाँ तुम पहले कर चुके हो, वो सब क़ायम रहेंगी। (राजेअ : 1436)

तश्रीह : ये अल्लाह जल्ला जलालुहू की इनायत है अपने मुसलमान बन्दों पर हालाँकि काफ़िर की कोई नेकी मक़्बूल नहीं और आख़िरत में उसको षवाब नहीं मिलने का। मगर जो काफ़िर मुसलमान हो जाए उसके कुफ़्र के ज़माने की नेकियाँ भी क़ायम रहेंगी। अब जिन उलमा ने इस हदीष के ख़िलाफ़ राय लगाई है उनसे ये कहना चाहिये कि आख़िरत का हाल नबी करीम (ﷺ) तुमसे ज़्यादा जानते थे। जब अल्लाह एक फ़ज़्ल करता है तो तुम क्यूँ उसके फ़ज़्ल को रोकते हो। **अम् यहसुदूनन्नास अला मा आताहुमुल्लाहु मिन फ़ज़्लिही** (अन निसा : 54) (वहीदी)

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) वो जलीलुल क़द्र बुज़ुर्ग, सख़ी तर सहाबी हैं जिन्होंने इस्लाम से पहले सौ ऊँट लोगों की सवारी के लिये दिये थे और सौ गुलाम आज़ाद किये थे। फिर अल्लाह ने उनको दौलते इस्लाम से नवाज़ा तो उनको ख़्याल आया कि क्यूँ न इस्लाम में भी ऐसे ही नेक काम किये जाएँ। चुनाँचे मुसलमान होने के बाद फिर सौ ऊँट लोगों की सवारी के लिये दिये और सौ गुलाम आज़ाद किये। कहते हैं कि ये सौ ऊँट दोनों ज़मानों में उन्होंने हाजियों की सवारी के लिये पेश किये थे। फिर उनको मक्का शरीफ़ में क़ुर्बान किया। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको बशारत दी कि इस्लाम लाने के बाद उनकी कुफ़्र के दौर की भी सारी नेकियाँ षाबित रहेंगी और अल्लाह पाक सबका षवाबे अज़ीम उनको अता करेगा। इससे मक़्सदे बाब षाबित हुआ कि मुश्रिक, काफ़िर भी अगर कोई गुलाम आज़ाद करे तो उसका नेक अमल सहीह क़रार दिया जाएगा। ग़ैर–मुस्लिम जो नेकियाँ करते हैं उनको दुनिया में उनकी जज़ा मिल जाती है, **वमा लहू फ़िल् आख़िरति मिन् नसीब.** (अश्शूरा : 20) या'नी आख़िरत में उनका कोई हिस्सा बाक़ी नहीं है।

١٣- بَابُ مَنْ مَلَكَ مِنَ الْعَرَبِ وباعَ وجامَعَ وفَدى وسَبي الذُّرِّيَّة رَقِيقًا فوَهبَ

बाब 13 : अगर अरबों पर जिहाद हो और कोई उनको गुलाम बनाए फिर हिबा करे या अरबी लौण्डी से जिमाअ करे या फ़िदया ले ये सब बातें दुरुस्त हैं या बच्चों को क़ैद करे

وقولِهِ تعالى: ﴿ضَرَبَ اللهُ مَثَلاً عَبْدًا مَمْلُوكًا لاَ يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ، وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا، هَلْ يَسْتَوُونَ؟ الْحَمْدُ لِلَّهِ، بَلْ أَكْثَرُهُمْ لاَ

और अल्लाह तआला ने सूरह नहल में फ़र्माया, अल्लाह तआला ने एक मम्लूक गुलाम की मिषाल बयान की है जो बेबस हो और एक वो शख़्स जिसे हमने अपनी तरफ़ से रोज़ी दी हो, वो उसमें पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करता हो क्या ये दोनों शख़्स बराबर हो सकते हैं (हर्गिज़ नहीं) तमाम ता'रीफ़ अल्लाह के लिये है मगर

अकष़र लोग नहीं जानते। (अन् नहल : 75)

يَعْلَمُونَ﴾ [النحل : ٧٥].

कि ह़म्द की ह़क़ीक़त क्या है और ग़ैरुल्लाह जो अपने लिये ह़म्द का दावेदार हो वो किस क़दर अह़मक़ और बेअ़क़्ल है।

2539,40. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि मुझे लैष़ ने ख़बर दी, उन्हें अ़क़ील ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने कि उ़र्वा ने ज़िक्र किया कि मरवान और मिस्वर बिन मख़रमा ने उन्हें ख़बर दी कि जब हवाज़िन क़बीला के भेजे हुए लोग (मुसलमान होकर) आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आए। आपने खड़े होकर उनसे मुलाक़ात की, फिर उन लोगों ने आप (ﷺ) के सामने दरख़्वास्त की कि उनके अम्वाल और क़ैदियों को वापस कर दिये जाएँ। आप (ﷺ) खड़े हुए (ख़ुत्बा सुनाया) आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुम देखते हो मेरे साथ जो लोग हैं। (मैं अकेला होता तो तुमको वापस कर देता) और बात वही मुझे पसन्द है जो सच हो। इसलिये दो चीज़ों में से एक ही तुम्हें इख़्तियार करनी होगी, या अपना माल वापस ले लो, या अपने क़ैदियों को छुड़ा लो, इसीलिये मैंने उनकी तक़्सीम में भी देर की थी। नबी करीम (ﷺ) ने ताईफ़ से लौटते हुए (जिअ़राना में) हवाज़िन वालों का वहाँ पर कई रातों तक इंतिज़ार किया था। जब उन लोगों पर ये बात पूरी तरह ज़ाहिर हो गई कि नबी करीम (ﷺ) दो चीज़ों (माल और क़ैदी) में से सिर्फ़ एक ही को वापस कर सकते हैं। तो उन्होंने कहा कि हमें हमारे आदमी ही वापस कर दीजिए जो आपकी क़ैद में हैं। उसके बाद नबी करीम (ﷺ) ने लोगों से ख़िताब फ़र्माया, अल्लाह की ता'रीफ़ उसकी शान के मुताबिक़ करने के बाद फ़र्माया, अम्मा बअ़द! ये तुम्हारे भाई हमारे पास नादिम होकर आए हैं और मेरा भी ख़्याल ये है कि इनके आदमी जो हमारे क़ैद में हैं, इन्हें वापस कर दिये जाएँ। अब जो शख़्स अपनी ख़ुशी से इनके आदमियों को वापस करे वो ऐसा कर ले और जो शख़्स अपने हिस्से को छोड़ना न चाहे (और इस शर्त पर अपने क़ैदियों को आज़ाद करने के लिये तैयार हो कि उन क़ैदियों के बदले में) हम उसे उसके बाद सबसे पहली ग़नीमत में से जो अल्लाह तआ़ला हमें देगा उसके (उस) हिस्से के बदले उसके हवाले कर देंगे तो वो ऐसा कर ले। लोग इस पर बोल पड़े कि हम अपनी ख़ुशी से क़ैदियों को वापस करने के लिये तैयार हैं।

٢٥٣٩، ٢٥٤٠- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ : أَخْبَرَنِي اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: ذَكَرَ عُرْوَةُ أَنَّ مَرْوَانَ وَالْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَامَ حِينَ جَاءَهُ وَفْدُ هَوَازِنَ فَسَأَلُوهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَسَبْيَهُمْ، فَقَالَ: ((إِنَّ مَعِي مَنْ تَرَوْنَ، وَأَحَبُّ الْحَدِيْثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ، فَاخْتَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ إِمَّا الْمَالَ وَإِمَّا السَّبْيَ، وَقَدْ كُنْتُ اسْتَأْنَيْتُ بِهِمْ)) - وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ انْتَظَرَهُمْ بِضْعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً حِيْنَ قَفَلَ مِنَ الطَّائِفِ - فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ غَيْرُ رَادٍّ إِلَيْهِمْ إِلاَّ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ قَالُوا: فَإِنَّا نَخْتَارُ سَبْيَنَا. فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فِي النَّاسِ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ جَاؤُونَا تَائِبِيْنَ، وَإِنِّي رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ إِلَيْهِمْ سَبْيَهُمْ، فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطَيِّبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَكُونَ عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نُعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ أَوَّلِ مَا يُفِيءُ اللهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ)). فَقَالَ النَّاسُ: طَيَّبْنَا ذَلِكَ. قَالَ: ((إِنَّا لاَ نَدْرِيْ مَنْ أَذِنَ مِنْكُمْ مِمَّنْ لَمْ يَأْذَنْ. فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا عُرَفَاءُكُمْ أَمْرَكُمْ)). فَرَجَعَ النَّاسُ، فَكَلَّمَهُمْ عُرَفَاؤُهُمْ. ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ طَيَّبُوا وَأَذِنُوا.

فَهٰذَا الَّذِي بَلَغَنَا عَنْ سَبْيِ هَوَازِنَ. وَقَالَ أَنَسٌ قَالَ عَبَّاسٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَادَيْتُ نَفْسِي، وَفَادَيْتُ عَقِيلاً)).

[راجع: ٢٣٠٧، ٢٣٠٨]

आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया, लेकिन हम पर ये ज़ाहिर न हो सका कि किसने हमें इजाज़त दी है और किसने नहीं दी है। इसलिये सब लोग (अपने ख़ैमों में) वापस जाएँ और सबके चौधरी आकर उनकी राय से हमें आगाह करें। चुनाँचे सब लोग चले गये और उनके सरदारों ने (उनसे बातचीत की) फिर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपको ख़बर दी कि सबने अपनी ख़ुशी से इजाज़त दे दी है। यही वो ख़बर है जो हमें हवाज़िन के क़ैदियों के सिलसिले में मा'लूम हुई है। (ज़ुहरी ने कहा) और अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से (जब बहरीन से माल आया) तो कहा था कि (बद्र के मौक़े पर) मैंने अपना भी फ़िदया दिया था और अ़क़ील (रज़ि.) का भी।

(राजेअ़ : 2307, 2308)

तश्रीह : ये तवील हदीष़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) कई जगह लाए हैं और इससे पहले आपने बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया (निष्कर्ष निकाला) है। ह़ज़रत इमाम ने बाब मुनअ़क़िदा के ज़ेल आयते क़ुर्आनी को नक़ल किया जिससे आपने बाब का मत़लब यूँ षाबित किया कि आयत में ये क़ैद नहीं है कि वो ग़ुलाम अ़रब का न हो, अ़ज्मी और अ़रबी दोनों शामिल है।

ह़दीष़ में अ़रबी क़बीले हवाज़िन के क़ैदियों का ज़िक्र है जो जंगे हवाज़िन में कामयाबी के बाद मुसलमानों के हाथ लगे थे। इससे भी मक़सदे बाब ष़ाबित हुआ कि लौण्डी ग़ुलाम बवक़्ते मुनासिब अ़रबों को भी बनाया जा सकता है। जब आप (ﷺ) उस जंग से फ़ारिग होकर वापस हुए तो आप (ﷺ) ने अंदाज़ा कर लिया था कि क़बीला हवाज़िन वाले जल्दी ही इस्लाम क़ुबूल करके अपने क़ैदियों का मुत़ालबा करने आएँगे। चुनाँचे यही हुआ। अभी आप वापस ही हुए थे कि वफ़दे हवाज़िन अपने ऐसे ही मुत़ालबात लेकर हाज़िर हो गया। आप (ﷺ) ने उनके मुत़ालबात में से सिर्फ़ क़ैदियों की वापसी का मुत़ालबा मंज़ूर फ़र्माया मगर इस शर्त़ पर कि दूसरे तमाम मुसलमान भी इस पर तैयार हो जाएँ। चुनाँचे तमाम अहले इस्लाम उन ग़ुलामों को वापस करने पर तैयार हो गए। मगर ये लोग शुमार में बहुत थे इसलिये उनमें से हर एक की रज़ामन्दी फ़र्दन फ़र्दन मा'लूम करनी ज़रूरी थी। आपने ये हुक्म दिया कि तुम जाओ और अपने अपने चौधरियों से जो कुछ तुमको मंज़ूर हो वो बयान करो, हम उनसे पूछ लेंगे। चुनाँचे यही हुआ और आँहज़रत (ﷺ) ने उनके सारे मर्दों औरतों को वापस कर दिया।

बहरीन के माल की आमद पर आँहज़रत (ﷺ) ने तक़्सीम के लिये ऐलाने आ़म फ़र्मा दिया था, उस वक़्त ह़ज़रत सय्यदना अ़ब्बास (रज़ि.) ने उस माल की दरख़्वास्त के साथ कहा था कि मैं इसका बहुत ज़्यादा मुस्तह़िक़ हूँ, क्योंकि बद्र के मौक़े पर मैं न सिर्फ़ अपना बल्कि ह़ज़रत अ़क़ील (रज़ि.) का भी फ़िदया अदा करके खाली हाथ हो चुका हूँ। इस पर आप (ﷺ) ने उनको इजाज़त दे दी थी कि वो जिस क़दर चाहें रुपया ख़ुद आप उठा सकें, ले जाएँ। उसी त़रफ़ इशारा है और ये भी कि अ़रबों को भी बह़ालते मुक़र्ररा ग़ुलाम बनाया जा सकता है कि जंगे बद्र में ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) और ह़ज़रत अ़क़ील (रज़ि.) जैसे अशराफ़े क़ुरैश को भी दौरे ग़ुलामी से गुज़रना पड़ा। काश! ये मुअ़ज़्ज़ ह़ज़रात शुरू में ही इस्लाम से मुशर्रफ़ हो जाते। मगर सच है, **इन्नका ला तहदी मन अह़बब्त वला किन्नल्लाह यहदी मय्यशाउ.** (अल् क़सस़ : 56)

٢٥٤١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحَسَنِ قَالَ

2541. हमसे अ़ली बिन ह़सन ने बयान किया, कहा हमको

अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको इब्ने औन ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि मैंने नाफ़ेअ (रह.) को लिखा तो उन्होंने मुझे जवाब दिया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनू अल् मुस्तलिक़ पर जब हमला किया तो वो बिलकुल ग़ाफ़िल थे और उनके मवेशी पानी पी रहे थे। उनके लड़ने वालों को क़त्ल किया गया, औरतों बच्चों को क़ैद कर लिया गया। उन्हीं क़ैदियों में जुवैरिया (रज़ि.) (उम्मुल मोमिनीन) भी थीं। (नाफ़ेअ ने लिखा था कि) ये ह़दीष़ मुझसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान की थी, वो ख़ुद भी इस्लामी फ़ौज के साथ थे।

أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ قَالَ: ((كَتَبْتُ إِلَى نَافِعٍ، فَكَتَبَ إِلَيَّ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَغَارَ عَلَى بَنِي الْمُصْطَلِقِ وَهُمْ غَارُّونَ وَأَنْعَامُهُمْ تُسْقَى عَلَى الْمَاءِ، فَقَتَلَ مُقَاتِلَتَهُمْ وَسَبَى ذَرَارِيَّهُمْ وَأَصَابَ يَوْمَئِذٍ جُوَيْرِيَةَ. حَدَّثَنِي بِهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، وَكَانَ فِي ذَلِكَ الْجَيْشِ)).

ह़ज़रत जुवैरिया (रज़ि.) ह़ारिष़ बिन अबी ज़ेरार की बेटी थीं। उनका बाप बनी मुस्तलिक़ का सरदार था। कहते हैं पहले ये ष़ाबित बिन क़ैस के ह़िस्से में आईं। उन्होंने उनको मुकातब कर दिया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने बदले-किताबत अदा करके उनसे निकाह़ कर लिया और आप (ﷺ) के निकाह़ कर लेने की वजह से लोगों ने बनी मुस्तलिक़ के कुल क़ैदियों को आज़ाद कर दिया, इस ख़्याल से कि वो आँह़ज़रत (ﷺ) के रिश्तेदार हो गए। (वह़ीदी)

बनू मुस्तलिक़ अरब क़बीला था जिसे गुलाम बनाया गया था। इसी से बाब की मुताबक़त ष़ाबित हुई कि अरबों को भी लौण्डी गुलाम बनाया जा सकता है अगर वो काफ़िर हों और इस्लामी हुकूमत के मुक़ाबले पर लड़ने को आएँ।

2542. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें रबीआ बिन अबी अब्दुर्रह़मान ने, उन्हें मुह़म्मद बिन यह़्या बिन ह़ब्बान ने, उनसे इब्ने मुहैरीज़ ने कि मैंने अबू सईद (रज़ि.) को देखा तो उनसे एक सवाल किया, आपने जवाब में कहा कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़्वा बनी मुस्तलिक़ के लिये निकले। उस ग़ज़्वे में हमें (क़बीला बनी मुस्तलिक़ के) अरब क़ैदी हाथ आए। (रास्ते ही में) हमें औरतों की ख़्वाहिश हुई और औरत से अलग रहना हमको मुश्किल हो गया। हमने चाहा कि अज़्ल कर लें। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया, तुम अज़्ल कर सकते हो, उसमें कोई क़बाह़त नहीं लेकिन जिन रूहों की भी क़यामत तक के लिये पैदाइश मुक़द्दर हो चुकी है वो तो ज़रूर पैदा होकर रहेंगी। (लिहाज़ा तुम्हारा अज़्ल करना बेकार है) (राजेअ: 2229)

٢٥٤٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ رَبِيْعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ عَنِ ابْنِ مُحَيْرِيْزٍ قَالَ: رَأَيْتُ أَبَا سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ بَنِي الْمُصْطَلِقِ فَأَصَبْنَا سَبْيًا مِنْ سَبْيِ الْعَرَبِ فَاشْتَهَيْنَا النِّسَاءَ فَاشْتَدَّتْ عَلَيْنَا الْعُزْبَةُ وَأَحْبَبْنَا الْعَزْلَ، فَسَأَلْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((مَا عَلَيْكُمْ أَنْ لاَ تَفْعَلُوا، مَا مِنْ نَسَمَةٍ كَائِنَةٍ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلاَّ وَهِيَ كَائِنَةٌ)).

[راجع: ٢٢٢٩]

तश्रीह: अज़्ल कहते हैं इंज़ाल के वक़्त ज़कर बाहर निकाल लेने को ताकि रह़म में मनी न पहुँचे और औरत को ह़मल न रहे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसको पसन्द नहीं फ़र्माया, इसीलिये इर्शाद हुआ कि तुम्हारे अज़्ल करने से मुक़द्दरे इलाही के मुताबिक़ पैदा होने वाले बच्चे की पैदाइश रुक नहीं सकती। अज़्ल को आम तौर पर मकरूह समझा गया, क्योंकि उसमें क़त्अ और तक़्लीले नस्ल है। बह़ालाते मौजूदा जो फैमिली प्लानिंग के नाम से तक़्लीले नस्ल के प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं, शरीअते इस्लामी से इसका अ़लल इत्लाक़ जवाज़ ढूँढना स़ह़ीह़ नहीं है बल्कि ये क़त्ए नस्ल ही की एक सूरत है।

2543. हमसे ज़ुहैर बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर बिन अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे अम्मारा बिन क़अक़ाअ, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैं बनू तमीम से हमेशा मुहब्बत करता रहा हूँ। (दूसरी सनद इमाम बुख़ारी रह. ने कहा) मुझसे इब्ने सलाम ने बयान किया, कहा हमको जरीर बिन अब्दुल हमीद ने ख़बर दी, उन्हें मुग़ीरह ने, उन्हें हारिष़ ने, उन्हें अबू ज़रआ ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, (तीसरी सनद) और मुग़ीरह ने अम्मारा से रिवायत की, उन्होंने अबू ज़रआ से कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया, तीन बातों की वजह से जिन्हें मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, मैं बनू तमीम से हमेशा मुहब्बत करता हूँ। रसूले करीम (ﷺ) ने उनके बारे में फ़र्माया कि ये लोग दज्जाल के मुक़ाबले में मेरी उम्मत में सबसे ज़्यादा सख़्त मुख़ालिफ़ होंगे। उन्होंने बयान किया कि (एक बार) बनू तमीम के यहाँ से ज़कात (वसूल होकर आई) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ये हमारी क़ौम की ज़कात है। बनू तमीम की एक औरत क़ैद होकर हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास थी तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि उसे आज़ाद कर दे कि ये हज़रत इस्माईल (अलै.) की औलाद में से है।

٢٥٤٣- حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((لاَ أَزَالُ أُحِبُّ بَنِي تَمِيْمٍ . ح)). وَحَدَّثَنِي ابْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا جَرِيْرُ بْنُ عَبْدِ الْحَمِيْدِ عَنِ الْمُغِيْرَةِ عَنِ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ . ح وَعَنْ عُمَارَةَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: ((مَا زِلْتُ أُحِبُّ بَنِي تَمِيمٍ مُنْذُ ثَلاَثٍ سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَقُولُ فِيْهِمْ، سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((هُمْ أَشَدُّ أُمَّتِي عَلَى الدَّجَّالِ)) قَالَ: وَجَاءَتْ صَدَقَاتُهُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَذِهِ صَدَقَاتُ قَوْمِنَا)). وَكَانَتْ سَبِيَّةٌ مِنْهُمْ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَ: ((أَعْتِقِيْهَا فَإِنَّهَا مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيْلَ)).

[طرفه في : ٤٣٦٦].

तश्रीह : इस हदीष़ में ज़िक्र है कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक लौण्डी औरत के आज़ाद करने का हज़रत आइशा (रज़ि.) को हुक्म दिया और साथ ही इर्शाद हुआ कि ये औरत हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के ख़ानदान से रिश्ता रखती है। लिहाज़ा मुअज़्ज़ज़तरीन ख़ानदानी औरत है उसे आज़ाद कर दो। इससे मक़सदे बाब ष़ाबित हुआ कि अरबों को भी गुलाम बनाया जा सकता है। इस औरत का ता'ल्लुक़ बनी तमीम से था और बनू तमीम के लिये आँहज़रत (ﷺ) ने ये शर्फ़ अता फ़र्माया कि उनको अपनी क़ौम क़रार दिया, क्योंकि ये एक अज़ीम अरब क़बीला था जो तमीम बिन मुर्रह की तरफ़ मन्सूब था। जिसका नसबनामा यूँ रसूले करीम (ﷺ) से मिलता है। तमीम बिन मुर्रह बिन अद बिन तान्हा बिन इल्यास बिन ज़र। यहाँ पहुँचकर ये नसबनामा रसूले करीम (ﷺ) से मिल जाता है।

इस क़बीले ने बाद में इस्लाम कुबूल कर लिया था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत में दज्जाल के मुक़ाबले पर ये क़बीला बहुत सख़्त होगा जो लड़ाई में सख़्ती के साथ दज्जाल का मुक़ाबला करेगा। एक बार बनू तमीम की ज़कात वसूल होकर दरबारे रिसालत में पहुँची तो आपने अज़राहे करम फ़र्माया कि ये हमारी क़ौम की ज़कात है। आँहज़रत (ﷺ) ने बहालते कुफ़्र भी इस ख़ानदान की इस क़दर इज़्ज़त अफ़ज़ाई की कि इससे ता'ल्लुक़ रखने वाली एक लौण्डी ख़ातून को आज़ाद कर दिया और फ़र्माया कि ये औलादे इस्माईल में से है।

इस हदीष़ से नस्बी शराफ़त पर भी काफ़ी रोशनी पड़ती है। इस्लाम ने नसबी शराफ़त में गुलू से मना फ़र्माया है और हद्दे ए'तिदाल में नसबी शराफ़त को आपने क़ायम रखा है जैसा कि इस हदीष़ से पीछे मज़्कूरशुदा वाक़ियात से ष़ाबित है कि आप (ﷺ) ने जंगे हुनैन के मौक़े पर अपने आपको अब्दुल मुत्तलिब का फ़रज़न्द होने पर इज़्हारे फ़ख़्र फ़र्माया था। मा'लूम हुआ कि इस्लाम से पहले के ग़ैर-मुस्लिम आबा व अज्दाद (पूर्वजों) पर एक मुनासिब हद तक फ़ख़्र किया जा सकता है लेकिन

अगर यही फ़ख़्र बाइ़षे घमण्ड व गुरूर बन जाए कि दूसरे लोग निगाह में ह़क़ीर नज़र आएँ तो इस ह़ालत में ख़ानदानी फ़ख़्र कुफ़्र का शैवा है, जो मुसलमान के लिये हर्गिज़ लायक़ नहीं। फ़तह़े मक्का पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने क़ुरैश की इस नुख़ुव्वत के ख़िलाफ़ इज़्हारे नाराज़गी फ़र्माकर क़ुरैश को आगाह फ़र्माया था कि **कुल्लुकुम बनू आदम व आदमु मिन तुराब** तुम सब आदम की औलाद हो और आदम की पैदाइश मिट्टी से हुई है।

बाब 14 : जो शख़्स अपनी लौण्डी को अदब और इल्म सिखाए, उसकी फ़ज़ीलत का बयान

١٤- بَابُ فَضْلِ مَنْ أَدَّبَ جَارِيَتَهُ وَعَلَّمَهَا

2544. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने मुह़म्मद बिन फ़ुज़ैल से सुना, उन्होंने मुत़र्रफ़ से सुना, उन्होंने शअ़बी से, उन्होंने अबू बुर्दा से, उन्होंने ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स के पास कोई लौण्डी हो और वो उसकी अच्छी परवरिश करे और उसके साथ अच्छा मामला करे, फिर उसे आज़ाद करके उससे निकाह़ कर ले तो उसको दोहरा ष़वाब मिलेगा। (राजेअ़ : 97)

٢٥٤٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ سَمِعَ مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ مُطَرِّفٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ كَانَتْ لَهُ جَارِيَةٌ فَعَلَّمَهَا فَأَحْسَنَ إِلَيْهَا، ثُمَّ أَعْتَقَهَا وَتَزَوَّجَهَا كَانَ لَهُ أَجْرَانِ)). [راجع: ٩٧]

अल्ह़म्दुलिल्लाह कि ह़रमे का'बा मक्कतुल मुकर्रमा मे यकुम मुह़र्रम 1390 हिजरी में इस पारे के मतन का लफ़्ज़-लफ़्ज़ पढ़ना, फिर तर्जुमा लिखना शुरू किया था, साथ ही रब्बे का'बा से दुआएँ भी करता रहा कि वो इस अ़ज़ीम ख़िदमत के लिये स़ह़ीह़ फ़हम अ़त़ा करे। आज 11 मुह़र्रम 90 हिजरी को बऔनिही तआ़ला इस ह़दीष़ तक पहुँच गया हूँ। पारा 9, 10 के मतन को का'बा व मदीनतुल मुनव्वरा में बैठकर पढ़ने की नज़्र भी मा'नी थी। अल्लाह का बेह़द शुक्र है कि यहाँ तक कामयाबी हो रही है। अल्लाह पाक से दुआ है कि वो बक़ाया को भी पूरा कराए और क़लम में त़ाक़त और दिमाग़ में क़ुव्वत अ़त़ा फ़र्माए, आमीन षुम्मा आमीन।

बाब 15 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि, गुलाम तुम्हारे भाई हैं पस उनको भी तुम उसी में से खिलाओ जो तुम ख़ुद खाते हो

١٥- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((الْعَبِيْدُ إِخْوَانُكُم فَأَطْعِمُوهُمْ مِمَّا تَأْكُلُونَ))

और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि, और अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी भी चीज़ को शरीक न ठहराओ और माँ–बाप के साथ नेक सुलूक़ करो और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिस्कीनों के साथ और रिश्तेदार पड़ौसियों और ग़ैर रिश्तेदार पड़ौसियों और पास बैठनेवालों और मुसाफ़िर और लौण्डी गुलामों के साथ (अच्छा सुलूक़ करो) बेशक अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को पसन्द नहीं फ़र्माता जो तकब्बुर करने और अकड़ने वाला और घमण्ड करने वाला हो। (आयत में) ज़िल क़ुर्बा से

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَاعْبُدُوا اللهَ وَلاَ تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا، وَبِذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِيْنِ، وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ، إِنَّ اللهَ لاَ يُحِبُّ مَنْ كَانَ

मुराद रिश्तेदार हैं, जंबि से ग़ैर या'नी अजनबी और अल जारुल जंबि से मुराद सफ़र का साथी है। (अन निसा : 36)

مُخْتَالاً فَخُوراً﴾ [النساء: ٣٦].

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने मक़्सदे बाब षाबित करने के लिये आयते क़ुर्आनी को नक़ल किया जिसमें बाब का तर्जुमा लफ़्ज़ **वमा मलकत आयमानुकुम** से निकलता है जिससे लौण्डी गुलाम मुराद हैं। उनके साथ हुस्ने सुलूक़ करना भी इतना ही ज़रूरी है जितना कि दूसरे क़राबतदारों और यतीमों व मिस्कीनों के साथ ज़रूरी है। अहदे रिसालत पनाह वो दौर था जिसमें इंसानों को लौण्डी गुलाम बनाकर जानवरों की तरह ख़रीदा और बेचा जाता था और दुनिया के किसी क़ानून और मज़हब में इसकी रोक-टोक न थी। उन हालात में पैग़म्बरे इस्लाम अलैह अल्फ़ अल्फ़ सलातु वस्सलाम ने अपनी हुस्ने तदबीर के साथ इस रस्म को ख़त्म करने का तरीक़ा अपनाया और इस बारे में ऐसी पाकीज़ा हिदायतें पेश कीं कि आम मुसलमान अपने गुलामों को इंसानियत का दर्जा देते। लिहाज़ा उनको अपने भाई-बन्धु समझने लग गए। उनके साथ हर मुम्किन सुलूके एहसान ईमान का ख़ास्सा बतलाया गया जिसके नतीजे में रफ़्ता रफ़्ता ये बुरी रस्म इंसानी दुनिया से ख़त्म हो गई। ये उसी पाकीज़ा ता'लीम का अषर था। ये ज़रूर है कि अब गुलामी की और बदतरीन सूरतें वजूद में आ गई हैं।

2545. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, हसमे वासिल बिन हय्यान ने जो कुबड़े थे, बयान किया, कहा कि मैंने मअ़रूर बिन सुवैद से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) को देखा कि उनके बदन पर भी एक जोड़ा था। हमने उसका सबब पूछा तो उन्होंने बतलाया कि एक बार मेरी एक साहब (या'नी बिलाल रज़ि. से) से कुछ गाली—गलौच हो गई थी। उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से मेरी शिकायत की, आप (ﷺ) ने मुझसे पूछा कि क्या तुमने उन्हें उनकी माँ की तरफ़ से आर दिलाई है? फिर आपने फ़र्माया, तुम्हारे गुलाम भी तुम्हारे भाई हैं अगरचे अल्लाह तआला ने उन्हें तुम्हारी मातहती में दे रखा है। इसलिये जिसका भी कोई भाई उसके क़ब्ज़े में हो उसे वही खिलाए जो वो ख़ुद खाता है और वही पहनाए जो वो ख़ुद पहनता है और उन पर उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ न डाले। लेकिन अगर उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ डालो तो फिर उनकी ख़ुद मदद भी कर दिया करो। (राजेअ : 30)

٢٥٤٥- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا وَاصِلٌ الأَحْدَبُ قَالَ: سَمِعْتُ الْمَعْرُورَ بْنَ سُوَيْدٍ قَالَ: ((رَأَيْتُ أَبَا ذَرٍّ الْغِفَارِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَعَلَيْهِ حُلَّةٌ وَعَلَى غُلاَمِهِ حُلَّةٌ، فَسَأَلْنَاهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: إِنِّي سَابَبْتُ رَجُلاً فَشَكَانِي إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ ((أَعَيَّرْتَهُ بِأُمِّهِ؟)) ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ إِخْوَانَكُمْ خَوَلُكُمْ جَعَلَهُمُ اللهُ تَحْتَ أَيْدِيكُمْ، فَمَنْ كَانَ أَخُوهُ تَحْتَ يَدِهِ فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَأْكُلُ وَلْيُلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ، وَلاَ تُكَلِّفُوهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ، فَإِنْ كَلَّفْتُمُوهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ فَأَعِينُوهُمْ)). [راجع: ٣٠]

ताकि वो आसानी से इस ख़िदमत को अंजाम दे सकें।

रिवायत में मज़्कूर गुलाम से हज़रत बिलाल (रज़ि.) मुराद हैं। कुछ ने कहा अबू ज़र (रज़ि.) के भाईयों में से कोई थे जैसे मुस्लिम की रिवायत में है। गुलाम को साथ खिलाने का हुक्म इस्तिह़बाबन है। हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) अपने गुलाम को साथ ही खिलाते और अपने ही जैसा कपड़ा पहनाते थे। आयाते बाब में ज़िल् क़ुर्बा से रिश्तेदार मुराद हैं । ये इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है, उसको अ़ली बिन अबी तलहा ने बयान किया और जंबि से कुछ ने यहूदी और नस्रानी मुराद रखा है। ये

इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम नेनिकाला। और जारुल जम्ब की जो तफ़्सीर इमाम बुख़ारी (रह.) ने की है वो मुजाहिद और क़तादा से मन्क़ूल है। इस ह़दीष़ से उन मुआनिदीने इस्लाम (इस्लाम के निंदकों) की भी तर्दीद होती है जो इस्लाम पर गुलामी का इल्ज़ाम लगाते हैं। ह़ालाँकि रस्मे गुलामी की जड़ों को इस्लाम ही ने खोखला किया है।

बाब 16 : जब गुलाम अपने रब की इबादत भी अच्छी त़रह़ करे और अपने आक़ा की ख़ैर ख़्वाही भी तो उसके ष़वाब का बयान

١٦- بَابُ الْعَبْدِ إِذَا أَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهِ، وَنَصَحَ سَيِّدَهُ

2546. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से, उन्होंने नाफ़ेअ़ से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गुलाम जो अपने आक़ा का ख़ैर ख़्वाह भी और अपने रब की इबादत भी अच्छी त़रह़ करता हो तो उसे दो गुना ष़वाब मिलता है। (दीगर मक़ाम : 2550)

٢٥٤٦- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الْعَبْدُ إِذَا نَصَحَ سَيِّدَهُ وَأَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهِ كَانَ لَهُ أَجْرُهُ مَرَّتَيْنِ)).

[طرفه في : ٢٥٥٠].

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) ने जहाँ मालिकों को अपने लौण्डी गुलामों के साथ एह़सान व सुलूक करने की हिदायत फ़र्माई वहाँ लौण्डी गुलामों को भी अह़सन त़रीक़े पर समझाया कि वो इस्लामी फ़राइज़ की अदायगी के बाद अपना अहम फ़रीज़ा अपने मालिकों की ख़ैर-ख़्वाही करें, उनको नफ़ा-रसानी समझें। मालिक और आक़ा के भी ह़ुक़ूक़ हैं। उनके साथ वफ़ादारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें। उनके लिये ज़रर-रसानी का कभी तस़व्वुर भी न करें। वो ऐसा करेंगे तो उनको दोगुना ष़वाब मिलेगा। फ़राइज़े इस्लामी की अदायगी का ष़वाब और अपने मालिक की ख़िदमत का ष़वाब, उसी दोगुने ष़वाब का तस़व्वुर था जिस पर ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने वो तमन्ना ज़ाहिर फ़र्माई जो अगली रिवायत में मज़्कूर है।

2547. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान षौरी ने ख़बर दी स़ालेह से, उन्होंने शअ़बी से, उन्होंने अबू बुर्दा से और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिस किसी के पास भी कोई बांदी हो और वो उसे पूरे ह़ुस्न व ख़ूबी के साथ अदब सिखाए, फिर आज़ाद करके उससे शादी कर ले तो उसे दोगुना ष़वाब मिलता है और जो गुलाम अल्लाह तआ़ला के ह़ुक़ूक़ भी अदा कर ले और अपने आक़ाओं के भी तो उसे भी दोगुना ष़वाब मिलता है। (राजेअ़ : 97)

٢٥٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ صَالِحٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيُّمَا رَجُلٍ كَانَتْ لَهُ جَارِيَةٌ أَدَّبَهَا فَأَحْسَنَ تَأْدِيبَهَا وَأَعْتَقَهَا وَتَزَوَّجَهَا فَلَهُ أَجْرَانِ، وَأَيُّمَا عَبْدٍ أَدَّى حَقَّ اللهِ وَحَقَّ مَوَالِيهِ فَلَهُ أَجْرَانِ)).

[راجع: ٩٧]

इस्लामी शरीअ़त में औरत मर्द सबको ता'लीम देना चाहिये, यहाँ तक कि लौण्डी गुलाम को भी इल्म ह़ासिल कराना हर मुसलमान मर्द औरत पर फ़र्ज़ है। मगर इल्म वो जिससे शराफ़त और इंसानियत पैदा हो, न आज के उ़लूमे मुरव्वजा जो इंसान नुमा ह़ैवानों में इज़ाफ़ा कराते हैं। **अल्इल्मु क़ाल लिल्लाहि क़ाल रसूलुहू क़ालस़्स़ह़ाबतु हुम उलुल्इर्फ़ानि** या'नी ह़क़ीक़ी इल्म वो है जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) फिर आपके स़ह़ाबा ने पेशा फ़र्माया।

2548. हमसे बिश्र बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको

٢٥٤٨- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ

अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्होंने ज़ुहरी से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, उन्होंने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गुलाम जो किसी की मिल्कियत में हो और नेकोकार हो तो उसे दो सवाब मिलते हैं और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है अगर अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद, हज्ज और वालिदा की ख़िदमत (की रोक) न होती तो मैं पसन्द करता कि गुलाम रहकर मरूँ।

أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولُ: قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لِلْعَبْدِ الْمَمْلُوكِ الصَّالِحِ أَجْرَانِ. وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْلاَ الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَالْحَجُّ وَبِرُّ أُمِّي لأَحْبَبْتُ أَنْ أَمُوتَ وَأَنَا مَمْلُوكٌ)).

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का मतलब ये है कि गुलाम पर ज़िहाद फ़र्ज़ नहीं है, उसी तरह हज्ज भी। और वो बग़ैर अपने मालिक की इजाज़त के जिहाद और हज्ज के लिये जा भी नहीं सकता। इसी तरह अपनी माँ की ख़िदमत भी आज़ादी के साथ नहीं कर सकता। इसलिये अगर ये बातें न होतीं तो मैं आज़ादी की निस्बत किसी का गुलाम रहना ज़्यादा पसन्द करता। **क़ाल इब्नु बत्ताल हुव मिन क़ौलि अबी हुरैरत व कज़ालिक क़ालहुद्दाऊदी व गैरहू अन्नहू मुदरजुन फ़िल्हदीषि व कद सर्रह बिल्इदराजिल्इस्माईली मिन तरीक़िन आखर अन अब्दिल्लाहि ब्निल्मुबारकि बिलफ़्ज़ि वल्लज़ी नफ़्सि अबी हुरैरत बियदिही व सर्रह मुस्लिमुन अयज़न बिज़ालिक** (हाशिया बुख़ारी) या'नी ये क़ौल हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक से सराहतन ये आया है और मुस्लिम में भी ये सराहत मौजूद है। वल्लाहु आलम।

2549. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने आ'मश से, उनसे अबू सालेह ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कितना अच्छा है किसी का वो गुलाम जो अपने रब की इबादत तमाम हुस्न व ख़ूबी के साथ बजाए और अपने मालिक की ख़ैर—ख़्वाही भी करता रहे।

٢٥٤٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((نِعِمَّا لأَحَدِهِمْ يُحْسِنُ عِبَادَةَ رَبِّهِ، وَيَنْصَحُ لِسَيِّدِهِ)).

बाब 17 : गुलाम पर दस्तदराज़ी करना और यूँ कहना कि ये मेरा गुलाम है या लौण्डी मकरूह है

١٧- بَابُ كَرَاهِيَةِ التَّطَاوُلِ عَلَى الرَّقِيْقِ، وَقَوْلِهِ عَبْدِي أَوْ أَمَتِي

हाफ़िज़ ने कहा कि कराहियते तंज़ीही मुराद है क्योंकि गुलाम से अपने को आला समझना एक तरह का तकब्बुर है। गुलाम भी हमारी तरह अल्लाह का बन्दा है। आदमी अपने तईं जानवर से भी बदतर समझे गुलाम तो आदमी है और हमारी तरह आदम की औलाद है और गुलाम-लौण्डी इस वजह से कहना मकरूह है कि कोई उससे हक़ीक़ी मा'नी न समझे क्योंकि हक़ीक़ी बन्दगी तो सिवाय अल्लाह के और किसी के लिये नहीं हो सकती। (वहीदी)

आगे मुज्तहिदे मुत्लक़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने आयाते क़ुर्आनी नक़ल की हैं जिनसे लफ़्ज़े गुलाम, लौण्डी और सय्यद के अल्फ़ाज़ इस्ते'माल करने का जवाज़ षाबित किया है। ये सब मिजाज़ी मआनी में हैं। लफ़्ज़ अब्द, मम्लूक और सय्यद आयाते क़ुर्आनी व अहादीषे नबवी में मिलते हैं जैसा कि यहाँ मन्क़ूल हैं, उनसे उन अल्फ़ाज़ का मिजाज़ी मआनी में इस्ते'माल षाबित हुआ। **क़ाल इब्नु बत्ताल जाज़ अंय्यक़ूलर्रजुलु अब्दी औ अमती बिक़ौलिही तआला वस्सालिहीन मिन इबादिकुम व अमाइकुम व इन्नमा नहा अन्हु अला सबीलिल्गिल्ज़ति ला अला सबीलित्तहरीमि व करिह ज़ालिक लिइश्तिराकिल्लफ़्ज़ि इज़ युक़ालु अब्दुल्लाहि व अमतुल्लाहि फ़अला हाज़ा ला यम्बगित्तस्मिय्यतु बिनहवि अब्दिर्रसूलि व अब्दिन्नबिय्यि व नहव ज़ालिक मिम्मा युज़ाफ़ुल्अब्दु फ़ीहि इला गैरिल्लाहि तआला** (हाशिया बुख़ारी)

وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ﴾، وَقَالَ: ﴿عَبْدًا مَمْلُوكًا﴾. ﴿وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَى الْبَابِ﴾ وَقَالَ: ﴿مِنْ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ﴾. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((قُومُوا إِلَى سَيِّدِكُمْ)). وَ﴿اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ﴾: سَيِّدِكَ. وَ((مَنْ سَيِّدُكُمْ)).

और सूरह नूर में अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि, और तुम्हारे गुलामों और तुम्हारी बांदियों में जो नेक बख़्त हैं।, और (सूरह नहल में फ़र्माया) मम्लूक़ गुलाम, नीज़ (सूरह कहफ़ में फ़र्माया) और दोनों (हज़रत यूसुफ़ और ज़ुलेख़ा) ने अपने आक़ा (अज़ीज़े मिस्र) को दरवाज़े पर पाया। और अल्लाह तआला ने (सूरह निसा में) फ़र्माया, तुम्हारी मुसलमान बांदियों में से। और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। अपने सरदार के लेने के लिये उठो (सअद बिन मुआज़ रज़ि. के लिये) और अल्लाह तआला ने सूरह यूसुफ़ में फ़र्माया, (यूसुफ़ अलै. ने अपने जेलखाने के साथी से कहा था कि) अपने सरदार (हाकिम) के यहाँ मेरा ज़िक्र कर देना। और नबी करीम (ﷺ) ने (बनू सलमा से दरयाफ़्त किया था कि) तुम्हारा सरदार कौन है?

٢٥٥٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا نَصَحَ الْعَبْدُ سَيِّدَهُ وَأَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهِ كَانَ لَهُ أَجْرُهُ مَرَّتَيْنِ)).
[راجع: ٢٥٤٦]

2550. हमसे मुसद्दद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने कहा और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। जब गुलाम अपने आक़ा की ख़ैर–ख़्वाही करे और अपने रब की इबादत तमाम हुस्न व ख़ूबी के साथ करे तो उसे दोगुना ष़वाब मिलता है। (राजेअ : 2546)

रिवायत में लफ़्ज़ अब्द और सय्यद इस्ते'माल हुए हैं और यही बाब का मक़सद है।

٢٥٥١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمَمْلُوكُ الَّذِي يُحْسِنُ عِبَادَةَ رَبِّهِ، وَيُؤَدِّي إِلَى سَيِّدِهِ الَّذِي لَهُ عَلَيْهِ مِنَ الْحَقِّ وَالنَّصِيحَةِ وَالطَّاعَةِ، لَهُ أَجْرَانِ)).
[راجع: ٩٧]

2551. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने बुरैद बिन अब्दुल्लाह से, वो अबू बुर्दा से और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। गुलाम जो अपने रब की इबादत अहसन तरीक़े के साथ बजा लाए और अपने आक़ा के जो उस पर ख़ैर–ख़्वाही और फ़र्मांबरदारी (के हुक़ूक़ हैं) उन्हें भी अदा करता रहे, तो उसे दोगुना ष़वाब मिलता है। (राजेअ : 97)

ये इसलिये कि उसने दो फ़र्ज़ अदा किये। एक अल्लाह की इबादत का फ़र्ज़ अदा किया। दूसरे अपने आक़ा की इताअत की जो शरअन उस पर फ़र्ज़ थी इसलिये उसको दोगुना ष़वाब हासिल हुआ। (फ़तह)

٢٥٥٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

2552. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे

अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, वो नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि आपने फ़र्माया। कोई शख़्स (किसी ग़ुलाम या किसी भी शख़्स से) ये न कहे, अपने रब (मुराद आक़ा) को खाना खिला, अपने रब को वुज़ू करा। अपने रब को पानी पिला। बल्कि सिर्फ़ मेरे सरदार मेरे आक़ा के अल्फ़ाज़ कहना चाहिये। उसी तरह कोई शख़्स ये न कहे। मेरा बन्दा, मेरी बन्दी, बल्कि यूँ कहना चाहिये मेरा छोकरा, मेरी छोकरी, मेरा ग़ुलाम।

الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَقُلْ أَحَدُكُمْ: أَطْعِمْ رَبَّكَ، وَضِّىءْ رَبَّكَ، إسْقِي رَبَّكَ. وَلْيَقُلْ: سَيِّدِي مَوْلاَيَ. وَلاَ يَقُلْ أَحَدُكُمْ: عَبْدِي، أَمَتِي. وَلْيَقُلْ: فَتَايَ وَفَتَاتِي وَغُلاَمِي)).

तशरीह: रब का लफ़्ज़ कहने से मना फ़र्माया है। इसी तरह बन्दा और बन्दी कहने से मना किया ताकि शिर्क का शुब्हा न हो, गो ऐसा कहना मकरूह है हराम नहीं जैसे क़ुर्आन में है, **उज़्कुरूनी इन्दा रब्बिक** (यूसुफ़ : 42) कुछ ने कहा पुकारते वक़्त इस तरह पुकारना मना है। ग़र्ज़ मिजाज़ी मा'नी जब मुराद लिया जाए ग़ायत दर्जा ये फ़ेअ़ल मकरूह होगा और यही वजह है कि उ़लमा ने अ़ब्दुन्नबी या अ़ब्दुल हुसैन ऐसे नामों का रखना मकरूह समझा है और ऐसे नामों का रखना शिर्क इस मा'नी पर कहा है कि उनमें शिर्क का ईहाम या शायबा है। **अगर हक़ीक़ी मा'नी मुराद हो तो बेशक शिर्क है। अगर मिजाज़ी मा'नी मुराद हो तो शिर्क न होगा मगर कराहियत में शक नहीं लिहाज़ा बेहतर यही है कि ऐसे नाम न रखे जाएँ।** क्योंकि जहाँ शिर्क का वहम हो वहाँ से बहरहाल परहेज़ बेहतर है। ख़ास़ तौर पर लफ़्ज़े अ़ब्द ऐसा है जिसकी इज़ाफ़त लफ़्ज़ अल्लाह या रहमान या रहीम वग़ैरह अस्माउल हुस्ना ही की तरफ़ मुनासिब है। तौहीद व सुन्नत के पैरोकारों के लिये लाज़िम है कि वो ग़ैरूल्लाह की तरफ़ हर्गिज़ अपनी अ़ब्दियत को मन्सूब न करें। **इय्याक नअ़बुदु व इय्याक नस्तईन** का यही तक़ाज़ा है। वल्लाहु हुवल् मुवाफ़िक़।

2553. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उन्होंने नाफ़ेअ़ से, वो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने ग़ुलाम का अपना हिस़्सा आज़ाद कर दिया और उसके पास इतना माल भी हो जिससे ग़ुलाम की वाजिबी क़ीमत अदा की जा सके तो उसी के माल से पूरा ग़ुलाम आज़ाद किया जाएगा वरना जितना आज़ाद हो गया हो गया।

٢٥٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((مَنْ أَعْتَقَ نَصِيْبًا لَهُ مِنَ الْعَبْدِ، فَكَانَ لَهُ مِنَ الْمَالِ مَا يَبْلُغُ قِيْمَتَهُ يُقَوَّمُ عَلَيْهِ قِيْمَةَ عَدْلٍ وَأُعْتِقَ مِنْ مَالِهِ، وَإِلاَّ فَقَدْ عَتَقَ مِنْهُ مَا عَتَقَ)).

सिर्फ़ वही हिस़्सा उसकी तरफ़ से आज़ाद हो रहेगा। **इस हदीष़ को इसलिये लाए कि इसमें अ़ब्द का लफ़्ज़ ग़ुलाम के लिये आया है। <u>लिहाज़ा मिजाज़न ग़ुलाम के लिये अ़ब्द बोला जा सकता है।</u>**

2553. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने बयान किया कि मुझसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से हर शख़्स हाकिम है और उसकी रिआ़या के बारे में सवाल होगा। पस लोगों का वाक़ई

٢٥٥٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ،

فَالأَمِيْرُ الَّذِي عَلَى النَّاسِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْهُمْ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْهُمْ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَى بَيْتِ بَعْلِهَا وَوَلَدِهِ وَهِيَ مَسْؤُولَةٌ عَنْهُمْ، وَالْعَبْدُ رَاعٍ عَلَى مَالِ سَيِّدِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْهُ. أَلاَ فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)). [راجع: ٨٩٣]

अमीर एक हाकिम है और उससे उसकी रिआया के बारे में उससे सवाल होगा। दूसरे हर आदमी अपने घरवालों पर हाकिम है और उससे उसकी रिआया के बारे में सवाल होगा। तीसरी औरत अपने शौहर के घर और उसके बच्चों की हाकिम है उससे उसकी रिआया के बारे में सवाल होगा। चौथा गुलाम अपने आक़ा (सय्यद) के माल का हाकिम है और उससे उसकी रइय्यत के बारे में सवाल होगा। पस जान लो कि तुममें से हर एक हाकिम है और हर एक से उसकी रइय्यत के बारे में (क़यामत के दिन) पूछ होगी। (राजेअ: 893)

इस रिवायत में भी ग़ुलाम के लिये लफ़्ज़े अ़ब्द और आक़ा के लिये लफ़्ज़े सय्यद का इस्ते'माल हुआ है। इस तरह मिजाज़ी मा'नों मे इन अल्फ़ाज़ का इस्ते'माल करना दुरुस्त है। हज़रत इमाम (रह.) का यही मक़्सद है जिसके तहत यहाँ आप ये जुम्ला लाए हैं। इन अल्फ़ाज़ का इस्ते'माल मना भी है जब हक़ीक़ी मआनी मुराद लिये जाएँ और ये उसमें तत्बीक़ है।

٢٥٥٥، ٢٥٥٦ - حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَزَيْدَ بْنَ خَالِدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا زَنَتِ الأَمَةُ فَاجْلِدُوهَا ثُمَّ إِذَا زَنَتْ فَاجْلِدُوهَا، ثُمَّ إِذَا زَنَتْ فَاجْلِدُوهَا فِي الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ فَبِيْعُوهَا وَلَوْ بِضَفِيْرٍ)). [راجع: ٢١٥٢، ٢١٤٥]

2555,56. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया ज़ुहरी से, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया, कहा मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। जब बांदी ज़िना कराए तो उसे (बतौरे सज़ा शरई) कोड़े लगाओ फिर अगर कराए तो कोड़े लगाओ और अब भी अगर कराए तो उसे कोड़े लगाओ। तीसरी या चौथी बार में (आपने फ़र्माया कि) फिर उसे बेच दो, ख़्वाह क़ीमत में एक रस्सी ही मिले। (राजेअ: 2152, 2145)

तश्रीह : इस ह़दीष़ को इसलिये लाए कि उसमें लौण्डी के लिये अमत का लफ़्ज़ फ़र्माया है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि इस ह़दीष़ के लाने से ये मक़्सूद है कि जब लौण्डी ज़िना कराए तो उस पर दस्तदराज़ी से मना नहीं है बल्कि उसको सज़ा देना ज़रूरी है। आख़िर में ये रावी का शक है कि आपने तीसरी बार में बेचने का हुक्म फ़र्माया या चौथी बार में।

इन तमाम रिवायतों के नक़ल करने से हज़रत इमाम (रह.) ने ष़ाबित फ़र्माया कि मालिकों को ग़ुलामों और लौण्डियों पर बड़ाई न जतानी चाहिये। इंसान होने के नाते सब बराबर हैं। शराफ़त और बड़ाई की बुनियाद ईमान और तक़्वा है। हक़ीक़ी आक़ा, हाकिम, मालिक सब का सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआ़ला है। दुनियावी मालिक और आक़ा सारे मिजाज़ी हैं। आज हैं और कल नहीं। जिन आयात और अहादीष़ में ऐसे अल्फ़ाज़ आक़ाओं या ग़ुलामों के लिये आए हुए हैं वहाँ मिजाज़ी मआनी मुराद हैं।

١٨ - بَابُ إِذَا أَتَى أَحَدُكُمْ خَادِمُهُ بِطَعَامِهِ

बाब 18 : जब किसी का ख़ादिम खाना लेकर आए?

2557. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि जब किसी का गुलाम खाना लाए और वो उसे अपने साथ (खिलाने के लिये) न बिठा सके तो उसे एक या दो निवाला ज़रूर खिलाए या (आपने लुक़्मा अव लुक़्मतैन के बदल अकलति अव अकलतैन फ़र्माया (या'नी एक या दो लुक़्मे) क्योंकि उसी ने उसको तैयार करने की तकलीफ़ उठाई है। (दीगर मक़ाम : 5460)

٢٥٥٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ زِيَادٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَتَى أَحَدَكُمْ خَادِمُهُ بِطَعَامِهِ فَإِنْ لَمْ يُجْلِسْهُ مَعَهُ فَلْيُنَاوِلْهُ لُقْمَةً أَوْ لُقْمَتَيْنِ، أَوْ أُكْلَةً أَوْ أُكْلَتَيْنِ، فَإِنَّهُ وَلِيَ عِلاَجَهُ)). [طرفه في : ٥٤٦٠].

लफ़्ज़ ख़ादिम में गुलाम, नौकर चाकर, शागिर्द सब दाख़िल हो सकते हैं।

बाब 19 : ग़ुलाम अपने आक़ा के माल का निगहबान है और नबी करीम (ﷺ) ने (गुलाम के) माल को उसी के आक़ा की त़रफ़ मन्सूब किया है

١٩- باب الْعَبْدُ رَاعٍ فِي مَالِ سَيِّدِهِ. وَنَسَبَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَالَ إِلَى السَّيِّدِ

मुज्तहिदे मुत्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्सदे बाब यही है कि मिजाज़ी मआनी में गुलाम-लौण्डी अपने मालिकों को सय्यद के लफ़्ज़ से याद कर सकते हैं। जैसा कि यहाँ ह़दीष़ में अल्फ़ाज़ **अलखादिमु फी मालि सय्यिदिही राइन** में बोला गया है। ये ह़दीष़ जामेउ़स्सह़ीह़ में कई जगह नक़ल की गई है और मुज्तहिदे मुत्लक़ ने इससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात़ फ़र्माया है जैसा कि अपने अपने मक़ाम पर बयान होगा। उन मुआनिदीन, ह़ासिदीन पर अफ़सोस जो ऐसे मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम की दिरायत से इंकार करके ख़ुद अपने कोरे बातिनी का षुबूत देते हैं।

2558. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि हर आदमी ह़ाकिम है और उससे उसकी रिआ़या के बारे में सवाल होगा। इमाम ह़ाकिम है और उससे उसकी रइय्यत के बारे मे सवाल होगा। मर्द अपने घर के मामलात का हाकिम है और उससे उसकी रिआ़या के बारे में सवाल होगा। औ़रत अपने शौहर के घर की हाकिम है और उससे उसकी रिआ़या के बारे में सवाल होगा। ख़ादिम अपने आक़ा के माल का मुहाफ़िज़ है और उससे उसके बारे मे सवाल होगा। उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से ये बातें सुनी हैं और मुझे ख़याल है कि आपने ये भी फ़र्माया था कि मर्द अपने बाप के माल का मुहाफ़िज़ है और उससे उसकी रइय्यत

٢٥٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ : ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ: فَالإِمَامُ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ فِي أَهْلِهِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا رَاعِيَةٌ وَهِيَ مَسْؤُولَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْخَادِمُ فِي مَالِ سَيِّدِهِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)). قَالَ : فَسَمِعْتُ هَؤُلاَءِ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ أَحْسِبُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((وَالرَّجُلُ فِي مَالِ أَبِيهِ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ،

فَكُلُّكُم رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)). [راجع: ٨٩٣]

के बारे में सवाल होगा। ग़र्ज़ तुममें से हर फ़र्द हाकिम है और सबसे उसकी रइय्यत के बारे में सवाल होगा। (राजेअ : 893)

٢٠- بَابُ إِذَا ضَرَبَ الْعَبْدَ فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ

बाब 20 : अगर कोई गुलाम लौण्डी को मारे तो चेहरे पर न मारे

٢٥٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ ح. قَالَ: وَأَخْبَرَنِي ابْنُ فُلاَنٍ عَنْ سَعِيْدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح.
وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ)).

2559. हमसे मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक बिन अनस ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने फ़लाँ (इब्ने सिम्आन) ने ख़बर दी, उन्हें सईद मक़बरी ने, उन्हें उनके बाप ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, नबी करीम (ﷺ) से।

(दूसरी सनद और इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा) और हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी हम्माम से और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई किसी से झगड़ा करे तो चेहरे (पर मारने) से परहेज़ करे।

मारपीट में चेहरे पर मारने से परहेज़ सिर्फ़ गुलाम के साथ ख़ास नहीं है। यहाँ चूँकि गुलामों का बयान हो रहा था इसलिये उन्वान में उसी का ख़ुसूसियत से ज़िक्र किया बल्कि चेहरे पर मारने से परहेज़ का हुक्म तमाम इंसानों बल्कि जानवरों तक के लिये है।

हज़रत इमाम ने रिवायत में एक रावी का नाम नहीं लिया। सिर्फ़ इब्ने फ़लाँ से याद किया है और वो इब्ने सिम्आन है और वो ज़ईफ़ है। उसे इमाम मालिक (रह.) और इमाम अहमद (रज़ि.) ने झूठा कहा है और इमाम बुख़ारी ने उसकी रिवायत इस मुक़ाम के सिवा और कहीं इस किताब में नहीं निकाली और यहाँ भी बतौर मुताबअ़त के है क्योंकि इमाम मालिक और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ की रिवायत भी बयान की।

तशरीह : असलम की एक रिवायत में साफ़ इज़ा ज़रब है और इस हदीष़ में गो ख़ादिम की सराहत नहीं है मगर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उस तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जिसको उन्होंने अदबुल मुफ़रद में निकाला उसमे यूँ है, **इज़ा ज़रब ख़ादिमहू** या'नी जब कोई तुममें से अपने ख़ादिम को मारे। हाफ़िज़ ने कहा कि ये आम है ख़्वाह किसी हद में मारे या तअ़ज़ीर में हर हाल में मुँह पर न मारना चाहिये। उसकी वजह मुस्लिम की रिवायत में यूँ मज़्कूर है क्योंकि अल्लाह ने आदम को उसकी सूरत पर बनाया या'नी मार खाने वाले शख़्स की सूरत पर। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है, क्योंकि अल्लाह ने आदम को अपनी सूरत पर बनाया। (वहीदी) वैसे चेहरे पर मारना अदब और अख़्लाक़ के भी सरासर ख़िलाफ़ है। अगर मारना ही हो तो जिस्म के दीगर अअ़ज़ा मौजूद हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं, **क़ालन्नववी कालल्उलमाउ इन्नमा नहा अन ज़र्बिल्वज्हि लिअन्नहू लतीफ़ुन यज्मउल्महासिन व अक्षरु मा यक़उल्इदराकु बिआज़ाइही फयख्शा मिन जर्बिही अन तब्तुल औ तशूहु कुल्लुहा औ बअ़ज़ुहा वल्यश्नु फीहा फाहिशुम लिज़ुहूरिहा व बुरूज़िहा वल ला यस्लिमु इज़ा ज़रबहू मिन शीनिन वुअलीलुल्मज़्कूरू अहसनु लाकिन षबत इन्द मुस्लिम तअलीलुन आखर फइन्नहू अखरजल्हदीष़ मिन तरीक़ि**

अबी अय्यूब अल्मुरागी अन अबी हुरैरत व ज़ाद फइन्नल्लाह ख़लक़ आदम अला सूरतिन वख़्तुलिफ़ फ़िज़्ज़मीरि अला मंय्यऊदु फल्अक्षरु अला अन्नहू यऊदु अलल्मज़्रूबि लिमा तक़द्दम मिनल्अम्रि बिइकरामि वज्हिही व लौला अन्नल्मुराद अत्तअलीलु बिज़ालिक लम यकुन लिहाज़िहिल्जुम्लति इर्तिबातुन बिमा क़ब्लहा व क़ालल्क़ुर्तुबी अआद बअ़ज़ुहुम अज़्ज़मीर अ़लल्लाहि मुतमस्सिकन बिमा वरद फी बअ़ज़ि तुरूक़िही अन्नल्लाह ख़लक़ आदम अ़ला सूरतिर्रहमानि इला आखिरिही. (फ़त्हुल बारी)

ख़ुलासा मतलब ये है कि उलमा ने कहा है चेहरे पर मारने की मुमानअत इसलिये है कि ये अ़ज़्व (अंग) लतीफ़ है जो सारे महासिन का मज्मूआ है और अकषर इदराक का वुक़ूअ चेहरे के अअ़ज़ा ही से होता है। पस इस पर मारने से ख़तरा है कि उसमें अनेक नुक़्स और ऐब पैदा हो जाएँ, पस ये इल्लत बेहतर है जिनकी वजह से चेहरे पर मारना मना किया गया है। लेकिन इमाम मुस्लिम के नज़दीक एक और इल्लत है। उन्होंने इस हदीष को अबू अय्यूब मुराग़ी की सनद के साथ हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत किया है कि जिसमें ये लफ़्ज़ ज़्यादा हैं कि अल्लाह ने आदम को उसकी सूरत पर पैदा किया है अगरचे ज़मीर में इख़्तिलाफ़ है मगर अकषर उलमा के नज़दीक ये ज़मीर मज़्रूब ही की तरफ़ लौटती है। इसलिये कि पहले चेहरे के इकराम का हुक्म हो चुका है। अगर ये तअलील मुराद न ली जाए तो उस जुम्ले का **मा क़बल** से कोई रब्त बाक़ी नहीं रह जाता। क़ुर्तुबी ने कहा कि कुछ ने ज़मीर को अल्लाह की तरफ़ लौटाया है दलील में कुछ तुरूक़ की उस इबारत को पेश किया है जिसमें ज़िक्र है कि अल्लाह ने आदम को रहमान की सूरत पर पैदा किया। मुतर्जिम कहता है कि क़ुर्आन की नस्से सरीह **कमिष्लिही शैइन** दलील है कि अल्लाह पाक को और उसके चेहरे को किसी से तश्बीह नहीं दी जा सकती है, वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

अहले हदीष का यही मज़हब है कि अल्लाह पाक अपनी ज़ात और तमाम सिफ़ात में वहदहू ला शरीक लहू है और इस बारे में कुरेद करना बिदअ़त है। जैसा कि इस्तवा अलल अ़र्श के बारे में सलफ़ का अ़क़ीदा है वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

50. किताबुल मुकातब

किताब मुकातब के मसाइल का बयान

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

मुकातब उस गुलाम को कहते हैं जिसको मालिक कह दे कि अगर तू इतना रुपया इतनी क़िस्तों में अदा कर दे तो तू आज़ाद है। लफ़्ज़ मुकातब ता के ज़बर और ज़ेर दोनों के साथ मन्क़ूल है। हाफ़िज़ (रह.) फ़र्माते हैं **वल्मुकातबु बिल्फत्हि मन तक़उ लहुल्किताबतु व बिल्कस्रि मन तक़उ मिन्हु** या'नी ज़बर के साथ जिसके लिये किताबत का माला किया जाए और ज़ेर के साथ जिसकी तरफ़ किताबत का मामला किया जाए। तारीख़े इस्लाम में सबसे पहले मुकातब हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) हैं और औरतों में हज़रत बरीरा (रज़ि.) जिनका वाक़िया अगली रिवायात में मज़्कूर है।

लफ़्ज़ मुकातब बाब मुफ़ाअ़ला से मफ़ऊल का सैग़ा है या'नी वो गुलाम लौण्डी जिससे उसके आक़ा के साथ मुक़र्ररा शर्तों के साथ आज़ादी का मुआहदा लिख दिया गया हो।

बाब 1 : मुकातब और उसकी क़िस्तों का बयान, हर साल में एक क़िस्त की अदायगी लाज़िम होगी

١- بَابُ الْمكاتَبُ وَنجومُهُ فِي كلِّ سَنةٍ نجمٌ

इस बाब में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कोई हदीष़ बयान नहीं की, शायद उन्होंने बाब क़ायम कर लेने के बाद हदीष़ लिखना चाही होगी मगर उसका मौक़ा न मिला और किताबुल हुदूद में उन्होंने एक हदीष़ रिवायत की है जिसका मज़्मून ये है कि जो कोई अपने ग़ुलाम लौण्डी को ज़िना की झूठी तोहमत लगाए उसको क़यामत के दिन कोड़े लगाए जाएँगे। कुछ नुस्ख़ों में ये बाब मज़्कूर नहीं है।

बाब 2 : जिसने अपने लौण्डी ग़ुलाम को ज़िना की झूठी तोहमत लगाई उसका गुनाह

وَقَوْلُهُ: ﴿وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ

अरब में तमाम मामलात तारों के तुलूअ पर हुआ करते थे क्योंकि वो हिसाब नहीं जानते थे। वो यूँ कहते थे कि जब फ़लाँ तारा निकले तो ये मामला यूँ होगा। उसी वजह से क़िस्त को नज्म कहने लगे। नज्म तारे को कहते हैं। बदले किताबत में ख़्वाह सालाना क़िस्तें हों या माहाना हर तरह से जाइज़ है।

और सूरह नूर में अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, तुम्हारे लौण्डी ग़ुलामों में से जो भी मुकातबत का मामला करना चाहें। उनको मुकातब कर दो, अगर उनके अंदर तुम कोई ख़ैर पाओ। (कि वो वा'दा पूरा कर सकेंगे) और उन्हें अल्लाह के उस माल में से मदद भी दो जो उसने तुम्हें अ़ता किया है। रौह बिन उ़बादा ने इब्ने जुरैज (रह.) से बयान किया कि मैंने अ़ता बिन अबी रिबाह (रह.) से पूछा क्या अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि मेरे ग़ुलाम के पास माल है और वो मुकातब बनना चाहे तो क्या मुझ पर वाजिब हो जाएगा कि मैं उससे मुकातबत कर लूँ? उन्होंने कहा कि मेरा ख़्याल तो यही है कि (ऐसी हालत में किताबत का मामला) वाजिब हो जाएगा। अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने अ़ता से पूछा, क्या आप इस सिलसिले में किसी से रिवायत भी बयान करते हैं? तो उन्होंने जवाब दिया कि नहीं। (फिर उन्हें याद आया) और मुझे उन्होंने ख़बर दी कि मूसा बिन अनस ने उन्हें ख़बर दी कि सीरीन (इब्ने सीरीन रह. के वालिद) ने अनस (रज़ि.) से मुकातब होने की दरख़्वास्त की (ये अनस (रज़ि.) के ग़ुलाम थे) जो मालदार भी थे। लेकिन हज़रत अनस (रज़ि.) ने इंकार किया, इस पर सीरीन हज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

خَيْرًا. وَآتُوهُمْ مِنْ مَالِ اللهِ الَّذِي آتَاكُمْ﴾ [النور:٣٣]. وَقَالَ رَوحٌ عَنِ ابْنِ جُرَيجٍ قُلْتُ لِعَطَاءٍ: أَوَاجِبٌ عَلَيَّ إِذَا عَلِمْتُ لَهُ مَالاً أَنْ أُكَاتِبَهُ؟ قَالَ: مَا أُرَاهُ إِلاَّ وَاجِبًا. وَقَالَ عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قُلْتُ لِعَطَاءٍ: تَأْثُرُهُ عَنْ أَحَدٍ؟ قَالَ : لاَ. ثُمَّ أَخْبَرَنِي أَنَّ مُوسَى بْنَ أَنَسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ سِيْرِيْنَ سَأَلَ أَنَسًا الْمُكَاتَبَةَ- وَكَانَ كَثِيْرَ الْمَالِ - فَأَبَى، فَانْطَلَقَ إِلَى عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَقَالَ: كَاتِبْهُ، فَأَبَى، فَضَرَبَهُ بِالدِّرَّةِ وَيَتْلُو عُمَرُ: ﴿فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا﴾ فَكَاتَبَهُ)).

हज़रत उमर (रज़ि.) ने (अनस (रज़ि.) से) फ़र्माया कि किताबत का मामला कर ले। उन्होंने फिर भी इंकार किया तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने उन्हें दुर्रे से मारा, और ये आयत पढ़ी कि, ग़ुलामों में अगर ख़ैर देखो तो उनसे मुकातबत कर लो। चुनाँचे अनस (रज़ि.) ने किताबत का मामला कर लिया।

٢٥٦٠– وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ عُرْوَةُ قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: إِنَّ بَرِيْرَةَ دَخَلَتْ عَلَيْهَا تَسْتَعِيْنُهَا فِي كِتَابَتِهَا وَعَلَيْهَا خَمْسَةُ أَوَاقٍ نُجِّمَتْ عَلَيْهَا فِي خَمْسِ سِنِيْنَ؛ فَقَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ – وَنَفِسَتْ فِيْهَا – أَرَأَيْتِ إِنْ عَدَدْتُ لَهُمْ عَدَّةً وَاحِدَةً أَيَبِيْعُكِ أَهْلُكِ فَأُعْتِقَكِ فَيَكُونَ وَلاَؤُكِ لِي؟ فَذَهَبَتْ بَرِيْرَةُ إِلَى أَهْلِهَا فَعَرَضَتْ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ، فَقَالُوا: لاَ، إِلاَّ أَنْ يَكُونَ لَنَا الْوَلاَءُ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَدَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اشْتَرِيْهَا فَأَعْتِقِيْهَا)) فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ. ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((مَا بَالُ رِجَالٍ يَشْتَرِطُونَ شُرُوطًا لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللهِ؟ مَنِ اشْتَرَطَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللهِ فَهُوَ بَاطِلٌ؟ شَرْطُ اللهِ أَحَقُّ وَأَوْثَقُ)). [راجع: ٤٥٦]

2560. लैष़ ने कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा ने कि आइशा (रज़ि.) ने कहा कि बरीरा (रज़ि.) उनके पास आई अपने मुकातबत के मामले में उनकी मदद हासिल करने के लिये। बरीरा (रज़ि.) को पाँच औक़िया चाँदी पाँच साल के अंदर पाँच क़िस्तों में अदा करनी थी। आइशा (रज़ि.) ने कहा, उन्हें ख़ुद बरीरा (रज़ि.) के आज़ाद कराने में दिलचस्पी हो गई थी, कि ये बताओ अगर मैं इन्हें एक ही बार (चाँदी के ये पाँच औक़िया) अदा कर दूँ तो क्या तुम्हारे मालिक तुम्हें मेरे हाथ बेच देंगे? फिर मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगी और तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम हो जाएगी। बरीरा (रज़ि.) अपने मालिकों के यहाँ गईं और उनके आगे ये सूरत रखी। उन्होंने कहा कि हम ये सूरत उस वक़्त मंज़ूर कर सकते हैं कि विलाअ का रिश्ता हमारे साथ रहे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि फिर मेरे पास नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मैंने आप (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया आपने फ़र्माया कि तू ख़रीद कर बरीरा (रज़ि.) को आज़ाद कर दे, विलाअ तो उसकी होती है जो आज़ाद करे। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों को ख़िताब फ़र्माया कि कुछ लोगों को क्या हो गया है जो (मामलात में) ऐसी शर्तें लगाते हैं जिनकी कोई जड़ (बुनियाद) किताबुल्लाह में नहीं है। पस जो शख़्स कोई ऐसी शर्त लगाए जिसकी कोई अस़ल किताबुल्लाह में न हो तो वो शर्त ग़लत है। अल्लाह तआला की शर्त ही ज़्यादा हक़ और ज़्यादा मज़्बूत है। (राजेअ : 456)

तशरीह : इस तफ़्सीली मुदल्लल बयान का ख़ुलासा ये है कि ग़ुलाम, लौण्डी अगर अपने आक़ाओं से छुटकारा ह़ासिल करने के लिये मुकातबत का मामला करना चाहें और उनमें इतनी अहलियत भी हो कि किसी न किसी तरह इस मामले को बाहुस्न त़रीक़ पूरा करेंगे तो आक़ाओं के लिये ज़रूरी है कि वो ये मामला करके उनको आज़ाद कर दें। आयते करीमा **इन् अलिमतुम फ़ीहिम ख़ैरन** (अन् नूर : 33) अगर तुम उनमें ख़ैर देखो तो उनसे मुकातबत कर लो, में ख़ैर से मुराद ये है कि वो कमाई के लायक़ और ईमानदार हों, मेहनत मज़दूरी करके बदले किताबत अदा कर दें, लोगों के सामने भीख मांगते न

फिरें। **वआतूहुम मिम् मालिल्लाहिल्लज़ी आताकुम.** (अन् नूर : 33) और अपने माल में से जो अल्लाह ने तुमको दिया है उनकी कुछ मदद भी करो; से मुराद ये कि अपने पास उनको बतौर इमदाद कुछ दो, ताकि वो अपने क़दमों पर खड़े हो सकें या बदले किताबत में से कुछ मुआफ़ कर दो।

रौह के अष़र को इस्माईल क़ाज़ी ने अहकामुल क़ुर्आन में और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ और शाफ़िई ने वस्ल किया है। ह़ज़रत अ़ता ने वाजिब क़रार दिया कि बशर्ते मज़्कूर आक़ा गुलाम की मुकातबत कर ले। इमाम इब्ने ह़ज़म और ज़ाहिरिया के नज़दीक अगर गुलाम मुकातबत का ख़्वाहाँ हो तो मालिक पर मुकातबत कर देना वाजिब है। क्योंकि क़ुर्आन में **फ़कातिबूहुम** अम्र के लिये है जो वुजूब के लिये होता है। मगर जुम्हूर यहाँ अम्र को बतौर इस्तिह़बाब क़रार देते हैं। ह़ज़रत अ़ता ने जब अपना ख़्याल ज़ाहिर किया तो अ़म्र बिन दीनार ने उनसे सवाल किया कि वुजूब का क़ौल आपने किसी स़ह़ाबी से सुना है या अपने क़यास और राय से ऐसा कहते हो। बज़ाहिर ये मा'लूम होता है कि अ़म्र बिन दीनार ने अ़ता से ये पूछा लेकिन ह़ाफ़िज़ ने कहा ये स़ह़ीह़ नहीं है बल्कि इब्ने जुरैज ने अ़ता से ये पूछा। जैसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ और शाफेई की रिवायत में उसकी तस़रीह़ है। इस सूरत मे **क़ाला अ़म्र बिन दीनार** जुम्ला मुअ़तर्ज़ा होगा। और नस्फ़ी की रिवायत में यूँ है, **वक़ालुहू अ़म्र बिन दीनार** या'नी अ़म्र बिन दीनार भी वुजूब के क़ाइल हुए हैं और तर्जुमा यूँ होगा, और अ़म्र बिन दीनार ने भी उसको वाजिब कहा है, इब्ने जुरैज ने कहा मैंने अ़ता से पूछा क्या ये तुम किसी से रिवायत करते हो?

ह़ज़रत सीरीन जिनका क़ौल आगे मज़्कूर है, ये ह़ज़रत अनस (रज़ि.) के गुलाम थे और ये मुहम्मद के वालिद हैं, जो मुहम्मद बिन सीरीन से मशहूर हैं। ताबेई, फ़क़ीह और माहिर इल्मे ता'बीरे रूया हैं। इस रिवायत को अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ और त़बरी ने वस्ल किया है।

आगे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का क़ौल मज़्कूर है और अमल भी ज़ाहिर है कि वो बशर्ते मज़्कूर मुक़ातिबत को वाजिब कहते थे। जैसे इब्ने ह़ज़म और ज़ाहिरिया का क़ौल है। ह़ज़रत बरीरा (रज़ि.) पर पाँच औक़िया चाँदी पाँच साल में अदा करनी मुक़र्रर हुई थी इसी से बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है। कुछ उ़लमा ने कहा कि आयते करीमा, **वआतूहुम मिम् मालिल् लाहि आताकुम.** (अन् नूर :33) से मुकातब को माले ज़कात में से भी इमदाद दी जा सकती है। दौरे ह़ाज़रा में नाह़क़ मस़ाइबे क़ैद में गिरफ़्तार हो जाने वाले मुसलमान मर्द–औरत भी ह़क़ रखते हैं कि उनकी आज़ादी के लिये इन त़रीक़ों से मदद दी जाए।

अनस बिन मालिक (रज़ि.) ख़ज़रज क़बीले से थे। उनकी वालिदा का नाम उम्मे सुलैम बिन्ते मलह़ान था। रसूले करीम (ﷺ) के ख़ादिमे ख़ास़ थे। जब आप (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो उनकी उ़म्र दस साल की थी। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में बस़रा में क़याम किया। वहाँ लोगों को 91हिजरी तक उ़लूमे दीन सिखाते रहे। उ़म्र सौ साल के आसपास पाई। उनकी औलाद का भी शुमार सौ के क़रीब है। बहुत से लोगों ने उनसे रिवायत की है।

बाब 2 : मुकातब से कौनसी शर्तें करना दुरुस्त हैं और जिसने कोई ऐसी शर्त लगाई जिसकी अस़ल किताबुल्लाह में न हो (वो शर्त बातिल है)

٢- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنْ شُرُوطِ الْـمُكَاتَبِ، وَمَنِ اشْتَرَطَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللهِ فِيْهِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

इस बाब में इब्ने उ़मर (रज़ि.) की एक रिवायत है।

2561. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया इब्ने शिहाब से, उन्होंने उ़र्वा से और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि बरीरा (रज़ि.) उनके पास अपने

٢٥٦١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ عَائِشَةَ

मुकातबत के मामले में मदद लेने आई, अभी उन्होंने कुछ भी अदा नहीं किया था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उनसे कहा कि तू अपने मालिकों के पास जा, अगर वो ये पसन्द करें कि तेरे मामले मुकातबत की पूरी रक़म मैं अदा कर दूँ और तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम हो तो मैं ऐसा कर सकती हूँ। बरीरा (रज़ि.) ने ये सूरत अपने मालिकों के सामने रखी लेकिन उन्होंने इंकार किया और कहा कि अगर वो (हज़रत आइशा रज़ि.) तुम्हारे साथ ष़वाब की निय्यत से ये नेक काम करना चाहती हैं तो उन्हें इख़्तियार है, लेकिन तुम्हारी विलाअ तो हमारे साथ ही रहेगी। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि तू ख़रीदकर उन्हें आज़ाद कर दे। विलाअ तो उसी के साथ होती है जो आज़ाद कर दे। रावी ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों से ख़िताब किया और फ़र्माया कि कुछ लोगों को क्या हो गया है कि वो ऐसी शर्तें लगाते हैं जिनकी अस़ल किताबुल्लाह में नहीं है। पस जो भी कोई ऐसी शर्त लगाए जिसकी अस़ल किताबुल्लाह में नही है वो उनसे कुछ फ़ायदा नहीं उठा सकता, ख़्वाह वो ऐसी सौ शर्तें क्यूँ न लगा लें। अल्लाह तआला की शर्त ही सबसे ज़्यादा मा'क़ूल और मज़बूत है। (राजेअ : 456)

رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ: أَنَّ بَرِيْرَةَ جَاءَتْ تَسْتَعِيْنُهَا فِي كِتَابَتِهَا، وَلَمْ تَكُنْ قَضَتْ مِنْ كِتَابَتِهَا شَيْئًا. قَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ : ارْجِعِي إِلَى أَهْلِكِ فَإِنْ أَحَبُّوا أَنْ أَقْضِيَ عَنْكِ كِتَابَتَكِ وَيَكُونَ وَلاَؤُكِ لِي فَعَلْتُ. فَذَكَرَتْ ذَلِكَ بَرِيْرَةُ لأَهْلِهَا فَأَبَوا وَقَالُوا: إِنْ شَاءَتْ أَنْ تَحْتَسِبَ عَلَيْكِ فَلْتَفْعَلْ وَيَكُونَ وَلاَؤُكِ لَنَا. فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ابْتَاعِي فَأَعْتِقِي، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). قَالَ: ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((مَا بَالُ أُنَاسٍ يَشْتَرِطُونَ شُرُوطًا لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللهِ؟ مَنِ اشْتَرَطَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللهِ فَلَيْسَ لَهُ، وَإِنْ شَرَطَ مِائَةَ مَرَّةٍ، شَرْطُ اللهِ أَحَقُّ وَأَوْثَقُ)). [راجع: ٤٥٦]

इब्ने ख़ुज़ैमा ने कहा मतलब ये है कि अल्लाह की किताब से उनका अदमे जवाज़ या अदमे वुजूब ष़ाबित हो और ये मतलब नहीं है कि जो शर्त अल्लाह की किताब में मज़्कूर न हो उसका लगाना बातिल है क्योंकि कभी बेअ में किफ़ालत की शर्त होती है। कभी ष़मन में ये शर्त होती है कि इस क़िस्म के रुपये हों या इतनी मुद्दत में दिये जाएँ ये शर्तें सहीह हैं, गो अल्लाह की किताब में नहीं है क्योंकि ये शर्तें मशरूअ हैं। कहने का मतलब यह है कि मुकातब पर ग़ैर-शरई शर्तें नहीं लादी जा सकती।

2562. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी नाफ़ेअ से, और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने एक बांदी ख़रीदकर उसे आज़ाद करना चाहा, उस बांदी के मालिकों ने कहा कि इस शर्त पर हम मामला कर सकते हैं कि विलाअ हमारे साथ क़ायम रहे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) से कहा कि उनकी इस शर्त की वजह से तुम न रोको, विलाअ तो उसी की होती है जो आज़ाद करे। (राजेअ : 2156)

٢٥٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَرَادَتْ عَائِشَةُ أُمُّ الْمُؤْمِنِيْنَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنْ تَشْتَرِيَ جَارِيَةً لِتُعْتِقَهَا، فَقَالَ أَهْلُهَا: عَلَى أَنَّ وَلاَءَهَا لَنَا. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَمْنَعُكِ ذَلِكِ، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). [راجع: ٢١٥٦]

हदीषे बरीरा (रज़ि.) से बहुत से फ़वाइद निकलते हैं। कुछ मुताख़्ख़िरीन ने उनको चार सौ तक पहुँचा दिया है जिसमें अकषर तकल्लुफ़ है कुछ फ़वाइद हाफ़िज़ ने फ़त्हुल बारी में भी ज़िक्र किये हैं। उनको वहाँ मुलाहिज़ा किया जा सकता है।

बाब 3 : अगर मुकातब दूसरों से मदद चाहे और लोगों से सवाल करे तो कैसा है?

٣- بَابُ إِسْتِعَانَةِ الْمُكَاتَبِ وَسُؤَالِهِ النَّاسَ

2563. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया हिशाम बिन उर्वा से, वो अपने वालिद से, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बरीरा (रज़ि.) आईं और कहा कि मैंने अपने मालिकों से नौ औक़िया चाँदी पर मुकातबत का मामला किया है। हर साल एक औक़िया मुझे अदा करना पड़ेगा। आप भी मेरी मदद करें। इस पर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम्हारे मालिक पसन्द करें तो मैं उन्हें (ये सारी रक़म) एक ही बार दे दूँ, और फिर तुम्हें आज़ाद कर दूँ, तो मैं ऐसा कर सकती हूँ। लेकिन तुम्हारी विलाअ मेरे साथ हो जाएगी। बरीरा (रज़ि.) अपने मालिकों के पास गईं तो उन्होंने इस सूरत से इंकार कर दिया। (वापस आकर) उन्होंने बताया कि मैंने आपकी ये सूरत उनके सामने रखी थी लेकिन वो इसे सिर्फ़ इस सूरत में कुबूल करने को तैयार हैं कि विलाअ उनके साथ क़ायम रहे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये सुना तो आप (ﷺ) ने मुझसे पूछा मैंने आपको मुत्तलअ किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तू इन्हें लेकर आज़ाद कर दे और उन्हें विलाअ की शर्त लगाने दे। विलाअ तो बहरहाल उसी की होती है जो आज़ाद करे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों को ख़िताब किया। अल्लाह की हम्दो-षना के बाद फ़र्माया, तुममें से कुछ लोगों को ये क्या हो गया है कि (मामलात में) ऐसी शर्तें लगाते हैं जिनकी कोई अस्ल किताबुल्लाह में नहीं है। पस जो भी शर्त ऐसी हो जिसकी अस्ल किताबुल्लाह में न हो वो बातिल है। ख़्वाह ऐसी सौ शर्तें क्यूँ न लगा ली जाएँ। अल्लाह का फ़ैसला ही हक़ है और अल्लाह की शर्त ही मज़बूत है कुछ लोगों को क्या हो गया है कि वो कहते हैं, ऐ फ़लाँ! आज़ाद तुम करो और विलाअ मेरे साथ क़ायम रहेगी। विलाअ तो सिर्फ़ उसी के साथ क़ायम रहेगी जो आज़ाद करे। (राजेअ : 456)

٢٥٦٣- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتْ بَرِيْرَةُ فَقَالَتْ: إِنِّي كَاتَبْتُ أَهْلِي عَلَى تِسْعِ أَوَاقٍ فِي كُلِّ عَامٍ أُوْقِيَّةٌ فَأَعِيْنِيْنِي. فَقَالَتْ عَائِشَةُ : إِنْ أَحَبَّ أَهْلُكِ أَنْ أَعُدَّهَا لَهُمْ عَدَّةً وَاحِدَةً وَأُعْتِقَكِ فَعَلْتُ وَيَكُونُ وَلاَؤُكِ لِي. فَذَهَبَتْ إِلَى أَهْلِهَا، فَأَبَوا ذَلِكَ عَلَيْهَا، فَقَالَتْ: إِنِّي قَدْ عَرَضْتُ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ، فَأَبَوا إِلاَّ أَنْ يَكُونَ الْوَلاَءُ لَهُمْ. فَسَمِعَ بِذَلِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَسَأَلَنِي فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: ((خُذِيْهَا فَأَعْتِقِيْهَا وَاشْتَرِطِي لَهُمُ الْوَلاَءَ، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي النَّاسِ فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ، فَمَا بَالُ رِجَالٍ مِنْكُمْ يَشْتَرِطُونَ شُرُوطًا لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللهِ؟ فَأَيُّمَا شَرْطٍ لَيْسَ فِي كِتَابِ اللهِ فَهُوَ بَاطِلٌ وَإِنْ كَانَ مِائَةَ شَرْطٍ، فَقَضَاءُ اللهِ أَحَقُّ، وَشَرْطُ اللهِ أَوْثَقُ. مَا بَالُ رِجَالٍ مِنْكُمْ يَقُولُ أَحَدُهُمْ أَعْتِقْ يَا فُلاَنُ وَلِيَ الْوَلاَءُ إِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)).

[راجع: ٤٥٦]

नौ औक़िया का ज़िक्र रावी का वहम है। सहीह यही है कि पाँच औक़िया पर मामला हुआ था। मुम्किन है शुरू में नौ का ज़िक्र हुआ और रावी ने उसी को नक़ल कर दिया हो। ये मज़्मून पीछे मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) ज़िक्र हो चुका है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **व युम्किनुल्जम्उ बिअन्नत्तिसअ अस्लुन वल्ख़म्सु कानत बक़ियत अलैहा व बिहाज़ा जज़मल्कुर्तुबी वल्महिब्ब अत्तबरी** या'नी इस तरह जमा मुम्किन है कि असल में मामला नौ पर हुआ हो और पाँच बाक़ी रह गए हों। कुर्तुबी और महब तबरी ने इसी तत्बीक़ पर जज़्म किया है।

बाब 4 : जब मुकातब अपने तईं बेच डालने पर राज़ी हो

٤- بَابُ بَيْعِ الْمُكَاتَبِ إِذَا رَضِيَ

गो वो बदले किताबत अदा करने से आजिज़ न हुआ हो, अगर आजिज़ हो गया हो तो वो ग़ुलाम हो जाता है उसका बेच डालना सबके नज़दीक दुरुस्त हो जाता है। इमाम अहमद का यही मज़हब है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और इमाम शाफ़िई (रह.) के नज़दीक जब तक वो आजिज़ न हो उसकी बेअ दुरुस्त नहीं है।

وَقَالَتْ عَائِشَةُ: هُوَ عَبْدٌ مَا بَقِيَ عَلَيْهِ شَيْءٌ وَقَالَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ: مَا بَقِيَ عَلَيْهِ دِرْهَمٌ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: هُوَ عَبْدٌ إِنْ عَاشَ وَإِنْ مَاتَ وَإِنْ جَنَى مَا بَقِيَ عَلَيْهِ شَيْءٌ.

और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मुकातब पर जब तक कुछ भी मुतालबा बाक़ी है वो ग़ुलाम ही रहेगा और ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) ने कहा, जब तक एक दिरहम भी बाक़ी है (मुकातब आज़ाद नहीं होगा) और अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि मुकातब पर जब तक कुछ बाक़ी है वो अपनी ज़िन्दगी मौत और जुर्म (सब) में ग़ुलाम ही माना जाएगा।

٢٥٦٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: أَنَّ بَرِيْرَةَ جَاءَتْ تَسْتَعِيْنُ عَائِشَةَ أُمَّ الْمُؤْمِنِيْنَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، فَقَالَتْ لَهَا: إِنْ أَحَبَّ أَهْلُكِ أَنْ أَصُبَّ لَهُمْ ثَمَنَكِ صَبَّةً وَاحِدَةً وَأُعْتِقَكِ فَعَلْتُ. فَذَكَرَتْ بَرِيْرَةُ ذَلِكَ لأَهْلِهَا فَقَالُوا: إِلاَّ أَنْ يَكُونَ الْوَلاَءُ لَنَا. قَالَ مَالِكٌ: قَالَ يَحْيَى: فَزَعَمَتْ عَمْرَةُ أَنَّ عَائِشَةَ ذَكَرَتْ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((اشْتَرِيْهَا وَأَعْتِقِيْهَا، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). [راجع: ٤٥٦]

2564. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी यह्या बिन सईद से, वो अम्र बिन्ते अब्दुर्रहमान से कि बरीरा (रज़ि.) हज़रत आइशा (रज़ि.) से मदद लेने आईं। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उससे कहा कि अगर तुम्हारे मालिक ये सूरत पसन्द करें कि मैं (मुकातबत की सारी रक़म) उन्हें एक ही बार अदा कर दूँ और फिर तुम्हें आज़ाद कर दूँ तो मैं ऐसा कर सकती हूँ। बरीरा (रज़ि.) ने उसका ज़िक्र अपने मालिकों से किया तो उन्होंने कहा कि (हमें इस सूरत में ये मंज़ूर है कि) तेरी विलाअ हमारे ही साथ क़ायम रहे। मालिक ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया कि अम्रह को यक़ीन था कि आइशा (रज़ि.) ने उसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तू उसे ख़रीदकर आज़ाद कर दे। विलाअ तो उसी के साथ होती है जो उसे आज़ाद करे। (राजेअ : 456)

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ये फ़र्माया कि तेरे अहल चाहें तो मैं तेरी क़ीमत एक दफ़ा ही अदा कर दूँ, यहीं से बाब का मतलब निकला क्योंकि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बरीरा को मोल लेना चाहा। तो मा'लूम हुआ कि मुकातब की बेअ हो सकती है।

बाब 5 : अगर मुकातब किसी शख़्स से कहे मुझको

٥- بَابُ إِذَا قَالَ الْمُكَاتَبُ اشْتَرِي

ख़रीदकर आज़ाद कर दो और वो इसी ग़र्ज़ से ख़रीद ले

وأعتقني، فاشتراه لذلك

2565. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ऐमन ने बयान किया कि मुझसे मेरे बाप ऐमन (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि मैं पहले उ़त्बा बिन अबी लहब का ग़ुलाम था। उनका जब इंतिक़ाल हुआ तो उनकी औलाद मेरी वारिष़ हुई। उन लोगों ने मुझे अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी अ़म्र को बेच दिया और इब्ने अबी अ़म्र ने मुझे आज़ाद कर दिया। लेकिन (बेचते वक़्त) उ़त्बा के वारिष़ों ने विलाअ की शर्त़ अपने लिये लगा ली थी (तो क्या ये शर्त़ स़हीह है?) इस पर आइशा (रज़ि.) ने कहा कि बरीरा (रज़ि.) मेरे यहाँ आई थीं और उन्होंने किताबत का मामला कर लिया था। उन्होंने कहा कि मुझे आप ख़रीदकर आज़ाद कर दें। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मैं ऐसा कर दूँगी (लेकिन मालिकों से बातचीत के बाद) उन्होंने बताया कि वो मुझे बेचने पर सिर्फ़ इस शर्त़ के साथ राज़ी हैं कि विलाअ उन्हीं के साथ क़ायम रहे। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि फिर मुझे उसकी ज़रूरत भी नहीं है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी उसे सुना। (आइशा रज़ि. ने ये कहा कि) आपको उसकी इत्तिलाअ मिली। इसलिये आप (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) से दरयाफ़्त किया, उन्होंने सूरतेहाल की आपको ख़बर दी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि बरीरा को ख़रीदकर आज़ाद कर दे और मालिकों को जो भी शर्त़ चाहें लगाने दो। चुनाँचे आइशा (रज़ि.) ने उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दिया। मालिकों ने चूँकि विलाअ की शर्त़ रखी थी इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने (स़हाबा किराम रज़ि. के एक मज्मअ़े से) ख़िताब फ़र्माया, विलाअ तो उसी के साथ होती है जो आज़ाद करे। (और जो आज़ाद न करें) अगरचे वो सौ शर्तें भी लगा लें (विलाअ फिर भी उनके साथ क़ायम नहीं हो सकती)

٢٥٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي أَيْمَنُ قَالَ: ((دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فَقُلْتُ: كُنْتُ لِعُتْبَةَ بْنِ أَبِي لَهَبٍ وَمَاتَ وَوَرِثَنِي بَنُوهُ، وَإِنَّهُمْ بَاعُونِي مِنِ ابْنِ أَبِي عَمْرٍو، فَأَعْتَقَنِي ابْنُ أَبِي عَمْرٍو وَاشْتَرَطَ بَنُو عُتْبَةَ الْوَلاَءَ، فَقَالَتْ: دَخَلَتْ بَرِيْرَةُ وَهِيَ مُكَاتَبَةٌ فَقَالَتْ: اشْتَرِيْنِي وَأَعْتِقِيْنِي، قَالَتْ: نَعَمْ، قَالَتْ: لاَ يَبِيْعُونِي حَتَّى يَشْتَرِطُوا وَلاَئِي، فَقَالَتْ: لاَ حَاجَةَ لِي بِذَلِكَ. فَسَمِعَ بِذَلِكَ النَّبِيُّ ﷺ - أَوْ بَلَغَهُ - فَذَكَرَ لِعَائِشَةَ فَذَكَرَتْ عَائِشَةُ مَا قَالَتْ لَهَا، فَقَالَ: ((اشْتَرِيْهَا وَأَعْتِقِيْهَا وَدَعِيْهِمْ يَشْتَرِطُونَ مَا شَاؤُوا))، فَاشْتَرَتْهَا عَائِشَةُ فَأَعْتَقَتْهَا، وَاشْتَرَطَ أَهْلُهَا الْوَلاَءَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ، وَإِنِ اشْتَرَطُوا مِائَةَ شَرْطٍ)).

तश्रीह: हज़रत उ़त्बा (रज़ि.) अबू लहब के बेटे थे। रसूले करीम (ﷺ) के चचाज़ाद भाई, ये फ़तहे मक्का के साल इस्लाम लाए। हज़रत बरीरा (रज़ि.) ने ख़ुद हज़रत आइशा (रज़ि.) से अपने को ख़रीदने और आज़ाद कर देने की दरख़्वास्त की थी उसी से बाब का मज़्मून ष़ाबित हुआ।

अल्हम्दुलिल्लाह कि का'बा शरीफ़ में 15 अप्रैल 1970 को यहाँ तक मतने बुख़ारी शरीफ़ के पढ़ने से फ़ारिग़ हुआ। साथ ही दुआ की कि अल्लाह पाक ख़िदमते बुख़ारी शरीफ़ में कामयाबी बख़्शे और उन सब दोस्तों बुज़ुर्गों के ह़क़ में उसे बतौरे

सदक़-ए-जारिया क़ुबूल करे जो इस अ़ज़ीम ख़िदमत में ख़ादिम के साथ हर मुम्किन तआवुन फ़र्मा रहे हैं। जज़ाहुमुल्लाहु **अहसनल्जज़ा फ़िद्दुनिया वल्आख़िरति, आमीन।**

सनद में ऐमन (रह.) का नाम आया है। ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब (रह.) फ़र्माते हैं, **हुव अयमनुल्हबशी अल्मक्की नज़ीलुल्मदीना वालिदु अब्दिल्वाहिद व हुव गैरु अयमनुब्नु नायल अल्हबशी अल्मक्की नज़ीलु अस्क़लान व किलाहुमा मिनत्ताबिईन व लैस लिवालिदि अन आयशत व हदीषानि अ़न जाबिर व कुल्लुहुमा मुताबअ़तुन व लम यरौ अन्हु गैर वलदिही अब्दुल्वाहिद.** (फ़त्हुल्बारी)

51. किताबुल हिबा व फ़ज़्लुहा वत्तह़रीसु अ़लैहा

किताब हिबा के मसाइल का बयान

और उसकी फ़ज़ीलत और उसकी तर्ग़ीब दिलाना

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

हिबा बिला इवज़ किसी शख़्स़ को कोई माल या ह़क़ दे देना। स़दक़ा भी उसी त़रह़ है मगर वो मुह़ताज के लिये ब-निय्यते ष़वाब होता है। हिबा में मुह़ताज की शर्त़ नहीं है। लफ़्ज़ ह़िबा वहब युहिबु का मस़दर है लफ़्ज़ वह्हाब भी इसी से है जिसके मा'नी बहुत ही नेअ़मतें बख़्शने वाला। ये लफ़्ज़ अस्माउल हुस्ना में दाख़िल है। ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **वल्हिबतु बिकस्रिल्हाइ व तखफ़ीफ़ल्बाइल्मुवह्हति तत्लुक़ु बिल्मअ़नल्अअ़म्मि अ़ला अन्वाइल्अब्राइ व हुव हिबतुद्दीन मिम्मन हुव अ़लैहि वस्सदक़तु व हिय हिबतुन मा युतमह्हज़ु बिही तलबु ष्ज़वाबुल्आख़िरति वल्हदयति व हिय मा युक्रमु बिहिल्मौहूबु लहू (इला आख़िरिही) वज़ीउल्मुसन्निफ़ि महमूलुन अलल्मअनल्अ अ़म्मि लिअन्नहू अदख़ल फ़ीहल्हदाया.** (फ़त्हुल्बारी) या'नी लफ़्ज़ हिबा मुख़्तलिफ़ क़िस्म के नेक सुलूक करने पर बोला जाता है और वो दरअस़ल मक़रूज़ पर से क़र्ज़ का हिबा कर देना है और लफ़्ज़ स़दक़ा वो हिबा है जिससे महज़ ष़वाबे आख़िरत मत़्लूब हो और हदिया वो जो किसी को उसके इकराम के तौर पर दिया जाए। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसे आ़म मआ़नी में मुराद लिया है इसलिये हदाया को भी दाख़िल फ़र्मा लिया है।

बाब 1 :

١ - بَابٌ

2566. हमसे आ़स़िम बिन अ़ली अबुल हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद मक़बरी ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ मुसलमान औ़रतों! हर्गिज़ कोई पड़ौसन अपनी दूसरी पड़ौसन के लिये (मा'मूली हदिया को भी) ह़क़ीर न जाने, ख़्वाह बकरी के ख़ुर का ही क्यूँ न हो। (दीगर मक़ाम : 6017)

٢٥٦٦ - حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَا نِسَاءَ الْمُسْلِمَاتِ لاَ تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لِجَارَتِهَا وَلَوْ فِرْسِنَ شَاةٍ)).

[طرفه في: ٦٠١٧].

जिस पर बहुत ही ज़रा सा गोश्त होता है। मतलब ये है कि अपनी हमसाई (पड़ौसन) का हिस्सा खुशी से क़ुबूल करे, उसके लेने से नाक-भौं न चढ़ाएँ। न ज़ुबान से ऐसी बात निकाले जिससे उसकी हिक़ारत निकले क्योंकि ऐसा करने से उसके दिल को रंज होगा और किसी मुसलमान का दिल दुखाना बड़ा गुनाह है। हदीष़ से बाब का मतलब यूँ निकला कि अपने पड़ौस वालों को तोहफ़ा-तहाइफ़ पेश करना सुन्नत है, चाहे वो कम क़ीमत ही क्यूँ न हो। रिवायत में बकरी के खुर का ज़िक्र है जो बेकार जानकर फेंक दिया जाता है। इसका ज़िक्र हदिया की कम क़ीमती होने के इज़हार के लिये किया गया।

2567. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने यज़ीद बिन रूमान से, वो उ़र्वा से और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आपने उ़र्वा से कहा, मेरे भांजे! आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़हद मुबारक में (ये हाल था कि) हम एक चाँद देखते, फिर दूसरा चाँद देखते, फिर तीसरा देखते, इसी तरह दो दो महीने गुज़र जाते और रसूले करीम (ﷺ) के घरों में (खाना पकाने के लिये) आग न जलती थी। मैंने पूछा, ख़ालाजान! फिर आप लोग ज़िन्दा किस त़रह रहती थीं? आपने फ़र्माया कि सिर्फ़ दो काली चीज़ों खजूर और पानी पर। अल्बत्ता रसूलुल्लाह (ﷺ) के चन्द अंसार पड़ौसी थे। जिनके पास दूध देने वाली बकरियाँ थीं और वो रसूले करीम (ﷺ) के यहाँ भी उनका दूध तोहफ़े के त़ौर पर पहुँचा दिया करते थे। आप (ﷺ) उसे हमें भी पिला दिया करते थे। (दीगर मक़ाम : 6458, 6459)

٢٥٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ رُوْمَانَ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ لِعُرْوَةَ: ((ابْنَ أُخْتِي، إِنْ كُنَّا لَنَنْظُرُ إِلَى الْهِلاَلِ ثُمَّ الْهِلاَلِ ثُمَّ الْهِلاَلِ، ثَلاَثَةَ أَهِلَّةٍ فِي شَهْرَيْنِ، وَمَا أُوْقِدَتْ فِي أَبْيَاتِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ نَارٌ. فَقُلْتُ: يَا خَالَةُ، مَا كَانَ يُعِيْشُكُمْ؟ قَالَتْ: الأَسْوَدَانِ التَّمْرُ وَالْمَاءُ. إِلاَّ أَنَّهُ قَدْ كَانَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ جِيْرَانٌ مِنَ الأَنْصَارِ كَانَتْ لَهُمْ مَنَائِحُ، وَكَانُوا يَمْنَحُوْنَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مِنْ أَلْبَانِهِمْ فَيَسْقِيْنَا)). [طرفاه في: ٦٤٥٨، ٦٤٥٩].

दूध बत़ौरे तोहफ़ा भेजना इससे ष़ाबित हुआ। दो महीने मे तीन चाँद इस त़रह दिखते हैं कि पहला चाँद महीने के शुरू होने पर देखा, फिर दूसरा चाँद उसके ख़त्म पर तीसरा चाँद दूसरे महीने के ख़त्म होने पर। काली चीज़ों में पानी को भी शामिल कर दिया, हालाँकि पानी काला नहीं होता। लेकिन अ़रब लोग तष़्निया एक चीज़ के नाम से कर देते हैं। जैसे शम्सैन, क़मरैन, चाँद-सूरज दोनों को कहते हैं। इस तरह अब्यज़ैन दूध और पानी दोनों को कह देते हैं और सिर्फ़ दूध को अब्यज़ या'नी सफ़ेद होता है पानी का तो कोई रंग नहीं होता। इस ह़दीष़ से दूध का बत़ौर तोहफ़ा व हदिया व हिबा पेश करना ष़ाबित हुआ। फ़वाइद के लिहाज़ से ये बहुत ही बड़ा हिबा है जो एक इंसान दूसरे इंसान को पेश करता है।

बाब 2 : थोड़ी चीज़ हिबा करना

٢- بَابُ الْقَلِيْلِ مِنَ الْهِبَةِ

2568. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अबी अ़दी ने बयान किया शुअ़बा से, वो सुलैमान से, वो अबू ह़ाज़िम से और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि अगर मुझे बाज़ू और पाए (के गोश्त) पर भी दा'वत दी जाए तो मैं क़ुबूल कर लूँगा और मुझे बाज़ू

٢٥٦٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ

और पाये (के गोश्त) का तोह्फ़ा भेजा जाए तो उसे भी क़ुबूल कर लूँगा। (दीगर मक़ाम : 5178)

دُعِيتُ إِلَى ذِرَاعٍ أَوْ كُرَاعٍ لأَجَبْتُ، وَلَوْ أُهْدِيَ إِلَيَّ ذِرَاعٌ أَوْ كُرَاعٌ لَقَبِلْتُ)).

[طرفه في: ٥١٧٨].

तोह्फ़ा कितना भी थोड़ा हो क़ाबिले क़द्र है और दा'वत में कुछ भी पेश किया जाए, दा'वत बहरहाल क़ाबिले क़ुबूल है। इन अ़मलों से बाहमी मुहब्बत पैदा होती है जो इस्लाम का अस़ली मंशा है। इससे गोश्त का बतौरे हिबा, तोह्फ़ा व हदिया करना स़ाबित हुआ। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के नज़दीक लफ़्ज़ हिबा इन सब पर बोला जा सकता है।

बाब 3 : जो शख़्स़ अपने दोस्तों से कोई चीज़ बतौरे तोह्फ़ा मांगे

٣- بَابُ مَنِ اسْتَوْهَبَ مِنْ أَصْحَابِهِ شَيْئًا

अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने साथ मेरा भी एक हिस़्स़ा लगाना (इससे बाब का तर्जुमा स़ाबित हुआ)

وَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اضْرِبُوا لِي مَعَكُمْ سَهْمًا)).

2569. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान मुहम्मद बिन मुत़र्रफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू ह़ाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मुहाजिर औ़रत के पास (अपना आदमी) भेजा। उनका एक ग़ुलाम बढ़ई था। उनसे आपने फ़र्माया कि अपने ग़ुलाम से हमारे लिये लकड़ियों का एक मिम्बर बनाने के लिये कहें। चुनाँचे उन्होंने अपने ग़ुलाम से कहा, वो ग़ाबा से जाकर झाऊ काट लाया ओर उसी का एक मिम्बर बना दिया। जब वो मिम्बर बना चुके तो उस औ़रत ने रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में कहलवा भेजा कि मिम्बर बनकर तैयार है। आप (ﷺ) ने कहलवाया कि उसे मेरे पास भिजवा दें। जब लोग उसे लाए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ुद उसे उठाया और जहाँ तुम अब देख रहे हो। वहीं आप (ﷺ) ने उसे रखा। (राजेअ़ : 377)

٢٥٦٩- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَرْسَلَ إِلَى امْرَأَةٍ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَكَانَ لَهَا غُلاَمٌ نَجَّارٌ قَالَ لَهَا، ((مُرِي عَبْدَكِ فَلْيَعْمَلْ لَنَا أَعْوَادَ الْمِنْبَرِ))، فَأَمَرَتْ عَبْدَهَا، فَذَهَبَ فَقَطَعَ مِنَ الطَّرْفَاءِ، فَصَنَعَ لَهُ مِنْبَرًا. فَلَمَّا قَضَاهُ أَرْسَلَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ: إِنَّهُ قَدْ قَضَاهُ. قَالَ ﷺ: ((أَرْسِلِي بِهِ إِلَيَّ، فَجَاءُوا بِهِ، فَاحْتَمَلَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَوَضَعَهُ حَيْثُ تَرَوْنَ)). [راجع: ٣٧٧]

तशरीह़ : रसूले करीम (ﷺ) ने बतौरे हदिया ख़ुद एक अंस़ारी औ़रत से फ़र्माइश की कि वो अपने बढ़ई ग़ुलाम से एक मिम्बर बनवा दें। चुनाँचे ता'मील की गई और ग़ाबा के झाऊ की लकड़ियों से मिम्बर तैयार करके पेश कर दिया गया। जब ये पहले दिन इस्ते'माल हुआ तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस खजूर के तने का सहारा छोड़ दिया जिस पर आप टेक लगाकर खड़े हुआ करते थे। यही तना था जो आप (ﷺ) की जुदाई के ग़म में सुबक सुबककर (सिसक सिसककर) रोने लगा था। जब आप (ﷺ) ने उस पर अपना हाथ रखा तब वो ख़ामोश हो गया। मुहाजिर का लफ़्ज़ अबू ग़स्सान रावी का वहम है और स़ह़ीह़ ये है कि ये औ़रत अंस़ारी थी। इससे लकड़ी का मिम्बर सुन्नत होना स़ाबित हुआ जो बेशतर अहले ह़दीस़ मसाजिद में देखा जा सकता है।

2570. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया अबू ह़ाज़िम से, वो अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा सुलमी से और उनसे उनके

٢٥٧٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ السَّلَمِيِّ

عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنْتُ يَوْمًا جَالِسًا مَعَ رِجَالٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ فِي مَنْزِلٍ فِي طَرِيقِ مَكَّةَ - وَرَسُولُ اللهِ ﷺ نَازِلٌ أَمَامَنَا- وَالْقَوْمُ مُحْرِمُونَ وَأَنَا غَيْرُ مُحْرِمٍ، فَأَبْصَرُوا حِمَارًا وَحْشِيًّا - وَأَنَا مَشْغُولٌ أَخْصِفُ نَعْلِي - فَلَمْ يُؤْذِنُونِي بِهِ، وَأَحَبُّوا لَوْ أَنِّي أَبْصَرْتُهُ، فَالْتَفَتُّ فَأَبْصَرْتُهُ، فَقُمْتُ إِلَى الْفَرَسِ فَأَسْرَجْتُهُ، ثُمَّ رَكِبْتُ، وَنَسِيتُ السَّوْطَ وَالرُّمْحَ، فَقُلْتُ لَهُمْ: نَاوِلُونِي السَّوْطَ وَالرُّمْحَ، فَقَالُوا: لاَ وَاللهِ لاَ نُعِينُكَ عَلَيْهِ بِشَيْءٍ، فَغَضِبْتُ، فَنَزَلْتُ فَأَخَذْتُهُمَا، ثُمَّ رَكِبْتُ فَشَدَدْتُ عَلَى الْحِمَارِ فَعَقَرْتُهُ، ثُمَّ جِئْتُ بِهِ وَقَدْ مَاتَ، فَوَقَعُوا فِيهِ يَأْكُلُونَهُ. ثُمَّ إِنَّهُمْ شَكُّوا فِي أَكْلِهِمْ إِيَّاهُ وَهُمْ حُرُمٌ، فَرُحْنَا - وَخَبَأْتُ الْعَضُدَ مَعِي - فَأَدْرَكْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَسَأَلْنَاهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: ((مَعَكُمْ مِنْهُ شَيْءٌ؟)) فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَنَاوَلْتُهُ الْعَضُدَ فَأَكَلَهَا حَتَّى نَفَّدَهَا وَهُوَ مُحْرِمٌ)). فَحَدَّثَنِي بِهِ زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ. [راجع: ١٨٢١]

बाप ने बयान किया कि मक्का के रास्ते में एक जगह में रसूलुल्लाह (ﷺ) के चन्द साथियों के साथ बैठा हुआ था। रसूले करीम (ﷺ) हमसे आगे क़याम फ़र्मा थे। (हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर) और लोग तो एहराम बाँधे हुए थे लेकिन मेरा एहराम नहीं था मेरे साथियों ने एक गोरख़र देखा। मैं उस वक़्त अपनी जूती गांठने में मशग़ूल था। उन लोगों ने मुझको कुछ ख़बर नहीं दी लेकिन उनकी ख़्वाहिश यही थी कि किसी तरह मैं गोरख़र को देख लूँ। चुनाँचे मैंने जो नज़र उठाई तो गोरख़र दिखाई दिया। मैं फ़ौरन घोड़े के पास गया और उस पर ज़ीन कसकर सवार हो गया, मगर इत्तिफ़ाक़ से (जल्दी में) कोड़ा और नेज़ा भूल गया। इसलिये मैंने अपने साथियों से कहा कि वो मुझे कोड़ा और नेज़ा उठा दें। उन्होंने कहा, हर्गिज़ नहीं क़सम अल्लाह की, हम तुम्हारी (शिकार करने में) किसी क़िस्म की मदद नहीं कर सकते। (क्योंकि हम सब लोग हालते एहराम में हैं) मुझे इस पर ग़ुस्सा आया और मैंने ख़ुद ही उतरकर दोनों चीज़ें ले लीं। फिर सवार होकर गोरख़र पर हमला किया और उसको शिकार कर लाया। वो मर भी चुका था। अब लोगों ने कहा कि उसे खाना चाहिये। लेकिन फिर एहराम की हालत में उसे खाने (के जवाज़) पर शुब्हा हुआ। (लेकिन कुछ लोगों ने शुब्हा नही किया और गोश्त खाया) फिर हम आगे बढ़े और मैंने उस गोरख़र का एक बाज़ू छुपा रखा था। जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास पहुँचे तो उसके बारे में आपसे सवाल किया, (आपने मुहरिम के लिये शिकार के गोश्त खाने का फ़त्वा दिया) और दरयाफ़्त किया कि उसमें से भी कुछ बचा हुआ गोश्त तुम्हारे पास मौजूद भी है? मैंने कहा, जी हाँ! और वही बाज़ू आपकी ख़िदमत में पेश किया। आपने उसे तनावुल फ़र्माया यहाँ तक कि वो ख़त्म हो गया। आप भी उस वक़्त एहराम से थे (अबू हाज़िम ने कहा कि) मुझसे ये हदीष़ ज़ैद बिन असलम ने बयान की, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने। (राजेअ़ : 1821)

साथियों ने इमदाद से इंकार इसलिये किया कि वो एहराम की हालत में थे और एहराम की हालत में न शिकार करना दुरुस्त है और न शिकार में मदद करना। आँहज़रत (ﷺ) ने उस गोश्त में तोहफ़े की ख़ुद गुज़ारिश की थी। इसी से मक़्सदे बाब हासिल हुआ। अबू क़तादा सलमी (रज़ि.) ने तीर बिस्मिल्लाह पढ़कर चलाया होगा। पस वो शिकार हलाल हुआ। दोस्त अहबाब में

तोहफ़े तहाइफ़ लेने देने बल्कि कुछ बार बाहमी तौर पर ख़ुद फ़र्माइश करने का आम दस्तूर है, उसकी जवाज़ यहाँ से षाबित हुआ।

बाब 4 : पानी (या दूध) मांगना

٤- بَابُ مَنِ اسْتَسْقَى

और सहल बिन सअ़द साएदी ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, मुझे पानी पिलाओ, (इससे अपने साथियों से पानी मांगना षाबित हुआ)

وَقَالَ سَهْلٌ قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((اسْقِنِي)).

सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) अंसारी सहाबी हैं और अबू अ़ब्बास इनकी कुन्नियत है। इनका नाम हज़न था। लेकिन रसूले करीम (ﷺ) ने इसको सहल से बदल दिया। वफ़ाते नबवी के वक़्त उनकी उम्र पन्द्रह साल की थी, उन्होंने मदीना में 91 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। ये सबसे आख़िरी सहाबी हैं जिनका मदीना में इंतिक़ाल हुआ। इनसे इनके बेटे अ़ब्बास और ज़ुहरी और अबू हाज़िम रिवायत करते हैं।

2571. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने, कहा कि मुझसे अबू तुवाला ने जिनका नाम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान था, कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना। वो कहते थे कि (एक बार) रसूले करीम (ﷺ) हमारे उसी घर में तशरीफ़ लाए और पानी तलब किया। हमारे पास एक बकरी थी, उसे हमने दूहा। फिर मैंने उसमें उसी कुएँ का पानी मिलाकर आपकी ख़िदमत में (लस्सी बनाकर) पेश किया, हज़रत अबूबक्र (रजि) आप (ﷺ) के बाएँ तरफ़ बैठे हुए थे और हज़रत उ़मर (रज़ि.) सामने थे और एक देहाती आपके दाएँ तरफ़ बैठा था। जब आप (ﷺ) पीकर फ़ारिग़ हुए तो (प्याले में कुछ दूध बच गया था इसलिये) हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि ये हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) हैं लेकिन आपने उसे देहाती को अ़ता फ़र्माया (क्योंकि वो दाएँ तरफ़ था) फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, दाईं तरफ़ बैठने वाले, दाईं तरफ़ बैठने वाले ही हक़ रखते हैं। पस ख़बरदार! दाईं तरफ़ ही से शुरू किया करो। अनस (रज़ि.) ने कहा कि यही सुन्नत है, यही सुन्नत है। तीन बार (आपने इस बात को दोहराया) (राजेअ़ : 3252)

٢٥٧١- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو طُوَالَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((أَتَانَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي دَارِنَا هَذِهِ فَاسْتَسْقَى، فَحَلَبْنَا لَهُ شَاةً لَنَا، ثُمَّ شُبْتُهُ مِنْ مَاءِ بِئْرِنَا هَذِهِ، فَأَعْطَيْتُهُ، وَأَبُوبَكْرٍ عَنْ يَسَارِهِ وَعُمَرُ تُجَاهَهُ وَأَعْرَابِيٌّ عَنْ يَمِيْنِهِ. فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ عُمَرُ: هَذَا أَبُوبَكْرٍ، فَأَعْطَى الأَعْرَابِيَّ ثُمَّ قَالَ: ((الأَيْمَنُونَ الأَيْمَنُونَ، أَلاَ فَيَمِّنُوا)). قَالَ أَنَسٌ: فَهِيَ سُنَّةٌ فَهِيَ سُنَّةٌ. ثَلاَثَ مَرَّاتٍ)). [راجع: ٣٢٥٢]

तश्रीह : मक़्सदे बाब और ख़ुलासा हदीषे वारिदा ये है कि हर इंसान के लिये उसकी मज्लिस ज़िन्दगी में दोस्त अह़बाब के साथ बेतकल्लुफ़ी के बहुत से मौक़े आ जाते हैं । शरीअ़ते इस्लामिया इस बारे में तंग नज़र नहीं है, उसने ऐसे मौक़ों के लिये हर मुम्किन सहूलतें दी हैं जो मअ़यूब नहीं हैं। मषलन अपने दोस्त अह़बाब से पानी पिलाने की फ़र्माइश करना जैसा कि हदीष में मज़्कूर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अनस (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ लाकर पानी तलब किया। हज़रत अनस (रज़ि.) भी मिज़ाजे रिसालत के क़द्रदान थे उन्होंने पानी और दूध मिलाकर लस्सी बनाकर पेश कर दिया। आदाबे मज्लिस का यहाँ दूसरा वाक़िया पेश आया जो रिवायत में मज़्कूर है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने सुन्नते रसूल (ﷺ) के इज़्हार और उसकी अहमियत बतलाने के लिये तीन बार ये लफ़्ज़ दोहराए। वाक़िया यही है कि सुन्नते रसूल (ﷺ) की बड़ी अहमियत है ख़्वाह वो सुन्नत कितनी ही छोटी क्यूँ न हो। फ़िदाइयाने रसूल (ﷺ) के लिये ज़रूरी है कि वो हर वक़्त हर काम में सुन्नते रसूल (ﷺ)

को सामने रखें, इसी में दोनों जहान की भलाई है।

बाब 5 : शिकार का तोहफ़ा क़ुबूल करना

٥- بَابُ قَبُولِ هَدِيَّةِ الصَّيْدِ.

وَقَبِلَ النَّبِيُّ ﷺ من أبي قَتَادَةَ عَضُدَ الصَّيْدِ

और नबी करीम (ﷺ) ने शिकार के बाज़ू का तोहफ़ा अबू क़तादा से क़ुबूल फ़र्माया था (इसी से बाब का तर्जुमा ष़ाबित हुआ)

٢٥٧٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدِ بْنِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَنْفَجْنَا أَرْنَبًا بِمَرِّ الظَّهْرَانِ، فَسَعَى الْقَوْمُ فَلَغِبُوا، فَأَدْرَكْتُهَا فَأَخَذْتُهَا، فَأَتَيْتُ بِهَا أَبَا طَلْحَةَ فَذَبَحَهَا وَبَعَثَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ بِوَرِكِهَا - أَوْ فَخِذَيْهَا قَالَ: فَخِذَيْهَا لاَ شَكَّ فِيهِ)) - فَقَبِلَهُ. قُلْتُ: وَأَكَلَ مِنْهُ؟ قَالَ: وَأَكَلَ مِنْهُ. ثُمَّ قَالَ بَعْدُ: قَبِلَهُ)). [طرفاه في: ٥٤٨٩، ٥٥٣٥].

2572. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस बिन मालिक ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मर्रुज़ ज़ोह्रान नामी एक जगह में हमने एक ख़रगोश का पीछा किया। लोग (उसके पीछे) दौड़े और उसे थका दिया और मैंने क़रीब पहुँचकर उसे पकड़ लिया। फिर अबू त़लह़ा (रज़ि.) के यहाँ लाया, उन्होंने उसे ज़िब्ह़ किया और उसके पीछे का या दोनों रानों का गोश्त नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा। (शुअ़बा ने बाद में यक़ीन के साथ) कहा कि दोनों रानें उन्होंने भेजी थीं, उसमें कोई शक नहीं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उसे क़ुबूल फ़र्माया था मैंने पूछा और उसमें से आपने कुछ तनावुल भी फ़र्माया था? उन्होंने बयान किया कि हाँ! कुछ तनावुल भी फ़र्माया था। उसके बाद फिर उन्होंने कहा कि आपने वो हदिया क़ुबूल फ़र्मा लिया था। (दीगर मक़ाम : 5489, 5535)

٢٥٧٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ عَنِ الصَّعْبِ بْنِ جَثَّامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ: أَنَّهُ أَهْدَى لِرَسُولِ اللهِ ﷺ حِمَارًا وَحْشِيًّا - وَهُوَ بِالأَبْوَاءِ أَوْ بِوَدَّانَ - فَرَدَّ عَلَيْهِ. فَلَمَّا رَأَى مَا فِي وَجْهِهِ قَالَ: ((أَمَا إِنَّا لَمْ نَرُدَّهُ عَلَيْكَ إِلاَّ أَنَّا حُرُمٌ)). [راجع: ١٨٢٥].

2573. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया इब्ने शिहाब से, वो उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द से, वो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से और वो स़अ़ब बिन ज़ष़ामा (रज़ि.) से कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में गोरख़र का तोह़फ़ा पेश किया था। आप (ﷺ) उस वक़्त मक़ामे अब्वा या मक़ामे विदान में थे (रावी को शुब्हा है) आपने उनका तोह़फ़ा वापस कर दिया। फिर उनके चेहरे पर (रंज के आष़ार) देखकर फ़र्माया कि मैंने ये तोह़फ़ा सिर्फ़ इसलिये वापस किया है कि हम एह़राम बाँधे हुए हैं। (राजेअ़ : 1825)

तश्रीह : इन्नमा कबिलस्सयद मिन अबी क़तादत वरदहू अलस्सअ़बि मअ़ अन्नहु (ﷺ) कान फिल्हालैनि मुहरिमन लिअन्नल्मुहरिम ला यम्लिकुस्सयद व यम्लिकु मज़्बूहल्हलालि लिअन्नहू ककित्अ़ति लहमिन लम यब्क़ फी हुक्मिस्सयदि (ऐनी) आँह़ज़रत (ﷺ) ने अबू क़तादा (रज़ि.) का शिकार क़ुबूल फ़र्मा लिया और स़अ़ब बिन ज़ष़ामा (रज़ि.) का वापस कर दिया। ह़ालाँकि आप दोनों ह़ालतों में मुह़रिम थे। इसकी वजह ये कि मुह़रिम शिकारे

महज़ को मिल्कियत में नहीं ले सकता और हलाल ज़बीहा को मिल्कियत में ले सकता है। इसलिये कि वो गोश्त के टुकड़े की मानिन्द है जो शिकार के हुक्म में बाक़ी नहीं रहा। पस सअ़ब बिन जषामा (रज़ि.) का पेशकर्दा गोश्त शिकारे महज़ था और आप मुहरिम थे लिहाज़ा आप (ﷺ) ने उसे वापस फ़र्मा दिया।

बाब 7 : हदिया का क़ुबूल करना

٧- بَابُ قَبُولِ الْهَدِيَّةِ

2574. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि लोग (रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में) तहाइफ़ भेजने के लिये आइशा (रज़ि.) की बारी का इंतिज़ार किया करते थे। अपने हदाया से या इस ख़ास दिन के इंतिज़ार से (रावी को शक है) लोग आँहज़रत (ﷺ) की ख़ुशी हासिल करना चाहते थे। (दीगर मक़ाम : 2580, 2581, 3775)

٢٥٧٤- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّاسَ كَانُوا يَتَحَرَّوْنَ بِهَدَايَاهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ يَبْتَغُونَ بِهَا - أَوْ يَبْتَغُونَ بِذَلِكَ- مَرْضَاةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ)).

[أطرافه في: ٢٥٨٠، ٢٥٨١، ٣٧٧٥].

ख़िदमते नबवी में तोहफ़ा और फिर हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी में पेश करना दोनों उमूर रसूले करीम (ﷺ) की ख़ुशी का बाइ़ष थे। रावी के बयान का यही मतलब है।

2575. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे जा'फ़र बिन अयास ने बयान किया, कहा कि मैंने सईद बिन जुबैर से सुना कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उनकी ख़ाला उम्मे हुफ़ैद (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पनीर, घी और गोह (साहना) के तहाइफ़ भेजे। आँहज़रत (ﷺ) ने पनीर और घी मे से तो तनावुल फ़र्माया लेकिन गोह पसन्द न होने की वजह से छोड़ दी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के (इसी) दस्तरख़्वान पर (गोह को भी) खाया गया और अगर वो हराम होती तो आप (ﷺ) के दस्तरख़्वान पर क्यूँ खाई जाती।

٢٥٧٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ إِيَاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيْدَ بْنَ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَهْدَتْ أُمُّ حُفَيْدٍ - خَالَةُ ابْنِ عَبَّاسٍ - إِلَى النَّبِيِّ ﷺ أَقِطًا وَسَمْنًا وَأَضُبًّا، فَأَكَلَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الأَقِطِ وَالسَّمْنِ وَتَرَكَ الأَضُبَّ تَقَذُّرًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَأُكِلَ عَلَى مَائِدَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلَوْ كَانَ حَرَامًا مَا أُكِلَ عَلَى مَائِدَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ)).

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ने गोह (साहना) का हदिया क़ुबूल तो फ़र्मा लिया, लेकिन ख़ुद नहीं खाया, क्योंकि आपको ये मरग़ूब न था। हाँ आपके दस्तरख़्वान पर उसे सहाबा किराम (रज़ि.) ने खाया जो इसकी हलाल होने की दलील है मगर तब्अ़ी कराहियत से कोई उसे न खाए तो वो गुनाहगार नहीं होगा, हाँ उसे हराम कहना ग़लत है।

अल् मुहद्दिषुल कबीर हज़रतुल उस्ताज़ मौलाना अ़ब्दुर्रहमान साहब मुबारक पुरी (रह.) फ़र्माते हैं, **व ज़कर इब्नु खालवय अन्नज़्ज़ब्ब यईशु सब्अमिअति सनतिन व अन्नहू ला यश्रबुल्माअ व यबूलु फी कुल्लि अर्बईन यौमन क़त्रतन व ला यस्क़ुतु लहू सिन्नुन व युकालु बल अस्नानुहू कित्अतुन वाहिदतुन व हका गैरूहु अन्न अक्ल लहमिही यज्हबुल्अतश** या'नी इब्ने ख़ाल्विया ने ज़िक्र किया है कि गोह (साहना) सात सौ साल तक ज़िन्दा रहती है और वो पानी नहीं पीती और चालीस दिन में सिर्फ़ एक क़तरा पेशाब करती है और उसके दांत नहीं गिरते बल्कि कहा जाता है कि

उसके दांत एक ही क़त्आ की शक्ल में होते हैं और कुछ का ऐसा भी कहना है कि उसका गोश्त प्यास को बुझा देता है।

आगे हज़रत मौलाना फ़र्माते हैं कि **व क़ालन्नववी अज्मअल्मुस्लिमून अला अन्नज़्ज़ब्ब हलालुन लैस बिमक्रूहिन**. या'नी मुसलमानों का इज्माअ है कि गोह (साहना) हलाला है मकरूह नहीं है। मगर हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के अस्हाब इसे मकरूह कहते हैं। इन हज़रात का ये क़ौल नुसूसे स़रीहा के ख़िलाफ़ होने की वजह से नाक़ाबिले तस्लीम है। तिर्मिज़ी की रिवायत अन इब्ने उमर में साफ़ मौजूद है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, **ला आकुलुहू व ला उहर्रिमुहू** न मैं इसे खाता हूँ न हराम क़रार देता हूँ। इस हदीष़ के ज़ेल हज़रत इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़र्माते हैं **व क़द इख़्तलफ अहलुल्इल्मि फी अक्लिज़्ज़ब्बि फरख़्ख़स फीहि बअ्ज़ु अहलिल्इल्मि मिन अस्हाबिन्नबिय्यि (ﷺ) व गैरुहुम व करिहहू बअ्ज़ुहुम व युर्वा अनिब्नि अब्बासिन अन्नहू क़ाल अकलज़्ज़ब्ब अला माइदति रसूलिल्लाहि (ﷺ) व इन्नमा तरकहू रसूलुल्लाहि (ﷺ) तक़ज़्ज़ुरन**. या'नी गोह (साहना) के बारे में अहले इल्म ने इख़्तिलाफ़ किया है। पस अस्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) में से कुछ ने उसके लिये रुख़्स़त दे दी है और उनके अलावा दूसरे अहले इल्म ने भी और कुछ ने इसे मकरूह कहा है और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि रसूले करीम (ﷺ) के दस्तरख़्वान पर गोह (साहना) का गोश्त खाया गया। मगर आप (ﷺ) ने त़बई कराहियत की बिना पर नहीं खाया।

हज़रत मौलाना मुबारकपुरी मरहूम फ़र्माते हैं. **व हुव क़ौलुल्जुम्हूर व हुवर्राजिह अल्मुअव्वलु अलैहि** या'नी जुम्हूर का क़ौल हिल्लत ही के लिये है और यही क़ौल राजेह है जिस पर फ़त्वा दिया गया है और इस मसलक पर हज़रत मौलाना मरहूम ने आठ अहादीष़ व आष़ार नक़ल फ़र्माए हैं और मकरूह कहने वालों के दलाइल पर बत़रीक़े अहसन तब्स़रा किया है। तफ़्सील के लिये तोहफ़तुल अहवज़ी जिल्द : 3, पेज नं. 73,74 का मुत़ालआ किया जाना ज़रूरी है)

2576. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअ़न बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन त़हमान ने बयान किया उन्होंने मुहम्मद बिन ज़ियाद से और वो हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में जब कोई खाने की चीज़ लाई जाती तो आप (ﷺ) दरयाफ़्त करते ये तोहफ़ा है या स़दक़ा? अगर कहा जाता कि स़दक़ा है तो आप (ﷺ) अपने स़हाबा से फ़र्माते कि खाओ, आप ख़ुद न खाते और अगर कहा जाता कि तोहफ़ा है तो आप (ﷺ) ख़ुद भी हाथ बढ़ाते और स़हाबा के साथ उसे खाते।

٢٥٧٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْنٌ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا أُتِيَ بِطَعَامٍ سَأَلَ عَنْهُ: ((أَهَدِيَّةٌ أَمْ صَدَقَةٌ؟)) فَإِنْ قِيْلَ صَدَقَةٌ قَالَ لأَصْحَابِهِ: ((كُلُوا))، وَلَمْ يَأْكُلْ. وَإِنْ قِيْلَ: هَدِيَّةٌ، ضَرَبَ بِيَدِهِ ﷺ، فَأَكَلَ مَعَهُمْ)).

स़दक़े को इसलिये न खाते कि ये आपके लिये और आपकी आल के लिये हलाल नहीं और उसमें बहुत सी मस्लिहतें आप (ﷺ) के पेशेनज़र थे जिनकी वजह से आप (ﷺ) ने अम्वाले स़दक़ात को अपने और अपनी आल के लिये खाना जाइज़ क़रार नहीं दिया।

2577. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक बार गोश्त पेश किया गया कि ये बरीरा (रज़ि.) को किसी ने बत़ौरे स़दक़ा के दिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनके लिये ये स़दक़ा है और हमारे

٢٥٧٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِلَحْمٍ، فَقِيْلَ: تُصُدِّقَ عَلَى

لِبَرِيْرَةَ، قَالَ: ((هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ، وَلَنَا هَدِيَّةٌ)). [راجع: ١٤٩٥]

लिये (जब उनके यहाँ से पहुँचा तो) हदिया है। (राजेअ़ : 1495)

मुह़ताज मिस्कीन जब स़दक़ा या ज़कात का मालिक बन चुका तो अब वो मुख़्तार है जिसे चाहे खिलाए जिसको चाहे दे। अमीर या ग़रीब को उसका तोह़फ़ा क़ुबूल करना जाइज़ होगा।

٢٥٧٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ قَالَ: سَمِعْتُهُ مِنْهُ عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّهَا أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ بَرِيْرَةَ، وَإِنَّهُمُ اشْتَرَطُوا وَلاَءَهَا، فَذُكِرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اشْتَرِيْهَا فَأَعْتِقِيْهَا، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). وَأُهْدِيَ لَهَا لَحْمٌ، فَقِيْلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: هَذَا تُصُدِّقَ عَلَى بَرِيْرَةَ، فَقَالَ: ((هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ)). وَخُيِّرَتْ. قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: زَوْجُهَا حُرٌّ أَوْ عَبْدٌ؟ قَالَ شُعْبَةُ: سَأَلْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ عَنْ زَوْجِهَا، قَالَ: لاَ أَدْرِي أَحُرٌّ أَمْ عَبْدٌ)). [راجع: ٤٥٦]

2578. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम से, शुअ़बा ने कहा कि मैंने ये ह़दीष़ अ़ब्दुर्रह़मान से सुनी थी और उन्होंने क़ासिम से रिवायत की, उन्होंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से कि उन्होंने बरीरा (रज़ि.) को (आज़ाद करने के लिये) ख़रीदना चाहा। लेकिन उनके मालिकों ने विलाअ की शर्त अपने लिये लगाई। जब उसका ज़िक्र रसूले करीम (ﷺ) से हुआ, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तू उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दे, विलाअ तो उसी के साथ क़ायम रहती है जो आज़ाद करे। और बरीरा (रज़ि.) के यहाँ (स़दक़ा का) गोश्त आया था तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा ये वही है जो बरीरा को स़दक़ा में मिला है। ये उनके लिये तो स़दक़ा है लेकिन हमारे लिये (चूँकि उनके घर से बत़ौरे हदिया मिला है) हदिया है और (आज़ादी के बाद बरीरा को) इख़्तियार दिया गया था (कि अगर चाहें तो अपने निकाह़ को फ़स्ख़ कर सकती हैं) अ़ब्दुर्रह़मान ने पूछा बरीरा (रज़ि.) के शौहर (ह़ज़रत मुग़ीष़) ग़ुलाम थे या आज़ाद? शुअ़बा ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुर्रह़मान से उनके शौहर के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मा'लूम नहीं वो ग़ुलाम थे या आज़ाद। (राजेअ़ : 456)

٢٥٧٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ قَالَ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيْرِيْنَ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فَقَالَ: ((هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ؟)) قَالَتْ: لاَ، إِلاَّ شَيْءٌ بَعَثَتْ بِهِ أُمُّ عَطِيَّةَ مِنَ الشَّاةِ الَّتِي بَعَثْتَ

2579. हमसे अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने ह़फ़्स़ा बिन्ते सीरीन से कि उम्मे अ़त़िया (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) के यहाँ तशरीफ़ ले गए और पूछा, क्या कोई चीज़ (खाने की) तुम्हारे पास है? उन्होंने कहा कि उम्मे अ़त़िया (रज़ि.) के यहाँ जो आपने स़दक़ा की बकरी भेजी थी, उसका गोश्त उन्हों ने भेजा है। उसके सिवा और कुछ नहीं है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो अपनी जगह पहुँच

إِلَيْهَا مِنَ الصَّدَقَةِ. قَالَ: ((إِنَّهَا قَدْ بَلَغَتْ مَحِلَّهَا)). [راجع: ١٤٤٦]

चुकी। (राजेअ : 1446)

या'नी उसका खाना अब हमारे लिये जाइज़ है क्योंकि मसला ये है कि सदक़ा ज़कात वग़ैरह जब किसी मुस्तहिक़ शख़्स को दे दिया जाए, तो वो अब जिस तरह चाहे उसे इस्ते'माल कर सकता है। वो चाहे किसी अमीर ग़रीब को खिला सकता है। बतौरे तोहफ़ा भी दे सकता है। अब वो उसका ज़ाती माल हो गया, वो उसका मालिक बन गया। उसको खर्च करने में उतनी ही आज़ादी है जितनी कि मालिक को होती है। ग़रीब आदमी की दिलजोई के लिये उसका हदिया क़ुबूल कर लेना और भी मोजिबे षवाब है।

٨- بَابُ مَنْ أَهْدَى إِلَى صَاحِبِهِ، وَتَحَرَّى بَعْضَ نِسَائِهِ دُونَ بَعْضٍ

बाब 8 : अपने किसी दोस्त को ख़ास उस दिन तोहफ़ा भेजना जब वो अपनी एक ख़ास बीवी के पास हो

٢٥٨٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ النَّاسُ يَتَحَرَّوْنَ بِهَدَايَاهُمْ يَوْمِي. وَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: إِنَّ صَوَاحِبِي اجْتَمَعْنَ، فَذَكَرَتْ لَهُ، فَأَعْرَضَ عَنْهَا)). [راجع: ٢٥٧٤]

2580. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया हिशाम से, उनसे उनके वालिद ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि लोग तहाइफ़ भेजने के लिये मेरी बारी का इंतिज़ार किया करते थे। और उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कहा मेरी सौकनें (उम्महातुल मोमिनीन रिज़्वानुल्लाह अलैहिन्न) जमा थीं उस वक़्त उन्होंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से। (बतौरे शिकायत लोगों की इस रविश का) ज़िक्र किया तो आपने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। (राजेअ : 2574)

इसलिये कि सहाबा (रज़ि.) अपनी मर्ज़ी के मुख़्तार थे, आप (ﷺ) के मिज़ाज-शनास थे, वो अज़्ख़ुद ऐसा करते थे फिर उन्हें रोका क्यूँ कर जा सकता था।

٢٥٨١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ نِسَاءَ رَسُولِ اللهِ ﷺ كُنَّ حِزْبَيْنِ: فَحِزْبٌ فِيهِ عَائِشَةُ وَحَفْصَةُ وَصَفِيَّةُ وَسَوْدَةُ، وَالْحِزْبُ الآخَرُ أُمُّ سَلَمَةَ وَسَائِرُ نِسَاءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَكَانَ الْمُسْلِمُونَ قَدْ عَلِمُوا حُبَّ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَائِشَةَ، فَإِذَا كَانَتْ عِنْدَ أَحَدِهِمْ هَدِيَّةٌ يُرِيدُ أَنْ يُهْدِيَهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ أَخَّرَهَا حَتَّى إِذَا كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ بَعَثَ

2581. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद बिन अबी उवैस ने, उनसे सुलैमान ने हिशाम बिन उर्वा से, उनसे उनके बाप ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की अज़्वाज की दो टुकड़ियाँ थीं। एक में आयशा (रज़ि.), हफ़्सा (रज़ि.) सफ़िया (रज़ि.), और सौदा (रज़ि.) और दूसरी में उम्मे सलमा और बक़िया अज़्वाजे मुतह्हरात थीं। मुसलमानों को रसूलुल्लाह (ﷺ) की आइशा (रज़ि.) के साथ मुहब्बत का इल्म था, इसलिये जब किसी के पास कोई तोहफ़ा होता और वो उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पेश करना चाहता तो इंतिज़ार करता। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की आयशा (रज़ि.) के घर की बारी होती तो तोहफ़ा देने वाले साहब अपना तोहफ़ा आप (ﷺ) की ख़िदमत में भेजते। इस पर उम्मे सलमा (रज़ि.) की जमाअत की अज़्वाजे मुतह्हरात ने आपस में मशवरा किया और उम्मे सलमा (रज़ि.) से

कहा कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) से बात करें ताकि आप लोगों से फ़र्मा दें कि जिसे आप (ﷺ) के यहाँ तोहफ़ा भेजना हो वो जहाँ भी आप (ﷺ) हों वहीं भेजा करे। चुनाँचे उन अज़्वाज के मश्वरे के मुताबिक़ उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा लेकिन आप (ﷺ) ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। फिर उन ख़वातीन ने पूछा तो उन्होंने बता दिया कि मुझे आपने कोई जवाब नहीं दिया। अज़्वाजे मुतह्हरात ने कहा कि फिर एक बार कहो। उन्होंने बयान किया कि फिर जब आपकी बारी आई तो दोबारा उन्होंने आप (ﷺ) से अर्ज़ किया। इस बार भी आप (ﷺ) ने जवाब नहीं दिया। जब अज़्वाजे मुतह्हरात ने पूछा तो उन्होंने फिर वही बताया कि आप (ﷺ) ने मुझे इसका कोई जवाब नहीं दिया। अज़्वाज ने इस बार उनसे कहा कि आप (ﷺ) को इस मसले पर बुलवाओ तो सही। जब उनकी बारी आई तो उन्होंने फिर कहा। आप (ﷺ) ने इस बार फ़र्माया। आइशा (रज़ि.) के बारे में मुझे तकलीफ़ न दो। आइशा (रज़ि.) के सिवा अपनी बीवियों में से किसी के कपड़े में भी मुझ पर वह्य नाज़िल नहीं होती है। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि आप (ﷺ) के इस इर्शाद पर उन्होंने अर्ज़ किया, आपको ईज़ा पहुँचने की वजह से मैं अल्लाह के हुज़ूर में तौबा करती हूँ। फिर उन अज़्वाजे मुतह्हरात ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को बुलाया और उनके ज़रिये आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ये कहलवाया कि आपकी अज़्वाज अबूबक्र (रज़ि.) की बेटी के बारे में अल्लाह के लिये आपसे इंसाफ़ चाहती हैं। चुनाँचे उन्होंने भी आप (ﷺ) से बातचीत की। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी बेटी! क्या तुम वो पसन्द नहीं करती जो मैं करूँ? उन्होंने जवाब दिया कि क्यूँ नहीं, उसके बाद वो वापस आ गईं और अज़्वाज को इत्तिलाअ दी। उन्होंने उनसे फिर दोबारा ख़िदमते नबवी में जाने के लिये कहा। लेकिन आपने दोबारा जाने से इंकार कर दिया तो उन्होंने ज़ैनब बिन्ते जह्श (रज़ि.) को भेजा। वो ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुईं तो उन्होंने सख़्त बातचीत की और कहा कि आपकी अज़्वाज अबू क़हाफ़ा की बेटी के बारे में आपसे अल्लाह के लिये इंसाफ़ मांगती हैं और उनकी आवाज़ ऊँची हो गई। आइशा (रज़ि.) वहीं बैठी हुई थीं। उन्होंने (उनके मुँह पर) उन्हें भी बुरा–भला कहा। रसूलुल्लाह (ﷺ) आइशा (रज़ि.) की तरफ़ देखन

صَاحِبُ الْهَدِيَّةِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ. فَكَلَّمَ حِزْبُ أُمِّ سَلَمَةَ فَقُلْنَ لَهَا: كَلِّمِي رَسُولَ اللهِ ﷺ يُكَلِّمُ النَّاسَ فَيَقُولُ: مَنْ أَرَادَ أَنْ يُهْدِيَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ هَدِيَّةً فَلْيُهْدِهِ حَيْثُ كَانَ مِنْ نِسَائِهِ، فَكَلَّمَتْهُ أُمُّ سَلَمَةَ بِمَا قُلْنَ، فَلَمْ يَقُلْ لَهَا شَيْئًا، فَسَأَلْنَهَا فَقَالَتْ: مَا قَالَ لِي شَيْئًا، فَقُلْنَ لَهَا: فَكَلِّمِيهِ، قَالَتْ: فَكَلَّمَتْهُ حِينَ دَارَ إِلَيْهَا أَيْضًا، فَلَمْ يَقُلْ لَهَا شَيْئًا. فَسَأَلْنَهَا فَقَالَتْ: مَا قَالَ لِي شَيْئًا. فَقُلْنَ لَهَا: كَلِّمِيهِ حَتَّى يُكَلِّمَكِ. فَدَارَ إِلَيْهَا فَكَلَّمَتْهُ فَقَالَ لَهَا: ((لاَ تُؤْذِينِي فِي عَائِشَةَ، فَإِنَّ الْوَحْيَ لَمْ يَأْتِنِي وَأَنَا فِي ثَوْبِ امْرَأَةٍ إِلاَّ عَائِشَةَ)). قَالَتْ: فَقُلْتُ: أَتُوبُ إِلَى اللهِ مِنْ أَذَاكَ يَا رَسُولَ اللهِ. ثُمَّ إِنَّهُنَّ دَعَوْنَ فَاطِمَةَ بِنْتَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَأَرْسَلْنَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ تَقُولُ: إِنَّ نِسَاءَكَ يَنْشُدْنَكَ اللهَ الْعَدْلَ فِي بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ. فَكَلَّمَتْهُ فَقَالَ: ((يَا بُنَيَّةُ، أَلاَ تُحِبِّينَ مَا أُحِبُّ؟)) قَالَتْ: بَلَى. فَرَجَعَتْ إِلَيْهِنَّ فَأَخْبَرَتْهُنَّ، فَقُلْنَ ارْجِعِي إِلَيْهِ، فَأَبَتْ أَنْ تَرْجِعَ. فَأَرْسَلْنَ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ، فَأَتَتْهُ فَأَغْلَظَتْ وَقَالَتْ: إِنَّ نِسَاءَكَ يَنْشُدْنَكَ اللهَ الْعَدْلَ فِي بِنْتِ ابْنِ أَبِي قُحَافَةَ، فَرَفَعَتْ صَوْتَهَا حَتَّى تَنَاوَلَتْ عَائِشَةَ وَهِيَ قَاعِدَةٌ فَسَبَّتْهَا، حَتَّى أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَيَنْظُرُ إِلَى عَائِشَةَ هَلْ تَكَلَّمُ، قَالَ: فَتَكَلَّمَتْ

عَائِشَةُ تَرُدُّ عَلَى زَيْنَبَ حَتَّى أَسْكَتَتْهَا. قَالَتْ: فَنَظَرَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى عَائِشَةَ وَقَالَ: ((إِنَّهَا بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ)).
قَالَ الْبُخَارِيُّ: الْكَلاَمُ الأَخِيرُ قِصَّةُ فَاطِمَةَ يُذْكَرُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ رَجُلٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ. وَقَالَ أَبُو مَرْوَانَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عُرْوَةَ : ((كَانَ النَّاسُ يَتَحَرَّوْنَ بِهَدَايَاهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ)). وَعَنْ هِشَامٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ وَرَجُلٍ مِنَ الْمَوَالِي عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ: ((قَالَتْ عَائِشَةُ: كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَاسْتَأْذَنَتْ فَاطِمَةُ)).

लगे कि वो कुछ बोलती है या नहीं । रावी ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) भी बोल पड़ीं और ज़ैनब (रज़ि.) की बातों का जवाब देने लगीं और आख़िर उन्हें ख़ामोश कर दिया। फिर रसूले करीम (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) की तरफ़ देखकर फ़र्माया कि ये अबूबक्र की बेटी है। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि आख़िर कलामे फ़ातिमा (रज़ि.) के वाक़िये के बारे में हिशाम बिन उर्वा ने एक और शख़्स से भी बयान किया है। उन्होंने ज़ुहरी से रिवायत की और उन्होंने मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान से और अबू मरवान ने बयान किया हिशाम से और उन्होंने उर्वा से कि लोग तहाइफ़ भेजने के लिये हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी का इंतिज़ार किया करते थे और हिशाम की एक रिवायत क़ुरैश के एक साहब और एक दूसरे साहब से जो ग़ुलामों में से थे, भी है। वो ज़ुहरी से नक़ल करते हैं और वो मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन हिशाम से कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा जब फ़ातिमा (रज़ि.) ने (अंदर आने की) इजाज़त चाही तो मैं उस वक़्त आप (ﷺ) ही की ख़िदमत में मौजूद थी।

तश्रीह : हुआ ये कि आँहज़रत (ﷺ) की कुछ बीवियाँ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के घर में जमा हुईं और ये कहा कि तुम आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ करो कि आप अपने सहाबा को हुक्म दें कि वो हदिये और तहाइफ़ भेजने में ये राह न देखते रहें कि आँहज़रत (ﷺ) फ़लाँ बीवी के घर तशरीफ़ ले जाएँ तो हम तहाइफ़ भेजें, बल्कि बिला क़ैद आप किसी बीवी के पास हों भेज दिया करें। चुनाँचे उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उनके मअ़रूज़ा पर कुछ इल्तिफ़ात नहीं फ़र्माया। वजह इल्तिफ़ात न फ़र्माने की ये थी कि उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) की दरख़्वास्त मा'क़ूल न थी। तोहफ़ा भेजने वाले की मर्ज़ी जब चाहे भेजे, उसको जबरन कोई हुक्म नहीं दिया जा सकता कि फ़लाँ वक़्त भेजे फ़लाँ वक़्त न भेजे। इस तवील हदीष में इसी वाक़िये की तफ़्सील मज़्कूर है और हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है।

जहाँ तक बीवियों के हुक़ूक़े वाजिबा का ता'ल्लुक़ था आँहज़रत (ﷺ) ने सबके लिये एक-एक रात की बारी मुक़र्रर कर रखी थी और उसी के मुताबिक़ अमल दरामद हो रहा था। चूँकि हज़रत आइशा (रज़ि.) के कुछ ख़ुसूसी औसाफ़े हुसना थे और आप उन्ही की वजह से उनसे ज़्यादा मुहब्बत करते थे। इसलिये तहाइफ़ भेजने वाले कुछ सहाबा (रज़ि.) ने ये सोचा कि जब हुज़ूर (ﷺ) आइशा (रज़ि.) की बारी में उनके यहाँ आया करें उस वक़्त हदिया तोहफ़ा भेजा करेंगे। इस पर दूसरी अज़्वाजे मुतह्हरात ने आप (ﷺ) की ख़िदमत में दरख़्वास्त की कि सहाबा (रज़ि.) को इस ख़ुसूसियत से रोक दें। मुतालबा दुरुस्त न था लिहाज़ा आप (ﷺ) ने इस पर कोई तवज्जह न दी यहाँ तक कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को दरम्यान में लाया गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐ मेरी प्यारी बेटी! क्या तुम उनको दोस्त नहीं रखती जिनको मैं दोस्त रखता हूँ। इस पर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हाँ हुज़ूर बेशक मैं भी जिसे आप दोस्त रखते हैं उसको दोस्त रखती हूँ। उसके बाद हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) हमेशा हज़रत आइशा (रज़ि.) को दोस्त रखती रहीं। हज़रत अली (रज़ि.) मनाक़िबे आइशा (रज़ि.) में फ़र्माते हैं कि अल्लाह जानता है हज़रत आइशा (रज़ि.) दुनिया और आख़िरत में रसूले करीम (ﷺ) की बीवी हैं। अल्लाह की फटकार हो उन बदज़ुबान बेलगाम नालायक़ लोगों पर जो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) की शान में ज़ुबानदराज़ी करें। **हदाहुमुल्लाहु इला सिरातिम्मुस्तक़ीम आमीन**

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत के लिये इतना काफ़ी है कि वो सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की बेटी हैं और जिस तरह हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) सहाबा किराम में ज़्यादा इल्म व फ़ज़्ल रखते थे वैसे ही उनकी साहबज़ादी भी औरतों में आलिमा और फ़ाज़िला और मुक़र्रिरा थीं। हज़ारों अश्आर उनको बरज़ुबान याद थे। फ़साहत और बलाग़त में कोई उनका मुर्सल न था। **व ज़ालिक फज्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ**

और सबसे बड़ी फ़ज़ीलत ये कि सरकार रिसालत ने उनको बहुत सी ख़ुसूसियात की बिना पर अपनी ख़ासा रफ़ीक़े हयात क़रार दिया। हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने आपका ख़ास इकराम किया। **वकफ़ा बिही फ़ज़्लन**

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस तवील हदीष को यहाँ इसलिये लाए कि बाब का मज़्मून इससे सराहतन षाबित होता है कि कोई शख़्स अपने किसी ख़ास दोस्त को तोहफ़े तहाइफ़ उसकी ख़ास बीवी की बारी में पेश कर सकता है।

अल्हम्दुलिल्लाह अप्रैल 1970 हिजरी की पाँच तारीख़ तक का'बा शरीफ़ मक्कतुल मुकर्रमा में ये पारा इस हदीष तक पढ़ा गया और अहादीषे नबविया के लफ़्ज़ लफ़्ज़ पर ग़ौरो–फ़िक्र करके अल्लाह से का'बा में दुआ की गई कि वो मुझे उसके समझने और तहक़ीक़ हक़ के साथ उसका उर्दू तर्जुमा व मुख़्तसर जामेअ शरह लिखने की तौफ़ीक़ अता करे और उस बाक़ियातुस्सालिहात का षवाब अज़ीम मेरे मरहूम भाई हाजी मुहम्मद अली उर्फ़ बिल्लारी प्यारो क़ुरैशी बंगलौर के हक़ में भी क़ुबूल करे जिनकी तरफ़ से हज्जे बदल करने के सिलसिले में मुझको ज़ियारते हरमेन शरीफ़ेन की ये सआदत नसीब हुई। **रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नका अन्तस्समीउल अलीम.**

बाब 9 : जो तोहफ़ा वापस न किया जाना चाहिये

٩– بَابُ لاَ مَا يُرَدُّ مِنَ الْـهَدِيَّةِ

शायद हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उस रिवायत की तरफ़ इशारा फ़र्माया है जिसको तिर्मिज़ी ने इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत किया है कि तोहफ़ा की तीन चीज़ें न फेरी जाएँ। तकिया, तैल और दूध। तिर्मिज़ी ने कहा तैल से ख़ुश्बूदार चीज़ मुराद है। दूसरी हदीष अबू हुरैरह (रज़ि.) में भी यही है कि ख़ुश्बू को न रद्द किया जाए। फ़िदाइयाने सुन्नते रसूल (ﷺ) के लिये ज़रूरी है कि वो आप (ﷺ) के उस्व-ए-हस्ना को अपना लायहा अमल बनाएँ।

मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क
जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है ये सड़क

٢٥٨٢– حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: ((دَخَلْتُ عَلَيْهِ فَنَاوَلَنِي طِيْبًا، قَالَ: كَانَ أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لاَ يَرُدُّ الطِّيْبَ. قَالَ: وَزَعَمَ أَنَسٌ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لاَ يَرُدُّ الطِّيْبَ)). [طرفه في: ٥٩٢٩].

2582. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अज़्रा बिन षाबित अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे षुमामा बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, अज़्रा ने कहा कि मैं षुमामा बिन अब्दुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने मुझे ख़ुश्बू इनायत फ़र्माई और बयान किया कि अनस (रज़ि.) ख़ुश्बू इनायत फ़र्माई और बयान किया कि अनस (रज़ि.) ख़ुश्बू को वापस नहीं करते थे। षुमामा (रज़ि.) ने कहा कि अनस (रज़ि.) का गुमान था कि नबी करीम (ﷺ) ख़ुश्बू को वापस नहीं फ़र्माया करते थे। (दीगर मक़ाम : 5929)

बाब 10 : जिनके नज़दीक ग़ायब चीज़ का हिबा करना दुरुस्त है

١٠– بَابُ مَنْ رَأَى الْـهِبَةَ الغائبةَ جَائِزَةً

या'नी जो चीज़ हिबा के वक़्त हाज़िर न हो, बाब की हदीष से ये मतलब इस तरह से निकाला कि क़ैदी उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ)

के पास हाज़िर न थे। मगर आपने हवाज़िन फ़तह करने वालों को हिबा कर दिये। कुछ ने कहा हिबा ग़ायब से मुराद ये है कि मौहूबा लहू ग़ायब हो जैसे हवाज़िन के लोग उस वक़्त हाज़िर न थे लेकिन आपने उनके क़ैदी उनको हिबा कर दिये।

2583,84. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किय, उनसे लैष़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया इब्ने शिहाब से, उनसे उ़र्वा ने ज़िक्र किया कि मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़ि.) और मरवान बिन ह़कम ने उन्हें ख़बर दी कि जब क़बीला हवाज़िन का वफ़्द नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो आप (ﷺ) ने लोगों को ख़िताब फ़र्माया और अल्लाह की शान के मुताबिक़ हम्द के बाद आपने फ़र्माया अम्मा बअ़द! ये तुम्हारे भाई तौबा करके हमारे पास आए हैं और मैं यही बेहतर समझता हूँ कि उनके क़ैदी उन्हें वापस कर दिये जाएँ। अब जो शख़्स अपनी ख़ुशी से (क़ैदियों को) वापस करना चाहे वो वापस कर दे और जो ये चाहे कि उन्हें उनका हिस्सा मिले (तो वो भी वापस कर दे) और हमें अल्लाह तआ़ला (उसके बाद) सबसे पहली जो ग़नीमत देगा, उसमें से हम उसे मुआ़वज़ा दे देंगे। लोगों ने कहा हम आप अपनी ख़ुशी से (उनके क़ैदियों को वापस करके) आपका इर्शाद तस्लीम करते हैं। (राजेअ़ : 2307, 2308)

٢٥٨٣، ٢٥٨٤– حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: ذَكَرَ عُرْوَةُ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا وَمَرْوَانَ أَخْبَرَاهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، حِيْنَ جَاءَهُ وَفْدُ هَوَازِنَ قَامَ فِي النَّاسِ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ جَاؤُونَا تَائِبِيْنَ، وَإِنِّي رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ إِلَيْهِمْ سَبْيَهُمْ، فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطَيِّبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَكُونَ عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نُعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ أَوَّلِ مَا يُفِيءُ اللهُ عَلَيْنَا)). فَقَالَ النَّاسُ : طَيَّبْنَا لَكَ)). [راجع: ٢٣٠٧، ٢٣٠٨]

तश्रीह : मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़ि.) की कुन्नियत अबू अ़ब्दुर्रहमान है, ज़ुह्री व क़ुरैशी हैं। अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) के भांजे हैं। हिजरते नबवी के दो साल बाद मक्का में उनकी पैदाइश हुई। ज़िलहिज्ज 8 हिजरी में मदीना मुनव्वरा पहुँचे। वफ़ाते नबवी के वक़्त उनकी उ़म्र सिर्फ़ आठ साल थी। उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से ह़दीष़ की समाअ़त की और उनको याद रखा। बड़े फ़क़ीह और साह़िबे फ़ज़्ल और दीनदार थे। उ़ष्मान (रज़ि.) की शहादत तक मदीना ही में मुक़ीम रहे। उनकी शहादत के बाद वे मक्का में मुंतक़िल हो गए और मुआ़विया (रज़ि.) की वफ़ात तक वहीं मुक़ीम रहे। उन्होंने यज़ीद की बेअ़त को पसन्द नहीं किया। लेकिन फिर भी मक्का ही में रहे जब तक कि यज़ीद ने लश्कर भेजा और मक्का का मुह़ासरा (घेराव) कर लिया, उस वक़्त इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) मक्का ही में मौजूद थे। चुनाँचे इस मुह़ासरे में मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़ि.) को भी मिन्जिनीक़ से फेंका हुआ एक पत्थर लगा। ये उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहे थे। उस पत्थर से उनकी शहादत वाक़ेअ़ हुई। ये वाक़िया रबीउ़ल अव्वल 64 हिजरी की चाँद रात को हुआ। उनसे बहुत से लोगों ने रिवायत की है।

बाब 11 : हिबा का मुआ़वज़ा अदा करना

١١– بَابُ الْمُكَافَأَةِ فِي الْهِبَةِ

2585. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हदिया क़ुबूल फ़र्मा लिया करते। लेकिन उसका बदला भी दे दिया करते थे। इस ह़दीष़ को वकीअ़ और मुह़ाज़िर ने भी रिवायत किया, मगर उन्होंने उसको हिशाम से, उन्होंने अपने बाप से,

٢٥٨٥– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عِيْسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقْبَلُ الْهَدِيَّةَ وَيُثِيْبُ عَلَيْهَا)). لَمْ يَذْكُرْ وَكِيْعٌ وَمُحَاضِرٌ: ((عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ

उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से के अल्फ़ाज़ नहीं कहे।

عَنْ عَائِشَةَ)).

तश्रीह : हदीष़ के आख़िर में रावी के अल्फ़ाज़, **लम यज़्कुर वकीअ मुहाज़िर अन हिशाम अन अबीहि अन आइशत** का मतलब ये कि वकीअ और मुहाज़िर दोनों रावियों ने इस हदीष़ को हिशाम से, उन्होंने अपने बाप से, उन्होंने आइशा (रज़ि.) से वस्ल नहीं किया, बल्कि मुर्सलन हिशाम से रिवायत किया। तिर्मिज़ी और बज़्ज़ार ने कहा इस हदीष़ को सिर्फ़ ईसा बिन यूनुस ने वस्ल किया। हाफ़िज़ ने कहा वकीअ की रिवायत को तो इब्ने अबी शैबा ने निकाला और मुहाज़िर की रिवायत मुझको नहीं मिली। कुछ मालिकिया ने इस हदीष़ से हिबा का बदला अदा करना वाजिब रखा है और हन्फ़िया और शाफ़िइया और जुम्हूर के नज़दीक वाजिब नहीं मुस्तहब है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा हिबा बिल मुआवज़ा अगर मुअय्यन और मा'लूम मुआवज़ा के बदल हो तो बेअ की तरह दुरुस्त होगा और अगर मुआवज़ा मज्हूल हो तो हिबा सहीह न होगा।

बाब 12 : अपने लड़के को कुछ हिबा करना

١٢ - بَابُ الْهِبَةِ لِلْوَلَدِ

और अपने कुछ लड़कों को अगर कोई चीज़ हिबा में दी तो जब तक इंसाफ़ के साथ तमाम लड़कों को बराबर न दे, ये हिबा जाइज़ नहीं होगा और ऐस ज़ुल्म के हिबा पर गवाह होना भी दुरुस्त नहीं। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अत़ाया के सिलसिले में अपनी औलाद के बीच इंसाफ़ करो, और क्या बाप अपना अ़तिया वापस भी ले सकता है? और बाप अपने लड़के के माल में से दस्तूर के मुताबिक़ जबकि ज़ुल्म का इरादा न हो ले सकता है। नबी करीम (ﷺ) ने उमर (रज़ि.) से एक ऊँट ख़रीदा, और फिर उसे आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को दे दिया और फ़र्माया कि उसका जो चाहे कर।

وَإِذَا أَعْطَى بَعْضَ وَلَدِهِ شَيْئًا لَمْ يَجُزْ حَتَّى يَعْدِلَ بَيْنَهُمْ وَيُعْطِي الآخَرَ مِثْلَهُ، وَلاَ يُشْهَدُ عَلَيْهِ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اعْدِلُوا بَيْنَ أَوْلاَدِكُمْ فِي الْعَطِيَّةِ)). وَهَلْ لِلْوَالِدِ أَنْ يَرْجِعَ فِي عَطِيَّتِهِ؟ وَمَا يَأْكُلُ مِنْ مَالِ وَلَدِهِ بِالْمَعْرُوفِ وَلاَ يَتَعَدَّى)).
وَاشْتَرَى النَّبِيُّ ﷺ مِنْ عُمَرَ بَعِيرًا ثُمَّ أَعْطَاهُ ابْنَ عُمَرَ وَقَالَ((اصْنَعْ بِهِ مَاشِئْتَ))

तश्रीह : अहले हदीष़ और शाफ़िई और अहमद और जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है कि हिबा में रुजूअ जाइज़ नहीं है। मगर बाप जो अपनी औलाद को हिबा करे, उसमें रुजूअ कर सकता है। तिर्मिज़ी और हाकिम ने रिवायत किया और कहा सहीह है। किसी शख़्स को दुरुस्त नहीं कि अपने अ़तिया या हिबा में रुजूअ करे मगर वालिद जो अपनी औलाद को दे और हन्फ़िया ने उसमें इख़्तिलाफ़ किया है उनके नज़दीक क़राबतदार मानेअ रुजूअे हिबा हैं।

2586. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी इब्ने शिहाब से, वो हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान और मुहम्मद बिन नोअमान बिन बशीर से और उनसे नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) ने कहा कि उनके वालिद उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लाए और अ़र्ज़ किया कि मैंने अपने इस बेटे को एक गुलाम बतौरे हिबा दिया है। आप (ﷺ) ने पूछा, क्या ऐसा ही गुलाम अपने दूसरे लड़कों को भी दिया है? उन्होंने कहा कि नहीं, तो आपने फ़र्माया कि फिर (उनसे भी) वापस ले ले। (दीगर मक़ाम : 2587, 2650)

٢٥٨٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَمُحَمَّدِ بْنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ أَنَّهُمَا حَدَّثَاهُ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ: أَنَّ أَبَاهُ أَتَى بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنِّي نَحَلْتُ ابْنِي هَذَا غُلاَمًا. فَقَالَ: ((أَكُلَّ وَلَدِكَ نَحَلْتَ مِثْلَهُ؟)) قَالَ: لاَ، قَالَ: ((فَارْجِعْهُ)).

[طرفاه في: ٢٥٨٧، ٢٦٥٠].

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि औलाद के लिये हिबा या अ़तिया के सिलसिले मे इंसाफ़ ज़रूरी है जो दिया जाए सबको बराबर बराबर दिया जाए, वरना ज़ुल्म होगा। वालिद के लिये ष़ाबित हुआ कि वो औलाद से अपना अ़तिया वापस भी ले सकता है और औलाद के माल में से ज़रूरत के वक़्त दस्तूर के मुताबिक़ खा भी सकता है। इब्ने ह़िब्बान और त़बरानी की रिवायत में यूँ है। आपने फ़र्माया, मैं ज़ुल्म पर गवाह नहीं बनता। हमारे इमाम अह़मद बिन ह़ंबल का यही क़ौल है कि औलाद में अ़द्ल करना वाजिब है और एक को दूसरे से ज़्यादा देना ह़राम है। एक रिवायत में यूँ है कि नोअ़मान के बाप ने उसको बाग़ दिया था और अकष़र रिवायतों में ग़ुलाम मज़्कूर है। ह़ाफ़िज़ ने कहा, त़ाऊस और ष़ौरी और इस्ह़ाक़ भी इमाम अह़मद के साथ मुत्तफ़िक़ हैं। कुछ मालिकिया कहते हैं कि ऐसा हिबा ही बात़िल है और इमाम अह़मद स़ह़ीह़ कहते हैं पर रुजूअ़ वाजिब जानते हैं और जुम्हूर का क़ौल ये है कि औलाद को हिबा करने में अ़द्ल और इंसाफ़ करना मुस्तह़ब है। अगर किसी औलाद को ज़्यादा दे तो हिबा स़ह़ीह़ होगा लेकिन मकरूह होगा, ह़न्फ़िया भी उसके क़ाइल हैं। (वह़ीदी)

ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने यहाँ अ़मलुल ख़लीफ़तैन को नक़ल किया है और बतलाया है कि औलाद को हिबा करने में मसावात का हुक्म इस्तिह़बाब के लिये है। मौत़ा में सनदे स़ह़ीह़ के साथ मज़्कूर है कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपने मर्ज़े वफ़ात में ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया था, **इन्नी कुन्तु नहल्तु फलौ कुन्ति इख्तरतीहि लकान लकि व इन्नमा हुवल्यौम लिल्वारिष़** या'नी मैंने तुझको कुछ बत़ौर बख़्शिश देना चाहा था, अगर तुम उसको क़ुबूल कर लेतीं तो वो तुम्हारा हो जाता और अब तो वो वारिष़ों में ही तक़्सीम होगा। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का वाक़िया त़ह़ावी वग़ैरह ने ज़िक्र किया है कि उन्होंने अपने बेटे आ़सिम को कुछ बत़ौरे बख़्शिश दिया था। मानेई़न ने उनका ये जवाब दिया है कि शैख़ेन के इन इक़्दामात पर उनके दीगर बच्चे सब राज़ी थे। इस सूरत में जवाज़ में कोई शुब्हा नहीं। बहरह़ाल बेहतर व औला बराबरी ही है।

बाब 13 : हिबा के ऊपर गवाह करना

١٣- بَابُ الإِشْهَادِ فِي الْهِبَةِ

2587. हमसे ह़ामिद बिन उ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया हुसैन से, वो आ़मिर से कि मैंने नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना, वो मिम्बर पर बयान कर रहे थे कि मेरे बाप ने मुझे एक अ़तिया दिया, तो उ़म्रा बिन्ते रवाह़ा (रज़ि.) (नोअ़मान की वालिदा) ने कहा कि जब तक आप रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस पर गवाह न बनाएँ मैं राज़ी नहीं हो सकती। चुनाँचे (ह़ाज़िरे ख़िदमत होकर) उन्होंने अ़र्ज़ किया कि उ़म्रा बिन्ते रवाह़ा से अपने बेटे को मैंने एक अ़तिया दिया तो उन्होंने कहा कि पहले मैं आपको इस पर गवाह बना लूँ, आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया कि इसी जैसा अ़तिया तुमने अपनी तमाम औलाद को दिया है? उन्होंन जवाब दिया कि नहीं, इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह से डरो और अपनी औलाद के बीच इंसाफ़ को क़ायम रखो। चुनाँचे वो वापस हुए और हदिया वापस ले लिया।
(राजेअ़ : 2586)

٢٥٨٧- حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ عَامِرٍ قَالَ: ((سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ يَقُولُ: أَعْطَانِي أَبِي عَطِيَّةً، فَقَالَتْ عَمْرَةُ بِنْتُ رَوَاحَةَ، لاَ أَرْضَى حَتَّى تُشْهِدَ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: إِنِّي أَعْطَيْتُ إِبْنِي مِنْ عَمْرَةَ بِنْتِ رَوَاحَةَ عَطِيَّةً، فَأَمَرَتْنِي أَنْ أُشْهِدَكَ يَا رَسُولَ اللهِ. قَالَ: ((أَعْطَيْتَ سَائِرَ وَلَدِكَ مِثْلَ هَذَا؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ ((فَاتَّقُوا اللهَ وَاعْدِلُوا بَيْنَ أَوْلاَدِكُمْ)). قَالَ: فَرَجَعَ، فَرَدَّ عَطِيَّتَهُ)). [راجع: ٢٥٨٦]

इस वाक़िये से हिबा के ऊपर गवाह करना ष़ाबित हुआ। नोअ़मान (रज़ि.) की वालिदा ने आँह़ज़रत (ﷺ) को हिबा पर गवाह बनाना चाहा। इसी से बाब का तर्जुमा ष़ाबित हुआ।

बाब 14 : शौहर का अपनी बीवी को और बीवी का अपने शौहर को कुछ हिबा कर देना

١٤- بَابُ هِبَةِ الرَّجُلِ لاِمْرَأَتِهِ وَالْمَرْأَةِ لِزَوْجِهَا

इब्राहीम नख़ई ने कहा कि जाइज़ है। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा कि दोनों अपना हिबा वापस नहीं ले सकते। नबी करीम (ﷺ) ने मर्ज़ के दिन आइशा (रज़ि.) के घर गुज़ारने की अपनी दूसरी बीवियों से इजाज़त मांगी थी, (और अज़्वाजे मुतह्हरात ने अपनी अपनी बारी हिबा कर दी थी) और आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अपना हिबा वापस लेने वाला शख़्स उस कुत्ते की तरह है जो अपनी ही क़ै चाटता है। ज़ुह्री ने उस शख़्स के बारे में जिसने अपनी बीवी से कहा कि अपना कुछ महर या सारा महर माफ़ कर दे और उसने कर दिया) उसके थोड़ी ही देर बाद उसने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी और बीवी ने (अपने महर का हिबा) वापस मांगा तो ज़ुह्री ने कहा कि अगर शौहर ने महज़ धोखे के लिये ऐसा किया था तो उसे महर वापस करना होगा। लेकिन अगर बीवी ने अपनी ख़ुशी से महर हिबा किया और शौहर ने भी किसी क़िस्म का धोखा इस सिलसिले में उसे नहीं दिया, तो ये सूरत जाइज़ होगी। अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि, अगर तुम्हारी बीवियाँ दिल से और ख़ुश होकर तुम्हें अपने महर का कुछ हिस्सा दे दें (तो ले सकते हो)

قَالَ إِبْرَاهِيْمُ : جَائِزَةٌ. قَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيْزِ: لاَ يَرْجِعَانِ . وَاسْتَأْذَنَ النَّبِيُّ ﷺ نِسَاءَهُ أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْعَائِدُ فِي هِبَتِهِ كَالْكَلْبِ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ)). وَقَالَ الزُّهْرِيُّ - فِيْمَنْ قَالَ لاِمْرَأَتِهِ - هَبِي لِي بَعْضَ صَدَاقِكِ أَوْ كُلَّهِ. ثُمَّ لَمْ يَمْكُثْ إِلاَّ يَسِيْرًا حَتَّى طَلَّقَهَا فَرَجَعَتْ فِيْهِ - قَالَ: يَرُدُّ إِلَيْهَا إِنْ كَانَ خَلَبَهَا، وَإِنْ كَانَتْ أَعْطَتْهُ عَنْ طِيْبِ نَفْسٍ لَيْسَ فِي شَيْءٍ مِنْ أَمْرِهِ خَدِيْعَةٌ جَازَ، قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا﴾ [النساء : ٤].

या'नी अगर शौहर बीवी को हिबा करे या बीवी शौहर को दोनों सूरतों में हिबा नाफ़िज़ होगा और रुजूअ जाइज़ नहीं। इब्राहीम नख़ई और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ इन दोनों के अष़र को अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने वस्ल किया है। बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि दूसरी अज़्वाजे मुतह्हरात ने अपनी अपनी बारी का हक़ आँहज़रत (ﷺ) को हिबा कर दिया।

2588. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा कि मुझे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, जब रसूले करीम (ﷺ) की बीमारी बढ़ी और तकलीफ़ शदीद हो गई तो आपने अपनी बीवियों से मेरे घर में अय्यामे मर्ज़ गुज़ारने की इजाज़त चाही और आपको बीवियों ने इजाज़त दे दी तो आप इस तरह तशरीफ़ लाए कि दोनों क़दम ज़मीन पर रगड़ खा रहे थे। आप उस वक़्त हज़रत अब्बास (रज़ि.) और एक साहब के दरम्यान थे। उबैदुल्लाह ने बयान किया कि फिर मैंने आइशा (रज़ि.) की इस हदीष़ का ज़िक्र इब्ने अब्बास

٢٥٨٨- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ: ((قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: لَمَّا ثَقُلَ النَّبِيُّ ﷺ فَاشْتَدَّ وَجَعُهُ اسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي، فَأَذِنَّ لَهُ فَخَرَجَ بَيْنَ رَجُلَيْنِ تَخُطُّ رِجْلاَهُ الأَرْضَ، وَكَانَ بَيْنَ الْعَبَّاسِ وَبَيْنَ رَجُلٍ آخَرَ. فَقَالَ عُبَيْدُ اللهِ :

(रज़ि.) से किया। तो उन्होंने मुझसे पूछा, आइशा (रज़ि.) ने जिनका नाम नहीं लिया, जानते हो वो कौन थे? मैंने कहा नहीं। आपने फ़र्माया कि वो हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) थे।
(राजेअ : 198)

فَذَكَرْتُ لابْنِ عَبَّاسٍ مَا قَالَتْ عَائِشَةُ : فَقَالَ لِيْ: وَهَلْ تَدْرِي مَنِ الرَّجُلُ الَّذِيْ لَمْ تُسَمِّ عَائِشَةُ؟ قُلْتُ: لاَ، قَالَ : هُوَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ)). [راجع: ١٩٨]

रसूले करीम (ﷺ) का ये मर्ज़ुल वफ़ात था। आप हज़रत मैमूना (रज़ि.) के घर थे। उस मौक़े पर तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात ने अपनी अपनी बारी हज़रत आइशा (रज़ि.) को हिबा कर दी, इसी से मक़्सदे बाब षाबित हुआ।

2589. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने ताउस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अपना हिबा लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो क़ै करके फिर चाट जाता है।

(दीगर मक़ाम : 2621, 2622, 6975)

٢٥٨٩- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْعَائِدُ فِي هِبَتِهِ كَالْكَلْبِ يَقِيءُ ثُمَّ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ)).

[أطرافه في : ٢٦٢١، ٢٦٢٢، ٦٩٧٥].

इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अहमद (रह.) ने इसी हदीष से दलील ली है और हिबा में रुजूअ नाजाइज़ रखा है। सिर्फ़ बाप को इस हिबा में रुजूअ जाइज़ रखा है जो वो अपनी औलाद को करे। ब-दलील दूसरी हदीष के जो ऊपर गुज़र चुकी है और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने अगर अजनबी शख़्स को कुछ हिबा करे तो उसमें रुजूअ जाइज़ रखा है जब तक वो शै मौहूब अपने हाल पर बाक़ी हो और उसका बदला न मिला हो।

बाब 15 : अगर औरत अपने शौहर के सिवा और किसी को कुछ हिबा करे या ग़ुलाम लौण्डी आज़ाद करे और हिबा के वक़्त उसका शौहर मौजूद हो, तो हिबा जाइज़ है।

١٥- بَابُ هِبَةِ الْمَرْأَةِ لِغَيْرِ زَوْجِهَا، وَعِتْقِهَا إِذَا كَانَ لَهَا زَوْجٌ، فَهُوَ جَائِزٌ إِذَا لَمْ تَكُنْ سَفِيْهَةً

लेकिन शर्त ये है कि वो औरत बेअक़्ल न हो क्योंकि अगर वो बे अक़्ल होगी तो जाइज़ नहीं होगा। अल्लाह तआला का इर्शाद है, बे अक़्ल लोगों को अपना माल न दो।

فَإِذَا كَانَتْ سَفِيْهَةً لَمْ يَجُزْ.قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَلاَ تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمْ﴾ [النساء: ٥]

अगर उस औरत का शौहर हिबा के वक़्त मौजूद न हो, मर गया हो या औरत ने निकाह ही न किया हो तब तो बिला इत्तिफ़ाक़ हिबा दुरुस्त है, औरत अगर दीवानी है तो हिबा जाइज़ न होगा। जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है और इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक औरत का हिबा जब उसका शौहर मौजूद हो बग़ैर शौहर की इजाज़त के सहीह न होगा चाहे वो अक़्ल वाली हो। मगर तिहाई माल तक नाफ़िज़ होगा वसिय्यत की तरह।

2590. हमसे अबू आसिम ज़िहाक बिन मुख़लद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे अब्बाद बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अस्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे पास सिर्फ़

٢٥٩٠- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

वही माल है जो (मेरे शौहर) ज़ुबैर ने मेरे पास रखा हुआ है तो क्या मैं उसमें से सदक़ा कर सकती हूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सदक़ा करो, जोड़ के न रखो, कहीं तुमसे भी। (अल्लाह की तरफ़ से न) रोक लिया जाए। (राजेअ : 1434)

قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا لِيْ مَالٌ إِلاَّ مَا أَدْخَلَ عَلَيَّ الزُّبَيْرُ، فَأَتَصَدَّقُ؟ قَالَ: ((تَصَدَّقِيْ، وَلاَ تُوعِيْ فَيُوعَى عَلَيْكِ)). [راجع: ١٤٣٤]

2591. हमसे उबैदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर ने और उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़र्च किया कर, गिना न कर, ताकि तुम्हें भी गिन के न मिले। और जोड़कर न रखो, ताकि तुमसे भी अल्लाह तआला (अपनी नेअमतों को) न छुपा ले। (राजेअ : 1434)

٢٥٩١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ فَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَنْفِقِيْ، وَلاَ تُحْصِي فَيُحْصِيَ اللهُ عَلَيْكِ، وَلاَ تُوعِيْ فَيُوعِيَ اللهُ عَلَيْكِ)). [راجع: ١٤٣٤]

या'नी अल्लाह पाक भी तेरे ऊपर कशाइश नहीं करेगा और ज़्यादा रोज़ी नहीं देगा। अगर ख़ैरात करेगी, सदक़ा देगी तो अल्लाह पाक और ज़्यादा देगा। इस हदीष़ से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि शौहर वाली औरत का हिबा सहीह है क्योंकि हिबा और सदक़े का एक ही हुक्म है।

2592. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उनसे लैष़ ने, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने, उनसे बुकैर ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) के ग़ुलाम कुरैब ने और उन्हें (उम्मुल मोमिनीन) हज़रत मैमूना बिन्ते हारिष़ (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने एक लौण्डी नबी करीम (ﷺ) से इजाज़त लिये बग़ैर आज़ाद कर दी। फिर जिस दिन नबी करीम (ﷺ) की बारी आपके घर आने की थी, उन्होंने ख़िदमते नबवी में अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपको मा'लूम भी हुआ, मैंने एक लौण्डी आज़ाद कर दी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा तुमने आज़ाद कर दिया? उन्होंने अर्ज़ किया हाँ! फ़र्माया कि अगर इसके बजाय तुमने अपने ननिहाल वालों को दी होती तो तुम्हें उससे भी ज़्यादा ष़वाब मिलता। इस हदीष़ को बुकैर बिन मुज़र ने अम्र बिन हारिष़ से, उन्होंने बुकैर से, उन्होंने कुरैब से रिवायत किया कि मैमूना (रज़ि.) ने अपनी लौण्डी आज़ाद कर दी। आख़िर तक। (दीगर मक़ाम : 2594)

٢٥٩٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ عَنِ اللَّيْثُ عَنْ يَزِيْدَ عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ: ((أَنَّ مَيْمُونَةَ بِنْتَ الْحَارِثِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهَا أَنَّهَا أَعْتَقَتْ وَلِيْدَةً وَلَمْ تَسْتَأْذِنِ النَّبِيَّ ﷺ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمُهَا الَّذِي يَدُورُ عَلَيْهَا فِيْهِ قَالَتْ: أَشَعَرْتَ يَا رَسُولَ اللهِ أَنِّي أَعْتَقْتُ وَلِيْدَتِي؟ قَالَ: ((أَوَفَعَلْتِ؟)) قَالَتْ: نَعَمْ. قَالَ: ((أَمَا إِنَّكِ لَوْ أَعْطَيْتِهَا أَخْوَالَكِ كَانَ أَعْظَمَ لأَجْرِكِ)). وَقَالَ بَكْرُ بْنُ مُضَرَ عَنْ عَمْرٍو عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ كُرَيْبٍ: ((إِنَّ مَيْمُونَةَ أَعْتَقَتْ . .)) [طرفه في: ٢٥٩٤].

2593. हमसे हिब्बान बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी

٢٥٩٣- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ

ज़ुहरी से, वो उर्वा से और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान कया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सफ़र का इरादा करते तो अपनी अज़्वाज के लिये क़ुर्आ-अंदाज़ी करते और जिनका नाम निकल आता उन्हीं को अपने साथ ले जाते। आप (ﷺ) का ये तरीक़ा था कि अपनी तमाम अज़्वाज के लिये एक एक दिन और रात की बारी मुक़र्रर कर दी थी, अल्बत्ता (आख़िर में) सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) ने अपनी बारी आइशा (रज़ि.) को दे दी थी, इससे उनका मक़्सद रसूलुल्लाह (ﷺ) की रज़ामन्दी हासिल करनी थी।

(दीगर मक़ाम : 2637, 2661, 2688, 2879, 4025, 4141, 4690, 4749, 4750, 4757, 5212)

الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، إِذَا أَرَادَ سَفَرًا أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَائِهِ، فَأَيَّتُهُنَّ خَرَجَ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا مَعَهُ، وَكَانَ يَقْسِمُ لِكُلِّ امْرَأَةٍ مِنْهُنَّ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا غَيْرَ أَنَّ سَوْدَةَ بِنْتَ زَمْعَةَ وَهَبَتْ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا لِعَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ تَبْتَغِي بِذَلِكَ رِضَا رَسُولِ اللهِ ﷺ)).

[أطرافه في : ٢٦٣٧، ٢٦٦١، ٢٦٨٨، ٢٨٧٩، ٤٠٢٥، ٤١٤١، ٤٦٩٠، ٤٧٤٩، ٤٧٥٠، ٤٧٥٧، ٥٢١٢].

हज़रत सौदा (रज़ि.) की उम्र भी काफ़ी थी, और उनको रसूले करीम (ﷺ) की ख़ुशनूदी भी मक़्सूद थी, इसलिये उन्होंने अपनी बारी हज़रत आइशा (रज़ि.) को दे दी, मक़्सदे बाब ये कि इस क़िस्म का हिबा जो बाहमी रज़ामन्दी से हो जाइज़ व दुरुस्त है।

बाब 16 : हदिया का अव्वलीन हक़दार कौन है?

١٦- بَابُ بِمَنْ يُبْدَأُ بِالْهَدِيَّةِ؟

2594. और बक्र बिन मुज़र ने अम्र बिन हारिष़ से, उन्होंने बुकैर से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) के गुलाम कुरैब से (बयान किया कि) नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा मैमूना (रज़ि.) ने अपनी एक लौण्डी आज़ाद की तो रसूले करीम (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि अगर वो तुम्हारे ननिहाल वालों को दी जाती तो तुम्हें ज़्यादा ष़वाब मिलता। (राजेअ : 2592)

٢٥٩٤- وَقَالَ بَكْرٌ عَنْ عَمْرٍو عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ مَيْمُونَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَعْتَقَتْ وَلِيْدَةً لَهَا، فَقَالَ لَهَا: ((وَلَوْ وَصَلْتِ بَعْضَ أَخْوَالِكِ كَانَ أَعْظَمَ لأَجْرِكِ)). [راجع: ٢٥٩٢]

मा'लूम हुआ कि तहाइफ़ (तोहफ़ों) के अव्वलीन हक़दार अज़ीज़ व अक़रबा और रिश्तेदार हैं।

2595. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, अबू इमरान जोनी से, उनसे बनू तमीम बिन मुर्रह के एक साहब तलहा बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी दो पड़ौसी हैं, तो मुझे किस के घर हदिया भेजना चाहिये? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसका दरवाज़ा तुमसे क़रीब हो। (राजेअ : 2259)

٢٥٩٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ ابْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ - رَجُلٍ مِنْ بَنِي تَيْمِ بْنِ مُرَّةَ - عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ لِي جَارَيْنِ، فَإِلَى أَيِّهِمَا أُهْدِي؟ قَالَ: ((إِلَى أَقْرَبِهِمَا مِنْكِ بَابًا)).

[راجع: ٢٢٥٩]

ये इशारा उस तरफ़ है कि रिश्तेदारों के बाद उस पड़ौसी का हक़ है जिसका दरवाज़ा ज़्यादा क़रीब है। फ़र्माया कि आपस में तोहफ़े दिया करो इससे मुहब्बत बढ़ेगी।

बाब 17 : जिसने किसी उ़ज्र से हदिया क़ुबूल नहीं किया

١٧- بَابُ مَنْ لَمْ يَقْبَلِ الْهَدِيَّةَ لِعِلَّةٍ

وَقَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيْزِ: ((كَانَتِ الْهَدِيَّةُ فِي زَمَنِ رَسُولِ اللهِ ﷺ هَدِيَّةً، وَالْيَوْمَ رِشْوَةً)).

ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) ने कहा कि हदिया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के अ़हद में हदिया था लेकिन आजकल तो रिश्वत है।

٢٥٩٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ الصَّعْبَ بْنَ جَثَّامَةَ اللَّيْثِيَّ - وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ- يُخْبِرُ: أَنَّهُ أَهْدَى لِرَسُولِ اللهِ ﷺ حِمَارَ وَحْشٍ وَهُوَ بِالأَبْوَاءِ - أَوْ بِوَدَّانَ - وَهُوَ مُحْرِمٌ فَرَدَّهُ، قَالَ صَعْبٌ: فَلَمَّا عَرَفَ فِي وَجْهِي رَدَّهُ هَدِيَّتِي قَالَ: ((لَيْسَ بِنَا رَدٌّ عَلَيْكَ، وَلَكِنَّا حُرُمٌ)).

[راجع: ١٨٢٥]

2596. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने स़अ़ब बिन जष़ामा लैष़ी (रज़ि.) से सुना, वो अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) में से थे। उनका बयान था कि उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में एक गोरख़र हदिया किया था। आप उस वक़्त मुक़ामे अब्वा या विदान में थे और मुहरिम थे। आपने वो गोरख़र वापस कर दिया। स़अ़ब (रज़ि.) ने कहा कि उसके बाद जब आपने मेरे चेहरे पर (नाराज़ी के आष़ार) हदिया की वापसी की वजह से देखा, तो फ़र्माया कि हदिया वापस करना मुनासिब तो न था, लेकिन बात ये है कि हम एह़राम बाँधे हुए हैं। (राजेअ़ : 1825)

गोया किसी वजह की बिना पर हदिया वापस किया जा सकता है। बशर्तेकि वजह मा'क़ूल और शरई हो। वो हदिया भी नाजाइज़ है जो किसी नाजाइज़ मक़्सद के ह़ुसूल के लिये बतौरे रिश्वत पेश किया जाए। ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के इर्शाद का यही मक़्सद है। ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **फइन कान लिमअसियतिन फला यहिल्लु व हुवरिश्वतु व इन कान लिताअतिन फयस्तहिब्बु व इन कान लिजाइज़िन फजाइज़ुन** इनका मत़लब भी वही है जो मज़्कूर हुआ कि रिश्वत किसी गुनाह के लिये हो तो वो ह़लाल नहीं है और अगर जाइज़ काम के लिये है तो वो मुस्तह़ब है।

٢٥٩٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((اسْتَعْمَلَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً مِنَ الأَزْدِ يُقَالُ لَهُ ابْنُ الأُتْبِيَّةِ عَلَى الصَّدَقَةِ، فَلَمَّا قَدِمَ قَالَ : هَذَا لَكُمْ وَهَذَا أُهْدِيَ

2597. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया ज़ुह्री से, वो उ़र्वा बिन ज़ुबैर से, वो अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) से कि क़बीला अज़्द के एक स़ह़ाबी को जिन्हें इब्ने अतिया कहते थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सदक़ा वसूल करने के लिये आ़मिल बनाया। फिर जब वो वापस आए तो कहा कि ये तुम लोगों का है (या'नी बैतुलमाल का) और ये मुझे हदिया में मिला है। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो अपने वालिद या अपनी वालिदा के घर में क्यूँ न बैठा रहा।

لِي. قَالَ: ((فَهَلاَّ جَلَسَ فِي بَيْتِ أَبِيْهِ - أَوْ بَيْتِ أُمِّهِ - فَيَنْظُرُ يُهْدَي لَهُ أَمْ لاَ؟ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ يَأْخُذُ أَحَدٌ مِنْهُ شَيْئًا إِلاَّ جَاءَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَحْمِلُهُ عَلَى رَقَبَتِهِ، إِنْ كَانَ بَعِيْرًا لَهُ رُغَاءٌ، أَوْبَقَرَةً لَهَا خُوَارٌ، أَوْ شَاةً تَيْعَرُ - ثُمَّ رَفَعَ بِيَدِهِ حَتَّى رَأَيْنَا عُفْرَةَ إِبطَيْهِ - اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ، اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ. ثَلاَثًا)). [راجع: ٩٢٥]

देखता वहाँ भी उन्हें हदिया मिलता है या नहीं। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। इस (माले ज़कात) में से अगर कोई शख़्स कुछ भी (नाजाइज़) ले लेगा तो क़यामत के दिन उसे वो अपनी गर्दन पर उठाए हुए आएगा। अगर ऊँट है तो वो अपनी आवाज़ निकालता हुआ आएगा, गाय है तो वो अपनी और बकरी है तो वो अपनी आवाज़ निकालती होगी। फिर आपने अपने हाथ उठाए यहाँ तक कि हमने आपकी बग़ल मुबारक की सफ़ेदी भी देख ली, (और फ़र्माया) ऐ अल्लाह! क्या मैंने तेरा हुक्म पहुँचा दिया। ऐ अल्लाह! क्या मैंने तेरा हुक्म पहुँचा दिया। तीन बार (आप (ﷺ) ने यही फ़र्माया) (राजेअ : 925)

इससे नाजाइज़ हदिया की मज़म्मत षाबित हुई। हाकिम, आमिल जो लोगों से डालियाँ वसूल करते हैं वो भी रिश्वत में दाख़िल हैं। ऐसे नाजाइज़ माल हासिल करने वालों को क़यामत के दिन ऐसे अज़ाब बर्दाश्त करने के लिये तैयार रहना चाहिये।

١٨- بَابُ إِذَا وَهَبَ هِبَةً أَوْ وَعَدَ ثُمَّ مَاتَ قَبْلَ أَنْ تَصِلَ إِلَيْهِ

बाब 18 : अगर हिबा या हिबा का वा'दा करके कोई मर जाए और वो चीज़ मौहूब लहू (जिसको हिबा की गई हो उस) को न पहुँची हो

وَقَالَ عُبَيْدَةُ: إِنْ مَاتَا وَكَانَتْ فُصِلَتِ الْهَدِيَّةُ وَالْمُهْدَي لَهُ حَيٌّ فَهِيَ لِوَرَثَتِهِ، وَإِنْ لَمْ تَكُنْ فُصِلَتْ فَهِيَ لِوَرَثَةِ الَّذِي أَهْدَى. وَقَالَ الْحَسَنُ أَيُّهُمَا مَاتَ قَبْلُ فَهِيَ لِوَرَثَةِ الْمُهْدَي لَهُ إِذَا قَبَضَهَا الرَّسُولُ.

और उबैदा बिन उमर सलमानी ने कहा अगर हिबा करने वाला मर जाए मौहूब पर मौहूब लहू का क़ब्ज़ा हो गया, वो ज़िन्दा हो फिर मर जाए तो वो मौहूब लहू के वारिषों का होगा और अगर मौहूब लहू का क़ब्ज़ा होने से पेशतर वाहिब मर जाए तो वो वाहिब के वारिषों को मिलेगा। और इमाम हसन बसरी ने कहा कि फ़रीक़ेन में से ख़्वाह किसी का भी पहले इंतिक़ाल हो जाए, हिबा मौहूब लहू के वरषा को मिलेगा। जब मौहूब लहू का वकील उस पर क़ब्ज़ा कर चुका हो।

٢٥٩٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُنْكَدِرِ سَمِعْتُ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا (ثَلاَثًا)))، فَلَمْ يَقْدَمْ حَتَّى تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ، فَأَمَرَ أَبُوبَكْرٍ مُنَادِيًا فَنَادَى: مَنْ كَانَ لَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ عِدَةٌ أَوْدَيْنٌ فَلْيَأْتِنَا. فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ

2598. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अल् मुंकदिर ने बयान किया, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना। आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझसे वा'दा किया, अगर बहरीन का माल (जिज़्या) आया तो मैं तुम्हें इतना इतना तीन लप माल दूँगा। लेकिन बहरीन से माल आने से पहले ही आप (ﷺ) वफ़ात फ़र्मा गए और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने एक मुनादी से ऐलान करने के लिये कहा कि जिससे नबी करीम (ﷺ) का कोई वा'दा हो या आप (ﷺ) पर उसका कोई क़र्ज़ हो तो वो हमारे पास आए। चुनाँचे मैं आपके यहाँ गया और कहा कि नबी करीम (ﷺ)

ने मुझसे वा'दा किया था तो उन्होंने तीन लप भरकर मुझे दिये। (राजेअ : 2296)

وَعَدَنِي فَحَثَى لِي ثَلاَثًا)).[راجع: ٢٢٩٦]

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मतलब ये है कि गोया आँहज़रत (ﷺ) ने जाबिर को मशरूत तौर पर बहरीन के माल आने पर तीन लप माल हिबा फ़र्मा दिया, मगर न माल आया और न आप पूरा कर सके। बाद में हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने आपका वा'दा पूरा फ़र्माया। इसी से मक़्सदे बाब षाबित हुआ।

बाब 19 : गुलाम लौण्डी और सामान पर क्यूँकर क़ब्ज़ा होता है

١٩- بَابُ كَيْفَ يُقْبَضُ الْعَبْدُ وَالْمَتَاعُ

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि मैं एक सरकश ऊँट पर सवार था। नबी करीम (ﷺ) ने पहले तो उसे ख़रीदा, फिर फ़र्माया कि अब्दुल्लाह ये ऊँट तू ले ले।

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: كُنْتُ عَلَى بَكْرٍ صَعْبٍ، فَاشْتَرَاهُ النَّبِيُّ ﷺ وَقَالَ: هُوَ لَكَ يَا عَبْدَ اللهِ.

2599. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया इब्ने अबी मुलैका से और वो मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चन्द क़बाएँ तक़्सीम कीं और मख़रमा (रज़ि.) को उसमें से एक भी नहीं दी। उन्होंने (मुझसे) कहा, बेटे चलो! रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में चलें। मैं उनके साथ चला। फिर उन्होंने कहा कि अंदर जाओ और हुज़ूर (ﷺ) से अर्ज़ करो कि मैं आपका मुंतज़िर खड़ा हुआ हूँ, चुनाँचे मैं अंदर गया और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को बुला लिया। आप उस वक़्त उन्हीं क़बाओं में से एक क़बा पहने हुए थे। आपने फ़र्माया कि मैंने ये तुम्हारे लिये छुपा रखी थी, लो अब ये तुम्हारी है। मिस्वर ने बयान किया कि (मेरे वालिद) मख़रमा ने क़बा की तरफ़ देखा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मख़रमा! खुश हुआ या नहीं? (दीगर मक़ाम : 2657, 3127, 5800, 5862, 6132)

٢٥٩٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: ((قَسَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَقْبِيَةً وَلَمْ يُعْطِ مَخْرَمَةَ مِنْهَا شَيْئًا، فَقَالَ مَخْرَمَةُ : يَا بُنَيَّ انْطَلِقْ بِنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ فَقَالَ: ادْخُلْ فَادْعُهُ لِي، قَالَ: فَدَعَوْتُهُ لَهُ، فَخَرَجَ إِلَيْهِ وَعَلَيْهِ قَبَاءٌ مِنْهَا فَقَالَ: خَبَأْنَا هَذَا لَكَ. قَالَ : فَنَظَرَ إِلَيْهِ فَقَالَ: رَضِيَ مَخْرَمَةُ)).

[أطرافه في : ٢٦٥٧، ٣١٢٧، ٥٨٠٠، ٥٨٦٢، ٦١٣٢].

तश्रीह : कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है। वालिद ने कहा अब मख़रमा राज़ी हुआ। बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि जब आपने वो अचकन मख़रमा (रज़ि.) को दी तो उनका क़ब्ज़ा पूरा हो गया। जुम्हूर के नज़दीक हिबा में जब तक मौहूब लहू का क़ब्ज़ा न हो उसकी मिल्क पूरी नहीं होती और मालिकिया के नज़दीक सिर्फ़ अक़्द से हिबा तमाम हो जाता है। अल्बत्ता अगर मौहूबा लहू उस वक़्त तक क़ब्ज़ा न करे कि वाहिब किसी और को वो चीज़ हिबा कर दे तो हिबा बातिल हो जाएगा। (वह़ीदी)

बाब 20 : अगर कोई हिबा करे और मौहूबा लहू उस पर क़ब्ज़ा कर ले लेकिन ज़बान से कुबूल न करे

٢٠- بَابُ إِذَا وَهَبَ هِبَةً فَقَبَضَهَا الآخَرُ وَلَمْ يَقُلْ قَبِلْتُ

मतलब ये कि हिबा में ज़बान से ईजाब कुबूल करना ज़रूरी नहीं और शाफ़िइया ने इसको शर्त रखा है। अल्बत्ता सदक़ा में ज़बान से ईजाब व कुबूल किसी ने ज़रूरी नहीं रखा।

2600. हमसे मुहम्मद बिन महबूब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर ने बयान किया ज़ुहरी से, वो हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान से और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा कि मैं तो हलाक हो गया। आप (ﷺ) ने पूछा, क्या बात हुई? अ़र्ज़ किया कि रमज़ान में मैंने अपनी बीवी से हमबिस्तरी कर ली है। आप (ﷺ) ने पूछा, तुम्हारे पास कोई ग़ुलाम है? कहा कि नहीं। फिर पूछा, क्या दो महीने पे दर पे रोज़े रख सकते हो? कहा कि नहीं। फिर पूछा, क्या साठ मिस्कीनों को खाना दे सकते हो? उस पर भी जवाब था कि नहीं। बयान किया कि इतने में एक अंसारी अ़र्क़ लाए। (अ़र्क़ खजूर के पत्तों का बना हुआ एक टोकरा होता था जिसमें खजूर रखी जाती थी) आँहज़रत (ﷺ) ने उससे फ़र्माया कि उसे ले जा और सदक़ा कर दे उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या अपने से ज़्यादा ज़रूरतमन्द पर सदक़ा करूँ? और उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है कि सारे मदीने में हमसे ज़्यादा मुहताज और कोई घराना न होगा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर जा, अपने ही घरवालों को खिला दे। (राजेअ : 1936)

٢٦٠٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَحْبُوبٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: هَلَكْتُ، فَقَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) قَالَ: وَقَعْتُ بِأَهْلِي فِي رَمَضَانَ. قَالَ: ((أَتَجِدُ رَقَبَةً؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: ((فَهَلْ تَسْتَطِيْعُ أَنْ تَصُومَ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: ((فَتَسْتَطِيْعُ أَنْ تُطْعِمَ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ بِعَرَقٍ وَالْعَرَقُ الْمِكْتَلُ فِيْهِ تَمْرٌ، فَقَالَ: ((اذْهَبْ بِهَذَا فَتَصَدَّقْ بِهِ)). قَالَ: عَلَى أَحْوَجَ مِنَّا يَا رَسُولَ اللهِ؟ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا أَهْلُ بَيْتٍ أَحْوَجُ مِنَّا. قَالَ: ((اذْهَبْ فَأَطْعِمْهُ أَهْلَكَ)).

[راجع: ١٩٣٦]

बाब 21 : अगर कोई अपना क़र्ज़ किसी को हिबा कर दे

٢١- بَابُ إِذَا وَهَبَ دَيْنًا عَلَى رَجُلٍ

शुअ़बा ने कहा और उसको हकम ने कि ये जाइज़ है और हसन बिन अ़ली (रज़ि.) ने एक शख़्स को अपना क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया था और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी का दूसरे शख़्स पर कोई हक़ है तो उसे अदा करना चाहिये या मुआ़फ़ करा ले। जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि मेरे बाप शहीद हुए तो उन पर क़र्ज़ था। नबी करीम (ﷺ) ने उनके क़र्ज़ख़्वाहों से कहा कि वो मेरे बाग़ की (सिर्फ़ मौजूदा) खजूर (अपने क़र्ज़ के बदले में) क़ुबूल कर लें और मेरे वालिद पर (जो क़र्ज़ बाक़ी रह जाए उसे) मुआ़फ़ कर दें।

قَالَ شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ : هُوَ جَائِزٌ. وَوَهَبَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ لِرَجُلٍ دَيْنَه. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ كَانَ لَهُ عَلَيْهِ حَقٌّ فَلْيُعْطِهِ أَوْ لِيَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ)). فَقَالَ جَابِرٌ: ((قُتِلَ أَبِي وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، فَسَأَلَ النَّبِيُّ ﷺ غُرَمَاءَهُ أَنْ يَقْبَلُوا تَمرَ حَائِطِي وَيُحَلِّلُوا أَبِي)).

तश्रीह : फ़र्माने नबवी जो यहाँ मन्क़ूल है इससे बाब का मतलब यूँ निकला कि हक़ क़र्ज़ को भी शामिल है जब उसको मुआ़फ़ कराने का हुक्म दिया तो मा'लूम हुआ कि क़र्ज़ का मुआ़फ़ करवाना दुरुस्त है। ख़्वाह वो ख़ुद क़र्ज़दार

को मुआफ़ कर दे या दूसरे शख़्स को वो क़र्ज़ दे डाले कि तुम वसूल कर लो और अपने काम में ले लो। मालिकिया के नज़दीक ग़ैर शख़्स को भी दैन (क़र्ज़) का हिबा दुरुस्त है और शाफ़िइया और हन्फ़िया के नज़दीक दुरुस्त नहीं । अल्बत्ता मदयून को दैन (क़र्ज़) का हिबा करना सबके नज़दीक दुरुस्त है।

हज़रत हसन बिन अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) की कुन्नियत अबू मुहम्मद है। आँहज़रत (ﷺ) के नवासे और जन्नत के फूल हैं, जन्नत के तमाम जवानों के सरदार, 3 हिजरी रमज़ानुल मुबारक की पन्द्रहवीं तारीख़ को पैदा हुए, वफ़ात 50 हिजरी में वाक़ेअ हुई और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न किये गये। इनसे इनके बेटे हसन बिन हसन और अबू हुरैरह (रज़ि.) और बड़ी जमाअत ने रिवायत की है।

जब इनके वालिद बुज़ुर्गवार हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहुहू कूफ़ा में शहीद हुए तो लोगों ने हज़रत हसन (रज़ि.) के हाथ पर बेअत की जिनकी ता'दाद चालीस हज़ार से ज़्यादा थी और हज़रत मुआविया (रज़ि.) के सुपुर्द ख़िलाफ़त का काम पन्द्रहवीं जमादिल् अव्वल 41 हिजरी में किया गया। इनके और फ़ज़ाइल किताबुल मनाक़िब में आएँगे।

2601. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी और लैष ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया इब्ने शिहाब से, वो इब्ने कअब बिन मालिक से और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उहुद की लड़ाई मे उनके बाप शहीद हो गये (और क़र्ज़ छोड़ गए) क़र्ज़ख़्वाहों ने तक़ाज़े में बड़ी शिद्दत की, तो मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे इस सिलसिले में बातचीत की, आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि वो मेरे बाग़ की खजूर ले लें (जो भी हों) और मेरे वालिद को (जो बाक़ी रह जाए वो क़र्ज़) मुआफ़ कर दें। लेकिन उन्होंने इंकार किया। फिर आपने मेरा बाग़ उन्हें नहीं दिया और न उनके लिये फल तुड़वाए। बल्कि फ़र्माया कि कल सुबह मैं तुम्हारे यहाँ आऊँगा। सुबह के वक़्त तशरीफ़ लाए और खजूर के पेड़ों में टहलते रहे और बरकत की दुआ फ़र्माते रहे फिर मैंने फल तोड़कर क़र्ज़ ख़्वाहों के सारे क़र्ज़ अदा कर दिये और मेरे पास खजूर बच भी गई। उसके बाद मैं रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैंने आपको वाक़िया की ख़बर दी हज़रत उमर (रज़ि.) भी वहीं बैठे हुए थे। आपने उनसे फ़र्माया, उमर! सुन रहे हो? हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, हमें तो पहले से मा'लूम है कि आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं । क़सम अल्लाह की! इसमें कोई शक व शुब्हा की गुंजाइश नहीं कि आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। (राजेअ : 2127)

٢٦٠١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّهُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ: ((أَنَّ أَبَاهُ قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ شَهِيْدًا فَاشْتَدَّ الْغُرَمَاءُ فِي حُقُوقِهِمْ، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَكَلَّمْتُهُ، فَسَأَلَهُمْ أَنْ يَقْبَلُوا ثَمَرَ حَائِطِي وَيُحَلِّلُوا أَبِي فَأَبَوا، فَلَمْ يُعْطِهِمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَائِطِي وَلَمْ يَكْسِرْهُ لَهُمْ، وَلَكِنْ قَالَ: سَأَغْدُو عَلَيْكَ. فَغَدَا عَلَيْنَا حِيْنَ أَصْبَحَ، فَطَافَ فِي النَّخْلِ وَدَعَا فِي ثَمَرِهِ بِالْبَرَكَةِ، فَجَدَدْتُهَا، فَقَضَيْتُهُمْ حُقُوقَهُمْ، وَبَقِيَ لَنَا مِنْ ثَمَرِهَا بَقِيَّةٌ. ثُمَّ جِئْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ جَالِسٌ فَأَخْبَرْتُهُ بِذَلِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِعُمَرَ: ((اسْمَعْ - وَهُوَ جَالِسٌ- يَا عُمَرُ)). فَقَالَ: أَلاَّ يَكُونُ قَدْ عَلِمْنَا أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ؟ وَاللهِ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللهِ؟)).

[راجع: ٢١٢٧]

ऐनी ने कहा इस हदीष की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से इस तरह है कि आँहज़रत (ﷺ) ने जाबिर (रज़ि.) के क़र्ज़ख़्वाहों से ये

सिफ़ारिश की कि बाग़ में जितना मेवा निकले वो अपने क़र्ज़ के बदले में ले लो और जो क़र्ज़ बाक़ी रहे वो मुआफ़ कर दो गोया बाक़ी दैन का जाबिर को हिबा हुआ।

बाब 22 : एक चीज़ कई आदमियों को हिबा करे तो कैसा है?

٢٢- بَابُ هِبَةِ الْوَاحِدِ لِلْجَمَاعَةِ

और अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने क़ासिम बिन मुहम्मद और इब्ने अबी अ़तीक़ से कहा कि मेरी बहन आइशा (रज़ि.) से विराष़त में मुझे ग़ाबा (की ज़मीन) मिली थी। मुआविया (रज़ि.) ने मुझे उसका एक लाख (दिरहम) दिया लेकिन मैंने उसे नहीं बेचा, यही तुम दोनों को हदिया है।

وَقَالَتْ أَسْمَاءُ لِلْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ وَابْنِ أَبِي عَتِيقٍ: وَرِثْتُ عَنْ أُخْتِي عَائِشَةَ بِالْغَابَةِ، وَقَدْ أَعْطَانِي بِهِ مُعَاوِيَةُ مِائَةَ أَلْفٍ، فَهُوَ لَكُمَا.

या'नी मशाअ़ का हिबा जाइज़ है मष़लन एक ग़ुलाम या एक घर चार आदमियों को हिबा किया। हर एक का उसमें हिस्सा है। हन्फ़िया ने उसमें ख़िलाफ़ किया है, वो कहते हैं जो चीज़ तक़्सीम के क़ाबिल न हो जैसे चक्की या हम्माम उसका तो बतौरे मशाअ़ हिबा जाइज़ है और जो चीज़ तक़्सीम के क़ाबिल हो, जैसे घर वग़ैरह उसका हिबा बतौरे मशाअ़ के दुरुस्त नहीं। (वहीदी)

बाब का मत़लब ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) के इस तर्ज़े अ़मल से निकलता है कि उन्होंने अपनी जायदाद बतौरे मशाअ़ के दोनों को हिबा कर दी। क़ासिम बिन मुहम्मद ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) के भतीजे थे और अ़ब्दुल्लाह भतीजे के बेटे, ग़ाबा मदीना के मुत्तसिल एक गांव था। जहाँ ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की कुछ ज़मीन थी। ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) ने दोनों को ज़मीन हिबा कर दी। इसी से बाब का तर्जुमा निकला।

2602. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, वो अबू ह़ाज़िम से, वो सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पीने को कुछ लाया, (दूध या पानी) आपने उसे नोश फ़र्माया, आपके दाईं तरफ़ एक बच्चा बैठा था और बड़े बूढ़े लोग बाईं तरफ़ बैठे हुए थे, आपने उस बच्चे से फ़र्माया कि अगर तू इजाज़त दे (तो बचा हुआ पानी) मैं इन बड़े लोगों को दे दूँ? लेकिन उसने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके जूठे में से मिलने वाले किसी हिस्से का मैं ईष़ार नहीं कर सकता। आँह़ज़रत (ﷺ) ने प्याला झटके के साथ उसी की तरफ़ बढ़ा दिया। (राजेअ़ : 2351)

٢٦٠٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أُتِيَ بِشَرَابٍ فَشَرِبَ، وَعَنْ يَمِينِهِ غُلاَمٌ، وَعَنْ يَسَارِهِ الأَشْيَاخُ، فَقَالَ لِلْغُلاَمِ: إِنْ أَذِنْتَ لِي أَعْطَيْتُ هَؤُلاَءِ، فَقَالَ: مَا كُنْتُ لأُوثِرَ بِنَصِيبِي مِنْكَ يَا رَسُولَ اللهِ أَحَدًا. فَتَلَّهُ فِي يَدِهِ)). [راجع: ٢٣٥١]

ह़ाफ़िज़ ने कहा, चूँकि आँह़ज़रत (ﷺ) ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से ये फ़र्माया कि वो अपना ह़िस्सा बूढ़ों को हिबा कर दें और बूढ़े कई थे और उनका ह़िस्सा मशाअ़ था, इसलिये मशाअ़ को हिबा का जवाज़ निकला और ष़ाबित हुआ कि एक चीज़ कई अश्ख़ास को मुश्तरक तौर पर हिबा की जा सकती है।

बाब 23 : जो चीज़ क़ब्ज़े में हो या न हो और जो चीज़ बट गई हो और जो न बटी हो, उसके हिबा का

٢٣- بَابُ الْهِبَةِ الْمَقْبُوضَةِ وَغَيْرِ الْمَقْبُوضَةِ وَالْمَقْسُومَةِ وَغَيْرِ الْمَقْسُومَةِ

और नबी करीम (ﷺ) और आपके अस्ह़ाब ने क़बीला हवाज़िन को उनकी तमाम ग़नीमत हिबा कर दी, हालांकि उसकी तक़्सीम नहीं हुई थी।

وَقَدْ وَهَبَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ لِهَوَازِنَ مَا غَنِمُوا مِنْهُمْ وَهُوَ غَيْرُ مَقْسُومٍ.

2603. और षाबित बिन मुहम्मद ने बयान किया कि हमसे मअमर ने बयान किया उनसे मुहारिब ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में (सफ़र से लौटकर) मस्जिद में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने (मेरे ऊँट की क़ीमत) अदा की और कुछ ज़्यादा भी दिया। (राजेअ : 443)

٢٦٠٣- قَالَ ثَابِتٌ حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ مُحَارِبٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، ((أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ، فَقَضَانِي وَزَادَنِي))
[راجع: ٤٤٣]

तशरीह : जो चीज़ क़ब्ज़े मे हो उसका हिबा तो बिलइत्तिफ़ाक़ दुरुस्त है और जो चीज़ क़ब्ज़े में न हो उसका हिबा अकषर उलमा के नज़दीक जाइज़ नहीं है। मगर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसका जवाज़ इसी तरह इस माल के हिबा का जवाज़ जो तक़्सीम न हुआ हो, बाब की हदीष से निकाला इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) ने ग़नीमत का माल जो अभी मुसलमानों के क़ब्ज़े में नहीं आया था, हवाज़िन के लोगों को हिबा कर दिया। मुख़ालिफ़ीन ये कहते हैं कि क़ब्ज़ा तो हो गया था क्योंकि ये अम्वाल मुसलमानों के हाथ में थे, भले ही तक़्सीम न हुए थे।

दूसरी रिवायत में जाबिर (रज़ि.) का वाक़िया है। शायद हज़रत मुज्तहिदे मुतलक़ इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जिसमें ये है कि वो ऊँट भी आप (ﷺ) ने मुझको हिबा कर दिया तो क़ब्ज़ा से पहले हिबा षाबित हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने जाबिर (रज़ि.) को जो सोना या चाँदी क़ीमत से ज़्यादा दिलवाया उसे जाबिर (रज़ि.) ने बतौरे तबर्रुक हमेशा अपने पास रखा और ख़र्च न किया। यहाँ तक कि यौमुल हर्रह आया। ये लड़ाई 63 हिजरी में हुई। जब यज़ीदी फ़ौज ने मदीना तय्यिबा पर हमला किया। हर्रह मदीना का एक मैदान है वहाँ ये लड़ाई हुई थी। उसी जंग में ज़ालिमों ने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से उस तबर्रुके नबवी को छीन लिया। आजकल भी जगह जगह बहुत सी चीज़ें लोगों ने तबर्रुकाते नबवी के नाम से रखी हुई है। कहीं आप (ﷺ) के मूए मुबारक बतलाए जाते हैं और कहीं क़दमे मुबारक के निशान वग़ैरह वग़ैरह। मगर ये सब बेसनद चीज़ें हैं और इनके बारे में ख़तरा है कि आँहज़रत (ﷺ) पर ये इफ़्तिराअ हों और ऐसे मुफ़्तरी अपने आपको ज़िन्दा दोज़ख़ी बना लें। जैसा कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने मेरे ऊपर कोई इफ़्तिरा बाँधा वो ज़िन्दा जहन्नमी है।

2604. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, मुहारिब बिन दष़्षार से और उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, आप फ़र्माते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को सफ़र में एक ऊँट बेचा था। जब हम मदीना पहुँचे तो आपने फ़र्माया कि मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़, फिर आपने वज़न किया। शुअबा ने बयान किया, मेरा ख़्याल है कि (जाबिर रज़ि. ने कहा) मेरे लिये वज़न किया (आपके हुक्म से हज़रत बिलाल रज़ि. ने) और (उस पलड़े को जिसमें सिक्का था) झुका दिया (ताकि मुझे ज़्यादा मिले)। उसमें से कुछ थोड़ा सा मेरे पास जब से महफ़ूज़ था। लेकिन शाम वाले (उमवी लश्कर) यौमे हर्रह के मौक़े पर मुझसे छीनकर ले गए। (राजेअ : 443)

٢٦٠٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَارِبٍ قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((بِعْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ بَعِيْرًا فِي سَفَرٍ، فَلَمَّا أَتَيْنَا الْمَدِيْنَةَ قَالَ: ((ائْتِ الْمَسْجِدَ فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ)). فَوَزَنَ)).
قَالَ شُعْبَةُ : أُرَاهُ ((فَوَزَنَ لِي فَأَرْجَحَ، فَمَا زَالَ مِنْهَا شَيْءٌ حَتَّى أَصَابَهَا أَهْلُ الشَّامِ يَوْمَ الْحَرَّةِ)). [راجع: ٤٤٣]

तश्रीह : हज़रत मुज्तहिदे आज़म इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का तर्जुमा ष़ाबित फ़र्माने के लिये क़बीला हवाज़िन के क़ैदियों का मामला पेश किया है कि इस्लामी लश्कर के क़ब्ज़े में आने के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें फिर हवाज़िन वालों को हिबा फ़र्मा दिया था। दूसरा वाक़िया हज़रत जाबिर (रज़ि.) का है जिनसे आँहज़रत (ﷺ) ने ऊँट ख़रीदा, फिर मदीना वापस आकर उसकी क़ीमत अदा फ़र्माई और साथ ही मज़ीद आपने और भी बतौरे बख़्शिश हिबा फ़र्माया। उसी से बाब का तर्जुमा ष़ाबित हुआ।

2605. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने अबू हाज़िम से, वो सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में कुछ पीने को लाया गया। आपकी दाईं तरफ़ एक बच्चा था और क़ौम के बड़े लोग बाईं तरफ़ थे आपने बच्चे से फ़र्माया कि क्या तुम्हारी तरफ़ से इजाज़त है कि मैं बचा हुआ पानी इन बुज़ुर्गों को दे दूँ? तो उस बच्चे ने कहा कि नहीं क़सम अल्लाह की! मैं आपसे मिलने वाले अपने हिस़्से का हर्गिज़ ईष़ार नहीं कर सकता। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने मशरूब उनकी तरफ़ झटके के साथ बढ़ा दिया। (राजेअ़ : 2351)

٢٦٠٥ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أُتِيَ بِشَرَابٍ وَعَنْ يَمِينِهِ غُلاَمٌ وَعَنْ يَسَارِهِ أَشْيَاخٌ، فَقَالَ لِلْغُلاَمِ: ((أَتَأْذَنُ لِي أَنْ أُعْطِيَ هَؤُلاَءِ؟)) فَقَالَ الْغُلاَمُ : لاَ وَاللهِ، لاَ أُوثِرُ بِنَصِيبِي مِنْكَ أَحَدًا. فَتَلَّهُ فِي يَدِهِ)). [راجع: ٢٣٥١]

तश्रीह : अगरचे हक़ उस लड़के ही का था मगर आँहज़रत (ﷺ) की सिफ़ारिश क़ुबूल न की जिस पर आपने झटके के साथ उसे प्याला दे दिया। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं कि **वल्हक्क़ु कमा क़ाल इब्नु बत्ताल अन्नहू (ﷺ) सअलल्गुलाम अंय्यहब नसीबहू लिल्अश्याखि व कान नसीबुहू मिन्हु मशाअ़न गैर मुतमय्यिज़िन फदल्ल अला सिहति हिबतिल्मशाइ वल्लाहु आलम** (फ़त्हुल्बारी) या'नी हक़ यही है कि आँहज़रत (ﷺ) ने लड़के से फ़र्माया कि वो अपना हिस़्सा बड़े लोगों को हिबा कर दे, उसका वो हिस़्सा अभी तक मुश्तरक था। उसी से मशाअ़ के हिबा करने की स़ेहत ष़ाबित हुई।

2606. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़ष़्मान बिन जबला ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मेरे बाप ने ख़बर दी शुअ़बा से, उनसे सलमा ने बयान किया कि मैंने अबू सलमा से सुना और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि एक शख़्स का रसूलुल्लाह (ﷺ) पर क़र्ज़ था (उसने सख़्ती के साथ तक़ाज़ा किया) तो स़हाबा उसकी तरफ़ बढ़े। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया उसे छोड़ दो, हक़ वाले को कुछ न कुछ कहने की गुंजाइश होती ही है। फिर आपने फ़र्माया कि इसके लिये एक ऊँट उसी के ऊँट की उ़म्र का ख़रीदकर उसे दे दो। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया कि उससे अच्छी उ़म्र का ही ऊँट मिल रहा है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसी को ख़रीद कर दे दो कि तुममें सबसे अच्छा आदमी वो है जो क़र्ज़ के अदा करने में सबसे अच्छा हो। (राजेअ़ : 2305)

٢٦٠٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ بْنِ جَبَلَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سَلَمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ لِرَجُلٍ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ دَيْنٌ، فَهَمَّ بِهِ أَصْحَابُهُ فَقَالَ: ((دَعُوهُ فَإِنَّ لِصَاحِبِ الْحَقِّ مَقَالاً)). وَقَالَ: ((اشْتَرُوا لَهُ سِنًّا فَأَعْطُوهَا إِيَّاهُ))، فَقَالُوا: إِنَّا لاَ نَجِدُ سِنًّا إِلاَّ سِنًّا هِيَ أَفْضَلُ مِنْ سِنِّهِ. قَالَ: ((اشْتَرُوهَا فَأَعْطُوهَا إِيَّاهُ، فَإِنَّ مِنْ خَيْرِكُمْ أَحْسَنَكُمْ قَضَاءً)). [راجع: ٢٣٠٥]

कुछ ने कहा इस हदीष़ की मुनासबत बाब के तर्जुमे से मुश्किल है। क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने अबू राफ़ेअ़ (रज़ि.) को वकील

किया था। उन्होंने ऊँट ख़रीदा, तो उनका क़ब्ज़ा आँहज़रत (ﷺ) का क़ब्ज़ा था इसलिये क़ब्ज़े से पहले ये हिबा न हुआ और उसका जवाब ये है कि अबू राफ़ेअ सिर्फ़ ख़रीदने के लिये वकील हुए थे न कि हिबा के लिये तो उनका क़ब्ज़ा हिबा के अहकाम में आँहज़रत (ﷺ) का क़ब्ज़ा न था। पस इमाम बुख़ारी (रह.) का मतलब हदीष़ से निकल आया और ग़ैर मक़्बूज़ का हिबा षाबित हुआ। (वहीदी)

बाब 24 : अगर कई शख़्स कई शख़्सों को हिबा करें

٢٤- بَابُ إِذَا وَهَبَ جَمَاعَةٌ لِقَوْمٍ

2607,08. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उनसे लैष़ ने, कहा हमसे अक़ील ने इब्ने शिहाब से, वो उर्वा से कि मरवान बिन हकम और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में जब हवाज़िन का वफ़द मुसलमान होकर हाज़िर हुआ और आपसे दरख़्वास्त की कि उनके अम्वाल और क़ैदी उन्हे वापस कर दें तो आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि मेरे साथ जितनी बड़ी जमाअत है उसे भी तुम देख रहे हो और सबसे ज़्यादा सच्ची बात ही मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है। इसलिये तुम लोग इन दो चीज़ों में से एक ही ले सकते हो, या अपने क़ैदी ले लो या अपना माल। मैंने तो तुम्हारा पहले ही इंतिज़ार किया था। और नबी करीम (ﷺ) ताईफ़ से वापसी पर तक़रीबन दस दिन तक (मक़ामे जिअराना में) उन लोगों का इंतिज़ार फ़र्माते रहे। फिर उन लोगों के सामने जब ये बात पूरी तरह वाज़ेह हो गई कि आँहज़रत (ﷺ) उनकी सिर्फ़ एक ही चीज़ वापस फ़र्मा सकते हैं तो उन्होंने कहा कि हम अपने क़ैदियों ही को (वापस लेना) पसन्द करते हैं। फिर आप (ﷺ) ने खड़े होकर मुसलमानों को ख़िताब किया, आपने अल्लाह की उसकी शान के मुताबिक़ ता'रीफ़ बयान की और फ़र्माया, अम्मा बअ़द! ये तुम्हारे भाई हमारे पास अब तौबा करके आए हैं। मेरा ख़याल है कि इन्हें इनके क़ैदी वापस कर दिये जाएँ। इसलिये जो साहब अपनी ख़ुशी से वापस करना चाहें वो ऐसा कर लें और जो लोग ये चाहते हों कि अपने हिस्से को न छोड़ें बल्कि हम उन्हें उसके बदले में सबसे पहली ग़नीमत के माल में से मुआवज़ा दें, तो वो भी (अपने मौजूदा क़ैदियों को) वापस कर दें। सब सहाबा ने इस पर कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम अपनी ख़ुशी से इन्हें वापस कर देते हैं। आपने फ़र्माया लेकिन वाज़ेह तौर पर इस वक़्त ये मा'लूम न हो सका है कि कौन अपनी ख़ुशी से देने के लिये तैयार है और कौन नहीं। इसलिये सब लोग (अपने ख़ैमा

٢٦٠٧، ٢٦٠٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ وَالْمِسْوَرَ بْنِ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ حِيْنَ جَاءَهُ وَفْدُ هَوَازِنَ مُسْلِمِيْنَ، فَسَأَلُوهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَسَبْيَهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ: ((مَعِيَ مَنْ تَرَوْنَ، وَأَحَبُّ الْحَدِيْثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ، فَاخْتَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ: إِمَّا السَّبْيَ وَإِمَّا الْمَالَ، وَقَدْ كُنْتُ اسْتَأْنَيْتُ)) - وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ انْتَظَرَهُمْ بِضْعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً حِيْنَ قَفَلَ مِنْ طَائِفٍ - فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ غَيْرُ رَادٍّ إِلَيْهِمْ إِلاَّ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ قَالُوا: فَإِنَّا نَخْتَارُ سَبْيَنَا. فَقَامَ فِي الْمُسْلِمِيْنَ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ هَؤُلاَءِ جَاؤُونَا تَائِبِيْنَ، وَإِنِّي رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ إِلَيْهِمْ سَبْيَهُمْ، فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطَيِّبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَكُونَ عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نُعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ أَوَّلِ مَا يُفِيءُ اللهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ)). فَقَالَ النَّاسُ: طَيَّبْنَا يَا رَسُولَ اللهِ لَهُمْ. فَقَالَ لَهُمْ: ((إِنَّا لاَ نَدْرِيْ مَنْ أَذِنَ مِنْكُمْ فِيْهِ مِمَّنْ لَمْ يَأْذَنْ، فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا

में) वापस जाएँ और तुम्हारे नुमाइंदे तुम्हारा मामला लाकर पेश करें। चुनाँचे सब लोग वापस हो गये और नुमाइन्दों ने उनसे बातचीत की और वापस होकर आँहज़रत (ﷺ) को बताया कि तमाम लोगों ने ख़ुशी से इजाज़त दे दी है। क़बीला हवाज़िन के क़ैदियों के बारे में हमें यही बात मा'लूम हुई है। ये ज़ुह्री (रह.) का आख़िरी क़ौल था। या'नी ये कि क़बीला हवाज़िन के क़ैदियों के बारे में हमें यही बात मा'लूम हुई है।

عُرَفَاؤُكُمْ أَمْرَكُمْ فَرَجَعَ النَّاسُ فَكَلَّمَهُمْ عُرَفَاؤُهُمْ)). ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ طَيَّبُوا وَأَذِنُوا)). وَهَذَا الَّذِي بَلَغَنَا مِنْ سَبْيِ هَوَازِنَ. هَذَا آخِرُ قَوْلِ الزُّهْرِيِّ. يَعْنِي فَهَذَا الَّذِي بَلَغَنَا.

बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है कि सहाबा ने जो मुतअद्दिद लोग थे, हवाज़िन के लोगों को जो मुतअद्दिद थे, क़ैदियो का हिबा किया।

बाब 25 : अगर किसी को कुछ हदिया दिया जाए उसके पास और लोग भी बैठे हों तो अब उसको दिया जाए जो ज़्यादा हक़दार है

٢٥- بَابُ مَنْ أُهْدِيَ لَهُ هَدِيَّةٌ وَعِنْدَهُ جُلَسَاؤُهُ فَهُوَ أَحَقُّ

इससे मक़्सूद इस क़ौल का इब्ताल है अल् हदाया मुश्तरक एक बुज़ुर्ग के सामने ये क़ौल बयान किया गया उन्होंने कहा, तन्हा ख़ुशतर्क।

2609. हमसे इब्ने मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी शुअबा से, उन्हें सलमा बिन कुहैल ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक ख़ास उम्र का ऊँट क़र्ज़ लिया, क़र्ज़ ख़्वाह तक़ाज़ा करने आया (और ना-ज़ेबा बातचीत की) तो आपने फ़र्माया कि हक़ वाले को कहने का हक़ होता है। फिर आपने उससे अच्छी उम्र का ऊँट उसे दिला दिया और फ़र्माया कि तुममें अफ़ज़ल वो है जो अदा करने में सबसे बेहतर हो। (राजेअ : 2305)

٢٦٠٩- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ أَخَذَ سِنًّا، فَجَاءَ صَاحِبُهُ يَتَقَاضَاهُ، فَقَالُوا لَهُ، فَقَالَ: ((إِنَّ لِصَاحِبِ الْحَقِّ مَقَالاً، ثُمَّ قَضَاهُ أَفْضَلَ مِنْ سِنِّهِ وَقَالَ: أَفْضَلُكُمْ أَحْسَنُكُمْ قَضَاءً)). [راجع: ٢٣٠٥]

बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है कि इस ज़्यादती में दूसरे लोग जो वहाँ बैठे थे शरीक नहीं हुए बल्कि उसी को मिली जिसका ऊँट आप पर क़र्ज़ था।

2610. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उयय्यना ने बयान किया अम्र से और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि वो सफ़र में नबी करीम (ﷺ) के साथ थे और उमर (रज़ि.) के एक सरकश ऊँट पर सवार थे। वो ऊँट आँहज़रत (ﷺ) से भी आगे बढ़ जाया करता था। इसलिये उनके वालिद (उमर रज़ि.) को तम्बीह करनी पड़ती थी कि ऐ अब्दुल्लाह! नबी करीम (ﷺ) से

٢٦١٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرٍو: عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَكَانَ عَلَى بَكْرٍ لِعُمَرَ صَعْبٍ، فَكَانَ يَتَقَدَّمُ النَّبِيَّ ﷺ، فَيَقُولُ أَبُوهُ: يَا عَبْدَ

आगे किसी को न होना चाहिये। फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया! कि उमर! उसे मुझे बेच दे। उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया ये तो आप ही का है। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे ख़रीद लिया। फिर फ़र्माया, अब्दुल्लाह! ये अब तेरा है। जिस तरह तू चाहे उसे इस्ते'माल कर। (राजेअ : 2115)

اللهِ لاَ يَتَقَدَّمُ النَّبِيُّ ﷺ أَحَدٌ، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((بِعْنِيهِ))، فَقَالَ عُمَرُ: هُوَ لَكَ، فَاشْتَرَاهُ ثُمَّ قَالَ: ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدَ اللهِ، فَاصْنَعْ بِهِ مَا شِئْتَ)).

[راجع: ٢١١٥]

मुताबक़त ज़ाहिर है कि अब्दुल्लाह के साथ वाले उस ऊँट में शरीक नहीं हुए, हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी दूरगामी नज़रे बसीरत से उस अम्र को षाबित किया है कि मज्लिस में ख़्वाह कितने ही लोग बैठे हों, हदिया सिर्फ़ उसको दिया जाएगा जो मुस्तहिक़ है। इसी बारीक बीनी ने हज़रत इमाम को ये मक़ाम अता किया कि फ़न्ने हदीष़ की गहराइयों तक पहुँचना ये सिर्फ़ आपका हिस्सा था जिसकी वजह से वो अमीरुल मोमिनीन फ़िल् हदीष़ से मशहूर हुए। अब आपके उस ख़ुदादाद मन्सब से कोई हसद करता है या इनाद, इससे इंकार करता है तो वो करता रहे। हदीषे नबवी की बरकत से अल्लाह तआला ने आपको ग़ैर फ़ानी कुबूलियत दी जो ता-क़यामे दुनिया क़ायम रहेगी। इंशाअल्लाह।

बाब 26 : अगर कोई शख़्स ऊँट पर सवार हो और दूसरा शख़्स वो ऊँट उसको हिबा कर दे तो दुरुस्त है

٢٦- بَابُ إِذَا وَهَبَ بَعِيْرًا لِرَجُلٍ وَهُوَ رَاكِبُهُ، فَهُوَ جَائِزٌ

2611. और हुमैदी ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया कि हमसे अम्र ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे और मैं एक सरकश ऊँट पर सवार था। नबी करीम (ﷺ) ने उमर (रज़ि.) से फ़र्माया कि ये ऊँट मुझे बेच दे चुनाँचे आपने उसे ख़रीद लिया और फिर फ़र्माया कि अब्दुल्लाह! तू ये ऊँट ले जा। (मैंने ये तुझको बख़्श दिया)

٢٦١١- وَقَالَ الْحُمَيْدِيُّ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرٌو عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، وَكُنْتُ عَلَى بَكْرٍ صَعْبٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعُمَرَ: ((بِعْنِيهِ))، فَابْتَاعَهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدَ اللهِ)).[راجع: ٢١١٥]

हज़रत अब्दुल्लाह ऊँट पर सवार थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी हालत में उसे ख़रीद लिया और फिर अज़राहे नवाज़िश अब्दुल्लाह को उसी हालत में उसे हिबा कर दिया, इसी से बाब का तर्जुमा षाबित हुआ।

बाब 27 : ऐसे कपड़े का तोहफ़ा जिसका पहनना मकरूह हो

٢٧- بَابُ هَدِيَّةِ مَا يُكْرَهُ لُبْسُهَا

कराहते आम है तंज़ीही हो या तहरीमी अहले हदीष़ हराम को भी मकरूह कह देते हैं।

2611. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने नाफ़ेअ से और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि उमर (रज़ि.) ने देखा कि मस्जिद के दरवाज़े पर एक रेशमी हुल्ला (बिक रहा) है। आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ किया, कि क्या अच्छा होता अगर आप इसे ख़रीद लेते और जुम्आ के दिन और वफ़ूद की मुलाक़ात के मौक़ों पर इसे ज़ेबतन

٢٦١٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((رَأَى عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ حُلَّةً سِيَرَاءَ عِنْدَ بَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، لَوْ اشْتَرَيْتَهَا فَلَبِسْتَهَا

फ़र्मा लिया करते। आँहज़रत (ﷺ) ने उनका जवाब ये दिया कि उसे वही लोग पहनते हैं जिनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा। कुछ दिनों बाद आँहज़रत (ﷺ) के यहाँ बहुत से (रेशमी) हुल्ले आए और आपने एक हुल्ला उनमें से हज़रत उमर (रज़ि.) को भी इनायत किया। उमर (रज़ि.) ने इस पर अर्ज़ किया कि आप ये मुझे पहनने के लिये इनायत कर रहे हैं हालाँकि आप ख़ुद अतारद के हुल्लों के बारे में जो कुछ फ़र्माना था, फ़र्मा चुके हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने इसे तुम्हें पहनने के लिये नहीं दिया है। चुनाँचे उमर (रज़ि.) ने उसे अपने एक मुश्रिक भाई को दे दिया, जो मक्के में रहता था। (राजेअ : 886)

يَومَ الْجُمُعَةِ وَلِلْوَفْدِ. قَالَ : إِنَّمَا يَلْبَسُهَا مَنْ لاَ خَلاَقَ لَهُ فِي الآخِرَةِ. ثُمَّ جَاءَتْ حُلَلٌ، فَأَعْطَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عُمَرَ مِنْهَا حُلَّةً، فَقَالَ: أَكَسَوْتَنِيهَا وَقُلْتَ فِي حُلَّةِ عُطَارِدَ مَا قُلْتَ؟ فَقَالَ: ((إِنِّي لَمْ أَكْسُكَهَا لِتَلْبَسَهَا)). فَكَسَا عُمَرُ أَخًا لَهُ بِمَكَّةَ مُشْرِكًا)). [راجع: ٨٨٦]

अतारद बिन हाजिब बिन ज़ुरारह बिन अदी बनी तमीम का भेजा हुआ एक शख़्स था। पहला जोड़ा जिसके ख़रीदने की हज़रत उमर (रज़ि.) ने राय दी थी, वही लाया था। आँहज़रत (ﷺ) ने रेशमी हुल्ले का हदिया हज़रत उमर (रज़ि.) को पेश फ़र्माया जिसका ख़ुद इस्ते'माल करना हज़रत उमर (रज़ि.) के लिये जाइज़ न था। तफ़्सील मा'लूम करने के बाद हज़रत उमर (रज़ि.) ने वो हुल्ला अपने एक ग़ैर—मुस्लिम सगे भाई को दे दिया। इसी से बाब का तर्जुमा षाबित हुआ। और ये भी कि अपने अज़ीज़ अगर ग़ैर—मुस्लिम या बद दीन हैं तब भी उनके साथ हर मुम्किन एहसाने सुलूक करना चाहिये क्योंकि ये इंसानियत का तक़ाज़ा है और मक़ामे इंसानियत बहरहाल अर्फ़अ व आला है।

2613. हमसे अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने नाफ़ेअ से और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के घर तशरीफ़ ले गए, लेकिन अंदर नहीं गए। उसके बाद हज़रत अली (रज़ि.) घर आए तो फ़ातिमा (रज़ि.) ने ज़िक्र किया (कि आप (ﷺ) घर में तशरीफ़ नहीं लाए) अली (रज़ि.) ने इसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उसके दरवाज़े पर धारीदार पर्दा लटका देखा था (इसलिये वापस चला आया) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे दुनिया (की आराइश व ज़ेबाइश) से क्या सरोकार। हज़रत अली (रज़ि.) ने आकर उनसे आपकी बातचीत का ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा कि आप मुझे जिस तरह का चाहें इस सिलसिले में हुक्म फ़र्माएँ। (आँहज़रत ﷺ को जब ये बात पहुँची तो) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़लाँ घर में इसे भिजवा दें। उन्हें इसकी ज़रूरत है।

٢٦١٣– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ أَبُو جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَتَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْتَ فَاطِمَةَ فَلَمْ يَدْخُلْ عَلَيْهَا، وَجَاءَ عَلِيٌّ فَذَكَرَتْ لَهُ ذَلِكَ، فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: ((إِنِّي رَأَيْتُ عَلَى بَابِهَا سِتْرًا مَوْشِيًّا، فَقَالَ: مَا لِيْ وَلِلدُّنْيَا؟)) فَأَتَاهَا عَلِيٌّ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهَا، فَقَالَتْ: لِيَأْمُرْنِي فِيْهِ بِمَا شَاءَ. قَالَ: تُرْسِلُ بِهِ إِلَى فُلاَنٍ، أَهْلِ بَيْتٍ بِهِمْ حَاجَةٌ)).

दरवाज़े पर कपड़ा बतौरे पर्दा लटकाना नाजाइज़ न था, मगर महज़ ज़ेब व ज़ीनत के लिये कपड़ा लटकाना ये जानवादा नुबुव्वत के लिये इसलिये मुनासिब नहीं था कि अल् फ़क़्रु फ़ख़री उनका तुर्र-ए-इम्तियाज़ था। आपने जो अपने लिये पसन्द किया उसके लिये हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को हिदायत फ़र्माई और एक मौक़ा पर आयत **व लिल्आख़िरति ख़ैरुल्लक मिनल्ऊला**

(अज़्ज़ुहा : 4) की रोशनी में इर्शाद हुआ कि मेरे लिये मेरी आल के लिये दुनियावी तअ़ीश और तरफ़्फ़ुअ़ लायक़ नहीं, अल्लाह ने हमारे लिये, सब कुछ आख़िरत में तैयार कर रखा है।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की बहुत ही प्यारी बेटी हैं, उनकी वालिदा माजिदा हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) हैं। एक रिवायत के मुताबिक़ ये आँहज़रत (ﷺ) की सबसे छोटी बेटी हैं । दुनिया व आख़िरत में तमाम औरतों की सरदार हैं। रमज़ान 2 हिजरी में इनका निकाह हज़रत अ़ली (रज़ि.) से हुआ और ज़िलहिज्ज में रुख़्सती अ़मल में आई। इनके बतन से हज़रत अ़ली (रज़ि.) के तीन साहबज़ादे हज़रत हसन व हज़रत हुसैन, हज़रत मुहसिन (रज़ि.) और ज़ैनब, उम्मे कुलषुम और रुक़य्या तीन साहबज़ादियाँ पैदा हुईं । वफ़ाते नबवी के छः माह बाद मदीना तय्यिबा ही में बउम्र 28 साल इंतिक़ाल फ़र्माया। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उनको गुस्ल दिया और हज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। रात ही में दफ़न की गईं। हज़रत हसन और हुसैन (रज़ि.) और उनके अ़लावा सहाबा की एक जमाअ़त ने इनसे रिवायत की है।

हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि आँहज़रत (ﷺ) के अ़लावा मैंने किसी को उनसे ज़्यादा सच्चा नहीं पाया। उन्होंने फ़र्माया कि जबकि उन दोनों के दरम्यान किसी बात में कुबैदगी थी कि या रसूलल्लाह (ﷺ) उन ही से पूछ लीजिए क्योंकि वो झूठ नहीं बोलती हैं। मज़ीद मनाक़िब अपने मक़ाम में आएँगे। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

4 अप्रैल 70 ईस्वी में इस हदीष़ तक का'बा शरीफ़ मक्कतुल मुकर्रमा में बग़ौरो फ़िक्र मतने बुख़ारी शरीफ़ पारा दस को पढ़ा गया। अल्लाह पाक क़लम को लग़्ज़िश से बचाए और कलामे रसूलुल्लाह (ﷺ) को सहीह तौर पर समझने और उसका सहीह तर्जुमा लिखने की तौफ़ीक़ अ़ता करे और तशरीहात में भी अल्लाह पाक फ़हम व फ़रासत नसीब करे। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

2614. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया कि मुझे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरा ने ख़बर दी, कहा कि मैंने ज़ैद बिन वहब से सुना कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे एक रेशमी हुल्ला हदिया में दिया तो मैंने उसे पहन लिया। लेकिन जब गुस्से के आष़ार रूए मुबारक पर देखे तो उसे अपनी औरतों में फाड़कर तक़्सीम कर दिया। (दीगर मक़ाम : 5366, 5840)

٢٦١٤- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ وَهْبٍ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَهْدَى إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ حُلَّةَ سِيَرَاءَ، فَلَبِسْتُهَا، فَرَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ، فَشَقَقْتُهَا بَيْنَ نِسَائِي)). [طرفاه في: ٥٣٦٦، ٥٨٤٠].

अबू सालेह की रिवायत में यूँ है फ़ातिमों को बांट दिया, या'नी फ़ातिमा ज़ुहरा (रज़ि.) और फ़ातिमा बिन्ते असद को जो हज़रत अ़ली (रज़ि.) की वालिदा थीं और फ़ातिमा बिन्ते हम्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब को और फ़ातिमा बिन्ते शैबा या बिन्ते उ़त्बा बिन रबीआ़ को जो अ़क़ील बिन अबी तालिब की बीवी थीं।

बाब 28 : मुश्रिकीन का हदिया क़ुबूल कर लेना

٢٨- بَابُ قَبُولِ الْهَدِيَّةِ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत सारा के साथ हिजरत की तो वो एक ऐसे शहर में पहुँचे जहाँ एक काफ़िर बादशाह या (ये कहा कि) ज़ालिम बादशाह था। इस बादशाह ने कहा कि उन्हें (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को) आजर (हाजरा अ़लैहिस्सलाम) को दे दो। नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में (ख़ैबर के यहूदियों की

وَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((هَاجَرَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ بِسَارَةَ، فَدَخَلَ قَرْيَةً فِيهَا مَلِكٌ أَوْ جَبَّارٌ فَقَالَ: أَعْطُوهَا آجَرَ)). وَأُهْدِيَتْ لِلنَّبِيِّ ﷺ شَاةٌ فِيهَا سُمٌّ. وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ: ((أَهْدَى مَلِكُ أَيْلَةَ لِلنَّبِيِّ

ﷺ بَغْلَةً بَيْضَاءَ، وَكَسَاهُ بُرْدًا، وَكَتَبَ لَهُ بِبَحْرِهِمْ)).

तरफ़ से दुश्मनी में) हदिया के तौर पर बकरी का ऐसा गोश्त पेश किया गया था जिसमें ज़हर था। अबू हुमैद ने बयान किया ऐला के हाकिम ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में सफ़ेद ख़च्चर और चादर हदिया के तौर पर भेजी थी और नबी करीम (ﷺ) ने उसे लिखवाया कि वो अपनी क़ौम के हाकिम की हैषियत से बाक़ी रहे। (क्योंकि उसने जिज़्या देना मंज़ूर कर लिया था)

तश्रीह : दूमतुल जुन्दल एक शहर का नाम था तबूक के क़रीब। वहाँ का बादशाह अकीदर बिन अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल जिन्न नसरानी था। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) उसे गिरफ़्तार करके लाए। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे आज़ाद फ़र्मा दिया क्यों कि वो जिज़्या देने पर राज़ी हो गया था। उसने हदिया मज़्कूर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमदे अक़्दस में पेश किया था।

कहते हैं हज़रत सारा बहुत ख़ूबसूरत थीं। उनके हुस्नो—जमाल की ता'रीफ़ सुनकर बादशाह ने उनको बुला भेजा। कुछ लोगों ने उसका नाम अ़म्र बिन इम्रुल क़ैस बतलाया है। हज़रत हाजरा उसकी बेटी थी। बादशाह ने हज़रत सारा (रज़ि.) की करामत देखकर चाहा कि उसकी बेटी उस मुबारक ख़ानदान में दाख़िल होकर बरकतों से हिस्सा पाए। हज़रत हाजरा को लौण्डी बांदी कहना ग़लत है जिसका तफ़्सीली बयान पीछे गुज़र चुका है।

ऐला नामी मक़ाम मज़्कूरा मक्का से मिस्र जाते हुए समुन्दर के किनारे एक बन्दरगाह थी वहाँ के ईसाई हाकिम का नाम यूहन्ना बिन अवबह था। इन रिवायात के नक़ल करने से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्सद ये षाबित करना है कि मुश्रिकीन व कुफ़्फ़ार के हदियों को कुबूल किया जा सकता है जैसा कि इन रिवायात से ज़ाहिर है।

٢٦١٥ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُهْدِيَ لِلنَّبِيِّ ﷺ جُبَّةُ سُنْدُسٍ، وَكَانَ يَنْهَى عَنِ الْحَرِيْرِ، فَعَجِبَ النَّاسُ مِنْهَا، فَقَالَ ﷺ: ((وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَمَنَادِيْلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الْجَنَّةِ أَحْسَنُ مِنْ هَذَا)). [طرفاه في: ٢٦١٦، ٣٢٤٨].

2615. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे शैबान ने बयान किया क़तादा से और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में दबीज़ किस्म के रेशम का एक जुब्बा हदिया के तौर पर पेश किया गया। आप उसके इस्ते'माल से (मर्दों को) मना फ़र्माते थे। सहाबा को बड़ी हैरत हुई (कि कितना उम्दह रेशम है) आप (ﷺ) ने फ़र्माया (तुम्हें उस पर हैरत है) उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है, जन्नत में सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) के रूमाल इससे भी ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं। (दीगर मक़ाम : 2616, 3248)

٢٦١٦ - وَقَالَ سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ: ((إِنَّ أُكَيْدِرَ دُوْمَةَ أَهْدَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ)). [راجع: ٢٦١٥]

2616. सईद ने बयान किया क़तादा से और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि दूमा (तबूक के क़रीब एक मक़ाम) के अकीदर (नसरानी) ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हदिया भेजा। (राजेअ़ : 2615)

जिस का ज़िक्र इस हदीष में मौजूद है।

٢٦١٧ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ

2617. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन हारिष ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे हिशाम बिन ज़ैद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक यहूदी औरत नबी करीम(ﷺ) की ख़िदमत में ज़हर मिला

بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ يَهُودِيَّةً أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ بِشَاةٍ مَسْمُومَةٍ فَأَكَلَ مِنْهَا فَجِيءَ بِهَا، فَقِيْلَ: أَلاَ نَقْتُلُهَا؟ قَالَ: ((لاَ)). فَمَا زِلْتُ أَعْرِفُهَا فِي لَهَوَاتِ رَسُولِ اللهِ ﷺ)).

हुआ बकरी का गोश्त लाई, आप (ﷺ) ने उसमें से कुछ खाया (लेकिन फ़ौरन ही फ़र्माया कि इसमें ज़हर पड़ा हुआ है) फिर जब उसे लाया गया (और उसने ज़हर डालने का इक़रार भी कर लिया) तो कहा गया कि क्यूँ न इसे क़त्ल कर दिया जाए। लेकिन आपने फ़र्माया कि नहीं। इस ज़हर का अष़र मैंने हमेशा नबी करीम (ﷺ) के तालू में महसूस किया।

तश्रीह : अष़र से मुराद उस ज़हर का रंग है या और कोई तग़य्युर जो आप (ﷺ) के तालुए मुबारक में हुआ होगा। कहते हैं बशीरर बिन बरा एक स़हाबी ने भी ज़रा सा गोश्त उसमें से खा लिया था वो मर गए। जब तक वो मरे न थे आपने स़ह़ाबा को उस औ़रत के क़त्ल से मना फ़र्माया। चूँकि आप अपनी ज़ात के लिये किसी से बदला लेना नहीं चाहते थे। ये भी आपकी नुबुव्वत की एक बड़ी दलील है। जब बशर (रज़ि.) मर गए तो उनके क़िसास़ में वो औरत भी मारी गई। मा'लूम हुआ कि ज़हर ख़ुरानी से अगर कोई हलाक हो जाए तो ज़हर खिलाने वाले को क़िसास़न क़त्ल कर सकते हैं और ह़न्फ़िया ने इसमें ख़िलाफ़ किया है। दूसरी ह़दीष़ में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने वफ़ात के क़रीब इर्शाद फ़र्माया कि ऐ आइशा (रज़ि.)! जो खाना मैंने ख़ैबर में खा लिया था, या'नी यही ज़हर आलूद गोश्त, उसने अब अष़र करना शुरू कर दिया और मेरी शाहे रग काट दी। इस त़रह़ अल्लाह तआ़ला ने आपको शहादत भी अ़ता फ़र्माई (वह़ीदी)

इस वाक़िया से उन ग़ाली मुब्तदेईन की भी तर्दीद होती है जो आँह़ज़रत (ﷺ) को मुत्लक़न आ़लिमुल ग़ैब कहते हैं। ह़ालाँकि क़ुर्आन मजीद में साफ़ अल्लाह ने आपसे ऐलान कराया है, **लौ कुन्तु आलमुल्ग़ैब लस्तक्षर्तु मिनल्ख़ैरि वमा मस्सनिस्सूअ** (अल् अअ़राफ़ : 188) या'नी मैं ग़ैब जानने वाला होता तो बहुत सी भलाइयाँ जमा कर लेता और कभी कोई तकलीफ़ मुझे नहीं पहुँच सकती। पस जो लोग अ़क़ीदा रखते हैं वो सरासर गुमराही में गिरफ़्तार हैं। अल्लाह उनको नेक समझ अ़ता करे। आमीन।

٢٦١٨- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثَلاَثِيْنَ وَمِائَةً، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَلْ مَعَ أَحَدٍ مِنْكُمْ طَعَامٌ؟)) فَإِذَا مَعَ رَجُلٍ صَاعٌ مِنْ طَعَامٍ أَوْ نَحْوُهُ، فَعُجِنَ، ثُمَّ جَاءَ رَجُلٌ مُشْرِكٌ مُشْعَانٌ طَوِيْلٌ بِغَنَمٍ يَسُوقُهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَيْعًا أَمْ عَطِيَّةً؟ أَوْ قَالَ: أَمْ هِبَةً؟)) قَالَ: لاَ، بَلْ بَيْعٌ. فَاشْتَرَى مِنْهُ شَاةً، فَصُنِعَتْ، وَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِسَوَادِ الْبَطْنِ أَنْ يُشْوَى. وَايْمُ اللهِ مَا

2618. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे अबू उ़ष्मान ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि हम एक सौ तीस आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (सफ़र में) थे। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया क्या किसी के साथ खाने की भी कोई चीज़ है? एक स़हाबी के साथ तक़रीबन एक साअ़ खाना (आटा) था। वो आटा गूँधा गया। फिर एक लम्बा तड़ंगा मुश्रिक परेशान हाल बकरियाँ हाँकता हुआ आया। तो नबी अकरम (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि ये बेचने के लिये हैं। या किसी का अ़तिया है या आपने (अ़तिया की बजाय) हिबा फ़र्माया। उसने कहा कि नहीं बेचने के लिये हैं। आपने उससे एक बकरी ख़रीदी फिर वो ज़िब्ह की गई। फिर नबी करीम(ﷺ) ने उसकी कलेजी भूनने के लिये कहा। क़सम अल्लाह की एक सौ तीस अस्ह़ाब में से हर एक को उस कलेजी में से काट के दिया। जो मौजूद थे उन्हें तो आपने फ़ौरन ही दे दिया और जो उस वक़्त मौजूद नहीं थे उनका हिस्सा महफ़ूज़ रख लिया। फिर

الثَّلاَثِيْنَ وَالْمِائَةِ إِلاَّ وَقَدْ حَزَّ النَّبِيُّ ﷺ لَهُ حُزَّةً مِنْ سَوَادِ بَطْنِهَا، إِنْ كَانَ شَاهِدًا أَعْطَاهَا إِيَّاهُ، وَإِنْ كَانَ غَائِبًا خَبَأَ لَهُ، فَجَعَلَ مِنْهَا قَصْعَتَيْنِ، فَأَكَلُوا أَجْمَعُونَ وَشَبِعْنَا، فَفَضَلَتِ الْقَصْعَتَانِ فَحَمَلْنَاهُ عَلَى الْبَعِيْرِ. أَوْ كَمَا قَالَ)). [راجع: ٢٢١٦]

बकरी के गोश्त को दो बड़ी क़ाबू में रखा गया और सबने ख़ूब सैर होकर (भरपेट) खाया। जो कुछ क़ाबू में बच गया था उसे ऊँट पर रखकर हम वापस लाए। अव कमा क़ाल.

(राजेअ : 2216)

इससे भी किसी काफ़िर मुश्रिक का हदिया क़ुबूल करना या उससे कोई चीज़ ख़रीदना जाइज़ षाबित हुआ और आँहज़रत (ﷺ) का एक अ़ज़ीम मोअजिज़ा भी षाबित हुआ कि आपकी दुआ से वो क़लील (थोड़ा सा) गोश्त सबके लिये काफ़ी हो गया।

٢٩- بَابُ الْهَدِيَّةِ لِلْمُشْرِكِيْنَ

बाब 29 : मुश्रिकों को हदिया देना

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿لاَ يَنْهَاكُمُ اللهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ﴾ [الممتحنه : ٨]

और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि, जो लोग तुमसे दीन के बारे में लड़े नहीं और न तुम्हें तुम्हारे घरों से उन्होंने निकाला है तो अल्लाह तआ़ला उनके साथ एहसान करने और उनके मामले में इंसाफ़ करने से तुम्हें नहीं रोकता।

इस आयत से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि मुश्रिक और काफ़िरों से एहसान और सुलूक करना मना नहीं है।

٢٦١٩- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِيْنَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((رَأَى عُمَرُ حُلَّةً عَلَى رَجُلٍ تُبَاعُ، فَقَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: ابْتَعْ هَذِهِ الْحُلَّةَ تَلْبَسْهَا يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَإِذَا جَاءَكَ الْوَفْدُ، فَقَالَ: ((إِنَّمَا يَلْبَسُ هَذِهِ مَنْ لاَ خَلاَقَ لَهُ فِي الآخِرَةِ))، فَأُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْهَا بِحُلَلٍ، فَأَرْسَلَ إِلَى عُمَرَ مِنْهَا بِحُلَّةٍ، فَقَالَ عُمَرُ: كَيْفَ أَلْبَسُهَا وَقَدْ قُلْتَ فِيْهَا مَا قُلْتَ؟ قَالَ: ((إِنِّي لَمْ أَكْسُكَهَا لِتَلْبَسَهَا، تَبِيْعُهَا أَوْ تَكْسُوهَا)). فَأَرْسَلَ بِهَا عُمَرُ إِلَى أَخٍ لَهُ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ قَبْلَ أَنْ

2619. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि उ़मर (रज़ि.) ने देखा कि एक शख़्स के यहाँ एक रेशमी जोड़ा बिक रहा है। तो आपने नबी करीम (ﷺ) से कहा कि आप ये जोड़ा ख़रीद लीजिए ताकि जुम्आ के दिन और जब कोई वफ़्द आए तो आप उसे पहना करें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसे तो वो लोग पहनते हैं जिनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होता। फिर नबी करीम (ﷺ) के पास बहुत से रेशमी जोड़े आए और आपने उनमें से एक जोड़ा उ़मर (रज़ि.) को भेजा। उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैं इसे किस तरह पहन सकता हूँ जबकि आप ख़ुद ही इसके बारे में जो कुछ इर्शाद फ़र्माना था, फ़र्मा चुके हैं। आपने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें पहनने के लिये नहीं दिया बल्कि इसलिये दिया कि तुम इसे बेच दो या किसी (ग़ैर–मुस्लिम) को पहना दो। चुनाँचे उ़मर (रज़ि.) ने उसे मक्के में अपने एक भाई के घर भेज दिया जो अभी

इस्लाम नहीं लाया था। (राजेअ : 886)

يُسْلِمْ)). [راجع: ٨٨٦]

मा'लूम हुआ कि मुश्रिकीन को हदिया दिया भी जा सकता है। इस्लाम ने दुनियावी मामलात में अपनों और ग़ैरों के साथ हमेशा रवादारी व इश्तिराके बाहमी का षुबूत दिया है। इस्लाम की चौदह सौ साला तारीख़ से अयाँ (रोशन) है कि मुसलमान जिस मुल्क में गए, तमद्दुन और मुआशरत में वहाँ की क़ौमों में ख़लत़ मलत़ हो गए। जिस ज़मीन पर जाकर बसे उसको गुल व गुलज़ार बना दिया। काश! मुआनिदीने इस्लाम उन हक़ाइक़ पर ग़ौर करें।

2620. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया हिशाम से, उनसे उनके बाप ने और उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में मेरी वालिदा (क़ुतैला बिन्ते अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा) जो मुश्रिका थीं, मेरे यहाँ आईं। मैंने आप (ﷺ) से पूछा, मैंने ये भी कहा कि वो (मुझसे मुलाक़ात की) बहुत ख़्वाहिशमन्द हैं, तो क्या मैं अपनी वालिद के साथ स़िलारहमी कर सकती हूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ अपनी वालिदा के साथ स़िलारहमी कर। (दीगर मक़ाम : 3183, 5978, 5979)

٢٦٢٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَدِمَتْ عَلَيَّ أُمِّي وَهِيَ مُشْرِكَةٌ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَاسْتَفْتَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ قُلْتُ: إِنَّ أُمِّي قَدِمَتْ وَهِيَ رَاغِبَةٌ، أَفَأَصِلُ أُمِّي؟ قَالَ: ((نَعَمْ، صِلِي أُمَّكِ)).
[أطرافه في : ٣١٨٣، ٥٩٧٨، ٥٩٧٩].

उसका बेटा ह़ारिष़ बिन मुदरिका भी साथ आया था। मगर उसका नाम स़ह़ाबा में नहीं है। शायद वो कुफ़्र ही पर मरा। ये क़ुतैला बिन्ते अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की बीवी थी। ह़जरत अस्मा (रज़ि.) उसी के बत़न से पैदा हुई थी। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने जाहिलियत के ज़माने में त़लाक़ दे दी थी और वो अब भी ग़ैर मुस्लिमा थी जो मदीना में अपनी बेटी अस्मा (रज़ि.) को देखने आई और मेवे और घी वग़ैरह के तोह़फ़े साथ लाईं। ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) ने उनके बारे में रसूले करीम (ﷺ) से दरयाफ़्त किया। जिस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें अपनी वालिदा के साथ स़िलारह़मी करने और अह़सन बर्ताव का हुक्म दिया था। इससे इस्लाम की उस रविश पर रोशनी पड़ती है जो वो ग़ैर–मुस्लिम मर्दों व औरतों के साथ अच्छा बर्ताव पेश करता है।

बाब 30 : किसी के लिये ह़लाल नहीं कि अपना दिया हुआ हदिया या स़दक़ा वापस ले ले

٣٠- بَابُ لاَ يَحِلُّ لأَحَدٍ أَنْ يَرْجِعَ فِي هِبَتِهِ وَصَدَقَتِهِ

2621. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम और शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे क़तादा ने बयान किया सईद बिन मुसय्यिब से और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़माया, अपना दिया हुआ हदिया वापस लेने वाला ऐसा है जैसे अपनी की हुई क़ै का चाटने वाला। (राजेअ : 2589)

٢٦٢١- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ وَشُعْبَةُ قَالاَ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْعَائِدُ فِي هِبَتِهِ كَالْعَائِدِ فِي قَيْئِهِ)).
[راجع: ٢٥٨٩]

ज़ाहिरे ह़दीष़ से यही निकलता है कि हिबा और स़दक़ा में रुजूअ ह़राम है लेकिन दूसरी ह़दीष़ की रू से वो हिबा मुस्तष़्ना (अलग) है जो बाप अपनी औलाद को करे, उसमें रुजूअ करना जाइज़ है। इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम मालिक (रह.) का यही फ़त्वा है और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने रुजूअ को मकरूह कहा है ह़राम नहीं।

2622. हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब ने बयान किया इक्रिमा से और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हम मुसलमानों को बुरी मिष़ाल न इख़्तियार करनी चाहिये। उस शख़्स की सी जो अपना दिया हुआ हदिया वापस ले ले, वो उस कुत्ते की तरह है जो अपनी क़ै ख़ुद चाटता है। (राजेअ़ : 2589)

٢٦٢٢- وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَيْسَ لَنَا مَثَلُ السَّوْءِ، الَّذِيْ يَعُودُ فِي هِبَتِهِ كَالْكَلْبِ يَرْجِعُ فِي قَيْئِهِ)). [راجع: ٢٥٨٩]

2623. हमसे यह्या बिन कज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया ज़ैद बिन असलम से, उनसे उनके बाप ने कि उन्होंने उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना। आपने फ़र्माया कि मैंने एक घोड़ा अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिये (एक शख़्स को) दिया। जिसे मैंने वो घोड़ा दिया था। उसने उसे दुबला कर दिया। इसलिये मेरा इरादा हुआ कि उससे अपना वो घोड़ा ख़रीद लूँ। मेरा ये भी ख़्याल था कि वो शख़्स वो घोड़ा सस्ते दामों पर बेच देगा। लेकिन जब मैंने इसके बारे में नबी करीम (ﷺ) से पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसे न ख़रीदो, ख़्वाह तुम्हें वो एक ही दिरहम में क्यूँ न दे क्योंकि अपने सदक़े को वापस लेने वाला शख़्स उस कुत्ते की तरह है जो अपनी ही क़ै ख़ुद चाटता है। (राजेअ़ : 1490)

٢٦٢٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ، فَأَضَاعَهُ الَّذِي كَانَ عِنْدَهُ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَشْتَرِيَهُ مِنْهُ، وَظَنَنْتُ أَنَّهُ بَائِعُهُ بِرُخْصٍ، فَسَأَلْتُ عَنْ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((لاَ تَشْتَرِهِ وَإِنْ أَعْطَاكَهُ بِدِرْهَمٍ وَاحِدٍ، فَإِنَّ الْعَائِدَ فِي صَدَقَتِهِ كَالْكَلْبِ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ)). [راجع: ١٤٩٠]

इस घोड़े का नाम वरद था, ये तमीम दारी (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) को तोहफ़े में दिया था और आँहज़रत (ﷺ) ने उसे हज़रत उ़मर (रज़ि.) को बख़्श दिया।

बाब 31 :

٣١ - بَابٌ

ये बाब गोया पहले बाब की फ़स्ल है और इस बाब में जो हदीष़ बयान की उसकी मुनासबत अगले बाब से ये है कि सुहैब के बेटों ने जब आँहज़रत (ﷺ) का हिबा बयान किया, तो मरवान ने ये न पूछा कि आप (ﷺ) ने रुजूअ़ किया था या नहीं। मा'लूम हुआ कि हिबा में रुजूअ़ नहीं।

2624. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैदुल्लाह बिन अबी मुलैका ने ख़बर दी कि इब्ने जिदआन के ग़ुलाम बनू सुहैब ने दा'वा किया कि दो मकान और एक हुज्रा नबी करीम (ﷺ) ने सुहैब (रज़ि.) को इनायत फ़र्माया था। (जो विराष़त में उन्हें मिलना चाहिये) ख़लीफ़ा मरवान बिन हकम ने पूछा कि तुम्हारे हक़ में उस दा'वा

٢٦٢٤- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ: ((أَنَّ بَنِي صُهَيْبٍ مَوْلَى بَنِي جُدْعَانَ ادَّعَوْا بَيْتَيْنِ وَحُجْرَةً أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَعْطَى ذَلِكَ صُهَيْبًا،

فَقَالَ مَرْوَانُ مَنْ يَشْهَدُ لَكُمَا عَلَى ذَلِكَ؟ قَالُوا: ابْنُ عُمَرَ. فَدَعَاهُ، فَشَهِدَ لأَعْطَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ صُهَيْبًا بَيْتَيْنِ وَحُجْرَةً، فَقَضَى مَرْوَانُ بِشَهَادَتِهِ لَهُمْ)).

पर गवाह कौन है? उन्होंने कहा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.)। मरवान ने आपको बुलाया तो आपने गवाही दी कि वो वाक़ई रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुहैब (रज़ि.) को दो मकान और एक हुज्रा दिया था। मरवान ने आपकी गवाही पर फ़ैसला उनके हक़ में कर दिया।

सिर्फ़ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की शहादत पर भले ही हाकिम को इत्मीनान हो सकता था। मगर शरअ़न एक आदमी की शहादत काफ़ी नहीं है। चाहे वो कितना ही मो'तबर हो। मरवान ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की शहादत ली होगी और मुद्दईयों से क़सम, एक गवाह और एक मुद्दई की क़सम पर फ़ैसला करना जाइज़ है। अहले ह़दीष़ और शाफ़िई और अह़मद और अकष़र उ़लमा का यही क़ौल है, हन्फ़िया इसको जाइज़ नहीं मानते हैं।

बाब 32 : उ़म्रा और रुक़्बा के बारे में रिवायात

٣٢- بَابُ مَا قِيْلَ فِي الْعُمْرَى وَالرُّقْبَى

أَعْمَرْتُهُ الدَّارَ فَهِيَ عُمْرَى: جَعَلْتُهَا لَهُ. ﴿اسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا﴾ جَعَلَكُمْ عُمَّارًا.

(अगर किसी ने कहा कि) मैंने उ़म्रभर के लिये तुम्हें ये मकान दे दिया तो उसे उ़म्रा कहते हैं (मत़लब ये है कि उसकी उ़म्र भर के लिये) मकान मैंने उसकी मिल्कियत में दे दिया। (क़ुर्आनी लफ़्ज़ (इस्तअमरकुम फ़ीहा) का मफ़्हूम ये है कि उसने तुम्हें ज़मीन में बसाया।

٢٦٢٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَضَى النَّبِيُّ ﷺ بِالْعُمْرَى أَنَّهَا لِمَنْ وُهِبَتْ لَهُ)).

2625. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, उनसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उ़म्रा के बारे में फ़ैसला किया था कि वो उसका हो जाता है जिसे हिबा किया गया हो।

तश्रीह : उ़म्रा किसी शख़्स को मष़लन उ़म्र भर के लिये मकान देना। रुक़्बा ये है मष़लन किसी को एक मकान दे इस शर्त़ पर कि अगर देने वाला पहले मर जाए तो मकान उसका हो गया और अगर लेने वाला पहले मर जाए तो मकान फिर देने वाले का हो जाएगा। इसमें हर एक दूसरे की मौत को तकता रहता है। इसलिये इसका नाम रुक़्बा हुआ। ये दोनों अ़क़्द जाहिलियत के ज़माने में मुरव्वज (प्रचलित) थे। जुम्हूर उ़लमा के नज़दीक दोनों स़ह़ीह़ हैं और इमाम अबू ह़नीफ़ा ने रुक़्बा को मना रखा है और जुम्हूर उ़लमा के नज़दीक उ़म्रा लेने वाले का मिल्क हो जाता है और देने वाले की त़रफ़ नहीं लौटता। इमाम बुख़ारी (रह.) ने जो ह़दीष़ इस बाब में बयान की। उसमें सिर्फ़ उ़म्रा का ज़िक्र है रुक़्बा का नहीं। और शायद उन्होंने दोनों को एक समझा। (वह़ीदी)

ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **वल्उम्रा बिज़म्मिल्मुहमलति व सुकूनिल्मीमि मअल्कस्रि व हुकिय ज़म्मुल्मीमि मअ ज़म्मि अव्वलिही व हुकिय फत्हु अव्वलिही मअस्सुकूनि माख़ूज़ुम्मिनल्उम्रि वर्रक़्बा बिवज़्निहा मिनल्मुराक़बति लिअन्नहुम कानू यफ़्अलून ज़ालिक फिल्जाहिलिय्यति फयुतिर्रजुल अद्दार व यकूलु लहू आमर्तुक इय्याहा अय रबहतुहा लक मुद्दत उम्रिक फक़ील लहा उम्रा लिज़ालिक व कज़ा क़ील लहा रक़्बा लिअन्न कुल्लम्मिन्हुमा यर्क़बु मता यमुतुल्आखरु लितर्जिअ इलैहि व कज़ा वरष़तुहू फयक़ूमून मक़ामहू फी ज़ालिक हाज़ा अस्लुहा लुग़तन व अम्मा शर्अन फल्जुम्हूरू अला अन्नल्उम्रा इज़ा वक़अत कानत मालिकन लिल्अख़िज़ व ला तर्जिउ इलल्अव्वलि इल्ला अन सुर्रिह बिइश्तिराति ज़ालिक व ज़हबल्जुम्हूरू इला सिह्हतिल्उम्रा** (फ़त्हुल्बारी)

ख़ुलास़ा ये कि लफ़्ज़ उ़म्रा उ़म्र से माख़ूज़ है और रुक़्बा मुराक़बा से। इसलिये कि जाहिलियत में दस्तूर था कि कोई

आदमी बतौरे अतिया किसी को अपना घर इस शर्त पर दे देता है कि ये घर सिर्फ़ तेरी मुद्दते उम्र तक के लिये मैं तुझे बख़्शिश करता हूँ इसीलिये इसे उम्रा कहा गया और रुक़्बा इसलिये कि उनमें से हर एक–दूसरे की मौत का मुंतज़िर होता है कि कब वे मौहूबलहू इंतिक़ाल करे और कब घर वाहिब को वापस मिले। इसी तरह उसके वारिष़ मुंतज़िर रहते। ये लग़वी तौर पर है। शरअन कि जुम्हूर के नज़दीक कि उम्रा जब वाक़ेअ हो जाए तो वो लेने वाले की मिल्कियत बन जाता है और अव्वल की तरफ़ नहीं वापस हो सकता। मगर इस सूरत में कि देने वाला सराहत के साथ वापसी की शर्त लगा दे और जुम्हूर के नज़दीक उम्रा सहीह ष़ाबित हो जाता है।

2626. हमसे हफ़्स़ बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे नज़र बिन अनस ने बयान किया, उनसे बशीर बिन नहीक ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उम्रा जाइज़ है और अता ने कहा कि मुझसे जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह बयान किया।

٢٦٢٦- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي النَّضْرُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ بَشِيْرِ بْنِ نَهِيْكٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْعُمْرَى جَائِزَةٌ)). وَقَالَ عَطَاءٌ: حَدَّثَنِي جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ . نَحْوَهُ.

किसी को कोई चीज़ सिर्फ़ उसकी उम्र तक बख़्श देना इसी को उम्रा कहते हैं।

बाब 33 : जिसने किसी से घोड़ा आरियतन (उधार माँगकर) लिया

٣٣- بَابُ مَنِ اسْتَعَارَ مِنَ النَّاسِ الْفَرَسَ

2627. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, क़तादा से कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना। आपने बयान किया कि मदीने पर (दुश्मन के हमले का) डर था। इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने अबू तलहा (रज़ि.) से एक घोड़ा जिसका नाम मन्दूब था मुस्तआरन लिया, फिर आप (ﷺ) उस पर सवार हुए (सहाबा भी साथ थे) फिर जब वापस हुए तो फ़र्माया कि हमें तो कई ख़तरे की चीज़ नज़र न आई, अल्बत्ता ये घोड़ा हमने समुन्दर की तरह (तेज़ दौड़ता) पाया। (दीगर मक़ाम : 2820, 2853, 2857, 2866, 2867, 2908, 2968, 2969, 3040, 6033, 6212)

٢٦٢٧- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُوْلُ: كَانَ فَزَعٌ بِالْمَدِيْنَةِ، فَاسْتَعَارَ النَّبِيُّ ﷺ فَرَسًا مِنْ أَبِي طَلْحَةَ يُقَالُ لَهُ الْمَنْدُوْبُ فَرَكِبَهُ، فَلَمَّا رَجَعَ قَالَ: ((مَا رَأَيْنَا مِنْ شَيْءٍ، وَإِنْ وَجَدْنَاهُ لَبَحْرًا)).

[أطرافه في : ٢٨٢٠، ٢٨٥٧، ٢٨٥٣، ٢٨٦٦، ٢٨٦٧، ٢٩٠٨، ٢٩٦٨، ٢٩٦٩، ٣٠٤٠، ٦٠٣٣، ٦٢١٢].

तश्रीह : दरिया की तरह तेज़ और बेतकान जाता है। दूसरी रिवायत में है। आप नंगी पीठ पर सवार हुए आपके गले में तलवार पड़ी थी। आप अकेले उसी तरफ़ तशरीफ़ ले गए जिधर से मदीना वालों ने आवाज़ सुनी थी। सुब्हानल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) की शुजाअत इस वाक़िये से मा'लूम होती है कि अकेले तन्हा दुश्मन की ख़बर लेने को तशरीफ़ ले गए। सख़ावत ऐसी कि किसी मांगने वाले का सवाल रद्द न करते। शर्म और हया और मुरुव्वत ऐसी कि कुँवारी लड़की से भी ज़्यादा। इफ़्फ़त ऐसी कि कभी बदकारी के पास तक न फटके। हुस्न व जमाल ऐसा कि सारे अरब में कोई आपका नज़ीर न था। नफ़ासत और नज़ाफ़त ऐसी कि जिधर से निकल जाते, दरो–दीवार मुअत्तर हो जाते। हुस्ने ख़ल्क़ ऐसा कि दस बरस तक हज़रत अनस (रज़ि.) ख़िदमत में रहे कभी उनको झिड़का नहीं। अदल और इंसाफ़ ऐसा कि अपने सगे चचा की भी कोई रिआयत न की। फ़र्माया

कि अगर फ़ातिमा (रज़ि.) भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ कटवा दूँ, इबादत और रियाज़त ऐसी कि नमाज़ पढ़ते पढ़ते पाँव वरम कर गये (सूज गये)। बेत़मई ऐसी कि लाख रुपये आए, सब मस्जिदे नबवी में डलवा दिये और उसी वक़्त बंटवा दिये। स़ब्र व क़िनाअ़त ऐसी कि दो-दो महीने तक चूल्हा गरम न होता। जौ की सूखी रोटी और खजूर पर इक्तिफ़ा करते। कभी दो-दो तीन-तीन फ़ाक़े होते। नंगे बोरे पर लेटते, बदन पर निशान पड़ जाता था मगर अल्लाह के शुक्रगुज़ार और खुश व ख़ुर्रम रहते। ह़र्फ़े शिकायत ज़ुबान पर न लाते। क्या इन सब उमूर के बाद भी कोई अह़मक़ भी आपकी नुबुव्वत और पैग़म्बरी में शक कर सकता है? **स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व अ़ला आलिही व अस़्हाबिही व सल्लम।**

बाब 34 : शबे अ़रूसी में दुल्हन के लिये कोई चीज़ आरियतन लेना

٣٤- بَابُ الإِسْتِعَارَةِ لِلْعَرُوسِ عِنْدَ الْبِنَاءِ

2628. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ऐमन ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैं आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो आप क़त़र (यमन का एक दबीज़ खुरदुरा कपड़ा) की क़मीस़ क़ीमत पाँच दिरहम की पहने हुए थीं। आपने मुझसे) फ़र्माया। ज़रा नज़र उठा के मेरी इस लौण्डी को तो देख इसे घर में भी ये कपड़े पहनने से इंकार है। ह़ालाँकि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में मेरे पास उसी की एक क़मीस़ थी। जब कोई लड़की दुल्हन बनाई जाती तो मेरे यहाँ आदमी भेजकर वो क़मीस़ आरियतन मंगा लेती थी।

٢٦٢٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا قَالَ عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا وَعَلَيْهَا دِرْعُ قِطْرٍ ثَمَنُ خَمْسَةِ دَرَاهِمَ، فَقَالَتْ : ارْفَعْ بَصَرَكَ إِلَى جَارِيَتِي انْظُرْ إِلَيْهَا فَإِنَّهَا تُزْهَى أَنْ تَلْبَسَهُ فِي الْبَيْتِ. وَقَدْ كَانَ لِي مِنْهُنَّ دِرْعٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ ، فَمَا كَانَتِ امْرَأَةٌ تُقَيَّنُ بِالْمَدِينَةِ إِلاَّ أَرْسَلَتْ إِلَيَّ تَسْتَعِيْرُهُ)).

ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ये बताना चाहती हैं कि अब हमारे घरों में जिस त़रह़ के कपड़े पहनने से हमारी बान्दियों (दासियों) को इंकार है रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में हमारे ऐसे कपड़े लोग शादियों में इस्ते'माल के लिये आ़रियतन ले जाया करते थे। इससे कपड़ों को आ़रियतन ले जाना स़ाबित हुआ।

बाब 35 : तोह़फ़ा मनीह़ा की फ़ज़ीलत के बारे में

٣٥- بَابُ فَضْلِ الْمَنِيحَةِ

2629. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या ही उ़म्दा है हदिया उस दूध देने वाली ऊँटनी का जिसने अभी ह़ाल ही में बच्चा जना हो और दूध देने वाली बकरी का जो सुबह़ व शाम अपने दूध से बर्तन भर देती है। हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ और इस्माईल ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया कि (दूध देने वाली ऊँटनी का)

٢٦٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((نِعْمَ الْمَنِيحَةُ اللِّقْحَةُ الصَّفِيُّ منحة، وَالشَّاةُ الصَّفِيُّ تَغْدُو بِإِنَاءٍ وَتَرُوحُ بِإِنَاءٍ)). حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ وَإِسْمَاعِيلُ عَنْ مَالِكٍ قَالَ: ((نِعْمَ

सदक़ा क्या ही उम्दा है। (दीगर मक़ाम : 5608)

الصَّدَقَةُ .)). [طرفه في: ٥٦٠٨].

तश्रीह : मनीहा अरबों की इस्तिलाह (परिभाषा) में दूध देने वाली ऊँटनी या किसी भी ऐसे जानवरों को कहते थे जो किसी दूसरे को कोई तोहफ़ा के तौर पर दूध पीने के वास्ते दे दे।

मनीहा और सदक़ा में फ़र्क़ है। मनीहा हुस्ने मुआमलात और सिलारहमी के बाब से ता'ल्लुक़ रखता है और सदक़ा का मफ़्हूम बहुत आम है। हर मीठी बात को भी सदक़ा कहा गया है और हर मुनासिब और अच्छे तर्ज़े अमल को भी। इस लिहाज़ से मनीहा और सदक़ा में उमूम ख़ुसूस मुत्लक़ का फ़र्क़ है। हर मनीहा सदक़ा भी है मगर हर सदक़ा मनीहा नहीं है। फ़फ़हुम

अल्मुहद्दिसुल कबीर हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी मरहूम फ़र्माते हैं, **क़ाल फिल्क़ामूस मिन्हतुन कमन्इही व जर्बिही आताहू वल्इस्मुल्मिन्हतु बिल्कस्रि व मिन्हतुन्नाक़ति जुइल लहू वब्रूहा लब्नुहा व वलदुहा व हियल्मिन्हतु वल्मनीहतु इन्तिहा व कालल्हाफ़िज़ु फिल्फत्हि अल्मनीहतु बिन्नूनि वल्मुहमलति वज़्नु अज़ीमतिन हिय फिल्अस्लि अल्अतिय्यतु क़ाल अबू उबैदत अल्मनीहतु इन्दल्अरबि अला वज्हैनि अहदुहुमा अंय्युअतियर्रजुलु साहिबहू सिलतन फतकूनु लहू वल्आखरू अंय्युअतियहू नाक़तन औ शातन यन्तफिउ बिहल्बिहा व वब्रिहा ज़मनन थुम्म यरूद्दुहा व क़ालल्कज़्ज़ाज़ क़ील ला तकूनुल्मनीहतु इल्ला नाक़तन औ शातन वल्अव्वलु आरफु इन्तिहा** (तोहफ़तुल अहवज़ी जिल्द 3 पेज नं. 133)

ख़ुलासा ये कि लफ़्ज़ मन्हा और मनीहा असल में अतिया बख़्शिश पर बोला जाता है। अबू उबैदा ने कहा कि मनीहा अरब के नज़दीक दो तरीक़ पर है। अव्वल तो ये कि कोई अपने साथी को बतौर सिलारहमी के बख़्श दे, वो उसका हो जाएगा। दूसरे ये कि कोई किसी को दो ऊँटनी या बकरी इस शर्त पर दे कि वो उसके दूध वग़ैरह से फ़ायदा उठाए और एक अर्से के बाद उसे वापस कर दे। क़ज़्ज़ाज़ ने कहा कि मनीहा सिर्फ़ ऊँटनी या बकरी के अतिये पर बोला जाता है। मगर अव्वल मा'नी ही ज़्यादा मशहूर व मअरूफ़ हैं)।

2630. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने वहब ने ख़बर दी यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, वो अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि जब मुहाजिरीन मक्का से मदीना आए तो उनके साथ कोई भी सामान न था। अंसार ज़मीन और जायदाद वाले थे। अंसार ने मुहाजिरीन से ये मामला किया कि वो अपने बाग़ात में से उन्हें हर साल फल दिया करेंगे और उसके बदले मुहाजिरीन उनके बाग़ात में काम किया करें। हज़रत अनस (रज़ि.) की वालिदा उम्मे सुलैम जो अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा (रज़ि.) की भी वालिदा थीं, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को खजूर का एक बाग़ हदिया दे दिया था। लेकिन आपने वो बाग़ अपनी लौण्डी उम्मे ऐमन (रज़ि.) जो उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) की वालिदा थीं, इनायत फ़र्मा दिया। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) जब ख़ैबर के यहूदियों की जंग से फ़ारिग़ हुए और मदीना तशरीफ़ लाए तो मुहाजिरीन ने अंसार को उनके तहाइफ़ वापस कर दिये जो उन्होंने फलों की सूरत में दे रखे थे। आँहज़रत (ﷺ) ने अनस

٢٦٣٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا قَدِمَ الْمُهَاجِرُونَ الْمَدِينَةَ مِنْ مَكَّةَ وَلَيْسَ بِأَيْدِيهِمْ يَعْنِي شَيْئًا، وَكَانَتِ الأَنْصَارُ أَهْلَ الأَرْضِ وَالْعَقَارِ، فَقَاسَمَهُمُ الأَنْصَارُ عَلَى أَنْ يُعْطُوهُمْ ثِمَارَ أَمْوَالِهِمْ كُلَّ عَامٍ وَيَكْفُوهُمُ الْعَمَلَ وَالْمَؤُونَةَ. وَكَانَتْ أُمُّهُ أُمُّ أَنَسٍ أُمُّ سُلَيْمٍ كَانَتْ أُمَّ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، فَكَانَتْ أَعْطَتْ أُمُّ أَنَسٍ رَسُولَ اللهِ ﷺ عِذَاقًا، فَأَعْطَاهُنَّ النَّبِيُّ ﷺ أُمَّ أَيْمَنَ مَوْلاَتَهُ أُمَّ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ)). قَالَ ابْنُ شِهَابٍ فَأَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا فَرَغَ مِنْ قِتَالِ

(रज़ि.) की वालिदा का बाग़ भी वापस कर दिया और उम्मे ऐमन को उसके बजाय अपने बाग़ में से (कुछ पेड़) इनायत फ़र्मा दिये। अहमद बिन शबीब ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें यूनुस ने इसी तरह अल्बत्ता (अपनी रिवायत में बजाय मकानहुन्ना मन हाइततिहि के) मकानहुन्ना मन ख़ालिसिही बयान किया।

(दीगर मक़ाम : 3428, 4030, 3120)

أَهْلِ خَيْبَرَ فَانْصَرَفَ إِلَى الْمَدِيْنَةِ رَدَّ الْمُهَاجِرُونَ إِلَى الأَنْصَارِ مَنَائِحَهُمْ –الَّتِي كَانُوا مَنَحُوهُمْ– مِنْ ثِمَارِهِمْ. فَرَدَّ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى أُمِّهِ عِذَاقَهَا، وَأَعْطَى رَسُولُ اللهِ ﷺ أُمَّ أَيْمَنَ مَكَانَهُنَّ مِنْ حَائِطِهِ)). وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ شَبِيْبٍ أَخْبَرَنَا أَبِي عَنْ يُونُسَ بِهَذَا وَقَالَ : ((مَكَانَهُنَّ مِنْ خَالِصِهِ)).

[أطرافه في: ٣١٢٨، ٤٠٣٠، ٣١٢٠].

तश्रीह : या'नी बजाय **मिन हाइतिही** के इस रिवायत में **मिन ख़ालिसिही** है। इमाम मुस्लिम (रह.) की रिवायत में यूँ है कि एक शख़्स अपनी ज़मीन में से चन्द खजूर के पेड़ आँहज़रत (ﷺ) को दिया करता था। जब बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर की जायदादें आपको मिलीं तो आपने उस शख़्स के पेड़ फेर दिये। अनस (रज़ि.) ने कहा मेरे अज़ीज़ों ने मुझसे कहा तू आँहज़रत (ﷺ) के पास जा और जो पेड़ हमने आँहज़रत (ﷺ) को दिये थे वो सबके सब या उनमें से कुछ वापस मांग। आँहज़रत (ﷺ) ने वो पेड़ उम्मे ऐमन अपनी आया को दे दिये थे। मैं जब आप (ﷺ) के पास आया तो आपने वो पेड़ मुझको दे दिये। उम्मे ऐमन आई और मेरे गले पड़ गईं, कहने लगीं वो पेड़ तो मैं तुझको कभी नहीं दूँगी। आँहज़रत (ﷺ) उनको समझाने लगे। उम्मे ऐमन तू उनके बदले इतने इतने पेड़ ले ले। वो कहती रहीं मैं हर्गिज़ नहीं लूँगी क़सम उस अल्लाह की जिसके सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं। यहाँ तक कि आपने दस गुने पेड़ उनके बदल देना क़ुबूल किये। (वहीदी)

2631. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया हस्सान बिन अतिया से, उनसे अबू कब्शा सलूली ने और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना। आप बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, चालीस ख़स्लतें जिनमें सबसे आला व अरफ़आ दूध देने वाली बकरी का हदिया करना है, ऐसी हैं कि जो शख़्स उनमें से एक ख़स्लत पर भी आमिल होगा षवाब की निय्यत से और अल्लाह के वादे को सच्चा समझते हुए तो अल्लाह तआला उसकी वजह से उसे जन्नत में दाख़िल करेगा। हस्सान ने कहा कि दूध देने वाली बकरी के हदिये को छोड़कर हमने सलाम का जवाब देना छींकने वाले का जवाब देना और तकलीफ़ देने वाली चीज़ों को रास्ते से हटा देने वग़ैरह का शुमार किया, तो सब पन्द्रह ख़स्लतें भी हम शुमार न कर सके।

٢٦٣١– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عِيْسَى بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ عَنْ حَسَّانَ بْنِ عَطِيَّةَ عَنْ أَبِي كَبْشَةَ السَّلُولِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : ((أَرْبَعُونَ خَصْلَةً – أَعْلاَهُنَّ مَنِيْحَةُ الْعَنْزِ – مَا مِنْ عَامِلٍ يَعْمَلُ بِخَصْلَةٍ مِنْهَا رَجَاءَ ثَوَابِهَا وَتَصْدِيْقَ مَوْعُودِهَا إِلاَّ أَدْخَلَهُ اللهُ بِهَا الْجَنَّةَ)). قَالَ حَسَّانُ: فَعَدَدْنَا مَا دُونَ مَنِيْحَةِ الْعَنْزِ – مَنْ رَدِّ السَّلاَمِ، وَتَشْمِيْتِ الْعَاطِسِ، وَإِمَاطَةِ الأَذَى عَنِ الطَّرِيْقِ وَنَحْوِهِ – فَمَا اسْتَطَعْنَا أَنْ نَبْلُغَ خَمْسَ

عَشْرَةَ خَصْلَةً.

आँहज़रत (ﷺ) ने इन ख़सलतों को किसी मस्लिहत से मुब्हम रखा। शायद ये ग़र्ज़ हो कि उनके सिवा और दूसरी नेक ख़सलतों में लोग सुस्ती न करने लगें। मुतर्जिम कहता है कि ऐसी उम्दा ख़सलतें जिन पर जन्नत का वा'दा किया गया है। मुतफ़र्रिक़ अहादीष़ में चालीस बल्कि ज़्यादा भी मज़्कूर मौजूद हैं। ये अम्र दीगर है कि हज़रत हस्सान बिन अ़तिया को इन सबका मज्मूई तौर पर इल्म न हो सका। तफ़्सीले मज़ीद के लिये किताब शोबुल ईमान इमाम बैहक़ी का मुतालआ मुफ़ीद होगा।

٢٦٣٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي عَطَاءٌ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتْ لِرِجَالٍ مِنَّا فُضُولُ أَرَضِيْنَ، فَقَالُوا: نُؤَاجِرُهَا بِالثُّلُثِ وَالرُّبُعِ وَالنِّصْفِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ كَانَتْ لَهُ أَرْضٌ فَلْيَزْرَعْهَا أَوْ لِيَمْنَحْهَا أَخَاهُ. فَإِنْ أَبَى فَلْيُمْسِكْ أَرْضَهُ)).

2632. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ता ने बयान किया, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हममें से बहुत से अस्हाब के पास फ़ालतू ज़मीन भी थी, उन्होंने कहा था कि तिहाई या चौथाई या आधी की बटाई पर हम क्यूँ न उसे दे दिया करें। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसके पास ज़मीन हो तो उसे ख़ुद बोनी चाहिये, या फिर किसी अपने भाई को हदिया कर देनी चाहिये और अगर ऐसा नहीं कर सकता तो फिर ज़मीन अपने पास ही रखे रहे।

٢٦٣٣- وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيْدَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَعِيْدٍ قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنِ الْهِجْرَةِ، فَقَالَ: ((وَيْحَكَ، إِنَّ الْهِجْرَةَ شَأْنُهَا شَدِيْدٌ، فَهَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَتُعْطِي صَدَقَتَهَا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَهَلْ تَمْنَحُ مِنْهَا شَيْئًا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَتَحْلُبُهَا يَوْمَ وِرْدِهَا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَاعْمَلْ مِنْ وَرَاءِ الْبِحَارِ، فَإِنَّ اللهَ لَنْ يَتِرَكَ مِنْ عَمَلِكَ شَيْئًا)).

2633. और मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे औज़ाई ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यज़ीद ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे हिजरत के लिये पूछा। आपने फ़र्माया, अल्लाह तुम पर रहम करे। हिजरत का तो बड़ा ही दुश्वार मामला है। तुम्हारे पास ऊँट भी है? उन्होंने कहा जी हाँ! आपने दरयाफ़्त किया, और उसका स़दक़ा (ज़कात) भी अदा करते हो? उन्होंने कहा कि जी हाँ! आपने दरयाफ़्त किया, उसमें से कुछ हदिया भी देते हो? उन्हों ने कहा जी हाँ! आपने दरयाफ़्त फ़र्माया, तो तुम उसे पानी पिलाने के लिये घाट पर ले जाने वाले दिन दुहते होगे? उन्होंने कहा जी हाँ! फिर आपने फ़र्माया कि समुन्दरों के पार भी अगर तुम अ़मल करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे अ़मल में से कोई चीज़ नहीं छोड़ेगा।

एक देहाती ने दीगर मुहाजिरीन की तरह अपना मुल्क छोड़कर मदीना में रहना चाहा आप (ﷺ) जानते थे कि इससे हिजरत न निभ सकेगी। इसलिये आपने फ़र्माया कि अपने मुल्क में रहकर नेक काम करता रह, यही काफ़ी है। ये वाक़िया फ़तहे मक्का के बाद का है जबकि हिजरत फ़र्ज़ नहीं रही थी।

2634. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे ताउस ने बयान किया कि मुझसे उनमें सबसे ज़्यादा उस (मुख़ाबरा) के जानने वाले ने बयान किया, उनकी मुराद इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से थी कि नबी करीम (ﷺ) एक बार ऐसे खेत की तरफ़ तशरीफ़ ले गए जिसकी खेती लहलहा रही थी, आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि ये किसका है? सहाबा (रज़ि.) ने बतलाया कि फ़लाँ ने उसे किराया पर लिया है। इस पर आपने फ़र्माया कि अगर वो हदियतन दे देता तो इससे बेहतर था कि इस पर एक मुक़र्ररा उजरत वसूल करता। (राजेअ : 2330)

٢٦٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ طَاوُسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَعْلَمُهُمْ بِذَاكَ - يَعْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا - أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ إِلَى أَرْضٍ تَهْتَزُّ زَرْعًا، فَقَالَ: ((لِمَنْ هَذِهِ؟)) فَقَالُوا: اكْتَرَاهَا فُلاَنٌ. فَقَالَ: ((أَمَا إِنَّهُ لَوْ مَنَحَهَا إِيَّاهُ كَانَ لَهُ خَيْرًا لَهُ مِنْ أَنْ يَأْخُذَ عَلَيْهَا أَجْرًا مَعْلُومًا)). [راجع: ٢٣٣٠]

मतलब आँहज़रत (ﷺ) का ये था कि अगर ज़मीन बेकार पड़ी हो तो अपने मुसलमान भाई को मुफ़्त ज़राअ़त (खेती) के लिये दे दो। इसका किराया लेने से ये अम्र अफ़ज़ल है और किराया लेने से आपने मना नहीं फ़र्माया। दूसरी रिवायत में अ़म्र ने ताऊस से कहा, काश! तुम बटाई करना छोड़ दो, क्योंकि लोग कहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने इससे मना किया है। उन्होंने कहा अ़म्र! मैं तो लोगों को फ़ायदा पहुचाता हूँ और सहाबा में जो सबसे ज़्यादा इल्म रखते थे या'नी इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.), उन्होंने मुझसे बयान किया, आख़िर तक। ये न भूलना चाहिये कि अहदे नबवी ने सिर्फ़ अरब बल्कि सारी दुनिया में इंसानी, तमद्दुनी, मुआशरती तरक़्क़ी का इब्तिदाई दौर था। उस दौर में ग़ैर–आबाद ज़मीनों को आबाद करने की सख़्त ज़रूरत थी। उन ही मक़ासिद के पेशे नज़र पैग़म्बरे इस्लाम ने ज़मीन को आबाद करने के सिलसिले में हर मुम्किन आसानी व सहूलत को मद्देनज़र रखा और उसको ज़्यादा अ़वामी बनाने की रग़्बत दिलाई, मगर बाद के ज़मानों में जागीरदारी निज़ाम ने ज़मींदार और काश्तकार दो तब्क़े पैदा कर दिये जिनके बुरे नतीजों की संगीन सज़ाएँ आज तक ये दोनों गिरोह बाहमी कशमकश की शक्ल में भुगत रहे हैं। काश इस्लामी निज़ाम दुनिया में बरपा हो, जिसकी बरकत से नोए इंसानी को इन मसाइब से नजात मिल सके। आमीन!!

बाब 36 : आम दस्तूर के मुताबिक़ किसी ने किसी शख़्स से कहा कि ये लड़की मैंने तुम्हारी ख़िदमत के लिये दे दी तो जाइज़ है

कुछ लोगों ने कहा कि लड़की आरियतन होगी और अगर ये कहा कि मैंने तुम्हें ये कपड़ा पहनने के लिये दिया तो कपड़ा हिबा समझा जाएगा।

٣٦- بَابُ إِذَا قَالَ : أَخْدَمْتُكَ هَذِهِ الْجَارِيَةَ عَلَى مَا يَتَعَارَفُ النَّاسُ فَهُوَ جَائِزٌ وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: هَذِهِ عَارِيَةٌ. وَإِنْ قَالَ: كَسَوْتُكَ هَذَا الثَّوْبَ فَهَذِهِ هِبَةٌ.

मक़सूद इमाम बुख़ारी (रह.) का हन्फ़िया पर रद्द करना है कि लौण्डी में तो वो कलामे ख़ास आरियत पर महमूल होगा और कपड़े में हिबा पर। ये तरजीह बिला मुरज्जह और तख़्सिस बिला मुख़स्सस है। कुछ ने कहा **व इन क़ाल कसौतुम हाज़स्सौब** ये अलग कलाम है। कुछ लोगों का मक़ूला नहीं है।

2635. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सारा (अलैहिस्सलाम) के साथ हिजरत की तो उन्हें बादशाह ने आजर

٢٦٣٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((هَاجَرَ إِبْرَاهِيمُ بِسَارَةَ،

को (या'नी हाजरा को) अ़तिया में दे दिया। फिर वो वापस हुई और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से कहा, देखा आपने अल्लाह तआ़ला ने काफ़िर को किस तरह ज़लील किया और एक लड़की ख़िदमत के लिये भी दे दी। इब्ने सीरीन ने कहा, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने कि बादशाह ने हाजरा को उनकी ख़िदमत के लिये दे दिया था। (राजेअ़ : 2217)

فَأَعْطَوْهَا آجَرَ، فَرَجَعَتْ فَقَالَتْ: أَشَعَرْتَ أَنَّ اللهَ كَبَتَ الْكَافِرَ، وَأَخْدَمَ وَلِيْدَةً؟)) وَقَالَ ابْنُ سِيْرِيْنَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((فَأَخْدَمَهَا هَاجَرَ)).[راجع: ٢٢١٧]

बाब 37 : जब कोई किसी शख़्स को घोड़ा सवारी के लिये हदिया कर दे तो वो उ़मरा और सदक़ा की तरह होता है (कि उसे वापस नहीं लिया जा सकता) लेकिन कुछ लोगों ने कहा है कि वो वापस लिया जा सकता है।

٣٧– بَابُ إِذَا حَمَلَ رَجُلٌ عَلَى فَرَسٍ فَهُوَ كَالْعُمْرَى وَالصَّدَقَةِ وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ : لَهُ أَنْ يَرْجِعَ فِيْهَا.

2636. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मालिक से सुना, उन्होंने ज़ैद बिन असलम से पूछा था तो उन्होंने बयान किया कि मैंने अपने बाप से सुना, वो बयान करते थे कि उ़मर (रज़ि.) ने कहा मैंने एक घोड़ा अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिये एक शख़्स को दे दिया था, फिर मैंने देखा कि वो उसे बेच रहा है। इसलिये मैंने रसूले करीम (ﷺ) से पूछा कि इसे वापस मैं ही ख़रीद लूँ? आपने फ़र्माया कि उस घोड़े को न ख़रीद, अपना दिया हुआ सदक़ा वापस न लो। (राजेअ़ : 1490)

٢٦٣٦– حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ مَالِكًا يَسْأَلُ زَيْدَ بْنَ أَسْلَمَ فَقَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ، فَرَأَيْتُهُ يُبَاعُ، فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((لاَ تَشْتَرِهِ وَلاَ تَعُدْ فِي صَدَقَتِكَ)). [راجع: ١٤٩٠]

वो जिसको दिया उसकी मिल्क हो चुका अब उसमें रुजूअ़ जाइज़ नहीं। बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त यही है।

52. किताबुश्शहादत

किताब गवाहों के मुता'ल्लिक मसाइल का बयान

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : गवाहियों का पेश करना

١– بَابُ مَا جَاءَ فِي الْبَيِّنَةِ عَلَى

मुद्दई के ज़िम्मे है

الْمُدَّعِي

मुद्दई वो शख़्स जो किसी हक़ या शय का दूसरे पर दा'वा करे। मुद्दा अलैह जिस पर दा'वा किया जाए। बारे षुबूत शरअन भी मुद्दई पर है और अक़्ल और क़यास का मुक़्तज़ा भी यही है।

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى فَاكْتُبُوهُ، وَلْيَكْتُبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ، وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللهُ، فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا، فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْلَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ، وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رِجَالِكُمْ، فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى، وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا، وَلَا تَسْأَمُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَى أَجَلِهِ، ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَى أَنْ لَا تَرْتَابُوا، إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ لَا تَكْتُبُوهَا، وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ، وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ، وَإِنْ تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ وَاتَّقُوا اللهَ، وَيُعَلِّمُكُمُ اللهُ، وَاللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾ [البقرة: ٢٨٢].

क्योंकि अल्लाह तआला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया है कि, ऐ ईमान वालों! जब तुम आपस में उधार का मामला किसी मुद्दते मुक़र्ररह तक के लिये करो तो उसको लिख लिया करो और लाज़िम है कि तुम्हारे दरम्यान लिखने वाला ठीक सहीह लिखे और लिखने से इंकार न करे। जैसा कि अल्लाह ने उसको सिखाया है। पस चाहिये कि वो लिख दे और चाहिये कि वो शख़्स लिखवाए जिसके ज़िम्मे हक़ वाजिब है और चाहिये कि वो अपने परवरदिगार अल्लाह से डरता रहे और उसमें से कुछ भी कम न करे। फिर अगर वो जिसके ज़िम्मे हक़ वाजिब है कम अक़्ल हो या ये कि कमज़ोर हो और इस क़ाबिल न हो कि वो ख़ुद लिखवा सके तो लाज़िम है कि उसका कारकुन ठीक ठीक लिखवा दे और अपने मर्दों में से दो को गवाह कर लिया करो। फिर अगर दोनों मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें हो, उन गवाहों में से जिन्हें तुम पसन्द करते हो। ताकि उन दो औरतों में से एक दूसरी को याद दिला दे अगर कोई एक उन दोनों में से भूल जाए और गवाह जब बुलाए जाएँ तो इंकार न करें और उस (मामले) को ख़्वाह वो छोटा हो या बड़ा। उसकी मेयआद तक लिखने से उकता न जाओ, ये किताबत अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा से ज़्यादा इंसाफ़ से नज़दीक है और गवाही को दुरुस्त तर रखने वाली है और ज़्यादा लायक़ उसके कि तुम शुब्हा में न पड़ो, बजुज़ उसके कि कोई सौदा हाथों हाथ हो जिसे तुम बाहम लेते देते ही रहते हो। सो तुम पर उसमें कोई इल्ज़ाम नहीं कि तुम उसे न लिखो और जब ख़रीद व फ़रोख़्त करते हो तब भी गवाह कर लिया करो और किसी कातिब और गवाह को नुक़्सान न दिया जाए और अगर ऐसा करोगे तो ये तुम्हारे हक़ में एक गुनाह होगा और अल्लाह से डरते रहो और अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह हर चीज़ का बहुत जानने वाला है। और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि ऐ ईमानवालों! इंसाफ़ पर ख़ूब क़ायम रहने वाले और अल्लाह के लिये गवाही देने वाले बनकर रहो। चाहे तुम्हारे या (तुम्हारे)

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ إِنْ يَكُنْ

वालदेन और अज़ीज़ों के ख़िलाफ़ ही क्यूँ न हो। वो अमीर हो या मुफ़्लिस, अल्लाह, बहरहाल) दोनो से ज़्यादा हक़दार है। तो ख़्वाहिश नफ़्स की पैरवी न करना कि (हक़ से) हट जाओ और अगर तुम कजी करोगे या पहलू तही करोगे, तो जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह इससे ख़ूब ख़बरदार है। (अन निसा : 135)

غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا فَاللهُ أَوْلَى بِهِمَا، فَلاَ تَتَّبِعُوا الْهَوَى أَنْ تَعْدِلُوا وَإِنْ تَلْوُوا أَوْ تُعْرِضُوا فَإِنَّ اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا﴾ [النساء: ١٣٥].

तश्रीह : इस्लामियात का अदना तरीन तालिबे इल्म भी जान सकता है कि इस्लामी ता'लीम का ख़ुलासा बनी नोऔ इंसान को इज्तिमाई तौर पर एक बेहतरीन तन्ज़ीम के साथ वाबस्ता करना है। ऐसी तन्ज़ीम जो उमूरे उख़रवी के साथ साथ उमूरे दुनियावी को भी अहसन तरीक़ पर अंजाम देने की ज़ामिन हो। इसी तंज़ीम का दूसरा नाम इस्लामी शहरियत (इस्लामी नागरिकता) है। जिसमें एक इंसान को दीवानी, फ़ौजदारी, अख़्लाक़ी, सियासी, इज्तिमाई, इंफ़िरादी बहुत से मसाइल से साबिक़ा पड़ता है। कुछ बार इसको मुद्दई बनना और कुछ बार मुद्दा अलैह की हैषियत से अदालत के कटघरे में हाज़िर होना पड़ता है। कुछ औक़ात वो गवाहों की जमाअत में शामिल होता है। इन तमाम मराहिले ज़िन्दगी के पेशेनज़र ज़रूरी था कि मदनियत के और बहुत से मसाइल के साथ साथ शहादात या'नी गवाहियों के मसाइल भी किताबो-सुन्नत की रोशनी में बतलाए जाएँ। इसीलिये मुज्तहिदे मुत्लक़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी जामेउस्सहीह में और बहुत से मदनी (शहरी) मसाइल के साथ मसाइले शहादात को भी बयान करना ज़रूरी समझा और किताबो-सुन्नत की रोशनी में उनकी वो वज़ाहत पेश फ़र्माई जिससे मज़हबे इस्लाम की जामइय्यत और सियासत पर बहुत काफ़ी रोशनी पड़ती है। इस सिलसिले में मुज्तहिदे मुत्लक़ ने अव्वल आयाते क़ुर्आनी को नक़ल किया, जिनसे वाज़ेह किया कि एक मर्दे मोमिन के लिये जिस तरह नमाज़-रोज़ा की अदायगी इस्लामी मज़हबी फ़राइज़ हैं, इसी तरह मुआमलात में हमावक़्त अदल व इंसाफ़ की राह इख़्तियार करना और अमानत व दयानत को हाथ से न जाने देना भी इस्लामी फ़राइज़ ही में दाख़िल है। यूँ तो आयाते क़ुर्आनी में बहुत कुछ बतलाया गया है मगर उन उमूर पर ज़्यादा तवज्जह दिलाई गई है कि बाहमी लेन-देन के मुआमलात को ज़ुबानी न रखा करो बल्कि उनको भी खाता पर लाना ज़रूरी है और गवाहों का होना भी ज़रूरी है मर्दों में से दो गवाह काफ़ी होंगे। एक मर्द है तो दूसरे गवाह की जगह दो औरतों को भी गवाह रखा जा सकता है। मा'लूम हुआ कि गवाह मुक़र्रर करना नस्से क़ुर्आनी से षाबित है। अब उसी अम्र की वो सारी तफ़्सीलात हैं जो आगे मुख़्तलिफ़ अहादीष की रोशनी में बयान होंगी।

हज़रत इमाम (रह.) ने शुरू में जो आयाते क़ुर्आनी नक़ल की हैं, उन ही से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि उन दोनों आयतों में गवाही देने और गवाह बनाने का ज़िक्र है और ये ज़ाहिर है कि गवाह करने की ज़रूरत उसी शख़्स को होती है जिसका क़ौल क़सम के साथ मक़्बूल न हो तो उससे ये निकला कि मुद्दई को गवाह पेश करना ज़रूरी है। इमाम बुख़ारी (रह.) को इस बाब में वो मशहूर हदीष बयान करनी चाहिये थी जिसमें ये है कि मुद्दई पर गवाह हैं और मुंकिर पर क़सम है। और शायद उन्होंने इस हदीष के लिखने का इस बाब में क़स्द किया होगा मगर मौक़ा न मिला या सिर्फ़ आयतों पर इक्तिफ़ा मुनासिब समझी। (वहीदी)

बाब 2 : अगर एक शख़्स दूसरे के नेक आदात व उम्दा ख़साइल बयान करने के लिये अगर सिर्फ़ ये कहे कि हम तो उसके मुता'ल्लिक़ अच्छा ही जानते हैं या ये कहे कि मैं उसके मुता'ल्लिक़ सिर्फ़ अच्छी ही बात जानता हूँ

٢- بَابُ إِذَا عَدَّلَ رَجُلٌ أَحَدًا فَقَالَ: لاَ نَعْلَمُ إِلاَّ خَيْرًا، قَالَ : مَا عَلِمْتُ إِلاَّ خَيْرًا

तअदील और तज़्किया के मा'नी किसी शख़्स को नेक और सच्चा और मक़्बूलुश्शहादत बतलाना। कुछ लोगों ने ये कहा कि ये अल्फ़ाज़ तअदील के लिये काफ़ी नहीं हैं। जब तक साफ़ यूँ न कहे कि वो अच्छा है और आदिल है।

इस्लाम ने मुक़द्दमात में बुनियादी तौर पर गवाहों के आदिल और नेक चलन होने पर बहुत ज़ोर दिया है क्योंकि मुक़द्दमात में फ़ैसले की बुनियाद गवाह ही होते हैं। गवाहों की तअदील के लिये एक तो यही रास्ता है कि हाकिम की अदालत में कोई मुअतमद (भरोसेमन्द) आदमी उस गवाह की अदालत और नेक चलनी की गवाही दे। दूसरा ये कि हुकूमत के ख़ुफ़िया आदमी उस गवाह के बारे में पूरी मा'लूमात हासिल करके हुकूमत को ख़बर करें। गवाही में झूठ बोलने वालों की बुराइयों में बहुत सी अहादीष़ वारिद हुई हैं और झूठी गवाही को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है।

٢٦٣٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ثَوبَانُ، وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَابْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةُ بْنُ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَنْ حَدِيْثِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا - وَبَعْضُ حَدِيْثِهِمْ يُصَدِّقُ بَعْضًا - حِيْنَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا فَدَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلِيًّا وَأُسَامَةَ حِيْنَ اسْتَلْبَثَ الْوَحْيُ يَسْتَأْمِرُهُمَا فِي فِرَاقِ أَهْلِهِ، فَأَمَّا أُسَامَةُ فَقَالَ: أَهْلُكَ وَلاَ نَعْلَمُ إِلاَّ خَيْرًا. وَقَالَتْ بَرِيْرَةُ: إِنْ رَأَيْتُ عَلَيْهَا أَمْرًا أَغْمِصُهُ أَكْثَرَ مِنْ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيْثَةُ السِّنِّ تَنَامُ عَنْ عَجِيْنِ أَهْلِهَا فَتَأْتِي الدَّاجِنُ فَتَأْكُلُهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ يَعْذُرُنَا فِي رَجُلٍ بَلَغَنِي أَذَاهُ فِي أَهْلِ بَيْتِي، فَوَاللهِ مَا عَلِمْتُ مِنْ أَهْلِي إِلاَّ خَيْرًا، وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلاً مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا)).

[راجع: ٢٥٩٣]

2637. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उमर नुमैरी ने बयान किया, कहा हमसे ष़ौबान ने बयान किया और लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा, इब्ने मुसय्यिब, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास और उ़बैदुल्लाह ने आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ के बारे में ख़बर दी और उनकी बाहम एक की बात दूसरे की बात की तस्दीक़ करती है कि जब उन पर तोहमत लगाने वालों ने तोहमत लगाई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़ली और उसामा (रज़ि.) को अपनी बीवी (आइशा रजि) को अपने से जुदा करने के बारे में मश्वरा करने के लिये बुलाया, क्योंकि आप पर अब तक (इस सिलसिले मे) वह्य नहीं आई थी। उसामा (रज़ि.) ने तो ये कहा कि आपकी बीवी मुतह्हरा (आइशा रज़ि.) में हम सिवाय ख़ैर के और कुछ नहीं जानते। और बरीरा (रज़ि.) (उनकी ख़ादिमा) ने कहा कि मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं जानती जिससे उन पर ऐब लगाया जा सके। इतनी बात ज़रूर है कि वो नौ उम्र लड़की हैं कि आटा गूंधती और फिर जा के सो रहती है और बकरी आकर उसे खा लेती है। रसूले करीम (ﷺ) ने (तोहमत के झूठ ष़ाबित होने के बाद) फ़र्माया कि ऐसे शख़्स की तरफ़ से कौन उ़ज़्र ख़्वाही करेगा जो मेरी बीवी के बारे में मुझे अज़िय्यत पहुँचाता है। क़सम अल्लाह की! मैंने अपने घर में ख़ैर के सिवा और कुछ न पाया और लोग एक ऐसे शख़्स का नाम लेते हैं जिसके बारे में भी मुझे ख़ैर के सिवा और कुछ मा'लूम नहीं। (राजेअ : 2593)

तश्रीह : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) पर तोहमत का वाक़िया इस्लामी तारीख़ का एक मशहूरतरीन ह़ादषा है। जिसमें आँह़ज़रत (ﷺ) और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) और बहुत से अकाबिर सह़ाबा को बहुत तकलीफ़ का सामना करना पड़ा। आख़िर इस बारे में सूरह नूर नाज़िल हुई और अल्लाह पाक ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की पाकदामनी ज़ाहिर करने के सिलसिले में कई शानदार बयानात दिये। इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मतलब इससे निकाला है कि ह़ज़रत उसामा (रज़ि.) ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की तअ़दील उन लफ़्ज़ों में बयान की जो मक़्सदे बाब है।

इस इल्ज़ाम का बानी अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ मर्दूद था जो इस्लाम से दिल में सख़्त कीना रखता था। इल्ज़ाम

एक निहायत ही पाकदामन सहाबी सफ़्वान बिन मुअत्तल पर लगाया था जो निहायत ही नेक सालेह और मर्दे अफ़ीफ़ थे। ये अल्लाह की राह में शहीद हुए। हदीष़ इफ़्क की और तफ़्सील अपने मुक़ाम पर आएगी।

बाब 3 : जो अपने तईं छुपाकर गवाह बना हो उसकी गवाही दुरुस्त है

٣- بَابُ شَهَادَةِ الْمُخْتَبِيء، وَأَجَازَهُ عَمْرُو بْنُ حُرَيْثٍ

और अम्र बिन हुरीष़ (रज़ि.) ने इसको जाइज़ कहा है और फ़र्माया कि झूठे बेईमान के साथ ऐसी सूरत इख़्तियार की जा सकती है। शअबी, इब्ने सीरीन, अता और क़तादा ने कहा कि जो कोई किसी से कोई बात सुने तो उस पर गवाही दे सकता है, चाहे वो उसको गवाह न बनाए और हसन बस़री (रह.) ने कहा कि उसे इस तरह कहना चाहिये कि अगरचे उन लोगों ने मुझे गवाह नहीं बनाया लेकिन मैंने इस तरह से सुना है।

قَالَ : وَكَذَلِكَ يُفْعَلُ بِالْكَاذِبِ الْفَاجِرِ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ وَابْنُ سِيْرِيْنَ وَعَطَاءٌ وَقَتَادَةُ: السَّمْعُ شَهَادَةٌ. وَقَالَ الْحَسَنُ لَمْ يُشْهِدُونِي عَلَى شَيْءٍ ، وَإِنِّي سَمِعْتُ كَذَا وَكَذَا.

तश्रीह : इस बाब के ज़ेल में शुरू में अम्र बिन हुरीष़ का नाम आया है ये कमसिन सहाबा में से थे। उनके बाप भी सहाबी थे। बुख़ारी शरीफ़ में उनका ज़िक्र सिर्फ़ इसी जगह आया है। इस अष़र को इमाम बैहक़ी ने वस़्ल किया। जुम्ला **कज़ालिक युफ़अलु बिल्काज़िबल्फ़ाजिरि** (जो शख़्स़ झूठा बेईमान हो उसके लिये यही तदबीर करेंगे) या'नी जो झूठा बेईमान आदमी लोगों के सामने किसी का हक़ तस्लीम करने से डरता है। ऐसा न हो कि वो लोग उस पर गवाह बन जाएँ और तन्हाई में इक़रार करता है तो उसका इक़रार छुपकर सुन सकते हैं।

आगे हदीष़ में इब्ने स़य्याद का ज़िक्र आया है। जिसका नाम स़ाफ़ था। वो यहूदी लड़का था और अवाम को गुमराह करने और इस्लाम से बदज़न करने के लिये ख़ुद झूठी बातें बतौरे इल्हाम बना बनाकर लोगों को सुनाता रहता था। उसमें दज्जाल के बहुत से ख़साइल थे। आँहज़रत (ﷺ) इसका मकर व फ़रेब मा'लूम करने के लिये पेड़ों की आड़ में उसे देखने गए। यहीं से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि ऐसे मौक़ा पर छुपकर किसी की बातें सुनना दुरुस्त है और जब सुनना दुरुस्त हुआ तो उस पर गवाही दे सकता है।

2638. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी ज़ुहरी से कि सालिम ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, आप कहते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उबय बिन कअब अंस़ारी (रज़ि.) को साथ लेकर खजूर के उस बाग़ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए जिसमें इब्ने स़य्याद था। जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) बाग़ में दाख़िल हुए तो आप पेड़ों की आड़ में छुपकर चलने लगे। आप चाहते थे कि इब्ने स़य्याद आपको देखने न पाए और उससे पहले आप उसकी बातें सुन सकें। इब्ने स़य्याद एक रोंएंदार चादर में ज़मीन पर लेटा हुआ था और कुछ गुनगुना रहा था। इब्ने स़य्याद की माँ ने आँहज़रत (ﷺ) को देख लिया कि आप (ﷺ) पेड़ की आड़ लिये चले आ रहे हैं तो वो कहने लगी, ऐ स़ाफ़! ये मुहम्मद (ﷺ) आ रहे हैं। इब्ने स़य्याद होशियार हो गया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर उसे

٢٦٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَالِمٌ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: انْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ الأَنْصَارِيُّ يَؤُمَّانِ النَّخْلَ الَّتِي فِيهَا ابْنُ صَيَّادٍ، حَتَّى إِذَا دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ طَفِقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ وَهُوَ يَخْتِلُ أَنْ يَسْمَعَ مِنَ ابْنِ صَيَّادٍ شَيْئًا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ. وَابْنُ صَيَّادٍ مُضْطَجِعٌ عَلَى فِرَاشِهِ فِي قَطِيفَةٍ لَهُ فِيهَا رَمْرَمَةٌ أَوْ زَمْزَمَةٌ، فَرَأَتْ أُمُّ ابْنِ صَيَّادٍ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ

يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ، فَقَالَتْ لابْنِ صَيَّادٍ: أَيْ صَافِ، هَذَا مُحَمَّدٌ. فَتَنَاهَى ابْنُ صَيَّادٍ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ تَرَكَتْهُ بَيَّنَ)).
[راجع: ١٣٥٥]

अपने हाल पर रहने देती तो बात ज़ाहिर हो जाती। (राजेअ: 1355)

इब्ने सय्याद मदीना में एक यहूदी लड़का था जो बड़ाई मारा करता था कि मुझ पर भी वह्य उतरती है। हालाँकि उस पर शैतान सवार था। अकषर नीम बेहोशी में रहता था और दीवानगी की बातें करता था। आँहज़रत (ﷺ) ने एक बार चाहा छुपकर उसकी बातों को सुनें और वो आपको देख न सके। यही वाक़िया यहाँ मज़्कूर है। और उसी से हज़रत इमाम ने बाब के तर्जुमा को षाबित किया है।

٢٦٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا جَاءَتِ امْرَأَةُ رِفَاعَةَ الْقُرَظِيِّ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَتْ: كُنْتُ عِنْدَ رِفَاعَةَ فَطَلَّقَنِي فَأَبَتَّ طَلاَقِي، فَتَزَوَّجْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الزُّبَيْرِ، وَإِنَّمَا مَعَهُ مِثْلُ هُدْبَةِ الثَّوْبِ. فَقَالَ: ((أَتُرِيْدِيْنَ أَنْ تَرْجِعِي إِلَى رِفَاعَةَ؟ لاَ، حَتَّى تَذُوقِي عُسَيْلَتَهُ وَيَذُوقَ عُسَيْلَتَكِ)). وَأَبُوبَكْرٍ جَالِسٌ عِنْدَهُ، وَخَالِدُ بْنُ سَعِيْدِ بْنِ الْعَاصِ بِالْبَابِ يَنْتَظِرُ أَنْ يُؤْذَنَ لَهُ. فَقَالَ: يَا أَبَا بَكْرٍ أَلاَ تَسْمَعُ إِلَى هَذِهِ مَا تَجْهَرُ بِهِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ.
[أطرافه في: ٥٢٦٠، ٥٢٦١، ٥٢٦٥، ٥٣١٧، ٥٧٩٢، ٥٨٢٥، ٦٠٨٤].

2639. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया ज़ुहरी से और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रफ़ाआ क़ुरज़ी (रज़ि.) की बीवी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया कि मैं रफ़ाआ की निकाह में थी। फिर मुझे उन्होंने तलाक़ दे दी और क़त्ई तलाक़ दे दी। फिर मैंने अब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से शादी कर ली। लेकिन उनके पास तो (शर्मगाह) उस कपड़े की गांठ की तरह है। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया क्या तू रफ़ाआ के पास दोबारा जाना चाहती है लेकिन तू उस वक़्त तक उनसे अब शादी नहीं कर सकती जब तक तू अब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर का मज़ा न चख ले और वो तुम्हारा मज़ा न चख लें। उस वक़्त अबूबक्र (रज़ि.) ख़िदमते-नबवी में मौजूद थे और ख़ालिद बिन सईद बिन आस़ (रज़ि.) दरवाज़े पर अपने लिये (अंदर आने की) इजाज़त का इंतिज़ार कर रहे थे। उन्होंने कहा, अबूबक्र! क्या इस औरत को नहीं देखते नबी करीम (ﷺ) के सामने किस तरह की बातें ज़ोर-ज़ोर से कह रही है।

(दीगर मक़ाम : 5260, 5261, 5265, 5317, 5792, 5825, 6084)

इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहीं से ये निकाला कि छुपकर गवाह बनना दुरुस्त है क्योंकि ख़ालिद दरवाज़े के बाहर थे। औरत के सामने न थे। बावजूद उसके ख़ालिद ने एक क़ौल की निस्बत उस औरत की तरफ़ की और आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ालिद पर ए'तिराज़ नहीं किया। अब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर साहिबे औलाद थे मगर उस वक़्त शायद वो मरीज़ हों, उसी वजह से उस औरत ने उसको कपड़े की गांठ से ता'बीर किया जिसमें कुछ भी हरकत नहीं होती, या'नी वो जिमाअ नहीं कर सकते। मगर हज़रत इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने औरत के उस बयान की तर्दीद की थी।

इस हदीष से ये मसला भी षाबित हुआ कि जब तक मुतल्लक़ा औरत अज़ख़ुद किसी दूसरे मर्द के निकाह में जाकर उससे जिमाअ न कराए और वो ख़ुद उसको तलाक़ न दे दे वो पहले शौहर के निकाह में दोबारा नहीं जा सकती है। फ़र्ज़ी हलाला

कराने वालों पर ला'नत आई है जैसा कि फ़ुक़हा-ए-हन्फ़िया के यहाँ रिवाज है कि वो तीन तलाक़ वाली औरत को फ़र्ज़ी हलाला कराने का फ़त्वा दिया करते हैं, जो बाइ़षे ला'नत है।

बाब 4 : जब एक या कई गवाह किसी मामले के इष्बात में गवाही दें और दूसरे लोग ये कह दें कि हमें इस सिलसिले में कुछ मा'लूम नहीं तो फ़ैसला उसी के क़ौल के मुताबिक़ होगा जिसने इष्बात में गवाही दी है

٤- بَابُ إِذَا شَهِدَ شَاهِدٌ أَوْ شُهُودٌ بِشَيْءٍ فَقَالَ آخَرُونَ: مَا عَلِمْنَا بِذَلِكَ يُحْكَمُ بِقَوْلِ مَنْ شَهِدَ

हुमैदी ने कहा कि ये ऐसा है जैसे बिलाल (रज़ि.) ने ख़बर दी थी कि नबी करीम (ﷺ) ने का'बा में नमाज़ पढ़ी है और फ़ज़्ल (रज़ि.) ने कहा था कि आपने (का'बा के अंदर) नमाज़ नहीं पढ़ी। तो तमाम लोगों ने बिलाल (रज़ि.) की गवाही को तस्लीम कर लिया। इसी तरह अगर दो गवाहों ने उसकी गवाही दी कि फ़लाँ शख़्स के फ़लाँ पर एक हज़ार दिरहम हैं और दूसरे दो गवाहों ने गवाही दी कि डेढ़ हज़ार दिरहम हैं तो फ़ैसला ज़्यादा की गवाही देने वालों के क़ौल के मुताबिक़ होगा।

قَالَ الْحُمَيْدِيُّ: هَذَا كَمَا أَخْبَرَ بِلاَلٌ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى فِي الْكَعْبَةِ. وَقَالَ الْفَضْلُ: لَمْ يُصَلِّ. فَأَخَذَ النَّاسُ بِشَهَادَةِ بِلاَلٍ. كَذَلِكَ إِنْ شَهِدَ شَاهِدَانِ أَنَّ لِفُلاَنٍ عَلَى فُلاَنٍ أَلْفَ دِرْهَمٍ، وَشَهِدَ آخَرَانِ بِأَلْفٍ وَخَمْسِمِائَةٍ، يُقْضَى بِالزِّيَادَةِ.

ह़ज़रत फ़ज़्ल (रज़ि.) का कहना था कि मैंने आप (ﷺ) को का'बा में नमाज़ पढ़ते नहीं देखा। उनको इस बारे में इल्म न था। ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) की शहादत थी कि उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) को का'बा में नमाज़ पढ़ते देखा। अकष़रियत भी उनके साथ थी। लिहाज़ा उन्हीं की बात को माना गया।

2640. हमसे ह़ब्बान ने बयान किया, कहा कि हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको उ़मर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने ख़बर दी और उन्हें उ़क़्बा बिन हारिष़ (रज़ि.) ने कि उन्होंने अबू अहाब बिन अ़ज़ीज़ की लड़की से शादी की थी। फिर एक ख़ातून आईं और कहने लगीं कि उ़क़्बा को भी मैंने दूध पिलाया है और इसे भी जिससे उसने शादी की है। उ़क़्बा (रज़ि.) ने कहा कि मुझे तो मा'लूम नहीं कि आपने मुझे भी दूध पिलाया है और आपने मुझे पहले इस सिलसिले में कुछ बताया भी नहीं था। फिर उन्होंने आले अबू अहाब के यहाँ आदमी भेजा कि उनसे उसके बारे में पूछे। उन्होंने भी यही जवाब दिया कि हमे मा'लूम नहीं कि उन्होंने दूध पिलाया है। उ़क़्बा (रज़ि.) अब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मदीना हाज़िर हुए और आपसे मसला पूछा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अब क्या हो सकता है जबकि कहा जा चुका। चुनाँचे आपने दोनों में जुदाई करवा दी और उसका निकाह दूसरे शख़्स से

٢٦٤٠- حَدَّثَنَا حَبَّانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ: ((عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ أَنَّهُ تَزَوَّجَ ابْنَةً لأَبِي إِهَابِ بْنِ عَزِيْزٍ، فَأَتَتْهُ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: قَدْ أَرْضَعْتُ عُقْبَةَ وَالَّتِي تَزَوَّجَ. فَقَالَ لَهَا عُقْبَةُ: مَا أَعْلَمُ أَنَّكِ أَرْضَعْتِنِي، وَلاَ أَخْبَرْتِنِي. فَأَرْسَلَ إِلَى آلِ أَبِي إِهَابٍ يَسْأَلُهُمْ فَقَالُوا: مَا عَلِمْنَا أَرْضَعَتْ صَاحِبَتَنَا. فَرَكِبَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِالْمَدِيْنَةِ فَسَأَلَهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَيْفَ وَقَدْ قِيْلَ؟)) فَفَارَقَهَا وَنَكَحَتْ زَوْجًا غَيْرَهُ)).

करा दिया। (राजेअ : 88) [راجع: ٨٨]

बाब का तर्जुमा इस तरह साबित हुआ कि उक़्बा और उसकी अहलिया के अज़ीज़ का बयान नफ़ी में था और दूध पिलाने वाली औरत का बयान इष्बात में था। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी औरत की गवाही क़ुबूल फ़र्माई। मा'लूम हुआ कि गवाही में इष्बात नफ़ी पर मुक़द्दम है।

बाब 5 : गवाह आदिल, मो'तबर होने ज़रूरी हैं

٥- بَابُ الشُّهَدَاءِ الْعُدُولِ

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह तलाक़ में फ़र्माया, कि अपने में से दो आदिल आदमियों को गवाह बना लो, और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया कि) गवाहों में से जिन्हें तुम पसन्द करो।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ عَدْلٍ مِنْكُمْ﴾ –و– ﴿مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ﴾ [الطلاق: ٢ والبقرة: ٢٨٢]

2641. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी ज़ुह्री से, कहा कि मुझसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने और उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में लोगों का वह्य के ज़रिये मुआख़ज़ा हो जाता था। लेकिन अब वह्य का सिलसिला ख़त्म हो गया और हम सिर्फ़ उन्हीं उमूर में मुआख़िज़ा करेंगे जो तुम्हारे अमल से हमारे सामने ज़ाहिर होंगे। इसलिये जो कोई ज़ाहिर में हमारे सामने ख़ैर करेगा, हम उसे अमन देंगे और अपने क़रीब रखेंगे। उसके बातिन से हमें कोई सरोकार नहीं होगा। उसका हिसाब तो अल्लाह तआ़ला करेगा और जो कोई हमारे सामने ज़ाहिर में बुराई करेगा तो हम भी उसे अमन नहीं देंगे और न हम उसकी तस्दीक़ करेंगे ख़्वाह वो यही कहता रहे कि उसका बातिन अच्छा है।

٢٦٤١- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُتْبَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((إِنَّ أُنَاسًا كَانُوا يُؤْخَذُونَ بِالْوَحْيِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَإِنَّ الْوَحْيَ قَدِ انْقَطَعَ، وَإِنَّمَا نَأْخُذُكُمُ الآنَ بِمَا ظَهَرَ لَنَا مِنْ أَعْمَالِكُمْ، فَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا خَيْرًا أَمِنَّاهُ وَقَرَّبْنَاهُ وَلَيْسَ إِلَيْنَا مِنْ سَرِيرَتِهِ شَيْءٌ، اللهُ يُحَاسِبُهُ فِي سَرِيرَتِهِ. وَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا سُوءًا لَمْ نَأْمَنْهُ وَلَمْ نُصَدِّقْهُ وَإِنْ قَالَ إِنَّ سَرِيرَتَهُ حَسَنَةٌ)).

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) के क़ौल से उनके बुक़ूफ़ों का रद्द हुआ जो एक बदकार फ़ासिक़ को दरवेश और वली समझें और ये दा'वा करें कि ज़ाहिर आमाल से किया होता है, दिल अच्छा होना चाहिये। कहो, जब हज़रत उमर (रज़ि.) ऐसे शख़्स को दिल का हाल मा'लूम नहीं हो सकता था तो तुम बेचारे किस खेत की मूली है। दिल का हाल बजुज़ अल्लाह करीम के कोई नहीं जानता। नबी करीम (ﷺ) को भी उसका इल्म वह्य या'नी अल्लाह के बतलाने से होता। हज़रत उमर (रज़ि.) ने क़ायदा बयान किया कि ज़ाहिर की रू से जिसके आमाल शरअ के मुवाफ़िक़ हों उसको अच्छा समझो और जिसके आमाल शरअ के ख़िलाफ़ हों उनको बुरा समझो। अब अगर उसका दिल बिल फ़र्ज़ अच्छा भी होगा जब भी हम उसके बुरा समझने में कोई मुआख़िज़ा वार न होंगे क्योंकि हमने शरीअत के क़ायदे पर अमल किया। अल्बत्ता हम अगर उसको अच्छा समझेंगे तो गुनाहगार होंगे। (वहीदी)

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि फ़ासिक़, बदकार की बात न मा'नी जाएगी या'नी उसकी शहादत मक़्बूल न होगी। मा'लूम हुआ कि शाहिद के लिये अदालत ज़रूरी है। अदालत से मुराद ये है कि मुसलमान आज़ाद, आक़िल, बालिग़, नेक

ये भी मक़्सद है कि आदिल गवाह के ज़ाहिरी हालात का दुरुस्त होना ज़रूरी है वरना उसको आदिल न माना जाएगा। इस्लाम का फ़त्वा ज़ाहिरी हालत पर है। बातिन अल्लाह के हवाले है। उसमें उन नामनिहाद सूफ़ियों की भी तर्दीद है जिनका ज़ाहिर सरासर ख़िलाफ़े शरअ होता है और बातिन में वो ईमानदार आशिक़े अल्लाह व रसूल बनते हैं। ऐसे मक्कार नामनिहाद सूफ़ियों ने एक ख़िल्क़त को गुमराह कर रखा है। उनमें से कुछ तो इतने बेहया वाक़ेअ हुए हैं कि नमाज़, रोज़ा की खुले लफ़्ज़ों में तहक़ीर करते हैं, उलमा की बुराइयाँ करते हैं, शरीअत और तरीक़त को अलग अलग बतलाते हैं। ऐसे लोग सरासर गुमराह हैं। हर्गिज़-हर्गिज़ क़ाबिले क़ुबूलियत नहीं हैं बल्कि वो ख़ुद गुमराह और मख़्लूक़ के गुमराह करने वाले हैं।

हज़रत जुनैद बग़दादी (रह.) का मशहूर क़ौल है कि **कुल्लु हक़ीक़तिन ला यशहदु लहुश्शर्उ फहुव ज़िन्दिक़तुन** हर वो हक़ीक़त जिसकी शहादत शरीअत से न मिले वो बद्दीनी और बेईमानी और ज़िन्दीक़ियत है। **नऊज़ुबिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना मिन सय्यिआति आमालिना.**

बाब 6 : किसी गवाह को आदिल षाबित करने के लिये कितने आदमियों की गवाही ज़रूरी है?

٦- بَابُ تَعْدِيْلُ كَمْ يَجُوزُ؟

2642. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया षाबित से और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से एक जनाज़ा निकला तो लोगों ने उस मय्यत की ता'रीफ़ की, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वाजिब हो गई। फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा तो लोगों ने उसकी बुराई की या उसके सिवा और अल्फ़ाज़ (उसी मफ़्हूम को अदा करने के लिये) कहे (रावी को शुब्हा है) आप (ﷺ) ने उस पर भी फ़र्माया कि वाजिब हो गई। अर्ज़ किया गया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने उस जनाज़े के बारे में भी फ़र्माया कि वाजिब हो गई और पहले जनाज़े पर भी यही फ़र्माया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ईमानवाली क़ौम की गवाही (बारगाहे इलाही में मक़्बूल है) ये लोग ज़मीन पर अल्लाह के गवाह हैं। (राजेअ : 1367)

٢٦٤٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مُرَّ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِجِنَازَةٍ، فَأَثْنَوا عَلَيْهَا خَيْرًا، فَقَالَ: ((وَجَبَتْ)). ثُمَّ مُرَّ بِأُخْرَى فَأَثْنَوا عَلَيْهَا شَرًّا - أَوْ قَالَ : غَيْرَ ذَلِكَ- فَقَالَ: ((وَجَبَتْ)). فَقِيْلَ يَا رَسُولَ اللهِ قُلْتَ لِهَذَا وَجَبَتْ وَلِهَذَا وَجَبَتْ. قَالَ: ((شَهَادَةُ الْقَوْمِ. الْمُؤْمِنُونَ شُهَدَاءُ اللهِ فِي الأَرْضِ)). [راجع: ١٣٦٧]

2643. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे दाऊद बिन अबी फ़रात ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने बयान किया अबुल अस्वद से कि मैं मदीना आया तो यहाँ वबा फैली हुई थी, लोग बड़ी तेज़ी से मर रहे थे। मैं हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िदमत में था कि एक जनाज़ा गुज़रा। लोगों ने उस मय्यत की ता'रीफ़ की तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि वाजिब हो गई। फिर दूसरा गुज़रा लोगों ने उसकी ता'रीफ़ की, हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा वाजिब हो गई। फिर तीसरा गुज़रा तो लोगों ने उसकी बुराई की, हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसके लिये भी यही कहा कि वाजिब हो गई। मैंने पूछा अमीरुल मोमिनीन! क्या

٢٦٤٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ ابْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ قَالَ: ((أَتَيْتُ الْمَدِيْنَةَ وَقَدْ وَقَعَ بِهَا مَرَضٌ وَهُمْ يَمُوتُونَ مَوتًا ذَرِيْعًا، فَجَلَسْتُ إِلَى عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَمَرَّتْ جِنَازَةٌ فَأُثْنِيَ خَيْرًا، فَقَالَ عُمَرُ : وَجَبَتْ. ثُمَّ مُرَّ بِأُخْرَى فَأُثْنِيَ خَيْراً فَقَالَ عُمَرُ وَجَبَتْ ثُمَّ

مُرَّ بِالثَّالِثَةِ فَأُثْنِيَ شَرًّا فَقَالَ وَجَبَتْ فَقُلْتُ: وَمَا وَجَبَتْ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: قُلْتُ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيُّمَا مُسْلِمٍ شَهِدَ لَهُ أَرْبَعَةٌ بِخَيْرٍ أَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةَ)). قُلْنَا: وَثَلاَثَةٌ؟ قَالَ: ((وَثَلاَثَةٌ)). قُلْنَا وَاثْنَانِ؟ قَالَ: ((وَاثْنَانِ)). ثُمَّ لَمْ نَسْأَلْهُ عَنِ الْوَاحِدِ)). [راجع: ١٣٦٨]

चीज़ वाजिब हो गई। उन्होंने कहा कि मैंने उसी तरह कहा है जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जिस मुसलमान के लिये चार आदमी अच्छाई की गवाही दे दें उसे अल्लाह तआला जन्नत में दाख़िल करता है। हमने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा और अगर तीन दें? आपने फ़र्माया कि तीन पर भी। हमने पूछा और अगर दो आदमी गवाही दें? फ़र्माया, दो पर भी। फिर हमने एक के बारे में आपसे नहीं पूछा। (राजेअ : 1368)

तश्रीह : इस हदीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि तअ़दील और तज़्किया के लिये कम से कम दो शख़्सों की गवाही ज़रूरी है। इमाम मालिक (रह.) और शाफ़िई का यही क़ौल है। लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक एक की भी गवाही काफ़ी है। (क़स्तलानी)

हदीष़ का मतलब ये कि जिसकी मुसलमानों ने ता'रीफ़ की उसके लिये जन्नत वाजिब हो गई और जिसकी बुराई की उसके लिये जहन्नम वाजिब हो गई। जिसका मतलब राये-आम्मा की तस्वीब है। सच है, आवाज़े ख़ल्क़ को नक़्क़ारा-ए-ख़ुदा कहते हैं। मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) का इन रिवायात के लाने का मक़्सद ये है कि तअ़दील व तज़्किया में राये आम्मा (सर्वसम्मति) का काफ़ी दख़ल है।

बाब 7 : नसब और रज़ाअ़त में जो मशहूर हो, इसी तरह पुरानी मौत पर गवाही का बयान

٧- بَابُ الشَّهَادَةِ عَلَى الأَنْسَابِ، وَالرَّضَاعِ الْمُسْتَفِيضِ، وَالْمَوْتِ الْقَدِيمِ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرْضَعَتْنِي وَأَبَا سَلَمَةَ ثُوَيْبَةُ)). وَالتَّثَبُّتِ فِيهِ.

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे और अबू सलमा (रज़ि.) को षुवैबा (अबू लहब की बांदी) ने दूध पिलाया था। और रज़ाअ़त में एहतियात करना।

तश्रीह : या'नी जब तक रज़ाअ़त अच्छी तरह ष़ाबित न हो सुनी सुनाई बात पर अमल न करना। मक़्सूद इमाम बुख़ारी (रह.) का इशारा है हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष़ की तरफ़ जो आगे इस किताब में मज़्कूर है कि सोच समझकर किसी को अपना रज़ाई भाई क़रार दो। मुनअ़क़िदा बाब के तमाम मज़ामीन से मतलब इमाम बुख़ारी (रह.) का ये है कि उन चीज़ों में सिर्फ़ बर-बिनाए शुहरत शहादत (लोगों में प्रचलित गवाही) देना दुरुस्त है, भले ही गवाह ने अपनी आँख से उन वाक़ियात को न देखा हो। पुरानी मौत से मुराद ये है कि उसको चालीस या पचास साल गुज़र चुके हों।

٢٦٤٤- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: اسْتَأْذَنَ عَلَيَّ أَفْلَحُ فَلَمْ آذَنْ لَهُ، فَقَالَ: أَتَحْتَجِبِينَ مِنِّي وَأَنَا عَمُّكِ؟ فَقُلْتُ: وَكَيْفَ ذَلِكَ؟ قَالَ: أَرْضَعَتْكِ امْرَأَةُ أَخِي بِلَبَنِ أَخِي. فَقَالَتْ: سَأَلْتُ عَنْ

2644. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमको हकम ने ख़बर दी, उन्हें इराक बिन मालिक ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (पर्दा का हुक्म नाज़िल होने के बाद) अफ़्लह (रज़ि.) ने मुझसे (घर में आने की) इजाज़त चाही तो मैंने उनको इजाज़त नहीं दी। वो बोले कि आप मुझसे पर्दा करती हैं हालाँकि मैं आपका (दूध का) चचा हूँ। मैंने कहा कि ये कैसे? तो उन्होंने बताया कि मेरे भाई (वाईल) की औरत ने आपको मेरे भाई ही का दूध

ذَلِكَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((صَدَقَ أَفْلَحُ ائْذَنِي لَهُ)). [أطرافه في: ٤٧٩٦، ٥١٠٣، ٥١١١، ٥٢٢٩، ٦١٥٦].

पिलाया था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने उसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अफ्लह ने सच कहा है। उन्हें (अंदर आने की) इजाज़त दे दिया करो (उनसे पर्दा नहीं है)। (दीगर मक़ाम : 4796, 5103, 5111, 5229, 6156)

रज़ाअत में सिर्फ़ अकेले अफ़्लह की गवाही को तस्लीम किया गया, बाब का यही मक़्सद है। साथ ही ये भी है कि गवाह को परखना भी ज़रूरी है।

٢٦٤٥ - حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ فِي بِنْتِ حَمْزَةَ: ((لاَ تَحِلُّ لِي، يَحْرُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا يَحْرُمُ مِنَ النَّسَبِ، هِيَ بِنْتُ أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ)). [طرفه في: ٥١٠٠].

2645. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया जाबिर बिन ज़ैद से और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हम्ज़ा (रज़ि.) की साहबज़ादी के बाब में फ़र्माया कि ये मेरे लिये हलाल नहीं हो सकतीं, जो रिश्ते नसब की वजह से हराम हो जाते हैं वही दूध की वजह से भी हराम हो जाते हैं। ये तो मेरे रज़ाई भाई की लड़की है। (दीगर मक़ाम : 5100)

तश्रीह : हज़रत हम्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) आप (ﷺ) के चचा थे। दोनों की उम्रों में कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं था। इसलिये जिस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) दूध पीते थे हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के भी दूध पीने का वही ज़माना था। और दोनों हज़रात ने अबू लहब की बांदी षुवैबा का दूध पिया था। हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) की लड़की जिनका नाम अमामा या अम्मारा बताया जाता है, के बारे में ये हदीष आपने उसी बुनियाद पर बयान की थी। क़स्तलानी ने कहा, उनमें से चार रिश्ते मुस्तष्ना हैं जो नसब से हराम होते हैं, लेकिन रज़ाअ से हराम नहीं होते। उनका ज़िक्र किताबुन्निकाह में आएगा इंशाअल्लाह तआ़ला।

٢٦٤٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ عِنْدَهَا، وَأَنَّهَا سَمِعَتْ صَوْتَ رَجُلٍ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِ حَفْصَةَ، - قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ أُرَاهُ فُلاَنًا، لِعَمِّ حَفْصَةَ مِنَ الرَّضَاعَةِ - فَقَالَتْ عَائِشَةُ : يَا رَسُوْلَ اللهِ هَذَا رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِكَ.

2646. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र से, वो अ़म्र बिन्ते अ़ब्दुर्रहमान से और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) उनके यहाँ तशरीफ़ फ़र्मा थे। हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने एक सहाबी की आवाज़ सुनी जो (उम्मुल मोमिनीन) हफ़्सा (रज़ि.) के घर में आने की इजाज़त चाहता था। हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरा ख़्याल है ये हफ़्सा (रज़ि.) के दूध के चचा हैं। उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये सहाबी आपके घर में (जिसमें हफ़्सा रज़ि. रहती हैं) आने की इजाज़त मांग रहे हैं। उन्होंने बयान किया कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरा ख़्याल है ये फ़लाँ साहब, हफ़्सा के रज़ाई चचा हैं। फिर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने

قَالَتْ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أُرَاهُ فُلاَنًا، لِعَمِّ حَفْصَةَ مِنَ الرَّضَاعَةِ)). فَقَالَتْ عَائِشَةُ: لَوْ كَانَ فُلاَنٌ حَيًّا- لِعَمِّهَا مِنَ الرَّضَاعَةِ - دَخَلَ عَلَيَّ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((نَعَمْ، إِنَّ الرَّضَاعَةَ يَحْرُمُ مِنْهَا مَا يَحْرُمُ مِنَ الْوِلاَدَةِ)).

[طرفاه في: ٣١٠٥، ٥٠٩٩].

भी अपने एक रज़ाई चचा के बारे में पूछा कि अगर फ़लाँ ज़िन्दा होते तो क्या बेहिजाब मेरे पास आ सकते थे? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! दूध से भी वो तमाम रिश्ते ह़राम हो जाते हैं जो नसब की वजह से ह़राम होते हैं। (दीगर मक़ाम : 3105, 5099)

अल्ह़म्दुलिल्लाह कि 8अप्रैल 70 ईस्वी में ह़रमे नबवी मदीना मुनव्वरा में इस पारे के मतन की क़िरअत ग़ौरो–फ़िक्र के साथ यहाँ से शुरू की गई और दुआ की गई कि अल्लाह पाक अपने प्यारे नबी (ﷺ) के प्यारे प्यारे इर्शादात के समझने और उनका बेहतरीन उर्दू तर्जुमा करने के साथ साथ तशरीह़ करने की तौफ़ीक़ बख़्शे और इस ख़िदमते ह़दीषे नबवी (ﷺ) को मेरे लिये और मेरे तमाम मुता'ल्लिक़ीन व मुख़्लिसीन के लिये क़ुबूल फ़र्माकर ज़रिया-ए-सआदते दारेन बनाए और ह़ाजी मरहूम बुलारी प्यारो क़ुरैशी बैंगलूरी को जन्नत नसीब करे जिनके ह़ज्जे बदल के सिलसिले में मुझको मदीना मुनव्वरा की ये ह़ाज़री नसीब हुई।
अल्लाहुम्मग़फ़िर्लहू वर्हम्हू व अक्रिम नुज़ुलहू व वस्सिअ़ मदख़लहू आमीन या रब्बल्आलमीन

٢٦٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَشْعَثَ بْنِ أَبِي الشَّعْثَاءِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى النَّبِيُّ ﷺ وَعِنْدِي رَجُلٌ وَقَالَ: ((يَا عَائِشَةَ مَنْ هَذَا؟)) قُلْتُ: أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ قَالَ: ((يَا عَائِشَةُ انْظُرْنَ مَنْ إِخْوَانُكُنَّ، فَإِنَّمَا الرَّضَاعَةُ مِنَ الْمَجَاعَةِ)). تَابَعَهُ ابْنُ مَهْدِيٍّ عَنْ سُفْيَانَ.

[طرفه في : ٥١٠٢].

2647. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें अश्अ़ष़ बिन अबू शअ़ष़ाअ ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हे मसरूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (घर में) तशरीफ़ लाए तो मेरे यहाँ एक स़ाह़ब (उनकी रज़ाई भाई) बैठे हुए थे। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया, आइशा! ये कौन है? मैंने कहा कि ये मेरा रज़ाई भाई है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि आइशा (रज़ि.) ज़रा देखभाल कर चलो, कौन तुम्हारा रज़ाई भाई है क्योंकि रज़ाअ़त वही मो'तबर है जो कमसिनी में हो। मुह़म्मद बिन कष़ीर के साथ इस ह़दीष़ को अ़ब्दुर्रहमान बिन महदी ने सुफ़यान ष़ौरी से रिवायत किया है। (दीगर मक़ाम : 5102)

तश्रीह़ : बच्चे का उसी ज़माना में किसी औरत के दूध पीने का ए'तिबार है जबकि बच्चे की ज़िन्दगी के लिये वो ज़रूरी हो या'नी मुद्दते रज़ाअ़त जो दो साल की है। अगर उसके अंदर दो बच्चे किसी माँ का दूध पीए तो उसका ए'तिबार होगा और दोनों में हुर्मत ष़ाबित होगी वरना हुर्मत ष़ाबित नहीं होगी। मुद्दते रज़ाअ़त **ह़ौलैनि कामिलैनि** ख़ुद क़ुर्आन मजीद से ष़ाबित है या'नी पूरे दो साल, और इससे ज़्यादा दूध पिलाना ग़लत़ होगा। ह़न्फ़िया के नज़दीक ये मुद्दत तीन माह और ज़ाइद तक है जवाज़ रूए क़ुर्आन मजीद स़ह़ीह़ नहीं है।

٨- بَابُ شَهَادَةِ الْقَاذِفِ وَالسَّارِقِ وَالزَّانِي وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

बाब 8 : ज़िना की तोहमत लगाने वाले और चोर और ह़रामकार की गवाही का बयान

तश्रीह : बाब और तफ़्सीलाते ज़ेल से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि क़ाज़िफ़ (झूठ बोलने वाला) अगर तौबा करे तो आइन्दा उसकी गवाही मक़्बूल होगी। आयत से यही निकलता है और जुम्हूर उ़लमा का भी यही क़ौल है। हन्फ़िया कहते हैं कि तौबा करने से वो फ़ासिक़ नहीं रहता, लेकिन उसकी गवाही कभी मक़्बूल न होगी। कुछ ने कहा अगर उसको ह़द लग गई तो गवाही क़ुबूल होगी ह़द से पहले मक़्बूल न होगी।

तफ़्सीलाते मज़्कूरा में मुग़ीरा बिन शुअ़बा कूफ़ा के ह़ाकिम थे। मज़्कूरा तीनों शख़्सों ने उनकी निस्बत बयान किया कि उन्होंने उम्मे जमील नामी एक औरत से ज़िना किया है लेकिन चौथे गवाह ज़ियाद ने ये बयान किया कि मैंने दोनों को एक चादर में देखा, मुग़ीरा की सांस चढ़ गई थी, उससे ज़्यादा मैंने कुछ नहीं देखा। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उन तीनो को ह़द्दे क़ज़्फ़ लगाई।

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) क़ाज़िफ़ की गवाही क़ुबूल नहीं करते थे। लेकिन निकाह़ में क़ाज़िफ़ की शहादत को जाइज़ क़रार देते हैं। ह़ालाँकि निकाह़ का मामला भी कुछ ग़ैर अहम नहीं है। एक मर्द मुसलमान के लिये उ़म्र भर बल्कि औलाद दर औलाद ह़लाल-ह़राम का सवाल है। लेकिन इमाम स़ाह़ब क़ाज़िफ़ की गवाही निकाह़ में क़ुबूल मानते हैं इसी त़रह़ रमज़ान के चाँद में भी क़ाज़िफ़ की शहादत के क़ाइल हैं। पस मा'लूम हुआ कि उनका पहला क़ौल कि क़ाज़िफ़ की शहादत क़ाबिले क़ुबूल नहीं वो क़ौल ग़लत़ है। जिसकी ग़लत़ी ख़ुद उन्हीं के दीगर अक़्वाले स़ह़ीह़ा से हो रही है। इस बाब में मसलके सलफ़ ही स़ह़ीह़ और वाजिबुत तस्लीम है कि क़ाज़िफ़ की शहादत मक़्बूल है। ह़ज़रत इमाम शाफ़िई (रह.) और अकष़र सल्फ़ का क़ौल ये है कि क़ाज़िफ़ जब तक अपने तईं झुठलाए नहीं उसकी तौबा स़ह़ीह़ नहीं होगी। और इमाम मालिक का क़ौल ये है कि जब वो नेक काम ज़्यादा करने लगे तो हम समझ जाएँगे कि उसने तौबा की, अब अपने तईं झुठलाना ज़रूरी नहीं। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का भी झुकाव इसी त़रफ़ मा'लूम होता है। कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) और उनके साथियों की रिवायत ग़ज़्व-ए-तबूक में मज़्कूर होगी। उनसे इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि क़ाज़िफ़ को सज़ा हो जाना भी यही तौबा है क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ज़ानी को और कअ़ब बिन मालिक और उनके साथियों को सज़ा देने के बाद तौबा की तकलीफ़ नहीं दी।

अल्फ़ाज़े बाब का तर्जुमा **व क़ाल बअ़ज़ुन्नासि** के तह़त ह़जरत ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) फ़र्माते हैं, **हाज़ा मन्क़ूलुन अनिल्हनफ़िय्यति वहतज्जू फी रद्दि शहादतिल्महदूदि बिअहादीष़ क़ालल्हुफ़्फ़ाज़ ला यस़िह्हु मिन्हा शैउन अल्ख़** या'नी यहाँ ह़न्फ़िया मुराद हैं जिनसे ये मन्क़ूल है कि क़ाज़िफ़ की शहादत जाइज़ नहीं अगरचे उसने तौबा कर ली हो उस बारे में उन्होंने ह़दीष़ों से इस्तिदलाल किया है, मगर ह़ुफ़्फ़ाज़े ह़दीष़ का कहना ये है कि उनमें से कोई भी ह़दीष़ जो वो अपनी दलील में पेश करते हैं स़ह़ीह़ नहीं है। उनमें से ज़्यादा मशहूर ह़दीष़ अ़म्र बिन शुऐ़ब अ़न अबीहि अ़न् जद्दह़ की है। जिसके अल्फ़ाज़ ये हैं **ला तजूज़ु शहादतु ख़ाइनिन व ला ख़ाइनतिन व ला महदूदुन फ़िल्इस्लाम** इस ह़दीष़ को अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है और तिर्मिज़ी ने उसके मिष़्ल ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से साथ ही ये भी कहा है, **ला यस़िह्हु** या'नी ये ह़दीष़ स़ह़ीह़ नहीं है और अबू ज़रअ़ा ने इसे मुंकिर कहा है।

﴿وَلاَ تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا، وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ. إِلاَّ الَّذِيْنَ تَابُوا﴾ [النور: ٤-٥] وَجَلَدَ عُمَرُ أَبَا بَكْرَةَ وَشِبْلَ بْنَ مَعْبَدٍ وَنَافِعًا بِقَذْفِ الْمُغِيْرَةِ، ثُمَّ اسْتَتَابَهُمْ وَقَالَ: مَنْ تَابَ قُبِلَتْ شَهَادَتُهُ. وَأَجَازَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُتْبَةَ وَعُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيْزِ وَسَعِيْدُ بْنُ جُبَيْرٍ وَطَاوُسٌ وَمُجَاهِدٌ وَالشَّعْبِيُّ وَعِكْرِمَةُ وَالزُّهْرِيُّ وَمُحَارِبُ بْنُ

और अल्लाह तआ़ला ने (सूरह नूर में) फ़र्माया, ऐसे तोहमत लगाने वालों की गवाही कभी न मानो, यही लोग तो बदकार हैं, मगर जो तौबा कर लें। तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अबूबक्र, शिब्ल बिन मअ़बद (उनके माँ जाए भाई) और नाफ़ेअ़ बिन ह़ारिष़ को ह़द लगाई मुग़ीरह पर तोहमत रचाने की वजह से। फिर उनसे तौबा कराई और कहा जो कोई तौबा कर ले उसकी गवाही क़ुबूल होगी। और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा और उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ और सईद बिन जुबैर और त़ाऊस और मुजाहिद और शअ़बी और इक्रिमा और ज़ुह्री और मह़ारिब बिन दष़ार और शुरैह़ और मुआ़विया बिन क़ुर्रह़ ने भी तौबा के बाद उसकी गवाही को जाइज़

دِثَارٍ وَشُرَيْحٌ وَمُعَاوِيَةُ بْنُ قُرَّةَ. وَقَالَ أَبُو الزِّنَادِ: الأَمْرُ عِنْدَنَا بِالْمَدِينَةِ إِذَا رَجَعَ الْقَاذِفُ عَنْ قَوْلِهِ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ قُبِلَتْ شَهَادَتُهُ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ وَقَتَادَةُ: إِذَا أَكْذَبَ نَفْسَهُ جُلِدَ وَقُبِلَتْ شَهَادَتُهُ. وَقَالَ الثَّوْرِيُّ: إِذَا جُلِدَ الْعَبْدُ ثُمَّ أُعْتِقَ جَازَتْ شَهَادَتُهُ، وَإِنِ اسْتُقْضِيَ الْمَحْدُودُ فَقَضَايَاهُ جَائِزَةٌ. وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: لاَ تَجُوزُ شَهَادَةُ الْقَاذِفِ وَإِنْ تَابَ. ثُمَّ قَالَ: لاَ يَجُوزُ نِكَاحٌ بِغَيْرِ شَاهِدَيْنِ، فَإِنْ تَزَوَّجَ بِشَهَادَةِ مَحْدُودَيْنِ جَازَ، وَإِنْ تَزَوَّجَ بِشَهَادَةِ عَبْدَيْنِ لَمْ يَجُزْ. وَأَجَازَ شَهَادَةَ الْمَحْدُودِ وَالْعَبْدِ وَالأَمَةِ لِرُؤْيَةِ هِلاَلِ رَمَضَانَ. وَكَيْفَ تُعْرَفُ تَوْبَتُهُ. وَقَدْ نَفَى النَّبِيُّ ﷺ الزَّانِيَ سَنَةً، وَنَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ كَلاَمِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ وَصَاحِبَيْهِ حَتَّى مَضَى خَمْسُونَ لَيْلَةً.

रखा है और अबुज़्ज़िनाद ने कहा हमारे नज़दीक मदीना तय्यिबा में तो ये हुक्म है जब क़ाज़िफ़ अपने क़ौल से फिर जाए और इस्तिग़फ़ार कर ले तो उसकी गवाही क़ुबूल होगी और शअ़बी और क़तादा ने कहा जब वो अपने तईं झुठलाए और उसको हद पड़ जाए तो उसकी गवाही क़ुबूल होगी। और सुफ़यान ष़ौरी ने कहा जब ग़ुलाम को हद्दे क़ज़फ़ पड़े तो उसके बाद वो आज़ाद हो जाए तो उसकी गवाही क़ुबूल होगी। और जिसको हद्दे क़ज़फ़ पड़ी हो अगर वो क़ाज़ी बनाया जाए तो उसका फ़ैसला नाफ़िज़ होगा। और कुछ लोग (इमाम अबू ह़नीफ़ा रह.) कहते हैं क़ाज़िफ़ की गवाही क़ुबूल न होगी, चाहे वो तौबा कर ले। फिर ये भी कहते हैं कि बग़ैर दो गवाहों की गवाही से निकाह़ किया तो निकाह़ दुरुस्त होगा। अगर दो ग़ुलामों की गवाही से किया तो दुरुस्त न होगा और उन ही लोगों ने हद्दे क़ज़फ़ पड़े हुए लोगों की और लौण्डी ग़ुलाम की गवाही रमज़ान के चाँद के लिये दुरुस्त रखी है। 1.(और इस बाब में ये बयान है कि क़ाज़िफ़ की तौबा क्यूँकर मा'लूम होगी और आँह़ज़रत (ﷺ) ने तो ज़ानी को एक साल के लिये इख़राज किया और आप (ﷺ) ने कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) और उनके दोनों साथियों से मना कर दिया कोई बात न करे। पचास रातें इस तरह़ गुज़रीं।

1 (ह़ालाँकि ये भी एक क़िस्म की गवाही है तो जब मह़दूद फ़िल् क़ज़फ़ की गवाही ह़न्फ़िया ने नाजाइज़ रखी है तो इसको जाइज़ क्यूँ रखते हैं)

٢٦٤٨ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ: ((أَنَّ امْرَأَةً سَرَقَتْ فِي غَزْوَةِ الْفَتْحِ فَأُتِيَ بِهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ أَمَرَ فَقُطِعَتْ يَدُهَا. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَحَسُنَتْ تَوْبَتُهَا وَتَزَوَّجَتْ، وَكَانَتْ تَأْتِي بَعْدَ ذَلِكَ فَأَرْفَعُ حَاجَتَهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ.

[أطرافه في : ٣٤٧٥، ٣٧٣٢، ٣٧٣٣،

2648. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया और उनसे यूनुस ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया और उनसे यूनुस ने और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी कि एक औरत ने फ़तहे मक्का पर चोरी कर ली थी। फिर उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर किया गया और आपके हुक्म के मुताबिक़ उसका हाथ काट दिया गया। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर उन्होंने अच्छी तरह़ तौबा कर ली और शादी कर ली। उसके बाद वो आती थीं तो मैं उनकी ज़रूरत, रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पेश कर दिया करती थी। (दीगर मक़ाम : 3475, 3732, 3733)

.[٦٨٠٠ ،٦٧٨٨ ،٦٧٨٧ ،٤٣٠٤

तश्रीह : ये औरत मख़्ज़ूमी क़ुरैश के अशराफ़ (सम्मानित घराने) से थी। उसने आँहज़रत (ﷺ) के घर से एक चादर चुरा ली थी जैसे कि इब्ने माजा की रिवायत में उसकी सराहत मज़्कूर है और इब्ने सअ़द की रिवायत में ज़ेवर चुराना मज़्कूर है, मुम्किन है कि दोनों चीजें चुराई हों। बाब का मतलब हज़रत आइशा (रज़ि.) के क़ौल **फ़हसुनत तौबतुहा** से निकलता है। तहावी ने कहा चोर की शहादत बिल इज्माअ मक़्बूल है जब वो तौबा कर ले। बाब का मतलब ये था कि क़ाज़िफ़ की तौबा क्यूँ कर मक़्बूल होगी लेकिन हदीष में चोर की तौबा मज़्कूर है तो इमाम बुख़ारी (रह.) ने क़ाज़िफ़ को चोर पर क़यास किया है।

2649. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया अ़क़ील से, वो इब्ने शिहाब से, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन लोगों के लिये जो शादी शुदा न हों और ज़िना करें। ये हुक्म दिया था कि उन्हें सौ कोड़े लगाए जाएँ और एक साल के लिये जलावतन कर दिया जाए। (राजेअ़ : 2314)

٢٦٤٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ أَمَرَ فِيْمَنْ زَنَى وَلَمْ يُحْصَنْ بِجَلْدِ مِائَةٍ وَتَغْرِيْبِ عَامٍ)). [راجع: ٢٣١٤]

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्सद इस रिवायत के लाने से ये है कि जब हदीष में ग़ैर–मुह़्सिन की सज़ा यही मज़्कूर हुई कि सौ कोड़े मारो और एक साल के लिये जलावतन (तड़ीपार) करो और तौबा का अलग ज़िक्र नहीं किया तो मा'लूम हुआ कि उसका एक साल तक बेवतन रहना यही तौबा है। उसके बाद उसकी शहादत क़ुबूल होगी।

बाब 9 : अगर ज़ुल्म की बात पर लोग गवाह बनाना चाहें तो गवाह न बने

٩- بَابُ لاَ يَشْهَدُ عَلَى شَهَادَةِ جَوْرٍ إِذَا أُشْهِدَ

2650. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको अबू हय्यान तैमी (यह्या बिन सईद) ने, उन्हें शअ़बी ने, और उनसे नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरी माँ ने मेरे बाप से मुझे एक चीज़ हिबा करने के लिये कहा (पहले तो उन्होंने इंकार कर दिया क्योंकि दूसरी बीवी के भी औलाद थी) फिर राज़ी हो गए और मुझे वो चीज़ हिबा कर दी। लेकिन माँ ने कहा कि जब तक आप नबी करीम (ﷺ) को इस मामले में गवाह न बनाएँ मैं इस पर राज़ी न होऊँगी। चुनाँचे वालिद ने मेरा हाथ पकड़कर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। मैं अभी नौउ़म्र था। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि इस लड़के की माँ अ़म्रह बिन्ते रवाहा (रज़ि.) मुझसे एक चीज़ इसे हिबा करने के लिये कह रही हैं। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि उसके अ़लावा और भी तुम्हारे लड़के है? उन्होंने कहा हाँ, हैं।

٢٦٥٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو حَيَّانَ التَّيْمِيُّ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((سَأَلَتْ أُمِّي أَبِي بَعْضَ الْمَوْهِبَةِ لِي مِنْ مَالِهِ، ثُمَّ بَدَا لَهُ فَوَهَبَهَا لِي، فَقَالَتْ: لاَ أَرْضَى حَتَّى تُشْهِدَ النَّبِيَّ ﷺ. فَأَخَذَ بِيَدِي وَأَنَا غُلاَمٌ فَأَتَى بِيَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((إِنَّ أُمَّهُ بِنْتَ رَوَاحَةَ سَأَلَتْنِي بَعْضَ الْمَوْهِبَةِ لِهَذَا. قَالَ: ((أَلَكَ وَلَدٌ سِوَاهُ؟)) قَالَ: نَعَمْ. فَأُرَاهُ قَالَ : ((لاَ

تُشْهِدْنِي عَلَى جَوْرٍ)). وَقَالَ أَبُو حَرِيْزٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ: ((لاَ أَشْهَدُ عَلَى جَوْرٍ)).
[راجع: ٢٥٨٦]

नोअ़मान (रज़ि.)! ने बयान किया, मेरा ख़्याल है कि आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया तो मुझको ज़ुल्म की बात पर गवाह न बना और अबू हरीज़ ने शअ़बी से ये नक़ल किया कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया मैं ज़ुल्म की बात पर गवाह नहीं बनता। (राजेअ़ : 2586)

गवाह पर अगर ये ज़ाहिर है कि ये ज़ुल्म है तो फिर उसका फ़र्ज़ है कि उसके हक़ में हर्गिज़ गवाही न दे वरना वो भी उस गुनाह में शरीक हो जाएगा।

٢٦٥١ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو جَمْرَةَ قَالَ : سَمِعْتُ زَهْدَمَ بْنَ مُضَرِّبٍ قَالَ: سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خَيْرُكُمْ قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُونَهُمْ - قَالَ عِمْرَانُ: لاَ أَدْرِي أَذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ بَعْدَ قَرْنَيْنِ أَوْ ثَلاَثَةً - قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ بَعْدَكُمْ قَوْمًا يَخُونُونَ وَلاَ يُؤْتَمَنُونَ، وَيَشْهَدُونَ وَلاَ يُسْتَشْهَدُونَ، وَيَنْذِرُونَ وَلاَ يَفُونَ، وَيَظْهَرُ فِيْهِمُ السِّمَنُ)).
[أطرافه في: ٣٦٥٠، ٦٤٢٨، ٦٦٩٥].

2651. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अबू हम्ज़ा ने बान किया कि मैंने ज़ह्दम बिन मुज़र्रिब (रह.) से सुना कि मैंने इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से सुना और उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुममें सबसे बेहतर मेरे ज़माने के लोग (सहाबा) हैं फिर वो लोग जो उनके बाद आएँगे। (ताबेईन) फिर वो लोग जो उसके भी बाद आएँगे (तबेअ़ ताबेईन) इमरान ने बयान किया कि मैं नही जानता आँहज़रत (ﷺ) ने दो ज़मानों का (अपने बाद) ज़िक्र फ़र्माया या तीन का फिर आपने फ़र्माया कि तुम्हारे बाद ऐसे लोग पैदा होंगे जो चोर होंगे, जिनमें दयानत का नाम न होगा। उनसे गवाही देने के लिये नहीं कहा जाएगा। लेकिन वो गवाहियाँ देते फिरेंगे। नज़्रें मानेंगे लेकिन पूरी नहीं करेंगे, मोटापा उनमें आम होगा।

(दीगर मक़ाम : 3650, 6428, 6695)

तश्रीह : मत़लब ये है कि न गवाही में उनको बाक होगा न क़सम खाने में, जल्दी के मारे कभी गवाही पहले अदा करेंगे फिर क़सम खाएँगे। कभी क़सम पहले खा लेंगे फिर गवाही देंगे।

हदीष़ के जुम्ला यश्हदूना वला यस्तश्हिदूना पर हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं **व युआरिज़ुहू मा रवाहु मुस्लिम मिन हदीषि जैदिब्नि खालिदिन मर्फ़ूअन अ़ला उख़्बिरुकुम बिख़ैरिश्शुहदाइल्लज़ी याती बिश्शहादति क़ब्ल अंय्यस्अलहा वख़्तलफल्उलमाउ फी तर्जीहिहिमा फजनह इब्नु अब्दिल्बर्रि इला तर्जीहि हदीषि ज़ैदिब्नि ख़ालिदिन लिकौनिही मिन रिवायति अहलिल्मदीनति फक़द्दिमहू अ़ला रिवायति अहलिल्इराक़ि व बालग फज़अम अन्न हदीष़ इम्रान हाज़ा ला अस्ल लहू व जनह गैरुहू इला तर्जीहि हदीषि इम्रान लिइत्तिफ़ाक़ि साहिबस्सहीहि अ़लैहि व इन्फ़िरादु मुस्लिमिन बिइख़राजि हदीषि ज़ैदिब्नि ख़ालिदिन व जहब आखरुन इलल्जमइ बैनहुमा (अल्ख़)** (फ़त्हुल्बारी)

या'नी **यश्हदून वला यश्तश्हिदूना** से ज़ैद बिन ख़ालिद की हदीष़ मर्फ़ूअ़न मुआरिज़ है, जिसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, जिसका तर्जुमा ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया किया मैं तुमको बेहतरीन गवाहों की ख़बर न दूँ? ये वो लोग होंगे कि वो त़लब किये जाने से पहले ही गवाही दें दें। दोनों अहादीष़ की तरजीह में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। इब्ने अब्दुल बर ने हदीष़े ज़ैद बिन ख़ालिद (मुस्लिम) को तरजीह दी है क्योंकि ये अहले मदीना की रिवायत है। और हदीष़े मज़्कूर अहले

इराक़ की रिवायत से है। पस अहले इराक़ पर अहले मदीना को तरजीह़ ह़ासिल है। उन्होंने यहाँ तक मुबालग़ा किया कि ह़दीषे इमरान मज़्कूरा को कह दिया कि उसकी कोई अस़ल नहीं (ह़ालाँकि उनका ऐसा कहना भी स़ह़ीह़ नहीं है)। दूसरे उलमा ने ह़दीषे इमरान को तरजीह़ दी है इसलिये कि उस पर दोनों इमामों बुख़ारी व इमाम मुस्लिम का इत्तिफ़ाक़ है। और ह़दीष ज़ैद बिन ख़ालिद को सिर्फ़ इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है। तीसरा गिरोहे उलमा वो है जो इन दोनों अह़ादीष में तत्बीक़ देने का क़ाइल है।

पहली तत्बीक़ ये दी गई है कि ह़दीषे ज़ैद में ऐसे शख़्स की गवाही मुराद है जिसे किसी इंसान का ह़क़ मा'लूम है और वो इंसान ख़ुद उससे ला इल्म (अनभिज्ञ) है, पस वो पहले ही जाकर उस स़ाह़िबे-ह़क़ के ह़क़ में गवाही देकर उसका ह़क़ षाबित कर देता है। या ये कि उस शहादत का कोई और आलिम ज़िन्दा न हो पस वो उस शहादत के मुस्तह़िक़्क़ीन वरषा को ख़ुद मुत्तलअ़ कर दे और गवाही देकर उनको मा'लूम करा दे। इस जवाब को अकषर उलमा ने पसन्द किया है। और भी कई तौजीहात की गई हैं जो फ़त्ह़ुल बारी में मज़्कूर हैं। पस बेहतर यही है कि ऐसे तआ़रिज़ात को मुनासिब तत्बीक़ से उठाया जाए न कि किसी स़ह़ीह़ ह़दीष का इंकार किया जाए।

٢٦٥٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ. ثُمَّ يَجِيْءُ أَقْوَامٌ تَسْبِقُ شَهَادَةُ أَحَدِهِمْ يَمِينَهُ وَيَمِينُهُ شَهَادَتَهُ)). قَالَ إِبْرَاهِيمُ: ((وَكَانُوا يَضْرِبُونَنَا عَلَى الشَّهَادَةِ وَالْعَهْدِ)).
[أطرافه في: ٣٦٥١، ٦٤٢٩، ٦٦٥٨].

2652. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी मंसूर से, उन्होंने इब्राहीम नख़ई से, उन्हें उबैदा ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सबसे बेहतर मेरे ज़माना के लोग हैं, फिर वो लोग जो उसके बाद होंगे। फिर वो लोग जो उसके बाद होंगे और उसके बाद ऐसे लोगों का ज़माना आएगा जो क़सम से पहले गवाही देंगे और गवाही से पहले क़सम खाएँगे। इब्राहीम नख़ई (रह.) ने बयान किया कि हमारे बड़े बुज़ुर्ग शहादत और अहद का लफ़्ज़ ज़ुबान से निकालने पर हमें मारते थे। (दीगर मक़ाम : 3651, 6429, 6658)

मतलब ये कि अश्हदु बिल्लाहि या अ़ला अ़हदिल्लाह ऐसी बातों के मुँह से निकालने पर हमारे बुज़ुर्ग हमको मारा करते थे ताकि क़सम खाने की आ़दत न पड़ जाए। मौक़ा बे मौक़ा क़सम खाने की आ़दत बेहतर नहीं है क़सम में एह़तियात़ लाज़मी है।

बाब 10 : झूठी गवाही देना बड़ा गुनाह है

١٠- بَابُ مَا قِيْلَ فِي شَهَادَةِ الزُّوْرِ

لِقَوْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ﴿وَالَّذِينَ لاَ يَشْهَدُونَ الزُّورَ﴾، وَكِتْمَانِ ﴿وَلاَ تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ﴾ تَلْوُوا أَلْسِنَتَكُمْ بِالشَّهَادَةِ.

अल्लाह तआला ने (सूरह फ़ुरक़ान में) फ़र्माया बहिश्त का बाला ख़ाना उनको मिलेगा जो लोग झूठी गवाही नहीं देते। इसी तरह गवाही को छुपाना भी गुनाह है। (अल्लाह तआला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया कि) गवाही को न छुपाओ। और जिस शख़्स ने गवाही को छुपाया तो उसके दिल में खोट है और अल्लाह तआला सब कुछ जानता है जो तुम करते हो। (और अल्लाह तआला का फ़र्मान सूरह निसा में कि) अगर तुम बीचदार बनाओगे अपनी ज़ुबानों को (झूठी) गवाही देकर।

इसी आयत की तफ़्सीर में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, **क़ाल तल्वी लिसानुक बिग़ैरिल हक़्क़ि व हियलल जलजतु फ़ला तुक़ीमुश्शहादतु अला वज्हिहा** या'नी मुराद ये है कि तू अपनी ज़ुबान को ह़क़ बात से फेरकर तोड़-मोड़कर बोले जिससे गवाही स़ह़ीह़ त़ौर पर अदा न हो सके। शारेअ़ अलैहिस्सलाम का मक़्सद ये है कि जहाँ ह़क़ और स़दाक़त की गवाही

का मौक़ा हो वहाँ खुलकर साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में गवाही का फ़र्ज़ अदा करना चाहिये। किनाया इस्तिआरा इशारा वग़ैरह ऐसे मवाक़ेअ पर दुरुस्त नहीं हैं।

2653. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, कहा हमने वहब बिन जरीर और अब्दुल मलिक बिन इब्राहीम से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से कबीरा गुनाहों के बारे में पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना, माँ—बाप की नाफ़र्मानी करना, किसी की जान लेना और झूठी गवाही देना। इस रिवायत की मुताबअत गुन्दर, अबू आमिर, बहज़ और अब्दुस्समद ने शुअबा से की है। (दीगर मक़ाम : 5977, 6871)

٢٦٥٣– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُنِيْرٍ سَمِعَ وَهْبَ بْنَ جَرِيْرٍ وَعَبْدَ الْمَلِكِ بْنَ إِبْرَاهِيْمَ قَالاَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْكَبَائِرِ قَالَ: الإِشْرَاكُ بِاللهِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ، وَقَتْلُ النَّفْسِ، وَشَهَادَةُ الزُّوْرِ)). تَابَعَهُ غُنْدَرٌ وَأَبُو عَامِرٍ وَبَهْزٌ وَعَبْدُ الصَّمَدِ عَنْ شُعْبَةَ.

[طرفاه في: ٥٩٧٧، ٦٨٧١].

तश्रीह : कबीरा गुनाह और भी बहुत हैं। यहाँ रिवायत के लाने का मक़्सद हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का झूठी गवाही की मज़म्मत करना है कि ये भी कबीरा गुनाह में दाख़िल है जिसकी मज़म्मत में और भी बहुत सी रिवायात वारिद हुई हैं। बल्कि झूठ बोलने, झूठी गवाही देने को अकबरुल कबाइर में शुमार किया गया है या'नी बहुत ही बड़ा कबीरा गुनाह झूठी गवाही देना है।

2654. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे जरीरी ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके बाप ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क्या मैं तुमको सबसे बड़े गुनाह न बताऊँ? तीन बार आप (ﷺ) ने इसी तरह फ़र्माया। सहाबा ने अर्ज़ किया, हाँ या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह का किसी को शरीक ठहराना, माँ—बाप की नाफ़र्मानी करना, आप उस वक़्त तक टेक लगाए हुए थे लेकिन अब आप सीधे बैठ गए और फ़र्माया, हाँ और झूठी गवाही भी। उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने इस जुम्ले को इतनी बार दोहराया कि हम कहने लगे काश! आप ख़ामोश हो जाते। इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे जरीरी ने बयान किया और उनसे अब्दुर्रहमान ने बयान किया। (दीगर मक़ाम : 5976, 6273, 6274)

٢٦٥٤– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ قَالَ حَدَّثَنَا الْجُرَيْرِيُّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَبَائِرِ (ثَلاَثًا؟) قَالُوا: بَلَى يَارَسُوْلَ اللهِ. قَالَ: الإِشْرَاكُ بِاللهِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ – وَجَلَسَ وَكَانَ مُتَّكِئًا فَقَالَ –: أَلاَ وَقَوْلُ الزُّوْرِ)). قَالَ: فَمَا زَالَ يُكَرِّرُهَا حَتَّى قُلْنَا : لَيْتَهُ سَكَتَ. وَقَالَ إِسْمَاعِيْلُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ: حَدَّثَنَا الْجُرَيْرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ.

[أطرافه في: ٥٩٧٦، ٦٢٧٣، ٦٢٧٤،

आपको बार बार ये फ़र्माने में तकलीफ़ हो रही थी, सहाबा ने शफ़क़त की राह से ये चाहा कि आप बार बार फ़र्माने की तकलीफ़ न उठाएँ, ख़ामोश हो जाएँ; जबकि आप कई बार फ़र्मा चुके हैं। उलमा ने गुनाहों को सग़ीरा और कबीरा दो क़िस्मों में बांटा है, जिसके लिये दलाइल बहुत हैं। कुछ का ऐसा ख़्याल है कि सग़ीरा गुनाह कोई गुनाह नहीं, गुनाह सारे ही कबीरा हैं। इमाम

ग़ज़ाली (रह.) फ़र्माते हैं, **इन्कारुल फ़र्क़ि बैनल कबीरते वस्सगीरते ला युलीक़ु बिल फ़क़ीह** या'नी दीन की समझ रखने वाले के लिये मुनासिब नहीं कि वो कबीरा और सग़ीरा गुनाहों के फ़र्क़ का इंकार करें। आप (ﷺ) ने झूठी गवाही को बार बार इसलिये ज़िक्र किया कि ये बहुत ही बड़ा गुनाह है और बहुत से मफ़ासिद का पेश ख़ैमा है, आपका मक़्सद था कि मुसलमान हर्गिज़ उसका इर्तिकाब न करें।

बाब 11 : अँधे आदमी की गवाही और उसके मामले का बयान

١١- بَابُ شَهَادَةِ الأَعْمَى وَأَمْرِهِ وَنِكَاحِهِ وَإِنْكَاحِهِ وَمُبَايَعَتِهِ

और उसका अपना निकाह करना या किसी दूसरे का निकाह कराना, या उसकी ख़रीद व फ़रोख्त या उसकी अज़ान वग़ैरह जैसे इमामत और इक़ामत भी अंधे की दुरुस्त है इसी तरह अंधे की गवाही उन तमाम उमूर में जो आवाज़ से समझे जा सकते हों। क़ासिम, इब्ने सीरीन, ज़ुह्री और अ़ता ने भी अंधे की गवाही जाइज़ रखी है। इमाम शअ़बी ने कहा कि अगर वो ज़हीन और समझदार हे तो उसकी गवाही जाइज़ है। हकम ने कहा कि बहुत सी चीजों मे उसकी गवाही जाइज़ हो सकती है। ज़ुहरी ने कहा कि अच्छा बताओ अगर इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) किसी मामले में गवाही दें तो तुम उसे रद्द कर सकते हो? और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) (जब नाबीना हो गए थे तो) सूरज ग़ुरूब होने के वक़्त एक शख़्स को भेजते (ताकि आबादी से बाहर जाकर देख आएँ कि सूरज पूरी तरह ग़ुरूब हो चुका है या नहीं और जब वो आकर ग़ुरूब होने की ख़बर देते तो) आप इफ़्तार करते थे। इसी तरह आप तुलूए फ़ज्र के बारे में पूछते और जब आपसे कहा जाता कि हाँ फ़ज्र तुलूअ़ हो गई तो दो रकअ़त (सुन्नते- फ़ज्र) नमाज़ पढ़ते। सुलैमान बिन यसार (रह.) ने कहा कि आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िरी के लिये मैंने उनसे इजाज़त ली तो उन्होंने मेरी आवाज़ पहचान ली और कहा सुलैमान अंदर आ जाओ क्यूँकि तुम ग़ुलाम हो। जब तक तुम पर (माले किताबत में से) कुछ भी बाक़ी न रह जाएगा। समुरा बिन जुन्दब (रज़ि.) ने नक़ाबपोश औरत की गवाही जाइज़ क़रार दी थी।

وَقَبُولِهِ فِي التَّأْذِينِ وَغَيْرِهِ . وَمَا يُعْرَفُ بِالأَصْوَاتِ. وَأَجَازَ شَهَادَتَهُ قَاسِمٌ وَالْحَسَنُ وَابْنُ سِيرِينَ وَالزُّهْرِيُّ وَعَطَاءٌ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ: تَجُوزُ شَهَادَتُهُ إِذَا كَانَ عَاقِلاً. وَقَالَ الْحَكَمُ: رُبَّ شَيْءٍ تَجُوزُ فِيهِ. وَقَالَ الزُّهْرِيُّ: أَرَأَيْتَ ابْنَ عَبَّاسٍ لَوْ شَهِدَ عَلَى شَهَادَةٍ أَكُنْتَ تَرُدُّهُ؟ وَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَبْعَثُ رَجُلاً، إِذَا غَابَتِ الشَّمْسُ أَفْطَرَ. وَيَسْأَلُ عَنِ الْفَجْرِ فَإِذَا قِيلَ لَهُ طَلَعَ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ. وَقَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ يَسَارٍ:

तश्रीह : आषारे मज़्कूरा में से क़ासिम के अष़र को सईद बिन मंसूर ने और हसन और इब्ने सीरीन और ज़ुहरी के अष़र को इब्ने अबी शैबा ने और अ़ता के अष़र को अष्रम ने वस्ल किया है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा मालिकिया का यही मज़हब है कि अंधे की गवाही क़ौल में और बहरे की गवाही फ़ेअ़ल में दुरुस्त है। और गवाह के लिये ये ज़रूरी नहीं कि वो आँखों वाला और कानों वाला हो। और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) के अष़र को अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने वस्ल किया, उस आदमी का नाम मा'लूम नहीं हुआ। इस अष़र से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि अंधा अपने मुआमलात में दूसरे आदमी पर ए'तिमाद कर सकता है हालाँकि वो उसकी सूरत नहीं देखता। सुलैमान बिन यसार मज़्कूर हज़रत आइशा (रज़ि.) के ग़ुलाम

थे और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) गुलाम से पर्दा करना ज़रूरी नहीं समझती थी ख़्वाह अपना गुलाम हो या किसी और का। सुलैमान बिन यसार मुकातब थे। उनका बदले किताबत अभी अदा नहीं हुआ था। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब तक बदले किताबत में से एक पैसा भी तुझ पर बाक़ी है तू गुलाम ही समझा जाएगा। नक़ाब डालने वाली औरत का नाम मा'लूम नहीं हुआ। (वह़ीदी)

2655. हमसे मुहम्मद बिन उ़बैद बिन मैमून ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके बाप ने, और उनसे आयशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक शख़्स को मस्जिद में कुर्आन पढ़ते सुना तो फ़र्माया कि उन पर अल्लाह तआला रहम फ़र्माए मुझे उन्होंने इस वक़्त फ़लाँ और फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जिन्हें मैं फ़लाँ फ़लाँ सूरतों में से भूल गया था। अ़ब्बाद बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अपनी रिवायत में आइशा (रज़ि.) से ये ज़्यादती की है कि नबी करीम (ﷺ) ने मेरे घर में तहज्जुद पढ़ी। उस वक़्त आप (ﷺ) ने अ़ब्बाद (रज़ि.) की आवाज़ सुनी कि वो मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे हैं। आपने पूछा आइशा! क्या ये अ़ब्बाद की आवाज़ है? मैंने कहा जी हाँ! आपने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! अ़ब्बाद पर रह़म फ़र्मा।

(दीगर मक़ाम : 5037, 5038, 5042)

٢٦٥٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عِيْسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً يَقْرَأُ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ: ((رَحِمَهُ اللهُ، لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا آيَةً أَسْقَطْتُهُنَّ مِنْ سُورَةِ كَذَا وَكَذَا)). وَزَادَ عَبَّادُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَائِشَةَ: ((تَهَجَّدَ النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْتِي، فَسَمِعَ صَوتَ عَبَّادٍ يُصَلِّي فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ: يَا عَائِشَةُ، أَصَوتُ عَبَّادٍ هَذَا؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: اللَّهُمَّ ارْحَمْ عَبَّادًا)).

[أطرافه في: ٥٠٣٧، ٥٠٣٨، ٥٠٤٢].

इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब का तर्जुमा से ज़ाहिर है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद या अ़ब्बाद की सूरत नहीं देखी। सिर्फ़ आवाज़ सुनी थी और उस पर ए'तिमाद किया, तो मा'लूम हुआ कि अंधा आदमी भी आवाज़ सुनकर शहादत दे सकता है। अगर उसकी आवाज़ पहचानता हो। इमाम ज़ुहरी यही बतला रहे हैं कि नाबीना की गवाही क़ुबूल हो सकती है। जैसा कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) हैं। भला ये मुम्किन है कि नाबीना होने की वजह से कोई उनकी गवाही क़ुबूल न करे।

2656. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह से और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बिलाल (रज़ि.) रात में अज़ान देते हैं। इसलिये तुम लोग सेहरी खा पी सकते हो यहाँ तक कि (फ़ज्र के लिये) दूसरी अज़ान पुकारी जाए। या (ये फ़र्माया) यहाँ तक कि अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) की अज़ान सुन लो। अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) नाबीना थे और जब तक उनसे कहा न जाता सुबह

٢٦٥٦- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِنَّ بِلاَلاً يُؤَذِّنُ بِلَيْلٍ، فَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يُؤَذِّنَ - أَوْ قَالَ : حَتَّى تَسْمَعُوا أَذَانَ - ابْنِ أُمِّ مَكْتُومٍ)) وَكَانَ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ رَجُلاً أَعْمَى

हो गई है, वो अज़ान नहीं देते थे। (राजेअ : 617)

لا يُؤَذِّنُ حَتَّى يَقُولَ لَهُ النَّاسُ: أَصْبَحْتَ.
[راجع: ٦١٧]

इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब से ज़ाहिर है कि लोग इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) की अज़ान पर ए'तिमाद करते, खाना–पीना छोड़ देते। ह़ालाँकि वो नाबीना थे। इससे भी नाबीना की गवाही का इष्बात मक़्सूद है और उन लोगों की तर्दीद जो नाबीना की गवाही क़ुबूल न करने का फ़त्वा देते हैं।

2657. हमसे ज़ियाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन वरदान ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका से और उनसे मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के यहाँ चन्द क़बाएँ आईं तो मुझसे मेरे बाप मख़्रमा (रज़ि.) ने कहा कि मेरे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में चलो। मुम्किन है आप उनमें से कोई मुझे इनायत फ़र्माएँ। मेरे वालिद (हुज़ूरे अकरम ﷺ के घर पहुँचकर) दरवाज़े पर खड़े हो गए और बातें करने लगे। आप (ﷺ) ने उनकी आवाज़ पहचान ली और बाहर तशरीफ़ लाए, आपके पास एक क़बा भी थी, आप उसकी ख़ूबियाँ बयान करने लगे। और फ़र्माया कि मैंने ये तुम्हारे ही लिये अलग कर रखी थी, सिर्फ़ तुम्हारे लिये। (राजेअ : 2599)

٢٦٥٧– حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ وَرْدَانَ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمَتْ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَقْبِيَةٌ، فَقَالَ لِي أَبِي مَخْرَمَةُ: انْطَلِقْ بِنَا إِلَيْهِ عَسَى أَنْ يُعْطِيَنَا مِنْهَا شَيْئًا. فَقَامَ أَبِي عَلَى الْبَابِ فَتَكَلَّمَ، فَعَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ صَوْتَهُ. فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ وَمَعَهُ قَبَاءٌ وَهُوَ يُرِيهِ مَحَاسِنَهُ وَهُوَ يَقُولُ: ((خَبَأْتُ هَذَا لَكَ، خَبَأْتُ هَذَا لَكَ)). [راجع: ٢٥٩٩]

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **फ़इन्न फ़ीहि अन्नहू इअतमद अ़ला सौतिही क़ब्ल अंय्यरा शख़्सहू** या'नी इस ह़दीष़ से मसला यूँ षाबित हुआ कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत मख़्रमा (रज़ि.) की सिर्फ़ आवाज़ सुनते ही उन पर ए'तिमाद कर लिया और आप (ﷺ)) बाहर तशरीफ़ ले आए तो मा'लूम हुआ कि अँधा आदमी भी आवाज़ से सुने तो शहादत दे सकता है अगर उसकी आवाज़ पहचानता हो। इससे आँह़ज़रत (ﷺ) की ग़ुरबा-परवरी भी ज़ाहिर है कि आप ग़रीबों का किस ह़द तक ख़्याल फ़र्माते थे।

बाब 12 : औरतों की गवाही का बयान

١٢– بَابُ شَهَادَةِ النِّسَاءِ

और (सूरह बक़रः में) अल्लाह तआ़ला का फ़र्माना कि, अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें (गवाही में पेश करो)

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ﴾ [البقرة: ٢٨٢]

2658. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें अ़याज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उन्हें अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या औरत की गवाही मर्द की गवाही के आधे के बराबर नहीं है? हमने अ़र्ज़ किया क्यूँ नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि यही तो उनकी अ़क़्ल का

٢٦٥٨– حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدٌ عَنْ عِيَاضِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: ((أَلَيْسَ شَهَادَةُ الْمَرْأَةِ مِثْلَ نِصْفِ

شَهَادَةِ الرَّجُلِ؟ قُلْنَ بَلَى. قَالَ: فَذَلِكَ مِنْ نُقْصَانِ عَقْلِهَا)). [راجع: ٣٠٤]

नुक़्सान है।

(राजेअ़ : 304)

तश्रीह : जब ही तो अल्लाह तआला ने दो औरतों को एक मर्द के बराबर क़रार दिया है। तमाम हुकमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि औरत की ख़िल्क़त ब निस्बत मर्द के ज़ईफ़ है। इसके क़वा दिमाग़िया भी जिस्मानी क़वा के तरह मर्द से कमज़ोर हैं । अब अगर शाज़ोनादिर कोई औरत ऐसी निकल आई कि जिसकी जिस्मानी या दिमाग़ी ताक़त मर्दों से ज़्यादा हो तो उससे अकषरी फ़ित्री क़ायदे में कोई ख़लल नहीं आ सकता। ये सहीह है कि ता'लीम से मर्द और औरत के क़वा दिमाग़ी में इस तरह रियाज़त और कसरत से क़वाए जिस्मानी में तरक़्क़ी हो सकती है। मगर किसी हाल में मर्दों पर फ़ज़ीलत मर्द के सिन्फ़ पर षाबित नहीं हुई। और जिन लोगों ने ये ख़्याल किया है कि ता'लीम और रियाज़त से औरतें मर्दों पर फ़ज़ीलत हासिल कर सकती हैं। ये उनकी ग़लती है। इसलिये कि बहष नोअ़े ज़कूर और नोअ़े निस्वाँ में है न किसी ख़ास शख़्से मुज़क्कर या मुअन्नष में। क़स्तलानी ने कहा कि रमज़ान के चाँद की रिवायत में एक शख़्स की शहादत काफ़ी है और अम्वाल के दआवी में एक गवाह और मुद्दई की क़सम पर फ़ैसला हो सकता है इसी तरह अम्वाल और हुक़ूक़ में एक मर्द और दो औरतों की शहादत पर भी और हुदूद, निकाह और क़िसास में औरतों की शहादत जाइज़ नहीं है। (वहीदी)

हज़रत इमाम शाफ़िई (रह.) ने अपनी मुहतरमा वालिदा का वाक़िया बयान किया कि वो मक्का शरीफ़ की एक अदालत में एक औरत के साथ पेश हुईं। तो हाकिम ने इम्तिहान के तौर पर उनको अलग अलग करना चाहा। फ़ौरन उन्होंने कहा कि ऐसा करना जाइज़ नहीं है क्योंकि अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद में फ़र्माया है, **अन तज़िल्ल इहदाहुमा फतुज़क्किर इहदाहुमल्उख़रा** (अल बक़र : 282) उन दो गवाह औरतों मे से अगर एक भूल जाए तो दूसरी उसको याद दिला दे और ये जुदाई की सूरत में नामुम्किन है। हाकिम ने आपके इस्तिदलाल को तस्लीम किया।

बाब 13 : बांदियों और गुलामों की गवाही का बयान

١٣ - بَابُ شَهَادَةِ الإِمَاءِ وَالْعَبِيدِ

وَقَالَ أَنَسٌ : شَهَادَةُ الْعَبْدِ جَائِزَةٌ إِذَا كَانَ عَدْلاً. وَأَجَازَهُ شُرَيْحٌ وَزُرَارَةُ بْنُ أَوْفَى. وَقَالَ ابْنُ سِيْرِيْنَ: شَهَادَته جَائِزَةٌ إِلاَّ الْعَبْدِ لِسَيِّدِهِ. وَأَجَازَهُ الْحَسَنُ وَإِبْرَاهِيْمُ فِي الشَّيْءِ التَّافِهِ. وَقَالَ شُرَيْحٌ: كُلُّكُمْ بَنُو عَبِيْدٍ وَإِمَاءٍ.

और हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि ग़ुलाम अगर आदिल है तो उसकी गवाही जाइज़ है, शुरैह और ज़ुरारह बिन औफ़ा ने भी इसे जाइज़ क़रार दिया है। इब्ने सीरीन ने कहा कि उसकी गवाही जाइज़ है, सिवा इस सूरत के जब ग़ुलाम अपने मालिक के हक़ में गवाही दे। (क्योंकि उसमें मालिक की तरफ़दारी का अन्देशा रहता है) हसन और इब्राहीम ने मा'मूली चीजों में ग़ुलाम की गवाही की इजाज़त दी है। क़ाज़ी शुरैह ने कहा कि तुममें से हर शख़्स ग़ुलामों और बान्दियों की औलाद है।

मतलब ये है कि तुम सब अल्लाह के लौण्डी ग़ुलाम हो और अल्लाह ही के लौण्डी ग़ुलामों की औलाद हो, इसलिये किसी को किसी पर फ़ख़्र करना जाइज़ नहीं है। हमारे इमाम अहमद बिन हंबल ने इसी के मुवाफ़िक़ हुक्म दिया है कि लौण्डी ग़ुलाम की जब वो आदिल और षिक़ा हों, गवाही मक़्बूल है। मगर चारो इमामों ने इसको जाइज़ नहीं रखा। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) लौण्डी ग़ुलामों की शहादत जब वो आदिल षिक़ा हों षाबित फ़र्मा रहे हैं। बाब का तर्जुमा में नक़लकर्दा आषार से आपका मुद्दआ बख़ूबी षाबित होता है।

٢٦٥٩ - حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ

2659. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने, वो इब्ने अबी मुलैका से, उनसे उक़्बा बिन हारिष (रज़ि.) ने

(दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा और हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया कि मैंने इब्ने अबी मुलैका से सुना, कहा कि मुझसे उ़क़्बा बिन हारिष़ (रज़ि.) ने बयान किया, या (ये कहा कि) मैंने ये हदीष़ उनसे सुनी कि उन्होंने उम्मे यह्या बिन्ते अबी इहाब से शादी की थी। उन्होंने बयान किया कि फिर एक स्याह रंग वाली बांदी आई और कहने लगी कि मैंने तुम दोनों को दूध पिलाया है। मैंने उसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया, तो आप (ﷺ) ने मेरी तरफ़ से मुँह फेर लिया पस मैं जुदा हो गया। मैंने फिर आपके सामने जाकर उसका ज़िक्र किया, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अब (निकाह) कैसे (बाक़ी रह सकता है) जबकि तुम्हें उस औ़रत ने बता दिया है कि उसने तुम दोनों को दूध पिलाया था। चुनाँचे आपने उन्हें उम्मे यह्या को अपने साथ रखने से मना कर दिया। (राजेअ़ : 88)

الْحَارِثِ ح. وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا قَالَ يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُقْبَةُ بْنُ الْحَارِثِ أَوْ سَمِعْتُهُ مِنْهُ: أَنَّهُ تَزَوَّجَ أُمَّ يَحْيَى بِنْتَ أَبِي إِهَابٍ، قَالَ فَجَاءَتْ أَمَةٌ سَوْدَاءُ فَقَالَتْ: قَدْ أَرْضَعْتُكُمَا. فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَأَعْرَضَ عَنِّي، قَالَ: فَتَنَحَّيْتُ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ، قَالَ: ((وَكَيْفَ وَقَدْ زَعَمَتْ أَنَّهَا أَرْضَعَتْكُمَا. فَنَهَاهُ عَنْهَا)).[راجع: ٨٨]

इस हदीष़ में ज़िक्र है कि एक लौण्डी की शहादत आँहज़रत (ﷺ) ने क़ुबूल फ़र्माई और उसकी बिना पर एक सहाबी उ़क़्बा बिन हारिष़ (रज़ि.) और उनकी औ़रत में जुदाई करा दी, मा'लूम हुआ कि लौण्डी गुलामों की शहादत क़ुबूल की जा सकती है, जो लोग इसके ख़िलाफ़ कहते हैं उनका क़ौल दुरुस्त नहीं।

बाब 14 : दूध की माँ की गवाही का बयान

١٤- بَابُ شَهَادَةِ الْمُرْضِعَةِ

2660. हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया उमर बिन सईद से, वो इब्ने अबी मुलैका से, उनसे उ़क़्बा बिन हारिष़ ने बयान किया कि मैंने एक औ़रत से शादी की थी। फिर एक औ़रत आई और कहने लगी कि मैंने तुम दोनों को दूध पिलाया था। इसलिये मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने फ़र्माया कि जब तुम्हें बता दिया गया (कि एक ही औ़रत तुम दोनों की दूध की माँ है) तो फिर अब और क्या सूरत हो सकती है। अपनी बीवी को अपने से अलग कर दो या इसी तरह के अल्फ़ाज़ आपने फ़र्माए। (राजेअ़ : 88)

٢٦٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيْدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً، فَجَاءَتِ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: إِنِّي قَدْ أَرْضَعْتُكُمَا، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: وَكَيْفَ وَقَدْ قِيْلَ؟ دَعْهَا عَنْكَ. أَوْ نَحْوَهُ)). [راجع: ٨٨]

मा'लूम हुआ कि रज़ाअ़त के बारे में एक ही औ़रत मुरज़िआ़ (दूध पिलाने वाली) की शहादत काफ़ी है जैसा कि इस हदीष़ से ज़ाहिर है, इससे मुरज़िआ़ की शहादत का भी इष़्बात हुआ।

बाब 15 : औ़रतों का आपस में एक-दूसरे की अच्छी आ़दतों के बारे में गवाही देना

١٥- بَابُ تَعْدِيْلِ النِّسَاءِ بَعْضِهِنَّ بَعْضًا

2661. हमसे अबू रबीअ सुलैमान बिन दाऊद ने बयान किया, इमाम बुख़ारी ने कहा कि इस ह़दीष़ के कुछ मत़ालिब मुझको इमाम अह़मद बिन यूनुस ने समझाए। कहा हमसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यिब, अल्क़मा बिन वक़्क़ास लैष़ी और उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने वो क़िस्सा बयान किया, जब तोहमत लगाने वालों ने उन पर तोहमत लगाई लेकिन अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद उन्हें इससे बरी क़रार दिया। ज़ुहरी ने बयान किया (कि ज़ुहरी से बयान करने वाले, जिनका सनद में ज़ुह्री के बाद ज़िक्र है) तमाम रावियों ने आ़इशा (रज़ि.) की इस ह़दीष़ का एक एक ह़िस्सा बयान किया था, कुछ रावियों को कुछ दूसरे रावियों से ह़दीष़ ज़्यादा याद थी और वो बयान भी ज़्यादा बेहतर त़रीक़े पर कर सकते थे। बहरहाल उन सब रावियों से मैंने ये ह़दीष़ पूरी त़रह़ मह़फ़ूज़ कर ली थी जिसे वो आ़इशा (रज़ि.) से बयान करते थे। उन रावियो में हर एक की रिवायत से दूसरे रावी की तस्दीक़ होती थी। उनका बयान था कि आ़इशा (रज़ि.) ने कहा रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सफ़र मे जाने का इरादा करते तो अपनी बीवियों के दरम्यान क़ुर्आ डालते। जिसका नाम निकलता, सफ़र में वही आपके साथ जाती। चुनाँचे एक ग़ज़्वा के मौक़े पर जिसमें आप भी शिर्कत कर रहे थे, आप (ﷺ) ने क़ुर्आ डलवाया और मेरा नाम निकला। अब मैं आपके साथ थी। ये वाक़िया पर्दे की आयत के नाज़िल होने के बाद का है। ख़ैर मैं एक होद में सवार रहती, उसी में बैठे बैठे मुझको उतारा जाता था इस त़रह़ हम चलते रहे। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) जिहाद से फ़ारिग़ होकर वापस हुए और हम मदीना के क़रीब पहुँच गए तो एक रात आपने कूच का ऐलान करवाया। मैं ये हुक्म सुनते ही उठी और लश्कर से आगे बढ़ गई। जब ह़ाजत से फ़ारिग़ हुई तो कजावे के पास आ गई। वहाँ पहुँचकर जो मैंने अपना सीना टटोला तो मेरा अज़्फ़ार के काले नगीनों का हार मौजूद नहीं था। इसलिये मैं वहाँ दोबारा पहुँची (जहाँ क़ज़ाए ह़ाजत के लिये गई थी) और मैंने हार

٢٦٦١- حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ - وَأَفْهَمَنِي بَعْضَهُ أَحْمَدُ - قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ اللَّيْثِيِّ وَعُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوجِ النَّبِيِّ ﷺ حِيْنَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا فَبَرَّأَهَا اللهُ مِنْهُ. قَالَ الزُّهْرِيُّ وَكُلُّهُمْ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنْ حَدِيثِهَا- وَبَعْضُهُمْ أَوْعَى مِنْ بَعْضٍ وَأَثْبَتُ لَهُ اقْتِصَاصًا - وَوَعَيْتُ عَنْ كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمُ الْحَدِيْثَ الَّذِي حَدَّثَنِي عَنْ عَائِشَةَ، وَبَعْضُ حَدِيْثِهِمْ يُصَدِّقُ بَعْضًا. زَعَمُوا أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ سَفَرًا أَقْرَعَ بَيْنَ أَزْوَاجِهِ، فَأَيَّتُهُنَّ خَرَجَ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا مَعَهُ. فَأَقْرَعَ بَيْنَنَا فِي غَزَاةٍ غَزَاهَا فَخَرَجَ سَهْمِي فَخَرَجْتُ مَعَهُ بَعْدَ مَا أُنْزِلَ الْحِجَابُ، فَأَنَا أُحْمَلُ فِي هَوْدَجٍ وَأُنْزَلُ فِيهِ. فَسِرْنَا حَتَّى إِذَا فَرَغَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ غَزْوَتِهِ تِلْكَ وَقَفَلَ وَدَنَوْنَا مِنَ الْمَدِيْنَةِ آذَنَ لَيْلَةً بِالرَّحِيْلِ، فَقُمْتُ حِيْنَ آذَنُوا بِالرَّحِيْلِ فَمَشَيْتُ حَتَّى جَاوَزْتُ الْجَيْشَ، فَلَمَّا قَضَيْتُ شَأْنِي أَقْبَلْتُ إِلَى الرَّحْلِ فَلَمَسْتُ صَدْرِي، فَإِذَا عِقْدٌ لِي مِنْ جَزْعِ أَظْفَارٍ قَدِ انْقَطَعَ، فَرَجَعْتُ فَالْتَمَسْتُ عِقْدِي، فَحَبَسَنِي ابْتِغَاؤُهُ.

को तलाश किया। इस तलाश में देर हो गई। इस अर्से में वो अस्हाब जो मुझे सवार कराते थे, आए और मेरा होदज उठाकर मेरे ऊँट पर रख दिया। वो यही समझे कि मैं उसमें बैठी हूँ। उन दिनो औरतें हल्की–फुल्की होती थीं, भारी भरकम नहीं। गोश्त उनमें ज़्यादा नहीं रहता था क्योंकि बहुत मा'मूली ग़िज़ा खाती थीं। इसलिये उन लोगों ने जब होदज को उठाया तो उन्हें उसके बोझ में कोई फ़र्क़ मा'लूम नहीं हुआ। मैं यूँ भी नौ उम्र लड़की थी। चुनाँचे अस्हाब ने ऊँट को हाँक दिया और ख़ुद भी उसके साथ चलने लगे। जब लश्कर रवाना हो चुका तो मुझे अपना हार मिला और मैं पड़ाव की जगह आई। लेकिन वहाँ कोई आदमी मौजूद न था। इसलिये मैं उस जगह गई जहाँ पहले मेरा क़याम था। मेरा ख़्याल था कि जब वो लोग मुझे नहीं पाएँगे तो यहीं लौटकर आएँगे। (अपनी जगह पहुँचकर) मैं यूँ ही बैठी हुई थी कि मेरी आँख लग गई और मैं सो गई। स़फ़्वान बिन मुअत्तल सुलमी षुम्मा ज़क्वानी (रज़ि.) लश्कर के पीछे थे (जो लश्करियों की गिरी–पड़ी चीज़ें उठाकर उन्हें उनके मालिक तक पहुँचाने की ख़िदमत के लिये मुक़र्रर थे) वो मेरी तरफ़ से गुज़रे तो एक सोये हुए इंसान का साया नज़र आया इसलिये और क़रीब पहुँचे। पर्दा के हुक्म से पहले वो मुझे देख चुके थे। उनके इन्ना लिल्लाह पढ़ने से मैं जाग गई। आख़िर उन्होंने अपना ऊँट बिठाया और उसके अगले पांव को मोड़ दिया (ताकि बिला किसी मदद के मैं ख़ुद सवार हो सकूँ) चुनाँचे मैं सवार हो गई, अब वो ऊँट पर मुझे बिठाए हुए ख़ुद उसके आगे आगे चलने लगे। इसी तरह जब हम लश्कर के पास पहुँचे तो लोग भरी दोपहर में आराम के लिये पड़ाव डाल चुके थे। (इतनी ही बात थी जिसकी बुनियाद पर) जिसे हलाक होना था वो हलाक हुआ और तोहमत के मामले में पेश पेश अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल (मुनाफ़िक़) था। फिर हम मदीना में आ गए और मैं एक महीने तक बीमार रही। तोहमत लगाने वालों की बातों का ख़ूब चर्चा हो रहा था। अपनी इस बीमारी के दौरान मुझे इससे भी बड़ा शुब्हा होता था कि उन दिनों रसूलुल्लाह (ﷺ) का वो लुत्फ़ व करम भी मैं नही देखती थी जिनका मुशाहिदा अपनी पिछली बीमारियों में कर चुकी थी। पस

فَأَقْبَلَ الَّذِينَ يَرْحَلُونَ لِي فَاحْتَمَلُوا هَوْدَجِيْ فَرَحَلُوهُ عَلَى بَعِيرِي الَّذِي كُنْتُ رَكِبْتُ وَهُمْ يَحْسِبُونَ أَنِّي فِيهِ، وَكَانَ النِّسَاءُ إِذَا ذَلِكَ خِفَافًا لَمْ يَثْقُلْنَ وَلَمْ يَغْشَهُنَّ اللَّحْمُ، وَإِنَّمَا يَأْكُلْنَ الْعُلْقَةَ مِنَ الطَّعَامِ فَلَمْ يَسْتَنْكِرِ الْقَوْمُ حِينَ رَفَعُوهُ ثِقَلَ الْهَوْدَجِ فَاحْتَمَلُوهُ، وَكُنْتُ جَارِيَةً حَدِيثَةَ السِّنِّ، فَبَعَثُوا الْجَمَلَ وَسَارُوا، فَوَجَدْتُ عِقْدِي بَعْدَ مَا اسْتَمَرَّ الْجَيْشُ، فَجِئْتُ مَنْزِلَهُمْ وَلَيْسَ فِيهِ أَحَدٌ، فَأَمَمْتُ مَنْزِلِي الَّذِيْ كُنْتُ بِهِ فَظَنَنْتُ أَنَّهُمْ سَيَفْقِدُونَنِي فَيَرْجِعُونَ إِلَيَّ. فَبَيْنَا أَنَا جَالِسَةٌ غَلَبَتْنِي عَيْنَايَ فَنِمْتُ، وَكَانَ صَفْوَانُ بْنُ الْمُعَطَّلِ السُّلَمِيُّ ثُمَّ الذَّكْوَانِيُّ مِنْ وَرَاءِ الْجَيْشِ، فَأَصْبَحَ عِنْدَ مَنْزِلِي، فَرَأَى سَوَادَ إِنْسَانٍ نَائِمٍ، فَأَتَانِيْ، وَكَانَ يَرَانِي قَبْلَ الْحِجَابِ، فَاسْتَيْقَظْتُ بِاسْتِرْجَاعِهِ حَتَّى أَنَاخَ رَاحِلَتَهُ فَوَطِئَ يَدَهَا فَرَكِبْتُهَا، فَانْطَلَقَ يَقُودُ بِي الرَّاحِلَةَ حَتَّى أَتَيْنَا الْجَيْشَ بَعْدَ مَا نَزَلُوا مُعَرِّسِينَ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ، فَهَلَكَ مَنْ هَلَكَ، وَكَانَ الَّذِي تَوَلَّى الإِفْكَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيِّ ابْنُ سَلُولَ. فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ فَاشْتَكَيْتُ بِهَا شَهْرًا وَالنَّاسُ يُفِيضُونَ مِن قَوْلِ أَصْحَابِ الإِفْكِ، وَيَرِيبُنِي فِي وَجَعِي أَنِّي لاَ أَرَى مِنَ النَّبِيِّ ﷺ اللطفَ الَّذِي كُنْتُ أَرَى مِنْهُ حِينَ أَمْرَضُ، إِنَّمَا يَدْخُلُ فَيُسَلِّمُ ثُمَّ يَقُولُ: ((كَيْفَ تِيكُمْ؟)) لاَ

أَشْعُرُ بِشَيْءٍ مِنْ ذَلِكَ حَتَّى نَقِهْتُ، فَخَرَجْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ قِبَلَ الْمَنَاصِعِ مُتَبَرَّزَنَا، لاَ نَخْرُجُ إِلاَّ لَيْلاً إِلَى لَيْلٍ، وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ نَتَّخِذَ الْكُنُفَ قَرِيبًا مِنْ بُيُوتِنَا، وَأَمْرُنَا أَمْرُ الْعَرَبِ الأُوَلِ فِي الْبَرِّيَّةِ أَوْ فِي التَّنَزُّهِ. فَأَقْبَلْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ بِنْتُ أَبِي رُهْمٍ نَمْشِي، فَعَثَرَتْ فِي مِرْطِهَا فَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ. فَقُلْتُ لَهَا: بِئْسَ مَا قُلْتِ، أَتَسُبِّينَ رَجُلاً شَهِدَ بَدْرًا؟ فَقَالَتْ: يَا هَنْتَاهُ، أَلَمْ تَسْمَعِي مَا قَالُوا؟ فَأَخْبَرَتْنِي بِقَوْلِ أَهْلِ الإِفْكِ، فَازْدَدْتُ مَرَضًا إِلَى مَرَضِي. فَلَمَّا رَجَعْتُ إِلَى بَيْتِي دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَسَلَّمَ فَقَالَ: ((كَيْفَ تِيكُمْ؟)) فَقُلْتُ: ائْذَنْ لِي إِلَى أَبَوَيَّ - قَالَتْ: وَأَنَا حِينَئِذٍ أُرِيدُ أَنْ أَسْتَيْقِنَ الْخَبَرَ مِنْ قِبَلِهِمَا - فَأَذِنَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَأَتَيْتُ أَبَوَيَّ، فَقُلْتُ لأُمِّي: مَا يَتَحَدَّثُ بِهِ النَّاسُ؟ فَقَالَتْ: يَا بُنَيَّةُ، هَوِّنِي عَلَى نَفْسِكِ الشَّأْنَ، فَوَاللهِ لَقَلَّمَا كَانَتِ امْرَأَةٌ قَطُّ وَضِيئَةٌ عِنْدَ رَجُلٍ يُحِبُّهَا وَلَهَا ضَرَائِرُ إِلاَّ أَكْثَرْنَ عَلَيْهَا. فَقُلْتُ: سُبْحَانَ اللهِ، وَلَقَدْ يَتَحَدَّثُ النَّاسُ بِهَذَا؟ قَالَتْ: فَبِتُّ تِلْكَ اللَّيْلَةَ حَتَّى أَصْبَحْتُ لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ. ثُمَّ أَصْبَحْتُ، فَدَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ حِينَ اسْتَلْبَثَ الْوَحْيُ يَسْتَشِيرُهُمَا فِي فِرَاقِ

आप घर में जब आते तो सलाम करते और सिर्फ़ इतना पूछ लेते, मिज़ाज कैसा है? जो बातें तोहमत लगाने वाले फैला रहे थे उनमें से कोई बात मुझे मा'लूम नहीं थी। जब मेरी सिहत कुछ ठीक हुई तो (एक रात) मैं उम्मे मिस्तह के साथ मनासेअ की तरफ़ गई। ये हमारे क़ज़ाए हाजत की जगह थी, हम यहाँ सिर्फ़ रात ही में आते थे। ये उस ज़माने की बात है जब अभी हमारे घरों के पास बैतुल ख़ला नहीं बने थे। मैदान में जाने के सिलसिले में (क़ज़ाए हाजत के लिये) हमारा तर्ज़े अमल क़दीम अरब की तरह था, मैं और उम्मे मिस्तह बिन्ते अबी रहम चल रहे थे कि वो अपनी चादर में उलझकर गिर पड़ीं और उनकी ज़ुबान से निकल गया, मिस्तह बर्बाद हो। मैंने कहा, बुरी बात आपने अपनी ज़ुबान से निकाली, ऐसे शख़्स को बुरा कह रही हैं आप, जो बद्र की लड़ाई में शरीक था। वो कहने लगीं, ऐ! जो कुछ उन सबने कहा है वो आपने नहीं सुना, फिर उन्होंने तोहमत लगाने वालों की सारी बातें सुनाईं और उन बातों को सुनकर मेरी बीमारी और बढ़ गई। मैं जब अपने घर वापस हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और दरयाफ़्त किया, मिज़ाज कैसा है? मैंने अर्ज़ किया कि आप मुझे वालिदैन के यहाँ जाने की इजाज़त दे दीजिए। उस वक़्त मेरा इरादा ये था कि उनसे इस ख़बर की तहक़ीक़ करूँगी। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे जाने की इजाज़त दे दी और मैं जब घर आई तो मैंने अपनी वालिदा (उम्मे रुम्मान) से इन बातों के बारे में पूछा, जो लोगों में फैली हुई थीं। उन्होंने फ़र्माया, बेटी! इस तरह की बातों की परवाह न कर, अल्लाह की क़सम! शायद ही ऐसा हो कि तुझ जैसी हसीन व ख़ूबसूरत औरत किसी मर्द के घर में हो और उसकी सौकनें भी हों, फिर भी इस तरह की बातें न फैलाई जाया करें। मैंने कहा सुब्हानल्लाह! (सौकनों का क्या ज़िक्र) वो तो दूसरे लोग इस तरह की बातें कर रहे हैं। उन्होंने बयान किया कि वो रात मैंने वहीं गुज़ारी, सुबह तक मेरे आंसू नहीं थमते थे और न नींद आई। सुबह हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीवी को अलग करने के सिलसिले में मश्वरा करने के लिये अली बिन अबी तालिब और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बुलवाया। क्योंकि वह्य (इस

सिलसिले में) अब तक नहीं आई थी। उसामा (रज़ि.) को आप की बीवियों से आपकी मुहब्बत का इल्म था। इसलिये उसी के मुताबिक़ मश्वरा दिया और कहा, आपकी बीवी या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह, हम उनके बारे में ख़ैर के सिवा और कुछ नहीं जानते। हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला ने आप पर कोई तंगी नहीं की है, औरतें उनके सिवा भी बहुत हैं। बांदी से भी आप दरयाफ़्त फ़र्मा लीजिए, वो सच्ची बात बयान करेंगी। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बरीरा (रज़ि.) को बुलाया (जो आइशा रज़ि. की ख़ास ख़ादिमा थीं) और पूछा, बरीरा! क्या तुमने आइशा (रज़ि.) में कोई ऐसी चीज़ देखी है जिससे तुम्हे शक हुआ हो। बरीरा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मब्ऊष फ़र्माया है। मैंने उनमें कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी जिसका ऐब मैं उन पर लगा सकूँ। इतनी बात ज़रूर है कि वो नौ उम्र लड़की हैं आटा गूँधकर सो जाती हैं फिर बकरी आती है और उसे खा लेती है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसी दिन (मिम्बर पर) खड़े होकर अब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल के बारे में मदद चाही। आपने फ़र्माया, एक ऐसे शख़्स के बारे में मेरी कौन मदद करेगा जिसकी अज़िय्यत और तकलीफ़ देही का सिलसिला अब मेरी बीवी के मामले तक पहुँच चुका है। अल्लाह की क़सम! अपनी बीवी के बारे में ख़ैर के सिवा और कोई चीज़ मुझे मा'लूम नहीं। फिर नाम भी इस मामले में उन्होंने एक ऐसे शख़्स का लिया है जिसके बारे में भी ख़ैर के सिवा और कुछ नहीं जानता। ख़ुद मेरे घर में जब भी वो आए हैं तो मेरे साथ ही आए। (ये सुनकर) सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) खड़े हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! वल्लाह मैं आपकी मदद करूँगा। अगर वो शख़्स (जिसके बारे में तोहमत लगाने का आपने इशारा किया है) औस क़बीले से होगा तो हम उसकी गर्दन मार देंगे (क्योंकि सअद रज़ि. ख़ुद क़बीला औस के सरदार थे) और अगर वो ख़जरज का आदमी हुआ, तो आप हमें हुक्म दें, जो भी आपका हुक्म होगा हम ता'मील करेंगे। उसके बाद सअद बिन उबादा (रज़ि.) खड़े हुए जो क़बीला ख़ज़रज के सरदार थे।

أَهْلِهِ، فَأَمَّا أُسَامَةُ فَأَشَارَ عَلَيْهِ بِالَّذِي يَعْلَمُ لِي نَفْسِهِ مِنَ الْوُدِّ لَهُمْ، فَقَالَ أُسَامَةُ: أَهْلُكَ يَا رَسُولَ اللهِ وَلاَ نَعْلَمُ وَاللهِ إِلاَّ خَيْرًا. وَأَمَّا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ لَمْ يُضَيِّقِ اللهُ عَلَيْكَ، وَالنِّسَاءُ سِوَاهَا كَثِيرٌ، وَسَلِ الْجَارِيَةَ تَصْدُقْكَ. فَدَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بَرِيرَةَ فَقَالَ: ((يَا بَرِيرَةُ هَلْ رَأَيْتِ فِيهَا شَيْئًا يُرِيبُكِ؟)) فَقَالَتْ بَرِيرَةُ: لاَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، إِنْ رَأَيْتُ مِنْهَا أَمْرًا أَغْمِصُهُ عَلَيْهَا قَطُّ أَكْثَرَ مِنْ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ تَنَامُ عَنِ الْعَجِينِ فَتَأْتِي الدَّاجِنُ فَتَأْكُلُهُ. فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ يَوْمِهِ فَاسْتَعْذَرَ مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ ابْنِ سَلُولَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ يَعْذُرُنِي مِنْ رَجُلٍ بَلَغَنِي أَذَاهُ فِي أَهْلِي، فَوَاللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ خَيْرًا، وَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلاً مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا، وَمَا كَانَ يَدْخُلُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ مَعِي)). فَقَامَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَنَا وَاللهِ أَعْذُرُكَ مِنْهُ، إِنْ كَانَ مِنَ الأَوْسِ ضَرَبْنَا عُنُقَهُ، وَإِنْ كَانَ مِنْ إِخْوَانِنَا مِنَ الْخَزْرَجِ أَمَرْتَنَا فَفَعَلْنَا فِيهِ أَمْرَكَ. فَقَامَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَهُوَ سَيِّدُ الْخَزْرَجِ - وَكَانَ قَبْلَ ذَلِكَ رَجُلاً صَالِحًا، وَلَكِنِ احْتَمَلَتْهُ الْحَمِيَّةُ - فَقَالَ: كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللهِ، وَاللهِ لاَ تَقْتُلُهُ وَلاَ

हालाँकि उससे पहले अब तक बहुत स़ालेह़ थे। लेकिन उस वक़्त (सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि. की बात पर) ह़मिय्यत से ग़ुस़्सा हो गये थे और (सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) से) कहने लगे अल्लाह के दवाम व बक़ा की क़सम! तुम झूठ बोलते हो, न तुम उसे क़त्ल कर सकते हो और न तुम्हारे अंदर उसकी त़ाक़त है। फिर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) खड़े हुए (सअ़द बिन मुआ़ज़ के चचाज़ाद भाई) और कहा, अल्लाह की क़सम! हम उसे क़त्ल कर देंगे (अगर रसूलुल्लाह ﷺ का हुक्म हुआ) कोई शुब्हा नहीं रह जाता कि तुम भी मुनाफ़िक़ हो क्योंकि मुनाफ़िक़ों की त़रफदारी कर रहे हो। इस पर औस और ख़ज़रज दोनों क़बीलों के लोग उठ खड़े हुए और आगे बढ़ने ही वाले थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जो अभी तक मिम्बर पर तशरीफ़ रखते थे। मिम्बर से उतरे और लोगों को नरम किया। अब सब लोग ख़ामोश हो गए और आप भी ख़ामोश हो गए। मैं उस दिन भी रोती रही। न मेरे आंसू थमते थे और न नींद आती थी। फिर मेरे पास मेरे माँ–बाप आए। मैं दो रातों और एक दिन से बराबर रोती रही थी ऐसा मा'लूम होता था कि रोते रोते मेरे दिल के टुकड़े हो जाएँगे। उन्होंने बयान किया कि माँ–बाप मेरे पास बैठे हुए थे कि एक अंसारी औरत ने इजाज़त चाही और मैंने उन्हें इजाज़त दे दी और वो भी मेरे साथ बैठकर रोने लगीं। हम सब इसी त़रह थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और बैठ गए। जिस दिन से मेरे बारे में वो बातें कही जा रही थीं जो कभी नहीं कही गई थीं। उस दिन से मेरे पास आप नहीं बैठे थे। आप (ﷺ) एक महीने तक इंतिज़ार करते रहे थे। लेकिन मेरे मामले में कोई वह्य आप पर नाज़िल नहीं हुई थी। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आप (ﷺ) ने तशह्हुद पढ़ी और फ़र्माया, आ़इशा! तुम्हारे बारे में मुझे ये ये बातें मा'लूम हुईं। अगर तुम इस मामले में बरी हो तो अल्लाह तआ़ला भी तुम्हारी बराअत ज़ाहिर कर देगा और अगर तुमने गुनाह किया है तो अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत चाहो और उसके हुज़ूर तौबा करो कि बन्दा जब अपने गुनाह का इक़रार करके तौबा करता है तो अल्लाह भी उसकी तौबा क़ुबूल करता है। ज्यों ही आप (ﷺ) ने अपनी बातचीत ख़त्म की, मेरे आंसू इस त़रह सूख

فَقَالَ كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللهِ، وَاللهِ لَنَقْتُلَنَّهُ، فَإِنَّكَ مُنَافِقٌ تُجَادِلُ عَنِ الْمُنَافِقِينَ. فَثَارَ الْحَيَّانِ الأَوْسُ وَالْخَزْرَجُ حَتَّى هَمُّوا، وَرَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ. فَنَزَلَ فَخَفَّضَهُمْ حَتَّى سَكَتُوا وَسَكَتَ. وَبَكَيْتُ يَوْمِي لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ، وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ، فَأَصْبَحَ عِنْدِي أَبَوَايَ وَقَدْ بَكَيْتُ لَيْلَتَيْنِ وَيَوْمًا حَتَّى أَظُنُّ أَنَّ الْبُكَاءَ فَالِقٌ كَبِدِي. قَالَتْ: فَبَيْنَا هُمَا جَالِسَانِ عِنْدِي وَأَنَا أَبْكِي إِذِ اسْتَأْذَنَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَأَذِنْتُ لَهَا فَجَلَسَتْ تَبْكِي مَعِي، فَبَيْنَا نَحْنُ كَذَلِكَ إِذْ دَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَجَلَسَ وَلَمْ يَجْلِسْ عِنْدِي مِنْ يَوْمِ قِيلَ لِي مَا قِيلَ قَبْلَهَا، وَقَدْ مَكَثَ شَهْرًا لاَ يُوحَى إِلَيْهِ فِي شَأْنِي شَيْءٌ. قَالَتْ: فَتَشَهَّدَ ثُمَّ قَالَ: ((يَا عَائِشَةُ فَإِنَّهُ بَلَغَنِي عَنْكِ كَذَا وَكَذَا، فَإِنْ كُنْتِ بَرِيئَةً فَسَيُبَرِّئُكِ اللهُ، وَإِنْ كُنْتِ أَلْمَمْتِ فَاسْتَغْفِرِي اللهَ وَتُوبِي إِلَيْهِ، فَإِنَّ الْعَبْدَ إِذَا اعْتَرَفَ بِذَنْبِهِ ثُمَّ تَابَ تَابَ اللهُ عَلَيْهِ)) فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللهِ ﷺ مَقَالَتَهُ قَلَصَ دَمْعِي حَتَّى مَا أُحِسُّ مِنْهُ قَطْرَةً، وَقُلْتُ لأَبِي: أَجِبْ عَنِّي رَسُولَ اللهِ ﷺ. قَالَ: وَاللهِ مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ. فَقُلْتُ لأُمِّي: أَجِيبِي عَنِّي رَسُولَ اللهِ ﷺ فِيمَا قَالَ. قَالَتْ: وَاللهِ مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ. قَالَتْ: وَأَنَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ

गए कि अब एक क़तरा भी महसूस नहीं होता था। मैंने अपने बाप से कहा कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) से मेरे बारे में कहिये। लेकिन उन्होंने कहा, क़सम अल्लाह की! मुझे नहीं मा'लूम कि आँहज़रत (ﷺ) से मुझे क्या कहना चाहिये। मैंने अपनी माँ से कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जो कुछ फ़र्माया, उसके बारे में आँहुज़ूर (ﷺ) से आप ही कुछ कहिये, उन्होंने भी यही फ़र्मा दिया कि क़सम अल्लाह की! मुझे मा'लूम नहीं कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) से क्या कहना चाहिये। उन्होंने बयान किया कि मैं नौ उम्र लड़की थी। क़ुर्आन मुझे ज़्यादा याद नहीं था। मैंने कहा अल्लाह गवाह है, मुझे मा'लूम हुआ कि आप लोगों ने भी लोगों की अफ़वाह सुनी हैं और आप लोगों के दिलों में वो बात बैठ गई है और उसकी तस्दीक़ भी आप लोग कर चुके हैं, इसलिये अब अगर मैं कहूँ कि मैं (इस बोहतान से) बरी हूँ, और अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं वाक़ई इससे बरी हूँ तो आप लोग मेरी इस मामले में तस्दीक़ नहीं करेंगे। लेकिन अगर मैं (गुनाह को) अपने ज़िम्मे ले लूँ, हालाँकि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मैं इससे बरी हूँ, तो आप लोग मेरी बात की तस्दीक़ कर देंगे। क़सम अल्लाह की! मैं इस वक़्त आप लोगों की कोई मिषाल यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के वालिद (यअ़क़ूब अलैहिस्सलाम) के सिवा नहीं पाती कि उन्होंने भी फ़र्माया था कि पस सब्रे जमील, सब्र बेहतर है और जो कुछ तुम कहते हो उस मामले में मेरा मददगार अल्लाह तआला है। उसके बाद बिस्तर पर मैंने अपना रुख़ दूसरी तरफ़ कर लिया और मुझे उम्मीद थी कि ख़ुद अल्लाह तआला मेरी बराअत करेगा लेकिन मेरा ये ख़्याल कभी न था कि मेरे मुता'ल्लिक़ वह्य नाज़िल होगी। मेरी अपनी नज़र में हैषियत इससे बहुत मा'मूली थी कि क़ुर्आन मजीद में मेरे बारे में कोई आयत नाज़िल हो। हाँ मुझे इतनी उम्मीद ज़रूर थी कि आप कोई ख़्वाब देखेंगे जिसमें अल्लाह तआला मुझे बरी फ़र्मा देगा। अल्लाह गवाह है कि अभी आप अपनी जगह से उठे भी न थे और न उस वक़्त घर में मौजूद कोई बाहर निकला था कि आप पर वह्य नाज़िल होने लगी और (शिद्दते वह्य से) आप जिस तरह पसीने पसीने हो जाया करते थे वही कैफ़ियत आपकी अब भी थी।

لاَ أَقْرَأُ كَثِيرًا مِنَ الْقُرْآنِ، فَقُلْتُ: إِنِّي وَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُ أَنَّكُمْ سَمِعْتُمْ مَا يَتَحَدَّثُ بِهِ النَّاسُ وَوَقَرَ فِي أَنْفُسِكُمْ وَصَدَّقْتُمْ بِهِ، وَلَئِنْ قُلْتُ لَكُمْ إِنِّي بَرِيئَةٌ - وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَنِّي لَبَرِيئَةٌ - لاَ تُصَدِّقُونِي بِذَلِكَ، وَلَئِنِ اعْتَرَفْتُ لَكُمْ بِأَمْرٍ - وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَنِّي بَرِيئَةٌ - لَتُصَدِّقُنِّي. وَاللَّهِ مَا أَجِدُ لِي وَلَكُمْ مَثَلاً إِلاَّ أَبَا يُوسُفَ إِذْ قَالَ: ﴿فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ﴾. ثُمَّ تَحَوَّلْتُ عَلَى فِرَاشِي وَأَنَا أَرْجُو أَنْ يُبَرِّئَنِي اللَّهُ. وَلَكِنْ وَاللَّهِ مَا ظَنَنْتُ أَنْ يُنْزِلَ فِي شَأْنِي وَحْيًا، وَلأَنَا أَحْقَرُ فِي نَفْسِي مِنْ أَنْ يُتَكَلَّمَ بِالْقُرْآنِ فِي أَمْرِي، وَلَكِنِّي كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَرَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي النَّوْمِ رُؤْيَا تُبَرِّئُنِي، فَوَاللَّهِ مَا رَامَ مَجْلِسَهُ وَلاَ خَرَجَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ حَتَّى أُنْزِلَ عَلَيْهِ، فَأَخَذَهُ مَا كَانَ يَأْخُذُهُ مِنَ الْبُرَحَاءِ، حَتَّى إِنَّهُ لَيَتَحَدَّرُ مِنْهُ مِثْلُ الْجُمَانِ مِنَ الْعَرَقِ فِي يَوْمٍ شَاتٍ. فَلَمَّا سُرِّيَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ يَضْحَكُ فَكَانَ أَوَّلَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا أَنْ قَالَ لِي: ((يَا عَائِشَةُ احْمَدِي اللَّهَ، فَقَدْ بَرَّأَكِ اللَّهُ)). قَالَتْ لِي أُمِّي: قُومِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. فَقُلْتُ: لاَ وَاللَّهِ لاَ أَقُومُ إِلَيْهِ، وَلاَ أَحْمَدُ إِلاَّ اللَّهَ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ﴾ [النور: ١١] الآيَاتِ. فَلَمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ هَذَا فِي بَرَاءَتِي

قَالَ أَبُوبَكْرٍ الصِّدِّيقُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ - وَكَانَ يُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحِ بْنِ أُثَاثَةَ لِقَرَابَتِهِ مِنْهُ - وَاللهِ لاَ أُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحٍ شَيْئًا أَبَدًا بَعْدَ مَا قَالَ لِعَائِشَةَ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَلاَ يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ - إِلَى قَوْلِهِ - غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ بَلَى وَاللهِ، إِنِّي لأُحِبُّ أَنْ يَغْفِرَ اللهُ لِي، فَرَجَعَ إِلَى مِسْطَحٍ الَّذِي كَانَ يُجْرِي عَلَيْهِ. وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَسْأَلُ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ عَنْ أَمْرِي، فَقَالَ: ((يَا زَيْنَبُ مَا عَلِمْتِ؟ مَا رَأَيْتِ؟)) فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَحْمِي سَمْعِي وَبَصَرِي، وَاللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهَا إِلاَّ خَيْرًا. قَالَتْ: وَهِيَ الَّتِي كَانَتْ تُسَامِينِي، فَعَصَمَهَا اللهُ بِالْوَرَعِ)). قَالَ: وَحَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ وَعَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ مِثْلَهُ. قَالَ: وَحَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَيَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ مِثْلَهُ.

[راجع: ٢٥٩٣]

पसीने के क़तरे मोतियो की तरह आपके जिस्मे मुबारक से गिरने लगे। हालाँकि सर्दी का मौसम था। जब वह्य का सिलसिला ख़त्म हुआ तो आप (ﷺ) हंस रहे थे और सबसे पहला कलिमा जो आपकी ज़ुबाने मुबारक से निकला, वो ये था कि आइशा! अल्लाह की हम्द बयान कर कि उसने तुम्हें बरी क़रार दे दिया है। मेरी वालिदा ने कहा बेटी जा, रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने जाकर खड़ी हो जा। मैंने कहा, नहीं क़सम अल्लाह की मैं आपके पास जाकर खड़ी न होऊँगी और मैं तो सिर्फ़ अल्लाह की हम्दो-ष़ना करूँगी। अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई थी, जिन लोगों ने तोहमत तराशी की है। वो तुम ही में से कुछ लोग हैं। जब अल्लाह तआला ने मेरी बरात में ये आयत नाज़िल फ़र्माई, तो अबूबक्र (रज़ि.) ने जो मिस्तह बिन अष़ाष़ा (रज़ि.) के अख़राजात क़राबत की वजह से ख़ुद ही उठाते थे कहा कि क़सम अल्लाह की अब मैं मिस्तह पर कभी कोई चीज़ ख़र्च नहीं करूँगा कि वो भी आइशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने में शरीक था। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की। तुममें से स़ाहिबे फ़ज़्ल व स़ाहिबे माल लोग क़सम न खाएँ। अल्लाह तआला का इर्शाद ग़फ़ूरुर्रहीम तक। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! बस मेरी यही ख़्वाहिश है कि अल्लाह तआला मेरी मग़्फ़िरत कर दे। चुनाँचे मिस्तह (रज़ि.) को जो आप पहले दिया करते थे वो फिर देने लगे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) उम्मुल मोमिनीन) से भी मेरे बारे में पूछा था। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया कि ज़ैनब! तुम (आइशा रज़ि. के बारे में) क्या जानती हो? और क्या देखा है? उन्होंने जवाब दिया मैं अपने कान और अपनी आँख की हिफ़ाज़त करती हूँ (कि जो चीज़ मैंने देखी हो या न सुनी हो वो आपसे बयान करने लगूँ) अल्लाह गवाह है कि मैंने उनमें ख़ैर के अलावा और कुछ नहीं देखा। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि यही मेरी बराबर की थीं, लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें तक़्वा की वजह से बचा लिया। अबुर्रबीआ ने बयान किया कि हमसे फ़ुलैह ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उर्वा ने, उनसे आइशा और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने इसी हदीष़ की तरह।

अबुर्रबीआ ने (दूसरी सनद में) बयान किया कि हमसे फ़ुलैह ने बयान किया, उनसे रबीआ बिन अबी अ़ब्दुर्रहमान और यह्या बिन सईद ने और उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र ने इसी हदीष़ की तरह। (राजेअ़ : 2593)

तश्रीह : मुज्तहिदे मुत्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ये तवील हदीष़ मज़्कूरा उ़न्वान के तहत इसलिये लाए हैं कि उसमें बरीरा (रज़ि.) की गवाही का ज़िक्र है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के बारे में पूछा और उन्होंने आपके ख़साइल (आदतों) व अख़्लाक़ पर इत्मीनान का इज़्हार किया। इसी तरह हदीष़ में ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) की गवाही का भी ज़िक्र है ।

वाक़िया इफ़्क इस्लामी तारीख़ का एक अहमतरीन वाक़िया है। मुहद्दिष़ीने किराम ने इससे बहुत से मसाइल को निकाला है। ख़ुद ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस हदीष़ को कई जगह लाए हैं और मुख़्तलिफ़ मसाइल इससे निकालते हैं। वाक़िये की तफ़्सीलात ख़ुद हदीष़ में मौजूद है। शुरू में आँह़ज़रत (ﷺ) को इससे सख़्त रंज पहुँचा कि आपकी शाने नुबुव्वत पर एक धब्बा लग रहा था। मगर तह़क़ीक़े ह़क़ के बाद आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल मुनाफ़िक़ को इस इल्ज़ामतराशी में संगीन सज़ा देनी चाही क्योंकि इस इल्ज़ाम का तराशने वाला और उसको हवा देने वाला वही बदबख़्त था। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने जब इस इल्ज़ाम का ज़िक्र सुना तो रोते-रोते उनका बुरा ह़ाल हो गया बल्कि बुख़ार भी चढ़ गया। आपकी वालिदा माजिदा ह़ज़रत उम्मे रुम्मान ने आपको बहुत समझाया बुझाया। मगर आपके रंज में इज़ाफ़ा ही हो रहा था। आपका खाना–पीना, सोना सब ख़त्म हो रहा था। आख़िर आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने ज़ाती इत्मीनान के लिये उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से मश्वरा लिया तो उन्होंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की बराअत (बेगुनाही) पर शहादत दी, ह़ज़रत अली (रज़ि.) के मश्वरे के मुताबिक़ आपने ह़ज़रत बरीरा (रज़ि.) से मा'लूम किया, तो उन्होंने भी साफ़ साफ़ आपकी मा'सूमियत पर गवाही दी और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की बराअत में सूरह नूर नाज़िल हुई जिसमें अल्लाह तआ़ला ने उसे (बुहताने अ़ज़ीम) क़रार दिया।

सुब्हानल्लाह! ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के फ़ज़्ल व शर्फ़ का क्या ठिकाना कि आपकी शान में क़ुर्आन नाज़िल हुआ, जो क़यामत तक पढ़ा जाएगा। आपके फ़ज़ाइल बेशुमार हैं। अल्लाह ने आपको अपने महबूब रसूल (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरा में शर्फ़े ख़ास़ से नवाज़ा कि रसूले करीम (ﷺ) ने आपकी गोद में आपके घर में इंतिक़ाल फ़र्माया, फिर वही घर क़यामत तक के लिये अल्लाह के महबूब नबी (ﷺ) की आरामगाह में तब्दील हो गया।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **वल्गरज़ु मिन्हु सुवालहू (ﷺ) बरीरत अन हालि आयशत व जवाबुहा बिबरअतिहा व इतिमादुन्नबिय्यि (ﷺ) अ़ला क़ौलिही हत्ता ख़तब फस्तअ़ज़र मिन अ़ब्दिल्लाहि इब्नि उबय कज़ालिक सुवालुहू मिन ज़ैनब बिन्ति ज़हशिन अन हालि आयशत व जवाबुहा बिबरअतिहा अयज़न व क़ौलु आयशत फी हक्कि ज़ैनब हियल्लती कानत तसामीनी फअसिमहल्लाहु बिल्वरइ फफ़ी ज़ालिक मुरादुत्तर्जुमति.** (फत्ह) आँह़ज़रत (ﷺ) का ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के बारे में बरीरा (रज़ि.) से पूछना और उनका ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की पाकीज़गी के बारे में बयान देना और उनके बयान पर आँह़ज़रत (ﷺ) का ए'तिमाद कर लेना, यही मक़्सूदे बाब है यहाँ तक कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में ख़ुत्बा दिया और उसके बारे में मुसलमानों से अपील की। ऐसा ही ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) से ह़ज़रत आ़इशा(रज़ि.) के बारे में पूछना और उनका ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की बराअत में जवाब देना जिसके बारे में ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि वो भी मेरी सौकन थी, मगर अल्लाह पाक ने उसकी परहेज़गारी की वजह से उनको ग़लतबयानी से बचाया, इसी से बाब के तर्जुमे का इष़्बात हुआ।

ह़ज़रत सअ़द बिन उ़बादा की ख़फ़्गी महज़ इस ग़लतफ़हमी पर थी कि सअ़द बिन मुआ़ज़ क़बीला औस से पुरानी

अदावत की वजह से ऐसा कह रहे हैं। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) का मक़्सद यही है कि ह़ज़रत सअद बिन उ़बादा निहायत स़ालेह़ आदमी थे मगर ग़लतफ़हमी ने उनकी ह़मिय्यत को जगा दिया था। (रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन)

बाब 16 : जब एक मर्द दूसरे मर्द को अच्छा कहे तो ये काफ़ी है

١٦ - بَابُ إِذَا زَكَّى رَجُلٌ رَجُلاً كَفَاهُ

وَقَالَ أَبُو جَمِيلَةَ: وَجَدْتُ مَنْبُوذًا فَلَمَّا رَآنِي عُمَرُ قَالَ: عَسَى الْغُوَيْرُ أَبْؤُسًا، كَأَنَّهُ يَتَّهِمُنِي. قَالَ عَرِيفِي: أَنَّهُ رَجُلٌ صَالِحٌ. قَالَ: كَذَلِكَ، اذْهَبْ وَعَلَيْنَا نَفَقَتُهُ.

और अबू जमीला ने कहा कि मैंने एक लड़का रास्ते में पड़ा हुआ पाया। जब मुझे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने देखा तो फ़र्माया, ऐसा न हो ये ग़ार, आफ़त का ग़ार हो, गोया उन्होंने मुझ पर बुरा गुमान किया, लेकिन मेरे क़बीले के सरदार ने कहा कि ये स़ालेह़ आदमी हैं। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ऐसी बात है तो फिर उस बच्चे को ले जा, उसका नफ़्क़ा हमारे (बैतुलमाल के) ज़िम्मे रहेगा।

तश्रीह़ : या'नी एक शख़्स़ का तज़्किया काफ़ी है और शाफ़िइया और मालिकिया के नज़दीक कम से कम दो शख़्स़ तज़्किया के लिये ज़रूरी हो।

ग़ार की मिष़ाल अ़रब में उस मौक़े पर कही जाती है जहाँ ज़ाहिर में सलामती की उम्मीद हो और दरपर्दा उसमें हलाकत हो। हुआ ये था कि कुछ लोग जान बचाने को एक ग़ार (गुफा) में जाकर छुपे, वो ग़ार उन पर गिर पड़ा था या दुश्मन ने वहीं आकर उनको आ लिया। जबसे ये मिष़ाल जारी हो गई। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ये समझे कि उस (दुश्मन) ने ह़रामकारी न की हो और ये लड़का उसका नुत्फ़ा हो मगर एक शख़्स़ की गवाही पर आपका दिल स़ाफ़ हो गया और आपने उस बच्चे का बैतुलमाल से वज़ीफ़ा जारी कर दिया।

तअ़दील का मत़लब ये कि किसी आदमी की उ़म्दा आदतों व ख़स़ाइल और उसकी स़दाक़त और संजीदगी पर गवाही देना, इस्तिलाहे़ मुह़द्दिष़ीन में तअ़दील का यही मत़लब है कि किसी रावी की ष़क़ाहत ष़ाबित करना।

2662. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब ने ख़बर दी, कहा कि हमसे ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके बाप ने बयान किया एक शख़्स़ ने रसूले करीम (ﷺ) के सामने दूसरे शख़्स़ की ता'रीफ़ की, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! तूने अपने साथी की गर्दन काट डाली। तूने अपने साथी की गर्दन काट डाली, कई बार (आप ने इसी तरह फ़र्माया) फिर फ़र्माया कि अगर किसी के लिये अपने किसी भाई की ता'रीफ़ करनी ज़रूरी हो जाए तो यूँ कहे कि मैं फ़लाँ शख़्स़ को ऐसा समझता हूँ, आगे अल्लाह ख़ूब जानता है, मैं अल्लाह के सामने किसी को बेऐ़ब नहीं कह सकता। मैं समझता हूँ वो ऐसा ऐसा है अगर उसका ह़ाल जानता हो। (दीगर मक़ाम : 6061, 6062)

٢٦٦٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ ابْنُ سَلاَمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: أَثْنَى رَجُلٌ عَلَى رَجُلٍ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: ((وَيْلَكَ، قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ، قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ (مِرَارًا). ثُمَّ قَالَ: مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَادِحًا أَخَاهُ لاَ مَحَالَةَ فَلْيَقُلْ: أَحْسَبُ فُلاَنًا. وَاللهُ حَسِيبُهُ. وَلاَ أُزَكِّيْ عَلَى اللهِ أَحَدًا. أَحْسِبُهُ كَذَا وَكَذَا. إِنْ كَانَ يَعْلَمُ ذَلِكَ مِنْهُ)). [طرفاه في: ٦٠٦١، ٦١٦٢].

बाब 17 : किसी की ता'रीफ़ में मुबालग़ा करना

١٧ - بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ الإِطْنَابِ فِي

मकरूह है जो जानता हो बस वही कहे

الْمَدْحِ، وَلْيَقُلْ مَا يَعْلَم

2663. हमसे मुहम्मद बिन सबाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन ज़करिया ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने सुना कि एक शख़्स दूसरे की ता'रीफ़ कर रहा था और मुबालग़ा से काम ले रहा था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोगों ने उस शख़्स को हलाक कर दिया। उसकी पुश्त तोड़ दी। (दीगर मक़ाम : 6060)

٢٦٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ حَدَّثَنِي بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً يُثْنِي عَلَى رَجُلٍ وَيُطْرِيهِ فِي مَدْحِهِ فَقَالَ: ((أَهْلَكْتُمْ - أَوْ قَطَعْتُمْ - ظَهْرَ الرَّجُلِ)). [طرفه في: ٦٠٦٠].

चूँकि गवाह की तअदील और तज़्किया का बयान हो रहा है लिहाज़ा ये बतला दिया गया कि किसी की ता'रीफ़ में हद से गुज़र जाना और किसी के सामने उसकी ता'रीफ़ करना शरअन ये भी मज़्मूम है कि उससे सुनने वाले के दिल में अजब व ख़ुदपसन्दी और किब्र पैदा होने का अन्देशा है। लिहाज़ा ता'रीफ़ में मुबालग़ा हर्गिज़ न करना चाहिये और ता'रीफ़ किसी के मुँह पर न की जाए और उसकी बाबत जिस क़दर मा'लूमात हों बस उन पर इज़ाफ़ा न हो कि सलामती उसी में है।

बाब 18 : बच्चों का बालिग़ होना और उनकी शहादत का बयान

١٨- بَابُ بُلُوغِ الصِّبْيَانِ وَشَهَادَتِهِمْ

और अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, जब तुम्हारे बच्चे एहतिलाम की उम्र को पहुँच जाएँ तो फिर उन्हें (घरों में दाख़िल होते वक़्त) इजाज़त लेनी चाहिये।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿وَإِذَا بَلَغَ الأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا﴾ [النور: ٥٩]

मुग़ीरह (रज़ि.) ने कहा कि मैं एहतिलाम की उम्र को पहुँचा तो मैं बारह साल का था और लड़कियों का बुलूग़ हैज़ से मा'लूम होता है। अल्लाह तआला के इस इर्शाद की वजह से कि औरतें जो हैज़ से मायूस हो चुकी हैं, अल्लाह तआला के इस इर्शाद, अन् यज़अना हम्लहुन्न तक। हसन बिन सालेह ने कहा कि मैंने अपनी एक पड़ोसन को देखा कि वो इक्कीस साल की उम्र में दादी बन चुकी थीं।

وَقَالَ مُغِيرَةُ: احْتَلَمْتُ وَأَنَا ابْنُ ثِنْتَي عَشْرَةَ سَنَةً. وَبُلُوغُ النِّسَاءِ فِي الْحَيْضِ لِقَوْلِهِ عَزَّوَجَلَّ: ﴿وَاللاَّئِي يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيضِ - إِلَى قَوْلِهِ - أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ﴾ [الطلاق : ٤]. وَقَالَ الْحَسَنُ بْنُ صَالِحٍ: أَدْرَكْتُ جَارَةً لَنَا جَدَّةً بِنْتَ إِحْدَى وَعِشْرِينَ سَنَةً.

हज़रत इमाम बुख़ारी (रज़ि.) का मक़्सदे बाब ये मा'लूम होता है कि बच्चे की उम्र पन्द्रह साल को पहुँच जाए तो वो बालिग़ समझा जाएगा और उसकी गवाही क़ुबूल होगी। यूँ बच्चे बारह साल की उम्र में भी बालिग़ हो सकते हैं। मगर ये इत्तिफ़ाक़ी अम्र है। औरतों के लिये हैज़ आ जाना बुलूग़त की दलील है। **व क़द अज्मअल उलमाउ अन्नल हैज़ बुलूग़ुन फ़ी हक्क़िन्निसा** (फ़तह) या'नी उलमा का इज्माअ है कि औरतों का बलूग़ उनका हाइज़ा होना ही है।)

2664. हमसे उबैदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा कि मुझसे उबैदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि

٢٦٦٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ

قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَرَضَهُ يَوْمَ أُحُدٍ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعَ عَشْرَةَ سَنَةً فَلَمْ يُجِزْنِي، ثُمَّ عَرَضَنِي يَوْمَ الْخَنْدَقِ وَأَنَا ابْنُ خَمْسَ عَشْرَةَ فَأَجَازَنِي)) قَالَ نَافِعٌ: فَقَدِمْتُ عَلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ وَهُوَ خَلِيْفَةٌ فَحَدَّثْتُهُ هَذَا الْحَدِيْثَ فَقَالَ: إِنَّ هَذَا لَحَدٌّ بَيْنَ الصَّغِيْرِ وَالْكَبِيْرِ، وَكَتَبَ إِلَى عُمَّالِهِ أَنْ يَفْرِضُوا لِمَنْ بَلَغَ خَمْسَ عَشْرَةَ. [طرفه في : ٤٠٩٧].

हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई के मौक़े पर वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने (जंग पर जाने के लिये) पेश हुए तो उन्हें इजाज़त नहीं मिली, उस वक़्त उनकी उ़म्र चौदह साल थी। फिर ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर पेश हुए तो इजाज़त मिल गई। उस वक़्त उनकी उ़म्र पन्द्रह साल थी। नाफ़ेअ़ ने बयान किया कि जब मैं उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) के यहाँ उनकी ख़िलाफ़त के ज़माने में गया तो मैंने उनसे ये ह़दीष़ बयान की तो उन्होंने फ़र्माया कि छोटे और बड़े के दरम्यान (पन्द्रह साल ही की) ह़द है। फिर उन्होंने अपने ह़ाकिमों को लिखा कि जिस बच्चे की उ़म्र पन्द्रह साल की हो जाए (उसका फ़ौजी वज़ीफ़ा) बैतुलमाल से मुक़र्रर कर दें। (दीगर मक़ाम : 4097)

मा'लूम हुआ कि पन्द्रह साल की उ़म्र होने पर बच्चे पर शरई अह़काम जारी हो जाते हैं और उस उ़म्र में वो गवाही के क़ाबिल हो सकता है।

٢٦٦٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ سُلَيْمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((غُسْلُ يَوْمِ الْجُمُعَةِ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُحْتَلِمٍ)). [راجع: ٨٥٨]

2665. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सफ़्वान बिन सुलैम ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर बालिग़ पर जुम्आ़ के दिन ग़ुस्ल वाजिब है। (राजेअ़ : 858)

ये इस अम्र की त़रफ़ इशारा है कि शरई वाजिबात इंसान पर उसके बालिग़ होने ही पर नाफ़िज़ होते हैं। शहादत (गवाही) भी एक शरई अम्र है जिसके लिये बालिग़ होना ज़रूरी है। बुलूग़त की आख़िर ह़द पन्द्रह साल है जैसा कि पिछली रिवायत में मज़्कूर हुआ। उससे इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये भी निकाला कि एह़तिलाम होने से मर्द जवान हो जाता है गो उसकी उ़म्र पन्द्रह साल को न पहुँची हो।

١٩- بَابُ سُؤَالِ الْحَاكِمِ الْمُدَّعِيَ : هَلْ لَكَ بَيِّنَةٌ؟ قَبْلَ الْيَمِيْنِ

बाब 19 : मुद्दआ़ अ़लैह को क़सम दिलाने से पहले ह़ाकिम का मुद्दई से ये पूछना तेरे पास गवाह हैं?

٢٦٦٦، ٢٦٦٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ شَقِيْقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِيْنٍ - وَهُوَ فِيْهَا فَاجِرٌ - لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ

2666,67. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआ़विया ने ख़बर दी और उन्हें आ'मश ने, उन्हें शक़ीक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स ने कोई ऐसी क़सम खाई, जिसमें वो झूठा था, किसी मुसलमान का माल छीनने के लिये, तो वो अल्लाह तआ़ला से इस त़रह मिलेगा कि अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़बनाक

امْرِىءٍ مُسْلِمٍ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)). قَالَ: فَقَالَ الأَشْعَثُ بْنُ قَيْسٍ: فِيَّ وَاللهِ كَانَ ذَلِكَ، كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ مِنَ الْيَهُودِ أَرْضٌ فَجَحَدَنِي فَقَدَّمْتُهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلَكَ بَيِّنَةٌ؟)) قَالَ: قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَقَالَ لِلْيَهُودِيِّ: ((احْلِفْ)). قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِذًا يَحْلِفُ وَيَذْهَبُ بِمَالِي. قَالَ: فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً﴾ [آل عمران: ٧٧] إِلَى آخِرِ الآيَةِ)).

[راجع: ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]

होगा। उन्होंने बयान किया कि उस पर अश्अ़ष़ बिन क़ैस (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह गवाह है, ये ह़दीष़ मेरे ही बारे में आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माई थी। मेरा एक यहूदी से एक ज़मीन का झगड़ा था। यहूदी मेरे ह़क़ का इंकार कर रहा था। इसलिये मैं उसे नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में लाया। आप (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया (क्योंकि मैं मुद्दई था) कि गवाही पेश करना तुम्हारे ही ज़िम्मे है। उन्होंने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया, गवाह तो मेरे पास कोई भी नहीं। इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने यहूद से फ़र्माया कि फिर तुम क़सम खाओ। अश्अ़ष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं बोल पड़ा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर तो ये क़सम खा लेगा और मेरा माल हज़म कर जाएगा। उन्होंने बयान किया कि उसी वाक़िये पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की, जो लोग अल्लाह के अ़हद और क़समों से मा'मूली पूँजी ख़रीदते हैं आख़िर तक। (राजेअ़ : 2356, 2357)

अ़दालत के लिये ज़रूरी है कि पहले मुद्दई (वादी) से गवाह त़लब करे। उसके पास गवाह न हों तो मुद्दआ अ़लैह (प्रतिवादी) से क़सम ले, अगर मुद्दआ अ़लैह झूठी क़सम खाता है तो वो सख़्त गुनाहगार होगा, मगर अ़दालत में बहुत लोग झूठ से बचना ज़रूरी नहीं जानते ह़ालाँकि झूठी गवाही कबीरा गुनाहों में से है। ऐसे ही झूठी क़सम खाकर किसी का माल हड़प करना अकबरुल कबाईर या'नी बहुत ही बड़ा कबीरा गुनाह है।

٢٠- بَابُ الْيَمِينِ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ فِي الأَمْوَالِ وَالْحُدُودِ

बाब 20 : दीवानी और फौजदारी दोनों मुक़द्दमों में मुद्दआ अ़लैह से क़सम लेना

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((شَاهِدَاكَ أَوْ يَمِينُهُ)) وَقَالَ قُتَيْبَةُ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ شُبْرُمَةَ كَلَّمَنِي أَبُو الزِّنَادِ فِي شَهَادَةِ الشَّاهِدِ وَيَمِينِ الْمُدَّعِي، فَقُلْتُ: قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رِجَالِكُمْ. فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى﴾ [البقرة:٢٨٢] قُلْتُ: إِذَا كَانَ يُكْتَفَى بِشَهَادَةِ شَاهِدٍ وَيَمِينِ الْمُدَّعِي فَمَا

और नबी करीम (ﷺ) ने (मुद्दई से) फ़र्माया कि तुम अपने दो गवाह पेश करो वरना मुद्दआ अ़लैह की क़सम पर फ़ैसला होगा। क़ुतैबा ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे (कूफ़ा के क़ाज़ी) इब्ने शिब्रमा ने बयान किया कि (मदीना के क़ाज़ी) अबुज़्ज़िनाद ने मुझसे मुद्दई की क़सम के साथ सिर्फ़ एक गवाह की गवाही के (नाफ़िज़ हो जाने के) बारे में बातचीत की तो मैंने कहा कि अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है, और तुम अपने मर्दों मे से दो गवाह कर लिया करो, फिर अगर दोनों मर्द न हों तो एक मर्द और दो औ़रतें हों, जिन गवाहों से कि तुम मुत्मईन हो, ताकि अगर कोई एक उन दो में से भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे। मैंने कहा कि अगर मुद्दई की क़सम के साथ सिर्फ़ एक गवाह की गवाही काफ़ी होती तो फिर ये फ़र्माने की ज़रूरत थी कि अगर एक

भूल जाए तो दूसरी उसको याद दिला दे। दूसरी औरत के याद दिलाने से फ़ायदा ही क्या है?

تَحْتَاجُ أَنْ تُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى، مَا كَانَ يَصْنَعُ بِذِكْرِ هَذِهِ الأُخْرَى.

तश्रीह : अबुज़्ज़िनाद जिनका ऊपर ज़िक्र हुआ मदीना के क़ाज़ी और इमाम मालिक के उस्ताद हैं। अहले मदीना और इमाम शाफ़िई और अह्मद और अहले ह़दीष़ सब इसके क़ाइल हैं कि अगर मुद्दई के पास एक ही गवाह हो तो मुद्दई से क़सम लेकर एक गवाह और क़सम पर फ़ैसला कर देंगे। मुद्दई की क़सम दूसरे गवाह के क़ायम मुक़ाम हो जाएगी और ये अम्र ह़दीष़े स़ह़ीह़ से ष़ाबित है जिसको इमाम मुस्लिम ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से निकाला कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक गवाह और एक क़सम पर फ़ैसला किया और अस़्ह़ाबे सुनन ने इसको अबू हुरैरह (रज़ि.) और जाबिर (रज़ि.) से निकाला। इब्ने ख़ुज़ैमा ने कहा ये ह़दीष़ स़ह़ीह़ है।

इब्ने शिब्रमा कूफ़ा के क़ाज़ी थे। अहले कूफ़ा जैसे ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) इसे जाइज़ नहीं कहते और स़ह़ीह़ ह़दीष़ के बरख़िलाफ़ आयते क़ुर्आन से इस्तिदलाल करते हैं। ह़ालाँकि आयते क़ुर्आन ह़दीष़ के बरख़िलाफ़ नहीं हो सकती और क़ुर्आन का जानने वाला और समझने वाला आँह़ज़रत (ﷺ) से ज़्यादा और कोई नहीं था। (वह़ीदी)

आयत से इब्ने शिब्रमा ने जो इस्तिदलाल किया है वो स़ह़ीह़ नहीं है क्योंकि क़ुर्आन मजीद में मामला करने वालों को ये हुक्म दिया है कि वो मामला करते वक़्त दो मर्दों या एक मर्द और दो औरतों को गवाह बना लें। दो औरतें इसलिये रखी हैं कि वो नाक़िसुल अ़क़्ल और नाक़िसुल ह़िफ़्ज़ होती हैं। एक भूल जाए तो दूसरी उसको याद दिला दे और ये ज़ाहिर है कि मुद्दई से जो क़सम ली जाती है वो उसी वक़्त जब निस़ाबे शहादत का पूरा न हो, अगर एक मर्द और दो औरतें या दो मर्द मौजूद हों तब मुद्दई से क़सम लेनी ज़रूरी नहीं है।

इमाम शाफ़िई ने फ़र्माया, **यमीनन मअ़श्शाहिद** की ह़दीष़ क़ुर्आन के ख़िलाफ़ नहीं है। बल्कि ह़दीष़ में बयान है उस अम्र का जिसका ज़िक्र क़ुर्आन में नहीं है और अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद हमको ये हुक्म दिया है कि हम उसके रसूल के हुक्म पर चलें और जिस चीज़ से आपने मना फ़र्माया कि उससे बाज़ रहें। मैं (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरह़ूम) कहता हूँ कि क़ुर्आन में तो ये ज़िक्र है कि अपने पांव वुज़ू में धोओ, फिर ह़न्फ़िया मौज़ों पर मसह़ क्यूँ जाइज़ कहते हैं। इसी त़रह़ क़ुर्आन में ये ज़िक्र है कि अगर पानी न पाओ तो तयम्मुम कर लो और ह़न्फ़िया उसके बरख़िलाफ़ एक ज़ईफ़ ह़दीष़ की रू से नबीज़े तमर से वुज़ू क्यूँ जाइज़ समझते हैं और लुत्फ़ ये है कि नबीज़े तमर की ज़ईफ़ और मज्हूल ह़दीष़ ज़ईफ़ क़रार देकर उससे किताबुल्लाह पर ज़्यादती जाइज़ हैं और **यमीन मअ़श्शाहिद** की स़ह़ीह़ और मशहूर ह़दीष़ को रद्द करते हैं। **व हल हाज़ा इल्ला ज़ुल्मुन अ़ज़ीम मिन्हु** (वह़ीदी)

ह़दीष़े हाजा के ज़ेल मरह़ूम लिखते हैं या'नी जब मुद्दई के पास गवाह न हों। बैहक़ी ने अ़म्र बिन शुऐ़ब अ़न् अबीह अ़न जद्दिही से मर्फ़ूअ़न यूँ निकाला, **अल् बय्यिनतु अ़ला मनिद्दआ वल्यमीनु मन अन्कर** मा'लूम हुआ कि मुद्दआ अ़लैह पर हर ह़ाल में क़सम खाना लाज़िम होगा। जब मुद्दई के पास शहादत न हो, ख़्वाह मुद्दई और मुद्दआ अ़लैह में इख़्तिलात़ और रब्त़ (सम्पर्क) हो या न हो। इमाम शाफ़िई और अहले ह़दीष़ और जुम्हूर उ़लमा का यही क़ौल है, लेकिन इमाम मालिक कहते हैं कि मुद्दआ अ़लैह से उसी वक़्त क़सम ली जाएगी। जब उसमें और मुद्दई में इर्तिबात़ और मुआ़मलात हों। वरना हर शख़्स़ शरीफ़ आदमियों को क़सम खिलाने के लिये झूठे दावे उन पर करेगा। (वह़ीदी)

2668. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ़ बिन उ़मर ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने लिखा था, नबी करीम (ﷺ) ने मुद्दआ अ़लैह के लिये क़सम खाने का फ़ैसला किया था। (राजेअ़ : 2514)

٢٦٦٨ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: ((كَتَبَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَضَى بِالْيَمِيْنِ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ)).

[راجع: ٢٥١٤]

2669,70. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया मंसूर से, उनसे अबू वाईल ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि जो शख़्स (झूठी) क़सम किसी का माल हासिल करने के लिये खाएगा तो अल्लाह तआ़ला से वो इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह पाक उस पर ग़ज़बनाक होगा। उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने (इस ह़दीष़ की) तस्दीक़ के लिये ये आयत नाज़िल फ़र्माई। जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों से थोड़ी पूँजी ख़रीदते हैं, अ़ज़ाबे अलीम तक। फिर अश्अ़ष़ बिन क़ैस (रज़ि.) हमारी त़रफ़ तशरीफ़ लाए और पूछने लगे कि अबू अ़ब्दुर्रह़मान (अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ि.) तुमसे कौनसी ह़दीष़ बयान कर रहे थे। हमने उनकी यही ह़दीष़ बयान की तो उन्होंने कहा कि उन्होंने स़ह़ीह़ बयान की, ये आयत मेरे ही बारे में नाज़िल हुई थी। मेरा एक शख़्स से झगड़ा था। हम अपना मुक़द्दमा रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ले गए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि या तुम दो गवाह लाओ, वरना इसकी क़सम पर फ़ैसला होगा। मैंने कहा कि (गवाह मेरे पास नहीं हैं लेकिन अगर फ़ैसला क़सम पर होगा) फिर तो ये ज़रूर ही क़सम खा लेगा और कोई परवाह न करेगा। नबी करीम (ﷺ) ने ये सुनकर फ़र्माया कि जो शख़्स भी किसी का माल लेने के लिये (झूठी) क़सम खाएगा तो अल्लाह तआ़ला से वो इस हाल में मिलेगा कि वो उस पर ग़ज़बनाक होगा। उसकी तस्दीक़ में अल्लाह तआ़ला ने मज़्कूरा बाला आयत नाज़िल फ़र्माई थी, फिर उन्होंने यही आयत तिलावत की। (राजेअ़ : 2356, 2357)

٢٦٦٩، ٢٦٧٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِيْنٍ يَسْتَحِقُّ بِهَا مَالاً لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ، ثُمَّ أَنْزَلَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ تَصْدِيْقَ ذَلِكَ: ﴿إِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ - إِلَى - عَذَابٌ أَلِيْمٌ﴾. ثُمَّ إِنَّ الأَشْعَثَ بْنَ قَيْسٍ خَرَجَ إِلَيْنَا فَقَالَ: مَا يُحَدِّثُكُمْ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ؟ فَحَدَّثْنَاهُ بِمَا قَالَ: فَقَالَ: صَدَقَ، لَفِيَّ أُنْزِلَتْ، كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ خُصُوْمَةٌ فِي شَيْءٍ، فَاخْتَصَمْنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: شَاهِدَاكَ أَوْ يَمِيْنُهُ. فَقُلْتُ: إِنَّهُ إِذًا يَحْلِفُ وَلاَ يُبَالِي. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِيْنٍ يَسْتَحِقُّ بِهَا مَالاً - وَهُوَ فِيْهَا فَاجِرٌ - لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)). فَأَنْزَلَ اللهُ تَصْدِيْقَ ذَلِكَ. ثُمَّ اقْتَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ)). [راجع: ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]

तश्रीह: कुछ ह़न्फ़िया ने इस ह़दीष़ से ये दलील ली है कि **यमीन मअश्शाहिद** पर फ़ैसला करना दुरुस्त नहीं और ये इस्तिदलाल फ़ासिद है कि **यमीन मअश्शाहिदीन** की शक़ में दाख़िल है तो मतलब ये हैकि दो गवाह लाए, इस त़रह से कि दो मर्द हों या एक मर्द और दो औरतें या एक मर्द और एक क़सम वरना मुद्दआ़ अ़लैह से क़सम ले। ये ह़न्फ़िया इतना ग़ौर नहीं करते कि अल्लाह और रसूल (ﷺ) के कलाम को बाहम मिलाना बेहतर है या उनमें मुख़ालफ़त करना, एक पर अ़मल करना, एक को तर्क करना। (वह़ीदी)

अल्ह़म्दुलिल्लाह कि ह़रमे नबवी मदीनतुल मुनव्वरा में 9 अप्रैल 1970 ईस्वी को ह़ुज़ूर (ﷺ) के मवाजा शरीफ़ मे बैठकर यहाँ तक मतन को बग़ौर पढ़ा गया।

बाब 21 : अगर किसी ने कोई दा'वा किया या (अपनी औ़रत पर) ज़िना का इल्ज़ाम लगाया और गवाह लाने के लिये मुहलत चाही तो मुहलत दी जाएगी

٢١- بَابُ إِذَا ادَّعَى أَوْ قَذَفَ فَلَهُ أَنْ يَلْتَمِسَ الْبَيِّنَةَ وَيَنْطَلِقَ لِطَلَبِ الْبَيِّنَةِ

जैसे ह़िसाब देखने के लिये मुहलत दी जाएगी। अगर मुहलत के बाद एक गवाह लाया और दूसरा गवाह ह़ाज़िर करने के लिये और मुहलत चाहे तो फिर मुहलत दी जाएगी।

2671. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के सामने अपनी बीवी पर शुरैक बिन सह़्माअ के साथ तोहमत लगाई तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस पर गवाह ला वरना तुम्हारी पीठ पर ह़द लगाई जाएगी। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हममें से कोई शख़्स अगर अपनी औरत पर किसी दूसरे को देखेगा तो गवाह ढूँढने दौड़ेगा? आँह़ज़रत (ﷺ) बराबर यही फ़र्माते रहे कि गवाह ला वरना तुम्हारी पीठ पर ह़द लगाई जाएगी। फिर लिआ़न की ह़दीष़ का ज़िक्र किया। (दीगर मक़ाम : 4747, 5307)

٢٦٧١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ هِشَامٍ قَالَ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ قَذَفَ امْرَأَتَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ بِشَرِيْكِ بْنِ سَحْمَاءَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْبَيِّنَةَ، أَوْ حَدٌّ فِي ظَهْرِكَ))، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِذَا رَأَى أَحَدُنَا عَلَى امْرَأَتِهِ رَجُلاً يَنْطَلِقُ يَلْتَمِسُ الْبَيِّنَةَ؟ فَجَعَلَ يَقُولُ: ((الْبَيِّنَةَ وَإِلاَّ حَدٌّ فِي ظَهْرِكَ. فَذَكَرَ حَدِيْثَ اللِّعَانِ)).

[طرفاه في : ٤٧٤٧، ٥٣٠٧].

तश्रीह : मत़लब ये है कि दा'वा करने या किसी पर तोहमत लगाने के बाद अगर मुद्दई के पास फ़ौरी त़ौर पर गवाह न हों तो इतनी उस अम्र की मुहलत दी जाएगी कि वो गवाह तलाश करके अ़दालत में पेश करे। हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) के सामने उसका अपना चश्मदीद वाक़िया था और ख़ुद अपनी बीवी का मामला था, दूसरी त़रफ़ इर्शादे रसूले पाक (ﷺ) कि शरई क़ानून के तह़त चार गवाह पेश करो, उसने हैरान व परेशान होकर ये बात कही जो ह़दीष़ में मज़्कूर है। आख़िर अल्लाह पाक ने उस मुश्किल का ह़ल लिआ़न की सूरत में ख़ुद ही पेश फ़र्माया और रसूले करीम (ﷺ) ने लिआ़न के बारे में मुफ़स्सल ह़दीष़ इर्शाद फ़र्माई। इससे ये भी ष़ाबित हुआ कि जुम्ला अह़ादीष़े नबवी का अस़ल माख़ूज़ क़ुर्आने करीम ही है, इस ह़क़ीक़त के पेशेनज़र क़ुर्आन मजीद मतन है और ह़दीष़े नबवी उसकी शरह़ है जो लोग मह़ज़ क़ुर्आन मजीद पर अ़मल करने का नारा बुलन्द करते हैं और अह़ादीष़े नबवी की तक्ज़ीब करते (झुठलाते) हैं, वे शैत़ानी फ़रेब में गिरफ़्तार हैं और गुमराही के अ़मीक़ ग़ार (गहरे गड्ढे) में गिर चुके हैं। जिसका नतीजा हलाकत, तबाही, गुमराही और दोज़ख़ है। अल्लाह की मार उन लोगों पर जो क़ुर्आन मजीद और ह़दीष़े नबवी में तज़ाद ष़ाबित करें। क़ुर्आन पर ईमान का दा'वा करें और ह़दीष़ का इंकार करें। **क़ातलहुमुल्लाहु अन्ना यूफ़कून.** (अत् तौबा : 56)

इंसाफ़ की नज़र से देखा जाए तो फ़ित्न-ए-इंकारे ह़दीष़ के बानी वो लोग हैं जिन्होंने अह़ादीष़े नबवी को ज़न्नियात के दर्जे में रखकर उनकी अहमियत को गिरा दिया। ह़दीष़े नबवी जो बसनदे स़ह़ीह़ ष़ाबित हो उसको मह़ज़ ज़न्न (गुमान) कह देना बहुत बड़ी जुर्अत है। अल्लाह उन फ़ुक़हा पर रह़म करे जो इस तख़्फ़ीफ़े ह़दीष़ के मुर्तकिब हुए जिन्होने फ़ित्न-ए-इंकारे ह़दीष़ का दरवाज़ा खोल दिया। अल्लाह पाक हर मुसलमान को स़िराते मुस्तक़ीम नस़ीब करे। आमीन।

बाब 22 : अ़स्र की नमाज़ के बाद (झूठी) क़सम खाना और ज़्यादा गुनाह है

٢٢- بَابُ الْيَمِيْنِ بَعْدَ الْعَصْرِ

2672. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे

٢٦٧٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ ابْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ

حَدَّثَنَا جَرِيْرُ بْنُ عَبْدِ الْحَمِيْدِ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ثَلاَثَةٌ لاَ يُكَلِّمُهُمُ اللهُ وَلاَ يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ وَلاَ يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ: رَجُلٌ عَلَى فَضْلِ مَاءٍ بِطَرِيْقٍ يَمْنَعُ مِنْهُ ابْنَ السَّبِيْلِ. وَرَجُلٌ بَايَعَ رَجُلاً لاَ يُبَايِعُهُ إِلاَّ لِلدُّنْيَا، فَإِنْ أَعْطَاهُ مَا يُرِيْدُ وَفَى لَهُ وَإِلاَّ لَمْ يَفِ لَهُ. وَرَجُلٌ سَاوَمَ رَجُلاً بِسِلْعَةٍ بَعْدَ الْعَصْرِ فَحَلَفَ بِاللهِ لَقَدْ أُعْطِيَ بِهَا كَذَا وَكَذَا فَأَخَذَهَا)). [راجع: ٢٣٥٨]

जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया आ'मश से, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तीन त़रह़ के लोग ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला उनसे बात भी न करेगा न उनकी त़रफ़ नज़र उठाकर देखेगा और न उन्हें पाक करेगा बल्कि उन्हें सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। एक वो शख़्स़ जो सफ़र में ज़रूरत से ज़्यादा पानी लिये जा रहा है और किसी मुसाफ़िर को (जिसे पानी की ज़रूरत है) न दे। दूसरा वो शख़्स़ जो किसी (ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन) से बेअ़त करे और स़िर्फ़ दुनिया के लिये बेअ़त करे कि जिससे उसने बेअ़त की अगर वो उसका मक़्स़द पूरा कर दे तो ये भी वफ़ादारी से काम ले, वरना उसके साथ बेअ़त व अ़हद के ख़िलाफ़ करे। तीसरा वो शख़्स़ जो किसी से अ़स्र के बाद किसी सामान का भाव करे और अल्लाह की क़सम खा ले कि उसे उसका इतना इतना रुपया मिल रहा था और ख़रीददार उस सामान को (उसकी क़सम की वजह से) ले ले। ह़ालाँकि वो झूठा है। (राजेअ़ : 2358)

तीनों गुनाह जो यहाँ मज़्कूर हुए अख़्लाक़ी ए'तिबार से भी बहुत ही बुरे हैं कि उनकी जिस क़दर मज़म्मत की जाए कम है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) मज़्कूरा तीसरे शख़्स़ की वजह से यहाँ इस ह़दीष़ को लाए। तिजारत में झूठ बोलकर माल बेचना हर वक़्त ही गुनाह है मगर अ़स्र के बाद ऐसी क़सम खाना और भी बदतर गुनाह है कि दिन के उस आख़िरी ह़िस्से में भी वो झूठ बोलने से बाज़ न रह सका।

٢٣- بَابُ يَحْلِفُ الْمُدَّعَى عَلَيْهِ حَيْثُمَا وَجَبَتْ عَلَيْهِ الْيَمِيْنُ وَلاَ يُصْرَفُ مِنْ مَوضِعٍ إِلَى غَيْرِهِ

बाब 23 : मुद्दआ़ अ़लैह पर जहाँ क़सम खाने का हुक्म दिया जाए वहीं क़सम खा ले ये ज़रूरी नहीं कि किसी दूसरी जगह पर जाकर क़सम खाए

قَضَى مَرْوَانُ بِالْيَمِيْنِ عَلَى زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ : أَحْلِفُ لَهُ مَكَانِي، فَجَعَلَ زَيْدٌ يَحْلِفُ، وَأَبَى أَنْ يَحْلِفَ عَلَى الْمِنْبَرِ، فَجَعَلَ مَرْوَانُ يَتَعَجَّبُ مِنْهُ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((شَاهِدَاكَ أَوْ يَمِيْنُهُ)) فَلَمْ يَخُصَّ مَكَانًا دُوْنَ مَكَانٍ.

और मरवान बिन ह़कम ने ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) के एक मुक़द्दमे का फ़ैस़ला मिम्बर पर बैठे हुए किया और (मुद्दआ़ अ़लैह होने की वजह से) उनसे कहा कि आप मेरी जगह आकर क़सम खाएँ। लेकिन ज़ैद (रज़ि.) अपनी ही जगह से क़सम खाने लगे और मिम्बर के पास जाकर क़सम खाने से इंकार कर दिया। मरवान को इस पर तअ़ज्जुब हुआ। और नबी करीम (ﷺ) ने अश्अ़ष़ बिन क़ैस से) फ़र्माया था कि दो गवाह ला वरना उस (यहूदी) की क़सम पर फ़ैस़ला होगा। आप (ﷺ) ने किसी ख़ास़ जगह की तख़्स़ीस़ नहीं फ़र्माई।

मष़लन मुद्दई कहे कि मस्जिद में चलकर क़सम खाओ तो मुद्दआ़ अ़लैह पर ऐसा करना लाज़िम नहीं। ह़न्फ़िया का यही क़ौल

है और हनाबिला भी उसके क़ाइल हैं और शाफ़िइया के नज़दीक अगर क़ाज़ी मुनासिब समझे तो ऐसा हुक्म दे सकता है भले ही मुद्दई उसकी ख़्वाहिश न करे। मरवान के वाक़िये को इमाम मालिक ने मौता में वस्ल किया है। ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) और अ़ब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ में एक मकान की बाबत झगड़ा था। मरवान उस वक़्त मुआविया (रज़ि.) की तरफ़ से मदीना का हाकिम था। उसने ज़ैद को मिम्बर पर जाकर क़सम खाने का हुक्म दिया। ज़ैद ने इंकार किया और ज़ैद के क़ौल पर अमल करना बेहतर है, मरवान की राय पर अमल करने से। लेकिन हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) से भी मरवान की राय के मुताबिक़ मन्क़ूल है कि मिम्बर के पास क़सम खाई जाए, इमाम शाफ़िई ने कहा मुस्ह़फ़ पर क़सम दिलाने में क़बाहत नहीं। (वहीदी)

अश्अ़ष बिन क़ैस और यहूदी का मुक़द्दमा गुज़िश्ता से पैवस्ता हदीष में गुज़र चुका है, यहाँ इसी तरफ़ इशारा है अगर कुछ अहमियत होती तो आँहज़रत (ﷺ) यहूदी से तौरात हाथ में लेकर क़सम खाने का हुक्म देते या उनके गिरजा में क़सम खाने का हुक्म देते। मगर शरअ़न उनकी क़सम के बारे में कोई ज़रूरत नहीं।

2673. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद ने बयान किया आ'मश से, उनसे अबू वाईल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स क़सम इसलिये खाता है ताकि उसके ज़रिये किसी का माल (नाजाइज़ तौर पर) हज़म कर जाए तो वो अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह पाक उस पर ग़ज़बनाक होगा।
(राजेअ़ : 2356)

٢٦٧٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِيْنٍ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالاً لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)). [راجع: ٢٣٥٦]

क़सम मे ताकीद व तग़्लीज़ किसी ख़ास मकान जैसे मस्जिद वग़ैरह या किसी ख़ास वक़्त जैसे अ़स्र या जुम्आ के दिन वग़ैरह से नहीं पैदा होती। जहाँ अदालत है और क़ानूने शरीअ़त के ए'तिबार से मुद्दआ अ़लैह पर क़सम वाजिब हुई है उससे क़सम उसी वक़्त और वहीं ली जाए। क़सम लेने के लिये न किसी ख़ास वक़्त का इंतिज़ार किया जाए और न किसी मुक़द्दस जगह उसे ले जाया जाए। इसलिये कि मकान से अ़सल क़सम में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। इमाम बुख़ारी (रह.) यही बतलाना चाहते हैं।

बाब 24 : जब चन्द आदमी हों और हर एक क़सम खाने में जल्दी करे तो पहले किससे क़सम ली जाए

٢٤- بَابُ إِذَا تَسَارَعَ قَوْمٌ فِي الْيَمِيْنِ

2674. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने चन्द आदमियों से क़सम खाने के लिये कहा (एक ऐसे मुक़द्दमे में जिसके ये लोग मुद्दआ अ़लैह थे) क़सम के लिये सब एक साथ आगे बढ़े तो आँहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया कि क़सम खाने के लिये उनमें बाहम पासा डाला जाए कि पहले कौन क़सम खाए।

٢٦٧٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ عَرَضَ عَلَى قَوْمٍ الْيَمِيْنَ فَأَسْرَعُوا، فَأَمَرَ أَنْ يُسْهَمَ بَيْنَهُمْ فِي الْيَمِيْنِ أَيُّهُمْ يَحْلِفُ)).

अबू दाऊद और निसाई की रिवायत में यूँ है कि दो शख़्सों ने एक चीज़ का दा'वा किया और किसी के पास गवाह न थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुर्आ डालो और जिसका नाम निकले वो क़सम खा ले। हाकिम की रिवायत में यूँ है कि दो आदमियों ने एक ऊँट का दा'वा किया और दोनों ने गवाह पेश किये। आप (ﷺ) ने आधो-आध ऊँट दोनों को दिला दिये और अबू दाऊद

की रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने कुर्आ का हुक्म दिया और जिसका नाम कुर्आ में निकला उसको दिला दिया।

बाब 25 : अल्लाह तआला का सूरह आले इमरान में फ़र्मान कि

जो लोग अल्लाह को दरम्यान में देकर और झूठी क़समें खाकर थोड़ा मोल लेते हैं। (आख़िर आयत तक)

2675. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि हमको यज़ीद बिन हारून ने ख़बर दी, उन्हें अव्वाम ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे इब्राहीम अबू इस्माईल सकसकी ने बयान किया और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) को ये कहते सुना कि एक शख़्स ने अपना सामान दिखाकर अल्लाह की क़सम खाई कि उसे उस सामान का इतना रुपया मिल रहा था, हालाँकि इतना नहीं मिल रहा था। इस पर ये आयत नाज़िल हुई कि, जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़समों के ज़रिये थोड़ी क़ीमत हासिल करते हैं। इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) ने कहा कि ग्राहकों को फांसने के लिये क़ीमत बढ़ाने वाला सूदख़ोर की तरह ख़ाइन है। (राजेअ : 2088)

٢٥- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:
﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً﴾.

٢٦٧٥- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا يَزِيْدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا الْعَوَّامُ حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ أَبُو إِسْمَاعِيلَ السَّكْسَكِيُّ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((أَقَامَ رَجُلٌ سِلْعَتَهُ فَحَلَفَ بِاللهِ لَقَدْ أَعْطَى بِهَا مَا لَمْ يُعْطِهَا. فَنَزَلَتْ ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً﴾)) [آل عمران : ٧٧]. وَقَالَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى: ((النَّاجِشُ آكِلُ رِبًا خَائِنٌ)).
[راجع: ٢٠٨٨]

क़ाज़ी के सामने अदालत में झूठ बोलने वालों की मज़म्मत पर जो झूठी क़सम खाकर ग़लतबयानी करें हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ख़ास इस्तिदलाल किया है। यूँ झूठ बोलना हर जगह ही मना है।

2676,77. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया शुअबा से, उनसे सुलैमान ने, उनसे अबू वाईल ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स झूठी क़सम इसलिये खाए कि उसके ज़रिये किसी का माल ले सके, या उन्होंने यूँ बयान किया कि अपने भाई का माल ले सके तो वो अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि वो उस पर ग़ज़बनाक होगा। अल्लाह तआला ने उसी की तस्दीक़ में कुर्आन में ये आयत नाज़िल की कि, जो लोग अल्लाह के अहद और (झूठी) क़समों के ज़रिये मा'मूली पूँजी हासिल करते हैं, अल्ख़; फिर मुझसे अश्अष़ (रज़ि.) की मुलाक़ात हुई तो उन्होंने पूछा कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने आज तुमको कौनसी हदीष़ बयान की थी? मैंने उनसे बयान कर दी तो आपने

٢٦٧٦، ٢٦٧٧- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِيْنٍ كَاذِبًا لِيَقْتَطِعَ مَالَ رَجُلٍ - أَوْ قَالَ أَخِيْهِ - لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)). وَأَنْزَلَ اللهُ تَصْدِيقَ ذَلِكَ فِي الْقُرْآنِ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً﴾ الآيَةَ. فَلَقِيَنِي الأَشْعَثُ فَقَالَ: مَا حَدَّثَكُمْ عَبْدُ اللهِ

اَلْيَوْمَ؟ قُلْتُ: كَذَا وَكَذَا. قَالَ: فِيَّ أُنْزِلَتْ. [راجع: ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]

फ़र्माया कि ये आयत मेरे ही वाक़िये के सिलसिले में नाज़िल हुई थी। (राजेअ़ : 2356, 2357)

अ़दालत ग़ैब-दाँ (अन्तर्यामी) नहीं होती। कोई शख़्स ग़लतबयानी करके झूठी क़समें खाकर अपने ह़क़ में फ़ैसला करा ले, ह़ालाँकि वो नाह़क़ पर है तो ऐसा शख़्स अल्लाह के नज़दीक मल्ऊ़न है, वो अपने पेट मे आग के अंगारे खा रहा है। क़यामत के दिन वो अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार होगा। उसको ये ह़क़ीक़त ख़ूब ज़हन-नशीन कर लेनी चाहिये। जो लोग क़ाज़ी के फ़ैसले को ज़ाहिर और बातिन हर ह़ाल में नाफ़िज़ कहने हैं, उनकी ग़लत बयानी की तरफ़ भी ये इशारा है।

٢٦- بَابُ كَيْفَ يُسْتَحْلَفُ؟ قَالَ تَعَالَى : ﴿يَحْلِفُونَ بِاللهِ لَكُمْ﴾ وَقَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ : ﴿ثُمَّ جَاؤُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلاَّ إِحْسَانًا وَتَوْفِيْقًا﴾. يُقَالُ: بِاللهِ وَتَاللهِ وَوَاللهِ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَرَجُلٌ حَلَفَ بِاللهِ كَاذِبًا بَعْدَ الْعَصْرِ)) وَلاَ يَحْلِفُ بِغَيْرِ اللهِ.

बाब 26 : क्यूँ कर क़सम ली जाए

सूरह बक़रह में अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, वो लोग आपके सामने अल्लाह की क़सम खाते हैं, तुमको राज़ी करने के लिये, और सूरह निसा में, फिर तेरे पास अल्लाह की क़सम खाते आते हैं कि हमारी निय्यत तो भलाई और मिलाप की थी, क़सम में यूँ कहा जाए बिल्लाह, वल्लाह, तल्लाह (अल्लाह की क़सम) और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, और वो शख़्स जो अल्लाह की क़सम अ़स्र के बाद खाता है। और अल्लाह के सिवा किसी की क़सम न खाएँ।

कुछ नुस्ख़ों में और दो आयतें मज़्कूर हैं, **व यह़लिफ़ून बिल्लाहि इन्नहुम लमिन्कुम** (अत् तौबा : 56) और **फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि लशहादतुना अह़क़्क़ु मिन शहादतिहिमा** (अल माइदा : 107) और आयतों के लाने से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि क़सम में तग़्लीज़ या'नी सख़्ती ज़रूरी नहीं सिर्फ़ अल्लाह की क़सम काफ़ी है। अ़रब में बिल्लाह, वल्लाह, तल्लाह ये तीनों कलिमे क़सम में कहे जाते हैं। मज़्मूने बाब में आख़िरी, **जुम्ला वला यह़लिफ़ु बिग़ैरिल्लाह** ये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का कलाम है। ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना जाइज़ नहीं।

٢٦٧٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَمِّهِ أَبِي سُهَيْلٍ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّهُ سَمِعَ طَلْحَةَ بْنَ عُبَيْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ : جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَإِذَا هُوَ يَسْأَلُهُ عَنِ الإِسْلاَمِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((خَمْسُ صَلَوَاتٍ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ))، فَقَالَ : هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ : ((لاَ، إِلاَّ أَنْ تَطَوَّعَ)). فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَصِيَامُ رَمَضَانَ))، قَالَ : هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهُ؟ قَالَ: ((لاَ، إِلاَّ أَنْ تَطَوَّعَ)). قَالَ: ((وَذَكَرَ لَهُ رَسُولُ اللهِ

2678. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे उनके चचा अबू सुहैल ने, उनसे उनके वालिद ने और उन्होंने तलह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि एक साह़ब (ज़िमाम बिन ष़अ़लबा) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आए और इस्लाम के बारे में पूछने लगे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, दिन और रात में पाँच नमाज़ें अदा करना। उसने पूछा क्या इसके अ़लावा भी मुझ पर कुछ नमाज़ और ज़रूरी है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, नहीं, ये दूसरी बात है कि तुम नफ़्ल पढ़ो। फिर रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, रमज़ान के रोज़े हैं। इस पर पूछा क्या इसके अ़लावा भी मुझ पर कुछ (रोज़े) वाजिब हैं। आपने फ़र्माया नहीं, सिवा उसके जो तुम अपने तौर पर नफ़्ल रखो। तलह़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके सामने रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़कात का भी ज़िक्र

किया तो उन्होंने पूछा, क्या (जो फ़र्ज़ ज़कात है आपने बताई है) उसके अलावा भी मुझ पर कोई ख़ैरात वाजिब है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं सिवा उसके जो तुम ख़ुद अपनी तरफ़ से नफ़्ल दो। उसके बाद वो साहब ये कहते हुए जाने लगे कि अल्लाह गवाह है न मैं इनमें कोई ज़्यादती करूँगा और न कोई कमी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर उसने सच कहा है तो कामयाब हुआ। (राजेअ 46)

ﷺ الزَّكَاةَ)). قَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ: ((لاَ، إِلاَّ أَنْ تَطَوَّعَ)) فَأَدْبَرَ الرَّجُلُ وَهُوَ يَقُولُ: وَاللهِ لاَ أَزِيْدُ عَلَى هَذَا وَلاَ أَنْقُصُ. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَفْلَحَ إِنْ صَدَقَ)). [راجع: ٤٦]

या'नी जन्नत में जाएगा। बाब का मतलब इससे निकला कि उसने क़सम में लफ़्ज़ वल्लाह का इस्ते'माल किया। क़सम खाने में यही काफ़ी है। वल्लाह, बिल्लाह, तल्लाह ये सब क़समिया अल्फ़ाज़ हैं।

2679. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उन्होंने कहा कि नाफ़ेअ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी को क़सम खानी ही है तो अल्लाह तआला की क़सम खाए, वरना खामोश रहे।

(दीगर मक़ाम : 3836, 6108, 6646)

٢٦٧٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ قَالَ : ذَكَرَ نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللهِ أَوْ لِيَصْمُتْ)).

[أطرافه في: ٣٨٣٦، ٦١٠٨، ٦٦٤٦]

इसमें इशारा है कि अदालत में क़सम वही मो'तबर होगी जो अल्लाह के नाम पर खाई जाए। ग़ैरुल्लाह की क़सम नाक़ाबिले ए'तिबार बल्कि गुनाह होगी। दूसरी रिवायत में है जिसने ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई, उसने शिर्क किया। पस क़सम सच्ची खानी चाहिये और वो सिर्फ़ अल्लाह के नामे पाक की क़सम हो वरना ख़ामोश रहना बेहतर है।

बाब 27 : जिस मुद्दई ने (मुद्दआ अलैह की) क़सम खा लेने के बाद गवाह पेश किये

٢٧- بَابُ مَنْ أَقَامَ الْبَيِّنَةَ بَعْدَ الْيَمِيْنِ

तो उसके गवाह क़ुबूल किये जाएँगे, अहले कूफ़ा और शाफ़िई और अहमद का यही क़ौल है। इमाम मालिक (रह.) कहते हैं कि अगर मुद्दई को अपने गवाहों का इल्म न था और मुद्दआ अलैह से क़सम ले ली, फिर गवाहों का इल्म हुआ तो गवाह क़ुबूल होंगे और जो गवाहों का इल्म होते हुए उसने गवाह पेश नहीं किये और क़सम ले ली तो अब गवाह मंज़ूर नहीं किये जाएँगे। (वहीदी)

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि ये मुम्किन है कि (मुद्दई और मुद्दआ अलैह में कोई) एक—दूसरे से बेहतर तरीक़े पर अपना मुक़द्दमा पेश कर सकता हो। ताऊस, इब्राहीम, और शुरैह (रह.) ने कहा कि आदिल गवाह झूठी क़सम के मुक़ाबले में क़ुबूल किये जाने का ज़्यादा मुस्तहिक़ है।

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَلْحَنُ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ)). وَقَالَ طَاوُسٌ وَإِبْرَاهِيْمُ: الْبَيِّنَةُ الْعَادِلَةُ أَحَقُّ مِنَ الْيَمِيْنِ الْفَاجِرَةِ.

2680. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया इमाम

٢٦٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ

مَالِكٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّكُمْ تَخْتَصِمُونَ إِلَيَّ، وَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَلْحَنُ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ أَخِيهِ شَيْئًا بِقَوْلِهِ فَإِنَّمَا أَقْطَعُ لَهُ قِطْعَةً مِنَ النَّارِ، فَلَا يَأْخُذْهَا)). [راجع: ٢٤٥٨]

मालिक से, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके बाप ने, उनसे ज़ैनब ने और उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम लोग मेरे यहाँ अपने मुक़द्दमात लाते हो और कभी ऐसा होता है कि एक तुममें दूसरे से दलील बयान करने में बढ़कर होता है (क़ुव्वते बयानिया बढ़कर रखता है) फिर मैं उसको अगर उसके भाई का हक़ (ग़लती से) दिला दूँ, तो वो (हलाल न समझे) उसको न ले, मैं उसको दोज़ख़ का एक टुकड़ा दिला रहा हूँ। (राजेअ : 2458)

तशरीह : इस हदीष में इमाम मालिक (रह.) और शाफ़िई (रह.) और इमाम अहमद (रह.) उलमा का मज़हब षाबित हुआ कि क़ाज़ी का हुक्म ज़ाहिरन नाफ़िज़ होता है न कि बातिनन, या'नी क़ाज़ी अगर ग़लती से कोई फ़ैसला कर दे तो जिसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे इन्दल्लाह उसके लिये वो चीज़ दुरुस्त न होगी और हन्फ़िया का रद्द हुआ जिनके नज़दीक क़ाज़ी की क़ज़ा ज़ाहिरन और बातिनन दोनों तरह नाफ़िज़ हो जाती हैं। हदीष से भी यही निकलता है कि रसूले करीम (ﷺ) को भी धोखा हो जाना मुम्किन था और आपको इल्मे ग़ैब न था और जब आपसे जो सारे जहाँ से अफ़ज़ल थे ग़लती हो जाना मुम्किन हुआ तो और किसी क़ाज़ी या मुज्तहिद इमाम या आलिम या हाकिम की क्या हक़ीक़त और क्या हस्ती है और बड़ा बेवक़ूफ़ है वो शख़्स जो किसी मुज्तहिद या पीर को ख़ता से मा'सूम समझे। (वहीदी)

٢٨- بَابُ مَنْ أَمَرَ بِإِنْجَازِ الْوَعْدِ

وَفَعَلَهُ الْحَسَنُ ﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ﴾. وَقَضَى ابْنُ الأَشْوَعِ بِالْوَعْدِ وَذَكَرَ ذَلِكَ وَعَنْ سَمُرَةَ. وَقَالَ الْمِسْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَذَكَرَ صِهْرًا لَهُ قَالَ: وَعَدَنِي فَوَفَى لِي)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: رَأَيْتُ إِسْحَاقَ بْنَ إِبْرَاهِيمَ يَحْتَجُّ بِحَدِيثِ ابْنِ أَشْوَعَ.

बाब 28 : जिसने वा'दा पूरा करने का हुक्म दिया

और इमाम हसन बसरी (रह.) ने उसको पूरा कर दिया। और हज़रत इस्माईल (अ) का ज़िक्र अल्लाह तआला ने उस वस्फ़ से किया है कि वो वादे के सच्चे थे। और सईद बिन अल अश्वअ ने वा'दा पूरा करने के लिये हु क्म दिया था। समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) से ऐसा ही नक़ल किया, और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने कहा कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप अपने एक दामाद (अबुल आस) का ज़िक्र फ़र्मा रहे थे, आपने फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे वा'दा किया था उसे पूरा किया, अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी रह.) ने कहा कि इस्हाक़ बिन इब्राहीम को मैंने देखा कि वो वा'दा पूरा करने के वजूब पर इब्ने अश्वअ की हदीष से दलील लेते थे।

इमाम बुख़ारी और कुछ उलमा का यही क़ौल है कि वा'दा पूरा करना चाहिये, अगर कोई न करे तो क़ाज़ी पूरा कराएगा। लेकिन जुम्हूर उलमा कहते हैं कि वा'दा पूरा करना मुस्तहब और अख़्लाक़न ज़रूरी है। पर क़ाज़ी जबरन उसे पूरा नहीं करा सकता। अज़्रूए दिरायत इमाम बुख़ारी ही का क़ौल सहीह है कि अदालत फ़ैसला करते वक़्त एक हुक्म जारी करती है गोया मुद्दआ अलैह से वा'दा लेती है कि वो अदालत के फ़ैसले को तस्लीम करते हुए गोया उस पर अमल दरआमद करने का वा'दा कर रहा है। अब घर जाकर वो इस हुक्म पर अमल न करे और मुद्दई को कोरा जवाब दे तो अदालत पुलिस के ज़रिये अपने फ़ैसले का निफ़ाज़ कराएगी। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का यही मंशा है और दुनिया का यही क़ानून है। इसी मक़सद से हज़रत इमाम

बुख़ारी (रह.) ने कई अहादीष़ और आष़ार नक़ल कर दिये हैं। अगर अदालती हुक्म को कोई शख़्स जारी न होने दे और तस्लीम के वादे से फिर जाए और अदालत कुछ न कर सके तो ये महज़ एक तमाशा बनकर रह जाएगा।

2681. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि उन्हें अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हिरक़्ल ने उनसे कहा था कि मैंने तुमसे पूछा था कि वो (मुहम्मद स) तुम्हें किस बात का हुक्म देते हैं तो तुमने बताया कि वो तुम्हें नमाज़, सच्चाई, इफ़्फ़त, अहद के पूरा करने और अमानत के अदा करने का हुक्म देते हैं। और ये नबी की सिफ़ात हैं। (राजेअ : 7)

٢٦٨١- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ حَمْزَةَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُوسُفْيَانَ أَنَّ هِرَقْلَ قَالَ لَهُ: ((سَأَلْتُكَ مَاذَا يَأْمُرُكُمْ؟ فَزَعَمْتَ أَنَّهُ يَأْمُرُكُمْ بِالصَّلاَةِ وَالصِّدْقِ وَالْعَفَافِ وَالْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ وَأَدَاءِ الأَمَانَةِ، قَالَ: وَهَذِهِ صِفَةُ نَبِيٍّ)). [راجع: ٧]

तश्रीह हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ख़ुद मुज्तहिदे मुत्लक़ हैं। जामेउस़्स़हीह़ में जगह-जगह आपने अपने ख़ुदादाद इज्तिहादी मल्का से काम लिया है। आपके सामने ये नहीं होता कि उनको किस मसलक की मुवाफ़क़त करनी है और किसकी तर्दीद। उनके सामने सिर्फ़ किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह होती है। उन ही के तहत वो मसाइल व अहकाम पेश करते हैं। वो किसी मुज्तहिद व इमाम के मसलक के मुख़ालिफ़ हों या मुवाफ़िक़ हज़रत इमाम को क़त्अन ये परवाह नहीं होती। फिर मौजूदा देवबन्दी नाशिराने बुख़ारी का कई जगह ये लिखना कि यहाँ इमाम बुख़ारी (रह.) ने फ़लाँ इमाम का मसलक इख़्तियार किया है बिलकुल ग़लत़ और हज़रत इमाम की शाने इज्तिहाद में तन्क़ीस है। इस जगह भी स़ाहिबे तफ़्हीमुल बुख़ारी ने ऐसा ही इल्ज़ाम दोहराया है। वो स़ाहब लिखते हैं कि इमाम मालिक (रह.) कहते हैं कि वा'दा करने का हुक्म भी क़ज़ा के तहत आ सकता है और इमाम बुख़ारी (रह.) ने भी ग़ालिबन इस बाब में इमाम मालिक (रह.) का मसलक इख़्तियार किया है। (तफ़्हीमुल बुख़ारी पारा नं. 10 पेज नं. 117)

सच है, **अल्मर्उ यक़ीसु अला नफ़्सिही** मुक़ल्लिदीन का चूँकि यही रवय्या है वो मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) को भी उसी नज़र से देखते हैं जो बिलकुल ग़लत़ है। हज़रत इमाम मुज्तहिदे मुत्लक़ (रहिमहुल्लाहु तआला)

2682. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अबू सुहैल नाफ़ेअ बिन मालिक बिन अबी आमिर ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं। जब बात कहे तो झूठ कहे, अमानत दी गई तो उसने उसमें ख़यानत की और वा'दा किया तो उसे पूरा नहीं किया। (राजेअ : 33)

٢٦٨٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي سُهَيْلٍ نَافِعِ بْنِ مَالِكِ بْنِ أَبِي عَامِرٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلاَثٌ: إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ)). [راجع: ٣٣]

2683. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमें हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्हें अम्र

٢٦٨٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي

عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَ: ((لَمَّا مَاتَ النَّبِيُّ ﷺ جَاءَ أَبَا بَكْرٍ مَالٌ مِنْ قِبَلِ الْعَلاَءِ بْنِ الْحَضْرَمِيِّ فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ دَيْنٌ، أَوْ كَانَتْ لَهُ قِبَلَهُ عِدَةٌ فَلْيَأْتِنَا: قَالَ جَابِرٌ: فَقُلْتُ وَعَدَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يُعْطِيَنِي هَكَذَا وَهَكَذَا وهَكَذَا- فَبَسَطَ يَدَيْهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ - قَالَ جَابِرٌ: فَعَدَّ فِي يَدِي خَمْسَمِائَةٍ ثُمَّ خَمْسَمِائَةٍ ثُمَّ خَمْسَمِائَةٍ)). [راجع: ٢٢٩٦]

बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अली ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया, कहा नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास (बेहरीन के आ़मिल) अअ़लाअ बिन ह़ज़रमी (रज़ि.) की त़रफ़ से माल आया। अबूबक्र (रज़ि.) ने ऐलान करा दिया कि जिस किसी का भी नबी करीम (ﷺ) पर कोई क़र्ज़ हो, या आँह़ज़रत (ﷺ) का उससे वा'दा हो तो वो हमारे पास आए। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि उस पर मैंने उनसे कहा कि मुझसे रसूलल्लाह (ﷺ) ने वा'दा किया था कि आप (ﷺ) इतना इतना माल मुझे अ़ता करेंगे। चुनाँचे ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने तीन बार अपने हाथ बढ़ाए और मेरे हाथ पर पाँच सौ फिर पाँच सौ और फिर पाँच सौ गिन दिये। (राजेअ़: 2296)

गोया ह़ज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अ़हदे नबवी को पूरा कर दिखाया, इससे भी ये ष़ाबित करना मक़्सूद है कि वा'दा को पूरा करना ही होगा ख़्वाह बज़रिये अ़दालत ही हो।

٢٦٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيْمِ أَخْبَرَنَا سَعِيْدُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ شُجَاعٍ عَنْ سَالِمٍ الأَفْطَسِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: ((سَأَلَنِي يَهُودِيٌّ مِنْ أَهْلِ الْحِيْرَةِ: أَيَّ الأَجَلَيْنِ قَضَى مُوسَى؟ قُلْتُ: لاَ أَدْرِي حَتَّى أَقْدَمَ عَلَى حَبْرِ الْعَرَبِ فَأَسْأَلَهُ. فَقَدِمْتُ فَسَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: قَضَى أَكْثَرَهُمَا وَأَطْيَبَهُمَا، إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ إِذَا قَالَ فَعَلَ)).

2684. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमको सईद बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उनसे मरवान बिन शुजाअ़ ने बयान किया, उनसे सालिम अफ़्तस ने और उनसे सई द बिन जुबैर ने बयान किया ह़ीरा के यहूदी ने मुझसे पूछा, मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने (अपने महर के अदा करने में) कौनसी मुद्दत पूरी की थी? (या'नी आठ साल या दस साल की, जिनका क़ुर्आन में ज़िक्र है) मैंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं, हाँ! अ़रब के बड़े आ़लिम की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर पूछ लूँ (तो फिर तुम्हें बता दूँगा) चुनाँचे मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने बताया कि आपने बड़ी मुद्दत पूरी की (दस साल की) जो दोनों मुद्दतों में बेहतर थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) भी जब किसी से वा'दा करते तो पूरा करते थे।

तश्रीह़ : इन जुम्ला अह़ादीष़ से ह़ज़रत इमाम ने वा'दा पूरा करने का वुजूब ष़ाबित किया, ख़ुसूसन जो वा'दा अ़दालत में किया जाए वो न पूरा करे तो उससे जबरन उसे पूरा कराया जाएगा वरना अ़दालत एक तमाशा बनकर रह जाएगी।

ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के सामने आठ साल और दस साल की मुद्दतें रखी गई थीं। ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लैहिस्सलाम) ने उनसे फ़र्माया कि मैं चाहता हूँ अपनी दो बेटियों में से एक की शादी तुमसे कर दूँ। बशर्ते कि तुम आठ बरस मेरी नौकरी करो और अगर दस बरस पूरा करो तो तुम्हारा एह़सान होगा। ह़दीष़ का आख़िरी जुम्ला का मत़लब ये कि अल्लाह के रसूल वा'दा ख़िलाफ़ हर्गिज़ नहीं होते हैं। यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है। दूसरी रिवायत में यूँ है कि सईद ने कहा, फिर

वो यहूदी मुझसे मिला तो मैंने जो इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया था, वो उसे बतला दिया। वो कहने लगा इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बेशक आ़लिम हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ये आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना था, और आपने ये ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) से पूछा था, जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अल्लाह पाक से जिसके जवाब में अल्लाह पाक ने फ़र्माया था कि मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने वो मीयाद पूरी की जो ज़्यादा लम्बी और ज़्यादा बेहतर थी।

बाब 29 : मुश्रिकों की गवाही न क़ुबूल होगी

٢٩- بَابُ لاَ يُسْأَلُ أَهْلُ الشِّرْكِ عَنِ الشَّهَادَةِ وَغَيْرِهَا وَقَالَ الشَّعْبِيُّ: لاَ تَجُوزُ شَهَادَةُ أَهْلِ الْمِلَلِ بَعْضِهِمْ عَلَى بَعْضٍ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ﴾ [المائدة : ١٤].

और शअ़बी ने कहा कि दूसरे दीन वालों की गवाही एक से दूसरे के ख़िलाफ़ लेनी जाइज़ नहीं है। अल्लाह तआ़ला के इस इर्शाद की वजह से कि हमने उनमें बाहम दुश्मनी और बुग़्ज़ को हवा दे दी है।

وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تُصَدِّقُوا أَهْلَ الْكِتَابِ وَلاَ تُكَذِّبُوهُمْ، وَقُولُوا: ﴿آمَنَّا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ﴾ الآيَةَ)).

अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि अहले किताब की (उनकी मज़हबी रिवायात में) न तस्दीक़ करो और न तक्ज़ीब करो बल्कि ये कह लिया करो कि अल्लाह पर और जो कुछ उसने नाज़िल किया सब पर हम ईमान लाए। अल् आयति

मुश्रिकों की गवाही मुश्रिकों पर न मुसलमानों पर क़ुबूल होगी। ह़न्फ़िया के नज़दीक मुश्रिकों की गवाही मुश्रिकों पर क़ुबूल होगी। अगरचे उनके मज़हब मुख़्तलिफ़ हों क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक यहूदी मर्द और एक यहूदी औ़रत को चार यहूदियों की शहादत पर रजम किया था।

٢٦٨٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ، كَيْفَ تَسْأَلُونَ أَهْلَ الْكِتَابِ وَكِتَابُكُمُ الَّذِي أُنْزِلَ عَلَى نَبِيِّهِ ﷺ أَحْدَثُ الأَخْبَارِ بِاللهِ تَقْرَأُونَهُ لَمْ يُشَبْ؟ وَقَدْ حَدَّثَكُمُ اللهُ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ بَدَّلُوا مَا كَتَبَ اللهُ وَغَيَّرُوا بِأَيْدِيهِمُ الْكِتَابَ فَقَالُوا: ﴿هُوَ مِنْ عِنْدِ اللهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلاً﴾ [البقرة : ٧٩] أَفَلاَ يَنْهَاكُمْ بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْعِلْمِ عَنْ مُسَاءَلَتِهِمْ لاَ وَاللهِ مَا رَأَيْنَا مِنْهُمْ رَجُلاً قَطُّ يَسْأَلُكُمْ عَنِ

2685. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया यूनुस से, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, ऐ मुसलमानों! अहले किताब से तुम क्यूँ सवालात करते हो। ह़ालाँकि तुम्हारी किताब जो तुम्हारे नबी (ﷺ) पर नाज़िल हुई है, अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से सबसे बाद में नाज़िल हुई है। तुम उसे पढ़ते हो और उसमें किसी क़िस्म की आमेज़िश भी नहीं हुई है। अल्लाह तआ़ला तो तुम्हें पहले ही बता चुका है कि अहले किताब ने उस किताब को बदल दिया, जो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दी थी और ख़ुद ही उसमें तग़य्युर कर दिया और फिर कहने लगे ये किताब अल्लाह की त़रफ़ से है। उनका मक़्सद इससे सिर्फ़ ये था कि इस त़रह थोड़ी पूँजी (दुनिया की) ह़ासिल कर सकें। पस क्या जो इल्म (क़ुर्आन) तुम्हारे पास आया है वो तुमको उन (अहले किताब) से पूछने को नहीं रोकता। अल्लाह की क़सम! हमने उनके किसी आदमी को कभी नहीं देखा कि वो इन आयात के मुता'ल्लिक़

الَّذِي أُنْزِلَ عَلَيْكُمْ)).

[أطرافه في : ٧٣٦٣، ٧٥٢٢، ٧٥٢٣].

तुमसे पूछता हो जो तुम पर (तुम्हारे नबी के ज़रिये) नाज़िल की गई हैं। (दीगर मक़ाम : 7363, 7522, 7523)

तश्रीह : इस्लाम ने फ़िक़्ह, आदिल गवाह के लिये जो शर्तें रखी हैं, उनके मे'यार पर उतरना एक ग़ैर–मुस्लिम के लिये नामुम्किन है। इसलिये अलल उमूम उसकी गवाही क़ाबिले क़ुबूल नहीं। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) उसी मसलक के दलाइल बयान फ़र्मा रहे हैं। ये अम्र दीगर है कि इमामे वक़्त, हाकिमे मजाज़ किसी ग़ैर–मुस्लिम की गवाही इस बिना पर क़ुबूल करे कि कुछ दूसरे मुस्तनद क़राइन से भी उसकी तस्दीक़ होती हो। जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद चार यहूदियों की गवाही पर एक यहूदी मर्द और औरत को ज़िना के जुर्म में संगसारी का हुक्म दिया था। बहरहाल क़ायद-ए-कुल्लिया वही है जो हज़रत इमाम ने बयान किया है।

٣٠- بَابُ الْقُرْعَةِ فِي الْمُشْكِلاَتِ

وَقَوْلِهِ: ﴿إِذْ يُلْقُونَ أَقْلاَمَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ﴾ [آل عمران : ٤٤].
وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: اقْتَرَعُوا فَجَرَتِ الأَقْلاَمُ مَعَ الْجِرْيَةِ، وَعَالَ قَلَمُ زَكَرِيَّاءَ الْجِرْيَةَ فَكَفَلَهَا زَكَرِيَّاءُ. وَقَوْلِهِ: ﴿فَسَاهَمَ﴾ أَقْرَعَ ﴿فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ﴾ مِنَ الْمَسْهُومِيْنَ [الصافات : ١٤١].
وَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ: ((عَرَضَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى قَوْمٍ الْيَمِيْنَ فَأَسْرَعُوا، فَأَمَرَ أَنْ يُسْهَمَ بَيْنَهُمْ أَيُّهُمْ يَحْلِفُ)).

बाब 30 : मुश्किलात के वक़्त क़ुर्आ-अंदाज़ी करना

और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, जब वो अपनी क़लमें डालने लगे (क़ुर्आ-अंदाज़ी करने के लिये ताकि) फ़ैसला कर सकें कि मरयम की किफ़ालत कौन करे। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने (आयते मज़्कूरा की तफ़्सीर में फ़र्माया) कि जब सब लोगों ने (नहर उर्दुन में) अपने अपने क़लम डाले, तो तमाम क़लम पानी के बहाव के साथ बह गए लेकिन ज़करिया अलैहिस्सलाम का क़लम उस बहाव में ऊपर आ गया। इसलिये उन्होंने ही मरयम (अलैहिस्सलाम) की तर्बियत अपने ज़िम्मे ली और अल्लाह तआला का इर्शाद है फ़साहम के मा'नी हैं पस उन्होंने क़ुर्आ डाला। फ़काना मिनल मुद् हज़ीन (में मुद्हज़ीन के मा'नी हैं) मिनल मस्हूमीन (या'नी क़ुर्आ उन्हीं के नाम पर निकला) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने (किसी मुक़द्दमे में मुद्दआ अलैह होने की बिना पर) कुछ लोगों से क़सम खाने के लिये कहा, तो वो सब (एक साथ) आगे बढ़े। इसलिये आप (ﷺ) ने उनमें क़ुर्आ डालने के लिये हुक्म फ़र्माया ताकि फ़ैसला हो कि सबसे पहले क़सम कौन आदमी खाए।

जुम्हूर उलमा के नज़दीक क़त्अन नज़ाअ के लिये क़ुर्आ डालना जाइज़ और मशरूअ है। इब्ने मुंज़िर ने हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा से भी इसका जवाज़ नक़ल किया है। पस आयात और हदीष़ से क़ुर्आ-अंदाज़ी का षुबूत हुआ। अब अगर कोई क़ुर्आ-अंदाज़ी का इंकार करे तो वो ख़ुद ग़लती में मुब्तला है।

٢٦٨٦- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنَا الشَّعْبِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ

2686. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, कहा कि हमसे शअबी ने बयान किया, उन्होंने नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह की हुदूद में सुस्ती बरतने वाले और उसमें मुब्तला हो जाने

النَّبِيُّ ﷺ: ((مَثَلُ الْمُدْهِنِ فِي حُدُودِ اللهِ وَالْوَاقِعِ فِيهَا مَثَلُ قَوْمٍ اسْتَهَمُوا سَفِينَةً فَصَارَ بَعْضُهُمْ فِي أَسْفَلِهَا وَصَارَ بَعْضُهُمْ فِي أَعْلاَهَا، فَكَانَ الَّذِينَ فِي أَسْفَلِهَا يَمُرُّونَ بِالْمَاءِ عَلَى الَّذِينَ فِي أَعْلاَهَا، فَتَأَذَّوْا بِهِ، فَأَخَذَ فَأْسًا فَجَعَلَ يَنْقُرُ أَسْفَلَ السَّفِينَةِ، فَأَتَوهُ فَقَالُوا: مَا لَكَ؟ قَالَ: تَأَذَّيْتُمْ بِي وَلاَ بُدَّ لِيْ مِنَ الْمَاءِ، فَإِنْ أَخَذُوا عَلَى يَدَيْهِ أَنْجَوْهُ وَنَجَّوا أَنْفُسَهُمْ، وَإِنْ تَرَكُوهُ أَهْلَكُوهُ وَأَهْلَكُوا أَنْفُسَهُمْ)).

वाले की मिषाल एक ऐसी कौम की सी है जिसने एक कश्ती (पर सफ़र करने के लिये जगह के बारे में) कुर्आ-अंदाज़ी की। फिर नतीजे में कुछ लोग नीचे सवार हुए और कुछ ऊपर। नीचे के लोग पानी लेकर ऊपर की मंज़िल से गुज़रते थे और उससे ऊपर वालों को तकलीफ़ होती थी। इस ख़्याल से नीचे वाला एक आदमी कुल्हाड़ी से कश्ती का नीचे का हिस्सा काटने लगा। (ताकि नीचे ही से समुन्दर का पानी ले लिया करे) अब ऊपर वाले आए और कहने लगे कि ये क्या कर रहे हो? उसने कहा कि तुम लोगों को (मेरे ऊपर आने—जाने से) तकलीफ़ होती थी और मेरे लिये भी पानी ज़रूरी था। अब अगर उन्होंने नीचे वाले का हाथ पकड़ लिया तो उन्हें भी नजात दी और ख़ुद भी नजात पाई। लेकिन अगर उसे यूँ ही छोड़ दिया, तो उन्हें भी हलाक किया और ख़ुद भी हलाक हो गए।

इससे कुर्आ-अंदाज़ी का षुबूत मिला। हज़रत इमाम का इस हदीष को यहाँ लाने का यही मक़्सद है और इससे अम्र बिल मअरूफ़ और नही अनिल मुंकर की ताकीदे शदीद भी ज़ाहिर हुई और बुराई को रोकना ज़रूरी है वरना उसकी लपेट में सब ही आ सकते हैं। ताक़त हो तो बुराई को हाथ से रोका जाए। वरना ज़ुबान से रोकने की कोशिश की जाए। ये भी न हो सके तो दिल में उससे सख़्त नफ़रत की जाए और ये ईमान का सबसे कमतर दर्जा है। अल्हम्दुलिल्लाह हुकूमते सऊदिया में देखा कि महकमा अम्र बिल मअरूफ़ और नही अनिल मुंकर सरकारी सतह पर क़ायम है और सारी मम्लकत में उसकी शाखें फैली हुई हैं, जो अपने फ़राइज़ अंजाम दे रही हैं। अल्लाह पाक हर जगह के मुसलमानों को ये तौफ़ीक़ दे कि वो इसी तरह इज्तिमाई तौर पर बनी नोओ इंसान की ये आलातरीन ख़िदमत अंजाम दें और इंसानों की भलाई व फ़लाह को अपनी ज़िन्दगी का लाज़िमा बना लें। आमीन या रब्बल आलमीन।

٢٦٨٧ – حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدٍ الأَنْصَارِيُّ أَنَّ أُمَّ الْعَلاَءِ امْرَأَةً مِنْ نِسَائِهِمْ قَدْ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ: أَنَّ عُثْمَانَ ابْنَ مَظْعُونٍ طَارَ لَنَا سَهْمُهُ فِي السُّكْنَى حِيْنَ أَقْرَعَتِ الأَنْصَارُ سُكْنَى الْمُهَاجِرِيْنَ، قَالَتْ أُمُّ الْعَلاَءِ: فَسَكَنَ عِنْدَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ، فَاشْتَكَى فَمَرَّضْنَاهُ، حَتَّى إِذَا تُوُفِّيَ وَجَعَلْنَاهُ فِي ثِيَابِهِ دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: رَحْمَةُ

2687. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी ज़ुह्री से, उनसे ख़ारजा बिन ज़ैद अंसारी ने बयान किया कि उनकी रिश्तेदार एक औरत उम्मे अलाअ नामी ने जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअत भी की थी, उन्हें ख़बर दी कि अंसार ने मुहाजिरीन को अपने यहाँ ठहराने के लिये पांसे डाले तो उष्मान बिन मज़ऊन (रज़ि.) का क़याम हमारे हिस्से में आया। उम्मे अलाअ (रज़ि.) ने कहा कि फिर उष्मान बिन मज़ऊन (रज़ि.) हमारे घर ठहरे और कुछ मुद्दत बाद वो बीमार पड़ गए। हमने उनकी तीमारदारी की मगर कुछ दिन बाद उनकी वफ़ात हो गई। जब हम उन्हें कफ़न दे चुके तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। मैंने कहा, अबुस्साइब! (उष्मान रज़ि. की कुन्नियत) तुम पर अल्लाह की रहमतें नाज़िल हों, मेरी गवाही है कि अल्लाह तआला ने अपने यहाँ तुम्हारी ज़रूर इज़्ज़त और बड़ाई की होगी। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये बात तुम्हें कैसे मा'लूम हो गई कि अल्लाह तआला

ने उनकी इज़्ज़त और बड़ाई की होगी। मैंने अर्ज़ किया, मेरे माँ और बाप आप पर फ़िदा हो, मुझे ये बात किसी ज़रिये से मा'लूम नहीं हुई है। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उ़ष्मान का जहाँ तक मामला है, तो अल्लाह गवाह है कि उनकी वफ़ात हो चुकी और मैं उनके बारे में अल्लाह से ख़ैर ही की उम्मीद रखता हूँ, लेकिन अल्लाह की क़सम! अल्लाह के रसूल होने के बावजूद मुझे भी ये इ़ल्म नहीं कि उनके साथ क्या मामला होगा। उम्मे अ़लाअ (रज़ि.) कहने लगीं, अल्लाह की क़सम! अब उसके बाद में किसी शख़्स की पाकी कभी बयान नहीं करूँगी। उससे मुझे रंज भी हुआ (कि आँहज़रत (ﷺ) के सामने मैंने एक ऐसी बात कही जिसका मुझे ह़क़ीक़ी इ़ल्म नहीं था) उन्होंने कहा (एक दिन) मैं सो रही थी, मैंने ख़्वाब में ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के लिये एक बहता हुआ चश्मा देखा। मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपसे ख़्वाब बयान किया। आपने फ़र्माया कि ये उनका अ़मल (नेक) था। (राजेअ़ : 1243)

اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ، فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ. فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيكِ أَنَّ اللهَ أَكْرَمَهُ؟)) فَقُلْتُ: لاَ أَدْرِي بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللهِ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَمَّا عُثْمَانُ فَقَدْ جَاءَهُ وَاللهِ الْيَقِينُ، وَإِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَاللهِ مَا أَدْرِي – وَأَنَا رَسُولُ اللهِ – مَا يُفْعَلُ بِهِ)). قَالَتْ: فَوَاللهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ أَبَدًا، وَأَحْزَنَنِي ذَلِكَ. قَالَتْ: فَنِمْتُ فَأُرِيتُ لِعُثْمَانَ عَيْنًا تَجْرِي، فَجِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ. فَقَالَ: ((ذَلِكَ عَمَلُهُ)). [راجع: ١٢٤٣]

तश्रीह: किसी भी बुज़ुर्ग के लिये क़तई जन्नती होने का हुक्म लगाना ये मन्सब सिर्फ़ अल्लाह और रसूल ही को ह़ासिल है और किसी को भी ह़क़ नहीं कि किसी को मुत्लक़ जन्नती कह सके। रिवायत में क़सम के लिये लफ़्ज़ वल्लाह बार बार आया है उसी ग़र्ज़ से इमाम बुख़ारी (रह.) उसको यहाँ लाए हैं। दूसरी रिवायत में यूँ है। मेरा ह़ाल क्या होना है और उ़ष्मान का ह़ाल क्या होना है। ये मुवाफ़िक़ है इस आयत के जो सूरह अह़क़ाफ़ में है। **वमा अदरी मा युफ़अ़लु बी वला बिकुम** (अल् अह़क़ाफ़ : 9) या'नी मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा? ह़दीष़ में क़ुर्आ-अंदाज़ी का ज़िक्र है, बाब के मुत़ाबिक़ ये भी एक तौजीह है।

पादरियों का ये ए'तिराज़ कि तुम्हारे नबी को जब अपनी नजात का इ़ल्म न था तो दूसरों की नजात वो कैसे करा सकते हैं। महज़ फ़ालतू ए'तिराज़ है इसलिये कि अगर आप सच्चे नबी न होते तो ज़रूर अपनी तसल्ली के लिये यूँ फ़र्माते कि मैं ऐसा करूँगा वैसा करूँगा, मुझे सब इख़्तियार है। सच्चे रास्तबाज़ इंकिसारी सामने रखते हैं। इसी बिना पर आपने ऐसा फ़र्माया।

2688. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी ज़ुह्री से, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सफ़र का इरादा फ़र्माते तो अपनी बीवियों में क़ुर्आ-अंदाज़ी फ़र्माते और जिनका नाम निकल आता, उन्हें अपने साथ ले जाते। आप (ﷺ) का ये भी मा'मूल था कि अपनी हर बीवी के लिये एक दिन और रात मुक़र्रर कर दी थी। अल्बत्ता

٢٦٨٨ – حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا أَرَادَ سَفَرًا أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَائِهِ، فَأَيَّتُهُنَّ خَرَجَ

سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا مَعَهُ. وَكَانَ يَقْسِمُ لِكُلِّ امْرَأَةٍ مِنْهُنَّ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا. غَيْرَ أَنَّ سَوْدَةَ بِنْتَ زَمْعَةَ وَهَبَتْ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا لِعَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ تَبْتَغِي بِذَلِكَ رِضَا رَسُولِ اللهِ ﷺ)). [راجع: ٢٥٩٣]

सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) ने (अपनी उम्र के आख़िरी हिस्से में) अपनी बारी आपकी ज़ोजा आइशा (रज़ि.) को दे दी थी ताकि रसूलुल्लाह (ﷺ) की उनको रज़ा हासिल हो। (इससे भी क़ुर्आ-अंदाज़ी षाबित हुई)

(राजेअ : 2593)

٢٦٨٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ سُمَيٍّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي النِّدَاءِ وَالصَّفِّ الأَوَّلِ ثُمَّ لَمْ يَجِدُوا إِلاَّ أَنْ يَسْتَهِمُوا عَلَيْهِ لاسْتَهَمُوا، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي التَّهْجِيرِ لاسْتَبَقُوا إِلَيْهِ، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي الْعَتَمَةِ وَالصُّبْحِ لأَتَوهُمَا وَلَوْ حَبْوًا)). [راجع: ٦١٥]

2689. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबूबक्र के गुलाम सुमय ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर लोगों को मा'लूम होता कि अज़ान और सफ़े अव्वल में कितना षवाब है और फिर (उन्हें उसके हासिल करने के लिये) क़ुर्आ-अंदाज़ी करनी पड़ती, तो वो क़ुर्आ-अंदाज़ी भी करते और अगर उन्हें मा'लूम हो जाए कि नमाज़ सवेरे पढ़ने में कितना षवाब है तो लोग एक–दूसरे से सबक़त करने लगें और अगर उन्हें मा'लूम हो जाए कि इशा और सुबह की कितनी फ़ज़ीलतें हैं तो अगर घुटनों के बल आना पड़ता तो फिर भी आते। (राजेअ : 615)

इन सारी अहादीष से हज़रत इमाम ने क़ुर्आ-अंदाज़ी का जवाज़ निकाला और बतलाया कि बहुत से मुआमलात ऐसे भी सामने आ जाते हैं कि उनके फ़ैसले के लिये बेहतर यही तरीक़ा क़ुर्आ-अंदाज़ी ही होता है। पस उसके जवाज़ में कोई शुब्हा नहीं है। कुछ लोग क़ुर्आ-अंदाज़ी को जाइज़ नहीं कहते, ये उनकी अक़्ल का क़सूर है।

इस हदीष से अज़ान पुकारने और सफ़े अव्वल में खड़े होने की भी इंतिहाई फ़ज़ीलत षाबित हुई और नमाज़ सवेरे अव्वल वक़्त पढ़ने की भी जैसा कि जमाअते अहले हदीष का अमल है कि फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब अव्वल वक़्त अदा करना इनका मा'मूल है। ख़ास तौर पर अस्र और फ़ज्र में ताख़ीर करना इन्दल्लाह महबूब नहीं। अस्र अव्वल वक़्त एक मिष्ल साया हो जाने पर और फ़ज्र ग़लस में अव्वल वक़्त पढ़ना, आँहज़रत (ﷺ) का यही तर्ज़े अमल था। जो आज तक हरमेन–शरीफ़ेन में मा'मूल है। वबिल्लाहित्तौफ़ीक़

53. किताबुस्सुलह

किताब सुलह के मसाइल के बयान में

बाब 1 : लोगों में सुलह कराने का षवाब

١- بَابُ مَا جَاءَ فِي الإِصْلاَحِ بَيْنَ النَّاسِ

وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿لاَ خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِنْ نَجْوَاهُمْ إِلاَّ مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلاَحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاةِ اللهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا﴾ [النساء : ١١٤].

وَخُرُوجِ الإِمَامِ إِلَى الْمَوَاضِعِ لِيُصْلِحَ بَيْنَ النَّاسِ بِأَصْحَابِهِ.

और सूरह निसा में अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, उनकी अकषर कानाफूसियों में ख़ैर नहीं, सिवा उन (सरगोशियों) के जो सदक़ा या अच्छी बात की तरफ़ लोगों को तर्ग़ीब दिलाने के लिये हों या लोगों के दरम्यान सुलह कराएँ और जो शख़्स ये काम अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये करेगा तो जल्द ही मैं उसे अज्रे अज़ीम दूँगा और इस बाब में ये बयान है कि इमाम ख़ुद अपने अस्हाब के साथ मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर जाकर लोगों में सुलह कराए। (अन निसा : 114)

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने सुलह की फ़ज़ीलत में इसी आयत पर इक्तिसार किया, शायद उनको कोई हदीषे सहीह इस बाब में अपनी शर्त पर नहीं मिली। इमाम अहमद (रह.) ने अबू दर्दा से मर्फ़ूअन निकाला कि मैं तुमको वो बात न बतलाऊँ जो रोज़े और नमाज़ और सदक़े से अफ़ज़ल है, वो क्या है आपस में मिलाप कर देना। आपस में फ़साद नेकियों को मिटा देता है। सुलह के मुक़ाबले पर फ़साद झगड़ा जिसकी क़ुर्आन मजीद ने शिद्दत से बुराई की है और बार बार बतलाया है कि अल्लाह पाक झगड़े फ़साद को दोस्त नहीं रखता। वो बहरहाल सुलह, अमन, मिलाप को दोस्त रखता है।

٢٦٩٠- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : ((أَنَّ نَاسًا مِنْ بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ كَانَ بَيْنَهُمْ شَيْءٌ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمُ النَّبِيُّ ﷺ فِي أُنَاسٍ مِنْ

2690. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि (क़ुबा के) बनू अम्र बिन औफ़ में आपस में कुछ तकरार हो गई थी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने कई अस्हाब को साथ लेकर उनके यहाँ उनमें सुलह कराने के लिये गए और नमाज़ का वक़्त हो गया, लेकिन आप तशरीफ़ न ला सके। चुनाँचे बिलाल

(रज़ि.) ने आगे बढ़कर अज़ान दी, अभी तक चूँकि आँह़ज़रत (ﷺ) तशरीफ नहीं लाए थे। इसलिये वो (आँह़ज़रत ﷺ ही की हिदायत के मुताबिक़) अबूबक्र (रज़ि.) के पास आए और उनसे कहा कि हुज़ूर (ﷺ) वहीं रुक गए हैं और नमाज़ का वक़्त हो गया है, क्या आप लोगों को नमाज़ पढ़ा देंगे? उन्होंने कहा कि हाँ, अगर तुम चाहो। उसके बाद बिलाल (रज़ि.) ने नमाज़ की तक्बीर कही और अबूबक्र (रज़ि.) आगे बढ़े। (नमाज़ के दरम्यान) नबी करीम (ﷺ) स़फ़ों के दरम्यान से गुज़रते हुए पहली स़फ़ में आ पहुँचे। लोग बार बार हाथ पर हाथ मारने लगे। मगर अबूबक्र (रज़ि.) नमाज़ मे किसी दूसरी तरफ़ मुतवज्जह नहीं होते थे (मगर जब बार बार ऐसा हुआ तो) आप मुतवज्जह हुए और मा'लूम किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आपके पीछे हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ के इशारे से उन्हें हुक्म दिया कि जिस तरह़ वो नमाज़ पढ़ा रहे हैं, उसे जारी रखें। लेकिन अबूबक्र (रज़ि.) ने अपना हाथ उठाकर अल्लाह की ह़म्द बयान की और उलटे पांव पीछे आ गए और स़फ़ में मिल गये। फिर नबी करीम (ﷺ) आगे बढ़े और नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उन्हें हिदायत की कि लोगों! जब नमाज़ में कोई बात पेश आती है तो तुम हाथ पर हाथ मारने लगते हो। हाथ पर हाथ मारना औरतों के लिये है। (मर्दों को) जिसकी नमाज़ में कोई बात पेश आए तो सुब्ह़ानल्लाह कहना चाहिये क्योंकि ये लफ़्ज़ जो भी सुनेगा वो मुतवज्जह हो जाएगा। ऐ अबूबक्र (रज़ि.)! जब मैंने इशारा भी कर दिया था फिर आप लोगों को नमाज़ क्यूँ नहीं पढ़ाते रहे? उन्होंने अ़र्ज़ किया, अबू क़ुहाफ़ा के बेटे के लिये ये बात मुनासिब न थी कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के होते हुए नमाज़ पढ़ाए। (राजेअ़ : 864)

أَصْحَابِهِ يُصْلِحُ بَيْنَهُمْ، فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ وَلَمْ يَأْتِ النَّبِيُّ ﷺ، فَجَاءَ بِلاَلٌ فَأَذَّنَ بِالصَّلاَةِ وَلَمْ يَأْتِ النَّبِيُّ ﷺ. فَجَاءَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ حُبِسَ، وَقَدْ حَضَرَتِ الصَّلاَةُ، فَهَلْ لَكَ أَنْ تَؤُمَّ النَّاسَ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، إِنْ شِئْتَ. فَأَقَامَ الصَّلاَةَ. فَتَقَدَّمَ أَبُوبَكْرٍ، ثُمَّ جَاءَ النَّبِيُّ ﷺ يَمْشِي فِي الصُّفُوفِ حَتَّى قَامَ فِي الصَّفِّ الأَوَّلِ، فَأَخَذَ النَّاسُ بِالتَّصْفِيحِ حَتَّى أَكْثَرُوا، وَكَانَ أَبُوبَكْرٍ لاَ يَكَادُ يَلْتَفِتُ فِي الصَّلاَةِ، فَالْتَفَتَ فَإِذَا هُوَ بِالنَّبِيِّ ﷺ وَرَاءَهُ، فَأَشَارَ إِلَيْهِ بِيَدِهِ فَأَمَرَهُ يُصَلِّي كَمَا هُوَ، فَرَفَعَ أَبُوبَكْرٍ يَدَهُ فَحَمِدَ اللهَ، ثُمَّ رَجَعَ الْقَهْقَرَى وَرَاءَهُ حَتَّى دَخَلَ فِي الصَّفِّ، وَتَقَدَّمَ النَّبِيُّ ﷺ فَصَلَّى بِالنَّاسِ فَلَمَّا فَرَغَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِذَا نَابَكُمْ شَيْءٌ فِي صَلاَتِكُمْ أَخَذْتُمْ بِالتَّصْفِيحِ، إِنَّمَا التَّصْفِيحُ لِلنِّسَاءِ، مَنْ نَابَهُ شَيْءٌ فِي صَلاَتِهِ فَلْيَقُلْ سُبْحَانَ اللهِ، فَإِنَّهُ لاَ يَسْمَعُهُ أَحَدٌ إِلاَّ الْتَفَتَ. يَا أَبَا بَكْرٍ، مَا مَنَعَكَ حِيْنَ أَشَرْتُ إِلَيْكَ لَمْ تُصَلِّ بِالنَّاسِ؟)) فَقَالَ: مَا كَانَ يَنْبَغِي لاِبْنِ أَبِي قُحَافَةَ أَنْ يُصَلِّيَ بَيْنَ يَدَيِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٨٦٤]

ये ह़दीष़ पीछे गुज़र चुकी है। यहाँ ह़ज़रत मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) इस ह़दीष़ को इसलिये लाए कि इसमें आपके बमुक़ाम क़ुबा बनू अ़म्र बिन औ़फ़ में सुलह़ कराने के लिये तशरीफ़ ले जाने का ज़िक्र है। मा'लूम हुआ कि सुलह़ को इतनी अहमियत है कि उसके लिये बड़ी से बड़ी शख़्सियत भी पेश क़दमी कर सकती है। भला रसूले करीम (ﷺ) से अफ़ज़ल, बेहतर और बड़ा कौन होगा। आप ख़ुद इस पाक मक़सद के लिये क़ुबा तशरीफ़ ले गए।

ये भी मा'लूम हुआ कि नमाज़ में नादानी से कुछ लग़्ज़िश हो जाए तो वो बहरहाल क़ाबिले मुआफ़ी है। मगर इमाम को चाहिये कि ग़लती करने वालों को आइन्दा के लिये हिदायत कर दे।

٢٦٩١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ : سَمِعْتُ أَبِي أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قِيْلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ لَوْ أَتَيْتَ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ. فَانْطَلَقَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ وَرَكِبَ حِمَارًا، فَانْطَلَقَ الْمُسْلِمُونَ يَمْشُونَ مَعَهُ - وَهِيَ أَرْضٌ سَبِخَةٌ - فَلَمَّا أَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: إِلَيْكَ عَنِّي، وَاللهِ لَقَدْ آذَانِي نَتْنُ حِمَارِكَ. فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ مِنْهُمْ: وَاللهِ لَحِمَارُ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَطْيَبُ رِيحًا مِنْكَ. فَغَضِبَ لِعَبْدِ اللهِ رَجُلٌ مِنْ قَوْمِهِ، فَشَتَمَا، فَغَضِبَ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا أَصْحَابُهُ، فَكَانَ بَيْنَهُمَا ضَرْبٌ بِالْجَرِيْدِ وَالأَيْدِي وَالنِّعَالِ، فَبَلَغَنَا أَنَّهَا أُنْزِلَتْ: ﴿وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا﴾ [الحجرات:٩].

2691. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने बाप से सुना और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से अर्ज़ किया, अगर आप अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़) के यहाँ तशरीफ़ ले चलते तो बेहतर था। आँहज़रत (ﷺ) उसके यहाँ एक गधे पर सवार होकर तशरीफ़ ले गए। सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम पैदल आपके साथ थे। जिधर से आप गुज़र रहे थे वो शोर (खारी) ज़मीन थी। जब नबी करीम (ﷺ) उसके यहाँ पहुँचे तो वो कहने लगा ज़रा आप दूर ही रहिए आपके गधे की बू ने मेरा दिमाग़ परेशान कर दिया है। उस पर एक अंसारी सहाबी बोले कि अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) का गधा तुझसे ज़्यादा ख़ुश्बूदार है। अब्दुल्लाह (मुनाफ़िक़) की तरफ़ से उसकी क़ौम का एक शख़्स उन सहाबी की इस बात से ग़ुस्सा हो गया और दोनों ने एक–दूसरे को बुरा–भला कहा। फिर दोनों तरफ़ से दोनों के हिमायती मुश्तइल हो गए और हाथापाई, छड़ी और जूते तक की नौबत पहुँच गई। हमें मा'लूम हुआ है कि ये आयत उसी मौक़े पर नाज़िल हुई थी। अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ें तो उनमें सुलह करा दो।

तश्रीह : अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ ख़ज़रज का सरदार था, मदीना वाले उसको बादशाह बनाने वाले थे, आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ ले गए और ये अम्र मुल्तवी हो गया। लोगों ने आपको ये राय दी कि आप उसके पास तशरीफ़ ले जाएँगे तो उसकी दिलजोई होगी और बहुत से लोग इस्लाम क़ुबूल करेंगे। नबी मग़रूर नहीं होते, आप बिला तकल्लुफ़ तशरीफ़ ले गए। मगर उस मर्दूद ने जो अपने आपको बहुत नफ़ीस समझता था, आपके गधे को बदबूदार समझा और ये गुस्ताख़ाना कलाम किया जो उसके ख़ुबुषे बातिनी की दलील था। एक अंसारी सहाबी ने उसको मुँहतोड़ जवाब दिया। जिसे सुनकर उस मुनाफ़िक़ के ख़ानदान के कुछ लोग तैश में आ गए और क़रीब था कि आपस में जंग बपा हो जाए, आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों फ़रीक़ में सुलह करा दी, आयत में मुसलमानों में सुलह कराने का ज़िक्र है। ये दोनों गिरोह मुसलमान ही थे। किताबुस्सुलह में इसलिये इस हदीष को हज़रत इमाम (रह.) ने दर्ज किया कि आपस की सुलह सफ़ाई के लिये आँहज़रत (ﷺ) की सख़्ततरीन ताकीदात हैं और ये अमल इन्दल्लाह बहुत ही अज्रो–षवाब का मौजिब है। आयते मज़्कूरा फ़िल्बाब में ये है कि मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनमें सुलह करा दो। मगर यहाँ ये ए'तिराज़ होता है कि आयत तो मुसलमानों के बारे में है और अब्दुल्लाह बिन उबई के साथी तो उस वक़्त काफ़िर थे। कस्तलानी ने कहा इब्ने अब्बास की तफ़्सीर में है कि अ ब्दुल्लाह बिन उबय के साथी भी मुसलमान हो चुके थे, आयत में लफ़्ज़, मोमिनीन ख़ुद इस अम्र पर दलील है।

अहले इस्लाम का बाहमी क़त्ल व क़िताल इतना बुरा है कि उसकी जिस क़दर मज़म्मत की जाए कम है। **अल्लाहुम्मा**

अल्लिफ़ बैन कुलूबिना वस्लिह ज़ाता बैनिना कुछ मुतअस्सिब मुक़ल्लिद उलमा ने अपने मसलक के सिवा दूसरे मुसलमानों के ख़िलाफ़ अवाम में इस क़दर तअस्सुब फैला रखा है कि वो दूसरे मुसलमानों को बिलकुल अजनबियत की निगाहों से देखते हैं। ऐसे उलमा को अल्लाह नेक हिदायत करे, आमीन। ख़ास तौर पर अहले हदीष़ से बुग़्ज़ व इनाद अहले बिदअत की निशानी है जैसा कि हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह.) ने तहरीर फ़र्माया है।

बाब 2 : दो आदमियों में मेल–मिलाप कराने के लिये झूठ बोलना गुनाह नहीं है

٢- بَابُ لَيْسَ الْكَاذِبُ يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ

2692. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया सालेह बिन कैसान से, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि उनकी वालिदा उम्मे कुलषुम बिन्ते उक़्बा ने उन्हें ख़बर दी और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि झूठा वो नहीं है जो लोगों में बाहम सुलह कराने की कोशिश करे और उसके लिये किसी अच्छी बात की चुग़ली खाए या उसी सिलसिले की और कोई अच्छी बात कह दे।

٢٦٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ حُمَيْدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَخْبَرَهُ أَنَّ أُمَّهُ أُمَّ كُلْثُومٍ بِنْتَ عُقْبَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا سَمِعَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَيْسَ الْكَذَّابُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ فَيَنْمِي خَيْرًا أَوْ يَقُولُ خَيْرًا)).

तश्रीह : मष़लन दो आदमियों में रंज हो और ये मिलाप कराने की निय्यत से कहे कि वो तो आपके ख़ैर–ख़्वाह हैं या आपकी ता'रीफ़ करते हैं। क़स्तलानी (रह.) ने कहा ऐसे झूठ की रुख़्सत है जिससे बहुत से फ़ायदे की उम्मीद हो। इमाम मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि तीन जगह झूठ बोला जा सकता है। एक तो लड़ाई में, दूसरे मुसलमानों में आपस में मेल–जोल कराने में, तीसरे अपनी बीवी से। कुछ ने और मुक़ामों को भी जहाँ कोई मस्लिहत हो, उन ही पर क़यास किया है। वो कहते हैं झूठ बोलना जब मना है जब उससे नुक़्सान पैदा हो या उसमें कोई मस्लिहत न हो, कुछ ने कहा झूठ हर हाल में मना है और ऐसे मुक़ामों में तो रिया करना बेहतर है। मष़लन कोई ज़ालिम से यूँ कहे कि मैं तो आपके लिये दुआ किया करता हूँ और मतलब ये रखे **अल्लाहुम्मग़फ़िर लिल्मुस्लिमीन** कहा करता हूँ, और ज़रूरत के वक़्त तो झूठ बोलना बिल इत्तिफ़ाक़ जाइज़ है। ज़रूरत से मज़्कूरा सुलह सफ़ाई की ज़रूरत मुराद है, या किसी ज़ालिम के ज़ुल्म से बचने या किसी को बचाने के लिये झूठ बोलना, हदीष़ **इन्नमल्आमालु बिन्निय्याति** का ये भी मतलब है।

बाब 3 : हाकिम लोगों से कहे हमको ले चलो हम सुलह करा दें

٣- بَابُ قَوْلِ الإِمَامِ لأَصْحَابِهِ: اذْهَبُوا بِنَا نُصْلِحُ

2693. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी और इस्हाक़ बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि क़ुबा के

٢٦٩٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ وَإِسْحَاقُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْفَرْوِيُّ قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ

بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَهْلَ قُبَاءَ اقْتَتَلُوا حَتَّى تَرَامَوْا بِالْحِجَارَةِ، فَأُخْبِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِذَلِكَ فَقَالَ: ((اذْهَبُوا بِنَا نُصْلِحُ بَيْنَهُمْ)). [راجع: ٦٨٤]

लोगों ने आपस में झगड़ा किया और नौबत यहाँ तक पहुँची कि एक ने दूसरे पर पत्थर फेंके, आँहज़रत (ﷺ) को जब उसकी इत्तिलाअ मिली तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया। चलो हम उनमें सुलह कराएँगे। (राजेअ : 684)

गोया आप (ﷺ) ने सुलह के लिये ख़ुद पेशक़दमी फ़रमाई, यही बाब का मक़सद है। बाहमी झगड़े का होना हर वक़्त मुम्किन है, मगर इस्लाम में तक़ाज़न बल्कि इंसानियत का तक़ाज़ा है कि हुस्ने तदबीर से ऐसे झगड़ों को ख़त्म करके बाहमी इत्तिफ़ाक़ करा दिया जाए।

٤- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَنْ يَصَّالَحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا، وَالصُّلْحُ خَيْرٌ﴾ [النساء: ١٢٨]

बाब 4 : सूरह निसा में अल्लाह का ये फ़र्माना अगर मियाँ—बीवी सुलह कर लें तो सुलह ही बेहतर है

٢٦٩٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا﴾ قَالَتْ: ((هُوَ الرَّجُلُ يَرَى مِنَ امْرَأَتِهِ مَا لاَ يُعْجِبُهُ كِبَرًا أَوْ غَيْرَهُ فَيُرِيْدُ فِرَاقَهَا، فَتَقُوْلُ: أَمْسِكْنِيْ، وَاقْسِمْ لِي مَا شِئْتَ قَالَتْ: فَلاَ بَأْسَ إِذَا تَرَاضَيَا)). [راجع: ٢٤٥٠]

2694. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया हिशाम बिन उर्वा से, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने (अल्लाह तआला के उस फ़र्मान की तफ़्सीर में फ़र्माया) अगर कोई औरत अपने शौहर की तरफ़ से बेतवज्जही देखे तो उससे मुराद ऐसा शौहर है जो अपनी बीवी में ऐसी चीज़ें पाए जो उसे पसन्द न हों, उम्र की ज़्यादती वग़ैरह और इसलिये उसे अपने से अलग करना चाहता हो और औरत कहे कि मुझे जुदा न करो (नफ़्क़ा वग़ैरह) जिस तरह तुम चाहो देते रहो। तो उन्होंने फ़र्माया कि अगर दोनों उस पर राज़ी हो जाएँ तो कोई हर्ज नहीं है। (राजेअ : 2450)

फिर अगर मर्द क़रारदाद के मुवाफ़िक़ उसकी बारी में दूसरी औरत के पास रहे या उसको ख़र्च कम दे तो गुनाहगार न होगा क्योंकि औरत ने अपनी रज़ामन्दी से अपना हक़ साक़ित (स्थगित) कर दिया, जैसा कि हज़रत सौदा (रज़ि.) ने अपनी रज़ा से अपनी बारी हज़रत आइशा (रज़ि.) को हिबा कर दी थी और आँहज़रत (ﷺ) उनकी बारी के दिन हज़रत आइशा (रज़ि.) के यहाँ रहा करते थे। मियाँ—बीवी का बाहमी तौर पर सुलह सफ़ाई से रहना इस्लाम में बड़ी अहमियत रखता है।

٥- بَابُ إِذَا اصْطَلَحُوا عَلَى صُلْحِ جَوْرٍ فَالصُّلْحُ مَرْدُوْدٌ

बाब 5 : अगर ज़ुल्म की बात पर सुलह करें तो वो सुलह लग़्व है

٢٦٩٥، ٢٦٩٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ

2695, 96. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे

उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती आया और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारे दरम्यान किताबुल्लाह से फ़ैसला कर दीजिए। दूसरे फ़रीक़ ने भी यही कहा कि उसने सच कहा है। आप हमारा फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ कर दें। देहाती ने कहा कि मेरा लड़का उसके यहाँ मज़दूर था। फिर उसने उसकी बीवी से ज़िना किया। क़ौम ने कहा तुम्हारे लड़के को रजम किया जाएगा, लेकिन मैंने अपने लड़के के इस जुर्म के बदले में सौ बकरियाँ और एक बांदी दे दी। फिर मैंने इल्म वालों से पूछा तो उन्होंने बताया कि उसके सिवा कोई सूरत नहीं कि तुम्हारे लड़के को सौ कोड़े लगाए जाएँ और एक साल के लिये मुल्क बदर कर दिया जाए। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं तुम्हारा फ़ैसला किताबुल्लाह ही से करूँगा। बांदी और बकरियाँ तो तुम्हें वापस लौटा दी जाती हैं, अल्बत्ता तुम्हारे लड़के को सौ कोड़े लगाए जाएँगे और एक साल के लिये मुल्क बदर किया जाएगा और उनैस तुम (ये क़बीला असलम के एक सहाबी थे) उस औरत के घर जाओ और उसे रजम कर दो (अगर वो ज़िना का इक़रार कर ले) चुनाँचे उनैस गए, और (चूँकि उसने भी ज़िना का इक़रार कर लिया था इसलिये) उसे रजम कर दिया। (राजेअ : 2314, 2315)

عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالاَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ اقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ. فَقَامَ خَصْمُهُ فَقَالَ: صَدَقَ، اقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ. فَقَالَ الأَعْرَابِيُّ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيْفًا عَلَى هَذَا فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ، فَقَالُوا لِي: عَلَى ابْنِكَ الرَّجْمُ، فَفَدَيْتُ ابْنِي مِنْهُ بِمِائَةٍ مِنَ الْغَنَمِ وَوَلِيْدَةٍ، ثُمَّ سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَقَالُوا: إِنَّمَا عَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيْبِ عَامٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ، أَمَّا الْوَلِيْدَةُ وَالْغَنَمُ فَرَدٌّ عَلَيْكَ، وَعَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيْبُ عَامٍ. وَأَمَّا أَنْتَ يَا أُنَيْسُ - لِرَجُلٍ - فَاغْدُ عَلَى امْرَأَةِ هَذَا فَارْجُمْهَا. فَغَدَا عَلَيْهَا أُنَيْسٌ فَرَجَمَهَا)).

[راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

तश्रीह : ज़ानी लड़के के बाप ने बीवी के शौहर से सौ बकरियाँ और एक लौण्डी देकर सुलह कर ली। बाब का मतलब इससे निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तेरी बकरियाँ और लौण्डी तुझको वापस मिलेंगी, क्योंकि ये नाजाइज़ और ख़िलाफ़े शरीअत सुलह थी। इब्ने दक़ीक़ुल ईद ने कहा, इस हदीष से ये निकला कि नाजाइज़ मुआवज़े के बदले जो चीज़ ली जाए उसका फेर देना वाजिब है, लेने वाला उसका मालिक नहीं होता। रिवायत में अहले इल्म से मुराद वो सहाबा हैं जो आँहज़रत (ﷺ) की ज़िन्दगी में फ़त्वा दिया करते थे। जैसे ख़ुलफ़ा-ए-अरबआ और मुआज़ बिन जबल और उबई बिन कअब और ज़ैद बिन षाबित और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.)।

ये भी मा'लूम हुआ कि जो मसला मा'लूम न हो अहले इल्म से उसकी तहक़ीक़ कर लेना ज़रूरी है और ये तहक़ीक़ किताब व सुन्नत की रोशनी में होनी चाहिये न कि महज़ तक़्लीद के अँधेरे में ठोकरें खाई जाएँ, आयत **फस्अलू अहलज़्ज़िक्रि इन्कुन्तुम ला तअ़लमून** (अन् नहल : 43) का यही मतलब है।

2697. हमसे यअ़क़ूब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने हमारे दीन में अज़ ख़ुद कोई ऐसी चीज़ निकाली जो उसमें नहीं थी तो वो

٢٦٩٧- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا

هَذَا مَا لَيْسَ فِيهِ فَهُوَ رَدٌّ)). رَوَاهُ عَبْدُ اللهِ بْنِ جَعْفَرٍ الْمَخْرَمِيُّ وَعَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَبِي عَوْنٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ.

रद्द है। इसकी रिवायत अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र मख़रमी और अब्दुल् वाहिद बिन अबी औन ने सअद बिन इब्राहीम से की है।

तश्रीह : अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने और अब्दुल वाहिद की रिवायत को दारे क़ुत्नी ने वस्ल किया है। इस हदीष़ से ये निकला कि जो सुलह बरख़िलाफ़ क़वाइदे शरअ हो वो लग्व और बातिल है और जब सुलह का मुआहिदा बातिल ठहरा तो जो मुआवज़ा किसी फ़रीक़ ने लिया वो वाजिबुर रद्द होगा।

ये हदीष़ शरीअत की असलुल उसूल (बुनियादी नियम) है। इससे उन तमाम बिदआत का जो लोगों ने दीन मे निकाल रखी है पूरा रद्द हो जाता है। जैसे तीजा, फ़ातिहा, चहलुम, शबे बरात का हलवा, मुहर्रम का खिचड़ा, तअज़िया, शद्दा, मौलूद, उर्स, क़ब्रों पर ग़िलाफ़ व फूल डालना, उन पर मेले करना वग़ैरह वग़ैरह। ये जुम्ला उमूर इसलिये बिदअते सइय्या हैं कि ज़मान-ए-रिसालत, ज़मान-ए-सहाबा व ताबेईन मे इनका कोई वजूद नहीं मिलता, जैसा कि कुतुबे तारीख़ वस्सियर मौजूद है। मगर किसी भी मुस्तनद किताब में किसी भी जगह इन बिदआते सइय्या का षुबूत नहीं मिलता। अगर सारे अहले बिदअत भी मिलकर ज़ोर लगाएँ तो नाकाम रहेंगे। बहरहाल बिदअत से परहेज़ करना और सुन्नते नबवी को मा'मूल बनाना बेहद ज़रूरी है। किसी ने सच कहा है :–

मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क
जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है ये सड़क

٦– بَابُ كَيْفَ يُكْتَبُ: هَذَا مَا صَالَحَ فُلاَنُ ابْنُ فُلاَنٍ وَإِنْ لَمْ يَنْسُبْهُ إِلَى قَبِيلَتِهِ أَوْ نَسَبِهِ

बाब 6 : सुलह नामा में ये लिखना काफ़ी है, ये वो सुलह नामा है जिस पर फ़लाँ वल्द फ़लाँ और फ़लाँ वल्द फ़लाँ ने सुलह की और ख़ानदान और नसबनामा लिखना ज़रूरी नहीं है

(अगर दोनों शख़्स मशहूर मा'रूफ़ हों)

٢٦٩٨– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا صَالَحَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَهْلَ الْحُدَيْبِيَةِ كَتَبَ عَلِيٌّ رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِ بَيْنَهُمْ كِتَابًا. فَكَتَبَ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ: لاَ تَكْتُبْ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ، لَوْ كُنْتَ رَسُولاً لَمْ نُقَاتِلْكَ. فَقَالَ لِعَلِيٍّ: امْحُهُ. قَالَ عَلِيٌّ: مَا أَنَا بِالَّذِي أَمْحَاهُ. فَمَحَاهُ

2698. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुदबिया को सुलह (क़ुरैश से) की तो। उसकी दस्तावेज़ हज़रत अली (रज़ि.) ने लिखी थी। उन्होंने उसमें लिखा मुहम्मद अल्लाह के रसूल (ﷺ) की तरफ़ से। मुश्रिकीन ने उस पर ए'तिराज़ किया कि लफ़्ज़े मुहम्मद के साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) न लिखो, अगर आप रसूलुल्लाह होते तो हम आपसे लड़ते ही क्यूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का लफ़्ज़ मिटा दो, अली (रज़ि.) ने कहा कि मैंने कहा कि मैं तो इसे नहीं मिटा सकता, तो आँहज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ से वो लफ़्ज़ मिटा दिया और मुश्रिकीन के साथ इस शर्त पर सुलह की

رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، بِيَدِهِ وَصَالَحَهُمْ عَلَى أَنْ يَدْخُلَ هُوَ وَأَصْحَابُهُ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ، وَلاَ يَدْخُلُوهَا إِلاَّ بِجُلُبَّانِ السِّلاَحِ. فَسَأَلُوهُ: مَا جُلُبَّانُ السِّلاَحِ؟ فَقَالَ: الْقِرَابُ بِمَا فِيْهِ)). [راجع: ١٧٨١]

कि आप अपने अस्हाब के साथ (आइन्दा साल) तीन दिन के लिये मक्का आएँ और हथियार म्यान में रखकर दाख़िल हों, शागिर्दों ने पूछा कि जुलुबानुस्सलाह (जिसका यहाँ ज़िक्र है) क्या चीज़ होती है? तो उन्होंने बताया कि म्यान और जो चीज़ उसके अंदर होती है (उसका नाम जुल्बान है) (राजेअ : 1781)

तश्रीह : सुलहनामा में सिर्फ़ मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह लिखा गया। उसी से बाब का तर्जुमा ष़ाबित हुआ। इससे ज़ाहिर हुआ कि किसी मौक़े पर अगर मुख़ालिफ़ीन कोई नामुनासिब मत़ालिब करें जो ज़िद की ह़द तक पहुँच जाए तो मजबूरन उसे तस्लीम करना पड़ेगा। आज जबकि अहले इस्लाम अक़्लियत में सलामती है। ऐसे उमूर के लिये उम्मीद है कि इन्दल्लाह मुवाख़ज़ा न होगा।

आँह़ज़रत (ﷺ) मुस्तक़्बिल में इस्लाम की फ़तहे मुबीन (खुली जीत) देख रहे थे। इसी लिये हुदैबिया के मौक़े पर मस्लिहतन आपने मुश्रिकीन की कई नामुनासिब बातों को तस्लीम कर लिया और आइन्दा ख़ुद मुश्रिकीने मक्का ही को उनकी ग़लत़ शर्तों का ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ा। सच है, **अल ह़क़्क़ु यअ़लू वला युअ़ला अ़लैहि**

٢٦٩٩ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيْلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ فِي ذِي الْقَعْدَةِ، فَأَبَى أَهْلُ مَكَّةَ أَنْ يَدَعُوهُ يَدْخُلُ مَكَّةَ، حَتَّى قَاضَاهُمْ عَلَى أَنْ يُقِيْمَ بِهَا ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ. فَلَمَّا كَتَبُوا الْكِتَابَ كَتَبُوا: هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، فَقَالُوا: لاَ نُقِرُّ بِهَا، فَلَو نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُوْلُ اللهِ مَا مَنَعْنَاكَ، لَكِنْ أَنْتَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ. قَالَ: ((أَنَا رَسُوْلُ اللهِ، وَأَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ))، ثُمَّ قَالَ لِعَلِيٍّ: ((امْحُ)): ((رَسُوْلَ اللهِ)) قَالَ: لاَ وَاللهِ لاَ أَمْحُوكَ أَبَدًا، فَأَخَذَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الْكِتَابَ فَكَتَبَ: هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، لاَ يَدْخُلُ مَكَّةَ سِلاَحٌ إِلاَّ فِي الْقِرَابِ، وَأَنْ لاَ يَخْرُجَ مِنْ أَهْلِهَا بِأَحَدٍ

2699. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया इस्राईल से, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ीक़अ़द के महीने में उ़मरह का एह़राम बाँधा। लेकिन मक्का वालों ने आपको शहर में दाख़िल नहीं होने दिया। आख़िर सुलह़ इस पर हुई कि (आइन्दा साल) आप मक्का मे तीन रोज़ तक क़याम करेंगे। जब सुलहनामा लिखा जाने लगा तो उसमें लिखा गया कि ये वो सुलहनामा है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया है। लेकिन मुश्रिकीन ने कहा कि हम तो उसे नहीं मानते। अगर हमे इल्म हो जाए कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो हम आपको न रोकें। बस आप सिर्फ़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं रसूलुल्लाह भी हूँ और मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह भी हूँ। उसके बाद आप (ﷺ) ने अ़ली (रज़ि.) से फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का लफ़्ज़ मिटा दो, उन्होंने अ़र्ज़ किया, नहीं अल्लाह की क़सम! मैं तो ये लफ़्ज़ कभी न मिटाऊँगा। आख़िर आप (ﷺ) ने ख़ुद दस्तावेज़ ली और लिखा कि ये उसकी दस्तावेज़ है कि मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने इस शर्त पर सुलह की है कि मक्का में वो हथियार म्यान में रखे बग़ैर दाख़िल न होंगे। अगर मक्का का कोई शख़्स उनक साथ जाना चाहेगा, तो वो उसे साथ न ले जाएँगे। लेकिन अगर उनके अस्ह़ाब में से कोई शख़्स मक्का में रहना चाहेगा तो उसे वो रोकेंगे नही। जब (आइन्दा

إِنْ أَرَادَ أَنْ يَتْبَعَهُ، وَأَنْ لاَ يَمْنَعَ أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِهِ أَرَادَ أَنْ يُقِيْمَ بِهَا. فَلَمَّا دَخَلَهَا وَمَضَى الأَجَلُ أَتَوا عَلِيًّا فَقَالُوا: قُلْ لِصَاحِبِكَ اخْرُجْ عَنَّا فَقَدْ مَضَى الأَجَلُ. فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ، فَتَبِعَتْهُمْ ابْنَةُ حَمْزَةَ - يَا عَمِّ، يَا عَمِّ - فَتَنَاوَلَهَا عَلِيٌّ فَأَخَذَ بِيَدِهَا وَقَالَ لِفَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ: دُوْنَكِ ابْنَةَ عَمِّكِ احْمِلِيْهَا. فَاخْتَصَمَ فِيْهَا عَلِيٌّ وَزَيْدٌ وَجَعْفَرٌ. فَقَالَ عَلِيٌّ: أَنَا أَحَقُّ بِهَا وَهِيَ ابْنَةُ عَمِّي وَخَالَتُهَا تَحْتِي وَقَالَ زَيْدٌ : ابْنَةُ أَخِي. فَقَضَى بِهَا النَّبِيُّ ﷺ لِخَالَتِهَا وَقَالَ: ((الْخَالَةُ بِمَنْزِلَةِ الأُمِّ))، وَقَالَ لِعَلِيٍّ: ((أَنْتَ مِنِّي وَأَنَا مِنْكَ)). وَقَالَ لِجَعْفَرٍ: ((أَشْبَهْتَ خَلْقِي وَخُلُقِي)). وَقَالَ لِزَيْدٍ: ((أَنْتَ أَخُونَا وَمَوْلاَنَا)). [راجع: ١٧٨١]

साल) आप मक्का तशरीफ़ ले गए और (मक्का में क़याम की) मुद्दत पूरी हो गई तो क़ुरैश अली (रज़ि.) के पास आए और कहा कि अपने साहब से कहिए कि मुद्दत पूरी हो गइ है और अब वो हमारे यहाँ से चले जाएँ। चुनाँचे नबी करीम (ﷺ) मक्का से रवाना होने लगे। उस वक़्त हम्ज़ा (रज़ि.) की एक बच्ची चचा-चचा करती हुई आईं । अली (रज़ि.) ने उन्हें अपने साथ ले लिया, फिर फ़ातिमा अलैहस्सलाम के पास हाथ पकड़कर लाए और फ़र्माया, अपनी चचाज़ाद बहन को भी साथ ले लो, उन्होंने उसको अपने साथ सवार कर लिया, फिर अली, ज़ैद और जा'फ़र (रज़ि.) का झगड़ा हुआ। अली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उसका मैं ज़्यादा मुस्तहिक़ हूँ, ये मेरे चचा की बच्ची है। जा'फ़र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ये मेरे भी चचा की बच्ची है और उसकी ख़ाला मेरे निकाह में भी हैं। ज़ैद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मेरे भाई की बच्ची है। नबी करीम (ﷺ) ने बच्चे की ख़ाला के हक़ में फ़ैसला किया और फ़र्माया कि ख़ाला माँ की जगह होती है, फिर अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ। जा'फ़र (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम सूरत और आदात व अख़्लाक़ सबमें मुझसे मुशाबेह हो। ज़ैद (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम हमारे भाई भी हो और हमारे मौला भी। (राजेअ : 1781)

तश्रीह : हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के रज़ाई भाई थे। इसलिये उनकी साहबज़ादी ने आपको चचा चचा कहकर पुकारा। हज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने उस बच्ची को अपनी भतीजी इसलिये कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत ज़ैद (रज़ि.) को हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) का भाई बना दिया था। ज़ैद (रज़ि.) से आँहज़रत (ﷺ) ने लफ़्ज़ मौला से ख़िताब फ़र्माया, मौला उस गुलाम को कहते हैं जिसको मालिक आज़ाद कर दे। आप (ﷺ) ने हज़रत ज़ैद (रज़ि.) को आज़ाद करके अपना बेटा बना लिया था। जब आप (ﷺ) ने ये लड़की अज़रूए इंसाफ़ हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) को दिलवाई, तो औरों का दिल ख़ुश करने के लिये ये हदीष फ़र्माई। इस हदीष से हज़रत अली (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत निकली। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं तेरा हूँ, तू मेरा है। मतलब ये कि हम तुम दोनों एक ही दादा की औलाद हैं और ख़ून मिला हुआ है। हज़रत अली (रज़ि.) ने मिटाने और आप (ﷺ) का नामे-नामी लिखने से इंकार उदूले हुक्मी के तौर पर नहीं किया, बल्कि क़ुव्वते ईमानिया के जोश से उनसे ये नहीं हो सका कि आपकी रिसालत जो सरासर और बरहक़ और सहीह थी, उसको अपने हाथ से मिटाएँ। हज़रत अली (रज़ि.) को ये भी मा'लूम हो गया था कि आपका हुक्म बतौरे वुजूब के नहीं है।

बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि तर्जुमा में सिर्फ़ फ़लाँ बिन फ़लाँ लिखने पर इक़्तिसार किया और ज़्यादा नसब नामा ख़ानदान वग़ैरह नहीं लिखवाया। इस रिवायत में जो आपके ख़ुद लिखने का ज़िक्र है ये बतौरे मुअजिज़ा होगा, वरना दरहक़ीक़त आप नबी-ए-उम्मी थे और लिखने पढ़ने से आपका कोई ता'ल्लुक़ न था। फिर अल्लाह ने आपको उलूमुल अव्वलीन वल् आख़िरीन से मालामाल फ़र्माया। जो लोग हुज़ूर (ﷺ) के उम्मी होने का इंकार करते हैं वो ग़लती पर हैं, उम्मी होना भी आपका मुअजिज़ा है।

बाब 7 : मुश्रिकीन के साथ सुलह करना

इस बाब में अबू सुफ़यान (रज़ि.) की हदीष़ है

औफ़ बिन मालिक (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि एक दिन आएगा कि फिर तुम्हारी रूमियों से सुलह हो जाएगी. इस बाब में सहल बिन हनीफ़ अस्मा और मिस्वर (रज़ि.) की भी नबी करीम (ﷺ) से रिवायात हैं।

٧- بَابُ الصُّلْحِ مَعَ الْمُشْرِكِيْنَ: فِيْهِ عَنْ أَبِي سُفْيَانَ

وَقَالَ عَوْفُ بْنُ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((ثُمَّ تَكُوْنُ هُدْنَةٌ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ بَنِي الأَصْفَرِ)). وَفِيْهِ سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ وَأَسْمَاءُ، وَالْمِسْوَرُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

2700. मूसा बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सुलहे हुदैबिया मुश्रिकीन के साथ तीन शर्तों पर की थी, (1) ये कि मुश्रिकीन में से अगर कोई आदमी आँहज़रत (ﷺ) के पास आ जाए तो आप उसे वापस कर देंगे। लेकिन अगर मुसलमानों में से कोई मुश्रिकीन के यहाँ पनाह लेगा तो ऐसे शख़्स को वापस नहीं करेंगे। (2) ये कि आप आइन्दा साल मक्का आ सकेंगे और सिर्फ़ तीन दिन ठहरेंगे। (3) ये कि हथियार, तलवार, तीर वग़ैरह नियाम और तरकश में डालकर ही मक्का में दाख़िल होंगे। चुनाँचे अबू जन्दल (रज़ि.) (जो मुसलमान हो गए थे और क़ुरैश ने उनको क़ैद कर रखा था) बेड़ियों को घिसटते हुए आए, तो आप (ﷺ) ने उन्हें (शराइते मुआहिदे के मुत़ाबिक़) मुश्रिकों को वापस कर दिया। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुअम्मल ने सुफ़यान से अबू जन्दल का ज़िक्र नहीं किया है और इल्ला बिजुलुबानिस् सलाह के बजाय) इल्ला बिजुलुबिस्सलाह के अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं।

٢٧٠٠- وَقَالَ مُوسَى بْنُ مَسْعُودٍ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ ((صَالَحَ النَّبِيُّ ﷺ الْمُشْرِكِيْنَ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ عَلَى ثَلاَثَةِ أَشْيَاءَ : عَلَى أَنَّ مَنْ أَتَاهُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ رَدَّهُ إِلَيْهِمْ، وَمَنْ أَتَاهُمْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ لَمْ يَرُدُّوهُ. وَعَلَى أَنْ يَدْخُلَهَا مِنْ قَابِلٍ وَيُقِيْمَ بِهَا ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ، وَلاَ يَدْخُلَهَا إِلاَّ بِجُلُبَّانِ السِّلاَحِ: السَّيْفِ وَالْقَوْسِ وَنَحْوِهِ. فَجَاءَ أَبُو جَنْدَلٍ يَحْجُلُ فِي قُيُودِهِ فَرَدَّهُ إِلَيْهِمْ)).[راجع: ١٧٨١] قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: لَمْ يَذْكُرْ مُؤَمَّلٌ عَنْ سُفْيَانَ أَبَا جَنْدَلٍ، وَقَالَ : ((إِلاَّ بِجُلُبِّ السِّلاَحِ)).

2701. हमसे मुहम्मद बिन राफ़ेअ़ ने बयान किया, कहा हमसे शुरैह बिन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे फुलैह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) उ़मरह का एहराम बाँधकर निकले, तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने आपको बैतुल्लाह जाने से रोक दिया। इसलिये आपने क़ुर्बानी का जानवर हुदैबिया में ही ज़िब्ह कर दिया और सर भी वहीं मुँडवा लिया और कुफ़्फ़ारे मक्का से आपने इस शर्त पर सुलह की थी कि आप आइन्दा साल उ़मरह कर सकेंगे। तलवारों के सिवा और कोई

٢٧٠١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ خَرَجَ مُعْتَمِرًا، فَحَالَ كُفَّارُ قُرَيْشٍ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْبَيْتِ، فَنَحَرَ هَدْيَهُ، وَحَلَقَ رَأْسَهُ بِالْحُدَيْبِيَةِ، وَقَاضَاهُمْ

عَلَى أَنْ يَعْتَمِرَ الْعَامَ الْمُقْبِلَ، وَلاَ يَحْمِلَ سِلاَحًا عَلَيْهِمْ إِلاَّ سُيُوفًا، وَلاَ يُقِيْمَ بِهَا إِلاَّ مَا أَحَبُّوا. فَاعْتَمَرَ مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ فَدَخَلَهَا كَمَا كَانَ صَالَحَهُمْ، فَلَمَّا أَقَامَ بِهَا ثَلاَثًا أَمَرُوهُ أَنْ يَخْرُجَ فَخَرَجَ)).

[طرفه في : ٤٢٥٢].

हथियार साथ न लाएँगे। (और वो भी नियाम में होंगी) और क़ुरैश जितने दिन चाहेंगे उससे ज़्यादा मक्का मे न ठहरेंगे। (या'नी तीन दिन) चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने आईन्दा साल उमरह किया और शराइत के मुताबिक़ आप (ﷺ) मक्का में दाख़िल हुए, फिर जब तीन दिन गुज़र चुके तो क़ुरैश ने मक्का से चले जाने के लिये कहा और आप (ﷺ) वहाँ से वापस चले आए। (दीगर मक़ाम : 4252)

अगरचे मुश्रिकीन की ये शर्तें बिल्कुल नामुनासिब थीं, मगर रह़मतुल लिल् आलमीन (ﷺ) ने बहुत से मसालेह़ के पेशेनज़र इनको तस्लीम कर लिया। पस मस्लिहतन दबकर सुलह़ कर लेना भी कुछ मौक़ों पर ज़रूरी हो जाता है। इस्लाम सरासर सुलह़ का ह़ामी है। एक रिवायत में है कि जो शख़्स फ़साद को मिटाने के लिये अपना ह़क़ छोड़कर भी सुलह़ कर ले, अल्लाह उससे बहुत ही बेहतर अज्र अ़ता करता है। ह़ज़रत ह़सन और ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) की सुलह़ भी इसी क़िस्म की थी।

٢٧٠٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بِشْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ قَالَ: ((انْطَلَقَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَهْلٍ وَمُحَيِّصَةُ بْنُ مَسْعُودِ بْنِ زَيْدٍ إِلَى خَيْبَرَ وَهِيَ يَوْمَئِذٍ صُلْحٌ ...)).

[أطرافه في : ٣١٧٣، ٦١٤٣، ٦٨٩٨، ٧١٩٢].

2702. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे बशीर बिन यसार ने और उनसे सहल बिन अबी ह़स्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन सहल और मुहैसा बिन मसऊ़द बिन ज़ैद (रज़ि.) ख़ैबर गए। ख़ैबर के यहूदियों से मुसलमानों की उन दिनों सुलह़ थी। (दीगर मक़ाम : 3173, 6143, 6898, 7192)

इसी से काफ़िरों के साथ सुलह़ करना षाबित हुआ। सुलह़ के बारे में इस्लाम ने ख़ास़ हिदायात इसीलिये दी हैं कि इस्लाम सरासर अमन और सुलह़ का अ़लमबरदार है। इस्लाम ने जंग व जिदाल को कभी पसन्द नहीं किया, क़ुर्आन मजीद में साफ़ हिदायत है। **व इन जनहू लिस्सल्मि फज्नह लहा** (अल अन्फाल : 61) अगर दुश्मन सुलह़ करना चाहे तो आप ज़रूर सुलह़ के लिये झुक जाइये। क़ुर्आन मजीद में जहाँ भी जंगी अह़कामात हैं वो सिर्फ़ मुदाफ़िअ़त के लिये हैं, जारेहाना हिदायत कहीं भी नहीं है।

٨- بَابُ الصُّلْحِ فِي الدِّيَةِ

बाब 8 : दियत पर सुलह करना (या'नी क़िसास़ मुआ़फ़ करके दियत पर राज़ी हो जाना)

٢٧٠٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ أَنَّ الرُّبَيِّعَ - وَهِيَ ابْنَةُ النَّضْرِ - كَسَرَتْ ثَنِيَّةَ جَارِيَةٍ، فَطَلَبُوا الأَرْشَ

2703. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, कहा मुझसे हुमैद ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नज़र् की बेटी रबीआ़ (रज़ि.) ने एक लड़की के दांत तोड़ दिये। उस पर लड़की वालों ने तावान मांगा और उन लोगों ने मआ़फ़ी चाही, लेकिन मुआ़फ़ करने से उन्होंने मना कर

दिया। चुनाँचे नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप (ﷺ) ने बदला लेने का हुक्म दिया (या'नी उनका भी दांत तोड़ दिया जाए) अनस बिन नज़्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! रबीआ़ का दांत किस त़रह तोड़ा जा सकेगा, नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको ह़क़ के साथ मब्ऊ़ष़ किया है, उसका दांत नहीं तोड़ा जाएगा। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अनस! किताबुल्लाह का फ़ैसला तो बदला लेने (क़िसास़) ही का है। चुनाँचे ये लोग राजी हो गए और मुआ़फ़ कर दिया। फिर आपने फ़र्माया कि अल्लाह के कुछ बन्दे ऐसे भी हैं कि अगर वो अल्लाह की क़सम खा लें तो अल्लाह तआ़ला ख़ुद उनकी क़सम पूरी करता है। फ़ज़ारी ने (अपनी रिवायत में) हुमैद से, और उन्होंने अनस (रज़ि.) से ये ज़्यादती नक़ल की है कि वो लोग राज़ी हो गए और तावान ले लिया। (दीगर मक़ाम : 2806, 4499, 4500, 4611, 6894)

وَطَلَبُوا الْعَفْوَ، فَأَبَوْا. فَأَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَأَمَرَهُمْ بِالْقِصَاصِ، فَقَالَ أَنَسُ بْنُ النَّضْرِ: أَتُكْسَرُ ثَنِيَّةُ الرُّبَيِّعِ يَا رَسُولَ اللهِ؟ لاَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لاَ تُكْسَرُ ثَنِيَّتُهَا. فَقَالَ: ((يَا أَنَسُ كِتَابُ اللهِ الْقِصَاصُ)). فَرَضِيَ الْقَوْمُ وَعَفَوا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللهِ مَنْ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لأَبَرَّهُ)). زَادَ الْفَزَارِيُّ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ: ((فَرَضِيَ الْقَوْمُ وَقَبِلُوا الأَرْشَ)). [أطرافه في: ٢٨٠٦، ٤٤٩٩، ٤٥٠٠، ٤٦١١، ٦٨٩٤].

दियत पर सुलह करना ष़ाबित हुआ। ह़ज़रत अनस बिन नज़्र (रज़ि.) ने अल्लाह की क़सम इस उम्मीद पर खाई कि अल्लाह ज़रूर-ज़रूर दूसरे फ़रीक़ का दिल मोड़ देगा और क़िसास़ के बदले दियत पर राज़ी हो जाएँगे। चुनाँचे अल्लाह ने क़सम को पूरा कर दिया और फ़रीक़े ष़ानी दियत लेने पर राज़ी हो गया, जिस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने बारगाहे इलाही में मक़बूल कुछ लोगों की निशानदेही फ़र्माई कि वो ऐसे होते हैं कि अल्लाह पाक के बारे में अपने दिलों में कोई सच्चा अ़ज़्म कर लें और उसको पूरे भरोसे के साथ बीच में ले आएँ तो वो ज़रूर ज़रूर उनका अ़ज़्म पूरा कर देता है और वो अपने इरादे में कामयाब हो जाते हैं। अंबिया (अ़लैहिमुस्सलाम) और औलिया-ए-कामिलीन में ऐसी बहुत सी मिष़ालें तारीख़े आ़लम के सफ़्ह़ात पर मौजूद हैं और क़ुदरत का ये क़ानून अब भी जारी है।

बाब 9 : ह़ज़रत ह़सन बिन अ़ली (रज़ि.) के बारे में नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि ये मेरा बेटा है

٩- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا:

मुसलमानों का सरदार है और शायद इसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में सुलह करा दे और अल्लाह पाक का सूरह हुज्रात में ये इर्शाद कि, पस दोनों में सुलह करा दो।

((ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ، وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ ﴿فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا﴾.

2704. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय़ना ने बयान किया, उनसे अबू मूसा ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत इमाम ह़सन बस़री (रह.) से सुना, वो बयान करते थे कि क़सम अल्लाह की! जब ह़सन बिन अ़ली (रज़ि.) (मुआ़विया रज़ि. के मुक़ाबले में) पहाड़ों जैसा लश्कर लेकर पहुँचे, तो अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने कहा (जो

٢٧٠٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ: ((اسْتَقْبَلَ وَاللهِ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ مُعَاوِيَةَ بِكَتَائِبَ أَمْثَالِ الْجِبَالِ، فَقَالَ عَمْرُو بْنُ الْعَاصِ: إِنِّي

لأَرَى كَتَائِبَ لاَ تُوَلِّي حَتَّى تَقْتُلَ أَقْرَانَهَا. فَقَالَ لَهُ مُعَاوِيَةُ - وَكَانَ وَاللهِ خَيْرَ الرَّجُلَيْنِ - أَيْ عَمْرُو، إِنْ قَتَلَ هَؤُلاَءِ وَهَؤُلاَءِ هَؤُلاَءِ مَنْ لِي بِأُمُورِ النَّاسِ، مَنْ لِي بِنِسَائِهِمْ، مَنْ لِي بِضَيْعَتِهِمْ؟ فَبَعَثَ إِلَيْهِ رَجُلَيْنِ مِنْ قُرَيْشٍ مِنْ بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ - عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ سَمُرَةَ وَعَبْدَ اللهِ بْنَ عَامِرِ بْنِ كُرَيْزٍ - قَالَ : اذْهَبَا إِلَى هَذَا الرَّجُلِ فَاعْرِضَا عَلَيْهِ وَقُولاَ لَهُ وَاطْلُبَا إِلَيْهِ. فَأَتَيَاهُ فَدَخَلاَ عَلَيْهِ فَتَكَلَّمَا وَقَالاَ لَهُ فَطَلَبَا إِلَيْهِ. فَقَالَ لَهُمَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ : إِنَّا بَنُو عَبْدِ الْمُطَّلِبِ قَدْ أَصَبْنَا مِنْ هَذَا الْمَالِ، وَإِنَّ هَذِهِ الأُمَّةَ قَدْ عَاثَتْ فِي دِمَائِهَا. قَالاَ: فَإِنَّهُ يَعْرِضُ عَلَيْكَ كَذَا وَكَذَا. وَيَطْلُبُ إِلَيْكَ وَيَسْأَلُكَ. قَالَ: فَمَنْ لِي بِهَذَا؟ قَالاَ: نَحْنُ لَكَ بِهِ. فَمَا سَأَلَهُمَا شَيْئًا إِلاَّ قَالاَ: نَحْنُ لَكَ بِهِ. فَصَالَحَهُ. فَقَالَ الْحَسَنُ: وَلَقَدْ سَمِعْتُ أَبَا بَكْرَةَ يَقُولُ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ - وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ إِلَى جَنْبِهِ - وَهُوَ يُقْبِلُ عَلَى النَّاسِ مَرَّةً وَعَلَيْهِ أُخْرَى وَيَقُولُ: إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ،وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)). قَالَ لِي عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ: إِنَّمَا ثَبَتَ لَنَا سَمَاعُ الْحَسَنِ مِنْ أَبِي بَكْرَةَ بِهَذَا الْحَدِيثِ.

[أطرافه في : ٣٦٢٩، ٣٧٤٦، ٧١٠٩].

अमीर मुआविया (रज़ि.) के मुशीरे ख़ास थे) कि मैं ऐसा लश्कर देख रहा हूँ जो अपने मुक़ाबिल को नेस्तो-नाबूद किये बग़ैर वापस न जाएगा। मुआविया (रज़ि.) ने उस पर कहा और क़सम अल्लाह की, वो उन दोनों अस्हाब में ज़्यादा अच्छे थे, कि ऐ अम्र! अगर उस लश्कर ने इस लश्कर को क़त्ल कर दिया, या इसने उसको कर दिया, तो (अल्लाह तआला की बारगाह में) लोगों के उमूर (की जवाबदेही के लिये) मेरे साथ कौन ज़िम्मेदारी लेगा? लोगों की बेवा औरतों की ख़बरगोरी के सिलसिले में मेरे साथ कौन ज़िम्मेदार होगा? लोगों की आल औलाद के सिलसिले में मेरे साथ कौन ज़िम्मेदार होगा? आख़िर मुआविया (रज़ि.) ने हसन (रज़ि.) के यहाँ क़ुरैश की शाख़ बनू अब्दे शम्स के दो आदमी भेजे। अब्दुर्रहमान बिन समुरह और अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरैज़, आप (रज़ि.) ने उन दोनों से फ़र्माया कि हसन बिन अली (रज़ि.) के यहाँ जाओ और उनके सामने सुलह पेश करो, उनसे इस पर बातचीत करो और फ़ैसला आप ही की मर्ज़ी पर छोड़ दिया। हसन बिन अली (रज़ि.) ने फ़र्माया, हम बनू अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हैं और हमको ख़िलाफ़त की वजह से रुपया पैसा ख़र्च करने की आदत हो गई है और हमारे साथ ये लोग हैं, ये ख़ून ख़राबा में ताक़ हैं, बग़ैर रुपया दिये मानने वाले नहीं। वो कहने लगे हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) आपको इतना इतना रुपया देने पर राज़ी हैं और आपसे सुलह चाहते हैं। फ़ैसला आपकी मर्ज़ी पर छोड़ा है और आपसे पूछा है। हज़रत हसन (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उसकी ज़िम्मेदारी कौन लेगा? इन दोनों क़ासिदों ने कहा कि हम इसकी ज़िम्मेदारी लेते हैं। हज़रत हसन ने जिस चीज़ के बारे में भी पूछा, तो उन्होंने यही कहा कि हम उसके ज़िम्मेदार हैं। आख़िर आपने सुलह कर ली, फिर फ़र्माया कि मैंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से सुना था, वो बयान करते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को मिम्बर पर ये फ़र्माते सुना है और हसन बिन अली (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के पहलू में थे, आप कभी लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होते और कभी हसन (रज़ि.) की तरफ़ और फ़र्माते कि मेरा ये बेटा सरदार है और शायद इसके ज़रिये अल्लाह तआला मुसलमानों

के दो अज़ीम गिरोह में सुलह कराएगा। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि हमारे नज़दीक इस हदीष से हसन बसरी (रह.) का अबूबक्र (रज़ि.) से सुनना षाबित हुआ है। (दीगर मक़ाम : 3629, 3746, 7109)

तश्रीह : हदीष में हज़रत हसन और हज़रत मुआविया (रज़ि.) की आपसी सुलह का ज़िक्र है और इससे सुलह की अहमियत भी ज़ाहिर होती है। इस मक़सद के तहत मुज्तहिदे मुत्लक़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस हदीष को यहाँ लाए। इस सुलह के बारे में आँहज़रत (ﷺ) ने पेशीनगोई की थी, जो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह षाबित हुई और इससे मुसलमानों की आपसी ख़ूँरेज़ी रुक गई। हज़रत हसन (रज़ि.) की अस्करी ताक़त और हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) की दूरअंदेशी फिर मसालिहत के लिये हज़रत हसन (रज़ि.) की आमादगी, ये सारे हालात उम्मत के लिये बहुत से सबक़ पेश करते हैं। मगर सद अफ़सोस कि इन सबक़ों को बहुत कम मद्देनज़र रखा गया, जिसकी सज़ा उम्मत अभी तक भुगत रही है।

रावी के कौल **व काना ख़ैरुर्रजुलयनि** में इशारा हज़रत अमीर मुआविया और अम्र बिन आस (रज़ि.) की तरफ़ है कि हज़रत मुआविया अम्र बिन आस (रज़ि.) से बेहतर थे जो जंग के ख़्वाहिशमंद नहीं थे।

बाब 10 : क्या इमाम सुलह के लिये फ़रीक़ैन को इशारा कर सकता है?

١٠- بَابُ هَلْ يُشِيرُ الإِمَامُ بِالصُّلْحِ؟

2705. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन हिलाल ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अबुर्रिजाल मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे उनकी वालिदा अम्रा बिन्ते अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दरवाजे पर दो झगड़ा करने वालों की आवाज़ सुनी जो बुलन्द हो गई थी। वाक़िया ये था कि एक आदमी दूसरे से क़र्ज़ में कुछ कमी करने और तक़ाज़े में कुछ नरमी बरतने के लिये कह रहा था और दूसरा कहता था कि अल्लाह की क़सम! मैं ये नहीं करूँगा। आख़िर रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके पास गये और फ़र्माया कि इस बात पर क़सम खाने वाले साहब कहाँ हैं? कि वो एक अच्छा काम नहीं करेंगे। उन सहाबी ने अर्ज़ किया, मैं ही हूँ या रसूलल्लाह (ﷺ)! अब मेरा भाई जो चाहता है वही मुझको पसन्द है।

٢٧٠٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِي الرِّجَالِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أُمَّهُ عَمْرَةَ بِنْتَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَتْ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا تَقُولُ: ((سَمِعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ صَوتَ خُصُومٍ بِالْبَابِ، عَالِيَةٍ أَصْوَاتُهُمْ، وَإِذَا أَحَدُهُمَا يَسْتَوْضِعُ الآخَرَ وَيَسْتَرْفِقُهُ فِي شَيْءٍ، وَهُوَ يَقُولُ: وَاللهِ لاَ أَفْعَلُ، فَخَرَجَ عَلَيْهِمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: أَيْنَ الْمُتَأَلِّي عَلَى اللهِ لاَ يَفْعَلُ الْمَعْرُوفَ؟ فَقَالَ: أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ، لَهُ أَيُّ ذَلِكَ أَحَبَّ)).

आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों में सुलह का इशारा किया, इसी से मक़सदे बाब षाबित हुआ। हाफ़िज़ ने कहा, उन लोगों के नाम मा'लूम नहीं हुए, बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि आपने उस शख़्स को पूछा था वो कहाँ है जो अच्छी बात न करने के लिये क़सम खा रहा था। गोया आपने उसके काम को बुरा समझा और सुलह का इशारा किया। वो समझ गया और आपके पूछते ही ख़ुद ब ख़ुद कहने लगा कि मेरा मक़रूज़ जो चाहे वो मुझको मंज़ूर है। उस शख़्स ने आँहज़रत (ﷺ) के अदबो एहतिराम में फ़ौरन

ही आपका इशारा पाकर मक़रूज़ के क़र्ज़ में तख़्फ़ीफ़ (कमी) का ऐलान कर दिया। बड़ों के एहतिराम मे इंसान अपना कुछ नुक़्सान भी बर्दाश्त कर ले तो बेहतर है।

٢٧٠٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيْعَةَ عَنِ الأَعْرَجِ قَالَ: ((حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّهُ كَانَ لَهُ عَلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي حَدْرَدٍ الأَسْلَمِيِّ مَالٌ، فَلَقِيَهُ فَلَزِمَهُ حَتَّى ارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا، فَمَرَّ بِهِمَا النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: يَا كَعْبُ - فَأَشَارَ بِيَدِهِ كَأَنَّهُ يَقُولُ: النِّصْفَ - فَأَخَذَ نِصْفَ مَا لَهُ عَلَيْهِ وَتَرَكَ نِصْفًا)).

[راجع: ٤٥٧]

2706. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने, उनसे अअ़रज ने बयान किया कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने बयान किया और उनसे कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन हदरदि असलमी (रज़ि.) पर उनका क़र्ज़ था, उनसे मुलाक़ात हुई तो उन्होंने उनका पीछा किया, (आख़िर तकरार में) दोनों की आवाज़ बुलन्द हो गई। नबी करीम (ﷺ) उधर से गुज़रे तो आपने फ़र्माया, कि ऐ कअ़ब! और अपने हाथ से इशारा किया, जैसे आप कह रहे हों कि आधा (क़र्ज़ कम कर दे) चुनाँचे उन्होंने आधा क़र्ज़ छोड़ दिया और आधा लिया। (राजेअ़ : 457)

इस्लामी ता'लीम यही है कि अगर मक़रूज़ (क़र्ज़दार) नादार है तो उसको ढील देना या फिर मुआ़फ़ कर देना ही बेहतर है। जो क़र्ज़ ख़्वाह के आमाले ख़ैर में लिखा जाएगा। **व इन कान ज़ू उस्रतिन फनज़िरतुन इला मयसरतिन व अन तस़द्दक़ू ख़ैरुल्लकुम** (अल बक़र: 280) आयते क़ुर्आनी का यही मत़लब है।

١١- بَابُ فَضْلِ الإِصْلاَحِ بَيْنَ النَّاسِ وَالْعَدْلِ بَيْنَهُمْ

बाब 11 : लोगों मे आपस मे मिलाप कराने का और इंस़ाफ़ करने की फ़ज़ीलत का बयान

٢٧٠٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كُلُّ سُلاَمَى مِنَ النَّاسِ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ كُلَّ يَومٍ تَطْلُعُ فِيْهِ الشَّمْسُ، يَعْدِلُ بَيْنَ النَّاسِ صَدَقَةٌ)).

[طرفاه في: ٢٨٩١، ٢٩٨٩].

2707. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी हम्माम से, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इंसान के बदन के (तीन सौ साठ जोड़ों में से) हर जोड़ पर हर उस दिन का स़दक़ा वाजिब है जिसमें सूरज तुलूअ़ होता है और लोगों के दरम्यान इंस़ाफ़ करना भी एक स़दक़ा है।

(दीगर मक़ाम : 2891, 2979)

या'नी जो स़दक़ा वाजिब था वो लोगों के दरम्यान अ़दल करने से भी अदा हो जाता है। गोया अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुक्रिया भी है कि लोगों के दरम्यान इंस़ाफ़ किया जाए ये भी एक त़रह़ का स़दक़ा ही है जिसके नतीजे दूर-रस (दूरगामी) होते हैं, इसीलिये आपस में मेल--मिलाप करा देने को नफ़्ल नमाज़ और नफ़्ली रोज़ा से ज़्यादा अहम अ़मल बतलाया गया है।

١٢- بَابُ إِذَا أَشَارَ الإِمَامُ بِالصُّلْحِ

बाब 12 : अगर हाकिम सुलह करने के लिये इशारा

करे और कोई फ़रीक़ न माने तो क़ायदे का हुक्म दे दे

فَأَبَى، حَكَمَ عَلَيْهِ بِالْحُكْمِ الْبَيِّنِ.

हुक्म यही है कि जिसका खेत ऊपर हो वो मेंढ़ों तक पानी भर जाने के बाद अपने हमसाये के खेत में पानी छोड़ दे।

2708. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी कि ज़ुबैर (रज़ि.) बयान करते थे कि उनमें और एक अंसारी सहाबी में जो बद्र की लड़ाई में भी शरीक थे, मदीना की पथरीली ज़मीन की नाली के बाब में झगड़ा हुआ। वो अपना मुक़द्दमा रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ले गए। दोनों हज़रात उस नाले से (अपने बाग़) सैराब किया करते थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़ुबैर! तुम पहले सैराब कर लो, फिर अपने पड़ौसी को भी सैराब करने दो, इस पर अंसारी सहाबी को ग़ुस्सा आ गया और कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या इस वजह से कि ये आपकी फूफी के लड़के हैं। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया और आपने फ़र्माया, ऐ ज़ुबैर! तुम सैराब करो और पानी को (अपने बाग़ में) इतनी देर तक आने दो कि दीवार तक चढ़ जाए। इस बार रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ुबैर को उनका पूरा हक़ अता किया, इससे पहले आपने ऐसा फ़ैसला किया था, जिसमें हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) और अंसारी सहाबी दोनों की रिआयत थी। लेकिन जब अंसारी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ग़ुस्सा दिलाया तो आपने ज़ुबैर (रज़ि.) को क़ानून के मुताबिक़ पूरा हक़ अता फ़र्माया। उर्वा ने बयान किया कि ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया, क़सम अल्लाह की! मेरा ख़्याल है कि ये आयत उसी वाक़िये पर नाज़िल हुई थी, पस हर्गिज़ नहीं! तेरे रब की क़सम! ये लोग उस वक़्त तक मोमिन न होंगे जब तक अपने इख़्तिलाफ़ात में आपके फ़ैसले को दिलो-जान से तस्लीम न कर लें। (राजेअ : 2360)

٢٧٠٨ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ الزُّبَيْرَ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّهُ خَاصَمَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي شِرَاجٍ مِنَ الْحَرَّةِ كَانَا يَسْقِيَانِ بِهِ كِلاَهُمَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِلزُّبَيْرِ: ((اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ أَرْسِلْ إِلَى جَارِكَ)). فَغَضِبَ الأَنْصَارِيُّ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ أَنْ كَانَ ابْنَ عَمَّتِكَ. فَتَلَوَّنَ وَجْهُ رَسُولِ اللهِ ﷺ ثُمَّ قَالَ: ((اسْقِ، ثُمَّ احْبِسْ حَتَّى يَبْلُغَ الْجَدْرَ)). فَاسْتَوْعَى رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَئِذٍ حَقَّهُ لِلزُّبَيْرِ. وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَبْلَ ذَلِكَ أَشَارَ عَلَى الزُّبَيْرِ بِرَأْيٍ سَعَةٍ لَهُ وَلِلأَنْصَارِيِّ فَلَمَّا أَحْفَظَ الأَنْصَارِيُّ رَسُولَ اللهِ ﷺ اسْتَوْعَى لِلزُّبَيْرِ حَقَّهُ فِي صَرِيحِ الْحُكْمِ، قَالَ عُرْوَةُ قَالَ الزُّبَيْرُ: وَاللهِ مَا أَحْسِبُ هَذِهِ الآيَةَ نَزَلَتْ إِلاَّ فِي ذَلِكَ: ﴿فَلاَ وَرَبِّكَ لاَ يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ﴾ الآيَةَ)) [النساء: ٦٥].

तश्रीह : बाब लोगों मे आपस मे मिलाप कराने का और इंसाफ़ करने की फ़ज़ीलत का बयान क़ायदे और ज़ाब्ते का जहाँ तक ता'ल्लुक़ है आँहज़रत (ﷺ) का इर्शादे गिरामी हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) के हक़ में बिलकुल इंसाफ़ पर मब्नी था। मगर अंसारी सहाबी को उसमें रू-ए-रिआयत का पहलू नज़र आया जो सहीह न था, उस पर ये आयते करीमा नाज़िल हुई और बिला चूँ चरा की इताअत को रसूले करीम (ﷺ) को ईमान की बुनियाद क़रार दिया गया।

आयते करीमा से उन मुक़ल्लिदीने जामिदीन का भी रद्द होता है जो सहीह अहादीष पर अपने अइम्मा के अक़्वाल को तरजीह देते और मुख़्तलिफ़ हीलों बहानों से फ़ैसल-ए-नबवी को टाल देते हैं। हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी

हुज्जतुलाहिल बालिग़ा जिल्द अव्वल पेज नं. 365, 366 पर फ़र्माते हैं। पस अगर हमें रसूल (ﷺ) की ह़दीष़ बसनदे स़ह़ीह़ पहुँचे जिसकी इत़ाअ़त अल्लाह ने हम पर फ़र्ज़ की है और मुज्तहिद का मज़हब उससे मुख़ालिफ़ हो और उसके बावजूद हम ह़दीषे़ स़ह़ीह़ को छोड़कर मुज्तहिद की तख़्मीन और ज़न्नी बात की पैरवी करें तो हमसे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा और हम उस वक़्त क्या बहाना पेश करेंगे जबकि लोग रब्बुल आ़लमीन के सामने ह़ाज़िर होंगे। दूसरी जगह ह़ज़रत शाह स़ाह़ब ने ऐसी तक़्लीद को आयत **इत्तख़ज़ू अहबारहुम व रूहबानहुम अर्बाबम्मिन दूनिल्लाहि** (अत् तौबा : 31) का मिस्दाक़ क़रार दिया है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा)

बाब 13 : मय्यत के क़र्ज़ ख़्वाहों और वारिषों में सुलह का बयान और क़र्ज़ का अंदाज़े से अदा करना

١٣- بَابُ الصُّلْحِ بَيْنَ الْغُرَمَاءِ وَأَصْحَابِ الْمِيْرَاثِ، وَالْمجَازَفَةِ فِي ذَلِكَ

और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अगर दो शरीक आपस में ये ठहरा लें कि (अपने ह़िस्से को बदल) क़र्ज़ वसूल करे और दूसरा नक़द माल ले ले तो कोई ह़र्ज नहीं। अब अगर एक शरीक का ह़िस्सा तल्फ़ हो जाए (मष़लन क़र्ज़ा डूब जाए) तो वो अपने शरीक से कुछ नहीं ले सकता।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لاَ بَأْسَ أَنْ يَتَخَارَجَ الشَّرِيْكَانِ فَيَأْخُذَ هَذَا دَيْنًا وَهَذَا عَيْنًا فَإِنْ تَوِيَ لأَحَدِهِمَا لَمْ يَرْجِعْ عَلَى صَاحِبِهِ.

2709. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे वहब बिन कैसान ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे वालिद जब शहीद हुए तो उन पर क़र्ज़ था। मैंने उनके क़र्ज़ ख़्वाहों के सामने ये सूरत रखी कि क़र्ज़ के बदले मे वो (इस साल की खजूर के) फल ले लें। उन्होंने इससे इंकार कर दिया, क्याकि उनका ख़याल था कि उससे क़र्ज़ पूरा नहीं हो सकेगा, मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और आप (ﷺ) से उसका ज़िक्र किया। आपने फ़र्माया कि जब फल तोड़कर मिरबद (वो जगह जहाँ खजूर ख़ुश्क करते थे) में जमा कर दो (तो मुझे ख़बर दो) चुनाँचे मैंने आप (ﷺ) को ख़बर दी। आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए। साथ में अबूबक्र और उ़मर (रज़ि.) भी थे। आप वहाँ खजर के ढेरे पर बैठे और उसमें बरकत की दुआ़ फ़र्माई, फिर फ़र्माया कि अब अपने क़र्ज़ख़्वाहों को बुलाओ और उनका क़र्ज़ अदा कर दे, चुनाँचे कोई शख़्स ऐसा बाक़ी न रहा जिसका मेरे बाप पर क़र्ज़ बाक़ी रहा हो और मैंने उसे अदा न कर दिया हो। फिर भी तेरह वस्क़ खजूर बाक़ी बच गई। सात वस्क़ अ़ज्वा में से और छः वस्क़ लोन मे से, या छः वस्क़ अ़ज्वा में से और सात वस्क़ लोन में से, बाद में मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से मग़िरब के वक़्त जाकर मिला और

٢٧٠٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((تُوُفِّيَ أَبِي وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، فَعَرَضْتُ عَلَى غُرَمَائِهِ أَنْ يَأْخُذُوا التَّمْرَ بِمَا عَلَيْهِ فَأَبَوا، وَلَمْ يَرَوا أَنَّ فِيْهِ وَفَاءً، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: ((إِذَا جَدَدْتَهُ فَوَضَعْتَهُ فِي الْمِرْبَدِ آذَنْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ)). فَجَاءَ وَمَعَهُ أَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ، فَجَلَسَ عَلَيْهِ فَدَعَا بِالْبَرَكَةِ ثُمَّ قَالَ: ((ادْعُ غُرَمَاءَكَ فَأَوْفِهِمْ)). فَمَا تَرَكْتُ أَحَدًا لَهُ عَلَى أَبِي دَيْنٌ إِلاَّ قَضَيْتُهُ، وَفَضَلَ ثَلاَثَةَ عَشَرَ وَسْقًا: سَبْعَةٌ عَجْوَةٌ وَسِتَّةٌ لَوْنٌ، أَوْ سِتَّةٌ عَجْوَةٌ وَسَبْعَةٌ لَوْنٌ. فَوَافَيْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ الْمَغْرِبَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ، فَضَحِكَ

فَقَالَ: ((ائْتِ أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ فَأَخْبِرْهُمَا))، فَقَالاَ: لَقَدْ عَلِمْنَا - إِذْ صَنَعَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَا صَنَعَ - أَنْ سَيَكُوْنُ ذَلِكَ)). وَقَالَ هِشَامٌ عَنْ وَهْبٍ عَنْ جَابِرٍ: ((صَلاَةَ الْعَصْرِ)) وَلَمْ يَذْكُرْ ((أَبَا بَكْرٍ)) وَلاَ ((ضَحِكَ)) وَقَالَ: ((وَتَرَكَ أَبِي عَلَيْهِ ثَلاَثِيْنَ وَسْقًا دَيْنًا)). وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ عَنْ وَهْبٍ عَنْ جَابِرٍ ((صَلاَةَ الظُّهْرِ)).

[راجع: ٢١٢٧]

आपसे उसका ज़िक्र किया तो आप हंसे और फ़र्माया, अबूबक्र और इमर के यहाँ जाकर उन्हें भी ये वाक़िया बता दो। चुनाँचे मैंने उन्हें बतलाया, तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को जो करना था आपने वो किया। हमें उसी वक़्त मा'लूम हो गया था कि ऐसा ही होगा। हिशाम ने वहब से और उन्होंने जाबिर से अ़स्र के वक़्त (जाबिर रज़ि. की हाज़िरी का) ज़िक्र किया है और उन्होंने न अबूबक्र (रज़ि.) का ज़िक्र किया है और न हंसने का, ये भी बयान किया कि (जाबिर रज़ि. ने कहा) मेरे वालिद अपने पर तीस वस्क़ क़र्ज़ छोड़ गए थे और इब्ने इस्हाक़ ने वहब से, और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से ज़ुहर की नमाज़ का ज़िक्र किया है। (राजेअ़ : 2127)

एक वस्क़ साठ साअ़ का होता है। अज्वा मदीना की खजूरों में बहुत आला क़िस्म है और लौन उससे कमतर होती है। आँहज़रत (ﷺ) की दुआ की बरकत से हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने अपना सारा क़र्ज़ अदा कर दिया, फिर भी काफ़ी बचत हो गई। ख़ुशनसीब थे हज़रत जाबिर (रज़ि.), जिनको ये फ़ैज़ाने नबवी हासिल हुआ। मज़्मूने बाब की हर शिक़ हदीषे हाज़ा से षाबित है।

१٤ - بَابُ الصُّلْحِ بِالدَّيْنِ وَالْعَيْنِ

बाब 14 : कुछ नक़द देकर क़र्ज़ के बदले सुलह करना

٢٧١٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ قَالَ أَخْبَرَنَا يُوْنُسُ ح. وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُوْنُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ كَعْبٍ أَنَّ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ تَقَاضَى ابْنَ أَبِي حَدْرَدٍ دَيْنًا كَانَ لَهُ عَلَيْهِ فِي عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ، فَارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا حَتَّى سَمِعَهَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَهُوَ فِي بَيْتِهِ، فَخَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَيْهِمَا حَتَّى كَشَفَ سِجْفَ حُجْرَتِهِ فَنَادَى كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ، فَقَالَ: ((يَا كَعْبُ))، قَالَ: لَبَّيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ، فَأَشَارَ بِيَدِهِ أَنْ ضَعِ الشَّطْرَ، فَقَالَ كَعْبٌ: قَدْ فَعَلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((قُمْ فَاقْضِهِ)).[راجع: ٤٥٧]

2710. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे उ़ष्मान बिन इमर ने बयान किया, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी और लैष ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने ख़बर दी और उन्हें कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने इब्ने अबी हदरद (रज़ि.) से अपना क़र्ज़ तलब किया, जो उनके ज़िम्मे था। ये रसूलुल्लाह (ﷺ) के अ़हदे मुबारक का वाक़िया है। मस्जिद के अंदर उन दोनों की आवाज़ बुलन्द हो गई कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी सुनी। आप उस वक़्त अपने हुज्रे में तशरीफ़ रखते थे। चुनाँचे आप बाहर आए और अपने हुज्रे का पर्दा उठाकर कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) को आवाज़ दी। आपने पुकारा ऐ कअ़ब! उन्होंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं हाज़िर हूँ। फिर आपने अपने हाथ के इशारे से फ़र्माया कि आधा मुआफ़ कर दो। कअ़ब (रज़ि.) ने कहा कि मैंने कर दिया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने (इब्ने अबी हदरद रज़ि. से) फ़र्माया कि अब उठो और क़र्ज़ अदा कर दो। (हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है)

(राजेअ़ : 457)

54. किताबुश्शुरूत

किताब शराइत के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : इस्लाम में दाख़िल होते वक़्त और मुआमलाते बेअ व शराअ में कौनसी शर्तें लगाना जाइज़ है?

2711,12. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, उन्होंने ख़लीफ़ा मरवान और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) से सुना, ये दोनों हज़रात अस्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) से ख़बर देते थे कि जब सुहैल बिन अम्र ने (हुदैबिया में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तरफ़ से सुलह का मुआहिदा) लिखवाया तो जो शर्तें नबी करीम (ﷺ) के सामने सुहैल ने रखी थीं, उनमें ये शर्त भी थी कि हममें से कोई भी शख़्स अगर आपके यहाँ (फ़रार होकर) चला जाए ख़्वाह वो आपके दीन पर ही क्यूँ न हो तो आपको उसे हमारे हवाले करना होगा। मुसलमान ये शर्त पसन्द नहीं कर रहे थे और उस पर उन्हें दुख हुआ था। लेकिन सुहैल ने इस शर्त के बग़ैर सुलह क़ुबूल न की। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने इसी शर्त पर सुलहनामा लिखवा लिया। इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन अबू जन्दल (रज़ि.) को जो मुसलमान होकर आया था (मुआहिदे के तहत बादिले नाख़्वास्ता) उनके वालिद सुहैल बिन अम्र के हवाले कर दिया गया। इसी तरह मुद्दते सुलह में जो मर्द भी

١ - بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الشُّرُوطِ فِي الإِسْلاَمِ، وَالأَحْكَامِ، وَالْمُبَايَعَةِ

٢٧١١، ٢٧١٢ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ سَمِعَ مَرْوَانَ وَالْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يُخْبِرَانِ عَنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَمَّا كَاتَبَ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو يَوْمَئِذٍ كَانَ فِيمَا اشْتَرَطَ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ لاَ يَأْتِيكَ مِنَّا أَحَدٌ - وَإِنْ كَانَ عَلَى دِينِكَ - إِلاَّ رَدَدْتَهُ إِلَيْنَا وَخَلَّيْتَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُ. فَكَرِهَ الْمُؤْمِنُونَ ذَلِكَ وَامْتَعَضُوا مِنْهُ، وَأَبَى سُهَيْلٌ إِلاَّ ذَلِكَ فَكَاتَبَهُ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى ذَلِكَ، فَرَدَّ يَوْمَئِذٍ أَبَا جَنْدَلٍ إِلَى أَبِيهِ سُهَيْلِ بْنِ عَمْرٍو، وَلَمْ يَأْتِهِ أَحَدٌ مِنَ الرِّجَالِ إِلاَّ رَدَّهُ فِي تِلْكَ الْمُدَّةِ

आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में मक्का से भागकर आया) आपने उसे उनके हवाले कर दिया ख़्वाह वो मुसलमान ही क्यूँ न रहा हो। लेकिन चन्द ईमान वाली औरतें भी हिजरत करके आ गई थीं, उम्मे कुल्षुम बिन्ते उक़्बा बिन अबी मुईत़ (रज़ि.) भी उनमें शामिल थीं जो उसी दिन (मक्का से निकलकर) आप (ﷺ) की ख़िदमत में आई थीं, वो जवान थीं और जब उनके घरवाले आए और रसूलुल्लाह (ﷺ) से उनकी वापसी का मुतालबा किया, तो आप (ﷺ) ने उन्हें उनके हवाले नहीं किया, बल्कि औरतों के बारे में अल्लाह तआला (सूरह मुम्तहिना में) इर्शाद फ़र्मा चुका था कि, जब मुसलमान औरतें तुम्हारे यहाँ हिजरत करके पहुँचे तो पहले तुम उनका इम्तिहान ले लो, यूँ तो उनके ईमान के बारे में जानने वाला अल्लाह तआला ही है। अल्लाह तआला के इस इर्शाद तक कि कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन उनके लिये हलाल नहीं हैं अल्ख़। (राजेअ : 1694, 1695)

وَإِنْ كَانَ مُسْلِمًا. وَجَاءَ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ، وَكَانَتْ أُمُّ كُلْثُومٍ بِنْتُ عُقْبَةَ بْنِ أَبِي مُعَيْطٍ مِمَّنْ خَرَجَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ يَوْمَئِذٍ - وَهِيَ عَاتِقٌ - فَجَاءَ أَهْلُهَا يَسْأَلُونَ النَّبِيَّ ﷺ أَنْ يَرْجِعَهَا إِلَيْهِمْ فَلَمْ يَرْجِعْهَا إِلَيْهِمْ لِمَا أَنْزَلَ اللهُ فِيهِنَّ: ﴿إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ اللهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ - إِلَى قَوْلِهِ - وَلاَ هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ﴾ [الممتحنة : ١٠].

[راجع: ١٦٩٤، ١٦٩٥]

2713. उर्वा ने कहा कि मुझे आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) हिजरत करने वाली औरतों का इस आयत की वजह से इम्तिहान लिया करते थे, ऐ मुसलमानों! जब तुम्हारे यहाँ मुसलमान औरतें हिजरत करके आएँ तो तुम उनका इम्तिहान ले लो, ग़फ़ूरुर्रहीम तक। उर्वा ने कहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि उन औरतों में से जो इस शर्त का इक़रार कर लेतीं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते कि मैंने तुमसे बेअत की, आप सिर्फ़ ज़बान से बेअत करते थे। क़सम अल्लाह की! बेअत करते वक़्त आप (ﷺ) के हाथ ने किसी भी औरत के हाथ को कभी नहीं छुआ, बल्कि आप सिर्फ़ ज़बान से बेअत लिया करते थे।

(दीगर मक़ाम : 2733, 4182, 4891, 5288, 7214)

٢٧١٣- قَالَ عُرْوَةُ فَأَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَمْتَحِنُهُنَّ بِهَذِهِ الآيَةِ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ - إِلَى - غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ قَالَ عُرْوَةُ: قَالَتْ عَائِشَةُ: فَمَنْ أَقَرَّ بِهَذَا الشَّرْطِ مِنْهُنَّ قَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ بَايَعْتُكِ)) كَلاَمًا يُكَلِّمُهَا بِهِ، وَاللهِ مَا مَسَّتْ يَدُهُ يَدَ امْرَأَةٍ قَطُّ فِي الْمُبَايَعَةِ، وَمَا بَايَعَهُنَّ إِلاَّ بِقَوْلِهِ)).

[أطرافه في : ٢٧٣٣، ٤١٨٢، ٤٨٩١، ٥٢٨٨، ٧٢١٤].

इस हदीष़ से मा'लूम हुआ कि औरतों से बेअत लेने में सिर्फ़ ज़बान से कह देना काफ़ी है, उनको हाथ लगाना दुरुस्त नहीं जैसे हमारे ज़माने के कुछ जाहिल पीर करते हैं। अल्लाह उनसे समझे और उनको हिदायत करे। सुलह़ हुदैबिया शराइते मा'लूमा के साथ की गई, जिनमें कुछ शर्तें बज़ाहिर मुसलमानों के लिये नागवार भी थीं, मगर बहरहाल उन ही शर्तों पर सुलह़ का मुआहिदा लिखा गया, इससे ष़ाबित हुआ कि ऐसे मौक़ों पर फ़रीक़ेन मुनासिब शर्तें लगा सकते हैं।

2714. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ियाद बिन इलाक़ा ने बयान किया कि मैंने

٢٧١٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا

سُفْيَانُ عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلاَقَةَ قَالَ: سَمِعْتُ جَرِيْرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: بَايَعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَاشْتَرَطَ عَلَيَّ: ((وَالنُّصْحِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ)). [راجع: ٥٧]

जरीर (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की तो आप (ﷺ) ने मुझसे हर मुसलमान के साथ ख़ैर–ख़्वाही करने की शर्त पर बेअ़त की थी। (राजेअ़ : 57)

٢٧١٥ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَايَعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى إِقَامِ الصَّلاَةِ وَإِيْتَاءِ الزَّكَاةِ وَالنُّصْحِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ)). [راجع: ٥٧]

2715. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने और उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मैंने नमाज़ क़ायम करने, ज़कात अदा करने और हर मुसलमान के साथ ख़ैर–ख़्वाही करने की शर्तों के साथ बेअ़त की थी। (राजेअ़ : 57)

दोनों अह़ादीष़ में बेअ़त की शर्तों में नमाज़ क़ायम करने वग़ैरह के बारे में ज़िक्र है, इसीलिये उनको यहाँ लाया गया है।

٢- بَابُ إِذَا بَاعَ نَخْلاً قَدْ أُبِّرَتْ

बाब 2 : पेवन्द लगाने के बाद अगर खजूर का पेड़ बेचे?

٢٧١٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ بَاعَ نَخْلاً قَدْ أُبِّرَتْ فَثَمَرَتُهَا لِلْبَائِعِ إِلاَّ أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ)). [راجع: ٢٢٠٣]

2716. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने कोई ऐसा खजूर का बाग़ जिसकी पेवन्दकारी हो चुकी थी तो उसका फल (उस साल के) बेचने वाले ही का होगा। वहाँ अगर ख़रीददार शर्त लगा दे। (तो फल समेत बेअ़ समझी जाएगी) (राजेअ़ : 2203)

मत़लब ये कि बेअ़ व शरा में ऐसी मुनासिब शर्तों का लगाना जाइज़ है। फिर मामला शर्तों के साथ ही तै समझा जाएगा। पेवन्दकारी के बाद अगर ख़रीदने वाला उसी साल के फल की शर्त लगा ले, तो फल उसका होगा, वरना मालिक ही का रहेगा।

٣- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْبُيُوعِ

बाब 3 : बेअ़ में शर्तें करने का बयान

٢٧١٧ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ: أَنَّ بَرِيْرَةَ جَاءَتْ عَائِشَةَ تَسْتَعِيْنُهَا فِي كِتَابَتِهَا، وَلَمْ تَكُنْ قَضَتْ مِنْ كِتَابَتِهَا شَيْئًا، قَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ ارْجِعِي إِلَى أَهْلِكِ فَإِنْ أَحَبُّوا

2717. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि बरीरह आइशा (रज़ि.) के यहाँ अपने मुकातबत के बारे में उनसे मदद लेने के लिये आईं, उन्होंने अभी तक उस मामले में (अपने मालिकों को) कुछ न दिया था। आइशा (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया कि अपने मालिकों के यहाँ जाकर (उनसे पूछो कि) अगर वो ये सूरत पसन्द करे कि

أَنْ أَقْضِيَ عَنْكِ كِتَابَتَكِ وَيَكُونُ وَلاَؤُكِ لِي فَعَلْتُ. فَذَكَرَتْ ذَلِكَ بَرِيْرَةُ إِلَى أَهْلِهَا فَأَبَوا وَقَالُوا: إِنْ شَاءَتْ أَنْ تَحْتَسِبَ عَلَيْكِ فَلْتَفْعَلْ وَيَكُونَ لَنَا وَلاَؤُكِ. فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لَهَا: ((ابْتَاعِي فَأَعْتِقِي، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). [راجع: ٤٥٦]

तुम्हारी मुकातबत की पूरी रक़म में अदा कर दूँ और तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम हो जाए तो मैं ऐसा कर सकती हूँ। बरीरा ने उसका तज़्किरा जब अपने मालिकों के सामने किया तो उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि वो (आयशा रज़ि.) अगर चाहें तो ये कारे ष़वाब तुम्हारे साथ कर सकती हैं लेकिन विलाअ तो हमारे ही साथ क़ायम होगी। आइशा (रज़ि.) ने उसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आपने उनसे फ़र्माया कि तुम उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दो, विलाअ तो बहरहाल उसी के साथ क़ायम होती है जो आज़ाद कर दे। (राजेअ : 456)

बेअ में ख़िलाफ़े शरअ शर्तें लगाना जाइज़ नहीं, अगर कोई ऐसी शर्तें लगाए भी तो वो शर्तें बातिल होंगी, बाब और हृदीष़ का यहाँ यही मक़्सद है।

٤- بَابُ إِذَا اشْتَرَطَ الْبَائِعُ ظَهْرَ الدَّابَّةِ إِلَى مَكَانٍ مُسَمًّى جَازَ

बाब 4 : अगर बेचने वाले ने किसी ख़ास़ मक़ाम तक सवारी की शर्त लगाई तो ये जाइज़ है

٢٧١٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ قَالَ: سَمِعْتُ عَامِرًا يَقُولُ: حَدَّثَنِي جَابِرٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ يَسِيْرُ عَلَى جَمَلٍ لَهُ قَدْ أَعْيَا، فَمَرَّ النَّبِيُّ ﷺ فَضَرَبَهُ، فَدَعَا لَهُ فَسَارَ بِسَيْرٍ لَيْسَ يَسِيْرُ مِثْلَهُ. ثُمَّ قَالَ: ((بِعْنِيْهِ بِأُوقِيَّةٍ))، قُلْتُ: لاَ، ثُمَّ قَالَ: ((بِعْنِيْهِ بِوُقِيَّةٍ)) فَبِعْتُهُ، فَاسْتَثْنَيْتُ حِمْلاَنَهُ إِلَى أَهْلِي. فَلَمَّا قَدِمْنَا أَتَيْتُهُ بِالْجَمَلِ وَنَقَدَنِي ثَمَنَهُ، ثُمَّ انْصَرَفْتُ، فَأَرْسَلَ عَلَى أَثَرِي قَالَ: ((مَا كُنْتُ لآخُذَ جَمَلَكَ، فَخُذْ جَمَلَكَ ذَلِكَ فَهُوَ مَالُكَ)). وَقَالَ شُعْبَةُ عَنْ مُغِيْرَةَ عَنْ عَامِرٍ عَنْ جَابِرٍ: ((أَفْقَرَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ ظَهْرَهُ إِلَى الْمَدِيْنَةِ)). وَقَالَ إِسْحَاقُ عَنْ جَرِيْرٍ عَنْ مُغِيْرَةَ: ((فَبِعْتُهُ عَلَى أَنَّ لِيْ فَقَارَ ظَهْرِهِ

2718. हमसे अबु नुऐम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, कहा कि मैंने आमिर से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि वो (एक ग़ज़्वा के मौक़े पर) अपने ऊँट पर सवार आ रहे थे, ऊँट थक गया था। हुज़ूर अकरम (ﷺ) का उधर से गुज़र हुआ, तो आप (ﷺ) ने ऊँट को एक ज़र्ब लगाई और उसके हक़ में दुआ की, चुनाँचे ऊँट इतनी तेज़ी से चलने लगा कि कभी इस तरह नहीं चला था फिर आपने फ़र्माया कि उसे एक औक़िया में मुझे बेच दो। मैंने इंकार किया मगर आप (ﷺ) के इसरार पर फिर मैंने आपके हाथ पर बेच दिया, लेकिन अपने घर तक उस पर सवारी को मुस्तष़्ना करा लिया। फिर जब हम (मदीना) पहुँच गए। तो मैंने ऊँट आपको पेश कर दिया और आप (ﷺ) ने उसकी क़ीमत भी अदा कर दी, लेकिन जब मैं वापस होने लगा तो मेरे पीछे एक स़ाहब को मुझे बुलाने के लिये भेजा, (मैं हाज़िर हुआ तो) आपने फ़र्माया कि मैं तुम्हारा ऊँट कोई ले थोड़ी ही रहा था, अपना ऊँट ले जाओ, ये तुम्हारा ही माल है। (और क़ीमत वापस नहीं ली) शुअबा ने मुग़ीरह के वास्ते से बयान किया, उनसे आमिर ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया रसूलल्लाह (ﷺ) ने मदीना तक ऊँट पर

حَتَّى أَبْلُغَ الْمَدِينَةَ)). وَقَالَ عَطَاءٌ وَغَيْرُهُ: ((لَكَ ظَهْرُهُ إِلَى الْمَدِينَةِ)). وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرٍ: ((شَرَطَ ظَهْرَهُ إِلَى الْمَدِينَةِ)). وَقَالَ زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ جَابِرٍ : ((وَلَكَ ظَهْرُهُ حَتَّى تَرْجِعَ)). وَقَالَ أَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ: ((أَفْقَرْنَاكَ ظَهْرَهُ إِلَى الْمَدِينَةِ)). وَقَالَ الأَعْمَشُ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ: ((تَبَلَّغْ عَلَيْهِ إِلَى أَهْلِكَ)). وَقَالَ عُبَيْدُ اللهِ وَابْنُ إِسْحَاقَ عَنْ وَهْبٍ عَنْ جَابِرٍ: ((اشْتَرَاهُ النَّبِيُّ ﷺ بِوَقِيَّةٍ)). وَتَابَعَهُ زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ جَابِرٍ. وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ وَغَيْرِهِ عَنْ جَابِرٍ: ((أَخَذْتُهُ بِأَرْبَعَةِ دَنَانِيرَ)) وَهَذَا يَكُونُ أُوقِيَّةً عَلَى حِسَابِ الدِّينَارِ بِعَشَرَةِ دَرَاهِمَ. وَلَمْ يُبَيِّنِ الثَّمَنَ مُغِيرَةُ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ جَابِرٍ، وَابْنُ الْمُنْكَدِرِ وَأَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ. وَقَالَ الأَعْمَشُ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ ((أُوقِيَّةُ ذَهَبٍ)). وَقَالَ أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ ((بِمِائَتَيْ دِرْهَمٍ)) وَقَالَ دَاوُدُ بْنُ قَيْسٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ مِقْسَمٍ عَنْ جَابِرٍ ((اشْتَرَاهُ بِطَرِيقِ تَبُوكَ، أَحْسِبُهُ قَالَ: بِأَرْبَعِ أَوَاقٍ)). وَقَالَ أَبُو نَضْرَةَ عَنْ جَابِرٍ: ((اشْتَرَاهُ بِعِشْرِينَ دِينَارًا)). وَقَوْلُ الشَّعْبِيِّ ((بِأُوقِيَّةٍ)). أَكْثَرُ الاِشْتِرَاطُ أَكْثَرُ وَأَصَحُّ عِنْدِي، قَالَهُ أَبُو عَبْدِ اللهِ. [راجع: ٤٤٣]

मुझे सवार होने की इजाज़त दी थी, इस्हाक़ ने जरीर से बयान किया और उनसे मुग़ीरह ने कि (जाबिर (रज़ि.) ने फ़र्माया था) पस मैंने ऊँट इस शर्त पर बेच दिया कि मदीना पहुँचने तक उस पर मैं सवार रहूँगा। अ़ता वग़ैरह ने बयान किया कि (रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया था) इस पर मदीना तक की सवारी तुम्हारी है। मुहम्मद बिन मुंकदिर ने जाबिर (रज़ि.) से बयान किया कि उन्होंने मदीना तक सवारी की शर्त लगाई थी। ज़ैद बिन असलम ने जाबिर (रज़ि.) के वास्ते से बयान किया कि (रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया था) मदीना तक उस पर तुम ही रहोगे। अबुज़्ज़ुबैर ने जाबिर (रज़ि.) से बयान किया कि मदीना तक की सवारी की आँहुज़ूर (ﷺ) ने इजाज़त दे दी थी। आ'मश ने सालिम से बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि (रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया) अपने घर तक तुम उसी पर सवार हो के जाओ। उ़बैदुल्लाह और इब्ने इस्हाक़ ने वहब से बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि ऊँट को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक औक़िया में ख़रीदा था। इस रिवायत की मुताबअ़त ज़ैद बिन असलम ने जाबिर (रज़ि.) से की है। इब्ने जुरैज ने अ़ता वग़ैरह से बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने (कि नबी करीम ﷺ ने फ़र्माया था) मैं तुम्हारा ये ऊँट चार दीनार में लेता हूँ, इस हिसाब से कि एक दीनार दस दिरहम का होता है, चार दीनार का एक औक़िया होगा। मुग़ीरह ने शअ़बी के वास्ते से और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से (उनकी रिवायत में और) इसी तरह इब्नुल मुंकदिर और अबुज़्ज़ुबैर ने जाबिर (रज़ि.) से अपनी रिवायत मे क़ीमत का ज़िक्र न हीं किया है। आ'मश ने सालिम से और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से अपनी रिवायत में एक औक़िया सोने की वज़ाहत की है। अबू इस्हाक़ ने सालिम से और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से अपनी रिवायत में दो सौ दिरहम बयान किये हैं और दाऊद बिन क़ैस ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन मिक़्सम ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि आँहुज़ूर (ﷺ) ने ऊँट तबूक़ के रास्ते में (ग़ज़वा से वापस होते हुए) ख़रीदा था। मेरा ख़्याल है कि उन्होंने कहा कि चार औक़िया में (ख़रीदा था) अबू नज़रह ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत में बयान किया कि बीस दीनार में ख़रीदा था। शअ़बी के बयान के मुताबिक़ एक औक़िया ही

ज़्यादा रिवायतों में है। इसी तरह शर्त लगाना भी ज़्यादा रिवायतों से षाबित है और मेरे नज़दीक सहीह भी यही है, ये अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी रह) ने फ़र्माया। (राजेअ : 443)

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की वुस्अते इल्म यहाँ से मा'लूम होती है कि एक एक हदीष के कितने कितने तरीक़ उनको महफ़ूज़ थे। हासिल उन सब रिवायात के ज़िक्र करने से ये है कि अकषर रिवायतों में सवारी का ज़िक्र है, जो बाब का तर्जुमा से मा'लूम हुआ कि बेअ में ऐसी शर्त लगाना दुरुस्त है। इमाम बुख़ारी (रह.) के बाद हमारे शैख़ हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) का मर्तबा है। शायद कोई किताब हदीष की ऐसी हो, जो उनकी नजर से न गुज़री हो और सहीह बुख़ारी तो अल्हम्दु शरीफ़ की तरह उनको हिफ़्ज़ याद थी। या अल्लाह! हमको आलमे बरज़ख़ में इमाम बुख़ारी (रह.) और इब्ने तैमिया और हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) की ज़ियारत नसीब कर और हक़ीर मुहम्मद दाऊद राज़ को भी उन बुज़ुर्गों के खादिमों में शुमार फ़र्माना, आमीन।

बाब 5 : मुआमलात में शर्तें लगाने का बयान

٥- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْمُعَامِلَةِ

2719. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार रिज़्वानुल्लाह अलैहिम ने नबी करीम (ﷺ) के सामने (मुवाख़ात के बाद) ये पेशकश की कि हमारे खजूर के बाग़ात आप हममें और हमारे भाईयों (मुहाजिरीन) में बांट दीजिए, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। इस पर अंसार ने मुहाजिरीन से कहा कि आप लोग हमारे बाग़ों के काम कर दिया करें और हमारे साथ फल में शरीक हो जाएँ, मुहाजिरीन ने कहा कि हमने सुन लिया और हम ऐसा ही करेंगे। (राजेअ : 2325)

٢٧١٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَتِ الأَنْصَارُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: اقْسِمْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ إِخْوَانِنَا النَّخِيْلَ. قَالَ: ((لاَ)). فَقَالُوا: تَكْفُونَنَا الْمَؤُونَةَ وَنُشْرِكُكُمْ فِي الثَّمَرَةِ، قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا)).

[راجع: ٢٣٢٥]

2720. हमसे मूसा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ैबर की ज़मीन यहूदियों को इस शर्त पर दी थी कि उसमें काम करें और उसे बोएँ तो आधी पैदावार उन्हें दी जाया करेगी। (राजेअ : 2285)

٢٧٢٠- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَعْطَى رَسُولُ اللهِ ﷺ خَيْبَرَ الْيَهُودَ أَنْ يَعْمَلُوهَا وَيَزْرَعُوهَا، وَلَهُمْ شَطْرُ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا)).

[راجع: ٢٢٨٥]

इन दो अहादीष से षाबित होता है कि मुआमलात में मुनासिब और जाइज़ शर्तें लगाना और फ़रीक़ेन का उन पर मामला तै कर लेना दुरुस्त है।

बाब 6 : निकाह के वक़्त मेहर की शर्तें

٦- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْمَهْرِ عِنْدَ عُقْدَةِ النِّكَاحِ

और हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हुक़ूक़ की अक़्तइयत शर्तों

وَقَالَ عُمَرُ: إِنَّ مَقَاطِعَ الْحُقُوقِ عِنْدَ

के पूरा करने ही से होती है और तुम्हें शर्त के मुताबिक़ ही मिलेगा। मिस्वर ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मैंने सुना कि आपने अपने एक दामाद का ज़िक्र फ़र्माया और (हुक़ूक़े) दामादी (की अदायगी में) उनकी बड़ी ता'रीफ़ की और फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे जब भी कोई बात कही तो सच कही और वा'दा किया तो उसमें पूरे निकले।

الشُّرُوطِ، وَلَكَ مَا شَرَطْتَ. وَقَالَ الْمِسْوَرُ ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ذَكَرَ صِهْرًا لَهُ فَأَثْنَى عَلَيْهِ فِي مُصَاهَرَتِهِ فَأَحْسَنَ قَالَ: حَدَّثَنِي فَصَدَقَنِي، وَوَعَدَنِي فَوَفَى لِي)).

2721. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन अबी हबीब ने बयान किया, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, वो शर्तें जिनके ज़रिये तुमने औरतों की शर्मगाहों को हलाल किया है, पूरी की जाने की सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। (दीगर मक़ाम : 5151)

٢٧٢١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي يَزِيْدُ بْنُ أَبِي حَبِيْبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَحَقُّ الشُّرُوطِ أَنْ تُوفُوا بِهَا مَا اسْتَحْلَلْتُمْ بِهِ الْفُرُوجَ)).

[طرفه في: ٥١٥١].

जिनमें ईजाब व क़ुबूल और महर की शर्तें बड़ी अहमियत रखती हैं। कोई शख़्स महर बँधवाते वक़्त दिल में अदा न करने का इरादा रखता हो तो इन्दल्लाह उसका निकाह़ हलाल न होगा। क़स्तलानी ने कहा मुराद वो शर्तें हैं जो अ़क़्दे निकाह़ के मुख़ालिफ़ नहीं हैं, जैसे मुबाशरत या नान नफ़्क़ा के बारे में शर्तें, लेकिन इस क़िस्म की शर्तें कि दूसरा निकाह़ न करेगा या लौण्डी न रखेगा, या सफ़र में न ले जाएगा, पूरी करना ज़रूरी नहीं बल्कि ये शर्तें लग़्व होंगी। इमाम अह़मद और अहले ह़दीष़ का ये क़ौल है कि हर क़िस्म की शर्तें पूरी करनी पड़ेंगी क्योंकि ह़दीष़ मुत्लक़ है। मगर वो शर्तें जो किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ हों।

बाब 7 : मुज़ारअ़त की शर्तें जो जाइज़ हैं

٧- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْمَزَارَعَةِ

2722. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़यैना ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़न्ज़ला ज़रक़ी से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि हम अकष़र अंसार का काश्तकारी किया करते थे और हम ज़मीन बटाई पर देते थे। अकष़र ऐसा होता कि किसी खेत के एक टुकड़े में पैदावार होती और दूसरे में न होती, इसलिये हमें उससे मना कर दिया गया। लेकिन चाँदी (रूपये वग़ैरह) के लगान से मना नहीं किया गया। (राजेअ़ : 2286)

٢٧٢٢- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ حَنْظَلَةَ الزُّرَقِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَافِعَ بْنَ خَدِيْجٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كُنَّا أَكْثَرَ الأَنْصَارِ حَقْلاً، فَكُنَّا نُكْرِي الأَرْضَ، فَرُبَّمَا أَخْرَجَتْ هَذِهِ وَلَمْ تُخْرِجْ ذِهِ. فَنُهِيْنَا عَنْ ذَلِكَ، وَلَمْ نُنْهَ عَنِ الْوَرِقِ)). [راجع: ٢٢٨٦]

या'नी वो मुज़ारअ़त (खेती) मना है जिसमें ये क़रार हो कि इस क़ित्अ़े की पैदावार हम लेंगे, इस क़ित्अ़े की पैदावार तुम लेना,

क्योंकि उसमें धोखा है। शायद उस क़िृत्अे में कुछ पैदा न हो।

बाब 8 : जो शर्तें निकाह में जाइज़ नहीं हैं उनका बयान

٨- بَابُ مَا لاَ يَجُوزُ مِنَ الشُّرُوطِ فِي النِّكَاحِ

2723. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे सईद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई शहरी किसी देहाती का माले तिजारत न बेचे। कोई शख़्स नजिश न करे और न अपने भाई की लगाई हुई क़ीमत पर भाव बढ़ाए। न कोई शख़्स अपने किसी भाई के पैग़ामे निकाह की मौजूदगी में अपना पैग़ामे निकाह भेजे और न कोई औरत (किसी मर्द से) अपनी बहन की तलाक़ का मुतालबा करे (जो उस मर्द के निकाह में हो) ताकि इस तरह उसका हिस्सा भी ख़ुद ले ले। (राजेअ़ : 2140)

٢٧٢٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَبِيْعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ، وَلاَ تَنَاجَشُوا، وَلاَ يَزِيْدَنَّ عَلَى بَيْعِ أَخِيْهِ، وَلاَ يَخْطُبَنَّ عَلَى خِطْبَتِهِ. وَلاَ تَسْأَلِ الْمَرْأَةُ طَلاَقَ أُخْتِهَا لِتَسْتَكْفِيءَ إِنَاءَهَا)).

[راجع: ٢١٤٠]

कोई सौतन अपनी बहन को तलाक़ दिलवाने की शर्त लगाए तो ये शर्त दुरुस्त न होगी, बाब और हदीष़ में इसी से मुताबक़त है।

बाब 9 : जो शर्तें हुदूदुल्लाह में जाइज़ नहीं हैं, उनका बयान

٩- بَابُ الشُّرُوطِ الَّتِي لاَ تَحِلُّ فِي الْحُدُودِ

2724,25. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती स़हाबी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आपसे अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूँ कि आप मेरा फ़ैसला किताबुल्लाह से कर दें। दूसरे फ़रीक़ ने जो उससे ज़्यादा समझदार था, कहा कि जी हाँ! किताबुल्लाह से ही हमारा फ़ैसला फ़र्माइये, और मुझे (अपना मुक़द्दमा पेश करने की) इजाज़त दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि पेश कर। उसने बयान करना शुरू किया कि मेरा बेटा इन स़ाहब के पास मज़दूर था। फिर उसने इनकी बीवी से ज़िना कर लिया, जब मुझे मा'लूम हुआ कि (ज़िना की सज़ा में) मेरा लड़का रजम कर दिया जाएगा तो मैंने उसके बदले में सौ बकरियाँ और एक लौण्डी दी, फिर इल्म वालों से उसके बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि मेरे लड़के को (ज़िना की सज़ा में क्योंकि वो ग़ैर शादी शुदा था) सौ

٢٧٢٤، ٢٧٢٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُمَا قَالاَ: ((إِنَّ رَجُلاً مِنَ الأَعْرَابِ أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنْشُدُكَ اللهَ إِلاَّ قَضَيْتَ لِي بِكِتَابِ اللهِ. فَقَالَ الْخَصْمُ الآخَرُ - وَهُوَ أَفْقَهُ مِنْهُ -: نَعَمْ فَاقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ وَائْذَنْ لِي فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قُلْ)). قَالَ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيْفًا عَلَى هَذَا فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ، وَإِنِّي أُخْبِرْتُ أَنَّ عَلَى ابْنِي الرَّجْمَ فَافْتَدَيْتُ مِنْهُ بِمِائَةِ شَاةٍ وَوَلِيْدَةٍ،

فَسَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَأَخْبَرُونِي أَنَّمَا عَلَى ابْنِي جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، وَأَنَّ عَلَى امْرَأَةِ هَذَا الرَّجْمَ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ: الْوَلِيْدَةُ وَالْغَنَمُ رَدٌّ عَلَيْكَ، وَعَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ. اغْدُ يَا أُنَيْسُ إِلَى امْرَأَةِ هَذَا فَإِنِ اعْتَرَفَتْ فَارْجُمْهَا)). قَالَ: فَغَدَا عَلَيْهَا فَاعْتَرَفَتْ، فَأَمَرَ بِهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرُجِمَتْ)).

[راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

कोड़े लगाए जाएँगे और एक साल के लिये शहर-बदर कर दिया जाएगा। अल्बत्ता उसकी बीवी रजम कर दी जाएगी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं तुम्हारा फ़ैसला किताबुल्लाह ही से करूँगा। बांदी और बकरियाँ तुम्हें वापस मिलेंगी और तुम्हारे बेटे को सौ कोड़े लगाए जाएँगे और एक साल के लिये जलावतन किया जाएगा। अच्छा, उनैस! तुम उस औरत के यहाँ जाओ, अगर वो भी (ज़िना का) इक़रार कर ले, तो उसे रजम कर दो, (क्योंकि वो शादीशुदा थी) बयान किया कि उनैस (रज़ि.) उस औरत के यहाँ गए और उसने इक़रार कर लिया, इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से वो रजम की गई। (राजेअ : 2314, 2315)

तश्रीह : सौ बकरियाँ और एक लौण्डी उसकी तरफ़ से फ़िदया देकर उसको छुड़ा लिया, बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है क्योंकि उसने ज़िना की हृद के बदले ये शर्त की सौ बकरियाँ और एक बांदी उसकी तरफ़ से दूँगा। आँहज़रत (ﷺ) ने उसको बातिल क़रार दिया जो हुदूदुल्लाह के हुक़ूक़ में से हैं। जो बन्दों की आपसी सुलह से टाली नहीं जा सकती। जब भी कोई ऐसा जुर्म षाबित होगा हृद ज़रूर जारी की जाएगी। अल्बत्ता जो सज़ाएँ इंसानी हुक़ूक़ की वजह से दी जाती हैं उनमे बाहमी सुलह की सूरतें निकाली जा सकती हैं। ज़ानिया औरत के लिये चार गवाहों का होना ज़रूरी है जो चश्मदीद बयान दें, या औरत व मर्द ख़ुद इक़रार कर लें ये भी याद रहे कि हुदूद का क़ायम करना इस्लामी शरई स्टेट का काम है। जहाँ क़वानीने इस्लामी का इजराअ मुसल्लम हो। अगर कोई कोई स्टेट इस्लामी होने के दावे के साथ हुदूदुल्लाह को क़ायम नहीं करती तो वो इन्दल्लाह सख़्त मुजरिम है। ज़ानी मर्द ग़ैर शादीशुदा की हुदूद है जो यहाँ मज़्कूर हुई, रजम के लिये आख़िर में ख़लीफ़ा वक़्त का हुक्म ज़रूरी है।

١٠- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنْ شُرُوطِ الْمُكَاتَبِ إِذَا رَضِيَ بِالْبَيْعِ عَلَى أَنْ يُعْتَقَ

बाब 10 : अगर मुकातब अपनी बेअ पर इसलिये राज़ी हो जाए कि उसे आज़ाद कर दिया जाएगा तो उसके साथ जो शराइत जाइज़ हो सकती हैं, उनका बयान

٢٧٢٦- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ الْمَكِّيُّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَتْ عَلَيَّ بَرِيْرَةُ وَهِيَ مُكَاتَبَةٌ فَقَالَتْ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ اشْتَرِينِي، فَإِنَّ أَهْلِي يَبِيعُونِي فَأَعْتِقِينِي. قَالَتْ: نَعَمْ. قَالَتْ: إِنَّ أَهْلِي لاَ يَبِيعُونِي حَتَّى يَشْتَرِطُوا

2726. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ऐमन मक्की ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया कि मैं आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने बतलाया कि बरीरा (रज़ि.) मेरे यहाँ आईं, उन्होंने किताबत का मामला कर लिया था। मुझसे कहने लगीं कि ऐ उम्मुल मोमिनीन! मुझे आप ख़रीद लें, क्योंकि मेरे मालिक मुझे बेचने पर आमादा हैं, फिर आप मुझे आज़ाद कर देना। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हाँ (मैं ऐसा कर लूँगी) लेकिन बरीरह (रज़ि.) ने फिर कहा कि मेरे मालिक मुझे उस वक़्त बेचेंगे

وَلاَئِي. قَالَتْ : لاَ حَاجَةَ لِي فِيْكَ. فَسَمِعَ ذَلِكَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ - أَوْ بَلَغَهُ - فَقَالَ: ((مَا شَأْنُ بَرِيْرَةَ؟ فَقَالَ: اشْتَرِيْهَا فَأَعْتِقِيْهَا وَلْيَشْتَرِطُوا مَا شَاؤُوا)). قَالَتْ: فَاشْتَرَيْتُهَا فَأَعْتَقْتُهَا وَاشْتَرَطَ أَهْلُهَا وَلاَءَهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ، وَإِنِ اشْتَرَطُوا مِائَةَ شَرْطٍ)). [راجع: ٤٥٦]

जब वो विलाअ की शर्त अपने लिये लगा लें। इस पर आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि फिर मुझे ज़रूरत नहीं है। जब नबी करीम (ﷺ) ने सुना, या आपको मा'लूम हुआ (रावी को शुब्हा था) तो आपने फ़र्माया कि बरीरा (रज़ि.) का क्या मामला है? तुम उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दो, वो लोग जो चाहें शर्त लगा लें। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने बरीरा (रज़ि.) को ख़रीदकर आज़ाद कर दिया और उसके मालिक ने विलाअ की शर्त अपने लिये महफ़ूज़ रखी। आँहज़रत (ﷺ) ने यही फ़र्माया कि विलाअ उसी के साथ षाबित होती है जो आज़ाद करे (दूसरे) जो चाहें शर्त लगाते रहें। (राजेअ : 456)

मा'लूम हुआ कि ग़लत शर्तों के साथ जो मामला हो वो शर्तें हर्गिज़ क़ाबिले कुबूल न होंगी और मामला मुनअक़िद हो जाएगा।

١١- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الطَّلاَقِ

बाब 11 : तलाक़ की शर्तें (जो मना हैं)

وَقَالَ ابْنُ الْمُسَيِّبِ وَالْحَسَنُ وَعَطَاءٌ: إِنْ بَدَأَ بِالطَّلاَقِ أَوْ أَخَّرَ فَهُوَ أَحَقُّ بِشَرْطِهِ.

इब्ने मुसय्यिब, हसन और अता ने कहा ख़्वाह शर्त को बाद में बयान करे या पहले, हर हाल में शर्त के मुवाफ़िक़ अमल होगा।

या'नी तलाक़ को मुक़द्दम करे शर्त उसके बाद कहे। मषलन कहे **अन्ति तालिकुन इन दख़ल्तिद्दार** शर्त को मुक़द्दम करके तलाक़ बाद मे रखे मषलन कहे **इन दख़ल्तिद्दार फ अन्ति तालिकुन** हर हाल में तलाक़ जब ही पड़ेगी जब शर्त पाई जाए, या'नी वो औरत घर में जाए। इन तीनों अषरों को अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने वस्ल किया है। (वहीदी)

٢٧٢٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنِ التَّلَقِّي، وَأَنْ يَبْتَاعَ الْمُهَاجِرُ لِلأَعْرَابِيِّ. وَأَنْ تَشْتَرِطَ الْمَرْأَةُ طَلاَقَ أُخْتِهَا، وَأَنْ يَسْتَامَ الرَّجُلُ عَلَى سَوْمِ أَخِيْهِ. وَنَهَى عَنِ النَّجْشِ، وَعَنِ التَّصْرِيَةِ)). تَابَعَهُ مُعَاذٌ وَعَبْدُ الصَّمَدِ عَنْ شُعْبَةَ. وَقَالَ غُنْدَرٌ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ: ((نُهِيَ)). وَقَالَ آدَمُ: ((نُهِيْنَا)). وَقَالَ النَّضْرُ وَحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ ((نَهَى)). [راجع: ٢١٤٠]

2727. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे अदी बिन षाबित ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (तिजारती क़ाफ़िलों की) पेशवाई से मना किया था और उससे भी कि कोई शहरी किसी देहाती का माले तिजारत बेचे और उससे भी कि कोई औरत अपनी (दीनी नस्बी) बहन के तलाक़ की शर्त लगाए और उससे भी कि कोई अपने किसी भाई के भाव पर भाव लगाए, इसी तरह आपने नजिश और तस्रिया से भी मना फ़र्माया। मुहम्मद बिन अरअरह के साथ इस हदीष को मुआज़ बिन मुआज़ और अब्दुस्समद बिन अब्दुल वारिष ने भी शुअबा से रिवायत किया है और गुन्दर और अब्दुर्रहमान बिन महदी ने यूँ कहा कि हमें मना किया गया था। नज़र और हज्जाज बिन मिन्हाल ने यूँ कहा कि मना किया था (रसूलुल्लाह ﷺ ने)

(राजेअ : 2140)

तश्रीह : बाब का तर्जुमा ह़दीष़ के लफ़्ज़ **व इन तश्तरितिल्मअ़तु त़लाक़ उख़्तिहा** से निकला क्योंकि अगर वो सौकन की त़लाक़ की शर्त़ करके और शौहर शर्त़ के मुवाफ़िक़ त़लाक़ दे दे तो त़लाक़ पड़ जाएगी वरना शर्त़ लगाने की मुमानअ़त से कोई फ़ायदा नहीं। नजिश धोखा देने की निय्यत से नरख़ बढ़ाना ताकि दूसरा शख़्स़ जल्द उसको ख़रीद ले, या किसी बिकती हुई चीज़ की बुराई बयान करना ताकि ख़रीददार उसको छोड़कर दूसरी त़रफ़ चला जाए और तस्रिया ख़रीददार को धोखा देने के लिये जानवर का दूध उसके थनों में रोककर रखना।

मुआ़ज़ बिन मुआ़ज़ की रिवायत और अ़ब्दुस्समद और गुन्दर की रिवायतों को इमाम मुस्लिम ने वस्ल किया और अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी की रिवायत ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब को मौसूलन नहीं मिली और ह़ज्जाज की रिवायत को इमाम बैहक़ी ने वस्ल किया और आदम की रिवायत को उन्होंने अपने नुस्ख़े में वस्ल किया और नज़्र की रिवायत को इस्ह़ाक़ बिन राहवै ने वस्ल किया। (अल्ह़म्दुलिल्लाह कि पारा 10 पूरा हुआ)

अल्ह़म्दुलिल्लाह! आज बतारीख़ 10 अप्रैल 1970 यौमे जुम्आ बुख़ारी शरीफ़ पारा 10 के मतने मुबारक की क़िरअत से फ़राग़त ह़ासिल हुई, जबकि मस्जिदे नबवी में गुम्बदे ख़ज़रा के दामन में आँह़ज़रत (ﷺ) के मवाजा शरीफ़ के सामने बैठा हुआ हूँ और दुआ कर रहा हूँ कि परवरदिगार इस अ़ज़ीम ख़िदमते-ह़दीष़ में मुझको ख़ुलूस़ और कामयाबी अ़त़ा कर जबकि तेरे प्यारे ह़बीब के इर्शादाते त़य्यिबात की नश्रो इशाअ़त ज़िन्दगी का मक़्स़दे वाह़िद क़रार दे रहा हूँ। मुझको इसके तर्जुमे और तश्रीह़ात में लग़्ज़िशों से बचाइयो, इस ख़िदमत को अह़सन त़रीक़ पर अंजाम देने के लिये मेरे दिल व दिमाग़ में ईमानी व रूह़ानी रोशनी अ़त़ा कर क़दम क़दम पर मेरी रहनुमाई फ़र्माइयो। **मेरा ईमान है कि ये मुबारक किताब तेरे ह़बीब (ﷺ) के इर्शादाते-त़य्यिबात का एक बेशबहा ज़ख़ीरा है। जिसकी नश्रो इशाअ़त आज के दौर में जिहादे अकबर है।** ऐ अल्लाह! मेरे जो-जो भाई जहाँ-जहाँ भी इस पाकीज़ा ख़िदमत में मेरे साथ मुम्किन इश्तिराक व मुसाअ़दत कर रहे हैं, उन सबको जज़ा-ए-ख़ैर अ़त़ा फ़र्मा और क़यामत के दिन अपने ह़बीब (ﷺ) की शफ़ाअ़त से उनको सरफ़राज़ कर और सबको जन्नत नसीब फ़र्माना, आमीन या रब्बल आ़लमीन।

(2 सफ़र 1390 हिजरी यौमुल जुम्आ। मदीना त़य्यिबा)

अल्ह़म्दुलिल्लाह कि तर्जुमा और तशरीह़ात की तक्मील से आज फ़राग़त ह़ासिल हुई, इस सिलसिले में जो भी मेह़नत की गई है और लफ़्ज़-लफ़्ज़ को जिस गहरी नज़र से देखा गया है वो अल्लाह ही बेहतर जानता है। फिर भी ग़ल्तियों का इम्कान है, इसलिये अहले इल्म से बस़द्दे अदब दरख़्वास्त है कि जहाँ भी कोई ग़लती नज़र आए मुत्तलअ़ फ़र्माकर मेरी दुआएँ ह़ासिल करें। **अल्इन्सानु मुरक्कबुन मिनल्ख़त़इ वन्निस्यान** मशहूर मक़ूला है। साल भर से ज़ाइद अ़रस़ा इस पारे के तर्जुमा व तशरीह़ात पर स़र्फ़ किया गया है और मतन व तर्जुमा को कितनी बार नज़रों से गुज़ारा गया है, उसकी गिनती ख़ुद मुझको भी याद नहीं । ये मेह़नते शाक़्क़ा मह़ज़ इसलिये बर्दाश्त की गई कि ये जनाब रसूले करीम अह़मद मुज्तबा मुह़म्मदे मुस्तफ़ा (ﷺ) के पाकीज़ा फ़रामीने आलिया का बेशबहा ज़ख़ीरा है। इसमें ग़ौर व फ़िक्र वसीला-ए-नजात दारैन है और इसकी ख़िदमत व इशाअ़त मौजिबे स़द अज्रे अ़ज़ीम है।

या अल्लाह! ये ह़क़ीर ख़िदमत मह़ज़ तेरी और तेरे ह़बीब (ﷺ) की रज़ा ह़ासिल करने के लिये अंजाम दी जा रही है। इसमें ख़ुलूस़ और कामयाबी बख़्शना तेरा काम है। जिस त़रह़ ये दसवाँ पारा तूने पूरा कराया है, इससे भी ज़्यादा बेहतर दूसरे बीस पारों को भी पूरा कराइयो और मेरे दुनिया से जाने के बाद भी ख़िदमते ह़दीष़ का ये मुबारक सिलसिला जारी रखने की मेरे अ़ज़ीज़ों को तौफ़ीक़ दीजियो कि सब कुछ तेरे ही क़ब्ज़-ए-क़ुदरत में है तू **फ़अ़आलुल लिमा यूरीद** है। बेशक हर चीज़ पर तू क़ादिर है।

जो हुआ तेरे ही करम से हुआ **जो होगा तेरे ही करम से होगा।**

ख़ादिम ह़दीष़े नबवी मुह़म्मद दाऊद राज़ अस्सलफ़ी अद् देहलवी

रहपुवा, जिला गुड़गांव (हरियाणा भारत) यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 1391 हिजरी

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ग्यारहवां पारा

2728. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे यअ़ला बिन मुस्लिम और अ़म्र बिन दीनार ने ख़बर दी सईद बिन जुबैर से और उनमें एक-दूसरे से ज़्यादा बयान करता है, इब्ने जुरैज ने कहा मुझसे ये ह़दीष़ यअ़ला और अ़म्र के सिवा औरों ने भी बयान की, वो सईद बिन जुबैर से रिवायत करते हैं कि हम इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर थे, उन्होंने कहा कि मुझसे उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ख़िज़्र से जो जाकर मिले थे, मूसा (अ़लैहिस्सलाम) थे। फिर आख़िर तक ह़दीष़ बयान की कि ख़िज़्र (अ.) ने मूसा (अ.) से कहा क्या मैं आपको पहले ही नहीं बता चुका था कि आप मेरे साथ स़ब्र नहीं कर सकेंगे (मूसा की त़रफ़ से) पहला सवाल तो भूलकर हुआ था, बीच का शर्त के त़ौर पर और तीसरा जान–बूझकर हुआ था। आपने ख़िज़्र से कहा था कि मैं जिसको भूल गया आप उसमे मुझसे मुवाख़िज़ा न कीजिये और न मेरा काम मुश्किल बनाओ, दोनों को एक लड़का मिला जिसे ख़िज़्र (अ.) ने मार डाला फिर वो आगे बढ़े तो उन्हें एक दीवार मिली जो गिरने वाली थी लेकिन ख़िज़्र ने उसे दुरुस्त कर दिया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, वरआअहुम मलिक के बजाय अमामहुम मलिक पढ़ा है। (राजेअ़ : 74)

٢٧٢٨- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُ قَالَ: أَخْبَرَنِي يَعْلَى بْنُ مُسْلِمٍ وَعَمْرُو بْنُ دِيْنَارٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ - يَزِيْدُ أَحَدُهُمَا عَلَى صَاحِبِهِ، وَغَيْرُهُمَا قَدْ سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُهُ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ - قَالَ: إِنَّا لَعِنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: حَدَّثَنِي أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مُوسَى رَسُولُ اللهِ. فَذَكَرَ الْحَدِيْثَ قَالَ: ((أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا﴾: كَانَتِ الأُوْلَى نِسْيَانًا، وَالْوُسْطَى شَرْطًا، وَالثَّالِثَةُ عَمْدًا. ﴿قَالَ لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيْتُ وَلاَ تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا﴾، ﴿لَقِيَا غُلاَمًا فَقَتَلَهُ﴾، ﴿فَانْطَلَقَا. فَوَجَدَا جِدَارًا يُرِيْدُ أَنْ يَنْقَضَّ فَأَقَامَهُ﴾ قَرَأَهَا ابْنُ عَبَّاسٍ: ((أَمَامَهُمْ مَلِكٌ)). [راجع: ٧٤]

कि उनके आगे एक बादशाह था। ह़ज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) और ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के दरम्यान ज़ुबानी शर्तें हुईं, इसी से मक़्सदे बाब ष़ाबित हुआ। (इमाम बुख़ारी और कष़ीर उ़लमा के नज़दीक ह़ज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम वफ़ात पा चुके हैं। **वल्लाहु आलमु बिस्सवाबि व इलैहिल्मर्जउ़ वल्मआब.**

बाब 13 : विलाअ में शर्त लगाना

١٣- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْوَلاَءِ

विलाअ एक हक़ है जो आज़ाद करने वाले को अपने आज़ाद किये हुए गुलाम या लौण्डी पर हासिल होता है लेकिन अगर वो मर जाए तो आज़ाद करने वाला भी उसका एक वारिष़ होता है, अरब लोग इस हक़ को बेच डालते और हिबा करते, आँहज़रत (ﷺ) ने इससे मना किया है।

٢٧٢٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((جَاءَتْنِي بَرِيرَةُ فَقَالَتْ: كَاتَبْتُ أَهْلِي عَلَى تِسْعِ أَوَاقٍ، فِي كُلِّ عَامٍ أُوقِيَّةٌ، فَأَعِينِينِي. فَقَالَتْ: إِنْ أَحَبُّوا أَنْ أَعُدَّهَا لَهُمْ وَيَكُونَ وَلاَؤُكِ لِي فَعَلْتُ. فَذَهَبَتْ بَرِيرَةُ إِلَى أَهْلِهَا فَقَالَتْ لَهُمْ، فَأَبَوْا عَلَيْهَا، فَجَاءَتْ مِنْ عِنْدِهِمْ - وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ جَالِسٌ - فَقَالَتْ: إِنِّي قَدْ عَرَضْتُ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ، فَأَبَوْا إِلاَّ أَنْ يَكُونَ الْوَلاَءُ لَهُمْ، فَسَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ، فَأَخْبَرَتْ عَائِشَةُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((خُذِيهَا وَاشْتَرِطِي لَهُمُ الْوَلاَءَ، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). فَفَعَلَتْ عَائِشَةُ. ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي النَّاسِ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((مَا بَالُ رِجَالٍ يَشْتَرِطُونَ شُرُوطًا لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ مَا كَانَ مِنْ شَرْطٍ لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فَهُوَ بَاطِلٌ، وَإِنْ كَانَ مِائَةَ شَرْطٍ. قَضَاءُ اللَّهِ أَحَقُّ، وَشَرْطُ اللَّهِ أَوْثَقُ، وَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)).

[راجع: ٤٥٦]

2729. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने हिशाम बिन उर्वा से, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे पास बरीरा (रज़ि.) आईं और कहने लगीं कि मैंने अपने मालिक से नौ औक़िया चाँदी पर मुकातबत कर ली है, हर साल एक औक़िया देना होगा। आप भी मेरी मदद कीजिये। आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अगर तुम्हारे मालिक चाहें तो मैं एक दम उन्हें इतनी क़ीमत अदा कर सकती हूँ, लेकिन तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम होगी। बरीरा (रज़ि.) अपने मालिकों के यहाँ गईं और उनसे इस सूरत का ज़िक्र किया लेकिन उन्होंने विलाअ के लिये इंकार किया। जब वो उनके यहाँ से वापस हुईं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) भी तशरीफ़ फ़र्मा थे। उन्होंने कहा कि मैंने अपने मालिकों के सामने ये सूरत रखी थी, मगर वो कहते थे कि विलाअ उन्हीं के साथ क़ायम रहेगी। नबी करीम (ﷺ) ने भी ये बात सुनी और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आपको सूरतेहाल से आगाह किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तू इन्हें ख़रीद ले और उन्हें विलाअ की शर्त लगाने दे। विलाअ तो उसी के साथ क़ायम हो सकती है जो आज़ाद करे। चुनाँचे आइशा (रज़ि.) ने ऐसा ही किया फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) सहाबा में गए और अल्लाह तआला की हम्दो–षना के बाद फ़र्माया कि कुछ लोगों को क्या हो गया है कि वो ऐसी शर्तें लगते हैं जिनका कोई पता किताबुल्लाह में नहीं है, ऐसी शर्तें जिसका पता किताबुल्लाह में नहीं है बातिल है ख़वाह सौ शर्तें क्यूँ न लगा ली जाएँ, अल्लाह का फ़ैसला ही हक़ है और अल्लाह की शर्तें ही पायदार हैं और विलाअ तो उसी को मिलेगी जो आज़ाद करेगा।
(राजेअ : 456)

मक़्सदे बाब ये कि विलाअ में ऐसी ग़लत शर्तें लगाना मना है जिसका कोई षुबूत किताबुल्लाह से न हो। हाँ जाइज़ शर्तें जो फ़रीक़ेन तै कर लें वो तस्लीम होंगी। इस रिवायत में नौ औक़िया का ज़िक्र है। दूसरी रिवायत में पाँच का जिसकी तत्बीक़ यूँ दी गई है कि शायद नौ औक़िया पर मामला हो और पाँच बाक़ी रह गई हों जिनके लिये बरीरा (रज़ि.) को हज़रत आइशा (रज़ि.) के

पास आना पड़ा या मुम्किन है कि नौ के लिये रावी का वहम हो और पाँच ही सहीह हो। रिवायात से पहले ख़्याल को तरजीह मा'लूम होती है जैसा कि फ़त्हुल बारी में तफ़्सील के साथ मज़्कूर है।

बाब 14 : मुज़ारअत में मालिक ने काश्तकार से ये शर्त लगाई कि जब मैं चाहूँगा, तुझे बेदख़ल कर सकूँगा

١٤- بَابُ إِذَا اشْتَرَطَ فِي الْمُزَارَعَةِ ((إِذَا شِئْتُ أَخْرَجْتُكَ))

या'नी मुज़ारअत में कोई मुद्दत मुअय्यन न करे बल्कि ज़मीन का मालिक यूँ शर्त लगाए कि मैं जब चाहूँगा तुझे बेदख़ल कर दूँगा, ये शर्त भी जाइज़ है बशर्ते कि दोनों फ़रीक़ ख़ुशी से मंज़ूर करें। मक़्सदे बाब ये है कि तमद्दुनी व मुआशरती उमूर में बाहमी तौर पर जिन शर्तों के साथ मुआमलात होते हैं, वो शर्तें जाइज़ हुदूद में हों तो ज़रूर क़ाबिले तस्लीम होंगी जैसा कि यहाँ मुज़ारअत की एक शर्त मज़्कूर है।

2730. हमसे अबू अहमद मुरार बिन हम्विया ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन यह्या अबू ग़स्सान किनानी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी नाफ़ेअ से और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि जब उनके हाथ पांव ख़ैबर वालों ने तोड़ डाले तो उमर (रज़ि.) ख़ुत्बा देने के लिये खड़े हुए, आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब ख़ैबर के यहूदियों से उनकी जायदाद का मामला किया था तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जब तक अल्लाह तआला तुम्हें क़ायम रखे हम भी क़ायम रखेंगे और अब्दुल्लाह बिन अम्र वहाँ अपने अम्वाल के सिलसिले में गए तो रात में उनके साथ मारपीट का मामला किया गया जिससे उनके पांव टूट गए। ख़ैबर में उनके सिवा और कोई हमारा दुश्मन नहीं, वही हमारे दुश्मन हैं और उन्हीं पर हमें शुब्हा है इसलिये मैं उन्हें जलावतन कर देना ही मुनासिब जानता हूँ। जब उमर (रज़ि.) ने उसका पुख़्ता इरादा कर लिया तो बनू अबी हक़ीक़ (एक यहूदी ख़ानदान) का एक शख़्स था, आया और कहा या अमीरुल मोमिनीन! क्या आप हमें जलावतन कर देंगे हालाँकि मुहम्मद (ﷺ) ने हमे यहाँ बाक़ी रखा था और हमसे जायदाद का एक मामला भी किया था और उसकी हमें ख़ैबर में रहने देने की शर्त भी आपने लगाई थी। उमर (रज़ि.) ने इस पर फ़र्माया क्या तुम ये समझते हो कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान भूल गया हूँ। जब हुज़ूर (ﷺ) ने कहा था कि तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम ख़ैबर से निकाले जाओगे और तुम्हारे ऊँट तुम्हें रातों-रात लिये फिरेंगे। उसने कहा ये तो अबुल क़ासिम (हुज़ूर (ﷺ)) का एक मज़ाक़ था। उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया अल्लाह के दुश्मन! तुमने झूठी बात कही। चुनाँचे उमर (रज़ि.) ने उन्हें शहर

٢٧٣٠- حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى أَبُو غَسَّانَ الْكِنَانِيُّ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا فَدَعَ أَهْلُ خَيْبَرَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ قَامَ عُمَرُ خَطِيبًا فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَامَلَ يَهُودَ خَيْبَرَ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَقَالَ: نُقِرُّكُمْ مَا أَقَرَّكُمُ اللَّهُ، وَإِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ خَرَجَ إِلَى مَالِهِ هُنَاكَ فَعُدِيَ عَلَيْهِ مِنَ اللَّيْلِ فَفُدِعَتْ يَدَاهُ وَرِجْلاَهُ، وَلَيْسَ لَنَا هُنَاكَ عَدُوٌّ غَيْرَهُمْ، هُمْ عَدُوُّنَا وَتُهْمَتُنَا، وَقَدْ رَأَيْتُ إِجْلاَءَهُمْ. فَلَمَّا أَجْمَعَ عُمَرُ عَلَى ذَلِكَ أَتَاهُ أَحَدُ بَنِي أَبِي الْحُقَيْقِ فَقَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَتُخْرِجُنَا وَقَدْ أَقَرَّنَا مُحَمَّدٌ ﷺ وَعَامَلَنَا عَلَى الأَمْوَالِ وَشَرَطَ ذَلِكَ لَنَا؟ فَقَالَ عُمَرُ: أَظَنَنْتَ أَنِّي نَسِيتُ قَوْلَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ: ((كَيْفَ بِكَ إِذَا أُخْرِجْتَ مِنْ خَيْبَرَ تَعْدُو بِكَ قَلُوصُكَ لَيْلَةً بَعْدَ لَيْلَةٍ)). فَقَالَ: كَانَ ذَلِكَ هُزَيْلَةً مِنْ أَبِي الْقَاسِمِ. فَقَالَ: كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ اللَّهِ. فَأَجْلاَهُمْ عُمَرُ، وَأَعْطَاهُمْ قِيمَةَ مَا كَانَ لَهُمْ مِنَ الثَّمَرِ مَالاً وَإِبِلاً وَعُرُوضًا

مِنْ أَقْتَابٍ وَحِبَالٍ وَغَيْرِ ذَلِكَ)). رَوَاهُ حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ أَحْسِبُهُ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، اخْتَصَرَهُ.

बदर कर दिया और उनके फलों की कुछ नक़द क़ीमत, कुछ माल और ऊँट और दूसरे सामान या'नी कजावे और रस्सियों की सूरत में अदा कर दी। इसकी रिवायत हम्माद बिन सलमा ने उबैदुल्लाह से नक़ल की है जैसा कि मुझे यक़ीन है नाफ़ेअ से और उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से और उन्होंने उमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से मुख़्तसर तौर पर।

तश्रीह : रिवायत के शुरू सनद में अबू अहमद मुरार बिन हम्विया हैं। जामेउस्सहीह में उनसे और उनके शैख़ से सिर्फ़ यही एक हदीष मरवी है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने बेटे अब्दुल्लाह को पैदावार वसूल करने के लिये ख़ैबर भेजा था। वहाँ बदअहद यहूदियों ने मौक़ा पाकर हज़रत अब्दुल्लाह को एक छत से नीचे धकेल दिया और उनके हाथ पैर तोड़ दिये। ऐसी ही शरारतों की वजह से हज़रत उमर (रज़ि.) ने ख़ैबर से यहूद को जलावतन कर दिया। ख़ैबर की फ़तह के बाद रसूले करीम (ﷺ) ने मफ़्तूहा ज़मीनात (जीती हुई धरती) का मामला ख़ैबर के यहूदियों से कर लिया था और कोई मुद्दत मुक़र्रर नहीं की बल्कि ये फ़र्माया कि ये मामला हमेशा के लिये नहीं है बल्कि जब अल्लाह चाहेगा ये मामला ख़त्म कर दिया जाएगा। इसी बिना पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में उनको बेदख़ल करके दूसरी जगह मुंतक़िल करा दिया। इस बद अहद क़ौम ने कभी किसी के साथ वफ़ा नहीं की, इसलिये ये क़ौम मल्ऊन और मतरूद (धुत्कारी हुई) क़रार पाई। इस हदीष से ये निकला कि ज़मीन का मालिक अगर काश्तकार का कोई क़ुसूर देखे तो उसको बेदख़ल कर सकता है गो वो काम शुरू कर चुका हो मगर उसके काम का बदल देना होगा जैसे कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने किया।

١٥- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْجِهَادِ وَالْمُصَالَحَةِ مَعَ أَهْلِ الْحَرْبِ، وَكِتَابَةِ الشُّرُوطِ

बाब 15 : जिहाद में शर्तें लगाना और काफ़िरों के साथ सुलह करने में और शर्तों का लिखना

٢٧٣١، ٢٧٣٢- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ قَالَ: أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ وَمَرْوَانَ - يُصَدِّقُ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا حَدِيثَ صَاحِبِهِ - قَالاَ: ((خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ زَمَنَ الْحُدَيْبِيَةِ حَتَّى كَانُوا بِبَعْضِ الطَّرِيقِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ بِالْغَمِيمِ فِي خَيْلٍ لِقُرَيْشٍ طَلِيعَةً، فَخُذُوا ذَاتَ الْيَمِينِ)). فَوَ اللهِ مَا شَعَرَ بِهِمْ خَالِدٌ حَتَّى إِذَا هُمْ بِقَتَرَةِ الْجَيْشِ، فَانْطَلَقَ يَرْكُضُ نَذِيرًا لِقُرَيْشٍ وَسَارَ النَّبِيُّ

2731,74. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा मुझको मअमर ने ख़बर दी, कहा कि मुझे ज़ुहरी ने ख़बर दी, कहा मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे मख़रमा (रज़ि.) और मरवान ने, दोनों के बयान से एक—दूसरे की हदीष की तस्दीक़ भी होती है। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर (मक्का) जा रहे थे, अभी आप (ﷺ) रास्ते ही में थे, फ़र्माया ख़ालिद बिन वलीद क़ुरैश के (दो सौ) सवारों के साथ हमारी नक़ल व हरकत का अंदाज़ा लगाने के लिये मुक़ामे ग़मीम में मुक़ीम है (ये क़ुरैश का मुक़द्दमतुल जैश है) इसलिये तुम लोग दाहिनी तरफ़ से जाओ, पस अल्लाह की क़सम! ख़ालिद को उनके बारे में कुछ भी इल्म न हो सका और जब उन्हों ने उस लश्कर का गुबार उठता हुआ देखा तो क़ुरैश को जल्दी-जल्दी ख़बर देने गए। उधर नबी करीम (ﷺ) चलते रहे यहाँ तक कि आप उस घाटी पर पहुँचे जिससे मक्का में उतरते हैं तो आप (ﷺ) की सवारी बैठ गई।

सहाबा (ऊँटनी को उठाने के लिये हल हल कहने लगे लेकिन वो अपनी जगह से न उठी। सहाबा (रज़ि.) ने कहा कि क़स्वा अड़ गई, आप (ﷺ) ने फ़र्माया क़स्वा अड़ी नहीं और न ये उसकी आदत है, इसे तो उस ज़ात ने रोक लिया जिसने हाथियों (के लश्कर) को (मक्का) में दाख़िल होने से रोक लिया था। फिर आपने फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है क़ुरैश जो भी ऐसा मुतालबा रखेंगे जिसमें अल्लाह के घर की बड़ाई हो तो मैं उनका मुतालबा कर लूँगा। आख़िर आप (ﷺ) ने ऊँटनी को डांटा तो वो उठ गई। रावी ने बयान किया कि फिर नबी करीम (ﷺ) सहाबा से आगे निकल गए और हुदैबिया के आख़िरी किनारे षमद (एक चश्मा या गड्ढा) पर जहाँ पानी कम था, आप (ﷺ) ने पड़ाव किया। लोग थोड़ा थोड़ा पानी इस्ते'माल करने लगे, उन्होंने पानी को ठहरने ही नहीं दिया, सब खींच डाला। अब रसूले करीम (ﷺ) से प्यास की शिकायत की गई तो आप (ﷺ) ने अपने तरकश में से एक तीर निकाल कर दिया कि उस गड्ढे में डाल दें अल्लाह की क़सम! तीर गाड़ते ही पानी उन्हें सैराब करने के लिये उबलने लगा और वो लोग पूरी तरह सैराब हो गए। लोग इसी हाल में थे कि बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाई (रज़ि.) अपनी क़ौम ख़ुज़ाआ के कई आदमियों को लेकर हाज़िर हुआ। ये लोग तिहामा के रहने वाले और रसूलुल्लाह (ﷺ) के महरमे राज़ बड़े ख़ैर-ख़्वाह थे। उन्होंने ख़बर दी कि मैं कअब बिन लुई और आमिर बिन लुई को पीछे छोड़कर आ रहा हूँ। जिन्होंने हुदैबिया के पानी के ज़ख़ीरों पर अपना पड़ाव डाल दिया है, उनके साथ बकष़रत दूध देने वाली ऊँटनियाँ अपने नए-नए बच्चों के साथ हैं। वो आपसे लड़ेंगे और आपके बैतुल्लाह पहुँचने में रुकावट होंगे। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम किसी से लड़ने नहीं आए हैं सिर्फ़ उमरह करने के इरादे से आए हैं और वाक़िया ये है कि (मुसलसल) लड़ाइयों ने क़ुरैश को भी कमज़ोर कर दिया है और उन्हें बड़ा नुक़्सान उठाना पड़ा है, अब अगर वो चाहें तो मैं एक मुद्दत तक उनसे सुलह का मुआहिदा कर लूँगा, उस अर्से में वो मेरे और अवाम (कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीने अरब) के बीच न पड़ें फिर अगर मैं कामयाब हो जाऊँ और (उसके बाद) वो चाहें तो इस दीन (इस्लाम) में वो भी दाख़िल हो सकते हैं (जिसमें और तमाम लोग दाख़िल हो चुके होंगे) लेकिन अगर मुझे कामयाबी नहीं हुई तो

ﷺ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِالثَّنِيَّةِ الَّتِي يُهْبَطُ عَلَيْهِمْ مِنْهَا بَرَكَتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ، فَقَالَ النَّاسُ: حَلْ حَلْ. فَأَلَحَّتْ. فَقَالُوا خَلأَتِ الْقَصْوَاءُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا خَلأَتِ الْقَصْوَاءُ وَمَا ذَاكَ لَهَا بِخُلُقٍ. وَلَكِنْ حَبَسَهَا حَابِسُ الْفِيلِ)). ثُمَّ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لاَ يَسْأَلُونَنِي خُطَّةً يُعَظِّمُونَ فِيهَا حُرُمَاتِ اللهِ إِلاَّ أَعْطَيْتُهُمْ إِيَّاهَا. ثُمَّ زَجَرَهَا فَوَثَبَتْ)). قَالَ: فَعَدَلَ عَنْهُمْ حَتَّى نَزَلَ بِأَقْصَى الْحُدَيْبِيَةِ عَلَى ثَمَدٍ قَلِيلِ الْمَاءِ يَتَبَرَّضُهُ النَّاسُ تَبَرُّضًا، فَلَمْ يُلَبِّثْهُ النَّاسُ حَتَّى نَزَحُوهُ، وَشُكِيَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ الْعَطَشُ، فَانْتَزَعَ سَهْمًا مِنْ كِنَانَتِهِ، ثُمَّ أَمَرَهُمْ أَنْ يَجْعَلُوهُ فِيهِ، فَوَاللهِ مَا زَالَ يَجِيشُ لَهُمْ بِالرِّيِّ حَتَّى صَدَرُوا عَنْهُ، فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ، إِذْ جَاءَ بُدَيْلُ بْنُ وَرْقَاءَ الْخُزَاعِيُّ فِي نَفَرٍ مِنْ قَوْمِهِ مِنْ خُزَاعَةَ – وَكَانُوا عَيْبَةَ نُصْحِ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْ أَهْلِ تِهَامَةَ – فَقَالَ: إِنِّي تَرَكْتُ كَعْبَ بْنَ لُؤَيٍّ وَعَامِرَ بْنَ لُؤَيٍّ نَزَلُوا أَعْدَادَ مِيَاهِ الْحُدَيْبِيَةِ، وَمَعَهُمُ الْعُوذُ الْمَطَافِيلُ، وَهُمْ مُقَاتِلُوكَ وَصَادُّوكَ عَنِ الْبَيْتِ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّا لَمْ نَجِئْ لِقِتَالِ أَحَدٍ، وَلَكِنَّا جِئْنَا مُعْتَمِرِينَ، وَإِنَّ قُرَيْشًا قَدْ نَهِكَتْهُمُ الْحَرْبُ وَأَضَرَّتْ بِهِمْ، فَإِنْ شَاؤُوا مَادَدْتُهُمْ مُدَّةً وَيُخَلُّوا بَيْنِي وَبَيْنَ النَّاسِ، فَإِنْ أَظْهَرْ فَإِنْ شَاؤُوا أَنْ يَدْخُلُوا

उन्हें भी आराम मिल जाएगा और अगर उन्हें मेरी पेशकश से इंकार है तो उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है जब तक मेरा सर तन से जुदा नहीं हो जाता, मैं इस दीन के लिये बराबर लड़ता रहूँगा या फिर अल्लाह तआला इसे नाफ़िज़ कर देगा। बुदैल (रज़ि.) ने कहा कि क़ुरैश तक आपकी बातचीत पहुँचाऊँगा चुनाँचे वो वापस हुए और क़ुरैश के यहाँ पहुँचे और कहा कि हम तुम्हारे पास उस शख़्स (नबी करीम (ﷺ) के यहाँ से आ रहे हैं और हमने उसे एक बात कहते सुना है, अगर तुम चाहो तो तुम्हारे सामने हम उसे बयान कर सकते हैं। क़ुरैश के बेवक़ूफ़ों ने कहा कि हमें इसकी ज़रूरत नहीं कि तुम उस शख़्स की कोई बात हमें सुनाओ। जो लोग साइबुर्राय थे, उन्होंने कहा कि ठीक है जो कुछ तुमने सुना है हमसे बयान करो। उन्होंने कहा कि मैंने उसे (आँहज़रत ﷺ को ये कहते सुना है और फिर जो कुछ उन्होंने आँहुज़ूर ﷺ) से सुना था, सब बयान कर दिया। इस पर उर्वा बिन मसऊद (रज़ि.) (जो उस वक़्त तक कुफ़्फ़ार के साथ थे) खड़े हुए और कहा ऐ क़ौम के लोगों! क्या तुम मुझ पर बाप की तरह शफ़क़त नहीं रखते। सबने कहा क्यूँ नहीं! ज़रूर रखते हैं। उर्वा ने फिर कहा क्या मैं बेटे की तरह तुम्हारा ख़ैर–ख़्वाह नहीं हूँ, उन्होंने कहा क्यूँ नहीं है। उर्वा ने फिर कहा तुम लोग मुझ पर किसी क़िस्म की तोहमत लगा सकते हो? उन्होंने कहा कि नहीं। उन्होंने पूछा क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि मैंने उकाज़ वालों को तुम्हारी मदद के लिये कहा था और जब उन्होंने इंकार किया तो मैंने अपने घराने, औलाद और उन तमाम लोगों को तुम्हारे पास लाकर खड़ा कर दिया था जिन्होंने मेरा कहना माना था? क़ुरैश ने कहा क्यूँ नहीं (आपकी बातें दुरुस्त हैं) उसके बाद उन्होंने कहा देखो अब उस शख़्स (नबी करीम ﷺ) ने तुम्हारे सामने एक अच्छी तज्वीज़ रखी है, उसे तुम क़ुबूल कर लो और मुझे उसके पास (बातचीत) के लिये जाने दो, सबने कहा आप ज़रूर जाइये। चुनाँचे उर्वा बिन मसऊद (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) से बातचीत शुरू की। आप (ﷺ) ने उनसे भी वही बातें कहीं जो आप (ﷺ) बुदैल से कह चुके थे, उर्वा (ﷺ) ने उस वक़्त कहा। ऐ मुहम्मद! बताओ अगर आप (ﷺ) ने अपनी क़ौम को तबाह कर दिया तो क्या अपने से पहले किसी भी

فِيْمَا دَخَلَ فِيْهِ النَّاسُ فَعَلُوا. وَإِلاَّ فَقَدْ جَمُّوا. وَإِنْ هُمْ أَبَوا فَوَ الَّذِيْ نَفْسِي بِيَدِهِ لأُقَاتِلَنَّهُمْ عَلَى أَمْرِيْ هَذَا حَتَّى تَنْفَرِدَ سَالِفَتِي، وَلَيُنْفِذَنَّ اللهُ أَمْرَهُ)) فَقَالَ بُدَيْلٌ: سَأُبَلِّغُهُمْ مَا تَقُولُ. قَالَ فَانْطَلَقَ حَتَّى أَتَى قُرَيْشًا قَالَ: إِنَّا قَدْ جِئْنَاكُمْ مِنْ هَذَا الرَّجُلِ، وَسَمِعْنَاهُ يَقُولُ قَوْلاً، فَإِنْ شِئْتُمْ أَنْ نَعْرِضَهُ عَلَيْكُمْ فَعَلْنَا. فَقَالَ سُفَهَاؤُهُمْ : لاَ حَاجَةَ لَنَا أَنْ تُخْبِرَنَا عَنْهُ بِشَيْءٍ. وَقَالَ ذَوُو الرَّأْيِ مِنْهُمْ: هَاتِ مَا سَمِعْتَهُ يَقُولُ: قَالَ سَمِعْتُهُ يَقُولُ كَذَا وَكَذَا. فَحَدَّثَهُمْ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ. فَقَامَ عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُودٍ فَقَالَ: أَيْ قَوْمِ، أَلَسْتُمْ بِالْوَالِدِ؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: أَوَلَسْتُ بِالْوَلَدِ؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: فَهَلْ تَتَّهِمُونِي؟ قَالُوا: لاَ. قَالَ: أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنِّي اسْتَنْفَرْتُ أَهْلَ عُكَاظٍ، فَلَمَّا بَلَّحُوا عَلَيَّ جِئْتُكُمْ بِأَهْلِي وَوَلَدِي وَمَنْ أَطَاعَنِي؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: إِنَّ هَذَا قَدْ عَرَضَ لَكُمْ خُطَّةَ رُشْدٍ اقْبَلُوهَا وَدَعُونِي آتِيهِ. قَالُوا ائْتِهِ. فَأَتَاهُ، فَجَعَلَ يُكَلِّمُ النَّبِيَّ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ نَحْوًا مِنْ قَوْلِهِ لِبُدَيْلٍ. فَقَالَ عُرْوَةُ عِنْدَ ذَلِكَ: أَيْ مُحَمَّدُ، أَرَأَيْتَ إِنِ اسْتَأْصَلْتَ أَمْرَ قَوْمِكَ، هَلْ سَمِعْتَ بِأَحَدٍ مِنَ الْعَرَبِ اجْتَاحَ أَهْلَهُ قَبْلَكَ؟ وَإِنْ تَكُنِ الأُخْرَى، فَإِنِّي وَاللهِ لاَ أَرَى وُجُوهًا، وَإِنِّي لأَرَى أَشْوَابًا مِنَ النَّاسِ خَلِيقًا أَنْ يَفِرُّوا

وَيَدَعُوكَ، فَقَالَ لَهُ أَبُوبَكْرٍ: امْصِصْ بَبَظْرِ اللاَّتِ، أَنَحْنُ نَفِرُّ عَنْهُ وَنَدَعُهُ، فَقَالَ: مَنْ ذَا؟ قَالُوا: أَبُوبَكْرٍ. قَالَ: أَمَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْ لاَ يَدٌ كَانَتْ لَكَ عِنْدِي لَمْ أَجْزِكَ بِهَا لأَجَبْتُكَ. قَالَ: وَجَعَلَ يُكَلِّمُ النَّبِيَّ ﷺ، فَكُلَّمَا تَكَلَّمَ أَخَذَ بِلِحْيَتِهِ، وَالْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ قَائِمٌ عَلَى رَأْسِ النَّبِيِّ ﷺ وَمَعَهُ السَّيْفُ وَعَلَيْهِ الْمِغْفَرُ، فَكُلَّمَا أَهْوَى عُرْوَةُ بِيَدِهِ إِلَى لِحْيَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، ضَرَبَ يَدَهُ بِنَعْلِ السَّيْفِ وَقَالَ لَهُ: أَخِّرْ يَدَكَ عَنْ لِحْيَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ. فَرَفَعَ عُرْوَةُ رَأْسَهُ فَقَالَ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ. فَقَالَ: أَيْ غُدَرُ، أَلَسْتُ أَسْعَى فِي غَدْرَتِكَ؟ وَكَانَ الْمُغِيرَةُ صَحِبَ قَوْمًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَقَتَلَهُمْ وَأَخَذَ أَمْوَالَهُمْ ثُمَّ جَاءَ فَأَسْلَمَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمَّا الإِسْلاَمَ فَأَقْبَلُ وَأَمَّا الْمَالُ فَلَسْتُ مِنْهُ فِي شَيْءٍ)). ثُمَّ إِنَّ عُرْوَةَ جَعَلَ يَرْمُقُ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ بِعَيْنَيْهِ. قَالَ: فَوَاللهِ مَا تَنَخَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ نُخَامَةً إِلاَّ وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ فَدَلَكَ بِهَا وَجْهَهُ وَجِلْدَهُ، وَإِذَا أَمَرَهُمْ ابْتَدَرُوا أَمْرَهُ، وَإِذَا تَوَضَّأَ كَادُوا يَقْتَتِلُونَ عَلَى وَضُوئِهِ، وَإِذَا تَكَلَّمَ خَفَضُوا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ، وَمَا يُحِدُّونَ إِلَيْهِ النَّظَرَ تَعْظِيمًا لَهُ. فَرَجَعَ عُرْوَةُ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَيْ قَوْمِ، وَاللهِ لَقَدْ وَفَدْتُ عَلَى الْمُلُوكِ، وَوَفَدْتُ عَلَى

अरब के बारे में सुना है कि उसने अपने खानदान का नामो–निशान मिटा दिया हो लेकिन अगर दूसरी बात वाक़ेअ हुई (या'नी हम आप ﷺ) पर ग़ालिब हुए) तो मैं तो अल्लाह की क़सम तुम्हारे साथियों का मुँह देखता हूँ ये पंज मील लोग यही करेंगे, उस वक़्त ये सब लोग भाग जाएँगे और आपको तन्हा छोड़ देंगे। इस पर अबूबक्र (रज़ि.) बोले अम्सिस बिबज़्रिल्लात (अबे जा! लात बुत की शर्मगाह चूस ले) क्या हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से भाग जाएँगे और आप (ﷺ) को तन्हा छोड़ देंगे। उ़र्वा ने पूछा ये कौन स़ाहब हैं? लोगों ने बताया कि अबूबक्र (रज़ि.) हैं। उ़र्वा ने कहा उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर तुम्हारा मुझ पर एहसान न होता जिसका अब तक मैं बदला नहीं दे सका हूँ तो तुम्हें ज़रूर जवाब देता। बयान किया कि वो नबी करीम (ﷺ) से फिर बातचीत करने लगे और बातचीत करते हुए आप (ﷺ) की दाढ़ी मुबारक पकड़ लिया करते थे। मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के पास खड़े थे, तलवार लटकाए हुए और सर पर ख़ूद पहने। उ़र्वा जब भी नबी करीम (ﷺ) की दाढ़ी मुबारक की त़रफ़ हाथ ले जाते तो मुग़ीरह (रज़ि.) तलवार की कोतही को उनके हाथ पर मारते और उनसे कहते कि रसूल्लाह (ﷺ) की दाढ़ी से अपना हाथ अलग रख। उ़र्वा (रज़ि.) ने अपना सर उठाया और पूछा ये कौन स़ाहब हैं? लोगों ने बताया कि मुग़ीरह बिन शुअ़बा। उ़र्वा ने उन्हें मुख़ात़िब करके कहा ऐ दग़ाबाज़! क्या मैंने तेरी दग़ाबाज़ी की सज़ा से तुझको नहीं बचाया? अस़ल में मुग़ीरह (रज़ि.) (इस्लाम लाने से पहले) जाहिलियत में एक क़ौम के साथ रह रहे थे फिर उन सबको क़त्ल करके उनका माल ले लिया था। उसके बाद (मदीना) आए और इस्लाम क़ुबूल कर लिया (तो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में उनका माल भी रख दिया कि जो चाहें उसके बारे में हुक्म दें) लेकिन आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तेरा इस्लाम तो मैं क़ुबूल करता हूँ, रहा ये माल तो मेरा इससे कोई वास्ता नहीं क्योंकि वो दग़ाबाज़ी से हाथ आया है जिसे मैं ले नहीं सकता, फिर उ़र्वा (रज़ि.) घूर–घूरकर रसूले करीम (ﷺ) के अस़्हाब की नक़ल व हरकत देखते रहे। फिर रावी ने बयान किया कि क़सम अल्लाह की! अगर कभी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बलग़म भी थूका तो आप (ﷺ) के अस़्हाब ने अपने हाथों पर उसे ले लिया

قَيْصَرَ وَكِسْرَى وَالنَّجَاشِيِّ، وَاللهِ إِنْ رَأَيْتُ مَلِكًا قَطُّ يُعَظِّمُهُ أَصْحَابُهُ مَا يُعَظِّمُ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ مُحَمَّدًا، وَاللهِ إِنْ تَنَخَّمَ نُخَامَةً إِلاَّ وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ فَدَلَكَ بِهَا وَجْهَهُ وَجِلْدَهُ، وَإِذَا أَمَرَهُمُ ابْتَدَرُوا أَمْرَهُ، وَإِذَا تَوَضَّأَ كَادُوا يَقْتَتِلُونَ عَلَى وَضُوئِهِ، وَإِذَا تَكَلَّمَ خَفَضُوا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ، وَمَا يُحِدُّونَ النَّظَرَ إِلَيْهِ تَعْظِيمًا لَهُ. وَإِنَّهُ قَدْ عَرَضَ عَلَيْكُمْ خُطَّةَ رُشْدٍ فَاقْبَلُوهَا. فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي كِنَانَةَ: دَعُونِي آتِيهِ، فَقَالُوا: ائْتِهِ. فَلَمَّا أَشْرَفَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَذَا فُلاَنٌ، وَهُوَ مِنْ قَوْمٍ يُعَظِّمُونَ الْبُدْنَ، فَابْعَثُوهَا لَهُ))، فَبُعِثَتْ لَهُ، وَاسْتَقْبَلَهُ النَّاسُ يُلَبُّونَ. فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ، مَا يَنْبَغِي لِهَؤُلاَءِ أَنْ يُصَدُّوا عَنِ الْبَيْتِ. فَلَمَّا رَجَعَ إِلَى أَصْحَابِهِ قَالَ رَأَيْتُ الْبُدْنَ قَدْ قُلِّدَتْ وَأُشْعِرَتْ فَمَا أَرَى يُصَدُّوا عَنِ الْبَيْتِ فَقَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ يُقَالُ لَهُ مِكْرَزُ بْنُ حَفْصٍ فَقَالَ: دَعُونِي آتِيهِ. فَقَالُوا: ائْتِهِ. فَلَمَّا أَشْرَفَ عَلَيْهِمْ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَذَا مِكْرَزٌ، وَهُوَ رَجُلٌ فَاجِرٌ)). فَجَعَلَ يُكَلِّمُ النَّبِيَّ ﷺ. فَبَيْنَمَا هُوَ يُكَلِّمُهُ إِذْ جَاءَ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو. قَالَ مَعْمَرٌ: فَأَخْبَرَنِي أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّهُ لَمَّا جَاءَ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ سَهُلَ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ)).

और उसे अपने चेहर और बदन पर मल लिया। किसी काम का अगर आप (ﷺ) ने हुक्म दिया तो उसकी बजा आवरी में एक—दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिश करते। आप (ﷺ) वुज़ू करने लगे तो ऐसा मा'लूम हुआ कि आप (ﷺ) के वुज़ू के पानी पर लड़ाई हो जाएगी (या'नी हर शख़्स उस पानी को लेने की कोशिश करता था) जब आप बातचीत करने लगते तो सब पर ख़ामोशी छा जाती। आप (ﷺ) की ता'ज़ीम का ये हाल था कि आप (ﷺ) के साथी नज़र भरकर आप (ﷺ) को देख भी नहीं सकते थे। ख़ैर उर्वा जब अपने साथियों से जाकर मिले तो उनसे कहा कि ऐ लोगों! क़सम अल्लाह की! मैं बादशाहों के दरबार में भी वफ़्द लेकर गया हूँ, क़ैसर व किसरा, और नज्जाशी सबके दरबार में लेकिन अल्लाह की क़सम मैंने कभी नहीं देखा कि किसी बादशाह के साथी उसकी इस दर्जा ता'ज़ीम करते हों जितनी मुहम्मद के अस्हाब आपकी करते हैं। क़सम अल्लाह की अगर मुहम्मद (ﷺ) ने बलग़म भी थूक दिया तो उनके अस्हाब ने उसे अपने हाथों पर ले लिया और उसे अपने चेहरे और बदन पर मल लिया। आप (ﷺ) ने उन्हें अगर कोई हुक्म दिया तो हर शख़्स ने उसे बजा लाने में एक—दूसरे पर सबक़त की कोशिश की। आप (ﷺ) ने अगर वुज़ू किया तो ऐसा मा'लूम होता था कि आप (ﷺ) के वुज़ू पर लड़ाई हो जाएगी। आप (ﷺ) ने जब बातचीत शुरू की तो हर तरफ़ ख़ामोशी छा गई। उनके दिलों में आप (ﷺ) की ता'ज़ीम का ये आलम था कि आप (ﷺ) को नज़र भरकर भी नहीं देख सकते। उन्होंने तुम्हारे सामने एक भली सूरत रखी है, तुम्हें चाहिये कि उसे क़ुबूल कर लो। इस पर बनू किनाना का एक शख़्स बोला कि अच्छा मुझे भी उनके यहाँ जाने दो, लोगों ने कहा तुम भी जा सकते हो। जब ये रसूलुल्लाह (ﷺ) और आप (ﷺ) के अस्हाब रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन के क़रीब पहुँचे तो हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये फ़लाँ शख़्स है, एक ऐसी क़ौम का फ़र्द जो बैतुल्लाह की क़ुर्बानी के जानवरों की ता'ज़ीम करते हैं इसलिये क़ुर्बानी के जानवर इसके सामने कर दो। सहाबा (रज़ि.) ने क़ुर्बानी के जानवर उसके सामने कर दिये और लब्बैक कहते हुए उसका इस्तिक़बाल किया जब उसने ये मंज़र देखा तो कहने लगा कि सुब्हानल्लाह क़तअन मुनासिब नहीं है कि ऐसे लोगों को का'बा से रोका जाए। उसके बाद क़ुरैश में से एक दूसरा शख़्स मिकरज़ बिन हफ़्स नामी खड़ा हुआ और कहने लगा

قَالَ مَعْمَرٌ قَالَ الزُّهْرِيُّ فِي حَدِيْثِهِ : فَجَاءَ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو فَقَالَ : هَاتِ اكْتُبْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ كِتَابًا. فَدَعَا النَّبِيُّ ﷺ الْكَاتِبَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اكْتُبْ ((بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ))، قَالَ سُهَيْلٌ: أَمَّا ((الرَّحْمَنُ)) فَوَاللهِ مَا أَدْرِي مَا هُوَ، وَلَكِنِ اكْتُبْ ((بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ)) كَمَا كُنْتَ تَكْتُبُ، فَقَالَ الْمُسْلِمُوْنَ: وَاللهِ لاَ نَكْتُبُهَا إِلاَّ ((بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيْمِ)) فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اكْتُبْ ((بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ)). ثُمَّ قَالَ: ((هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ)) فَقَالَ سُهَيْلٌ وَاللهِ لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَا صَدَدْنَاكَ عَنِ الْبَيْتِ وَلاَ قَاتَلْنَاكَ، وَلَكِنِ اكْتُبْ ((مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ))، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: وَاللهِ إِنِّي لَرَسُوْلُ اللهِ وَإِنْ كَذَّبْتُمُوْنِي، اكْتُبْ ((مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ)) قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَذَلِكَ لِقَوْلِهِ: ((لاَ يَسْأَلُوْنِي خُطَّةً يُعَظِّمُوْنَ فِيْهَا حُرُمَاتِ اللهِ إِلاَّ أَعْطَيْتُهُمْ إِيَّاهَا)). فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((عَلَى أَنْ تُخَلُّوا بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْبَيْتِ فَنَطُوْفَ بِهِ)). فَقَالَ سُهَيْلٌ: وَاللهِ لاَ تَتَحَدَّثُ الْعَرَبُ أَنَّا أُخِذْنَا ضُغْطَةً، وَلَكِنْ ذَلِكَ مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ، فَكَتَبَ، فَقَالَ سُهَيْلٌ: وَعَلَى أَنَّهُ لاَ يَأْتِيْكَ مِنَّا رَجُلٌ - وَإِنْ كَانَ عَلَى دِيْنِكَ - إِلاَّ رَدَدْتَهُ إِلَيْنَا. قَالَ الْمُسْلِمُوْنَ: سُبْحَانَ اللهِ، كَيْفَ يُرَدُّ إِلَى

कि मुझे भी उनके यहाँ जाने दो। सबने कहा कि तुम भी जा सकते हो जब वो आँहज़रत (ﷺ) और स़ह़ाबा (रज़ि.) से क़रीब हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये मिकरज़ है एक बदतरीन शख़्स। फिर वो नबी करीम (ﷺ) से बातचीत करने लगा। अभी वो बातचीत कर ही रहा था कि सुहैल बिन अ़म्र आ गया। मअ़मर ने (साबिक़ा सनद के साथ) बयान किया कि मुझे अय्यूब ने ख़बर दी और उन्हें इक्रिमा ने कि जब सुहैल बिन अ़म्र आया तो नबी करीम (ﷺ) ने (नेक फ़ाली के तौर पर) फ़र्माया तुम्हारा मामला आसान (सहल) हो गया। मअ़मर ने बयान किया कि ज़ुहरी ने अपनी ह़दीष़ में इस त़रह़ बयान किया था कि जब सुहैल बिन अ़म्र आया तो कहने लगा कि हमारे और अपने बीच (सुलह़) की एक तहरीर लिख लो। चुनाँचे नबी करीम (ﷺ) ने कातिब को बुलवाया और फ़र्माया कि लिखो बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम सुहैल कहने लगा रह़मान को अल्लाह की क़सम मैं नहीं जानता कि वो क्या चीज़ है। अल्बत्ता तुम यूँ लिख सकते हो बिस्मिकल्लाहुम्म जैसे पहले लिखा करते थे मुसलमानों ने कहा कि क़सम अल्लाह की हमें बिस्मिल्लाहिर्रह़मा-निर्रह़ीम के सिवा और कोई दूसरा जुम्ला न लिखना चाहिये। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बिस्मिकल्लाह ही लिखने दो। फिर आप (ﷺ) ने लिखवाया ये मुह़म्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ से सुलह़नामा की दस्तावेज़ है (ﷺ) सुहैल ने कहा अगर हमें ये मा'लूम होता कि आप रसूलुल्लाह हैं तो न हम आप (ﷺ) को का'बा से रोकते और न आपसे जंग करते। आप (ﷺ) तो स़िर्फ़ इतना लिखिए कि मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह इस पर रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह गवाह है कि मैं उसका सच्चा रसूल हूँ ख़्वाह तुम मेरी तक्ज़ीब ही करते रहो, लिखो मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह। ज़ुहरी बयान करते हैं कि ये सब कुछ (नरमी और रिआ़यत) स़िर्फ़ आप (ﷺ) के उस इर्शाद का नतीजा था (जो पहले ही आप ﷺ) ने बुदैल रज़ि. से कह चुके थे) कि कुरैश मुझसे जो भी ऐसा मुत़ालबा करेंगे जिससे अल्लाह तआ़ला की ह़ुर्मतों की ता'ज़ीम मक़्सूद होगी तो मैं उनके मुत़ालबे को ज़रूर मान लूँगा, इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने सुहैल से फ़र्माया लेकिन सुलह़ के लिये पहली शर्त़ ये होगी कि तुम लोग बैतुल्लाह के त़वाफ़ करने के लिये जाने दोगे। सुहैल ने कहा क़सम अल्लाह की हम (इस साल) ऐसा नहीं होने देंगे वरना अ़रब कहेंगे कि हम मग़्लूब हो गए थे (इसलिये हमने

आपको इजाज़त दे दी) अल्बत्ता आइन्दा साल के लिये इजाज़त है। चुनाँचे ये भी लिख लिया। फिर सुहैल ने लिखा कि ये शर्त भी (लिख लीजिए) कि हमारी तरफ़ का जो शख़्स भी आप (ﷺ) के यहाँ जाएगा ख़्वाह वो आप (ﷺ) के दीन ही पर क्यूँ न हो आप (ﷺ) उसे वापस कर देंगे। मुसलमानों ने (ये शर्त सुनकर कहा) सुब्हानल्लाह! (एक शख़्स को) मुश्रिकों के हवाले किस तरह किया जा सकता है जो मुसलमान होकर आया हो। अभी यही बातें हो रही थीं कि अबु जन्दल बिन सुहैल बिन अम्र (रज़ि.) अपनी बेड़ियों को घसीटते हुए आ पहुँचे, वो मक्का के नशीबी इलाक़े की तरफ़ से भागे थे और अब ख़ुद को मुसलमानों के सामने डाल दिया था। सुहैल ने कहा ऐ मुहम्मद (ﷺ)! ये पहला शख़्स है जिसके लिये (सुलहनामा के मुताबिक़) में मुतालबा करता हूँ कि आप (ﷺ) हमें उसे वापस कर दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अभी तो हमने (सुलहनामा की इस दफ़ा को) सुलहनामा में लिखा भी नहीं है (इसलिये जब सुलहनामा तै पा जाएगा उसके बाद उसका निफ़ाज़ होना चाहिये) सुहैल कहने लगा कि अल्लाह की क़सम! फिर मैं किसी बुनियाद पर भी आप (ﷺ) से सुलह नहीं करूँगा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा मुझ पर उस एक को देकर एहसान कर दो। उसने कहा कि मैं इस सिलसिले में एहसान भी नहीं कर सकता। आँहज़रत (ﷺ) ने फिर फ़र्माया कि नहीं तुम्हें एहसान कर देना चाहिये, लेकिन उसने यही जवाब दिया कि मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। अल्बत्ता मिकरज़ ने कहा कि चलिये हम इसका आप (ﷺ) पर एहसान करते हैं मगर (उसकी बात नहीं चली) अबू जन्दल (रज़ि.) ने कहा मुसलमानों! मैं मुसलमान होकर आया हूँ, क्या मुझे मुश्रिकों के हाथ में दे दिया जाएगा? क्या मेरे साथ जो कुछ मामला हुआ है तुम नहीं देखते? अबू जन्दल (रज़ि.) को रास्ते में बड़ी सख़्त अज़िय्यतें पहुँचाई गई थीं। रावी ने बयान किया कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कहा आख़िर मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया क्या ये वाक़िया और हक़ीक़त नहीं कि आप (ﷺ) अल्लाह के नबी हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्यूँ नहीं! मैंने अर्ज़ किया क्या हम हक़ पर नहीं हैं और क्या हमारे दुश्मन बातिल नहीं हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्यूँ नहीं! मैंने कहा फिर अपने दीन के मामले में क्यूँ दबें? आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया मैं अल्लाह का रसूल हूँ, उसकी हुक्म उदूली नहीं कर सकता और वही मेरा मददगार है। मैंने कहा क्या आप (ﷺ) हमसे ये नहीं

الْمُشْرِكِيْنَ وَقَدْ جَاءَ مُسْلِمًا؟ فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ دَخَلَ أَبُو جَنْدَلِ بْنُ سُهَيْلِ بْنِ عَمْرٍو يَرْسُفُ فِي قُيُودِهِ، وَقَدْ خَرَجَ مِنْ أَسْفَلِ مَكَّةَ حَتَّى رَمَى بِنَفْسِهِ بَيْنَ أَظْهُرِ الْمُسْلِمِيْنَ، فَقَالَ سُهَيْلٌ : هَذَا يَا مُحَمَّدُ أَوَّلُ مَا أُقَاضِيكَ عَلَيْهِ أَنْ تَرُدَّهُ إِلَيَّ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّا لَمْ نَقْضِ الْكِتَابَ بَعْدُ)). قَالَ: فَوَ اللهِ إِذًا لَمْ أُصَالِحْكَ عَلَى شَيْءٍ أَبَدًا. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَأَجِزْهُ لِي))، قَالَ: مَا أَنَا بِمُجِيْزِهِ لَكَ، قَالَ: ((بَلَى فَافْعَلْ))، قَالَ: مَا أَنَا بِفَاعِلٍ. قَالَ مِكْرَزٌ: بَلْ قَدْ أَجَزْنَاهُ لَكَ. قَالَ أَبُو جَنْدَلٍ: أَيْ مَعْشَرَ الْمُسْلِمِيْنَ، أُرَدُّ إِلَى الْمُشْرِكِيْنَ وَقَدْ جِئْتُ مُسْلِمًا؟ أَلاَ تَرَوْنَ مَا قَدْ لَقِيْتُ؟ وَكَانَ قَدْ عُذِّبَ عَذَابًا شَدِيْدًا فِي اللهِ. فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: فَأَتَيْتُ نَبِيَّ اللهِ ﷺ، فَقُلْتُ: أَلَسْتَ نَبِيَّ اللهِ حَقًّا؟ قَالَ: ((بَلَى)). قُلْتُ: أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَعَدُوُّنَا عَلَى الْبَاطِلِ؟ قَالَ: ((بَلَى)). قُلْتُ : فَلِمَ نُعْطِي الدَّنِيَّةَ فِي دِيْنِنَا إِذًا؟ قَالَ: ((إِنِّي رَسُولُ اللهِ وَلَسْتُ أَعْصِيْهِ، وَهُوَ نَاصِرِيْ)). قُلْتُ: أَوَلَيْسَ كُنْتَ تُحَدِّثُنَا أَنَّا سَنَأْتِي الْبَيْتَ فَنَطُوفُ بِهِ؟ قَالَ: ((بَلَى، فَأَخْبَرْتُكَ أَنَّا نَأْتِيْهِ الْعَامَ؟)) قَالَ: قُلْتُ: لاَ. قَالَ: ((فَإِنَّكَ آتِيْهِ وَمُطَّوِّفٌ بِهِ)). قَالَ فَأَتَيْتُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ: يَا أَبَا بَكْرٍ، أَلَيْسَ هَذَا نَبِيَّ اللهِ حَقًّا؟ قَالَ:

بَلَى. قُلْتُ: أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَعَدُوُّنَا عَلَى الْبَاطِلِ؟ قَالَ: بَلَى. قُلْتُ: فَلِمَ نُعْطِي الدَّنِيَّةَ فِي دِينِنَا إِذًا؟ قَالَ: أَيُّهَا الرَّجُلُ، إِنَّهُ لَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ، وَلَيْسَ يَعْصِي رَبَّهُ، وَهُوَ نَاصِرُهُ، فَاسْتَمْسِكْ بِغَرْزِهِ فَوَاللَّهِ إِنَّهُ عَلَى الْحَقِّ. قُلْتُ: أَلَيْسَ كَانَ يُحَدِّثُنَا أَنَّا سَنَأْتِي الْبَيْتَ وَنَطُوفُ بِهِ؟ قَالَ: بَلَى، أَفَأَخْبَرَكَ أَنَّكَ تَأْتِيهِ الْعَامَ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَإِنَّكَ آتِيهِ وَمُطَوِّفٌ بِهِ. قَالَ الزُّهْرِيُّ قَالَ عُمَرُ: فَعَمِلْتُ لِذَلِكَ أَعْمَالاً. قَالَ: فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ قَضِيَّةِ الْكِتَابِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لأَصْحَابِهِ: ((قُومُوا فَانْحَرُوا ثُمَّ احْلِقُوا)). قَالَ: فَوَاللَّهِ مَا قَامَ مِنْهُمْ رَجُلٌ، حَتَّى قَالَ ذَلِكَ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، فَلَمَّا لَمْ يَقُمْ مِنْهُمْ أَحَدٌ دَخَلَ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ فَذَكَرَ لَهَا مَا لَقِيَ مِنَ النَّاسِ، فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَتُحِبُّ ذَلِكَ؟ اخْرُجْ، ثُمَّ لاَ تُكَلِّمْ أَحَدًا مِنْهُمْ كَلِمَةً حَتَّى تَنْحَرَ بُدْنَكَ، وَتَدْعُوَ حَالِقَكَ فَيَحْلِقَكَ. فَخَرَجَ فَلَمْ يُكَلِّمْ أَحَدًا مِنْهُمْ حَتَّى فَعَلَ ذَلِكَ: نَحَرَ بُدْنَهُ، وَدَعَا حَالِقَهُ فَحَلَقَهُ. فَلَمَّا رَأَوْا ذَلِكَ قَامُوا فَنَحَرُوا، وَجَعَلَ بَعْضُهُمْ يَحْلِقُ بَعْضًا، حَتَّى كَادَ بَعْضُهُمْ يَقْتُلُ بَعْضًا غَمًّا. ثُمَّ جَاءَهُ نِسْوَةٌ مُؤْمِنَاتٌ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ - حَتَّى بَلَغَ - بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ﴾ فَطَلَّقَ عُمَرُ يَوْمَئِذٍ

फ़र्माते थे कि हम बैतुल्लाह जाएँगे और उसका तवाफ़ करेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ठीक है लेकिन क्या मैंने तुमसे ये कहा था कि इसी साल हम बैतुल्लाह पहुँच जाएँगे। उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा नहीं (आपने इस क़ैद के साथ नहीं फ़र्माया था) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर इसमें कोई शुब्हा नहीं कि तुम बैतुल्लाह तक ज़रूर पहुँचोगे और एक दिन उसका तवाफ़ करोगे। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं अबूबक्र (रज़ि.) के यहाँ गया और उनसे भी यही पूछा कि अबूबक्र! क्या ये हक़ीक़त नहीं कि आँहज़रत (ﷺ) अल्लाह के नबी हैं? उन्होंने भी कहा कि क्यूँ नहीं। मैंने पूछा क्या हम हक़ पर नहीं हैं? और क्या हमारे दुश्मन बातिल पर नहीं हैं? उन्होंने कहा क्यूँ नहीं! मैंने कहा कि फिर हम अपने दीन को क्यों ज़लील करें? अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा जनाब! बिला शक व शुब्हा वो अल्लाह के रसूल हैं, वो अपने रब की हुक्म उदूली नहीं कर सकते और रब ही उनका मददगार है पस उनकी रस्सी मज़बूती से पकड़ लो, अल्लाह गवाह है कि वो हक़ पर हैं। मैंने कहा क्या आँहुज़ूर (ﷺ) हमसे ये नहीं कहते थे कि अनक़रीब हम बैतुल्लाह पहुँचेंगे और उसका तवाफ़ करेंगे। उन्होंने कहा कि ये भी सहीह है लेकिन क्या आँहज़रत (ﷺ) ने आपसे ये फ़र्माया था कि इसी साल आप बैतुल्लाह पहुँच जाएँगे। मैंने कहा कि नहीं। फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा फिर इसमें भी कोई शक नहीं कि आप एक न एक दिन बैतुल्लाह पहुँचेंगे और उसका तवाफ़ करेंगे। ज़ुहरी ने बयान किया कि उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया बाद में मैंने अपनी इस उज्लत पसन्दी की मकाफ़ात के लिये नेक आमाल किये। फिर जब सुलहनामा से आप फ़ारिग़ हो चुके तो सहाबा रिज़्वानुल्लाह अज्मईन से फ़र्माया कि अब उठो और (जिन जानवरों को साथ लाए हो उनकी) क़ुर्बानी कर लो और सर भी मुँडा लो। उन्होंने बयान किया कि अल्लाह गवाह है सहाबा में से एक शख़्स भी न उठा और तीन बार आप (ﷺ) ने ये जुम्ला फ़र्माया। जब कोई न उठा तो हज़रत उम्मे सलमा के ख़ैमे में गए और उनसे लोगों के तर्ज़े अमल का ज़िक्र किया। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! क्या आप ये पसन्द करेंगे कि बाहर तशरीफ़ ले जाएँ और किसी से कुछ न कहें बल्कि अपनी क़ुर्बानी का जानवर ज़िब्ह कर लें और अपने हज्जाम को बुलाएँ जो आपके बाल मूँड दे। चुनाँचे आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए। किसी से कुछ नहीं कहा और सब कुछ किया, अपने जानवर की क़ुर्बानी कर ली और

امْرَأَتَيْنِ كَانَتَا لَهُ فِي الشِّرْكِ، فَتَزَوَّجَ إِحْدَاهُمَا مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ وَالأُخْرَى صَفْوَانُ بْنُ أُمَيَّةَ. ثُمَّ رَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَجَاءَهُ أَبُو بَصِيرٍ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ وَهُوَ مُسْلِمٌ، فَأَرْسَلُوا فِي طَلَبِهِ رَجُلَيْنِ فَقَالُوا: الْعَهْدَ الَّذِي جَعَلْتَ لَنَا، فَدَفَعَهُ إِلَى الرَّجُلَيْنِ، فَخَرَجَا بِهِ حَتَّى بَلَغَا ذَا الْحُلَيْفَةِ، فَنَزَلُوا يَأْكُلُونَ مِنْ تَمْرٍ لَهُمْ، فَقَالَ أَبُو بَصِيرٍ لأَحَدِ الرَّجُلَيْنِ: وَاللهِ إِنِّي لأَرَى سَيْفَكَ هَذَا يَا فُلاَنُ جَيِّدًا، فَاسْتَلَّهُ الآخَرُ فَقَالَ : أَجَلْ وَاللهِ إِنَّهُ لَجَيِّدٌ، لَقَدْ جَرَّبْتُ بِهِ ثُمَّ جَرَّبْتُ. فَقَالَ أَبُو بَصِيرٍ: أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْهِ، فَأَمْكَنَهُ مِنْهُ، فَضَرَبَهُ حَتَّى بَرَدَ، وَفَرَّ الآخَرُ حَتَّى أَتَى الْمَدِينَةَ، فَدَخَلَ الْمَسْجِدَ يَعْدُو، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ رَآهُ: ((لَقَدْ رَأَى هَذَا ذُعْرًا))، فَلَمَّا انْتَهَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: قُتِلَ وَاللهِ صَاحِبِي وَإِنِّي لَمَقْتُولٌ. فَجَاءَ أَبُو بَصِيرٍ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ، قَدْ وَاللهِ أَوْفَى اللهُ ذِمَّتَكَ قَدْ رَدَدْتَنِي إِلَيْهِمْ، ثُمَّ أَنْجَانِي اللهُ مِنْهُمْ.
قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَيْلُ أُمِّهِ مِسْعَرُ حَرْبٍ لَوْ كَانَ لَهُ أَحَدٌ))، فَلَمَّا سَمِعَ ذَلِكَ عَرَفَ أَنَّهُ سَيَرُدُّهُ إِلَيْهِمْ، فَخَرَجَ حَتَّى أَتَى سِيفَ الْبَحْرِ. قَالَ: وَيَنْفَلِتُ مِنْهُمْ أَبُو جَنْدَلِ بْنُ سُهَيْلٍ فَلَحِقَ بِأَبِي بَصِيرٍ، فَجَعَلَ لاَ يَخْرُجُ مِنْ قُرَيْشٍ رَجُلٌ قَدْ أَسْلَمَ إِلاَّ لَحِقَ بِأَبِي بَصِيرٍ، حَتَّى اجْتَمَعَتْ مِنْهُمْ

अपने हज्जाम को बुलवाया जिसने आप (ﷺ) के बाल मूँडे। जब सहाबा ने देखा तो वो भी एक–दूसरे के बाल मूँडने लगे, ऐसा मा'लूम होता था कि रंज व ग़म में एक–दूसरे से लड़ पड़ेंगे। फिर आँहुज़ूर (ﷺ) के पास (मक्का से) चन्द मोमिन औरतें आईं तो अल्लाह तआला ने ये हुक्म दिया, ऐ लोगों! जो ईमान ला चुके हो, जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें हिजरत करके आएँ तो उनका इम्तिहान ले लो। बिअसिमिल् कवाफ़िर तक। उस दिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी दो बीवियों को तलाक़ दी जो अब तक मुसलमान न हुई थीं। उनमें से एक ने तो मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से निकाह कर लिया था और दूसरी से सफ़्वान बिन उमय्या ने। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो क़ुरैश के एक फ़र्द अबू बसीर (रज़ि.) (मक्का से फ़रार होकर) हाज़िर हुए। वो मुसलमान हो चुके थे। क़ुरैश ने उन्हें वापस लेने के लिये दो आदमियों को भेजा और उन्होंने आकर कहा कि हमारे साथ आपका मुआहिदा हो चुका है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने अबू बसीर (रज़ि.) को वापस कर दिया। क़ुरैश के दोनों अफ़राद जब उन्हें वापस लेकर लौटे और ज़ुल हुलैफ़ह पहुँचे तो खजूर खाने के लिये उतरे जो उनके साथ थी। अबू बसीर (रज़ि.) ने उनमें से एक से फ़र्माया क़सम अल्लाह की तुम्हारी तलवार बहुत अच्छी मा'लूम होती है, दूसरे साथी ने तलवार नियाम से निकाल दी। उस शख़्स ने कहा हाँ अल्लाह की क़सम! निहायत उम्दा तलवार है, मैं इसका बारहा तजुर्बा कर चुका हूँ। अबू बसीर (रज़ि.) इस पर बोले कि ज़रा मुझे भी तो दिखाओ और इस तरह अपने क़ब्ज़े में कर लिया फिर उस शख़्स ने तलवार के मालिक को ऐसी ज़रब लगाई कि वो वहीं ठण्डा हो गया, उसका दूसरा साथी भागकर मदीना आया और मस्जिद में दौड़ता हुआ दाख़िल हुआ। नबी करीम (ﷺ) ने जब उसे देखा तो फ़र्माया ये शख़्स कुछ ख़ौफ़ज़दा मा'लूम होता है। जब वो आँहज़रत (ﷺ) के क़रीब पहुँचा तो कहने लगा अल्लाह की क़सम! मेरा साथी मारा गया और मैं भी मारा जाऊँगा (अगर आप लोगों ने अबू बसीर को न रोका) इतने में अबू बसीर (रज़ि.) भी आ गये और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला ने आपकी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी, आप (ﷺ) मुझे उनके हवाले कर

عِصَابَةً، فَوَ اللّٰهِ مَا يَسْمَعُونَ بِعِيرٍ خَرَجَتْ لِقُرَيْشٍ إِلَى الشَّامِ إِلاَّ اعْتَرَضُوا لَهَا، فَقَتَلُوهُمْ وَأَخَذُوا أَمْوَالَهُمْ. فَأَرْسَلَتْ قُرَيْشٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ تُنَاشِدُهُ بِاللّٰهِ وَالرَّحِمِ لَمَّا أَرْسَلَ فَمَنْ أَتَاهُ فَهُوَ آمِنٌ فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْهِمْ، فَأَنْزَلَ اللّٰهُ تَعَالَى: ﴿وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ - حَتَّى بَلَغَ - الْحَمِيَّةَ﴾، حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ [الفتح: ٢٤] وَكَانَتْ حَمِيَّتُهُمْ أَنَّهُمْ لَمْ يُقِرُّوا أَنَّهُ نَبِيُّ اللّٰهِ، وَلَمْ يُقِرُّوا بِبِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، وَحَالُوا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْبَيْتِ)). [راجع: ١٦٩٤، ١٦٩٥]

चुके थे लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे उनसे नजात दिलाई। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया (तेरी माँ की ख़राबी) अगर उसका कोई एक भी मददगार होता तो फिर लड़ाई के शोले भड़क उठते। जब उन्होंने आप (ﷺ) के ये अल्फ़ाज़ सुने तो समझ गए कि आप फिर कुफ़्फ़ार के हवाले कर देंगे इसलिये वहाँ से निकल गये और समुन्दर के किनारे पर आ गए। रावी ने बयान किया कि अपने घर वालो से (मक्का से) छूटकर अबू जन्दल बिन सुहैल (रज़ि.) भी अबू बसीर (रज़ि.) से जा मिले और अब ये हाल था कि क़ुरैश का जो शख़्स भी इस्लाम लाता (बजाय मदीना आने के) अबू बसीर (रज़ि.) के यहाँ समन्दर के साहिल पर चला जाता। इस तरह से एक जमाअ़त बन गई और अल्लाह गवाह है ये लोग क़ुरैश के जिस क़ाफ़िले के बारे में भी सुन लेते कि वो शाम जा रहा है तो उसे रास्ते ही में रोककर लूट लेते और क़ाफ़िले वालों को क़त्ल कर देते। अब क़ुरैश नबी करीम (ﷺ) के यहाँ अल्लाह और रहम का वास्ता देकर दरख़्वास्त भेजी कि आप किसी को भेजें (अबू बसीर (रज़ि.) और उनके दूसरे साथियों के यहाँ कि वो क़ुरैश की ईज़ा से रुक जाएँ) और उसके बाद जो शख़्स भी आपके यहाँ जाएगा (मक्का से) उसे अमन है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने उनके यहाँ अपना आदमी भेजा और अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई कि, और वो ज़ात परवरदिगार जिसने रोक दिया था तुम्हारे हाथों को उनसे और उनके हाथों को तुमसे (या'नी जंग नहीं हो सकी थी) मक्का की वादी में (हुदैबिया में) बाद मे उसके कि तुमको ग़ालिब कर दिया था उन पर यहाँ तक कि बात जाहिलियत के दौर बेजा हिमायत तक पहुँच गई थी। उनकी हमिय्यते (जाहिलियत) ये थी कि उन्होंने (मुआहिदे में भी) आपके लिये अल्लाह के नबी होने का इक़रार नहीं किया इसी तरह उन्होंने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहीं लिखने दिया और आपके बैतुल्लाह जाने से मानेअ़ बने। (राजेअ़ : 1694, 1695)

٢٧٣٣ - وَقَالَ عُقَيْلٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ: ((قَالَ عُرْوَةُ فَأَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ كَانَ يَمْتَحِنُهُنَّ. وَبَلَغَنَا أَنَّهُ لَمَّا أَنْزَلَ اللّٰهُ تَعَالَى أَنْ يَرُدُّوا إِلَى الْمُشْرِكِينَ

2733. अक़ील ने ज़ुहरी से बयान किया, उनसे उर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) औरतों का (जो मक्का से मुसलमान होने की वजह से हिजरत करके मदीना आती थीं) इम्तिहान लेते थे (ज़ुहरी ने) बयान किया कि हम तक ये रिवायत पहुँची है कि जब अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की कि

مَا أَنْفَقُوا عَلَى مَنْ هَاجَرَ مِنْ أَزْوَاجِهِمْ، وَحَكَمَ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ أَنْ لاَ يُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ، أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ طَلَّقَ امْرَأَتَيْنِ -: قَرِيْبَةَ بِنْتِ أَبِي أُمَيَّةَ، وَابْنَةَ جَرْوَلٍ الْخُزَاعِيِّ فَتَزَوَّجَ قَرِيْبَةَ مُعَاوِيَةُ وَتَزَوَّجَ الأُخْرَى أَبُو جَهْمٍ. فَلَمَّا أَبَى الْكُفَّارُ أَنْ يُقِرُّوا بِأَدَاءِ مَا أَنْفَقَ الْمُسْلِمُونَ عَلَى أَزْوَاجِهِمْ أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ﴾ [الممتحنة: ١١] وَالْعَقَبُ مَا يُؤَدِّي الْمُسْلِمُونَ إِلَى مَنْ هَاجَرَتِ امْرَأَتُهُ مِنَ الْكُفَّارِ، فَأَمَرَ أَنْ يُعْطَى مَنْ ذَهَبَ لَهُ زَوْجٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ مَا أَنْفَقَ مِنْ صَدَاقِ نِسَاءِ الْكُفَّارِ اللاَّئِيْ هَاجَرْنَ، وَمَا نَعْلَمُ أَحَدًا مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ ارْتَدَّتْ بَعْدَ إِيْمَانِهَا. وَبَلَغَنَا أَنَّ أَبَا بَصِيْرِ بْنَ أَسِيْدٍ الثَّقَفِيَّ قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ مُؤْمِنًا مُهَاجِرًا فِي الْمُدَّةِ، فَكَتَبَ الأَخْنَسُ بْنُ شَرِيْقٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَسْأَلُهُ أَبَا بَصِيْرٍ فَذَكَرَ الْحَدِيْثَ [راجع: ٢٧١٣]

मुसलमान वो सब कुछ उन मुश्रिकों को वापस कर दें जो उन्होंने अपनी उन बीवियों पर खर्च किया हो जो (अब मुसलमान होकर) हिजरत कर आई हैं और मुसलमानों को हुक्म दिया कि काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रखें तो उमर (रज़ि.) ने अपनी दो बीवियों क़ुरैबा बिन्ते अबी उमय्या और एक ज़र्वल ख़ुज़ाई की लड़की को तलाक़ दे दी। बाद में क़ुरैबा से मुआविया (रज़ि.) ने शादी कर ली और दूसरी बीवी से अबू जहम ने शादी कर ली थी लेकिन जब कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों के उन अख़राजात को अदा करने से इंकार किया जो उन्होंने अपनी (काफिरा) बीवियों पर किये थे तो अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई, और तुम्हारी बीवियों में से कोई काफ़िरों के यहाँ चली गई तो वो मुआवज़ा तुम ख़ुद ही ले लो, ये वो मुआवज़ा था जो मुसलमान कुफ़्फ़ार में से उस शख़्स को देते जिसकी बीवी हिजरत करके (मुसलमान होने के बाद किसी मुसलमान के निकाह में आ गई हो) पस अल्लाह ने अब ये हुक्म दिया कि जिस मुसलमान की बीवी मुर्तद होकर (कुफ़्फ़ार के यहाँ) चली जाए उसके (महर व नफ़्क़ा के) अख़राजात उन कुफ़्फ़ार की औरतों के महर से अदा कर दिये जाएँ जो हिजरत करके आ गई हैं (और किसी मुसलमान ने उनसे निकाह कर लिया है) अगरचे हमारे पास उसका कोई षुबूत नहीं कि कोई मुहाजिरा भी ईमान के बाद मुर्तद हुई हो और हमें ये रिवायत भी मा'लूम हुई कि अबू बसीर बिन उसैद षक़्फ़ी (रज़ि.) जब नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मोमिन व मुहाजिर की हैषियत से मुआहिदा की मुद्दत के अन्दर ही हाज़िर हुए तो अख़नस बिन शुरैक़ ने नबी करीम (ﷺ) को एक तहरीर लिखी जिसमें उसने (अबू बसीर रज़ि. की वापसी का) मुतालबा आपसे किया था। फिर उन्होंने हदीष पूरी बयान की। (राजेअ : 2713)

तश्रीह : ये वाक़िया 6 हिजरी का है आँहज़रत (ﷺ) पीर के दिन ज़ीक़अदा के आख़िर मे मदीना से उमरह का इरादा करके निकले। आप (ﷺ) के साथ सात सौ मुसलमान थे और सत्तर ऊँट क़ुर्बानी के, हर दस आदमी में एक ऊँट। एक रिवायत में आपके साथियों की ता'दाद चौदह सौ बतलाई है। आपने बसर बिन सुफ़यान को क़ुरैश की ख़बर लाने के लिये भेजा था, उसने वापस आकर बतलाया कि क़ुरैश के लोग आपके आने की ख़बर सुनकर ज़ीतुवा में आ गए हैं और ख़ालिद बिन वलीद उनके सवारों के साथ किराअुल ग़मीम नामी जगह में आ ठहरे हैं, ये जगह मक्का से दो मील पर है। इस रिवायत में वाक़िया हुदैबिया की तफ़्सीलात मौजूद हैं। रिवायत में क़स्वा ऊँटनी का ज़िक्र है, उस पर आँहज़रत (ﷺ) सवारी करते थे, ये तमाम ऊँटों में आगे

रहती, आप (ﷺ) ने उस पर सवार होकर हिजरत की थी। रिवायत मे तिहामा का ज़िक्र है, ये मक्का और उसके अतराफ़ की बस्तियों को कहते हैं, तहम गर्मी की शिद्दत को कहते हैं, ये इलाक़ा बेहद गरम है, इसीलिये तिहामा नाम से मौसूम हुआ। कअ़ब बिन लुवी कुरैश के जद्दे आला हैं । ऊज़ुल् मताफ़ील का लफ़्ज़ जो रिवायत में आया है उसके दो मा'नी हैं एक बच्चेदार ऊँटनियाँ जो अभी बच्चा जनी हों और काफ़ी दूध दे रही हों। दूसरे इंसानों के बाल–बच्चे। दोनों सूरतों में मतलब यह है कि कुरैश के लोग चश्मों पर ज़्यादा दिनों तक रहने के लिये, अपने ऊँट-ऊँटनियों और बाल-बच्चे लेकर आए हैं ताकि वो अ़र्सा तक आपसे जंग करते रहें। उ़र्वा बिन मसऊ़द (रज़ि.) जो कुरैश के नुमाइन्दे बनकर आप (ﷺ) से सुलह की बातचीत करने आए थे, ये छः साल बाद ख़ुद मुसलमान होकर मुबल्लिग़ की हैषियत से अपनी क़ौम की तरफ़ गये थे। आज ये आँहज़रत (ﷺ) को समझने समझाने का ख़्याल लेकर आए थे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने जब उसका ये जुम्ला सुना कि ये मुतफ़र्रिक़ क़बाइल के लोग जो मुसलमान होकर आपके आसपास जमा हैं, हार होने की सूरत में आपको छोड़कर भाग जाएँगे, उसके जवाब में गुस्सा होकर कहा था कि तू वापस जाकर अपने मा'बूद लात की शर्मगाह चूस ले, ये ख़्याल हर्गिज़ न करना कि हम लोग आँहज़रत (ﷺ) को छोड़कर चले जाएँगे। मुग़ीरह बिन शुअ़बा जिसको उ़र्वा ने ग़द्दार क़रार दिया था। कहते हैं ये उ़र्वा के भतीजे थे, एक होने वाली जंग में जो मुग़ीरह की क़ौम के बारे में थी, उ़र्वा ने बीच–बचाव करा दिया था। उस एहसान को जतला रहे थे। बनू किनाना मे से आने वाले का नाम हलीस बिन अ़ल्क़मा हारषी था। वो हब्शियों का सरदार था, आपने उसके बारे में जो फ़र्माया था वो बिलकुल सहीह षाबित हुआ कि उसने कुर्बानी के जानवर को देखकर, मुसलमानों से लब्बैक के नारे सुनकर बड़े अच्छे लफ़्ज़ों में मुसलमानों का ज़िक्रे ख़ैर किया और मुसलमानों के हक़ में सिफ़ारिश की। सुलह हुदैबिया का मतन लिखने वाले हज़रत अ़ली कर्रमल्लाह वजहहू थे। जिन दफ़आत के तहत से सुलह नामा लिखा गया उनका इख़्तिसार ये है (1) दस साल तक आपस में सुलह रहेगी, दोनों तरफ़ के लोगों की आमद व रफ़्त में किसी तरह की रोक–टोक न होगी (2) जो क़बीले चाहें कुरैश से मिल जाएँ और जो क़बीले चाहें वो मुसलमानों के साथ शामिल हो जाएँ, हलीफ़ क़बीलों के हुक़ूक़ भी यही होंगे (3) अगले साल मुसलमानों को तवाफ़े का'बा की इजाज़त होगी, उस वक़्त हथियार उनके जिस्म पर न होंगे जो सफ़र में साथ हों (4) अगर कुरैश में से कोई शख़्स नबी (ﷺ) के पास मुसलमान होकर चला जाए तो कुरैश के तलब करने पर वो शख़्स वापस करना होगा लेकिन अगर कोई शख़्स इस्लाम छोड़कर कुरैश से जा मिले तो कुरैश उसे वापस नही करेंगे। आख़िरी शर्त सुनकर सिवाय हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के सारे मुसलमान घबरा गए। हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) इस बारे में ज़्यादा पुरजोश थे लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने हंसकर इस शर्त को भी मंज़ूर कर लिया।

मुआहिदे की आख़िरी शर्त की निस्बत कुरैश का ख़्याल था कि इससे डरकर आइन्दा कोई शख़्स मुसलमान न होगा। लेकिन ये शर्त अभी लिखी भी न गई थी कि उस मजलिस में अबू जन्दल (रज़ि.) पहुँच गए जिनको मुसलमान होने की वजह से कुरैश ने क़ैद कर रखा था और अब वो मौक़ा पाकर ज़ंजीरों समेत ही भागकर इस्लामी लश्कर में पहुँच गए थे। कुरैश के नुमाइन्दे सुहैल ने कहा कि इसे हमारे हवाले किया जाए आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अहदनामा के मुकम्मल हो जाने पर इसके ख़िलाफ़ न होगा अभी चूँकि ये नामुकम्मल है लिहाज़ा अबू जन्दल को वापस नहीं किया जा सकता, इस पर सुहैल ने कहा कि तब हम सुलह नहीं करते। आख़िर अबू जन्दल (रज़ि.) वापस कर दिये गये, उन हालात को देखकर, मुसलमान बहुत तैश में आ गये और उ़मर (रज़ि.) तो इस क़दर बिगड़े कि वो उस जुर्अत पर उम्र भर पछताते रहे मगर उस अहम मौक़े पर हज़रत सय्यिदना अबूबक्र (रज़ि.) की उलुल अ़ज़्मी क़ाबिले सद तहसीन है कि आपने उन हालात का कोई अषर नहीं लिया और आँहज़रत (ﷺ) के हर क़दम की आप (रज़ि.) ता'रीफ़ ही करते रहे। **रज़ियल्लाहु अन्हुम**

बाब 16 : क़र्ज़ में शर्त लगाना

١٦- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْقَرْضِ

और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और अ़ता बिन अबी रिबाह (रज़ि.) ने कहा कि अगर क़र्ज़ (की अदायगी) के लिये कोई मुद्दत मुक़र्रर की जाए तो ये जाइज़ है।

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ وَعَطَاءٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: إِذَا أَجَلَهُ فِي الْقَرْضِ جَازَ.

2734. और लैष़ ने कहा कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन हुर्मुज़ ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक शख़्स का ज़िक्र किया जिन्होंने बनी इस्राईल के किसी दूसरे शख़्स से एक हज़ार अशरफ़ी क़र्ज़ मांगा और उसने एक मुक़र्रर मुद्दत तक के लिये दे दिया। (राजेअ़ : 1498)

٢٧٣٤- وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيْعَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ ذَكَرَ رَجُلاً سَأَلَ بَعْضَ بَنِي إِسْرَائِيْلَ أَنْ يُسْلِفَهُ أَلْفَ دِيْنَارٍ فَدَفَعَهَا إِلَيْهِ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى)). [راجع: ١٤٩٨]

मा'लूम हुआ कि क़र्ज़ देने वाला ऐसी जाइज़ शर्तें लगा सकता है और अदा करने वाले पर लाज़िम होगा कि उन ही शर्तों के तहत वक़्ते मुक़र्ररा पर वो क़र्ज़ अदा कर दे। बनी इस्राईल के उन दो शख़्सों का ज़िक्र पीछे तफ़्सील से गुज़र चुका है।

बाब 17 : मकातब का बयान और जो शर्तें उसकी किताबुल्लाह के मुख़ालिफ़ हैं, उनका जाइज़ न होना

١٧- بَابُ الْمُكَاتَبِ، وَمَا لاَ يَحِلُّ مِنَ الشُّرُوطِ الَّتِي تُخَالِفُ كِتَابَ اللهِ

मुकातब वो लौण्डी या गुलाम जो अपनी आज़ादी के लिये मुक़र्ररा शर्तों के साथ अपने आक़ा से तहरीरी मुआहिदा कर ले।

और जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने मुकातब के बारे में कहा कि उनकी (या'नी मुकातब और उसके मालिक की) जो शर्तें हों वो मोतबर होंगी और इब्ने उ़मर या उ़मर (रज़ि.) ने (रावी को शक है) कहा कि हर वो शर्त जो किताबुल्लाह के मुख़ालिफ़ हो वो बातिल है ख़्वाह ऐसी सौ शर्तें भी लगाई जाएँ। अबू अ़ब्दुल्लाह हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि बयान किया जाता है कि उ़मर और इब्ने उ़मर (रज़ि.) दोनों से यही क़ौल मरवी है।

وَقَالَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي الْمُكَاتَبِ: شُرُوطُهُمْ بَيْنَهُمْ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ - أَوْ عُمَرُ - رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: كُلُّ شَرْطٍ خَالَفَ كِتَابَ اللهِ فَهُوَ بَاطِلٌ، وَإِنِ اشْتَرَطَ مِائَةَ شَرْطٍ. وَقَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: يُقَالُ عَنْ كِلَيْهِمَا، عَنْ عُمَرَ وَابْنِ عُمَرَ.

2735. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, यह्या बिन सईद अंसारी (रज़ि.) से, उनसे अ़म्र ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बरीरा (रज़ि.) अपनी मुकातबत के सिलसिले में उनसे मदद मांगने आईं तो उन्होंने कहा कि अगर तुम चाहो तुम्हारे मालिकों को (पूरी क़ीमत) दे दूँ और तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम होगी। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो आपसे मैंने इसका ज़िक्र किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें तू ख़रीद ले और आज़ाद कर दे। विलाअ तो बहरहाल उसी के साथ क़ायम होगी जो आज़ाद कर दे। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया उन लोगों को क्या हो गया है जो ऐसी शर्तें लगाते हैं जिनका कोई पता किताबुल्लाह में नहीं है, जिसने भी कोई ऐसी

٢٧٣٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَتَتْهَا بَرِيْرَةُ تَسْأَلُهَا فِي كِتَابَتِهَا فَقَالَ: إِنْ شِئْتِ أَعْطَيْتُ أَهْلَكِ وَيَكُونُ الْوَلاَءُ لِي. فَلَمَّا جَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ذَكَرَتْهُ ذَلِكَ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ابْتَاعِيْهَا فَأَعْتِقِيْهَا، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)) ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: ((مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَشْتَرِطُوْنَ شُرُوطًا لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللهِ؟ مَنِ اشْتَرَطَ شَرْطًا

शर्त लगाई जिसका पता किताबुल्लाह में नहीं है तो ख़्वाह ऐसी सौ शर्तें लगा ले उनसे कुछ फ़ायदा नहीं उठाएगा। (राजेअ : 456)

لَيْسَ فِي كِتَابِ اللهِ فَلَيْسَ لَهُ وَإِنِ اشْتَرَطَ مِائَةَ شَرْطٍ)). [راجع: ٤٥٦]

हज़रत बरीरा के आक़ा आज़ादी के बाद उनकी विलाअ को अपने साथ रखना चाहते थे और इसी शर्त पर वो बरीरा (रज़ि.) को हज़रत आइशा (रज़ि.) की पेशकश के मुताबिक़ आज़ाद करना चाहते थे। उनकी ये शर्त बातिल थी क्योंकि ऐसे लौण्डी गुलामों की विलाअ उनके साथ क़ायम होती है जो अपना रुपया ख़र्च करके उनके आज़ाद कराने वाले हैं। ये भी मा'लूम हुआ कि कोई शख़्स कोई ग़लत शर्त लगाए तो लगाता रहे शरअन वो शर्त बातिल होगी और क़ानून उसे तस्लीम नहीं करेगा।

बाब 18 : इक़रार में शर्त लगाना या इस्तिष्ना करना जाइज़ है और उन शर्तों का बयान

١٨- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الاِشْتِرَاطِ وَالثُّنْيَا فِي الإِقْرَارِ،

जो मुआमलात मे उमूमन लोगो में राइज हैं और अगर कोई यूँ कहे मुझ पर फ़लाँ के सौ दिरहम निकलते हैं मगर एक या दो।

وَالشُّرُوطِ الَّتِي يَتَعَارَفُهَا النَّاسُ بَيْنَهُمْ وَإِذَا قَالَ مِائَةٌ إِلاَّ وَاحِدَةً أَوْ ثِنْتَيْنِ وَقَالَ ابْنُ

तो निन्नावे या अठान्वे दिरहम देने होंगे या'नी अगर यूँ कहा सौ निकलते हैं मगर एक तो निन्नानवे देने होंगे और अगर दो का इस्तिष्ना किया तो अठानवे देने होंगे और क़लील का कष़ीर से इस्तिष्ना बिल इत्तिफ़ाक़ दुरुस्त है। इख़्तिलाफ़ इस इस्तिष्ना में है जो कष़ीर का क़लील हो। जुम्हूर ने इसका भी जाइज़ रखा है।

और इब्ने औन ने इब्ने सीरीन से नक़ल किया कि किसी ने ऊँट वाले से कहा तू अपने ऊँट अंदर लाकर बाँध दे अगर मैं तुम्हारे साथ फ़लाँ दिन तक न जा सका तो तुम सौ दिरहम मुझसे वसूल कर लेना। फिर वे उस दिन तक न जा सका तो क़ाज़ी शुरैह (रह.) ने कहा कि जिसने अपनी ख़ुशी से अपने ऊपर कोई शर्त लगाई और उस पर कोई जबर भी नहीं किया गया था तो वो शर्त उसको पूरी करनी होगी। अय्यूब ने इब्ने सीरीन (रह.) से नक़ल किया कि किसी शख़्स ने अनाज बेचा और ख़रीददार ने कहा कि अगर तुम्हारे पास बुध के दिन तक न आ सका तो मेरे और तुम्हारे बीच बेअ बाक़ी नहीं रहेगी। फिर वो उस दिन तक नहीं आया तो शुरैह (रह.) ने ख़रीददार से कहा कि तूने वा'दा ख़िलाफ़ी की है, आपने फ़ैसला उसके ख़िलाफ़ किया।

عَوْنٍ عَنِ ابْنِ سِيْرِيْنَ: قَالَ رَجُلٌ لِكَرِيِّهِ: أَدْخِلْ رِكَابَكَ، فَإِنْ لَمْ أَرْحَلْ مَعَكَ يَومَ كَذَا وَكَذَا فَلَكَ مِائَةُ دِرْهَمٍ، فَلَمْ يَخْرُجْ، فَقَالَ شُرَيْحٌ: مَنْ شَرَطَ عَلَى نَفْسِهِ طَائِعًا غَيْرَ مُكْرَهٍ فَهُوَ عَلَيْهِ. وَقَالَ أَيُّوبُ عَنِ ابْنِ سِيْرِيْنَ: إِنَّ رَجُلاً بَاعَ طَعَامًا وَقَالَ: إِنْ لَمْ آتِكَ الأَرْبِعَاءَ فَلَيْسَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بَيْعٌ، فَلَمْ يَجِيءْ. فَقَالَ شُرَيْحٌ لِلْمُشْتَرِي: أَنْتَ أَخْلَفْتَ، فَقَضَى عَلَيْهِ.

2736. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला के निन्नानवे नाम हैं या'नी एक कम सौ। जो शख़्स उन सबको महफ़ूज़ रखेगा वो जन्नत में दाख़िल होगा।

٢٧٣٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ للهِ تِسْعَةً وَتِسْعِيْنَ اسْمًا، مِائَةً

إِلاَّ وَاحِدًا، مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ)).
[طرفاه في : ٦٤١٠، ٧٣٩٢].

(दीगर मक़ाम : 6410, 7392)

इस हदीष़ में आँहज़रत (ﷺ) ने सौ में से एक इस्तिष्ना किया। मा'लूम हुआ कष़ीर में से क़लील का इस्तिष्ना दुरुस्त है। अल्लाह पाक के ये निन्नानवे नाम अस्माउल हुस्ना कहलाते हैं। उनमे सिर्फ़ एक नाम या'नी अल्लाह इस्मे ज़ाती है और बाक़ी सिफ़ाती हैं। उनमें से अकष़र क़ुर्आन मजीद में भी मज़्कूर हुए हैं, बाक़ी अहादीष़ में। सबको एकसमान शुमार किया गया है। हमने अपनी मशहूर किताबे मुक़द्दस मज्मूआ के आख़िर में अस्माउल हुस्ना को तर्जुमे के साथ ज़िक्र कर दिया है।

१٩ – بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْوَقْفِ

बाब 19 : वक़्फ़ में शर्तें लगाने का बयान

٢٧٣٧– حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ قَالَ: أَنْبَأَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ أَصَابَ أَرْضًا بِخَيْبَرَ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ يَسْتَأْمِرُهُ فِيْهَا فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي أَصَبْتُ أَرْضًا بِخَيْبَرَ لَمْ أُصِبْ مَالاً قَطُّ أَنْفَسَ عِنْدِي مِنْهُ، فَمَا تَأْمُرُ بِهِ؟ قَالَ: ((إِنْ شِئْتَ حَبَسْتَ أَصْلَهَا وَتَصَدَّقْتَ بِهَا)). قَالَ: فَتَصَدَّقَ بِهَا عُمَرُ أَنَّهُ لاَ يُبَاعُ وَلاَ يُوهَبُ وَلاَ يُوْرَثُ. وَتَصَدَّقَ بِهَا فِي الْفُقَرَاءِ وَفِي الْقُرْبَى وَفِي الرِّقَابِ وَفِي سَبِيْلِ اللهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَالضَّيْفِ، وَلاَ جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهَا أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا بِالْمَعْرُوفِ، وَيُطْعِمَ غَيْرَ مُتَمَوِّلٍ)). قَالَ: فَحَدَّثْتُ بِهِ ابْنَ سِيْرِيْنَ فَقَالَ: ((غَيْرَ مُتَأَثِّلٍ مَالاً)).
[راجع: ٢٣١٣]

2737. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उनसे इब्ने औन ने, कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को ख़ैबर में एक टुकड़ा ज़मीन मिली तो आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मश्वरे के लिये हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे ख़ैबर में एक ज़मीन का टुकड़ा मिला है उससे बेहतर माल मुझे अब तक कभी नहीं मिला था, आप उसके बारे में क्या हुक्म देते हैं? आपने फ़र्माया कि अगर जी चाहे तो अस़ल ज़मीन अपनी मिल्कियत में बाक़ी रख और पैदावार स़दक़ा कर दे। इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर उमर (रज़ि.) ने उसको इस शर्त पर स़दक़ा कर दिया कि न उसे बेचा जाएगा और न उसका हिबा किया जाएगा और न उसमें विराष़त चलेगी। उसे आपने मुहताजों के लिये, रिश्तेदारों के लिये और गुलामों को आज़ाद कराने के लिये, अल्लाह के दीन की तब्लीग़ और इशाअत के लिये और मेहमानों के लिये स़दक़ा (वक़्फ़) कर दिया और ये कि उसका मुतवल्ली अगर दस्तूर के मुताबिक़ उसमें से अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ वसूल कर ले या किसी मुहताज को दे तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं। इब्ने औन ने बयान किया कि जब मैंने इस हदीष़ का ज़िक्र इब्ने सीरीन से किया तो उन्होंने फ़र्माया कि (मुतवल्ली) उसमें से माल जमा करने का इरादा न रखता हो। (राजेअ : 2313)

हदीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है। वाक़िफ़ अपनी वक़्फ़ को जिस जिस तौर चाहे मशरूत कर सकता है, जैसा कि यहाँ हज़रत उमर (रज़ि.) की शर्तों की तफ़्सीलात मौजूद हैं, इस हदीष़ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि वाक़िफ़ अपनी तज्वीज़कर्दा शर्तों के तहत अपने वक़्फ़ पर अपनी ज़ाती मिल्कियत भी बाक़ी रख सकता है और ये भी ष़ाबित हुआ कि वक़्फ़ का मुतवल्ली नेक निय्यती के साथ दस्तूर के मुताबिक़ उसमें से अपना ख़र्च भी वसूल कर सकता है। इस वक़्फ़ नामा में मस़ारिफ़ की एक मद फ़ी सबीलिल्लाह भी मज़्कूर है जिससे मुजाहिदीन की इमदाद मुराद है और वो सारे काम जिनसे अल्लाह के दीन की तब्लीग़ होती हो

जैसे इस्लामी मदारिस और तब्लीग़ी इदारे वग़ैरह वग़ैरह।

वक़्फ़ की ता'रीफ़ में इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, **व हुव फ़िल्लुगति अल्हब्सु युक़ालु वक़फ़्तु कज़ा बिदूनि अलिफ अलल्लुगतिल्फ़सीहि अय हबस्तुहू व फ़िश्शरीअति हब्सुल्यिकि फी सबिलिल्लाहि तआला लिल्फ़ुक़राइ व अब्नाइस्सबीलि युसर्रफ़ु अलैहिम मनाफ़िउहू व यब्क़ा अस्लुहू अला मिल्किल्वाक़िफि व अल्फ़ाज़ुहू वक़फ़्तु व हबस्तु व सबल्तु व अबत्तु हाज़िही स़राइहु अल्फ़ाज़िही व अम्मा किनायतन तसदक़्क़तु वख़्तुलिफ फी हर्रम्तु फ़क़ील सरीहुन वक़ील गैर सरीहिन.** (नैलुल औतार) या'नी वक़्फ़ का लग़्वी मा'नी रोकना है, कहा जाता है कि मैंने इस तरह इसको वक़्फ़ कर दिया या'नी रोक दिया, ठहरा दिया और शरीअत में अपनी किसी मिल्कियत को अल्लाह के रास्ते में रोक देना, वक़्फ़ कर देना कि उसके मुनाफ़े को फ़ुक़रा और मुसाफ़िरों पर खर्च किया जाए और उसकी अस़ल वाक़िफ़ की मिल्कियत में बाक़ी रहे वक़्फ़ की स़ेह़त के लिये अल्फ़ाज़ मैंने वक़्फ़ किया, मैंने उसे रोक दिया वग़ैरह वग़ैरह स़रीह़ अल्फ़ाज़ हैं। बतौर किनाया ये भी दुरुस्त है कि मैंने इसे स़दक़ा कर दिया। लफ़्ज़ हुर्मत मैंने इसके मुनाफ़े का इस्ते'माल अपने लिये हराम क़रार दे लिया, इसको कुछ ने वक़्फ़ के लिये लफ़्ज़ स़रीह़ क़रार दिया और कुछ ने ग़ैर स़रीह़ क़रार दिया है।

ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की ह़दीष़ के ज़ेल इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, **व फ़िल्हदीष़ि फ़वाइदु मिन्हा सुबूतु स़िह्हति अस्लिल्वक़्फ़ि क़ालन्नववी व हाज़ा मज़्हबुना यअनी अइम्मतुश्शाफ़िइय्यति व मज़्हबुल्जमाहीर व यदुल्लु अलैहि अयज़न इज्माउल्मुस्लिमीन अला सिह्हति वक़्फ़िल्मसाजिदि वस्सिक़ायाति व मिन्हा फ़ज़ीलतुल्इन्फ़ाक़ि मिम्मा युह़िब्बु व मिन्हा ज़िक्रू फ़ज़ीलतिन ज़ाहिरतिन लिउमर अन्हु व मिन्हा मुशावरतु अहलिल्फ़ज़्लि वस्सलाहि फ़िल्उमूरि व तरीक़िल्ख़ैरि व मिन्हा फ़ज़ीलतु सिलतिल्अर्हामि वल्वक़्फ़ि अलैहिम** (वल्लाहु आलम नैल)

या'नी इस ह़दीष़ में बहुत से फ़वाइद हैं जिनमें से अस़ल वक़्फ़ की स़ेह़त का षुबूत भी है। बक़ौल अ़ल्लामा नववी अइम्म-ए-शाफ़िइया और जमाहीर का यही मज़हब है और उस पर आम मुसलमानों का इज्माअ भी दलील है जो मसाजिद और कुँए वग़ैरह के वक़्फ़ की स़ेह़त पर हो चुका है और इस ह़दीष़ से खर्च करने की भी फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई जो अपने मह़बूब तरीन माल में से किया जाता है और उससे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी ष़ाबित होती है और उससे अहले इल्म व फ़ज़्ल से स़लाह़ मश्विरा करना भी ष़ाबित हुआ और स़िलारह़मी की फ़ज़ीलत और रिश्ते नाते वालों के लिये वक़्फ़ करने की फ़ज़ीलत भी ष़ाबित हुई।

लफ़्ज़ वक़्फ़ मुख़्तलिफ़ अह़ादीष़ में मुख़्तलिफ़ मा'नी पर बोला गया है जिसकी तफ़्सील किताब लुग़ातुल ह़दीष़ बज़ेल लफ़्ज़ वाव का मुतालआ किया जाए।

55. किताबुल वस़ाया

किताब वसिय्यतों के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : इस बारे में कि वसिय्यतें ज़रूरी हैं

١ – بَابُ الْوَصَايَا وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَصِيَّةُ الرَّجُلِ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ)).

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि आदमी की वसिय्यत लिखी

हुई होनी चाहिये और अल्लाह तआला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया कि, तुम पर फ़र्ज़ किया गया है कि जब तुममें से किसी की मौत आती मा'लूम हो और कुछ माल भी छोड़ रहा हो तो वो वालिदैन और अज़ीज़ों के हक़ में दस्तूर के मुताबिक़ वसिय्यत कर जाए। ये ज़रूरी है परहेज़गारों पर। फिर जो कोई उसे उसके सुनने के बाद बदल डाले सो उसका गुनाह उसी पर होगा जो उसे बदलेगा, बेशक अल्लाह बड़ा सुननेवाला और बड़ा जानने वाला है। अल्बत्ता जिस किसी को वसिय्यत करने वाले के बारे में किसी की तरफ़दारी या हक़तल्फ़ी का इल्म हो जाए फिर वो मवस्सालहू और वारिषों में (वसिय्यत में कुछ कमी करके) मेल करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख़्शिश करने वाला निहायत रहम करने वाला है (आयत में) जनफ़न के मा'नी एक तरफ़ झुक जाने के हैं, मुतजानिफ़ के मा'नी झुकने वाले के हैं।

وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالأَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ. فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُونَهُ، إِنَّ اللهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ. فَمَنْ خَافَ مِنْ مُوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلاَ إِثْمَ عَلَيْهِ، إِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيْمٌ﴾ جَنَفًا: مَيلاً. مُتَجَانِفٌ : مَائِلٌ.

वसिय्यत कहते हैं मरते वक़्त आदमी का कुछ कह जाना कि मेरे बाद ऐसा ऐसा करना, फ़लाँ को ये देना फ़लाँ को ये देना। वसिय्यत करने वाले को मूसी और जिसके लिये वसिय्यत की हो उसको मूसा लहू कहते हैं। आयते मीराष नाज़िल होने के बाद सिर्फ़ तिहाई माल में वसिय्यत करना जाइज़ क़रार दिया गया, बाक़ी माल हिस्सेदारों में तक़सीम होगा।

2738. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी नाफ़ेअ से, वो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया किसी मुसलमान के लिये जिनके पास वसिय्यत के क़ाबिल कोई भी माल हो दुरुस्त नहीं कि दो रात भी वसिय्यत को लिखकर अपने पास महफ़ूज़ रखे बग़ैर गुज़ारे। इमाम मालिक के साथ इस रिवायत की मुताबअत मुहम्मद बिन मुस्लिम ने अम्र बिन दीनार से की है, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है।

٢٧٣٨– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَا حَقُّ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ لَهُ شَيْءٌ يُوصِي فِيْهِ يَبِيْتُ لَيْلَتَيْنِ إِلاَّ وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ)). تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ عَمْرٍو عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तश्रीह: आयते शरीफ़ा **कुतिब अलैकु इज़ा हज़र अहदुकुमुल्मौतु व इन तरकनिल्वसिय्यतु** (अल बक़र: 180) आयते मीराष से पहले नाज़िल हुई। उस वक़्त वसिय्यत करना फ़र्ज़ था। जब मीराष की आयत उतरी तो वसिय्यत की फ़र्ज़ियत जाती रही और वारिष के लिये वसिय्यत करना मना हो गया जैसा कि अम्र बिन ख़ारिजा की रिवायत में है **इन्नल्लाह आता कुल्ल ज़ीहक़्क़िन हक़्क़हु फला वसिय्यत लिवारिषिन** (अख़रजहू अस्हाबुस्सुन्नति) और ग़ैर वारिष के लिये वसिय्यत जाइज़ रह गई। आयते शरीफ़ा **फमन बद्दलहू बअद मा समिअहू** (अल बक़र: 181) का मतलब ये है कि वसिय्यत बदल देना गुनाह है मगर जिस सूरत में मूसी ने ख़िलाफ़े शरीअत वसिय्यत की हो और षुलुष से ज़ाइद किसी को दिलाकर वारिषों की हक़ तल्फ़ी की हो तो ऐसी ग़लत वसिय्यत को बदल डालना मना नहीं है। ज़रूरी है कि मूसा लहू और दीगर वारिषों में सुलह सफ़ाई करा दे और मुताबिक़े शरीअत फ़ैसला करके वसिय्यत की इस्लाह कर दे। **वसिय्यतुर्रजुलि मक्तूबुन इन्दहु**

ये मज़्मून ख़ुद बाब की ह़दीष़ में आगे आ रहा है मगर उसमें मर्अुन का लफ़्ज़ है और लफ़्ज़ रजुल के साथ ये ह़दीष़ नहीं मिली। शायद ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसे बिल मा'नी रिवायत किया हो क्योंकि मर्अुन रजुल ही को कहते हैं और रजुल की क़ैद ए'तिबारे अकष़र के है वरना औरत और मर्द दोनों की वसिय्यत सह़ीह़ होने में कोई फ़र्क़ नहीं, इसी त़रह नाबालिग़ की वसिय्यत भी सह़ीह़ है, जब वो अक़्ल और होश रखता हो। हमारे इमाम अह़मद बिन ह़ंबल और इमाम मालिक का यही क़ौल है लेकिन ह़न्फ़िया और शाफ़िइया ने इसको जाइज़ कहाँ रखा है। इमाम अह़मद ने ऐसे लड़के की उ़म्र का अंदाज़ा सात बरस या दस बरस किया है। वसिय्यत का हर वक़्त लिखा हुआ होना इसलिये ज़रूरी है कि मौत का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं है न मा'लूम कब अल्लाह पाक का हुक्म हो और इंसान का आख़िरी सफ़र शुरू हो जाए, लिहाज़ा लाज़िम है कि उस सफ़र के लिये हर वक़्त तैयार रहे और अपने बाद के लिये ज़रूरी मुआमलात के वास्ते उसे जो बेहतर मा'लूम हो वो लिखा हुआ अपने पास तैयार रखे। ह़दीष़ **कुन फ़िद् दुनिया कअन्नक ग़रीब** का भी यही मत़लब है कि दुनिया में हर वक़्त मुसाफ़िराना ज़िन्दगी गुज़ारना न मा'लूम कब कूच का वक़्त आ जाए।

٢٧٣٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ خَتَنِ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَخِي جُوَيْرِيَةَ بِنْتِ الْحَارِثِ قَالَ: ((مَا تَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عِنْدَ مَوْتِهِ دِرْهَمًا وَلاَ دِيْنَارًا وَلاَ عَبْدًا وَلاَ أَمَةً وَلاَ شَيْئًا، إِلاَّ بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ وَسِلاَحَهُ وَأَرْضًا جَعَلَهَا صَدَقَةً)).

[أطرافه في : ٢٨٧٣، ٢٩١٢، ٣٠٩٨].

2739. हमसे इब्राहीम बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे यह़्या इब्ने अबी बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ज़ुबैर बिन मुआविया जअ़फ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू इस्ह़ाक़ अ़म्र बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) के निस्बती भाई अ़म्र बिन ह़ारिष़ (रज़ि.) ने जो जुवैरिया बिन्ते ह़ारिष़ (रज़ि.) (उम्मुल मोमिनीन) के भाई हैं, बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी वफ़ात के बाद सिवाए अपने सफ़ेद ख़च्चर, अपने हथियार और अपनी ज़मीन के जिसे आप (ﷺ) ने वक़्फ़ कर गए थे, न कोई दिरहम छोड़ा था न दीनार न ग़ुलाम न बान्दी और न कोई चीज़। (दीगर मक़ाम : 2873, 2912, 3098)

या'नी अपनी सेह़त की ह़ालत मे आपने ये ज़मीन वक़्फ़ फ़र्मा दी थी फिर वफ़ात के वक़्त भी उसकी ताकीद फ़र्मा दी। कुछ ने कहा व जअलहा सदक़तन की ज़मीर तीनों की त़रफ़ फिरती है या'नी खच्चर और हथियार और ज़मीन सबको वक़्फ़ कर दिया था।

इस ह़दीष़ की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से यूँ है कि वक़्फ़ का अष़र मरने के बाद भी रहता है तो वो वसिय्यत के हुक्म में हुआ।

٢٧٤٠- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا مَالِكٌ حَدَّثَنَا طَلْحَةُ بْنُ مُصَرِّفٍ قَالَ: ((سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: هَلْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَوْصَى؟ فَقَالَ: لاَ. فَقُلْتُ: كَيْفَ كُتِبَ عَلَى النَّاسِ الْوَصِيَّةُ أَوْ أُمِرُوا بِالْوَصِيَّةِ؟ قَالَ: أَوْصَى بِكِتَابِ اللهِ)).

2740. हमसे ख़ल्लाद बिन यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, कहा हमसे त़लहा बिन मुसर्रिफ़ ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सवाल किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कोई वसिय्यत की थी? उन्होंने कहा कि नहीं। उस पर मैंने पूछा कि फिर वसिय्यत किस तरह लोगों पर फ़र्ज़ हुई? या (रावी ने इस त़रह बयान किया) कि लोगों को वसिय्यत का हुक्म क्यूँ हुआ? उन्होंने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने लोगों को किताबुल्लाह पर अ़मल करने

की वसिय्यत की थी। (और किताबुल्लाह में वसिय्यत करने का हुक्म मौजूद है) (दीगर मक़ाम : 4460, 5022)

[طرفاه في: ٤٤٦٠، ٥٠٢٢].

तश्रीह : बाब का मत्लब इससे निकला कि लोगों पर वसिय्यत कैसे फ़र्ज़ हुई? अल्लाह की किताब पर चलने का हुक्म एक जामेअ वसिय्यत है जो शरीअत के सारे अहकाम को शामिल है, जब तक मुसलमान उस वसिय्यत पे क़ायम रहे और क़ुर्आन व हदीष़ पर चलते रहे उनकी दिन दोगुनी रात चौगुनी तरक़्क़ी होती गई और जबसे क़ुर्आन व हदीष़ को पसे पुश्त डाल दिया और हर एक ने अपनी राय और क़यास को अस़ल बनाया, फूट पड़ गई, अलग अलग मज़ाहिब बन गए और हर जगह मुसलमान मुतफ़र्रिक़ हो गये। स़हीह़ मुस्लिम में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने वसिय्यत फ़र्माई थी कि जज़ीर-ए-अरब को यहूदियों से पाक कर देना, ज़िम्मी काफ़िरों की हर मुम्किन ख़ातिर मदारात करना जैसे कि मैं करता हूँ। ह़ज़रत अली (रज़ि.) के बारे में वस़ी होने की कोई स़हीह़ ह़दीष़ किसी भी मुस्तनद किताब में मन्क़ूल नहीं है।

2741. हमसे अम्र बिन ज़ुरारह ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन अलिया ने ख़बर दी अब्दुल्लाह बिन औन से, उन्हें इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) के यहाँ कुछ लोगों ने ज़िक्र किया कि अली कर्रमल्लाह वज्हुहू (नबी अकरम के) वस़ी थे तो आपने कहा कि कब उन्हें वस़ी बनाया। मैं तो आपके विस़ाल के वक़्त सरे मुबारक अपने सीने पर या उन्होंने (बजाय सीने के) कहा कि अपनी गोद में रखे हुए थी फिर आपने (पानी का) त़श्त मंगवाया था कि इतने में (सरे मुबारक) मेरी गोद में झुक गया और मैं समझ न सकी कि आपकी वफ़ात हो चुकी है तो आपने अली को वस़ी कब बनाया? (दीगर मक़ाम : 4459)

٢٧٤١- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ : ((ذَكَرُوا عِنْدَ عَائِشَةَ أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ وَصِيًّا، فَقَالَتْ: مَتَى أَوْصَى إِلَيْهِ وَقَدْ كُنْتُ مُسْنِدَتَهُ إِلَى صَدْرِي - أَوْ قَالَتْ: حَجْرِي - فَدَعَا بِالطَّسْتِ، فَلَقَدِ انْخَنَثَ فِي حَجْرِي فَمَا شَعَرْتُ أَنَّهُ قَدْ مَاتَ، فَمَتَى أَوْصَى إِلَيْهِ؟)). [طرفه في : ٤٤٥٩].

ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) का मत़लब ये है कि बीमारी से लेकर वफ़ात तक तो आँह़ज़रत (ﷺ) मेरे पास ही रहे, मेरी ही गोद में इंतिक़ाल फ़र्माया, अगर ह़ज़रत अली (रज़ि.) को वस़ी बनाते या'नी अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर करते जैसे शिआ गुमान करते तो मुझको तो ज़रूर ख़बर होती पस शियों का ये दा'वा बिलकुल बिला दलील है।

बाब 2 : अपने वारिष़ों को मालदार छोड़ना उससे बेहतर है कि वो लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें

٢- بَابُ أَنْ يَتْرُكَ وَرَثَتَهُ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ يَتَكَفَّفُوا النَّاسَ

2742. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया सअद बिन इब्राहीम से, उनसे आमिर बिन सअद ने और उनसे सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (हज्जतुल विदाअ में) मेरी अयादत को तशरीफ़ लाए, मैं उस वक़्त मक्का में था। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उस सरज़मीन पर मौत को पसन्द नहीं करते थे जहाँ से कोई हिजरत कर चुका हो। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह इब्ने अफ़राअ (सअद बिन ख़ौला रज़ि) पर रहम करे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह

٢٧٤٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((جَاءَ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُنِي وَأَنَا بِمَكَّةَ، وَهُوَ يَكْرَهُ أَنْ يَمُوتَ بِالأَرْضِ الَّتِي هَاجَرَ مِنْهَا، قَالَ: ((يَرْحَمُ اللهُ ابْنَ عَفْرَاءَ)). قُلْتُ: يَا

(ﷺ)! मैं अपने सारे माल व दौलत की वसिय्यत कर दूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने पूछा फिर आधे की कर दूँ? आप (ﷺ) ने उस पर भी यही फ़र्माया कि नहीं। मैंने पूछा फिर तिहाई की कर दूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया तिहाई कर सकते हो और ये भी बहुत है, अगर तुम अपने वारिषों को अपने पीछे मालदार छोड़ो तो ये उससे बेहतर है कि उन्हें मुहताज छोड़ो के लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें, इसमें कोई शक नहीं कि जब तुम अपनी कोई चीज़ (अल्लाह के लिये ख़र्च करोगे) तो वो ख़ैरात है, यहाँ तक कि वो लुक़्मा भी जो तुम अपनी बीवी के मुँह में डालोगे (वो भी ख़ैरात है) और (अभी वसिय्यत करने की कोई ज़रूरत भी नहीं) मुम्किन है कि अल्लाह तआला तुम्हें शिफ़ा दे और उसके बाद तुमसे बहुत से लोगों को फ़ायदा हो और दूसरे बहुत से लोग (इस्लाम के मुख़ालिफ़) नुक़्सान उठाएँ। उस वक़्त हज़रत सअद (रज़ि.) की सिर्फ़ एक बेटी थीं।

رَسُوْلَ اللهِ أُوْصِي بِمَالِي كُلِّهِ؟ قَالَ: ((لاَ)). قُلْتُ: فَالشَّطْرُ؟ قَالَ: ((لاَ)). قُلْتُ: الثُّلُثُ؟ قَالَ: ((فَالثُّلُثُ، وَالثُّلُثُ كَثِيْرٌ، إِنَّكَ أَنْ تَدَعَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَدَعَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُوْنَ النَّاسَ فِي أَيْدِيْهِمْ وَإِنَّكَ مَهْمَا أَنْفَقْتَ مِنْ نَفَقَةٍ فَإِنَّهَا صَدَقَةٌ، حَتَّى اللُّقْمَةُ تَرْفَعُهَا إِلَى فِيْ امْرَأَتِكَ، وَعَسَى اللهُ أَنْ يَرْفَعَكَ فَيَنْتَفِعَ بِكَ نَاسٌ وَيُضَرَّ بِكَ آخَرُوْنَ. وَلَمْ يَكُنْ لَهُ يَوْمَئِذٍ إِلاَّ ابْنَةٌ)).

एक रिवायत में है कि हजरत सअद (रज़ि.) उस बीमारी में नाउम्मीदी की हालत को पहुँच चुके थे। आपने आँहज़रत (ﷺ) के सामने सारे माल के वक़्फ़ करने का ख़्याल ज़ाहिर किया मगर आँहज़रत (ﷺ) ने आपकी ढारस बँधाई और आप (रज़ि.) को सेहत की बशारत दी चुनाँचे आप बाद में तक़रीबन पचास साल ज़िन्दा रहे और तारीख़े इस्लाम मे आपने बड़े अज़ीम कारनामे अंजाम दिये (रज़ि.) मुअर्रिख़ीन ने उनके दस बेटे और बारह बेटियाँ बतलाई हैं वल्लाहु आलम बिस्सवाब

बाब 3 : तिहाई माल की वसिय्यत करने का बयान

٣- بَابُ الْوَصِيَّةِ بِالثُّلُثِ

और इमाम हसन बसरी (रह.) ने कहा कि ज़िम्मी काफ़िर के लिये भी तिहाई माल से ज़्यादा की वसिय्यत नाफ़िज़ न होगी। अल्लाह तआला ने सूरह माइदह मे फ़र्माया कि आप उनमें ग़ैर–मुस्लिमों में भी इसके मुताबिक़ फ़ैसला कीजिए जो अल्लाह तआला ने आप पर नाज़िल किया है।

وَقَالَ الْحَسَنُ: لاَ يَجُوْزُ لِلذِّمِّيِّ وَصِيَّةٌ إِلاَّ الثُّلُثُ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَأَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ﴾ [المائدة: ٤٩].

तश्रीह : ज़िम्मी और मुसलमानों का एक ही हुक्म है किसी की वसिय्यत तिहाई माल से ज़्यादा नाफ़िज़ न होगी। इमाम मालिक और शाफ़िई और इमाम अहमद का यही क़ौल है कि वसिय्यत तिहाई माल से ज़्यादा में नाफ़िज़ न होगी, अगर मय्यत के वारिष न हों तो बाक़ी माल बैतुलमाल में रखा जाएगा और हन्फ़िया का ये क़ौल है कि अगर वारिष न हों या वारिष हों और वो इजाज़त दें तो तिहाई से ज़्यादा में भी वसिय्यत नाफ़िज़ हो सकती है। इब्ने बत्ताल ने कहा कि इमाम बुख़ारी (रह.) ने इमाम हसन बसरी (रह.) का क़ौल लाकर हन्फ़िया पर रद्द किया है और इसीलिये क़ुर्आन की ये आयत लाए, **व अनिहकुम बयनहुम बिमा अन्ज़लल् लाहु** (अल् माइदा : 49) क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) का हुक्म भी **बिमा अन्ज़लल्लाहु** में दाख़िल है (वहीदी) **क़ाल इब्नु बत्ताल अरादल्बुख़ारी बिहाज़र्रद्दि अला मन क़ाल कल्हनफ़िय्यति लिजवाज़िल्वसिय्यति बिज़्ज़ियादति अल्षुलुषि लिमन ला वारिष लहू व कज़ालिक इहतज्ज बिक़ौलिही व अनिहकुम बैनहुम बिमा अन्ज़लल्लाहु वल्लज़ी हकम बिहीन्नबिय्यु (ﷺ) मिनष्षुलुषि व हुवल्हुक्मु बिमा अन्ज़लल्लाहु फमन तजावज़ माहद्दहू फ़क़द अता मा नुहिय अन्हु व क़ाल इब्नुलमुनीर लम युरिदिल्बुख़ारी हाज़ा**

व इन्नमा अरादल्इस्तिश्हाद बिल्आयति अला अन्नल्लज़ी इज़ा तहाकम इलैना वरषतहू ला तन्फ़ुज़ु मिन वसिय्यतिही इल्ला बिष्षुलुषि लिअन्न ला नहकुमु फीहिम इल्ला बिहुक्मिल्इस्लामि लिक़ौलिही तआला व अनिहकुम बैनहुम बिमा अन्ज़लल्लाहु अल्आयः (फ़त्हुल बारी) इबारत का ख़ुलासा वही है जो मज़्कूर हुआ।

٢٧٤٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَوْ غَضَّ النَّاسُ إِلَى الرُّبُعِ، لأَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الثُّلُثُ، وَالثُّلُثُ كَثِيْرٌ أَوْ كَبِيْرٌ)).

2743. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, काश! लोग (वसिय्यत को) चौथाई तक कम कर देते तो बेहतर होता क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तुम तिहाई (की वसिय्यत कर सकते हो) और तिहाई भी बहुत है या (आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया) ये बड़ी रक़म है।

٢٧٤٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيْمِ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ عَدِيٍّ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنِ هَاشِمٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَرِضْتُ فَعَادَنِي النَّبِيُّ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، ادْعُ اللهَ أَنْ لاَ يَرُدَّنِي عَلَى عَقِبِي. قَالَ: ((لَعَلَّ اللهَ يَرْفَعُكَ، وَيَنْفَعُ بِكَ نَاسًا)). قُلْتُ: أُرِيْدُ أَنْ أُوصِيَ وَإِنَّمَا لِيَ ابْنَةٌ، قُلْتُ أُوصِي بِالنِّصْفِ؟ قَالَ: ((النِّصْفُ كَثِيْرٌ)). قُلْتُ: فَالثُّلُثُ؟ قَالَ: ((الثُّلُثُ وَالثُّلُثُ كَثِيْرٌ - أَوْ كَبِيْرٌ - قَالَ: فَأَوصَى النَّاسُ بِالثُّلُثِ فَجَازَ ذَلِكَ لَهُمْ)).

2744. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन अदी ने बयान किया, उनसे मरवान बिन मुआविया ने, उनसे हाशिम इब्ने हाशिम ने, उनसे आमिर बिन सअद ने और उनसे उनके बाप सअद बिन अबी वक़्क़ास ने बयान किया कि मैं मक्का में बीमार पड़ा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरी अयादत के लिये तशरीफ़ लाए। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे लिये दुआ कीजिए कि अल्लाह मुझे उलटे पाँव वापस न कर दे (या'नी मक्का में मेरी मौत न हो) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुम्किन है कि अल्लाह तआला तुम्हें सेहत दे और तुमसे बहुत से लोग नफ़ा उठाएँ। मैंने अर्ज़ किया मेरा इरादा वसिय्यत करने का है। एक लड़की के सिवा और मेरे कोई (औलाद) नहीं। मैंने पूछा क्या आधे माल की वसिय्यत कर दूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया आधा तो बहुत है। फिर मैंने पूछा तो तिहाई की कर दूँ? फ़र्माया कि तिहाई की कर सकते हो अगरचे ये भी बहुत है या (ये फ़र्माया कि) बड़ी (रक़म) है। चुनाँचे लोग भी तिहाई की वसिय्यत करने लगे और उनके लिये जाइज़ हो गई।

इस हदीष से भी तिहाई तक की वसिय्यत करना जाइज़ षाबित हुआ, साथ ये भी कि शारेअ (अलैहिस्सलाम) का मंशा वारिषों के लिये ज़्यादा से ज़्यादा माल छोड़ना है ताकि वो पीछे मुहताज न हों, वसिय्यत करते वक़्त वसिय्यत करने वालों को ये अम्र मल्हूज़ रखना ज़रूरी है।

٤- بَابُ قَوْلِ الْمُوصِي لِوَصِيِّهِ: تَعَاهَدْ وَلَدِي.

बाब 4 : वसिय्यत करने वाला अपने वसी से कहे कि मेरे बच्चे की देखभाल करते रहना और वसी

के लिये किस तरह के दावे जाइज़ है

وَمَا يَجُوزُ لِلْوَصِيِّ مِنَ الدَّعْوَى

2745. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने इब्ने शिहाब से, वो उ़र्वा बिन ज़ुबैर से और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़हहरा आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास़ ने मरते वक़्त अपने भाई सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) को ये वस़िय्यत की थी कि ज़म्आ की बांदी का लड़का मेरा है, इसलिये तुम उसे ले लेना, चुनाँचे फ़तहे मक्का के मौक़े पर सअ़द (रज़ि.) ने उसे ले लिया और कहा कि मेरे भाई का लड़का है। उन्होंने इस बारे में मुझे वस़िय्यत की थी। फिर अ़ब्द बिन ज़म्आ (रज़ि.) उठे और कहने लगे कि ये तो मेरा भाई है, मेरे बाप की लौण्डी ने इसको जना है और मेरे बाप के बिस्तर पर पैदा हुआ है। फिर ये दोनों नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरे भाई का लड़का है, मुझे उसने वस़िय्यत की थी। लेकिन अ़ब्द बिन ज़म्आ (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि ये मेरा भाई है और मेरे वालिद की बांदी का लड़का है। नबी करीम (ﷺ) ने फ़ैस़ला ये फ़र्माया कि लड़का तुम्हारा ही है अ़ब्द बिन ज़म्आ! बच्चा फ़ेराश के तहत होता है और ज़ानी के हिस़्से में पत्थर हैं लेकिन आप (ﷺ) ने सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) से फ़र्माया कि उस लड़के से पर्दा कर क्योंकि आप (ﷺ) ने उत्बा की मुशाबिहत उस लड़के में साफ़ पाई थी। चुनाँचे उसके बाद उस लड़के ने सौदा (रज़ि.) को कभी न देखा यहाँ तक कि आप अल्लाह तआ़ला से जा मिलीं। (राजेअ़ : 2053)

٢٧٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ: ((كَانَ عُتْبَةُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ عَهِدَ إِلَى أَخِيْهِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَنَّ ابْنَ وَلِيْدَةِ زَمْعَةَ مِنِّي، فَاقْبِضْهُ إِلَيْكَ. فَلَمَّا كَانَ عَامُ الْفَتْحِ أَخَذَهُ سَعْدٌ فَقَالَ: ابْنُ أَخِي قَدْ كَانَ عَهِدَ إِلَيَّ فِيْهِ. فَقَامَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ فَقَالَ: أَخِي وَابْنُ أَمَةِ أَبِي وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ. فَتَسَاوَقَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ اللهِ ابْنُ أَخِي، كَانَ عَهِدَ إِلَيَّ فِيْهِ. فَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: أَخِي وَابْنُ وَلِيْدَةِ أَبِي فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ بْنَ زَمْعَةَ، الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ)). ثُمَّ قَالَ لِسَوْدَةَ بِنْتِ زَمْعَةَ: ((احْتَجِبِي مِنْهُ)). لِمَا رَأَى مِنْ شَبَهِهِ بِعُتْبَةَ. فَمَا رَآهَا حَتَّى لَقِيَ اللهَ)).

[راجع: ٢٠٥٣]

तश्रीह : बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि उ़त्बा ने कहा मेरे लड़के का ख़्याल रखो, उसको ले लेना और सअ़द ने जो अपने भाई के वसी थे, उसका दा'वा किया। उस बच्चे का नाम अ़ब्दुर्रहमान था हालाँकि आप (ﷺ) ने फ़ैसला कर दिया कि वो ज़म्आ का बेटा है तो सौदा का भाई हुआ मगर चूँकि उसकी सूरत उ़त्बा से मिलती थी इसलिये एहतियातन हज़रत सौदा (रज़ि.) को उससे पर्दा करने का हुक्म दिया।

बाब 5 : अगर मरीज़ अपने सर से कोई साफ़ इशारा करे तो उस पर हुक्म दिया जाएगा?

٥- بَابُ إِذَا أَوْمَأَ الْمَرِيْضُ بِرَأْسِهِ إِشَارَةً بَيِّنَةً جَازَتْ

2746. हमसे हस्सान बिन अबी अ़ब्बाद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया क़तादा से और उनसे अनस (रज़ि.)

٢٧٤٦- حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ أَبِي عَبَّادٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ

ने कि एक यहूदी ने एक (अंसारी) लड़की का सर दो पत्थरों के बीच में रखकर कुचल दिया था। लड़की से पूछा गया कि तुम्हारा सर इस तरह किसने किया है? क्या फ़लाँ शख़्स ने किया? फ़लाँ ने किया? आख़िर यहूदी का भी नाम लिया गया (जिसने उसका सर कुचल दिया था) तो लड़की ने सर के इशारे से हाँ में जवाब दिया। फिर वो यहूदी बुलाया गया और आख़िर उसने भी इक़रार कर लिया और नबी करीम (ﷺ) के हुक्म से उसका भी पत्थर से सर कुचल दिया गया। (राजेअ : 2413)

عَنْهُ: ((أَنَّ يَهُودِيًّا رَضَّ رَأْسَ جَارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ، فَقِيْلَ لَهَا: مَنْ فَعَلَ بِكِ؟ أَفُلاَنٌ أَوْ فُلاَنٌ؟ حَتَّى سُمِّيَ الْيَهُودِيُّ فَأَوْمَأَتْ بِرَأْسِهَا، فَجِيْءَ بِهِ فَلَمْ يَزَلْ حَتَّى اعْتَرَفَ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ فَرُضَّ رَأْسُهُ بِالْحِجَارَةِ)).

[راجع: ٢٤١٣]

तश्रीह : आप (ﷺ) ने उस लड़की का बयान जो सर के इशारे से था, शहादत (गवाही) में क़ुबूल किया और यहूदी की गिरफ़्तारी का हुक्म दिया गो क़िसास का हुक्म सिर्फ़ शहादत की बिना पर नहीं दिया गया बल्कि यहूदी के इक़बाले जुर्म पर लिहाज़ा ऐसे मज़्लूम के सर के इशारे से भी अहले क़ानून ने मौत के वक़्त की शहादत को मोतबर क़रार दिया है क्योंकि आदमी मरते वक़्त अकषर सच ही कहता है और झूठ से परहेज़ करता है।

बाब 6 : वारिष के लिये वसिय्यत करना जाइज़ नहीं है

٦- بَابُ لاَ وَصِيَّةَ لِوَارِثٍ

तश्रीह : ये मज़्मून सराहतन एक हदीष में वारिद है जिसको अस्हाबे सुनन वग़ैरहने अबू अमामा और इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है मगर उसकी सनद में कलाम है, इसीलिये हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इसको न ला सके। इमाम शाफ़िई ने इस रिवायत को मुतवातिर कहा है और फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने इसका इंकार किया है।

2747. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया वर्क़ाअ से, उन्होंने इब्ने अबी नुजैह से, उनसे अता ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया शुरू इस्लाम में (मीराष का) माल औलाद को मिलता था और वालिदैन के लिये वसिय्यत ज़रूरी थी लेकिन अल्लाह तआला ने जिस तरह चाहा उस हुक्म को मन्सूख़ कर दिया फिर लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर क़रार दिया और वालिदैन में से हर एक का छठा हिस्सा और बीवी का (औलाद की मौजूदगी में) आठवाँ हिस्सा और (औलाद की ग़ैर मौजूदगी में) चौथा हिस्सा क़रार दिया। इसी तरह शौहर का (औलाद न होने की सूरत में) आधा और (औलाद होने की सूरत में) चौथा हिस्सा क़रार दिया। (दीगर मक़ाम : 4578, 6739)

٢٧٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ وَرْقَاءَ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيْحٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ الْمَالُ لِلْوَلَدِ، وَكَانَتِ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ، فَنَسَخَ اللهُ مِنْ ذَلِكَ مَا أَحَبَّ، فَجَعَلَ لِلذَّكَرِ مِثْلَ حَظِّ الأُنْثَيَيْنِ، وَجَعَلَ لِلأَبَوَيْنِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسَ، وَجَعَلَ لِلْمَرْأَةِ الثُّمُنَ وَالرُّبُعَ، وَلِلزَّوْجِ الشَّطْرَ وَالرُّبُعَ)).

[طرفاه في : ٤٥٧٨، ٦٧٣٩].

इस सूरत में वसिय्यत का कोई सवाल ही बाक़ी नहीं रहा।

बाब मौत के वक़्त सदक़ा करना

٧- بَابُ الصَّدَقَةِ عِنْدَ الْمَوْتِ

2748. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया सुफ़यान षौरी से, वो अम्मार से, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया एक सहाबी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! कौनसा

٢٧٤٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عُمَارَةَ عَنْ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ

رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ : ((أَنْ تَصَدَّقَ وَأَنْتَ صَحِيْحٌ حَرِيْصٌ، تَأْمُلُ الْغِنَى وَتَخْشَى الْفَقْرَ، وَلاَ تُمْهِلْ حَتَّى إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ قُلْتَ : لِفُلاَنٍ كَذَا وَلِفُلاَنٍ كَذَا، وَقَدْ كَانَ لِفُلاَنٍ)). [راجع: ١٤١٩]

सदक़ा अफ़ज़ल है? फ़र्माया ये कि सदक़ा तन्दुरुस्ती की हालत में कर कि (तुझको उस माल को बाक़ी रखने की) ख़्वाहिश भी हो जिससे कुछ सरमाया जमा हो जाने की तुम्हें उम्मीद हो और (उसे खर्च करने की सूरत में) मुहताजी का डर हो और उसमें ताख़ीर न कर कि जब रूह हलक़ तक पहुँच जाए तो कहने बैठ जाए कि इतना माल फ़लाँ के लिये, फ़लाने को इतना देना, अब तो फ़लाने का हो ही गया (तू तो दुनिया से चला) (राजेअ: 1419)

٨- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ﴾ [النساء: ٢٢]

बाब 8 : अल्लाह तआला का सूरह निसा में ये फ़र्माना कि वसिय्यत और क़र्ज़े की अदायगी के बाद हिस्से बटेंगे

وَيُذْكَرُ أَنَّ شُرَيْحًا وَعُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيْزِ وَطَاوُسًا وَعَطَاءً وَابْنَ أُذَيْنَةَ أَجَازُوا إِقْرَارَ الْمَرِيْضِ بِدَيْنٍ. وَقَالَ الْحَسَنُ أَحَقُّ مَا يُصَدَّقُ بِهِ الرَّجُلُ آخِرَ يَوْمٍ مِنَ الدُّنْيَا وَأَوَّلَ يَوْمٍ مِنَ الآخِرَةِ. وَقَالَ إِبْرَاهِيْمُ وَالْحَكَمُ : إِذَا أَبْرَأَ الْوَارِثَ مِنَ الدَّيْنِ بَرِئَ. وَأَوْصَى رَافِعُ بْنُ خَدِيْجٍ أَنْ لاَ تُكْشَفَ امْرَأَتُهُ الْفَزَارِيَّةُ عَمَّا أُغْلِقَ عَلَيْهِ بَابُهَا. وَقَالَ الْحَسَنُ إِذَا قَالَ لِمَمْلُوكِهِ عِنْدَ الْمَوْتِ: كُنْتُ أَعْتَقْتُكَ جَازَ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ: إِذَا قَالَتِ الْمَرْأَةُ عِنْدَ مَوْتِهَا: إِنَّ زَوْجِي قَضَانِي وَقَبَضْتُ مِنْهُ جَازَ. وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ : لاَ يَجُوزُ إِقْرَارُهُ لِسُوءِ الظَّنِّ بِهِ لِلْوَرَثَةِ. ثُمَّ اسْتَحْسَنَ فَقَالَ: يَجُوزُ إِقْرَارُهُ بِالْوَدِيْعَةِ وَالْبِضَاعَةِ وَالْمُضَارَبَةِ. وَقَدْ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيْثِ)) وَلاَ يَحِلُّ مَالُ الْمُسْلِمِيْنَ لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((آيَةُ

और मन्क़ूल है कि क़ाज़ी शुरैह और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ और ताऊस और अता और अब्दुर्रहमान बिन उज़ैना इन लोगों ने बीमारी में क़र्ज़ का इक़रार दुरुस्त रखा है और इमाम हसन बसरी ने कहा सबसे ज़्यादा आदमी को उस वक़्त सच्चा समझना चाहिये जब दुनिया में उसका आख़िरी दिन और आख़िरत में पहला दिन हो और इब्राहीम नख़ई और हकम बिन उत्बा ने कहा अगर बीमार वारिष़ से यूँ कहे कि मेरा उस पर कुछ क़र्ज़ा नहीं तो ये इब्रा सहीह होगा और राफ़ेअ बिन ख़दीज (सहाबी) ने ये वसिय्यत की कि उनकी बीवी फ़ज़ारिया के दरवाज़े में जो माल बन्द है वो न खोला जाए और इमाम हसन बसरी (रज़ि.) ने कहा अगर कोई मरते वक़्त अपने ग़ुलाम से कहे कि मैं तुझको आज़ाद कर चुका तो जाइज़ है और शअबी ने कहा कि अगर औरत मरते वक़्त यूँ कहे मेरा शौहर मुझको महर दे चुका है और मैं ले चुकी हूँ तो जाइज़ होगा और कुछ लोग (हन्फ़िया) कहते हैं बीमार का इक़रार किसी वारिष़ के लिये दूसरे वारिष़ों की बदगुमानी की वजह से सहीह न होगा। फिर यही लोग कहते हैं कि अमानत और बज़ाअत और मुज़ारबत का अगर बीमार इक़रार करे तो सहीह है। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम बदगुमानी से बचे रहो, बदगुमानी बड़ा झूठ है और मुसलमानों! (दूसरे वारिष़ों का हक़) मार लेना दुरुस्त नहीं क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है मुनाफ़िक़ की निशानी ये है कि अमानत में ख़यानत करे और अल्लाह तआला ने सूरह निसा में फ़र्माया अल्लाह तआला तुमको ये हुक्म देता है कि जिसकी

الْمُنَافِقِ إِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ» وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الأَمَانَاتِ إِلَى أَهْلِهَا﴾ [النساء : ٥٨] فَلَمْ يَخُصَّ وَارِثًا وَلاَ غَيْرَهُ. فِيهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

अमानत है, उसको पहुँचा दो। इसमें वारिष़ या ग़ैर वारिष़ की कोई रुख़्सत ही नहीं है। इसी मज़्मून में अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) से मर्फ़ूअ़न ह़दीष़ मरवी है।

तश्रीह़ : इस बाब के ज़ेल ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ साह़ब फ़र्माते हैं, **अरादल्मुसन्निफु वल्लाहु आ़लमु बिहाज़िहित्तर्जुमति अल्इह़तिजाजु बिमा अख़्तारहू मिन जवाज़ि इक़्रारिल् मरीज़ि बिद्दनि मुत्लक़न सवाअन कानल्मुकिर्रू लहू वारिष़न औ अज्नबिय्यन व वज्हुद्दलालति अन्नहू सुब्हानहू व तआ़ला सिवा बैनल्वसिय्यति वद्दनि फी तक़्दीमिहिमा अ़लल्मीराषि व लम युफस्सिल फखरजतिल्वसिय्यतु लिल्वारिषि बिद्दलीलिल्लज़ी तक़द्दम व बक़ियल्इक़्रारू बिद्दीनि अ़ला ह़ालिही** अल्ख़ या'नी इस बाब के मुनअ़क़िद करने से मुसन्निफ़ का इरादा इस अम्र पर हुज्जत पकड़ना है कि उन्होंने मरीज़ का क़र्ज़ के बारे में मुत्लक़न इक़रार कर लेना जाइज़ क़रार दिया है जिसके लिये मरीज़ इक़रार कर रहा है वो उसका वारिष़ हो या कोई अजनबी इंसान हो, इसलिये कि आयते शरीफ़ा मे अल्लाह पाक ने मीराष़ के ऊपर वसिय्यत और क़र्ज़ दोनों को बराबरी के साथ मुक़द्दम किया है। इन दोनों में कोई फ़ासला नहीं फ़र्माया पस वसिय्यत दलीले मुक़द्दम की बिना पर वारिष़ के लिये मन्सूख़ हो गई और क़र्ज़ का इक़रार कर लेना अपनी ह़ालत पर क़ायम रहा। ह़ज़रत इमाम (रह.) ने अपने ख़्याल की ताईद में मुख़्तलिफ़ अइम्म-ए-किराम, मुह़द्दिष़ीने इ़ज़ाम के अक़्वाल इस्तिश्हाद के तौर पर नक़ल फ़र्माए हैं।

शारेह़ीन लिखते हैं, **क़ाल बअ़्ज़ुन्नासि अय अल्हनफिय्यतु यकु लून लौ यजूज़ु इक्रारुल्मरीज़ि लिबअ़्ज़िल्वरषति लिअन्नहू मज़न्नतुन अन्नहू युरीदु बिहिल्असाअ फी आखिरिल्अम्रि षुम्म नाक़ज़ू हैषु जव्वज़हू इक़्रारहू लिल्वरषति बिल्वदीअ़ति व नहविही बिमुजर्रदिन वल्इस्तिहसानु मिन गैरि दलीलिन यदुल्लु अ़ला इम्तिनाइ ज़ालिक व जवाज़ु हाज़िही षुम्म रद्द अ़लैहिम बिअन्नहू सूउज़न्नि बिही बिअन्नहू ला यहिल्लु मालुल्मुस्लिमीन अय अल्मुक़िर्रू लहू लिहदीषि इज़ा उतुमिन खान कज़ा फी मज्मइल्बिहार** या'नी ह़न्फ़िया ने कहा कि बाज़ वारिष़ों के लिये मरीज़ का इक़रारे क़र्ज़ जाइज़ नहीं इस गुमान पर कि मुम्किन है मरीज़ वारिष़ के ह़क़ में बुराई का इरादा रखता हो उस पर फिर मुनाक़सा पेश किया है इसी तरह कि अह़नाफ़ ह़ज़रात ने मरीज़ का वदिअ़त के बारे में किसी वारिष़ के लिये इक़रार करना जाइज़ क़रार दिया है ह़ालाँकि ये ख़्याल महज़ इस्तिह़सान की बिना पर है जिसकी कोई दलील नहीं जिसे उसके इम्तिनाअ़ या जवाज़ पर पेश किया जा सके। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने फिर उन पर बईं तौर पर रद्द फ़र्माया कि ये मरीज़ के साथ सूए ज़न्न है और बईं तौर कि जिसके लिये मरीज़ इक़रार कर रहा है, उस मुसलमान का माल हड़प करना इस ह़दीष़ से जाइज़ नहीं कि अमानत का माल न अदा करना ख़यानत है। मरीज़ ने जिस वारिष़ वग़ैरह के लिये इक़रार किया है वो माल उस वारिष़ वग़ैरह की अमानत हो गया जिसकी अदायगी ज़रूरी है।

अ़ल्लामा ऐनी (रह.) ने कहा अमानत और मुज़ारबत का इक़रार इसलिये सह़ीह़ है कि क़र्ज़ में लुज़ूम (अनिवार्य) होता है, इन चीज़ों में लुज़ूम नहीं होता। मैं कहता हूँ गो लुज़ूम न हो मगर वारिष़ों का नुक़्सान तो उनमें भी मुह़तमिल है जैसे क़र्ज़ में और जब इ़ल्लत मौजूद है तो हुक्म भी वही होना चाहिये। इसलिये ए'तिराज़ इमाम बुख़ारी (रह.) का सह़ीह़ है। ह़दीष़ **इय्याकुम वज़्ज़न्न** को इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल अदब में वस्ल किया। ये ह़दीष़ लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने ह़न्फ़िया का रद्द किया जो बदगुमानी ना जवाज़ी की इ़ल्लत क़रार देते हैं। अ़ल्लामा ऐनी ने कहा हम बदगुमानी को तो इ़ल्लत ही क़रार नहीं देते फिर ये इस्तिदलाल बेकार है और अगर मान लें तब भी ह़दीष़ से बदगुमानी मना है और ये गुमान बदगुमान नहीं हैं। मैं कहता हूँ जब एक मुसलमान को मरते वक़्त झूठा समझा तो इससे बढ़कर और क्या बदगुमानी होगी। ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि मरीज़ पर जब किसी का कर्ज़ हो तो उसका इक़रार करना चाहिये। वरना वो ख़यानत का मुर्तकिब होगा और जब इक़रार करना वाजिब हुआ तो उसका इक़रार मुअतबर भी होगा वरना इक़रार के वाजिब करने से फ़ायदा ही क्या है?

और आयत से ये निकाला कि क़र्ज़ भी दूसरे की गोया अमानत है ख़्वाह वो वारिष़ हो या न हो। पस वारिष़ के लिये इक़रार सहीह होगा। ऐनी का ये ए'तिराज़ कि क़र्ज को अमानत नहीं कह सकते और आयत में अमानत की अदायगी का हु क्म है, सहीह नहीं है। क्योंकि अमानत से यहाँ लग़्वी अमानत मुराद है या'नी दूसरे का हक़ न कि शरई अमानत और क़र्ज़ लग़्वी अमानत में दाख़िल है। इस आयत का शाने नुज़ूल इस पर दलालत करता है कि आपने उ़ष़्मान बिन त़लहा शैबी (रज़ि.) से कअ़बे की चाबी ली और अंदर गए। उस चाबी को ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने मांगा उस वक़्त ये आयत उतरी, आप (ﷺ) ने वो चाबी फिर शैबी को दे दी जो आज तक उनके ख़ानदान में चली आती है। यही वो ख़ानदान है जो क़ब्ले इस्लाम से आज तक का'बा शरीफ़ की चाबी का मुह़ाफ़िज़ चला आ रहा है। इस्लामी दौर में भी इसी ख़ानदान को इस ख़िदमत पर बह़ाल रखा गया और आज सऊ़दी अ़रबिया हुकूमत के दौर में भी यही ख़ानदान है जो का'बा शरीफ़ की चाबी का मुह़ाफ़िज़ है। अगर अमीरे हुकूमते सऊ़दी भी कअ़बा में दाख़िल होना चाहें तो इसी ख़ानदान से उनको ये चाबी ह़ासिल करना ज़रूरी है और वापसी के बाद वापस कर देना भी ज़रूरी है। उस दौर में हिजाज में कितने इंक़लाबात आए मगर इस निज़ाम मे किसी दौर में भी फ़र्क़ नहीं आया। (अल्लाह तआ़ला इस निज़ाम को हमेशा क़ायम दायम रखे आमीन)

ह़दीष़ ला स़दक़त इल्ला अल्ख़ इसको इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुज़्ज़कात में वस्ल किया है। इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि दैन (क़र्ज़) का अदा करना वस़िय्यत पर मुक़द्दम है, इसलिये कि वस़िय्यत मिष़्ल स़दक़ा के है और जो शख़्स़ मदयून (मक़रूज़) हो वो मालदार नहीं है। (तफ़्सीर वह़ीदी)

2749. हमसे सुलैमान बिन दाऊद अबुर्रबीअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने, उन्होंने कहा हमसे नाफ़ेअ़ बिन मालिक बिन अबी आ़मिर अबू सुहैल ने, उन्होंने अपने बाप से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से, आप (ﷺ) ने फ़र्माया मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं जब बात कहे तो झूठ कहे और जब उसके पास अमानत रखें तो ख़यानत करे और जब वा'दा करे तो ख़िलाफ़ करे। (राजेअ़ : 33)

٢٧٤٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ أَبُو الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ مَالِكِ بْنِ أَبِي عَامِرٍ أَبُو سُهَيْلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلاَثٌ: إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ)). [راجع: ٣٣]

बाब 9 : अल्लाह तआ़ला के (सूरह निसा में) ये फ़र्माने की तफ़्सीर कि ह़िस्स़ों की तक़्सीम वस़िय्यत और दैन के बाद होगी

٩- بَابُ تَأْوِيلِ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَى بِهَا أَوْ دَيْنٍ﴾ [النساء: ١٢]

और मन्क़ूल है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने क़र्ज़ को वस़िय्यत पर मुक़द्दम करने का हुक्म दिया और (इस सूरत में) ये फ़र्माने की अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को पहुँचा दो तो अमानत (क़र्ज़) का अदा करना नफ़्ल वस़िय्यत के पूरा करने से ज़्यादा ज़रूरी है और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया स़दक़ा वही उ़म्दह है जिसके बाद आदमी मालदार रहे और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा ग़ुलाम बग़ैर अपने मालिक की इजाज़त के वस़िय्यत नहीं कर सकता और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ग़ुलाम अपने मालिक के माल का निगहबान है।

وَيُذْكَرُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَضَى بِالدَّيْنِ قَبْلَ الْوَصِيَّةِ. وَقَوْلِهِ: ﴿إِنَّ اللهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الأَمَانَاتِ إِلَى أَهْلِهَا﴾ فَأَدَاءُ الأَمَانَةِ أَحَقُّ مِنْ تَطَوُّعِ الْوَصِيَّةِ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ صَدَقَةَ إِلاَّ عَنْ ظَهْرِ غِنًى)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لاَ يُوصِي الْعَبْدُ إِلاَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْعَبْدُ رَاعٍ فِي مَالِ سَيِّدِهِ)).

2750. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको

٢٧٥٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا

इमाम औज़ाई ने ख़बर दी, उन्होंने ज़ुहरी से, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब और उर्वा बिन ज़ुबैर से कि हकीम बिन हेज़ाम (मशहूर सहाबी) ने बयान किया मैंने आँहज़रत (ﷺ) से मांगा आपने मुझको दिया, फिर मांगा फिर आपने दिया, फिर फ़र्माने लगे हकीम ये दुनिया का रुपया पैसा देखने में ख़ुशनुमा और मज़े में शीरीं है लेकिन जो कोई इसको सैरचश्मी से ले उसको बरकत होती है और जो कोई जान लड़ाकर हिर्स के साथ इसको ले उसको बरकत न होगी। इसकी मिष़ाल ऐसी है जो कमाता है लेकिन सैर नहीं होता और ऊपर वाला (देने वाला) हाथ नीचे वाले (लेने वाले) हाथ से ज़्यादा बेहतर है। हकीम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम उसकी जिसने आपको सच्चा नबी बना करके भेजा मैं तो आज से आप (ﷺ) के बाद किसी से कोई चीज़ कभी नहीं लेने का मरने तक फिर (हकीम का ये हाल रहा) कि अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) उनका सालाना वज़ीफ़ा देने के लिये उनको बुलाते, वो उसके लेने से इंकार करते। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने भी अपनी ख़िलाफ़त में उनको बुलाया उनका वज़ीफ़ा देने के लिये लेकिन उन्होंने इंकार किया। हज़रत उमर (रज़ि.) कहने लगे मुसलमानों! तुम गवाह रहना हकीम को उसका हक़ जो ग़नीमत के माल में अल्लाह ने रखा है देता हूँ वो नहीं लेता। ग़र्ज़ हकीम ने आँहज़रत (ﷺ) के बाद फिर किसी शख़्स से कोई चीज़ क़ुबूल नहीं की (अपना वज़ीफ़ा भी बैतुलमाल में न लिया) यहाँ तक कि उनकी वफ़ात हो गई, अल्लाह उन पर रहम करे। (राजेअ: 1472)

الأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَعُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ حَكِيْمَ بْنَ حِزَامٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِيْ، ثُمَّ قَالَ لِيْ: ((يَا حَكِيْمُ، إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرٌ حُلْوٌ، فَمَنْ أَخَذَهُ بِسَخَاوَةِ نَفْسٍ بُوْرِكَ لَهُ فِيْهِ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِإِشْرَافِ نَفْسٍ لَمْ يُبَارَكْ لَهُ فِيْهِ، وَكَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلاَ يَشْبَعُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى)). قَالَ حَكِيْمٌ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، لاَ أَرْزَأُ أَحَدًا بَعْدَكَ شَيْئًا حَتَّى أُفَارِقَ الدُّنْيَا. فَكَانَ أَبُوبَكْرٍ يَدْعُو حَكِيْمًا لِيُعْطِيَهُ الْعَطَاءَ فَيَأْبَى أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ شَيْئًا. ثُمَّ إِنَّ عُمَرَ دَعَاهُ لِيُعْطِيَهُ فَيَأْبَى أَنْ يَقْبَلَهُ، فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِيْنَ، إِنِّي أَعْرِضُ عَلَيْهِ حَقَّهُ الَّذِي قَسَمَ اللهُ لَهُ مِنْ هَذَا الْفَيْءِ فَيَأْبَى أَنْ يَأْخُذَهُ. فَلَمْ يَرْزَأْ حَكِيْمٌ أَحَدًا مِنَ النَّاسِ بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ حَتَّى تُوُفِّيَ رَحِمَهُ اللهُ)).

[راجع: ١٤٧٢]

2751. हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी कहा हमको यूनुस ने, उन्होंने ज़ुहरी से, उन्होंने कहा मुझको सालिम ने ख़बर दी, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से, उन्होंने कहा मैंने आँहज़रत (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्माते थे तुममें से हर कोई निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा। हाकिम भी निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा और मर्द अपने घरवालों का निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा और

٢٧٥١- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ السَّخْتِيَانِيُّ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالإِمَامُ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي

औरत अपने शौहर के घर की निगाहबान है अपनी रइय्यत के बारे में पूछी जाएगी और ग़ुलाम अपने साहब के माल का निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा। इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा मैं समझता हूँ आपने ये भी फ़र्माया कि मर्द अपने बाप के माल का निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा। (राजेअ : 893)

أَهْلِهِ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا رَاعِيَةٌ وَمَسْؤُولَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْخَادِمُ فِي مَالِ سَيِّدِهِ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، قَالَ: وَحَسِبْتُ أَنْ قَدْ قَالَ: وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي مَالِ أَبِيهِ)).

[راجع: ٨٩٣]

तश्रीह : ये हदीष़ किताबुल इत्क़ में गुज़र चुकी है, उसकी मुनासबत तर्जुमा से मुश्किल है। कुछ ने कहा है ग़ुलाम अपने मालिक के माल का निगाहबान हुआ हालाँकि वो ग़ुलाम ही का कमाया हुआ है तो उसमें मालिक और ग़ुलाम दोनों के हक़ मुता'ल्लिक़ हुए, लेकिन मालिक का हक़ मुक़द्दम किया गया क्योंकि वो ज़्यादा क़वी है। इसी तरह क़र्ज़ और वसिय्यत में क़र्ज़ को मुक़द्दम किया जाएगा, क्योंकि क़र्ज़ की अदायगी फ़र्ज़ है और वसिय्यत एक क़िस्म का तबर्रुअ या'नी नफ़्ल है। शाफ़िइया ने कहा कि उनमें वारिष़ दाख़िल न होंगे। कुछ ने कहा दाख़िल होंगे। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने कहा अ़ज़ीज़ों से महरम नातेदार मुराद होंगे, बाप की तरफ़ के हों या माँ की तरफ़ के।

बाब 10 : अगर किसी ने अपने अ़ज़ीज़ों पर कोई चीज़ वक़्फ़ की या उनके लिये वसिय्यत की तो क्या हुक्म है और अ़ज़ीजों से कौन लोग मुराद होंगे?

١٠- بَابُ إِذَا وَقَفَ أَوْ أَوْصَى لأَقَارِبِهِ، وَمَنِ الأَقَارِبُ؟

और ष़ाबित ने अनस (रज़ि.) से रिवायत किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने अबू तलहा से फ़र्माया तू ये बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों को दे डाला उन्होंने हस्सान और उबई बिन कअ़ब को दे दिया (जो अबू तलहा के चचा की औलाद थे) और मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने कहा मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने षुमामा से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से ष़ाबित की तरह रिवायत की, उनसे यूँ है अपने क़राबतदार मुहताजों को दे। अनस (रज़ि.) ने कहा तो अबू तलहा ने वो बाग़ हस्सान और उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) को दे दिया, वो मुझसे ज़्यादा अबू तलहा (रज़ि.) के क़रीबी रिश्तेदार थे और हस्सान और उबई बिन कअ़ब की क़राबत अबू तलहा से यूँ थी कि अबू तलहा का नाम ज़ैद है वो सुहैल के बेटे, वो अस्वद के, वो हराम बिन अ़म्र बिन ज़ैद मनात बिन अ़दी बिन अ़म्र बिन मालिक बिन नज्जार के और हस्सान ष़ाबित के बेटे, वो मुंज़िर के, वो हराम के तो दोनों हराम में जाकर मिल जाते हैं जो पर दादा है तो

وَقَالَ ثَابِتٌ عَنْ أَنَسٍ: ((عَنِ النَّبِيُّ ﷺ لأَبِي طَلْحَةَ: ((اجْعَلْهَا لِفُقَرَاءِ أَقَارِبِكَ)). فَجَعَلَهَا لِحَسَّانَ وَأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ)) وَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ ثُمَامَةَ عَنْ أَنَسٍ مِثْلَ حَدِيْثِ ثَابِتٍ: قَالَ: ((اجْعَلْهَا لِفُقَرَاءِ قَرَابَتِكَ))، قَالَ أَنَسٌ: فَجَعَلَهَا لِحَسَّانَ وَأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ وَكَانَا أَقْرَبَ إِلَيْهِ مِنِّي)). وَكَانَ قَرَابَةُ حَسَّانَ وَأُبَيٍّ مِنْ أَبِي طَلْحَةَ وَاسْمُهُ زَيْدُ بْنُ سَهْلِ بْنِ الأَسْوَدِ بْنِ حَرَامِ بْنِ عَمْرِو بْنِ زَيْدِ مَنَاةَ بْنِ عَدِيِّ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، وَحَسَّانُ بْنُ ثَابِتِ بْنِ الْمُنْذِرِ بْنِ حَرَامٍ، فَيَجْتَمِعَانِ إِلَى حَرَامٍ وَهُوَ الأَبُ الثَّالِثُ، وَحَرَامُ ابْنُ

हराम बिन अम्र बिन ज़ैद, मनात बिन अदी बिन अम्र बिन मालिक बिन नज्जार हस्सान और अबू तलहा को मिला देता है और उबई बिन कअब छठी पुश्त में या'नी अम्र बिन मालिक में अबू तलहा से मिलते हैं, उबई बिन कअब के बेटे, वो क़ैस के, वो उबैद के, वो ज़ैद के, वो मुआविया के, वो अम्र बिन मालिक बिन नज्जार के तो अम्र बिन मालिक हस्सान और अबू तलहा और उबई तीनों को मिला देता है और कुछ ने (इमाम अबू यूसुफ़ इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्द ने) कहा अज़ीज़ों के लिये वसिय्यत करे तो जितने मुसलमान बाप दादा गुज़रे हैं वो सब दाख़िल होंगे।

عَمْرِو بْنِ زَيْدِ مَنَاةَ بْنِ عَدِيِّ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، فَهُوَ يُجَامِعُ حَسَّانَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيٌّ إِلَى سِتَّةِ آبَاءٍ إِلَى عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ، وَهُوَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبِ بْنِ قَيْسِ بْنِ عُبَيْدِ زَيْدِ بْنِ مُعَاوِيَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، فَعَمْرُو بْنُ مَالِكٍ يَجْمَعُ حَسَّانَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيًّا. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِذَا أَوْصَى لِقَرَابَتِهِ فَهُوَ إِلَى آبَائِهِ فِي الإِسْلاَمِ.

2752. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने अबू तलहा से फ़र्माया, (जब उन्होंने अपना बाग़ बीरे हाअ अल्लाह की राह में देना चाहा) मैं मुनासिब समझता हूँ तू ये बाग़ अपने अज़ीज़ों को दे दे। अबू तलहा ने कहा बहुत ख़ूब ऐसा ही करूँगा। फिर अबू तलहा ने वो बाग़ अपने अज़ीज़ों और चचा के बेटों में बांट दिया और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअरा की) ये आयत उतरी और अपने क़रीब के नाते वालों को (अल्लाह के अज़ाब से) डराओ तो आँहज़रत (ﷺ) क़ुरैश के ख़ानदानों में बनी फ़हर, बनी अदी को पुकारने लगे (उनको डराया) और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब ये आयत उतरी वन्ज़िर अशीरतकल अक़्रबीन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ क़ुरैश के लोगों! (अल्लाह से डरो) (राजेअ: 1461)

٢٧٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَبِي طَلْحَةَ: ((أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الأَقْرَبِيْنَ))، قَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَفْعَلُ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَبَنِي عَمِّهِ)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي: ((يَا بَنِي فِهْرٍ: يَا بَنِي عَدِيٍّ، لِبُطُونِ قُرَيْشٍ)). وَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ)). [راجع: ١٤٦١]

बाब 11 : क्या अज़ीज़ों मे औरतें और बच्चे भी दाख़िल होंगे

١١- بَابُ هَلْ يَدْخُلُ النِّسَاءُ وَالْوَلَدُ فِي الأَقَارِبِ؟

2753. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने ज़ुहरी से, कहा मुझको सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअरा की) ये आयत अल्लाह तआला ने उतारी

٢٧٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ

और अपने नज़दीक नातेदारों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डरा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुरैश के लोगों ! या ऐसा ही कोई और कलिमा तुम लोग अपनी अपनी जानों को (नेक आमाल के बदल) मोल ले लो (बचा लो) मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा (या'नी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मैं कुछ नहीं कर सकने का) अ़ब्दे मुनाफ़ के बेटों ! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। अ़ब्बास बिन मुत्तलिब के बेटे! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। स़फ़िया मेरी फूफी! अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। फ़ातिमा (रज़ि.) बेटी तू चाहे मेरा माल मांग ले लेकिन अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम नहीं आएगा। अबुल यमान के साथ ह़दीष़ को अस्बग़ ने भी अ़ब्दुल्लाह बिन वहब से, उन्होंने यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से रिवायत किया। (दीगर मक़ाम : 3527, 4771)

أَبَاهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ قَالَ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ - أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا - اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ، لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ لاَ أُغْنِي عَنْكَ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا صَفِيَّةُ عَمَّةُ رَسُولِ اللهِ لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا. وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِيْنِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا)). تَابَعَهُ أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. [طرفاه في: ٣٥٢٧، ٤٧٧١].

तश्रीह : पिछली ह़दीष़ में पहले आपने क़ुरैश के कुल लोगों को मुख़ात़ब किया जो ख़ास़ आपकी क़ौम के लोग थे। फिर अ़ब्दे मुनाफ़ अपने चौथे दादा की औलाद को। फिर ख़ास़ अपने चचा और फूफी या'नी दादा की औलाद को फिर ख़ास़ अपनी औलाद को। इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि क़राबत वालों मे औरतें दाख़िल हैं क्योंकि ह़ज़रत स़फ़िया अपनी फूफी को भी आप (ﷺ) ने मुख़ात़ब किया और बच्चे भी इसलिये कि ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) जब ये आयत उतरी कमसिन बच्ची थीं, आप (ﷺ) ने उनको भी मुख़ात़ब किया।

बाब 12 : क्या वक़्फ़ करने वाला अपने वक़्फ़ से ख़ुद भी वो फ़ायदा उठा सकता है?

١٢- بَابُ هَلْ يَنْتَفِعُ الْوَاقِفُ بِوَقْفِهِ؟

और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने शर्त लगाई थी (अपने वक़्फ़ के लिये) कि जो शख़्स़ उसका मुतवल्ली हो उसके लिये उस वक़्फ़ में से खा लेने से कोई ह़र्ज न होगा। (दस्तूर के मुत़ाबिक़) वाक़िफ़ ख़ुद भी वक़्फ़ का मुहतमिम हो सकता है और दूसरा शख़्स़ भी। इसी त़रह़ अगर किसी शख़्स़ ने ऊँट या कोई और चीज़ अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ की तो जिस त़रह़ दूसरे उससे फ़ायदा उठा सकते हैं ख़ुद वक़्फ़ करने वाला भी उठा सकता है अगरचे (वक़्फ़ करते वक़्त) उसकी शर्त न लगाई हो।

وَقَدِ اشْتَرَطَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: لاَ جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلَ. وَقَدْ يَلِي الْوَاقِفُ وَغَيْرُهُ. وَكَذَلِكَ كُلُّ مَنْ جَعَلَ بَدَنَةً أَوْ شَيْئًا للهِ فَلَهُ أَنْ يَنْتَفِعَ بِهِ كَمَا يَنْتَفِعُ غَيْرُهُ وَإِنْ لَمْ يَشْتَرِطْ.

तश्रीह : वाक़िफ़ अपने वक़्फ़ से फ़ायदा उठा सकता है जब उस चीज़ को ख़ुद अपने ऊपर और नीज़ दूसरों पर वक़्फ़ कर दिया हो या वक़्फ़ में ऐसी शर्त कर ली हो या उसमें से एक ह़िस्स़ा अपने लिये ख़ास़ कर लिया हो या मुतवल्ली

को कुछ दिलाया हो और ख़ुद ही मुतवल्ली हो। क़स्तलानी (रह.) ने कहा शाफ़िइया का सहीह मज़हब ये है कि अपनी ज़ात पर वक़्फ़ करना बातिल है।

हज़रत उमर (रज़ि.) का अषर किताबुश्शुरूत में मौसूलन गुज़र चुका है। इमाम बुख़ारी (रह.) ने इससे ये निकाला है कि जब वक़्फ़ के मुतवल्ली को हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसमें से खाने की इजाज़त दे दी तो ख़ुद वक़्फ़ करने वाले को भी उसमें से खाना या कुछ फ़ायदा लेना दुरुस्त होगा। इसलिये कि कभी वक़्फ़ करने वाला ख़ुद उस जायदाद का मुतवल्ली होता है। आख़िरी मज़्मून में इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने कहा अगर कोई चीज़ फ़क़ीरों पर वक़्फ़ की और वक़्फ़ करने वाला फ़क़ीर नहीं है तो उससे फ़ायदा उठाना दुरुस्त नहीं। अल्बत्ता अगर वो फ़क़ीर हो जाए या उसकी औलाद में से कोई फ़क़ीर हो जाए तो फ़ायदा उठा सकता है, यही मुख़्तार है।

2754. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने देखा कि एक शख़्स क़ुर्बानी का ऊँट हाँके जा रहा है। आँहज़रत (ﷺ) ने उससे फ़र्माया कि उस पर सवार हो जा। उस साहब ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये क़ुर्बानी का ऊँट है। आप (ﷺ) ने तीसरी या चौथी बार फ़र्माया कि अफ़सोस! सवार भी हो जा (या आपने वयलक की बजाय वयहक फ़र्माया जिसके मा'नी भी वही हैं) (राजेअ : 1690)

٢٧٥٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى رَجُلاً يَسُوقُ بَدَنَةً فَقَالَ لَهُ: ((ارْكَبْهَا))، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهَا بَدَنَةٌ، فَقَالَ - فِي الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ - ((ارْكَبْهَا وَيْلَكَ - أَوْ وَيْحَكَ)). [راجع: ١٦٩٠]

2755. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने देखा कि एक साहब क़ुर्बानी का ऊँट हाँके लिये जा रहा है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस पर सवार हो जा लेकिन उन्होंने मअज़िरत की कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये तो क़ुर्बानी का ऊँट है। आप (ﷺ) ने फ़िर फ़र्माया कि सवार भी हो जा। अफ़सोस! ये कलिमा आप (ﷺ) ने तीसरी या चौथी बार फ़र्माया था। (राजेअ : 1689)

٢٧٥٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَأَى رَجُلاً يَسُوقُ بَدَنَةً فَقَالَ: ارْكَبْهَا، قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهَا بَدَنَةٌ، قَالَ: ((ارْكَبْهَا وَيْلَكَ))، فِي الثَّانِيَةِ أَوْ فِي الثَّالِثَةِ)). [راجع: ١٦٨٩]

इस हदीष से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि वक़्फ़ी चीज़ से ख़ुद वक़्फ़ करने वाला भी फ़ायदा उठा सकता है, जानवर पर मकान को भी क़यास कर सकते हैं। अगर कोई मकान वक़्फ़ करे तो उसमें ख़ुद भी रह सकता है। ये भी ज़ाहिर हुआ कि क़ुर्बानी का जानवर पर बवक़्ते ज़रूरत सवारी की जा सकती है, अगर दूध देने वाला जानवर है तो उसका दूध भी इस्ते'माल किया जा सकता है। वो जानवर बराए क़ुर्बानी मुतअय्यन करने के बाद अज़्चे मुअत्तल नहीं बन जाता। आम तौर पर मुश्रिकीन अपने शिर्किया अफ़्आल के लिये मौसूम कर्दा जानवरों को बिलकुल आज़ाद समझने लग जाते हैं जो उनकी नादानी की दलील है, ग़ैरुल्लाह के नामों पर इस तरह जानवर छोड़ना ही शिर्क है।

बाब 13 : अगर वक़्फ़ करने वाला माले वक़्फ़ को (अपने क़ब्ज़े में रखे) दूसरे के हवाले न करे तो जाइज़ है

١٣- بَابُ إِذَا وَقَفَ شَيْئًا قَبْلَ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى غَيْرِهِ فَهُوَ جَائِزٌ

इसलिये कि उमर (रज़ि.) ने (ख़ैबर की अपनी ज़मीन) वक़्फ़ की

لأَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَوْقَفَ وَقَالَ: لاَ

जُنَاحَ عَلَى مَن وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلَ، وَلَمْ يَخُصَّ إِن وَلِيَهُ عُمَرُ أَوْ غَيْرُهُ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَبِي طَلْحَةَ: ((أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الأَقْرَبِينَ))، فَقَالَ: أَفْعَلُ، فَقَسَمَهَا فِي أَقَارِبِهِ وَبَنِي عَمِّهِ.

और फ़र्माया कि अगर उसमें से उसका मुतवल्ली भी खाए तो कोई मुज़ायक़ा नहीं है। यहाँ आपने उसकी तख़्सीस़ नहीं की थी कि ख़ुद आप ही उसके मुतवल्ली होंगे या कोई दूसरा। नबी करीम (ﷺ) ने अबू तलहा (रज़ि.) से फ़र्माया था कि मेरा ख़्याल है कि तुम अपनी ज़मीन (बाग़ बीरे हाअ स़दक़ा करना चाहिये हो तो) अपने अ़ज़ीज़ों को दे दो। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैं ऐसा ही करूँगा। चुनाँचे उन्होंने अपने अ़ज़ीज़ों और चचा के लड़कों में बांट दिया।

तश्रीह : तो मा'लूम हुआ कि वक़्फ़ करने वाला अपने वक़्फ़ को अपने क़ब्ज़े में भी रख सकता है जैसा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के फ़ेअ़ल से स़ाबित है। जुम्हूर उ़लमा का यही क़ौल है और मालिकिया वग़ैरह के नज़दीक वक़्फ़ उस वक़्त तक स़ह़ीह़ नहीं होता जब तक माले वक़्फ़ को अपने क़ब्ज़ा से निकालकर दूसरे के क़ब्ज़े में न दे। जुम्हूर की दलील ह़ज़रत उ़मर, ह़ज़रत अ़ली और ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के अफ़्आ़ल हैं। उन सबने अपने औक़ाफ़ को अपने ही क़ब्ज़ा में रखा था। उसका नफ़ा ख़ैरात के कामों में स़र्फ़ (ख़र्च) करते। बाब के तह़त ज़िक्र कर्दा अस़र ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से मा'लूम हुआ कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ख़ुद भी मुतवल्ली रह सकते थे क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उससे मना नहीं किया और जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) मुतवल्ली हो सके तो उनको उसमें से खाना भी दुरुस्त होगा, बाब का यही मत़लब है। इसलिये वक़्फ़ को आ़म और ख़ास़ दो क़िस्मों पर बांट दिया गया है। जिससे मुराद वो औक़ाफ़ होते हैं जिनका अस़ल मक़्स़द कुछ तो उमूरे दीनी और कारे हाए ख़ैर में इमदाद करना है और कुछ ख़ास़ अश्ख़ास़ या ख़ास़ किसी जमाअ़त की नफ़ा रसानी है। वक़्फ़ ख़ास़ जिनका मक़्स़ूद अस़ली वाक़िफ़ के अ़याल व अत़्फ़ाल या अक़रबा के लिये आज़ूक़ा मुहय्या करना हो, लग़्वी मा'नी वक़्फ़ के बाँध देना, ह़ब्स कर देना है और अस़ल में ये लफ़्ज़ घोड़े और ऊँट वग़ैरह के बाँधने में इस्ते'माल किया जाता है और उ़लमाए इस्लाम की इस्तिलाह़ में वक़्फ़ से मुराद किसी कारेख़ैर के लिये अपना माल दे देना। वक़्फ़ की ता'रीफ़ ये भी की गइ है कि किसी जायदाद मिस़्ल अराज़ी व मकानात वग़ैरह के ह़क़्क़े मिल्कियत से दस्त बरदार रहकर अल्लाह की राह में उसको इस तरह़ से दे देना कि अल्लाह के बन्दे को उससे फ़ायदा हो बशर्ते कि माले मौक़ूफ़ वक़्फ़ करने के वक़्त वाक़िफ़ का अपना हो। वाक़िफ़ अपने क़ब्ज़ा व मिल्कियत की शर्त़ भी लगा सकता है। किसी दूसरे मुक़ाम पर उसकी तफ़्स़ील आएगी।

١٤ – بَابُ إِذَا قَالَ: دَارِيْ صَدَقَةٌ للهِ، وَلَمْ يُبَيِّنْ لِلْفُقَرَاءِ

बाब 14 : अगर किसी ने यूँ कहा कि मेरा घर अल्लाह की राह में स़दक़ा है, फ़ुक़रा वग़ैरह के लिये स़दक़ा होने की कोई वज़ाह़त नहीं की

أَوْ غَيْرِهِمْ فَهُوَ جَائِزٌ وَيَضَعُهَا فِي الأَقْرَبِيْنَ أَوْ حَيْثُ أَرَادَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَبِي طَلْحَةَ حِيْنَ قَالَ أَحَبُّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بِيْرُحَاءَ وَإِنَّهَا صَدَقَةٌ للهِ، فَأَجَازَ النَّبِيُّ ﷺ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لاَ يَجُوزُ حَتَّى يُبَيِّنَ لِمَنْ، وَالأَوَّلُ أَصَحُّ.

तो वक़्फ़ जाइज़ हुआ अब उसको इख़्तियार है उसे वो अपने अ़ज़ीज़ों को भी दे सकता है और दूसरों को भी क्योंकि स़दक़ा करते हुए किसी की तख़्स़ीस़ नहीं की थी। जब अबू तलह़ा (रज़ि.) ने कहा कि मेरे अम्वाल में मुझे सबसे ज़्यादा पसन्दीदा बीरेहाअ का बाग़ है और वो अल्लाह के रास्ते में स़दक़ा है तो नबी करीम (ﷺ) ने उसे जाइज़ क़रार दिया था (ह़ालाँकि उन्होंने कोई तअ़य्युन नहीं की थी कि वो ये किसे देंगे) लेकिन कुछ लोग

शाफ़िइया ने कहा कि जब तक ये न बयान कर दे कि सदक़ा किस लिये है, जाइज़ नहीं होगा और पहला क़ौल ज़्यादा सहीह है।

हज़रत अबू तलहा ने मुज्मल तौर पर अपना बाग़ आँहज़रत (ﷺ) के हवाले कर दिया और आप (ﷺ) ने वापस फ़र्माते हुए उसे उनके क़राबतदारों में तक़्सीम करने का हुक्म दिया, किसी क़राबतदार की तख़्सीस नहीं की। इसी से मक़्सदे बाब षाबित हुआ।

बाब 15 : किसी ने कहा कि मेरी ज़मीन या मेरा बाग़ मेरी (मरहूमा) माँ की तरफ़ से सदक़ा है तो ये भी जाइज़ है ख़्वाह इसमें भी इसकी वज़ाहत न की हो कि किसके लिये सदक़ा है

١٥- بَابُ إِذَا قَالَ أَرْضِي أَوْ بُسْتَانِي صَدَقَةٌ عَنْ أُمِّي فَهُوَ جَائِزٌ، وَإِنْ لَمْ يُبَيِّنْ لِمَنْ ذَلِكَ

2756. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़्लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे यअ़ला बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्होंने इक्रिमा से सुना, वो बयान करते थे कि हमें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की माँ अ़म्रह बिन्ते मसऊ़द का इंतिक़ाल हुआ तो वो उनकी ख़िदमत में मौजूद नहीं थे। उन्होंने आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी वालिदा का जब इंतिक़ाल हुआ तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर नहीं था। क्या अगर मैं कोई चीज़ सदक़ा करूँ तो क्या उनको फ़ायदा पहुँच सकता है? आपने इष्बात में जवाब दिया तो उन्होंने कहा कि मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मेरा मिख़्राफ़ नामी बाग़ उनकी तरफ़ से सदक़ा है। (दीगर मक़ाम : 2762, 2770)

٢٧٥٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا مَخْلَدُ بْنُ يَزِيْدَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يَعْلَى أَنَّهُ سَمِعَ عِكْرِمَةَ يَقُولُ: أَنْبَأَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ تُوُفِّيَتْ أُمُّهُ وَهُوَ غَائِبٌ عَنْهَا فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ أُمِّي تُوُفِّيَتْ وَأَنَا غَائِبٌ عَنْهَا، أَيَنْفَعُهَا شَيْءٌ إِنْ تَصَدَّقْتُ بِهِ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قَالَ: فَإِنِّي أُشْهِدُكَ أَنَّ حَائِطِيَ الْمِخْرَافَ صَدَقَةٌ عَلَيْهَا)).

[طرفاه في: ٢٧٦٢، ٢٧٧٠].

हज़रत सअ़द बिन उ़बादा ग़ज़्व-ए-दूमतुल जन्दल में आँहज़रत (ﷺ) के साथ गये हुए थे, पीछे से उनकी मुहतरमा वालिदा का इंतिक़ाल हो गया। मिख़्राफ़ उस बाग़ का नाम था या उसके मा'नी बहुत मेवेदार के हैं।

बाब 16 : किसी ने अपनी कोई चीज़ या लौण्डी, ग़ुलाम या जानवर सदक़ा या वक़्फ़ किया तो जाइज़ है

(मतलब ये कि माल मुश्तरक माल मन्क़ूला का भी वक़्फ़ दुरुस्त है)

١٦- بَابُ إِذَا تَصَدَّقَ أَوْ وَقَفَ بَعْضَ مَالِهِ أَوْ بَعْضَ رَقِيْقِهِ أَوْ دَوَابِّهِ فَهُوَ جَائِزٌ

2757. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे अ़ब्दुर्रहमान इब्ने अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने ख़बर दी और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने बयान किया कि मैंने कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने अ़र्ज़ किया या

٢٧٥٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ كَعْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ

रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी तौबा (ग़ज़्व-ए-तबूक में न जाने के क़ुसूर की) क़ुबूल होने का शुक्राना ये है कि मैं अपना माल अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के रास्ते में दे दूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर अपने माल का एक हिस्सा अपने पास ही बाक़ी रखो तो तुम्हारे हक़ मे ये बेहतर है। मैंने अर्ज़ किया कि फिर मैं अपना ख़ैबर का हिस्सा अपने पास महफ़ूज़ रखता हूँ।

(दीगर मक़ाम : 2947, 2948, 2949, 2950, 3088, 3556, 3889)

كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ، إِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللهِ وَإِلَى رَسُولِهِ ﷺ، قَالَ: ((أَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ)). قُلْتُ : فَإِنِّي أَمْسِكُ سَهْمِي الَّذِي بِخَيْبَرَ.

[أطرافه في : ٢٩٤٧، ٢٩٤٨، ٢٩٤٩، ٢٩٥٠، ٣٠٨٨، ٣٥٥٦، ٣٨٨٩.

ये कअब बिन मालिक (रज़ि.) वो सहाबी हैं जो अपने दो साथियों समेत जंगे तबूक में आँहज़रत (ﷺ) के साथ नहीं निकले थे। आप एक मुद्दत तक ज़ेरे इताब (गुस्से व नाराज़गी के शिकार) रहे। आख़िर अल्लाह तआला ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली उसका मुफ़स्सल ज़िक्र किताबुल् मग़ाज़ी में आएगा। हदीष से ये भी निकला कि सारा माल ख़ैरात कर देना मकरूह है और ये भी निकला कि माले मन्क़ूला का वक़्फ़ करना भी जाइज़ है।

बाब 17 : अगर सदक़ा के लिये किसी को वकील करे और वकील उसका सदक़ा फेर दे

١٧ - بَابُ مَنْ تَصَدَّقَ إِلَى وَكِيْلِهِ ثُمَّ رَدَّ الْوَكِيْلُ إِلَيْهِ

2758. और इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया कि मुझे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी सलमा ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने (इमाम बुख़ारी रह ने कहा कि) मैं समझता हूँ कि ये रिवायत उन्होंने अनस (रज़ि.) से की है कि उन्होंने बयान किया (जब सूरह आले इमरान की) ये आयत नाज़िल हुई कि तुम नेकी हर्गिज़ नहीं पा सकते जब तक उस माल में से ख़र्च न करो जो तुमको ज़्यादा पसन्द है तो अबू तलहा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तबारक व तआला अपनी किताब में फ़र्माता है कि, तुम नेकी हर्गिज़ नहीं पा सकते जब तक कि उस माल में से खर्च न करो जो तुमको ज़्यादा पसन्द है और मेरे अम्वाल में सबसे पसन्द मुझे बीरेहाअ है। बयान किया कि बीरे हाअ एक बाग़ था। रसूलुल्लाह (ﷺ) भी उसमें तशरीफ़ ले जाया करते, उसके साए में बैठते और उसका पानी पीते (अबू तलहा ने कहा कि) इसलिये वो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की राह में सदक़ा और रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये है। मैं उसकी नेकी और उसके ज़ख़ीरे आख़िरत होने की उम्मीद रखता हूँ। पस या रसूलल्लाह (ﷺ)! जिस तरह अल्लाह आपको बताए उसे खर्च कीजिए।

٢٧٥٨- وَقَالَ إِسْمَاعِيْلُ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ لاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ جَاءَ أَبُو طَلْحَةَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ يَقُولُ اللهُ تَعَالَى فِي كِتَابِهِ: ﴿لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ وَإِنَّ أَحَبَّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بِيْرُحَاءَ - قَالَ: وَكَانَتْ حَدِيْقَةً كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدْخُلُهَا وَيَسْتَظِلُّ بِهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَائِهَا - فَهِيَ إِلَى اللهِ وَإِلَى رَسُولِهِ ﷺ أَرْجُو بِرَّهُ وَذُخْرَهُ، فَضَعْهَا أَيْ رَسُولَ اللهِ حَيْثُ أَرَاكَ اللهُ. فَقَالَ رَسُولُ

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया वाह-वाह शाबाश अबू तलहा! ये तो बड़ा नफ़ा बख्श माल है, हम तुमसे इसे क़ुबूल करके फिर इसे तुम्हारे ही हवाले कर देते हैं और अब तुम उसे अपने अ़ज़ीज़ों-अक़ारिब को दे दो। चुनाँचे अबू तलहा (रज़ि.) ने वो बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों को दे दिया। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जिन लोगों को बाग़ आपने दिया था उनमें उबई और हस्सान (रज़ि.) थे। उन्होंने बयान किया कि हस्सान (रज़ि.) ने अपना हिस्सा मुआ़विया (रज़ि.) को बेच दिया तो किसी ने उनसे कहा कि क्या आप अबू तलहा (रज़ि.) का दिया हुआ माल बेच रहे हैं? हस्सान (रज़ि.) ने जवाब दिया कि मैं खजूर का एक स़ाअ़ रूपयों के एक स़ाअ़ के बदल क्यूँ न बेचूँ। अनस (रज़ि.) ने कहा ये बाग़ बनी जुदैला के मुहल्ले के क़रीब था जिसे मुआ़विया (रज़ि.) ने (बतौरे क़िला के) ता'मीर किया था। (राजेअ़ : 1461)

اللهِ ﷺ: ((بَخْ يَا أَبَا طَلْحَةَ، ذَلِكَ مَالٌ رَابِحٌ قَبِلْنَاهُ مِنْكَ وَرَدَدْنَاهُ عَلَيْكَ، فَاجْعَلْهُ فِي الأَقْرَبِينَ)). فَتَصَدَّقَ بِهِ أَبُو طَلْحَةَ عَلَى ذَوِي رَحِمِهِ. قَالَ وَكَانَ مِنْهُمْ أُبَيٌّ وَحَسَّانُ. قَالَ: وَبَاعَ حَسَّانُ حِصَّتَهُ مِنْهُ مِنْ مُعَاوِيَةَ فَقِيْلَ لَهُ: تَبِيْعُ صَدَقَةَ أَبِي طَلْحَةَ؟ فَقَالَ: أَلاَ أَبِيْعُ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ بِصَاعٍ مِنْ دَرَاهِمَ؟ قَالَ: وَكَانَتْ تِلْكَ الْحَدِيْقَةُ فِي مَوْضِعِ قَصْرِ بَنِي جُدَيْلَةَ الَّذِي بَنَاهُ مُعَاوِيَةُ)). [راجع: ١٤٦١]

तश्रीह : बाब का तर्जुमा इससे निकला कि अबू तलहा ने आँहज़रत (ﷺ) को वकील किया था, आप (ﷺ) ने उनका स़दक़ा क़ुबूल करके फिर उन्हीं को वापस कर दिया और फ़र्माया कि उसे अपने अक़रबा में तक़सीम कर दो। हज़रत हस्सान ने अपना हिस्सा हज़रत मुआ़विया के हाथ बेच डाला था जब लोगों ने ए'तिराज़ किया तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं खजूर का एक स़ाअ़ रूपयों के एक साअ़ के बदले में क्यूँ न बेचूँ या'नी ऐसी क़ीमत फिर कहाँ मिलेगी गोया खजूर चाँदी के हमवज़न बिक रही है। कहते हैं सिर्फ़ हस्सान का हिस्सा उस बाग़ में हज़रत मुआ़विया ने एक लाख दिरहम में ख़रीदा। चूँकि अबू तलहा (रज़ि.) ने ये बाग़ मुअ़य्यन लोगों पर वक़्फ़ किया था लिहाज़ा उनको अपना हिस्सा बेचना दुरुस्त हुआ। कुछ ने कहा कि अबू तलहा ने उन लोगों पर वक़्फ़ करते वक़्त ये शर्त लगा दी थी कि अगर उनको हाजत हो तो बेच सकते हैं वरना माल वक़्फ़ की बेअ़ दुरुस्त नहीं। क़स्रे बनी हुदैला की तफ़्सील हाफ़िज़ स़ाहब यूँ फ़र्माते हैं **व अम्मा क़स्रु बनी हुदैला व हुव बिल्मुहमलति मुसग्गरून व वहमुन मन क़ालहू बिल्जीमि फनुसिब इलैहिमुल्क़स्रु बिसबबिल्मुजावरति व इल्ला फल्लज़ी बनाहू हुव मुआ़वियतुब्नु अबी सुफ़्यान व बनू हुदैला बिल्मुहमलति मुसग्गरून बत्नुम्मिनल्अन्स़ारि व हुम बनू मुआ़वियतुब्नि अम्रिब्नि मालिक अन्नज्जार व कानू बितिल्कल्बुक्अति फउरिफ़त बिहिम फलम्मा इश्तरा मुआ़वियतु हिस़्स़त हस्सानिन बना फीहा हाज़ल्क़स्र फउरिफ़त बिक़स्रि बनी हुदैला ज़करा ज़ालिक अम्रुब्नु शैबत व गैरहू फी अख़बरिल्मदीनति मिल्कुहुमुल्हदीकतुल् मज्कूरः व लम यक़िफ्हा अलैहिम इज़ लौ वकफहा मा साग लिहस्सानि अंय्यबीअ़हा व वकअ़ फी अख़बाल्मिदीनति लिमुहम्मदिब्निल्हसनिल्मख़्ज़ूमी मिन तरीक़ि अबी बक्रिब्नि हज़्मिन अन्न स़मन हिस्सति हस्सानिन मिअ़तु अल्फ़िदिर्हमिन कबज़हा मिम्मुआ़वियतब्नि अबी सुफ़्यान** (खुलासतु फत्हिल्बारी) और लेकिन क़स्रे बनी हुदैला हाए मुहमला के साथ और जिसने उसे जीम के साथ नक़ल किया ये उसका वहम है। ये पड़ौस की वजह से बनू हुदैला की तरफ़ मन्सूब हो गया था वरना उसके बनाने वाले हज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़यान हैं और बनू हुदैला अंस़ार का एक क़बीला है। ये बनू मुआ़विया बिन अ़म्र बिन मालिक नज्जार हैं जो यहाँ रहा करते थे पस उन ही से ये मन्सूब हो गया। पस जब हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) ने हज़रत हस्सान (रज़ि.) वाला हिस्सा ख़रीद लिया तो वहाँ ये क़िला बनाया जो क़स्रे बनू हुदैला के नाम से मौसूम हो गया। उसे अ़म्र बिन शैबा वग़ैरह ने अख़बारुल मदीना में ज़िक्र किया है, हज़रत हस्सान ने अपना हिस्सा हज़रत मुआ़विया को बेच दिया। इससे स़ाबित हुआ कि अगर उसको उन पर वक़्फ़ करते तो उसे हस्सान बेच नहीं सकते थे और अख़बारे मदीना में है कि हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) ने हस्सान को उनके हिस्से की क़ीमत एक लाख दिरहम अदा की थी। अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं **व अजाब आख़रु बिअन्न अबा तल्हत हीन वक़्फ़हा शरत जवाज़ बैइहिम इन्दल्इतियाजि फइन्नश्शर्त बिहाज़श्शर्ति क़ाल बअ़ज़ुहुम लिजवाज़िही**

वल्लाहु आलमुया'नी ह़ज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने जब उसे वक़्फ़ किया तो हाजत के वक़्त उन लोगों को बेचने की इजाज़त दे दी थी और इस शर्त पर वक़्फ़ जाइज़ है। लफ़्ज़े हुदैला को कुछ ने जीम के साथ जुदैला नक़ल किया है। कुछ ने कहा कि वो सह़ीह़ हाअ मज़्मूमा के साथ हुदैला है वल्लाहु आलम।

बाब 18 :

(सूरह निसा में) अल्लाह तआला का इर्शाद है कि जब (मीराष़ की तक़्सीम) के वक़्त रिश्तेदार (जो वारिष़ न हों) और यतीम और मिस्कीन आ जाएँ तो उनको भी तरके में से कुछ कुछ खिला दो (और अगर खिलाना न हो सके तो) अच्छी बात कहकर नरमी से टाल दो।

١٨- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:
﴿وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِيْنُ فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ﴾

जो लोग ख़ुद वारिष़ हों, उनको तो यतीम और मिस्कीन और दूर के नाते वालों को जो वारिष़ नहीं हैं तक़्सीम के वक़्त कुछ देना वाजिब था और जो ख़ुद वारिष़ न हों जैसे वारिषे औला उसको ये हुक्म था कि नरमी से जवाब दे दो। ये हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में था फिर उस सदक़े का वुजूब जाता रहा और ये आयत मन्सूख़ हो गई, अब कुछ ने कहा अब भी ये हुक्म बाक़ी है आयत मन्सूख़ नहीं है।

2759. हमसे अबुन नोअमान मुहम्मद बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया अबू बिश्र जा'फ़र से, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि कुछ लोग गुमान करने लगे हैं कि ये आयत (जिसका ज़िक्र उन्वान में हुआ) मीराष़ की आयत से मन्सूख़ हो गई है, नहीं क़सम अल्लाह की आयत मन्सूख़ नहीं हुई अल्बत्ता लोग उस पर अमल करने में सुस्त हो गए हैं। तरके के लेने वाले दो तरह के होते हैं, एक तो वो जो ख़ुद वारिष़ हों उसको तो चटाने का हुक्म है (अज़ीज़ों, यतीमों और मुहताजों को जो तक़्सीम के वक़्त आ जाएँ) दूसरा जो ख़ुद वारिष़ नहीं हो उसको नरमी से जवाब देने का हुक्म है, वो यूँ कहे मियाँ मैं तुमको देने का इख़्तियार नहीं रखता।
(दीगर मक़ाम : 4576)

٢٧٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِنَّ نَاسًا يَزْعُمُونَ أَنَّ هَذِهِ الآيَةَ نُسِخَتْ، وَلاَ وَاللهِ مَا نُسِخَتْ، وَلَكِنَّهَا مِمَّا تَهَاوَنَ النَّاسُ، هُمَا وَالِيَانِ: وَالٍ يَرِثُ وَذَاكَ الَّذِي يَرْزُقُ، وَوَالٍ لاَ يَرِثُ فَذَاكَ الَّذِي يَقُولُ بِالْمَعْرُوفِ، يَقُولُ لاَ أَمْلِكُ لَكَ أَنْ أُعْطِيَكَ)).
[طرفه في : ٤٥٧٦].

तशरीह : सनद में मज्कूर ह़ज़रत सईद बिन जुबैर असदी कूफ़ी हैं, जलीलुल क़द्र ताबेईन मे से एक ये भी हैं। इन्होंने अबू मसऊद (रज़ि.), इब्ने अब्बास (रज़ि.), इब्ने उमर (रज़ि.), इब्ने जुबैर और अनस (रज़ि.) से इल्म हासिल किया और उनसे बहुत से लोगों ने। माहे शाबान 95 हिजरी में जबकि उनकी उम्र 49 साल की थी, हज्जाज बिन यूसुफ़ ने इनको क़त्ल कराया और ख़ुद हज्जाज रमज़ान में मरा और कुछ के नज़दीक उसी साल शव्वाल में और यूँ भी कहते हैं कि उनकी शहादत के छः माह बाद मरा। उसके बाद हज्जाज किसी के क़त्ल पर क़ादिर न हुआ। क्योंकि सईद ने उसके लिये दुआ की थी जबकि हज्जाज उनसे मुख़ातिब होकर बोला कि बताओ तुमको किस तरह क़त्ल किया जाए मैं तुमको उसी तरह क़त्ल करूँगा। सईद बोले कि एक हज्जाज! तू अपना क़त्ल जिस तरह होना चाहे वो बतला, इसलिये कि अल्लाह की क़सम! जिस तरह तू मुझको क़त्ल करेगा उसी तरह आख़िरत में मैं तुझको क़त्ल करूँगा। हज्जाज बोला, क्या तुम चाहते हो कि मैं तुमको मुआफ़ कर दूँ? बोले कि अगर अफ़्व वाक़ेअ हुआ तो वो अल्लाह की तरफ़ से होगा और तेरे लिये उसमें कोई बराअत व बहाना नहीं। हज्जाज ये सुनकर बोला कि इनको ले जाओ और क़त्ल कर डालो। पस जब उनको दरवाज़े से बाहर निकाला तो ये हँस पड़े। इसकी

ख़बर हज्जाज को पहुँचाई गई तो हुक्म हुआ कि उन्हें वापस लाओ। लिहाज़ा वापस लाया गया तो उनसे पूछा कि अब हंसने का क्या सबब था। बोले कि मुझको अल्लाह के मुक़ाबले में तेरी बेबाकी और अल्लाह तआला की तेरे मुक़ाबिल में हिल्म व बुर्दबारी पर तअज्जुब होता है। हज्जाज ने ये सुनकर हुक्म दिया कि खाल बिछाई जाए तो बिछाई गई फिर हुक्म दिया कि इनको क़त्ल कर दिया जाए। उसके बाद सईद बिन जुबैर ने फ़र्माया कि **वज्जहतु वज्हिय लिल्** लज़ी अल्ख़ (अल् अन्आम : 79) या'नी मैंने अपना रुख़ सबसे मोड़कर उस अल्लाह की तरफ़ कर लिया है कि जो ख़ालिके आसमान और ज़मीन है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। हज्जाज ने ये सुनकर हुक्म दिया कि इनको क़िब्ले की मुख़ालिफ़ सिम्त करके मज़्बूत बाँध दिया जाए। सईद ने फ़र्माया, **फ़अयनमा तुवल्लू फ़सम्मा वज्हुल्लाह** (अल् बक़रः : 115) जिस तरफ़ भी तुम रुख़ करोगे उसी तरफ़ अल्लाह है। अब हज्जाज ने हुक्म दिया कि सर के बल औंधा कर दिया जाए। सईद ने फ़र्माया कि **मिन्हा ख़लक़्नाकुम व फ़ीहा नुईदुकुम व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा** (ताहा : 555) हज्जाज ने ये सुनकर हुक्म दिया कि इसको ज़िब्ह कर डालो। सईद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं शहादत देता और हुज्जत पेश करता हूँ, इस बात की कि अल्लाह के सिवा कोई और इलाह नहीं वो एक है, उसका कोई शरीक नहीं और इस बात की कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। ये हुज्जते ईमानी मेरी तरफ़ से सम्भाल यहाँ तक कि तू मुझसे क़यामत के दिन मिले।

फिर सईद ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! हज्जाज को मेरे बाद किसी के क़त्ल पर क़ादिर न कर। उसके बाद खाल पर उनको ज़िब्ह कर दिया गया। कहते हैं कि हज्जाज उसके क़त्ल के बाद पन्द्रह रातें और जिया, उसके बाद हज्जाज के पेट में कीड़ों की बीमारी पैदा हो गई। हज्जाज ने हकीम को बुलवाया ताकि मुआयना कर ले। हकीम ने एक गोश्त का एक सड़ा हुआ टुकड़ा मंगवाया और उसको धागे में पिरोकर उसके गले से उतारा और कुछ देर तक छोड़े रखा, उसके बाद हकीम ने उसको निकाला तो देखा कि ख़ून से भरा हुआ है। हकीम समझ गया कि अब ये बचने वाला नहीं। हज्जाज अपनी बक़िया ज़िन्दगी में चीख़ता चिल्लाता रहता था कि मुझे और सईद को क्या हुआ कि जब मैं सोता हूँ तो मेरा पाँव पकड़ कर हिला देता है। सईद बिन जुबैर इराक़ की खुली आबादी में दफ़न किये गये। ग़फ़रल्लाहु लहू (अक्माल)

बाब 19 : अगर किसी को अचानक मौत आ जाए तो उसकी तरफ़ से ख़ैरात करना मुस्तहब है और मय्यत की नज़्रों को पूरी करना

١٩– بَابُ مَا يُسْتَحَبُّ لِمَنْ تُوُفِّيَ فُجَاءَةً أَنْ يَتَصَدَّقُوا عَنْهُ، وَقَضَاءِ النُّذُورِ عَنِ الْمَيِّتِ

2760. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि एक सहाबी (सअद बिन उबादा) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि मेरी वालिदा की मौत अचानक वाक़ेअ हो गई, मेरा ख़याल है कि अगर उन्हें बातचीत का मौक़ा मिलता तो वो सदक़ा करतीं तो क्या मैं उनकी तरफ़ से ख़ैरात कर सकता हूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ उनकी तरफ़ से ख़ैरात कर। (राजेअ : 1388)

٢٧٦٠– حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَجُلاً قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ أُمِّي افْتُلِتَتْ نَفْسُهَا، وَأُرَاهَا لَوْ تَكَلَّمَتْ تَصَدَّقَتْ، أَفَأَتَصَدَّقُ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ، تَصَدَّقْ عَنْهَا)). [راجع: ١٣٨٨]

इस हदीष़ से मा'लूम हुआ कि वारिषों की तरफ़ से मय्यत को ख़ैरात और सदक़े का षवाब पहुँचता है। अहले हदीष़ का इस पर इत्तिफ़ाक़ है लेकिन मुअतज़िला ने इसका इंकार किया है। दूसरी रिवायत में है सअद ने पूछा कौनसी ख़ैरात अफ़ज़ल है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया पानी पिलाना। इसको इमाम निसाई ने रिवायत किया है।

2761. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी इब्ने शिहाब से, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मसला पूछा, उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मेरी माँ का इंतिक़ाल हो गया है और उसके ज़िम्मे एक नज़्र थी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनकी तरफ़ से नज़्र पूरी कर दे। (दीगर मक़ाम : 6698, 6959)

٢٧٦١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اسْتَفْتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ أُمِّي مَاتَتْ وَعَلَيْهَا نَذْرٌ، فَقَالَ: ((اقْضِهِ عَنْهَا)).

[طرفاه في: ٦٦٩٨، ٦٩٥٩].

बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि रसूले करीम (ﷺ) ने उनको माँ की नज़्र पूरा करने का हुक्म दिया, मा'लूम हुआ कि माँ–बाप के इस क़िस्म के फ़राइज़ की अदायगी औलाद पर लाज़िम है

बाब 20 : वक़्फ़ और सदक़ा पर गवाह करना

٢٠- بَابُ الإِشْهَادِ فِي الْوَقْفِ وَالصَّدَقَةِ

2762. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी कहा कि मुझे यअ़ला बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के ग़ुलाम इक्रिमा से सुना और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि क़बीला बनी साअ़दा के भाई सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की माँ का इंतिक़ाल हुआ तो वो उनकी ख़िदमत में ह़ाज़िर नहीं थे (बल्कि रसूलुल्लाह ﷺ के साथ ग़ज़्व-ए-दूमतुल जन्दल में शरीक थे) इसलिये वो आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी वालिदा का इंतिक़ाल हो गया है और मैं उस वक़्त मौजूद नहीं था तो अगर मैं उनकी तरफ़ से ख़ैरात करूँ तो उन्हें उसका फ़ायदा पहुँचेगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! सअ़द (रज़ि.) ने उस पर कहा कि मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मेरा बाग़ मिख़राफ़ नामी उनकी तरफ़ से ख़ैरात है। (राजेअ़ : 2756)

٢٧٦٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي يَعْلَى أَنَّهُ سَمِعَ عِكْرِمَةَ مَوْلَى بْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ أَنْبَأَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ أَنَّ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ - أَخَا بَنِي سَاعِدَةَ - تُوُفِّيَتْ أُمُّهُ وَهُوَ غَائِبٌ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ أُمِّي تُوُفِّيَتْ وَأَنَا غَائِبٌ عَنْهَا، فَهَلْ يَنْفَعُهَا شَيْءٌ إِنْ تَصَدَّقْتُ بِهِ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قَالَ: فَإِنِّي أُشْهِدُكَ أَنَّ حَائِطِيَ الْمِخْرَافَ صَدَقَةٌ عَلَيْهَا)).

[راجع: ٢٧٥٦]

तश्रीह़ : लफ़्ज़ मिख़राफ़ के बारे में ह़ाफ़िज़ साह़ब फ़र्माते हैं, क़ौलुहू अल्मिख़राफु बिकस्रि अव्वलिही व सुकूनिल्मुअजमति व आख़िरूहू फा अय अल्मकानुल्मुष्मिर सुम्मिय बिज़ालिक लिमा युख़रफु मिन्हु अय युज्ना मिनष्षमरति तक़ूलु शजरतु मिख़राफिन व मिष्मारिन क़ालहुल्ख़त्ताबी व वक़अ फ़ी रिवायति अब्दिर्रज़्ज़ाक़ अल्मख़रफ़ बग़ैरि अलिफ़िन व हुव इस्मुल्हाइत़िल्मज़्कूरि वल्हाइतिल् बुस्तानि (फ़त्ह) या'नी मिख़राफ़ फलदार पेड़ को कहते हैं, उस बाग़ का नाम ही मिख़राफ हो गया था।

बाब 21 : सूरह निसा में अल्लाह तआला का ये इर्शाद कि,

٢١- بَابُ قَولِ اللهِ تَعَالَى:

और यतीमों को उनका माल पहुँचा दो और सुथरे माल के ब दले गंदा माल मत लो। और उनका माल अपने माल के साथ गड्ड-मड्ड करके न खाओ बेशक ये बहुत बड़ा गुनाह है और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीम लड़कियों में इंसाफ़ न कर सकोगे तो दूसरी औरतें जो तुम्हें पसन्द हों, उनसे निकाह कर लो।

﴿وَآتُوا الْيَتَامَى أَمْوَالَهُمْ وَلاَ تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ وَلاَ تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَى أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيْرًا. وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ﴾ [النساء: ١٢-١٣].

या'नी अपनी ख़राब चीज़ यतीम के माल में शरीक कर दी और अच्छी चीज़ ले ली, ऐसा न करो क्योंकि यतीम का माल तुम्हारे लिये ह़राम और गंदा है और तुम्हारी चीज़ गो ख़राब हो मगर ह़लाल और सुथरी है।

2763. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी ज़ुह्री से कि उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) उनसे ह़दीष़ बयान करते थे, उन्होंने आइशा (रज़ि.) से आयत, वइन ख़िफ़्तुम अल्ला तुक़्सितू फ़िल् यतामा फ़न्किहू मा त़ाबा लकुम मिनन् निसा (तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है) का मतलब पूछा तो आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उससे मुराद वो यतीम लड़की है जो अपने वली की ज़ेरे–परवरिश हो, फिर वली के दिल में उसका हुस्न और उसके माल की त़रफ़ से रग़बते निकाह पैदा हो जाए मगर उससे कम महर पर जो वैसी लड़कियों का होना चाहिये तो इस त़रह़ निकाह करने से रोका गया लेकिन ये कि वली उनके साथ पूरे महर की अदायगी में इंसाफ़ से काम लें (तो निकाह कर सकते हैं) और उन्हें लड़कियों के सिवा दूसरी औरतों से निकाह करने का हुक्म दिया गया। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा तो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई कि, आपसे लोग औरतों के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हिदायत करता है, ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि फिर अल्लाह तआला ने इस आयत में बयान कर दिया कि यतीम लड़की अगर जमाल और माल वाली हो और (उनके वली) उनसे निकाह करने के ख़्वाहिशमन्द हों लेकिन पूरा महर देने में उनके (ख़ानदान के) त़रीक़ों की पाबन्दी न कर सकें तो (वो उनसे निकाह न करें) जबकि माल और हुस्न की कमी की वजह से उनकी त़रफ़ उन्हें कोई रग़बत न होती हो तो उन्हें वो छोड़ देते और उनके सिवा किसी दूसरी औरत को तलाश करते। रावी ने कहा

٢٧٦٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: ((كَانَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ﴾ قَالَتْ: هِيَ الْيَتِيْمَةُ فِي حَجْرِ وَلِيِّهَا، فَيَرْغَبُ فِي جَمَالِهَا وَمَالِهَا، وَيُرِيْدُ أَنْ يَتَزَوَّجَهَا بِأَدْنَى مِنْ سُنَّةِ نِسَائِهَا، فَنُهُوا عَنْ نِكَاحِهِنَّ إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا فِي إِكْمَالِ الصَّدَاقِ، وَأُمِرُوا بِنِكَاحِ مَنْ سِوَاهُنَّ مِنَ النِّسَاءِ، قَالَتْ عَائِشَةُ: ثُمَّ اسْتَفْتَى النَّاسُ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعْدُ، فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ﴾ قَالَتْ: فَبَيَّنَ اللهُ فِي هَذِهِ أَنَّ الْيَتِيْمَةَ إِذَا كَانَتْ ذَاتَ جَمَالٍ وَمَالٍ رَغِبُوا فِي نِكَاحِهَا وَلَمْ يُلْحِقُوهَا بِسُنَّتِهَا بِإِكْمَالِ الصَّدَاقِ، فَإِذَا كَانَتْ مَرْغُوبَةً عَنْهَا فِي قِلَّةِ الْمَالِ وَالْجَمَالِ تَرَكُوهَا وَالْتَمَسُوا غَيْرَهَا مِنَ النِّسَاءِ. قَالَ: فَكَمَا

يَتْرُكُونَهَا حِينَ يَرْغَبُونَ عَنْهَا فَلَيْسَ لَهُمْ أَنْ يَنْكِحُوهَا إِذَا رَغِبُوا فِيهَا إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا لَهَا الأَوْفَى مِنَ الصَّدَاقِ وَيُعْطُوهَا حَقَّهَا)). [راجع: ٢٤٩٤]

जिस तरह ऐसे लोग रग़बत न होने की सूरत में उन यतीम लड़कियों को छोड़ देते, उसी तरह उनके लिये ये भी जाइज़ नहीं कि जब उन लड़कियों की तरफ़ उन्हें रग़बत हो तो उनके पूरे महर के मामले में और उनके हुक़ूक़ अदा करने में इंसाफ़ से काम लिये बग़ैर उनसे निकाह करें। (राजेअ : 2494)

तश्रीह : तारीख़ (इतिहास) व रिवायतों में मज़कूर है कि यतीम लड़कियाँ जो अपने वली की तर्बियत में होती थीं और वो लड़की उस वली के माल वग़ैरह में बवजह क़राबत के शरीक होती तो अब दो सूरतें पेश आती थीं, कभी तो ये सूरत पेश आती कि वो लड़की ख़ूबसूरत होती और वली को उसके माल व जमाल दोनों की रग़बत की वजह से उससे निकाह की ख़्वाहिश होती और वो थोड़े से महर पर उससे निकाह कर लेता क्योंकि कोई दूसरा शख़्स उस लड़की का दावेदार नहीं होता था और कभी ये सूरत पेश आती कि यतीम लड़की सूरत शक्ल में हसीन न होती मगर उसका वो वली ये ख़्याल करता कि दूसरे किसी से उसका निकाह कर दूँगा तो लड़की का माल मेरे क़ब्ज़े से निकल जाएगा। इस मस्लिहत से वो निकाह तो उस लड़की से तवअन व करहन कर लेता मगर वैसे उससे कुछ रग़बत न रखता। उस पर इस आयत का नुज़ूल हुआ और औलिया (वलियों) को इर्शाद हुआ कि अगर तुमको इस बात का डर है कि तुम ऐसी यतीम लड़कियों के बारे में इंसाफ़ न कर सकोगे और उनके महर और उनके साथ हुस्ने मुआशरत में तुमसे कोताही होगी तो तुम उनसे निकाह मत करो बल्कि और औरतें जो तुमको मरग़ूब हों उनसे एक तो क्या चार तक की तुमको इजाज़त है। क़ायदा-ए-शरइय्या के मुताबिक़ उनसे निकाह कर लो ताकि यतीम लड़कियों को भी नुक़्सान न पहुँचे क्योंकि तुम उनके हुक़ूक़ के हामी रहोगे और तुम भी किसी गुनाह में न पड़ोगे। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है कि बहरहाल औलिया का फ़र्ज़ है कि यतीम बच्चों और बच्चियों के माल की अल्लाह से डरते हुए हिफ़ाज़त करें और उनके बालिग़ होने पर जैसे उनके हक़ में बेहतर जानें वो माल उनको अदा कर दें। वल्लाहु आलम

٢٢- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿وَابْتَلُوا الْيَتَامَى حَتَّى إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ آنَسْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلاَ تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا، وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ، وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ، فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ، وَكَفَى بِاللهِ حَسِيبًا. لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا﴾ [النساء:

बाब 22 : सूरह निसा में अल्लाह का ये इर्शाद कि,

और यतीमों की आज़माइश करते रहो यहाँ तक कि वो बालिग़ हो जाएँ तो अगर तुम उनमें सलाहियत देख लो तो उनके हवाले उनका माल कर दो और उनके माल को जल्द जल्द इस्राफ़ से और इस ख़्याल से कि ये बड़े हो जाएँगे मत खा डालो, बल्कि जो शख़्स मालदार हो तो यतीम के माल से बचा रहे और जो शख़्स नादार हो वो दस्तूर के मुवाफ़िक़ उसमें से खा सकता है और जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो उन पर गवाह भी कर लिया करो और अल्लाह हिसाब करने वाला काफ़ी है। मर्दों के लिये भी उस तरके में हिस्सा है जिसको वालिदैन और नज़दीक के क़राबतदार छोड़ जाएँ और औरतों के लिये भी उस तरके में हिस्सा है जिसको वालदेन और नज़दीक क़राबतदार छोड़ जाएँ। (उस मतरूका) में से थोड़ा या ज़्यादा ज़रूर एक हिस्सा मुक़र्रर है, आयत में हसीबन के मा'नी काफ़ी के हैं।

(अन निसा : 6-7) ٦-٧]. حَسِيبًا يَعْنِي كَافِيًا.

जाहिलियत के ज़माने में अरब लोग तरका में सिर्फ़ मर्दों का हक़ समझते थे, औरतों को कोई हिस्सा नही मिलता था। अल्लाह ने ये बुरी रस्म बातिल कर दी और औरत मर्द सबका हिस्सा मुक़र्रर कर दिया, अब भी बहुत सी जाहिल क़ौमों में जो मुसलमान हैं मगर लड़की का हिस्सा देने का रिवाज नहीं है। ये सरासर ज़ुल्म और बातिल रस्म है, लड़की को भी इस्लाम ने हिस्सेदार ठहराया है, उसका भी हिस्सा अदा करना ज़रूरी है, इस्लाम और अदयाने साबिक़ा (पूर्ववर्ती धर्मों) में औरतों की हैषियत पर एक मा'लूमात से भरा मक़ाला इज़्ज़तमआब मौलवी सय्यद उमैर अली एम. ए. बैरिस्टराईट लॉ ने अपनी क़ानूनी किताब जामेउल अहकाम फ़ी फ़िक़्हुल इस्लाम में क़लम के हवाले किया है जिसका इख़्तिसार (संक्षिप्तीकरण, सारांश) दर्ज ज़ेल है।

जो इस्लाहें, शारेअ इस्लाम (ﷺ) ने फ़र्माईं उनसे औरतों की हालत में नुमायाँ तरक़्क़ी वाक़ेअ हुई, अरब में भी और उन यहूदियों में जो जज़ीरा नुमाए अरब में सुकूनत पज़ीर (निवासी) थे, औरतों की हालत बहुत ही अबतर (गिरी हुई) थी। औरत अपने बाप के घर में कनीज़ की हालत में रहती थी और अगर वो नाबालिग़ होती तो उसके बाप को उसके बेच डालने का इख़्तियार होता था। उसका बाप और बाप की वफ़ात के बाद उसका भाई जो चाहता था उसके साथ सुलूक करता था बजुज़ किसी ख़ास सूरत के बेटी बिलकुल महजूबुल अरष थी। मुश्रिकीने अरब में औरत सिर्फ़ एक जायदादे मन्कूला समझी जाती थी और अपने बाप या शौहर की मिल्कियत का एक जुज़्वे आज़म तसव्वुर की जाती थी और हर शख़्स की बीवी मिष्ल और मतरूका के उसकी बेटी और बेटियों को बतौरे तरका पेदरी के मिलती थीं, इसी वजह से सौतेली माओं की शादियाँ अकषर सौतेले बेटों के साथ हो जाती थीं, इस क़बीह रस्म को इस्लाम में हराम कर दिया गया।

शरअ़े मुहम्मदी के बमौजिब औरत की हैषियत इंग्लिस्तान की औरतों की हालत से बेहतर व बरतर है जब तक वो नाकितख़दा रहती है, अपने बाप के घर में रहती है और जब तक नाबालिग़ रहती है किसी क़दर अपने बाप के या उसके क़ायम मुक़ाम के इख़्तियार रहती है, बालिग़ हो जाने पर उसको वो तमाम हुक़ूक़े शरई हासिल हो जाते हैं जो बालिग़ और रशीद इंसान को मिलने चाहिये। वो अपने भाईयों के साथ माँ–बाप के तरके में हिस्सा बाक़ी है और अगरचे बेटे और बेटी के हिस्से में फ़र्क़ है मगर ये फ़र्क़ भाई और बहन के हालात का मुन्सिफ़ाना लिहाज़ करके रखा गया है। शादी के बाद भी उसके तश्ख़ीस में कुछ फ़र्क़ नहीं आता और वो एक जुदागाना मेम्बर या'नी शरीके सोसायटी की हैषियत में बाक़ी रहती है और उसका वजूद उसके शौहर के वजद के साथ संयुक्त नहीं हो जाता, उसका माल उसके शौहर का माल नहीं हो जाता बल्कि उसका माल उसी का रहता है और वो एक ज़ाती हक़ अपनी मिल्कियत में रखती है। वो अपने क़र्ज़दारों पर ऐलानिया अदालत मे मुक़द्दमे कर सकती है और किसी वली को शरीक करने या अपने शौहर के नाम से मुक़द्दमा करने की ज़रूरत नहीं रखती। जब वो अपने बाप के घर से अपने शौहर के मकान में जा चुकती है तब भी उसको सब हुक़ूक़े शरई वही हासिल रहते हैं जो मर्दों को हासिल हैं। तमाम हवाजिब और हुक़ूक़ जो एक औरत और ज़ौजा को हासिल होने चाहियें उसको सिर्फ़ मुरव्वत और अख़लाक़ की रू से हासिल नहीं हैं जिसका कुछ ए'तिबार नहीं है बल्कि नस्से क़ुर्आनी के बमौजिब हासिल हैं। वो अपनी जायदाद को बिला इजाज़ते शौहर मुंतक़िल कर सकती है और वो वसिय्यत कर सकती है, वो औरों की जायदाद की वसिय्या और मुंतज़िमा मुक़र्रर हो सकती है और औक़ाफ़ की मुतवल्लिया भी मुक़र्रर हो सकती है।

बाब 23 : वसी के लिये यतीम के माल में तिजारत और मेहनत करना दुरुस्त है और फिर मेहनत के मुताबिक़ उसमें से खा लेना दुरुस्त है

-بَابُ وَمَا لِلْوَصِيِّ أَنْ يَعْمَلَ فِي مَالِ الْيَتِيمِ
وَمَا يَأْكُلُ مِنْهُ بِقَدْرِ عُمَالَتِهِ

2764. हमसे हारून बिन अश्अष ने बयान किया, कहा हमसे बनू

٢٧٦٤- حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ الْأَشْعَثِ

हाशिम के गुलाम अबू सईद ने बयान किया, उनसे सख़र बिन जुवैरिया ने बयान किया नाफ़ेअ़ से और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि उ़मर (रज़ि.) ने अपनी एक जायदाद रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में वक़्फ़ कर दी, उस जायदाद का नाम षम्ग़ था और ये एक खजूर का बाग़ था। उ़मर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे एक जायदाद मिली है और मेरे ख़्याल मे निहायत उ़म्दह है, इसलिये मैंने चाहा कि उसे स़दक़ा कर दूँ तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अस़ल माल को स़दक़ा कर कि न बेचा जा सके और न हिबा किया जा सके और न उसका कोई वारिष़ बन सके, सिर्फ़ उसका फल (अल्लाह की राह में) स़र्फ़ (ख़र्च) हो। चुनाँचे उ़मर (रज़ि.) ने उसे स़दक़ा कर दिया, उनका ये स़दक़ा ग़ाज़ियों के लिये, गुलामों को आज़ाद कराने के लिये, मुहताजों और कमज़ोरों के लिये, मुसाफ़िरों के लिये और रिश्तेदारों के लिये था और ये कि उसके निगराँ के लिये उसमें कोई मुज़ायक़ा नहीं होगा कि वो दस्तूर के मुवाफ़िक़ उसमें से खाए या अपने किसी दोस्त को खिलाए बशर्ते कि उसमें से माल जमा करने का इरादा न रखता हो। (राजेअ़ : 2313)

حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيْدٍ مَوْلَى بَنِي هَاشِمٍ حَدَّثَنَا صَخْرُ بْنُ جُوَيْرِيَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ عُمَرَ تَصَدَّقَ بِمَالٍ لَهُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ - وَكَانَ يُقَالُ لَهُ ثَمْغٌ، وَكَانَ نَخْلاً - فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي اسْتَفَدْتُ مَالاً وَهُوَ عِنْدِي نَفِيْسٌ فَأَرَدْتُ أَنْ أَتَصَدَّقَ بِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: تَصَدَّقْ بِأَصْلِهِ، لاَ يُبَاعُ وَلاَ يُوهَبُ وَلاَ يُورَثُ، وَلَكِنْ يُنْفَقُ ثَمَرُهُ، فَتَصَدَّقَ بِهِ عُمَرُ، فَصَدَقَتُهُ تِلْكَ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَفِي الرِّقَابِ وَالْمَسَاكِيْنِ وَالضَّيْفِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَلِذِي الْقُرْبَى، وَلاَ جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلَ مِنْهُ بِالْمَعْرُوفِ، أَوْ يُوْكِلَ صَدِيْقَهُ غَيْرَ مُتَمَوِّلٍ بِهِ)).

[راجع: ٢٣١٣]

इस ह़दीष़ से ष़ाबित हुआ कि वक़्फ़ का मुतवल्ली अपनी मेह़नत के बदले दस्तूर के मुवाफ़िक़ उसमें से खा सकता है जैसा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपना बाग़ वक़्फ़ करते वक़्त तै कर दिया था। इमाम क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, **व मुत़ाबक़तुल्ह़दीष़ि लित्तर्जुमति मिन जिहतिन अन्नल्मक़्सूद जवाज़ु अख़्ज़िल्उज्रति मिम्मालिल्यतीमि लिक़ौलि उमर वला जुनाह अ़ला मन वलिय्युहू अय्याकुल मिन्हु बिल्मअ़रूफ़ि** (क़स्तलानी) मत़लब वही है जो ऊपर मज़्कूर हुआ।

2765. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया हिशाम से, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने (क़ुर्आन मजीद की इस आयत) और जो शख़्स़ मालदार हो वो अपने को यतीम के माल से बिलकुल रोके रखे, अल्बत्ता जो शख़्स़ नादार हो तो वो दस्तूर के मुत़ाबिक़ खा सकता है, के बारे में फ़र्माया कि यतीमों के वलियों के बारे में नाज़िल हुई कि यतीम के माल में से अगर वली नादार हो तो दस्तूर के मुत़ाबिक़ उसके माल में से ले सकता है। (राजेअ़ : 2212)

٢٧٦٥ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ﴿وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ، وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ﴾ قَالَتْ: أُنْزِلَتْ فِي وَالِي الْيَتِيْمِ أَنْ يُصِيْبَ مِنْ مَالِهِ إِذَا كَانَ مُحْتَاجًا بِقَدْرِ مَالِهِ بِالْمَعْرُوفِ. [راجع: ٢٢١٢]

इस ह़दीष़ से बाब का पहला ह़िस़्स़ा या'नी यतीमों के माल में नेक निय्यती से तिजारत करना, फिर अपनी मेह़नत के मुत़ाबिक़ उसमें से खाना दुरुस्त है।

बाब 23 : सूरह निसा में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि,

٢٣- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

बेशक वो लोग जो यतीमों का माल ज़ुल्म के साथ खा जाते हैं, वो अपने पेट में आग भरते हैं, वो ज़रूर दहकती हुई आग ही में झोंक दिये जाएँगे। (अन निसा : 10)

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَى ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا﴾ [النساء: ١٠].

इब्ने अबी ह़ातिम अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से ह़दीष़े मेअराज में मन्कूल है कि आपने दोज़ख़ में ऐसे लोग देखे जिनके पेट ऊँटों के पेट जैसे हैं। जिनमें दोज़ख़ का दहकता हुआ पत्थर डाला जा रहा है और वो नीचे से निकल जाता है। आप (ﷺ) को बतलाया गया ये वो लोग हैं जो यतीमों का माल खा जाया करते थे।

2766. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे ष़ौर बिन ज़ैद मदनी ने बयान किया, उनसे अबू ग़ैष़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सात गुनाहों से जो तबाह कर देने वाले हैं, बचते रहो। स़हाबा (रज़ि.) ने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! वो कौन-सा गुनाह है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना, जादू करना, किसी की नाह़क़ जान लेना कि जिसे अल्लाह तआ़ला ने ह़राम क़रार दिया है, सूद खाना, यतीम का माल खाना, लड़ाई में से भाग जाना, पाकदामन भोली–भाली ईमान वाली औ़रतों पर तोहमत लगाना। (दीगर मक़ाम : 5764, 6857)

٢٧٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ الْمَدَنِيِّ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ)). قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا هُنَّ؟ قَالَ: ((الشِّرْكُ بِاللهِ، وَالسِّحْرُ، وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ، وَأَكْلُ الرِّبَا، وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ، وَالتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ، وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلاَتِ)).

[طرفاه في : ٥٧٦٤، ٦٨٥٧].

कबीरा गुनाहों की ता'दाद उन सात पर ख़त्म नहीं है और भी बहुत से गुनाह इस ज़ैल में बयान किये गये हैं। कुछ उ़लमा ने उनकी तफ़्सीलात पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं, बहरह़ाल ये गुनाह हैं जिनका मुर्तकिब अगर बग़ैर तौबा किये मर गया तो यक़ीनन वो हलाक हो गया या'नी जहन्नम रसीद हुआ। बाब की मुत़ाबक़त यतीम का माल खाने से है जिनकी मज़म्मत आयते मज़्कूरा फ़िल बाब में की गई है। इस ह़दीष़ के जुम्ला रावी मदनी हैं और ह़ज़रत इमाम ने उसे किताबुत् त़िब वल् मुह़ारिबीन में भी निकाला है।

बाब 24 : अल्लाह तआ़ला का सूरह बक़र: में ये फ़र्माना कि,

٢٤- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

आप (ﷺ) से लोग यतीमों के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि जहाँ तक हो सके उनके मालों में बेहतरी का ख़्याल रखना ही बेहतर है और अगर तुम उनके साथ (उनके अम्वाल में) साथ मिल–जुलकर रहो तो (बहरह़ाल) वो भी तुम्हारे ही भाई हैं और अल्लाह तआ़ला संवारने वाले और फ़साद पैदा करने वाले को ख़ूब

﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَى، قُلْ إِصْلاَحٌ لَهُمْ خَيْرٌ، وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ، وَاللهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ، وَلَوْ شَاءَ اللهُ لأَعْنَتَكُمْ، إِنَّ اللهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾

जानता है और अगर अल्लाह तआला चाहता तो तुम्हें तंगी में मुब्तला कर देता, बिला शुब्हा अल्लाह तआला ग़ालिब और हिक्मत वाला है, (क़ुर्आन की इस आयत में) लअअनतकुम के मा'नी हैं कि तुम्हें हर्ज और तंगी में मुब्तला कर देता और (सूरह ताहा में लफ़्ज़) तहनत के मा'नी मुँह झुक गये, उस अल्लाह के लिये जो ज़िन्दा है और सब कुछ सम्भालने वाला।

[البقرة : ٢٢٠] لأَعْنَتَكُمْ: لأَحْرَجَكُمْ وَضَيَّقَ. وَعَنَتْ : خَضَعَتْ.

2767. और इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन उसामा ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि इब्ने उमर (रज़ि.) को कोई वसी बनाता तो वो कभी इंकार न करते। इब्ने सीरीन ताबेई (रह.) का महबूब मश्ग़ला ये था कि यतीम के माल वा जायदाद के सिलसिले में उनके ख़ैर–ख़्वाहों और वलियों को जमा करते ताकि उनके लिये कोई अच्छी सूरत पैदा करने के लिये ग़ौर करें। ताऊस ताबेई (रह.) से जब यतीमों के बारे में कोई सवाल किया जाता तो आप ये आयत पढ़ते कि, और अल्लाह फ़साद पैदा करने वाले और संवारने वाले को ख़ूब जानता है। अता (रह.) ने यतीमों के बारे में कहा ख़्वाह मा'मूली क़िस्म के लोगों में हों या बड़े दर्जे के, उसका वली उसके हिस्से में से जैसे चाहे उसके लायक़ हो, वैसा उस पर ख़र्च करे।

٢٧٦٧- وَقَالَ لَنَا سُلَيْمَانُ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ : مَا رَدَّ ابْنُ عُمَرَ عَلَى أَحَدٍ وَصِيَّتَهُ. وَكَانَ ابْنُ سِيرِيْنَ أَحَبُّ الأَشْيَاءِ إِلَيْهِ فِي مَالِ الْيَتِيمِ أَنْ يَجْتَمِعَ إِلَيْهِ نُصَحَاؤُهُ وَأَوْلِيَاؤُهُ فَيَنظُرُوا الَّذِي هُوَ خَيْرٌ لَهُ. وَكَانَ طَاوُسٌ إِذَا سُئِلَ عَنْ شَيْءٍ مِنْ أَمْرِ الْيَتَامَى قَرَأَ: ﴿وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ﴾. وَقَالَ عَطَاءٌ فِي يَتَامَى الصَّغِيْرِ وَالْكَبِيْرِ: يُنْفِقُ الْوَلِيُّ عَلَى كُلِّ إِنْسَانٍ بِقَدْرِهِ مِنْ حِصَّتِهِ.

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का क़ौल **व क़ाल लना सुलैमानु हद्दषना हम्माद अल्ख** ये हदीष़ मौसूलन है मुअल्लक़ नहीं है क्योंकि सुलैमान बिन हर्ब इमाम बुख़ारी (रह.) के शुयूख़ में से हैं और तअ ज्जुब है ऐनी से कि उन्होंने हाफ़िज़ इब्ने हजर पर ये ए'तिराज़ जमाया कि इस हदीष़ का मौसूल होना किसी लफ़्ज़ से नहीं पाया जाता हालाँकि उसमें साफ़ क़ाला लना के लफ़्ज़ से मा'लूम होता है कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने सुलैमान से सुना और ये इमाम बुख़ारी (रह.) का कमाल एहतियातन है कि उन्हों ने ऐसे मक़ामात पर **हद्दषना या अख़बरना** का लफ़्ज़ इस्ते'माल नहीं फ़र्माया क्योंकि सुलैमान ने बुख़ारी को ये रिवायत बतौरे तहदीष़ के न सुनाई होगी बल्कि वो किसी और से मुख़ातिब होंगे और इमाम बुख़ारी (रह.) ने सुन लिया होगा (वहीदी)

हदीषे मौसूल या मुत्तसिल व मुअल्लक़ की ता'रीफ़ शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी के लफ़्ज़ों में ये है, **फइल्लम यस्कुत राविम्मिरूँवाति मिनल्ब य्यिनि फल्हदीषु मुत्तसिलुन व युसम्मा अदमुस्सुक़ूति इत्तिसालन व इन सक़त वाहिदुन औ अक्षर फल्हदीषु मुन्कतिउन व हाज़स्सुक़ूतु इन्क़िताउन वस्सुक़ूतु अम्मा अंय्यकून मिन अव्वलिस्सनदि व युसम्मा मुअल्लक़न व हाज़लइस्क़ातु तअलीक़न वस्साक़ितु क़द यकूनु वाहिदुन औ क़द यकूनु अक्षर व क़द युहज़ुफु तमामस्सनदि कमा हुव आदतुल्मुसन्निफ़ीन यक़ूलून क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) वत्तअलीक़ातु कषीरतुन फी तराजिमि सहीहिल्बुख़ारी व लहा हुक्मुल्इत्तिसालि लिअन्नहू इल्तज़म फीहाज़ल्किताबि अंल्ला यातिय इल्ला बिस्सहीह** (मुक़दमः मिश्कात) या'नी सनद के रावियों में से कोई रावी साक़ित न हो, उस हदीष़ को मुत्तसिल (या मौसूल) कहेंगे और इस अदमे सुक़ूत को दूसरा नाम इत्तिसाल का दिया गया है और अगर कोई एक रावी या ज़्यादा साक़ित हों पस वो हदीष़ मुन्क़तअ है इस सुक़ूत को इन्क़ताअ कहते हैं। कभी सुक़ूत रावी-ए-सनद में से होता है, ऐसी हदीष़ को मुअल्लक़

कहते हैं और इस इस्क़ात को तअलीक़ कहते हैं, साक़ित कभी एक रावी होता है कभी ज़्यादा जैसा कि मुसन्निफ़ीन की आदत है कि वो बग़ैर सनद बयान किये क़ाला रसूलुल्लाह (ﷺ) कह देते हैं और इस क़िस्म की तअलीक़ात सहीह बुख़ारी के अब्वाब में बकषरत हैं और उन सबके लिये इत्तिसाल ही का हुक्म है क्योंकि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इल्तिज़ाम किया हुआ है कि वो इस किताब में सिर्फ़ सहीह अहादीष व आषार ही को नक़ल करेंगे।

तर्जुमतुल बाब में मज़्कूरा आयते शरीफ़ा **व यस्अलूनक अनिल्यतामा** (अल बक़र : 220) का शाने नुज़ूल ये है कि जब आयत **व ला तक़्रबू मालल्यतीम** (अल अन्आम : 156) नाज़िल हुई तो लोगों ने डर के मारे यतीमों का खाना–पीना सब बिलकुल अलग कर दिया पस वो कुछ बच जाता तो ख़राब हो जाता, ये अम्र बहुत मुश्किल हुआ तो उन्हों ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमते–अक़्दस में इस मुश्किल का ज़िक्र किया। उस वक़्त ये आयत नाज़िल हुई और बतलाया गया कि उनको अपने साथ ही खिलाओ–पिलाओ, उनके माल की हिफ़ाज़त करो, अगर तुम्हारी निय्यत दुरुस्त होगी तो अल्लाह ख़ूब जानता है। **वल्लाहु यअलमुल्मुफ़्सिद मिनल्मुस्लिहि** (अल बक़र : 220)

बाब 25 : सफ़र और हज़र में यतीम से काम लेना जिसमें उसकी भलाई हो और माँ और सौतेले बाप का यतीम पर नज़र डालना

٢٥- بَابُ اسْتِخْدَامِ الْيَتِيمِ فِي السَّفَرِ وَالْحَضَرِ إِذَا كَانَ صَلاَحًا لَهُ وَنَظَرِ الأُمِّ أَوْ زَوْجِهَا لِلْيَتِيمِ

2768. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन उलय्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आपके साथ कोई ख़ादिम नहीं था। इसलिये अबू तलहा (रज़ि.) (जो मेरे सौतेले बाप थे) मेरा हाथ पकड़कर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ले गए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अनस समझदार बच्चा है ये आपकी ख़िदमत किया करेगा। अनस (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने आपकी सफ़र और हज़र में ख़िदमत की, आप (ﷺ) ने मुझसे कभी किसी काम के बारे में जिसे मैंने कर दिया हो, ये नहीं फ़र्माया कि ये काम तुमने इस तरह क्यूँ किया, इसी तरह किसी ऐसे काम के बारे में जिसे मैं न कर सका हूँ आप (ﷺ) ने ये नहीं फ़र्माया कि तूने ये काम इस तरह क्यूँ नहीं किया। (दीगर मक़ाम : 6038, 6911)

٢٧٦٨- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ كَثِيرٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ لَيْسَ لَهُ خَادِمٌ، فَأَخَذَ أَبُو طَلْحَةَ بِيَدِي فَانْطَلَقَ بِي إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ أَنَسًا غُلاَمٌ كَيِّسٌ فَلْيَخْدُمْكَ، قَالَ: فَخَدَمْتُهُ فِي السَّفَرِ وَالْحَضَرِ، مَا قَالَ لِي لِشَيْءٍ صَنَعْتُهُ لِمَ صَنَعْتَ هَذَا هَكَذَا؟ وَلاَ لِشَيْءٍ لَمْ أَصْنَعْهُ لِمَ لَمْ تَصْنَعْ هَذَا هَكَذَا؟)). [طرفاه في : ٦٠٣٨، ٦٩١١].

हज़रत अबू तलहा ने जो हज़रत अनस (रज़ि.) के सौतेले बाप थे, उनको आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में वक़्फ़ कर दिया जबकि आप (ﷺ) एक जंग के लिये निकल रहे थे, इसी से मक़्सदे बाब षाबित हुआ। हज़रत अनस (रज़ि.) क़ाबिले सद मुबारकबाद हैं कि उनको सफ़र और हज़र में पूरे दस साल आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत का मौक़ा मिला और आँहज़रत (ﷺ) के अख़्लाक़े फ़ाज़िला का बहुत क़रीब से उन्होंने मुआयना किया और क़यामत तक के लिये वो ख़ादिमे रसूलुल्लाह (ﷺ) की हैषियत से दुनिया में यादगार रह गए (रज़ियल्लाहु व अरज़ाहू) ये अबू तलहा ज़ैद बिन सहल अंसारी शौहर उम्मे सुलैम (वालिदा अनस) के हैं और इस हदीष के तमाम रावी बसरी हैं जिस तरह कि क़स्तलानी ने बयान किया।

बाब 26 : अगर किसी ने एक ज़मीन वक़्फ़ की (जो मशहूर व मा'लूम है) उसकी हदें बयान नहीं

٢٦- بَابُ إِذَا وَقَفَ أَرْضًا وَلَمْ يُبَيِّنِ

الحُدُودَ فَهُوَ جَائِزٌ، وَكَذَلِكَ الصَّدَقَةُ

कीं तो ये जाइज़ होगा, इसी तरह ऐसी ज़मीन का सदक़ा देना

٢٧٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: كَانَ أَبُو طَلْحَةَ أَكْثَرَ الأَنْصَارِ بِالْمَدِينَةِ مَالاً مِنْ نَخْلٍ، وَكَانَ أَحَبُّ مَالِهِ إِلَيْهِ بِيرَحَاءَ مُسْتَقْبِلَةَ الْمَسْجِدِ ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْخُلُهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَاءٍ فِيْهَا طَيِّبٍ، قَالَ أَنَسٌ: فَلَمَّا نَزَلَتْ ﴿لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ قَامَ أَبُو طَلْحَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ اللهَ يَقُولُ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ وَإِنَّ أَحَبَّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بِيرَحَاءُ، وَإِنَّهَا صَدَقَةٌ للهِ أَرْجُو بِرَّهَا وَذُخْرَهَا عِنْدَ اللهِ، فَضَعْهَا حَيْثُ أَرَاكَ اللهُ، فَقَالَ: ((بَخْ، ذَلِكَ مَالٌ رَابِحٌ - أَوْ رَايِحٌ، شَكَّ ابْنُ مَسْلَمَةَ - وَقَدْ سَمِعْتُ مَا قُلْتَ، وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الأَقْرَبِينَ)). قَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَفْعَلُ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ. فَقَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَبَنِي عَمِّهِ)).
وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ وَيَحْيَى بْنُ يَحْيَى عَنْ مَالِكٍ: ((رَايِحٌ)).
[راجع: ١٤٦١]

2769. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा ने, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आप (रज़ि.) बयान करते थे कि अबू त़लह़ा (रज़ि.) खजूर के बाग़ात के ए'तिबार से मदीना के अंसार में सबसे बड़े मालदार थे और उन्हें अपने तमाम मालों में मस्जिदे नबवी के सामने बीरेहाअ का बाग़ सबसे ज़्यादा पसन्द था। ख़ुद नबी करीम (ﷺ) भी उस बाग़ में तशरीफ़ ले जाते और उसका मीठा पानी पीते थे। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर जब ये आयत नाज़िल हुई, नेकी तुम हर्गिज़ हासिल नहीं करोगे जब तक अपने उस माल से न ख़र्च करो जो तुम्हें पसन्द हों, तो अबू त़लह़ा (रज़ि.) उठे और आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि, तुम नेकी हर्गिज़ नहीं हासिल कर सकोगे जब तक अपने उन मालों में से न ख़र्च करो जो तुम्हें ज़्यादा पसन्द हों, और मेरे अम्वाल में मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द बीरेहाअ है और ये अल्लाह के रास्ते में स़दक़ा है, मैं अल्लाह की बारगाह से उसकी नेकी और ज़ख़ीर-ए-आख़िरत होने की उम्मीद रखता हूँ, आपको जहाँ अल्लाह तआ़ला बताए उसे ख़र्च करें। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, शाबाश! ये तो बड़ा फ़ायदेमन्द माल है या (आपने बजाय राबेह़ के) रायेह़ कहा, ये शक अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा रावी को हुआ था....... और जो कुछ तुमने कहा है मैंने सब सुन लिया है और मेरा ख़्याल है कि तुम उसे अपने नाते वालों को दे दो। अबू त़लह़ा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं ऐसा ही करूँगा । चुनाँचे उन्होंने अपने अ़ज़ीज़ों और अपने चचा के लड़कों में तक़्सीम कर दिया। इस्माईल, अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ और यह्या बिन यह्या ने मालिक के वास्ते से। राबेह़ के बजाय रायेह़ बयान किया है। (राजेअ़ : 1461)

बाब के तर्जुमे की मुताबक़त स़ाफ़ ज़ाहिर है कि अबू त़लह़ा ने बीरेहाअ को स़दक़ा कर दिया। उसके हुदूद बयान नहीं किये क्योंकि बीरेहाअ बाग़ मशहूर व मअ़रूफ़ था, हर कोई उसको जानता था अगर कोई ऐसी ज़मीन वक़्फ़ करे कि वो मअ़रूफ़ व मशहूर न हो तब तो उसकी हुदूद बयान करनी ज़रूरी हैं।

लफ़्ज़ बीरेह्राअ दो कलिमों से मुरक्कब है पहला कलिमा बीर है जिसके मा'नी कुँए के हैं दूसरा कलिमा ह्राअ है उसके बारे में इख़्तिलाफ़ है कि किसी मर्द या औरत का नाम है या किसी जगह का नाम जिसकी तरफ़ ये कुँआ मन्सूब किया गया है या ये कलिमा ऊँटों के डांटने के लिये बोला जाता था और इस जगह ऊँट बकषरत चराए जाते थे, लोग उनको डांटने के लिये लफ़्ज़ ह्राअ इस्ते'माल करते। उसी से ये लफ़्ज़ बीरेह्राअ मिलकर एक कलिमा बन गया। फिर हज़रत अबू तलहा का सारा बाग़ ही उस नाम से मौसूम हो गया क्यों कि ये कुँआ उसके अंदर था लफ़्ज़ **बख़्ख़ि बख़्ख़ि** वाह! वाह!! की जगह बोला जाता था।

2770. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमको रौह बिन उबादा ने ख़बर दी, कहा हमको ज़करिया बिन इस्हाक़ ने बयान किया कि मुझसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया इक्रिमा से और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कि एक सहाबी सअद बिन उबादा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि उनकी माँ का इंतिक़ाल हो गया है। क्या अगर वो उनकी तरफ़ से ख़ैरात करें तो उन्हें उसका फ़ायदा पहुँचेगा आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि हाँ। इस पर उन सहाबी ने कहा कि मेरा एक पुरमेवा बाग़ है और मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मैंने वो उनकी तरफ़ से सदक़ा कर दिया। (राजेअ : 2756)

٢٧٧٠ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَجُلاً قَالَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ إِنَّ أُمَّهُ تُوُفِّيَتْ أَيَنْفَعُهَا إِنْ تَصَدَّقْتُ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قَالَ: فَإِنَّ لِي مِخْرَافًا، وَأُشْهِدُكَ أَنِّي قَدْ تَصَدَّقْتُ بِهِ عَنْهَا)).

[راجع: ٢٧٥٦]

यहाँ भी इस बाग़ की हुदूद को बयान नहीं किया गया। इससे मक़्सदे बाब षाबित हुआ। ये भी षाबित हुआ कि ईसाले षवाब के लिये कुँआ या कोई बाग़ वक़्फ़ कर देना बेहतरीन सदक़-ए-जारिया है कि मख़्लूक़ इससे फ़ायदा हासिल करती रहेगी और जिस के लिये बनाया गया उसको षवाब मिलता रहेगा।

बाब 27 : अगर कई आदमियों ने अपनी मुश्तरक ज़मीन जो मशाअ थी (तक़्सीम नहीं होती थी) वक़्फ़ कर दी तो जाइज़ है

٢٧- بَابُ إِذَا وَقَفَ جَمَاعَةٌ أَرْضًا مُشَاعًا فَهُوَ جَائِزٌ

2771. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह यज़ीद बिन हुमैद ने, और उनसे अनस (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने (मदीना में) मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और बनी नज्जार से फ़र्माया तुम अपने इस बाग़ का मुझसे मोल कर लो। उन्होंने कहा हर्गिज़ नहीं अल्लाह की क़सम! हम तो अल्लाह ही से इसका मौल लेंगे। (राजेअ : 234)

٢٧٧١ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِبِنَاءِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ: ((يَا بَنِي النَّجَّارِ ثَامِنُونِي بِحَائِطِكُمْ هَذَا))، قَالُوا: لاَ وَاللهِ لاَ نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلاَّ إِلَى اللهِ)). [راجع: ٢٣٤]

तश्रीह : गोया बनी नज्जार ने अपनी मुश्तरका ज़मीन मस्जिद के लिये वक़्फ़ कर दी तो बाब का मतलब निकल आया लेकिन इब्ने सअद ने तब्क़ात में वाक़दी से यूँ रिवायत की है कि आपने ये ज़मीन दस दीनार में ख़रीदी और अबूबक्र (रज़ि.) ने क़ीमत अदा की। इस सूरत में भी बाब का मक़्सद निकल आएगा इस तरह से कि पहले बनी नज्जार ने उसको वक़्फ़ करना चाहा और आपने उस पर इंकार न किया। वाक़दी की रिवायत में ये भी है कि आपने क़ीमत इसलिये दी कि दो यतीम बच्चों का भी उसमें हिस्सा था। (वहीदी) ये हदीष अब्वाबुल जनाइज़ में भी गुज़र चुकी है।

बाब 28 : वक़्फ़ की सनद क्यूँ कर लिखी जाए

٢٨- بَابُ الْوَقْفِ كَيْفَ يُكْتَبُ؟

2772. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन औन ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया, उ़मर (रज़ि.) को ख़ैबर में एक ज़मीन मिली (जिसका नाम ष़म्ग़ था) तो आप नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि मुझे एक ज़मीन मिली है और उससे उम्दा माल मुझे कभी नहीं मिला था, आप उसके बारे में मुझे मश्वरा देते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर चाहे तो अस़ल जायदाद अपने क़ब्ज़े में रोक रख और उसके मुनाफ़े को ख़ैरात कर दे। चुनाँचे उ़मर (रज़ि.) ने उसे इस शर्त के साथ स़दक़ा (वक़्फ़) किया कि अस़ल ज़मीन न बेची जाए, न हिबा की जाए और न विराष़त में किसी को मिले और फ़ुक़रा, रिश्तेदार, ग़ुलाम आज़ाद कराने, अल्लाह के रास्ते (के मुजाहिदों) मेहमानों और मुसाफ़िरों के लिये (वक़्फ़ है) जो शख़्स भी इसका मुतवल्ली हुआ अगर दस्तूर के मुताबिक़ उसमें से खाए या अपने किसी दोस्त को खिलाए तो कोई ह़र्ज नहीं बशर्ते कि माल जमा करने का इरादा न हो। (राजेअ़ : 2313)

٢٧٧٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَصَابَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بِخَيْبَرَ أَرْضًا، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : ((أَصَبْتُ أَرْضًا لَمْ أُصِبْ مَالاً قَطُّ أَنْفَسَ مِنْهُ، فَكَيْفَ تَأْمُرُنِي بِهِ؟ قَالَ: ((إِنْ شِئْتَ حَبَّسْتَ أَصْلَهَا وَتَصَدَّقْتَ بِهَا)). فَتَصَدَّقَ عُمَرُ أَنَّهُ لاَ يُبَاعُ أَصْلُهَا وَلاَ يُوهَبُ وَلاَ يُوْرَثُ. فِي الْفُقَرَاءِ وَالرِّقَابِ وَفِي سَبِيْلِ اللهِ وَالضَّيْفِ وَابْنِ السَّبِيْلِ، لاَ جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهَا أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا بِالْمَعْرُوفِ أَوْ يُطْعِمَ صَدِيْقًا غَيْرَ مُتَمَوِّلٍ فِيْهِ)). [راجع: ٢٣١٣]

इस रिवायत में ये ज़िक्र नहीं है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने वक़्फ़ की ये शर्तें लिखवा दीं, मगर इमाम बुख़ारी (रह.) उस रिवायत की तरफ़ इशारा किया जिसको अबू दाऊद ने निकाला। उसमें यूँ है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ये शर्तें मुअ़यक़ीब की क़लम से लिखवा दीं जिसमें ये था कि अस़ल जायदाद को कोई बेअ़ या हिबा न कर सके, उसी को वक़्फ़ कहते हैं। नाते वालों में मालदार, और नादार सब आ गए तो बाब का मक़्स़द निकल आया (वह़ीदी)। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ये वाक़िया 7 हिजरी से ता'ल्लुक़ रखता है। आपने शुरू में उसका मुतवल्ली ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) उम्मुल मोमिनीन को बनाया था और ये लिखा था कि **हाज़ा मा कतब अब्दुल्लाहि उमरू अमीरुल्मूमिनीन फी षमगिन अन्नहू इला ह़फ़्स़त आशत तुन्फिक़ु हैषु अराहल्लाहु फइ तुवफ्फ़ियत फइला जविर्रायि मिन अहलिहा** वक़्फ़ नामा का मतन लिखने वाले मुअ़यक़ीब थे और गवाह अ़ब्दुल्लाह बिन अरक़म। आँह़ज़रत (ﷺ) के मुबारक अ़हद में ये ज़ुबानी वक़्फ़ था, बाद में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने अ़हदे हुकूमत में उसे बाज़ाब्ता तह़रीर करा दिया (विधिवत लिखवा दिया)। (फ़त्ह़ुल बारी)

बाब 29 : मालदार और मुह़ताज और मेहमान सब पर वक़्फ़ कर सकता है

٢٩- بَابُ الْوَقْفِ لِلْغَنِيِّ وَالْفَقِيْرِ وَالضَّيْفِ

2773. हमसे अबू आ़स़िम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन औन ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि उ़मर (रज़ि.) को ख़ैबर में एक जायदाद मिली तो आपने नबी करीम (ﷺ) की

٢٧٧٣- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَجَدَ مَالاً

ख़िदमत में हाज़िर होकर उसके बारे मे ख़बर दी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर चाहो तो इसे सदक़ा कर दो। चुनाँचे आपने फ़ुक़रा, मसाकीन, रिश्तेदारों और मेहमानों के लिये उसे सदक़ा कर दिया। (राजेअ : 1213)

بِخَيْبَرَ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرَهُ قَالَ: ((إِنْ شِئْتَ تَصَدَّقْتَ بِهَا)) فَتَصَدَّقَ بِهَا فِي الْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِيْنِ وَذِي الْقُرْبَى وَالضَّيْفِ. [راجع: ١٢١٣]

तश्रीह : हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़र्माते हैं, **फीहि जवाज़ुल्वक़्फ़ि अलल्अगनियाइ लिअन्न ज़विल्क़ुर्बा वज़्ज़ैफि लम युक़य्यिद बिल्हाजति व हुवल्अस़ह्हु इन्दश्शाफ़िइय्यति** (फ़तह) या'नी इससे अग़्निया (मालदारों) पर भी वक़्फ़ करने का जवाज़ निकला, इसलिये कि क़राबतदारों और मेहमानों के लिये हाजतमन्द होने की क़ैद नहीं लगाई और शाफ़िइया के नज़दीक यही सहीह मसलक है।

बाब 30 : मस्जिद के लिये ज़मीन का वक़्फ़ करना

٣٠- بَابُ وَقْفِ الأَرْضِ لِلْمَسْجِدِ

2774. हमसे इस्हाक़ बिन मन्सूर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुस्समद ने बयान किया, कहा कि मैं ने अपने वालिद (अब्दुल वारिष़) से सुना, उनसे अबुत् तियाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आपने मस्जिद बनाने के लिये हुक्म दिया और फ़र्माया ऐ बनू नज्जार! अपने बाग़ की मुझसे क़ीमत ले लो। उन्होंने कहा कि नहीं अल्लाह की क़सम! हम तो उसकी क़ीमत सिर्फ़ अल्लाह से मांगते हैं। (राजेअ : 234)

٢٧٧٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي حَدَّثَنَا أَبُو التَّيَّاحِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِيْنَةَ أَمَرَ بِالْمَسْجِدِ وَقَالَ: ((يَا بَنِي النَّجَّارِ ثَامِنُونِي بِحَائِطِكُمْ هَذَا))، قَالُوا: لاَ وَاللهِ لاَ نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلاَّ إِلَى اللهِ)). [راجع: ٢٣٤]

तश्रीह : **लजअलल्बुख़ारी अरादर्रद्द अला मन ख़स़्स़ जवाज़ल्वक़्फ़ि बिल्मस्जिदि व कअन्नहू क़ाल क़द नफ़ज़ वक़्फ़ल्अर्ज़िलमज्कूरति क़ब्ल अन तकून मस्जिदन फदल्ल अला अन्न सिहतल्वक़्फ़ि ला तुख़्तस्सु बिल्मस्जिदि व वज्हुअख़्ज़िही मिन हदीषिल्बाबि अन्नल्लज़ीन क़ालू ला नत्लुबु षमनहा इल्ला इलल्लाहि कअन्नहुम तसद्दक़ू बिल्अर्ज़िल्मज्कूरति लिहतमि इन्इक़ादिल्वक़्फ़ि क़ब्लल्बनाइ फयूखज़ु मिन्हु अन्न मन वक़्फ़ अर्ज़न अला अंय्यब्नियहा मस्जिदन यन्अक़िदुल्वक़्फ़ु क़ब्लल्बिनाइ** (फ़तह)। ख़ुलासा इस इबारत का ये है कि मस्जिद के नाम पर ता'मीर से पहले ही किसी ज़मीन का वक़्फ़ करना दुरुस्त है कुछ लोग उसको जाइज़ नहीं कहते, उनकी तर्दीद करना इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्सद है। बनू नज्जार ने पहले ज़मीन को वक़्फ़ कर दिया था बाद में मस्जिदे नबवी वहाँ ता'मीर की गई।

बाब 31 : जानवर और घोड़े और सामान और सोना—चाँदी वक़्फ़ करना

٣١- بَابُ وَقْفِ الدَّوَابِّ وَالْكُرَاعِ وَالْعُرُوضِ وَالصَّامِتِ

ज़ुह्री (रह.) ने ऐसे शख़्स के बारे में फ़र्माया था जिसने हज़ार दीनार अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ कर दिये और उन्हें अपने एक ताजिर ग़ुलाम को दे दिया था कि उससे कारोबार करे और उसके नफ़े को वो शख़्स मुहताजों और नाते वालों के लिये सदक़ा किया। क्या वो शख़्स उन अशरफ़ियों के नफ़ा में से कुछ खा सकता है?

قَالَ الزُّهْرِيُّ فِيْمَنْ جَعَلَ أَلْفَ دِيْنَارٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ، وَدَفَعَهَا إِلَى غُلاَمٍ لَهُ تَاجِرٍ يَتْجِرُ بِهَا، وَجَعَلَ رِبْحَهُ صَدَقَةً لِلْمَسَاكِيْنِ وَالأَقْرَبِيْنَ هَلْ لِلرَّجُلِ أَنْ يَأْكُلَ مِنْ رِبْحِ

उसने उस नफ़ा को मोहताजों पर सदक़ा न किया हो जब भी उसमें से खा नहीं सकता।

ذَلِكَ الأَلْفِ شَيْئًا وَإِنْ لَمْ يَكُنْ جَعَلَ رِبْحَهَا صَدَقَةً فِي الْمَسَاكِيْنِ؟ قَالَ لَيْسَ لَهُ أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا.

बाब का तर्जुमा का मक़्सद जायदादे मन्क़ूला का वक़्फ़ करना है। कुराअ काफ़ के ज़म्मा के साथ घोड़ों को कहा जाता है। लफ़्ज़ ड़रूज़ नक़दी के अलावा दीगर अस्बाब पर बोला जाता है और सामित सोने–चाँदी पर मुस्तअमल है (फ़तह)। ख़ुलासा ये कि जायदादे मन्क़ूला और ग़ैर–मन्क़ूला बशराइते मा'मूला सबका वक़्फ़ करना जाइज़ है क्योंकि वो अशरफ़ियाँ अल्लाह की राह में निकालें तो गोया सदक़ा कर दें, अब सदक़े का माल अपने खर्च में क्यूँ कर ला सकता है, इस असर को इब्ने वहब ने अपने मौता में वस्ल किया है। (वहीदी)

2775. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे उबैदुल्लाह उमरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपना एक घोड़ा अल्लाह के रास्ते में (जिहाद करने के लिये) एक आदमी को दे दिया। ये घोड़ा आँहज़रत (ﷺ) को हज़रत उमर (रज़ि.) ने दिया था, इसलिये कि आप जिहाद में किसी को उस पर सवार करें। फिर उमर (रज़ि.) को मा'लूम हुआ कि जिस शख़्स को ये घोड़ा मिला था, वो उस घोड़े को बाज़ार में बेच रहा है। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि क्या वो उसे खरीद सकते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर्गिज़ उसे न खरीद। अपना दिया हुआ सदक़ा वापस न ले। (राजेअ : 1489)

٢٧٧٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ قَالَ : حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ عُمَرَ حَمَلَ عَلَى فَرَسٍ لَهُ فِي سَبِيْلِ اللهِ أَعْطَاهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ لِيَحْمِلَ عَلَيْهَا رَجُلاً، فَأُخْبِرَ عُمَرُ أَنَّهُ قَدْ وَقَفَهَا يَبِيْعُهَا، فَسَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنْ يَبْتَاعَهَا، فَقَالَ: ((لاَ تَبْتَاعَهَا وَلاَ تَرْجِعَنَّ فِي صَدَقَتِكَ)).

[راجع: ١٤٨٩]

गो हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये घोड़ा सदक़ा दिया था मगर वक़्फ़ का हुक्म भी सदक़ा पर क़यास किया, उस पर ये ए'तिराज़ होता है कि वक़्फ़ में तो असल जायदाद रोक ली जाती है और सदक़ा में असल जायदाद की मिल्कियत मुंतक़िल की जाती है, इसलिये ये क़यास सहीह नहीं। अब ये कहना कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये घोड़ा वक़्फ़ किया था, इसलिये सहीह नहीं हो सकता कि अगर वक़्फ़ किया होता तो वो शख़्स जिसको घोड़ा मिला था, उसको बेचने के लिये बाज़ार में क्यूँ कर खड़ा कर सकता।

बाब 32 : वक़्फ़ की जायदाद का एहतिमाम करने वाला अपना खर्च उसमें से ले सकता है

٣٢- بَابُ نَفَقَةِ الْقَيِّمِ لِلْوَقْفِ

2776. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअरज ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो आदमी मेरे वारिस हैं, वो रुपया अशरफ़ी अगर मैं छोड़ जाऊँ तो वो तक़्सीम करें, वो मेरी बीवियों का ख़र्च और जायदाद का एहतिमाम करने वाले का ख़र्च निकालने के बाद

٢٧٧٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَقْتَسِمْ وَرَثَتِي دِيْنَارًا وَلاَ دِرْهَمًا مَا تَرَكْتُ - بَعْدَ نَفَقَةِ نِسَائِي

सदक़ा है। (दीगर मक़ाम : 3096, 6829)

وَمُؤْونَةِ عَامِلِي - فَهُوَ صَدَقَةٌ)).
[طرفاه في : ٣٠٩٦، ٦٧٢٩].

मा'लूम हुआ कि जो कोई वक़्फ़ी जायदाद का इंतिज़ाम करे, उसका वो मुतवल्ली हो वो अपनी मेहनत का वाजिब मुआवज़ा जायदाद में से दिलाने का मुस्तहिक़ होगा। (वहीदी)

2777. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि उ़मर (रज़ि.) ने अपने वक़्फ़ में ये शर्त लगाई थी कि उसका मुतवल्ली उसमें से खा सकता है और अपने दोस्त को खिला सकता है पर वो दौलत न जोड़े। (राजेअ़ : 2313)

٢٧٧٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ عُمَرَ اشْتَرَطَ فِي وَقْفِهِ أَنْ يَأْكُلَ مَنْ وَلِيَهُ وَيُؤْكِلَ صَدِيْقَهُ غَيْرَ مُتَمَوِّلٍ مَالاً)). [راجع: ٢٣١٣]

बाब 33 : किसी ने कोई कुँआ वक़्फ़ किया और अपने लिये भी उसमें से आ़म मुसलमानों की और दूसरों की त़रह पानी लेने की शर्त लगाई या ज़मीन वक़्फ़ की और दूसरों की त़रह ख़ुद भी उससे फ़ायदा लेने की शर्त कर ली तो ये भी दुरुस्त है

٣٣- بَابُ إِذَا وَقَفَ أَرْضًا أَوْ بِئْرًا اشْتَرَطَ لِنَفْسِهِ مِثْلَ دِلاَءِ الْمُسْلِمِيْنَ

और अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने एक घर वक़्फ़ किया था (मदीना में) जब कभी मदीना आते, उस घर में क़याम किया करते थे और ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) ने अपने घरों को वक़्फ़ कर दिया था और अपनी एक मुत़ल्लक़ा लड़की से फ़र्माया था कि वो उसमें क़याम करें लेकिन उस घर को नुक़्सान न पहुँचाएँ और न उसमें कोई दूसरा नुक़्सान करे और जो शौहर वाली बेटी होती उसको वहाँ रहने का ह़क़ नहीं और इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के (वक़्फ़ कर्दा) घर में रहने का हिस्सा अपनी मुह़ताज औलाद को दे दिया था।

وَأَوْقَفَ أَنَسٌ دَارًا، فَكَانَ إِذَا قَدِمَ نَزَلَهَا. وَتَصَدَّقَ الزُّبَيْرُ بِدُوْرِهِ وَقَالَ لِلْمَرْدُوْدَةِ مِنْ بَنَاتِهِ: أَنْ تَسْكُنَ غَيْرَ مُضِرَّةٍ وَلاَ مُضَرٍّ بِهَا، فَإِنْ اسْتَغْنَتْ بِزَوْجٍ فَلَيْسَ لَهَا حَقٌّ. وَجَعَلَ ابْنُ عُمَرَ نَصِيْبَهُ مِنْ دَارِ عُمَرَ سُكْنَى لِذَوِي الْحَاجَةِ مِنْ آلِ عَبْدِ اللهِ.

2778. अ़ब्दान ने बयान किया कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें अबू इस्ह़ाक़ ने, उन्हें अबू अ़ब्दुर्रहमान ने कि जब ह़ज़रत उ़स्मान ग़नी (रज़ि.) मुहासरे (घेराव) में लिये गए तो (अपने घर के) ऊपर चढ़कर आपने बाग़ियों से फ़र्माया कि मैं तुमको अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ और सिर्फ़ नबी करीम (ﷺ) के अस्ह़ाब से क़स्मिया पूछता हूँ कि क्या आप लोगों को मा'लूम नहीं है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स बीरे

٢٧٧٨- وَقَالَ عَبْدَانُ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ: ((أَنَّ عُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَيْثُ حُوصِرَ أَشْرَفَ عَلَيْهِمْ وَقَالَ: أَنْشُدُكُمُ اللهَ، وَلاَ أَنْشُدُ إِلاَّ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ: أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ

رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَفَرَ رُوْمَةَ فَلَهُ الْجَنَّةُ))، فَحَفَرْتُهَا؟ أَلَسْتُمْ تَعْلَمُوْنَ أَنَّهُ قَالَ: ((مَنْ جَهَّزَ جَيْشَ الْعُسْرَةِ فَلَهُ الْجَنَّةُ))، فَجَهَّزْتُهُ؟ قَالَ: فَصَدَّقُوهُ بِمَا قَالَ. وَقَالَ عُمَرُ فِي وَقْفِهِ: لاَ جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلَ، وَقَدْ يَلِيْهِ الْوَاقِفُ وَغَيْرُهُ، فَهُوَ وَاسِعٌ لِكُلٍّ)).

रूमा को खोदेगा और उसे मुसलमानों के लिये वक़्फ़ करेगा तो उसे जन्नत की बशारत है तो मैंने ही उस कुँए को खोदा था। क्या आप लोगों को मा'लूम नहीं है कि आँहज़रत (ﷺ) ने जब फ़र्माया था कि जैशे उस्रा (ग़ज़्व-ए-तबूक़ पर जाने वाला लश्कर) को जो शख़्स साज़ो—सामान से लैस कर देगा तो उसे जन्नत की बशारत है तो मैंने ही उसे मुसल्लह (हथियारबंद) किया था। रावी ने बयान किया कि आपकी इन बातों की सबने तस्दीक़ की थी। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने वक़्फ़ के बारे में फ़र्माया था कि उसका मुंतज़िम अगर उसमें से खाए तो कोई हर्ज नहीं है। ज़ाहिर है कि मुंतज़िम ख़ुद वाक़िफ़ भी हो सकता है और कभी दूसरे भी हो सकते हैं और हर एक के लिये ये जाइज़ है।

तश्रीह : या'नी किसी ने अपने वक़्फ़ से ख़ुद भी फ़ायदा उठाने की शर्त लगाई तो उसमे कोई हर्ज नहीं है। इब्ने बत्ताल ने कहा कि इस मसले में किसी का भी इख़्तिलाफ़ नहीं कि अगर किसी ने कोई चीज़ वक़्फ़ करते हुए उसके मुनाफ़े से ख़ुद या अपने रिश्तेदारों के नफ़ा (उठाने) की भी शर्तें लगाई तो जाइज़ है मष़लन किसी ने कोई कुँआ वक़्फ़ किया और शर्त लगा ली कि आम मुसलमानों की तरह मैं भी इसमें से पानी पिया करूँगा तो वो पानी भी ले सकता है और उसकी ये शर्त जाइज़ होगी।

हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम के अष़र को दारमी ने अपनी मुस्न्द में वस्ल किया है। आप शौहर वाली बेटी को उसमे रहने की इसलिये इजाज़त न देते कि वो अपने शौहर के घर में रह सकती है। ये अष़र बाब के तर्जुमे से इस तरह मुताबक़त होता है कि कोई बेटी उनकी कुँवारी भी होगी और सुहबत से पहले उसको तलाक़ दी गई होगी तो उसका ख़र्चा बाप के ज़िम्मे है उसका रहना गोया ख़ुद बाप का वहाँ रहना है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के अष़र को इब्ने सअद ने वस्ल किया है, ये वो घर था जिसको उमर (रज़ि.) वक़्फ़ कर गये थे तो अष़र बाब के तर्जुमे के मुताबिक़ हो गया। अब्दान इमाम बुख़ारी (रह.) के शैख़ थे तो ये तअलीक़ न होगी और दारे क़ुत्नी और इस्माईल (रह.) ने इसको वस्ल भी किया है। दूसरी रिवायतों में यूँ है कि हज़रत उष़्मान (रज़ि.) ने ये कुँआ ख़रीद करके वक़्फ़ किया था, ख़ुदवाना मज़्कूर नहीं है लेकिन शायद हज़रत उष़्मान (रज़ि.) ने उसको कुछ गहरा करने के लिये ख़ुदवाया भी हो। ये रिवायत लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जिसको तिर्मिज़ी ने निकाला। उसमें यूँ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो कोई रूमा का कुँआ ख़रीद ले और दूसरे मुसलमानों के साथ अपना डोल भी उसमें डाले उसको बहिश्त में उससे भी उम्दा कुँआ मिलेगा। निसाई की रिवायत में है कि हज़रत उष़्मान (रज़ि.) ने ये कुँआ बीस हज़ार या पच्चीस हज़ार में ख़रीदा था। मज़्कूर जैशे उस्रा या'नी तंगी का लश्कर जिससे मुराद वो लश्कर है जो जंगे तबूक़ में आप (ﷺ) के साथ गया था, उस जंग का सामान मुसलमानों के पास बिलकुल न था। हज़रत उष़्मान (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) के इस इर्शाद पर सब सामान अपनी ज़ात से फ़राहम कर दिया जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने बहुत ही ज़्यादा इज़्हारे मसर्रत फ़र्माते हुए हज़रत उष़्मान (रज़ि.) के लिये ज़िन्दा जन्नती होने की बशारत पेश फ़र्माई। हज़रत उष़्मान (रज़ि.) ने जब अपनी आज़माइश के दिनों में सहाब-ए-किराम को इस तरह मुख़ातब फ़र्माया जो अष़र में मज़्कूर है तो बेशतर सहाबा ने आपकी तस्दीक़ की और गवाही दी जिनमें हज़रत अली और तल्हा और ज़ुबैर और सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) पेश-पेश थे। इस हदीष़ के ज़ैल में हज़रत उष़्मान (रज़ि.) के मनाक़िब के बारे में हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने अनेक अहादीष़ को नक़ल किया है, **अल्इहतियाजु इला ज़ालिक लिदफ़्इ मज़र्रतिन औ तहस्सुलि मन्फ़अतिन इन्नमा यक्रहु ज़ालिक इन्दल्मुफ़ाख़रति वल्मुकाषरति वल्अजबि** (फ़त्ह) या'नी उससे उस अम्र का जवाज़ ष़ाबित हुआ कि

किसी नुक़्सान को दफ़ा करने या कोई नफ़ा हासिल करने के लिये आदमी ख़ुद अपने मनाक़िब बयान कर सकता है, लेकिन फ़ख़्र और ख़ुदपसन्दी के तौर पर ऐसा करना मकरूह है।

बाब 34 : अगर वक़्फ़ करने वाला यूँ कहे कि उसकी क़ीमत अल्लाह ही से लेंगे तो वक़्फ़ दुरुस्त हो जाएगा

٣٤- بَابُ إِذَا قَالَ الْوَاقِفُ لاَ نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلاَّ إِلَى اللهِ فَهُوَ جَائِزٌ

2779. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था ऐ बनू नज्जार! तुम अपने बाग़ की क़ीमत मुझसे वसूल कर लो तो उन्होंने अर्ज़ किया कि हम उसकी क़ीमत अल्लाह तआला के सिवा किसी से नहीं चाहते। (राजेअ : 234)

٢٧٧٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا بَنِي النَّجَّارِ ثَامِنُونِي بِحَائِطِكُمْ))، قَالُوا: لاَ نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلاَّ إِلَى اللهِ)). [راجع: ٢٣٤]

बाब 35 : (सूरह माइदः में) अल्लाह तआला का ये फ़र्माना

٣٥- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِنْكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلاَةِ، فَيُقْسِمَانِ بِاللهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لاَ نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَى، وَلاَ نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللهِ إِنَّا إِذًا لَمِنَ الآثِمِينَ. فَإِنْ عُثِرَ عَلَى أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الأَوْلَيَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا، إِنَّا إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ. ذَلِكَ أَدْنَى أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَى وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ، وَاتَّقُوا اللهَ وَاسْمَعُوا، وَاللهُ لاَ يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ﴾ [المائدة:

ऐ ईमानवालों! जब तुममें से कोई मरने लगे तो आपस की गवाही वसिय्यत के वक़्त तुममें से। (या'नी मुसलमानों में से या अ़ज़ीज़ों में से) दो मोतबर शख़्सों की होनी चाहिये या अगर तुम सफ़र में हो और वहाँ तुम मौत की मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाओ तो ग़ैर ही या'नी काफ़िर या जिनसे क़राबत न हो दो शख़्स सही (मय्यत के वारिष़ों) उन दोनों गवाहों को अ़स्र की नमाज़ के बाद तुम रोक लो अगर तुमको (उनके सच्चे होने में शुब्हा हो) तो वो अल्लाह की क़सम खाएँ कि हम इस गवाही के बदले दुनिया कमाना नहीं चाहते चाहे जिसके लिये गवाही दें वो अपना रिश्तेदार हो और न हम अल्लाह वास्ते गवाही छिपाएँगे, ऐसा करें तो हम अल्लाह के क़सूरवार हैं, फिर अगर मा'लूम हो वाक़ेई ये गवाह झूठे थे तो दूसरे वो दो लोग खड़े हों जो मय्यत के नज़दीक के रिश्तेदार हों (या जिनको मय्यत के दो नज़दीक के रिश्तेदारों ने गवाही के लायक़ समझा हो) वो अल्लाह की क़सम खाकर कहें कि हमारी गवाही पहले गवाहों की गवाही से ज़्यादा मोतबर है और हमने कोई नाहक़ बात नहीं कही, ऐसा किया हो तो बेशक हम गुनाहगार होंगे। ये तदबीर ऐसी है जिससे ठीक ठीक गवाही देने की ज़्यादा उम्मीद रहती है या इतना तो ज़रूर होगा कि वसी या गवाहों को डर रहेगा कि ऐसा न हो उनके क़सम खाने के बाद फिर वारिष़ों को क़सम दी जाए और अल्लाह से डरते रहो और उसका हुक्म सुना और

अल्लाह नाफ़र्मान लोगों को (राह पर) नहीं लगाता। (अल माइदः : 106-107)

.[١٠٦-١٠٧

2780. हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा मुझसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने कहा हमसे यह्या बिन आदम ने, कहा हमसे इब्ने अबी ज़ायदा ने, उन्होंने मुहम्मद बिन अबिल क़ासिम से, उन्होंने अब्दुल मलिक बिन सईद बिन जुबैर से, उन्होंने अपने बाप से, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से उन्होंने कहा बनी सहम का एक शख़्स तमीम दारी और अदी बिन बदाअ के साथ सफ़र पर निकला, वो ऐसे मुल्क में जाकर मर गया जहाँ कोई मुसलमान न था। ये दोनों शख़्स उसका मतरूका माल लेकर मदीना वापस आए। उसके अस्बाब में चाँदी का एक गिलास गुम था। आँहज़रत (ﷺ) ने उन दोनों को क़सम खाने का हुक्म फ़र्माया (उन्होंने क़सम खा ली) फिर ऐसा हुआ कि वो गिलास मक्का में मिला, उन्होंने कहा हमने ये गिलास तमीम और अदी से ख़रीदा है। उस वक़्त मय्यत के दो अज़ीज़ (अम्र बिन आस़ और मुत्तलिब खड़े हुए और उन्होंने क़सम खाई कि ये हमारी गवाही तमीम और अदी की गवाही से ज़्यादा मोतबर है, ये गिलास मय्यत ही का है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा इन ही के बारे में ये आयत नाज़िल हुई (जो ऊपर गुज़र चुकी है) याअय्युहल्लज़ीन आमनू शहादतु बैनकुम आख़िर आयत तक।

٢٧٨٠- وَقَالَ لِي عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ : حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي الْقَاسِمِ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَهْمٍ مَعَ تَمِيْمٍ الدَّارِيِّ وَعَدِيِّ بْنِ بَدَّاءٍ، فَمَاتَ السَّهْمِيُّ بِأَرْضٍ لَيْسَ بِهَا مُسْلِمٌ، فَلَمَّا قَدِمَا بِتَرِكَتِهِ فَقَدُوا جَامًا مِنْ فِضَّةٍ مُخَوَّصًا مِنْ ذَهَبٍ، فَأَحْلَفَهُمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ وُجِدَ الْجَامُ بِمَكَّةَ فَقَالُوا: ابْتَعْنَاهُ مِنْ تَمِيْمٍ وَعَدِيٍّ، فَقَامَ رَجُلاَنِ مِنْ أَوْلِيَائِهِ فَحَلَفَا: لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَإِنَّ الْجَامَ لِصَاحِبِهِمْ، قَالَ وَفِيْهِمْ نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ﴾.

बाब 36 : मय्यत पर जो क़र्ज़ा हो वो उसका वसी अदा कर सकता है गो दूसरे वारिष़ हाज़िर न हों

٣٦- بَابُ قَضَاءِ الْوَصِيِّ دُيُونَ الْمَيِّتِ بِغَيْرِ مَحْضَرٍ مِنَ الْوَرَثَةِ

2781. हमसे मुहम्मद बिन साबिक़ ने बयान किया या फ़ज़ल बिन यअ़क़ूब ने मुहम्मद बिन साबिक़ से (ये शक ख़ुद हज़रत इमाम बुख़ारी रह. को है) कहा हमसे शैबान बिन अब्दुर्रहमान अबू मुआविया ने बयान किया, उनसे फ़रास बिन यह्या ने बयान किया, उनसे शअ़बी ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके वालिद (अब्दुल्लाह (रज़ि.) उहुद की लड़ाई में शहीद हो गए थे। अपने पीछे छः लड़किया छोड़ी थीं और क़र्ज़ भी। जब खजूर के फल तोड़ने का वक़्त आया तो मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में

٢٧٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ - أَوِ الْفَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ عَنْهُ - حَدَّثَنَا شَيْبَانُ أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ فِرَاسٍ قَالَ: قَالَ الشَّعْبِيُّ حَدَّثَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا : ((أَنَّ أَبَاهُ اسْتُشْهِدَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ سِتَّ بَنَاتٍ وَتَرَكَ عَلَيْهِ دَيْنًا، فَلَمَّا حَضَرَ جِدَادُ النَّخْلِ أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ

हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपको ये मा'लूम ही है कि मेरे वालिदे माजिद उहुद की लड़ाई में शहीद हो चुके हैं और बहुत ज़्यादा क़र्ज़ छोड़ गए हैं, मैं चाहता था कि क़र्ज़ख़्वाह आपको देख ले (ताकि क़र्ज़ में कुछ रिआयत कर दें) लेकिन वो यहूदी थे और वो नहीं माने, इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जाओ और खलियान में हर क़िस्म की खजूर अलग अलग कर लो जब मैंने ऐसा ही कर लिया तो आँहज़रत (ﷺ) को बुलाया, क़र्ज़ख़्वाहों ने आँहज़रत (ﷺ) को देखकर और ज़्यादा सख़्ती शुरू कर दी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने जब ये तर्ज़े अ़मल मुलाहिज़ा फ़र्माया तो सबसे बड़े खजूर के ढेर के गिर्द आप (ﷺ) ने तीन चक्कर लगाए और वहीं बैठ गए फिर फ़र्माया कि अपने क़र्ज़ख़्वाहों को बुलाओ। आप (ﷺ) ने नाप-नापकर देना शुरू किया और वल्लाह मेरे वालिद की तमाम अमानत अदा कर दी, अल्लाह गवाह है कि मैं इतने पर भी राज़ी था कि अल्लाह तआ़ला मेरे वालिद का तमाम क़र्ज़ अदा कर दे और मैं अपनी बहनों के लिये एक खजूर भी उसमें से न ले जाऊँ लेकिन हुआ ये कि ढेर के ढेर बच रहे और मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जिस ढेर के पास बैठे हुए थे उसमें से तो एक खजूर भी नहीं दी गई थी। अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि अग़रूबी (हदीष़ में अल्फ़ाज़) के मा'नी हैं कि मुझ पर भड़कने और सख़्ती करने लगे। इसी मा'नी में क़ुर्आन मजीद की आयत, फ़अग़रयना बयनहुमुल अ़दावता वल् बग़्ज़ाअ में फ़अग़रयना है। (राजेअ़ : 2127)

ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ عَلِمْتَ أَنَّ وَالِدِي اسْتُشْهِدَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ عَلَيْهِ دَيْنًا كَثِيْرًا، وَإِنِّي أُحِبُّ أَنْ يَرَاكَ الْغُرَمَاءُ. قَالَ: ((اذْهَبْ فَبَيْدِرْ كُلَّ تَمْرٍ عَلَى نَاحِيَةٍ)). فَفَعَلْتُ، ثُمَّ دَعَوْتُهُ، فَلَمَّا نَظَرُوا إِلَيْهِ أُغْرُوا بِي تِلْكَ السَّاعَةَ، فَلَمَّا رَأَى مَا يَصْنَعُونَ طَافَ حَوْلَ أَعْظَمِهَا بَيْدَرًا ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ جَلَسَ عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((ادْعُ أَصْحَابَكَ))، فَمَا زَالَ يَكِيلُ لَهُمْ حَتَّى أَدَّى أَمَانَةَ وَالِدِي، وَأَنَا وَاللهِ رَاضٍ أَنْ يُؤَدِّيَ اللهُ أَمَانَةَ وَالِدِي وَلاَ أَرْجِعُ إِلَى أَخَوَاتِي تَمْرَةً، فَسَلِمَ وَاللهِ الْبَيَادِرُ كُلُّهَا حَتَّى أَنِّي أَنْظُرُ إِلَى الْبَيْدَرِ الَّذِي عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ كَأَنَّهُ لَمْ يَنْقُصْ تَمْرَةً وَاحِدَةً)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: ((أُغْرُوا بِي)) يَعْنِي هِيْجُوا بِي. ﴿فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ﴾.[راجع: ٢١٢٧]

तश्रीह : आयत का मफ़्हूम ये है कि हमने यहूद और अंसारी के दरम्यान अ़दावत और बुग़्ज़ को भड़का दिया। ह़दीष़ का लफ़्ज़ अग़रूबी, अग़रयना ही के मा'नी में है। जाबिर (रज़ि.) तो आँहज़रत (ﷺ) को इसलिये ले गए थे कि आप (ﷺ) को देखकर क़र्ज़ख़्वाह नरमी करेंगे मगर हुआ कि वो क़र्ज़ख़्वाह और ज़्यादा पीछे पड़ गए कि हमारा सारा क़र्ज़ अदा करो। उन्होंने ये ख़्याल किया कि जब आँहज़रत (ﷺ) जाबिर (रज़ि.) के पास तशरीफ़ लाए हैं तो अगर जाबिर से कुल क़र्ज़ा अदा न हो सकेगा तो आँहज़रत (ﷺ) अदा कर देंगे या ज़िम्मेदारी ले लेंगे। इस ग़लत़ ख़्याल की बिना पर उन्होंने क़र्ज़ वसूल करने के सिलसिले में और ज़्यादा सख़्त रवैया इख़्तियार कर लिया जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) के बाग़ में दुआ़ फ़र्माई और जो भी ज़ाहिर हुआ वो आपका खुला मोजज़ः था। ये ह़दीष़ ऊपर कई बार गुज़र चुकी है और ह़ज़रत मुज्तहिदे मुत़्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) ने इससे कई एक मसाइल का इस्तिख़राज़ फ़र्माया है। यहाँ बाब का मत़लब यूँ निकला कि जाबिर (रज़ि.) जो अपने बाप के वसी थे, उन्होंने अपने बाप का क़र्ज़ अदा किया उस वक़्त दूसरे वारिष़ उनकी बहनें मौजूद थीं उन क़र्ज़ख़्वाहों ने अपना नुक़्सान आप किया। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको कई बाद समझाया कि तुम अपने क़र्ज़ के बदल ये सारी ख़जूरें ले लो, उन्होंने खजूरों को कम समझकर क़ुबूल न किया।

अल्हम्दुलिल्लाह कि किताबुश्शुरूत ख़त्म होकर आगे किताबुल जिहाद शुरू हो रही है। जिसमें हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने जिहाद के मसले पर पूरी-पूरी रोशनी डाली है। अल्लाह पाक ख़ैरियत के साथ किताबुल जिहाद को ख़त्म कराए। आमीन! **वस्सलामु अलल मुर्सलीन वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।**

56. किताबुल जिहाद वस्सियर

किताब जिहाद के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : जिहाद की फ़ज़ीलत और रसूले करीम (ﷺ) के हालात के बयान में

١- بَابُ فَضْلِ الْجِهَادِ وَالسِّيَرِ
وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿إِنَّ اللهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ، وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ مِنَ اللهِ؟ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ -. إِلَى قَوْلِهِ - وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ﴾ [التوبة: ١١١] قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: الْحُدُودُ الطَّاعَةُ.

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि, बेशक अल्लाह तआला ने मुसलमानों से उनकी जान और उनके माल इस बदले में ख़रीद लिये हैं कि उन्हें जन्नत मिलेगी, वो मुसलमान अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते हैं और इस तरह (महारिबे कुफ़्फ़ार को) ये मारते हैं और ख़ुद भी मारे जाते हैं। अल्लाह तआला का ये वा'दा (कि मुसलमानों को उनकी क़ुर्बानियों के नतीजे में जन्नत मिलेगी) सच्चा है, तौरात में, इंजील में और क़ुर्आन में और अल्लाह से बढ़कर अपने वा'दे को पूरा करने वाला कौन हो सकता है? पस ख़ुश हो जाओ तुम अपने इस सौदे की वजह से जो तुमने उसके साथ किया है, आख़िर आयत (व बश्शिरल मोमिनीन) तक। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अल्लाह की हदों से मुराद उसके अहकाम की इताअत है।

इंजील में जिहाद का हुक्म नहीं है मगर इंजील में तौरात का सहीह और सच्ची किताब होना मज़्कूर है तो तौरात के सब अहकाम गोया इंजील में भी मौजूद हैं। आयते मज़्कूरा में आगे **वल्हाफ़िज़ून लिहुदूदिल्लाहि** (अत् तौबा : 112) के अल्फ़ाज़ भी हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से उसकी तफ़्सीर इमाम बुख़ारी (रह.) ने नक़ल कर दी है, इसको इब्ने अबी हातिम ने अपनी तफ़्सीर में निकाला है, आयत का शाने नुज़ूल लैलतुल उ़क़्बा में अंसार के बैअ़त करने के बारे में है और हुक्म क़यामत तक के लिये आ़म है। इस बैअ़त के वक़्त हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा ने कहा था कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप अपने रब के लिये और अपनी ज़ात के लिये हमसे जो चाहें अ़हद ले लें। आपने फ़र्माया कि मैं अल्लाह के लिये अ़हद लेता हूँ कि सिर्फ़ उसी एक की

इबादत करो और किसी को उसका शरीक न करो और अपने लिये ये कि नफ़े व नुक़्सान में अपने नफ़्सों के साथ मुझको शरीक कर लो, उन्होंने कहा कि उसका बदला हमको क्या मिलेगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत मिलेगी, उस पर वो बोले कि ये तो बहुत ही नफ़ाबख़्श सौदा है। (फ़त्हुल बारी)

2782. हमसे हसन बिन स़ब्बाह़ ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग़्वल ने बयान किया, कहा कि मैंने वलीद बिन अयज़ार से सुना, उनसे सईद बिन अयास अबू अ़म्र शैबानी ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि दीन के कामों में कौनसा अ़मल अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वक़्त पर नमाज़ पढ़ना, मैंने पूछा उसके बाद? आप (ﷺ) ने फ़र्माया वालिदैन के साथ नेक सुलूक करना, मैंने पूछा और उसके बाद? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना। फिर मैंने आप (ﷺ) से ज़्यादा सवालात नहीं किये, वरना आप (ﷺ) इसी त़रह़ उनके जवाबात इनायत फ़र्माते। (राजेअ़ : 257)

٢٧٨٢ - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ صَبَّاحٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْوَلِيْدَ بْنَ الْعَيْزَارِ ذَكَرَ عَنْ أَبِي عَمْرٍو الشَّيْبَانِيِّ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: ((الصَّلاَةُ عَلَى مِيْقَاتِهَا)). قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((ثُمَّ بِرُّ الْوَالِدَيْنِ)). قُلْتُ : ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ)). فَسَكَتُّ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلَوِ اسْتَزَدْتُهُ لَزَادَنِي)).

[راجع: ٥٢٧]

2783. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त़्त़ान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने बयान किया मुजाहिद से, उन्होंने त़ाऊ़स से और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया फ़तह़े मक्का के बाद अब हिजरत (फ़र्ज़) नहीं रही अल्बत्ता जिहाद और निय्यत बख़ैर करना अब भी बाक़ी हैं और जब तुम्हें जिहाद के लिये बुलाया जाए तो निकल खड़े हुआ करे। (राजेअ़ : 1349)

٢٧٨٣ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ، وَإِذَا اسْتُنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوا)).

[راجع: ١٣٤٩]

तश्रीह : या'नी अब फ़तह़े मक्का होने के बाद वो ख़ुद दारुल इस्लाम हो गया, इसलिये यहाँ से हिजरत करके मदीना आने का कोई सवाल ही बाक़ी नहीं रहता। इसका ये मत़लब नहीं कि हिजरत का सिलसिला सिरे से ही ख़त्म हो गया है जहाँ तक हिजरत का आ़म ता'ल्लुक़ है या'नी दुनिया के किसी भी दारुल ह़रब से दारुल इस्लाम की त़रफ़ हिजरत, तो उसका हुक्म अब भी बाक़ी है मगर उसके लिये कुछ शर्तें हैं जिनका लिहाज़ रखना ज़रूरी है।

या'नी क़यामत तक जिहाद फ़र्ज़ रहेगा, दूसरी ह़दीष़ में है कि जबसे मुझको अल्लाह ने भेजा क़यामत तक जिहाद होता रहेगा, यहाँ तक कि अख़ीर मे मेरी उम्मत दज्जाल से मुक़ाबला करेगी। जिहाद इस्लाम का एक रुक्ने आ'ज़म है और फ़र्ज़े किफ़ाया है लेकिन जब एक जगह, एक मुल्क के मुसलमान काफ़िरों के मुक़ाबले से आ़जिज़ हो जाएँ तो उनके पास वालों पर, इस त़रह़ तमाम दुनिया के मुसलमानों पर जिहाद फ़र्ज़ हो जाता है और उसके छोड़ने से सब गुनाहगार होते हैं। इसी त़रह़ जब काफ़िर

मुसलमानों के मुल्क पर चढ़ आएँ तो हर मुसलमान पर जिहाद फ़र्ज़ हो जाता है यहाँ तक कि औरतों और बूढ़ों और बच्चों पर भी। हमारे ज़माने में चन्द दुनियादार, ख़ुशामदखोर, झूठे दग़ाबाज़ मौलवियों ने काफ़िरों की ख़ातिर से आम मुसलमानों को बहका दिया है कि अब जिहाद फ़र्ज़ नहीं रहा, उनको अल्लाह से डरना चाहिये और तौबा करना भी ज़रूरी है, जिहाद की फ़र्ज़ियत क़यामत तक बाक़ी रहेगी। अल्बत्ता ये ज़रूर है कि एक इमामे आदिल से पहले बैअत की जाए और (महारिब) काफ़िरों को वा'दे के मुताबिक़ नोटिस दिया जाए अगर वो इस्लाम या जिज़्या देना क़ुबूल न करें, उस वक़्त अल्लाह पर भरोसा करके उनसे जंग की जाए और फ़ित्ना और फ़साद और औरतों और बच्चों की ख़ूँरेज़ी किसी शरीअत में जाइज़ नहीं है। (वहीदी)

लफ़्ज़ जिहाद की तशरीह में हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़र्माते हैं, **वल्जिहादु बिकस्रिल्जीमि अस्लुहू लुगतल्मशक़्क़ति युक़ालु जहत्तु जिहादन बिलुगतिल्मशक़्क़ति व शर्अन बज़्लुल्जुहदि फी कितालिल्कुफ़्फ़ारि व युत्लक़ु अयज़न अला मुजाहदतिन्नफ़्सि वश्शैतानि वल्फ़ुस्साक़ि फअम्मा मुजाहदतुन्नफ़्सि फअला तअल्लुमि उमूरिद्दीनि षुम्म अलल्अमलि बिहा अला तअलीमिहा व अमा मुजाहदतुश्शैतानि फअला दफ़्इ मा याती मिनश्शुब्हाति व मा युज़य्यिनुहू मिनश्शहवाति व अम्मा मुजाहदतुल्कुफ़्फ़ारि फतक़उ बिल्यादि वल्मालि वल्लिसानि वल्क़ल्बि व अम्मा मुजाहदतुल्फ़ुस्साक़ि फबिल्यदि षुम्मल्लिसानि षुम्मल्क़ल्बि.** (फ़त्हुल बारी) या'नी लफ़्ज़ जिहाद जीम के कसरा के साथ लुग़त मे मुशक़्क़त पर बोला जाता है और शरीअत में (महारिब) काफ़िरों से लड़ने पर और ये लफ़्ज़ नफ़्स और शैतान और फ़ुस्साक़ के मुजाहिदात पर भी बोला जाता है पस नफ़्स के साथ जिहाद दीनी उलूम का हासिल करना, फिर उन पर अमल करना और दूसरों को उन्हें सिखाना है और शैतान के साथ जिहाद ये कि उसके लाए हुए शुब्हात को दफ़ा किया जाए और उनको जो वो शह्वात को मुज़य्यन करके पेश करता है, उन सबको दफ़ा करना शैतान के साथ जिहाद करना है और महारिब काफ़िरों से जिहाद, हाथ (ताक़त से), माल, ज़ुबान और दिल के साथ होता है और फ़ासिक़-फ़ाजिर लोगों के साथ जिहाद ये कि हाथ से उनको बुरे कामों से रोका जाए फिर ज़ुबान से, फिर दिल से। मतलब आपका ये था कि मुजाहिद जब जिहाद के लिये निकलता है तो उसका सोना, बैठना, चलना, घोड़े का दाना-पानी करना, सब इबादत ही होता है तो जिहाद के बराबर दूसरी कौन इबादत हो सकती है? अल्बत्ता कोई बराबर इबादत में मसरूफ़ रहे ज़रा दम न ले तो शायद जिहाद के बराबर हो मगर ऐसा किससे हो सकता है। दूसरी हदीष़ से मा'लूम होता है कि ज़िक्रे इलाही जिहाद से भी अफ़ज़ल है, एक हदीष़ में है कि अय्यामे अशर में इबादत करने से बढ़कर कोई अमल नहीं, इन हदीष़ों में तनाक़ुज़ नहीं है बल्कि सब अपने महल और मौक़े पर दूसरे तमाम आमाल से अफ़ज़ल हैं मष़लन जब काफ़िरों का ज़ोर बढ़ रहा हो तो जिहाद सब अमलों से अफ़ज़ल होगा और जब जिहाद की ज़रूरत न हो तो ज़िक्रे इलाही सबसे अफ़ज़ल होगा। एक रिवायत में है कि आपने फ़र्माया, **षुम्म रजअना मिनल जिहादिल्अस्ग़रि इलल्जिहादिल्अक्बरि** या'नी नफ़्सकशी और रियाज़त को आपने बड़ा जिहाद फ़र्माया। (वहीदी)

2784. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे हबीब बिन अबी अम्र ने बयान किया आइशा बिन्ते तलहा से और उनसे आइशा (रज़ि.) (उम्मुल मोमिनीन) ने कि उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम समझते हैं कि जिहाद अफ़ज़ल आमाल में से है फिर हम (औरतें) भी क्यूँ न जिहाद करें? आप (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन सबसे अफ़ज़ल जिहाद मक़्बूल हज्ज है जिसमें गुनाह न हों। (राजेअ : 1520)

٢٧٨٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، نَرَى الْجِهَادَ أَفْضَلَ الْعَمَلِ، أَفَلاَ نُجَاهِدُ، قَالَ: ((لَكِنَّ أَفْضَلُ الْجِهَادِ حَجٌّ مَبْرُورٌ)).

[راجع: ١٥٢٠]

ये हदीष़ पहले गुज़र चुकी है, बाब का मतलब इस हदीष़ से यूँ निकला कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने जिहाद को सबसे अफ़ज़ल

कहा और आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर इंकार नहीं किया।

2785. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अफ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माम ने, कहा हमसे मुहम्मद बिन जुह़ादा ने बयान किया, कहा कि मुझे अबू हुसैन ने ख़बर दी, उनसे ज़क्वान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक स़ाहब (नाम नामा'लूम) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आए और अ़र्ज़ किया कि मुझे कोई ऐसा अ़मल बता दीजिए जो स़वाब में जिहाद के बराबर हो। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा कोई अ़मल नहीं पाता। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम इतना कर सकते हो कि जब मुजाहिद (जिहाद के लिये) निकले तो तुम अपनी मस्जिद मे आकर बराबर नमाज़ पढ़नी शुरू कर दो और (नमाज़ पढ़ते रहो और दरम्यान में) कोई सुस्ती और काहिली तुम्हें महसूस न हो, इसी त़रह रोज़े रखने लगो और (कोई दिन) बग़ैर रोज़े के न गुज़रे। उन साहब ने अ़र्ज़ किया भला ऐसा कौन कर सकता है? अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुजाहिद का घोड़ा जब रस्सी मे बंधा हुआ ज़मीन (पर पांव) मारता है तो उस पर भी उसके लिये नेकियाँ लिखी जाती हैं। (राजेअ़ : 1520)

٢٧٨٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو حَصِينٍ أَنَّ ذَكْوَانَ حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: دُلَّنِي عَلَى عَمَلٍ يَعْدِلُ الْجِهَادَ. قَالَ: ((لاَ أَجِدُهُ)). قَالَ: هَلْ تَسْتَطِيْعُ إِذَا خَرَجَ الْمُجَاهِدُ أَنْ تَدْخُلَ مَسْجِدَكَ فَتَقُومَ وَلاَ تَفْتُرَ، وَتَصُومَ وَلاَ تُفْطِرَ؟)) قَالَ: وَمَنْ يَسْتَطِيْعُ ذَلِكَ؟ قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ: إِنَّ فَرَسَ الْمُجَاهِدِ لَيَسْتَنُّ فِي طِوَلِهِ فَيُكْتَبُ لَهُ حَسَنَاتٌ)). [راجع: ١٥٢٠]

बाब 2 : सब लोगों में अफ़ज़ल वो शख़्स है जो अल्लाह की राह में अपनी जान व माल से जिहाद करे

٢- بَابُ أَفْضَلُ النَّاسِ مُؤْمِنٌ يُجَاهِدُ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ فِي سَبِيْلِ اللهِ

और अल्लाह ने (सूरह स़फ़ में) फ़र्माया कि, ऐ ईमानवालों! क्या मैं तुमको बताऊँ एक ऐसी तिजारत जो तुमको नजात दिलाए दुख देने वाले अ़ज़ाब से, वो ये कि ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से, ये तुम्हारे ह़क़ मे बेहतर है अगर तुम समझो, अगर तुमने ये काम अंजाम दे दिये तो अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ कर देगा तुम्हारे गुनाह और दाख़िल करेगा तुमको ऐसे बाग़ों में जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और बेहतरीन मकानात तुमको अ़ता किये जाएँगे, जन्नाते-अ़द्न में ये बड़ी कामयाबी है।

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيْمٍ؟ تُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيْلِ اللهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ، ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ. يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ، ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ﴾ [الصف: ١٠].

2786. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्होंने कहा कि मुझसे

٢٧٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيْدَ

अता बिन यज़ीद लैष़ी ने कहा और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह (ﷺ)! कौन शख़्स सबसे अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया वो मोमिन जो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान और माल से जिहाद करे। सहाबा (रज़ि.) ने पूछा और उसके बाद कौन? फ़र्माया वो मोमिन जो पहाड़ की किसी घाटी में रहना इख़्तियार करे, अल्लाह तआला का डर रखता हो और लोगों को छोड़कर अपनी बुराई से उनको महफ़ूज़ रखे। (दीगर मक़ाम : 6494)

اللَّيْثِيُّ أَنَّ أَبَا سَعِيْدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ قَالَ: قِيْلَ يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ النَّاسِ أَفْضَلُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مُؤْمِنٌ يُجَاهِدُ فِي سَبِيْلِ اللهِ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ)). قَالُوا: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ((مُؤْمِنٌ فِي شِعْبٍ مِنَ الشِّعَابِ يَتَّقِي اللهَ وَيَدَعُ النَّاسَ مِنْ شَرِّهِ)). [طرفه في: ٦٤٩٤].

तश्रीह : जब आदमी लोगों मे रहता है तो ज़रूर किसी न किसी की ग़ीबत करता है या ग़ीबत सुनता है या किसी पर ग़ुस्सा करता है, उसको ईज़ा देता है। तंहाई और उ़ज़्लत में उसके शर से सब लोग बचे रहते हैं। इस ह़दीष़ से उसने दलील ली जो उ़ज़्लत और गोशानशीनी (एकांतवास) को इख़्तिलात़ (मेलजोल) से बेहतर जानता है। जुम्हूर का मज़हब है कि इख़्तिलात़ अफ़ज़ल है और ह़क़ ये है कि ये मुख़्तलिफ़ है बइख़्तिलाफ़ अश्ख़ास़ और अह़वाल और ज़माने और मौक़े के। जिस शख़्स से मुसलमानों को दीनी और दुनियावी फ़ायदे पहुँचते हों और वो लोगों की बुराइयों पर सब्र कर सके, उसके लिये इख़्तिलात़ अफ़ज़ल है और जिस शख़्स से इख़्तिलात़ से गुनाह सरज़द होते हों और उसकी सुह़बत से लोगों को ज़रर (नुक़सान) पहुँचता हो, उसके लिये उ़ज़्लत अफ़ज़ल है। ऊपर ह़दीष़ में **अय्युन्नास अफ़ज़ल** कौनसा आदमी बेहतर है जवाब में जो कुछ आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ह़क़ीक़त में ऐसा मुसलमान दूसरे सब मुसलमानों से अफ़ज़ल होगा क्योंकि जान और माल दुनिया की सब चीज़ों में आदमी को बहुत मह़बूब हैं तो उनका अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाला सबसे बढ़कर होगा कुछ ने कहा लोगों से आम मुसलमान मुराद हैं वरना उ़लमा और सिद्दीक़ीन मुजाहिदीन से भी अफ़ज़ल हैं। **मैं (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरह़ूम) कहता हूँ कुफ़्फ़ार और मुल्ह़िदीन और मुख़ालिफ़ीने दीन से बह़ष़-मुबाह़ष़ा करना और उनके ए'तिराज़ात का जो वो इस्लाम पर करें, जवाब देना और ऐसी किताबों का छापना और छपवाना ये भी जिहाद है।** (वह़ीदी) इस नाज़ुक दौर में जबकि आम लोग क़ुर्आन व ह़दीष़ से बेरग़बती कर रहे हैं और दिन ब दिन जिहालत व ज़लालत (अज्ञानता व गुमराही) के ग़ार में गिरते चले जा रहे हैं, बुख़ारी शरीफ़ जैसी अहम पाकीज़ा किताब का तर्जुमा व तशरीह़ के साथ शाये करना भी जिहाद से कम नहीं है और मैं अपने इंशिराह़े स़दर (दिल की गहराइयों) के मुताबिक़ ये कहने के लिये तैयार हूँ कि जो ह़ज़रात इस कारे ख़ैर में ह़िस्सा लेकर इसकी तक्मील का शरफ़ ह़ासिल करने वाले हैं यक़ीनन वो अल्लाह के दफ़्तर में अपने मालों से मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह के दफ़्तर में लिखे जा रहे हैं। (राज़)

2787. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह के रास्ते मे जिहाद करने वाले की मिष़ाल....और अल्लाह तआला उस शख़्स को ख़ूब जानता है जो (ख़ुलूस़े दिल के साथ स़िर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिये) अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है.... उस शख़्स की सी है जो रात में बराबर नमाज़ पढ़ता रहे और दिन में बराबर रोज़े रखता रहे और अल्लाह तआला ने अपने रास्ते में जिहाद करने वाले के लिये, उसकी ज़िम्मेदारी ले ली है कि अगर

٢٧٨٧ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((مَثَلُ الْمُجَاهِدِ فِي سَبِيْلِ اللهِ - وَاللهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُجَاهِدُ فِي سَبِيْلِهِ - كَمَثَلِ الصَّائِمِ الْقَائِمِ. وَتَوَكَّلَ اللهُ لِلْمُجَاهِدِ فِي سَبِيْلِهِ بِأَنْ يَتَوَفَّاهُ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ أَوْ

يُرْجِعَهُ سَالِماً مَعَ أَجْرٍ أَوْ غَنِيمَةٍ)).
[راجع: ٣٦]

उसे शहादत देगा तो उसे बेहिसाब व किताब जन्नत में दाख़िल करेगा या फिर ज़िन्दा व सलामत (घर) ष़वाब और माले ग़नीमत के साथ वापस करेगा। (राजेअ : 36)

या'नी निय्यत का ह़ाल अल्लाह ही को ख़ूब मा'लूम है कि वो मुख़्लिस है या नहीं, अगर मुख़्लिस़ है तो वो मुजाहिद होगा वरना कोई दुनिया के माल व जाह और नामवरी के लिये लड़े वो मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह नहीं है। मिष़ाल में नमाज़ पढ़ने से नमाज़ नफ़्ल इसी त़रह़ रोज़े रखने से नफ़्ल रोज़ा मुराद है कि कोई शख़्स़ दिन भर नफ़्ल रोज़े रखता हो और रात भर नफ़्ल नमाज़ पढ़ता हो, मुजाहिद का दर्जा इससे भी बढ़कर है।

٣- بَابُ الدُّعَاءِ بِالْجِهَادِ وَالشَّهَادَةِ لِلرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ

बाब 3 : जिहाद और शहादत के लिये मर्द और औरत दोनों का दुआ़ करना

وَقَالَ عُمَرُ: ارْزُقْنِي شَهَادَةً فِي بَلَدِ رَسُولِكَ.

और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने दुआ़ की थी कि ऐ अल्लाह! मुझे अपने रसूल (ﷺ) के शहर (मदीना त़य्यिबा) में शहादत की मौत अ़ता फ़र्माईयो।

٢٧٨٨، ٢٧٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدْخُلُ عَلَى أُمِّ حَرَامٍ بِنْتِ مِلْحَانَ فَتُطْعِمُهُ وَكَانَتْ أُمُّ حَرَامٍ تَحْتَ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، فَدَخَلَ عَلَيْهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَأَطْعَمَتْهُ وَجَعَلَتْ تَفْلِي رَأْسَهُ، فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ اسْتَيْقَظَ ، وَهُوَ يَضْحَكُ، قَالَتْ: فَقُلْتُ: وَمَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ اللهِ، يَرْكَبُونَ ثَبَجَ هَذَا الْبَحْرِ مُلُوكًا عَلَى الأَسِرَّةِ- أَوْ مِثْلَ الْمُلُوكِ عَلَى الأَسِرَّةِ))، شَكَّ إِسْحَاقُ - قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَدَعَا لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ. ثُمَّ وَضَعَ رَأْسَهُ، ثُمَّ اسْتَيْقَظَ وَهُوَ

2788,89. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया इमाम मालिक से, उन्होंने इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा से और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उम्मे ह़राम (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ ले जाया करते थे (ये अनस रज़ि. की ख़ाला थीं जो उ़बादा बिन स़ामित के निकाह़ मे थीं) एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ ले गए तो उन्होंने आप (ﷺ) की ख़िदमत में खाना पेश किया और आप (ﷺ) के सर से जुएँ निकालने लगीं, इस अ़र्से में आप (ﷺ) सो गये, जब बेदार हुए तो आप (ﷺ) मुस्कुरा रहे थे। उम्मे ह़राम (रज़ि.) ने बयान किया मैंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! किस बात पर आप हंस रहे हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने इस त़रह पेश किये गये कि वो अल्लाह के रास्ते में ग़ज़्वा करने के लिये दरिया के बीच में सवार इस त़रह़ जा रहे हैं जिस त़रह बादशाह तख़्त पर होते हैं या जैसे बादशाह तख़्त रवाँ पर सवार होते हैं ये शक इस्हाक़ रावी को था। उन्होंने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) दुआ़ फ़र्माइये कि अल्लाह मुझे भी उन्हीं में से कर दे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके लिये दुआ़ की फिर आप (ﷺ) अपना सर रखकर सो गए, इस बार भी आप जब बेदार हुए तो मुस्कुरा रहे थे। मैंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! किस बात पर आप मुस्कुरा रहे हैं? आपने फ़र्माया मेरी

يَضْحَكُ. فَقُلْتُ: وَمَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ اللهِ - كَمَا قَالَ فِي الأَوَّلِ)) - قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ: ((أَنْتِ مِنَ الأَوَّلِينَ)). فَرَكِبَتِ الْبَحْرَ فِي زَمَنِ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ فَصُرِعَتْ عَنْ دَابَّتِهَا حِينَ خَرَجَتْ مِنَ الْبَحْرِ فَهَلَكَتْ)).
[أطرافه في: ٢٧٩٩، ٢٨٧٧، ٢٨٩٤، ٦٢٨٢، ٧٠٠١]. [أطرافه في ٢٨٠٠، ٢٨٧٨، ٢٨٩٥، ٢٩٢٤، ٦٢٨٣، ٧٠٠٢].

उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने इस तरह पेश किये गये कि वो अल्लाह की राह में ग़ज़्वे के लिये जा रहे हैं पहले की तरह, इस बार भी फ़र्माया उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह से मेरे लिये दुआ कीजिए कि मुझे भी उन्हीं में से कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि तू सबसे पहली फ़ौज में शामिल होगी (जो समन्दरी रास्ते से जिहाद करेगी) चुनाँचे हज़रत मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में उम्मे हराम (रज़ि.) ने बहरी (समन्दरी) सफ़र किया फिर जब समुन्दर से बाहर आईं तो उनकी सवारी ने उन्हें नीचे गिरा दिया और उसी हादषे में उनकी वफ़ात हो गई। (दीगर मक़ाम : 2799, 2800, 2877, 2878, 2894, 2895, 2924, 6282, 6283, 7001, 7002)

तश्रीह : हज़रत मुआविया (रज़ि.) उस वक़्त मिस्र के गवर्नर थे और उष्मान (रज़ि.) की ख़िलाफ़त का दौर था, जब मुआविया (रज़ि.) ने आप (ﷺ) से रोम पर लश्करकशी की इजाज़त मांगी और इजाज़त मिल जाने पर मुसलमानों का सबसे बड़ा बहरी लश्कर (समुद्री बेड़ा) तैयार हुआ जिसने रोम के ख़िलाफ़ जंग की। उम्मे हराम (रज़ि.) भी अपने शौहर के साथ इस लड़ाई में शरीक थीं और इस तरह आँहज़रत (ﷺ) की पेशीनगोई के मुताबिक़ मुसलमानों की सबसे पहली बहरी (समुद्री) जंग में शरीक होकर शहीद हुईं। फ़रज़ियल्लाहु अन्हा। शहादत का वक़ूअ उस वक़्त हुआ जब मुसलमान जिहाद से वापस लौट रहे थे, गो उम्मे हराम ख़ुद नहीं लड़ी मगर अल्लाह की राह में निकली और नस्से क़ुर्आन व हदीष की रू से जो कोई जिहाद के लिये निकले और राह में अपनी मौत से मर जाए वो भी शहीद है। पस उम्मे हराम को शहादत नसीब हुई और इस तरह दुआ-ए-नबवी (ﷺ) का ज़हूर हुआ। हज़रत उम्मे हराम (रज़ि.) आप (ﷺ) की दूधशरीक ख़ाला होती हैं, इसीलिये आप (ﷺ) उनके यहाँ आया-जाया करते थे, वो भी आप (ﷺ) के लिये माँ से ज़्यादा शफ़ीक़ (मेहरबान) थीं (रज़ि.)। रिवायत से औरतों का जिहाद में शरीक होना षाबित हुआ। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मतलब ये है कि जैसे मर्द ये दुआ कर सकते हैं या अल्लाह मुझको मुजाहिदीन में कर, मुझको शहादत नसीब फ़र्मा, ऐसे ही औरत भी ये दुआ कर सकती है। आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में और उसके बाद ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़मानों में भी औरतें मुजाहिदीन के साथ ही रही हैं। उनके खाने-पीने, ज़ख़्म पट्टी करने की ख़िदमात औरतों ने अंजाम दी हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) की ये दुआ क़ुबूल हुई और आप मदीना में अबू लूलू मजूसी के हाथ से शहीद हुए थे। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अज़ाहु)

٤- بَابُ دَرَجَاتِ الْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ.

يُقَالُ هَذِهِ سَبِيلِي، وَهَذَا سَبِيلِي

बाब 4 : मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह के दरजात का बयान

सबील का लफ़्ज़ ज़ुबान में हाज़ा सबीली व हाज़िही सबीली मुज़क्कर और मुअन्नष दोनों तरह इस्ते'माल होता है।

तश्रीह : चूँकि हदीष में फ़ी सबीलिल्लाह का लफ़्ज़ आया था तो इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस मुनासबत से सबील की तहक़ीक़ बयान कर दी कि ये लफ़्ज़ अरबी ज़ुबान में मुज़क्कर और मुअन्नष दोनों तरह से बोला जाता है, हाज़िही सबीली और हाज़ा सबीली दोनों तरह कहते हैं। कुछ नुस्ख़ों में इसके बाद इतनी इबारत और है, **व क़ालू अबू अब्दुल्लाहि ग़ज़ा**

वाहिदुहा गाज़ी दरजातुन लहुम दरजातुन या'नी सूरह आले इमरान में रुकूअ 16 में जो ग़ज़ा का लफ़्ज़ आया है तो ग़ज़ा ग़ाज़ी की जमा है और हुम दरजात का मा'नी लहुम दरजात है या'नी उनके लिये दर्जे हैं। (वहीदी)

2790. हमसे यह्या बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह़ ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अ़ली ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और नमाज़ क़ायम करे और रमज़ान के रोज़े रखे तो अल्लाह तआ़ला पर ह़क़ है कि वो जन्नत में दाख़िल करेगा ख़्वाह अल्लाह के रास्ते में जिहाद करे या उसी जगह पड़ा रहे जहाँ पैदा हुआ था। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम लोगों को इसकी बशारत न दे दें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह तआ़ला ने अपने रास्ते में जिहाद करने वालों के लिये तैयार किये हैं, उनके दो दर्जों में इतना फ़ास़ला है जितना ज़मीन और आसमान में है। इसलिये जब अल्लाह तआ़ला से मांगना हो तो फ़िरदौस मांगो क्योंकि वो जन्नत का सबसे दरम्यानी दर्जा है और जन्नत के सबसे बुलन्द दर्जे पर है; यह्या बिन स़ालेह़ ने कहा कि मैं समझता हूँ यूँ कहा कि, उसके ऊपर परवरदिगार का अ़र्श है और वहीं जन्नत की नहरें निकलती हैं। मुह़म्मद बिन फ़ुलैह़ ने अपने वालिद से व फ़ौक़हू अरशुर्रहमान ही की रिवायत की है। (दीगर मक़ाम : 7423)

٢٧٩٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ هِلاَلِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ آمَنَ بِاللهِ وَبِرَسُولِهِ وَأَقَامَ الصَّلاَةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، جَاهَدَ فِي سَبِيْلِ اللهِ أَوْ جَلَسَ فِي أَرْضِهِ الَّتِي وُلِدَ فِيْهَا)). فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، أَفَلاَ نُبَشِّرُ النَّاسَ؟ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ أَعَدَّهَا اللهُ لِلْمُجَاهِدِيْنَ فِي سَبِيْلِ اللهِ مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللهَ فَسَأَلُوهُ الْفِرْدَوْسَ فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَأَعْلَى الْجَنَّةِ - أُرَاهُ: وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ - وَمِنْهُ تَفَجَّرُ أَنْهَارُ الْجَنَّةِ)). قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ عَنْ أَبِيْهِ: ((وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ)).

[طرفه في: ٧٤٢٣].

तश्रीह : मत़लब ये है कि अगर किसी को जिहाद नस़ीब न हो लेकिन दूसरे फ़राइज़ अदा करता है और उसी ह़ाल में मर जाए तो आख़िरत में उसको बहिश्त मिलेगी, भले ही उसका दर्जा मुजाहिदीन से कम होगा। मुह़म्मद बिन फ़ुलैह़ के रिवायतकर्दा इज़ाफ़े में शक नहीं है जैसे यह्या बिन सुलैमान की रिवायत मे अराहु अल्ख़ वारिद है; कि मैं समझता हूँ। कहा बहिश्त की नहरों से वो चार नहरें पानी और दूध और शहद और शराब की नहरें मुराद हैं जिनका ज़िक्र क़ुर्आन शरीफ़ में है।

2791. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने, कहा हमसे अबू रजाअ ने, उनसे समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने रात में दो आदमी देखे जो मेरे पास आए फिर वो मुझे लेकर एक पेड़ पर चढ़े और उसके बाद मुझे एक ऐसे मकान में ले गए जो निहायत ही ख़ूबसूरत

٢٧٩١- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ عَنْ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ أَتَيَانِي فَصَعِدَا بِي الشَّجَرَةَ فَأَدْخَلاَنِي دَارًا هِيَ أَحْسَنُ وَأَفْضَلُ، لَمْ أَرَ قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهَا،

और बड़ा पाकीज़ा था, ऐसा ख़ूबसूरत मकान मैंने कभी नहीं देखा था। उन दोनों ने कहा कि ये घर शहीदों का है। (राजेअ : 845)

قَالاَ أَمَّا هَذِهِ الدَّارُ فَدَارُ الشُّهَدَاءِ)).

[راجع: ٨٤٥]

मुफ़स्सल तौर पर (विस्तारपूर्वक) ये ह़दीष़ किताबुल जनाइज़ में गुज़र चुकी है। दो शख़्सों से मुराद ह़ज़रत जिब्रईल और ह़ज़रत मीकाईल (अलैहुमुस्सलाम) हैं जो पहले आपको बैतुल मक़्दिस ले गए थे, बाद में आसमानों की सैर कराई और जन्नत और जहन्नम के बहुत से नज़ारे आपको दिखलाए। जिस्मानी मेअ़राज का वाक़िया अलग है जो बिलकुल ह़क़ और ह़क़ीक़त है।

बाब 5 : अल्लाह के रास्ते में सुबह व शाम चलने की और जन्नत में एक कमान बराबर जगह की फ़ज़ीलत

٥- بَابُ الْغَدْوَةِ وَالرَّوْحَةِ فِي سَبِيْلِ اللهِ، وَقَابَ قَوْسِ أَحَدِكُمْ فِي الْجَنَّةِ

2792. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने (फ़ज़्ले जिहाद में) बयान किया, कहा हमसे हुमैद त़वील ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह के रास्ते में गुज़रने वाली एक सुबह या एक शाम दुनिया से जो कुछ दुनिया में है सबसे बेहतर है। (दीगर मक़ाम : 2796, 6568)

٢٧٩٢- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَغَدْوَةٌ فِي سَبِيْلِ اللهِ أَوْ رَوْحَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا)).[طرفاه في: ٢٧٩٦، ٦٥٦٨].

2793. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया हिलाल बिन अ़ली से, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी नमरह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत में एक (कमान) हाथ जगह दुनिया की उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा बेहतर है जिन पर सूरज तुलूअ़ और ग़ुरूब होता है और आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह के रास्ते में एक सुबह या एक शाम चलना उन सब चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज तुलूअ़ और ग़ुरूब होता है। (दीगर मक़ाम : 3253)

٢٧٩٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ هِلاَلِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَقَابُ قَوْسٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِمَّا تَطْلُعُ عَلَيْهِ الشَّمْسُ وَتَغْرُبُ. وَقَالَ: لَغَدْوَةٌ أَوْ رَوْحَةٌ فِي سَبِيْلِ اللهِ خَيْرٌ مِمَّا تَطْلُعُ عَلَيْهِ الشَّمْسُ وَتَغْرُبُ)). [طرفه في: ٣٢٥٣].

2794. हमसे क़बीस़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया उन्होंने अबू हाज़िम से और उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के रास्ते में गुज़रने वाली एक सुबह व शाम दुनिया और जो कुछ दुनिया में है सबसे बढ़कर है। (दीगर मक़ाम : 2892, 3250, 6415)

٢٧٩٤- حَدَّثَنَا قَبِيْصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الرَّوْحَةُ وَالْغَدْوَةُ فِي سَبِيْلِ اللهِ أَفْضَلُ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا)).[أطرافه في: ٢٨٩٢، ٣٢٥٠، ٦٤١٥].

जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के फ़ज़ाइल में बहुत सी आयाते कुर्आनी और अहादीषे नबवी वारिद हुई हैं उन ही में से ये अहादीष भी हैं जो फ़ज़ाइले जिहाद को वाज़ेह लफ़्ज़ों में ज़ाहिर कर रही हैं। कुरूने ऊला के मुसलमानों की ज़िन्दगी शाहिद (गवाह) है कि उन्होंने इस्लाम को और उसके मक़ासिदे आलिया (उच्च उद्देश्य) को कमाहक़्क़हु समझा था और वो इसी आधार पर सर पर कफ़न बाँधे हुए पूरी दुनिया में सरगर्दां और कोशाँ हुए और एक ऐसी तारीख़ (इतिहास) बना गए जो क़यामत तक आने वाले अहले इस्लाम के लिये मशअले राह (मील का पत्थर) षाबित होगी।

बाब 6 : बड़ी आँखों वाली हूरों का बयान, उनकी सिफ़ात जिनको देखकर आँखें हैरान होंगी

٦- بَابُ الْحُورِ الْعِيْنِ وَصِفَتِهِنَّ

जिनकी आँखों की पुतली ख़ूब स्याह होगी और सफ़ेदी भी बहुत साफ़ होगी और (सूरह दुख़ान में) वजव्वज़्नाहुम के मा'नी अन्कहनाहुम के हैं।

يَحَارُ فِيْهَا الطَّرْفُ. شَدِيْدَةُ سَوَادِ الْعَيْنِ، شَدِيْدَةُ بَيَاضِ الْعَيْنِ. وَزَوَّجْنَاهُمْ: أَنْكَحْنَاهُمْ.

2795. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन अ़म्र ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई भी अल्लाह का बन्दा जो मर जाए और अल्लाह के पास उसकी कुछ भी नेकी जमा हो वो फिर दुनिया में आना पसन्द नहीं करता गो उसको सारी दुनिया और जो कुछ उसमें है सब कुछ मिल जाए मगर शहीद फिर दुनिया में आना चाहता है कि जब वो (अल्लाह तआला के) यहाँ शहादत की फ़ज़ीलत को देखेगा तो चाहेगा कि दुनिया में दोबारा आए और फिर क़त्ल हो (अल्लाह तआला के रास्ते में)। (दीगर मक़ाम : 2817)

٢٧٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا مِنْ عَبْدٍ يَمُوتُ لَهُ عِنْدَ اللهِ خَيْرٌ يَسُرُّهُ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا وَأَنَّ لَهُ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا، إِلاَّ الشَّهِيْدَ لِمَا يَرَى مِنْ فَضْلِ الشَّهَادَةِ، فَإِنَّهُ يَسُرُّهُ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ مَرَّةً أُخْرَى)). [طرفه في: ٢٨١٧].

2796. और मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना वो नबी करीम (ﷺ) के हवाले से बयान करते थे कि अल्लाह के रास्ते में एक सुबह या एक शाम भी गुज़ार देना दुनिया और जो कुछ उसमें है, सबसे बेहतर है और किसी के लिये जन्नत में हाथ जगह भी या (रावी को शक है) एक क़ैद जगह, क़ैद से मुराद कोड़ा है, दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है और अगर जन्नत की कोई औरत ज़मीन की तरफ़ झांक भी ले तो ज़मीन व आसमान अपनी तमाम वुस्अतों के साथ मुनव्वर हो जाएँ और ख़ुश्बू से मुअत्तर हो जाएँ। उसके सर का दुपट्टा भी दुनिया और उसकी सारी चीज़ों से बढ़कर है। (राजेअ : 2792)

٢٧٩٦- قَالَ: وَسَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((لَرَوْحَةٌ فِي سَبِيْلِ اللهِ أَوْ غَدْوَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا، وَلَقَابُ قَوسِ أَحَدِكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ أَوْ مَوْضِعُ قِيدٍ - يَعْنِي سَوْطَهُ - خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا. وَلَوْ أَنَّ امْرَأَةً مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اطَّلَعَتْ إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ لأَضَاءَتْ مَا بَيْنَهُمَا وَلَمَلأَتْهُ رِيْحًا، وَلَنَصِيْفُهَا عَلَى رَأْسِهَا خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا)).

[راجع: ٢٧٩٢]

तशरीह : कुछ मुल्हिदीन बेदीन हूरों के नूर और ख़ुश्बू पर इस्तिब्आद करते हैं, उनका जवाब ये है कि बहिश्त का क़यास दुनियां पर नहीं किया जा सकता न बहिश्त की ज़िन्दगी दुनिया की ज़िन्दगी की तरह है। बहुत सी चीज़ें हम दुनिया में देख नहीं सकते मगर आख़िरत में उनको देखेंगे, दोज़ख़ का हल्के से हल्का अ़ज़ाब आदमी नहीं उठा सकता पर आख़िरत में आदमी को ऐसी ताक़त दी जाएगी कि वो दोज़ख़ के अ़ज़ाबों का तहम्मुल (बर्दाश्त) करेगा और फिर ज़िन्दा रहेगा। अल् अल ग़र्ज़ उख़रवी ज़िन्दगी को दुनियावी हालात पर क़यास करने वाले ख़ुदफ़हम व फ़िरासत से महरूम हैं।

बाब 7 : शहादत की आरज़ू करना

٧- بَابُ تَمَنِّي الشَّهَادَةِ

2797. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर मुसलमानों के दिलों में उससे रंज न होता कि मैं उनको छोड़कर जिहाद के लिये निकल जाऊँ और मुझे ख़ुद इतनी सवारियाँ मयस्सर नहीं हैं कि उन सबको सवार करके अपने साथ ले चलूँ तो मैं किसी छोटे से छोटे ऐसे लश्कर के साथ जाने से भी न रुकता जो अल्लाह के रास्ते में ग़ज़्वे के लिये जा रहा होता। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है! मेरी तो आरज़ू है कि मैं अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ फिर क़त्ल किया जाऊँ और फ़िर ज़िन्दा किया जाऊँ फिर क़त्ल किया जाऊँ और फिर ज़िन्दा किया जाऊँ और फिर क़त्ल किया जाऊँ। (राजेअ़ : 36)

٢٧٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْ لاَ أَنَّ رِجَالاً مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لاَ تَطِيْبُ أَنْفُسُهُمْ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنِّي، وَلاَ أَجِدُ مَا أَحْمِلُهُمْ عَلَيْهِ، مَا تَخَلَّفْتُ عَنْ سَرِيَّةٍ تَغْدُو فِي سَبِيْلِ اللهِ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوَدِدْتُ أَنِّي أُقْتَلُ فِي سَبِيْلِ اللهِ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ)).

[راجع: ٣٦]

मा'लूम हुआ कि शहादत की आरज़ू करना इस निय्यत से कि उससे शजरे इस्लाम की आबयारी होगी और आख़िरत में बुलन्द दरजात ह़ासिल होंगे। ये जाइज़ बल्कि सुन्नत है और ज़रूरी है।

2798. हमसे यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब सफ़्फ़ार ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अ़लिया ने, उनसे अय्यूब ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुत्बा दिया आपने फ़र्माया फ़ौज का झण्डा अब ज़ैद ने अपने हाथ में लिया और वो शहीद कर दिये गये फिर जा'फ़र ने ले लिया और वो भी शहीद कर दिये गये फिर अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा ने ले लिया और वो भी शहीद कर दिये गये और अब किसी हिदायत का इंतिज़ार किये बग़ैर ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने झण्डा अपने हाथ में ले लिया। और उनके हाथ पर इस्लामी लश्कर को फ़तह हुई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि और

٢٧٩٨- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ الصَّفَّارُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ عُلَيَّةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ ((أَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ فَأُصِيْبَ ثُمَّ أَخَذَهَا جَعْفَرٌ فَأُصِيْبَ ثُمَّ أَخَذَهَا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ فَأُصِيْبَ، ثُمَّ أَخَذَهَا خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ عَنْ غَيْرِ إِمْرَةٍ فَفُتِحَ لَهُ)). وَقَالَ:

हमें कोई उसकी ख़ुशी भी नहीं थी कि ये लोग जो शहीद हो गए हैं हमारे पास ज़िन्दा रहते क्योंकि वो बहुत ऐशो-आराम में चले गए हैं। अय्यूब ने बयान किया या आपने ये फ़र्माया कि उन्हें कोई उसकी ख़ुशी भी नहीं थी कि हमारे साथ ज़िन्दा रहते, उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी थे। (राजेअ : 1446)

((مَا يَسُرُّنَا أَنَّهُمْ عِنْدَنَا)) قَالَ أَيُّوبُ: أَوْ قَالَ: ((مَا يَسُرُّهُمْ أَنَّهُمْ عِنْدَنَا، وَعَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ)). [راجع: ١٤٤٦]

तश्रीह : हुआ ये था कि 8 हिजरी में आप (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-मौता के लिये एक लश्कर रवाना किया। ज़ैद बिन ह़ारिष़ा को उसका सरदार मुक़र्रर किया और फ़र्माया कि अगर वो शहीद हो जाएँ तो जा'फ़र को सरदार बनाना, अगर वो भी शहीद हो जाएँ तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा को। इत्तिफ़ाक़ से एक के बाद एक ये तीनों सरदार शहीद हो गए और ख़ालिद बिन वलीद ने आख़िर में अफ़सरी झण्डा उठा लिया ताकि मुसलमान हिम्मत न हारें क्योंकि लड़ाई सख़्त हो रही थी। गो उनके लिये आँहज़रत (ﷺ) ने कुछ नहीं फ़र्माया था। आप (रज़ि.) काफ़िरों से यहाँ तक लड़े कि अल्लाह ने आपके ज़रिये इस्लाम के लश्कर को फ़तह़ नसीब फ़र्माई। दूसरी रिवायत में है कि आपने ख़ुश होकर ख़ालिद बिन वलीद के ह़क़ में फ़र्माया कि वो अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है। मज़ीद तफ़्सीलात जंगे मौता के ज़िक्र में आएँगी।

बाब 8 : अगर कोई शख़्स जिहाद में सवारी से गिरकर मर जाए तो उसका शुमार भी मुजाहिदीन में होगा, उसकी फ़ज़ीलत

٨- بَابُ فَضْلِ مَنْ يُصْرَعُ فِي سَبِيْلِ اللهِ فَمَاتَ فَهُوَ مِنْهُمْ

और सूरह निसा में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद कि जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की त़रफ़ हिजरत की निय्यत से निकले और फिर रास्ते ही में उसकी वफ़ात हो जाए तो अल्लाह पर उसका अज्र (हिजरत का) वाजिब हो गया (आयत में) वक़अ़ के मा'नी वजब के हैं। (अन निसा : 100)

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللهِ﴾ [النساء : ١٠٠] وقع : وجب.

तश्रीह : कहते हैं एक शख़्स ज़मरह नामी जो मुसलमान था, मक्का में रह गया था। जब ये आयत नाज़िल हुई, **अलम तकुन अर्ज़ुल्लाहि वासिअ़तुन फतुहाजिरू फीहा** या'नी, क्या अल्लाह की ज़मीन फ़राख़ नहीं है कि तुम उसमें हिजरत कर जाओ, ये आयत सुनकर उन्होंने बीमारी में मदीना का सफ़र शुरू किया मगर रास्ते ही में उनको मौत आ गई। उस वक़्त ये आयत नाज़िल हुई। जिहाद भी उस पर क़ियास किया जा सकता है कि कोई शख़्स जिहाद के लिये निकले और रास्ते में अपनी मौत से मर जाए तो उसको भी मुजाहिदीन का ष़वाब मिलेगा और वो इन्दल्लाह शहीदों में लिखा जाएगा। मशहूर ह़दीष़ **इन्नमा लिकुल्लि इम्रिन मा नवा** से भी इसकी ताईद होती है हिजरत अपना दीन-ईमान बचाने के लिये दारुल ह़रब से दारुल इस्लाम में चले जाने को कहते हैं और ये क़यामत तक के लिये बाक़ी है।

2799. 2800. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन यह्या बिन ह़ब्बान ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उनसे उनकी ख़ाला उम्मे-ह़राम बिन्ते मिल्ह़ान (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) मेरे क़रीब ही सो गए। फिर जब बेदार हुए तो

٢٧٩٩، ٢٨٠٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ خَالَتِهِ أُمِّ حَرَامٍ بِنْتِ مِلْحَانَ قَالَتْ: ((نَامَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا قَرِيْبًا مِنِّي، ثُمَّ

مُسْتَيْقَظَ يَتَبَسَّمُ، فَقُلْتُ: مَا أَضْحَكَكَ؟ قَالَ: ((أُنَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ يَرْكَبُونَ هَذَا الْبَحْرَ الأَخْضَرَ كَالْمُلُوكِ عَلَى الأَسِرَّةِ))، قَالَتْ: فَادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَدَعَا لَهَا. ثُمَّ نَامَ الثَّانِيَةَ، فَفَعَلَ مِثْلَهَا، فَقَالَتْ : مِثْلَ قَوْلِهَا، فَأَجَابَهَا مِثْلَهَا، فَقَالَتْ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَقَالَ: ((أَنْتِ مِنَ الأَوَّلِينَ)). فَخَرَجَتْ مَعَ زَوْجِهَا عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ غَازِيًا أَوَّلَ مَا رَكِبَ الْمُسْلِمُونَ الْبَحْرَ مَعَ مُعَاوِيَةَ، فَلَمَّا انْصَرَفُوا مِنْ غَزْوِهِمْ قَافِلِينَ فَنَزَلُوا الشَّامَ فَقُرِّبَتْ إِلَيْهَا دَابَّةٌ لِتَرْكَبَهَا فَصَرَعَتْهَا فَمَاتَتْ)).

[راجع: ٢٧٨٨، ٢٧٨٩]

मुस्कुरा रहे थे, मैंने अ़र्ज़ किया कि आप (ﷺ) किस बात पर हंस रहे हैं? फ़र्माया मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने पेश किये गये जो ग़ज़्वा करने के लिये उस बहते दरिया पर सवार होकर जा रहे थे जैसे बादशाह तख़्त पर चढ़ते हैं। मैंने अ़र्ज़ किया फिर आप (ﷺ) मेरे लिये भी दुआ कर दीजिए कि अल्लाह तआला मुझे भी उन्हीं में से बना दे। आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ की। फिर दोबारा आप (ﷺ) सो गए और पहले की तरह इस बार भी किया (बेदार होते हुए मुस्कुराए) उम्मे हराम (रज़ि.) ने पहले ही की तरह इस बार भी अ़र्ज़ किया और आप (ﷺ) ने वही जवाब दिया। उम्मे हराम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया आप दुआ कर दें कि अल्लाह तआला मुझे भी उन्हीं में से बना दे तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम सबसे पहले लश्कर के साथ होगी चुनाँचे वो अपने शौहर उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) के साथ मुसलमानों के सबसे पहले बहरी (समन्दरी) बेड़े में शरीक हुईं। मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में ग़ज़्वा से लौटते वक़्त जब शाम के साहिल पर लश्कर उतरा तो उम्मे हराम (रज़ि.) के क़रीब एक सवारी लाई गई ताकि उस पर सवार हो जाएँ लेकिन जानवर ने उन्हें गिरा दिया और उसी में उनका इंतिक़ाल हो गया।
(राजेअ़ : 2788, 2789)

अंबिया के ख़्वाब भी वह्य और इल्हाम होते हैं। आपने ख़्वाब में देखा कि आपकी उम्मत के कुछ लोग बड़ी शान और शौकत के साथ बादशाहों की तरह समुन्दर पर सवार हो रहे हैं। आख़िर आप (ﷺ) का ये ख़्वाब पूरा हुआ और मुसलमानों ने अ़हदे मुआविया (रज़ि.) में बहरी बेड़े तैयार करके शाम (सीरिया) पर हमला किया, बाब का तर्जुमा इस तरह निकला कि उम्मे हराम (रज़ि.) अगरचे जानवर से गिरकर मरीं मगर आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मुजाहिदीन में शामिल फ़र्माया और अन्त मिनल् अव्वलीन से आपने पेशीनगोई फ़र्माई।

٩- بَابُ مَنْ يُنْكَبُ أَوْ يُطْعَنُ فِي سَبِيْلِ اللهِ

बाब 9 : जिसको अल्लाह की राह में तकलीफ़ पहुँचे (यानी उसके किसी अ़ज़्व को स़दमा हो)

٢٨٠١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ الْحَوضِيُّ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْوَامًا مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ إِلَى بَنِي عَامِرٍ فِي سَبْعِيْنَ، فَلَمَّا قَدِمُوا قَالَ لَهُمْ خَالِي: أَتَقَدَّمُكُمْ، فَإِنْ

2801. हमसे हफ़्स़ बिन उ़मर हौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने, उनसे इस्हाक़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनू सुलैम के सत्तर आदमी (जो क़ारी थे) बनू आमिर के यहाँ भेजे। जब ये सब हज़रात (बीरे मऊ़ना पर) पहुँचे तो मेरे मामू हराम बिन मिलहान (रज़ि.) ने कहा मैं (बनू सुलैम के यहाँ) आगे जाता हूँ अगर मुझे उन्हों ने इस बात का अमन दे दिया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें उन तक

أَمِّنُونِيْ حَتَّى أُبَلِّغَهُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلاَّ كُنْتُمْ مِنِّي قَرِيبًا. فَتَقَدَّمَ فَأَمَّنُوهُ، فَبَيْنَمَا يُحَدِّثُهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَوْمَؤُوا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ فَطَعَنَهُ فَأَنْفَذَهُ، فَقَالَ: اللهُ أَكْبَرُ، فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ. ثُمَّ مَالُوا عَلَى بَقِيَّةِ أَصْحَابِهِ فَقَتَلُوهُمْ إِلاَّ رَجُلاً أَعْرَجَ صَعِدَ الْجَبَلَ، قَالَ هَمَّامٌ: فَأُرَاهُ آخَرَ مَعَهُ، فَأَخْبَرَ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهُمْ قَدْ لَقُوا رَبَّهُمْ فَرَضِيَ عَنْهُمْ وَأَرْضَاهُمْ، فَكُنَّا نَقْرَأُ أَنْ بَلِّغُوا قَوْمَنَا أَنْ قَدْ لَقِيْنَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا، ثُمَّ نُسِخَ بَعْدُ، فَدَعَا عَلَيْهِمْ أَرْبَعِيْنَ صَبَاحًا، عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَبَنِي لِحْيَانَ وَبَنِي عُصَيَّةَ الَّذِيْنَ عَصَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).
[راجع: ١٠٠١]

पहुँचाऊँ ता बेहतर वरना तुम लोग मेरे क़रीब तो हो ही। चुनाँचे वो उनके यहाँ गये और उन्होंने अमन भी दे दिया। अभी वो क़बीले के लोगों को रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें सुना ही रहे थे कि क़बीले वालों ने अपने एक आदमी (आ़मिर बिन तुफ़ैल) को इशारा किया और उसने आप (रज़ि.) के बरछा मारा जो जिस्म में आर-पार हो गया। उस वक़्त उनकी ज़ुबान से निकला, अल्लाहु अकबर! मैं कामयाब हो गया का'बा के रब की क़सम! उसके बाद क़बीले वाले ह़राम (रज़ि.) के दूसरे साथियों की त़रफ़ (जो सत्तर की ता'दाद में थे) बढ़े और सबको क़त्ल कर दिया। अल्बत्ता एक स़ाह़ब जो लंगड़े थे, पहाड़ पर चढ़ गए। हम्माम (ह़दीष़ के रावी) ने बयान किया मैं समझता हूँ कि एक साह़ब और उनके साथी (पहाड़ पर चढ़े थे) (अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी) उसके बाद जिब्रईल ने नबी करीम (ﷺ) को ख़बर दी कि आपके साथी अल्लाह तआ़ला से जा मिले हैं, पस अल्लाह ख़ुद भी उनसे ख़ुश है और उन्हें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद हम (क़ुर्आन की दूसरी आयतों के साथ ये आयत भी) पढ़ते थे (तर्जुमा) हमारी क़ौम के लोगों को ये पैग़ाम पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं, पस हमारा रब ख़ुद भी ख़ुश है और हमें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद ये मन्सूख़ हो गई, नबी करीम (ﷺ) ने चालीस दिन तक सुबह की नमाज़ में क़बीला रअ़ल, ज़क्वान, बनी लह़यान और बनी उ़सय्या के लिये बद् दुआ की थी जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) की नाफ़र्मानी की थी। (राजेअ़ : 1001)

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ ने कहा उसमें ह़फ़्स़ बिन उ़मर इमाम बुख़ारी के शैख़ से सह्व हो गया है और स़ह़ीह़ यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उम्मे सुलैम के एक भाई या'नी ह़राम बिन मिल्ह़ान को सत्तर आदमियों के साथ बनी आ़मिर की त़रफ़ भेजा था। ये सत्तर आदमी अंसार के क़ारी थे और आपने दीन की ता'लीम फैलाने के लिये क़बीला बनी आ़मिर के यहाँ भेजे थे जिनके लिये ख़ुद उस क़बीला ने दरख़्वास्त की लेकिन रास्ते में बनू सुलैम ने दग़ा की और उन ग़रीब क़ारियों को नाह़क़ क़त्ल कर दिया। बनू सुलैम का सरदार आ़मिर बिन तुफ़ैल था। लुग़त के सिलसिले में जिन क़बीलों का ज़िक्र रिवायत में आया है ये सब बनू सुलैम की शाख़ें हैं। आयत जिसका ज़िक्र रिवायत में आया है उन आयतों में से है जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गई।

٢٨٠٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدَبِ بْنِ سُفْيَانَ : أَنَّ رَسُولَ اللهِ

2802. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने और उनसे जुन्दब बिन सुफ़यान (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) किसी लड़ाई के मौक़े पर मौजूद थे और आप (ﷺ) की उँगली ज़ख़्मी हो गई थी।

आप (ﷺ) ने उँगली से मुख़ातिब होकर फ़र्माया तेरी हक़ीक़त एक ज़ख़्मी उँगली के सिवा क्या है और जो कुछ मिला है अल्लाह के रास्ते में मिला है। (दीगर मक़ाम : 6146)

ﷺ كَانَ فِي بَعْضِ الْمَشَاهِدِ وَقَدْ دَمِيَتْ إِصْبَعُهُ فَقَالَ: ((هَلْ أَنْتِ إِلاَّ إِصْبَعٌ دَمِيتِ، وَفِي سَبِيلِ اللهِ مَا لَقِيتِ)).
[طرفه في : ٦١٤٦].

मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने तर्जुमा यूँ किया है, एक उँगली है तेरी हस्ती यही; जो अल्लाह की राह में ज़ख़्मी हुई

बाब 10 : जो अल्लाह के रास्ते में ज़ख़्मी हुआ? उसकी फ़ज़ीलत का बयान

١٠- بَابُ مَنْ يُجْرَحُ فِي سَبِيلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ

2803. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी अबुज़्ज़िनाद से, उन्होंने अअरज से और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है जो शख़्स भी अल्लाह के रास्ते में ज़ख़्मी हुआ और अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि उसके रास्ते में कोई ज़ख़्मी हुआ है, वो क़यामत के दिन इस तरह से आएगा कि उसके ज़ख़्मों से ख़ून बह रहा होगा, रंग तो ख़ून जैसा होगा लेकिन उसमें ख़ुश्बू मुश्क जैसी होगी। (राजेअ : 237)

٢٨٠٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لاَ يُكْلَمُ أَحَدٌ فِي سَبِيلِ اللهِ - وَاللهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُكْلَمُ فِي سَبِيلِهِ - إِلاَّ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَجُرْحُهُ يَثْعَبُ، وَاللَّوْنُ لَوْنُ الدَّمِ، وَالرِّيحُ رِيحُ الْمِسْكِ)). [راجع: ٢٣٧]

या'नी अल्लाह को ख़ूब मा'लूम है कि ख़ालिस उसकी रज़ाजूई के लिये कौन लड़ता है और उसमें रिया और नामवरी का शायबा है या नहीं। इमाम नववी (रह.) ने कहा है कि जो शख़्स बाग़ियों या रहज़नों के हाथ से ज़ख़्मी हो या दीन की ता'लीम के दौरान में मर जाए उसके लिये भी यही फ़ज़ीलत है, आजकल जो मुसलमान दुश्मनों के हाथ से मज़्लूमाना क़त्ल हो रहे हैं वो भी उसी ज़ैल में हैं। (वल्लाहु आलम बिस्सवाब)

बाब 11 : फ़र्माने इलाही कि,

١١- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

ऐ पैग़म्बर! उन काफ़िरों से कह दो तुम हमारे लिये किया इंतिज़ार करते हो, हमारे लिये तो दोनों में से (शहादत या फ़तह) कोई भी हो अच्छा ही है और लड़ाई है कभी इधर कभी उधर।

﴿قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلاَّ إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ﴾[التوبة: ٥٢]
وَالْحَرْبُ سِجَالٌ

2804. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, कहा मुझसे यूनुस ने बयान किया इब्ने शिहाब से, उन्होंने उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हिरक़्ल ने उनसे कहा था मैंने तुमसे पूछा था लड़ाइयों का क्या

٢٨٠٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سُفْيَانَ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ

هِرَقْلَ قَالَ لَهُ: سَأَلْتُكَ كَيْفَ كَانَ قِتَالُكُمْ إِيَّاهُ، فَزَعَمْتَ أَنَّ الْحَرْبَ سِجَالٌ وَدُوَلٌ، فَكَذَلِكَ الرُّسُلُ تُبْتَلَى ثُمَّ تَكُونُ لَهُمُ الْعَاقِبَةُ)). [راجع: ٧]

अंजाम रहता है तो तुमने बताया कि लड़ाई डोलों की तरह है, कभी इधर कभी उधर या'नी कभी लड़ाई का अंजाम हमारे ह़क़ में होता है और कभी उनके ह़क़ में अंबिया का भी यही ह़ाल होता है कि उनकी आज़माइश होती रहती है (कभी फ़तह़ और कभी हार से) लेकिन अंजाम उन्हीं के ह़क़ में अच्छा होता है। (राजेअ़ : 7)

या'नी या तो मुसलमान लड़ते-लड़ते अपनी जान दे देगा या फिर फ़तह़ ह़ासिल होगी। ईमान लाने के बाद मुसलमानों के लिये दोनों अंजाम नेक और अच्छे हैं। फ़तह़ की सूरत को तो सब अच्छी समझते हैं लेकिन लड़ाई में मौत और शहादत एक मोमिन का आख़िरी मक़्सूद (अन्तिम लक्ष्य) है, अल्लाह के रास्ते में लड़ता है और अपनी जान दे देता है, जब अल्लाह की बारगाह में पहुँचता है तो उसकी नवाज़िशें और ज़याफ़तें उसे ख़ूब ह़ासिल होती हैं।

١٢ - بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

बाब 12 : अल्लाह तआला का इर्शाद है कि,

﴿مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللهَ عَلَيْهِ، فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا﴾. [الأحزاب: ٢٣].

मोमिनों मे कुछ वो लोग भी हैं जिन्होंने उस वादे को सच कर दिखाया जो उन्होंने अल्लाह तआला से किया था, पस उनमें कुछ तो ऐसे हैं जो (अल्लाह के रास्ते में शहीद होकर) अपना अ़हद पूरा कर चुके और कुछ ऐसे हैं जो इंतिज़ार कर रहे हैं और अपने अ़हद से वो फिरे नहीं हैं। (अल अहज़ाब : 23)

आयत में अ़हद से मुराद वो अ़हद है जो सह़ाबा (रज़ि.) ने उहुद के दिन किया था या लैलतुल उ़क़्बा में कि आँह़ज़रत (ﷺ) का साथ देंगे और किसी ह़ाल में मुँह न मोड़ेंगे। कुछ तो अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके जैसे अनस बिन नज़र, अ़ब्दुल्लाह अंसारी, ह़म्ज़ा, त़लह़ा वग़ैरह कुछ शहादत के मुंतज़िर हैं जैसे ह़ज़राते ख़ुलफ़ा-ए-अरबआ़ और दूसरे सह़ाबा जो बाद में शहीद हुए और उ़मूम के लिहाज़ से क़यामत तक आने वाले वो सारे मुसलमान जो दिलों में ऐसी तमन्ना रखते हैं। **जअ़ल्नल्लाहु मिन्हुम आमीन**

٢٨٠٥ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيْدٍ الْخُزَاعِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسًا. ح حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ حَدَّثَنَا زِيَادٌ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ الطَّوِيْلُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((غَابَ عَمِّي أَنَسُ بْنُ النَّضْرِ عَنْ قِتَالِ بَدْرٍ. فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، غِبْتُ عَنْ أَوَّلِ قِتَالٍ قَاتَلْتَ الْمُشْرِكِيْنَ، لَئِنِ اللهُ أَشْهَدَنِي قِتَالَ الْمُشْرِكِيْنَ لَيَرَيَنَّ اللهُ مَا أَصْنَعُ.

2805. हमसे मुहम्मद बिन सईद ख़ुज़ाई ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा (दूसरी सनद) हमसे अम्र बिन ज़ुरारह ने बयान किया, कहा हमसे ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि मुझसे हुमैद त़वील ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे चचा अनस बिन नज़र (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में ह़ाज़िर न हो सके, इसलिये उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं पहली लड़ाई ही से ग़ायब रहा जो आपने मुश्रिकीन के ख़िलाफ़ लड़ी लेकिन अगर अब अल्लाह तआला ने मुझे मुश्रिकीन के ख़िलाफ़ किसी लड़ाई में हाज़िरी का मौक़ा दिया तो अल्लाह तआला देख लेगा कि मैं क्या करता हूँ। फिर जब उहुद की लड़ाई का मौक़ा आया और मुसलमान भाग निकले तो अनस

بِن نज़र ने कहा कि ऐ अल्लाह! जो कुछ मुसलमानों ने किया मैं उससे मअ़ज़रत करता हूँ और जो कुछ इन मुश्रिकीन ने किया है मैं उससे बेज़ार हूँ। फिर वो आगे बढ़े (मुश्रिकीन की तरफ़) तो सअ़द बिन मुआज़ (रज़ि.) से सामना हुआ। उनसे अनस बिन नज़र (रज़ि.) ने कहा ऐ सअ़द बिन मुआज़! मैं तो जन्नत में जाना चाहता हूँ और नज़र (उनके बाप) के रब की क़सम मैं जन्नत की ख़ुश्बू उहुद पहाड़ के क़रीब पाता हूँ। सअ़द (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! जो उन्होंने कर दिखाया उसकी मुझमें हिम्मत न थी। अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि उसके बाद जब अनस बिन नज़र (रज़ि.) को हमने पाया तो तलवार नेज़े और तीर के तक़रीबन अस्सी ज़ख़्म उनकी जिस्म पर थे, वो शहीद हो चुके थे, मुश्रिकों ने उनके हिस्सों को काट दिया था और कोई शख़्स उन्हें पहचान न सका था, सिर्फ़ उनकी बहन उँगलियों से उन्हें पहचान सकी थीं। अनस (रज़ि.) ने बयान किया हम समझते हैं (या आपने बजाय नरा के नज़ुन्नु कहा) मतलब एक ही है कि ये आयत उनके और उन जैसे मोमिनीन के बारे में नाज़िल हुई थी कि मोमिनों में कुछ वो लोग हैं जिन्होंने अपने उस वादे को सच्चा कर दिखाया जो उन्होंने अल्लाह तआ़ला से किया था, आख़िर आयत तक।

(दीगर मक़ाम : 4048, 4783)

فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ وَانْكَشَفَ الْمُسْلِمُونَ قَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعْتَذِرُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ هَؤُلاَءِ، يَعْنِي أَصْحَابَهُ، وَأَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ هَؤُلاَءِ، يَعْنِي الْمُشْرِكِيْنَ. ثُمَّ تَقَدَّمَ فَاسْتَقْبَلَهُ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ، فَقَالَ : يَا سَعْدُ بْنَ مُعَاذٍ، الْجَنَّةَ وَرَبِّ النَّضْرِ، إِنِّي أَجِدُ رِيْحَهَا مِنْ دُونِ أُحُدٍ. قَالَ سَعْدٌ: فَمَا اسْتَطَعْتُ يَا رَسُولَ اللهِ مَا صَنَعَ.
قَالَ أَنَسٌ: فَوَجَدْنَا بِهِ بِضْعًا وَثَمَانِيْنَ ضَرْبَةً بِالسَّيْفِ أَوْ طَعْنَةً بِرُمْحٍ أَوْ رَمْيَةً بِسَهْمٍ. وَوَجَدْنَاهُ قَدْ قُتِلَ وَقَدْ مَثَّلَ بِهِ الْمُشْرِكُونَ. فَمَا عَرَفَهُ أَحَدٌ إِلاَّ أُخْتُهُ بِبَنَانِهِ. قَالَ أَنَسٌ : كُنَّا نَرَى - أَوْ نَظُنُّ - أَنَّ هَذِهِ الآيَةَ نَزَلَتْ فِيْهِ وَفِيْ أَشْبَاهِهِ: ﴿مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللهَ عَلَيْهِ﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ)).

[طرفاه في: ٤٠٤٨، ٤٧٨٣].

2806. उन्होंने बयान किया कि अनस बिन नज़र (रज़ि.) की एक बहन रबीअ़ नामी (रज़ि.) ने किसी ख़ातून के आगे के दांत तोड़ दिये थे, इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे क़िसास़ लेने का हुक्म दिया। अनस बिन नज़र (रज़ि.) ने कहा उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाया है (क़िसास़ में) उनके दांत न टूटेंगे। चुनाँचे मुद्दई तावान लेने पर राज़ी हो गए और क़िसास़ का ख़्याल छोड़ दिया, इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के कुछ बन्दे हैं कि अगर वो अल्लाह का नाम लेकर क़सम खा लें तो अल्लाह ख़ुद उनकी क़सम पूरी कर देता है। (राजेअ़ : 2703)

٢٨٠٦- وَقَالَ: إِنَّ أُخْتَهُ - وَهِيَ تُسَمَّى الرُّبَيِّعَ - كَسَرَتْ ثَنِيَّةَ امْرَأَةٍ فَأَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْقِصَاصِ، فَقَالَ أَنَسٌ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَالَّذِيْ بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لاَ يُكْسَرُ ثَنِيَّتُهَا. فَرَضُوا بِالأَرْشِ وَتَرَكُوا الْقِصَاصَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللهِ مَنْ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لأَبَرَّهُ)).

[راجع: ٢٧٠٣]

तश्रीह : हज़रत अनस बिन नज़र (रज़ि.) ने जो कहा उसका मतलब ये था कि मैं दोनों कामों से नाराज़ हूँ, मुश्रिक तो कमबख़्त नापाक हैं जो नाहक़ पर लड़ रहे हैं। उनसे क़त्अन बेज़ार हूँ और मुसलमान जिनको हक़ पर जमकर लड़ना चाहिये था वो भाग निकले हैं, उनकी हरकत को भी नापसन्द करता हूँ और तेरी दरगाह में मअ़ज़रत करता हूँ कि मैं उन भागने

वालों मे से नहीं हूँ। ये कहकर उन्होंने कुफ़्फ़ार पर हमला किया और कितनों को जहन्नम रसीद करते हुए आख़िर जामे शहादत पी लिया। भागने वालों से वो लोग मुराद हैं जिनको जंगे उहुद में एक दर्रे की ह़िफ़ाज़त पर मामूर किया गया था और ताकीद के साथ कह दिया गया था कि जब तक इजाज़त न मिले, हर्गिज़ दर्रा न छोड़ें मगर उन्होंने शुरू में मुसलमानों की फ़तह देखी तो दर्रा ख़ाली छोड़ दिया और जिसमें से कुफ्फ़ारे क़ुरैश ने दोबारा वार किया और मैदाने उहुद का नक़्शा ही बदल गया, जंगे उहुद इस्लामी तारीख़ का एक बहुत ही दर्दनाक मअ़रका है जिसमे सत्तर मुसलमान शहीद हुए और इस्लाम को बड़ा ज़बरदस्त नुक़्सान पहुँचा। मैदाने उहुद में गंज शहीदान उन्हीं शुह्दाए उहुद का यादगारी क़ब्रिस्तान है, **जज़ाहुमुल्लाहु जज़ाअन हसना**

बहार अब जो दुनिया में आई हुई है ये सब पौधें उसी की लगाई हुई है।

٢٨٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. وَحَدَّثَنِي إِسْمَاعِيْلُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ أُرَاهُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيْقٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدٍ أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَسَخْتُ الصُّحُفَ فِي الْمَصَاحِفِ فَفَقَدْتُ آيَةً مِنْ سُورَةِ الأَحْزَابِ كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقْرَأُ بِهَا فَلَمْ أَجِدْهَا إِلاَّ مَعَ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيِّ الَّذِي جَعَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ شَهَادَتَهُ شَهَادَةَ رَجُلَيْنِ، وَهُوَ قَوْلُهُ: ﴿مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللهَ عَلَيْهِ﴾)).

[أطرافه في: ٤٠٤٩، ٤٦٧٩، ٤٧٨٤، ٤٩٨٦، ٤٩٨٨، ٤٩٨٩، ٧١٩١، ٧٤٢٥].

2807. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी ज़ुहरी से, दूसरी सनद और मुझसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, मेरा ख़याल है कि मुहम्मद बिन अ़तीक़ के वास्ते से, उनसे इब्ने शिहाब (ज़ुहरी) ने और उनसे ख़ारजा बिन ज़ैद ने कि ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने बयान किया जब क़ुर्आन मजीद को एक मुस्ह़फ़ की (किताबी) सूरत में जमा किया जाने लगा तो मैंने सूरह अह़ज़ाब की एक आयत नहीं पाई जिसकी रसूलुल्लाह (ﷺ) से बराबर आपकी तिलावत करते हुए सुनता रहा था (जब मैंने उसे तलाश किया तो) सिर्फ़ ख़ुज़ैमा बिन ष़ाबित अंसारी (रज़ि.) के यहाँ वो आयत मुझे मिली। ये ख़ुज़ैमा (रज़ि.) वही हैं जिनकी अकेले की गवाही को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो आदमियों की गवाही के बराबर क़रार दिया था। वो आयत ये थी, मिनल् मोमिनीन रिजालुन स़दक़ू मा आ़हदुल्लाहु अ़लैहि **(अल् अह़ज़ाब : 23) तर्जुमा बाब के ज़ेल में गुज़र चुका है)**

(दीगर मक़ाम : 4049, 4679, 4784, 4986, 4988, 4989, 7191, 7425)

तशरीह : इससे कोई ये न समझे कि क़ुर्आन शरीफ़ एक शख़्स की रिवायत पर जमा हुआ है क्योंकि ये आयत सुनी तो बहुत से आदमियों ने थी जैसे ह़ज़रत उ़मर और उबय बिन कअ़ब और हिलाल बिन उमय्या और ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) वग़ैरहुम से मगर इत्तिफ़ाक़ से लिखी हुई किसी के पास न मिली।

ह़ज़रत ख़ुज़ैमा (रज़ि.) की शहादत को आपने दो शहादतों के ब राबर क़रार दिया, ये ख़ास़ ख़ुज़ैमा के लिये आप (ﷺ) ने फ़र्माया था। हुआ ये कि आप (ﷺ) ने एक शख़्स से कोई बात फ़र्माई, उसने इंकार किया। ख़ुज़ैमा ने कहा मैं इसका गवाह हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुझसे तो गवाही त़लब नहीं की गई फिर तू गवाही देता है। ख़ुज़ैमा ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम पर आसमान से जो हुक्म उतरते हैं उन पर आप (ﷺ) की तस्दीक़ करते हैं ये कौनसी बड़ी बात है। आप (ﷺ) ने ख़ुज़ैमा (रज़ि.) की शहादत पर फ़ैसला कर दिया और उनकी शहादत दूसरे दो आदमियों की शहादत के बराबर रखी। (वह़ीदी)

बाब 13 : जंग से पहले कोई नेक अमल करना

١٣- بَابُ عَمَلٌ صَالِحٌ قَبْلَ الْقِتَالِ

और अबू दर्दा (रज़ि.) ने कहा कि तुम लो अपने (नेक) आमाल की बदौलत जंग करते हो और अल्लाह तआला का (सूरह सफ़ में ये) इर्शाद कि, ऐ लोगों! जो ईमान ला चुके हो ऐसी बातें क्यूँ कहते हो जो ख़ुद नहीं करते अल्लाह के नज़दीक ये बहुत बड़े ग़ुस्से की बात है कि तुम वो कहो जो तुम ख़ुद नहीं करते, बेशक अल्लाह उन लोगों को पसन्द करता है जो उसके रास्ते में सफ़ बनाकर ऐसे जमकर लड़ते हैं जैसे सीसा पिलाई हुई ठोस दीवार हों।

وَقَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ إِنَّمَا تُقَاتِلُونَ بِأَعْمَالِكُمْ. وَقَوْلُهُ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لاَ تَفْعَلُونَ. كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لاَ تَفْعَلُونَ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُوصٌ﴾.

तश्रीह : मुसलमानों की दो सफ़ें अल्लाह को बहुत ही महबूब हैं। एक सफ़ तो वो जो नमाज़ में क़ायम करते हैं कि पैर से पैर, कँधे से कँधा मिलाकर अल्लाह की इबादत के लिये खड़े होते हैं। दूसरी सफ़ वो जो वो दुश्मन के मुक़ाबले पर सीसा पिलाई हुई दीवारों की शक्ल में क़ायम करके जिहाद करते हैं, ये दोनों सफ़ें अल्लाह को बहुत महबूब हैं और सद अफ़सोस कि इस दौरे नाज़ुक में ये हर क़िस्म की हक़ीक़ी सफ़बन्दी मुसलमानों में से मफ़्क़ूद हो चुकी है। जिहाद की सफ़बन्दी तो ख़्वाब व ख़्याल में भी नहीं मगर नमाज़ों की सफ़बन्दी का भी बुरा हाल है किसी भी मस्जिद में जाकर देखो सफ़ों में हर नमाज़ी दूसरे नमाज़ी से इस तरह दूर-दूर हटा नज़र आएगा गोया वो दूसरा नमाज़ी और उसके क़दम छूने से कोई गुनाहे कबीरा लाज़िम आ जाएगा।

सफ़ें कज, दिल परेशान, सज्दा बेज़ोक़ — कि अंदाज़े जुनूँ बाक़ी नहीं है।

2808. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे शबाबा बिन सवार फ़ुज़ारी ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक साहब ज़िरह पहने हुए हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं पहले जंग में शरीक हो जाऊँ या पहले इस्लाम लाऊँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया पहले इस्लाम लाओ फिर जंग में शरीक होना। चुनाँचे वो पहले इस्लाम लाया और उसके बाद जंग में शहीद हुए। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अमल कम किया लेकिन अज्र बहुत पाया।

٢٨٠٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ بْنُ سَوَّارٍ الْفَزَارِيُّ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: أَتَى النَّبِيَّ ﷺ رَجُلٌ مُقَنَّعٌ بِالْحَدِيدِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أُقَاتِلُ وَأُسْلِمُ؟ قَالَ: ((أَسْلِمْ ثُمَّ قَاتِلْ)). فَأَسْلَمَ ثُمَّ قَاتَلَ فَقُتِلَ. فَقَالَ

कुछ ने कहा ये शख़्स अम्र बिन षाबित अंसारी थे। इब्ने इस्हाक़ ने मग़ाज़ी में निकाला कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) लोगों से पूछा करते थे कि भला बताओ वो कौन शख़्स है जिसने एक नमाज़ पढ़ी और जन्नत में चला गया, फिर कहते ये अम्र बिन षाबित है। हदीष से ये निकला कि हर नेक काम की क़ुबूलियत के लिये पहले मुसलमान होना शर्त है। ग़ैर-मुस्लिम जो भी करे दुनिया में उसका बदला उसे मिलेगा और आख़िरत में उसके लिये कुछ नहीं।

बाब 14 : किसी को अचानक नामा'लूम तीर लगा और

١٤- بَابُ مَنْ أَتَاهُ سَهْمٌ غَرْبٌ

उस तीर ने उसे मार दिया, उसकी फ़ज़ीलत का बयान

فَقَتَلَهُ

2809. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुसैन बिन मुहम्मद अबू अहमद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शैबान ने बयान किया क़तादा से, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि उम्मे रबीअ़ा बिन्ते बरा (रज़ि.) जो हारिषा बिन सुराक़ा (रज़ि.) की वालिदा थीं, नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! हारिषा के बारे में भी आप मुझे कुछ बताएं..... हारिषा (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में शहीद हो गए थे, उन्हें नामा'लूम सिम्त से एक तीर आकर लगा था...... कि अगर वो जन्नत में है तो सब्र कर लूँ और अगर कहीं और है तो रोऊँ-धोऊँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ उम्मे हारिषा! जन्नत के बहुत से दर्जे हैं और तुम्हारे बेटे को फ़िरदौसे आला में जगह मिली है। (दीगर मक़ाम : 3982, 6550, 6567)

٢٨٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَبُو أَحْمَدَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ أُمَّ الرُّبَيِّعِ بِنْتَ الْبَرَاءِ وَهِيَ أُمُّ حَارِثَةَ بْنِ سُرَاقَةَ أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللهِ أَلاَ تُحَدِّثُنِي عَنْ حَارِثَةَ - وَكَانَ قُتِلَ يَوْمَ بَدْرٍ أَصَابَهُ سَهْمٌ غَرْبٌ - فَإِنْ كَانَ فِي الْجَنَّةِ صَبَرْتُ، وَإِنْ كَانَ غَيْرَ ذَلِكَ اجْتَهَدْتُ عَلَيْهِ فِي الْبُكَاءِ. قَالَ: ((يَا أُمَّ حَارِثَةَ، إِنَّهَا جِنَانٌ فِي الْجَنَّةِ، وَإِنَّ ابْنَكِ أَصَابَ الْفِرْدَوْسَ الأَعْلَى)).

[أطرافه في: ٣٩٨٢، ٦٥٥٠، ٦٥٦٧].

रिवायत में उम्मे रबीअ़ा को बरा की बेटी बतलाना रावी का वहम है, सहीह ये है कि उम्मे रबीअ़ नज़र की बेटी हैं और अनस बिन मालिक (रज़ि.) की फूफी हैं। उनका बेटा हारिषा नामी बद्र की लड़ाई में एक नामा'लूम तीर से शहीद हो गया था, उन ही के बारे में उन्होंने ये तह़क़ीक़ फ़र्माई। ये सुनकर उम्मे हारिषा हंसती हुई गई और कहने लगीं हारिषा मुबारक हो! मुबारक हो! पहले ये समझीं कि हारिषा दुश्मन के हाथ से नहीं मारा गया शायद उसे जन्नत न मिले मगर बशारते नबवी सुनकर उनको इत्मीनान हो गया। सुब्ह़ानल्लाह! अ़हदे नबवी की मुसलमान औरतों का भी क्या ईमान और यक़ीन था कि वो इस्लाम के लिये मर जाना मौजिबे शहादत व दुख़ूले जन्नत जानती थीं। आजकल के मुसलमान हैं जो इस्लाम के नाम पर हर क़दम पीछे ही हटते जा रहे हैं। फिर भला तरक़्क़ी और कामयाबी क्यूँकर नसीब होगी। इक़बाल ने सच कहा है :-

आ तुझको बताता हूँ तक़्दीरे उमम क्या है, शमशीर व सिनाँ अव्वल, ताऊस व रुबाब आख़िर

बाब 15 : जिस शख़्स ने इस इरादे से जंग की कि अल्लाह तआ़ला ही का कलिमा बुलन्द रहे, उसकी फ़ज़ीलत

١٥- بَابُ مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ اللهِ هِيَ الْعُلْيَا

2810. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सहाबी (लाहक़ बिन ज़मीरा) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि एक शख़्स जंग में शिर्कत करता है ग़नीमत हासिल करने के लिये, एक शख़्स जंग में शिर्कत करता

٢٨١٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: الرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلْمَغْنَمِ، وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلذِّكْرِ، وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ

है नामवरी के लिये, एक शख़्स जंग में शिर्कत करता है ताकि उसकी बहादुरी की धाक बैठ जाए तो उनमें से अल्लाह के रास्ते में कौन लड़ता है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स इस इरादे से जंग में शरीक हो ताकि अल्लाह का कलिमा बुलन्द हो, सिर्फ़ व ही अल्लाह के रास्ते में लड़ता है। (राजेअ : 123)

لِيُرَى مَكَانُهُ، فَمَنْ فِي سَبِيْلِ اللهِ؟ قَالَ : ((مَنْ قَاتَلَ لِتَكُوْنَ كَلِمَةُ اللهِ هِيَ الْعُلْيَا فَهُوَ فِي سَبِيْلِ اللهِ)).
[راجع: ۱۲۳]

मक़्सद ये कि अस़ल चीज़ ख़ुलूस है अगर ये है तो सब कुछ है, ये नहीं तो कुछ भी नहीं। क़यामत के दिन कितने ही सखी, कितने क़ारी, कितने मुजाहिदीन दोज़ख़ में डाले जाएँगे। ये वो होंगे जिनका मक़्सद सिर्फ़ रिया और नमूद था, नामवरी और शुहरत तलबी के लिये उन्होंने ये काम किये, इसलिये उनको सीधा जहन्नम में डाल दिया जाएगा। अआज़नल्लाहु मिन्हा

बाब 16 : जिसके क़दम अल्लाह के रास्ते में गुबार आलूद हुए उसका ष़वाब

١٦- بَابُ مَنْ اغْبَرَّتْ قَدَمَاهُ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

और सूरह बराअत में अल्लाह तआला का इर्शाद है कि मा कान लि अहलिल् मदीनति अल्लाह तआला के इर्शाद इन्नल्लाह ला युज़ीउ अज्रल् मुहसिनीन तक (अत तौबा : 120)

﴿مَا كَانَ لأَهْلِ الْمَدِيْنَةِ - إِلَى قَوْلِهِ - إِنَّ اللهَ لاَ يُضِيْعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ﴾ [التوبة : ١٢٠].

2811. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमसे यह्या बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्हें अबाया बिन राफ़ेअ बिन ख़दीज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अबू अब्स (रज़ि.) ने ख़बर दी, आपका नाम अब्दुर्रहमान बिन जबर है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिस बन्दे के भी क़दम अल्लाह के रास्ते में गुबार आलूद हो गये, उन्हें (जहन्नम की) आग छुए? (ये नामुम्किन है) (राजेअ : 907)

٢٨١١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي يَزِيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا عَبَايَةُ بْنُ رَافِعِ بْنِ خَدِيْجٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو عَبْسٍ هُوَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ جَبْرٍ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَا اغْبَرَّتْ قَدَمَا عَبْدٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ فَتَمَسَّهُ النَّارُ)). [راجع: ٩٠٧]

तश्रीह : पूरी आयाते बाब का तर्जुमा ये है मदीना वालों को और जो उनके आसपास गंवार रहते हैं ये मुनासिब न था कि अल्लाह के नबी के पीछे बैठ रहें और उसकी जान की फ़िक्र न करके अपनी जान बचाने की फ़िक्र में रहे। इसलिये कि लोगों को या'नी जिहाद करने वालों को अल्लाह की राह में प्यास हो, भूख हो, उस मुक़ाम पर चलें जिससे काफ़िर ख़फ़ा हो, दुश्मन को कुछ भी नुक़्सान हो, हर-एक के बदले इन पाँचों कामों में उनका नेक अमल अल्लाह के पास लिख लिया जाता है, बेशक अल्लाह नेकों की मेह़नत बर्बाद नहीं करता। इस आयत से इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मतलब निकाला कि अल्लाह की राह में अगर आदमी ज़रा भी चले और पाँव पर गर्द (धूल) पड़े तो भी ष़वाब मिलेगा, जब अल्लाह की राह में पाँव गर्द आलूद होने (रेत से सन जाने) पर ये अष़र हो कि दोज़ख़ की आग छुए भी नहीं तो वो लोग कैसे दोज़ख़ मे जाएँगे जिन्होंने अपनी जान व माल से अल्लाह की राह में कोशिश की होगी। अगर उनसे कुछ कुसूर भी हो गये हैं तो अल्लाह जल्ले जलालुहू से उम्मीदे-मुआफ़ी है। इस ह़दीष़ से मुजाहिदीन को खुश होना चाहिये कि वो दोज़ख़ से मह़फ़ूज़ रहेंगे। (वह़ीदी)

बाब 17 : अल्लाह के रास्ते में जिन लोगों पर गर्द पड़ी हो उनकी गर्द पोंछना

١٧- بَابُ مَسْحِ الْغُبَارِ عَنِ النَّاسِ فِي سَبِيلِ اللهِ

2812. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़्फ़ी ने ख़बर दी, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया इक्रिमा से कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उनसे और (अपने साहबज़ादे) अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह से फ़र्माया तुम दोनों अबू सईद (रज़ि.) की ख़िदमत में जाओ और उनसे अहादीषे नबवी सुनो। चुनाँचे हम हाज़िर हुए, उस वक़्त अबू सईद (रज़ि.) अपने (रज़ाई) भाई के साथ बाग़ में थे और बाग़ को पानी दे रहे थे, जब आपने हमें देखा तो (हमारे पास) तशरीफ़ लाए और (चादर ओढ़कर) गोट मारकर बैठ गए, उसके बाद बयान फ़र्माया हम मस्जिदे नबवी की ईंटें (हिजरते नबवी के बाद ता'मीरे मस्जिद के लिये) एक-एक करके ढो रहे थे लेकिन अ़म्मार (रज़ि.) दो दो ईंटें ला रहे थे, इतने में नबी करीम (ﷺ) उधर से गुज़रे और उनके सर से गुबार को साफ़ किया। फिर फ़र्माया अफ़सोस! अ़म्मार को एक बाग़ी जमाअ़त मारेगी, ये तो उन्हें अल्लाह की (इताअ़त की) तरफ़ दा'वत दे रहा होगा लेकिन वो उसे जहन्नम की तरफ़ बुला रहे होंगे। (राजेअ़ : 447)

٢٨١٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ لَهُ وَلِعَلِيِّ بْنِ عَبْدِ اللهِ: ائْتِيَا أَبَا سَعِيْدٍ فَاسْمَعَا مِنْ حَدِيْثِهِ. فَأَتَيْنَا وَهُوَ وَأَخُوهُ فِي حَائِطٍ لَهُمَا يَسْقِيَانِهِ، فَلَمَّا رَآنَا جَاءَ فَاحْتَبَى وَجَلَسَ فَقَالَ: كُنَّا نَنْقُلُ لَبِنَ الْمَسْجِدِ لَبِنَةً لَبِنَةً، وَكَانَ عَمَّارٌ يَنْقُلُ لَبِنَتَيْنِ لَبِنَتَيْنِ، فَمَرَّ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ وَمَسَحَ عَنْ رَأْسِهِ الْغُبَارَ وَقَالَ: ((وَيْحَ عَمَّارٍ تَقْتُلُهُ الْفِئَةُ الْبَاغِيَةُ، عَمَّارٌ يَدْعُوهُمْ إِلَى اللهِ وَيَدْعُونَهُ إِلَى النَّارِ)).

[راجع: ٤٤٧]

ह़ज़रत अ़म्मार बिन यासिर (रज़ि.) के फ़ज़ाइल व ह़ालात पहले बयान हो चुके हैं। यहाँ मुराद जंगे सिफ़्फ़ीन से है जिसमें ये ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथियों में थे और 35 हिजरी में ये वहाँ ही 93 साल की उ़म्र में शहीद हुए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अज़्राहे शफ़क़त व मुहब्बत उनका सर गर्द व गुबार से साफ़ किया, उससे उनकी बहुत बड़ी फ़ज़ीलत षाबित हुई और बाब का मक़्सद भी षाबित हुआ।

बाब 18 : जंग और गर्दो-गुबार के बाद गुस्ल करना

١٨- بَابُ الْغُسْلِ بَعْدَ الْحَرْبِ وَالْغُبَارِ

2813. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह ने ख़बर दी हिशाम बिन उ़र्वा से, उन्हें उनके वालिद ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब जंगे ख़न्दक़ से (फ़ारिग़ होकर) वापस हो गए और हथियार रखकर गुस्ल करना चाहा तो जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम आए, उनका सर गुबार से अटा हुआ था। जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा आपने हथियार उतार दिये, अल्लाह की क़सम! मैंने तो अभी तक हथियार नहीं

٢٨١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمَّا رَجَعَ يَومَ الْخَنْدَقِ وَوَضَعَ السِّلاَحَ وَاغْتَسَلَ، فَأَتَاهُ جِبْرِيْلُ وَقَدْ عَصَبَ رَأْسَهُ الْغُبَارُ فَقَالَ وَضَعْتَ السِّلاَحَ؟ فَوَ اللهِ مَا وَضَعْتُهُ)).

उतारे हैं। आप (ﷺ) ने पूछा, तो फिर अब कहाँ का इरादा है? उन्होंने फ़र्माया इधर और बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ इशारा किया। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनू क़ुरैज़ा के ख़िलाफ़ लश्करकशी की। (राजेअ : 463)

فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَأَيْنَ؟)) قَالَ: هَا هُنَا. وَأَوْمَأَ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ - قَالَتْ: فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ)).
[راجع: ٤٦٣]

बनू क़ुरैज़ा के यहूद ने जंगे ख़ंदक़ में मुसलमानों से मुआहिदा के ख़िलाफ़ मुश्रिकीने मक्का का साथ दिया था और ये अंदरूनी साज़िशों में तेज़ी के साथ मसरूफ़ रहे थे, इसलिये ज़रूरी हुआ कि उनकी साज़िशों से भी मदीना को पाक किया जाए चुनाँचे अल्लाह ने ऐसा ही किया और ये सब मदीना से निकाल दिये गये और बाब और हदीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 19 : उन शहीदों की फ़ज़ीलत

जिनके बारे में इन आयात का नुज़ूल हुआ, वो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल कर दिये गये उन्हें हर्गिज़ मुर्दा मत ख़्याल करो बल्कि वो अपने रब के पास ज़िन्दा हैं (वो जन्नत में) रिज़्क़ पाते रहते हैं, उन (नेअ़मतों) से बेहद ख़ुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता की हैं और जो लोग उनके बाद वालों में से अभी उनसे नहीं जा मिले उनकी ख़ुशियाँ मना रहे हैं कि वो भी (शहीद होते ही) निडर और बेग़म (चिन्तामुक्त) हो जाएँगे। वो लोग ख़ुश हो रहे हैं अल्लाह के इन्आ़म और फ़ज़्ल पर और उस पर कि अल्लाह ईमान वालों का अज्र ज़ाया नहीं करता। (आले इमरान : 179-181)

١٩- بَابُ فَضْلِ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿وَلاَ تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ. فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَنْ لاَ خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلاَ هُمْ يَحْزَنُونَ. يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِنَ اللهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ اللهَ لاَ يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ﴾[آل عمران: ١٧٩، ١٨١]

2814. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी तलहा से और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अस्हाबे बीरे मऊ़ना (रज़ि.) को जिन लोगों ने क़त्ल किया था उन पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तीस दिन तक सुबह की नमाज़ में बद्दुआ की थी। ये रअ़ल, ज़क्वान, और उ़सय्या क़बीलों के लोग थे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की नाफ़र्मानी की थी। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जो (70 क़ारी) सहाबा बीरे मऊ़ना के मौक़े पर शहीद कर दिये गये थे, उनके बारें में क़ुर्आन की ये आयत नाज़िल हुई थी जिसे हम मुद्दत तक पढ़ते रहे थे बाद में आयत मन्सूख़ हो गई थी (उस आयत का तर्जुमा ये है) हमारी क़ौम को पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं, हमारा रब हमसे राज़ी है और हम उससे राज़ी हैं। (राजेअ : 1001)

٢٨١٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((دَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الَّذِينَ قَتَلُوا أَصْحَابَ بِئْرِ مَعُونَةَ. ثَلاَثِينَ غَدَاةً، عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَعُصَيَّةَ عَصَتِ اللهَ وَرَسُولَهُ. قَالَ أَنَسٌ : أُنْزِلَ فِي الَّذِينَ قُتِلُوا بِبِئْرِ مَعُونَةَ قُرْآنٌ قَرَأْنَاهُ ثُمَّ نُسِخَ بَعْدُ : بَلِّغُوا قَوْمَنَا أَنْ قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَرَضِينَا عَنْهُ)).
[راجع: ١٠٠١]

2815. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया अ़म्र से, उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से सुना, आप बयान करते थे कि कुछ स़हाबा ने जंगे उहुद के दिन सुबह के वक़्त शराब पी (अभी तक शराब ह़राम नहीं हुई थी) फिर वो शहीद हो गए। सुफ़यान (रह.) (रावी ह़दीष़) से पूछा गया कि क्या उसी दिन के आख़िरी हिस्से में (उनकी शहादत हुई) थी जिस दिन उन्होंने शराब पी थी? तो उन्होंने जवाब दिया कि ह़दीष़ में इसका कोई ज़िक्र नहीं है। (दीगर मक़ाम : 4044, 4618)

٢٨١٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((اصْطَبَحَ نَاسٌ الْخَمْرَ يَوْمَ أُحُدٍ، ثُمَّ قُتِلُوا شُهَدَاءَ. فَقِيْلَ لِسُفْيَانَ: مِنْ آخِرِ ذَلِكَ الْيَوْمِ؟ قَالَ : لَيْسَ هَذَا فِيْهِ)).[طرفاه في: ٤٠٤٤، ٤٦١٨].

या'नी इस रिवायत में ये ज़िक्र नहीं है कि उसी दिन शाम को शराब पी थी बल्कि सुबह़ को पीने का ज़िक्र है, जंगे उहुद जब हुई उस वक़्त तक शराब ह़राम नहीं हुई थी। शहीद की फ़ज़ीलत इस ह़दीष़ से यूँ निकली कि अल्लाह ने जाबिर (रज़ि.) के बाप से कलाम किया जिन्होंने ये आरज़ू की कि मैं फिर दुनिया में भेज दिया जाऊँ फिर उन्होंने अल्लाह से दुआ़ की कि मेरा ह़ाल मेरे साथियों को पहुँचा दे। उस पर ये आयत उतरी **वला तहसबन्नल्लज़ीन क़ुतिलू फी सबीलिल्लाहि अम्वातन** (आले इमरान : 169) इस रिवायत को तिर्मिज़ी ने निकाला है और ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसकी तरफ़ इशारा किया है। इस रिवायत में उन शुह्दा के बारे में शराबनोशी का ज़िक्र ज़िम्नन आ गया है, बाद में शराब की ह़ुर्मत नाज़िल होने पर तमाम अस्ह़ाबे नबवी ने शराब के बर्तन तक तोड़कर अपने घरों से बाहर फेंक दिये थे (रज़ि.)। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) फ़र्माते हैं कि **मुत़ाबक़तुन लित्तर्जुमति फीहि उस्रुन इल्ला अंय्यकून मुरादुहू अन्नल्ख़म्रल्लती शरिबूहा यौमइज़िन लम तज़ुरहुम लिअन्नल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल अष़्ना अ़लैहिम बअ़द मौतिहिम व रफ़अ़ अ़न्हुमुल्ख़ौफ़ वल्हुज़्नु व इन्नमा कान ज़ालिक लिअन्न कानत यौमइज़िन मबाहतुन.** (फ़त्ह) या'नी ह़दीष़ और बाब में मुत़ाबक़त मुश्किल है मगर ये कि मुराद ये हो कि उस दिन उन शहीदों ने शराब पी थी जिससे उनकी शहादत में कोई नुक़्सान नहीं हुआ बल्कि अल्लाह ने मौत के बाद उनकी ता'रीफ़ की और उनसे डर व ग़म को दूर कर दिया। ये इसलिये कि उस दिन तक शराब की ह़ुर्मत नाज़िल नहीं हुई थी। इसलिये मुबाह़ थी। बाद में ह़ुर्मत नाज़िल होकर वो क़यामत तक के लिये ह़राम कर दी गई।

बाब 20 : शहीदों पर फ़रिश्तों का साया करना

٢٠- بَابُ ظِلِّ الْمَلاَئِكَةِ عَلَى الشَّهِيْدِ

2816. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा कि हमें सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मेरे वालिद रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने लाए गए (उहुद के मौक़े पर) और काफ़िरों ने उनके नाक कान काट डाले थे, उनकी नअ़श नबी करीम (ﷺ) के सामने रखी गई तो मैं ने आगे बढ़कर उनका चेहरा खोलना चाहा लेकिन मेरी क़ौम के लोगों ने मुझे मना कर दिया फिर नबी करीम (ﷺ) ने रोने-पीटने की आवाज़ सुनी (तो पूछा कि किसकी आवाज़ है?) लोगों ने बताया कि अ़म्र की लड़की हैं (शहीद की बहन) या अ़म्र की बहन हैं (शहीद की चची

٢٨١٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ الْمُنْكَدِرِ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا يَقُولُ: ((جِيْءَ بِأَبِي إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ مُثِّلَ بِهِ وَوُضِعَ بَيْنَ يَدَيْهِ، فَذَهَبْتُ أَكْشِفُ عَنْ وَجْهِهِ، فَنَهَانِي قَوْمِي، فَسَمِعَ صَوْتَ صَائِحَةٍ، فَقِيْلَ: ابْنَةُ عَمْرٍو- أَوْ أُخْتُ عَمْرٍو- فَقَالَ: ((لِمَ تَبْكِي، أَوْ لاَ تَبْكِي،

مَا زَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ تُظِلُّهُ بِأَجْنِحَتِهَا)). قُلْتُ لِصَدَقَةَ: أَفِيهِ حَتَّى رُفِعَ؟ قَالَ: رُبَّمَا قَالَهُ)).

[راجع: ١٢٤٤]

शक रावी को था) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि रो क्यूँ रही हैं या (आपने ये फ़र्माया कि) रोएँ नहीं मलाइका बराबर उन पर अपने परों का साया किये हुए हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) कहते हैं कि मैंने सदक़ा से पूछा क्या हदीष़ में ये भी है कि (जनाज़ा) उठाए जाने तक तो उन्होंने बताया कि सुफ़यान ने कुछ औक़ात ये अल्फ़ाज़ भी हदीष़ में बयान किये थे। (राजेअ : 1244)

٢١- بَابُ تَمَنِّي الْمُجَاهِدِ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا

बाब 21 : शहीद का दोबारा दुनिया में वापस आने की आरज़ू करना

٢٨١٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا أَحَدٌ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يُحِبُّ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا وَلَهُ مَا عَلَى الأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ، إِلاَّ الشَّهِيْدُ يَتَمَنَّى أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ، لِمَا يَرَى مِنَ الْكَرَامَةِ)).

[راجع: ٢٧٩٥]

2817. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मैंने क़तादा से सुना, कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई शख़्स भी ऐसा न होगा जो जन्नत में दाख़िल होने के बाद दुनिया में दोबारा आना पसन्द करे, ख़्वाह उसे सारी दुनिया मिल जाए सिवाए शहीद के। उसकी ये तमन्ना होगी कि दुनिया में दोबारा वापस जाकर दस बार और क़त्ल हो (अल्लाह के रास्ते में) क्योंकि वो शहादत की इज़्ज़त वहाँ देखता है। (राजेअ : 2795)

٢٢- بَابُ الْجَنَّةُ تَحْتَ بَارِقَةِ السُّيُوفِ

बाब 22 : जन्नत का तलवारों की चमक के नीचे होना

तश्रीह : इस बाब के ज़ेल हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं, **क़ाल इब्नुलमुनीर कानल्बुख़ारी अराद अन्नस्सुयूफ़ लम्मा कानत लहा बारिक़तुन कान लहा अयज़न ज़िल्लुन कालल्कुर्तुबी व हुव मिनल्कलामिन्नफ़ीसिल्जामिइल्मूजिज़िल्मुश्तमिलि अला ज़ुरूबिम्मिल्बलाग़ति मअल्विजाज़ति व अज़ूबतिल्लफ़्ज़ि फइन्नहू अफ़ाज़ल्हज़्ज़ अलल्जिहादि वल्अख़बारि बिष्षवाबि अलैहि वल्हज़्ज़ु अला मुक़ारबतिल्अदुव्वि व इस्तिअमालिस्सुयूफ़ि कल्इज्तिमाइ हीनरफ़्ज़ि हत्ता तस़ीरस्सुयूफ़ु तज़िल्लुल्मतक़ातिलीन व क़ाल इब्नुल्जौज़ी अल्मुरादु अन्नल्जन्नत तहसुलु बिल्जिहाद वज़िज़लालु जम्उ जिल्लिन व इज़ा तदानिल्खस्मानि स़ार कुल्लुम्मिन्हुमा तहत ज़िल्लि सैफ़ि स़ाहिबिही लिहिर्स़िही हल्ल दफ्उहू अलैहि व ला यकून ज़ालिक इल्ल इन्द इल्तिहामिल्क़िताालि.** (फ़त्हुल बारी) ख़ुलास़ा इबारत का ये कि गोया इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये मुराद ली है कि जब तलवारों की चमक होती है तो उनका साया भी होता है। क़ुर्तुबी ने कहा कि ये बहुत ही नफ़ीस कलाम है जामेअ मुख़्तस़र जो फ़स़ाहत व बलाग़त की बहुत सी क़िस्मों पर मुश्तमिल (आधारित) है जो बहुत ही हलावत और अज़ूबत अपने अंदर रखता है और दुश्मन से क़रीब होने और तलवारों के इस्ते'माल करने की भी तरग़ीब है और लड़ाई के वक़्त इज्तिमाअ की भी, यहाँ तक कि फ़रीक़ैन की तलवारें जमा होकर साया फ़गन होने लगती हैं। इब्ने जौज़ी ने कहा मुराद ये है कि जन्नत जिहाद से हासिल होती है और ज़िलाल, ज़िल्ल की जमा है और जब दो दुश्मन तलवारें लेकर एक-दूसरे पर हमलावर होते हैं तो हर

एक पर तलवारों का साया पड़ता है और वो मुदाफ़िअत की कोशिश करता है और ये लड़ाई के गर्म होने पर होता है।

ख़ुलासा ये कि जिहाद और आला-ए-कलिमतुल्लाह ही वो अमल हैं जो इस्लाम की सरबुलन्दी का वाहिद ज़रिया हैं मगर जिहाद के लिये शरीअत ने कुछ उसूल व ज़वाबित मुक़र्रर किये हैं और ये जिहाद महज़ मुदाफ़िअते अअदा के लिये होता है। इस्लाम ने जारिहाना जंग की हर्गिज़ इजाज़त नहीं दी है। आयते क़ुर्आनी **उज़िन लिल्लज़ीन युक़ातलून बिअन्नहुम ज़ुलिमु व इन्नल्लाह अला नस्रिहिमल क़दीर** (हज्ज : 39) इस पर खुली दलील है कि **अहले इस्लाम को जब वो मज़्लूम हों मुदाफ़िआना (रक्षात्मक) जिहाद की इजाज़त है।**

وَقَالَ الْمُغِيْرَةُ بْنُ شُعْبَةَ: أَخْبَرَنَا نَبِيُّنَا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ رِسَالَةِ رَبِّنَا: مَنْ قُتِلَ مِنَّا صَارَ إِلَى الْجَنَّةِ. وَقَالَ عُمَرُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَلَيْسَ قَتْلاَنَا فِي الْجَنَّةِ وَقَتْلاَهُمْ فِي النَّارِ؟ قَالَ ((بَلَى))

और मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें हमारे नबी (ﷺ) ने अपने रब का ये पैग़ाम दिया है कि हम में से जो भी (अल्लाह के रास्ते में) क़त्ल किया जाए, वो सीधा जन्नत में जाएगा और उमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा था क्या हमारे मक़्तूल जन्नती और उनके (कुफ़्फ़ार के) मक़्तूल जहन्नमी नहीं हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्यूँ नहीं?

٢٨١٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمٍ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ - وَكَانَ كَاتِبَهُ - قَالَ : كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((وَاعْلَمُوا أَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلاَلِ السُّيُوفِ)). تَابَعَهُ الأُوَيْسِيُّ عَنِ ابْنِ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ.

[أطرافه في: ٢٨٣٣، ٢٩٦٦، ٣٠٢٤، ٧٢٣٧].

2818. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुआविया बिन अम्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया मूसा बिन उक़्बा से, उनसे उमर बिन उबैदुल्लाह के मौला सालिम अबुन् नज़्र ने, सालिम उमर बिन उबैदुल्लाह के कातिब भी थे, बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने उमर बिन उबैदुल्लाह को लिखा था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है यक़ीन जानो जन्नत तलवारों के साये के नीचे है। इस रिवायत की मुताबअत उवैसी ने इब्ने अबी ज़िनाद के वास्ते से की और उनसे मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया।
(दीगर मक़ाम : 2833, 2966, 3024, 7237)

٢٣- بَابُ مَنْ طَلَبَ الْوَلَدَ لِلْجِهَادِ

बाब 23 : जिहाद करने के लिये अल्लाह से औलाद मांगे उसकी फ़ज़ीलत

٢٨١٩- وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيْعَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ

2819. लैष़ ने बयान किया कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन हुर्मुज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कि सुलैमान बिन दाऊद अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया

आज रात अपनी सौ या (रावी को शक था) निन्यानवे बीवियों के पास जाऊँगा और हर बीवी एक-एक शहसवार जनेगी जो अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करेंगे। उनके साथी ने कहा कि इंशाअल्लाह भी कह लीजिए लेकिन उन्होंने इंशाअल्लाह नहीं कहा। चुनाँचे सिर्फ़ एक बीवी हामला हुईं और उनके भी आधा बच्चा पैदा हुआ। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है अगर सुलैमान (अलैहिस्सलाम) उस वक़्त इंशाअल्लाह कह लेते तो (तमाम बीवियाँ हामला होतीं और) सबके यहाँ ऐसे शहसवार बच्चे पैदा होते जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते। (दीगर मक़ाम : 3424, 5242, 6639, 6720, 7469)

رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((قَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ: لَأَطُوفَنَّ اللَّيْلَةَ عَلَى مِائَةِ امْرَأَةٍ - أَوْ تِسْعٍ وَتِسْعِينَ - كُلُّهُنَّ تَأْتِي بِفَارِسٍ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللهِ. فَقَالَ لَهُ صَاحِبُهُ : قُلْ إِنْ شَاءَ اللهُ، فَلَمْ يَقُلْ إِنْ شَاءَ اللهُ، فَلَمْ تَحْمِلْ مِنْهُنَّ إِلاَّ امْرَأَةٌ وَاحِدَةٌ جَاءَتْ بِشِقِّ رَجُلٍ. وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ قَالَ إِنْ شَاءَ اللهُ لَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللهِ فُرْسَانًا أَجْمَعُونَ)).

[أطرافه في: ٣٤٢٤، ٥٢٤٢، ٦٦٣٩، ٦٧٢٠، ٧٤٦٩].

मज़ीद तफ़्सीलात (विस्तृत विवरण) हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के ज़िक्र में आएगा। इंशाअल्लाह।

बाब 24 : जंग के मौक़े पर बहादुरी और बुज़दिली का बयान

٢٤- بَابُ الشُّجَاعَةِ فِي الْحَرْبِ وَالْجُبْنِ

2820. हमसे अहमद बिन अब्दुल मलिक बिन वाक़िद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया ष़ाबित बिनानी से और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) सबसे ज़्यादा हसीन (ख़ूबसूरत) सबसे ज़्यादा बहादुर और सबसे ज़्यादा फ़य्याज़ थे, मदीना तय्यिबा के तमाम लोग (एक रात) ख़ौफ़ज़दा थे (आवाज़ सुनाई दी थी और सब लोग उसकी तरफ़ बढ़ रहे थे) लेकिन नबी करीम (ﷺ) उस वक़्त एक घोड़े पर सवार सबसे आगे थे (जब वापस हुए तो) फ़र्माया उस घोड़े को (दौड़ने में) हमने समन्दर पाया। (राजेअ : 2627)

٢٨٢٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ وَاقِدٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَحْسَنَ النَّاسِ وَأَشْجَعَ النَّاسِ وَأَجْوَدَ النَّاسِ. وَلَقَدْ فَزِعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ، فَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ سَبَقَهُمْ عَلَى فَرَسٍ، وَقَالَ: ((وَجَدْنَاهُ بَحْرًا)).

[راجع: ٢٦٢٧]

तशरीह : या'नी बेतकान (बिना थके, लगातार) चला ही जाता है, कहीं रुकता या अड़ता नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) रात के वक़्त बनफ़्से नफ़ीस अकेले और तन्हा आवाज़ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए और दुश्मन का कुछ भी डर न किया। सुब्हानल्लाह शुजाअत ऐसी, सख़ावत ऐसी, हुस्नो-जमाल ज़ाहिरी ऐसा, कमालाते बातिनी ऐसे, कुव्वत ऐसी, रहम व करम ऐसा कि कभी साइल (माँगने वाले) को महरूम नहीं किया, कभी किसी से बदला लेना नहीं चाहा, जिसने मुआफ़ी चाही मुआफ़ कर दिया। इबादत और अल्लाह की बन्दगी ऐसी कि रात-रात भर नमाज़ पढ़ते पढ़ते पाँव वरम कर गए (सूज गये), तदबीर और राय ऐसी कि चन्द रोज़ ही में अरब की कायापलट कर रख दी, बड़े-बड़े बहादुरों और अकड़ों को नीचा दिखा दिया, ऐसे अज़ीम पैग़म्बर पर लाखों बार दरूदो-सलाम।

2821. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें उमर बिन मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने ख़बर दी कहा कि मुझे जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चल रहे थे, आपके साथ और बहुत से सहाबा भी थे। वादी-ए-हुनैन से वापस तशरीफ़ ला रहे थे कि कुछ (बद्दू) लोग आपको लिपट गए। बिल आख़िर आपको मजबूरन एक बबूल के पेड़ के पास जाना पड़ा। वहाँ आपकी चादर मुबारक बबूल के कांटे में उलझ गई तो उन लोगों ने उसे ले लिया (ताकि जब आप उन्हें कुछ इनायत फ़र्माएं तो चादर वापस करें) आप (ﷺ) वहाँ खड़े हो गए और फ़र्माया मेरी चादर मुझे दे दो, अगर मेरे पास पेड़ के कांटों जितने भी ऊँट बकरियाँ होतीं तो मैं तुममें तक़्सीम कर देता, मुझे तुम बख़ील नहीं पाओगे और न झूठा और बुज़दिल पाओगे। (दीगर मक़ाम : 3148)

٢٨٢١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ جُبَيْرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جُبَيْرُ بْنُ مُطْعِمٍ أَنَّهُ بَيْنَمَا هُوَ يَسِيْرُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ النَّاسُ مَقْفَلَهُ مِنْ حُنَيْنٍ، فَعَلِقَهُ النَّاسُ يَسْأَلُونَهُ حَتَّى اضْطَرُّوهُ إِلَى سَمُرَةٍ فَخَطِفَتْ رِدَاءَهُ فَوَقَفَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((أَعْطُونِي رِدَائِي، لَوْ كَانَ لِيْ عَدَدَ هَذِهِ الْعِضَاهِ نَعَمًا لَقَسَمْتُهُ بَيْنَكُمْ، ثُمَّ لاَ تَجِدُونِي بَخِيْلاً وَلاَ كَذُوبًا وَلاَ جَبَانًا)).

[طرفه في: ٣١٤٨].

ये इसलिये फ़र्माया कि बख़ीली के नतीजे में झूठ और बुज़दिली और सख़ावत के नतीजे में सदाक़त और बहादुरी आना लाज़िम हैं, ये जंगे हुनैन से वापसी का वाक़िया है। मज़ीद तफ़्सीलात किताबुल मग़ाज़ी में आएँगी, इंशाअल्लाह!

बाब 25 : बुज़दिली से अल्लाह की पनाह मांगना

٢٥- بَابُ مَا يُتَعَوَّذُ مِنَ الْجُبْنِ

2822. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने बयान किया, उन्होंने अम्र बिन मैमून औदी से सुना, उन्होंने बयान किया कि सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) अपने बच्चों को ये दुआइया कलिमात इस तरह सिखाते थे जैसे मुअल्लिम (टीचर) बच्चों को लिखना सिखाता है और फ़र्माते थे कि नबी करीम (ﷺ) नमाज़ के बाद इन कलिमात के ज़रिये अल्लाह की पनाह मांगते थे (दुआ का तर्जुमा ये है) ऐ अल्लाह! बुज़दिली से मैं तेरी पनाह मांगता हूँ, उससे तेरी पनाह मांगता हूँ कि उम्र के सबसे ज़लील हिस्से में पहुँचा दिया जाऊँ और तेरी पनाह मांगता हूँ मैं दुनिया के फ़ित्नों से और तेरी पनाह मांगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से, फिर मैंने ये हदीष जब मुस्अब बिन सअद (रज़ि.) से बयान की तो उन्होंने भी इसकी तस्दीक़ की।

(दीगर मक़ाम : 6365, 6370, 6374)

٢٨٢٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ مَيْمُونٍ الأَوْدِيَّ قَالَ: ((كَانَ سَعْدٌ يُعَلِّمُ بَنِيْهِ هَؤُلاَءِ الْكَلِمَاتِ كَمَا يُعَلِّمُ الْمُعَلِّمُ الْغِلْمَانَ الْكِتَابَةَ وَيَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَتَعَوَّذُ مِنْهُنَّ دُبُرَ الصَّلاَةِ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ)). فَحَدَّثْتُ بِهِ مُصْعَبًا فَصَدَّقَهُ)).

[أطرافه في: ٦٣٦٥، ٦٣٧٠، ٦٣٧٤،

2823. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माया करते थे, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ आजिज़ी और सुस्ती से, बुज़दिली और बुढ़ापे की ज़लील हुदूद में पहुँच जाने से और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्नों से और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ क़ब्र के अ़ज़ाब से। (दीगर मक़ाम : 4707, 6367, 6371)

.[٦٣٩٠

٢٨٢٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ)).

[أطرافه في: ٤٧٠٧، ٦٣٦٧، ٦٣٧١].

बुढ़ापे की ज़लील हदें जिसमें इंसान का दिमाग़ माऊफ़ (कुन्द) हो जाता है और वो बच्चों जैसी हरकतें करने लगता है। होशो-हवास और अक़्लो-शुऊर ग़ायब हो जाते हैं ऐसी उम्र में पहुँचने से भी पनाह मांगनी चाहिये। ऐसे ही आजिज़ी, काहिली, बुज़दिली, ज़िन्दगी व मौत का फ़ित्ना और क़ब्र का अ़ज़ाब ये सब ऐसी चीज़ें हैं कि हर मुसलमान को उनसे पनाह मांगनी ज़रूरी है।

बाब 26 : जो शख़्स अपनी लड़ाई के कारनामे बयान करे, उसका बयान

٢٦- بَابُ مَنْ حَدَّثَ بِمَشَاهِدِهِ فِي الْحَرْبِ

इस बाब में अबू उ़श्मान ने सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से रिवायत किया है।

قَالَ أَبُو عُثْمَانَ عَنْ سَعْدٍ.

ये दूसरे मुसलमानों की हिम्मत बढ़ाने के लिये जाइज़ है न कि रिया (दिखावे) और नामवरी के लिये।

2824. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे हातिम ने बयान किया मुहम्मद बिन यूसुफ़ से, उनसे साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं तलहा बिन उबैदुल्लाह, सअ़द बिन अबी वक़्क़ास, मिक़्दाद बिन अस्वद और अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) की सुहबत में बैठा हूँ लेकिन मैंने किसी को रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीष़ बयान करते नहीं सुना। अल्बत्ता तलहा (रज़ि.) से सुना कि वो उहुद की जंग के बारे में बयान किया करते थे। (दीगर मक़ाम : 4062)

٢٨٢٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يُوسُفَ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيْدَ قَالَ: ((صَحِبْتُ طَلْحَةَ بْنَ عُبَيْدِ اللهِ وَسَعْدًا وَالْمِقْدَادَ بْنَ الأَسْوَدِ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ، فَمَا سَمِعْتُ أَحَدًا مِنْهُمْ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، إِلاَّ أَنِّي سَمِعْتُ طَلْحَةَ يُحَدِّثُ عَنْ يَومِ أُحُدٍ)). [طرفه في: ٤٠٦٢].

दूसरे सहाबा बतौरे एहतियात ज़्यादा रिवायत बयान करने से परहेज़ करते ताकि कहीं ग़लतबयानी होकर बाइ़षे गुनाहे अ़ज़ीम न हो फिर भी उन सारे हज़रात की मरवियात मौजूद हैं जो बहुत ही ज़िम्मेदारी के साथ उन्होंने रिवायत की हैं। जंगे उहुद में आँहज़रत (ﷺ) के पास सिर्फ़ तलहा और सअ़द रह गये थे और तल्हा का हाथ सुन्न हो गया था, उन्होंने मुश्रिकों के वार अपने हाथ पर लिये और आँहज़रत (ﷺ) को बचाया। सअ़द वो बुज़ुर्ग हैं जिनको काफ़िरों का तीर सबसे पहले आकर लगा जैसा कि किताबुल मग़ाज़ी में आएगा।

बाब 27 : जिहाद के लिये निकल खड़ा होना वाजिब है और जिहाद की निय्यत रखने का वाजिब होना

٢٧- بَابُ وُجُوبِ النَّفِيرِ، وَمَا يَجِبُ مِنَ الْجِهَادِ وَالنِّيَّةِ وَقَوْلِهِ

और सूरह तौबा में अल्लाह तआला का इर्शाद, कि निकल पड़ो हल्के हो या भारी और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, ये बेहतर है तुम्हारे हक़ में अगर तुम जानो, अगर कुछ माल आसानी से मिल जाने वाला होता और सफ़र भी मा'मूली होता तो ये लोग (मुनाफ़िक़ीन) ऐ नबी! ज़रूर आप (ﷺ) के साथ हो लेते लेकिन उनको तो (तबूक़) का सफ़र ही दूर-दराज़ मा'लूम हुआ और ये लोग अब अल्लाह की क़सम खाएँगे, अल आयत्ति और अल्लाह का इर्शाद, ऐ ईमानवालों ! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि निकलो अल्लाह की राह में जिहाद के लिये तो तुम ज़मीन पर ढेर हो जाते, क्या तुम दुनिया की ज़िन्दगी पर आख़िरत के मुक़ाबले में राज़ी हो गए हो? सो दुनिया की जिन्दगी का सामान तो आख़िरत की ज़िन्दगी के सामने बहुत ही थोड़ा है, अल्लाह के इर्शाद, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, तक। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से (पहली आयत की तफ़्सीर में) मन्क़ूल है कि जुदा जुदा टुकड़ियाँ बनाकर जिहाद के लिये निकलो, कहा जाता है कि ष़बात (जमा) का मुफ़रद षुबतुन् है।

﴿انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالاً وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللهِ، ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ. لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لاَتَّبَعُوكَ، وَلَكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ، وَسَيَحْلِفُونَ بِاللهِ﴾ [التوبة: ٤١] الآيةَ. وقَولِهِ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الأَرْضِ؟ أَرَضِيتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الآخِرَةِ - إِلَى قَوْلِهِ - عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾ [التوبة: ٣٨].
يُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ (انْفِرُوا ثُبَاتٍ: سَرَايَا مُتَفَرِّقِينَ). يُقَالُ: وَاحِدُ الثُّبَاتِ ثُبَةٌ.

2825. हमसे अम्र बिन अली फ़लास ने बयान किया, हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मंसूर ने बयान किया मुजाहिद से, उन्होंने ताऊस से और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन फ़र्माया था कि मक्का फ़तह होने के बाद (अब मक्का से मदीना के लिये) हिजरत बाक़ी नहीं है, लेकिन ख़ुलूसे निय्यत के साथ जिहाद अब भी बाक़ी है इसलिये जब तुम्हें जिहाद के लिये बुलाया जाए तो निकल खड़े हो। (राजेअ : 1349)

٢٨٢٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ يَوْمَ الْفَتْحِ: ((لاَ هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ، وَإِذَا اسْتُنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوا)).
[راجع: ١٣٤٩]

तशरीह : ये आयतें ग़ज़्व-ए-तबूक़ के बारे में नाज़िल हुईं। तबूक़ मक्का से शहरे मदीना के शिमाल (उत्तर) की सरहद पर वाक़ेअ है। मदीना मुनव्वरा से तबूक़ की दूरी बारह मंज़िलों की है। शाम (सीरिया) पर उस वक़्त ईसाइयों की हुकूमत थी, आँहज़रत (ﷺ) ग़ज़्व-ए-हुनैन से फ़ारिग़ होकर मदीना मुनव्वरा वापस हुए तो आप (ﷺ) को ख़बर मिली कि ईसाई फ़ौजें मुक़ामे तबूक़ में जमा हो रही हैं और मदीना पर हमला करने की तैयारियों में लगी हुई हैं, जिनकी आप (ﷺ) ने ख़ुद ही बढ़कर मुदाफ़िअत करनी चाही। चुनाँचे तीस हज़ार फौज आप (ﷺ) के साथ हो गई, लेकिन मौसम सख़्त गर्मी का था, खजूर की फ़सल पकने और कटने का ज़माना था जिस पर अहले मदीना की गुज़रान बड़ी हद तक मौक़ूफ़ (आधारित) थी,

मुक़ाबले भी एक बाक़ायदा फ़ौज से था और वो भी अपने वक़्त की बड़ी सल्तनत की फ़ौज और सफ़र भी दूर-दराज़, इसलिये कुछ की हिम्मतें जवाब दे गईं और मुनाफ़िक़ीन ने तो ख़ूब ही बहाने लगाए फिर भी जब ईसाइयों को हालात की नामुवाफ़क़त के बावजूद मुसलमानों की उस तैयारी का इल्म हुआ तो ख़ुद ही उनके हौसले पस्त हो गए और उन्हें फ़ौजकशी की हिम्मत न हुई। लश्करे इस्लाम एक मुद्दत तक इंतिज़ार के बाद वापस चला (सूरह तौबा) में आयते शरीफ़ा, **यअतज़िरून इज़ा रजअतुम इलैहिम** (अत् तौबा : 94) में इस जंग से मुताल्लिक़ीन मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र है। दुनिया कारगाहे अमल है, वक़्त आने पर जी चुराने वालों को इस्लामी इस्तिलाह में लफ़्ज़े मुनाफ़िक़ से याद किया गया है क्योंकि इस्लाम सरासर अमली ज़िन्दगी का नाम है, सच है :-

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी, ये ख़ाकी अपनी फ़ितरत में न नूरी है न नारी है

बाब 28 : काफ़िर अगर कुफ़्र की हालत में मुसलमान को मारे फिर मुसलमान हो जाए, इस्लाम पर मज़बूत रहे और अल्लाह की राह में मारा जाए तो उसकी फ़ज़ीलत का बयान

٢٨- بَابُ الْكَافِرِ يَقْتُلُ الْمُسْلِمَ، ثُمَّ يُسْلِمُ فَيُسَدِّدُ بَعْدُ وَيُقْتَلُ

2826. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी अबुज़्ज़िनाद से, उन्होंने अअरज से, और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) अल्लाह तआला ऐसे दो आदमियों पर हंस देगा कि उनमें से एक ने दूसरे को क़त्ल किया था और फिर भी दोनों जन्नत में दाख़िल हो गए। पहला वो जिसने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया वो शहीद हो गया, उसके बाद अल्लाह तआला ने क़ातिल को तौबा की तौफ़ीक़ दी और वो भी अल्लाह की राह में शहीद हुआ। इस तरह दोनों क़ातिल व मक़्तूल बिल आख़िर जन्नत में दाख़िल हुए।

٢٨٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يَضْحَكُ اللهُ إِلَى رَجُلَيْنِ يَقْتُلُ أَحَدُهُمَا الآخَرَ يَدْخُلاَنِ الْجَنَّةَ، يُقَاتِلُ هَذَا فِي سَبِيْلِ اللهِ فَيُقْتَلُ، ثُمَّ يَتُوبُ اللهُ عَلَى الْقَاتِلِ فَيُسْتَشْهَدُ)).

तश्रीह : या'नी क़ायदा तो ये है कि क़ातिल और मक़्तूल एक साथ जन्नत या जहन्नम में जमा न हों, अगर मक़्तूल और शहीद (अल्लाह के रास्ते का) जन्नती है तो यक़ीनन ऐसे इंसान का क़ातिल जहन्नम में जाएगा लेकिन अल्लाह पाक ख़ुद अपनी क़ुदरत के अजायबात मुलाहज़ा फ़र्माता है तो उसे हंसी आ जाती है कि एक शख़्स ने काफ़िरों की तरफ़ से लड़ते हुए एक मुसलमान मुजाहिद को शहीद कर दिया फिर अल्लाह की क़ुदरत कि उसे भी ये ईमान की हालत नसीब हुई और उसके बाद वो मुसलमानों की तरफ़ से लड़ते हुए शहीद हो गया और इस तरह क़ातिल और मक़्तूल दोनों जन्नत में दाख़िल हो गए। अल्लाह पाक जब अपनी क़ुदरत का ये अजूबा देखता है तो हंसी आ जाती है जैसे अल्लाह की और सिफ़ात हक़ हैं इस तरह हंसना भी हक़ है। जिसकी कैफ़ियत में कुरेद करना बिदअत है, सलफ़ का यही मसलक है। इस हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि इस्लाम लाने से और जिहाद करने से कुफ़्र के सब गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं, इमाम अहमद और हम्माम की रिवायत से ये सराहत निकलती है कि उन दो शख़्सों में एक मोमिन था एक काफ़िर। पस अगर एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को अमदन या'नी जान-बूझकर किसी शरई वजह के बग़ैर क़त्ल करके क़ातिल तौबा करे और अल्लाह की राह में शहीद हो तो उसका गुनाह मुआफ़ न होगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का यही क़ौल है कि क़ातिल मोमिन की तौबा क़ुबूल नहीं और जुम्हूर उलमा कहते हैं कि उसकी तौबा सहीह है और आयत **व मंय्यक़्तुल मूमिनन मुतअम्मिदन** (अन् निसा : 93) बरतरीक़े तग़्लीज़ है कि लोग उससे बाज़ रहें, ख़ुलूद से मुराद बहुत मुद्दत तक रहना है। (ख़ुलासा वहीदी)

आज ईदुल अज़्हा 1391 हिजरी को जबकि जमाअ़त की दा'वत पर मुम्बई ईदुल अज़्हा पढ़ाने आया हुआ था, ये तशरीही बयान क़लम के हवाले किया गया। अल्लाह पाक आज के मुबारक दिन में ये दुआ क़ुबूल करे कि इस मुबारक किताब की तकमील का शर्फ़ हासिल हो। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

क़ाल इब्नुल्जौज़ी अक्सरुस्सलफ़ि यमतनिऊन मिन तावीलि मिष्लि हाज़ा व यरौनहू कमा जाअ व यम्बग़ी अययुराइय मिष्ल फी मिष्लि हाज़ल्अम्रि इअतिक़ादुन अन्नहू युशबिहू सिफातुल्लाहिं सिफ़ातुल्बल्कि व मअ़नल्अम्रि अ़दमुल्इल्मि बिल्मुरादि मिन्हु अम़ इअतिकादित्तन्ज़ीह. (फ़त्हुल बारी) या'नी इब्ने जौज़ी ने फ़र्माया कि अकष़र सल्फ़ सॉलेहीन इस क़िस्म की सिफ़ाते इलाही की तावील मना जानते हैं बल्कि जिस त़रह़ ये वारिद होती हैं उसी त़रह़ तस्लीम करते हैं, इस ए'तिक़ाद के साथ कि अल्लाह की सिफ़ाते मख़्लूक़ की सिफ़ात के मुशाबेह नहीं हैं। तस्लीम करने का मत़लब ये कि हमको उनके मआ़नी मा'लूम हैं, कैफ़ियत मा'लूम नहीं।

2827. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़म्बसा बिन सईद ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो आप ख़ैबर में ठहरे हुए थे और ख़ैबर फ़तह़ हो चुका था, मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरा भी (माले ग़नीमत में) ह़िस्सा लगाइये। सईद बिन अलआ़स के एक लड़के (अबान बिन सईद रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! उनका ह़िस्सा न लगाइये। इस पर अबू हुरैरह (रज़ि.) बोले कि ये शख़्स तो इब्ने क़ौक़िल (नोअ़मान बिन मालिक रज़ि.) का क़ातिल है। अबान बिन सईद (रज़ि.) ने कहा कितनी अ़जीब बात है कि ये जानवर (या'नी अबू हुरैरह अभी तो पहाड़ की चोटी से बकरियाँ चराते चराते यहाँ आ गया है और एक मुसलमान के क़त्ल का मुझ पर इल्ज़ाम लगाता है। इसको ये ख़बर नहीं कि जिसे अल्लाह तआ़ला ने मेरे हाथों से (शहादत) इ़ज़्ज़त दी और मुझे उसके हाथों से ज़लील होने से बचा लिया (अगर उस वक़्त मैं मारा जाता) तो दोज़ख़ी होता, अ़म्बसा ने बयान किया कि अब मुझे ये नहीं मा'लूम कि आप (ﷺ) ने उनका भी ह़िस्सा लगाया या नहीं। सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईदी ने अपने दादा के वास्ते से बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से। अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी रह) ने कहा कि सईदी से मुराद अ़म्र बिन यह्या बिन सईद बिन अ़म्र बिन सईद बिन आ़स हैं। (दीगर मक़ाम : 4237, 4238, 4239)

٢٨٢٧ - حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَنْبَسَةُ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ بِخَيْبَرَ بَعْدَ مَا افْتَتَحُوهَا فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَسْهِمْ لِي. فَقَالَ بَعْضُ بَنِي سَعِيْدِ بْنِ الْعَاصِ: لاَ تُسْهِمْ لَهُ يَا رَسُولَ اللهِ. فَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ: هَذَا قَاتِلُ ابْنِ قَوْقَلٍ، فَقَالَ ابْنُ سَعِيْدِ بْنِ الْعَاصِ: وَاعَجَباً لِوَبْرٍ تَدَلَّى عَلَيْنَا مِنْ قَدُومِ ضَأْنٍ يَنْعَى عَلَيَّ قَتْلَ رَجُلٍ مُسْلِمٍ أَكْرَمَهُ اللهُ عَلَى يَدَيَّ وَلَمْ يُهِنِّي عَلَى يَدَيْهِ. قَالَ: فَلاَ أَدْرِي أَسْهَمَ لَهُ أَمْ لَمْ يُسْهِمْ)). قَالَ سُفْيَانُ : وَحَدَّثَنِيْهِ السَّعِيْدِيُّ عَنْ جَدِّهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: السَّعِيْدِيُّ هُوَ عَمْرُو بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدِ بْنِ سَعِيْدِ بْنِ الْعَاصِ.

[أطرافه في: ٤٢٣٧، ٤٢٣٨، ٤٢٣٩].

रिवायत में इब्ने क़ौक़िल से मुराद नोअ़मान बिन मालिक इब्ने ष़अ़लबा बिन अह़रम बिन फ़हर बिन ग़नम स़ह़ाबी है। क़ौक़िल उनके दादा ष़अ़लबा का लक़ब था, वो उहुद के दिन अबान के हाथ शहीद हुए थे। कहते हैं उन्होंने उस दिन ये दुआ़ की थी कि या अल्लाह! सूरज डूबने से पहले मैं जन्नत की सैर करूँ, अल्लाह ने उनकी ये दुआ़ क़ुबूल कर ली और वो सूरज डूबने से पहले ही

शहीद हो गये। वब्र, अरब में बिल्ली से छोटा एक जानवर जिसकी दुम और कान छोटे होते हैं। क़दूम और ज़ान जो लफ़्ज़ आया है कुछ ने कहा ये एक पहाड़ का नाम है जो क़बील-ए-दौस के क़रीब था, हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) उधर ही के बाशिन्दे थे गोया अबान बिन सईद ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) पर ये तअ़न किया, उनके पस्त क़द होने को वब्र से तश्बीह दी और बकरियों का गडरिया क़रार देते हुए अपने जुर्म का इक़रार भी किया मगर ये कि उस वक़्त वो मुसलमान नहीं हुए थे बाद में अल्लाह ने दौलते इस्लाम से सरफ़राज़ कर दिया।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **वल्मुरादु मिन्हु हाहुना क़ौलु अबान अक्रमहुल्लाहु अ़ला यदय्य व लम युहिनी अ़ला यदैहि व अराद बिज़ालिक अन्नुअमान इस्तश्हद बियदि अबान फअक्रमहुल्लाहु बिश्शहादति व लम युक़्तल अबा अ़ला कुफ्रिही फयदख़ुलुन्नार व हुवल्मुरादु बिल्इहानति बल आश अबान हत्ता ताब व अस्लम व कान इस्लामुहू क़ब्ल ख़ैबर बअदल्हुदैबिया व क़ाल ज़ालिकल्कलामु बिहज़्रतिन्नबिय्यि (ﷺ) व अक़र्रहू अ़लैहि व मुवाफिक़ुल्लिमा तज़म्मनतुन लित्तर्जुमति.** (फ़त्हुल बारी) क़ौले अबान से यहाँ मुराद ये कि अल्लाह ने मेरे हाथ पर उनको इ़ज़्ज़त शहादत दी और उनके हाथों से क़त्ल कराकर मुझको ज़लील होने से बचा लिया, जिससे मुराद लिया कि नोअ़मान (रज़ि.) अबान (रज़ि.) के हाथ से शहीद हुए पस अल्लाह ने उनका इकराम फ़र्माया और अबान कुफ़्र पर नहीं मरा वरना वो दोज़ख़ में जाता। अल्लाह ने उनको हुदेबिया के बाद इस्लाम नसीब फ़र्माया। अबान ने ये बातें आँहज़रत (ﷺ) के सामने बयान कीं आप (ﷺ) ख़ामोश रहे, उससे बाब का तर्जुमा षाबित हुआ। आप (ﷺ) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का हिस्सा नहीं लगाया। इस पर हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **वहतज्ज बिही क़ाल इन्न मन हज़र बअ़द फ़िराग़िल वक्अ़ति व लौ कान ख़रज मददल लहुम अल्ला युशारिक मन हज़रहा व हुव क़ौलुल जुम्हूर** (फ़त्हुल बारी) या'नी उससे दलील ली उससे जिसने कहा कि जो शख़्स जंग होने के बाद हाज़िर हुआ अगरचे वो मदद करने के ही लिये आया हो, उसको हाज़िर होने वालों के साथ हिस्सों में शरीक नहीं किया जाएगा। जुम्हूर का यही क़ौल है।

बाब 29 : जिहाद को (नफ़्ली रोज़ों पर) मुक़द्दम रखना

٢٩- بَابُ مَنِ اخْتَارَ الْغَزْوَ عَلَى الصَّوْمِ

2828. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे षाबित बिनानी ने, कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू तलहा ज़ैद बिन सहल (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में जिहादों में शिर्कत के ख़्याल से (नफ़्ली) रोज़े नहीं रखते थे लेकिन आप (ﷺ) की वफ़ात के बाद फिर मैंने उन्हें ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा के सिवा रोज़े के बग़ैर नहीं देखा।

٢٨٢٨- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ أَبُو طَلْحَةَ لاَ يَصُومُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ أَجْلِ الْغَزْوِ، فَلَمَّا قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ لَمْ أَرَهُ مُفْطِرًا إِلاَّ يَوْمَ فِطْرٍ أَوْ أَضْحَى)).

जिहाद एक ऐसा अ़मल है जिसमें फ़र्ज़ नमाज़ भी कम हो जाती है फिर नफ़्ली नमाज़ और रोज़ों का ज़िक्र ही क्या है क्योंकि जिहाद उन सब पर मुक़द्दम है मगर आम तौर पर मुसलमान इस फ़रीज़े से ग़ाफ़िल हो गए और नफ़्ली बल्कि ख़ुद साख़्ता नमाज़ों, वज़ीफ़ों ने उनको मैदाने जिहाद से क़त्अ़न ग़ाफ़िल कर दिया इल्ला माशा अल्लाह। पीछे बतलाया जा चुका है कि इस्लाम में जिहाद या'नी क़िताल महज़ मुदाफ़िआना तौर पर है जारेहाना (ज़ोर-ज़ुल्म) की जंग को हर्गिज़ इस्लाम ने जाइज़ नहीं रखा।

बाब 30 : अल्लाह की राह में मारे जाने के सिवा शहादत की और भी सात क़िस्में हैं

٣٠- بَابُ الشَّهَادَةُ سَبْعٌ سِوَى الْقَتْلِ

2829. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें सुमय ने, उन्हें अबू सालेह ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया शहीद पाँच क़िस्म के होते हैं। ताऊन में हलाक होने वाला, पेट की बीमारी से मरने वाला, डूबकर मरने वाला, दबकर मरने वाला, और अल्लाह के रास्ते में शहादत पाने वाला। (राजेअ : 653)

٢٨٢٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الشُّهَدَاءُ خَمْسَةٌ: الْمَطْعُونُ وَالْمَبْطُونُ وَالْغَرِقُ وَصَاحِبُ الْهَدْمِ وَالشَّهِيْدُ فِي سَبِيْلِ اللهِ)).

[راجع: ٦٥٣]

तश्रीह : कुछ अह़ादीष़ में शहादत की सात क़िस्मों का साफ़ ज़िक्र आया है, ह़ज़रत इमाम (रह.) ने उन्वान उन्हीं अह़ादीष़ के पेशे-नज़र लगाया है लेकिन चूँकि ये अह़ादीष़ उनकी शराइत़ पर नहीं थीं, इसलिये उन्हें बाब के तह़त नहीं लाए। मक़्सदे बाब ये है कि शहादत सिर्फ़ जिहाद करते हुए क़त्ल हो जाने का ही नाम नहीं है बल्कि उसकी मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं। ये बात दूसरी है कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते हुए शहादत पाने का दर्जा बहुत ही बुलन्द है। (दूसरी रिवायतों में है कि जो जलकर या निमोनिया में मर जाए या औरत ज़चगी मे या आदमी अपने माल व जान की ह़िफ़ाज़त में या सफ़र में या सांप और बिच्छू के काटने से या दरिन्दे के फाड़ने से मर जाए, वो शहीद है, इमाम नववी (रह.) फ़र्माते हैं, **अल्मुरादु बिशहादति हाउलाइ कुल्लुहुम गैरल्मक़्तूलि फी सबीलिल्लाहि अन्नहुम यकूनु लहुम षवाबुश्शुहदाइ व अम्मा फिद्दुनिया फयुगसलून व युसल्ली अलैहिम व क़द सबक़ फी किताबिल्ईमानि बयानु हाज़ा व अन्नश्शुहदाअ षलाषत अक़्साम शहीदुन फिद्दुनिया व अल्आख़िरति व हुल्मक़तूलु फी हर्बिल्कुफ्फ़ारि व शहीदुन फिल्आख़िरति दून अहमामिद्दुनिया व हुम हाउलाइल्मज़्कूरून हुना शहीदुन फिद्दुनिया दूनल्आखिरति व हुव मन ग़ल्ल फिल्गनीमति औ कुतिल मुदबिरन** (नववी, जिल्द : 2 पेज नं. 143) या'नी मक़्तूल के अलावा इन तमाम शहादतों से मुराद ये कि आख़िरत में उनको शुहदा का ष़वाब मिलेगा मगर दुनिया में शुहदा की त़रह़ नहीं बल्कि आम मुसलमानों की त़रह़ ग़ुस्ल दिये जाएँगे और उन पर नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ी जाएगी। शुहदा तीन क़िस्म के होते हैं, एक तो वो हैं जो दुनिया व आख़िरत में शहीद ही हैं, जो जिहाद में कुफ़्फ़ार के हाथों से मारे जाएँ। दूसरी क़िस्म के शहीद वो जो दुनिया में शहीद हुए मगर आख़िरत में शहीद नहीं, वो ऐसे लोग हैं जिन्होंने माले ग़नीमत वग़ैरह में ख़यानत की। तीसरी क़िस्म के शहीद वो जो दुनिया में शहीद हैं मगर दुनिया में उन पर अह़कामे शुहदा जारी न होंगे, ऐसे ही शुहदा यहाँ मज़्कूर हैं। लफ़्ज़ शहीद की ह़क़ीक़त बतलाने के लिये ह़ज़रत इमाम नववी (रह.) शारेह़ मुस्लिम लिखते हैं, **व अम्मा सबबु तस्मिय्यतिही शहीदन फक़ालन्नज़्रूब्नु शुमैल लिअन्नहू हय्युन फइन्न अर्वाहहुम शहिदत व ह़ज़रत दारस्सलामि व अर्वाहु गैरिहिम इन्नमा तशहदुहा यौमल्क़ियामति व क़ाल इब्नुल्अम्बारी लिअन्नल्लाह तआला व मलाइकतहू अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु यशहदून लहू बिल्जन्नति व क़ील लिअन्नहू शहिद इन्द खुरूजि रूहिही मा अअद्दहुल्लाहु तआला लहू मिनष़्षवाबि वल्करामति व क़ील लिअन्न मलाइकतर्रहमति यशहदूनहू फयाखुज़ून रूहहू व क़ील लिअन्नहू शहिद लहू बिल्ईमानि व खातमतिल्ख़ैरि बिज़ाहिरि हालिही व क़ील लिअन्न अलैहि शाहिदन बिकौनिही शहीदन व हुवद्दमु व क़ील लिअन्नहू यशहदु अलल्उममि यौमल्क़ियामति बिइब्लागिर्रूसुलि अर्रिसालत इलैहिम व अला हाज़ा अल्क़ौलु युशारिकुहुम गैरुहुम फी हाज़ल्वस्फ़ि.** (नववी जिल्द 2, पेज 134) या'नी शहीद की वजहे तस्मिया के बारे में पस नज़र बिन शुमैल ने कहा कि वो ज़िन्दा है या'नी उनकी रूह़ दारुस्सलाम में ज़िन्दा और ह़ाज़िर रहती है जबकि उनके ग़ैर की रूहें क़यामत के दिन वहाँ ह़ाज़िर होंगी। इब्ने अम्बारी ने कहा इसलिये कि अल्लाह पाक और उसके फ़रिश्ते उसके लिये जन्नत की शहादत देते हैं और कहा गया कि इसलिये कि जब भी उसकी रूह़ निकली उसने ष़वाब और करामत के बारे में अल्लाह के वा'दों का मुशाहिदा किया और कहा गया कि इसलिये कि रह़मत के फ़रिश्ते उसकी शहादत के वक़्त ह़ाज़िर होते और उसकी रूह़ को ले लेते हैं और कहा गया कि इसलिये कि ज़ाहिरी शहादत की बिना पर उसके ईमान और ख़ातिमा बिल् ख़ैर की शहादत दी गई और कहा गया कि उस

पर उसका ख़ून शाहिद (गवाह) होगा जो उसके शहीद होने की शहादत देगा और कहा गया कि इसलिये कि वो क़यामत के दिन दूसरी उम्मतों पर शहादत देगा कि उनके रसूलों ने उनको अल्लाह के पैग़ामात दिये और इस क़ौल पर उन के ग़ैर भी उसमें उनके शरीक होंगे।

2830. हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको आसिम ने ख़बर दी हफ़्सा बिन्ते सीरीन से और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ताऊन की मौत हर मुसलमान के लिये शहादत का दर्जा रखती है। (दीगर मक़ाम : 5732)

٢٨٣٠- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيْرِيْنَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الطَّاعُونُ شَهَادَةٌ لِكُلِّ مُسْلِمٍ)). [طرفه في : ٥٧٣٢].

इसलिये ताऊनज़दा इलाक़ों से भागना या उनमें दाख़िल होना मना है, इस बीमारी में आदमी के गले या बग़ल में गिल्टी (गाँठ) होती है और शदीद (तेज़) बुख़ार के साथ दो दिन में आदमी ख़त्म होता है, इसी को प्लेग भी कहते हैं।

बाब 31 : अल्लाह तआला का सूरह निसा में

ये फ़र्माना कि मुसलमानों में जो लोग मा'ज़ूर (असमर्थ) नहीं हैं और वे जिहाद से बैठ रहें; वो और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने उन लोगों को जो अपने माल और जान से जिहाद करें, बैठे रहने वालों पर एक दर्जा फ़ज़ीलत दी है। यूँ अल्लाह तआला का अच्छा वा'दा सबके लिये है और अल्लाह तआला ने मुजाहिदों को बैठने वालों पर बहुत बड़ी फ़ज़ीलत दी है। अल्लाह के फ़र्मान ग़फ़ूरर्रहीमा तक। (अन निसा : 95)

٣١- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيْلِ اللهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللهُ الْمُجَاهِدِيْنَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِيْنَ دَرَجَةً، وَكُلاًّ وَعَدَ اللهُ الْحُسْنَى، وَفَضَّلَ اللهُ الْمُجَاهِدِيْنَ عَلَى الْقَاعِدِيْنَ - إِلَى قَوْلِهِ- غَفُورًا رَحِيْمًا﴾ [النساء : ٩٥].

पहले ये आयत यूँ उतरी थी, **ला यस्तविल्क़ाइदून मिनल्मूमिनीन वल्मुजाहिदून** आख़िर तक। उसमें **ग़ैर उलिज़्ज़ररि** के अल्फ़ाज़ न थे फिर अल्लाह ने ये लफ़्ज़ नाज़िल फ़र्माकर लूले, लंगड़े, अंधे, अपाहिज लोगों को निकाल दिया क्योंकि वो मा'ज़ूर हैं।

इमाम नववी उसके ज़ेल में फ़र्माते हैं, **फीहि दलीलुन लिसुकूतिल्जिहादि अनिल्मअ्ज़ूरिन व लाकिन ला यकूनु षवाबुहुम षवाबल्मुजाहिदीन बल लहुम षवाबु निय्यातिहिम इन कान लहुम निय्यतुन स़ालिहतुन कमा क़ालन्नबिय्यु (ﷺ) व लाकिन जिहादुन व निय्यतुन व फीहि अन्नल्जिहाद फर्ज़ुन किफ़ायतुन लैस बिफर्ज़िन ऐनिन व फीहि रद्दुन अ़ला मय्यकूलु अन्नहू कानत फी ज़मनिन्नबिय्यि (ﷺ) फर्ज़ुन ऐनुन व बअ्दहू फर्ज़ुन किफ़ायतुन वस्स़हीहु अन्नहू लम यज़ल फर्ज़ुन किफ़ायतुन मिन हीनि शरइन व हाजिहिल्आयतु जाहिरतुन फी ज़ालिक लिक़ौलिही तआला व कुल्लंव्वअदल्लाहुल्हुस्ना व फ़ज़्ज़लल्लाहुल्मुजाहिदीन अलल्काइदीन अज्रन अ़ज़ीमा.** या'नी ये दलील है कि मा'ज़ूर लोगों से जिहाद मुआफ़ है मगर उनको मुजाहिदीन का षवाब नहीं मिलेगा बल्कि उनकी नेक निय्यती का षवाब मिलेगा बशर्ते कि वो निय्यते स़ालेहा रखते हों जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिहाद और निय्यते जिहाद क़यामत तक के लिये बाक़ी है। इससे ये भी षाबित हुआ कि जिहाद फ़र्ज़े ऐन नहीं बल्कि सिर्फ़ फ़र्ज़े किफ़ाया है और उसमें उस शख़्स का भी रद्द है जो कहता है कि आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने मे जिहाद फ़र्ज़े ऐन था बाद में फ़र्ज़े किफ़ाया हो गया। स़हीह ये है कि जिहाद हमेशा से फ़र्ज़े किफ़ाया ही चला आ रहा है। आयत का ज़ाहिर मफ़्हूम भी यही है कि अल्लाह ने सबसे नेक वा'दा फ़र्माया है और क़ाइदीन पर मुजाहिदीन को बड़ी फ़ज़ीलत है। क़ाइदीन या'नी जिहाद से बैठे रहने वाले लोग मुराद हैं।

2831. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया अबू इस्हाक़ से कि मैंने बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, आप कहते थे कि जब आयत, ला यस्तविल क़ाईदूना मिनल् मुमिनीन नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) (जो कातिबे-वह्य थे) को बुलाया, आप एक चौड़ी हड्डी साथ लेकर ह़ाज़िर हुए और इस आयत को लिखा और इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) ने जब अपने नाबीना होने की शिकायत की तो आयत यूँ नाज़िल हुई, ला यस्तविल क़ाईदूना मिनल् मोमिनीना ग़ैरा उलिल्ज़रर। (दीगर मक़ाम : 4593, 4594, 4990)

٢٨٣١- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ دَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ زَيْدًا فَجَاءَ بِكَتِفٍ فَكَتَبَهَا. وَشَكَا ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ ضَرَارَتَهُ فَنَزَلَتْ: ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ﴾.

[أطرافه في: ٤٥٩٣، ٤٥٩٤، ٤٩٩٠].

उस ज़माने में चूँकि काग़ज़ ज़्यादा नहीं था, इसलिये हड्डी या और बहुत सी दूसरी चीज़ों पर भी ख़ास त़रीक़े इस्ते'माल करने के बाद इस त़रह़ लिखा जाता कि स़ाफ़ पढ़ा जा सकता था और किताबत भी एक त़वील ज़माने तक बाक़ी रहती थी। यहाँ ऐसी ही एक हड्डी पर आयत लिखने का ज़िक्र हुआ है। इस आयत ने नाबीना वग़ैरह मा'ज़ूरीन को फ़र्ज़ियते जिहाद से मुस्तष्ना (अलग) कर दिया। जिस दौर में जैसा कि आजकल है शराइत़े जिहाद पूरे त़ौर पर मौजूद न हों उस दौर के अहले इस्लाम भी मा'ज़ूरीन ही में शुमार होंगे मगर ऐसे दौर को ज़ुअफ़े इस्लाम का दौर कहा जाएगा जैसा कि **बदअल्इस्लामु ग़रीबन व सयऊ़दु कमा बदअ** से ज़ाहिर है।

2832. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझसे स़ालेह़ बिन कैसान ने बयान किया इब्ने शिहाब से, उन्होंने सहल बिन सअ़द ज़ुह्री (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि मैंने मरवान बिन ह़कम (ख़लीफ़ा और उस वक़्त के अमीरे मदीना) को मस्जिदे नबवी में बैठे हुए देखा तो उनके क़रीब गया और पहलू में बैठ गया और फिर उन्होंने हमें ख़बर दी कि ज़ैद बिन ष़ाबित अंस़ारी (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे आयत लिखवाई, ला यस्तविल क़ाईदूना मिनल् मुमिनीना वल् मुजाहिदीना फ़ी सबीलिल्लाह उन्होंने बयान किया फिर अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि.) आए, आप (ﷺ) उस वक़्त मुझसे आयते मज़्कूरा लिखवा रहे थे, उन्होंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर मुझ में जिहाद की त़ाक़त होती तो मैं भी जिहाद में शरीक होता। वो नाबीना थे, उस पर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने रसूल (ﷺ) पर वह्य नाज़िल की। उस वक़्त आप (ﷺ) की रान मेरी रान पर थी मैंने आप (ﷺ) पर वह्य की शिद्दत की वजह से आप (ﷺ) की रान

٢٨٣٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ الزُّهْرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّهُ قَالَ: ((رَأَيْتُ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ جَالِسًا فِي الْمَسْجِدِ فَأَقْبَلْتُ حَتَّى جَلَسْتُ إِلَى جَنْبِهِ، فَأَخْبَرَنَا أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَمْلَى عَلَيْهِ: ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيْلِ اللهِ﴾ قَالَ فَجَاءَهُ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ وَهُوَ يُمِلُّهَا عَلَيَّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ لَوْ أَسْتَطِيْعُ الْجِهَادَ لَجَاهَدْتُ - وَكَانَ رَجُلاً أَعْمَى - فَأَنْزَلَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى

का इतना बोझ महसूस किया कि मुझे डर हो गया कि कहीं मेरी रान फट न जाए। उसके बाद वो कैफ़ियत आप (ﷺ) से ख़त्म हो गई और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फ़क़त ग़ैर उलिज़्ज़रर नाज़िल फ़र्माए। (दीगर मक़ाम : 4592)

على رَسُولِهِ ﷺ وَفَخِذُهُ عَلَى فَخِذِي. فَثَقُلَتْ عَلَيَّ حَتَّى خِفْتُ أَنْ تُرَضَّ فَخِذِي. ثُمَّ سُرِّيَ عَنْهُ، فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ﴾. [طرفه في: ٤٥٩٢].

रसूले करीम (ﷺ) पर जब वह्य नाज़िल होती तो आपकी हालत अलग सी हो जाती, सख़्त सर्दी में पसीना-पसीना हो जाते और जिस्म मुबारक बोझल हो जाता। उसी कैफ़ियत को रावी ने यहाँ बयान किया है। आयत में इन अल्फ़ाज़ से नाबीना बीमार अपाहिज लोग फ़र्ज़ियते जिहाद से अलग कर दिये गये। सच है, **ला युकल्लिफुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुस्अहा.** (अल बक़र : 286) अहकामे इलाही सिर्फ़ इंसानी वुस्अत व ताक़त की हद तक बजा लाने ज़रूरी हैं।

बाब 32 : काफ़िरों से लड़ते वक़्त सब्र करना

٣٢- بَابُ الصَّبْرِ عِنْدَ الْقِتَالِ

2833. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन अम्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अबी नज़्र ने कि अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने (उमर बिन उबैदुल्लाह को) लिखा तो मैंने वो तहरीर पढ़ी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है जब तुम्हारी कुफ़्फ़ार से मुठभेड़ हो तो सब्र से काम लो। (राजेअ : 2818)

٢٨٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمٍ أَبِي النَّضْرِ أَنْ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى كَتَبَ فَقَرَأْتُهُ أَنْ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاصْبِرُوا)). [راجع: ٢٨١٨]

या'नी मुस्तक़िल मज़ाजी के साथ जमे रहो और हालात जैसे भी हों बद दिल हर्गिज़ न हो, बुज़दिली या फ़रार मोमिन की शान नहीं। अगर मौत मुक़द्दर नहीं तो यक़ीनन सलामती के साथ वापसी होगी और मौत मुक़द्दर है तो कोई ताक़त न बचा सकेगी। यही ईमान और यक़ीन है जो मर्दे मोमिन को ग़ाज़ी या शहीद के मुअज़्ज़ अल्क़ाब से मुलक़्क़ब (सुशोभित) करता है। इर्शादे बारी तआला है, **या अय्युहल्लज़ीन आमनुस्तईनु बिस्सब्रि वस्सलाति इन्नल्लाह मअस्साबिरीन.** (अल बक़र : 153) तर्जुमा : ऐ ईमानवालों ! सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो, बेशक अल्लाह पाक सब्र करने वालों के साथ है।

बाब 33 : मुसलमानों को (महारिब) काफ़िरों से लड़ने की रग़बत दिलाना

٣٣- بَابُ التَّحْرِيضِ عَلَى الْقِتَالِ: وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

और सूरह अन्फ़ाल में) अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, ऐ रसूल! मुसलमानों को काफ़िरों से लड़ने का शौक़ दिलाओ।

﴿حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ﴾ [الأنفال: ٦٥].

काफ़िरों से मुराद वो हैं जो इस्लामी रियासत पर हमला करें। जो ग़ैर-मुस्लिम मुसलमानों के साथ अमन व सुलह के साथ रहें उनके साथ जंग व जिहाद व ग़द्दारी हर्गिज़ जाइज़ नहीं है जैसा कि इर्शादे बारी तआला है, **व इन जनहू लिस्सल्मि फज्नह लहा** (अल् अन्फ़ाल : 61) अगर वो ग़ैर-मुस्लिम सुलह सफ़ाई के लिये झुके तो तुम भी उसके लिये झुक जाओ, अमन व अमान व सुलह के साथ रहो कि अल्लाह को यही पसन्द है, **वल्लाहु ला युहिब्बुल्फ़साद.** (अल बक़र : 205) अल्लाह फ़साद को हर्गिज़ पसन्द नहीं रखता।

2834. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन अम्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू

٢٨٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو وَحَدَّثَنَا أَبُو

إِسْحَاقَ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، إِلَى الْخَنْدَقِ فَإِذَا الْمُهَاجِرُونَ وَالأَنْصَارُ يَحفِرُونَ فِي غَدَاةٍ بَارِدَةٍ، فَلَمْ يَكُنْ لَهُم عَبِيْدٌ يَعْمَلُون ذَلِكَ لَهُمْ، فَلَمَّا رَأَى مَا بِهِمْ مِنَ النَّصَبِ وَالْجُوعِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنَّ الْعَيْشَ عَيْشُ الآخِرَةِ، فَاغْفِرِ لِلأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةْ. فَقَالُوا مُجِيْبِيْنَ لَهُ:

نَحْنُ الَّذِيْنَ بَايَعُوا مُحَمَّدًا
عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِيْنَا أَبَدًا

[أطرافه في: ٢٨٣٥، ٢٩٦١، ٣٧٩٥، ٣٧٩٦، ٤٠٩٩، ٤١٠٠، ٦٤١٣، ٧٢٠١].

इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) (ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के शुरू होने से कुछ पहले जब ख़ंदक़ की खुदाई हो रही थी) मैदाने ख़ंदक़ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए, आपने देखा कि मुहाजिरीन और अंसार सर्दी की सख़्ती के बावजूद सुबह ही सुबह ख़ंदक़ खोदने में मसरूफ़ हैं, उनके पास गुलाम भी नहीं थे जो उनकी इस खुदाई में मदद करते। आप (ﷺ) ने उनकी थकन और भूख को देखा तो आप (ﷺ) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! ज़िन्दगी तो पस आख़िरत ही की ज़िन्दगी है पस अंसार और मुहाजिरीन की मग़्फ़िरत फ़र्माइयो। सहाबा ने उसके जवाब मे कहा, हम वो हैं जिन्होंने मुहम्मद (ﷺ) के हाथ पर उस वक़्त तक जिहाद करने का अहद किया है जब तक हमारी जान में जान है।

नबी मुहम्मद (ﷺ) से ये बेअत हमने की
जब तलक है जिन्दगी लड़ते रहेंगे हम सदा

(दीगर मक़ाम : 2835, 2961, 3795, 3796, 4099, 4100, 6413, 7201)

٣٤- بَابُ حَفْرِ الْخَنْدَقِ

बाब 34 : ख़ंदक़ खोदने का बयान

पहले ज़मानों में दुश्मनों से महफ़ूज़ रहने की सूरतों में से एक सूरत ये भी थी कि क़िले या शहर के चारों तरफ़ गहरी ख़ंदक़ खोदकर उसको पानी से लबरेज़ कर दिया जाता, इसी तरह वो क़िला या शहर दुश्मन से महफ़ूज़ हो जाया करता था। मुसलमानों को भी एक बार मदीना की हिफ़ाज़त के लिये ऐसा ही करना पड़ा। दौरे हाज़िरा (वर्तमान काल) में जंग के पुराने हालात सब दूसरी सूरतों में बदल चुके हैं, अब जंग ज़मीन से ज़्यादा फ़िज़ा (आसमान) में लड़ी जाती है।

٢٨٣٥- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَعَلَ الْمُهَاجِرُونَ وَالأَنْصَارُ يَحْفِرُونَ الْخَنْدَقَ حَوْلَ

2835. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि (जब तमाम अरब के मदीना मुनव्वरा पर हमले का ख़तरा हुआ तो) मदीना के आसपास मुहाजिरीन व अंसार ख़ंदक़ खोदने में मशग़ूल

हो गए, मिट्टी अपनी पीठ पर लादकर उठाते और (ये रजज़) पढ़ते जाते, हम वो हैं जिन्होंने मुहम्मद (ﷺ) के हाथ पर उस वक़्त तक इस्लाम के लिये बेअत की है जब तक हमारी जान मे जान है। नबी करीम (ﷺ) उनके पास रजज़ के जवाब में ये दुआ फ़र्माते, ऐ अल्लाह! आख़िमत की ख़ैर के सिवा और कोई ख़ैर नहीं, पस आप तो अंसार और मुहाजिरीन को बरकत अता फ़र्माइयो।

(राजेअ: 2834)

الْـمَدِينَةِ وَيَنْقُلُونَ التُّرَابَ عَلَى مُتُونِهِمْ وَيَقُولُونَ:

نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدًا
عَلَى الإِسْلاَمِ مَا بَقِينَا أَبَدًا
وَالنَّبِيُّ ﷺ يُجِيبُهُمْ وَيَقُولُ:
اللَّهُمَّ لاَ خَيْرَ إِلاَّ خَيْرُ الآخِرَهْ
فَبَارِكْ فِي الأَنْصَارِ وَالْـمُهَاجِرَهْ

[راجع: ٢٨٣٤]

हदीष़ में मदीना शरीफ़ के आसपास ख़ंदक़ खोदने का ज़िक्र है। यही बाब का तर्जुमा है।

2836. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उन्होंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) (ख़ंदक़ खोदते हुए मिट्टी) उठा रहे थे और फ़र्मा रहे थे कि (ऐ अल्लाह!) अगर तू न होता तो हमें हिदायत नसीब न होती, या'नी तू हिदायत गिर न होता तो न मिलती राह हमको। (दीगर मक़ाम: 2837, 3034, 4104, 4106, 6620, 7236)

٢٨٣٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَنْقُلُ وَيَقُولُ: ((لَوْ لاَ أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا)).
[أطرافه في: ٢٨٣٧، ٣٠٣٤، ٤١٠٤، ٤١٠٦، ٦٦٢٠، ٧٢٣٦].

ये जंग शव्वाल 5 हिजरी में हुई थी, जिसमें अरब की सारी क़ौमों ने मुत्तहिद होकर इस्लाम के ख़िलाफ़ यलग़ार की थी मगर अल्लाह ने उनको ज़लील कर के लौटा दिया। सूरह अह्ज़ाब में इस जंग के कुछ लरज़ा ख़ैज़ कवाइफ़ मज़्कूर हुए हैं।

2837. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ग़ज़्वा अह्ज़ाब (ख़ंदक़) के मौक़े पर देखा कि आप (ﷺ) मिट्टी (ख़ंदक़ खोदने की वजह से निकलती थी) ख़ुद ढो रहे थे, मिट्टी से आपके पेट की सफ़ेदी छुप गई थी और आप ये शे'र कह रहे थे,

٢٨٣٧- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الأَحْزَابِ يَنْقُلُ التُّرَابَ – وَقَدْ وَارَى التُّرَابُ بَيَاضَ بَطْنِهِ – وَهُوَ يَقُولُ:

तू हिदायत-गर न होता तो कहाँ मिलती नजात
कैसे पढ़ते हम नमाज़ें कैसे देते हम ज़कात
अब उतार हम पर तसल्ली ऐ शहे आली सिफ़ात
पाँव जमवा दे हमारे, दे लड़ाई में ष़बात
बे सबब हम पर ये काफ़िर ज़ुल्म से चढ़ आते हैं
जब वो बहकाएँ हमें सुनते नहीं हम उनकी बात

(राजेअ: 2836)

हदीष़ में ज़िक्रकर्दा आख़िरी अल्फ़ाज़ **इन्नल उला क़द बग़ौ अलैना** का मतलब ये कि या अल्लाह! दुश्मनों ने ख़्वाह मख़्वाह हमारे ख़िलाफ़ क़दम उठाया और हमारे साथ ज़्यादती की है, इसलिये मजबूरन हमको उनके जवाब में मैदान में आना पड़ा है।

इससे ज़ाहिर है कि इस्लामी जंग मुदाफ़िआना होती है जिसका मक़्सदे अज़ीम फ़ित्ना फ़साद करके अमन व अमान की फ़िज़ा पैदा करना होता है। जो लोग इस्लाम पर क़त्ल व ग़ारत गिरी का इल्ज़ाम लगाते हैं वो हक़ से सरासर नावाक़फ़ियत का षुबूत देते हैं।

बाब 35 : जो शख़्स किसी मा'कूल उज़्र की वजह से जिहाद में शरीक न हो सका

٣٥- بَابُ مَنْ حَبَسَهُ الْعُذْرُ عَنِ الْغَزْوِ

2838. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुबैर ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-तबूक़ से वापस हुए। (दीगर मक़ाम : 2839, 4423)

٢٨٣٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ قَالَ: ((رَجَعْنَا مِنْ غَزْوَةِ تَبُوكَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ)).
[طرفاه في : ٢٨٣٩، ٤٤٢٣].

2839. इमाम बुख़ारी (रह.) हदीष़ की दूसरी सनद बयान करते हैं कि) हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, ये ज़ैद के बेटे हैं, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक ग़ज़्वा (तबूक़) पर थे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कुछ लोग मदीना में हमारे पीछे रह गये हैं लेकिन हम किसी भी घाटी या वादी में (जिहाद के लिये) चलें वो ष़वाब में हमारे साथ हैं कि वो सिर्फ़ उज़्र की वजह से हमारे साथ नहीं आ सके। और मूसा ने बयान किया कि हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे हुमैद ने, उनसे मूसा बिन अनस (रज़ि.) ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं कि पहली सनद ज़्यादा सहीह है। (राजेअ : 2838)

٢٨٣٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ ابْنُ زَيْدٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي غَزَاةٍ فَقَالَ: ((إِنَّ أَقْوَامًا بِالْمَدِينَةِ خَلْفَنَا مَا سَلَكْنَا شِعْبًا وَلاَ وَادِيًا إِلاَّ وَهُمْ مَعَنَا فِيهِ، حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ)). وَقَالَ مُوسَى: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ مُوسَى بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : الأَوَّلُ أَصَحُّ. [راجع: ٢٨٣٨]

पहली सनद वो जिसमें हुमैद और अनस के दरम्यान मूसा बिन अनस का वास्ता नहीं है यही ज़्यादा सहीह है। जंगे तबूक़ में पीछे रह जाने वालों में कुछ वाक़ई ऐसे मुख़्लिस थे जिनके उज़्रात (कारण) सहीह थे, वो दिल से शिर्कत चाहते थे, मगर मजबूरन पीछे रह गए, उन्हीं के बारे में आप (ﷺ) ने ये बशारत पेश की। तर्जुमा और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 36 : जिहाद में रोज़े रखने की फ़ज़ीलत

٣٦- بَابُ فَضْلِ الصَّوْمِ فِي سَبِيلِ اللهِ

2840. हमसे इस्हाक़ बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन दोनों हज़रात ने नोअमान बिन अबी अयाश से सुना, उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से, आप ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्माते थे कि जिसने अल्लाह तआला

٢٨٤٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ وَسُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ أَنَّهُمَا سَمِعَا النُّعْمَانَ بْنَ أَبِي عَيَّاشٍ

के रास्ते में (जिहाद करते हुए) एक दिन भी रोज़ा रखा अल्लाह तआला उसे जहन्नम से सत्तर साल की मुसाफ़त की दूरी तक दूर कर देगा।

عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ صَامَ يَوْمًا فِي سَبِيْلِ اللهِ بَعَّدَ اللهُ وَجْهَهُ عَنِ النَّارِ سَبْعِيْنَ خَرِيْفًا)).

तश्रीह : मुज्तहिदे मुत्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ये बतलाना चाहते हैं कि क़ुर्आन व ह़दीष़ में लफ़्ज़ फ़ी सबीलिल्लाह ज़्यादातर जिहाद ही के लिये बोला गया है। ह़दीष़े मज़्कूर में भी जिहाद करते हुए रोज़ा रखना मुराद है जिससे नफ़्ल रोज़ा मुराद है और उसी की ये फ़ज़ीलत है। ह़क़ीक़त ये है कि मर्दे मुजाहिद का रोज़ा और मर्दे मुजाहिद की नमाज़ बहुत ऊँचा मुक़ाम रखती है।

बाब 37 : अल्लाह की राह (जिहाद) में खर्च करने की फ़ज़ीलत का बयान

٣٧- بَابُ فَضْلِ النَّفَقَةِ فِي سَبِيْلِ اللهِ

2841. हमसे सअ़द बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया यह्या से, वो अबू सलमा से, और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख़्स ने अल्लाह के रास्ते में एक जोड़ा (किसी चीज़ का) खर्च किया तो उसे जन्नत के दारोग़ा बुलाएँगे। जन्नत के हर दरवाज़े का दारोग़ा (अपनी तरफ़) बुलाएगा कि ऐ फ़लाँ! इस दरवाज़े से आ। उस पर अबूबक्र (रज़ि.) बोले या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर उस शख़्स को कोई डर नहीं रहेगा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे उम्मीद है कि तुम भी उन्हीं में से होओगे। (राजेअ़ : 1897)

٢٨٤١- حَدَّثَنِي سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيْلِ اللهِ دَعَاهُ خَزَنَةُ الْجَنَّةِ - كُلُّ خَزَنَةِ بَابٍ -: أَيْ فُلْ، هَلُمَّ)). قَالَ أَبُوبَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللهِ ذَاكَ الَّذِي لاَ تَوَى عَلَيْهِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي لأَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ)).

[راجع: ١٨٩٧]

इस ह़दीष़ में भी लफ़्ज़ फ़ी सबीलिल्लाह से जिहाद मुराद है जोड़ा करने से मुराद है कि जो चीज़ भी दी वो कम अज़्क़म दो-दो की ता'दाद में दी उस पर ये फ़ज़ीलत है।

2842. हमसे मुह़म्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा कि हमसे फ़ुलैह़ ने बयान किया, उनसे हिलाल ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया मेरे बाद तुम पर दुनिया की जो बरकतें खोल दी जाएँगी, मैं तुम्हारे बारे में उनसे डर रहा हूँ कि (कहीं तुम उनमें मुब्तला न हो जाओ) उसके बाद आपने दुनिया की रंगीनियों का ज़िक्र फ़र्माया। पहले दुनिया की बरकात का ज़िक्र किया फिर उसकी रंगीनियों को बयान फ़र्माया, इतने में एक स़ह़ाबी खड़े हुए और अ़र्ज़ किया, या

٢٨٤٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ حَدَّثَنَا هِلاَلٌ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَامَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: ((إِنَّمَا أَخْشَى عَلَيْكُمْ مِن بَعْدِي مَا يُفْتَحُ عَلَيْكُمْ مِنْ بَرَكَاتِ الأَرْضِ)). ثُمَّ ذَكَرَ زَهْرَةَ الدُّنْيَا فَبَدَأَ بِإِحْدَاهُمَا وَثَنَّى

रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या भलाई, बुराई पैदा कर देगी। आप उस पर थोड़ी देर के लिये ख़ामोश हो गए। हमने समझा कि आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल हो रही है। सब लोग ख़ामोश हो गए जैसे उनके सरों पर परिन्दे हों । उसके बाद आप (ﷺ) ने चेहर-ए-मुबारक से पसीना साफ़ किया और पूछा सवाल करने वाला कहाँ है? क्या ये भी (माल और दुनिया की बरकत) ख़ैर है? तीन बार आपने यही जुम्ला दोहराया फिर फ़र्माया देखो बहार के मौसम में जब हरी घास पैदा होती है, वो जानवर को मार डालती है या मरने के क़रीब कर देती है मगर वो जानवर बच जाता है जो हरी-हरी दूब चरता है, कोखें भरते ही सूरज के सामने जा खड़ा होता है। लीद, गोबर, पेशाब करता है फिर उसके हज़म हो जाने के बाद और चरता है, उसी तरह ये माल भी हरा भरा और शीरीं है और मुसलमान का वो माल कितना उम्दा है जिसे उसने हलाल तरीक़ों से जमा किया हो और फिर उसे अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) यतीमों के लिये और मिस्कीनों के लिये वक़्फ़ कर दिया हो लेकिन जो शख़्स नाजाइज़ तरीक़ों से जमा करता है तो वो एक ऐसा खाने वाला है जो कभी आसूदा नहीं होता और वो माल क़यामत के दिन उसके ख़िलाफ़ गवाह बनकर आएगा। (राजेअ : 921)

بِالأُخْرَى. فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَوَ يَأْتِي الْخَيْرُ بِالشَّرِّ؟ فَسَكَتَ عَنْهُ النَّبِيُّ ﷺ، قُلْنَا يُوحَى إِلَيْهِ، وَسَكَتَ النَّاسُ كَأَنَّ عَلَى رُؤُوسِهِمُ الطَّيْرَ. ثُمَّ إِنَّهُ مَسَحَ عَنْ وَجْهِهِ الرُّحَضَاءَ فَقَالَ: ((أَيْنَ السَّائِلُ آنِفًا؟ أَوَ خَيْرٌ هُوَ ثَلاَثًا. إِنَّ الْخَيْرَ لاَ يَأْتِي إِلاَّ بِالْخَيْرِ. وَإِنَّهُ كُلُّ مَا يُنْبِتُ الرَّبِيْعُ مَا يَقْتُلُ حَبَطًا أَوْ يُلِمُّ، أَكَلَتْ حَتَّى إِذَا امْتَدَّتْ خَاصِرَتَاهَا اسْتَقْبَلَتِ الشَّمْسَ فَثَلَطَتْ وَبَالَتْ ثُمَّ رَتَعَتْ. وَإِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ، وَنِعْمَ صَاحِبُ الْمُسْلِمِ لِمَنْ أَخَذَهُ بِحَقِّهِ فَجَعَلَهُ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِيْنِ، وَمَنْ لَمْ يَأْخُذْهُ بِحَقِّهِ فَهُوَ كَالآكِلِ الَّذِي لاَ يَشْبَعُ، وَيَكُونُ عَلَيْهِ شَهِيْدًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

[راجع: ٩٢١]

बाब 38 : जो शख़्स ग़ाज़ी का सामान तैयार कर दे या उसके पीछे उसके घरवालों की ख़बरगीरी करे, उसकी फ़ज़ीलत

٣٨- بَابُ فَضْلِ مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا أَوْ خَلَفَهُ بِخَيْرٍ

2843. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, हमसे हुसैन ने बयान किया, कहा मुझसे यह्या ने बयान किया, कहा मुझसे अबू सलमा ने बयान किया, कहा कि मुझसे बसर बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख़्स ने अल्लाह के रास्ते में ग़ज़्वा करने वाले को साज़ो-सामान दिया तो वो (गोया) ख़ुद ग़ज़्वे में शरीक हुआ और जिसने ख़ैरख़्वाहाना तौर पर ग़ाज़ी के घरबार की निगरानी की तो वो (गोया) ख़ुद ग़ज़्वे में शरीक हुआ।

٢٨٤٣- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ حَدَّثَنِي بُسْرُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ خَالِدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا فِي سَبِيْلِ اللهِ فَقَدْ غَزَا، وَمَنْ خَلَفَ غَازِيًا فِي سَبِيْلِ اللهِ بِخَيْرٍ فَقَدْ غَزَا)).

2844. हमसे मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान

٢٨٤٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ

किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) मदीना में अपनी बीवियों के सिवा और किसी के घर नहीं जाया करते थे मगर उम्मे सुलैम के पास जाते। आँहज़रत (ﷺ) से जब उसके बारे में पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे उस पर रहम आता है, उसका भाई (हराम बिन मल्हान (रज़ि.)) मेरे काम में शहीद कर दिया गया।

حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ يَدْخُلُ بَيْتًا بِالْمَدِينَةِ غَيْرَ بَيْتِ أُمِّ سُلَيْمٍ، إِلاَّ عَلَى أَزْوَاجِهِ، فَقِيْلَ لَهُ، فَقِيْلَ: ((إِنِّي أَرْحَمُهَا، قُتِلَ أَخُوهَا مَعِي)).

वो सत्तर क़ारी मुबल्लिग़ीन सहाबा क़बाइले रअ़ल व ज़क्वान वग़ैरह ने जिनको धोखे से शहीद कर दिया था, उनमें अव्वलीन शहीद यही हज़रत हराम बिन मिल्हान (रज़ि.) थे। उलमा ने उम्मे सुलैम को आपकी रज़ाई ख़ाला भी बतलाया है। इमाम नववी (रह.) फ़र्माते हैं, **अला अन्नहा कानत महरिमन लहू (ﷺ) वख़्तलफू फी कैफ़िय्यति ज़ालिक फक़ाल इब्नु अब्दिल्बर्र व गैरूहु कानत इहदा खालातिही (ﷺ) मिनर्रज़ाअ़ति व क़ाल आखरुन बल कानत खालतु लिअबीहि औ लिजद्दिही लिअन्न अब्दिल्मुत्तलिब कानत उम्मुहू मिम्बनी नज्जार** (नववी) या'नी उम्मे सुलैम आपके लिये महरम थी कुछ लोगों ने उनको आपकी ख़ाला बतलाया है और रज़ाई भी। कुछ कहते हैं कि आपके वालिदे माजिद या आपके दादा की ख़ाला थीं, इसलिये कि अ़ब्दुल मुत्तलिब की वालिदा माजिदा बनू नज्जार से थीं।

बाब 39 : जंग के मौक़े पर ख़ुश्बू मलना

٣٩- بَابُ التَّحَنُّطِ عِنْدَ الْقِتَالِ

2845. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन हारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने औन ने बयान किया, उनसे मूसा बिन अनस ने बयान किया जंगे यमामा का वो ज़िक्र कर रहे थे, बयान किया कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ष़ाबित बिन क़ैस (रज़ि.) के यहाँ गए, उन्होंने अपनी रान खोल रखी थी और खुश्बू लगा रहे थे। अनस (रज़ि.) ने कहा चचा अब तक आप जंग में क्यूँ तशरीफ़ नहीं लाए? उन्होंने जवाब दिया कि बेटे अभी आता हूँ और वो फिर ख़ुश्बू लगाने लगे फिर (कफ़न पहनकर) तशरीफ़ लाए और बैठ गये (मुराद सफ़ में शिर्कत से है) अनस (रज़ि.) ने बातचीत करते हुए मुसलमानों की तरफ़ से कुछ कमज़ोरी के आष़ार का ज़िक्र किया तो उन्होंने फ़र्माया कि हमारे सामने से हट जाओ ताकि हम काफ़िरों से दस्त बदस्त लड़ें, रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हम ऐसा कभी नहीं करते थे। (या'नी पहली सफ़ के लोग डटकर लड़ते थे कमज़ोरी का हर्गिज़ मुज़ाहिरा नहीं होने देते थे) तुमने अपने दुश्मनों को बहुत बुरी चीज़ का आदी बना दिया है (तुम जंग के मौक़े पर पीछे हट गए) वो हमला करने लगे। इस हदीष़ को हम्माद ने ष़ाबित से और उन्होंने अनस (रज़ि.) से रिवायत किया।

٢٨٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ مُوسَى بْنِ أَنَسٍ قَالَ: وَذَكَرَ يَومَ الْيَمَامَةِ قَالَ: ((أَتَى أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ ثَابِتَ بْنَ قَيْسٍ وَقَدْ حَسَرَ عَنْ فَخِذَيْهِ وَهُوَ يَتَحَنَّطُ فَقَالَ: يَا عَمِّ مَا يَحْبِسُكَ أَنْ لاَ تَجِيْءَ؟ قَالَ: الآنَ يَا ابْنَ أَخِي، وَجَعَلَ يَتَحَنَّطُ - يَعْنِي مِنَ الْحَنُوطِ - ثُمَّ جَاءَ فَجَلَسَ، فَذَكَرَ فِي الْحَدِيْثِ انْكِشَافًا مِنَ النَّاسِ فَقَالَ: هَكَذَا عَنْ وُجُوهِنَا حَتَّى نُضَارِبَ الْقَوْمَ، مَا هَكَذَا كُنَّا نَفْعَلُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِئْسَ مَا عَوَّدْتُمْ أَقْرَانَكُمْ)). رَوَاهُ حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ.

जंगे यमामा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के ज़माने में 12 हिजरी मुसैलमा कज़्ज़ाब (नुबुव्वत के झूठे दावेदार) से लड़ी गई थी। तफ़्सीलात किताबुल मग़ाज़ी में आएँगी, इंशाअल्लाह!

बाब 40 : दुश्मनों की ख़बर लाने वाले दस्ते की फ़ज़ीलत

٤٠- بَابُ فَضْلِ الطَّلِيعَةِ

लफ़्ज़े तलीआ के बारे में हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **अय मय्यब्अषु अलल्अदुव्वि लियत्तलिअ अला अहवालिहिम व हुव इस्मु जिन्सिन लियश्मलल वाहिदु फ़मा फ़ौक़हू** (फ़त्हुल बारी) या'नी जो शख़्स दुश्मनों के हालात की ख़बर हासिल करने के लिये भेजा जाए और ये इस्मे जिंस (संज्ञा का प्रकार) है जो वाहिद (एकवचन) और जमा (बहुवचन) सब पर मुश्तमिल (आधारित) है।

2846. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जंगे ख़ंदक़ के दिन फ़र्माया दुश्मन के लश्कर की ख़बर मेरे पास कौन ला सकता है? (दुश्मन से मुराद यहाँ बनू क़ुरैज़ा थे) ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा कि मैं। आप (ﷺ) ने दोबारा पूछा दुश्मन के लश्कर की ख़बर कौन ला सकता है? इस बार भी ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा कि मैं। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर नबी के हवारी (सच्चे मददगार) होते हैं और मेरे हवारी (ज़ुबैर) हैं। (दीगर मक़ाम : 2847, 2997, 3719, 4113, 7261)

٢٨٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ يَأْتِينِي بِخَبَرِ الْقَوْمِ يَوْمَ الأَحْزَابِ؟)) قَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا. ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ يَأْتِينِي بِخَبَرِ الْقَوْمِ؟)) قَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَحَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ)).

[أطرافه في: ٢٨٤٧، ٢٩٩٧، ٣٧١٩، ٤١١٣، ٧٢٦١].

बाब 41 : क्या जासूसी के लिये किसी एक शख़्स को भेजा जा सकता है?

٤١- بَابُ هَلْ يُبْعَثُ الطَّلِيعَةُ وَحْدَهُ

2847. हमसे सदक़ा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने उयैना ने ख़बर दी, कहा हमसे इब्ने मुंकदिर ने बयान किया, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सहाबा को (बनी क़ुरैज़ा की ख़बर लाने के लिये) दा'वत दी। सदक़ा (इमाम बुख़ारी रह. के उस्ताज़) ने कहा कि मेरा ख़्याल है कि ये ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ का वाक़िया है, तो ज़ुबैर (रज़ि.) ने उस पर लब्बैक कहा फिर आप (ﷺ) ने बुलाया और ज़ुबैर (रज़ि.) ने लब्बैक कहा फिर तीसरी बार आप (ﷺ) ने बुलाया और इस बार भी ज़ुबैर (रज़ि.) ने लब्बैक कहा। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हर नबी के हवारी होते हैं और मेरे हवारी ज़ुबैर बिन अवाम (रज़ि.) हैं। (राजेअ : 2846)

٢٨٤٧- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُنْكَدِرِ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَدَبَ النَّبِيُّ ﷺ النَّاسَ - قَالَ صَدَقَةُ أَظُنُّهُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ - فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ، ثُمَّ نَدَبَ النَّاسَ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ، ثُمَّ نَدَبَ النَّاسَ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا، وَإِنَّ حَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ بْنُ الْعَوَّامِ)). [راجع: ٢٨٤٦]

बाब 42 : दो आदमियों का मिलकर सफ़र करना

٤٢- بَابُ سَفَرِ الاِثْنَيْنِ

2848. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे अबू

٢٨٤٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا

शिहाब ने बयान किया, उनसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे अबू क़लाबा ने और उनसे मालिक बिन हुवेरिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम नबी करीम (ﷺ) के यहाँ से वतन के लिये वापस लौटे तो आप (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया कि एक मैं था और दूसरे मेरे साथी, (हर नमाज़ के वक़्त) अज़ान पुकारना और इक़ामत कहना और तुम दोनों मे जो बड़ा हो वो नमाज़ पढ़ाए। (राजेअ़ : 628)

أَبُو شِهَابٍ عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ: انْصَرَفْتُ مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لَنَا - أَنَا وَصَاحِبٌ لِي -: ((أَذِّنَا وَأَقِيْمَا وَلْيَؤُمَّكُمَا أَكْبَرُكُمَا)). [راجع: ٦٢٨]

ये ह़दीष़ किताबुस्सलात में गुज़र चुकी है यहाँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इसको इसलिये लाए कि एक ह़दीष़ में वारिद हुआ है कि अकेला सफ़र करने वाला शैतान है और दो शख़्स सफ़र करने वाले दो शैतान हैं और तीन शख़्स जमाअ़त। इस ह़दीष़ की रू से कुछ ने दो शख़्सों का सफ़र मकरूह रखा है, इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसी ह़दीष़ से उसका जवाज़ निकाला मा'लूम हुआ कि ज़रूरत से दो आदमी भी सफ़र कर सकते हैं।

बाब 43 : क़यामत तक घोड़े की पेशानी के साथ ख़ैरो-बरकत बँधी हुई है

٤٣ - بَابُ الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيْهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

तशरीह : सवारी के जानवरों में घोड़े को एक नुमायाँ मुक़ाम ह़ासिल है, ये जानवर अपनी वफ़ाशिआरी व फ़र्मांबरदारी के लिह़ाज़ से इंसानों के लिये हमेशा से एक महबूब जानवर रहा है। जंग में घोड़े से सवारी की ख़िदमत बड़ी अहमियत रखती है। आज भी जबकि आज के मशीनी दौर में बेहतर से बेहतर सवारियाँ ईजाद में आ चुकी है, क़दम क़दम पर मोटर व हवाई जहाज़ हैं मगर घोड़े की अहमियत आज भी मुसल्लम है। लश्करों की ज़ीनत जो घोड़े के साथ वाबस्ता हैं दूसरी सवारियों के साथ नहीं है। दुनिया में कोई हुकूमत ऐसी नहीं है जिसमें घुड़सवार फ़ौज का दस्ता न हो। इस्लाम ने न सिर्फ़ जंग व जिहाद बल्कि रिफ़ाहे आम (सार्वजनिक हित) के लिये भी घोड़ा पालने की बड़ी फ़ज़ीलत बयान की है। बहुत से मक़ामात जहाँ मशीनी सवारियों की पहुँच नहीं होती घोड़ा वहाँ तक पहुँच जाता है। इन तमाम अह़ादीष़ में घोड़े की फ़ज़ीलत उन ही ख़ूबियों की बिना पर वारिद हुई है। ख़ास त़ौर पर जबकि पहले ज़मानों में यही जानवर जंग में बहादुरों का मूनिसे जान होता था। इस्लामी नुक़्त-ए-नज़र से मुजाहिदीन के घोड़े फ़ज़ीलत रखते हैं और उन ही पर इन तमाम सवारियों को क़यास किया जा सकता है जो आज मशीनी सवारियाँ बह़री (समुद्री) व बर्री (ज़मीनी) व फ़िज़ाई (आकाशीय) मुक़ाबलों में इस्ते'माल में आती हैं। आज के मशीनी दौर में उनकी बड़ी अहमियत है। जो क़ौमें अपने आलाते जंग (युद्ध सामग्री) में ज़्यादा ता'दाद ऐसे ही आलात की मुहय्या करती हैं, वही क़ौमें आज फ़तह़याब होती हैं, और जिनके पास ये आलात मुहय्या नहीं होते वो बेह़द कमज़ोर तसव्वुर की जाती हैं। आज की दुनिया में अमेरिका और रूस का नाम इसलिये रोशन है क्योंकि वो इस क़िस्म के आलात मुह़य्या करने में दुनिया की सब क़ौमों से आगे हैं। अल्फ़ाज़े बाब में ख़ैर से मुराद हर भलाई और माल भी मुराद है। उ़मूमन अहले अ़रब ख़ैर का लफ़्ज़ माल पर बोलते हैं जैसा कि आयते करीमा में लफ़्ज़ **इन तरक ख़ैरल्वस़िय्यतु** (अल् बक़रः : 180) में ख़ैर से माल ही मुराद है।

2849. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत तक घोड़े की पेशानी के साथ ख़ैरो-बरकत वाबस्ता रहेगी। (क्योंकि इससे जिहाद में काम लिया जाता रहेगा) (दीगर मक़ाम : 3644)

٢٨٤٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْخَيْلُ فِي نَوَاصِيْهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). [طرفه في: ٣٦٤٤].

2850. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुसैन और इब्ने अबी अस्सफ़र ने, उनसे शअबी ने और उनसे उर्वा बिन जअदि (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत तक घोड़े की पेशानी के साथ ख़ैरो-बरकत बँधी हुई रहेगी। सुलैमान ने शुअबा के वास्ते से बयान किया कि उनसे उर्वा बिन अबी अल् जअदि (रज़ि.) ने इस रिवायत की मुताबअत (जिसमें बजाय इब्नुल जअदि के इब्ने अबी अल् जअदि है) मुसद्दद ने हुशैम से की, उनसे हुसैन ने, उनसे शअबी ने और उनसे उर्वा इब्ने अबी अल जअदि ने। (दीगर मक़ाम : 2852, 3119, 3643)

٢٨٥٠- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُصَيْنٍ وَابْنِ أَبِي السَّفَرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الْجَعْدِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). قَالَ سُلَيْمَانُ عَنْ شُعْبَةَ: ((عَنْ عُرْوَةَ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ)). تَابَعَهُ مُسَدَّدٌ عَنْ هُشَيْمٍ عَنْ حُصَيْنٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ: ((عَنْ عُرْوَةَ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ)).

[أطرافه في: ٢٨٥٢، ٣١١٩، ٣٦٤٣].

सअद ने भी अबी अल जअदि कहा। इब्ने मदीनी ने भी इसी को ठीक कहा है और इब्ने अबी हातिम ने कहा कि अबुल जअदि का नाम सअद था। सुलैमान की रिवायत में अबू नुऐम के मुस्तख़रज में और मुसद्दद की रिवायत उनके मुस्नद में मौसूल है।

2851. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे अबुत तियाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया घोड़े की पेशानी में बरकत बँधी हुई है। (दीगर मक़ाम : 3645)

٢٨٥١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْبَرَكَةُ فِي نَوَاصِي الْخَيْلِ)).

[طرفه في: ٣٦٤٥].

बाब 44 : मुसलमानों का अमीर आदिल हो या ज़ालिम उसकी क़यादत में जिहाद हमेशा होता रहेगा

٤٤- بَابُ الْجِهَادُ مَاضٍ مَعَ الْبَرِّ وَالْفَاجِرِ

क्योंकि नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है, घोड़े की पेशानी में क़यामत तक ख़ैरो-बरकत क़ायम रहेगी।

لِقَولِ النَّبِيِّ ﷺ: ((الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)).

और घोड़ा इसीलिये मुतबर्रक (बरकत वाला) है कि वो आल-ए-जिहाद (जिहाद का आला) है। तो मा'लूम हुआ कि जिहाद भी क़यामत तक होता रहेगा। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इमाम अबू दाऊद की ये हदीष़ न ला सके कि जिहाद वाजिब है तुम पर हर एक बादशाहे-इस्लाम के साथ ख़्वाह वो नेक हो या बद, चाहे वो कबीरा गुनाह करता हो और अनस (रज़ि.) की ये हदीष़ कि जिहाद जबसे अल्लाह ने मुझको भेजा है क़यामत तक क़ायम रहेगा। अख़ीर मेरी उम्मत दज्जाल से लड़ेगी, किसी ज़ालिम के ज़ुल्म या आदिल के अदल से जिहाद बातिल नहीं हो सकता क्योंकि दोनों हदीष़ें इमाम बुख़ारी (रह.) की शर्त के मुवाफ़िक़ न थीं। ख़ुलासा ये कि जिहाद इमाम आदिल हो या फ़ासिक़ दोनों के साथ दुरुस्त है।

2852. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, कहा हमसे आमिर ने, कहा हमसे उर्वा बारिक़ी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ख़ैरो-

٢٨٥٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ عَنْ عَامِرٍ حَدَّثَنَا عُرْوَةُ الْبَارِقِيُّ أَنَّ النَّبِيَّ

بِيٍّ قَالَ: ((الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ: الأَجْرُ وَالْمَغْنَمِ)).
[راجع: ٢٨٥٠]

बरकत क़यामत तक घोड़े की पेशानी के साथ बँधी रहेगी या'नी आख़िरत में ष़वाब और दुनिया में माले ग़नीमत मिलता रहेगा। (राजेअ़ : 2850)

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ये बताना चाहते हैं कि घोड़े में ख़ैरो-बरकत के बारे में ह़दीष़ आई है वो उसके आल-ए-जिहाद होने की वजह से है और जब क़यामत तक उसमें ख़ैरो-बरकत क़ायम रहेगी तो उससे निकला कि जिहाद का हुक्म भी क़यामत तक बाक़ी रहेगा और चूँकि क़यामत तक आने वाला दौर हर अच्छा और बुरा दोनों होगा इसलिये मुसलमानों के उमरा भी इस्लामी शरीअ़त के पूरी तरह़ पाबन्द होंगे और कभी ऐसे नहीं होंगे लेकिन जिहाद का सिलसिला कभी बन्द न होगा क्योंकि ये कलिमतुल्लाह को बुलन्द करने और दुनिया व आख़िरत में सरबुलन्दी का ज़रिया है। इसलिये इस्लामी मफ़ाद के पेशे-नज़र ज़ालिम हुक्मरानों की क़यादत में भी जिहाद किया जाता रहेगा।

٤٥- بَابُ مَنِ احْتَبَسَ فَرَسًا لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ﴾ [الأنفال : ٦٠]

बाब 45 : जो शख़्स़ जिहाद की निय्यत से (घोड़ा पाले) अल्लाह तआला के इर्शाद (व मिर्रिबातिल ख़ैलि) की ता'मील में

٢٨٥٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا طَلْحَةُ بْنُ أَبِي سَعِيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيْدًا الْمَقْبُرِيَّ يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنِ احْتَبَسَ فَرَسًا فِي سَبِيْلِ اللهِ، إِيْمَانًا بِاللهِ وَتَصْدِيْقًا بِوَعْدِهِ، فَإِنَّ شِبَعَهُ وَرِيَّهُ وَرَوْثَهُ وَبَوْلَهُ فِي مِيْزَانِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

2853. हमसे अ़ली बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अल मुबारक ने बयान किया, कहा मुझको त़लहा बिन अबी सईद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने सईद मक़्बरी से सुना, वो बयान करते थे कि उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख़्स़ ने अल्लाह तआ़ला पर ईमान के साथ और उसके वा'द-ए-ष़वाब को सच्चा जानते हुए अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) घोड़ा पाला तो उसे घोड़े का खाना, पीना और उसका पेशाब व लीद सब क़यामत के दिन उसकी तराज़ू में होगा और सब पर उसको ष़वाब मिलेगा।

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **फ़ी हाज़ल्हदीष़ि जवाज़ुन वक़्फल्ख़ैलि लिल्मुदाफ़अ़ति अनिल्मुस्लिमीन व लियस्तम्बित मिन्हु जवाज़ु वक़्फ़ि ग़ैरिल्ख़ैलि मिनल्मन्क़ूलाति व मिन ग़ैरिल्मन्क़ूलाति मिम्बाबि औला** (फ़त्हुल बारी) या'नी इस ह़दीष़ से ष़ाबित हुआ कि दुश्मनों की मुदाफ़िअ़त के लिये घोड़े को वक़्फ़ करना जाइज़ है। इसी से घोड़े के सिवा और भी जायदादे मन्क़ूला (चल सम्पत्ति) का वक़्फ़ करना ष़ाबित हुआ, जायदादे ग़ैर मन्क़ूला (अचल सम्पत्ति) का वक़्फ़ तो बहरसूरत बेहतर है। दौरे ह़ाज़िर में मशीनी आलाते ह़र्ब व ज़र्ब (युद्धक हथियार) बहुत सी क़िस्मों के वजूद में आ चुके हैं जिनके बग़ैर आज मैदान में कामयाबी मुश्किल है, इसीलिये दुनिया की क़ौमें उन युद्धक सामान की फ़राहमी में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिशों में मस़रूफ़ हैं। जब भी कभी किसी भी जगह इस्लामी क़वाइद के तह़त जिहाद का मौक़ा होगा, उन आलात की ज़रूरत होगी और उनकी फ़राहमी सब पर मुक़द्दम होगी। इस लिहाज़ से ऐसे मौक़ों पर इन सब की फ़राहमी भी दौरे रिसालत में घोड़ों की फ़राहमी जैसे ष़वाब का मौजिब होगी, इंशाअल्लाह तआ़ला!

٤٦- بَابُ اسْمِ الْفَرَسِ وَالْحِمَارِ

बाब 46 : घोड़ों और गधों का नाम रखना

2854. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने और उनसे उनके बाप ने कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ (सुलह हुदैबिया के मौक़े पर) निकले। अबू क़तादा (रज़ि.) अपने चंद साथियों के साथ पीछे रह गए थे। उनके दूसरे तमाम साथी तो मुहरिम थे लेकिन उन्होंने ख़ुद एहराम नहीं बाँधा था। उनके साथियों ने एक गोरख़र देखा। अबू क़तादा (रज़ि.) के उस पर नज़र पड़ने से पहले उन हज़रात की नज़र अगरचे उस पर पड़ी थी लेकिन उन्होंने उसे छोड़ दिया था लेकिन अबू क़तादा (रज़ि.) उसे देखते ही अपने घोड़े पर सवार हुए, उनके घोड़े का नाम जरादा था, उसके बाद उन्होंने साथियों से कहा कि कोई उनका कोड़ा उठाकर उन्हें दे दे (जिसे लिये बग़ैर वो सवार हो गये थे) उन लोगों ने उससे इंकार कर दिया (मुहरिम होने की वजह से) इसलिये उन्होंने ख़ुद ही ले लिया और गोरख़र पर हमला करके उसकी कूँचे काट दीं उन्होंने ख़ुद भी उसका गोश्त खाया और दूसरे साथियों ने भी खाया फिर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। जब ये लोग आप (ﷺ) के साथ हो लिये आप (ﷺ) ने पूछा कि क्या उसका गोश्त तुम्हारे पास बचा हुआ बाक़ी है? अबू क़तादा ने कहा कि हाँ उसकी एक रान हमारे साथ बाक़ी है। चुनाँचे नबी करीम (ﷺ) ने भी वो गोश्त खाया। (राजेअ : 1821)

٢٨٥٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُضَيلُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيْهِ ((أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَتَخَلَّفَ أَبُو قَتَادَةَ مَعَ بَعْضِ أَصْحَابِهِ وَهُمْ مُحْرِمُونَ وَهُوَ غَيْرُ مُحْرِمٍ، فَرَأَوا حِمَارًا وَحْشِيًّا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ، فَلَمَّا رَأَوهُ تَرَكُوهُ حَتَّى رَآهُ أَبُو قَتَادَةَ، فَرَكِبَ فَرَسًا لَهُ يُقَالُ لَهُ الْجَرَادَةُ، فَسَأَلَهُمْ أَنْ يُنَاوِلُوهُ سَوْطَهُ فَأَبَوا، فَتَنَاوَلَهُ، فَحَمَلَ فَعَقَرَهُ، ثُمَّ أَكَلَ فَأَكَلُوا، فَقَدِمُوا، فَلَمَّا أَدْرَكُوهُ قَالَ: ((هَلْ مَعَكُمْ مِنْهُ شَيْءٌ؟)) قَالَ: مَعَنَا رِجْلُهُ، فَأَخَذَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكَلَهَا)).

[راجع: ١٨٢١]

घोड़े का नाम जरादा था, इससे बाब का मतलब षाबित हुआ।

2855. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे मअ़न बिन ईसा ने बयान किया, कहा हमसे उबई बिन अ़ब्बास बिन सहल ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने उनके दादा (सहल बिन सअ़द साअ़दी रज़ि.) से बयान किया कि हमारे बाग़ में नबी करीम (ﷺ) का एक घोड़ा रहता था जिसका नाम लहीफ़ था।

٢٨٥٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا مَعْنُ بْنُ عِيْسَى حَدَّثَنِي أُبَيُّ بْنُ عَبَّاسِ بْنِ سَهْلٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: ((كَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فِي حَائِطِنَا فَرَسٌ يُقَالُ لَهُ اللَّحِيْفُ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَقَالَ بَعْضُهُمْ: اللَّخِيفُ.

2856. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने यह्या बिन आदम से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे अबुल अहवस ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने और उनसे मुआ़ज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जिस गधे पर

٢٨٥٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ سَمِعَ يَحْيَى بْنَ آدَمَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ

عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ رِدْفَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى حِمَارٍ يُقَالُ لَهُ عُفَيْرٌ، فَقَالَ: ((يَا مُعَاذُ، هَلْ تَدْرِي مَا حَقُّ اللهِ عَلَى عِبَادِهِ وَمَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ؟)) قُلْتُ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: ((فَإِنَّ حَقَّ اللهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُوهُ وَلاَ يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَحَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ أَنْ لاَ يُعَذِّبَ مَنْ لاَ يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا)). فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ أُبَشِّرُ بِهِ النَّاسَ؟ قَالَ: ((لاَ تُبَشِّرْهُمْ فَيَتَّكِلُوا)).
[أطرافه في: ٥٩٦٧، ٦٢٦٧، ٦٥٠٠، ٧٣٧٣].

सवार थे, मैं उस पर आप (ﷺ) के पीछे बैठा हुआ था। उस गधे का नाम उ़फ़ैर था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ मुआ़ज़! क्या तुम्हें मा'लूम है कि अल्लाह तआ़ला का ह़क़ अपने बन्दों पर क्या है? और बन्दों का ह़क़ अल्लाह पर क्या है? मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह का ह़क़ बन्दों पर ये है कि उसकी इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएँ और बन्दों का ह़क़ अल्लाह तआ़ला पर ये है कि जो बन्दा अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो अल्लाह उसे अ़ज़ाब न दे। मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं इसकी लोगों को बशारत न दे दूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लोगों को इसकी बशारत न दो वरना वो ख़ाली ए'तिमाद कर बैठेंगे। (और नेक आमाल से ग़ाफ़िल हो जाएँगे) (दीगर मक़ाम : 5967, 6267, 6500, 7373)

तश्रीह : यहाँ गधे का नाम उ़फ़ैर मज़्कूर है, इसी से बाब का मतलब षाबित हुआ। इस ह़दीष़ से शिर्क की इंतिहाई मज़म्मत और तौह़ीद की इंतिहाई ख़ूबी भी षाबित हुई। क़ुर्आन मजीद की बहुत सी आयात में मज़्कूर है कि शिर्क इतना बड़ा गुनाह है जो शख़्स बह़ालते शिर्क दुनिया से चला गया, उसके लिये जन्नत क़त्अ़न ह़राम है। वो हमेशा के लिये नारे-दोज़ख़ में जलता रहेगा। स़द अफ़सोस कि कितने नाम-निहाद मुसलमान हैं जो क़ुर्आन मजीद पढ़ने के बावजूद अँधे होकर शिर्किया कामों में गिरफ़्तार हैं बल्कि बुतपरस्तों से भी आगे बढ़े हुए हैं। जो क़ब्रों में दफ़नशुदा बुज़ुर्गों से ह़ाजतें त़लब करते हैं, दूर-दराज़ से उनकी दुहाई देते और उनके नामों की नज़्रो-नियाज़ करते हैं और ऐसे ऐसे ग़लत़ ए'तिक़ादात बुज़ुर्गों के बारे में रखते हैं, जो ए'तिक़ाद खुले हुए शिर्किया ए'तिक़ाद हैं और जो बुतपरस्तों को ही ज़ैबा (शोभा) देते हैं मगर नामनिहाद मुसलमानों ने इस्लाम को बर्बाद कर दिया है। **ह़दाहुमुल्लाह इला स़िरात़िम् मुस्तक़ीम** तौह़ीद व शिर्क की तफ़्सीलात के लिये तक़्वियतुल् ईमान का मुत़ालआ़ निहायत ही अहम व ज़रूरी है।

٢٨٥٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ فَزَعٌ بِالْمَدِينَةِ، فَاسْتَعَارَ النَّبِيُّ ﷺ فَرَسًا لَنَا يُقَالُ لَهُ مَنْدُوبٌ فَقَالَ: ((مَا رَأَيْنَا مِنْ فَزَعٍ، وَإِنْ وَجَدْنَاهُ لَبَحْرًا)). [راجع: ٢٦٢٧]

2857. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया कि मैंने क़तादा से सुना कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया (एक रात) मदीना में कुछ ख़त़रा सा मह़सूस हुआ तो नबी करीम (ﷺ) ने हमारा (अबू त़लह़ा का जो आपके अ़ज़ीज़ थे) घोड़ा मंगवाया, घोड़े का नाम मन्दूब था। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़त़रा तो हमने कोई नहीं देखा अल्बत्ता इस घोड़े को हमने समुन्दर पाया। (राजेअ़ : 2627)

एक दफ़ा मदीना में रात के वक़्त लोगों को ऐसा ख़्याल हुआ कि अचानक किसी दुश्मन ने शहर पर ह़मला कर दिया है। आँह़ज़रत (ﷺ) ख़ुद बनफ़्से-नफ़ीस मन्दूब घोड़े पर सवार होकर अंधेरी रात में उसकी तह़क़ीक़ के लिये निकले मगर इस अफ़वाह को

आपने ग़लत पाया, यही वाक़िया यहाँ मज़्कूर है।

बाब 47 : इस बयान में कि कुछ घोड़े मन्हूस होते हैं

٤٧- بَابُ مَا يُذْكَرُ مِنْ شُوْمِ الْفَرَسِ

2858. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि नहूसत स़िर्फ़ तीन ही चीज़ों में होती है, घोड़े में, औरत में और घर में। (राजेअ़ : 2099)

٢٨٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّمَا الشُّؤْمُ فِي ثَلاَثَةٍ: فِي الْفَرَسِ، وَالْمَرْأَةِ، وَالدَّارِ)). [راجع: ٢٠٩٩]

तश्रीह : या'नी अगर नहूसत कोई चीज़ होती तो इन चीज़ों में होती जैसे आगे की ह़दीष़ से मा'लूम होता है। अबू दाऊद की रिवायत में है कि बदफ़ाली कोई चीज़ नहीं। अगर हो तो घर और घोड़े और औरत में होगी और इब्ने ख़ुज़ैमा और ह़ाकिम ने निकाला कि दो शख़्स ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के पास गये कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ये ह़दीष़ बयान करते हैं कि तीन चीज़ों में नहूसत होती है घोड़े, औरत और घर में। ये सुनकर ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) बहुत गुस्सा हुईं और कहने लगीं कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ऐसा नहीं फ़र्माया बल्कि आपने जाहिलियत वालों का ये ख़्याल बयान फ़र्माया था कि वो इन चीज़ों में नहूसत के क़ाइल थे। उ़लमा ने इसमें इख़्तिलाफ़ किया है कि वाक़ई इन चीज़ों में नहूसत कोई चीज़ है या नहीं, अकष़र ने इंकार किया है क्योंकि दूसरी स़ह़ीह़ ह़दीष़ में है कि बदशगुनी कोई चीज़ नहीं है न छूत कोई चीज़ न तीरह-तेज़ी और कुछ ने कहा है कि नहूसत से ये मुराद है कि घोड़ा बदज़ात (बिगड़ैल), काहिल (सुस्त), शरीर (बदमाश) हो; या औरत बदज़बान, बुरे रवैये वाली हो; घर तंग और बिना हवा-रोशनी का और गन्दा हो। अबू दाऊद की एक ह़दीष़ में है आप (ﷺ) से एक शख़्स ने बयान किया या रसूलल्लाह (ﷺ) हम एक घर में जाकर रहे तो हमारा शुमार कम हो गया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसे बुरे घर को छोड़ दो। (वह़ीदी)

ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **बाबु मा युज़्करू मिन शुऊमिल्फ़र्सि अय हल हुव अ़ला उमूमिही औ मख़्सूसुन बिबअ़ज़िल्ख़ैलि व हल हुव अ़ला ज़ाहिरिही औ मा दल्ल व क़द अशार बिईरादि हदीष़ि सहलिन बअ़द हदीष़िब्नि उ़मर इला अन्नल्हस्रल्लज़ी फी हदीष़ि इब्नि उ़मर लैस अ़ला जाहिरिही व तर्जुमतुल्बाबि अल्लज़ी बअ़दहू व हियल्ख़ैलु अष्षलाषतु इला अन्न शुऊम मख़्सूसुन बिबअ़ज़िल्ख़ैलि दून बअ़ज़िन व कुल्लु ज़ालिक मिन लतीफ़ि नज़्रिही व दक़ीक़ि फ़िक्रिही क़ालल्किरमानी फ़इन कुल्लु अश्शुऊमु कद यकुन फी ग़ैरिहा फ़मा मअनल्हस्रि कालल्ख़त्ताबी अल्बर्कतु वश्शऊमु अ़लामतानि लिमा युस़ीबुल्इन्सानु मिनल्ख़ैरि वश्शर्रि व ला यकूनु शैउन मिन ज़ालिक इल्ला बिक़ज़ाइल्लाहि इला आख़िरिही.** (फ़त्ह) या'नी बाब जिसमें घोड़े की नहूसत का ज़िक्र है वो अपने उ़मूम पर है या उससे कुछ घोड़े मुराद हैं और कहा वो ज़ाहिर पर है या उसकी तावील की गई है और ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ह़दीष़े इब्ने उ़मर (रज़ि.) के बाद ह़दीष़े सहल लाकर इशारा किया है कि ह़दीष़े इब्ने उ़मर का ह़स्र अपने ज़ाहिर पर नहीं है और तर्जुमतुल बाब जो बाद में है जिसमें है कि घोड़ा तीन क़िस्म के आदमियों के लिये होता है। इससे मा'लूम होता है कि नहूसत आ़म नहीं है बल्कि कुछ घोड़ों के साथ ख़ास़ होती है और ये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की बारीक नज़र है और आप (रह.) की गहरी फ़िक्र है (जो एक मुज्तहिदे मुत्लक़ की शान के ऐन लायक़ है)। अगर कोई कहे कि नहूसत उसके ग़ैर में ह़स्र के मा'नी में आती है तो उसके जवाब में ख़त्ताबी ने कहा कि बरकत और नहूसत दो ऐसी अ़लामतें हैं जो ख़ैर और शर से इंसान को पहुँचती हैं और उनमें से बग़ैर अल्लाह के फ़ैसले के कोई चीज़ नहीं हो सकती और मज़्कूरा तीनों चीज़ें मह़ल और ज़ुरूफ़ हैं। उनमें से कोई चीज़ भी त़बई बरकत या नहूसत नहीं रखती है। हाँ, अगर उनको इस्ते'माल करते वक़्त ऐसी चीज़

पेश आ जाए तो वो चीज़ उनकी तरफ़ मन्सूब हो जाती है, मकान में सुकूनत (रिहाइश) करनी पड़ती है, औरत के साथ ज़िन्दगी गुज़रान करना ज़रूरी हो जाता है और कभी ज़रूरत के लिये घोड़ा पालना पड़ता है तो उनके साथ कुछ मौक़ों पर बरकत या नहूसत इज़ाफ़ी चीज़ें हैं वरना जो कुछ होता है सिर्फ़ अल्लाह ही के हुक्म से होता है। ये भी कहा गया है कि औरत की नहूसत से ये मुराद है कि वो बांझ रह जाए और घोड़े की नहूसत से मुराद ये कि कभी उस पर चढ़कर जिहाद का मौक़ा नसीब न हो और घर की ये कि कोई पड़ौसी बुरा मिल जाए और ये भी सब कुछ अल्लाह के क़ज़ा व क़द्र के तहत होता है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इस बहष का ख़ात्मा इस आयत पर किया, **मा असाब मिम् मुसीबतिन फ़िल् अरज़ि वला फ़ी अन्फ़ुसिकुम इल्ला फ़ी किताबिन मिन क़ब्लि अन नब्रअहा** (अल् हदीद : 22) या'नी ज़मीन में या तुम्हारे नफ़्सों में तुम पर कोई भी मुसीबत आए वो सब आने से पहले ही अल्लाह की किताब लोहे महफ़ूज़ में दर्जशुदा हैं, उसके बग़ैर कुछ भी नहीं हो सकता।

2859. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से रिवायत किया, उन्होंने अबू हाज़िम बिन दीनार से, उन्होंने सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) से रिवायत किया कि रसूले अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया नहूसत अगर होती तो वो घोड़े, औरत और मकान में होती। (दीगर मक़ाम : 5095)

٢٨٥٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي حَازِمِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنْ كَانَ فِي شَيْءٍ فَفِي الْمَرْأَةِ وَالْفَرَسِ وَالْمَسْكَنِ)).

[طرفه في : ٥٠٩٥].

बाब 48 : घोड़े के रखने वाले

तीन तरह के होते हैं और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है, और घोड़े, ख़च्चर और गधे (अल्लाह तआ़ला ने पैदा किये) ताकि तुम उन पर सवार भी हुआ करो और ज़ीनत भी रहे। (अन नह्ल : 8)

٤٨ - بَابُ الْخَيْلُ لِثَلاَثَةٍ، وَقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً﴾ [النحل : ٨]

इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये आयत लाकर इस तरफ़ इशारा किया कि अगर ज़ैब व ज़ीनत के लिये भी कोई घोड़ा रखे तो जाइज़ है बशर्ते कि तकब्बुर और घमण्ड न करे और गुनाह का काम उनसे न ले।

2860. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अबू सॉलेह सिमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया घोड़े के मालिक तीन तरह के लोग होते हैं। कुछ लोगों के लिये वो बाइ़षे अज्रो-षवाब हैं, कुछ के लिये वो सिर्फ़ पर्दा हैं और कुछ के लिये वबाले जान हैं। जिसके लिये घोड़ा अज्रो-षवाब का बाइ़ष है ये वो शख़्स है जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद की निय्यत से उसे पालता है फिर जहाँ ख़ूब चरी होती या (ये फ़र्माया कि) किसी शादाब जगह उसकी रस्सी को ख़ूब लम्बी

٢٨٦٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُسْلِمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْلُ لِثَلاَثَةٍ: لِرَجُلٍ أَجْرٌ. ولرجلٍ سِتْرٌ، وَعَلَى رَجُلٍ وِزْرٌ. فَأَمَّا الَّذِي لَهُ أَجْرٌ فَرَجُلٌ رَبَطَهَا فِي سَبِيلِ اللهِ فَأَطَالَ فِي مَرْجٍ أَوْ رَوْضَةٍ، فَمَا أَصَابَتْ فِي طِيَلِهَا ذَلِكَ مِنَ الْمَرْجِ أَوِ

الرَّوْضَةِ كَانَتْ لَهُ حَسَنَاتٍ، وَلَوْ أَنَّهَا قَطَعَتْ طِيَلَهَا فَاسْتَنَّتْ شَرَفًا أَوْ شَرَفَيْنِ كَانَتْ أَرْوَاثُهَا وَآثَارُهَا حَسَنَاتٍ لَهُ. وَلَوْ أَنَّهَا مَرَّتْ بِنَهْرٍ فَشَرِبَتْ مِنْهُ وَلَمْ يُرِدْ أَنْ يَسْقِيَهَا كَانَ ذَلِكَ حَسَنَاتٍ لَهُ. الرَّجُلُ الَّذِي هِيَ عَلَيْهِ وِزْرٌ فَهُوَ رَجُلٌ رَبَطَهَا فَخْرًا وَرِيَاءً وَنِوَاءً لأَهْلِ الإِسْلاَمِ فَهِيَ وِزْرٌ عَلَى ذَلِكَ)). وَسُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنِ الْحُمُرِ فَقَالَ: ((مَا أُنْزِلَ عَلَيَّ فِيهَا إِلاَّ هَذِهِ الآيَةُ الْجَامِعَةُ الْفَاذَّةُ: ﴿فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ، وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ﴾)). [راجع: ٢٣٧١]

करके बाँधता है (ताकि चारों त़रफ़ से चर सके) तो घोड़ा उसकी चराई की जगह से या उस शादाब जगह से अपनी रस्सी में बँधा हुआ जो कुछ भी खाता-पीता है मालिक को उसकी वजह से नेकियाँ मिलती हैं और अगर वो घोड़ा अपनी रस्सी तुड़ाकर एक ज़ग़न या दो ज़ग़न लगाए तो उसकी लीद और उसके क़दमों के निशानों में मालिक के लिये नेकियाँ हैं और अगर वो घोड़ा नहर से गुज़रे और उसमे से पानी पी ले तो अगरचे मालिक ने पानी पिलाने का इरादा न किया हो फिर भी उससे उसे नेकियाँ मिलती हैं। दूसरा शख़्स वो है जो घोड़े को फ़ख़्र, दिखावे और अहले इस्लाम की दुश्मनी में बाँधता है तो ये उसके लिये वबाले जान है और रसूलुल्लाह (ﷺ) से गधों के बारे में पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझ पर उस जामेअ़ और मुंफ़रिद आयत के सिवा उनके बारे में और कुछ नाज़िल नहीं हुआ कि जो कोई एक ज़र्रा बराबर भी नेकी करेगा उसका बदला पाएगा और जो कोई ज़र्रा बराबर बुराई करेगा उसका बदला पाएगा। (राजेअ़ : 2371)

इस रिवायत में उसका ज़िक्र छोड़ दिया, जिसके लिये ष़वाब है न अ़ज़ाब। दूसरी रिवायत में उसका बयान है कि वो शख़्स जो अपनी तवंगरी की वजह से और इसलिये कि किसी से सवारी मांगना न पड़े बाँधे फिर अल्लाह का ह़क़ फ़रामोश न करे या'नी थके मांदे मुह़ताज को ज़रूरत के वक़्त सवार करा दे, कोई मुसलमान आरियतन मांगे तो उसको दे दे। आयते मज़्कूरा को बयान फ़र्माकर आप (ﷺ) ने लोगों को इस्तिम्बाते अह़काम का त़रीक़ा बतलाया कि तुम लोग आयत और अह़ादीष़ से इस्तिदलाल कर सकते हो।

٤٩- بَابُ مَنْ ضَرَبَ دَابَّةَ غَيْرِهِ فِي الْغَزْوِ

बाब 49 : जिहाद में दूसरे जानवर को मारना

٢٨٦١- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا أَبُو عُقَيْلٍ حَدَّثَنَا أَبُو الْمُتَوَكِّلِ النَّاجِيُّ قَالَ: أَتَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ الأَنْصَارِيَّ فَقُلْتُ لَهُ: حَدِّثْنِي بِمَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ قَالَ: سَافَرْتُ مَعَهُ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ- قَالَ أَبُو عَقِيلٍ: لاَ أَدْرِي غَزْوَةً أَوْ عُمْرَةً - فَلَمَّا أَنْ أَقْبَلْنَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَتَعَجَّلَ إِلَى أَهْلِهِ فَلْيُعَجِّلْ)). قَالَ جَابِرٌ :

2861. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अ़क़ील व बिश्र बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुल मुतवक्किल नाजी (अ़ली बिन दाऊद) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैं जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि आप (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से जो कुछ सुना है, उनमें मुझसे भी कोई ह़दीष़ बयान कीजिए। उन्होंने बयान फ़र्माया कि मैं हुज़ूर (ﷺ) के साथ एक सफ़र में शरीक था। अबू अ़क़ील रावी ने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं (ये सफ़र) जिहाद के लिये था या उ़मरह के लिये (वापस होत

فاقبلنا وانا على جمل لي أرمك ليس فيه شية والناس خلفي، فبينا أنا كذلك إذ قام علي فقال لي النبي ﷺ : ((يا جابر استمسك)). فضربه بسوطه ضربة، فوثب البعير مكانه. فقال: ((أتبيع الجمل؟)) قلت: نعم. فلما قدمنا المدينة ودخل النبي ﷺ المسجد في طوائف أصحابه، فدخلت إليه وعقلت الجمل في ناحية البلاط فقلت له: هذا جملك. فخرج فجعل يطيف بالجمل ويقول : ((الجمل جملنا)). فبعث النبي ﷺ أواق من ذهب فقال: ((أعطوها جابرا)). ثم قال: ((استوفيت الثمن؟)) قلت: نعم. قال: ((الثمن والجمل لك)). [راجع: ٤٤٣]

हुए) जब (मदीना मुनव्वरा) दिखाई देने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स अपने घर जल्दी जाना चाहे वो जा सकता है। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हम आगे बढ़े। मैं अपने एक स्याही सुर्ख़ ऊँट बेदाग़ पर सवार था दूसरे लोग मेरे पीछे रह गए, मैं उसी तरह चल रहा था कि ऊँट रुक गया (थककर) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, जाबिर! अपना ऊँट थाम ले, आप (ﷺ) ने अपने कोड़े से ऊँट को मारा, ऊँट कूदकर चल निकला फिर आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, ये ऊँट बेचोगे? मैंने कहा हाँ! जब मदीना पहुँचे और नबी करीम (ﷺ) अपने अस्हाब के साथ मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए तो मैं भी आप (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचा और बलात़ के एक कोने में मैंने ऊँट को बाँध दिया और आँहज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया ये आप (ﷺ) का ऊँट है। फिर आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और ऊँट को घुमाने लगे और फ़र्माया कि ऊँट तो तुम्हारा ही है, उसके बाद आप (ﷺ) ने चन्द औक़िया सोना मुझे दिलवाया और पूछा तुमको क़ीमत पूरी मिल गई। मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया अब क़ीमत और ऊँट (दोनों ही) तुम्हारे हैं। (राजेअ़ : 443)

इमाम अह़मद की रिवायत में यूँ है आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़रा इसको बिठा, मैंने बिठाया फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये लकड़ी तू मुझको दे, मैंने दी, आप (ﷺ) उस लकड़ी से उसको कई टूँसे दिये, उसके बाद फ़र्माया कि सवार हो जा। मैं सवार हो गया। बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है कि आप (ﷺ) ने पराये ऊँट या'नी जाबिर (रज़ि.) के ऊँट को मारा। बलात़ वो पत्थर का फ़र्श जो मस्जिदे नबवी के सामने था। ये सफ़र ग़ज़्व-ए-तबूक का था। इब्ने इस्हाक़ ने ग़ज़्व-ए-ज़ातुर्रिक़ाअ़ बतलाया है।

٥٠- بَابُ الرُّكُوبِ عَلَى الدَّابَّةِ الصَّعْبَةِ وَالْفُحُولَةِ مِنَ الْخَيْلِ

बाब 50 : सख़्त सरकश जानवर और नर घोड़े की सवारी करना

وَقَالَ رَاشِدُ بْنُ سَعْدٍ: كَانَ السَّلَفُ يَسْتَحِبُّونَ الْفُحُولَةَ لأَنَّهَا أَجْرَى وَأَجْسَرُ.

और राशिद बिन सअ़द ताबेई ने बयान किया कि स़ह़ाबा नर घोड़े की सवारी पसन्द किया करते थे क्योंकि वो दौड़ता भी तेज़ है और बहादुर भी बहुत होता है।

ऐनी और ह़ाफ़िज़ और क़स्तलानी; किसी ने भी ये बयान नहीं किया कि ये अष़र किसने वस्ल किया। एक रिवायत में यूँ है कि स़ह़ाबा ह़ालते ख़ौफ़ में मादयान को बेहतर समझते थे और सफ़ूफ़ और क़िलों पर ह़मला करने के लिये नर घोड़े को। ऐनी ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) से हमेशा नर घोड़े पर सवारी मन्क़ूल है। इसी त़रह़ स़ह़ाबा में सिर्फ़ सईद से ये मन्क़ूल है कि वो मादयान पर सवार हुए थे।

2862. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि मदीना में (एक रात) कुछ डर और घबराहट हुई तो नबी करीम (ﷺ) ने अबू त़लहा (रज़ि.) का एक घोड़ा मांग लिया। उस घोड़े का नाम मन्दूब था। आप (ﷺ) उस पर सवार हुए और वापस आकर फ़र्माया कि डर की तो कोई बात हमने नहीं देखी अल्बत्ता ये घोड़ा क्या है दरिया है।

٢٨٦٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ بِالْمَدِينَةِ فَزَعٌ، فَاسْتَعَارَ النَّبِيُّ ﷺ فَرَسًا لأَبِي طَلْحَةَ يُقَالُ لَهُ مَنْدُوبٌ، فَرَكِبَهُ وَقَالَ: ((مَا رَأَيْنَا مِنْ فَزَعٍ، وَإِنْ وَجَدْنَا لَبَحْرًا)).

इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब के तर्जुमे से मुश्किल है क्योंकि फ़रस तो अ़रबी ज़ुबान में नर और मादा दोनों को कहते हैं। कुछ ने कहा कि **इन्ना वजदनाहू** में जो ज़मीर मज़्कूर है उससे ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि वो नर घोड़ा था। अब बाब का ये मत़लब कि शरीर जानवर पर सवार होना इससे निकाला कि नर अकष़र मादयान की बनिस्बत ज़्यादा तेज़ और शरीर होते हैं, अगरचे कभी मादा, नर से भी ज़्यादा शरीर और सख़्त होती है। (वह़ीदी)

बाब 51 : (ग़नीमत के माल से) घोड़े का ह़िस्सा क्या मिलेगा?

٥١- بَابُ سِهَامِ الْفَرَسِ

2863. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया अबू उसामा से, उन्होंने उ़बैदुल्लाह उ़मरी से, उन्होंने नाफ़ेअ़ से और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (माले ग़नीमत से) घोड़े के दो ह़िस्से लगाए थे और उसके मालिक का एक ह़िस्सा। (दीगर मक़ाम : 4228)

٢٨٦٣- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ عَنْ أَبِي أُسَامَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ جَعَلَ لِلْفَرَسِ سَهْمَيْنِ وَلِصَاحِبِهِ سَهْمًا)). [طرفه في: ٤٢٢٨].

इमाम मालिक (रह.) ने फ़र्माया कि अ़रबी और तुर्की घोड़े सब बराबर हैं क्योंकि अल्लाह ने फ़र्माया कि और घोड़ों और ख़च्चरों और गधों को सवारी के लिये बनाया और हर सवार को एक ही घोड़े का ह़िस्सा दिया जाएगा। (गो उसके पास कई घोड़े हों)

وَقَالَ مَالِكٌ: يُسْهَمُ لِلْخَيْلِ وَالْبَرَاذِيْنِ مِنْهَا لِقَولِهِ تَعَالَى: ﴿وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوهَا﴾ [النحل: ٨] وَلاَ يُسْهَمُ لأَكْثَرَ مِنْ فَرَسٍ.

तश्रीह : तो अल्लाह तआ़ला ने अ़रबी घोड़े की तख़्सीस़ नहीं की। अ़रबी और तुर्की सब घोड़ों को बराबर ह़िस्सा मिलेगा या'नी सवार को तीन ह़िस्से मिलेंगे, पैदल को एक ह़िस्सा। अकष़र इमामों और अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है।

बाब 52 : अगर कोई लड़ाई में दूसरे के जानवर को खींचकर चलाए

٥٢- بَابُ مَنْ قَادَ دَابَّةَ غَيْرِهِ فِي الْحَرْبِ

2864. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे सहल बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने कि एक शख़्स़ ने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से पूछा क्या हुनैन की

٢٨٦٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ: ((قَالَ رَجُلٌ لِلْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ:

लड़ाई में आप लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) को छोड़कर चले गए थे? बरा (रज़ि.) ने कहा हाँ, लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रार नहीं हुए थे। हवाज़िन के लोग (जिनसे उस लड़ाई में मुक़ाबला था) बड़े तीरंदाज़ थे, जब हमारा उनका सामना हुआ तो शुरू में हमने हमला करके उन्हें शिकस्त दे दी, फिर मुसलमान माले ग़नीमत पर टूट पड़े और दुश्मन ने तीरों की हम पर बारिश कर दी फिर भी रसूले करीम (ﷺ) अपनी जगह से नहीं हटे। मैंने देखा कि आप (ﷺ) अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे, अबू सुफ़यान बिन हारिष बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) उसकी लगाम थामे हुए थे और आप (ﷺ) ये शे'र फ़र्मा रहे थे कि मैं नबी हूँ इसमें झूठ का कोई दख़ल नहीं, मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ। (दीगर मक़ाम : 2874, 2930, 3042, 4315, 4316, 4317)

أفررتم عن رسول الله ﷺ يوم حنين؟ قال: لكن رسول الله ﷺ لم يفر، إن هوازن كانوا قوما رماة، وإنا لما لقيناهم حملنا عليهم فانهزموا، فأقبل المسلمون على الغنائم، فاستقبلونا بالسهام، فأما رسول الله ﷺ فلم يفر، فلقد رأيته وإنه لعلى بغلته البيضاء، وإن أبا سفيان آخذ بلجامها والنبي ﷺ يقول: ((أنا النبي لا كذب، أنا ابن عبد المطلب)).
[أطرافه في: ٢٨٧٤، ٢٩٣٠، ٣٠٤٢، ٤٣١٥، ٤٣١٦، ٤٣١٧].

या'नी मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूँ और अल्लाह ने जो फ़तह व नुसरत का वा'दा किया था वो बरहक़ है, इसलिये मैं भाग जाऊँ? ये नहीं हो सकता। मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने इसका तर्जुमा शे'र में यूँ किया है :-

हूँ मैं पैग़म्बर बिला शक व ख़तर और अ़ब्दुल मुत्तलिब का हूँ पिसर

मज़ीद तफ़्सील जंगे हुनैन के हालात में आएगी। इंशाअल्लाह तआ़ला!

बाब 53 : जानवर पर रकाब या ग़र्ज़ लगाना

٥٣- باب الركاب، والغرز للدابة

2865. हमसे इ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे इ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन इ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब अपना पाये मुबारक ग़र्ज़ (रकाब) में डाला और ऊँटनी आप (ﷺ) को लेकर सीधी उठ गई तो आप (ﷺ) ने मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ह के पास लब्बैक कहा (एहराम बाँधा)। (राजेअ़ : 166)

٢٨٦٥- حدثنا عبيد بن إسماعيل عن أبي أسامة عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر رضي الله عنهما ((عن النبي ﷺ أنه كان إذا أدخل رجله في الغرز واستوت به ناقته قائمة أهل من عند مسجد ذي الحليفة)). [راجع: ١٦٦]

ग़र्ज़ भी रकाब ही को कहते हैं, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि रकाब अगर लोहे का हो या लकड़ी का तो उसे रकाब कहते हैं लेकिन अगर चमड़े का हो तो उसे ग़र्ज़ कहते हैं। कुछ ने कहा रकाब घोड़े में होती है और ग़र्ज़ ऊँट में।

बाब 54 : घोड़े की नंगी पीठ पर सवार होना

٥٤- باب ركوب الفرس العري

2866. हमसे अ़म्र बिन औ़न ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) घोड़े की नंगी पीठ पर

٢٨٦٦- حدثنا عمرو بن عون حدثنا حماد عن ثابت عن أنس رضي الله عنه

जिस पर ज़ीन नहीं थी, सवार होकर सहाबा से आगे निकल गए थे। आँहुज़ूर (ﷺ)) की गर्दन मुबारक में तलवार लटक रही थी। (राजेअ : 2627)

((اسْتَقْبَلَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى فَرَسٍ عُرْيٍ مَا عَلَيْهِ سَرْجٌ فِي عُنُقِهِ سَيْفٌ)).

[راجع: ٢٦٢٧]

सुब्हानल्लाह! ये हुस्न व जमाल और ये शुजाअत और बहादुरी नंगी पीठ घोड़े पर सवारी करना बड़े ही शहसवारों का काम है और ये हक़ीक़त है कि इस फ़न में आँहज़रत (ﷺ) यकताए रोज़गार थे। बारहा ऐसे मौक़े आए कि आप (ﷺ) ने बेहतरीन शहसवारी का षुबूत पेश किया। सद अफ़सोस कि आजकल अवाम तो दरकिनार ख़वास या'नी उलमा व मशाइख़ ने ऐसी अहम सुन्नतों को बिलकुल छोड़ दिया है। ख़ासकर उलम-ए-किराम में बहुत ही कम ऐसे मिलेंगे जो ऐसे फ़ुनूने मस्नूना से उल्फ़त रखते हों हालाँकि ये फ़ुनून क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में मुसलमानों के अवाम व ख़वास में बहुत ज़्यादा तरवीज के क़ाबिल हैं। आजकल निशानेबाज़ी जो बन्दूक़ से सिखाई जाती है वो भी इसी में दाख़िल है और फ़न्ने हर्ब के बारे में जो नई-ईजादात हैं, उन सबको उस पर क़यास किया जा सकता है।

बाब 55 : सुस्त रफ़्तार घोड़े पर सवार होना

٥٥- بَابُ الْفَرَسِ الْقَطُوفِ

2867. हमसे अब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक मर्तबा (रात में) अहले मदीना को दुश्मन का ख़तरा हुआ तो नबी करीम (ﷺ) अबू तलहा (रज़ि.) के एक घोड़े (मन्दूब) पर सवार हुए, घोड़ा सुस्त रफ़्तार था या (रावी ने यूँ कहा कि) उसकी रफ़्तार में सुस्ती थी, फिर जब आप (ﷺ) वापस हुए तो फ़र्माया कि) इसकी रफ़्तार में सुस्ती थी, फिर जब आप (ﷺ) वापस हुए तो फ़र्माया कि हमने तो तुम्हारे इस घोड़े को दरिया पाया (ये बड़ा ही तेज़ रफ़्तार है) चुनाँचे उसके बाद कोई घोड़ा उससे आगे नहीं निकल सकता था। (राजेअ : 2627)

٢٨٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((إِنَّ أَهْلَ الْمَدِيْنَةِ فَزِعُوا مَرَّةً فَرَكِبَ النَّبِيُّ ﷺ فرسا لأَبِي طَلْحَةَ كَانَ يَقْطِفُ - أَوْ كَانَ فِيْهِ قِطَافٌ - فَلَمَّا رَجَعَ قَالَ: ((وَجَدْنَا فَرَسَكُمْ هَذَا بَحْرًا))، فَكَانَ بَعْدَ ذَلِكَ لاَ يُجَارَى)). [راجع: ٢٦٢٧]

ये घोड़ा बेहद सुस्त रफ़्तार था लेकिन आँहज़रत (ﷺ) की सवारी की बरकत से ऐसा तेज़ और चालाक हो गया कि कोई घोड़ा उसके बराबर नहीं चल सकता था। आप उस सुस्त रफ़्तार घोड़े पर सवार हुए, इसी से बाब का मतलब निकला। आँहज़रत (ﷺ) ने ये इक़्दाम फ़र्माकर आइन्दा आने वाले ख़ुलफ़ा-ए-इस्लाम के लिये एक मिषाल क़ायम फ़र्माई ताकि वो सुस्तुल वजूद बनकर न रह जाएँ बल्कि हर मौक़ा पर बहादुरी व जुर्अत व मुक़ाबला में अवाम से आगे बढ़ने की कोशिश करते रहें।

बाब 56 : घुड़दौड़ का बयान

٥٦- بَابُ السَّبْقِ بَيْنَ الْخَيْلِ

2868. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने तैयार किये हुए घोड़ों की दौड़ मुक़ामे हफ़्याअ से षनिय्यतुल विदाअ तक कराई थी और जो घोड़े तैयार नहीं किये गये थे उनकी दौड़

٢٨٦٨- حَدَّثَنَا قَبِيْصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَجْرَى النَّبِيُّ ﷺ مَا ضُمِّرَ مِنَ الْخَيْلِ مِنَ الْحَفْيَاءِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ، وَأَجْرَى مَا لَمْ يُضَمَّرْ مِنَ الثَّنِيَّةِ

ष़निय्यतुल विदाअ़ से मस्जिदे ज़ुरैक़ तक कराई थी। इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि घुड़दौड़ में शरीक होने वालों में मैं भी था। अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया कि ह़फ़्याअ से ष़निय्यतुल विदाअ़ तक पाँच मील का फ़ास़ला है और ष़निय्यतुल विदाअ़ से मस्जिदे ज़ुरैक़ स़िर्फ़ एक मील की दूरी पर है। (राजेअ़ : 420)

إِلَى مَسْجِدِ بَنِي زُرَيْقٍ. قَالَ ابْنُ عُمَرَ: وَكُنْتُ فِيمَنْ أَجْرَى)). قَالَ عَبْدُ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: بَيْنَ الْحَفْيَاءِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ خَمْسَةُ أَمْيَالٍ أَوْ سِتَّةٌ، وَبَيْنَ ثَنِيَّةِ إِلَى مَسْجِدِ بَنِي زُرَيْقٍ مِيلٌ. [راجع: ٤٢٠]

ह़फ़्याअ और ष़निय्यतुल विदाअ़ दोनों मुक़ामों के नाम हैं, मदीना से बाहर तैयार किये गये या'नी उनका इज़्मार किया गया। इज़्मार उसको कहते हैं कि पहले घोड़े को ख़ूब खिला पिलाकर मोटा किया जाए फिर उसका दाना चारा कम कर दिया जाए और कोठरी में झोल डालकर बन्द रहने दें ताकि पसीना ख़ूब करे और उसका गोश्त कम हो जाए और शर्त में दौड़ने के लायक़ हो जाए।

घुड़दौड़ के बारे में ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) फ़र्माते हैं, **व क़द अज्मअ़ल्उलमाउ अ़ला जवाज़िल्मुसाबक़ति बिग़ैरि इवज़िन लाकिन क़स्सरहा मालिक वश्शाफ़िइ अलल्ख़ुफ़्फ़ि वल्हाफ़िरि वन्नस्लि व ख़स्सहू बअ़्ज़ुल्उलमाइ बिल्ख़ैलि व अजाज़हू अ़ता फ़ी कुल्लि शैइन.** (फ़त्हुल बारी) या'नी उ़लम-ए-इस्लाम ने दौड़ कराने के जवाज़ पर इत्तिफ़ाक़ किया है जिसमें बत़ौरे शर्त कोई मुआवज़ा मुक़र्रर न किया गया हो लेकिन इमाम शाफ़िई और इमाम मालिक ने इस दौड़ को ऊँट और घोड़े और तीरंदाज़ी के साथ ख़ास़ किया है और कुछ उ़लमा ने उसे सिर्फ़ घोड़े के साथ ख़ास़ किया है और अ़ता ने इस मुसाबक़त को हर चीज़ में जाइज़ रखा है। एक रिवायत में है, **ला सबक़ इल्ला फ़ी ख़ुफ़्फ़िन औ हाफ़िरिन औ नस्लिन** या'नी आगे बढ़ने की शर्त तीन चीज़ों में दुरुस्त है, ऊँट और घोड़े और तीरंदाज़ी में और एक रिवायत में यूँ है, **मन अदख़ल फ़र्सन बैन फ़र्सैनि फ़इन कान यूमिनु अय्यस्बक़ फ़ला ख़ैर फ़ीहि लुग़ातुल्हदीष़.** जिस शख़्स़ ने एक घोड़ा शर्त के दो घोड़ों में शरीक किया अगर उसको ये यक़ीन है कि ये घोड़ा उन दोनों से आगे बढ़ जाएगा तब तो बेहतर नहीं अगर ये यक़ीन नहीं तो शर्त जाइज़ है। इस तीसरे शख़्स़ को मुह़ल्लिल कहते हैं या'नी शर्त को ह़लाल कर देने वाला मज़ीद तफ़्स़ील के लिये देखो। (लुग़ातुल ह़दीष़ हर्फ़ सीन-स़ाद :30)

बाब 57 : घुड़दौड़ के लिये घोड़ों को तैयार करना

٥٧- بَابُ إِضْمَارِ الْخَيْلِ لِلسَّبْقِ

कुछ ने बाब का तर्जुमा का ये मत़लब रखा है कि शर्त के लिये इज़्मार का ज़रूरी न होना। इस सूरत में बाब की ह़दीष़ बाब से मुताबक़त हो जाएगी।

2969. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उन घोड़ों की दौड़ कराई थी जिन्हें तैयार नहीं किया गया था और दौड़ की ह़द ष़निय्यतुल विदाअ़ से मस्जिदे बनी ज़ुरैक़ तक रखी गई थी और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने भी इसमें शिर्कत की थी। अबू अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि अमदा (ह़दीष़ में) ह़द और इंतिहा के मा'नी में है (क़ुर्आन मजीद में है) (फ़त़ाल अ़लैहिमुल अमदु) जो इसी मा'नी में है। (राजेअ़ : 420)

٢٨٦٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ سَابَقَ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي لَمْ تُضَمَّرْ، وَكَانَ أَمَدُهَا مِنَ الثَّنِيَّةِ إِلَى مَسْجِدِ بَنِي زُرَيْقٍ، وَأَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ سَابَقَ بِهَا)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ أَمَدًا غَايَةً ﴿فَطَالَ عَلَيْهِمُ الأَمَدُ﴾ الحديد: ١٩ [راجع: ٤٢٠]

इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब का तर्जुमा से मुश्किल है। बाब में तो इज़्मार शुदा घोड़ों की शर्त मज़्कूर है और ह़दीष़ में उन घोड़ों का ज़िक्र है जिनका इज़्मार नहीं हुआ। इसका जवाब ये है कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की आदत है कि ह़दीष़ का एक लफ़्ज़ लाकर उसके दूसरे लफ़्ज़ की त़रफ़ इशारा कर देते हैं, इस ह़दीष़ में दूसरा लफ़्ज़ है कि जिन घोड़ों का इज़्मार हुआ था आपने उनकी शर्त कराई, ह़फ़्याअ से ष़निय्यतुल विदाअ़ तक जैसे ऊपर गुज़र चुका है।

बाब 58 : तैयार किये हुए घोड़ों की दौड़ की ह़द कहाँ तक हो

٥٨- بَابُ غَايَةِ السَّبْقِ لِلْخَيْلِ الْمُضَمَّرَةِ

2870. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे मुआ़विया ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उन घोड़ों की दौड़ कराई जिन्हें तैयार किया गया था। ये दौड़ मुक़ामे ह़फ़्याअ से शुरू कराई और ष़निय्यतुल विदाअ़ उसकी आख़िरी ह़द थी (अबू इस्ह़ाक़ रावी ने बयान किया कि) मैंने अबू मूसा से पूछा उसका फ़ास़ला कितना था? तो उन्होंने बताया कि छः या सात मील और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन घोड़ों की भी दौड़ कराई जिन्हें तैयार नहीं किया गया था। ये दौड़ मुक़ामे ह़फ़्याअ से शुरू कराई और ष़निय्यतुल विदाअ़ उसकी आख़िरी ह़द थी (अबू इस्ह़ाक़ रावी ने बयान किया कि) मैंने अबू मूसा से पूछा उसका फ़ास़ला कितना था? तो उन्होंने बताया कि छ : या सात मील और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन घोड़ों की भी दौड़ कराई जिन्हें तैयार नहीं किया गया था। ऐसे घोड़ों की दौड़ ष़निय्यतुल विदाअ़ से शुरू हुई और ह़द मस्जिदे बनी ज़ुरैक़ थी। मैंने पूछा उसमे कितना फ़ास़ला था? उन्होंने कहा कि तक़्रीबन एक मील। इब्ने उ़मर (रज़ि.) भी दौड़ में शिर्कत करने वालों में थे। (राजेअ़ : 420)

٢٨٧٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((سَابَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي قَدْ أُضْمِرَتْ، فَأَرْسَلَهَا مِنَ الْحَفْيَاءِ، وَكَانَ أَمَدُهَا ثَنِيَّةَ الْوَدَاعِ. فَقُلْتُ لِمُوسَى: فَكَمْ كَانَ بَيْنَ ذَلِكَ؟ قَالَ: سِتَّةُ أَمْيَالٍ أَوْ سَبْعَةٌ. وَسَابَقَ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي لَمْ تُضَمَّرْ، فَأَرْسَلَهَا مِنْ ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ، وَكَانَ أَمَدُهَا مَسْجِدُ بَنِي زُرَيْقٍ. قُلْتُ فَكَمْ بَيْنَ ذَلِكَ؟ قَالَ: مِيلٌ أَوْ نَحْوُهُ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ مِمَّنْ سَابَقَ فِيهَا)). [راجع: ٤٢٠]

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्स़दे बाब ये है कि इज़्मार शुदा घोड़ों की दौड़ की ह़द छः से सात मील है जैसा कि मुक़ामे ह़फ़्याअ से ष़निय्यतुल विदाअ़ का फ़ास़ला है और ग़ैर इज़्मार शुदा घोड़ों की ह़द तक़्रीबन एक मील जो ष़निय्यतुल विदाअ़ और मस्जिदे बनी ज़ुरैक़ की ह़द थी। एक मुतमद्दिन हुकूमत के लिये इस मशीनी दौर में भी घोड़े की बड़ी अहमियत है। अ़रबी नस्ल के घोड़े जो फ़ौक़ियत रखते हैं वो मुह़्ताज तशरीह़ नहीं। ज़मान-ए-रिसालत में घोड़ों को सधाने के लिये ये मुक़ाबल की दौड़ हुआ करती थी मगर आजकल रेस की दौड़ जो आज आ़म त़ौर पर शहरों में कराई जाती है और घोड़ों पर बड़ी-बड़ी रक़म बत़ौर जूएबाज़ी के लगाई जाती हैं ये खुला हुआ जुआ है जो शरअ़न क़त़्अ़न हराम है और किसी पर मख़्फ़ी नहीं। स़द अफ़सोस कि आ़म मुसलमानों ने आजकल ह़लाल व ह़राम की तमीज़ ख़त्म कर दी है और कितने ही मुसलमान उनमें ह़िस्सा लेते हैं और तबाह होते हैं। मुख़्तस़र ये कि आजकल रेस की घुड़दौड़ में शिर्कत करना बिलकुल ह़राम है, अल्लाह हर मुसलमान को इस तबाही से बचाए आमीन।

बाब 59 : नबी करीम (ﷺ) की ऊँटनी का बयान

٥٩- بَابُ نَاقَةِ النَّبِيِّ ﷺ

हमसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसामा (रज़ि.) को क़स्वा (नामी ऊँटनी) पर अपने पीछे बिठाया

قَالَ ابْنُ عُمَرَ أَرْدَفَ النَّبِيُّ ﷺ أُسَامَةَ عَلَى الْقَصْوَاءِ. وَقَالَ الْمِسْوَرُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ

था। मिस्वर बिन मख़रमा ने कहा नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़स्वा ने सरकशी नहीं की है।

مَا خَلأَتِ الْقَصْوَاءُ)).

ये सुलह हुदैबिया के मौक़े पर जबकि ष़निय्यतुल विदाअ़ पर आप पहुँचे थे और आपकी ये ऊँटनी क़स्वा नामी बैठ गई थी, आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि इस ऊँटनी की बैठने की आ़दत नहीं है लेकिन आज इसे उस अल्लाह ने बिठा दिया है जिसने किसी ज़माने में हाथी वालों को मक्का पर चढ़ाई करने से हाथी को बिठा दिया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़सम अल्लाह की कि मक्का वाले हरम की ता'ज़ीम के बारे में जो भी शर्त पेश करेंगे तो मैं उसे मंज़ूर कर लूँगा। फिर आपने उस ऊँटनी को डांटा और वो उठकर चलने लगी।

ये ह़दीष़ पारा नम्बर 11 के शुरू में बाबुश्शुरूत फ़िल् जिहाद में गुज़र चुकी है, हिजरत नबवी के वक़्त भी यही ऊँटनी आप (ﷺ) की सवारी में थी, जोहरी ने कहा कि क़स्वाअ वो ऊँटनी जिसके कान कटे हुए हों और अ़ज़्बाअ जिसके कान चीर दिये गये हों। आँह़ज़रत (ﷺ) की ऊँटनी मे ये दोनों ऐ़ब नहीं थे। सिर्फ़ इन लक़बों से उसको मुलक़्क़ब कर दिया गया था। (किरमानी)

2871. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुआ़विया बिन अ़म्र ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ इब्राहीम ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ऊँटनी का नाम अ़ज़्बाअ था। (दीगर मक़ाम : 2872)

٢٨٧١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كَانَتْ نَاقَةُ النَّبِيِّ ﷺ يُقَالُ لَهَا الْعَضْبَاءُ)).[طرفه في: ٢٨٧٢].

मुअर्रिख़ीने इस्लाम इस बारे में मुत्तफ़िक़ नहीं हैं कि क़स्वाअ, जदआ और अ़ज़्बाअ ये आँह़ज़रत (ﷺ) की तीन ऊँटनियों के नाम थे या ऊँटनी सिर्फ़ एक ही थी और नाम उसके तीन थे। मिस्वर बिन मख़रमा वाली तअ़लीक़ को अबू दाऊद ने वस्ल किया है। कहते हैं क़स्वा और अ़ज़्बाअ एक ही ऊँटनी के तीन नाम थे और उसी का नाम जदआ भी था और शह्बा भी। वह्य उतरने के वक़्त आपको यही ऊँटनी सम्भालती और कोई ऊँटनी न उठा सकती थी, उसके सिवा आप (ﷺ) की और भी कई ऊँटनियाँ थीं।

2872. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआ़विया ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की एक ऊँटनी थी जिसका नाम अ़ज़्बा था। कोई ऊँटनी उससे आगे नहीं बढ़ती थी या हुमैद ने यूँ कहा वो पीछे रह जाने के क़रीब न होती फिर एक देहाती एक नौजवान और क़वी (मज़बूत) ऊँट पर सवार होकर आया और आँह़ज़रत (ﷺ) की ऊँटनी से उनका ऊँट आगे निकल गया। मुसलमानों पर ये बड़ा शाक़ गुज़रा लेकिन जब नबी करीम (ﷺ) को उसका इ़ल्म हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला पर ह़क़ है कि दुनिया में जो चीज़ भी बुलन्द होती है (कभी कभी) उसे वो गिराता भी है। मूसा ने ह़म्माद से इसकी रिवायत तूल के साथ की है, ह़म्माद ने ष़ाबित से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ़ : 2871)

٢٨٧٢ - حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ نَاقَةٌ تُسَمَّى الْعَضْبَاءَ لاَ تُسْبَقُ - قَالَ حُمَيْدٌ: أَوْ لاَ تَكَادُ تُسْبَقُ - فَجَاءَ أَعْرَابِيٌّ عَلَى قَعُودٍ فَسَبَقَهَا، فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ حَتَّى عَرَفَهُ فَقَالَ: حَقٌّ عَلَى اللهِ أَنْ لاَ يَرْتَفِعَ شَيْءٌ مِنَ الدُّنْيَا إِلاَّ وَضَعَهُ)). طَوَّلَهُ مُوسَى عَنْ حَمَّادٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٨٧١]

इस ह़दीष़ से बहुत से मसाइल पर रोशनी पड़ती है। ऊँट, घोड़े का नाम रखना, उनमें दौड़ कराना और बत़ौर क़ायदा कुल्लिया ये कि दुनिया में बढ़ने वाली और मग़रूर होने वाली त़ाक़तों को अल्लाह ज़रूर एक न एक दिन नीचा दिखाता है। इस ह़दीष़ से ये सारी बातें ष़ाबित होती हैं।

बाब 60 : गधे पर बैठकर जंग करना

٦٠- بَابُ الْغَزْوِ عَلَى الْحَمِيرِ

कुछ नुस्ख़ों में ये बाब मज़्कूर नहीं। अल्बत्ता शैख़ फ़व्वाद अ़ब्दुल बाक़ी वाले नुस्ख़े में ये बाब है।

बाब 61 : नबी (ﷺ) के सफ़ेद ख़च्चर का बयान

٦١- بَغْلَةِ النَّبِيِّ ﷺ الْبَيْضَاءِ

इसका ज़िक्र अनस (रज़ि.) ने अपनी ह़दीष़ में किया और अबू हुमैद साएदी ने कहा कि ऐला के बादशाह ने नबी करीम (ﷺ) को एक सफ़ेद ख़च्चर तोह़फ़ा में भिजवाया था।

قَالَهُ أَنَسٌ وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ: أَهْدَى مَلِكُ أَيْلَةَ لِلنَّبِيِّ ﷺ بَغْلَةً بَيْضَاءَ.

2873. हमसे अ़म्र बिन अ़ली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़म्र बिन ह़ारिष़ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (वफ़ात के बाद) सिवा अपने सफ़ेद ख़च्चर के और अपने हथियार और उस ज़मीन के जो आप (ﷺ) ने ख़ैरात कर दी थी और कोई चीज़ नहीं छोड़ी थी। (राजेअ़ : 2739)

٢٨٧٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ الْحَارِثِ قَالَ: ((مَا تَرَكَ النَّبِيُّ ﷺ إِلاَّ بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ وَسِلاَحَهُ، وَأَرْضًا تَرَكَهَا صَدَقَةً)). [راجع: ٢٧٣٩]

तश्रीह : यही ख़च्चर है जो दलदल के नाम से मशहूर हुआ। आप (ﷺ) की वफ़ात के बाद भी ये ख़च्चर ज़िन्दा रहा था। ज़मीन क्या थी फ़िदक का आधा ह़िस्सा और वादी-ए-क़ुरा का तिहाई ह़िस्सा और ख़ैबर की ख़ुम्स में से आपका ह़िस्सा और बनी नज़ीर में से जो आप (ﷺ) ने चुन ली थी। उन ही चीज़ों को ह़ज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा ने ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से उनकी ख़िलाफ़त के ज़माने में मांगा। ह़ज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने ये ह़दीष़ सुनाई कि आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्मा चुके हैं हम पैग़म्बरों का कोई वारिष़ नहीं होता जो हम छोड़ जाएँगे हमारे बाद वो ख़ैरात है। आप (ﷺ) का ह़क़ीक़ी वरष़ा उ़लूम किताब व सुन्नत का लाफ़ानी ख़ज़ाना है जिसके ह़ासिल करने की आम इजाज़त ही नहीं बल्कि ताकीद शदीद है। इसीलिये उ़लमा-ए-इस्लाम को मजाज़ी त़ौर पर आप (ﷺ) के ख़ुलफ़ा से मौसूम किया गया है जिनके लिये आप (ﷺ) ने दुआएँ भी पेश की हैं। अल्लाह पाक हम सब इस मुक़द्दस किताब बुख़ारी शरीफ़ पढ़ने पढ़ाने वालों का शुमार उसी जमाअ़त में कर ले (आमीन)

2874. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया मुझसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से कि उनसे एक शख़्स ने पूछा, ऐ अबू अ़म्मारा! क्या आप लोगों ने (मुसलमानों के लश्कर ने) हुनैन की लड़ाई में पीठ फेर ली थी? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं अल्लाह गवाह है नबी करीम (ﷺ) ने पीठ नहीं फेरी थी अल्बत्ता बाज़ लोग (मैदान से) भाग पड़े थे (और वो लूट में लग गए थे) क़बीला हवाज़िन ने उन पर तीर बरसाने शुरू कर दिये लेकिन नबी करीम (ﷺ) अपने सफ़ेद ख़च्चर

٢٨٧٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ سُفْيَانَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لَهُ رَجُلٌ: يَا أَبَا عُمَارَةَ وَلَّيْتُمْ يَوْمَ حُنَيْنٍ، قَالَ: لاَ وَاللهِ مَا وَلَّى النَّبِيُّ ﷺ، وَلَكِنْ وَلَّى سَرَعَانُ النَّاسِ. فَلَقِيَهُمْ هَوَازِنُ بِالنَّبْلِ وَالنَّبِيُّ ﷺ عَلَى بَغْلَتِهِ الْبَيْضَاءِ، وَأَبُو

पर सवार थे और अबू सुफ़ियान बिन हारिष़ उसकी लगाम थामे हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि मैं नबी हूँ जिसमें झूठ का कोई दख़ल नहीं। मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ। (राजेअ़ : 2864)

سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ آخِذٌ بِلِجَامِهَا وَالنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((أَنَا النَّبِيُّ لاَ كَذِبْ، أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ)). [راجع: ٢٨٦٤]

इसमें आँहज़रत (ﷺ) के सफ़ेद ख़च्चर का ज़िक्र है। इसीलिये हज़रत मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष़ को यहाँ लाए। इससे ये भी मा'लूम हुआ कि जिहाद में मुनासिब तौर पर आबाअ व अज्दाद (पूर्वजों) की बहादुरी का ज़िक्र किया जा सकता है। जंगे हुनैन माहे शव्वाल 8 हिजरी में क़बाइले हवाज़िन व ष़क़ीफ़ के जारिहाना हमलों की मुदाफ़िअ़त के लिये लड़ी गई थी। दुश्मनों की ता'दाद चार हज़ार के क़रीब थी और इस्लामी लश्कर बारह हज़ार पर मुश्तमिल था और इसी कष़रते ता'दाद के घमण्ड में लश्करे इस्लाम एह्तियात से ग़ाफ़िल हो गया था जिसके नतीजा पीछे हटने की सूरत में भुगतना पड़ा, बाद में जल्दी ही मुसलमान सम्भल गए और आख़िर मुसलमानों की ही फ़तह हुई। मज़ीद तफ़्सील अपने मुक़ाम पर आएगी।

बाब 62 : औरतों का जिहाद क्या है?

٦٢- بَابُ جِهَادِ النِّسَاءِ

2875. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें मुआविया इब्ने इस्हाक़ ने, उन्हें आइशा बिन्ते तलहा ने औन उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से जिहाद की इजाज़त चाही तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारा जिहाद हज्ज है।

और अ़ब्दुल्लाह बिन वलीद ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया और उनसे मुआविया ने यही हदीष़ नक़ल की। (राजेअ़ : 1520)

٢٨٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ إِسْحَاقَ عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ اسْتَأْذَنْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي الْجِهَادِ فَقَالَ ((جِهَادُ كُنَّ الْحَجُّ)).
وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ الْوَلِيْدِ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُعَاوِيَةَ بِهَذَا. [راجع: ١٥٢٠]

ये इमामे वक़्त की बसीरत (समझ-बूझ) पर निर्भर करता है कि वो जंगी कवाईफ़ (युद्ध की परिस्थितियों) के आधार पर औरतों की शिर्कत ज़रूरी समझता है या नहीं? अगर कोई मुसलमान औरत जिहाद में न शरीक हो सके बल्कि वो हज्ज ही कर सकती है तो उस सफ़र में उसके लिये भी उसको जिहाद ही का ष़वाब मिलेगा।

2876. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया और उनसे मुआविया ने यही हदीष़ और अबू सुफ़यान ने हबीब बिन अबी अ़म्र से यही रिवायत की जो आइशा बिन्ते तलहा से उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) के वास्ते से है (उसमें है कि) नबी करीम (ﷺ) से आप (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात ने जिहाद की इजाज़त मांगी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हज्ज बहुत ही उम्दह जिहाद है। (राजेअ़ : 1520)

٢٨٧٦- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُعَاوِيَةَ بِهَذَا. وَعَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ سَأَلَهُ نِسَاؤُهُ عَنِ الْجِهَادِ فَقَالَ: ((نِعْمَ الْجِهَادُ الْحَجُّ)). [راجع: ١٥٢٠]

सफ़रे हज्ज औरतों के लिये जिहाद से कम नहीं है, मगर ख़ुद जिहाद में भी औरतों की शिर्कत ष़ाबित है बल्कि बहरी (समन्दरी) जिहाद के लिये एक इस्लामी ख़ातून के लिये आँहज़रत (ﷺ) की पेशीनगोई मौजूद है जिसके पेशेनज़र मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) ने आगे औरतों का बहरी जिहाद में शरीक होने का बाब मुनअक़िद किया।

बाब 63 : दरिया में सवार होकर औरत का जिहाद करना

٦٣- بَابُ غَزْوِ الْمَرْأَةِ فِي الْبَحْرِ

2877,78. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे मुआ़विया बिन अ़म्र ने, हमसे अबू इस्हाक़ ने उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान अंसारी ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) उम्मे हराम बिन्ते मिलहान के यहाँ तशरीफ़ ले गए और उनके यहाँ तकिया लगाकर सो गए फिर आप (ﷺ) (उठे तो) मुस्कुरा रहे थे। उम्मे हराम ने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) क्यूँ हंस रहे थे? आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) सब्ज़ समुन्दर पर सवार हो रहे हैं उनकी मिषाल (दुनिया या आख़िरत में) तख़्त पर बैठे हुए बादशाहों की सी है। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कीजिए कि अल्लाह मुझे भी उनमें शामिल कर दे फिर दोबारा आप (ﷺ) लेटे और (उठे तो) मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने इस बार भी आप (ﷺ) से वही सवाल किया और आप (ﷺ) ने भी पहली ही वजह बताई। उन्होंने फिर अ़र्ज़ किया आप (ﷺ) दुआ़ कीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उनमें से कर दे, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सबसे पहले लश्कर में शरीक होगी और ये कि बाद वालों में तुम्हारी शिर्कत नहीं है। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आपने (उम्मे हराम ने) उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) के साथ निकाह कर लिया और बिन्ते क़रज़ा मुआ़विया (रज़ि.) की बीवी के साथ उन्होंने दरिया का सफ़र किया। फिर जब वापस हुईं और अपनी सवारी पर चढ़ीं तो उसने उनकी गर्दन तोड़ डाली। वो उस सवारी से गिर गईं और (उसी में) उनकी वफ़ात हुई।

٢٨٧٧ . ٢٨٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ ((دَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى ابْنَةِ مِلْحَانَ فَاتَّكَأَ عِنْدَهَا، ثُمَّ ضَحِكَ، فَقَالَتْ: لِمَ تَضْحَكُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ فَقَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي يَرْكَبُونَ الْبَحْرَ الأَخْضَرَ فِي سَبِيلِ اللهِ، مَثَلُهُمْ مَثَلُ الْمُلُوكِ عَلَى الأَسِرَّةِ)). فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ، ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ: ((اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا مِنْهُمْ)). ثُمَّ عَادَ فَضَحِكَ، فَقَالَتْ لَهُ مِثْلَ -أَوْ مِمَّ- ذَلِكَ، فَقَالَ لَهَا مِثْلَ ذَلِكَ فَقَالَتْ ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ: ((أَنْتِ مِنَ الأَوَّلِينَ وَلَسْتِ مِنَ الآخِرِينَ)) قَالَ أَنَسٌ فَتَزَوَّجَتْ عُبَادَةَ بْنَ الصَّامِتِ فَرَكِبَتِ الْبَحْرَ مَعَ بِنْتِ قَرَظَةَ، فَلَمَّا قَفَلَتْ رَكِبَتْ دَابَّتَهَا، فَوَقَصَتْ بِهَا، فَسَقَطَتْ عَنْهَا فَمَاتَتْ)).

तश्रीह : ये निकाह का मामला दूसरी रिवायत के ख़िलाफ़ पड़ता है, जिसमें ये है कि उसी वक़्त उ़बादा बिन स़ामित के निकाह में थीं। शायद उन्होंने त़लाक़ दे दी होगी, बाद में उनसे निकाहे षानी किया होगा। ये उस जंग का ज़िक्र है जिसमें हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के ज़माने में रजब 28 हिजरी में सबसे पहला समुन्दरी बेड़ा हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) ने अमीरुल मोमिनीन की इजाज़त से तैयार किया और क़िब्रस़ पर चढ़ाई की। ये मुसलमानों की सबसे पहली बहरी जंग थी जिसमें उम्मे हराम (रज़ि.) जो कि नबी अकरम (ﷺ) की अ़ज़ीज़ा थीं, शरीक हुईं और शहादत भी पाई। हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) की बीवी का नाम फ़ाख़्ता था और वो भी आपके साथ उसमें शरीक थीं।

बाब 64 : आदमी जिहाद में अपनी एक बीवी को ले जाए और एक को न ले जाए (ये दुरुस्त है)

٦٤- بَابُ حَمْلِ الرَّجُلِ امْرَأَتَهُ فِي الْغَزْوِ دُونَ بَعْضِ نِسَائِهِ

2879. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर नुमैरी ने, उन्होंने कहा हमसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने बयान किया, कहा मैंने इब्ने शिहाब ज़ुहरी से सुना, कहा कि मैंने उ़र्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यिब, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास और उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह से आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ सुनी, इन चारों ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की ये ह़दीष़ मुझसे थोड़ी थोड़ी बयान की। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ ले जाना चाहते (जिहाद के लिये) तो अपनी बीवियों में क़ुर्आ डालते और जिसका नाम निकल आता उन्हें अपने साथ ले जाता थे। एक ग़ज़्वे के मौक़े पर आप (ﷺ) ने हमारे दरम्यान क़ुर्आ अंदाज़ी की तो उस बार मेरा नाम आया और मैं आँहुज़ूर (ﷺ) के साथ गई, ये पर्दे का हुक्म नाज़िल होने के बाद का वाक़िया है। (राजेअ : 2593)

٢٨٧٩- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ حَدَّثَنَا يُونُسُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ وَسَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةَ بْنَ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ عَنْ حَدِيْثِ عَائِشَةَ، كُلٌّ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنَ الْحَدِيْثِ قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَائِهِ فَأَيَّتُهُنَّ يَخْرُجُ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا النَّبِيُّ ﷺ. فَأَقْرَعَ بَيْنَنَا فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا، فَخَرَجَ فِيْهَا سَهْمِي، فَخَرَجْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بَعْدَ مَا أُنْزِلَ الْحِجَابُ)). [راجع: ٢٥٩٣]

मा'लूम हुआ कि पर्दे का ये मत़लब नहीं है कि औ़रत घर के बाहर न निकले जैसे कुछ जाहिलों ने समझ रखा है बल्कि शरई पर्दे के साथ औ़रत ज़रूरियात के लिये घर से बाहर भी निकल सकती है, ख़ास त़ौर पर जिहादों में शिर्कत कर सकती है जैसा कि अनेक रिवायतों में इसका ज़िक्र मौजूद है।

बाब 65 : औ़रतों का जंग करना और मर्दों के साथ लड़ाई में शिर्कत करना

٦٥- بَابُ غَزْوِ النِّسَاءِ وَقِتَالِهِنَّ مَعَ الرِّجَالِ

2880. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई के मौक़े पर मुसलमान नबी करीम (ﷺ) के पास से जुदा हो गये थे। उन्होंने बयान किया कि मैंने आयशा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) और उम्मे सुलैम (रज़ि.) (अनस रज़ि. की वालिदा) को देखा कि ये अपने इज़ार समेटे हुए थीं और (तेज़ चलने की वजह से) पानी के मशकीज़े छलकते हुई लिये जा रही थीं और अबू मअ़मर के अ़लावा जा'फ़र बिन मेहरान ने बयान किया कि मशकीज़े को अपनी पुश्त पर इधर से उधर जल्दी-जल्दी लिय

٢٨٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ انْهَزَمَ النَّاسُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. قَالَ: وَلَقَدْ رَأَيْتُ عَائِشَةَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ وَأُمَّ سُلَيْمٍ وَإِنَّهُمَا لَمُشَمِّرَتَانِ أَرَى خَدَمَ سُوقِهِمَا تَنْقُزَانِ الْقِرَبَ - وَقَالَ غَيْرُهُ: تَنْقُلاَنِ الْقِرَبَ - عَلَى مُتُونِهِمَا ثُمَّ تُفْرِغَانِهِ فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ،

ثُمَّ تَرْجِعَانِ فَتَمْلآنِهَا ثُمَّ تَجِيْئَانِ فَتُفْرِغَانِهَا فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ)).

[أطرافه في: ٢٩٠٢، ٣٨١١، ٤٠٦٤].

फिरती थीं और क़ौम को उसमें से पानी पिलाती थीं, फिर वापस आती थीं और मशकीज़ों को भरकर ले जाती थीं और क़ौम को पानी पिलाती थीं, मैं उनके पाँव की पाज़ेबें देख रहा था। (दीगर मक़ाम : 2902, 3811, 4064)

तश्रीह : ज़िन्दा क़ौमों की औरतों में भी जज़्ब-ए-आज़ादी बदर्ज-ए-अतम मौजूद होता है जिसके सहारे वो कुछ बार मैदाने जंग में ऐसे नुमायाँ काम कर गुज़रती हैं कि उनको देखकर सारी दुनिया हैरतज़दा हो जाती है जैसा कि आजकल यहूदियों के ख़िलाफ़ मुजाहिदीने फ़िलिस्तीन बहुत से मुसलमानों के मुजाहिदाना कारनामों की शुह्रत है। हज़रत उम्मे सुलैम मशहूर सहाबिया मिल्हान की बेटी हैं जो मालिक बिन नज़्र के निकाह में थीं। उन ही के बत़न से मशहूर सहाबी हज़रत अनस (रज़ि.) पैदा हुए। मालिक बिन नज़्र हालते कुफ़्र ही में वफ़ात पा गए थे। बाद में उनका निकाह अबू तलहा (रज़ि.) से हुआ। उनसे बहुत से सहाबा ने अहादीष़ रिवायत की हैं।

बाब 66 : जिहाद में औरतों का मर्दों के पास मशकीज़ा उठाकर ले जाना

٦٦- بَابُ حَمْلِ النِّسَاءِ الْقِرَبَ إِلَى النَّاسِ فِي الْغَزْوِ

٢٨٨١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ ثَعْلَبَةُ بْنُ أَبِي مَالِكٍ: ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَسَمَ مُرُوطًا بَيْنَ نِسَاءٍ مِنْ نِسَاءِ الْمَدِيْنَةِ، فَبَقِيَ مِرْطٌ جَيِّدٌ، فَقَالَ لَهُ بَعْضُ مَنْ عِنْدَهُ: يَا أَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ أَعْطِ هَذَا ابْنَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ الَّتِي عِنْدَكَ - يُرِيْدُونَ أُمَّ كُلْثُومٍ بِنْتَ عَلِيٍّ - فَقَالَ عُمَرُ: أُمُّ سَلِيْطٍ أَحَقُّ. وَأُمُّ سَلِيْطٍ مِنْ نِسَاءِ الأَنْصَارِ مِمَّنْ بَايَعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ. قَالَ عُمَرُ: فَإِنَّهَا كَانَتْ تَزْفِرُ لَنَا الْقِرَبَ يَوْمَ أُحُدٍ)) قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: تَزْفِرُ تَخِيْطُ.

[طرفه في: ٤٠٧١].

2881. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उनसे ष़अलबा बिन अबी मालिक ने कहा कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने मदीना की ख़्वातीन में कुछ चादरें तक़्सीम कीं। एक नई चादर बच गई तो कुछ हज़रात ने जो आपके पास ही थे कहा या अमीरल मोमिनीन! ये चादर रसूलुल्लाह (ﷺ) की नवासी को दे दीजिए, जो आपके घर में हैं। उनकी मुराद (आपकी बीवी) उम्मे कुल्षुम बिन्ते अ़ली (रज़ि.) से थी लेकिन उ़मर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि उम्मे सुलेत़ (रज़ि.) इसकी ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। ये उम्मे सुलैत़ (रज़ि.) उन अंसारी ख़्वातीन में से थीं जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी। उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि आप उहुद की लड़ाई के मौक़े पर हमारे लिये मशकीज़े (पानी के) उठाकर लाती थीं। अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी रह) ने कहा (हदीष़ में) लफ़्ज़ तज़्फ़र का मा'नी ये है कि सीती थी। (दीगर मक़ाम : 4071)

तश्रीह : तज़्फ़र का मा'नी सीने से करना सहीह नहीं है, सहीह तर्जुमा ये है कि उठाकर लाती थी। क़स्तलानी (रह.) ने कहा इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये मा'नी अबू सालेह कातिब लैष़ की तक़्लीद से नक़ल कर दिया। हज़रत उ़मर (रज़ि.) का अ़दलो-इंसाफ़ यहाँ से मा'लूम करना चाहिये। ये चादर आप अपनी बीवी उम्मे कुल्षुम को दे देते मगर इस ख़्याल से न दी कि वो उनकी बीवी थीं और ग़ैर को जिसका हक़ ज़्यादा था मुक़द्दम कर दिया। इंसाफ़ का तक़ाज़ा भी यही है।

बाब 67 : जिहाद में औरतें ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी कर सकती हैं

٦٧- بَابُ مُدَاوَاةِ النِّسَاءِ الْجَرْحَى فِي الْغَزْوِ

2882. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन ज़क्वान ने बयान किया, उनसे रबीअ़ बिन्ते मुअ़व्वज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ (ग़ज़्वा में) शरीक होते थे, मुसलमान फ़ौजियों को पानी पिलाते थे, ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करते थे और जो लोग शहीद हो जाते उन्हें मदीना उठाकर लाते थे। (दीगर मक़ाम : 2883, 5679)

٢٨٨٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ ذَكْوَانَ عَنِ الرُّبَيِّعِ بِنْتِ مُعَوِّذٍ قَالَتْ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ نَسْقِي، وَنُدَاوِي الْجَرْحَى، وَنَرُدُّ الْقَتْلَى إِلَى الْمَدِينَةِ)).

[طرفاه في: ٢٨٨٣، ٥٦٧٩].

ख़ुलासा-ए- कलाम ये कि जिहाद के मौक़ों पर औरतें घर का टाट बनकर बैठी नहीं रहती थीं बल्कि सरफ़रोशाना ख़िदमात अंजाम देती थीं।

बाब 68 : ज़ख़्मियों और शहीदों को औरतें लेकर जा सकती हैं

٦٨- بَابُ رَدِّ النِّسَاءِ الْجَرْحَى وَالْقَتْلَى

2883. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन ज़िक्वान ने और उनसे रबीअ़ बिन्ते मुअ़व्वज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ जिहाद में शरीक होते थे, मुजाहिद मुसलमानों को पानी पिलाते, उनकी ख़िदमत करते और ज़ख़्मियों और शुहदाओं को उठाकर मदीना ले जाते थे। (राजेअ़ : 2882)

٢٨٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ عَنْ خَالِدِ بْنِ ذَكْوَانَ عَنِ الرُّبَيِّعِ بِنْتِ مُعَوِّذٍ قَالَتْ: ((كُنَّا نَغْزُو مَعَ النَّبِيِّ ﷺ نَسْقِي الْقَوْمَ وَنَخْدُمُهُمْ، وَنَرُدُّ الْقَتْلَى وَالْجَرْحَى إِلَى الْمَدِينَةِ)).

[راجع: ٢٨٨٢]

इससे भी औरतों का जिहाद में शरीक होना षाबित हुआ।

बाब 69 : (मुजाहिदीन के) जिस्म से तीर का खींचकर निकालना

٦٩- بَابُ نَزْعِ السَّهْمِ مِنَ الْبَدَنِ

2884. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अबू बुर्दा (रज़ि.) ने उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू आमिर (रज़ि.) के घुटने में तीर लगा तो मैं उनके पास पहुँचा। उन्होंने फ़र्माया कि इस तीर को खींच कर निकाल लो मैंने खींच लिया तो उससे ख़ून बहने लगा फिर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) को इस

٢٨٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رُمِيَ أَبُو عَامِرٍ فِي رُكْبَتِهِ فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِ، قَالَ: انْزِعْ هَذَا السَّهْمَ. فَنَزَعْتُهُ، فَنَزَا مِنْهُ الْمَاءُ، فَدَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ:

हादषे की ख़बर दी तो आप (ﷺ) ने (उनके लिये) दुआ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! उबैद अबू आमिर की मग़्फ़िरत फ़र्मा। (दीगर मक़ाम : 4323, 6383)

((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعُبَيْدٍ أَبِي عَامِرٍ)).
[طرفاه في : ٤٣٢٣، ٦٣٨٣].

आलाते जराही (ऑपरेशन के औजार) जो आजकल वजूद में आ चुके हैं, उस वक़्त न थे। इसलिये ज़ख़्मियों के जिस्मों में पेवस्ता तीर हाथों ही से निकाले जाते थे। अबू आमिर (रज़ि.) ऐसे ही मुजाहिद हैं जो तीर से घायल होकर जामे शहादत नोश फ़र्मा गए थे। नबी करीम (ﷺ) ने बतौरे इज़्हारे अफ़सोस उनका नाम लिया और उनके लिये दुआए ख़ैर फ़र्माई। अबू आमिर अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) के चचा थे। जंगे औतास में ये वाक़िया पेश आया था।

बाब 70 : अल्लाह के रास्ते में जिहाद में पहरा देना कैसा है?

٧٠- بَابُ الْحِرَاسَةِ فِي الْغَزْوِ فِي سَبِيْلِ اللهِ

2885. हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अ़ली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, कहा हमको यह्या बिन सईद ने ख़बर दी, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन रबीआ़ बिन आ़मिर ने ख़बर दी, कहा कि मैंने आ़इशा (रज़ि.) से सुना, आप बयान करती थीं कि नबी करीम (ﷺ) ने (एक रात) बेदारी में गुज़ारी, मदीना पहुँचने के बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया, काश! मेरे अस्हाब में से कोई नेक मर्द ऐसा होता जो रातभर हमारा पहरा देता! अभी यही बातें हो रही थी कि हमने हथियार की झंकार सुनी। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया ये कौन स़ाहब है? (आने वाले ने) कहा मैं हूँ सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.), आपका पहरा देने के लिये हाज़िर हुआ हूँ। फिर नबी करीम (ﷺ) खुश हुए, उनके लिये दुआ फ़र्माई और आप सो गए। (दीगर मक़ाम : 7231)

٢٨٨٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ خَلِيْلٍ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَامِرِ بْنِ رَبِيْعَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا تَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ سَهِرَ، فَلَمَّا قَدِمَ الْمَدِيْنَةَ قَالَ: ((لَيْتَ رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِي صَالِحًا يَحْرُسُنِي اللَّيْلَةَ))، إِذْ سَمِعْنَا صَوتَ سِلاَحٍ، فَقَالَ: ((مَنْ هَذَا؟)) فَقَالَ: أَنَا سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ جِئْتُ لأَحْرُسَكَ. ((وَنَامَ النَّبِيُّ ﷺ)). [طرفه في: ٧٢٣١].

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है यहाँ तक कि आप (ﷺ) के खर्राटे की आवाज़ सुनी। तिर्मिज़ी ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से निकाला नबी अकरम (ﷺ) चौकी पहरा रखते थे, जब ये आयत उतरी, **वल्लाहु यअ़सिमुक मिनन्नासि** (अल माइदा : 67) (अल्लाह आप ﷺ को लोगों से महफ़ूज़ रखेगा) तो आप (ﷺ) ने चौकी पहरा उठा दिया। हाकिम और इब्ने माजा ने मर्फ़ूअ़न निकाला। जिहाद में एक रात चौकी पहरा देना हज़ार रातों की इबादत और हज़ार दिनों के रोज़े से ज़्यादा ष़वाब रखता है।

2886. हमसे यह्या बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको अबूबक्र ने ख़बर दी, उन्हें अबू हुस़ैन ने, उन्हें अबू स़ालेह और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, दीनार का बन्दा, दिरहम का बन्दा, चादर का बन्दा, कम्बल का बन्दा हलाक हो गया कि अगर उसे कुछ दे दिया जाए तब तो खुश हो जाता है और अगर नहीं दिया जाए तो नाराज़ हो जाता है, इस हदीष़ को इस्राईल और मुहम्मद बिन जहादह ने अबू हुस़ैन से मर्फ़ूअ़

٢٨٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا أَبُوبَكْرٍ عَنْ أَبِي حَصِيْنٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((تَعِسَ عَبْدُ الدِّيْنَارِ وَالدِّرْهَمِ وَالْقَطِيْفَةِ وَالْخَمِيْصَةِ إِنْ أُعْطِيَ رَضِيَ وَإِنْ لَمْ يُعْطَ لَمْ يَرْضَ)) لَمْ يَرْفَعْهُ

إسْرَائِيلُ وَمُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ عَنْ أَبِي حَصِينٍ.[طرفاه في: ٢٨٨٧، ٦٤٣٥].

नहीं किया। (दीगर मक़ाम : 2887, 6435)

٢٨٨٧- وَزَادَنَا عَمْرٌو قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((تَعِسَ عَبْدُ الدِّينَارِ وَعَبْدُ الدِّرْهَمِ وَعَبْدُ الْخَمِيصَةِ: إِنْ أُعْطِيَ رَضِيَ وَإِنْ لَمْ يُعْطَ سَخِطَ، تَعِسَ وَانْتَكَسَ، وَإِذَا شِيكَ فَلاَ انْتَقَشَ. طُوبَى لِعَبْدٍ آخِذٍ بِعِنَانِ فَرَسِهِ فِي سَبِيلِ اللهِ، أَشْعَثَ رَأْسُهُ مُغْبَرَّةٍ قَدَمَاهُ، إِنْ كَانَ فِي الْحِرَاسَةِ، وَإِنْ كَانَ فِي السَّاقَةِ كَانَ فِي السَّاقَةِ. إِنِ اسْتَأْذَنَ لَمْ يُؤْذَنْ لَهُ، وَإِنْ شَفَعَ لَمْ يُشَفَّعْ)).

قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: لَمْ يَرْفَعْهُ إِسْرَائِيلُ وَمُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ عَنْ أَبِي حَصِينٍ. وَقَالَ: ((تَعْسًا))، فَكَأَنَّهُ يَقُولُ : فَأَتْعَسَهُمُ اللهُ. ((طُوبَى)): فُعْلَى مِنْ كُلِّ شَيْءٍ طَيِّبٍ وَهِيَ يَاءٌ حُوِّلَتْ إِلَى الْوَاوِ، وَهِيَ مِنْ يَطِيبُ.[راجع: ٢٨٨٦]

2887. और अम्र इब्ने मरज़ूक़ ने हमसे बढ़ाकर बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्होंने अपने बाप से, उन्होंने अबू स़ालेह से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने आह़ज़रत (ﷺ) से, आप (ﷺ) ने फ़र्माया दीनार (सोने की अशरफ़ी) का बन्दा और दिरहम (चाँदी का सिक्का) का बन्दा और कम्बल का बन्दा तबाह हो गया, अगर उसको कुछ दिया जाए तब तो वो ख़ुश जो न दिया जाए तो ग़ुस्सा हो जाए, ऐसा शख़्स तबाह सरनगूँ हुआ। उसको कांटा लगे तो अल्लाह करे फिर न निकले। मुबारक वो बन्दा है जो अल्लाह के रास्ते मे (ग़ज़्वे के मौक़े पर) अपने घोड़े की लगाम थामे हुए है, उसके सर के बाल परागन्दा हैं और उसके क़दम गर्दो गुबार से अटे हुए हैं, अगर उसे चौकी पहरे पर लगा दिया जाए तो वो अपने उस काम में पूरी तन्दरुस्ती ही से लगा रहे और लश्कर के पीछे (देखभाल के लिये) लगा दिया जाए तो उसमें भी पूरी तन्देही और फ़र्ज़शनासी से लगा रहे (अगरचे ज़िन्दगी में गुर्बत की वजह से) उसकी कोई अहमियत भी न हो कि) अगर वो किसी से मुलाक़ात की इजाज़त चाहे तो उसे इजाज़त भी न मिले और अगर किसी की सिफ़ारिश करे तो उसकी सिफ़ारिश भी क़ुबूल न की जाए, अबू अ़ब्दुल्लाह (ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह.) ने कहा कि इस्राईल और मुहम्मद बिन जहादह ने अबू हुसैन से ये रिवायत मर्फ़ूअ़न नहीं बयान की है और कहा कि क़ुर्आन मजीद में जो लफ़्ज़ तअ़सन आया है गोया यूँ कहना चाहिये कि फ़ तअ़सहुमुल्लाहु (अल्लाह उन्हें गिराये, हलाक करे) तूबा फ़ुअ़ला के वज़न पर है हर अच्छी और त़य्यब चीज़ के लिये। वाव अस़ल में या था (त़य्यबा) फिर या को वाव बदल दिया गया और ये त़य्यब से निकला। (राजेअ़ : 2886)

इस ह़दीष़ में एक ग़रीब मुख़्लिस़ मर्दे मुजाहिद के चौकी पर पहरा देने का ज़िक्र है, यही बाब से वजहे मुत़ाबक़त है, अल्लाह वाले बुज़ुर्ग ऐसे ही पोशीदा, ग़रीब व नामा'लूम ग़ैर मशहूर होते हैं जिनकी दुआएँ अल्लाह क़ुबूल करता है मगर ये मक़ाम हर किसी को नस़ीब नहीं होता है।

٧١- بَابُ فَضْلِ الْخِدْمَةِ فِي الْغَزْوِ

बाब 71 : जिहाद में ख़िदमत करने की फ़ज़ीलत का बयान

٢٨٨٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ حَدَّثَنَا

2888. हमसे मुहम्मद बिन अ़रअ़रह ने बयान किया, कहा हमसे

शुअ़बा ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन उ़बैद ने, उनसे ष़ाबित बनानी ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) के साथ था तो वो मेरी ख़िदमत करते थे, हालाँकि उ़म्र में वो मुझसे बड़े थे, जरीर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हर वक़्त अंस़ार को एक ऐसा काम करते देखा (रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत) कि जब उनमें से कोई मुझे मिलता तो मैं उसकी ता'ज़ीम व इकराम करता हूँ।

شُعْبَةُ عَنْ يُونُسَ بْنِ عُبَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَحِبْتُ جَرِيْرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ فَكَانَ يَخْدُمُنِي وَهُوَ أَكْبَرُ مِنْ أَنَسٍ. قَالَ جَرِيْرٌ: إِنِّي رَأَيْتُ الأَنْصَارَ يَصْنَعُونَ شَيْئًا لاَ أَجِدُ أَحَدًا مِنْهُمْ إِلاَّ أَكْرَمْتُهُ)).

तश्रीह : वो बात ये थी कि अंसारी जनाब रसूले करीम (ﷺ) से बहुत मुहब्बत रखते और आप (ﷺ) की ता'ज़ीम करते थे। मा'लूम हुआ जो कोई अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से मुहब्बत रखे उसकी ख़िदमत करना ऐन सआदत है। बज़ाहिर इस हदीष़ की मुताबक़त बाब के तर्जुमे से मुश्किल है, ऐनी ने कहा मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि ये सोहबत सफ़र में हुई और सफ़रे आ़म है जो जिहाद के सफ़र को भी शामिल है पस बाब से मुताबक़त हो गई।

2889. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुत्तलिब बिन हन्तब के मौला अ़म्र बिन अबी अ़म्र ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ख़ैबर (ग़ज़्वा के मौक़े पर) गया, मैं आप (ﷺ) की ख़िदमत किया करता था, फिर जब आप (ﷺ) वापस हुए और उहुद का पहाड़ दिखाई दिया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये वो पहाड़ है जिससे हम मुहब्बत करते हैं और वो हमसे मुहब्बत करता है। उसके बाद आप (ﷺ) ने अपने हाथ से मदीना की तरफ़ इशारा करके फ़र्माया ऐ अल्लाह! मैं उसके दोनों पथरीले मैदानों के दरम्यान के ख़ित्ते को हुर्मत वाला क़रार देता हूँ, जिस तरह इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने मक्का को हुर्मत वाला शहर क़रार दिया था, ऐ अल्लाह! हमारे साअ़ और हमारे मुद्द में बरकत अ़ता फ़र्मा। (राजेअ़ : 371)

٢٨٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ بْنِ حَنْطَبٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: خَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ أَخْدُمُهُ. فَلَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ رَاجِعًا وَبَدَا لَهُ أُحُدٌ قَالَ: ((هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ)). ثُمَّ أَشَارَ بِيَدِهِ إِلَى الْمَدِيْنَةِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أُحَرِّمُ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا كَتَحْرِيْمِ إِبْرَاهِيْمَ مَكَّةَ. اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا وَمُدِّنَا)). [راجع: ٣٧١]

इससे मदीना शरीफ़ की हुर्मत भी ष़ाबित हुई जैसा कि मक्का शरीफ़ की हुर्मत है, मदीना के लिये भी हुदूदे हरम मुतअय्यन (निर्धारित) हैं जिनके अंदर वो सारे काम नाजाइज़ हैं जो हरमे मक्का में नाजाइज़ हैं। अहले हदीष़ का यही मसलक है कि मदीना भी मक्का ही की तरह हराम है। (वत् तफ़्सील मुक़ामे आख़र) ख़ैबर मदीना से शाम की जानिब तीन मंज़िल पर एक जगह है। ये यहूदियों की आबादी थी। आँहज़रत (ﷺ) को हुदैबिया से आए हुए एक माह से कम ही अ़र्सा हुआ था कि आप (ﷺ) ने ख़ैबर के यहूदियों की साज़िश का हाल सुना कि वो मदीना पर हमला करने वाले हैं, उन्हीं की मुदाफ़िअ़त के लिये आप (ﷺ) ने पेश क़दमी की और अहले इस्लाम को फ़तहे मुबीन हासिल हुई।

2890. हमसे सुलैमान बिन दाऊद अबुर्रबीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ज़करिया ने, उनसे आ़सिम बिन सुलैमान

٢٨٩٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ أَبُو الرَّبِيْعِ عَنْ إِسْمَاعِيْلَ بْنِ زَكَرِيَّاءَ حَدَّثَنَا

ने, उनसे मुवर्रक़ अज्ली ने और उनसे अनस ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ (एक सफ़र में) थे। कुछ सहाबा किराम (रज़ि.) रोज़े से थे और कुछ ने रोज़ा नहीं रखा था। मौसम गर्मी का था, हममें ज़्यादा बेहतर साया जो कोई करता, अपना कम्बल तान लेता। ख़ैर जो लोग रोज़े से थे वो कोई काम न कर सके थे और जिन हज़रात ने रोज़ा नहीं रखा था तो उन्होंने ही ऊँटों को उठाया (पानी पिलाया) और रोज़ेदारों की ख़ूब-ख़ूब ख़िदमत भी की। और (दूसरे तमाम) काम किये। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आज अज्रो-ष़वाब को रोज़ा न रखने वाले लूटकर ले गए।

عَاصِمٌ عَنْ مُوَرِّقٍ الْعِجْلِيِّ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكْثَرُنَا ظِلاًّ الَّذِي يَسْتَظِلُّ بِكِسَائِهِ، وَأَمَّا الَّذِينَ صَامُوا فَلَمْ يَعْمَلُوا شَيْئًا، وَأَمَّا الَّذِينَ أَفْطَرُوا فَبَعَثُوا الرِّكَابَ، وَامْتَهَنُوا وَعَالَجُوا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ذَهَبَ الْمُفْطِرُونَ الْيَوْمَ بِالأَجْرِ)).

तश्रीह : या'नी रोज़ेदारों से ज़्यादा उनको ष़वाब मिला, मा'लूम हुआ कि जिहाद में मुजाहिदीन की ख़िदमत करना रोज़े से ज़्यादा अज्र रखता है। रोज़ा एक इंफ़िरादी नेकी है मगर मुजाहिदीन की ख़िदमत पूरी मिल्लत की ख़िदमत है, इसलिये इसको बहरहाल फ़ौक़ियत हासिल है। हदीष़ का मफ़्हूम ये भी है कि रोज़ा अगरचे ख़ैरे महज़ है और मख़्सूस व मक़्बूल इबादत है फिर भी सफ़र वग़ैरह में ऐसे मौक़ों पर जबकि उसकी वजह से दूसरे अहम काम रुक जाने का ख़तरा हो तो रोज़ा न रखना अफ़ज़ल है। जो वाक़िया हदीष़ में है उसमें भी यही सूरत पेश आई थी कि जो लोग रोज़े से थे वो कोई काम थकन वग़ैरह की वजह से नहीं कर सके लेकिन बेरोज़ेदारों ने पूरी तवज्जह से तमाम ख़िदमात अंजाम दिये, इसलिये उनका ष़वाब रोज़ा रखने वालों से भी बढ़ गया।

बाब 72 : उस शख़्स की फ़ज़ीलत जिसने सफ़र में अपने साथी का सामान उठा दिया

٧٢- بَابُ فَضْلِ مَنْ حَمَلَ مَتَاعَ صَاحِبِهِ فِي السَّفَرِ

2891. हमसे इस्हाक़ बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया रोज़ाना इंसान के हर एक जोड़ पर सदक़ा लाज़िम है और अगर कोई शख़्स किसी की सवारी में मदद करे कि उसको सहारा देकर उसकी सवारी पर सवार करा दे या उसका सामान उस पर उठाकर रख दे तो ये भी सदक़ा है। अच्छा और पाक लफ़्ज़ भी (ज़ुबान से निकालना) सदक़ा है। हर क़दम जो नमाज़ के लिये उठता है वो भी सदक़ा है और (किसी मुसाफ़िर को) रास्ता बता देना भी सदक़ा है। (राजेअ़ : 2707)

٢٨٩١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كُلُّ سُلاَمَى عَلَيْهِ صَدَقَةٌ كُلَّ يَوْمٍ: يُعِينُ الرَّجُلَ فِي دَابَّتِهِ يُحَامِلُهُ عَلَيْهَا أَوْ يَرْفَعُ عَلَيْهَا مَتَاعَهُ صَدَقَةٌ، وَالْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ، وَكُلُّ خَطْوَةٍ يَمْشِيهَا إِلَى الصَّلاَةِ صَدَقَةٌ، وَدَلُّ الطَّرِيقِ صَدَقَةٌ)). [راجع: ٢٧٠٧]

हदीष़ आम है मगर सफ़रे जिहाद के मुसाफ़िर ख़ुसूसियत से यहाँ मुराद हैं, इसीलिये हज़रत इमाम (रह.) इसको किताबुल जिहाद में लाए हैं, कोई भाई अगर इस मुबारक सफ़र में थक रहा है या उस पर बोझ ज़्यादा है तो उसकी इमदाद बड़ा ही दर्जा रखती है। यूँ हर मुसाफ़िर की मदद बहुत बड़ा कारे ख़ैर है, मुसाफ़िर कोई भी हो। इसी तरह ज़ुबान से ऐसा लफ़्ज़ कहना कि सुनने वाला ख़ुश हो जाएँ और वो कलिमा ख़ैर ही के बारे में हो तो ऐसे अल्फ़ाज़ भी सदक़ा की मद में लिखे जाते हैं। क़ुर्आन मजीद में ऐसे अल्फ़ाज़ को उस सदक़ा से बहुत ही बेहतर क़रार दिया है जिस सदक़ा की वजह से जिस पर वो सदक़ा किया गया है उसको

सुनकर तकलीफ़ हो, इसीलिये हर मुसलमान मोमिन का फ़र्ज़ है कि या तो कलिम-ए-ख़ैर ज़ुबान से निकाले या ख़ामोश रहें। हर क़दम जो नमाज़ के लिये उठे वो भी सदक़ा है और किसी राह भूले हुए मुसाफ़िर को रास्ता बतला देना भी बहुत ही बड़ा सदक़ा है। यही इस्लाम की वो अख़लाक़ी पाकीज़ा ता'लीम है जिसने अपने सच्चे पैरोकारों को आसमानों और ज़मीनों में क़ुबूले आम बख़्शा। **अल्लाहुम्मज्अल्ना मिन्हुम** (आमीन)

बाब 73 : अल्लाह के रास्ते में सरहद पर एक दिन पहरा देना कितना बड़ा ष़वाब है

٧٣- بَابُ فَضْلِ رِبَاطِ يَوْمٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا﴾ الآيَةَ [آل عمران : ٢٠]

और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, ऐ ईमानवालों! स़ब्र से काम लो और दुश्मनों से स़ब्र में ज़्यादा रहो, और मोर्चे पर जमे रहो आख़िर आयत तक। (आले इमरान : 20)

स़ब्र एक बहुत बड़ी इंसानी कुव्वत का नाम है जिसके नतीजे में बहुत से इंसानों ने बड़ी बड़ी तारीख़ी कामयाबियाँ ह़ासिल की हैं। हमारे रसूले पाक (ﷺ) की मिष़ाल अज़्हर मिनश्शम्स (सूरज की तरह रोशन) है।

2892. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने अबुन नज़्र हाशिम बिन क़ासिम से सुना, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू ह़ाज़िम (सलमा बिन दीनार) ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह के रास्ते में दुश्मन से मिली हुई सरहद पर एक दिन का पहरा दुनिया व माफ़ीहा से बढ़कर है, जन्नत में किसी के लिये एक कोड़े जितनी जगह दुनिया व माफ़ीहा से बढ़कर है और जो शख़्स़ अल्लाह के रास्ते में शाम को चले या सुबह को तो वो दुनिया व मा फ़ीहा से बेहतर है। (राजेअ : 2794)

٢٨٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُنِيْرٍ سَمِعَ أَبَا النَّضْرِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((رِبَاطُ يَوْمٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا. وَمَوضِعُ سَوطِ أَحَدِكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا، وَالرَّوْحَةُ يَرُوحُهَا الْعَبْدُ فِي سَبِيْلِ اللهِ أَوِ الْغَدْوَةُ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا)) [راجع: ٢٧٩٤]

इस्लामी शरई रियासत में सरहद पर चौकी पहरे की ख़िदमत जिसको सौंपी जाए और उसे बख़ूबी अंजाम दे तो उसका नाम भी मुजाहिदीन में ही लिखा जाता है और उसको वो ष़वाब मिलता है जिसके सामने दुनिया की सारी दौलत भी कोई ह़क़ीक़त नहीं रखती क्योंकि दुनिया बहरह़ाल फ़ानी और उसका ष़वाब बहरह़ाल बाक़ी है, **अर्रिबातु बिकस्रिर्राइ लिमुवह्हदतिल्ख़फीफति मुलाज़मतुल्मकानिल्लज़ी बैनल्मुस्लिमीन वल्कुफ़्फ़ारि लिहरासतिल्मुस्लिमीन मिन्हुम वस्तदल्लल्मुसन्निफु बिल्आयति इख़्तियारुन लिअश्हुरित्तफ़ासीरि फअनिल्हसनिल्बसरी वल्क़तादा इस्बिरु अ़ला त़ाअ़तिल्लाहि व स़ाबिरु आदाअल्लाहि फिल्जिहादि व राबितु फी सबीलिल्लाहि व अ़न मुहम्मदिनब्निल्क़अबि इस्बिरु अलत्ताअति व साबिरु लिइन्तिजारिल्वअदि व राबितुल्अदुव्व वत्तक़ुल्लाह फीमा बैनकुम.** (फत्ह)

बाब 74 : अगर किसी बच्चे को ख़िदमत के लिये जिहाद में साथ ले जाए

٧٤- بَابُ مَنْ غَزَا بِصَبِيٍّ لِلْخِدْمَةِ

इसमें इशारा है कि बच्चा जिहाद के लिये मुख़ात़ब नहीं है लेकिन ख़िदमत के लिये बच्चों को जिहाद में साथ लगाया जा सकता है।

2893. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने कहा, हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन अ़म्र ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अबू तलहा (रज़ि.) से फ़र्माया कि अपने बच्चों में से कोई बच्चा मेरे साथ कर दो जो ख़ैबर के ग़ज़्वे में मेरे काम कर दिया करे, जबकि मैं ख़ैबर का सफ़र करूँ। अबू तलहा अपनी सवारी पर अपने पीछे बिठाकर मुझे (अनस रज़ि. को) ले गए, मैं उस वक़्त अभी लड़का था बालिग़ होने के क़रीब। जब भी आँहज़रत (ﷺ) कहीं क़याम करते तो मैं आप (ﷺ) की ख़िदमत करता। अकषर मैं सुनता कि आप (ﷺ) ये दुआ़ करते ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ग़म और आजिज़ी से, सुस्ती, बुख़्ल, बुज़दिली, क़र्ज़दारी के बोझ और ज़ालिम के अपने ऊपर ग़लबा से, आख़िर हम ख़ैबर पहुँचे और जब अल्लाह तआ़ला ने ख़ैबर के क़िले पर आपको फ़तह दी तो आप (ﷺ) के सामने स़फ़िया बिन्ते हुय्यि बिन अख़्तब (रज़ि.) के जमाल (ज़ाहिरी व बातिनी) का ज़िक्र किया गया उनका शौहर (यहूदी) लड़ाई मे काम आ गया था और वो अभी दुल्हन ही थीं (और चूँकि क़बीले के सरदार की बेटी थीं) इसलिये रसूले करीम (ﷺ) ने (उनका इकराम करने के लिये) उन्हें अपने लिये पसन्द फ़र्मा लिया। फिर आप (ﷺ) उन्हें साथ लेकर वहाँ से चले। जब हम सद्दुस्सहबा पर पहुँचे तो वो हैज़ से पाक हुईं, तो आप (ﷺ) ने उनसे ख़ल्वत की। उसके बाद आप (ﷺ) ने हैस (खजूर, पनीर और घी से तैयार किया हुआ एक खाना) तैयार कराकर एक छोटे से दस्तरख़्वान पर रखवाया और मुझसे फ़र्माया कि अपने आस पास के लोगों को दा'वत दे दो और आँहज़रत (ﷺ) का हज़रत स़फ़िया (रज़ि.) के साथ निकाह का वलीमा था। आख़िर हम मदीना की तरफ़ चले, अनस (रज़ि.) ने कहा कि मैंने देखा कि आँहुज़ूर (ﷺ) स़फ़िया (रज़ि.) की वजह से अपने पीछे (ऊँट के कोहान के इर्दगिर्द) अपनी अ़बा से पर्दा किये हुए थे (सवारी पर जब हज़रत स़फ़िया रज़ि. सवार होतीं) तो आप (ﷺ) अपने ऊँट के पास बैठ जाते और अपना घुटना खड़ा रखते और हज़रत स़फ़िया (रज़ि.) अपना पाँव हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के घुटने पर रखकर सवार हो जातीं। इस तरह हम चलते रहे और जब मदीना आ गया तो आप (ﷺ) ने उहुद पहाड़ को देखा और फ़र्माया, य

٢٨٩٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لأَبِي طَلْحَةَ: ((الْتَمِسْ لِي غُلاَمًا مِنْ غِلْمَانِكُمْ يَخْدُمُنِي حَتَّى أَخْرُجَ إِلَى خَيْبَرَ))، فَخَرَجَ بِي أَبُو طَلْحَةَ مُرْدِفِي وَأَنَا غُلاَمٌ رَاهَقْتُ الْحُلُمَ، فَكُنْتُ أَخْدُمُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَزَلَ، فَكُنْتُ أَسْمَعُهُ كَثِيرًا يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ)). ثُمَّ قَدِمْنَا خَيْبَرَ، فَلَمَّا فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِ الْحِصْنَ ذُكِرَ لَهُ جَمَالُ صَفِيَّةَ بِنْتِ حُيَيِّ بْنِ أَخْطَبَ - وَقَدْ قُتِلَ زَوْجُهَا، وَكَانَتْ عَرُوسًا - فَاصْطَفَاهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِنَفْسِهِ، فَخَرَجَ بِهَا حَتَّى بَلَغْنَا سَدَّ الصَّهْبَاءِ حَلَّتْ، فَبَنَى بِهَا، ثُمَّ صَنَعَ حَيْسًا فِي نِطَعٍ صَغِيرٍ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((آذِنْ مَنْ حَوْلَكَ)). فَكَانَتْ تِلْكَ وَلِيمَةُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى صَفِيَّةَ. ثُمَّ خَرَجْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ قَالَ: فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحَوِّي لَهَا وَرَاءَهُ بِعَبَاءَةٍ، ثُمَّ يَجْلِسُ عِنْدَ بَعِيرِهِ فَيَضَعُ رُكْبَتَهُ، فَتَضَعُ صَفِيَّةُ رِجْلَهَا عَلَى رُكْبَتِهِ حَتَّى تَرْكَبَ، فَسِرْنَا حَتَّى إِذَا أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ نَظَرَ إِلَى أُحُدٍ

पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है और हम इससे मुहब्बत रखते हैं, उसके बाद आप (ﷺ) ने मदीना की तरफ़ निगाह उठाई और फ़र्माया कि, ऐ अल्लाह! मैं इसके दोनों पथरीले मैदानों के दरम्यान के ख़ित्ते को हुर्मत वाला क़रार देता हूँ जिस तरह हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने मक्का को हुर्मत वाला क़रार दिया था ऐ अल्लाह! मदीना के लोगों को उनकी मुद्द और साअ़ में बरकत अता फ़र्मा। (राजेअ़ : 371)

فَقَالَ: ((هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ)). ثُمَّ نَظَرَ إِلَى الْمَدِينَةِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي احَرِّمُ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا بِمِثْلِ مَا حَرَّمَ إِبْرَاهِيمُ مَكَّةَ. اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي مُدِّهِمْ وَصَاعِهِمْ)).

[راجع: ٣٧١]

तश्रीह : रसूले करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में हज़रत अनस (रज़ि.) को ख़िदमत के लिये साथ रखा जो अभी नाबालिग़ थे, इसी से मक़्सदे बाब षाबित होता है। उसी लड़ाई में हज़रत सफ़िया (रज़ि.) आप (ﷺ) के हरम में दाख़िल हुईं जो एक ख़ानदानी ख़ातून थीं इस रिश्ते से अहले इस्लाम को बहुत से इल्मी फ़वाइद हासिल हुए। इस रिवायत में एक दुआ-ए-मस्नूना भी मज़्कूर हुई है जो बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल है। जिसका याद करना और दुआओं में उसे पढ़ते रहना बहुत से उमूरे दीनी और दुनियावी के लिये मुफ़ीद षाबित होगा। हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के तफ़्सीली हालात पीछे मज़्कूर हो चुके हैं इसी हदीष से मदीना मुनव्वरा का मुक़ाम भी मिष्ले मक्का शरीफ़ हासिल हुआ। दुआ-ए-मस्नूना में लफ़्ज़ हम्म और हुज़्न हम मा'नी ही हैं। फ़र्क़ ये है कि हम्म वो फ़िक्र जो वाक़ेअ नहीं हुआ लेकिन वक़ूअ का ख़तरा है, हुज़्ना वो ग़म व फ़िक्र जो वाक़ेअ हो चुका है। हज़रत अनस (रज़ि.) ख़िदमते नबवी में पहले ही थे मगर उस मौक़े पर भी उनको साथ लिया गया उनकी मुद्दते ख़िदमत नौ साल है, उहुद पहाड़ के लिये जो आप (ﷺ) ने फ़र्माया वो हक़ीक़त पर मबनी है, **इन्नल्लाह अला कुल्लि शैइन क़दीर** (अल बक़र : 20)

बाब 75 : जिहाद के लिये समुन्दर में सफ़र करना

٧٥- بَابُ رُكُوبِ الْبَحْرِ

2894. 95. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे मुहम्मद बिन यह्या बिन हब्बान ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे उम्मे हराम (रज़ि.) ने ये वाक़िया बयान किया था कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दिन उनके घर में तशरीफ़ लाकर क़ैलूला फ़र्माया था। जब आप बेदार हुए तो हंस रहे थे। उन्होंने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! किस बात पर आप हंस रहे हैं? फ़र्माया मुझे अपनी उम्मत मे से एक क़ौम को (ख़्वाब में देखकर) ख़ुशी हुई जो समुन्दर में (ग़ज़्वा के लिये) इस तरह जा रहे थे जैसे बादशाह तख़्त पर बैठे हों । मैंने अ़र्ज किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह से दुआ कीजिए कि मुझे भी वो उनमें से कर दे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम भी उन ही में से हो। उसके बाद फिर आप सो गए और जब बेदार हुए तो फिर हंस रहे थे। आपने इस बार भी वही बात बताई। ऐसा दो या तीन बार हुआ। मैंने कहा,

٢٨٩٤، ٢٨٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنُ حَبَّانَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((حَدَّثَتْنِي أُمُّ حَرَامٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ يَوْمًا فِي بَيْتِهَا، فَاسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ، قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا يُضْحِكُكَ؟ قَالَ: ((عَجِبْتُ مِنْ قَوْمٍ مِنْ أُمَّتِي يَرْكَبُونَ الْبَحْرَ كَالْمُلُوكِ عَلَى الأَسِرَّةِ))، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَقَالَ: ((أَنْتِ مِنْهُمْ)). ثُمَّ نَامَ فَاسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ. فَقَالَ مِثْلَ ذَلِكَ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا. قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ

ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि मुझे भी वो उनमें से कर दे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सबसे पहले लश्कर के साथ होगी वो हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) के निकाह में थीं और वो उनको (इस्लाम के सबसे पहले बहरी बेड़े के साथ) ग़ज़्वा में ले गए, वापसी में सवार होने के लिये अपनी सवारी से क़रीब हुईं (सवार होते हुए या सवार होने के बाद) गिर पड़ीं जिससे आपकी गर्दन टूट गई और शहादत की मौत पाई, रज़ियल्लाहु अन्हा। (राजेअ : 2788, 2789)

ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَيَقُولُ: ((أَنْتِ مِنَ الأَوَّلِينَ)). فَتَزَوَّجَ بِهَا عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ فَخَرَجَ بِهَا إِلَى الْغَزْوِ، فَلَمَّا رَجَعَتْ قُرِّبَتْ دَابَّةٌ لِتَرْكَبَهَا، فَوَقَعَتْ فَانْدَقَّتْ عُنُقُهَا)).

[راجع: ٢٧٨٨، ٢٧٨٩]

ये हदीष और इस पर नोट पीछे लिखा जा चुका है यहाँ मरहूम इक़बाल का ये शे'र याद रखने के क़ाबिल है :-

दश्त तो दश्त है दरिया भी न छोड़े हमने — बहरे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हमने

बाब 76 : लड़ाई में कमज़ोर नातवाँ और नेक लोगों से मदद चाहना

٧٦- بَابُ مَنِ اسْتَعَانَ بِالضُّعَفَاءِ وَالصَّالِحِينَ فِي الْحَرْبِ

उनसे दुआ कराना, और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझको अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि मुझसे क़ैसर (मुल्के रोम के बादशाह) ने कहा कि मैंने तुमसे पूछा कि अमीर लोगों ने उन (हुज़ूर अकरम ﷺ की पैरवी की है या कमज़ोर ग़रीब तबक़े वालों ने? तुमने बताया कि कमज़ोर और ग़रीब तबक़े वालों ने (उनकी इत्तिबाअ की है) और अंबिया का पैरूकार यही तब्क़ा होता है।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَنِي أَبُو سُفْيَانَ قَالَ: ((قَالَ لِي قَيْصَرُ: سَأَلْتُكَ أَشْرَافُ النَّاسِ اتَّبَعُوهُ أَمْ ضُعَفَاؤُهُمْ؟ فَزَعَمْتَ ضُعَفَاؤُهُمْ، وَهُمْ أَتْبَاعُ الرُّسُلِ)).

2896. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन तलहा ने बयान किया, उनसे मुस्अब इब्ने सअद ने बयान किया कि सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) का ख़याल था कि उन्हें दूसरे बहुत से सहाबा पर (अपनी मालदारी और बहादुरी की वजह से) फ़ज़ीलत हासिल है तो नबी करीम (स) ने फ़र्माया कि तुम लोग सिर्फ़ अपने कमज़ोर मा'ज़ूर लोगों की दुआओं के नतीजे में अल्लाह की तरफ़ से मदद पहुँचाए जाते हो और उन की दुआओं से रिज़्क़ दिये जाते हो।

٢٨٩٦- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ عَنْ طَلْحَةَ عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: رَأَى سَعْدٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِنَّ لَهُ فَضْلاً عَلَى مَنْ دُونَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَلْ تُنْصَرُونَ وَتُرْزَقُونَ إِلاَّ بِضُعَفَائِكُمْ)).

क़ाल इब्नु बत्ताल तावीलुहू अन्नज़्ज़ुअफ़ाअ अशद्दु इख़्लासन फिदुआइ व अक्षरु ख़ुशूअन फिल्इबादति लिख़लाइ क़ुलूबिहिम अनित्तअल्लुक़ि बिज़ुख़रूफ़िद्दुनिया. (फ़त्ह) या'नी ज़ुअफ़ा दुआ करते वक़्त इख़्लास में बहुत सख़्त होते हैं और इबादत में उनका ख़ुशूअ ज़्यादा होता है और उनके दिन दुनियावी ज़ैब व ज़ीनत से पाक होते हैं। इसलिये ज़ईफ़ लोगों से दुआ कराना बहुत ही मौजिबे बरकत है।

2897. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे

٢٨٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ

सुफ़यान बिन उयय्ना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, आप अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया एक ज़माना ऐसा आयेगा कि मुसलमानों की फ़ौज की फ़ौज जहाँ पर होंगी जिनमें पूछा जाएगा क्या फ़ौज में कोई ऐसे बुज़ुर्ग भी हैं जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) की सुह़बत उठाई हो, कहा जाएगा कि हाँ तो उनसे फ़तह की दुआ़ कराई जाएगी। फिर एक ऐसा ज़माना आएगा उस वक़्त उसकी तलाश होगी कि कोई ऐसे बुज़ुर्ग मिल जाएँ जिन्होनें नबी करीम (ﷺ) के स़ह़ाबा की सुह़बत उठाई हो, (या'नी ताबेई) ऐसे भी बुज़ुर्ग मिल जाएँगे और उनसे फ़तह की दुआ़ कराई जाएगी उसके बाद एक ऐसा ज़माना आएगा कि पूछा जाएगा कि क्या तुममें से कोई ऐसे बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) के स़ह़ाबा के शागिर्दों की सुह़बत पाई हो कहा जाएगा कि हाँ और उनसे फ़तह की दुआ़ कराई जाएगी। (दीगर मक़ाम : 3594, 3649)

حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ جَابِرًا عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((يَأْتِي زَمَانٌ يَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ، فَيُقَالُ: فِيْكُمْ مَنْ صَحِبَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَيُقَالُ: نَعَم. فَيُفْتَحُ عَلَيْهِ. ثُمَّ يَأْتِي زَمَانٌ فَيُقَالُ: فِيْكُمْ مَنْ صَحِبَ أَصْحَابَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَيُقَالُ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ. ثُمَّ يَأْتِي زَمَانٌ فَيُقَالُ: فِيْكُمْ مَنْ صَحِبَ صَاحِبَ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَيُقَالُ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ)).

[طرفاه في: ٣٥٩٤، ٣٦٤٩].

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ से मा'लूम हुआ कि अल्लाह वाले नेक लोगों की दुआ़ओं से नफ़ा ह़ासिल करना जाइज़ है। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मेरा ज़माना, फिर मेरे बाद स़ह़ाबा का ज़माना और फिर ताबेईन का ज़माना ये बेहतरीन ज़माने हैं। इन ख़ैरो-बरकत के ज़मानों में मुसलमान स़ह़ीह़ मा'नों में अल्लाह वाले मुसलमान थे, उनकी दुआ़ओं को क़ुबूले आ़म ह़ासिल था। बहरह़ाल हर ज़माने में ऐसे अल्लाह वाले लोगों का वजूद ज़रूरी है। उनकी सुह़बत में रहना, उनसे दुआ़एँ कराना और रूह़ानी फ़यूज़ ह़ासिल करना ऐन ख़ुशनसीबी है। ऐसे ही लोगों को क़ुर्आन मजीद में औलिया अल्लाह से ता'बीर किया गया है जिनकी शान में **अल्लज़ीन आमनू व कानू यत्तक़ून** कहा गया है कि वो लोग अपने ईमान में पुख़्ता और तक़्वा में कामिल होते हैं। जिनमें ये चीज़ें न पाई जाएँ उनको औलिया अल्लाह जानना इंतिहाई ह़िमाक़त है। मगर अफ़सोस कि आजकल बेशतर नामनिहाद मुसलमान इस ह़िमाक़त में मुब्तला हैं कि वो बहुत से चरसी, अफ़ीमची, हरामख़ोर, निकट्टू लोगों को मह़ज़ उनके बालों और जुब्बों-क़ुब्बों को देखकर अल्लाह वाले जानते हैं, हालाँकि ऐसे लोगों के भेस में इब्लीस की औलाद है जो ऐसे बहुत से कमअक़्लों को गुमराह करके दोज़ख़ी बनाने का फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं। **अल्लाहुम्म इन्ना नऊ़ज़ू बिक मिन शुरूरिअन्फ़ुसिना** ह़दीष़ से मैदाने जिहाद में नेकतरीन लोगों से दुआ़ कराने का ष़ुबूत हुआ। **अद्दुआ़उ सलाहुल्मूमिनि**, मोमिन का बेहतरीन हथियार है। सच है, बला को टाल देती है दुआ़ अल्लाह वालों की।

बाब 77 : क़त्ई तौर पर ये न कहा जाए

٧٧- بَابُ لاَ يَقُولُ فُلاَنٌ شَهِيْدٌ

कि फ़लाँ शख़्स शहीद है (क्योंकि निय्यत और ख़ात्मा का ह़ाल मा'लूम नहीं है) और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते में जिहाद करता है और अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते में ज़ख़्मी होता है।

وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اللهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُجَاهِدُ فِي سَبِيْلِهِ، اللهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُكْلَمُ فِي سَبِيْلِهِ)).

तश्रीह़ : जब तक ह़दीष़ से ष़ाबित न हो जैसे क़त्ई तौर पर किसी को बहिश्ती नहीं कह सकते मगर सिर्फ़ उन लोगों को जिनको आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो जन्नती है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उस ह़दीष़ की त़रफ़ इशारा किया

जिसको हज़रत इमाम अहमद ने निकाला कि तुम अपने जंगों में कहते हो कि फ़लाँ शहीद हुआ ऐसा न कहो। यूँ कहो जो अल्लाह की राह में मरे वो शहीद है। दूसरी रिवायत मे है बहुत लोग ऐसे हैं कि उनको दुश्मन का तीर लगता है और वो मर जाते हैं मगर वो अल्लाह के नज़दीक हक़ीक़ी शहीद नहीं होते हैं। जो दुनिया में रिया व नमूद के लिये लड़े और मारे गए, जैसाकि दूसरी रिवायत में सराहत मौजूद है।

2898. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की (अपने अस्हाब के साथ या ख़ैबर की लड़ाई में) मुश्रिकीन से मुठभेड़ हुई और जंग छिड़ गई, फिर जब आप (ﷺ) (उस दिन लड़ाई से फ़ारिग़ होकर) अपने पड़ाव की तरफ़ वापस हुए और मुश्रिकीन अपनी पड़ाव की तरफ़ तो आप (ﷺ) की फौज के साथ एक शख़्स था, लड़ाई लड़ने में उनका ये हाल था कि मुश्रिकीन का कोई आदमी भी अगर किसी तरफ़ नज़र पड़ जाता तो उसका पीछा करके वो शख़्स अपनी तलवार से उसे क़त्ल कर देता। सहल (रज़ि.) ने उसके बारे में कहा कि आज जितनी सरगर्मी के साथ फ़लाँ शख़्स लड़ा है, हममें से कोई भी उस तरह नहीं लड़ सका। आप (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि लेकिन वो शख़्स जहन्नमी है। मुसलमानों में से एक शख़्स ने (अपने दिल में कहा अच्छा मैं उसको पीछा करूँगा (देखूँ हुज़ूर ﷺ ने उसे क्यूँ दोज़ख़ी कहा है) बयान किया कि वो उसके साथ साथ दूसरे दिन लड़ाई में मौजूद रहा, जब कभी वो खड़ा हो जाता तो ये भी खड़ा हो जाता और जब वो तेज़ चलता तो ये भी उसके साथ तेज़ चलता। बयान किया कि आख़िर वो शख़्स ज़ख़्मी हो गया ज़ख़्म बड़ा गहरा था। इसलिये उसने चाहा कि मौत जल्दी आ जाए और अपनी तलवार का फल ज़मीन पर रखकर उसकी धार को सीने के मुक़ाबले में कर लिया और तलवार पर गिरकर अपनी जान दे दी। अब वो साहब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे कि मैं गवाही देता हूँ कि आप (ﷺ) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। आप (ﷺ) ने पूछा क्या बात हुई? उन्होंने बयान किया कि वही शख़्स जिसके बारे में आपने फ़र्माया था कि वो जहन्नमी है, सहाबा किराम (रज़ि.) पर ये आपका फ़र्मान बड़ा शाक़ गुज़रा था। मैंने उनसे कहा कि तुम सब लोगों की तरफ़ से मैं उसके बारे में तहक़ीक़ करता

٢٨٩٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ الْتَقَى هُوَ وَالْمُشْرِكُونَ فَاقْتَتَلُوا، فَلَمَّا مَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى عَسْكَرِهِ وَمَالَ الآخَرُونَ إِلَى عَسْكَرِهِمْ، وَفِي أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ رَجُلٌ لاَ يَدَعُ لَهُمْ شَاذَّةً وَلاَ فَاذَّةً إِلاَّ اتَّبَعَهَا يَضْرِبُهَا بِسَيْفِهِ، فَقَالَ : مَا أَجْزَأَ مِنَّا الْيَوْمَ أَحَدٌ كَمَا أَجْزَأَ فُلاَنٌ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : ((أَمَا إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ))، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: أَنَا صَاحِبُهُ، قَالَ فَخَرَجَ مَعَهُ كُلَّمَا وَقَفَ وَقَفَ مَعَهُ، وَإِذَا أَسْرَعَ أَسْرَعَ مَعَهُ، قَالَ: فَجُرِحَ الرَّجُلُ جُرْحًا شَدِيدًا، فَاسْتَعْجَلَ الْمَوتَ، فَوَضَعَ نَصْلَ سَيْفِهِ فِي الأَرْضِ وَذُبَابَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ، ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَى سَيْفِهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ، فَخَرَجَ الرَّجُلُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ، قَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) قَالَ: الرَّجُلُ الَّذِي ذَكَرْتَ آنِفًا أَنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، فَأَعْظَمَ النَّاسُ ذَلِكَ، فَقُلْتُ: أَنَا لَكُمْ بِهِ، فَخَرَجْتُ فِي طَلَبِهِ، ثُمَّ جُرِحَ جُرْحًا شَدِيدًا، فَاسْتَعْجَلَ الْمَوتَ فَوَضَعَ نَصْلَ

سَيْفِهِ فِي الأَرْضِ وَذُبَابَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَيْهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عِنْدَ ذَلِكَ: ((إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ الْجَنَّةِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ النَّارِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ)). [أطرافه في: ٤٢٠٢، ٤٢٠٧، ٦٤٩٣، ٦٦٠٧].

हूँ। चुनाँचे मैं उसके पीछे हो लिया। उसके बाद वो शख़्स सख़्त ज़ख़्मी हो गया और चाहा कि जल्दी मौत आ जाए। इसलिये उसने अपनी तलवार का फल ज़मीन पर रखकर उसकी धार को अपने सीने के मुक़ाबिल कर लिया और उस पर गिरकर अपनी जान दे दी। उस वक़्त आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक आदमी ज़िन्दगी भर बज़ाहिर अहले जन्नत के सारे काम करता है हालाँकि वो अहले जहन्नम में से होता है और एक आदमी बज़ाहिर अहले दोज़ख़ के काम करता है हालाँकि वो अहले जन्नत में से होता है। (दीगर मक़ाम : 4202, 4207, 6493, 6607)

हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है कि ज़ाहिर में वो शख़्स मैदाने जिहाद में बहुत बड़ा मुजाहिद मा'लूम हो रहा था मगर क़िस्मत में दोज़ख़ लिखी हुई थी, जिसके लिये नबी करीम (ﷺ) ने वह्य और इल्हाम के ज़रिये मा'लूम करके फ़र्मा दिया था। आख़िर वही हुआ कि ख़ुदकुशी करके हराम मौत का शिकार हुआ और दोज़ख़ में दाख़िल हुआ। अंजाम का फ़िक्र हर वक़्त ज़रूरी है। अल्लाह पाक राक़िमुल हुरूफ़ (लेखक) और तमाम क़ारेईने किराम को ख़ात्मा बिल ख़ैर नसीब फ़र्माए आमीन।

٧٨- بَابُ التَّحْرِيضِ عَلَى الرَّمْيِ، وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

बाब 78 : तीरंदाज़ी की तरग़ीब दिलाने के बयान में

﴿وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ﴾ [الأنفال : ٦٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, और उन (काफ़िरों) के मुक़ाबले के लिये जिस क़दर भी तुमसे हो सके सामान तैयार रखो, क़ुव्वत से और पले हुए घोड़ों से, जिसके ज़रिये से तुम अपनी रुअब रखते हो अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर. (अल अन्फ़ाल : 60)

तश्रीह : आयते शरीफ़ा में लफ़्ज़ मिन क़ुव्वह में तन्वीन, तन्कीर के लिये है जिससे मैदाने जंग में काम आने वाली हर क़िस्म की क़ुव्वत मुराद है, जिस्मानी, फ़न्नी और आलात की क़ुव्वत जिसमें वो सारे आलाते जंग शामिल हैं जो अब तक वजूद में आ चुके हैं और क़यामत तक वजूद में आएँगे। मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि वो जुम्ला आलात मुहय्या करें, उनसे पूरी वाक़फ़ियत पैदा करें, उनको ख़ुद बनाएँ उनका इस्ते'माल हों, सबको ये आयत शामिल होगी। आयत में अगला टुकड़ा **तुर्हिबून बिही अदुव्वल्लाहि व अदुव्वकुम** (अल अन्फ़ाल : 60) और भी ज़्यादा तवज्जह तलब है कि आलाते जंग का इस्तेमाल महज़ मुल्कगीरी के लिये न हो बल्कि उनका मक़्सद ये हो कि अल्लाह के दीन के दुश्मनों को दबाकर ख़ल्क़ुल्लाह के लिये ज़मीन को अमन व आफ़ियत का गहवारा बनाया जाए क्योंकि अल्लाह के दीन का तक़ाज़ा यही है कि यहाँ उसकी मख़्लूक़ चैन व सुकून की ज़िन्दगी बसर कर सके, ज़ुल्मो-उदवान को मिटाना यही इस्लामी जिहाद का मंशा है और बस।

٢٨٩٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَلَمَةَ بْنَ الأَكْوَعِ

2899. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने बयान किया, उन्होंने सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) का क़बीला बनू

असलम के चन्द सहाबा पर गुज़र हुआ जो तीरंदाज़ी की मश्क़ (प्रेक्टिस) कर रहे थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के बेटों ! तीरंदाज़ी करो कि तुम्हारे बुज़ुर्ग दादा इस्माईल (अलैहिस्सलाम) भी तीरंदाज़ थे। हाँ! तीरंदाज़ी करो, मैं बनी फ़लाँ (इब्नुल औराअ रज़ि.) की तरफ़ हूँ। बयान किया, जब आप (ﷺ) एक फ़रीक़ के साथ हो गये तो (मुक़ाबले में हिस्सा लेने वाले) दूसरे फ़रीक़ ने अपने हाथ रोक लिये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या बात पेश आई, तुम लोगों ने तीरंदाज़ी क्यूँ बन्द कर दी? दूसरे फ़रीक़ ने अर्ज़ किया कि जब आप (ﷺ) एक फ़रीक़ के साथ हो गये तो भला हम किस तरह मुक़ाबला कर सकते हैं। इस पर आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा तीरंदाज़ी जारी रखो, मैं तुम सबके साथ हूँ। (दीगर मक़ाम : 3507, 3373)

رَضِي اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى نَفَرٍ مِنْ أَسْلَمَ يَنْتَضِلُونَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ارْمُوا بَنِي إِسْمَاعِيْلَ، فَإِنَّ أَبَاكُمْ كَانَ رَامِيًا، ارْمُوا وَأَنَا مَعَ بَنِي فُلاَنٍ)). قَالَ: فَأَمْسَكَ أَحَدُ الْفَرِيْقَيْنِ بِأَيْدِيْهِمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا لَكُمْ لاَ تَرْمُونَ؟)) قَالُوا: كَيْفَ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَهُمْ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ارْمُوا فَأَنَا مَعَكُمْ كُلِّكُمْ)).

[طرفاه في : ٣٥٠٧، ٣٣٧٣].

तश्रीह : सीरते तय्यिबा के मुतालआ करने वालों पर वाज़ेह है कि आप (ﷺ) ने अपने पैरोकारों को हमेशा सिपाही बनाने की कोशिश की और मुजाहिदाना ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये दिन-रात तल्क़ीन करते रहे जैसा कि इस हदीष से भी वाज़ेह है। साथ ही ये भी वाजेह हुआ कि अरबों के जद्दे अमजद (पूर्वज) हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) भी बड़े ज़बरदस्त सिपाही थे और नेज़ा-बाज़ी ही उनका मशग़ला था। आजकल बन्दूक़, तोप, हवाई जहाज़ और जितने भी आलाते हर्ब (युद्धक हथियार) वजूद में आ चुके हैं वो सब इसी ज़ेल (की परिभाषा में) हैं। उन सबमें महारत पैदा करना सबको अपनाना ये अल्लाह की बन्दगी के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि हर मुसलमान पर इनका सीखना फ़र्ज़ है।

2900. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन ग़सील ने, उनसे हम्ज़ा बिन अबी उसैद ने, और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बद्र की लड़ाई के मौक़े पर जब हम कुरैश के मुक़ाबले में सफ़बंद हो गये थे और वो हमारे मुक़ाबले में तैयार थे, फ़र्माया कि अगर (हमला करते हुए) कुरैश तुम्हारे क़रीब आ जाएँ तो तुम लोग तीरंदाज़ी शुरू कर देना ताकि वो पीछे हटने पर मजबूर हों। (दीगर मक़ाम : 3984, 3985)

٢٩٠٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْغَسِيْلِ عَنْ حَمْزَةَ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ حِيْنَ صَفَفْنَا لِقُرَيْشٍ وَصَفُّوا لَنَا: ((إِذَا أَكْثَبُوكُم فَعَلَيْكُمْ بِالنَّبْلِ)).

[طرفاه في: ٣٩٨٤، ٣٩٨٥].

इस हदीष से ज़ाहिर हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने मैदाने बद्र में मुजाहिदीने इस्लाम को जंगी तर्बियत भी फ़र्माई और जंग व जिहाद के क़ायदे भी ता'लीम फ़र्माए। दरहक़ीक़त अमीरे लश्कर को ऐसा होना चाहिये कि वो क़ौम को हर तरह से कंट्रोल कर सके।

बाब 79 : बरछे से (मश्क़ करने के लिये) खेलना

٧٩- بَابُ اللَّهْوِ بِالْحِرَابِ وَنَحْوِهَا

2901. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें इब्नुल मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि

٢٩٠١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ

ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا الْحَبَشَةُ يَلْعَبُونَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ بِالْحِرَابِهِمْ دَخَلَ عُمَرُ فَأَهْوَى إِلَى الْحَصْبَاءِ فَحَصَبَهُمْ بِهَا، فَقَالَ: ((دَعْهُمْ يَا عُمَرُ)) وَزَادَ عَلِيٌّ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ ((فِي الْمَسْجِدِ)).

हब्शा के कुछ लोग नबी करीम (ﷺ) के सामने हिराब (छोटे नेज़े) का खेल दिखला रहे थे कि उमर (रज़ि.) आ गए और कंकरियाँ उठाकर उन्हें उनसे मारा। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उमर! उन्हें खेल दिखाने दो। अली बिन मदीनी ने ये बयान ज़्यादा किया कि हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी कि मस्जिद में (ये सहाबा रज़ि.) अपने खेल का मुज़ाहिरा कर रहे थे।

ये जंगी करतबों की मश्क़ (प्रेक्टिस) थी। हुज़ूरे नबवी में हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसे ख़िलाफ़ अदब समझा मगर आँहज़रत (ﷺ) ने हब्शी मुजाहिदीन की हिम्मत अफ़ज़ाई की और उनकी उस मश्क़ को जारी रहने दिया। अहदे रिसालत में नश्रो-इशाअत बल्कि सारे काम नज़्म व नस्क़ मिल्लत के लिये दफ़्तर का काम भी मस्जिद ही से लिया जाता था। इस्लाम का इब्तिदाई दौर था, आज जैसी आसानियाँ मुहय्या न थीं इसलिये मिल्ली उमूर के लिये मस्जिद ही को बतौर मर्कज़ मिल्लत इस्ते'माल किया गया। आज भी मसाजिद को इस्लामी मिल्लत उमूर के लिये इसी तौर पर इस्ते'माल किया जा सकता है, **व फीहि किफायतुन लिमन लहू दिरायतुन।**

٨٠- بَابُ الْمِجَنِّ وَمَنْ يَتَتَرَّسُ بِتُرْسِ صَاحِبِهِ

बाब 80 : ढाल का बयान और जो अपने साथी की ढाल इस्ते'माल करे उसका बयान

٢٩٠٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ أَبُو طَلْحَةَ يَتَتَرَّسُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِتُرْسٍ وَاحِدٍ، وَكَانَ أَبُو طَلْحَةَ حَسَنَ الرَّمْيِ، فَكَانَ إِذَا رَمَى يُشْرِفُ النَّبِيُّ ﷺ فَيَنْظُرُ إِلَى مَوْضِعِ نَبْلِهِ))

[راجع: ٢٨٨٠]

2902. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू तलहा (रज़ि.) अपनी और नबी करीम (ﷺ) की आड़ एक ही ढाल से कर रहे थे और अबू तलहा (रज़ि.) बड़े अच्छे तीरंदाज़ थे। जब वो तीर मारते तो नबी अकरम (ﷺ) सर उठाकर देखते कि तीर कहाँ जाकर गिरा है। (राजेअ : 2880)

एक ही ढाल से दो मुजाहिदीन के बचाव करने का जवाज़ साबित हुआ जैसा कि हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) का अमल हुआ। आँहज़रत (ﷺ) उनकी निशानेबाज़ी की कामयाबी मा'लूम करने के लिये नज़र उठाकर देखते कि तीर कहाँ जाकर गिर रहा है, उनकी हिम्मत अफ़ज़ाई के लिये भी।

٢٩٠٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ قَالَ: ((لَمَّا كُسِرَتْ بَيْضَةُ النَّبِيِّ عَلَى رَأْسِهِ وَأُدْمِيَ وَجْهُهُ وَكُسِرَتْ رَبَاعِيَتُهُ، وَكَانَ عَلِيٌّ يَخْتَلِفُ بِالْمَاءِ فِي

2903. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि जब उहुद की लड़ाई में आँहज़रत (ﷺ) का ख़ूद आप (ﷺ) के सरे मुबारक पर तोड़ा गया और चेहरा मुबारक ख़ून आलूद हो गया और आप (ﷺ) के आगे के दांत शहीद हो गये तो अली (रज़ि.) ढाल में भर-भरकर

الْمِجَنِّ وَكَانَتْ فَاطِمَةُ تَغْسِلُهُ، فَلَمَّا رَأَتِ الدَّمَ يَزِيْدُ عَلَى الْمَاءِ كَثْرَةً عَمَدَتْ إِلَى حَصِيْرٍ فَأَحْرَقَتْهَا وَأَلْصَقَتْهَا عَلَى جُرْحِهِ فَرَقَأَ الدَّمُ)). [راجع: ٢٤٣]

पानी बार बार ला रहे थे और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ज़ख़्म को धो रही थीं। जब उन्होंने देखा कि ख़ून पानी से और ज़्यादा निकल रहा है तो उन्होंने एक चटाई जलाई और उसकी राख को आप (ﷺ) के ज़ख़्मों पर लगा दिया, जिससे ख़ून आना बन्द हो गया। (राजेअ : 243)

तश्रीह : दंदाने मुबारक को सदमा पहुँचाने वाला उत्बा बिन अबी वक़्क़ास मर्दूद था, उसने आप (ﷺ) के क़रीब जाकर एक पत्थर मारा मगर फ़ौरन हज़रत हातिब बिन अबी बल्तआ (रज़ि.) ने एक ही ज़र्ब से उसकी गर्दन उड़ा दी। और अ़ब्दुल्लाह बिन क़म्या मर्दूद ने पत्थर मारे। आपने फ़र्माया अल्लाह तुझे तबाह करे। ऐसा ही हुआ कि एक पहाड़ी बकरी ने निकलकर उसको सींगों से ऐसा मारा कि उसके टुकड़े टुकड़े कर दिया। सच है वो लोग किस तरह फ़लाह पा सकते हैं जिनके हाथों ने अपने ज़माने के नबी (ﷺ) के सर को ज़ख़्मी कर दिया हो।

٢٩٠٤ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسِ بْنِ الْحَدَثَانِ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَتْ أَمْوَالُ بَنِي النَّضِيْرِ مِمَّا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُوْلِهِ ﷺ مِمَّا لَمْ يُوجِفِ الْمُسْلِمُوْنَ عَلَيْهِ بِخَيْلٍ وَلاَ رِكَابٍ فَكَانَتْ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ خَاصَّةً وَكَانَ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِ، ثُمَّ يَجْعَلُ مَا بَقِيَ فِي السِّلاَحِ وَالْكُرَاعِ عُدَّةً فِي سَبِيْلِ اللهِ)). [أطرافه في: ٣٠٩٤، ٤٠٣٣، ٤٨٨٥، ٥٣٥٧، ٥٣٥٨، ٦٧٢٨، ٧٣٠٥].

2904. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे मालिक बिन औस बिन हदष़ान ने और उनसे उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि बनू नज़ीर के बाग़ात वग़ैरह अम्वाल उनमें से थे जिनको अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (ﷺ) को बग़ैर लड़े दे दिया था। मुसलमानों ने उनके हासिल करने के लिये घोड़े और ऊँट नहीं दौड़ाए तो ये अम्वाल ख़ास तौर से रसूलुल्लाह (ﷺ) ही के थे जिनमें से आप (ﷺ) अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात को सालाना नफ़्क़ा के तौर पर भी दे देते थे और बाक़ी हथियार और घोड़ों पर खर्च करते थे ताकि अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) हर वक़्त तैयारी रहे। (दीगर मक़ाम : 3094, 4033, 4885, 5357, 5358, 6728, 7305)

हथियार घोड़े ये सारी फ़ौज के इस्ते'माल के वास्ते मुहय्या किये जाते थे।

٢٩٠٥ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعْدُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ عَلِيٍّ. حَدَّثَنَا قَبِيْصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ شَدَّادٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُفَدِّي رَجُلاً بَعْدَ سَعْدٍ، سَمِعْتُهُ

2905. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, कहा मुझसे सअ़द बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद ने और उनसे अ़ली (रज़ि.) ने (दूसरी रिवायत में) हमसे क़बीसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद ने बयान किया, कहा कि मैं ने हज़रत अ़ली (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) के बाद मैंने किसी के बारे में नबी करीम (ﷺ) से

يَقُولُ: ((ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي)).
[أطرافه في: ٤٠٥٨، ٤٠٥٩، ٦١٨٤].

नहीं सुना कि आपने ख़ुद को उन पर सदक़े किया हो। मैंने सुना कि आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे तीर बरसाओ (सअ़द रजि) तुम पर मेरे माँ-बाप क़ुर्बान हों। (दीगर मक़ाम : 4058, 4059, 6184)

तश्रीह : इस ह़दीष़ से तीरंदाज़ी की फ़ज़ीलत षाबित हुई इस तौर पर कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) की तीरंदाज़ी पर उनको शाबाशी पेश फ़र्माई। मा'लूम हुआ कि फ़ुनूने ह़र्ब जिनमें महारत पैदा करने से अल्लाह पाक की रज़ा मत्लूब हो बड़ी फ़ज़ीलत और दरजात रखते हैं। अ़स्रे ह़ाज़िर (वर्तमान काल) के सारे आलाते-ह़र्ब (युद्धक हथियारों) में महारत को इसी पर क़यास किया जा सकता है स़द अफ़सोस, कि मुसलमानों ने इन नेक कामों को क़त्अन भुला दिया है जिसकी सज़ा वो मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबों की शक्ल में भुगत रहे हैं।

٨١- بَابُ الدَّرَقِ

बाब 81 : ढाल के बयान में

٢٩٠٦- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنِي أَبُو الأَسْوَدِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَعِنْدِي جَارِيَتَانِ تُغَنِّيَانِ بِغِنَاءِ بُعَاثٍ، فَاضْطَجَعَ عَلَى الْفِرَاشِ وَحَوَّلَ وَجْهَهُ، فَدَخَلَ أَبُوبَكْرٍ فَانْتَهَرَنِي وَقَالَ: مِزْمَارَةُ الشَّيْطَانِ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ. فَأَقْبَلَ عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((دَعْهُمَا)). فَلَمَّا غَفَلَ غَمَزْتُهُمَا فَخَرَجَتَا)). [راجع: ٤٥٤]

2906. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया कि अ़म्र ने कहा कि मुझसे अबुल अस्वद ने बयान किया, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए तो दो लड़कियाँ मेरे पास जंग बुआ़ष़ के गीत गा रही थीं। आप (ﷺ) बिस्तर पर लेट गए और चेहरा मुबारक दूसरी त़रफ़ कर लिया उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) आ गए और आपने मुझे डांटा कि ये शैत़ानी गाना और रसूलुल्लाह (ﷺ) की मौजूदगी में ! लेकिन आप (ﷺ) उनकी त़रफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया कि उन्हें गाने दो, फिर जब अबूबक्र (रज़ि.) दूसरी तरफ़ मुतवज्जह हो गए तो मैंने उन लड़कियों को इशारा किया और वो चली गईं। (राजेअ़ : 454)

٢٩٠٧- قَالَتْ: وَكَانَ يَوْمُ عِيْدٍ يَلْعَبُ السُّودَانُ بِالدَّرَقِ وَالْحِرَابِ، فَإِمَّا سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَإِمَّا قَالَ: ((تَشْتَهِيْنَ تَنْظُرِيْنَ؟)) فَقُلْتُ: نَعَمْ، فَأَقَامَنِي وَرَاءَهُ خَدِّي عَلَى خَدِّهِ وَيَقُولُ: ((دُونَكُمْ يَا بَنِي أَرْفِدَةَ حَتَّى إِذَا مَلِلْتُ قَالَ: ((حَسْبُكِ؟)) قُلْتُ: نَعَم. قَالَ: ((فَاذْهَبِي)). قَالَ أَحْمَدُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ : ((فَلَمَّا غَفَلَ)).
[راجع: ٩٤٩]

2907. आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ईद के दिन सूडान के कुछ स़ह़ाबा ढाल और ह़िराब का खेल दिखला रहे थे, अब या मैं ने ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा या आपने ही फ़र्माया कि तुम भी देखना चाहती हो? मैंने कहा जी हाँ। आप (ﷺ) ने मुझे अपने पीछे खड़ा कर लिया, मेरा चेहरा आप (ﷺ) के चेहरा पर था (इस त़रह मैं पीछे पर्दे से खेल को बख़ूबी देख सकती थी) और आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे ख़ूब बनू अरफ़द! जब मैं थक गई तो आपने फ़र्माया, बस? मैंने कहा जी हाँ, आपने फ़र्माया तो फिर जाओ। अह़मद ने बयान किया और उनसे इब्ने वहब ने (अबूबक्र रज़ि.) के आने के बाद दूसरी त़रफ़ मुतवज्जह हो जाने के लिये लफ़्ज़ अ़मल के बजाय) लफ़्ज़े ग़फ़ल नक़ल किया है। या'नी जब वो ज़रा ग़ाफ़िल हो गए। (राजेअ़ : 949)

रिवायत में कुछ सहाबा के ढालों और बर्छियों से जंगी करतब दिखलाने का ज़िक्र है, इसी से मक़्सदे बाब षाबित हुआ। ये भी मा'लूम हुआ कि तारीख़ी और जंगली करतबों का नज़ारा देखना जाइज़ है, पर्दे के साथ औरतें भी ऐसे खेल देख सकती हैं।

बाब 82 : तलवारों की ह्माइल और तलवार का गले में लटकाना

٨٢- بَابُ الْحَمَائِلِ وَتَعْلِيْقِ السَّيْفِ بِالْعُنُقِ

2908. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और सबसे ज़्यादा बहादुर थे। एक रात मदीना पर (एक आवाज़ सुनकर) बड़ा ख़ौफ़ छा गया था, सब लोग उस आवाज़ की तरफ़ बढ़े लेकिन नबी करीम (ﷺ) सबसे आगे थे और आप (ﷺ) ने ही वाक़िया की तह़क़ीक़ की। आप (ﷺ) अबू तलहा (रज़ि.) के एक घोड़े पर सवार थे जिसकी पुश्त नंगी थी। आप (ﷺ) की गर्दन से तलवार लटक रही थी और आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि डरो मत। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमने तो घोड़े को समुन्दर की तरह तेज़ पाया है या (ये फ़र्माया कि घोड़ा जैसे समुन्दर है)। (राजेअ़ : 2627)

٢٩٠٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَحْسَنَ النَّاسِ، وَأَشْجَعَ النَّاسِ. وَلَقَدْ فَزِعَ أَهْلُ الْمَدِيْنَةِ لَيْلَةً فَخَرَجُوا نَحْوَ الصَّوْتِ فَاسْتَقْبَلَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ وَقَدْ اسْتَبْرَأَ الْخَبَرَ وَهُوَ عَلَى فَرَسٍ لأَبِي طَلْحَةَ عُرْيٍ وَفِي عُنُقِهِ السَّيْفُ وَهُوَ يَقُولُ: ((لَمْ تُرَاعُوا)). ثُمَّ قَالَ: ((وَجَدْنَاهُ بَحْرًا)). أَوْ قَالَ: ((إِنَّهُ لَبَحْرٌ)). [راجع: ٢٦٢٧]

मदीना में एक दफ़ा रात को दुश्मन के ह़मले की अफ़वाह फैल गई थी। उसी की तह़क़ीक़ के लिये आप (ﷺ) ख़ुद बनफ़्से नफ़ीस निकले और चारों तरफ़ दूर दूर तक मुलाहिज़ा करके वापस हुए और लोगों को बताया कि कुछ ख़तरा नहीं है। जिस घोड़े पर आप सवार थे उसकी तेज़ रफ़्तारी से बहुत ख़ुश हुए।

बाब 83 : तलवार की आराइश करना

٨٣- بَابُ حِلْيَةِ السُّيُوفِ

2909. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने सुलैमान बिन ह़बीब से सुना, कहा मैंने अबू उमामा बाहेली से सुना वो बयान करते थे कि एक क़ौम (स़ह़ाबा रिज़्वानुल्लाह अ़लैहिम अज्मईन) ने बहुत सी फ़ुतूह़ात कीं और उनकी तलवारों की आराइश सोने-चाँदी से नहीं हुई थी बल्कि ऊँट की पुश्त का चमड़ा, सीसा और लोहा की तलवार के ज़ेवर थे।

٢٩٠٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ سُلَيْمَانَ بْنَ حَبِيْبٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةَ يَقُولُ ((لَقَدْ فَتَحَ الْفُتُوحَ قَوْمٌ مَا كَانَتْ حِلْيَةُ سُيُوفِهِمُ الذَّهَبَ وَلاَ الْفِضَّةَ، إِنَّمَا كَانَتْ حِلْيَتُهُمُ الْعَلاَبِيَّ وَالآنُكَ وَالْحَدِيْدَ)).

अ़हदे जाहिलियत में तलवारों की ज़ेबाइश सोने-चाँदी से किया करते थे। मुसलमानों ने ज़ाहिरी ज़ेबाइश से क़त्अे नज़र करके

तलवारों की ज़ेबाइश और मस्नूई उम्दगी सीसे और लोहे से की कि दरहक़ीक़त यही उनकी जेबाइश थी। आलाते हर्ब को बेहतर से बेहतर शक्ल में रखना आज भी तमाम मुतमदिन अक़्वामे आलम (सभ्य दुनिया की क़ौमों) का दस्तूर है।

बाब 84 : जिसने सफ़र में दोपहर के आराम के वक़्त अपनी तलवार पेड़ पर लटकाई

٨٤ - بَابُ مَنْ عَلَّقَ سَيْفَهُ بِالشَّجَرِ فِي السَّفَرِ عِنْدَ الْقَائِلَةِ

2910. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझसे सिनान बिन अबी सिनानुद्दौला और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ नजद के अतराफ़ में एक ग़ज़्वा में शरीक थे। जब हुज़ूरे-अकरम (ﷺ) जिहाद से वापस हुए तो आपके साथ ये भी वापस हुए। रास्ते में क़ैलूला का वक़्त एक ऐसी वादी में हुआ जिसमें बबूल के पेड़ बकसरत थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी वादी में पड़ाव किया और सहाबा पूरी वादी में (पेड़ के साये के लिये) फैल गए। आप (ﷺ) ने भी एक बबूल के नीचे क़याम फ़र्माया और अपनी तलवार पेड़ पर लटका दी। हम सब सो गये थे कि आँहज़रत (ﷺ) के पुकारने की आवाज़ सुनाई दी, देखा गया तो एक बदवी आप (ﷺ) के पास था आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसने ग़फ़लत में मेरी ही तलवार मुझ पर खींच ली थी और मै सोया हुआ था, जब बेदार हुआ तो नंगी तलवार उसके हाथ में थी। उसने कहा मुझसे तुम्हें कौन बचाएगा? मैंने कहा कि अल्लाह! तीन बार (मैंने इस तरह कहा और तलवार उसके हाथ से छूटकर गिर गई) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अअराबी को कोई सज़ा नहीं दी बल्कि आप (ﷺ) बैठ गए। (फिर वो ख़ुद मुताष्षिर होकर इस्लाम लाए)।
(दीगर मक़ाम : 2913, 4134, 4135, 4136)

٢٩١٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي سِنَانُ بْنُ أَبِي سِنَانٍ الدُّؤَلِيُّ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ((أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَ أَنَّهُ غَزَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ قِبَلَ نَجْدٍ، فَلَمَّا قَفَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَفَلَ مَعَهُ، فَأَدْرَكَتْهُمُ الْقَائِلَةُ فِي وَادٍ كَثِيرِ الْعِضَاهِ، فَنَزَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، وَتَفَرَّقَ النَّاسُ يَسْتَظِلُّونَ بِالشَّجَرِ، فَنَزَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ تَحْتَ سَمُرَةٍ وَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ، وَنِمْنَا نَوْمَةً، فَإِذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدْعُونَا، وَإِذَا عِنْدَهُ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: إِنَّ هَذَا اخْتَرَطَ عَلَيَّ سَيْفِي وَأَنَا نَائِمٌ، فَاسْتَيْقَظْتُ وَهُوَ فِي يَدِهِ صَلْتًا، فَقَالَ: مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟ فَقُلْتُ: اللهُ (ثَلاَثًا). وَلَمْ يُعَاقِبْهُ، وَجَلَسَ)).
[أطرافه في: ٢٩١٣، ٤١٣٤، ٤١٣٥، ٤١٣٦].

तश्रीह : इब्ने इस्हाक़ ने मग़ाज़ी में यूँ रिवायत किया है कि काफ़िरों ने उस गंवार से जिसका नाम दअषूर था, ये कहा कि इस वक़्त मुहम्मद (ﷺ) अकेले हैं और मौक़ा अच्छा है। चुनाँचे वो आप (ﷺ) की तलवार लेकर आप (ﷺ) के सिरहाने खड़ा हो गया और कहने लगा कि अब आप (ﷺ) को कौन बचाएगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया मेरा बचाने वाला अल्लाह है। आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया ही था कि फ़ौरन हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तशरीफ़ लाए और उस गंवार के सीने पर एक घूंसा मारा और तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी, जो आप (ﷺ) ने उठा ली और फ़र्माया कि अब तुझको कौन बचाएगा? उसने कहा कोई नहीं।

बाब 85 : ख़ूद पहनना

٨٥- بَابُ لُبْسِ الْبَيْضَةِ

(लोहे का टोप जिससे मैदान में सर का बचाव किया जाता था)

2911. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने, उनसे उहुद की लड़ाई में नबी करीम (ﷺ) के ज़ख़्मी होने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बतलाया कि आप (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर ज़ख़्म आए और आप (ﷺ) के आगे के दांत टूट गए थे और ख़ूद आप (ﷺ) के सरे मुबारक पर टूट गई थी। (जिससे सर पर ज़ख़्म आए थे) ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ख़ून धो रही थीं और अ़ली (रज़ि.) पानी डाल रहे थे। जब ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने देखा कि ख़ून बराबर बढ़ता ही जा रहा है तो उन्होंने एक चटाई जलाई और उसकी राख आप (ﷺ) के ज़ख़्मों पर लगा दिया जिससे ख़ून बन्द हो गया। (राजेअ़ : 243)

٢٩١١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ جُرْحِ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ فَقَالَ: جُرِحَ وَجْهُ النَّبِيِّ ﷺ وَكُسِرَتْ رَبَاعِيَتُهُ وَهُشِمَتِ الْبَيْضَةُ عَلَى رَأْسِهِ، فَكَانَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ تَغْسِلُ الدَّمَ وَعَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُمْسِكُ. فَلَمَّا رَأَتْ أَنَّ الدَّمَ لاَ يَزِيْدُ إِلاَّ كَثْرَةً أَخَذَتْ حَصِيْرًا فَأَحْرَقَتْهُ حَتَّى صَارَ رَمَادًا، ثُمَّ أَلْزَقَتْهُ، فَاسْتَمْسَكَ الدَّمُ)).
[راجع: ٢٤٣]

तश्रीह : जंगे उहुद में सबसे ज़्यादा अलमनाक हादषा ये हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) को चोटें आई और आप (ﷺ) ज़ख़्मी हो गए। चेहरे का ज़ख़्म इब्ने क़म्या के हाथों से हुआ और दांतों का सदमा उत्बा इब्ने अबी वक़्क़ास के हाथों से पहुँचा और ख़ूद को आप (ﷺ) के सरे मुबारक पर तोड़ने वाला अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम था। ख़ूद, लोहे का टोप जो सर की हिफ़ाज़त करने के लिये सर ही पर पहना जाता है। ह़दीष़ से उसका पहनना षाबित हुआ। जंगे उहुद के तफ़्सीली हालात किताबुल मग़ाज़ी में आएँगे, इंशाअल्लाह।

बाब 86 : किसी की मौत पर उसके हथियार वग़ैरह तोड़ने दुरुस्त नहीं है

٨٦- بَابُ مَنْ لَمْ يَرَ كَسْرَ السِّلاَحِ عِنْدَ الْمَوتِ

2912. हमसे अ़म्र बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन महदी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान षौरी ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे अ़म्र बिन हारिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (वफ़ात के बाद) अपने हथियार एक सफ़ेद ख़च्चर और एक क़त्अ़ा अराज़ी जिसे आप पहले ही सदक़ा कर चुके थे के सिवा और कोई चीज़ नहीं छोड़ी थी। (राजेअ़ : 2739)

٢٩١٢- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((مَا تَرَكَ النَّبِيُّ ﷺ إِلاَّ سِلاَحَهُ وَبَغْلَةً بَيْضَاءَ وَأَرْضًا جَعَلَهَا صَدَقَةً)). [راجع: ٢٧٣٩]

तश्रीह : अरब में जाहिलियत के ज़माने में दस्तूर था कि जब किसी क़बीले का सरदार या क़बीले का कोई बहादुर मर जाता तो उसके हथियार तोड़ दिये जाते, ये इस बात की अलामत समझी जाती थी कि अब उन हथियारों का ह़क़ीक़ी मा'नो में कोई उठाने वाला बाक़ी न रहा है। ज़ाहिर है कि इस्लाम में ऐसा अमल हर्गिज़ जाइज़ नहीं। रसूले करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद आप (ﷺ) के हथियार वग़ैरह सब बाक़ी रह गए। इसी से बाब का तर्जुमा षाबित हुआ इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब लाकर इशारा किया कि शरीअ़ते इस्लामी में ये काम मना है क्योंकि इसमें अमल का ज़ाया करना है।

बाब 87 : दोपहर के वक़्त पेड़ों का साया हासिल करने के लिये फ़ौजी लोग इमाम से जुदा होकर (मुतफ़र्रिक़ पेड़ों के साये में) फैल सकते हैं

٨٧- بَابُ تَفَرُّقِ النَّاسِ عَنِ الإِمَامِ عِنْدَ الْقَائِلَةِ وَالإِسْتِظْلاَلِ بِالشَّجَرِ

2913. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उनसे सिनान बिन अबी सिनान और अबू सलमा ने बयान किया और उन दोनों हज़रात को जाबिर (रज़ि.) ने ख़बर दी। और हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्हें इब्राहीम बिन सअद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें सिनान बिन अबी सिनान अद् दौली ने और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ एक लड़ाई में शरीक थे। एक ऐसे जंगल में जहाँ बबूल के दरख़्त बकषरत थे। क़ैलूला का वक़्त हो गया, तमाम सहाबा साए की तलाश में (पूरी वादी में मुतफ़र्रिक़ पेड़ों के नीचे) फैल गए और नबी करीम (ﷺ) ने भी एक पेड़ के नीचे क़याम किया। आप (ﷺ) ने तलवार (पेड़ के तने से) लटका दी थी और सो गये थे। जब आप (ﷺ) बेदार हुए तो आप (ﷺ) के पास एक अजनबी मौजूद था उस अजनबी ने कहा था कि अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा? फिर आँहज़रत (ﷺ) ने आवाज़ दी और जब सहाबा (रज़ि.) आप (ﷺ) के क़रीब पहुँचे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस शख़्स ने मेरी ही तलवार मुझ पर खींच ली थी और मुझसे कहने लगा था कि अब तुम्हें मेरे हाथ से कौन बचा सकेगा? मैंने कहा कि अल्लाह (इस पर वो शख़्स ख़ुद ही दहशत ज़दा हो गया) और तलवार नियाम में कर ली, अब ये बैठा हुआ है आँहज़रत (ﷺ) ने उसे कोई सज़ा नहीं दी थी। (राजेअ : 2910)

٢٩١٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنَا سِنَانُ بْنُ أَبِي سِنَانٍ وَأَبُو سَلَمَةَ أَنَّ جَابِرًا أَخْبَرَهُ. حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ سِنَانِ بْنِ أَبِي سِنَانٍ الدُّؤَلِيِّ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ ((أَنَّهُ غَزَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَدْرَكَتْهُمُ الْقَائِلَةُ فِي وَادٍ كَثِيرِ الْعِضَاهِ، فَتَفَرَّقَ النَّاسُ فِي الْعِضَاهِ يَسْتَظِلُّونَ بِالشَّجَرِ. فَنَزَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَحْتَ شَجَرَةٍ فَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ ثُمَّ نَامَ، فَاسْتَيْقَظَ وَعِنْدَهُ رَجُلٌ وَهُوَ لاَ يَشْعُرُ بِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ هَذَا اخْتَرَطَ سَيْفِي فَقَالَ: مَنْ يَمْنَعُكَ؟ قُلْتُ: اللهُ)). فَشَامَ السَّيْفَ، فَهَا هُوَ ذَا جَالِسٌ. ثُمَّ لَمْ يُعَاقِبْهُ)). [راجع: ٢٩١٠]

ये हदीष ऊपर गुज़र चुकी है यहाँ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस हदीष को ये अम्र षाबित करने के लिये लाए कि फ़ौजी लोग दोपहर में कहीं चलते हुए जंगल मे क़ैलूला करें तो अपनी पसन्द के मुताबिक़ सायादार पेड़ तलाश कर सकते हैं और अपने क़ायदे से आराम करने के लिये अलग-अलग हो सकते हैं और ये आदाबे जंग के मनाफ़ी नहीं है।

बाब 88 : भालों (नेज़ो) का बयान

٨٨- بَابُ مَا قِيلَ فِي الرِّمَاحِ

और इब्ने उमर (रज़ि.) से बयान किया जाता है कि नबी करीम

وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ:

(ﷺ) ने फ़र्माया मेरी रोज़ी मेरे नेज़े के साये के नीचे मुक़द्दर की गई है और जो मेरी शरीअत की मुख़ालफ़त करे, उसके लिये ज़िल्लत और ख़्वारी को मुक़द्दर किया गया है।

(جُعِلَ رِزْقِي تَحْتَ ظِلِّ رُمْحِي، وَجُعِلَ الذِّلَّةُ وَالصَّغَارُ عَلَى مَنْ خَالَفَ أَمْرِي)).

इस ह़दीष़ को इमाम अह़मद ने वस्ल किया। मत़लब ये कि मेरा पेशा सिपाहगिरी है। दूसरी ह़दीष़ में है कि मेरी उम्मत की सौदागिरी जिहाद है।

2914. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें उ़मर बिन उ़बैदुल्लाह के मौला अबुन नज़्र ने और उन्हें अबू क़तादा अंस़ारी के मौला नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अबू क़तादा (रज़ि.) ने कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे (सुलह हुदैबिया के मौक़े पर) मक्का के रास्ते में आप (ﷺ) अपने चन्द साथियों के साथ जो एह़राम बाँधे हुए थे, लश्कर से पीछे रह गए। ख़ुद क़तादा (रज़ि.) ने अभी एह़राम नहीं बाँधा था। फिर उन्होंने एक गोरख़र देखा और अपने घोड़े पर (शिकार करने की निय्यत से) सवार हो गये, उसके बाद उन्होंने अपने साथियों से (जो एह़राम बाँधे हुए थे) कहा कि कोड़ा उठा दें उन्होंने उससे इंकार कर दिया, फिर उन्होंने अपना नेज़ा मांगा उसके देने से उन्होंने इंकार किया, आख़िर उन्होंने ख़ुद उसे उठाया और गोरख़र पर झपट पड़े और उसे मार लिया। नबी करीम (ﷺ) के स़ह़ाबा में से कुछ ने तो उस गोरख़र का गोश्त खाया और कुछ ने उसके खाने से (एह़राम के उ़ज़्र की बिना पर) इंकार कर दिया। फिर जब ये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचे तो उसके बारे में मसला पूछा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तो एक खाने की चीज़ थी जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें अ़ता की। और ज़ैद बिन असलम से रिवायत है कि उनसे अ़ता बिन यसार ने बयान किया और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने गोरख़र के (शिकार के) बारे में अबुन नज़्र ही की ह़दीष़ की त़रह़ (अल्बत्ता उस रिवायत में ये ज़ाइद है कि) नबी करीम (ﷺ) ने पूछा क्या उसका कुछ बचा हुआ गोश्त अभी तुम्हारे पास मौजूद है? (राजेअ़ : 1821)

٢٩١٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِبَعْضِ طَرِيقِ مَكَّةَ تَخَلَّفَ مَعَ أَصْحَابٍ لَهُ مُحْرِمِينَ وَهُوَ غَيْرُ مُحْرِمٍ، فَرَأَى حِمَارًا وَحْشِيًّا، فَاسْتَوَى عَلَى فَرَسِهِ، فَسَأَلَ أَصْحَابَهُ أَنْ يُنَاوِلُوهُ سَوْطَهُ فَأَبَوْا، فَسَأَلَهُمْ رُمْحَهُ فَأَبَوْا، فَأَخَذَهُ ثُمَّ شَدَّ عَلَى الْحِمَارِ فَقَتَلَهُ، فَأَكَلَ مِنْهُ بَعْضُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبَى بَعْضٌ، فَلَمَّا أَدْرَكُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ قَالَ: ((إِنَّمَا هِيَ طُعْمَةٌ أَطْعَمَكُمُوهَا اللَّهُ)). وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ فِي الْحِمَارِ الْوَحْشِيِّ مِثْلَ حَدِيثِ أَبِي النَّضْرِ قَالَ: ((هَلْ مَعَكُمْ مِنْ لَحْمِهِ شَيْءٌ؟)).

[راجع: ١٨٢١]

तश्रीह : इस ह़दीष़ में ह़ज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) का नेज़ों से मुसल्लह़ (हथियारबंद) होना मज़्कूर हुआ है, इसी से बाब का मत़लब ष़ाबित हुआ। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की रिवायत का मक़्सद ये कि मुसलमान के लिये ये अम्र बाइ़षे फ़ख़्र है कि वो हर ह़ाल में अल्लाह का सिपाही है हर ह़ाल में सिपाहियाना ज़िन्दगी गुज़ारना यही उसका ओढ़ना और बिछौना है। स़द अफ़सोस कि आम अहले इस्लाम बल्कि ख़ास़ तक इन ह़क़ाइक़े इस्लाम से ह़द दर्जा ग़ाफ़िल हो गए हैं।

इलम-ए-ज़वाहिर सिर्फ़ फ़ुरूई मसाइल में उलझकर रह गये और ह़क़ाइक़े इस्लाम नज़रों से बिलकुल ओझल हो गये जिसकी सज़ा सारे मुसलमान आम तौर पर गुलामाना ज़िन्दगी की शक्ल में भुगत रहे हैं। **इल्ला मन शाअल्लाहु**

बाब 89 : आँह़ज़रत (ﷺ) का लड़ाई में ज़िरह पहनना

८٩– بَابُ مَا قِيْلَ فِي دِرْعِ النَّبِيِّ ﷺ وَالْقَمِيصِ فِي الْحَرْبِ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَمَّا خَالِدٌ فَقَدْ احْتَبَسَ أَدْرَاعَهُ فِي سَبِيْلِ اللهِ.

इसी त़रह कुर्ता (लोहे) का और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि, ख़ालिद बिन वलीद ने तो अपनी ज़िरहें अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ कर रखी हैं, (फिर उससे ज़कात का मांगना बेजा है)

٢٩١٥– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ فِي قُبَّةٍ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ. اللَّهُمَّ إِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدْ بَعْدَ الْيَوْمِ)). فَأَخَذَ أَبُوبَكْرٍ بِيَدِهِ فَقَالَ: حَسْبُكَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَدْ أَلْحَحْتَ عَلَى رَبِّكَ. وَهُوَ فِي الدِّرْعِ، فَخَرَجَ وَهُوَ يَقُولُ: ((﴿سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ. بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ﴾)).

وَقَالَ وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ ((يَوْمَ بَدْرٍ)) بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ.

[أطرافه في: ٣٩٥٣، ٤٨٧٥، ٤٨٧٧].

2915. हमसे मुह़म्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़्फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (बद्र के दिन) दुआ़ फ़र्मा रहे थे, उस वक़्त आप (ﷺ) एक ख़ैमे में तशरीफ़ फ़र्मा थे, कि ऐ अल्लाह! मैं तेरे अ़हद और तेरे वादे का वास्ता देकर फ़रियाद करता हूँ ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो आज के बाद तेरी इबादत न की जाएगी। इस पर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आप (ﷺ) का हाथ पकड़ लिया और अ़र्ज़ किया बस कीजिए ऐ अल्लाह के रसूल! आप (ﷺ) ने अपने रब के हुज़ूर में दुआ़ की ह़द कर दी है। आँह़ज़रत उस वक़्त ज़िरह पहने हुए थे। आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए तो ज़ुबाने मुबारक पर ये आयत थी (तर्जुमा) जमाअ़ते (मुश्रिकीन) जल्द ही शिकस्त खाकर भाग जाएगी और पीठ दिखाना इख़्तियार करेगी और क़यामत के दिन उनसे वा'दा है और क़यामत का दिन बड़ा ही भयानक और तल्ख़ होगा, और वुहैब ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने बयान किया कि बद्र के दिन का (ये वाक़िया है)। (दीगर मक़ाम : 3953, 4875, 4877)

तश्रीह : या'नी ऐ अल्लाह! आज तू अपना वा'दा अपने फ़ज़्लो-करम से पूरा कर दे। वा'दा ये था कि या तो क़ाफ़िला आएगा या काफ़िरों पर फ़तह होगी। आँह़ज़रत (ﷺ) को अल्लाह के वा'दे पर कामिल भरोसा था। मगर मुसलमानों की बेसरो-सामानी और क़िल्लत और काफ़िरों की कष़रत को देखकर ब मुक़्तज़ाए बशरीयत आपने फ़र्माया, **लन तुअ़बद बअ़दल् यौम** का मत़लब ये कि दुनिया में आज तेरे ख़ालिस़ पूजने वाले यही तीन सौ तेरह आदमी हैं, अगर तू इनको हलाक कर देगा तो तेरी मर्ज़ी। चूँकि मेरे बाद फिर कोई पैग़म्बर नहीं आएगा तो क़यामत तक शिर्क ही शिर्क रहेगा और तुझे कोई न पूजेगा। अल्लाह ने अपने प्यारे नबी की दुआओं को क़ुबूल किया और बद्र में काफ़िरों को वो शिकस्त दी कि आइन्दा के लिये उनकी कमर टूट गई और अहले इस्लाम की तरक़्क़ी के रास्ते खुल गए। इस ह़दीष़ से मैदाने जंग में ज़िरह पहनना ष़ाबित हुआ। आज कल मशीनी दौर है लिहाज़ा मैदाने जंग के भी पुराने तौर-त़रीक़े बदल गए हैं।

2916. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें अस्वद ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप (ﷺ) की ज़िरह एक यहूदी के पास तीस स़ाअ जौ के बदले में रहन रखी हुई थी। और यअ़ला ने बयान किया कि हमसे आ'मश ने बयान किया कि लोहे की ज़िरह (थी) और मुअ़ल्ला ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने लोहे की एक ज़िरह रहन रखी थी। (राजेअ़ : 2068)

٢٩١٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((تُوُفِّي رَسُولُ اللهِ ﷺ وَدِرْعُهُ مَرْهُونَةٌ عِنْدَ يَهُودِيٍّ بِثَلاَثِينَ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ)). وَقَالَ يَعْلَى حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ ((دِرْعٌ مِنْ حَدِيدٍ)) وَقَالَ مُعَلَّى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ وَقَالَ ((رَهَنَهُ دِرْعًا مِنْ حَدِيدٍ)). [راجع: ٢٠٦٨]

इस ह़दीष़ से ज़िरह रखने का षुबूत हुआ। ज़िरह लोहे का कुर्ता जिससे जंग में सारा जिस्म छुप जाता है और उस पर किसी नेज़े या बरछे का अष़र न होता था। क़दीम ज़माने में तक़रीबन सारी ही दुनिया में मैदाने जंग में ज़िरह पहनने का रिवाज था।

2917. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन त़ाऊस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बख़ील (जो ज़कात नहीं देता) और ज़कात देने वाले (सख़ी) की मिष़ाल दो आदमियों जैसी है, दोनों लोहे के कुर्ते (ज़िरह) पहने हुए हैं, दोनों के हाथ गर्दन से बँधे हुए हैं ज़कात देने वाला (सख़ी) जब भी ज़कात का इरादा करता है तो उसका कुर्ता इतना कुशादा हो जाता है कि ज़मीन पर चलते में घिसटता जाता है लेकिन जब बख़ील स़दक़ा का इरादा करता है तो उसकी ज़कात एक एक ह़ल्क़ा उसके बदन पर तंग हो जाता है और इस त़रह सिकुड़ जाता है कि उसके हाथ उसकी गर्दन से जुड़ जाते हैं। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना कि फिर बख़ील उसे ढीला करना चाहता है लेकिन वो ढीला नहीं होता। (राजेअ़ : 1443)

٢٩١٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُ الْبَخِيلِ وَالْمُتَصَدِّقِ مَثَلُ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا جُبَّتَانِ مِنْ حَدِيدٍ قَدِ اضْطُرَّتْ أَيْدِيهِمَا إِلَى تَرَاقِيهِمَا، فَكُلَّمَا هَمَّ الْمُتَصَدِّقُ بِصَدَقَتِهِ اتَّسَعَتْ عَلَيْهِ حَتَّى تُعَفِّيَ أَثَرَهُ، وَكُلَّمَا هَمَّ الْبَخِيلُ بِالصَّدَقَةِ انْقَبَضَتْ كُلُّ حَلْقَةٍ إِلَى صَاحِبَتِهَا وَتَقَلَّصَتْ عَلَيْهِ وَانْضَمَّتْ يَدَاهُ إِلَى تَرَاقِيهِ)). فَسَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ ((فَيَجْتَهِدُ أَنْ يُوَسِّعَهَا فَلاَ تَتَّسِعُ)). [راجع: ١٤٤٣]

तश्रीह : ये ह़दीष़ किताबुज़ ज़कात में गुज़र चुकी है। मत़लब ये है कि सख़ी का दिल तो ज़कात और स़दक़ा देने से ख़ुश और कुशादा हो जाता है और बख़ील अव्वल तो ज़कात देता नहीं दूसरे जबरन क़हरन कुछ दे भी तो दिल तंग और रंजीदा हो जाता है, उसकी ज़िरह के ह़ल्क़े सिकुड़ने की यही ता'बीर है। बुख़्ल की मज़म्मत में बहुत सी आयात व अह़ादीष़ मौजूद हैं, मर्दे मोमिन ज़कात निकालने और अल्लाह के लिये ख़र्च करने से इस क़दर ख़ुश होता है गोया उसकी ज़िरह ने कुशादा होकर उसके सारे जिस्म को ढांप लिया, उसकी ज़िरह की कुशादगी से भी ज़्यादा उसका दिल कुशादा हो जाता है। अल्लाह हर

मुसलमान को ये ख़ूबी अ़ता करे आमीन। चूँकि इस ह़दीष़ में ज़िरह का ज़िक्र था, इसलिये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) यहाँ इसको लाए और ज़िरह का इष़्बात फ़र्माया।

बाब 90 : सफ़र और लड़ाइ में जुब्बा पहनने का बयान

٩٠- بَابُ الْجُبَّةِ فِي السَّفَرِ وَالْحَرْبِ

2918. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़ुहा मुस्लिम ने, जो स़बीह़ के स़ाह़बज़ादे हैं, उनसे मसरूक़ ने बयान किया और उनसे मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ज़ाए ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गए। जब आप (ﷺ) वापस हुए तो मैं पानी लेकर ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ, आप (ﷺ) शामी जुब्बा पहने हुए थे। फिर आप (ﷺ) ने कुल्ली की और नाक में पानी डाला और अपने चेहरा मुबारक को धोया। उसके बाद (हाथ धोने के लिये) आस्तीन चढ़ाने की कोशिश की लेकिन आस्तीन तंग थी इसलिये हाथों को नीचे से निकाला फिर उन्हें धोया और सर का मसह़ किया और दोनों मोज़ों का भी मसह़ किया। (राजेअ़ : 182)

٢٩١٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ أَبِي الضُّحَى مُسْلِمٍ هُوَ ابْنُ صُبَيْحٍ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: حَدَّثَنِي الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ قَالَ: انْطَلَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِحَاجَتِهِ، ثُمَّ أَقْبَلَ، فَتَلَقَّيْتُهُ بِمَاءٍ - وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ شَامِيَّةٌ - فَمَضْمَضَ وَاسْتَنْشَقَ، وَغَسَلَ وَجْهَهُ، فَذَهَبَ يُخْرِجُ يَدَيْهِ مِنْ كُمَّيْهِ فَكَانَا ضَيِّقَيْنِ، فَأَخْرَجَهُمَا مِنْ تَحْتُ، فَغَسَلَهُمَا، وَمَسَحَ بِرَأْسِهِ وَعَلَى خُفَّيْهِ.[راجع: ١٨٢]

बाब 91 : लड़ाई में ह़रीर या'नी ख़ालिस़ रेशमी कपड़ा पहनना

٩١- بَابُ الْحَرِيرِ فِي الْحَرْبِ

तश्रीह : इस मसले में इख़्तिलाफ़ है, इमाम मालिक (रह.) और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने मुत्लक़न इसका पहनना मर्दों पर ह़राम रखा और इमाम शाफ़िई और इमाम अबू यूसुफ़ ने कहा ज़रूरत के लिये जाइज़ है जैसे ख़ारिश या जुओं में और अहले ह़दीष़ के नज़दीक लड़ाई में भी जाइज़ है बल्कि इब्ने माजिशून ने कहा मुस्तह़ब है दुश्मन को डराने के लिये।

2919. हमसे अह़मद बिन मिक़्दाम ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अ़रूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और ज़ुबैर (रज़ि.) को ख़ारिश के मर्ज़ की वजह से रेशमी कपड़ा पहनने की इजाज़त दे दी थी, जो उन दोनों को लाह़क़ हो गई थी जो इस मर्ज़ में मुफ़ीद है।

(दीगर मक़ाम : 2920, 2921, 2922, 5831)

٢٩١٩-حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَخَّصَ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَالزُّبَيْرِ فِي قَمِيصٍ مِنْ حَرِيرٍ مِنْ حِكَّةٍ كَانَتْ بِهِمَا))

[أطرافه في: ٢٩٢٠، ٢٩٢١، ٢٩٢٢، ٥٨٣١].

तश्रीह : ये ह़दीष़ लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसके दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया जो आगे बयान किया कि ये इजाज़त जिहाद में हुई और अबू दाऊद की रिवायत में है कि ये इजाज़त सफ़र में दी। अब दूसरी रिवायत में इजाज़त की इल्लत जूएँ मज़्कूर हैं इस रिवायत में खुजली। दोनों में तत़्बीक़ यूँ होगी कि पहले जूएँ पड़ी होंगी फिर जुओं की वजह से

खुजली पैदा हो गई होगी। कहते हैं रेशमी कपड़ा खारिश को खो देता है और जुओं को मार डालता है। (वहीदी)

2920. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और ज़ुबैर बिन अ़वाम (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से जुओं की शिकायत की तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें रेशमी कपड़ा पहनने की इजाज़त दे दी, फिर मैंने जिहाद में उन्हें रेशमी कपड़ा पहने हुए देखा। (राजेअ़ : 2919)

٢٩٢٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ح حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوفٍ وَالزُّبَيْرَ شَكَوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ - يَعْنِي الْقَمْلَ - فَأَرْخَصَ لَهُمَا فِي الْحَرِيْرِ، فَرَأَيْتُهُ عَلَيْهِمَا فِي غَزَاةٍ)).

[راجع: ٢٩١٩]

2921. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उन्हें क़तादा ने ख़बर दी और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और ज़ुबैर बिन अ़वाम (रज़ि.) को रेशमी कपड़ा पहनने की इजाज़त दे दी थी। (राजेअ़ : 2919)

٢٩٢١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ: أَخْبَرَنِي قَتَادَةُ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ قَالَ: ((رَخَّصَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوفٍ وَالزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ فِي حَرِيْرٍ)).

[راجع: ٢٩١٩]

2922. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से सुना और उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि (नबी करीम (ﷺ) ने) रुख़्सत दी थी या (ये बयान किया कि) रुख़्सत दी गई थी, उन दोनों हज़रात को ख़ारिश की वजह से जो उनको लाहक़ हो गई थी। (राजेअ़ : 2919)

٢٩٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ((رَخَّصَ - أَوْ رُخِّصَ - لَهُمَا لِحِكَّةٍ بِهِمَا)). [راجع: ٢٩١٩]

बाब 92 : छुरी का इस्ते'माल करना दुरुस्त है

٩٢- بَابُ مَا يُذْكَرُ فِي السِّكِّيْنِ

2923. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे जा'फ़र बिन अ़म्र बिन उमय्या ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) को देखा कि आप (ﷺ) शाने का गोश्त (छुरी से) काटकर खा रहे थे, फिर नमाज़ के लिये अज़ान हुई तो आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी लेकिन वुज़ू नहीं किया। हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी और उन्हें ज़ुह्री ने (इस रिवायत में) ये ज़्यादती भी मौजूद है कि (जब आप ﷺ नमाज़ के लिये बुलाए गए तो) आप

٢٩٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْكُلُ مِنْ كَتِفٍ يَحْتَزُّ مِنْهَا، ثُمَّ دُعِيَ إِلَى الصَّلاَةِ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ)). حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَزَادَ: ((فَأَلْقَى

السِّكِّينَ)). [راجع: ٢٠٨]

(ﷺ) ने छुरी डाल दी। (राजेअ : 208)

ये ह़दीष़ किताबुल वुज़ू में गुज़र चुकी है और यहाँ इमाम बुख़ारी (रह.) इसको इसलिये लाए कि जब छुरी का इस्ते'माल दुरुस्त हुआ तो जिहाद में भी इसको रख सकते हैं। ये भी एक हथियार है। मुजाहिदीन को बहुत सी ज़रूरियात में छुरी भी काम आ सकती है, इसलिये इसका भी सफ़र में साथ रखना जाइज़ है।

٩٣- بَابُ مَا قِيلَ فِي قِتَالِ الرُّوْمِ

बाब 93 : नस़ारा से लड़ने की फ़ज़ीलत का बयान

٢٩٢٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يَزِيْدَ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي ثَوْرُ بْنُ يَزِيْدَ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ أَنَّ عُمَيْرَ بْنَ الأَسْوَدِ الْعَنْسِيَّ حَدَّثَهُ أَنَّهُ أَتَى عُبَادَةَ بْنَ الصَّامِتِ وَهُوَ نَازِلٌ فِي سَاحِلِ حِمْصَ وَهُوَ فِي بِنَاءٍ لَهُ وَمَعَهُ أُمُّ حَرَامٍ، قَالَ عُمَيْرٌ: فَحَدَّثَتْنَا أُمُّ حَرَامٍ أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((أَوَّلُ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَغْزُونَ الْبَحْرَ قَدْ أَوْجَبُوا)). قَالَتْ أُمُّ حَرَامٍ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنَا فِيهِمْ؟ ((قَالَ أَنْتِ فِيهِمْ)). ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ: ((أَوَّلُ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَغْزُونَ مَدِينَةَ قَيْصَرَ مَغْفُورٌ لَهُمْ)). فَقُلْتُ: أَنَا فِيهِمْ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((لاَ)). [راجع: ٢٧٨٩]

2924. हमसे इस्ह़ाक़ बिन यज़ीद दमिश्क़ी ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, कहा कि मुझसे ष़ौर बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन मअ़दान ने और उनसे उ़मैर बिन अस्वद अ़न्सी ने बयान किया कि वो उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। आपका क़याम साह़िले ह़िम्स़ पर अपने ही एक मकान में था और आपके साथ (आपकी बीवी) उम्मे ह़राम (रज़ि.) थीं। उ़मैर ने बयान किया कि हमसे उम्मे ह़राम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मेरी उम्मत का सबसे पहला लश्कर जो दरियाई सफ़र करके जिहाद के लिये जाएगा, उसने (अपने लिये अल्लाह तआ़ला की रह़मत व मग़्फ़िरत) वाजिब कर ली। उम्मे ह़राम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं ने कहा था या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं भी उनके साथ होऊँगी? आपने फ़र्माया कि हाँ, तुम भी उनके साथ होगी। फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे पहला लश्कर मेरी उम्मत का जो क़ैस़र (रोमियों के बादशाह) के शहर (क़ुस्तुन्तुनिया) पर चढ़ाई करेगा, उनकी मग़्फ़िरत होगी। मैंने कहा मैं भी उनके साथ होऊँगी या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। (राजेअ : 2789)

तश्रीह़ : पहला जिहाद ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) के ज़माने में (अमीर मुआ़विया की क़यादत में) 28 हिजरी में हुआ जिस पर जज़ीरा क़ुबरस़ के नस़ारा पर चढ़ाई की गई, उसी में ह़जरत उम्मे ह़राम (रज़ि.) शरीक थीं, वापसी में ये रास्ते पर सवारी से गिरकर शहीद हो गईं। दूसरा जिहाद 55 हिजरी में ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) के ज़माने में हुआ जिसमें क़ुस्तुन्तुनिया पर ह़मला किया गया था। ह़ज़रत अबू अय्यूब अंस़ारी (रज़ि.) ने उसी में शहादत पाई थी और क़ुस्तुन्तुनिया ही में दफ़न किये गये। ये लश्कर यज़ीद बिन मुआ़विया की ज़ेरे क़यादत था। मगर ख़िलाफ़त ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) ही की थी इसलिये इससे यज़ीद की ख़िलाफ़त की स़िह़त पर दलील पकड़ना ग़लत हुआ और लश्करवालों की बख़्शिश की जो बशारत दी गई इससे ये लाज़िम नहीं आता कि लश्कर का हर एक फ़र्द बख्शा जाए। ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ एक आदमी ख़ूब बहादुरी से लड़ा था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया था उसके बारे में कि वो जहन्नमी है पस जन्नती और जहन्नमी होने में ख़ातिमा का ए'तिबार है। (वह़ीदी)

नोट :- यहाँ अ़ल्लामा वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम (रह.) को ज़बरदस्त ग़लतफ़हमी हुई है। और नबी (ﷺ) की पेशीनगोई की बेजा

तावील कर डाली है। हालाँकि नबी (ﷺ) की कही हुई बात हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी होती है। नबी (ﷺ) के साथ जो लश्कर लड़ रहा था, उन सबके जन्नती होने की पेशीनगोई आप (ﷺ) ने नहीं फ़र्माई थी और उसके बरअक्स क़ुस्तुन्तुनिया के सारे लश्करियों के जन्नती होने की आप (ﷺ) ने पेशीनगोई फ़र्माई थी। अल्लाह तआला की रहमतों को महदूद करने का इख़्तियार किसी इंसान के पास नहीं है। (महमूदुल हसन असद)

बाब 94 : यहूदियों से लड़ाई होने का बयान

٩٤- بَابُ قِتَالِ الْيَهُودِ

2925. हमसे इस्हाक़ बिन मुहम्मद फ़रवी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (एक दौर आएगा जब) तुम यहूदियों से जंग करोगे। (और वो शिकस्त खाकर भागते फिरेंगे) कोई यहूदी अगर पत्थर के पीछे छुप जाएगा तो वो पत्थर भी बोल उठेगा कि, ऐ अल्लाह के बन्दे! ये यहूदी मेरे पीछे छुपा बैठा है इसे क़त्ल कर डाल। (दीगर मक़ाम : 3593)

٢٩٢٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْفَرْوِيُّ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((تُقَاتِلُونَ الْيَهُودَ حَتَّى يَخْتَبِيءَ أَحَدُهُمْ وَرَاءَ الْحَجَرِ فَيَقُولُ يَا عَبْدَ اللهِ، هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَائِي فَاقْتُلْهُ)).

[طرفه في: ٣٥٩٣].

2926. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमको जरीर ने ख़बर दी अम्मारा बिन क़अक़ाअ से, उन्हें अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि यहूदियों से तुम्हारी जंग न हो लेगी और वो पत्थर भी उस वक़्त (अल्लाह तआला के हुक्म से) बोल उठेंगे जिसके पीछे यहूदी छुपा हुआ होगा कि ऐ मुसलमान! ये यहूदी मेरी आड़ लेकर छुपा हुआ है इसे क़त्ल कर डालो।

٢٩٢٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ أَخْبَرَنَا جَرِيْرٌ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا الْيَهُودَ، حَتَّى يَقُولَ الْحَجَرُ وَرَاءَهُ الْيَهُودِيُّ: يَا مُسْلِمُ، هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَائِي فَاقْتُلْهُ)).

ये क़यामत के क़रीब हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के नुज़ूल के बाद होगा।

बाब 95 : तुर्कों से जंग

٩٥- بَابُ قِتَالِ التُّرْكِ

तश्रीह : तुर्क से मुराद यहाँ वो क़ौम है जो याफ़िष बिन नूह की औलाद में से है उनको क़ौमे तार-तार (तातार) कहा गया है। ये लोग ख़ुलफ़ा के अहद तक काफ़िर थे यहाँ तक कि हलाकू ख़ाँ तुर्क ने अरबों पर चढ़ाई की और ख़िलाफ़ते बनू अब्बासिया का काम तमाम किया। उसके कुछ बाद तुर्क मुशर्रफ़े इस्लाम हुए जिनके इस्लाम की मुख़्तसर कहानी ये है।

तातारी दौलत :-

ऐल ख़ानिया का वो पहला बादशाह जिसने इस्लाम क़ुबूल किया तक्विदार था, ये बादशाह हलाकू ख़ाँ का छोटा लड़का था, जो अबाक़ा ख़ाँ के बाद मुग़ल तख़्त व ताज का मालिक हुआ। डॉक्टर सर थॉमस आरनॉल्ड ने **प्रीचिंग ऑफ़ इस्लाम** में उस दौर के ईसाई मुअर्रिख़ के हवाले से तक्विदार ख़ाँ का एक मक्तूब नक़ल किया है जो उसने सुलताने मिस्र के नाम रवाना किया था। मक्तूब नक़ल करने से पहले वो ईसाई मुअर्रिख़ तक्विदार का तआरुफ़ कराते हुए लिखता है :

तक्विदार की ता'लीम व तर्बियत ईस्वी मज़हब के मुताबिक़ हुई थी। बचपन में इसे इस्तिबाग़ (बपतिस्मा) मिला था और उसका नाम नकूलस रखा गया था लेकिन नकूलस जब जवान हुआ तो उसे मुसलमानों की सुहबत नसीब हो गई मुसलमानों की सुहबत ने नकूलस पर बहुत अष़र डाला वो इस ता'ल्लुक़ और मेलजोल को बहुत अज़ीज़ रखने लगा था। **(नोट : ईसाई मज़हब में धर्म की जो दीक्षा दी जाती है उसे बपतिस्मा कहा जाता है)**। मुसलमानों के साथ नकूलस के मेलजोल का ये नतीजा निकला कि वो मुसलमान हो गया और उसने अपना नाम सुल्तान मुहम्मद रखा। इस्लामी नज़रियात क़ुबूल करके नकूलस या'नी सुल्तान मुहम्मद ने इस अम्र की कोशिश की कि उसकी पूरी तातारी क़ौम तातारी की रोशनी से मुनव्वर हो जाए, वो एक बासतूत (तरक्क़ी-पसंद) शहंशाह था। उसने इस्लामी तौहीद और इस्लामी अख़्लाक़ क़ुबूल करने वालों के लिये इन्आम व इकराम मुक़र्रर किया और उन्हें इख़्तियार और इ़ज़्ज़त के ओहदों पर मामूर किया। शहंशाह के इस ऐ'ज़ाज़ व इकराम का तातारी अ़वाम पर बड़ा अष़र पड़ा और तातारियों की बड़ी ता'दाद ने तौहीद व आख़िरत का इस्लामी तस़व्वुर क़ुबूल कर लिया।

इस तआ़रुफ़े तम्हीद के बाद उस दौर का ईसाई मुअर्रिख़ सुल्तान मुहम्मद (नकूलस) का वो तारीख़ी मक्तूब लिखता है जो उसने मिस्री फ़र्मां रवा के नाम भेजा था। वो मक्तूब ये है :

सुल्तान मुहम्मद का फ़र्मान शाहे मिस्र के नाम। बाद तम्हीद के वाज़ेह हो कि अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम से हमें हिदायत की रोशनी अ़ता की। जवानी के आग़ाज़ में हमको अपनी उलूहियत व वह़दानियत का इक़रार करने और ह़ज़रत मुहम्मद (ﷺ) की पैग़म्बराना स़दाक़त को तस्लीम करने और अल्लाह के नेक बन्दों के बारे में अच्छी राय रखने की तौफ़ीक़ बख़्शी। **फमंय्युरिदिल्लाहु अय्यहदियहू यशरह स़दरहू लिल्इस्लाम** (अल अन्आम : 125) तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला जिसको जिन्दगी के बेहतरीन रास्ते पर चलाना चाहता है तो उसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है। हम उस वक़्त से आज तक दीने ह़क़ को सर बुलन्द करने और मुसलमानों के मुआमलात को सुधारने पर तवज्जह कर रहे हैं। यहाँ तक कि वालिद बुज़ुर्गवार हलाकू ख़ाँ और बिरादर बुज़ुर्ग (अबाक़ा ख़ाँ) की त़रफ़ से हुक्मरानी की ज़िम्मेदारी हम पर आ पड़ी और अल्लाह तआ़ला ने हमारी आरज़ुओं को पूरा करने का मौक़ा फ़राहम किया। एक वक़्त था कि मुक़द्दस कोरलितानी (मज्लिसे उमरा) में ये फ़ैसला हुआ कि हमारे बिरादर बुज़ुर्ग के हुक्म से फ़ौजकशी मुहिम को जारी रखा जाए और हमारी उन फौजों को हर त़रफ़ रवाना किया जाए जिनकी कष़रत से अल्लाह की ज़मीन बावजूद वसीअ़ होने के तंग हो चुकी थी और जिन फौजों की स़ौलत व हैबत (रौब, दबदबे व आतंक) से दुनिया का दिल कांपता और थरथरा जाता था और फौजकशी का फ़ैसला हमारे ऐवान उमरा के शहज़ादगान और सिपाहसालारान ऐसे मुस्तह़कम अ़ज़्म व इरादे से करते कि जिसके सामने पहाड़ झुक जाएँ और संग ख़ारा मोम हो जाएँ। लेकिन आज वो वक़्त है कि हमारी मज्लिस शहज़ादगान व उम्रा में ये मश्विरा होता है कि इस्लाम के कलिमे को सरबुलन्द किया जाए, ख़ूँरेज़ी का सिलसिला बन्द किया जाए, चारों ओर अमन व अमान का दौर दौरा हो, हमारी मम्लिकत के हुक्काम हमारी शफ़क़त से आराम पाएँ क्योंकि हम अल्लाह की अ़ज़्मत को तस्लीम करते हैं और अल्लाह के बन्दों पर मेहरबान हैं। हमारे इस फ़ैसले को शैख़ुल इस्लाम क़ुदवतुल आ़रिफ़ीन के नेक मश्वरों ने तक़्वियत दी है। हमने क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ात क़ुतुबुद्दीन शैराज़ी और अताबक बहाउद्दीन को मुल्क के आसपास इलाकों में भेजा है ताकि वो अ़वाम को हमारे इस त़रीक़-ए-कार से आगाह करें, इस्लाम पिछले गुनाहों को मुआफ़ कर देता है। अब अल्लाह ने हमको ह़क़ की पैरवी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़र्माई है।

हलाकू ख़ाँ के लड़के तक्विदार ख़ाँ के इस मक्तूब के बाद सर थॉमस लिखता है। मुग़ल तारीख़ के जानने वाले को इस मक्तूब के मुतालआ़ (अध्ययन) से राह़त और सुकून ह़ासिल हुआ होगा।

2927. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, उनसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, कहा मैंने ह़सन से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे अ़म्र बिन तग़्लिब (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत की निशानियों में से है कि

٢٩٢٧ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ تَغْلِبَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ

تُقَاتِلُوا قَوْمًا يَنْتَعِلُوْنَ نِعَالَ الشَّعَرِ، وَإِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ تُقَاتِلُوا قَوْمًا عِرَاضَ الْوُجُوهِ كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ)).[طرفه في: ٣٥٩٢].

तुम ऐसी क़ौम से जंग करोगे जो बातों की बनाते हैं (या उनके बाल बहुत लम्बे होंगे) और क़यामत की एक निशानी ये है कि उन लोगों से लड़ोगे जिनके मुँह चौड़े होंगे गोया वो ढालें हैं चमड़ा जमी हुई (या'नी बहुत मोटे मुँह वाले होंगे)। (दीगर मक़ाम : 3592)

ह़दीष़ में मुत़र्रक़ह है मा'नी दोनों के एक ही है, इससे तातार क़ौम मुराद हैं जो बाद में दौलते इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए।

तश्रीह : तुर्क से मुराद यहाँ वो क़ौम है जो याफ़ष़ बिन नूह़ की औलाद में से हैं। अ़लल उ़मूम तातार के लोग आँह़ज़रत (ﷺ) और ख़ुलफ़-ए-इस्लाम के ज़मानों तक काफ़िर रहे। यहाँ तक कि हलाकू ख़ाँ तुर्क ने अ़रबों पर चढ़ाई करके ख़िलाफ़ते अ़ब्बासिया का ख़ात्मा किया। उसके बाद कुछ तुर्क मुशर्रफ़े इस्लाम हुए। वहब बिन मुनब्बा ने कहा कि तुर्क याजूज माजूज के चचेरे भाई हैं। जब दीवार बनाई गई तो ये लोग ग़ायब थे वो दीवार के उसी त़रफ़ रह गये। इसीलिये उनका नाम तुर्क या'नी मतरूक हो गया, वल्लाहु आ़लम बिस्सवाब।

٢٩٢٨ - حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ الأَعْرَجِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا التُّرْكَ، صِغَارَ الأَعْيُنِ حُمْرَ الْوُجُوهِ، ذُلْفَ الأُنُوفِ، كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ. وَلاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ)). [أطرافه في: ٢٩٢٩، ٣٥٨٧، ٣٥٩٠، ٣٥٩١].

2928. हमसे सईद बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे बाप इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे अअ़रज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तुम तुर्कों से जंग न कर लोगे, जिनकी आँखें छोटी होंगी, चेहरे सुर्ख़ होंगे, नाक मोटी फैली हुई होगी, उनके चेहरे ऐसे होंगे जैसे तहबन्द चमड़ा लगी हुई होती है और क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तुम एक ऐसी क़ौम से जंग न कर लोगे जिनके जूते बाल के बने हुए होंगे।

(दीगर मक़ाम : 2929, 3587, 3590, 3591)

٩٦- بَابُ قِتَالِ الَّذِيْنَ يَنْتَعِلُوْنَ الشَّعَرِ

बाब 96 : उन लोगों से लड़ाई का बयान जो बालों की जूतियाँ पहने होंगे

٢٩٢٩ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ، وَلاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا كَأَنَّ وُجُوهَهُم

2929. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय़ना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि तुम एक ऐसी क़ौम से लड़ाई न कर लोगे जिनके जूते बालों के होंगे और क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तुम एक ऐसी क़ौम से जंग न कर लोगे जिनके चेहर

السِّجَانُ الْمُطْرَقَةُ)). قَالَ سُفْيَانُ: وَزَادَ فِيهِ أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رِوَايَةً: ((صِغَارَ الأَعْيُنِ، ذُلْفَ الأُنُوفِ، كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ)).

[راجع: ٢٩٢٨]

तहशुदा ढालों जैसे होंगे। सुफ़यान ने बयान किया कि उसमें अबुज़्ज़िनाद ने अअ़रज से और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से ये ज़्यादा नक़ल किया कि उनकी आँखें छोटी होंगी, नाक मोटी, चेहरे ऐसे होंगे जैसे तह-ब-तह चमड़ा ढाल होती है। (राजेअ़ : 2928)

इस ह़दीष़ में भी क़ौमे तुर्क का बयान है और ये उनके क़ुबूले इस्लाम से पहले का ज़िक्र है। कहते हैं कि दुनिया में तीन क़ौमे ऐसी हैं कि उन्होंने, ख़ास़ त़ौर पर सारी क़ौम ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया, अ़रब, तुर्क और अफ़ग़ान। ये जब इस्लाम में दाख़िल हुए तो रूए ज़मीन पर सब ही मुसलमान हो गए। **ज़ालिक फ़ज़्लुल्लाहि यूतिहि मंय्यशाउ**

٩٧- بَابُ مَنْ صَفَّ أَصْحَابَهُ عِنْدَ الْهَزِيمَةِ وَنَزَلَ عَنْ دَابَّتِهِ وَاسْتَنْصَرَ

बाब 97 : हार जाने के बाद इमाम का सवारी से उतरना और बचे-खुचे लोगों की स़फ़ बाँधकर अल्लाह से मदद मांगना

٢٩٣٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ - وَسَأَلَهُ رَجُلٌ: أَكُنْتُمْ فَرَرْتُمْ يَا أَبَا عُمَارَةَ يَوْمَ حُنَيْنٍ - قَالَ لاَ وَاللهِ، مَا وَلَّى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَكِنَّهُ خَرَجَ شُبَّانُ أَصْحَابِهِ وَأَخِفَّاؤُهُمْ حُسَّرًا لَيْسَ بِسِلاَحٍ، فَأَتَوْا قَوْمًا رُمَاةً جَمْعَ هَوَازِنَ وَبَنِي نَصْرٍ، مَا يَكَادُ يَسْقُطُ لَهُمْ سَهْمٌ، فَرَشَقُوهُمْ رَشْقًا مَا يَكَادُونَ يُخْطِئُونَ، فَأَقْبَلُوا هُنَالِكَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ عَلَى بَغْلَتِهِ الْبَيْضَاءِ وَابْنُ عَمِّهِ أَبُو سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ يَقُودُ بِهِ، فَنَزَلَ وَاسْتَنْصَرَ ثُمَّ قَالَ: ((أَنَا النَّبِيُّ لاَ كَذِبْ، أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ))، ثُمَّ صَفَّ أَصْحَابَهُ)).

[راجع: ٢٨٦٤]

2930. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उनसे एक स़ाहब ने पूछा था कि अबू अ़म्मारा! क्या आप लोगों ने हुनैन की लड़ाई में फ़रार इख़्तियार किया था? बराअ (रज़ि.) ने कहा नहीं अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पीठ हर्गिज़ नहीं फेरी थी। अल्बत्ता आप (ﷺ) के अस्ह़ाब में जो नौजवान थे, बे सरो-सामान जिनके पास न ज़िरह थी, न ख़ूद और कोई हथियार भी ले गए थे, उन्होंने ज़रूर मैदान छोड़ दिया था क्योंकि मुक़ाबले मे हवाज़िन और बनू नस्र के बेहतरीन तीरंदाज़ थे कि कम ही उनका कोई तीर ख़त़ा जाता (चूकता)। चुनाँचे उन्होंने ख़ूब तीर बरसाये और शायद ही कोई निशाना उनका ख़त़ा हुआ हो (उस दौरान में मुसलमान) नबी करीम (ﷺ) के पास आकर जमा हो गए। आप (ﷺ) अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे और आप (ﷺ) के चचेरे भाई अबू सुफ़यान बिन ह़ारिष़ इब्ने अ़ब्दुल मुत्तलिब आप (ﷺ) की सवारी की लगाम थामे हुए थे। हुज़ूर (ﷺ) ने सवारी से उतरकर अल्लाह तआ़ला से मदद की दुआ़ मांगी। फिर फ़र्माया कि मैं नबी हूँ इसमें ग़लतबयानी का कोई शुब्हा नहीं, मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ। उसके बाद आप (ﷺ) ने अपने अस्ह़ाब की (नये त़रीक़े पर) स़फ़बन्दी की। (राजेअ़ : 2864)

बाब 98 : मुश्रिकीन के लिये शिकस्त और ज़लज़ले की बद् दुआ करना

٩٨- بَابُ الدُّعَاءِ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ بِالْهَزِيْمَةِ وَالزَّلْزَلَةِ

2931. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको ईसा ने ख़बर दी, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने, उनसे ड़बैदा ने और उनसे अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-अहज़ाब (ख़न्दक़) के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (मुश्रिकीन को) ये बद् दुआ दी कि ऐ अल्लाह! उनके घरों और क़ब्रों को आग से भर दे। उन्होंने हमको सलातुल वुस्ता (अ़स्र की नमाज़) नहीं पढ़ने दी (ये आपने उस वक़्त फ़र्माया) जब सूरज ग़ुरूब हो चुका था और अ़स्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई थी। (दीगर मक़ाम : 4111, 4533, 6396)

٢٩٣١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عِيْسَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ الأَحْزَابِ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَلأَ اللهُ بُيُوتَهُم وَقُبُورَهُمْ نَارًا شَغَلُونَا عَنْ صَلاَةِ الْوُسْطَى حِيْنَ غَابَتِ الشَّمْسُ)).

[أطرافه في: ٤١١١، ٤٥٣٣، ٦٣٩٦].

2932. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़ियान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे इब्ने ज़क्वान ने, उनसे अ़अ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (सुबह की) दुआए क़ुनूत में (दूसरी रकअ़त के रुकूअ़ के बाद) ये दुआ पढ़ते थे (तर्जुमा) ऐ अल्लाह! सलमा बिन हिशाम को नजात दे, ऐ अल्लाह! वलीद को नजात दे, ऐ अल्लाह! अ़याश बिन अबी रबीआ़ को नजात दे, ऐ अल्लाह! तमाम कमज़ोर मुसलमानों को नजात दे। (जो मक्का में मुश्रिकीन की सख़्तियाँ झेल रहे थे)। ऐ अल्लाह! मुज़र पर अपना सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल कर। ऐ अल्लाह ऐसा क़हत नाज़िल कर जैसा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में पड़ा था। (राजेअ़ : 797)

٢٩٣٢- حَدَّثَنَا قَبِيْصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ ذَكْوَانَ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْعُو فِي الْقُنُوتِ: ((اللَّهُمَّ أَنْجِ سَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيْدَ بْنَ الْوَلِيْدِ، اللَّهُمَّ أَنْجِ عَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيْعَةَ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ. اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ، اللَّهُمَّ سِنِيْنَ كَسِنِي يُوسُفَ)). [راجع: ٧٩٧]

2933. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने ख़बर दी और उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये दुआ की थी ऐ अल्लाह! किताब के नाज़िल करने वाले (क़यामत के दिन) हिसाब बड़ी सुरअ़त से लेने वाले ऐ अल्लाह! मुश्रिकों और कुफ़्फ़ार की जमाअ़तों को (जो मुसलमानों का इस्तिस्साल करने आई हैं) शिकस्त दे। ऐ अल्लाह!

٢٩٣٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ أَبِي خَالِد أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: دَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَومَ الأَحْزَابِ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ فَقَالَ ((اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيْعَ الْحِسَابِ، اللَّهُمَّ اهْزِمِ الأَحْزَابَ، اللَّهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ))

उन्हें शिकस्त दे और उन्हें झिंझोड़ कर रख दे। (दीगर मक़ाम : 2965, 3025, 4115, 6392, 7489)

[أطرافه في : ٢٩٦٥، ٣٠٢٥، ٤١١٥، ٦٣٩٢، ٧٤٨٩].

2934. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जा'फ़र बिन औ़न ने बयान किया, हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) का'बा के साये में नमाज़ पढ़ रहे थे। अबू जहल और क़ुरैश के कुछ दूसरे लोगों ने कहा कि ऊँट की ओझड़ी लाकर कौन इन पर डालेगा? मक्का के किनारे एक ऊँट ज़िबह हुआ था (और उसी की ओझड़ी लाने के वास्ते) उन सभी ने अपने आदमी भेजे और वो उस ऊँट की ओझड़ी उठा लाए और उसे नबी करीम (ﷺ) के ऊपर (नमाज़ पढ़ते हुए) डाल दिया। उसके बाद फ़ातिमा (रज़ि.) आईं और उन्होंने आप (ﷺ) के ऊपर से उस गंदगी को हटाया। आँहज़रत (ﷺ) ने उस वक़्त ये बद्दुआ की कि ऐ अल्लाह! क़ुरैश को पकड़! ऐ अल्लाह! क़ुरैश को पकड़! ऐ अल्लाह! क़ुरैश को पकड़! अबू जहल बिन हिशाम, उ़त्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, वलीद बिन उ़त्बा, उबय बिन ख़ल्फ़ और उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ सबको पकड़ ले। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा चुनाँचे मैंने उन सबको जंगे बद्र के कुँए में देखा कि सभी को क़त्ल करके उसमें डाल दिया गया था। अबू इस्हाक़ ने कहा कि मैं सातवें शख़्स का (जिसके हक़ में आप ﷺ ने बद्दुआ की थी, उसका नाम) भूल गया और यूसुफ़ बिन अबी इस्हाक़ ने कहा कि उनसे अबू इस्हाक़ ने (सुफ़यान की रिवायत में उबय बिन ख़ल्फ़ की बजाय) उमय्या बिन ख़ल्फ़ बयान किया और शुअ़बा ने कहा कि उमय्या या उबय (शक के साथ है) लेकिन स़हीह उमय्या है। (राजेअ़ : 240)

٢٩٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَونٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَنَاسٌ مِنْ قُرَيْشٍ، وَنُحِرَتْ جَزُورٌ بِنَاحِيَةِ مَكَّةَ فَأَرْسَلُوا فَجَاءُوا مِنْ سَلاَهَا وَطَرَحُوهُ عَلَيْهِ، فَجَاءَتْ فَاطِمَةُ فَأَلْقَتْهُ عَنْهُ، فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ، اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ، اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ، لأَبِي جَهْلِ بْنِ هِشَامٍ وَعُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَشَيْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيْدِ بْنِ عُتْبَةَ وَأُبَيِّ بْنِ خَلَفٍ وَعُقْبَةَ بْنِ أَبِي مُعَيْطٍ)). قَالَ عَبْدُ اللهِ : فَلَقَدْ رَأَيْتُهُمْ فِي قَلِيْبِ بَدْرٍ قَتْلَى)) قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ: وَنَسِيْتُ السَّابِعَ. وَقَالَ يُوسُفُ بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ ((أُمَيَّةُ بْنُ خَلَفٍ))، وَقَالَ شُعْبَةُ : ((أُمَيَّةُ أَوْ أُبَيٌّ)) وَالصَّحِيْحُ أُمَيَّةُ.

[راجع: ٢٤٠]

2935. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि कुछ यहूदी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आए और कहा अस्सामु अ़लैयकुम (तुम पर मौत आए) मैंने कहा क्या उन्होंने भी जो कहा

٢٩٣٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ الْيَهُودَ دَخَلُوا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكَ، فَلَعَنْتُهُمْ. فَقَالَ: مَالَكِ؟ قَالَتْ: أَوَلَمْ

था आप (ﷺ) ने नहीं सुना? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या और तुमने नहीं सुना कि मैंने उसका क्या जवाब दिया, व अ़लैयकुम या'नी तुम पर भी वही आए (या'नी मैंने कोई बुरा लफ़्ज़ ज़ुबान से नहीं निकाला सिर्फ़ उनकी बात उन ही पर लौटा दी)। (दीगर मक़ाम : 6024, 6030, 6256, 6395, 6401, 6927)

تَسْمَعْ مَا قَالُوا: قَالَ: ((فَلَمْ تَسْمَعِي مَا قُلْتُ: وَعَلَيْكُمْ)).
[أطرافه في : ٦٠٢٤، ٦٠٣٠، ٦٢٥٦، ٦٣٩٥، ٦٤٠١، ٦٩٢٧].

इसीलिये नामा'कूल और बेहूदी ह़रकतों का जवाब यूँ ही होना चाहिये। आयते क़ुर्आनी, **इदफ़अ़ बिल्लती हिय अह़सनु** (फ़ुस्सिलत : 34) का तक़ाज़ा है कि बुराई का जवाब भलाई से दिया जाए। यहूद की फ़ित्रत हमेशा से शरपसन्द रही है। ख़ुद अपने अंबिया के साथ उनका बर्ताव अच्छा नहीं रहा तो और किसी की क्या ह़क़ीक़त है। आँह़ज़रत (ﷺ) की मुख़ालफ़त में यहूदियों ने कोई कसर उठा नहीं रखी थी, यहाँ तक कि मुलाक़ात के वक़्त ज़ुबान को तोड़ मरोड़कर अस्सलामु अ़लैयकुम की जगह अस्सामु अ़लैयकुम कह डालते कि तुम पर मौत आए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी इस ह़रकत पर ख़बर पाकर इतना ही काफ़ी समझा व अ़लैयकुम या'नी तुम पर भी वही आए जो मेरे लिये मुँह से निकाल रहे हो। इस ह़दीष़ से ये भी ज़ाहिर हो रहा है कि आप (ﷺ) ने यहूद की उस ह़रकत के जवाब में ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के लअ़न-तअ़न वाले जवाब को पसन्द नहीं फ़र्माया बल्कि जो जवाब आप (ﷺ) ने दिया, उसी को काफ़ी समझा। ये आपके कमाले अख़्लाक़े ह़सना की दलील है।

बाब 99 : मुसलमान अहले किताब को दीन की बात बतलाए या उनको क़ुर्आन सिखाए?

٩٩- بَابُ هَلْ يُرْشِدُ الْمُسْلِمُ أَهْلَ الْكِتَابِ أَوْ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ؟

2936. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा मुझे मेरे भतीजे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उनसे उनके चचा ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (रोम के बादशाह) क़ैसर को (ख़त़) लिखा जिसमें आप (ﷺ) ने ये भी लिखा था कि अगर तुमने (इस्लाम की दा'वत से) मुँह मोड़ा तो (अपने गुनाह के साथ) उन काश्तकारों का भी गुनाह तुम पर पड़ेगा (जिन पर तुम हुक्मरानी कर रहे हो)। (दीगर मक़ाम : 2940)

٢٩٣٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَتَبَ إِلَى قَيْصَرَ وَقَالَ: ((فَإِنْ تَوَلَّيْتَ فَإِنَّ عَلَيْكَ إِثْمَ الأَرِيْسِيِّيْنَ)).
[طرفه في : ٢٩٤٠].

ये ह़दीष़ तफ़्सील के साथ शुरू किताब में गुज़र चुकी है। उस ख़त़ में आपने क़ुर्आन मजीद की आयत भी लिखी थी तो बाब का तर्जुमा ष़ाबित हो गया या'नी अहले किताब को क़ुर्आन सिखाना मगर ये जब है कि उनसे ख़ैर की उम्मीद हो। अगर उनसे गुस्ताख़ी और बेअदबी का ख़तरा है तो उनको क़ुर्आन शरीफ़ हर्गिज़ हर्गिज़ नहीं सिखाना चाहिये।

बाब 100 : मुश्रिकीन का दिल मिलाने के लिये उनकी हिदायत की दुआ़ करना

١٠٠- بَابُ الدُّعَاءِ لِلْمُشْرِكِيْنَ بِالْهُدَى لِيَتَأَلَّفَهُمْ

2937. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब

٢٩٣٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ

ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी (रज़ि.) अपने साथियों के साथ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़बीला दौस के लोग सरकशी पर उतर आए हैं और अल्लाह का कलाम सुनने से इंकार करते हैं। आप (ﷺ) उन पर बददुआ कीजिए! कुछ सहाबा (रज़ि.) ने कहा कि अब दौस के लोग बरबाद हो जाएँगे। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अल्लाह! दौस के लोगों को हिदायत दे और उन्हें (दायरा-ए-इस्लाम में) खींच ला। (दीगर मक़ाम : 4392, 6397)

حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَدِمَ طُفَيْلُ بْنُ عَمْرٍو الدَّوْسِيُّ وَأَصْحَابُهُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ دَوْسًا عَصَتْ وَأَبَتْ، فَادْعُ اللهَ عَلَيْهَا، فَقِيلَ: هَلَكَتْ دَوْسٌ. قَالَ: ((اللَّهُمَّ اهْدِ دَوْسًا وَائْتِ بِهِمْ)).

[طرفاه في : ٤٣٩٢، ٦٣٩٧].

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) भी क़बीला दौस के थे। लोगों ने बद् दुआ की दरख़्वास्त की थी मगर आपने उनकी हिदायत की दुआ फ़र्माई जो कुबूल हुई और बाद में उस क़बीले के लोग ख़ुशी ख़ुशी मुसलमान हो गए।

बाब 101 : यहूद और नसारा को क्यूँकर दा'वत दी जाए और किस बात पर उनसे लड़ाई की जाए

और ईरान और रोम के बादशाहों को नबी करीम (ﷺ) का ख़ुतूत लिखना और लड़ाई से पहले इस्लाम की दा'वत देना.

١٠١– بَابُ دَعْوَةِ الْيَهُودِ وَالنَّصْرَانِيِّ، وَعَلَى مَا يُقَاتَلُونَ عَلَيْهِ؟ وَمَا كَتَبَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى كِسْرَى وَقَيْصَرَ، وَالدَّعْوَةُ قَبْلَ الْقِتَالِ

2938. हमसे अ़ली बिन जुअ़द ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी क़तादा से, उन्होंने कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना कि आप बयान करते थे कि जब नबी करीम (ﷺ) ने शाहे रोम को ख़त लिखने का इरादा किया तो आपसे कहा गया कि वो लोग कोई ख़त उस वक़्त तक कुबूल नहीं करते जब तक कि वो मुहर लगा हुआ न हो, चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने एक चाँदी की अंगूठी बनवाई। गोया दस्ते मुबारक पर उसकी सफ़ेदी मेरी नज़रों के सामने है। उस अंगूठी पर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह खुदा हुआ था। (राजेअ़ : 65)

٢٩٣٨– حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((لَمَّا أَرَادَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَكْتُبَ إِلَى الرُّومِ قِيلَ لَهُ: إِنَّهُمْ لاَ يَقْرَؤُونَ كِتَابًا إِلاَّ أَنْ يَكُونَ مَخْتُومًا، فَاتَّخَذَ خَاتَمًا مِنْ فِضَّةٍ، فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى بَيَاضِهِ فِي يَدِهِ، وَنَقَشَ فِيهِ : مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ)).

[راجع: ٦٥]

मक़्सद ये है कि इस्लाम की दा'वत बाज़ाब्ता तहरीरी तौर पर सरबराह की मुहर से मुज़य्यन (सुशोभित) होनी चाहिये। ये जब है कि शाहाने आ़लम को दा'वती ख़ुतूत लिखे जाएँ इससे तहरीरी तब्लीग़ का भी मस्नून होना षाबित हुआ।

2939. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, कहा मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि

٢٩٣٩– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना ख़त्त किसरा के पास भेजा। आप (ﷺ)ने (ऐलची से) ये कहा था कि वो आप (ﷺ) के ख़त्त को बहरीन के गवर्नर को दे दें, बहरीन का गवर्नर उसे किसरा के दरबार में पहुँचा देगा। जब किसरा ने मक्तूबे मुबारक पढ़ा तो उसे उसने फाड़ डाला। मुझे याद है कि सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया था कि फिर नबी करीम (ﷺ) ने उस पर बद्दुआ की थी कि वो भी पारा-पारा हो जाए (चुनाँचे ऐसा ही हुआ)। (राजेअ : 64)

اللهِ بنِ عُتبَةَ أنَّ عَبْدَ اللهِ بنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أخبَرَهُ: ((أنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعَثَ بِكِتَابِهِ إلَى كِسْرَى، فَأمَرَهُ أن يَدْفَعَهُ إلَى عَظِيمِ الْبَحْرَينِ يَدْفَعُهُ عَظِيمُ الْبَحْرَينِ إلَى كِسرَى. فَلَمَّا قَرَأهُ كِسْرَى خَرَّقَهُ، فَحَسِبْتُ أنَّ سَعِيدَ بنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: فَدَعَا عَلَيهِم النَّبِيُّ ﷺ أنْ يُمَزَّقُوا كُلَّ مُمَزَّقٍ)). [راجع: ٦٤]

इतिहास में ज़िक्र है कि किसरा जो एक नौजवान अय्याश क़िस्म का आदमी था और वो मौक़े का इंतिज़ार कर रहा था कि अपने वालिद किसरा को ख़त्म करके जल्द से जल्द तख़्त और ख़ज़ानों का मालिक बन जाए। चुनाँचे जब किसरा ने ये हरकत की उसके बाद जल्दी ही एक रात को उसके लड़के ने किसरा के पेट पर चढ़कर उसके पेट को छुरा घोंप दिया और उसे ख़त्म कर दिया। बाद में वो तख़्तो-ताज का मालिक बना तो उसने ख़ज़ानों का जाइज़ा लेते हुए ख़ज़ाने में एक दवा की शीशी पाई जिस पर क़ुव्वते बाह की दवा लिखा हुआ था। उसने सोचा कि वालिद साहब उसी दवा को खा खाकर आख़िर तक ऐश करते रहे मुझको भी दवा खा लेनी चाहिये। दरहक़ीक़त उस शीशी में सम्मुल फ़ार (ज़हर) था उसने उसको खाया और फ़ौरन ही वो भी ख़त्म हो गया। इस तरह उसकी सल्तनत पारा-पारा हो गई और अहदे फ़ारूक़ी में सारा मुल्क इस्लामी क़लम रू में शामिल हो गया और अल्लाह के सच्चे रसूल (ﷺ) की दुआ ने पूरा पूरा अषर दिखाया (ﷺ)। किरमानी वग़ैरह में है कि उसके लड़के का नाम ख़ैरूया था जिसने अपने बाप परवेज़ नामी का पेट चाक किया और छः माह बाद ख़ुद भी वो मज़्कूरा ज़हर खाकर हलाक हो गया। अहदे फ़ारूक़ी में हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) के हाथों ये मुल्क फ़तह हुआ। यहाँ रिवायत में यही ख़ुसरू परवेज़ मुराद है जो लक़बे किसरा से याद किया गया। (हाशिया बुख़ारी शरीफ़, जिल्द अव्वल पेज नं. 15)

बाब 102 : नबी करीम (ﷺ) का (ग़ैर मुस्लिमों को) इस्लाम की तरफ़ दा'वत देना

١٠٢ - بابُ دُعاءِ النَّبِيِّ ﷺ إلَى الإسْلامِ وَالنُّبُوَّةِ

और इस बात की दा'वत देना कि वो अल्लाह को छोड़कर बाहम एक-दूसरे को अपना रब न बनाएँ और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि किसी बन्दे के लिये ये लायक़ नहीं कि अगर अल्लाह तआला उसे (किताब व हिक्मत) अता करे तो (वो बजाय अल्लाह तआला की इबादत के लोगों से अपनी इबादत के लिये कहे) आख़िर तक। (आले इमरान : 79)

وَأنْ لاَ يَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا أرْبَابًا مِنْ دُونِ اللهِ، وَقَولُه تَعَالَى: ﴿مَا كَانَ لِبَشَرٍ أنْ يُؤْتِيَهُ اللهُ الْكِتَابَ﴾ إلَى آخِرِ الآيَةِ [آل عمران : ٧٩]

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) बतलाना चाहते हैं कि इस्लामी जिहाद का मक़्सदे अज़ीम मुल्कगीरी हर्गिज़ नहीं बल्कि उसका मक़्सदे अज़ीम महज़ अल्लाह पाक के दीने बरहक़ इस्लाम को हर मुल्क में फैलाना है ताकि दुनिया में हर जगह अल्लाह की हुकूमत का तसव्वुर इशाअत पाये और दुनिया अमनो-अमान का गहवारा बन जाए और कोई इंसान दूसरे लोगों पर ऐसी बरतरी अपने लिये न इख़्तियार करे कि लोग उसे ख़ुदाई दर्जा में समझने पर मजबूर हो जाएँ। इस्लामी जिहाद का मक़्सद इबादते इलाही है और मसावाते-इंसानी को फ़रोग़ देना है और इस मुलूकियत को जड़ से उखाड़ना जिसमें एक इंसान तख़्त पर बैठकर अपने दूसरे जिन्स इंसानों से अपनी ख़ुदाई तस्लीम कराए यहाँ तक कि अंबिया व रसूल जो मक़्बूलाने बारगाहे

अह्दियत होते हैं, उनको भी ये लायक़ नहीं कि वो ख़ुदाई के कुछ हिस्सेदार बनने का दा'वा कर सकें। इस्लाम के इसी इंसानियत नवाज़ पहलू का अषर था कि नोअ़े इंसान ने मुल्क और मज़हब के नाम पर होने वाले ज़ुल्मों का एहसास किया और दुनियावी बादशाहों और मज़हबी रहनुमाओं की असल हक़ीक़त की तरफ़ मुतवज्जह किया कि वो इंसान होने के नाते पूरी बनी नोअ़े इंसान के ख़ादिम हैं । अगर वो अपनी हुदूद से आगे बढ़ेंगे तो उनका मक़ामे रिफ़अ़ते ज़िल्लत से तब्दील होगा। आज जम्हूरियत और समानता की जो लहरें दुनिया में मौज-ज़न हैं, उनको पैदा करने में इस्लाम ने एक ज़बरदस्त किरदार अदा किया है। सच है,

बहार अब जो दुनिया में आई हुई है ये सब पौध उसकी लगाई हुई है।

२९٤٠- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَتَبَ إِلَى قَيْصَرَ يَدْعُوهُ إِلَى الإِسْلاَمِ. وَبَعَثَ بِكِتَابِهِ إِلَيْهِ مَعَ دِحْيَةَ الْكَلْبِيِّ، وَأَمَرَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى عَظِيْمِ بُصْرَى لِيَدْفَعَهُ إِلَى قَيْصَرَ، وَكَانَ قَيْصَرُ لَمَّا كَشَفَ اللهُ جُنُودَ فَارِسَ مَشَى مِنْ حِمْصَ إِلَى إِيْلِيَاءَ شُكْرًا لِمَا أَبْلاَهُ اللهُ فَلَمَّا جَاءَ قَيْصَرَ كِتَابُ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ حِيْنَ قَرَأَهُ: الْتَمِسُوا لِي هَا هُنَا أَحَدًا مِنْ قَوْمِهِ لأَسْأَلَهُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ)). [راجع: ٢٩٣٦]

2940. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़ैस़र को एक ख़त लिखा जिसमें आप (ﷺ) ने उसे इस्लाम की दा'वत दी थी। दह़िया कलबी (रज़ि.) को आप (ﷺ) ने मक्तूब देकर भेजा और उन्हें हुक्म दिया था कि मक्तूब बस़रा के गवर्नर के ह़वाले कर दें वो उसे क़ैस़र तक पहुँचा देगा। जब फ़ारस की फौज (उसके मुक़ाबले में) शिकस्त खाकर पीछे हट गई थी (और उसके मुल्क के क़ब्ज़ेशुदा इलाक़े वापस मिल गए थे) तो इस इन्आ़म के शुक्राने के त़ौर पर जो अल्लाह तआ़ला ने (उसका मुल्क वापस देकर) उस पर किया था अभी क़ैस़रे हिम्स़ से ईलिया (बैतुल मक़्दिस) तक पैदल चलकर आया था। जब उसके पास रसूलुल्लाह (ﷺ) का नामा-ए-मुबारक पहुँचा और उसके सामने पढ़ा गया तो उसने कहा कि अगर उनकी आँह़ज़रत ﷺ की) क़ौम का कोई शख़्स़ यहाँ हो तो उसे तलाश करके लाओ ताकि मैं उस रसूल (ﷺ) के बारे में उससे कुछ सवालात करूँ। (राजेअ़: 2936)

२९٤١- قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَأَخْبَرَنِي أَبُو سُفْيَانَ أَنَّهُ كَانَ بِالشَّامِ فِي رِجَالٍ مِنْ قُرَيْشٍ قَدِمُوا تِجَارًا فِي الْمُدَّةِ الَّتِي كَانَتْ بَيْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبَيْنَ كُفَّارِ قُرَيْشٍ. قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: فَوَجَدَنَا رَسُولُ قَيْصَرَ بِبَعْضِ الشَّامِ، فَانْطَلَقَ بِي

2941. इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि क़ुरैश के एक क़ाफ़िले के साथ वो उन दिनों शाम में मुक़ीम थे। ये क़ाफ़िला उस दौर में यहाँ तिजारत की ग़र्ज़ से आया था जिसमें आँह़ज़रत और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश में बाहम सुलह हो चुकी थी। (सुलह हुदेबिया) अबू सुफ़यान ने कहा कि क़ैस़र के आदमी की हमसे शाम के एक जगह पर मुलाक़ात हुई और वो मुझे और मेरे साथियों को अपने साथ (क़ैस़र के दरबार मे बैतुल मक़्दिस) लेकर चला फिर जब हम ईलिया

(बैतुल मक़्दिस) पहुँचे तो क़ैसर के दरबार में हमारी बारयाबी हुई उस वक़्त क़ैसर दरबार में बैठा हुआ था। उसके सर पर ताज था और रोम के उमरा उसके आसपास बैठे थे, उसने अपने तर्जुमान से कहा कि इनसे पूछो कि जिन्होंने इनके यहाँ नुबुव्वत का दा'वा किया है नसब के ए'तिबार से उनसे क़रीब इनमें से कौन शख़्स है? अबू सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने कहा मैं नसब के ए'तिबार से उनके ज़्यादा क़रीब हूँ। क़ैसर ने पूछा तुम्हारी और उनकी क़राबत क्या है? मैंने कहा (रिश्ते में) वो मेरे चचाज़ाद भाई होते हैं, इत्तिफ़ाक़ था कि इस बार क़ाफ़िले में मेरे सिवा बनी अ़ब्दे मुनाफ़ का और कोई आदमी मौजूद नहीं था। क़ैसर ने कहा कि इस शख़्स (अबू सुफ़यान रज़ि.) को मुझसे क़रीब कर दो और जो लोग मेरे साथ थे उसके हुक्म से मेरे पीछे क़रीब में खड़े कर दिये गये। उसके बाद उसने अपने तर्जुमान से कहा कि इस शख़्स (अबू सुफियान) के साथियों से कह दो कि इससे मैं उन स़ाहब के बारे में पूछूँगा जो नबी होने के मुद्दई हैं, अगर ये उनके बारे में कोई झूठी बात कहे तो तुम फ़ौरन इसकी तक्ज़ीब कर दो (झुठला देना)। अबू सुफ़यान ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! अगर उस दिन इस बात की शर्म न होती कि कहीं मेरे साथी मेरी तक्ज़ीब न कर बैठें तो मैं उन सवालात के जवाबात में ज़रूर झूठ बोल जाता जो उसने आँहज़रत (ﷺ) के बारे में पूछे थे, लेकिन मुझे तो इसका ख़तरा लगा रहा कि कहीं मेरे साथी मेरी तक्ज़ीब न कर बैठे। इसलिये मैंने सच्चाई से काम लिया। उसके बाद उसने अपने तर्जुमान से कहा इससे पूछो कि तुम लोगों में उन स़ाहब (ﷺ) का नसब कैसा समझा जाता है? मैंने बताया कि हममें उनका नसब बहुत उ़म्दा समझा जाता है। उसने पूछा अच्छा ये नुबुव्वत का दा'वा उससे पहले भी तुम्हारे यहाँ किसी ने किया था? मैंने कहा कि नहीं। उसने पूछा क्या इस दा'वे से पहले उन पर कोई झूठ का इल्ज़ाम था? मैंने कहा कि नहीं, उसने पूछा उनके बाप-दादों में कोई बादशाह गुज़रा है? मैंने कहा कि नहीं। उसने पूछा तो अब बड़े अमीर लोग उनकी इत्तिबाअ़ करते हैं या कमज़ोर और कम हैसियत के लोग? मैंने कहा कि कमज़ोर और मामूली हैसियत के लोग ही उनके (ज़्यादातर मानने वाले हैं)

وَبِأَصْحَابِي حَتَّى قَدِمْنَا إِيلِيَاءَ، فَأُدْخِلْنَا عَلَيْهِ، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ فِي مَجْلِسِ مُلْكِهِ وَعَلَيْهِ التَّاجُ، وَإِذَا حَوْلَهُ عُظَمَاءُ الرُّومِ. فَقَالَ لِتَرْجُمَانِهِ: سَلْهُمْ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ نَسَبًا إِلَى هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ؟ قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: فَقُلْتُ أَنَا أَقْرَبُهُمْ إِلَيْهِ نَسَبًا. قَالَ: مَا قَرَابَةُ مَا بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ؟ فَقُلْتُ هُوَ ابْنُ عَمِّي. وَلَيْسَ فِي الرَّكْبِ يَوْمَئِذٍ أَحَدٌ مِنْ بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ غَيْرِي. فَقَالَ قَيْصَرُ: أَدْنُوهُ. وَأَمَرَ بِأَصْحَابِي فَجُعِلُوا خَلْفَ ظَهْرِي عِنْدَ كَتِفِي. ثُمَّ قَالَ لِتَرْجُمَانِهِ: قُلْ لأَصْحَابِهِ إِنِّي سَائِلٌ هَذَا الرَّجُلَ عَنِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ، فَإِنْ كَذَبَ فَكَذِّبُوهُ. قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: وَاللهِ لَوْ لاَ الْحَيَاءُ يَوْمَئِذٍ مِنْ أَنْ يَأْثُرَ أَصْحَابِي عَنِّي الْكَذِبَ لَكَذَبْتُهُ حِينَ سَأَلَنِي عَنْهُ، وَلَكِنِّي اسْتَحْيَيْتُ أَنْ يَأْثُرُوا الْكَذِبَ عَنِّي فَصَدَقْتُهُ. ثُمَّ قَالَ لِتُرْجُمَانِهِ: قُلْ لَهُ كَيْفَ نَسَبُ هَذَا الرَّجُلِ فِيكُمْ؟ قُلْتُ: هُوَ فِينَا ذُو نَسَبٍ. قَالَ: فَهَلْ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ أَحَدٌ مِنْكُمْ قَبْلَهُ؟ قُلْتُ: لاَ. فَقَالَ: كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ عَلَى الْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَهَلْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مِنْ مَلِكٍ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَأَشْرَافُ النَّاسِ يَتَّبِعُونَهُ أَمْ ضُعَفَاؤُهُمْ؟. قُلْتُ: بَلْ ضُعَفَاؤُهُمْ. قَالَ: فَيَزِيدُونَ أَمْ يَنْقُصُونَ؟

उसने पूछा कि उसके मानने वालों की ता'दाद बढ़ती रहती है या घटती जा रही है? मैंने कहा जी नहीं, ता'दाद बराबर बढ़ती जा रही है। उसने पूछा कोई उनके दीन से बेज़ार होकर इस्लाम लाने के बाद फिर भी गया है क्या? मैंने कहा कि नहीं, उसने पूछा, उन्होंने कभी वा'दाख़िलाफ़ी की है? मैंने कहा कि नहीं, लेकिन आजकल हमारा उनसे एक मुआहिदा हो रहा है और हमें उनकी त़रफ़ से मुआहिदा की ख़िलाफ़वर्ज़ी का ख़तरा है। अबू सुफ़यान ने कहा कि पूरी बातचीत में सिवा उसके और कोई ऐसा मौक़ा न मिला जिसमें मैं कोई ऐसी बात (झूठी) मिला सकूँ जिससे आँह़ज़रत (ﷺ) की तौहीन हो। और अपने साथियों की त़रफ़ से भी झुठलाने का डर न हो। उसने फिर पूछा क्या तुमने कभी उनसे लड़ाई की है या उन्होंने तुमसे जंग की है? मैंने कहा कि हाँ, उसने पूछा तुम्हारी लड़ाई का क्या नतीजा निकलता है? मैंने कहा लड़ाई में हमेशा किसी एक गिरोह ने फ़तह नहीं हासिल की। कभी वो हमें मग़्लूब कर लेते हैं और कभी हम उन्हें, उसने पूछा वो तुम्हें किन कामों का हुक्म देते हैं? कहा हमें वो उसका हुक्म देते हैं कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें और उसका किसी को भी शरीक न ठहराएँ, हमें उन बुतों की इबादत से वो मना करते हैं जिनकी हमारे बाप-दादा इबादत करते थे, नमाज़, स़दक़ा, पाकबाज़ी व मुरव्वत, वफ़ा-ए- अ़हद और अमानत के अदा करने का हुक्म देते हैं। जब मैं उसे ये तमाम बातें बता चुका तो उसने अपने तर्जुमान से कहा, उनसे कहो कि मैंने तुमसे उन के नसब के बारे में पूछा तो तुमने बताया कि वो तुम्हारे यहाँ स़ाह़िबे नसब और शरीफ़ समझे जाते हैं और अंबिया भी यूँ ही अपनी क़ौम के आ़ला नसब में पैदा किये जाते हैं। मैंने तुमसे ये पूछा था कि क्या नुबुव्वत का दा'वा तुम्हारे यहाँ उससे पहले भी किसी ने किया था तुमने बताया कि हमारे यहाँ ऐसा दा'वा पहले किसी ने नहीं किया था, उससे मैं ये समझा कि अगर उससे पहले तुम्हारे यहाँ किसी ने नुबुव्वत का दा'वा किया होता तो मैं ये भी कह सकता था कि ये स़ाहब भी उसी दा'वे की नक़ल कर रहे हैं जो उससे पहले किया जा चुका है। मैंने तुमसे पूछा कि क्या तुमने दा'वा-ए-नबुव्वत से पहले कभी उनकी त़रफ़ झूठ

قُلْتُ: بَلْ يَزِيدُونَ. قَالَ : فَهَلْ يَرْتَدُّ أَحَد سَخْطَةً لِدِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيهِ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَهَلْ يَغْدِرُ؟ قُلْتُ: لاَ، وَنَحْنُ الآنَ مِنْهُ فِي مُدَّةٍ نَحْنُ نَخَافُ أَنْ يَغْدِرَ. قَالَ أَبُو سُفْيَان: وَلَمْ يُمْكِنِّي كَلِمَةٌ أُدْخِلُ فِيهَا شَيْئًا أَنْتَقِصُهُ بِهِ – لاَ أَخَافُ أَنْ تُؤْثَرَ عَنِّي – غَيْرُهَا. قَالَ: فَهَلْ قَاتَلْتُمُوهُ أَوْ قَاتَلَكُمْ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: فَكَيْفَ كَانَتْ حَرْبُهُ وَحَرْبُكُمْ؟ قُلْتُ: دُوَلاً وَسِجَالاً : يُدَال عَلَيْنَا الْـمَرَّةَ وَنُدَال عَلَيْهِ الأُخْرَى. قَالَ: فَمَا ذَا يَأْمُرُكُمْ؟ قَالَ: يَأْمُرُنَا أَنْ نَعْبُدَ اللهَ وَحْدَهُ لاَ نُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا، وَيَنْهَانَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا، وَيَأْمُرُنَا بِالصَّلاَةِ، وَالصَّدَقَةِ، وَالْعَفَافِ، وَالْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ، وَأَدَاءِ الأَمَانَةِ. فَقَالَ لِتَرْجُمَانِهِ حِيْنَ قُلْتُ ذَلِكَ لَهُ: قُلْ لَهُ إِنِّي سَأَلْتُكَ عَنْ نَسَبِهِ فِيكُمْ، فَزَعَمْتَ أَنَّهُ ذُو نَسَبٍ، وكَذَلِكَ الرُّسُلُ تُبْعَثُ فِي نَسَبِ قَوْمِهَا. وَسَأَلْتُكَ هَلْ قَالَ أَحَدٌ مِنْكُمْ هَذَا الْقَوْلَ قَبْلَهُ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لاَ، فَقُلْتُ لَوْ كَانَ أَحَدٌ مِنْكُمْ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ قَبْلَهُ قُلْتُ رَجُلٌ يَأْتَمُّ بِقَوْلٍ قَدْ قِيلَ قَبْلَهُ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ بِالْكَذِبِ قَبْلَ أَن يَقُولَ مَا قَالَ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لاَ، فَعَرَفْتُ أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ لِيَدَعَ الْكَذِبَ عَلَى النَّاسِ وَيَكْذِبَ عَلَى اللهِ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ كَانَ

मन्सूब किया था। तुमने बताया कि ऐसा कभी नहीं हुआ। उससे मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि ये मुम्किन नहीं कि एक शख़्स जो लोगों के बारे में कभी झूठ न बोल सका हो वो अल्लाह के बारे में झूठ बोल दे। मैंने तुमसे पूछा कि उनके बाप दादों में कोई बादशाह था, तुमने बताया कि नहीं। मैंने उससे ये फ़ैसला किया कि अगर उनके बाप दादों में कोई बादशाह गुज़रा होता तो मैं ये भी कह सकता था कि (नुबुव्वत का दा'वा करके) वो अपने बाप-दादा की सल्तनत हासिल करना चाहता है, मैंने तुमसे पूछा कि उनकी इत्तिबाअ क़ौम के बड़े लोग करते हैं या कमज़ोर और बे-हैसियत लोग, तुमने बताया कि कमज़ोर ग़रीब क़िस्म के लोग उनकी ताबेदारी करते हैं और यही गिरोह अंबिया की (हर दौर में) इताअत करने वाला रहा है। मैंने तुमसे पूछा कि उन ताबेदारों की ता'दाद बढ़ती रहती है या घटती भी है? तुमने बताया कि वो लोग बराबर बढ़ ही रहे हैं, ईमान का भी यही हाल है, यहाँ तक कि वो मुकम्मल हो जाए, मैंने तुमसे पूछा कि क्या कोई शख़्स उनके दीन में दाख़िल होने के बाद कभी उससे फिर भी गया है? तुमने कहा कि ऐसा कभी नहीं हुआ, ईमान का भी यही हाल है जब वो दिल की गहराइयों में उतर जाए तो फिर कोई चीज़ उससे मोमिन को हटा नहीं सकती। मैंने तुमसे पूछा कि क्या उन्होंने वा'दाख़िलाफ़ी भी की है? तुमने उसका भी जवाब दिया कि नहीं, अंबिया की यही शान है कि वो वा'दा ख़िलाफ़ी कभी नहीं करते। मैंने तुमसे पूछा कि क्या तुमने कभी उनसे या उन्होंने तुमसे जंग भी की है? तुमने बताया कि ऐसा हुआ है और तुम्हारी लड़ाइयों का नतीजा हमेशा किसी एक ही के हक़ में नहीं गया बल्कि कभी तुम मग़लूब हुए हो और कभी वो। अंबिया के साथ भी ऐसा ही होता है वो इम्तिहान में डाले जाते हैं लेकिन अंजाम उन्हीं का बेहतर होता है। मैंने तुमसे पूछा कि वो तुमको किन कामों का हुक्म देते हैं? तुमने बताया कि वो हमें उसका हुक्म देते हैं कि अल्लाह की इबादत करो। और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, और तुम्हें तुम्हारे उन मा'बूदों की इबादत से मना करते हैं जिनकी तुम्हारे बाप-दादा इबादत किया करते थे। तुम्हें वो नमाज़, सदक़ा, पाकबाज़ी, वा'दा निभाने और अमानत अदा

مِنْ آبَائِهِ مِنْ مَلِكٍ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لاَ، فَقُلْتُ لَوْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مَلِكٌ قُلْتُ يَطْلُبُ مُلْكَ آبَائِهِ. وَسَأَلْتُكَ أَشْرَافُ النَّاسِ يَتْبَعُونَهُ أَمْ ضُعَفَاؤُهُمْ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ ضُعَفَاؤُهُمْ اتَّبَعُوهُ، وَهُمْ أَتْبَاعُ الرُّسُلِ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَزِيدُونَ أَوْ يَنْقُصُونَ؟ فَزَعَمْتَ أَنَّهُمْ يَزِيدُونَ، وَكَذَلِكَ الإِيْمَانُ حَتَّى يَتِمَّ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَرْتَدُّ أَحَدٌ سَخْطَةً لِدِيْنِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيْهِ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لاَ، فَكَذَلِكَ الإِيْمَانُ حِيْنَ تَخْلِطُ بَشَاشَتُهُ الْقُلُوبَ لاَ يَسْخَطُهُ أَحَدٌ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَغْدِرُ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لاَ، وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ لاَ يَغْدِرُوْنَ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ قَاتَلْتُمُوهُ وَقَاتَلَكُمْ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ قَدْ فَعَلَ، وَأَنَّ حَرْبَكُمْ وَحَرْبَهُ تَكُونُ دُوَلاً، وَيُدَالُ عَلَيْكُمْ الْمَرَّةَ وَتُدَالُونَ عَلَيْهِ الأُخْرَى، وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ تُبْتَلَى وَتَكُونُ لَهَا الْعَاقِبَةُ. وَسَأَلْتُكَ بِمَاذَا يَأْمُرُكُمْ؟ فَزَعَمْتَ أَنَّهُ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَعْبُدُوا اللهَ وَلاَ تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَيَنْهَاكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ، وَيَأْمُرُكُمْ بِالصَّلاَةِ، وَالصِّدْقِ وَالْعَفَافِ، وَالْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ، وَأَدَاءِ الأَمَانَةِ. قَالَ: وَهَذِهِ صِفَةُ نَبِيٍّ قَدْ كُنْتُ أَعْلَمُ أَنَّهُ خَارِجٌ، وَلَكِنْ لَمْ أَظُنَّ أَنَّهُ مِنْكُمْ، وَإِنْ يَكُ مَا قُلْتَ حَقًّا فَيُوشِكُ أَنْ يَمْلِكَ مَوْضِعَ قَدَمَيَّ هَاتَيْنِ،

وَلَوْ أَرْجُوا أَنْ أَخْلُصَ إِلَيْهِ لَتَجَشَّمْتُ لُقِيَّهُ، وَلَوْ كُنْتُ عِنْدَهُ لَغَسَلْتُ قَدَمَيْهِ. قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: ثُمَّ دَعَا بِكِتَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُرِىءَ، فَإِذَا فِيهِ.
[راجع: ٧]

करने का हुक्म देते हैं, उसने कहा कि एक नबी की यही सिफ़त है मेरे भी इल्म में ये बात थी कि वो नबी मबऊष़ होने वाले हैं। लेकिन ये ख़्याल न था कि तुममें से वो मबऊष़ होंगे, जो बातें तुमने बताईं अगर वो स़हीह़ हैं तो वो दिन बहुत क़रीब है जब वो इस जगह पर हुक्मरान होंगे जहाँ इस वक़्त मेरे दोनों क़दम मौजूद हैं, अगर मुझे उन तक पहुँच सकने की तवक़्क़ुअ होती तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर होने की पूरी कोशिश करता और अगर मैं उनकी ख़िदमत में मौजूद होता तो उनके पाँव धोता। अबू सुफ़यान ने बयान किया कि उसके बाद क़ैसर ने रसूलुल्लाह (ﷺ) का नामा-ए- मुबारक तलब किया और वो उसके सामने पढ़ा गया उसमें लिखा हुआ था,

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
مِنْ مُحَمَّدٍ عَبْدِ اللهِ وَرَسُولِهِ، إِلَى هِرَقْلَ عَظِيمِ الرُّومِ.
سَلاَمٌ عَلَى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَى. أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي أَدْعُوكَ بِدِعَايَةِ الإِسْلاَمِ، أَسْلِمْ تَسْلَمْ، وَأَسْلِمْ يُؤْتِكَ اللهُ أَجْرَكَ مَرَّتَيْنِ، فَإِنْ تَوَلَّيْتَ فَعَلَيْكَ إِثْمُ الأَرِيسِيِّينَ ﴿قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلاَّ نَعْبُدَ إِلاَّ اللهَ وَلاَ نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا، وَلاَ يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللهِ. فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ﴾ [آل عمران : ٦٤].
قَالَ أَبُو سُفْيَانَ : فَلَمَّا أَنْ قَضَى مَقَالَتَهُ عَلَتْ أَصْوَاتُ الَّذِينَ حَوْلَهُ مِنْ عُظَمَاءِ الرُّومِ وَكَثُرَ لَغَطُهُمْ، فَلاَ أَدْرِي مَاذَا قَالُوا. وَأُمِرَ بِنَا فَأُخْرِجْنَا. فَلَمَّا أَنْ خَرَجْتُ مَعَ أَصْحَابِي وَخَلَوْتُ بِهِمْ قُلْتُ لَقَدْ أَمِرَ أَمْرُ ابْنِ أَبِي كَبْشَةَ، هَذَا مَلِكُ بَنِي الأَصْفَرِ

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान निहायत रह़म करने वाला है। ये ख़त़ है मुह़म्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल की त़रफ़ से रोम के बादशाह हिरक़्ल की त़रफ़, उस शख़्स़ पर सलामती हो जो हिदायत क़ुबूल कर ले। अम्मा बअ़द! मैं तुम्हें इस्लाम की दा'वत देता हूँ। इस्लाम क़ुबूल कर लो, तुम्हें भी सलामती व अमन हास़िल होगी और इस्लाम क़ुबूल करो अल्लाह तुम्हें दोहरा अज्र देगा (एक तुम्हारे अपने इस्लाम का और दूसरा तुम्हारी क़ौम के इस्लाम का जो तुम्हारी वजह से इस्लाम में दाख़िल होगी) लेकिन अगर तुमने इस दा'वत से मुँह मोड़ लिया तो तुम्हारी रिआया का गुनाह भी तुम पर होगा। और ऐ अहले किताब! एक ऐसे कलिमे पर आकर हमसे मिल जाओ जो हमारे और तुम्हारे बीच एक ही है ये कि हम अल्लाह के सिवा और किसी की इबादत न करें न उसके साथ किसी को शरीक ठहराएँ और न हममें से कोई अल्लाह को छोड़कर आपस में एक-दूसरे को परवरदिगार बनाए अब भी अगर तुम मुँह मोड़ते हो तो इसका इक़रार कर लो कि (अल्लाह तआ़ला के वाक़ई) फ़र्मांबरदार हम ही हैं। अबू सुफ़यान ने बयान किया कि जब हिरक़्ल अपनी बात पूरी कर चुका तो रोम के सरदार उसके आसपास जमा थे, सब एक साथ चीख़ने लगे और शोरो-गुल बहुत बढ़ गया। मुझे कुछ पता नहीं चला कि ये लोग क्या कह रहे थे। फिर हमें हुक्म दिया गया और हम वहाँ से निकाल दिये गये। जब मैं अपने साथियों के साथ वहाँ से चला आया और उनके साथ तन्हाई हुई तो मैंने कहा कि इब्ने अबी कब्शा (मुराद हुज़ूरे अकरम ﷺ से है) का मामला बहुत

आगे बढ़ चुका है, बनू असफ़र (रोमियों) का बादशाह भी उससे डरता है, अबू सुफ़यान ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मुझे उसी दिन से अपनी ज़िल्लत का यक़ीन हो गया था और बराबर उस बात का भी यक़ीन रहा कि आँहज़रत (ﷺ) ज़रूर ग़ालिब होंगे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरे दिल में भी इस्लाम दाख़िल कर दिया हालाँकि (पहले) मैं इस्लाम को बुरा जानता था। (राजेअ : 7)

يَخَافُهُ. قَالَ أَبُو سُفْيَانَ وَاللهِ مَا زِلْتُ ذَلِيلاً مُسْتَيْقِنًا بِأَنَّ أَمْرَهُ سَيَظْهَرُ، حَتَّى أَدْخَلَ اللهُ قَلْبِي الإِسْلاَمَ وَأَنَا كَارِهٌ)).

तश्रीह : इस लम्बी ह़दीष़ को ह़ज़रत मुज्तहिदे मुत़्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) कई जगह लाए हैं और उससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात़ फ़र्माया है। यहाँ इस ग़र्ज़ से लाए कि इससे यहाँ ग़ैर-मुस्लिमों को दा'वते इस्लाम पेश करने के त़रीक़ों पर रोशनी पड़ती है। इस में हिरक़्ल की त़रफ़ दा'वते इस्लामी का ज़िक्र है जिसका लक़ब क़ैसर था हिरक़्ल उ़ज्मा और अ़लम होने की वजह से ग़ैर मुंसरिफ़ है। किसरा भी उसको कहते थे उसने इकत्तीस साल तक हुकूमत की थी। आँह़ज़रत (ﷺ) का उसी दौरान इंतिक़ाल हो चुका था। लफ़्ज़े ईलिया से बैतुल मक़्दिस मुराद है यहाँ ह़ज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने आप (ﷺ) को अपने चचा का बेटा बतलाया था ह़ालाँकि आप (ﷺ) उनके दादा के चचा के बेटे हैं, अबू सुफ़यान का नसब ये है अबू सुफ़यान सख़र बिन ह़र्ब बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे मुनाफ़। और रसूले करीम (ﷺ) का नसबनामा ये है मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत़्तलिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मुनाफ़। आपको यहाँ अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने इब्ने अबी कब्शा से तश्बीह दी जो बनू ख़ुज़ाआ का एक आदमी था और सारे अ़रब के ख़िलाफ़ वो सितारा शुअ़रा का पुजारी था और उसी मुख़ालफ़ते अ़रब की वजह से लोग आँह़ज़रत (ﷺ) को भी इब्ने अबी कब्शा से तश्बीह दिया करते थे।

2942. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने ख़ैबर की लड़ाई के दिन फ़र्माया था कि इस्लामी झण्डा मैं एक ऐसे शख़्स के हाथ में दूँगा जिसके ज़रिये अल्लाह तआला फ़तह इनायत फ़र्माएगा। अब सब उस इंतिज़ार में थे कि देखें झण्डा किसे मिलता है, जब सुबह हुई तो सब सरकर्दा लोग इसी उम्मीद में रहे कि काश! उन्हीं को मिल जाए लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा अ़ली कहाँ हैं? अ़र्ज़ किया गया कि वो आँखों के दर्द में मुब्तला हैं, आख़िर आप (ﷺ) के हुक्म से उन्हें बुलाया गया। आप (ﷺ) ने अपना लुआबे दहने मुबारक उनकी आँखों में लगा दिया और फ़ौरन ही वो अच्छे हो गये। जैसे पहले कोई तकलीफ़ ही न रही हो। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा हम उन (यहूदियो से) उस वक़्त तक जंग करेंगे जब तक ये हमारे जैसे (मुसलमान) न हो जाएँ। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अभी ठहरो पहले उनके मैदान में उतरकर उन्हें तुम इस्लाम की दा'वत दे लो और उनके लिये जो चीज़ ज़रूरी है उनकी

٢٩٤٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ يَوْمَ خَيْبَرَ: ((لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ رَجُلاً يَفْتَحُ اللهُ عَلَى يَدَيْهِ))، فَقَامُوا يَرْجُونَ لِذَلِكَ أَيُّهُمْ يُعْطَى، فَغَدَوا وَكُلُّهُمْ يَرجُو أَنْ يُعْطَى، فَقَالَ: ((أَيْنَ عَلِيٌّ؟)) فَقِيْلَ: يَشْتَكِي عَيْنَيْهِ، فَأَمَرَ فَدُعِيَ لَهُ فَبَصَقَ فِي عَيْنِهِ فَبَرَأَ مَكَانَهُ حَتَّى كَأَنَّهُ لَمْ يَكُنْ بِهِ شَيْءٌ، فَقَالَ نُقَاتِلُهُمْ حَتَّى يَكُونُوا مِثْلَنَا. فَقَالَ: ((عَلَى رِسْلِكَ حَتَّى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ، ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الإِسْلاَمِ، وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ، فَوَاللهِ لأَنْ

ख़बर कर दो (फिर वो न मानें तो लड़ना) अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हारे ज़रिये एक शख़्स को भी हिदायत मिल जाए तो ये तुम्हारे हक़ में सुर्ख़ ऊँटों से बेहतर है। (दीगर मक़ाम : 3009, 3701, 4210)

يُهْدَى بِكَ رَجُلٌ وَاحِدٌ خَيْرٌ لَكَ مِنْ حُمُرِ النَّعَمِ)).

[أطرافه في : ٣٠٠٩، ٣٧٠١، ٤٢١٠].

इस ह़दीष़ से बाब की मुत़ाबक़त यूँ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने लड़ाई शुरू करने से पहले फ़रीक़ मुक़ाबिल के सामने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को दा'वत पेश करने का हुक्म फ़र्माया साथ ही यूँ इर्शाद हुआ कि पहले मुख़ालिफ़ीन को राहे-रास्त पर लाने की पूरी कोशिश करो और याद रखो अगर एक आदमी भी तुम्हारी तब्लीग़ी कोशिश से नेक रास्ते पर आ गया तो तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊँट से भी ज़्यादा क़ीमती चीज़ है। अ़रब में काले ऊँटों के मुक़ाबले पर सुर्ख़ ऊँटों की बड़ी क़ीमत थी। इसलिये मिष़ाल के त़ौर पर आप (ﷺ) ने ये इर्शाद फ़र्माया। इस्लाम किसी से जंग जिहाद लड़ाई का ख़्वाहाँ हर्गिज़ नहीं है। वो सिर्फ़ सुलह सफ़ाई अमन व अमान चाहता है मगर जब मुदाफ़िअ़त नागुज़ेर हो तो फिर भरपूर मुक़ाबला का हुक्म भी देता है।

2943. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे मुआ़विया बिन अ़म्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उनसे हुमैद ने कहा कि मैं ने अनस (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी क़ौम पर चढ़ाई करते तो उस वक़्त तक कोई इक़्दाम न फ़र्माते जब तक सुबह़ न हो जाती, जब सुबह़ हो जाती और अज़ान की आवाज़ सुन लेते तो रुक जाते और अगर अज़ान की आवाज़ सुनाई न देती तो सुबह़ होने के बाद ह़मला करते। चुनाँचे ख़ैबर में भी हम रात में पहुँचे थे। (राजेअ़ : 371)

٢٩٤٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ إِذَا غَزَا قَوْمًا لَمْ يُغِرْ حَتَّى يُصْبِحَ، فَإِنْ سَمِعَ أَذَانًا أَمْسَكَ، وَإِنْ لَمْ يَسْمَعْ أَذَانًا أَغَارَ بَعْدَ مَا يُصْبِحُ. فَنَزَلْنَا خَيْبَرَ لَيْلاً.[راجع: ٣٧١]

इस ह़दीष़ में भी इशारा है कि जंग शुरू करने से पहले हर वो मौक़ा तलाश कर लेना चाहिये जिससे जंग का ख़त़रा टल सके क्योंकि इस्लाम का मक़्सद जंग हर्गिज़ नहीं है।

2944. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) हमें साथ लेकर एक ग़ज़्वे के लिये तशरीफ़ ले गए। (राजेअ़ : 371)

٢٩٤٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ غَزَا بِنَا. ح و)).

[راجع: ٣٧١]

2945. (दूसरी सनद) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) रात में ख़ैबर तशरीफ़ ले गए और आप (ﷺ) की आ़दत थी कि जब किसी क़ौम तक रात के वक़्त पहुँचते तो सुबह़ से पहले उन पर ह़मला नहीं करते थे। जब सुबह़ हुई तो यहूदी अपने फ़ावड़े और टोकरे लेकर बाहर (खेतों मे काम करने के लिये) निकले जब उन्होंने इस्लामी लश्कर देखा तो चीख़ पड़े मुह़म्मद वल्लाह मुह़म्मद लश्कर समेत आ गये। इस पर नबी

٢٩٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ مَالِكٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ إِلَى خَيْبَرَ فَجَاءَهَا لَيْلاً - وَكَانَ إِذَا جَاءَ قَوْمًا بِلَيْلٍ لاَ يُغِيرُ عَلَيْهِمْ حَتَّى يُصْبِحَ - فَلَمَّا أَصْبَحَ خَرَجَتْ يَهُودُ بِمَسَاحِيهِمْ وَمَكَاتِلِهِمْ، فَلَمَّا رَأَوْهُ قَالُوا: مُحَمَّدٌ وَاللهِ مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ.

करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह की ज़ात सबसे बड़ी है। अब ख़ैबर तो ख़राब हो गया कि जब हम किसी क़ौम के मैदान में मुजाहिदीन उतर आते हैं तो (कुफ़्र से) डराये हुए लोगों की सुबह मन्हूस हो जाती है। (राजेअ़ : 371)

فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللهُ أَكْبَرُ، خَرِبَتْ خَيْبَرُ، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ)). [راجع: ٣٧١]

जंगे ख़ैबर का पसमंज़र यहूदियों की मुसलसल ग़द्दारी और तबई फ़साद अंगेज़ी थी। तफ़्सीली ह़ालात अपने मौक़े पर बयान होंगे। ह़दीष़ में लफ़्ज़ **मसाहीहिम** मिस्ह़ात की जमा है जिससे मुराद फावड़े है और **मकातिलुहुम** मकतल की जमा है, वो टोकरी जो पन्द्रह स़ाअ़ वज़न की वुस्अ़त रखती हो। ख़मीस से मुराद जो पाँच ह़िस्सों पर तक़्सीम होता है मयमनति और मयसरति क़ल्ब और साक़त और मुक़द्दमति इसी निस्बत से लश्कर को ख़मीस कहा गया है और साहृति से मुराद अलान है, **व अस़्लुहा अल्फ़ज़ाउ बैनल्मनाज़िल कज़ा फिल्मज्मइ वल्ऐनी वल्किर्मानी.**

2946. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा कि हमसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से उस वक़्त तक जंग करता रहूँ यहाँ तक कि वो इसका इक़रार कर लें कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, पस जिसने इक़रार कर लिया कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं तो उसकी जान और माल हमसे महफ़ूज़ है सिवाए उस ह़क़ के जिसकी बिना पर क़ानूनन उसकी जान व माल ज़द में आए और उसका ह़िसाब अल्लाह के ज़िम्मे है। इसकी रिवायत उ़मर और इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से की है।

٢٩٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، فَمَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ عَصَمَ فَقَدْ مِنِّي نَفْسَهُ وَمَالَهُ إِلاَّ بِحَقِّهِ، وَحِسَابُهُ عَلَى اللهِ)). رَوَاهُ عُمَرُ وَابْنُ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

तश्रीह : इस ह़दीष़ में रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी ह़याते त़य्यिबा का मक़्स़दे अ़ज़ीम बयान फ़र्माया कि मुल्के अ़रब में मुझको अपनी ह़यात में उसूले इस्लाम या'नी **ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मद रसूलुल्लाहि** का निफ़ाज़ कर देना है जो लोग ख़ुशी से इस दा'वत को क़ुबूल कर लेंगे वो हमारी इस्लामी बिरादरी के मेम्बर बनकर उन सारे हुक़ूक़ के मुस्तहि़क़ हो जाएँगे जो इस्लाम ने मुसलमानों के लिये मुक़र्रर किये हैं और जो लोग इस दा'वत के मद्दे मुक़ाबिल बनकर लड़ाई ही चाहेंगे उनसे मैं बराबर लड़ता रहूँगा यहाँ तक कि अल्लाह पाक ह़क़ व बात़िल का फ़ैस़ला करे। वैसे जो लोग न मुसलमान हों और न लड़ाई झगड़ा करें उनके लिये इस्लाम का उसूल **ला इक्राह फिद्दीन** का है या'नी दीने इस्लाम की इशाअ़त में किसी पर ज़बरदस्ती जाइज़ नहीं है। ये सबकी मर्ज़ी पर है, आज़ादी के साथ जो चाहे क़ुबूल करे जो न चाहे वो क़ुबूल न करे, इस्लाम ने मज़हब के बारे में किसी भी ज़बरदस्ती को रवा नहीं रखा।

बाब 103 : लड़ाई का मुक़ाम छुपाना (दूसरा मुक़ाम बयान करना) और जुमेरात के दिन सफ़र करना

١٠٣- بَابُ مَنْ أَرَادَ غَزْوَةً فَوَرَّى لِغَيْرِهَا، وَمَنْ أَحَبَّ الْخُرُوجَ يَوْمَ الْخَمِيْسِ

2947. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब

٢٩٤٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ

كَعْبِ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ كَعْبٍ – وَكَانَ قَائِدَ كَعْبٍ مِنْ بَنِيْهِ – قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ حِيْنَ تَخَلَّفَ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، وَلَمْ يَكُنْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُرِيْدُ غَزْوَةً إِلاَّ وَرَّى بِغَيْرِهَا. [راجع: ٢٧٥٧]

(रज़ि.) ने, कअ़ब (रज़ि.) (जब नाबीना हो गये थे) के साथ उनके दूसरे साहबज़ादों में यही अ़ब्दुल्लाह उन्हें लेकर रास्ते में उनके आगे आगे चलते थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) का उसूल ये था कि जब आप (ﷺ) किसी ग़ज़वा का इरादा करते तो (मस्लिहत के लिये) दूसरा मुक़ाम बयान करते (ताकि दुश्मन को ख़बर न हो)। (राजेअ़ : 2757)

तश्रीह : लफ़्ज़ तोरिया के मा'नी ये कि किसी बात को इशारे किनाए से कह देना कि साफ़ तौर से कोई न समझ सके। ऐसा तौरिया जंगी मस़ालेह़ के लिये जाइज़ है। **लअल्लल्हिक्मत फीहि मा रूविय अन क़ौलिही (ﷺ) बूरिक लिउम्मती फी बुकूरिहा यौमल्खमीस व कौनुहू (ﷺ) कान युहिब्बुल्खुरूज यौमल्खमीस ला यस्तल्ज़िमुल्मुवाज़बत अलैहिल्क़ियाम मानिउम्मिन्हु व सयाती बअ़द बाबिन अन्नहू खरज फी बअ़जि अस्फारिही यौमस्सबति षुम्म औरदल्मुसन्निफु त़रफम्मिन हदीषि कअ़ब इब्नि मालिक अत़्तवील व हुव ज़ाहिरुन फीमा तरज्जमुन लहू क़ालल्किर्मानी कअ़ब हुव इब्नि मालिक अल्अन्सारी अहदुष्ष़लाषतुल्लज़ीन खुल्लिफ़ू व स़ार आमा व कान लहू अब्नाउन व कान अ़ब्दुल्लाहि यक़ूदुहू मिम्बैनि साइरि बनीहि.** (हाशिया बुख़ारी) या'नी उसमें हिक्मत ये कि आँह़ज़रत (ﷺ) से मरवी है कि मेरी उम्मत के लिये जुमेरात के रोज़ सुबह़ सफ़र करने में बरकत रखी गई है मगर उससे मुवाबिज़त षाबित नहीं होती क्योंकि कुछ सफ़र आप (ﷺ) ने हफ़्ते को भी शुरू किये हैं। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) यहाँ कअ़ब बिन मालिक की त़वील ह़दीष़ लाए हैं जिससे तर्जुमतुल बाब ज़ाहिर है। कअ़ब बिन मालिक वही अंस़ारी सह़ाबी हैं जो तबूक में पीछे रह गये थे। आप (रज़ि.) के कई लड़के थे जिनमें से अ़ब्दुल्लाह नामी आपका हाथ पकड़ के चला करता था।

٢٩٤٨- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: يَقُوْلُ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ قَلَّمَا يُرِيْدُ غَزْوَةً يَغْزُوْهَا إِلاَّ وَرَّى بِغَيْرِهَا، حَتَّى كَانَتْ غَزْوَةُ تَبُوكَ فَغَزَاهَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِي حَرٍّ شَدِيْدٍ، وَاسْتَقْبَلَ سَفَرًا بَعِيْدًا وَمَفَازًا وَاسْتَقْبَلَ غَزْوَ عَدُوٍّ كَثِيْرٍ، فَجَلَّى لِلْمُسْلِمِيْنَ أَمْرَهُمْ لِيَتَأَهَّبُوا أُهْبَةَ عَدُوِّهِمْ، وَأَخْبَرَهُمْ بِوَجْهِهِ الَّذِيْ يُرِيْدُ)). [راجع: ٢٧٥٧]

2948. और मुझसे अह़मद बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना आप बयान करते थे कि ऐसा कम इत्तिफ़ाक़ होता कि आँह़ज़रत (ﷺ) किसी जिहाद का क़सद करें और वही मक़ाम बयान करके उसको न छुपाएँ। जब आप (ﷺ) ग़ज़्व-ए-तबूक़ को जाने लगे तो चूँकि ये ग़ज़्वा बड़ी सख़्त गर्मी में होना था, लम्बा सफ़र था और जंगलों को तै करना था और मुक़ाबला भी बहुत बड़ी फ़ौज से था, इसलिये आप (ﷺ) ने मुसलमानों से साफ़ साफ़ कह दिया था कि दुश्मन के मुक़ाबले के लिये पूरी तैयारी कर लें चुनाँचे (ग़ज़्वा के लिये) जहाँ आप (ﷺ) को जाना था (या'नी तबूक़) उसका आपने साफ़ ऐलान कर दिया था। (राजेअ़ : 2757)

٢٩٤٩- وَعَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ:

2949. यूनुस से रिवायत है, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने

कहा कि मुझे अ़ब्दुर्रहमान बिन कअ़ब बिन मालिक ने ख़बर दी कि ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) कहा करते थे कि कम ऐसा होता कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी सफ़र में जुमेरात के सिवा और किसी दिन निकलें। (राजेअ़ : 2757)

أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ كَانَ يَقُولُ: لَقَلَّمَا كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَخْرُجُ إِذَا خَرَجَ فِي سَفَرٍ إِلاَّ يَوْمَ الْخَمِيسِ.

[راجع: ٢٧٥٧]

2950. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अ़ब्दुर्रहमान बिन कअ़ब बिन मालिक ने और उन्हें उनके वालिद ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) ग़ज़्व-ए-तबूक़ के लिये जुमेरात के दिन निकले थे। आप (ﷺ) जुमेरात के दिन सफ़र करना पसन्द करते थे। (राजेअ़ : 2757)

٢٩٥٠- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ يَوْمَ الْخَمِيسِ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ، وَكَانَ يُحِبُّ أَنْ يَخْرُجَ يَوْمَ الْخَمِيسِ)). [راجع: ٢٧٥٧]

ग़ज़्वा तबूक़ के मौक़े पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने तौरिया नहीं फ़र्माया बल्कि साफ़-साफ़ लफ़्ज़ों में उस जंग का ऐलान कर दिया था हर लिह़ाज़ से ये मुक़ाबला बहुत ही सख़्त था और मुसलमानों को उसके लिये पूरे-पूरे तौर पर तैयार होना था। मक़्सदे बाब ये कि इमाम ह़ालात के तह़त मुख़्तार है कि वो ह़स्बे मौक़ा तौरिया से काम ले या न ले जैसा मौक़ा मह़ल देखे वैसा ही कर ले।

बाब 104 : ज़ुहर की नमाज़ के बाद सफ़र करना

١٠٤- بَابُ الْخُرُوجِ بَعْدَ الظُّهْرِ

कुछ दफ़ा ज़ुहर के बाद में सफ़र में निकलना आपसे षाबित है। गुज़िश्ता ह़दीष़ में सुबह़ की क़ैद सिर्फ़ इसलिये मज़्कूर हुई कि वो वक़्त ख़ुशी का होता है सुबह़ की ख़ुसूसियत नहीं है।

2951. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना में ज़ुहर चार रकअ़त पढ़ी फिर अ़स्र की नमाज़ ज़ुलहुलैफ़ा में दो रकअ़त पढ़ी और मैंने सुना कि स़ह़ाबा ह़ज्ज और उ़म्रह दोनों का लब्बैक एक साथ पुकार रहे थे। (राजेअ़ : 1089)

٢٩٥١- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِالْمَدِينَةِ الظُّهْرَ أَرْبَعًا، وَالْعَصْرَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ، وَسَمِعْتُهُمْ يَصْرُخُونَ بِهِمَا جَمِيعًا)). [راجع: ١٠٨٩]

आँह़ज़रत (ﷺ) का ये सफ़र ह़ज्ज के लिये था मगर सफ़रे जिहाद को भी इस पर क़यास किया जा सकता है कि बेहतर है ज़ुहर की नमाज़ पढ़कर इत्मीनान से ये सफ़र शुरू किया जाए।

बाब 105 : महीना के आख़िरी दिनों में सफ़र करना

١٠٥- بَابُ الْخُرُوجِ آخِرَ الشَّهْرِ

وَقَالَ كُرَيْبٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((انْطَلَقَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْمَدِيْنَةِ لِخَمْسٍ بَقِيْنَ مِنْ ذِي الْقَعْدَةِ وَقَدِمَ مَكَّةَ لأَرْبَعِ لَيَالٍ خَلَوْنَ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ)).

और कुरैब ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) (हज्जतुल विदाअ़ के लिये) मदीना से उस वक़्त निकले जब ज़ी क़अ़दा के पाँच दिन बाक़ी थे। और चार ज़िल्हिज्ज को मक्का पहुँच गए थे।

या'नी महीना के आख़िरी दिनों में सफ़र करना जाइज़ है कुछ बुरा नहीं जैसे कुछ जाहिल समझते हैं कि चाँद के उरूज में सफ़र करना चाहिये न नुज़ूल में। ह़दीष़े बाब में मज़्कूरा सफ़र का ता'ल्लुक़ हज्ज से है मगर जिहाद के सफ़र को भी इस पर क़यास किया जा सकता है कि ह़स्बे मौक़ा अगर आख़िर माह में सफ़रे जिहाद पर निकलना पड़े तो उसमें कोई क़बाह़त नहीं है।

٢٩٥٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهَا سَمِعَتْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا تَقُولُ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ لِخَمْسِ لَيَالٍ بَقِيْنَ مِنْ ذِي الْقَعْدَةِ وَلاَ نَرَى إِلاَّ الْحَجَّ، فَلَمَّا دَنَوْنَا مِنْ مَكَّةَ أَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ هَدْيٌ إِذَا طَافَ بِالْبَيْتِ وَسَعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ أَنْ يَحِلَّ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَدُخِلَ عَلَيْنَا يَوْمَ النَّحْرِ بِلَحْمِ بَقَرٍ، فَقُلْتُ: مَا هَذَا؟ فَقَالَ: نَحَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ أَزْوَاجِهِ)) قَالَ يَحْيَى فَذَكَرْتُ هَذَا الْحَدِيْثَ لِلْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ فَقَالَ أَتَتْكَ وَاللهِ بِالْحَدِيْثِ عَلَى وَجْهِهِ)). [راجع: ٢٩٤]

2952. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया इमाम मालिक से, उनसे यह़्या बिन सईद ने, उनसे अ़म्रा बिन्ते अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना से (हज्जतुल विदाअ़ के लिये) रसूले करीम (ﷺ) के साथ हम उस वक़्त निकले जब ज़ीक़अ़दा के पाँच दिन बाक़ी थे, हफ़्ता के दिन हमारा मक़्सद हज्ज के सिवा और कुछ भी न था। जब हम मक्का से क़रीब हुए तो रसूले करीम (ﷺ) ने हुक्म फ़र्माया कि जिसके साथ कुर्बानी का जानवर न हो जब वो बैतुल्लाह के त़वाफ़ और स़फ़ा और मरवा की स़ई से फ़ारिग़ हो जाए तो एहराम खोल दे। (फिर हज्ज के लिये बाद में एहराम बाँधे) ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि दसवीं ज़िल्हिज्ज को हमारे यहाँ गाय का गोश्त आया, मैंने पूछा की गोश्त क्या है? तो बताया गया कि रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी बीवियों की त़रफ़ से जो गाय कुर्बानी की है ये उसी का गोश्त है। यह़्या ने बयान किया कि मैंने उसके बाद इस ह़दीष़ का ज़िक्र क़ासिम बिन मुहम्मद से किया तो उन्हों ने बताया कि क़सम अल्लाह की! अ़म्रा बिन्ते अ़ब्दुर्रहमान ने तुमसे ये ह़दीष़ ठीक ठीक बयान की है। (राजेअ़ : 294)

यहाँ भी आँह़ज़रत (ﷺ) के सफ़रे ह़ज्जे मुबारक का ज़िक्र है कि आप (ﷺ) आख़िर माह में उसके लिये निकले और ये मौक़ा भी ऐसा ही था। पस जिहाद के लिये भी इमाम जैसा मौक़ा देखे सफ़र शुरू करे। अगर महीना के आख़िरी दिनों में निकलने का मौक़ा मिल सके तो ये और बेहतर होगा कि सुन्नते नबवी पर अ़मल हो सकेगा। बहरह़ाल ये इमाम की स़वाबदीद पर है।

रिवायत में ह़ज़रत इमाम मालिक (रह.) का नाम आया है, जिनका नाम मालिक बिन अनस बिन मालिक बिन आ़मिर अस्बह़ी है। अबू अ़ब्दुल्लाह कुन्नियत है, इमाम दारुल हुज्रह व अमीरुल मोमिनीन फ़िल् ह़दीष़ के लक़ब से मशहूर हैं इनके दादा आ़मिर अस्बह़ी स़ह़ाबी हैं जो बद्र के सिवा तमाम ग़ज़्वात में शरीक हुए। इमाम स़ाह़ब 93 हिजरी में पैदा हुए। तब्अ़े ताबेईन में से हैं।

अगरचे मदीना मौलिद व मस्कन था मगर किसी स़ह़ाबी के दीदार से मुशर्रफ़ नहीं हुए। ये शर्फ़ क्या कम है कि इमाम

दारूल हुज्रा थे। इसमे मुहतरम नबी (ﷺ) के मुदर्रिस व मुफ़्ती नाफ़ेअ रबीआ राई, इमाम जा'फ़र सादिक़ और अबू हाज़िम वग़ैरह बहुत शुयूख़ से इल्म हासिल किया जिनकी ता'दाद नौ सौ बयान की गई है। नाफ़ेअ ने वफ़ात पाई तो इमाम साहब उनके जानशीन हुए, उस वक़्त आपकी सत्रह साल की उम्र थी। इमाम साहब की जाए सुकूनत (निवास स्थान) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का मकान और नशिस्तगाह हज़रत उमर (रज़ि.) का मकान था। इमाम साहब की मज्लिसे दर्स निहायत आरास्ता व पैरास्ता होती थी। सब लोग अदब के साथ बैठते थे, इमाम साहब गुस्ल करके ख़ुश्बू लगाकर उम्दा लिबास पहनकर निहायत वक़ार व मतानत से बैठते थे, ख़लीफ़ा हारून रशीद ख़ुद हाज़िरे दर्स होता था, आलमे शर्क़ से ग़र्ब तक इमाम साहब के शोहरत की आवाज़ों से गूंज उठा। शैख़ अब्दुर्रहमान बिन महदी का क़ौल है कि रूए ज़मीन पर मालिक से बढ़कर कोई हदीष़े नबवी का अमानतदार नहीं। **इमाम साहब ने एक लाख हदीष़ें लिखी थीं उनका इंतिख़ाब मौता है (मुक़द्दमा शरह मौता)। इमाम साहब सख़ी व आबिद व मुरताज़ थे। अहले इल्म की बहुत मदद करते थे, इमाम शाफ़िई (रह.) को ग्यारह हज़ार देते थे, इमाम साहब के अस्तबल में बहुत से घोड़े थे मगर कभी घोड़े पर सवार होकर मदीना में न निकलते थे। फ़र्माया करते थे कि मुझे शर्म आती है कि जो ज़मीन रसूले करीम (ﷺ) के क़दमे मुबारक से मुशर्रफ़ हुई है उसको मैं जानवरों के सिर्मो से रौंदू।** इमाम साहब के तलामिज़ा (शागिर्दों) की ता'दाद तेरह सौ है, उनमें बड़े बड़े अइम्मा और मुहद्दिष़ीन और उम्रा शामिल हैं। मालिकी मज़हब की पैरवी करने वाले अरब और शिमाली (दक्षिणी) अफ़्रीक़ा में हैं। इमाम मालिक की बहुत सी तसानीफ़ (किताबें) हैं उनमें ज़्यादा मशहूर मौता है, किताबुल मसाइल हैं। ख़लीफ़ा अबुल अब्बास सफ़्फ़ाह के सामने बहुत से मुंतशिर औराक़ पड़े थे जिनके बारे में ख़लीफ़ा ने कहा कि ये इमाम मालिक के सत्तर हज़ार मसाइल का मज्मूआ है। (तज़ईनुल मालिक) जिस हदीष़ का सिलसिल-ए-रिवायत मालिक अन नाफ़ेअ अन इब्ने उमर होगा, उसको सिलसिलतुज़्ज़हब कहते हैं। मदीना के गवर्नर जा'फ़र ने इमाम साहब को हुक्म दिया था कि आइन्दा तलाक़े (जबरी) का फ़त्वा न दिया करें, इमाम साहब को कित्माने हक़ गवारा न हुआ। हुक्म की ता'मील न की, जा'फ़र ने ग़ज़बनाक होकर सत्तर कोड़े लगवाए तमाम पीठ ख़ून आलूद हो गई, दोनों हाथ मूँढ़ों से उतर गये। ख़लीफ़ा मंसूर जब मदीना आया तो इमाम साहब से उज़्र किया और कहा कि मुझको आपकी तअज़ीर का इल्म नहीं। मैं जा'फ़र को सज़ा दूँगा। इमाम साहब ने फ़र्माया मैंने मुआफ़ किया, आपने 179 हिजरी में वफ़ात पाई, इब्ने मुबारक व यह्या क़त्तान उनके शागिर्द थे। इमाम साहब अपने इस शे'र को अक्ष़र पढ़ा करते थे जिसमें उन्होंने एक हदीष़ के मज़्मून को लिया है।

ख़ैरुल्उमूरिद्दीनि मा कान सुन्नतुहू   व शर्रूल्उमूरि अल्मुहदषातुल्बदाइउ

ख़ात्मा पारा नम्बर ग्यारह

अर्सा-ए-दराज़ (काफ़ी अर्से) की मुसलसल जद्दोजहद के बाद महज़ अल्लाह जुल जलालि वल् इकराम की तौफ़ीक़ व इआनत से आज बुख़ारी शरीफ़ के पारा 11 का तर्जुमा और मुख़्तसर तशरीहात की तस्वीद से फ़राग़त हासिल हुई। काम जिस क़दर अहम और मरहला जितना कठिन था वो अहले फ़न ही जानते हैं, ख़ास तौर पर ये पारा जिसका किताबुल वसाया के बाद सारा हिस्सा किताबुल जिहाद पर मुश्तमिल है जाहिर है कि लफ़्ज़े जिहाद पर कुछ मुतअस्सिब ग़ैर-मुस्लिम हज़रात ने ख़्वाह मख़्वाह बेजा मुहमल ए'तिराज़ात किये हैं जिनकी मुदाफ़िअत भी ज़रूरी थी, इसलिये इस किताब में हत्तल इम्कान इस अम्र पर ख़ास तवज्जह दी गई है जैसा कि क़ारेईने किराम ख़ुद अंदाज़ा लगा सकेंगे हर मुम्किन कोशिश के बावजूद ये भी ऐन मुम्किन है कि उलमा-ए-फ़न को तर्जुमा और तशरीहात में कुछ ख़ामियाँ नज़र आएं, ऐसे मुअज़्ज़ज़ हज़रात से मुअद्देबाना इल्तिमास करूँगा कि जहाँ भी वाक़ई कुछ ख़ामी नज़र आए मुत्तलअ करके शुक्रिया का मौक़ा दें।

मैं इस मुबारक मुक़द्दस किताब का एक अदनातरीन तालिबे इल्म हूँ इसकी गहराइयों तक कुल्लियतन पहुँचना मुझ जैसे ख़ाम-तब्अ, कम इल्म इंसान का काम नहीं है। इस हक़ीक़त के बावजूद महज़ जज़्ब-ए-ख़िदमते नबवी के तहत जो भी मुझसे हो सका है वो आपके सामने है। इख़्तिसार व ईजार भी ज़रूरी था कि आजकल शाएक़ीने किराम (शौक़ रखने वाले लोग) अगर इस क़दर भी मुतालआ करके हदीष़े नबवी से अपने ईमान रोशन कर सकें तो ये भी बहुत कुछ है वरना तवालत

का मैदान बेहद वसीअ है कि अल्फ़ाज़ हदीषे नबवी व सनद व रिजाल व तराजिम पर तफ़सीलन क़लम उठाया जाता तो हर पारा एक मुस्तक़िल दफ़्तर बन जाता जिसका तब्अ (प्रकाशन) करना, शाऐक़ीने किराम का हासिल करना, फिर मुतालआ करना बहुत ही भारी हो जाता। अगरचे फ़न्नी हैषियत से अकाबिरे फ़न शायद इस ख़ामी को महसूस करें मगर बाअदब अर्ज़ करूँगा कि ऐसे ही मौक़ों के लिये **ख़ैरुल कलाम मा क़ल्ल व दल्ल** कहा गया है।

आख़िर में तहेदिल से बारगाहे अहदियत में दस्ते दुआ दराज़ करता हूँ कि ऐ परवरदिगार! सारी कायनात के पालनहार नाचीज़ की इस हक़ीर ख़िदमते इस्लाम को क़ुबूल फ़र्माकर क़ुबूले आम अता कर दे और न सिर्फ़ मेरे लिये बल्कि मेरे तमाम मुआविनीने किराम के लिये मेरे वालिदैन मरहूमीन के लिये, मेरी आल-औलाद के लिये, असातिज़ा-ए-इज़ाम के लिये और तमाम मुतालआ करने वालों के लिये इस किताब को दोनों जहान की तरक़्क़ी का ज़रिया बना दे और इससे ईमान में तरक़्क़ी अता कर और अपनी और अपने हबीब (ﷺ) की मुहब्बत से हम सबके दिलों को भरपूर करके ख़ातिमा बिल ख़ैर नसीब फ़र्मा आमीन!

या अल्लाह! जिस तरह इस अहम ख़िदमत को तूने इस मंज़िल तक पहुँचाया है उसी तरह बल्कि उससे भी ज़्यादा अहसन तरीक़े पर बाक़ी मनाज़िल को तै करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माइयो।

रब्बिश्रह ली सदरी व यस्सिर ली अम्री वग्फ़िरली ख़ताई व जहली (आमीन) व सल्लल्लाहु अला ख़ैरिल्ख़लाइक़ि सय्यिदुल्अम्बियाइ मुहम्मदिनिल्मुस्तफ़ा व आलिहिल्मुज्तबा व अस्हाबिही मसाबिहिल्हुदा इला यौमिद्दीन बिरहमतिक या अर्हमर्राहिमीन

ख़ादिम हदीषे नबवी

मुहम्मद दाऊद राज़ बिन अब्दुल्लाह सलफ़ी देहलवी

मुक़ीम मस्जिद अहले हदीष नम्बर 4121

अजमेरी गेट देहली-6 भारत

अव्वल मुहर्रमुल हराम 1391 हिजरी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बारहवां पारा

बाब 106 : रमज़ान के महीने में सफ़र करना

١٠٦ – بَابُ الْخُرُوجِ فِي رَمَضَانَ

2953. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा मुझसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) (फ़तहे मक्का के लिये मदीना से) रमज़ान में निकले और रोज़े से थे। जब आप (ﷺ) मुक़ामे-कदीद पर पहुँचे तो आप (ﷺ) ने इफ़्तार किया।

सुफ़यान ने कहा कि ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें उबैदुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फिर यही हदीष़ बयान की। (राजेअ़ : 1944)

٢٩٥٣ – حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فِي رَمَضَانَ فَصَامَ حَتَّى بَلَغَ الْكَدِيدَ أَفْطَرَ)).
قَالَ سُفْيَانُ: قَالَ الزُّهْرِيُّ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ. وَسَاقَ الْحَدِيثَ.
[راجع: ١٩٤٤]

तश्रीह : इस आख़िरी सनद के बयान करने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि उबैदुल्लाह से सिमाअ़ की उसमें ज़ुह्री ने तस़रीह़ की है और यही पहली रिवायत में उसकी स़राह़त नहीं है, कुछ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत ज़ाइद है। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) के आख़िरी फ़ेअ़ल को लिया जाए या'नी आख़िर काम आप (ﷺ) का ये है कि आप (ﷺ) ने कदीद में पहुँचकर इफ़्तार कर लिया।

तो मा'लूम हुआ कि अगर रमज़ान में सफ़र पेश आये तो इफ़्तार करना दुरुस्त है और ये मसला आयते क़ुर्आनी, **व मन कान मरीज़न औ अ़ला सफ़रिन फइद्दतुम्मिन अय्यामिन उख़र** (अल बक़र : 185) से ष़ाबित है। यहाँ इस ह़दीष़ को लाने से ह़ज़रत मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि जिस शख़्स ने रमज़ान में सफ़र मकरूह बताया, उसका क़ौल सह़ीह़ नहीं है।

आज 26 मुहर्रम 1391 हिजरी को दानापुर पटना में मुख़्लिस़ व मुह़िब्बी ह़ज़रत ह़ाजी अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार टेलर के दौलतकदा पर नज़रे ष़ानी शुरू कर रहा हूँ। अल्लाह पाक मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे और मेरे मुह़तरम भाई को दोनों जहाँ की बरकतों से मज़ीद दर मज़ीद नवाज़े और उनके ह़सनाते जारिया को क़ुबूल करे आमीन। 18 मार्च 1971 ईस्वी

बाब 107 : सफ़र शुरू करते वक़्त मुसाफ़िर को रुख़्सत करना

١٠٧ – بَابُ التَّوْدِيعِ

2954. और अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने कहा कि मुझको अ़म्र बिन हारिष़ ने ख़बर दी, उन्हें बुकैर ने, उन्हें सुलैमान बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें एक फ़ौज में भेजा और हिदायत की कि अगर फ़लाँ फ़लाँ दो क़ुरैशी (हिबा बिन अस्वद और नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दे अ़मर) जिनका आपने नाम लिया तुमको मिल जाएँ तो उन्हें आग में जला देना। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि जब हम आप (ﷺ) की ख़िदमत में आप (ﷺ) से रुख़्सत होने की इजाज़त के लिये ह़ाज़िर हुए, उस वक़्त आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें पहले हिदायत की थी कि फ़लाँ फ़लाँ क़ुरैशी अगर तुम्हें मिलें तो उन्हें आग में जला देना। लेकिन ये ह़क़ीक़त है कि आग की सज़ा देना अल्लाह पाक के सिवा किसी के लिये सज़ावार नहीं है। इसलिये अगर वो तुम्हें मिल जाएँ तो उन्हें क़त्ल कर देना (आग में न जलाना)। (दीगर मक़ाम : 3016)

٢٩٥٤– وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي عَمْرٌو عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي بَعْثٍ وَقَالَ لَنَا: ((إِنْ لَقِيْتُمْ فُلاَنًا وَفُلاَنًا – لِرَجُلَيْنِ مِنْ قُرَيْشٍ سَمَّاهُمَا – فَحَرِّقُوهُمَا بِالنَّارِ)). قَالَ: ثُمَّ أَتَيْنَاهُ نُوَدِّعُهُ حِيْنَ أَرَدْنَا الْخُرُوجَ فَقَالَ: ((إِنِّي كُنْتُ أَمَرْتُكُمْ أَنْ تُحَرِّقُوا فُلاَنًا وَفُلاَنًا بِالنَّارِ، وَإِنَّ النَّارَ لاَ يُعَذِّبُ بِهَا إِلاَّ اللهُ، فَإِنْ أَخَذْتُمُوهُمَا فَاقْتُلُوهُمَا)).

[طرفه في : ٣٠١٦].

तश्रीह : इन दोनों मरदूदों ने आँहज़रत (ﷺ) की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) को रास्ते में बहालते हमल ऐसा बरछा मारा था कि उनका हमल साक़ित हो गया। इसलिये आप (ﷺ) ने पहले उनको मिलने पर आग में जलाने का हुक्म दिया, फिर बाद में क़त्ल का हुक्म दिया। मा'लूम हुआ कि आग में जलाना हराम है, पहले आप (ﷺ) ने अपनी राय से हुक्म दिया था, फिर वह्ये इलाही से इसको मन्सूख़ कर दिया। क़स्तलानी (रह.) ने कहा पिस्सू और खटमल वग़ैरह का भी आग में जलाना मकरूह है और कुछ डाकुओं के लिये जो आप (ﷺ) ने आँखों में गर्म सिलाइयाँ डालने का हुक्म दिया था वो क़िसासन था क्योंकि उन ज़ालिमों ने अस्हाबे रसूल (ﷺ) के साथ यही हरकत की थी। इर्शादे बारी तआ़ला है, **या अय्युहल्लज़ीन आमनू कुतिब अ़लैकुमुल्क़िसासु फिल्क़त्ला अल्हुर्रू बिल्हुर्रि अल्अ़ब्दु बिल्अ़ब्दि वल्उन्षा बिल्उन्षा** (अल् बक़रः) या'नी क़िसास में आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत क़त्ल की जाएगी बल्कि आँख के बदले आँख और दांत के बदले दांत तोड़े जाएँगे। इसी क़ानूने इलाही के तहत उन डाकुओं को ये संगीन सज़ा दी गई थी।

बाब 108 : इमाम (बादशाह या हाकिम) की इताअ़त करना

١٠٨– بَابُ السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ لِلإِمَامِ

2955. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन उ़मरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से। (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद बिन सबाह ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ज़करिया ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (ख़लीफ़-ए-वक़्त के अहकाम) सुनना और उन्हें बजा लाना (हर

٢٩٥٥– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ عَنْ إِسْمَاعِيْلَ بْنِ زَكَرِيَّا عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ حَقٌّ، مَا لَمْ يُؤْمَرْ بِالْمَعْصِيَةِ، فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلاَ سَمْعَ

मुसलमान के लिये) वाजिब है, जब तक कि गुनाह का हुक्म न दिया जाए। अगर गुनाह का हुक्म दिया जाए तो फिर न उसे सुनना चाहिये और न उस पर अ़मल करना चाहिये। (दीगर मक़ाम : 7144)

وَلاَ طَاعَةَ)).[طرفه في : ٧١٤٤].

क्योंकि दूसरी ह़दीष़ में है, **ला ताअ़त लिमख़्लूक़िन फ़ी मअ़सियतिल्ख़ालिक़** बड़ा बादशाह ह़क़ तआ़ला है, उसके हुक्म के ख़िलाफ़ में किसी का हुक्म न सुनना चाहिये। अगर कोई बादशाह ख़िलाफ़े-शरअ़ हुक्म दे तो उसको समझाना चाहिये। वरना सब लोग मिलकर ऐसे बादशाह को मअ़ज़ूल (अपदस्थ) कर दें। इस ह़दीष़ से उन लोगों का भी रद्द हुआ जो आयाते क़ुर्आनी व ह़दीष़े नबविया के होते हुए अपने इमामों के क़ौल पर जमे रहते हैं और आयात व अह़ादीष़ की ग़लत तावीलात करके उनको टाल देते हैं। जिनकी बहुत सी मिष़ालें अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह.) की किताब ईलामुल मूक़िईन में देखी जा सकती हैं। बक़ौल हुज्जतुल हिन्द शाह वलीउल्लाह (रह.) ऐसे लोग क्या जवाब देंगे जिस दिन अल्लाह की अ़दालते आ़लिया में खड़े होना होगा। क़ुर्आन मजीद में जहाँ इताअ़ते वालिदैन का हुक्म है वहाँ साफ़ मौजूद है कि अगर माँ-बाप शिर्क करने का हुक्म दें तो उनकी इताअ़त हर्गिज़ न की जाए। इस ह़दीष़ से तक़्लीदे जामिद की जड़ कट जाती है। कहने वाले ने सच कहा है :-

फहरब अनित्तक़्लीदि फहुव ज़लालतुन, इन्नल्मुक़ल्लिद फी सबीलिल्हालिक

या'नी तक़्लीदे जामिद से दूर रहो ये बर्बादी का रास्ता है। ये नुक़्ता भी याद रखना ज़रूरी है। मज़ीद तफ़्सील के लिये मेअ़यारुल ह़क़ ह़ज़रत शैख़ुल कुल मौलाना सय्यद नज़ीर हुसैन साहब (रह.) मुह़द्दिष़ देहलवी का मुतालआ़ किया जाए।

बाब 109 : इमाम (बादशाहे इस्लाम) के साथ होकर लड़ना और उसके ज़ेरे साया अपना (दुश्मन के हमलों से) बचाव करना

١٠٩ - بَابُ يُقَاتَلُ مِنْ وَرَاءِ الإِمَامِ، وَيُتَّقَى بِهِ

2956. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्माते थे कि हम लोग गो दुनिया में सबसे पीछे आए लेकिन (आख़िरत में) जन्नत में सबसे आगे होंगे। (राजेअ़ : 238)

٢٩٥٦ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ أَنَّ الأَعْرَجَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ)). [راجع: ٢٣٨]

2957. और इसी सनद के साथ रिवायत है कि जिसने मेरी इताअ़त की उसने अल्लाह की इताअ़त की और जिसने मेरी नाफ़र्मानी की उसने अल्लाह की नाफ़र्मानी की और जिसने अमीर की इताअ़त की उसने मेरी इताअ़त की और जिसने अमीर की नाफ़र्मानी की, उसने मेरी नाफ़र्मानी की। इमाम की मिष़ाल ढाल जैसी है कि उसके पीछे रहकर उसकी आड़ में (या'नी उसके साथ होकर) जंग की जाती है और उसी के ज़रिये (दुश्मन के हमले से) बचा जाता है, पस अगर इमाम तुम्हें अल्लाह से डरते रहने का हुक्म दे और इंसाफ़ करे उसका ष़वाब उसे मिलेगा, लेकिन अगर बेइंसाफ़ी करेगा तो उसका वबाल उस पर होगा। (दीगर मक़ाम : 7137)

٢٩٥٧ - وَبِهَذَا الإِسْنَادِ: ((مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللهَ. وَمَنْ يُطِعِ الأَمِيْرَ فَقَدْ أَطَاعَنِي، وَمَنْ يَعْصِ الأَمِيْرَ فَقَدْ عَصَانِي. وَإِنَّمَا الإِمَامُ جُنَّةٌ يُقَاتَلُ مِنْ وَرَائِهِ، وَيُتَّقَى بِهِ. فَإِنْ أَمَرَ بِتَقْوَى اللهِ وَعَدَلَ فَإِنَّ لَهُ بِذَلِكَ أَجْرًا، وَإِنْ قَالَ بِغَيْرِهِ فَإِنَّ عَلَيْهِ مِنْهُ)). [طرفه في : ٧١٣٧].

तश्रीह : या'नी इमाम की ज़ात लोगों का बचाव होती है। कोई किसी पर ज़ुल्म करने नहीं पाता। दुश्मनों के हमले से उसी की वजह से ह़िफ़ाज़त होती है क्योंकि वो हर वक़्त मुदाफ़िअ़त (रक्षा) के लिये तैयार रहता है। इन अह़ादीष़ से इमामे वक़्त की शख़्सियत और उसकी त़ाक़त पर रोशनी पड़ती है और सियासते इस्लामी और हुकूमते शरई का मुक़ाम ज़ाहिर होता है जिसके न होने की वजह से आज हर जगह इस्लाम ग़रीब है और मुसलमान गुलामाना ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर हैं। इन अह़ादीष़ पर उन ह़ज़रात को भी ग़ौर करना चाहिये जो अपने किसी मौलवी स़ाह़ब को इमामे वक़्त का नाम देकर उसकी बेअ़त के लिये लोगों को दा'वत देते हैं और ह़ालत ये कि मौलवी स़ाह़ब को हुकूमत के मा'मूली चपरासी जितनी त़ाक़त व सियासत ह़ासिल नहीं है।

बाब 110 : लड़ाई से न भागने पर और कुछ ने कहा मर जाने पर बेअ़त करना

क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह फ़तह में फ़र्माया, बेशक अल्लाह मुसलमानों से राज़ी हो चुका है जब वो पेड़ (शजरे रिज़्वान) के नीचे आपके हाथ पर बेअ़त कर रहे थे। (अल फ़तह : 18)

١١٠ - بَابُ الْبَيْعَةِ فِي الْحَرْبِ أَنْ لاَ يَفِرُّوا، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: عَلَى الْمَوتِ
لِقَولِ اللهِ تَعَالَى: ﴿لَقَدْ رَضِيَ اللهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ﴾ [الفتح: ١٨].

तश्रीह : लफ़्ज़े बेअ़त बाआ़ यबीउ़ का मस़दर है, जिसके मा'नी बेच डालने के है। एक मुसलमान, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के हाथ पर जन्नत के बदले अपने आपको बेच डालने का इक़रार करता है, इस इक़रार का नाम बेअ़त है। अ़हदे नबवी में ये बेअ़त इस्लाम के लिये और जिहाद के लिये की जाती थी। अ़हदे ख़िलाफ़त में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की इत़ाअ़त फ़र्मांबरदारी करने के लिये बेअ़त होती थी। इस्लाम लाने के लिये किसी बुज़ुर्ग के हाथ पर बेअ़त करना ये अब भी जारी है।

2958. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि (सुलह़ हुदैबिया के बाद) जब हम दूसरे साल फिर आए, तो हममें से (जिन्होंने सुलह़ हुदैबिया के मौक़े पर आँह़ज़रत ﷺ से बेअ़त की थी) दो शख़्स़ भी उस पेड़ की निशानदेही पर मुत्तफ़िक़ नहीं हो सके जिसके नीचे हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी और ये सिर्फ़ अल्लाह की रहमत थी। जुवैरिया ने कहा, मैंने नाफ़ेअ़ से पूछा, आँह़ज़रत (ﷺ) ने स़ह़ाबा से किस बात पर बेअ़त की थी, क्या मौत पर ली थी? फ़र्माया कि नहीं, बल्कि स़ब्र व इस्तिक़ामत पर बेअ़त ली थी।

٢٩٥٨ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ قَالَ قَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((رَجَعْنَا مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ، فَمَا اجْتَمَعَ مِنَّا اثْنَانِ عَلَى الشَّجَرَةِ الَّتِي بَايَعْنَا تَحْتَهَا، كَانَتْ رَحْمَةً مِنَ اللهِ. فَسَأَلْتُ نَافِعًا: عَلَى أَيِّ شَيْءٍ بَايَعَهُمْ، عَلَى الْمَوتِ؟ قَالَ: لاَ، بَلْ بَايَعَهُمْ عَلَى الصَّبْرِ)).

तश्रीह : सुलहे हुदैबिया से पहले मक्का से जब ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) के क़त्ल की अफ़वाह आई, तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस नाह़क़ ख़ून का बदला लेने के लिये तमाम स़ह़ाबा (रज़ि.) से एक पेड़ के नीचे बैठकर बेअ़त ली थी कि इस नाह़क़ ख़ून के बदले के लिये आख़िरी दम तक कुफ़्फ़ार से लड़ेंगे। इस बेअ़त पर अल्लाह तआ़ला ने अपनी रज़ा का इज़्हार क़ुर्आन में फ़र्माया था और ये इस बेअ़त में शरीक होने वाले तमाम स़ह़ाबा (रज़ि.) के लिये फ़ख़्र और दीन-दुनिया का सबसे बड़ा ऐज़ाज़ हो सकता था। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) कहते हैं कि फिर बाद में जब हम सुलहे हुदैबिया के साल उ़मरह की क़ज़ा करने आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ गये तो हम उस जगह की निशानदिही न कर सके जहाँ बैठकर आप (ﷺ) ने हमसे अ़हद लिया था। फिर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) कहते हैं कि ये इस्लाम की तारीख़ का एक अ़ज़ीमुश्शान वाक़िया था और ये

ज़ाहिर है कि उस जगह पर अल्लाह तआला की रहमतों का नुज़ूल हुआ जहाँ बैठकर आँहज़रत (ﷺ) ने अपने तमाम सहाबा (रज़ि.) से अल्लाह के दीन के लिये इतनी अहम बेअ़त ली थी। इसलिये मुम्किन था कि अगर वो जगह हमें मा'लूम होती तो उम्मत के कुछ लोग उसकी वजह से फ़ित्ने (आज़माइश) में पड़ जाते और मुम्किन था कि जाहिल और ख़ुशअ़क़ीदा क़िस्म के मुसलमान उसकी पूजापाठ शुरू कर देते। इसलिये ये भी अल्लाह की बहुत बड़ी रहमत थी कि उस जगह के आषार व निशानात हमारे ज़हनों से भुला दिये और उम्मत के एक तब्क़े को अल्लाह ने शिर्क में मुब्तला होने से बचा लिया। शिर्क के अकषर मराकिज़ (केन्द्रों) का आग़ाज़ ऐसे ही तवह्हुमात की बिना (वहमों के आधार) पर शुरू हुआ करते हैं। शुरू में लोग कुछ यादगारें बनाते हैं, बाद में वहाँ पूजा पाठ शुरू हो जाती है।

2959. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन यह्या ने, उनसे अ़ब्बाद बिन तमीम ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि हर्रह की लड़ाई के ज़माने में एक साहब उनके पास आए और कहा कि अ़ब्दुल्लाह बिन हंज़ला लोगों से (यज़ीद के ख़िलाफ़) मौत पर बेअ़त ले रहे हैं। तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद, मैं मौत पर किसी से बेअ़त नहीं करूँगा। (दीगर मक़ाम : 4167)

٢٩٥٩– حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ عَبَّادِ بْنِ تَمِيْمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا كَانَ زَمَنُ الْحَرَّةِ أَتَاهُ آتٍ فَقَالَ لَهُ: إِنَّ ابْنَ حَنْظَلَةَ يُبَايِعُ النَّاسَ عَلَى الْمَوْتِ. فَقَالَ: لاَ أُبَايِعُ عَلَى هَذَا أَحَدًا بَعْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ)).

[طرفه في : ٤١٦٧].

तशरीह : हर्रह की लड़ाई की तफ़्सील ये कि 63 हिजरी में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हंज़ला और कई मदीना वाले यज़ीद को देखने गये। जबकि वो लोगों से अपनी ख़िलाफ़त की बेअ़त ले रहा था। मदीना के इस वफ़द (प्रतिनिधि मण्डल) ने जाइज़ा लिया तो यज़ीद को ख़िलाफ़त का नाअहल (अयोग्य) पाया और उसकी हरकाते नाशाइस्ता से बेज़ार होकर वापस मदीना लौटे और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के हाथ पर बेअ़ते ख़िलाफ़त कर ली। यज़ीद को जब ख़बर मिली तो उसने मुस्लिम बिन उ़क़्बा को सरदार बनाकर एक बड़ा लश्कर मदीना रवाना कर दिया। जिसने अहले मदीना पर बहुत से ज़ुल्म ढाए, सैंकड़ों हज़ारों सहाबा व ताबेईन और अवाम व ख़्वास, मर्दों और औरतों और बच्चों तक को क़त्ल किया। ये हादषा हर्रह नामी एक मैदान, जो मदीना से जुड़ा हुआ है, वहाँ हुआ, इसीलिये उसकी तरफ़ मन्सूब हुआ। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद का मतलब ये था कि हम तो ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) के दस्ते हक़परस्त पर मौत की बेअ़त कर चुके हैं। अब दोबारा किसी और के हाथ पर उसकी तजदीद की ज़रूरत नहीं है। मा'लूम हुआ कि मौत पर भी बेअ़त की जा सकती है जिससे इस्तिक़ामत और सब्र मुराद है।

2960. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया। कहा हमसे यज़ीद बिन अबी उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, और उनसे सलमा बिन अल अक्वा ने बयान किया कि (हुदैबिया के मौक़े पर) मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की। फिर एक पेड़ के साये में आकर खड़ा हो गया। जब लोगों का हुजूम कम हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, इब्ने अल अक्वा! क्या बेअ़त नहीं करोगे? उन्होंने कहा कि मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं तो बेअ़त कर चुका हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया , दोबारा और भी! चुनाँचे मैंने दोबारा बेअ़त की (यज़ीद बिन अबी उ़बैदुल्लाह कहते हैं कि) मैंने सलमा

٢٩٦٠– حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَايَعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ثُمَّ عَدَلْتُ إِلَى ظِلِّ الشَّجَرَةِ، فَلَمَّا خَفَّ النَّاسُ قَالَ: ((يَا ابْنَ الأَكْوَعِ أَلاَ تُبَايِعُ؟)) قَالَ: قُلْتُ: قَدْ بَايَعْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((وَأَيْضًا)). فَبَايَعْتُهُ الثَّانِيَةَ. فَقُلْتُ لَهُ: يَا

बिन अल अक्वा (रज़ि.) से पूछा, अबू मुस्लिम उस दिन आप हज़रात ने किस बात बेअ़त की थी? कहा कि मौत पर। (दीगर मक़ाम : 4169, 7206, 7208)

أَبَا مُسْلِمٍ، عَلَى أَيِّ شَيْءٍ، كُنْتُمْ تُبَايِعُونَ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: عَلَى الْمَوْتِ)).
[أطرافه في: ٤١٦٩، ٧٢٠٦، ٧٢٠٨].

यहाँ भी हुदैबिया मे बेअ़ते रिज़्वान मुराद है जो एक पेड़ के नीचे ली गई थी। सूरह फ़तह में अल्लाह तआ़ला ने उन तमाम मुजाहिदीन के लिये अपनी रज़ा का ऐलान फ़र्माया है। रज़ियल्लाहु अन्हुम व रिज़्वानुहू। आयते शरीफ़ा, **लक़द रज़ियल्लाहु अनिल मूमिनीन इज़ युबायिऊनक तहतश्शजरति** (फ़तह : 18) में इसी का बयान है।

2961. हमसे हफ़्स बिन उ़मर ने बयान किया। कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया, और उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना। आप बयान करते थे कि अंसार ख़ंदक़ खोदते हुए (ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर) कहते थे।

हम वो लोग हैं जिन्होंने मुहम्मद (ﷺ) से जिहाद पर बेअ़त की है हमेशा के लिये, जब तक हमारे जिस्म में जान है।

आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर जवाब में यूँ फ़र्माया,

ऐ अल्लाह! ज़िन्दगी तो बस आख़िरत ही की ज़िन्दगी है पस तू (आख़िरत में) अंसार व मुहाजिरीन का इकराम फ़र्माना।

(राजेअ़ : 2834)

٢٩٦١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: كَانَتِ الأَنْصَارُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ تَقُولُ:
نَحْنُ الَّذِيْنَ بَايَعُوا مُحَمَّدَا
عَلَى الْجِهَادِ مَا حَيِيْنَا أَبَدَا
فَأَجَابَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ:
((اللَّهُمَّ لاَعَيْشَ إِلاَّعَيْشُ الآخِرَةْ
فَأَكْرِمِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةْ))
[راجع: ٢٨٣٤]

तशरीह : ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के बारे में सूरह अहज़ाब नाज़िल हुई जिसमें कुफ़्फ़ारे मक्का, अ़रब के सारे धर्मों के पैरोकारों की एक बड़ी जमीअ़त अपने साथ लेकर मदीना पर हमलावर हुए थे। सर्दी मदीना में शबाब पर थी और मुसलमान हर तरह से तंगदस्त थे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) से मश्वरे के बाद शहर के अंदर रहकर ही मुदाफ़िअ़त (सुरक्षा) का फ़ैसला सादिर फ़र्माया। शहर की हिफ़ाज़त के लिये चारों ओर एक अ़ज़ीम ख़ंदक़ खोदकर उसे पानी से भर दिया गया। ये तदबीर बड़ी कारगर हुई और कुफ़्फ़ार को अंदर दाख़िल होने का मौक़ा न मिल सका। आख़िर एक दिन सख़्त आँधी से डरकर ये लोग मैदान छोड़ गये। दीगर तफ़्सीलात आगे आएँगी।

2962,63. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल से सुना, उन्होंने आ़सिम से, उन्होंने अबू उ़स्मान नहदी से, और उनसे मजाशेअ़ बिन मसऊ़द सुलमी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अपने भाई के साथ (फ़तहे मक्का के बाद) आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अ़र्ज़ किया कि हमसे हिजरत पर बेअ़त ले लीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हिजरत तो (मक्का के फ़तह होने के बाद, वहाँ से) हिजरत करके आने वालों पर ख़त्म हो गई। मैंने अ़र्ज़ किया, फिर आप हमसे किस बात पर बेअ़त लेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि इस्लाम और जिहाद पर।

٢٩٦٢، ٢٩٦٣- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ أَنَّهُ سَمِعَ مُحَمَّدَ بْنَ فُضَيْلٍ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ مُجَاشِعٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَنَا وَأَخِي فَقُلْتُ: بَايِعْنَا عَلَى الْهِجْرَةِ، فَقَالَ: ((مَضَتِ الْهِجْرَةُ لأَهْلِهَا)). فَقُلْتُ : عَلاَمَ تُبَايِعُنَا؟ ((قَالَ: عَلَى الإِسْلاَمِ وَالْجِهَادِ)).

(दीगर मक़ाम : 3078, 3079, 4305, 4306, 4307, 4308)

[أطرافه في: ٣٠٧٨، ٤٣٠٥، ٤٣٠٧].
[أطرافه في: ٣٠٧٩، ٤٣٠٦، ٤٣٠٨].

अ़हदे-रिसालत में हिजरत का जो निशाना था वो फ़तहे मक्का पर ख़त्म हो गया क्योंकि सारा अ़रब दारुल इस्लाम बन गया, बाद के ज़मानों में मक्की ज़िन्दगी का नक़्शा सामने आने पर हिजरत का सिलसिला जारी है। नीज़ इस्लाम और जिहाद भी बाक़ी है लिहाज़ा उन सब पर बेअ़त ली जा सकती है। बेअ़त से मुराद हलफ़ (शपथ) और इक़रार है कि उस पर ज़रूर क़ायम रहा जाएगा ख़िलाफ़ हर्गिज़ न होगा। बेअ़त की बहुत सी क़िस्में हैं जो आगे बयान होंगी।

बाब 111 : बादशाहे इस्लामी की इत़ाअ़त लोगों पर वाजिब है जहाँ तक वो त़ाक़त रखें

١١١- بَابُ عَزْمِ الإِمَامِ عَلَى النَّاسِ فِيمَا يُطِيقُونَ

2964. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे पास एक शख़्स आया, और ऐसी बात पूछी कि मेरी कुछ समझ में न आया कि उसका जवाब क्या दूँ। उसने पूछा, मुझे ये मसला बताइये कि एक शख़्स बहुत ही ख़ुश और हथियारबन्द होकर हमारे अमीरों के साथ जिहाद के लिये जाता है। फिर वो अमीर हमें ऐसी चीजों का मुकल्लफ़ क़रार देते हैं कि हम उनकी त़ाक़त नहीं रखते। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि तुम्हारी बात का जवाब क्या दूँ, अल्बत्ता जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (आप ﷺ की हयाते मुबारका में) थे तो आप (ﷺ) को किसी भी मामले में सिर्फ़ एक बार हुक्म की ज़रूरत पेश आती थी और हम फ़ौरन ही उसे बजा लाते थे, ये याद रखने की बात है कि तुम लोगों में उस वक़्त तक ख़ैर रहेगी जब तक तुम अल्लाह से डरते रहोगे, और अगर तुम्हारे दिल में किसी मामले में शुब्हा पैदा हो जाए (कि क्या चाहिये या नहीं) तो किसी आ़लिम से उसके बारे में पूछ लो ताकि तशफ़्फ़ी हो जाए, वो दौर भी आने वाला है कि कोई ऐसा आदमी भी (जो सहीह सहीह मसले बता दे) तुम्हें नहीं मिलेगा। उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं! जितनी दुनिया बाक़ी रह गई है वो वादी के इस पानी की त़रह है जिसका साफ़ और अच्छा हिस्सा तो पिया जा चुका है और गंदला बाक़ी रह गया है।

٢٩٦٤- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((لَقَد أَتَانِي الْيَومَ رَجُلٌ فَسَأَلَنِي عَنْ أَمْرٍ مَا دَرَيْتُ مَا أَرُدُّ عَلَيْهِ فَقَالَ: أَرَأَيْتَ رَجُلاً مُؤْدِيًا نَشِيْطًا يَخْرُجُ مَعَ أُمَرَائِنَا فِي الْمَغَازِي، فَيَعْزِمُ عَلَيْنَا فِي أَشْيَاءَ لاَ نُحْصِيْهَا. فَقُلْتُ لَهُ: وَاللهِ مَا أَدْرِيْ مَا أَقُولُ لَكَ، إِلاَّ أَنَّا كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَسَى أَنْ لاَ يَعْزِمَ عَلَيْنَا فِي أَمْرٍ إِلاَّ مَرَّةً حَتَّى نَفْعَلَهُ، وَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَنْ يَزَالَ بِخَيْرٍ مَا اتَّقَى اللهَ. وَإِذَا شَكَّ فِي نَفْسِهِ شَيْءٌ سَأَلَ رَجُلاً فَشَفَاهُ مِنْهُ، وَأَوْشَكَ أَنْ لاَ تَجِدُوهُ. وَالَّذِيْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ، مَا أَذْكُرُ مَا غَبَرَ مِنَ الدُّنْيَا إِلاَّ كَالثَّغْبِ شُرِبَ صَفْوُهُ، وَبَقِيَ كَدَرُهُ)).

तश्रीह : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने गोल-मोल जवाब दिया। उनका मतलब यही है कि अफ़सर का हुक्म जब शरीअत के ख़िलाफ़ न हो तो उसकी इताअत लाज़िम और ज़रूरी है। आपने क़ुर्आन की आयत **फस्अलु अहलज़्ज़िक्रि इन कुन्तुम ला तअलमून** (अन नह्ल : 43) के मुवाफ़िक़ हुक्म दिया और ये तख़्सीस नहीं की कि फ़लाँ आलिम से पूछे बल्कि आम इन्सान का काम ये है कि जिस किसी आलिम को दीनदार और परहेज़गार और अल्लाहवाला समझे उसे दीन का मसला पूछ ले।

इससे तक़्लीदे शख़्सी का भी रद्द हुआ कि ये ग़लत है कि आम आदमी एक आलिम ही के साथ चिमट जाए बल्कि जो भी आलिम उसको अच्छा नज़र आए उससे मसला पूछ ले। ये हुक्म भी उन आलिमों के लिये है जो ज़िन्दा मौजूद हों। फिर जिनको दुनिया से गये हुए सदियाँ बीत चुकी हैं, उन ही की तक़्लीद किये जाना बल्कि उनके नाम पर एक मुस्तक़िल शरीअत गढ़ लेना ये वो मर्ज़ है जिसमें आम मुक़ल्लिदीन गिरफ़्तार हैं। जिन्होंने दीने हक़ को चार टुकड़ों में तक़्सीम करके वहदते मिल्ली को पारा पारा कर दिया है। सद अफ़सोस! कि उम्मत में पहला मुहलिक फ़साद इसी तक़्लीदे शख़्सी से शुरू हुआ।

दीने हक़ रा चार मज़हब साख़्तन्द - रख़्ना दरे दीन नबी (ﷺ) अन्दाख़्तंद

हदीष में लफ़्ज़ ग़बर से मुराद गदला पानी लें तो निथरे पानी से तश्बीह होगी और जो बाक़ी रहने के मा'नी लें तो गन्दे से तश्बीह होगी। मतलब ये कि अच्छे लोग चले गये और बुरे रह गये।

बाब 112 : नबी करीम (ﷺ) दिन होते ही अगर जंग न शुरू कर देते तो सूरज ढलने तक लड़ाई मुल्तवी रखते

١١٢ - بَابُ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا لَمْ يُقَاتِلْ أَوَّلَ النَّهَارِ أَخَّرَ الْقِتَالَ حَتَّى تَزُولَ الشَّمْسُ

अय लिअन्नरींयाह तहुब्बु गालिबन बअदज़्ज़वालि फयहसुलु मिन्हा तब्रीदुस्सलाहि वल्हर्बि व ज़ियादतु मिनन्निशाति (फत्ह) या'नी ये इसलिये कि अकषर ज़वाल के बाद हवाएँ चलनी शुरू हो जाती हैं बस इसे हथियारों की हिद्दत बुरूदत से बदल जाती है और लड़ाई में भी ठण्डक से ताक़त मिलती और फ़रहत में भी ज़्यादती होती है।

2965. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुआविया बिन अम्र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू इस्हाक़ फ़ुज़ारी ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया, उनसे उमर बिन उबैदुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने उन्हें ख़त लिखा और मैंने उसे पढ़ा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक जिहाद के मौक़े पर जिसमें लड़ाई भी हुई थी, सूरज के ढलने तक जंग नहीं शुरू की। (राजेअ : 2933)

٢٩٦٥ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ هُوَ الْفَزَارِيُّ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمٍ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ وَكَانَ كَاتِبًا لَهُ قَالَ: كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فَقَرَأْتُهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَيَّامِهِ الَّتِي لَقِيَ فِيهَا انْتَظَرَ حَتَّى مَالَتِ الشَّمْسُ)).

[راجع: ٢٩٣٣]

2966. उसके बाद आप (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को ख़िताब

٢٩٦٦ - ثُمَّ قَامَ فِي النَّاسِ خَطِيبًا قَالَ:

करते हुए फ़र्माया, लोगों! दुश्मन के साथ जंग की ख़्वाहिश और तमन्ना दिल में न रखा करो, बल्कि अल्लाह तआला से अमन व आफ़ियत की दुआ किया करो, अल्बत्ता दुश्मन से मुठभेड़ हो ही जाए तो फिर सब्र व इस्तिक़ामत का षुबूत दो, याद रखो कि जन्नत तलवारों के साये तले है, उसके बाद आप (ﷺ) ने यूँ दुआ की, ऐ अल्लाह! किताब के नाज़िल करने वाले, बादल भेजने वाले, अहज़ाब (दुश्मन के दस्तों) को शिकस्त देने वाले, उन्हें शिकस्त दे और उनके मुक़ाबले में हमारी मदद कर। (राजेअ : 2818)

((أَيُّهَا النَّاسُ، لاَ تَتَمَنَّوْا لِقَاءَ الْعَدُوِّ، وَسَلُوا اللهَ الْعَافِيَةَ، فَإِذَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاصْبِرُوا، وَاعْلَمُوا أَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلاَلِ السُّيُوفِ)). ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ، وَمُجْرِيَ السَّحَابِ، وَهَازِمَ الأَحْزَابِ، اهْزِمْهُمْ وَانْصُرْنَا عَلَيْهِمْ)).
[راجع: ٢٨١٨]

मा'लूम हुआ कि जहाँ तक मुम्किन हो लड़ाई को टालना अच्छा है। अगर कोई सुलह की उम्दा सूरत निकल सके क्योंकि इस्लाम फ़ित्ना व फ़साद के सख़्त ख़िलाफ़ है। हाँ, जब कोई सूरत न बने और दुश्मन मुक़ाबले ही पर आमादा हो जाए तो जमकर और ख़ूब डटकर मुक़ाबला करना है और ऐसे मौक़े पर इस दुआ-ए-मस्नूना का पढ़ना ज़रूरी है जो यहाँ मज़्कूर हुई है। या'नी **अल्लाहुम्मा मुन्ज़िलुल्किताब व मुजिरस्सहाब व हाज़िमुल्अहज़ाब अहज़िम्हुम वन्सुर्ना अलैहिम** जन्नत तलवारों के साये तले है। इसका मतलब ये कि जन्नत के लिये माली व जानी क़ुर्बानी की ज़रूरत है जन्नत का सौदा कोई सस्ता सौदा नहीं है। जैसा कि आयत, **इन्नल्लाहश्तरा मिनल्मुमिनीन अन्फ़सहुम व अम्वालहुम बिअन्न लहुमजन्नत** (अत्‌तौबा : 111) में मज़्कूर है।

बाब 113 : अगर कोई जिहाद में से लौटना चाहे या जिहाद में न जाना चाहे तो इमाम से इजाज़त ले

١١٣ - بَابُ اسْتِئْذَانِ الرَّجُلِ الإِمَامَ لِقَوْلِهِ :

अल्लाह तआला के इस फ़र्मान की रोशनी में कि, बेशक मोमिन वो लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और जब वो अल्लाह के रसूल के साथ किसी जिहाद के काम में मस़रूफ़ होते हैं तो उनसे इजाज़त लिये बग़ैर उनके यहाँ से चले नहीं जाते। बेशक वो लोग जो आपसे इजाज़त लेते हैं। (आख़िर आयत तक)

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّى يَسْتَأْذِنُوهُ، إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

2967. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें मुग़ीरह ने, उन्हें शअबी ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक ग़ज़्वा (जंगे तबूक़) में शरीक था। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पीछे से आकर मेरे पास तशरीफ़ लाए मैं अपने पानी लादने वाले एक ऊँट पर सवार था। चूँकि वो थक चुका था, इसलिये धीरे-धीरे चल रहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे पूछा कि जाबिर! तुम्हारे ऊँट को क्या हो गया है? मैंने अ़र्ज़ किया कि थक गया है। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर

٢٩٦٧ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنِ الْمُغِيرَةِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: فَتَلاَحَقَ بِي النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا عَلَى نَاضِحٍ لَنَا قَدْ أَعْيَا فَلاَ يَكَادُ يَسِيرُ، فَقَالَ لِي: ((مَا لِبَعِيرِكَ؟)) قَالَ: قُلْتُ: عَيِيَ. قَالَ:

فَتَخَلَّفَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَزَجَرَهُ وَدَعَا لَهُ، فَمَا زَالَ بَيْنَ يَدَي الإِبِلِ قُدَّامَهَا يَسِيْرُ، فَقَالَ لِي: ((كَيْفَ تَرَى بَعِيْرَكَ؟)) قَالَ: قُلْتُ: بِخَيْرٍ، قَدْ أَصَابَتْهُ بَرَكَتُكَ. قَالَ: ((أَفَتَبِيْعُنِيْهِ؟)) قَالَ: فَاسْتَحْيَيْتُ، وَلَمْ يَكُنْ لَنَا نَاضِحٌ غَيْرُهُ، قَالَ: فَقُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَبِعْنِيْهِ))، فَبِعْتُهُ إِيَّاهُ عَلَى أَنَّ لِي فَقَارَ ظَهْرِهِ حَتَّى أَبْلُغَ الْمَدِيْنَةَ. فَقَالَ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي عَرُوسٌ، فَاسْتَأْذَنْتُهُ فَأَذِنَ لِي، فَتَقَدَّمْتُ النَّاسَ إِلَى الْمَدِيْنَةِ حَتَّى أَتَيْتُ الْمَدِيْنَةَ، فَلَقِيَنِي خَالِيْ فَسَأَلَنِي عَنِ الْبَعِيْرِ فَأَخْبَرْتُهُ بِمَا صَنَعْتُ فِيْهِ فَلاَمَنِي.

قَالَ وَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِيْ حِيْنَ اسْتَأْذَنْتُهُ: ((هَلْ تَزَوَّجْتَ بِكْرًا أَمْ ثَيِّبًا؟)) فَقُلْتُ: تَزَوَّجْتُ ثَيِّبًا. فَقَالَ: ((هَلاَّ تَزَوَّجْتَ بِكْرًا تُلاَعِبُهَا وَتُلاَعِبُكَ؟)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، تُوُفِّيَ وَالِدِيْ - أَوِ اسْتُشْهِدَ - وَلِيْ أَخَوَاتٌ صِغَارٌ، فَكَرِهْتُ أَنْ أَتَزَوَّجَ مِثْلَهُنَّ فَلاَ تُؤَدِّبُهُنَّ وَلاَ تَقُومُ عَلَيْهِنَّ، فَتَزَوَّجْتُ ثَيِّبًا لِتَقُومَ عَلَيْهِنَّ وَتُؤَدِّبَهُنَّ. قَالَ: فَلَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِيْنَةَ غَدَوْتُ عَلَيْهِ بِالْبَعِيْرِ، فَأَعْطَانِي ثَمَنَهُ وَرَدَّهُ عَلَيَّ)) قَالَ الْمُغِيْرَةُ: هَذَا فِي قَضَائِنَا حَسَنٌ لاَ نَرَى بِهِ بَأْسًا.

आप (ﷺ) पीछे गये और उसे डांटा और उसके लिये दुआ की। फिर तो वो बराबर दूसरे ऊँटों के आगे आगे चलता रहा। फिर आप (ﷺ) ने पूछा, अपने ऊँट के बारे में क्या ख़्याल है? मैंने कहा कि अब अच्छा है। आपकी बरकत से ऐसा हो गया है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर क्या इसे बेचोगे? उन्होंने बयान किया कि मैं शर्मिन्दा हो गया, क्योंकि हमारे पास पानी लाने को उसके सिवा और कोई ऊँट नहीं रहा था। मगर मैंने अ़र्ज़ किया, जी हाँ! आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर बेच दे। चुनाँचे मैंने वो ऊँट आप (ﷺ) को बेच दिया और ये तै पाया कि मदीना तक मैं उसी पर सवार होकर जाऊँगा। बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी शादी अभी नई हुई है। मैंने आप (ﷺ) से (आगे बढ़कर अपने घर जाने की) इजाज़त चाही। तो आप (ﷺ) ने इजाज़त दे दी। इसलिये मैं सबसे पहले मदीना पहुँच आया। जब मामूँ से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने मुझसे ऊँट के बारे में पूछा। जो मामला मैं कर चुका था उसकी उन्हें इत्तिला दी। तो उन्होंने मुझे बुरा-भला कहा। (एक ऊँट था तेरे पास वो भी बेच डाला अब पानी किस पर लाएगा) जब मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से इजाज़त चाही थी तो आपने मुझसे दरयाफ़्त फ़र्माया था कि कुँवारी से शादी की है या बेवा से? मैंने अ़र्ज़ किया था बेवा से इस पर आपने फ़र्माया था कि बाकिरा से क्यूँ न की, वो भी तुम्हारे साथ खेलती और तुम भी उसके साथ खेलते। (क्योंकि ह़ज़रत जाबिर रज़ि. भी अभी कुँवारे थे) मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे बाप की वफ़ात हो गई है या (ये कहा कि) वो (उहुद में) शहीद हो चुके हैं और मेरी छोटी छोटी बहनें हैं। इसलिये मुझे अच्छा नहीं मा'लूम हुआ कि उन्हीं जैसी किसी लड़की को ब्याह के लाऊँ, जो न उन्हें अदब सिखा सके न उनकी निगरानी करे और उन्हें अदब सिखाए। उन्होंने बयान किया, कहा फिर जब नबी करीम (ﷺ) मदीना पहुँचे तो सुबह के वक़्त में इसी ऊँट पर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे उस ऊँट की क़ीमत अ़ता की और फिर वो ऊँट भी वापस कर दिया। मुग़ीरह रावी (रह.) ने कहा कि हमारे नज़दीक बेअ़ में ये शर्त लगाना अच्छा है कुछ बुरा नहीं।

(राजेअ : 443) [راجع: ٤٤٣]

बाब का तर्जुमा यहाँ से निकला कि हज़रत जाबिर (रज़ि.) इजाज़त लेकर आप (ﷺ) से जुदा हुए। ये ह़दीष़ कई जगह गुज़र चुकी है और हज़रत इमाम (रह.) ने इससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात फ़र्माया है।

बाब 114 : नई-नई शादी होने के बावजूद जिन्होंने जिहाद किया

इस बाब में जाबिर (रज़ि.) की रिवायत नबी करीम (ﷺ) के हवाले से है (जो मज़्कूर हुई)

١١٤- بَابُ مَنْ غَزَا وَهُوَ حَدِيثُ عَهْدٍ بِعُرْسِهِ،

فِيهِ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 115 : शबे ज़िफ़ाफ़ के बाद ही जिसने

फ़ौरन जिहाद में शिर्कत को पसन्द किया इस बारे में अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत नबी करीम (ﷺ) के हवाले से मौजूद है।

١١٥- بَابُ مَنِ اخْتَارَ الْغَزْوَ بَعْدَ الْبِنَاءِ،

فِيهِ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

जो आगे आएगी कि एक पैग़म्बर जिहाद को गये और फ़र्माया कि मेरे साथ ऐसा कोई शख़्स न निकले जिसने निकाह तो कर लिया हो मगर अभी उसने अपनी बीवी से सुहबत न की हो।

बाब 116 : ख़ौफ़ और दहशत के वक़्त (हालात मा'लूम करने के लिये) इमाम का आगे बढ़ना

١١٦- بَابُ مُبَادَرَةِ الإِمَامِ عِنْدَ الْفَزَعِ

2968. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना में एक बार कुछ दहशत फैल गई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अबू त़लहा (रज़ि.) के एक घोड़े पर सवार होकर (हालात मा'लूम करने के लिये सबसे आगे थे) फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमने तो कोई बात नहीं देखी। अल्बत्ता इस घोड़े को हमने दौड़ने में दरिया की रवानी जैसा तेज़ पाया है (बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है)। (राजेअ : 2627)

٢٩٦٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ بِالْمَدِينَةِ فَزَعٌ، فَرَكِبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرَسًا لأَبِي طَلْحَةَ فَقَالَ: ((مَا رَأَيْنَا مِنْ شَيْءٍ، وَإِنْ وَجَدْنَاهُ لَبَحْرًا)). [راجع: ٢٦٢٧]

बाब 117 : ख़ौफ़ के मौक़े पर जल्दी से घोड़े को ऐड़ लगाना

١١٧- بَابُ السُّرْعَةِ وَالرَّكْضِ فِي الْفَزَعِ

2969. हमसे फ़ज़्ल बिन सहल ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि (मदीना में) लोगों में दहशत फैल गई

٢٩٦٩- حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ قَالَ حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ

رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: فَزِعَ النَّاسُ فَرَكِبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرَسًا لِأَبِي طَلْحَةَ بَطِيئًا، ثُمَّ خَرَجَ يَرْكُضُ وَحْدَهُ، فَرَكِبَ النَّاسُ يَرْكُضُونَ خَلْفَهُ فَقَالَ: ((لَمْ تُرَاعُوا، إِنَّهُ لَبَحْرٌ. فَمَا سُبِقَ بَعْدَ ذَلِكَ الْيَوْمَ)).

[راجع: ٢٦٢٧]

थी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अबू तलहा (रज़ि.) के एक घोड़े पर जो बहुत सुस्त था, सवार हुए और तन्हा ऐड़ लगाते हुए आगे बढ़े। सहाबा किराम (रज़ि.) भी आपके पीछे सवार होकर निकले। उसके बाद वापसी पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़ौफ़ज़दा होने की कोई बात नहीं है, अल्बत्ता ये घोड़ा दरिया है। उस दिन के बाद फिर वो घोड़ा (दौड़ वग़ैरह के मौक़े पर) कभी पीछे नहीं रहा। (राजेअ : 2627)

आँहज़रत (ﷺ) ने उस मौक़े पर फ़ौरन ही मा'लूमात के लिये हज़रत तलहा (रज़ि.) के घोड़े पर ऐड़ लगाई और मदीना के दूर दूर चारों ओर घूम-फिरकर आप वापस तशरीफ़ लाए और वो फ़र्माया जो रिवायत में मज़्कूर है। इसी से बाब का तर्जुमा षाबित हुआ।

١١٨- بَابُ الْخُرُوجِ فِي الْفَزَعِ وَحْدَهُ

बाब 118 : ख़ौफ़ के वक़्त अकेले निकलना

ऊपर ज़िक्र किया गया बाब हिन्दुस्तानी नुस्ख़ों में नहीं, अल्बत्ता शैख़ फ़व्वाद अब्दुल बाक़ी की तहक़ीक़ वाले नुस्ख़े में है।

١١٩ - بَابُ الْجَعَائِلِ وَالْحُمْلاَنِ فِي السَّبِيلِ

बाब 119 : किसी को उज्रत देकर अपने तरफ़ से जिहाद कराना और अल्लाह की राह में सवारी देना

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: قُلْتُ لاِبْنِ عُمَرَ: الْغَزْوَ. قَالَ: إِنِّي أُحِبُّ أَنْ أُعِينَكَ بِطَائِفَةٍ مِنْ مَالِي. قُلْتُ: أَوْسَعَ اللهُ عَلَيَّ. قَالَ: إِنَّ غِنَاكَ لَكَ، وَإِنِّي أُحِبُّ أَنْ يَكُونَ مِنْ مَالِي فِي هَذَا الْوَجْهِ. وَقَالَ عُمَرُ: إِنَّ نَاسًا يَأْخُذُونَ مِنْ هَذَا الْمَالِ لِيُجَاهِدُوا، ثُمَّ لاَ يُجَاهِدُونَ، فَمَنْ فَعَلَهُ فَنَحْنُ أَحَقُّ بِمَالِهِ حَتَّى نَأْخُذَ مِنْهُ مَا أَخَذَ. وَقَالَ طَاوُسٌ وَمُجَاهِدٌ: إِذَا دُفِعَ إِلَيْكَ شَيْءٌ تَخْرُجُ بِهِ فِي سَبِيلِ اللهِ فَاصْنَعْ بِهِ مَا شِئْتَ وَضَعْهُ عِنْدَ أَهْلِكَ.

मुजाहिद ने बयान किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के सामने जिहाद में शिर्कत का इरादा ज़ाहिर किया तो उन्होंने फ़र्माया कि मेरा दिल चाहता है कि मैं भी इस मद में अपना कुछ माल खर्च करके तुम्हारी मदद करूँ। मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह का दिया हुआ मेरे पास काफ़ी है। लेकिन उन्होंने फ़र्माया कि तुम्हारी सरमायादारी तुम्हारे लिये है मैं तो सिर्फ़ ये चाहता हूँ कि इस तरह मेरा माल भी अल्लाह के रास्ते में खर्च हो जाए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया था कि बहुत से लोग इस माल को (बैतुलमाल से) इस शर्त पर लेते हैं कि वो जिहाद में शरीक होंगे लेकिन फिर वो जिहाद नहीं करते। इसलिये जो शख़्स ये हरकत करेगा तो हम उसके माल के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं और हम उससे वो माल जो उसने (बैतुलमाल से) लिया है वापस वसूल कर लेंगे। ताऊस और मुजाहिद ने फ़र्माया कि अगर तुम्हें कोई चीज़ इस शर्त के साथ दी जाए कि उसके बदले में तुम जिहाद के लिये निकलोगे। तो तुम उसे जहाँ जी चाहे ख़र्च कर सकते हो। और अपने अहलो-अयाल की

ज़रूरियात में भी ला सकते हो। (मगर शर्त के मुताबिक़ जिहाद में शिर्कत ज़रूरी है)

शाफ़िइया ने इसको जाइज़ रखा है कि उज्रत (मज़दूरी) लेकर किसी की तरफ़ से जिहाद करे। लेकिन मालिकिया और ह़न्फ़िया ने मकरूह रखा है। मगर जब बैतुलमाल में रुपया न हो और मुसलमान नातवाँ हों तो जाइज़ है। अल्बत्ता ग़ाज़ी की इआनत और मदद गो वो मालदार हो सबके नज़दीक दुरुस्त है। (वह़ीदी)

लफ़्ज़े जआइल ज़अलिया की जमा है, **व हिय मा यज़ुल्लुहुल्क़ाइदु मिनल्उजरति लिमय्यग़ज़ू अन्हु** या'नी ये चीज़ है जो बत़ौरे उज्रत बैठने वाला अपनी त़रफ़ से ग़ज़्वा करने वाले के लिये मुक़र्रर करे। और **हुम्लानि बिज़म्मिल्हाइ हमल यहमिलु** का मस़दर है जिससे मुराद मुजाहिद को बत़ौरे इमदाद सवारी देना है।

2970. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैं ने मालिक बिन अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने ज़ैद बिन असलम से पूछा था और ज़ैद ने कहा कि मैंने अपने बाप से सुना था, वो बयान करते थे कि उ़मर बिन ख़त्त़ाब (रज़ि.) ने फ़र्माया मैंने अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) अपना एक घोड़ा एक शख़्स़ को सवारी के लिये दे दिया था। फिर मैंने देखा कि (बाज़ार में) वही घोड़ा बिक रहा है। मैंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि क्या मैं उसे ख़रीद सकता हूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस घोड़े को तुम न ख़रीदो और अपना स़दक़ा (ख़्वाह ख़रीदकर ही हो) वापस न लो। (राजेअ : 1490)

٢٩٧٠- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ مَالِكَ بْنَ أَنَسٍ سَأَلَ زَيْدَ بْنَ أَسْلَمَ، فَقَالَ زَيْدٌ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ، فَرَأَيْتُهُ يُبَاعُ، فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ آشْتَرِيْهِ؟ فَقَالَ: ((لاَ تَشْتَرِهِ وَلاَ تَعُدْ فِي صَدَقَتِكَ)).

[راجع: ١٤٩٠]

तश्रीह : बाब का तर्जुमा में वो उज्रत मुराद है जो जिहाद में शिर्कत न करने वाला कोई शख़्स़ अपनी त़रफ़ से किसी आदमी को उज्रत देकर जिहाद पर भेजता है। जहाँ तक जिहाद पर उज्रत का ता'ल्लुक़ है तो ज़ाहिर है कि उज्रत लेनी जाइज़ है। यूँ तो जिहाद का हुक्म सबके लिये बराबर है। इसलिये किसी मा'कूल उ़ज़्र के बग़ैर उसमें शिर्कत से पहलू बचाना मुनासिब नहीं। अल्बत्ता ये सूरत इससे अलग है कि किसी पर जिहाद फ़र्ज़ या वाजिब न हो और वो जिहाद में जाने वाले की मदद करके स़वाब में शरीक हो जाए। जैसा कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने किया था। हाँ, जिहाद में शिर्कत से बचने के लिये अगर ऐसा करता है तो बेहतर नहीं है।

2971. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि उ़मर बिन ख़त्त़ाब (रज़ि.) ने अल्लाह के रास्ते में अपना एक घोड़ा सवारी के लिये दे दिया था। फिर उन्हों ने देखा कि वही घोड़ा बिक रहा है। अपने घोड़े को उन्हों ने ख़रीदना चाहा और रसूले करीम (ﷺ) से उसके बारे में पूछा, तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसे न ख़रीदो। और इस त़रह अपने स़दक़े को वापस न लो।

٢٩٧١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ حَمَلَ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ فَوَجَدَهُ يُبَاعُ فَأَرَادَ أَنْ يَبْتَاعَهُ فَسَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ (لاَ تَبْتَعْهُ وَلاَ تَعُدْ فِي صَدَقَتِكَ).

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने वो घोड़ा एक शख़्स को जिहाद के ख़्याल से बतौरे इमदाद दे दिया था। इसी से बाब का मतलब षाबित हुआ। बाद में वो शख़्स इसको बाज़ार में बेचने लगा जिसका ज़िक्र रिवायत में है।

٢٩٧٢ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو صَالِحٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ لاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي مَا تَخَلَّفْتُ عَنْ سَرِيَّةٍ وَلَكِنْ لاَ أَجِدُ حَمُولَةً، وَلاَ أَجِدُ مَا أَحْمِلُهُمْ عَلَيْهِ، وَيَشُقُّ عَلَيَّ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنِّي، وَلَوَدِدْتُ أَنِّي قَاتَلْتُ فِي سَبِيْلِ اللهِ فَقُتِلْتُ ثُمَّ أُحْيِيْتُ، ثُمَّ قُتِلْتُ ثُمَّ أُحْيِيْتُ)). [راجع: ٣٦]

2972. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सई़द क़त़्त़ान ने बयान किया, उनसे यह़्या बिन सई़द अंस़ारी ने बयान किया, कहा मुझसे अबू स़ालेह़ ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर मेरी उम्मत पर ये अम्र मुश्किल न गुज़रता तो मैं किसी सरिय्या (या'नी मुजाहिदीन का एक छोटा दस्ता जिसकी ता'दाद ज़्यादा से ज़्यादा चालीस हो) की शिर्कत भी न छोड़ता। लेकिन मेरे पास सवारी के इतने ऊँट नहीं हैं कि मैं उनको सवार करके च लूँ और ये मुझ पर बहुत मुश्किल है कि मेरे साथी मुझसे पीछे रह जाएँ। मेरी तो ये ख़ुशी है कि अल्लाह के रास्ते में मैं जिहाद करूँ, और शहीद किया जाऊँ। फिर जिन्दा किया जाऊँ, फिर शहीद किया जाऊँ और फिर ज़िन्दा किया जाऊँ। (राजेअ़ : 36)

बाब 120 : जो शख़्स मज़दूरी लेकर जिहाद में शरीक हो

١٢٠ - بَابُ الأَجِيْرِ

وَقَالَ الْحَسَنُ وَابْنُ سِيْرِيْنَ يُقْسَمُ لِلأَجِيْرِ مِنَ الْمَغْنَمِ.
وَأَخَذَ عَطِيَّةُ بْنُ قَيْسٍ فَرَسًا عَلَى النِّصْفِ، فَبَلَغَ سَهْمُ الْفَرَسِ أَرْبَعَمِائَةِ دِيْنَارٍ، فَأَخَذَ مِائَتَيْنِ وَأَعْطَى صَاحِبَهُ مِائَتَيْنِ.

इमाम ह़सन बस़री (रह.) और इब्ने सीरीन (रह.) ने कहा कि माले ग़नीमत में से मज़दूर को भी ह़िस्स़ा दिया जाएगा। अ़त़िय्या बिन क़ैस ने एक घोड़ा (माले ग़नीमत में से) निस़्फ़ की शर्त़ पर लिया। घोड़े के ह़िस्स़े में (फ़तह़ के बाद माले ग़नीमत से) चार सौ दीनार आए। अ़त़िया ने दो सौ दीनार ख़ुद रख लिये और दो सौ घोड़े के मालिक को दे दिये।

٢٩٧٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَعْلَى عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزْوَةَ تَبُوكَ فَحَمَلْتُ عَلَى بَكْرٍ، فَهُوَ أَوْثَقُ أَعْمَالِي فِي نَفْسِي، فَاسْتَأْجَرْتُ أَجِيْرًا فَقَاتَلَ رَجُلاً فَعَضَّ أَحَدُهُمَا الآخَرَ، فَانْتَزَعَ يَدَهُ مِنْ فِيْهِ وَنَزَعَ

2973. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अ़त़ा ने, उनसे स़फ़्वान बिन यअ़ला ने और उनसे उनके वालिद (यअ़ला बिन उमय्या रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूले करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-तबूक में शरीक था और एक जवान ऊँट मैंने चढ़ने को दिया था, मेरे ख़्याल में मेरा ये अ़मल, तमाम दूसरे आमाल के मुक़ाबले मे सबसे ज़्यादा क़ाबिले भरोसा था। (कि अल्लाह तआ़ला के यहाँ मक़्बूल होगा) मैंने एक मज़दूर भी अपने साथ ले लिया था। फिर वो मज़दूर एक शख़्स (ख़ुद यअ़ला बिन उमय्या रज़ि.) से लड़ पड़ा और उनमें से एक ने दूसरे के हाथ में दांत से काट लिया। दूसरे ने झट जा

अपना हाथ उसके मुँह से खींचा तो उसके आगे का दांत टूट गया। वो शख़्स नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में फ़रयादी हुआ लेकिन आँहज़रत ने हाथ खींचने वाले पर कोई तावान नहीं फ़र्माया। बल्कि फ़र्माया कि क्या तुम्हारे मुँह में वो अपना हाथ ही रहने देता ताकि तुम उसे चबा जाओ जैसे ऊँट चबाता है। (राजेअ : 1847)

ثَنِيَّتَهُ، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَهْدَرَهَا فَقَالَ: ((أَيَدْفَعُ يَدَهُ إِلَيْكَ فَتَقْضِمُهَا كَمَا يَقْضَمُ الْفَحْلُ؟)).
[راجع: ١٨٤٨]

तश्रीह : या'नी अगर किसी मुजाहिद ने जिहाद के लिये जाते वक़्त अगर कुछ मज़दूर, मज़दूरी पर अपनी ज़रूरियात के लिये अपने साथ ले लिये तो क्या ये मज़दूर अपनी मज़दूरी पा लेने के बाद माले ग़नीमत के भी मुस्तहिक़ होंगे या नहीं? उसी का जवाब इस बाब में दिया है। इमाम अहमद बिन हंबल और इस्हाक़ और औज़ाई के नज़दीक हिस्सा नहीं मिलेगा, दूसरे उलमा कहते हैं कि हिस्सा मिलेगा। अबू दाऊद की रिवायत में यूँ है कि मैं बूढ़ा आदमी था। मेरे साथ कोई ख़िदमतगार भी न था तो मैंने एक शख़्स को मज़दूरी पर ठहराया और उसके लिये दो हिस्से मुक़र्रर किये। मगर वो उस पर राज़ी न हुआ तो उसकी मज़दूरी तीन दीनार मुक़र्रर की। मुस्लिम की रिवायत में है कि यअ़ला ने काटा और मज़दूर ने अपना हाथ खींचा तो यअ़ला का दांत निकल पड़ा।

बाब 121 : आँहज़रत (ﷺ) के झण्डे का बयान

١٢١ – بَابُ مَا قِيْلَ فِي لِوَاءِ النَّبِيِّ

तश्रीह : हदीष़ में लिवा और राया दोनो एक हैं। तिर्मिज़ी की रिवायत में है कि आपका राया स्याह था और लिवा सफ़ेद इससे मा'लूम होता है कि दोनों में फ़र्क़ है। कुछ ने कहा लिवा जो नेज़े पर एक कपड़ा लगा दिया जाता है और गिरह नहीं दी जाती। राया वे जो गिरह देकर बाँधा जाता है जिसको अलम भी कहते हैं आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में ये झण्डा लश्कर का जो सरदार होता वो थामे रखता। और आप (ﷺ) के झण्डे का नाम उ़क़ाब था।

रिवायत में क़ैस बिन सअ़द अंसारी (रज़ि.) का ज़िक्र है। जिन्होंने सर के एक तरफ़ कँघी की थी कि उनका एक ग़ुलाम खड़ा हुआ और उसने हदी के जानवर को हार पहना दिया। उन्होंने जब ये देखा कि हदी की तक़्लीद हो गई तो हज्ज की लब्बैक पुकारी और सर की दूसरी तरफ़ कँघी न की। ये क़ैस बिन सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) के बेटे थे जो ख़ज़रज क़बीला के सरदार थे। हज़रत क़ैस मुअ़ज़्ज़ज़ अस्हाब में थे। जंगी मुआमलात में साहिबे तदबीर लोगों में शुमार होते थे। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उनको मिस्र का गवर्नर मुक़र्रर किया। मदीना में 60 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व अरज़ाहु।

2974. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे लैष़ ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़क़ील ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें ष़अ़लबा बिन अबी मालिक क़ुर्ज़ी ने ख़बर दी कि क़ैस बिन सअ़द अंसारी (रज़ि.) ने, जो जिहाद में रसूलुल्लाह (ﷺ) के अलमबरदार थे, जब हज्ज का इरादा किया तो (एहराम बाँधने से पहले) कँघी की।

٢٩٧٤ – حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ثَعْلَبَةُ بْنُ أَبِي مَالِكٍ الْقُرَظِيُّ: ((أَنَّ قَيْسَ بْنَ سَعْدٍ الأَنْصَارِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ- وَكَانَ صَاحِبَ لِوَاءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ- أَرَادَ الْحَجَّ فَرَجَّلَ)).

मा'लूम हुआ कि जिहाद में अ़लमे नबवी उठाया जाता था और उसके उठाने वाले क़ैस बिन सअ़द अंसारी (रज़ि.) हुआ करते। जंगे ख़ैबर में ये झण्डा उठाने वाले ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) थे। जैसा कि आगे ज़िक्र है।

2975. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे ह़ातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नहीं आए थे। उनकी आँखों में तकलीफ़ थी। फिर उन्होंने कहा कि क्या मैं रसूले करीम (ﷺ) के साथ जिहाद में शरीक नहीं हो सकूँगा? चुनाँचे वो निकले और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं इस्लामी परचम उस शख़्स को दूँगा या (आपने ये फ़र्माया कि) कल इस्लामी परचम उस शख़्स के हाथ में होगा जिसे अल्लाह और उसके रसूल अपना महबूब रखते हैं। या आपने ये फ़र्माया कि जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है। और अल्लाह उस शख़्स के हाथ पर फ़तह फ़र्माएगा फिर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) भी आ गये। ह़ालाँकि उनके आने की हमें कोई उम्मीद न थी। (क्योंकि वो आँख की बीमारी में मुब्तला थे) लोगों ने कहा कि ये अ़ली (रज़ि.) भी आ गये और आप (ﷺ) ने झण्डा उन्हीं को दिया और अल्लाह ने उन्हीं के हाथ पर फ़तह फ़र्माई।
(दीगर मक़ाम : 3702, 4209)

٢٩٧٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي خَيْبَرَ، وَكَانَ بِهِ رَمَدٌ، فَقَالَ: أَنَا أَتَخَلَّفُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ. فَخَرَجَ عَلِيٌّ فَلَحِقَ بِالنَّبِيِّ ﷺ. فَلَمَّا كَانَ مَسَاءُ اللَّيْلَةِ فَتَحَهَا فِي صَبَاحِهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ - أَوْ قَالَ: لَيَأْخُذَنَّ - غَدًا رَجُلٌ يُحِبُّهُ اللهُ وَرَسُولُهُ، أَوْ قَالَ: يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ، يَفْتَحُ اللهُ عَلَيْهِ)) فَإِذَا نَحْنُ بِعَلِيٍّ وَمَا نَرْجُوهُ. فَقَالُوا: هَذَا عَلِيٌّ، فَأَعْطَاهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَفَتَحَ اللهُ عَلَيْهِ)).

[طرفاه في : ٣٧٠٢، ٤٢٠٩].

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की फ़ज़ीलत के लिये ये काफ़ी है आप फ़ातेह़ ख़ैबर हैं और उस मौक़े पर फ़तह़ का झण्डा आप ही के दस्ते मुबारक से लहराया गया। इससे भी अ़लमे नबवी का इष्बात हुआ। और इसी वजह से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस वाक़िये को यहाँ लाए हैं।

2976. हमसे मुहम्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे नाफ़ेअ़ बिन जुबैर ने बयान किया कि मैं ने सुना कि ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) से कह रहे थे कि क्या यहाँ पर नबी करीम (ﷺ) ने आपको परचम नस़्ब करने का हुक्म फ़र्माया था?

٢٩٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ ((سَمِعْتُ الْعَبَّاسَ يَقُولُ لِلزُّبَيْرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: هَا هُنَا أَمَرَكَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تَرْكُزَ الرَّايَةَ)).

इन जुम्ला अह़ादीष़ में किसी न किसी त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) के झण्डे का ज़िक्र है। इसीलिये ह़ज़रत इमाम इन अह़ादीष़ को यहाँ लाए। अह़ादीष़ से और भी बहुत से मसाइल ष़ाबित होते हैं जिनको ह़ज़रत इमाम (रह.) ने मौक़ा ब मौक़ा बयान किया है। रह़िमहुल्लाह।

बाब 122 : आँह़ज़रत (ﷺ) का ये फ़र्माना कि एक महीने की राह से अल्लाह ने मेरा रुअ़ब (काफ़िरों के दिलों में) डालकर मेरी मदद की

١٢٢- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مَسِيْرَةَ شَهْرٍ))

وَقَوْلِهِ جَلَّ وَعَزَّ: ﴿سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللهِ﴾ [آل عمران: ١٥١] قَالَهُ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

है और अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, अन्क़रीब मैं उन लोगों के दिलों को मरऊब कर दूंगा जिन्होंने कुफ़्र किया है। इसलिये कि उन्होंने अल्लाह के साथ शिर्क किया है। (आले इमरान : 151)

जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के ह़वाले से ये ह़दीष़ रिवायत की है।

٢٩٧٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بُعِثْتُ بِجَوَامِعِ الْكَلِمِ، وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ. فَبَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُوتِيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الأَرْضِ فَوُضِعَتْ فِي يَدِي)). قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: وَقَدْ ذَهَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَنْتُمْ تَنْتَثِلُونَهَا.

[أطرافه في : ٦٩٩٨، ٧٠١٣، ٧٢٧٣].

2977. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। मुझे जामेअ़ कलाम (जिसकी इबारत मुख़्तसर और फ़सीह़ व बलीग़ हो और मा'नी बहुत वसीअ़ हों) देकर भेजा गया है और रुअ़ब के ज़रिये मेरी मदद की गई है। मैं सोया हुआ था कि ज़मीन के ख़ज़ानों की कुँजियाँ मेरे पास लाई गईं और मेरे हाथ पर रख दी गईं।

ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तो (अपने रब के पास) जा चुके और (जिन ख़ज़ानों की वो कुँजियाँ थीं) उन्हें अब तुम निकाल रहे हो। (दीगर मक़ाम : 6998, 7013, 7273)

इस ख़्वाब मे आँह़ज़रत (ﷺ) को ये बशारत दी गई थी कि आप (ﷺ) की उम्मत के हाथों दुनिया की बड़ी बड़ी सल्तनतें फ़तह़ होंगी और उनके ख़ज़ानों के वो मालिक होंगे। चुनाँचे बाद में इस ख़्वाब की मुकम्मल ता'बीर मुसलमानों ने देखी कि दुनिया की दो सबसे बड़ी सलतनतें, ईरान और रोम मुसलमानों ने फ़तह़ कीं और अबू हुरैरह (रज़ि.) का भी इस त़रफ़ इशारा है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने काम को पूरा करके अल्लाह पाक से जा मिले लेकिन वो ख़ज़ाने अब तुम्हारे हाथों में हैं। रिवायते मज़्कूरा में एक महीने की राह से ये मज़्कूर नहीं है। लेकिन जाबिर (रज़ि.) की रिवायत जो इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुत तयम्मुम में निकाली है उसमें इसकी स़राह़त मौजूद है।

٢٩٧٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سُفْيَانَ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ هِرَقْلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ - وَهُوَ بِإِيلِيَاءَ - ثُمَّ دَعَا بِكِتَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ قِرَاءَةِ الْكِتَابِ كَثُرَ عِنْدَهُ الصَّخَبُ فَارْتَفَعَتِ الأَصْوَاتُ وَأُخْرِجْنَا، فَقُلْتُ

2978. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि (आँह़ज़रत ﷺ का नामा-ए-मुबारक जब शाहे रोम हिरक़्ल को मिला तो) उसने अपना आदमी उन्हें तलाश करने के लिये भेजा। ये लोग उस वक़्त ईलिया में ठहरे हुए थे। आख़िर (त़वील बातचीत के बाद) उसने नबी करीम (ﷺ) का नामा-ए-मुबारक मंगवाया। जब वो पढ़ा जा चुका तो उसके दरबार में हंगामा बरपा हो गया। (चारों त़रफ़ से) आवाज़ बुलन्द होने लगी और हमें बाहर निकाल दिया गया। जब हम बाहर कर

दिये गये तो मैंने अपने साथियों से कहा कि इब्ने अबी कब्शा (मुराद रसूलुल्लाह ﷺ से है) का मामला तो अब बहुत आगे बढ़ चुका है। ये मुल्क बनी अस्फ़र (क़ैसरे-रोम) भी उनसे डरने लगा है)। (राजेअ़ : 7)

لأصْحَابِي حِينَ أُخْرِجْنَا: لَقَدْ أَمِرَ أَمْرُ ابْنِ أَبِي كَبْشَةَ، إِنَّهُ يَخَافُهُ مَلِكُ بَنِي الأَصْفَرِ)). [راجع: ٧]

शाम का मुल्क (वर्तमान सीरिया) जहाँ उस वक़्त हिरक़्ल था मदीना से एक महीने की राह पर है, तो बाब का मतलब निकल आया कि आँहज़रत (ﷺ) का रुअब एक महीने की राह से हिरक़्ल पर पड़ा। आपके बेशुमार मुअजज़ात में से ये भी आपका अहम मुअजज़ा था। आपके दुश्मन जो आपसे सैंकड़ों मील के फ़ासले पर रहते थे वो वहाँ से ही बैठे हुए आपके रुआब से मरऊब (दबदबे से प्रभावित) रहा करते थे। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

बाब 123 : सफ़रे जिहाद में तौशा (ख़र्च वग़ैरह) साथ रखना

١٢٣- بَابُ حَمْلِ الزَّادِ فِي الْغَزْوِ

और अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, अपने साथ तौशा ले जाया करो, पस बेशक उम्दा तौशा तक़्वा है।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى﴾ [البقرة: ١٩٧]

अशार बिहाज़िहित्तर्जुमति इला अन्न हमलज़्ज़ादि फ़िस्सफ़रि लैस मुनाफ़ियल लित्तवक्कुलि फिल्फ़त्ह या'नी तर्जुमा में इशारा फ़र्माया कि सफ़र में तौशा साथ ले जाना तवक्कल (अल्लाह पर भरोसे) के मनाफ़ी (विपरीत) नहीं है।

या'नी सफ़र में जाते वक़्त अपने साथ खाने-पीने का सामान साथ ले लिया करो, ताकि किसी के सामने माँगने के लिये हाथ फैलाना न पड़े। यही बेहतरीन तौशा है जिसके ज़रिये लोगों से मांगने से बच जाओगे और तक़्वा हासिल हो सकेगा।

2979. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, नीज़ मुझसे फ़ातिमा ने भी बयान किया, और उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना की हिजरत का इरादा किया, तो मैंने (वालिदे माजिद हज़रत) अबूबक्र (रज़ि.) के घर आपके लिये सफ़र का नाश्ता तैयार किया था। उन्होंने बयान किया कि जब आपके नाश्ते और पानी को बाँधने के लिये कोई चीज़ न मिली, तो मैंने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि बजुज़ मेरे कमरबन्द के और कोई चीज़ इसे बाँधने के लिये नहीं है। तो उन्होंने फ़र्माया कि फिर उसी के दो टुकड़े कर लो। एक से नाश्ता बाँध देना और दूसरे से पानी, चुनाँचे उसने ऐसा ही किया, और इसी वजह से मेरा नाम, ज़ातुन्नताक़ैन (दो कमरबन्दों वाली) पड़ गया। (दीगर मक़ाम : 3907, 5388)

٢٩٧٩- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي - وَحَدَّثَتْنِي أَيْضًا فَاطِمَةُ - عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((صَنَعْتُ سُفْرَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَيْتِ أَبِي بَكْرٍ حِيْنَ أَرَادَ أَنْ يُهَاجِرَ إِلَى الْمَدِيْنَةِ. قَالَتْ: فَلَمْ نَجِدْ لِسُفْرَتِهِ وَلاَ لِسِقَائِهِ مَا نَرْبِطُهُمَا بِهِ، فَقُلْتُ لأَبِي بَكْرٍ: وَاللهِ مَا أَجِدُ شَيْئًا أَرْبِطُ بِهِ إِلاَّ نِطَاقِي. قَالَ: فَشُقِّيْهِ بِاثْنَيْنِ فَارْبِطِيْهِ: بِوَاحِدٍ السِّقَاءَ، وَبِالآخَرِ السُّفْرَةَ، فَفَعَلْتُ، فَلِذَلِكَ سُمِّيَتْ ذَاتَ النِّطَاقَيْنِ)). [طرفاه في : ٣٩٠٧، ٥٣٨٨].

तश्रीह : हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की साहबज़ादी का नाम अस्मा (रज़ि.) है। ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की वालिदा हैं। मक्का ही में इस्लाम लाईं। उस वक़्त तक सिर्फ़ सत्तरह आदमियों ने इस्लाम क़ुबूल किया था। ये हज़रत

आइशा (रज़ि.) से दस बरस बड़ी थीं। अपने साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) की शहादत के बाद 73 हिजरी में सौ साल की उम्र में आपने मक्का ही में इंतिक़ाल फ़र्माया। बाब का मतलब यूँ षाबित हुआ कि आप (ﷺ) के लिये इस नेक ख़ातून ने हिजरत के सफ़र के वक़्त नाश्ता तैयार किया। इसी से हर सफ़र में ख़्वाह हज्ज का सफ़र हो या जिहाद का राशन साथ ले जाने का इष्बात हुआ। ख़ास तौर पर फ़ौजों के लिये राशन का पूरा इंतिज़ाम करना हर सभ्य हुकूमत के लिये ज़रूरी है।

2980. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उनसे अम्र ने बयान किया, कहा मुझको अता ने ख़बर दी, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि हम लोग नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में क़ुर्बानी का गोश्त (बतौरे-तौशा) मदीना ले जाया करते थे। (ये ले जाना बतौरे तौशा हुआ करता था। इससे आपका मतलब षाबित हुआ)। (राजेअ : 1719)

٢٩٨٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو قَالَ أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا نَتَزَوَّدُ لُحُومَ الأَضَاحِيِّ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى الْمَدِينَةِ)). [راجع: ١٧١٩]

2981. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा कि मुझे बशीर बिन यसार ने ख़बर दी और उन्हें सुवैद बिन नोअमान ने ख़बर दी कि ख़ैबर की जंग के मौक़े पर वो नबी करीम (ﷺ) के साथ गये थे। जब लश्कर मुक़ामे सहबा पर पहुँचा जो ख़ैबर का नशीबी इलाक़ा है तो लोगों ने अस्र की नमाज़ पढ़ी और नबी करीम (ﷺ) ने खाना मंगवाया। आँहज़रत (ﷺ) के पास सत्तू के सिवा और कोई चीज़ नहीं लाई गई और हमने वही सत्तू खाया और पिया। उसके बाद नबी करीम (ﷺ) खड़े हुए और आपने कुल्ली की हमने भी कुल्ली की और नमाज़ पढ़ी। (ये सत्तू बतौरे तौशा रखा गया था। इससे बाब का तर्जुमा षाबित हुआ)। (राजेअ : 209)

٢٩٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى قَالَ أَخْبَرَنِي بُشَيْرُ بْنُ يَسَارٍ أَنَّ سُوَيْدَ بْنَ النُّعْمَانِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ ((أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَامَ خَيْبَرَ، حَتَّى إِذَ كَانُوا بِالصَّهْبَاءِ - وَهِيَ أَدْنَى خَيْبَرَ - فَصَلَّوا الْعَصْرَ، فَدَعَا النَّبِيُّ ﷺ بِالأَطْعِمَةِ، فَلَمْ يُؤْتَ النَّبِيُّ ﷺ إِلاَّ بِسَوِيْقٍ، فَلُكْنَا، فَأَكَلْنَا وَشَرِبْنَا، ثُمَّ قَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَمَضْمَضَ وَمَضْمَضْنَا وَصَلَّيْنَا)). [راجع: ٢٠٩]

2982. हमसे बिश्र बिन मरहूम ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने और उनसे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब लोगों के पास ज़ादे राह ख़त्म होने लगा तो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में लोग अपने ऊँट ज़िब्ह करने की इजाज़त लेने हाज़िर हुए। आप (ﷺ) ने इजाज़त दे दी। इतने में हज़रत उमर (रज़ि.) से उनकी मुलाक़ात हुई। इस इजाज़त की ख़बर उन्हें भी उन लोगों ने दी। उमर (रज़ि.) ने सुनकर कहा, उन ऊँटों के बाद फिर तुम्हारे पास बाक़ी क्या रह जाएगा? (क्योंकि उन्हीं पर सवार होकर इतनी दूर दराज़ की मसाफ़त भी तो तै करनी थी) उसके बाद उमर (रज़ि.) नबी करीम

٢٩٨٢- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مَرْحُومٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَفَّتْ أَزْوَادُ النَّاسِ وَأَمْلَقُوا، فَأَتَوا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَحْرِ إِبِلِهِمْ، فَأَذِنَ لَهُمْ، فَلَقِيَهُمْ عُمَرُ فَأَخْبَرُوهُ، فَقَالَ: مَا بَقَاؤُكُمْ بَعْدَ إِبِلِكُمْ؟ فَدَخَلَ عُمَرُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ، مَا بَقَاؤُهُمْ بَعْدَ إِبِلِهِمْ؟ قَالَ

رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((نَادِ فِي النَّاسِ يَأْتُونَ بِفَضْلِ أَزْوَادِهِمْ، فَدَعَا وَبَرَّكَ عَلَيْهِ، ثُمَّ دَعَاهُمْ بِأَوْعِيَتِهِمْ فَاحْتَثَى النَّاسُ حَتَّى فَرَغُوا، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللهِ)).

[راجع: ٢٤٨٤]

(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! लोग अगर अपने ऊँट भी ज़िब्ह कर देंगे। तो फिर उसके बाद उनके पास बाक़ी क्या रह जाएगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर लोगों में ऐलान कर दो कि (ऊँटों को ज़िब्ह करने के बजाय) अपना बचा खुचा तौशा लेकर यहाँ आ जाएँ। (सब लोगों ने जो कुछ भी उनके पास खाने की चीज़ बाक़ी बच गई थी, आँहज़रत ﷺ के सामने लाकर रख दी) आप (ﷺ) ने दुआ की और उसमें बरकत हुई। फिर सबको उनके बर्तनों के साथ आपने बुलाया। सबने भर-भरकर उसमें से लिया और जब सब लोग फ़ारिग़ हो गये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा और कोई मा'बूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ। (राजेअ : 2484)

तश्रीह : ये मुअजज़ा देखकर ख़ुद आप (ﷺ) ने अपनी रिसालत पर गवाही दी, मुअजज़ा अल्लाह पाक की तरफ़ से होता है जिसे वो अपने रसूलों की सदाक़त ज़ाहिर करने के लिये उनके हाथों से दिखलाया करता है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये इसलिये फ़र्माया कि तमाम ऊँट ज़िबह कर दिये जाते तो फिर फौजी मुसलमान सवारी किस पर करते और सारा सफ़र पैदल करना मुश्किल था। ये मश्वरा सहीह था इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उसे कुबूल किया और बाद में सारे फौजियों के राशन को जो बाक़ी रह गया था आप (ﷺ) ने इकट्ठा कराकर बरकत की दुआ की और अल्लाह ने उसमें इतनी बरकत दी कि सारे फौजियों को काफ़ी हो गया।

मुअजज़ा का वजूद बरहक़ है। मगर ये अल्लाह की मर्ज़ी पर है वो जब चाहे अपने मक़्बूल बन्दों के हाथों ये दिखलाए। ख़ुद रसूलों को अपने तौर पर उसमें कोई इख़्तियार नहीं है। **ज़ालिका फ़ज़्लुल्लाहि युअतीहि मय्यशाउ.**

इस हदीष के तहत हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं, **व फिल्हदीषि हुस्नु खल्क़ि रसूलिल्लहि (ﷺ) व इजाबतुहू इला मा यल्तमिसु मिन्हु अस्हाबुहू व इज्राएहू अलल्आदतिल बशिय्यति फिल्इहतियाजि इलज़्ज़ादि फिस्सफ़रि व मन्क़बतुन ज़ाहिरतुन लिउमर दाल्लतुन अला क़ुव्वतिन यक़ीनिय्यतिन बिइजाबति दुआइर्रसूलि (ﷺ) व अला हुस्नि नज्रिही लिल्मुस्लिमीन अला अन्नहू लैस फी इजाबतिन्नबिय्यि (ﷺ) लहुम अला नहरि इबिलिहिम मा यन्हतिमु अन्नहुम यब्क़ून बिला ज़हरिन लिइहतिमालि अंय्यब्अषल्लाहु लहुम मा यहमिलहुम मिन ग़नीमतिन व नहबिहा लाकिन अजाब उमरू इला मा अशर बिही लितअजीलिल्मुअजज़ति बिल्बर्कतिल्लती हसलत फ़िल्तआमि व क़द वक़अ लिउमर शबीहुन बिहाज़िहिल्क़िस्सति फिल्माइ व ज़ालिक फीमा अख़रजहू इब्नु अबी ख़ुज़ैमत व गैरुहू व सतातिल्इशारतु इलैहि फी अलामातिन्नुबुव्वति.** (फ़त्हुल बारी) या'नी इस हदीष से आँहज़रत (ﷺ) के अख़्लाक़े फ़ाज़िला (श्रेष्ठ आचरण) पर रोशनी पड़ती है और इस पर भी कि आप (ﷺ) सहाबा किराम (रज़ि.) के किसी भी बारे में इल्तिमास करने पर फ़ौरन तवज्जह फ़र्माते और सफ़र में तौशा राशन वग़ैरह हाजाते इंसानी का उनके लिये पूरा पूरा ख़्याल रखते थे। इससे हज़रत उमर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी षाबित हुई कि उनको आँहज़रत (ﷺ) की दुआओं की कुबूलियत पर किस क़दर यक़ीने कामिल था और मुसलमानों के बारे में उनकी कितनी अच्छी नज़र थी। वो जानते थे कि आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये जो ऊँटों को ज़िबह करने का मश्वरा दिया है ये इस अन्देशा पर है कि उनको ज़िबह करने के बाद भी अल्लाह पाक उनके लिये ग़नीमत वग़ैरह से सवारियों का इंतिज़ाम करा ही देगा। लेकिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) की बरकत की दुआओं के लिये उज्लत फ़र्माई ताकि बतौरे मुअजज़ा खाने में बरकत हासिल हो और ऊँटों को ज़िब्ह करने की नौबत ही न आने पाए। एक दफ़ा पानी के क़िस्से में भी हज़रत उमर (रज़ि.) को उसी के मुशाबेह (मिलता-जुलता) मामला पेश आया था। जिसका इशारा अलामातुन नुबुव्वह में आएगा।

कुछ फ़ुक़हा ने इस ह़दीष़ से इस्तिम्बात किया है कि गिरानी के वक़्त इमाम लोगों के फ़ालतू अनाज के ज़ख़ीरों को बाज़ार में बेचने के लिये हुक्मन निकलवा सकता है। इसलिये कि लोगों के लिये उसी में ख़ैर है न कि अनाज के छुपाकर रखने में ।

बाब 124 : तौशा अपने कँधों पर लादकर ख़ुद ले जाना

١٢٤ - بَابُ حَمْلِ الزَّادِ عَلَى الرِّقَابِ

सफर में ख़ास़ तौर पर जिहाद के सफ़र में हर सिपाही बक़द्रे ज़रूरत राशन अपने साथ रखता है। मुसन्निफ़ (रह.) ने इसी का जवाज़ ष़ाबित फ़र्माया है।

2983. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें वहब बिन कैसान ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम (एक ग़ज़्वा पर) निकले। हमारी ता'दाद तीन सौ थी, हम अपना राशन अपने कँधों पर उठाए हुए थे। आख़िर हमारा तौशा जब (तक़रीबन) ख़त्म हो गया, तो एक शख़्स़ को रोज़ाना स़िर्फ़ एक खजूर खाने को मिलने लगी। एक शागिर्द ने पूछा, ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह! (जाबिर रज़ि.) एक खजूर से भला एक आदमी का क्या बनता है? उन्होंने फ़र्माया कि उसकी क़द्र हमें उस वक़्त मा'लूम हुई जब एक खजूर भी बाक़ी नहीं रह गई थी। उसके बाद हम दरिया पर आए तो एक ऐसी मछली मिली जिसे दरिया ने बाहर फेंक दिया था। और हम अठारह दिन तक ख़ूब जी भरकर उसी को खाते रहे। (राजेअ़ : 2483)

٢٩٨٣ - حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((خَرَجْنَا وَنَحْنُ ثَلاَثُمِائَةٍ نَحْمِلُ زَادَنَا عَلَى رِقَابِنَا، فَفَنِيَ زَادُنَا، حَتَّى كَانَ الرَّجُلُ مِنَّا يَأْكُلُ فِي كُلِّ يَوْمٍ تَمْرَةً. قَالَ رَجُلٌ: يَا أَبَا عَبْدِ اللهِ، وَأَيْنَ كَانَتِ التَّمْرَةُ تَقَعُ مِنَ الرَّجُلِ؟ قَالَ: لَقَدْ وَجَدْنَا فَقْدَهَا حِيْنَ فَقَدْنَاهَا، حَتَّى أَتَيْنَا الْبَحْرَ، فَإِذَا حُوتٌ قَدْ قَذَفَهُ الْبَحْرُ، فَأَكَلْنَا مِنْهُ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ يَوْمًا مَا أَحْبَبْنَا)). [راجع: ٢٤٨٣]

तश्रीह : ग़ालिबन व्हेल जैसी कोई मछली रही होगी जो कुछ दफ़ा अस्सी फीट से सौ फीट तक लम्बी होती है और जो आयाते इलाही में से एक अ़जीब मख़्लूक़ है। अठारह दिन तक स़िर्फ़ उसी मछली पर गुज़ारा करना ये मह़ज़ अल्लाह की तरफ़ से ताईदे ग़ैबी थी। ये रजब 8 हिजरी का वाक़िया है। बाब का मत़लब यूँ ष़ाबित हुआ कि तीन सौ मुजाहिदीन अपना अपना राशन अपने अपने कँधों पर उठाए हुए थे। वो ज़माना भी ऐसी तंगियों का था। न आज जैसा कि हर क़िस्म की सहूलतें मयस्सर हो गई हैं फिर भी कुछ मौक़ों पर सिपाही को अपना राशन ख़ुद उठाना पड़ जाता है।

बाब 125 औ़रत का अपने भाई के पीछे एक ही ऊँट पर सवार होना

١٢٥ - بَابُ إِرْدَافِ الْمَرْأَةِ خَلْفَ أَخِيْهَا

इस बारे में सफ़रे जिहाद को भी सफ़रे हज्ज पर क़यास किया गया है।

2984. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़स़िम ने बयान किया, कहा हमसे उ़ष़्मान बिन अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके अस्ह़ाब हज्ज और उ़मरह दोनों करके वापस जा रहे हैं और मैं स़िर्फ़ हज्ज कर पाई हूँ। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर जाओ (उ़मरह कर आओ) अ़ब्दुर्रह़मान (रज़ि.) (ह़ज़रत आ़इशा

٢٩٨٤ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الأَسْوَدِ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ يَرْجِعُ أَصْحَابُكَ بِأَجْرِ حَجٍّ وَعُمْرَةٍ، وَلَمْ أَزِدْ عَلَى الْحَجِّ؟ فَقَالَ لَهَا:

रज़ि. के भाई) तुम्हें अपनी सवारी के पीछे बिठा लेंगे। चुनाँचे आपने अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) को हुक्म दिया कि तन्ईम से (एहराम बाँधकर) आइशा (रज़ि.) को उमरह करा लाएँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस अ़र्से में मक्का के बालाई इलाक़े पर उनका इंतिज़ार किया, यहाँ तक कि वो आ गईं। (राजेअ़ : 294)

((اذْهَبِي وَلْيُرْدِفْكِ عَبْدُ الرَّحْمَنِ)). فَأَمَرَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ أَنْ يُعمِرَهَا مِنَ التَّنْعِيْمِ. فَانْتَظَرَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بِأَعْلَى مَكَّةَ حَتَّى جَاءَتْ)). [راجع: ٢٩٤]

2985. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़यैना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अ़म्र बिन औस ने और उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने बयान किया मुझे नब करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि अपनी सवारी पर अपने पीछे हज़रत आइशा (रज़ि.) को बिठा ले जाऊँ, और तन्ईम से (एहराम बाँधकर) उन्हें उमरह करा लाऊँ। (राजेअ़ : 1784)

٢٩٨٥ - حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَوْسٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَمَرَنِي النَّبِيُّ ﷺ أَنْ أُرْدِفَ عَائِشَةَ وَأُعْمِرَهَا مِنَ التَّنْعِيْمِ)). [راجع: ١٧٨٤]

उस मौक़े पर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र ने अपने मुहतरमा बहन हज़रत आइशा (रज़ि.) को सवारी पर पीछे बिठाया। इससे बाब का मक़्सद षाबित हुआ। पहली ह़दीष़ में मज़ीद तफ़्सील भी मज़्कूर हुई।

बाब 126 : जिहाद और हज्ज के सफ़र में दो आदमियों का एक सवारी पर बैठना

١٢٦ - بَابُ الإِرْتِدَافِ فِي الْغَزْوِ وَالْحَجِّ

2986. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अबू त़लहा (रज़ि.) की सवारी पर उनके पीछे बैठा हुआ था। तमाम स़हाबा हज्ज और उमरह ही के लिये एक साथ लब्बैक कह रहे थे। (राजेअ़ : 1089)

٢٩٨٦ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنْتُ رَدِيْفَ أَبِي طَلْحَةَ، وَإِنَّهُمْ لَيَصْرُخُونَ بِهِمَا جَمِيْعًا: الْحَجِّ، وَالْعُمْرَةِ)). [راجع: ١٠٨٩]

बाब 127 : एक गधे पर दो आदमियों का सवार होना

١٢٧ - بَابُ الرِّدْفِ عَلَى الْحِمَارِ

2987. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू स़फ़्वान ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने, उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) एक गधे पर उसकी पालान रखकर सवार हुए। जिस पर एक चादर बिछी हुई थी और उसामा (रज़ि.) को आपने अपने पीछे बिठा रखा था।

٢٩٨٧ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو صَفْوَانَ عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيْدَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ عَلَى إِكَافٍ عَلَيْهِ

(दीगर मक़ाम : 4566, 5663, 5964)

قَطِيفَةٌ، وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ وَرَاءَهُ)).

[أطرافه في: ٤٥٦٦، ٥٦٦٣، ٥٩٦٤، ٦٢٠٧].

मा'लूम हुआ कि एक गधे पर दो आदमी सवार हो सकते हैं, बशर्ते कि वो ताक़तवर हो लफ़्ज़ इकाफ़ गधे के पालान के लिये इसी तरह इस्ते'माल किया गया है जिस तरह घोड़े के लिये लफ़्ज़ सरजुन का इस्ते'माल होता है।

2988. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि फ़तहे मक्का के मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) मक्का के बालाई इलाक़े से अपनी सवारी पर तशरीफ़ लाए। उसामा (रज़ि.) को आपने अपनी सवारी पर पीछे बिठा रखा था और आपके साथ बिलाल (रज़ि.) भी थे और उ़ष्मान बिन तलहा (रज़ि.) भी जो का'बा के कलीद बरदार (चाबी रखने वाले) थे। आँहज़रत (ﷺ) ने मस्जिदुल हराम में अपनी सवारी बिठा दी और उ़ष्मान (रज़ि.) से कहा कि बैतुल हराम की कुँजी लाएँ। उन्होंने का'बा का दरवाज़ा खोल दिया और रसूले करीम (ﷺ) अंदर दाख़िल हो गये। आप (ﷺ) के साथ उसामा, बिलाल और उ़ष्मान (रज़ि.) भी थे। आप काफ़ी देर तक अंदर ठहरे रहे। और जब बाहर तशरीफ़ लाए तो सहाबा ने (अंदर जाने के लिये) एक-दूसरे से आगे होने की कोशिश की सबसे पहले अंदर दाख़िल होने वाले अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) थे। उन्होंने बिलाल (रज़ि.) को दरवाज़े के पीछे खड़ा पाया और उनसे पूछा कि आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ कहाँ पढ़ी है? उन्होंने उस जगह की तरफ़ इशारा किया जहाँ आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी थी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे ये पूछना याद नहीं रहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने कितनी रकअ़तें पढ़ी थीं। (राजेअ : 397)

٢٩٨٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْبَلَ يَوْمَ الْفَتْحِ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ عَلَى رَاحِلَتِهِ مُرْدِفًا أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ وَمَعَهُ بِلاَلٌ وَمَعَهُ عُثْمَانُ بْنُ طَلْحَةَ مِنَ الْحَجَبَةِ حَتَّى أَنَاخَ فِي الْمَسْجِدِ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَأْتِيَ بِمِفْتَاحِ الْبَيْتِ، فَفَتَحَ وَدَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ أُسَامَةُ وَبِلاَلٌ وَعُثْمَانُ، فَمَكَثَ فِيهَا نَهَارًا طَوِيلاً، ثُمَّ خَرَجَ فَاسْتَبَقَ النَّاسُ، وَكَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ أَوَّلَ مَنْ دَخَلَ، فَوَجَدَ بِلاَلاً وَرَاءَ الْبَابِ قَائِمًا فَسَأَلَهُ أَيْنَ صَلَّى رَسُولُ اللهِ فَأَشَارَ إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي صَلَّى فِيهِ. فَقَالَ عَبْدُ اللهِ: فَنَسِيتُ أَنْ أَسْأَلَهُ: كَمْ صَلَّى مِنْ سَجْدَةٍ)).

[راجع: ٣٩٧]

तश्रीह : बाब का तर्जुमा इससे निकला कि रसूले करीम (ﷺ) ने ऊँटनी पर अपने पीछे हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को भी बिठा रखा था। ऊँटनी भी एक जानवर है जब इस पर दो सवारी का सवार होना षाबित हुआ तो गधे को भी इस पर क़यास किया जा सकता है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस हदीष को कई जगह लाए हैं और इससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात फ़र्माया है जैसा कि अपने अपने मुक़ाम पर बयान हुआ है। यही अपके मुज्तहिदे मुत्लक़ होने की अहम दलील है और ये अम्र रोज़े-रोशन की तरह षाबित है कि एक मुज्तहिदे मुत्लक़ के लिये जिन शराइत का होना ज़रूरी है वो सब आपकी ज़ाते-गिरामी में बदर्ज-ए-अतम पाई जाती हैं। अल्लाह सारे मुज्तहिदीने किराम को जज़ाए ख़ैर दे जिन्होंने ख़िदमते इस्लाम के लिये अपने आपको पूरी तरह वक़्फ़ कर दिया था, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अर्ज़ाहु। हदीष में लफ़्ज़ **हजबतुन** हाजिब की जमा है जो

दरबान के लिये बोला जाता है। का'बा शरीफ़ के कलीद बरदार और दरबान यही ख़ानदान चला आ रहा है।

भुज के इलाक़े कच्छ के तारीख़ी दौरे अज़ मई ता 8 जून 1971 ईस्वी के दौरान इस पारे की ह़दीष़ 2948 और 2988 तक तस्वीद व तब्यीज़ की गई, अल्लाह पाक ख़िदमते ह़दीष़ को तमाम भाइयों, उन शाऐक़ीने बुख़ारी शरीफ़ के ह़क़ में बतौरे सदक़-ए-जारिया क़ुबूल फ़र्माए आमीन।

बाब 128 : जो रकाब पकड़कर किसी को सवारी पर चढ़ा दे या कुछ ऐसी ही मदद करे, उसका ष़वाब

١٢٨- بَابُ مَنْ أَخَذَ بِالرِّكَابِ وَنَحْوِهِ

2989. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, इंसान के हर एक जोड़ पर स़दक़ा लाज़िम होता है। हर दिन जिसमें सूरज तुलूअ़ होता है। फिर अगर वो इंसानों के दरम्यान इंसाफ़ करे तो ये भी एक स़दक़ा है और किसी को सवारी के मामले में अगर मदद पहुँचाए, इस त़रह पर कि उसे उस पर सवार कराए या उसका सामान उठाकर रख दे तो ये भी स़दक़ा है और अच्छी बात मुँह से निकालना भी स़दक़ा है और हर क़दम जो नमाज़ के लिये उठता है वो भी स़दक़ा है और अगर कोई रास्ते से किसी तकलीफ़ देने वाली चीज़ को हटा दे तो ये भी एक स़दक़ा है। (राजेअ़ : 2707)

٢٩٨٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كُلُّ سُلاَمَى مِنَ النَّاسِ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ كُلَّ يَوْمٍ تَطْلُعُ فِيْهِ الشَّمْسُ: يَعْدِلُ بَيْنَ الاِثْنَيْنِ صَدَقَةٌ، وَيُعِيْنُ الرَّجُلَ عَلَى دَابَّتِهِ فَيَحْمِلُ عَلَيْهَا- أَوْ يَرْفَعُ عَلَيْهَا مَتَاعَهُ- صَدَقَةٌ، وَالْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ خَطْوَةٍ يَخْطُوهَا إِلَى الصَّلاَةِ صَدَقَةٌ وَيُمِيْطُ الأَذَى عَنِ الطَّرِيْقِ صَدَقَةٌ)) [راجع: ٢٧٠٧]

चूँकि इस ह़दीष़ में स़दक़ात के बयान के तहत किसी इंसान की सवारी के सिलसिले में कोई मुम्किन मदद करना भी मज़्कूर हुआ है इसलिये इस रिवायत को इस बाब के ज़ैल में लाया गया। इस ह़दीष़ से ये भी ष़ाबित हुआ कि हर मुसलमान के लिये लाज़िम है कि वो रोज़ाना अपने हर जोड़ की सलामती के शुक्रिये में कुछ न कुछ कारे ख़ैर ज़रूर करता रहे। लफ़्ज़े सुलामा आदमी का हर जोड़ और उँगली के पोर मुराद हैं। कुछ ने कहा कि हर जोफ़दार हड्डी को सुलामा कहा जाता है वाह़िद और जमा के लिये यही लफ़्ज़ है। कुछ ने इसे लफ़्ज़े सलामिया की जमा कहा है।

बाब 129 : मुस्ह़फ़ या'नी लिखा हुआ क़ुर्आन शरीफ़ लेकर दुश्मन के मुल्क में जाना मना है

١٢٩- بَابُ السَّفَرِ بِالْمَصَاحِفِ إِلَى أَرْضِ الْعَدُوِّ

दुश्मन से मुराद वो मुल्क है जिसकी हुकूमत इस्लामी हुकूमत से इस्लाम के ख़िलाफ़ बर-सरे-पैकार हो जिसे दारुल ह़रब (दुश्मान देश) कहा जाता है।

और मुह़म्मद बिन बिश्र से इसी त़रह मरवी है। वो उ़बैदुल्लाह से रिवायत करते हैं, वो नाफ़ेअ़ से वो इब्ने उ़मर (रज़ि.) से और वो नबी करीम (ﷺ) से और उ़बैदुल्लाह के साथ इस ह़दीष़ को मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने भी नाफ़ेअ़ से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से रिवायत किया है और ख़ुद नबी करीम (ﷺ) ने अपने स़ह़ाबा के साथ

وَكَذَلِكَ يُرْوَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ بِشْرٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَتَابَعَهُ ابْنُ إِسْحَاقَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَدْ سَافَرَ النَّبِيُّ ﷺ

दुश्मनों के इलाक़े में सफ़र किया, हालाँकि वो सब हज़रात क़ुर्आन मजीद के आलिम थे।

وَأَصْحَابُهُ فِي أَرْضِ الْعَدُوِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ الْقُرْآنَ.

तश्रीह : इससे हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ये ग़र्ज़ नहीं है कि मुस्हफ़ का दुश्मन के मुल्क में ले जाना जाइज़ है क्योंकि मुस्हफ़ की बात और है और हाफ़िज़े क़ुर्आन का दुश्मन के मुल्क में जाना तो किसी ने मना नहीं रखा है। पस ऐसा इस्तिदलाल हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की शान से बईद है। बल्कि ग़र्ज़ इमाम बुख़ारी (रह.) की ये है कि बाब की हदीष़ में जो क़ुर्आन को लेकर दुश्मन के मुल्क में सफ़र करने में मना किया है उससे मुराद मुस्हफ़ है या'नी लिखा हुआ क़ुर्आन; न कि वो क़ुर्आन जो हाफ़िज़ों के सीने में होता है। (वहीदी)

आज दुनिया का कोई मुल्क ऐसा नहीं है जहाँ किसी न किसी सूरत में क़ुर्आन मजीद न पहुँचा हो और ये क़ुर्आन मजीद के लिये फ़तहे मुबीन है जो बिफ़ज़्लिही तआला हासिलशुदा है।

2990. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुश्मन के इलाक़े में क़ुर्आन मजीद लेकर जाने से मना किया था।

٢٩٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى أَنْ يُسَافَرَ بِالْقُرْآنِ إِلَى أَرْضِ الْعَدُوِّ)).

दुश्मन के इलाक़ों में क़ुर्आन पाक लेकर जाने से इसलिये रोका ताकि उसकी बेहुर्मती न हो, क्योंकि जंग वग़ैरह के मौक़ों पर हो सकता है कि क़ुर्आन मजीद दुश्मन के हाथ लग जाए और वो उसकी तौहीन करें। कुछ दुश्मनाने-इस्लाम की तरफ़ से ऐसे वाक़ियात अब भी होते रहते हैं। कि अगर क़ुर्आन मजीद उनके हाथ लग जाए तो वो बेहुर्मती में कोई कसर नहीं छोड़ते, हालाँकि ये हरकत अख़्लाक़ व शराफ़त से बहुत ही दूर है। जिस किताब को दुनिया के करोड़ों लोग अपनी मज़हबी मुक़द्दस किताब मानते हैं, उसकी इस तौर बेहुर्मती करना गोया दुनिया के करोड़ों इंसानों का दिल दुखाना है। ऐसे गुस्ताख़ लोग किसी न किसी शक्ल में अपनी हरकतों की सज़ा भुगतते रहते हैं जैसा कि मुशाहिदा है। इस्लाम की पाकीज़ा ता'लीम ये है कि किसी भी आसमानी मज़हबी किताब का एहतिराम ज़रूरी है जो उसकी हद के अंदर ही होना चाहिये बशर्ते कि वो किताब आसमानी किताब हो।

बाब 130 : जंग के वक़्त नारा-ए-तक्बीर बुलन्द करना

١٣٠- بَابُ التَّكْبِيرِ عِنْدَ الْحَرْبِ

2991. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि सुबह हुई तो नबी करीम (ﷺ) ख़ैबर में दाख़िल थे। इतने में वहाँ के रहने वाले (यहूदी) फावड़े अपनी गर्दनों पर लिये हुए निकले। जब आँहज़रत (ﷺ) को (आपके लश्कर के साथ) देखा तो चिल्ला उठे कि ये मुहम्मद लश्कर के साथ (आ गये), मुहम्मद लश्कर के साथ, मुहम्मद लश्कर के साथ! (ﷺ) चुनाँचे उन सब ने भागकर क़िले में पनाह ले ली। उस वक़्त नबी करीम (ﷺ) ने अपने हाथ उठाए और नारा-ए-तक्बीर

٢٩٩١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَبَّحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ وَقَدْ خَرَجُوا بِالْمَسَاحِي عَلَى أَعْنَاقِهِمْ، فَلَمَّا رَأَوْهُ قَالُوا: مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ، مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ. مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ فَلَجَؤُوا إِلَى الْحِصْنِ. فَرَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيْهِ وَقَالَ:

اللهُ أَكْبَرُ، خَرِبَتْ خَيْبَرُ، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ. وَأَصَبْنَا حُمُرًا فَطَبَخْنَاهَا، فَنَادَى مُنَادِي النَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ اللهَ وَرَسُولَهُ يَنْهَيَانِكُمْ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ. فَأُكْفِئَتِ الْقُدُورُ بِمَا فِيهَا)). تَابَعَهُ عَلِيٌّ عَنْ سُفْيَانَ ((رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيْهِ)).

[راجع: ٣٧١]

बुलन्द किया, साथ ही इर्शाद हुआ कि ख़ैबर तो तबाह हो चुका। कि जब किसी क़ौम के आंगन में हम उतर आते हैं तो डराए हुए लोगों की सुबह मन्हूस हो जाती है। और अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हमको गधे मिल गये, और हमने उन्हें ज़िब्ह करके पकाना शुरू कर दिया था कि नबी करीम (ﷺ) के मुनादी ने ये पुकारा कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) तुम्हें गधे के गोश्त से मना करते हैं। चुनाँचे हाँडियों में जो कुछ था, सब उलट दिया गया। इस रिवायत की मुताबअ़त अ़ली ने सुफ़यान से की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने दोनों हाथ उठाए थे। (राजेअ़ : 371)

तश्रीह : रसूले करीम (ﷺ) ने ख़ैबर में दाख़िल होते वक़्त नारा-ए-तक्बीर बुलन्द किया, इससे बाब का मत़लब ष़ाबित हुआ। हर मुनासिब मौक़े पर शौकते इस्लाम के इज़्हार के लिये नारा-ए-तक्बीर बुलन्द करना इस्लामी शिआ़र है। मगर स़द अफ़सोस कि आजकल के बेशतर नामोनिहाद मुसलमानों ने इस पाक नारे की अहमियत घटाने के लिये नारा-ए-रिसालत, या रसूलल्लाह। नारा-ए-गोशिया या शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी जैसे शिर्किया नारे ईजाद करके शिर्क व बिदअ़त का ऐसा दरवाज़ा खोल दिया है जो ता'लीमाते इस्लाम के सरासर बरअ़क्स (विपरीत) है। अल्लाह उनको हिदायत नस़ीब फ़र्माए।

ऐसे नारे लगाना शिर्क का इर्तिकाब करना है जिनसे अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और औलिया की भी नाफ़र्मानी होती है। मगर मुसलमाननुमा मुश्रिकों ने उनको मुह़ब्बते रसूल (ﷺ) और मुह़ब्बते औलिया से ता'बीर किया है जो सरासर शैत़ानी धोखा और उनके नफ़्से अम्मारा का फ़रेब है।

١٣١ - بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنْ رَفْعِ الصَّوْتِ فِي التَّكْبِيرِ

बाब 131 : बहुत चिल्लाकर तक्बीर कहना मना है

٢٩٩٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَكُنَّا إِذَا أَشْرَفْنَا عَلَى وَادٍ هَلَّلْنَا وَكَبَّرْنَا، ارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُنَا. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ، ارْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ، فَإِنَّكُمْ لاَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا، إِنَّهُ مَعَكُمْ، إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ، تَبَارَكَ اسْمُهُ، وَتَعَالَى جَدُّهُ)).

[أطرافه في: ٤٢٠٥، ٦٣٨٤، ٦٤٠٩، ٦٦١٠، ٧٣٨٦].

2992. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैयना ने बयान किया, उनसे आ़स़िम ने, उनसे अबू उ़ष़्मान ने, उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे। जब हम किसी वादी में उतरते तो ला इलाहा इल्लल्लाहु और अल्लाहु अकबर कहते और हमारी आवाज़ बुलन्द हो जाती इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ लोगों! अपनी जानों पर रह़म खाओ क्योंकि तुम किसी बहरे या ग़ायब अल्लाह को नहीं पुकार रहे हो। वो तो तुम्हारे साथ ही है। बेशक वो सुनने वाला और तुमसे बहुत क़रीब है। बरकतों वाला है। उसका नाम और उसकी अ़ज़्मत बहुत ही बड़ी है। (दीगर मक़ाम : 4205, 6384, 6409, 6610, 7386)

तश्रीह : क़स्तलानी ने त़बरी से नक़ल किया कि इस ह़दीष़ से ज़िक्र बिल जहर की कराहियत ष़ाबित हुई और अकष़र सलफ़ स़ह़ाबा और ताबेईन का यही क़ौल है। मैं (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम) कहता हूँ तह़क़ीक़ इस बाब में ये है कि सुन्नत की पैरवी करना चाहिये जहाँ जहर आँह़ज़रत (ﷺ) से मन्क़ूल है वहाँ जहर करना बेहतर है। जैसे अज़ान में और बाक़ी मुक़ामों में आहिस्ता ज़िक्र करना बेहतर है। कुछ ने कहा इस ह़दीष़ में जिस जहर से आप (ﷺ) ने मना किया वो बहुत ज़ोर का जहर है जिससे लोग परेशान हों, न जहरे मुतसव्वित़, बिल जुम्ला बहुत ज़ोर से नारे मारना और ज़रबें लगाना जैसा कि कुछ दरवेशों का मा'मूल है, सुन्नत के ख़िलाफ़ है और ह़ज़रत (ﷺ) की पैरवी उन पीरों की पैरवी पर मुक़द्दम है। (वह़ीदी)

मगर इस्लमी शान-शौकत के इज़्हार के लिये जंग जिहाद वग़ैरह मौक़ों पर नारा-ए-तक्बीर बुलन्द करना ये अम्र दीगर है जैसा कि पीछे मज़्कूर हुआ। रिवायत में अल्लाह के साथ होने से मुराद ये है कि वो हर वक़्त तुम्हारी हर बुलन्द और आहिस्ता आवाज़ को सुनता है और तुमको हर वक़्त देख रहा है। वो अपनी ज़ात व सिफ़ात से अर्शे अ़ज़ीम पर मुस्तवी है। मगर अपने इ़ल्म और सिवअ़ (सुनने) के लिहाज़ से हर इंसान के साथ है।

बाब 132 : किसी नशेब (ढलान वाली) जगह में उतरते वक़्त सुब्ह़ानल्लाह कहना

١٣٢ - بَابُ التَّسْبِيحِ إِذَا هَبَطَ وَادِيًا

2993. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे ह़ुसैन बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने उनसे सालिम बिन अबी अल जअ़दि ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम (किसी बुलन्दी पर) चढ़ते, तो अल्लाहु अकबर कहते और जब (किसी नशीब में) उतरते तो सुब्ह़ानल्लाह कहते थे। (दीगर मक़ाम : 2994)

٢٩٩٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سَالِمِ ابْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا إِذَا صَعِدْنَا كَبَّرْنَا، وَإِذَا نَزَلْنَا سَبَّحْنَا)).[طرفه في : ٢٩٩٤].

कोई भी सफ़र हो, रास्ते में नशेबो-फ़राज़ (चढ़ाई और ढलान) अकष़र आते ही रहते हैं। लिहाज़ा इस हिदायते पाक को मद्देनज़र रखना ज़रूरी है। यहाँ सफ़रे जिहाद के लिये इस अम्र का मशरूअ़ होना मक़्सूद है।

बाब 133 : जब बुलन्दी पर चढ़े तो अल्लाहु अकबर कहना

١٣٣ - بَابُ التَّكْبِيرِ إِذَا عَلاَ شَرَفًا

2994. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अ़दी ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़ुसैन ने, उनसे सालिम ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम बुलन्दी पर चढ़ते तो अल्लाहु अकबर कहते और नशीब मे उतरते तो सुब्ह़ानल्लाह कहते थे। (राजेअ़ : 2993)

٢٩٩٤ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ ((كُنَّا إِذَا صَعِدْنَا كَبَّرْنَا، وَإِذَا تَصَوَّبْنَا سَبَّحْنَا)). [راجع: ٢٩٩٣]

2995. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, उनसे सालेह़ बिन कैसान ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम

٢٩٩٥ - حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ

الله بن عُمَرَ رَضِيَ الله عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا قَفَلَ مِنَ الْحَجِّ أَوِ الْعُمْرَةِ - وَلاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ قَالَ: الْغَزْوِ - يَقُولُ كُلَّمَا أَوْفَى عَلَى ثَنِيَّةٍ أَوْ فَدْفَدٍ كَبَّرَ ثَلاَثًا ثُمَّ قَالَ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ)). آيِبُونَ، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ، سَاجِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ. صَدَقَ الله وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ)). قَالَ صَالِحٌ : فَقُلْتُ لَهُ أَلَمْ يَقُلْ عَبْدُ الله، إِنْ شَاءَ الله؟ قَالَ: لاَ)).

[راجع: ١٧٩٧]

(ﷺ) हज्ज या उमरह से वापस होते जहाँ तक मैं समझता हूँ यूँ कहा जब आप जिहाद से लौटते, तो जब भी आप किसी बुलन्दी पर चढ़ते या (नशीब से) कंकरीले मैदान में आते तो तीन बार अल्लाहु अकबर कहते। फिर फ़र्माते, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वो एक है। उसका कोई शरीक नहीं। मुल्क उसका है और तमाम ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं और वो हर काम पर क़ुदरत रखता है। हम वापस हो रहे हैं तौबा करते हुए, इबादत करते हुए। अपने रब की बारगाह में सज्दा-रेज़ होते और उसकी हम्द पढ़ते हुए, अल्लाह ने अपना वा'दा सच कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की और तन्हा (कुफ़्फ़ार की) तमाम जमाअतों को शिकस्त दे दी। सालेह ने कहा कि मैंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से पूछा क्या अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने लफ़्ज़े आइबून के बाद इंशाअल्लाह नहीं कहा था तो उन्होंने बताया कि नहीं। (राजेअ : 1797)

रसूले करीम (ﷺ) ने हम्दे मज़्कूरा में सदक़ल्लाहु वअदहू अल्ख़ के अल्फ़ाज़ ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर इर्शाद फ़र्माए थे, और हज्जतुल विदाअ से वापसी पर भी जबकि इस्लाम को फ़तहे कामिल हो चुकी थी अब भी उन पाक अय्याम की याद ताज़ा करने के लिये उन जुम्ला कलिमाते तय्यिबात को ऐसे मुबारक मौक़ों पर पढ़ा जा सकता है। लफ़्ज़े मुबारक इंशाअल्लाह का ता'ल्लुक़ मुस्तक़्बिल के साथ है न कि माज़ी के इसीलिये इस मौक़े पर जो माज़ी के बारे में था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने लफ़्ज़ इंशाअल्लाह नहीं कहा।

١٣٤- بَابُ يُكْتَبُ لِلْمُسَافِرِ مَا كَانَ يَعْمَلُ فِي الإِقَامَةِ

बाब 134 : मुसाफ़िर को उस इबादत का जो वो घर में रहकर किया करता था षवाब मिलना (गो वो सफ़र में न कर सके)

٢٩٩٦- حَدَّثَنَا مَطَرُ ابْنُ الْفَضْلِ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ هَارُونَ قَالَ حَدَّثَنَا الْعَوَّامُ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ أَبُو إِسْمَاعِيْلَ السَّكْسَكِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا بُرْدَةَ وَاصْطَحَبَ هُوَ وَيَزِيْدُ بْنُ أَبِي كَبْشَةَ فِي سَفَرٍ فَكَانَ يَزِيْدُ يَصُومُ فِي السَّفَرِ، فَقَالَ لَهُ أَبُو بُرْدَةَ: سَمِعْتُ أَبَا مُوسَى مِرَارًا يَقُولُ: ((قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: إِذَا مَرِضَ الْعَبْدُ أَوْ سَافَرَ كُتِبَ لَهُ مِثْلُ مَا كَانَ يَعْمَلُ

2996. हमसे मतर बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अवाम बिन हौशिब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम अबू इस्माईल सकसकी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू बुर्दा बिन अबी मूसा से सुना, वो और यज़ीद बिन अबी कब्शा एक सफ़र मे साथ थे और यज़ीद सफ़र की हालत में भी रोज़ा रखा करते थे। अबू बुर्दा ने कहा कि मैंने (अपने वालिद) अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) से बारहा सुना। वो कहा करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब बन्दा बीमार होता है या सफ़र करता है तो उसके लिये उन तमाम इबादतों का षवाब लिखा जाता है जिन्हें इक़ामत

या स़िह़त के वक़्त वो किया करता था।

مُقِيمًا صَحِيحًا)).

तश्रीह : बाब में मुसाफ़िर से सफ़रे जिहाद का मुसाफ़िर मुराद है। उसके बाद हर नेक सफ़र का मुसाफ़िर जिससे मजबूरी की वजह से बहुत से नवाफ़िल, विर्द, वज़ाइफ़, नमाज़े तहज्जुद वग़ैरह तर्क हो जाती हैं। ये अल्लाह का फ़ज़्ल है कि ऐसे मुसाफ़िर के लिये इन सारे आमाले स़ालिह़ा नाफ़िला का ष़वाब मिलता रहता है। जो वो ह़ालते ह़ज़र में करता रहता था और अब ह़ालते सफ़र में वो अमल उससे तर्क हो गये। मुसलमान मरीज़ के लिये भी यही हुक्म है। ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जो उम्मते मुह़म्मदिया की ख़ुसूस़ियात में से है। ये अल्लाह का मह़ज़ फ़ज़्ल है कि सफ़र व ह़ज़र हर जगह मुझ नाचीज़ का अमल तस्वीदे बुख़ारी शरीफ़ जारी रहता है। जिसे मैं नफ़्ली इ़बादत की जगह अदा करता रहता हूँ। अल्लाह क़ुबूल करे और ख़ुलूस अ़त़ा करे आमीन।

बाब 135 : अकेले सफ़र करना

١٣٥ - بَابُ السَّيْرِ وَحْدَهُ

2997. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया, कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना। वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने (एक काम के लिये) ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर स़ह़ाबा को पुकारा, तो ज़ुबैर (रज़ि.) ने उसके लिये कहा कि मैं ह़ाज़िर हूँ। फिर आप (ﷺ) ने स़ह़ाबा को पुकारा, और इस बार भी ज़ुबैर (रज़ि.) ने अपने को पेश किया, आप (ﷺ) ने फिर पुकारा और फिर ज़ुबैर (रज़ि.) ने अपने को पेश किया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आख़िर फ़र्माया कि हर नबी के ह़वारी होते हैं और मेरे ह़वारी ज़ुबैर हैं। सुफ़यान ने कहा कि ह़वारी के मा'नी मुआ़विन मददगार के हैं (या वफ़ादार महरमे राज़ को ह़वारी कहा गया है)। (राजेअ़ : 2846)

٢٩٩٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: نَدَبَ النَّبِيُّ ﷺ النَّاسَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ ثُمَّ نَدَبَهُمْ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ، ثُمَّ نَدَبَهُمْ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًا وَحَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ)). قَالَ سُفْيَانُ: الْحَوَارِيُّ النَّاصِرُ. [راجع: ٢٨٤٦]

तश्रीह : कुछ ने कहा ह़ज़रत ईसा (अलै.) के मानने वालों को ह़वारी इस वजह से कहते कि वो सफ़ेद पोशाक पहनते थे। क़तादा ने कहा ह़वारी वो जो ख़िलाफ़त के लायक़ हो या वज़ीर बा तदबीर हो। इस ह़दीष़ से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मत़लब इस त़रह़ ष़ाबित किया कि ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) अकेले काफ़िरों की ख़बर लाने गये। ये जंगे ख़ंदक़ के बारे में है जिसे जंगे अह़ज़ाब भी कहा गया है। सूरह अह़ज़ाब में उसकी कुछ तफ़्सीलात मज़्कूर हैं और किताबुल मग़ाज़ी में ज़िक्र आएगा।

2998. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे आ़स़िम बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि (दूसरी सनद) हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे आ़स़िम बिन मुह़म्मद बिन ज़ैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जितना मैं जानता हूँ, अगर लोगों को भी अकेले सफ़र (की बुराइयों) के बारे में इतना इ़ल्म होता तो कोई सवार रात में अकेला सफ़र न करता।

٣٠٠٠- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي زَيْدٌ - هُوَ ابْنُ أَسْلَمَ - عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((كُنْتُ مَعَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا بِطَرِيْقِ مَكَّةَ، فَبَلَغَهُ عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ أَبِي عُبَيْدٍ شِدَّةُ وَجَعٍ فَأَسْرَعَ السَّيْرَ، حَتَّى إِذَا كَانَ بَعْدَ غُرُوبِ الشَّفَقِ ثُمَّ نَزَلَ فَصَلَّى الْمَغْرِبَ وَالْعَتَمَةَ يَجْمَعُ بَيْنَهُمَا

अकषर उलमा ने अकेले सफ़र करने को मकरूह रखा है। क्योंकि ह़दीष़ में है कि अकेला मुसाफ़िर शैतान है, और दो शैतान हैं और तीन जमाअ़त हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ इस बाब के लाने से ये है कि ज़रूरत के वक़्त जैसे जासूसी वग़ैरह के लिये अकेले सफ़र करना दुरुस्त है। कुछ ने कहा कि अगर राह में कुछ डर न हो तो अकेले सफ़र करने में कोई क़बाहत नहीं और मुमानअ़त की ह़दीष़ इस पर मह़मूल है जब डर हो (वह़ीदी)। आजकल रेल, मोटर, हवाई जहाज़ के सफ़र भी अगर बसूरते जमाअ़त ही किये जाएँ तो उसके बहुत से फ़वाइद हैं जो तन्हाई की ह़ालत में नहीं हैं। सफ़र में अकेले होना फ़िल वाक़ेअ़ बेह़द तकलीफ़ का मौजिब है ख़्वाह वो सफ़र रेल, मोटर, हवाई जहाज़ का भी क्यों न हो।

बाब 136 : सफ़र में तेज़ चलना

١٣٦- بَابُ السُّرْعَةِ فِي السَّيْرِ

अबू हुमैद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं मदीना जल्दी पहुँचना चाहता हूँ, इसलिये अगर कोई शख़्स मेरे साथ जल्दी चलना चाहे तो चले।

وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((إِنِّي مُتَعَجِّلٌ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَمَنْ أَرَادَ أَنْ يَتَعَجَّلَ مَعِيَ فَلْيَتَعَجَّلْ)).

मक़्सदे बाब ये है कि किसी ख़ास़ ज़रूरत के तह़त सफ़रे जिहाद या सफ़रे ह़ज्ज या आ़म सफ़र में साथियों से कहकर तेज़ी से सफ़र करना और साथियों से आगे चलना मअ़यूब नहीं है।

2999. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) के ह़ज्जतुल विदाअ़ के सफ़र की रफ़्तार के बारे में पूछा कि आँह़ज़रत (ﷺ) किस किस चाल चलते, यह़्या ने कहा उ़र्वा ने ये भी कहा था (कि मैं सुन रहा था) लेकिन मैं उसका कहना भूल गया। ग़र्ज़ उसामा (रज़ि.) ने कहा आप ज़रा तेज़ चलते जब फ़राख़ जगह पाते तो सवारी को दौड़ा देते। नस़ ऊँट की चाल जो अ़नक़ से तेज़ होती है। (राजेअ़ : 1666)

٢٩٩٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي قَالَ: سُئِلَ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا - كَانَ يَحْيَى يَقُولُ: وَأَنَا أَسْمَعُ، فَسَقَطَ عَنِّي - عَنْ مَسِيرِ النَّبِيِّ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ قَالَ: فَكَانَ يَسِيرُ الْعَنَقَ. فَإِذَا وَجَدَ فَجْوَةً نَصَّ. وَالنَّصُّ فَوقَ الْعَنَقِ)). [راجع: ١٦٦٦]

वल्अनकु अस्सैरूस्सहलु वल्फ़ज्वतु अल्फर्जतु बैनश्शीऐन वन्नस़्सु अस्सैरूश्शदीद. (किरमानी)

3000. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा कि मुझे ज़ैद बिन असलम ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के साथ मक्का के रास्ते में था, इतने में उनको स़फ़िया बिन्ते अबी उ़बैद (रज़ि.) (उनकी बीवी) के बारे में सख़्त बीमारी की ख़बर मिली। चुनाँचे आपने तेज़ चलना शुरू कर दिया और जब (सूरज ग़ुरूब होने के बाद) शफ़क़ डूब गई तो आप सवारी से उतरे और मग़रिब और इ़शा की नमाज़ मिलाकर पढ़ी, फिर कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को देखा कि जब आप तेज़ी

٣٠٠٠- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي زَيْدٌ - هُوَ ابْنُ أَسْلَمَ - عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((كُنْتُ مَعَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا بِطَرِيقِ مَكَّةَ، فَبَلَغَهُ عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ أَبِي عُبَيْدٍ شِدَّةُ وَجَعٍ فَأَسْرَعَ السَّيْرَ، حَتَّى إِذَا كَانَ بَعْدَ غُرُوبِ الشَّفَقِ ثُمَّ نَزَلَ فَصَلَّى الْمَغْرِبَ وَالْعَتَمَةَ يَجْمَعُ بَيْنَهُمَا

के साथ सफ़र करना चाहते तो मग़रिब में ताख़ीर करके दोनों नमाज़ें (मग़रिब और इशा) एक साथ अदा फ़र्माते। (राजेअ़ : 1091)

وقال: إنّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ إذَا جَدَّ بِهِ السَّيْرُ أَخَّرَ الْمَغْرِبَ وَجَمَعَ بَيْنَهُمَا)).
[راجع: ١٠٩١]

3001. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबूबक्र के मौला सुमय ने, उन्हें अबू स़ालेह़ ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सफ़र क्या है गोया अ़ज़ाब का एक टुकड़ा है, आदमी की नींद, खाने-पीने सब में रुकावट पैदा करता है। इसलिये जब मुसाफ़िर अपना काम पूरा कर ले तो उसे जल्दी घर वापस आ जाना चाहिये। (राजेअ़ : 1804)

٣٠٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سُمَيٍّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنَ الْعَذَابِ، يَمْنَعُ أَحَدَكُمْ نَوْمَهُ وَطَعَامَهُ وَشَرَابَهُ، فَإِذَا قَضَى أَحَدُكُمْ نَهْمَتَهُ فَلْيُعَجِّلْ إِلَى أَهْلِهِ)). [راجع: ١٨٠٤]

ऊपर बयान हुई अह़ादीष़ में आदाबे सफ़र बतलाया जा रहा है जिनमें सफ़रे जिहाद भी दाख़िल है। वापसी का मामला ह़ालात पर मौक़ूफ़ है। बहरह़ाल फ़राग़त के बाद घर जल्द वापस होना आदाबे सफ़र में से है। गुज़िश्ता ह़दीष़ में अगरचे मग़रिब और इ़शा की नमाज़ को मिलाकर पढ़ने से जमा ताख़ीर मुराद है मगर दूसरी रिवायत की बिना पर जमा तक़्दीम भी जाइज़ है।

बाब 137 : अगर अल्लाह की राह में सवारी के लिये घोड़ा दे फिर उसको बिकता पाये?

١٣٧- بَابُ إِذَا حَمَلَ عَلَى فَرَسٍ فَرَآهَا تُبَاعُ

3002. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने एक घोड़ा अल्लाह के रास्ते में सवारी के लिये दे दिया था, फिर उन्होंने देखा कि वही घोड़ा बिक रहा है। उन्होंने चाहा कि उसे ख़रीद लें। लेकिन जब रसूलुल्लाह (ﷺ) से इजाज़त चाही तो आपने फ़र्माया कि अब तुम उसे न खरीदो, और अपने स़दक़ा को वापस न फेरो। (राजेअ़ : 1489)

٣٠٠٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ حَمَلَ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ، فَوَجَدَهُ يُبَاعُ، فَأَرَادَ أَنْ يَبْتَاعَهُ، فَسَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((لاَ تَبْتَعْهُ، وَلاَ تَعُدْ فِي صَدَقَتِكَ)). [راجع: ١٤٨٩]

ऐसी चीज़ जो बत़ौरे स़दक़ा ख़ैरात किसी को दी जाए उसका वापस क़ीमत देकर भी लेना जाइज़ नहीं है, जैसा कि यहाँ मज़्कूर है।

3003. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने कि मैंने उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि मैंने अल्लाह के रास्ते में एक

٣٠٠٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ،

घोड़ा सवारी के लिये दिया, और जिसे दिया था वो उसे बेचने लगा या (आपने ये फ़र्माया था कि) उसने उसे बिलकुल कमज़ोर कर दिया था। इसलिये मेरा इरादा हुआ कि मैं उसे वापस ख़रीद लूँ, मुझे ये ख़्याल आया कि वो शख़्स सस्ते दामों पर उसे बेच देगा। मैंने उसके बारे में नबी करीम (ﷺ) से जब पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर वो घोड़ा तुम्हें एक दिरहम में मिल जाए फिर भी उसे न ख़रीदना क्योंकि अपने ही सदक़ा को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी क़ै ख़ुद ही चाटता है। (राजेअ : 1490)

فَابْتَاعَهُ - أَوْ فَأَضَاعَهُ - الَّذِي كَانَ عِنْدَهُ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَشْتَرِيَهُ وَظَنَنْتُ أَنَّهُ بَائِعُهُ بِرُخْصٍ، فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((لاَ تَشْتَرِهِ وَإِنْ بِدِرْهَمٍ، فَإِنَّ الْعَائِدَ فِي هِبَتِهِ كَالْكَلْبِ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ)).

[راجع: ١٤٩٠]

बाब 138 : माँ-बाप की इजाज़त लेकर जिहाद में जाना

١٣٨- بَابُ الْجِهَادِ بِإِذْنِ الأَبَوَيْنِ

माँ-बाप की इताअत और उनसे नेक सुलूक करना फ़र्ज़े ऐन है और जिहाद फ़र्ज़े किफ़ाया है। इसलिये जुम्हूर उलमा का क़ौल यही है कि अगर माँ-बाप मुसलमान हों और वो जिहाद की इजाज़त न दें तो जिहाद में जाना हराम है। अगर जिहाद फ़र्ज़े ऐन हो जाए तब माँ-बाप की इजाज़त की ज़रूरत नहीं और दादा, दादी, नाना, नानी का भी हुक्म माँ-बाप का है (वहीदी)। क़ाल जुम्हुरुल उलमा व युहर्रेमुल्जिहाद इज़ा मनअल्बवानि औ अहदुहुमा बिशर्तिन अंय्यकूना मुस्लिमैनि लिअन्न बिर्रहुमा फर्ज़ुन ऐनुन अलैहि वल्जिहादु फर्ज़ुन किफ़ायतुन फइज़ा तअय्यनल्जिहाद फला अज़िन (फ़तह)

3004. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने कहा, हमसे हबीब बिन अबी षाबित ने बयान किया, कहा कि मैंने अबुल अब्बास शायर से सुना, अबुल अब्बास (शायर होने के साथ) रिवायते हदीष में भी षिक़ह और क़ाबिले ए'तिमाद थे, उन्होंने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि एक सहाबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) से जिहाद में शिर्कत की इजाज़त चाही। आपने उनसे पूछा, क्या तुम्हारे माँ-बाप जिन्दा हैं? उन्होंने कहा कि जी हाँ! आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उन हीं में जिहाद करो। (या'नी उनको ख़ुश रखने की कोशिश करो)। (दीगर मक़ाम : 5972)

٣٠٠٤- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا قَالَ شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا حَبِيْبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الْعَبَّاسِ الشَّاعِرَ - وَكَانَ لاَ يُتَّهَمُ فِي حَدِيْثِهِ - قَالَ : سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَسْتَأْذَنَهُ فِي الْجِهَادِ فَقَالَ: ((أَحَيٌّ وَالِدَاكَ؟)) قَالَ: نَعَم. قَالَ: ((فَفِيْهِمَا فَجَاهِدْ)).

[طرفه في : ٥٩٧٢]

या'नी उनकी ख़िदमत बजा लाना यही तेरा जिहाद है। इसी से इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मतलब निकाला कि माँ-बाप की रज़ामन्दी जिहाद में जाने के वास्ते लेना ज़रूरी है क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी ख़िदमत जिहाद पर मुक़द्दम रखी। कहते हैं कि हज़रत उवैस क़र्नी (रह.) की वालिदा ज़ईफ़ा ज़िन्दा थीं और ये उनकी ख़िदमत में मसरूफ़ थे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर न हो सके और सहाबियत के शर्फ़ (श्रेय) से महरूम रह गये। (वहीदी)

बाब 139 : ऊँटों की गर्दन में घंटी वग़ैरह जिससे आवाज़ निकले, लटकाना कैसा है?

١٣٩- بَابُ مَا قِيْلَ فِي الْجَرَسِ وَنَحْوِهِ فِي أَعْنَاقِ الإِبِلِ

3005. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे

٣٠٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ عَبَّادِ بْنِ تَمِيمٍ أَنَّ أَبَا بَشِيرٍ الأَنْصَارِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، قَالَ عَبْدُ اللهِ حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ: وَالنَّاسُ فِي مَبِيتِهِمْ، فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَسُولاً: ((أَنْ لاَ تَبْقَيَنَّ فِي رَقَبَةِ بَعِيرٍ قِلاَدَةٌ مِنْ وَتَرٍ أَوْ قِلاَدَةٌ إِلاَّ قُطِعَتْ)).

इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने, उन्हें अ़ब्बाद बिन तमीम ने और उन्हें बशीर अंसारी (रज़ि.) ने कि वो एक सफ़र में रसूल करीम (ﷺ) के साथ थे। अ़ब्दुल्लाह (बिन अबीबक्र बिन ह़ज़्म ह़दीष़ के रावी) ने कहा कि मेरा ख़याल है अबू बशीर ने कहा कि लोग अपनी ख़्वाबगाहों में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना एक क़ासिद (ज़ैद बिन ह़ारिष़ा रज़ि.) ये ऐलान करने के लिये भेजा कि जिस शख़्स के ऊँट की गर्दन में तांत का गंडा हो या यूँ फ़र्माया कि जो गन्डा (हार) हो वो उसे काट डाले।

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि किसी जानवर के गले में महज़ ज़ीनत और फ़ख़्र के लिये घंटी या कोई बाजे की क़िस्म का लटकाना मना है। **क़ाल इब्नुल्जौज़ी व फिल्मुरादि बिल्औतारि षलाष़त अक़्वाल अहदुहम अन्नहुम कानू युक़ल्लिदूनल्इबिल औतारल्क़ीसी लिअल्ला युसीबहाल्ऐनु बिज़अमिहिम फउमिरू बिक़तइहा इलामन बिअन्नल्औतार ला तरुद्दु मिन अम्रिल्लाहि शयआ** या'नी पहला क़ौल ये कि अरब के जाहिल ऊँटों के गलों में कोई तांत बतौरे ता'वीज़ लटका देते थे ताकि उनको नज़र न लगे। पस उनके काट फेंकने का हुक्म दिया गया, ताकि वो जान लें कि अल्लाह के हुक्म को ये लौटा नहीं सकती।

दूसरा क़ौल ये कि ऐसे तांत वग़ैरह जानवरों के गलों में लटकाने इस डर से मना किये गये कि मुम्किन है वो उनके गले में तंग होकर उनका गला घोंट दें या किसी पेड़ से उलझकर तकलीफ़ का बाइष़ बन जाएँ और जानवरों को ईज़ा पहुँचे।

तीसरा क़ौल ये कि वो घंटे लटकाते हालाँकि बजने वाले घंटों की जगह में रह़मत के फ़रिश्ते नहीं आते। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने दारे क़ुत्नी की रिवायतकर्दा इस ह़दीष़ पर इशारा किया है। जिसमें साफ़ यूँ है, **ला तब्क़ियन्न किलादतम्मिन वतरिन वला जरसिन फी उनुक़ि बईरिन इल्ला कुतिअ** या'नी किसी भी जानवर के गले में कोई तांत हो या घंटा वो बाक़ी न रखे जाएँ। (फ़त्हुल बारी)

١٤٠ - بَابُ مَنِ اكْتَتَبَ فِي جَيْشٍ فَخَرَجَتِ امْرَأَتُهُ حَاجَّةً وَكَانَ لَهُ عُذْرٌ هَلْ يُؤْذَنُ لَهُ؟

बाब 140 : एक शख़्स अपना नाम मुजाहिदीन में लिखवा दे

फिर उसकी औरत ह़ज्ज को जाने लगे या और कोई उ़ज़्र पेश आए तो उसको इजाज़त दी जा सकती है (कि जिहाद में न जाए)

٣٠٠٦ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ أَبِي مَعْبَدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ، وَلاَ تُسَافِرَنَّ امْرَأَةٌ إِلاَّ وَمَعَهَا مَحْرَمٌ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ اكْتُتِبْتُ فِي غَزْوَةِ كَذَا وَكَذَا، وَخَرَجَتِ امْرَأَتِي حَاجَّةً قَالَ ((اذْهَبْ فَاحْجُجْ مَعَ امْرَأَتِكَ)).

3006. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अबू मअ़बद ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि कोई मर्द किसी (ग़ैर मह़रम) औरत के साथ तन्हाई में न बैठे और कोई औरत उस वक़्त तक सफ़र न करे जब तक उसके साथ उसका कोई मह़रम न हो। इतने में एक स़ह़ाबी खड़े हुए और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने फ़लाँ जिहाद में अपना नाम लिखवा दिया है और इधर मेरी बीवी ह़ज्ज के लिये जा रही है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तू भी जा और अपनी बीवी को ह़ज्ज करा ला।

(राजेअ : 1862)

क्योंकि उसकी औरत के साथ दूसरा मर्द नहीं जा सकता और जिहाद में उसके बदल दूसरा शख़्स शरीक हो सकता है तो आपने ज़रूरी काम को ग़ैर ज़रूरी पर मुक़द्दम रखा। औरत अपनी शख़्सियत में एक मुस्तक़िल हैषियत रखती है। इसलिये वो अपने माल से ख़ुद हज्ज पर जा सकती है। मगर शौहर का साथ होना या उसकी तरफ़ से किसी ज़ी महरम का साथ भेज देना ज़रूरी है।

बाब 141 : जासूसी का बयान

١٤١- بَابُ الْجَاسُوسِ

और अल्लाह तआला ने सूरह मुम्तहिना में फ़र्माया कि, मुसलमानों! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ। लफ़्ज़े-जासूस तजस्सुस से निकला है या'नी किसी बात को खोदकर निकालना।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿لا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ﴾ [الممتحنة ١] التَّجَسُّسُ: التَّبَحُّثُ.

या'नी काफ़िरों के लिये जासूसी करना मना है जैसे ह़ातिब ने की थी कि मुश्रिकों को मुसलमानों के आने की ख़बर दे दी, अल्बत्ता मुसलमानों की तरफ़ से जासूसी दुरुस्त है। आँहज़रत (ﷺ) ने एक शख़्स को जासूस बनाकर भेजा था और जंग का काम बग़ैर जासूसी के चल ही नहीं सकता। सूरह मुम्तहिना की आयते मन्क़ूला से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी ने काफ़िरों की तरफ़ से जासूसी की मुमानअत निकाली, क्योंकि जासूस जिनका जासूस होता है उनका दोस्त होता है और उनको फ़ायदा पहुँचाता है। (वहीदी)

3007. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, कहा हमसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, सुफ़यान ने ये हदीष़ अम्र बिन दीनार से दो बार सुनी थी। उन्होंने बयान किया कि मुझे हसन बिन मुहम्मद ने ख़बर दी, कहा कि मुझे उबैदुल्लाह बिन अबी राफ़ेअ ने ख़बर दी, कहा कि मैंने ह़ज़रत अली (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे और ज़ुबैर और मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) को एक मुहिम पर भेजा और आपने फ़र्माया कि जब तुम लोग रवज़ा ख़ाख़ (जो मदीना से बारह मील के फ़ासले पर एक जगह का नाम है) पर पहुँच जाओ तो वहाँ एक बुढ़िया औरत तुम्हें ऊँट पर सवार मिलेगी और उसके पास एक ख़त होगा, तुम लोग उससे वो ख़त ले लेना। हम रवाना हुए और हमारे घोड़े हमें तेज़ी के साथ लिये जा रहे थे। आख़िर हम रवज़ा ख़ाख़ पर पहुँच गये और वहाँ वाक़ई एक बूढ़ी औरत मौजूद थी जो ऊँट पर सवार थी। हमने उससे कहा कि ख़त निकाल। उसने कहा कि मेरे पास तो कोई ख़त नहीं। लेकिन जब हमने उसे धमकी दी कि अगर तूने ख़त न निकाला तो तुम्हारे कपड़े हम ख़ुद उतार देंगे। इस पर उसने अपनी

٣٠٠٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ سَمِعْتُ مِنْهُ مَرَّتَيْنِ قَالَ : أَخْبَرَنِي حَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي رَافِعٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((بَعَثَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنَا وَالزُّبَيْرَ وَالْمِقْدَادَ بْنَ الأَسْوَدِ وَقَالَ: ((انْطَلِقُوا حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ فَإِنَّ بِهَا ظَعِينَةً وَمَعَهَا كِتَابٌ فَخُذُوهُ مِنْهَا)). فَانْطَلَقْنَا تَعَادَى بِنَا خَيْلُنَا، حَتَّى انْتَهَيْنَا إِلَى الرَّوْضَةِ، فَإِذَا نَحْنُ بِالظَّعِينَةِ، فَقُلْنَا: أَخْرِجِي الْكِتَابَ. فَقَالَتْ : مَا مَعِيَ مِنْ كِتَابٍ. فَقُلْنَا: لَتُخْرِجِنَّ الْكِتَابَ، أَوْ لَنُلْقِيَنَّ الثِّيَابَ. فَأَخْرَجَتْهُ مِنْ عِقَاصِهَا، فَأَتَيْنَا بِهِ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَإِذَا فِيهِ: مِنْ

حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى أُنَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ يُخْبِرُهُمْ بِبَعْضِ أَمْرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا حَاطِبُ مَا هَذَا؟)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ لاَ تَعْجَلْ عَلَيَّ، إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مُلْصَقًا فِي قُرَيْشٍ، وَلَمْ أَكُنْ مِنْ أَنْفُسِهَا، وَكَانَ مَنْ مَعَكَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ لَهُمْ قَرَابَاتٌ بِمَكَّةَ يَحْمُوْنَ بِهَا أَهْلِيْهِمْ وَأَمْوَالَهُمْ فَأَحْبَبْتُ إِذْ فَاتَنِي ذَلِكَ مِنَ النَّسَبِ فِيْهِمْ أَنْ أَتَّخِذَ عِنْدَهُمْ يَدًا يَحْمُوْنَ بِهَا قَرَابَتِي، وَمَا فَعَلْتُ كُفْرًا وَلاَ ارْتِدَادًا وَلاَ رِضًا بِالْكُفْرِ بَعْدَ الإِسْلاَمِ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَقَدْ صَدَقَكُمْ)). فَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: يَا رَسُولَ اللهِ، دَعْنِي أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا الْمُنَافِقِ. قَالَ: ((إِنَّهُ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا، وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ اللهَ أَنْ يَكُوْنَ قَدِ اطَّلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ: اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ)). قَالَ سُفْيَانُ: وَأَيُّ إِسْنَادٍ هَذَا.

[أطرافه في : ٣٠٨١، ٣٩٨٣، ٤٢٧٤، ٤٨٩٠، ٦٢٩٠، ٦٩٣٩].

गूँथी हुई चोटी के अंदर से ख़त निकाल कर दिया, और हम उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुए, उसका मज़्मून ये था, हातिब बिन अबी बल्तआ की तरफ़ से मुश्रिकीने मक्का के चन्द आदमियों की तरफ़, उसमें उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के कुछ भेदों की ख़बर दी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ हातिब! ये क्या वाक़िया है? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे बारे में उज्लत से काम न लीजिए। मेरी हैषियत (मक्का में) ये थी कि कुरैश के साथ मैंने रहना-सहना इख़्तियार कर लिया था, उनसे रिश्ता नाता मेरा कुछ भी न था। आपके साथ जो दूसरे मुहाजिरीन हैं उनकी तो मक्का में सबकी रिश्तेदारी है और मक्का वाले उसी वजह से उनके अज़ीज़ों की और उनके मालो की हिफ़ाज़त व हिमायत करेंगे मगर मक्का वालों के साथ मेरा कोई नसबी रिश्ता नहीं है, इसलिये मैंने सोचा कि उन पर कोई एहसान कर दूँ जिससे अष्र लेकर वो मेरे भी अज़ीज़ों की मक्का में हिफ़ाज़त करें। मैंने ये काम कुफ़्र या इर्तिदाद की वजह से हर्गिज़ नहीं किया है और न इस्लाम के बाद कुफ़्र से ख़ुश होकर। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुनकर फ़र्माया कि हातिब ने सच कहा है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! इजाज़त दीजिए मैं इस मुनाफ़िक़ का सर उड़ा दूँ, आपने फ़र्माया, नहीं, ये बद्र की लड़ाई में (मुसलमानों के साथ मिलकर) लड़े हैं और तुम्हें मा'लूम नहीं, अल्लाह तआला मुजाहिदीने बद्र के अहवाल (मौत तक के) पहले ही से जानता था, और वो ख़ुद ही फ़र्मा चुका है कि, तुम जो चाहो करो मैं तुम्हें मुआफ़ कर चुका हूँ। सुफ़यान बिन उयैना ने कहा कि हदीष की ये सनद भी कितनी उम्दा है। (दीगर मक़ाम : 3081, 3983, 4274, 4890, 6290, 6939)

तश्रीह : मज़्मून ख़त का ये था, अम्मा बअ़द! कुरैश के लोगों ! तुमको मा'लूम रहे कि आँहज़रत (ﷺ) एक जर्रार लश्कर लिये हुए तुम्हारे सर पर आते हैं। अगर आप अकेले आएँ तो भी अल्लाह आपकी मदद करेगा और अपना वा'दा पूरा करेगा, अब तुम अपना बचाव कर लो, वस्सलाम!

हज़रत उमर (रज़ि.) ने क़ानूने शरई और क़ानूने सियासत के मुताबिक़ राय दी कि जो कोई अपनी क़ौम या सल्तनत की ख़बर दुश्मनों को पहुँचाए वो सज़ा-ए-मौत के क़ाबिल है लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत हातिब (रज़ि.) की निय्यत में कोई फ़ितूर नहीं देखा और ये भी कि वो बद्री सहाबा में से थे जिनकी जुज़्वी लग़्ज़िशों को अल्लाह तआला ने पहले ही मुआफ़ कर दिया है। इसलिये उनकी इस सियासी ग़लती को आँहज़रत (ﷺ) ने नज़रअंदाज़ करके और हज़रत उमर (रज़ि.) की राय को पसन्द नहीं फ़र्माया। मा'लूम हुआ कि ज़िम्मेदार लोगों के कुछ इंफ़िरादी या इज्तिमाई मुआमलात ऐसे भी आ जाते हैं कि

उनमें सख़्ततरीन ग़लती को भी नज़रअंदाज़ कर देना ज़रूरी हो जाता है। ये भी मा'लूम हुआ कि फ़त्वा देने से पहले मामले के हर एक पहलू पर नज़र डाल लेना ज़रूरी है। जो लोग बग़ैर ग़ौरो-फ़िक्र किये सरसरी तौर पर फ़त्वा दे देते हैं कुछ बार उनके ऐसे फ़त्वे बहुत से फ़सादात के अस्बाब बन जाते हैं । ख़ाख़ मक्का और मदीना के बीच एक गांव का नाम था। इस ह़दीष़ से अहले बद्र की भी फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई कि अल्लाह पाक ने उनकी जुम्ला लग़्ज़िशों को मुआफ़ फ़र्मा दिया है।

बाब 142 : क़ैदियों को कपड़े पहनाना

١٤٢- بَابُ الْكِسْوَةِ لِلأَسَارَى

3008. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि बद्र की लड़ाई से क़ैदी (मुश्रिकीने मक्का) लाये गये। जिनमें ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) भी थे। उनके बदन पर कपड़े नहीं था। नबी करीम (ﷺ) ने उनके लिये क़मीस़ तलाश करवाई। (वो लम्बे क़द के थे) इसलिये अ़ब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़) की क़मीस़ ही उनके बदन पर आ सकी और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें वो क़मीस़ पहना दी। नबी करीम (ﷺ) ने (अ़ब्दुल्लाह बिन उबई की मौत के बाद) अपनी क़मीस़ उतारकर उसे पहनाई थी। इब्ने उ़ययना ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) पर जो उसका एह़सान था, आँह़ज़रत (ﷺ) ने चाहा कि उसे अदा कर दें।

٣٠٠٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا كَانَ يَوْمُ بَدْرٍ أُتِيَ بِأَسَارَى وَأُتِيَ بِالْعَبَّاسِ وَلَمْ يَكُنْ عَلَيْهِ ثَوبٌ، فَنَظَرَ النَّبِيُّ ﷺ لَهُ قَمِيْصًا، فَوَجَدُوا قَمِيْصَ عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ يَقْدِرُ عَلَيْهِ، فَكَسَاهُ النَّبِيُّ ﷺ إِيَّاهُ، فَلِذَلِكَ نَزَعَ النَّبِيُّ ﷺ قَمِيْصَهُ الَّذِي أَلْبَسَهُ)). قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: كَانَتْ لَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ يَدٌ، فَأَحَبَّ أَنْ يُكَافِئَهُ.

आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) को क़मीस़ पहनाई जो कि ह़ालते कुफ़्र में आप (ﷺ) की क़ैद में थे। इसी से बाब का मक़्सद ष़ाबित हुआ कि क़ैदी को नंगा रखने की बजाय उसे मुनासिब कपड़े पहनाने ज़रूरी हैं। क़ैदियों के साथ हर अख़्लाक़ी और इंसानी बर्ताव करना ज़रूरी है। बाब का यही इर्शाद है। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ के ह़ालात तफ़्सील से बयान हो चुके हैं, ये भी ष़ाबित हुआ कि एह़सान का बदला एह़सान से अदा करना ज़रूरी है।

बाब 142 : उस शख़्स़ की फ़ज़ीलत जिसके हाथ पर कोई शख़्स़ इस्लाम लाए

١٤٣- بَابُ فَضْلِ مَنْ أَسْلَمَ عَلَى يَدَيْهِ رَجُلٌ

जिसकी तब्लीग़ी कोशिशों से कोई इंसान नेक रास्ते पर लग जाए या इस्लाम कुबूल कर ले, उसकी नेकी का क्या ठिकाना है, ये स़दक़-ए-जारिया है जिसका ष़वाब मरने के बाद भी जारी रहता है।

3009. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल क़ारी ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम मुस्लिमा इब्ने दीनार ने बयान किया, उन्हें सहल बिन सअ़द अंस़ारी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर की लड़ाई के दिन फ़र्माया, कल मैं ऐसे शख़्स़ के हाथ में इस्लाम का झण्डा दूँगा जिसके हाथ

٣٠٠٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدٍ الْقَارِيُّ عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَهْلٌ رَضِيَ اللهُ

عَنْهُ يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرَ: ((لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ غَدًا رَجُلاً يُفْتَحُ عَلَى يَدَيْهِ يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ وَيُحِبُّهُ اللهُ وَرَسُولُهُ)). فَبَاتَ النَّاسُ لَيْلَتَهُمْ أَيُّهُمْ يُعْطَى، فَغَدَوا كُلُّهُمْ يَرْجُوهُ، فَقَالَ: ((أَيْنَ عَلِيٌّ؟)) فَقِيلَ: يَشْتَكِي عَيْنَيْهِ، فَبَصَقَ فِي عَيْنَيْهِ وَدَعَا لَهُ فَبَرَأَ كَأَنْ لَمْ يَكُنْ بِهِ وَجَعٌ، فَأَعْطَاهُ، فَقَالَ: أُقَاتِلُهُمْ حَتَّى يَكُونُوا مِثْلَنَا، فَقَالَ: ((انْفُذْ عَلَى رِسْلِكَ حَتَّى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ، ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الإِسْلاَمِ، وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ، فَوَ اللهِ لأَنْ يَهْدِيَ اللهُ بِكَ رَجُلاً خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَكَ حُمْرُ النَّعَمِ)).

[راجع: ٢٩٤٢]

पर इस्लामी फ़तह हासिल होगी, जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है और जिससे अल्लाह और उसके रसूल मुहब्बत रखते हैं । रातभर सब सहाबा के ज़हन में यही ख़याल रहा कि देखिये कि किसे झण्डा मिलता है। जब सुबह हुई तो हर शख़्स उम्मीदवार था, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि अली कहाँ है? अर्ज़ किया गया कि उनकी आँखों में दर्द हो गया है। आँहज़रत (ﷺ) ने अपना मुबारक थूक उनकी आँखों में लगा दिया। और उससे उन्हें सेहत हो गई, किसी क़िस्म की भी तकलीफ़ बाक़ी न रही। फिर आप (ﷺ) ने उन्हीं को झण्डा अता फ़र्माया। अली (रज़ि.) ने कहा कि क्या मैं उन लोगों से उस वक़्त तक न लड़ूं जब तक ये हमारे जैसे या'नी मुसलमान न हो जाएँ। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें हिदायत दी कि यूँ ही चला जा। जब उनकी सरहद में उतरो तो उन्हें इस्लाम की दा'वत देना और उन्हें बताना कि (इस्लाम के नाते) उन पर कौन कौनसे काम ज़रूरी हैं। अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हारे ज़रिये अल्लाह एक शख़्स को भी मुसलमान कर दे तो ये तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊँटों से बेहतर है। (राजेअ : 2942)

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को हिदायत फ़र्माई कि वो लड़ाई से पहले दुश्मनों को इस्लाम की तब्लीग़ करें, उनको राहे हिदायत पेश करें और जहाँ तक मुम्किन हो लड़ाई की नौबत न आने दें। लड़ाई मुदाफ़िअत के लिये आख़िरी तदबीर है। बग़ैर लड़ाई ही अगर कोई दुश्मन सुलह कर ले या इस्लाम कुबूल कर ले तो ये नेकी अल्लाह के नज़दीक बहुत ही ज़्यादा क़ीमत रखती है। इस हदीष से हज़रत अली (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी षाबित हुई कि अल्लाह ने जंगे ख़ैबर की फ़तह उनके हाथ पर रखी थी।

बाब का तर्जुमा हदीष़ के अल्फ़ाज़, **ख़ैरुल्लक मिन अंय्यकून लक हुमुरुन्नअमि** से निकलता है। सुब्हानल्लाह! किसी शख़्स को राह पर लाना और कुफ़्र से ईमान पर लगा देना कितना बड़ा अज्र रखता है। मुसलमानों को चाहिये कि वा'ज़ और ता'लीम और तल्क़ीन में जमकर कोशिशें करते रहें क्योंकि ये पैग़म्बरों की मीराष है और चुप होकर बैठ जाना और ज़ुबान और क़लम को रोक लेना आलिमों के लिये ग़ज़ब की बात है। हमारे ज़माने के मौलवी और मशाइख़ जो घरों में आराम से बैठकर चर्ब लुक़्मों पर हाथ मारते हैं और ख़िलाफ़े शरअ काम देखकर चुप्पी इख़्तियार करते हैं और जाहिलों को नसीहत नहीं करते, उमरा और दुनियादारों की ख़ुशामद मे ग़र्क़ (डूबे हुए) हैं । ये पैग़म्बर (अलै.) के सामने क़यामत के दिन क्या जवाब देंगे। अल्लाह तआला ने जो इल्म व फ़ज़्ल की दौलत अता की उसका शुक्रिया यही है कि वा'ज़ व नसीहत में सरगर्म रहें और ता'लीम व तल्क़ीन को अपना वज़ीफ़ा बना लें। देहात के मुसलमानों को जो दीनी मसाइल और ए'तिक़ात से नावाक़िफ़ हैं, उनको वाक़िफ़ कराएँ और हर जगह दा'वते-इस्लाम पहुँचाएँ। अफ़सोस है कि नसारा तो अपना बातिल ख़याल या'नी तष्लीष फैलाने के लिये हर गाँव हर बस्ती और रास्ते और मज्मआ में वा'ज़ कहते फिरें और मुसलमान सच्चे ए'तिक़ादात या'नी तौहीद पर होकर ज़ुबान बन्द रखें और सच्चा दीन फैलाने में कोई कोशिश न करें। अगर सच्चे दीन के फैलाने में कोई मुसीबत पेश आए तो उसको ऐन सआदत और बरकत और कामयाबी समझना चाहिये। देखो हमारे पैग़म्बर (अलै.) ने दा'वते इस्लाम में क्या-क्या तकलीफ़ें झेली थीं। ज़ख़्मी हुए सर फूटे, दाँत टूटा, गालियाँ खाईं, या अल्लाह! तेरी राह में अगर हमको गालियाँ पड़ें तो वो उम्दा और

शीरीं लुक़्मों से ज़्यादा हमको लज़ीज़ हैं। और तेरा सच्चा दीन फैलाने में अगर हम मारे जाएँ या पीटे जाएँ तो वो इन दुनियादारी बादशाहों की ख़िल्अत और सरफ़राज़ी से कहीं ज़्यादा बढ़कर है। या अल्लाह! मुसलमानों की आँखें खोल दे कि वो भी अपने प्यारे पैग़म्बर का दीन फैलाने में हमातन कोशिश करें, गांव-गांव वा'ज़ कहते फिरें। दीन की किताबों और रिसाले छपवा छपवाकर मुफ़्त तक़्सीम करें, आमीन या रब्बल आलमीन। (वह़ीदी)

अल्हम्दुलिल्लाह! कच्छ-भुज के इस तब्लीग़ी दौरे में जो यहाँ के 25 देहात में किया गया, बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू के तीन सौ से ज़्यादा पारे और नमाज़ की किताबें दो सौ और कई मुतफ़र्रिक़ तब्लीग़ी रिसाले दो सौ से ज़ाईद ता'दाद में बतौरे तहाइफ़ व तब्लीग़ तक़्सीम किये गये, अल्लाह पाक क़ुबूल करे और तमाम हिस्सा लेने वाले ह़ज़रात को उसकी बेहतर जज़ाएँ अता करे। किताबी तब्लीग़ आज के दौर में एक ठोस तब्लीग़ है जिसके नतीजे बहुत दूरगामी हो सकते हैं वबिल्लाहित् तौफ़ीक़।

बाब 144 : क़ैदियों को ज़ंजीरों में बांधना

١٤٤- بَابُ الأَسَارَى فِي السَّلاَسِلِ

3010. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐसे लोगों पर अल्लाह को ता'ज्जुब होगा, जो जन्नत में दाख़िल होंगे हालाँकि दुनिया में अपने कुफ़्र की वजह से वो बेड़ियों में थे।

٣٠١٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((عَجِبَ اللهُ مِنْ قَوْمٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ فِي السَّلاَسِلِ)).

लेकिन बाद में इस्लाम लाए और फ़ौरन ही शहीद हो गये।

या'नी अल्लाह ने उन लोगों पर ता'ज्जुब किया जो बहिश्त में दाख़िल होंगे और दुनिया में ज़ंजीरें पहनते थे या'नी पहले लड़ाई में क़ैद होकर आए फिर ख़ुशी से मुसलमान हो गये और बहिश्त पाई। इस ह़दीष़ से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने क़ैदियों के लिये ज़ंजीरों का पहनना ष़ाबित फ़र्माया। **अय अल्लज़ीन उसिरू फिल्हर्बि व जाअ बिहिमुल्मुस्लिमून बिस्सलासिलि फ़अस्लमू औ अन्नहुमुल्मुस्लिमूनल्लज़ीन असारू फी अयदिल्कुफ़्फ़ारि मुसल्सलीन फ़यमूतून औ युक़्तलून अला हाज़िहिल्हालति फयहशुरून अलैहा व यदाखुलूनल्जन्नत कजा फिल्खैरिल्जारी** इस इबारत का ख़ुलासा मतलब वही है जो ऊपर बयान हुआ।

बाब 145 : यहूद या नस़ारा मुसलमान हो जाएँ तो उनके ष़वाब का बयान

١٤٥- بَابُ فَضْلِ مَنْ أَسْلَمَ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابَيْنِ

3011. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन ह़य्यि अबू ह़सन ने बयान किया, कहा कि मैंने शअ़बी से सुना, वो बयान करते थे कि मुझसे अबू बुर्दा ने बयान किया, उन्होंने अपने वालिद (अबू मूसा अशअ़री रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तीन त़रह के आदमी ऐसे हैं जिन्हें दोगुना ष़वाब मिलता है। अव्वल वो शख़्स़ जिसकी कोई लौण्डी हो, वो उसे ता'लीम दे और ता'लीम देने में अच्छा त़रीक़ा इख़्तियार करे, उसे अदब सिखाए और उसमें अच्छे त़रीक़े से काम ले, फिर उसे आज़ाद

٣٠١١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ حَيٍّ أَبُو حَسَنٍ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ يَقُولُ: حَدَّثَنِي أَبُو بُرْدَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَاهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((ثَلاَثَةٌ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ: الرَّجُلُ تَكُونُ لَهُ الأَمَةُ فَيُعَلِّمُهَا فَيُحْسِنُ تَعْلِيمَهَا، وَيُؤَدِّبُهَا

करके उससे शादी कर ले तो उसे दोहरा अज्र मिलेगा। दूसरा वो मोमिन जो अहले किताब में से हो कि पहले (अपने नबी पर) ईमान लाया था, फिर नबी करीम (ﷺ) पर भी ईमान लाया तो उसे भी दोहरा अज्र मिलेगा, तीसरा वो गुलाम जो अल्लाह तआला के हुक़ूक़ की भी अदायगी करता है और अपने आक़ा के साथ भी भलाई करता है। उसके बाद शअ़बी (हदीष़ के रावी) ने कहा कि मैंने तुम्हें ये हदीष़ बिला किसी मेहनत व मुशक़्क़त के दे दी है। एक ज़माना वो भी था जब उससे भी कम हदीष़ के लिये मदीना मुनव्वरा तक का सफ़र करना पड़ता था। (राजेअ़ : 97)

فَيُحْسِنُ أَدَبَهَا، ثُمَّ يُعْتِقُهَا فَيَتَزَوَّجُهَا، فَلَهُ أَجْرَانِ. وَمُؤْمِنُ أَهْلِ الْكِتَابِ الَّذِي كَانَ مُؤْمِنًا ثُمَّ آمَنَ بِالنَّبِيِّ ﷺ، فَلَهُ أَجْرَانِ. وَالْعَبْدُ الَّذِي يُؤَدِّي حَقَّ اللهِ وَيَنْصَحُ لِسَيِّدِهِ لَهُ)). ثُمَّ قَالَ الشَّعْبِيُّ: وَأَعْطَيْتُكَهَا بِغَيْرِ شَيْءٍ، وَقَدْ كَانَ الرَّجُلُ يَرْحَلُ فِي أَهْوَنَ مِنْهَا إِلَى الْمَدِينَةِ.
[راجع: ٩٧]

मक़सद इमाम बुख़ारी (रह.) का यह है कि जंग से पहले यहूद व नसारा को इस्लाम की दा'वत दी जाए और उनको ये बशारत भी पेश की जाए कि वो इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे तो उनको दोगुना ष़वाब मिलेगा। या'नी पहले नबी पर ईमान लाना और फिर इस्लाम क़ुबूल कर लेना, ये दोगुने ष़वाब का मौजिब होगा। बहरसूरत लड़ाई न हो तो बेहतर है।

बाब 142 : अगर (लड़ने वाले) काफ़िरों पर रात को छापा मारें और बग़ैर इरादे के औरतें और बच्चे भी ज़ख़्मी हो जाएँ तो फिर कुछ

١٤٦- بَابُ أَهْلِ الدَّارِ يُبَيَّتُونَ، فَيُصَابُ الْوِلْدَانُ وَالذَّرَارِيُّ

क़बाहत नहीं है क़ुर्आन मजीद की सूरह अअ़राफ़ में लफ़्ज़ बयातन और सूरह नमल में लफ्ज़ लनुबय्यितन्नहु और सूरह निसा में लफ़्ज़ यबीतु आया है। इन सब लफ़्ज़ों का वही माद्दा है जो यबीतून का है। मुराद सबसे रात का वक़्त है।

﴿ بَيَاتًا ﴾ [الأعراف: ٤، ٩٧، يونس: ٥]: لَيْلاً. ﴿لَنُبَيِّتَنَّهُ﴾ [النمل: ٤٩]: لَيْلاً ﴿يُبَيِّتُ﴾ [النساء: ٨١]: لَيْلاً.

यबीतून बाब की हदीष़ में है, हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की आदत है कि जब कोई लफ़्ज़ ऐसा हदीष़ में आता है जिसके मुशतक़्क़ात या मवाद क़ुर्आन मजीद में भी हों तो क़ुर्आन शरीफ़ के लफ़्ज़ों की भी तफ़्सीर कर देते हैं। उनकी ग़र्ज़ ये है कि जो आदमी सहीह बुख़ारी समझकर पढ़े वो क़ुर्आन के अल्फ़ाज़ भी बख़ूबी समझ ले। रिवायत मे मज़्कूरा अब्वा नामी जगह मदीना से 23 मील की दूरी पर और वदान अब्वाअ से आगे आठ मील की दूरी पर है।

3012. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने और उनसे स़अ़ब बिन जष़ामा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मक़ामे अब्वा या वदान में मेरे पास से गुज़रे तो आपसे पूछा गया कि मुश्रिकीन के जिस क़बीले पर शब ख़ून मारा जाएगा क्या उनकी औरतों और बच्चों को भी क़त्ल करना दुरुस्त होगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो भी

٣٠١٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ الصَّعْبِ بْنِ جَثَّامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَ: مَرَّ بِي النَّبِيُّ ﷺ بِالأَبْوَاءِ - أَوْ بِوَدَّانَ - وَسُئِلَ عَنْ أَهْلِ الدَّارِ يُبَيَّتُونَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ فَيُصَابُ مِنْ نِسَائِهِمْ وَذَرَارِيِّهِمْ، قَالَ: ((هُمْ

مِنْهُمْ)). وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((لاَ حِمَى إِلاَّ لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ ﷺ)).

उन्हीं में से हैं और मैंने आप (ﷺ) से सुना कि आप फ़र्मा रहे थे अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के सिवा और किसी की चरागाह नहीं है।

٣٠١٣- وَعَنِ الزُّهْرِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا الصَّعْبُ فِي الذَّرَارِيِّ. كَانَ عَمْرٌو يُحَدِّثُنَا عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَمِعْنَاهُ مِنَ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((عَنِ الصَّعْبِ قَالَ: هُمْ مِنْهُمْ، وَلَمْ يَقُلْ كَمَا قَالَ عَمْرٌو: هُمْ مِنْ آبَائِهِمْ)).

[راجع: ٢٣٧]

3013. (साबिक़ा सनद के साथ) ज़ुहरी से रिवायत है कि उन्होंने उबैदुल्लाह से सुना बवास्ता इब्ने अब्बास (रज़ि.) और उनसे स़अब (रज़ि.) ने बयान किया, और सिर्फ़ ज़रारी (बच्चों) का ज़िक्र किया, सुफियान ने कहा कि अम्र हमसे ह़दीष़ बयान करते थे। उनसे इब्ने शिहाब, नबी अकरम (ﷺ) से, (सुफ़यान ने) बयान किया कि फिर हमने ह़दीष़ ख़ुद ज़ुहरी (इब्ने शिहाब) से सुनी। उन्होंने बयान किया कि मुझे उबैदुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने और उन्हें स़अब (रज़ि.) ने कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, (मुश्रिकीन की औरतों और बच्चों के बारे में कि) वो भी उन्हीं में से हैं। (ज़ुहरी के वास्ते से) जिस त़रह़ अम्र ने बयान किया था कि (हुम मिन आबाइहिम) वो भी उन्हीं के बाप-दादों की नस्ल हैं। ज़ुहरी ने ख़ुद हमसे इन अल्फ़ाज़ के साथ बयान नहीं किया (या'नी हुम मिन आबाइहिम नहीं कहा बल्कि हुम मिन्हुम कहा)। (राजेअ : 237)

तश्रीह : इस्लाम का हुक्म ये है कि लड़ाई में औरतों बच्चों या बूढ़ों को कोई तकलीफ़ न पहुँचाई जाए। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) यहाँ ये बताना चाहते हैं कि अगर रात के वक़्त मुसलमान उन पर ह़मलावर हों तो ज़ाहिर है कि अंधेरे में औरतों बच्चों की तमीज़ मुश्किल हो जाएगी। अब अगर ये क़त्ल हो जाते है तो ये कोई गुनाह नहीं होगा। शरीअ़त का मक़्सद सिर्फ़ ये है कि क़स्दन और इरादा करके औरतों और बच्चों का या लड़ाई वग़ैरह से आजिज़ बूढ़ों को लड़ाई में कोई तकलीफ़ न पहुँचाई जाए और न उन्हें क़त्ल किया जाए लेकिन अगर मजबूरी की ह़ालत हो तो ज़ाहिर है कि इसके बग़ैर कोई चारा नहीं।

चरागाह के बारे में अ़रबों का क़ायदा था, कहीं आबाद और सर-सब्ज़ जंगल में पहुँचते तो कुत्ते को इशारा करते वो भौंकता जहाँ तक उसके भौंकने की आवाज जाती वो जंगल बत़ौरे चरागाह अपने लिये मह़फ़ूज़ कर लेते, कोई दूसरा उसमें न चरा सकता। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये त़रीक़ा, जो सरासर ज़ुल्म है मौक़ूफ़ (रद्द) किया और फ़र्माया कि मह़फ़ूज़ चरागाह (संरक्षित क्षेत्र) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) का हो सकता है। और इमाम या ह़ाकिम भी रसूल का क़ायमे-मुक़ाम है, दूसरे लोग कोई चरागाह मह़फ़ूज़ नहीं कर सकते, ये इस्लामी अ़हद की बात है। आजकल हुकूमतें चरागाहों के लिये ख़ुद क़ित़आत छोड़ देती हैं जो आ़म पब्लिक के लिये होती हैं कि वो उनमें मुक़र्रर टैक्स अदा करके अपने जानवरों को चराते हैं। इस्लाम की ये अहम ख़ूबी है कि उसने तमद्दुनी, मआशरती, इक़्तिसादी, सियासी ज़िन्दगी का एक मुकम्मलतरीन ज़ाब्त़-ए-ह़यात पेश किया है। दीने कामिल की यही शान थी। सच है, **व मंय्यब्तगि गैरल्इस्लामि दीनन फलय्युंक़्बल मिन्हु व हुव फिल्आखिरति मिन ख़ासिरीन** (आले इमरान : 85) **सदक़ल्लाहु तबारक व तआला** (आले इमरान : 85) स़दक़ल्लाहु तबारह व तआ़ला)

क़ालन्नववी अत्फालुहुम फीमा यतअल्लक़ू बिल्आख़िरति फीहिम षलाष मज़ाहिब क़ालल्अक्षरुन हुम फिन्नार तबउन लिआबाइहिम व तवक़्क़फ़ु ताइफतुन वष़्षालिषु व हुवस्सहीहु अन्नहुम मिन अहलिल्जन्नति कालहुल्किर्मानी. (नववी)

या'नी मुश्रिकीन के बच्चों के बारे में अकष़र उ़लमा का ख़याल है कि अपने वालिदैन के ताबेअ़ होने की वजह से दोज़ख़ी हैं। एक जमाअ़त उसमें तवक़्क़ुफ़ करती है और तीसरा मज़हब ये है कि वो जन्नती हैं और यही सहीह है (वल्लाहु आलम)

बाब 147 : जंग में बच्चों का क़त्ल करना कैसा है?

١٤٧ - بَابُ قَتْلِ الصِّبْيَانِ فِي الْحَرْبِ

3014. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमको लैष़ ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) के एक ग़ज़्वा (ग़ज़्व-ए-फ़तह) में एक औरत मक़्तूल पाई गई तो आँहज़रत (ﷺ) ने औरतों और बच्चों के क़त्ल पर इंकार का इज़्हार फ़र्माया। (दीगर मक़ाम : 3015)

٣٠١٤ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ امْرَأَةً وُجِدَتْ فِي بَعْضِ مَغَازِي النَّبِيِّ ﷺ مَقْتُولَةً فَأَنْكَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَتْلَ النِّسَاءِ وَ الصِّبْيَانِ)).

[طرفه في : ٣٠١٥].

जंग में क़स्दन (जान-बूझकर) औरतों और बच्चों का मारना इस्लाम में नापसन्दीदा काम है। सद अफ़सोस कि ये नोट ऐसे वक़्त (1971) में लिख रहा हूँ कि मुल्क बंगाल मश्रिक़ी पाकिस्तान में ख़ुद मुसलमान के हाथों मुसलमान मर्द, औरत, बच्चे बकरियों की त़रह ज़िबह किये जा रहे हैं। बंगालियों और बिहारियों और पंजाबियों के नामों पर मुसलमान अपने ही हाथों से अपने इस्लामी भाइयों की ख़ूँरेज़ी कर रहे हैं।

बाब 148 : जंग में औरतों का क़त्ल करना कैसा है?

١٤٨ - بَابُ قَتْلِ النِّسَاءِ فِي الْحَرْبِ

3015. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू उसामा से पूछा, क्या उ़बैदुल्लाह ने आपसे ये ह़दीष़ बयान की है कि उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि एक औरत रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में किसी ग़ज़वे में मक़्तूल पाई गई तो नबी करीम (ﷺ) ने औरतों और बच्चों के क़त्ल से मना फ़र्माया (तो उन्होंने उसका इक़रार किया)। (दीगर मक़ाम : 3015)

٣٠١٥ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: قُلْتُ لأَبِي أُسَامَةَ : حَدَّثَكُمْ عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((وُجِدَتِ امْرَأَةٌ مَقْتُولَةً فِي بَعْضِ مَغَازِي رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَنَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ قَتْلِ النِّسَاءِ وَ الصِّبْيَانِ)). [راجع: ٣٠١٥]

अबू उसामा का ये जवाब इमाम बुख़ारी (रह.) की रिवायत में मज़्कूर नहीं है लेकिन इस्हाक़ बिन राहवै ने अपनी मुस्नद में ये ह़दीष़ निकाली उसमें साफ़ मज़्कूर है कि अबू उसामा ने इक़रार किया, हाँ! (वह़ीदी)

बाब 149 : अल्लाह के अ़ज़ाब (आग) से किसी को अ़ज़ाब न करना

١٤٩ - بَابُ لاَ يُعَذَّبُ بِعَذَابِ اللهِ

3016. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे बुकैर ने, उनसे सुलैमान बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें एक मुहिम पर रवाना किया और ये हिदायत की कि अगर तुम्हें फ़लाँ और फ़लाँ मिल जाएँ तो उन्हें आग में जला देना, फिर जब

٣٠١٦ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي بَعْثٍ فَقَالَ: ((إِنْ وَجَدْتُمْ

فُلاَنًا وَفُلاَنًا فَأَحْرِقُوهُمَا بِالنَّارِ)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَرَدْنَا الْخُرُوجَ: ((إِنِّي أَمَرْتُكُمْ أَنْ تُحَرِّقُوا فُلاَنًا وَفُلاَنًا، وَإِنَّ النَّارَ لاَ يُعَذِّبُ بِهَا إِلاَّ اللهُ، فَإِنْ وَجَدْتُمُوهُمَا فَاقْتُلُوهُمَا)). [راجع: ٢٩٥٤]

हमने रवानगी का इरादा किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें हुक्म दिया था कि फ़लाँ और फ़लाँ को जला देना। लेकिन आग एक ऐसी चीज़ है जिसकी सज़ा सिर्फ़ अल्लाह तआला ही दे सकता है। इसलिये अगर वो तुम्हें मिलें तो उन्हें क़त्ल करना (आग में न जलाना)। (राजेअ : 2954)

तश्रीह : कुछ सहाबा (रज़ि.) ने उसको मुत्लक़न मना जाना है गो बतौरे क़िसास के हो, कुछ ने जाइज़ रखा है जैसे हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) से मन्कूल है। मुहल्लिब ने कहा कि ये मुमानअत तहरीमो नहीं, बल्कि बतौर तवाज़ाअ के है। हमारे ज़माने में तो आलाते हर्ब तोप और बन्दूक़ और डायनामाइट, मिसाइल वग़ैरह सब अंगार हैं और चूँकि काफ़िरों ने उनका इस्ते'माल शुरू कर दिया है, लिहाज़ा मुसलमानों को भी उनका इस्ते'माल दुरुस्त है। (वहीदी)

मुतर्जिम के ख़्याले-नाक़िस में उन जदीद हथियारों का इस्ते'माल अम्रे दीगर है और मुत्लक़ आग में जलाना अम्रे दीगर है जिसे शरअन व अख़्लाक़न पसन्द नहीं किया जा सकता।

٣٠١٧ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَرَّقَ قَوْمًا، فَبَلَغَ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: لَوْ كُنْتُ أَنَا لَمْ أُحَرِّقْهُمْ، لأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تُعَذِّبُوا بِعَذَابِ اللهِ))، وَلَقَتَلْتُهُمْ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ بَدَّلَ دِينَهُ فَاقْتُلُوهُ)).

[طرفه في : ٦٩٢٢].

3017. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इक्रिमा ने कि अली (रज़ि.) ने एक क़ौम को (जो अब्दुल्लाह बिन सबा की पैरोकार थी और हज़रत अली रज़ि. को अपना ख़ुदा कहती थी) जला दिया था। जब ये ख़बर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) को मिली तो आपने कहा कि अगर मैं होता तो कभी उन्हें न जलाता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है कि अल्लाह के अज़ाब की सज़ा किसी को न दो, अल्बत्ता मैं उन्हें क़त्ल ज़रूर करता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है जो शख़्स अपना दीन तब्दील कर दे उसे क़त्ल कर दो। (दीगर मक़ाम : 6922)

ये लोग सबाइया थे। अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी के ताबेदार जो मुसलमानों को ख़राब कर डालने के लिये बज़ाहिर मुसलमान हो गया था और अंदर से काफ़िर था। उस मर्दूद ने अपने ताबेदारों को ये ता'लीम की थी कि हज़रत अली (रज़ि.) मआज़अल्लाह आदमी नहीं हैं बल्कि वो ख़ुद अल्लाह हैं। कुछ कहते हैं कि ये बुतों की परस्तिश करते थे। राफ़ज़ियों में एक फ़िर्क़ा नसीरी है जो हज़रत अली (रज़ि.) को ख़ुदा-ए-बुज़ुर्ग और इमाम जा'फ़र सादिक़ को ख़ुदा-ए-ख़ौरिद कहता है, **ला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह.** (वहीदी)

١٥٠ - بَابُ ﴿فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً﴾ [محمد : ٤]

فِيهِ حَدِيثُ ثُمَامَةَ. وَقَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ تَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُثْخِنَ فِي الأَرْضِ -حَتَّى يَغْلِبَ فِي الأَرْضِ-

बाब 150 : (अल्लाह तआला का सूरह मुहम्मद में ये फ़र्माना) कि क़ैदियों को मुफ़्त एहसान रखकर छोड़ दो या फ़िदया लेकर

इस बाब में ष़मामा की हदीष़ है और अल्लाह तआला का इर्शाद कि, नबी के लिये मुनासिब नहीं कि क़ैदी अपने पास रखे, जब तक काफ़िरों का ख़ूब सत्यानास न कर दे।

पूरी आयत यूँ है, जब तुम काफ़िरों को ख़ूब क़त्ल कर चुको (उनका ज़ोर तोड़ दो) अब क़ैदियों के बाबत तुमको इख़्तियार है ख़्वाह एह़सान रखकर छोड़ दो ख़्वाह फ़िदया लेकर। कुछ सलफ़ कहते हैं कि ये आयत मन्सूख़ है इस आयत से **फक्तु लुल्मुश्रिकीन हैषु वजत्तुमूहुम** और अकषर ये कहते हैं कि मन्सूख़ नहीं है। अब उनमे कुछ यूँ कहते हैं कि क़ैदियों का क़त्ल करना दुरुस्त नहीं या मुफ़्त छोड़ दिये जाएँ या फ़िदया लेकर छोड़ दे या मुफ़्त एह़सान रखकर छोड़ दे। (वह़ीदी)

यकूलुल्जुम्हूरू फी उसारल्कफरति मिर्रिजालि इलल्इमामि यफ्अलु मा हुवल्अहफज़ लिल्इस्लामि वल्मुस्लिमीन. (फत्ह) या'नी काफ़िर क़ैदियों के बारे में इमाम जिसमें इस्लाम और मुसलमानों का फ़ायदा देखे वो काम करे। जुम्हूर का यही क़ौल है। षुमामा की ह़दीष़ को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कई जगह नक़ल किया है, उसने आँह़ज़रत (ﷺ) से अर्ज किया था कि आप मुझको मार डालेंगे तो मेरे ख़ून का बदला दूसरे लोग लेंगे। अगर एह़सान रखकर छोड़ देंगे तो मैं शुक्रगुज़ार रहूँगा। अगर आप रुपया चाहते हैं तो जितना दरकार हो हाज़िर है, आँह़ज़रत (ﷺ) ने षुमामा के बयान पर सुकूत फ़र्माया, तो मा'लूम हुआ कि क़ैदी का क़त्ल भी दुरुस्त है मगर बाद में षुमामा मुसलमान हो गए थे।

١٥١- بَابُ هَلْ لِلأَسِيرِ أَنْ يَقْتُلَ وَيَخْدَعَ الَّذِيْنَ أَسَرُوهُ حَتَّى يَنْجُوَ مِنَ الْكَفَرَةِ؟ فِيْهِ الْمِسْوَرُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 151 : अगर कोई मुसलमान काफ़िर की क़ैद में हो तो

उसका ख़ून करना या काफ़िरों से दग़ा और फ़रेब करके अपने तईं छुड़ा लेना जाइज़ है. इस बाब में मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़ि.) की ह़दीष़ है आँह़ज़रत (ﷺ) से।

١٥٢- بَابُ إِذَا حَرَّقَ الْمُشْرِكُ الْمُسْلِمَ هَلْ يُحَرَّقُ؟

बाब 152 : अगर कोई मुश्रिक किसी मुसलमान को आग से जलावे तो क्या उसे भी बदले में जलाया जा सकता है?

٣٠١٨- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَهْطًا مِنْ عُكْلٍ ثَمَانِيَةً قَدِمُوا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاجْتَوَوُا الْمَدِيْنَةَ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَبْغِنَا رِسْلاً، قَالَ: ((مَا أَجِدُ لَكُمْ إِلاَّ أَنْ تَلْحَقُوا بِالذَّوْدِ))، فَانْطَلَقُوا فَشَرِبُوا مِنْ أَبْوَالِهَا وَأَلْبَانِهَا حَتَّى صَحُّوا وَسَمِنُوا، وَقَتَلُوا الرَّاعِيَ وَاسْتَاقُوا الذَّوْدَ، وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلاَمِهِمْ. فَأَتَى الصَّرِيْخُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَبَعَثَ

3018. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि क़बीला उ़कल के आठ आदमियों की जमाअ़त नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में (इस्लाम क़ुबूल करने को) ह़ाज़िर हुई लेकिन मदीना की आबो-हवा उन्हें मुवाफ़िक़ नहीं आई, उन्होंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! हमारे लिये (ऊँट के) दूध का इंतिज़ाम कर दीजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारे लिये दूध नहीं दे सकता, तुम (स़दक़ा के) ऊँटों में चले जाओ। उनका दूध और पेशाब पीयो, ताकि तुम्हारी स़ेह़त ठीक हो जाए। वो लोग वहाँ चले गये और उनका दूध और पेशाब पीकर तन्दुरुस्त हो गये तो चरवाहे को क़त्ल कर दिया, और ऊँटों को अपने साथ लेकर भाग निकले और इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र किया, एक शख़्स ने उसकी ख़बर आँह़ज़रत (ﷺ) को दी, तो आप (ﷺ) ने उनकी तलाश के लिय

الطَّلَبَ، فَمَا تَرَجَّلَ النَّهَارُ حَتَّى أُتِيَ بِهِمْ فَقَطَعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ ثُمَّ أَمَرَ بِمَسَامِيرَ فَأُحْمِيَتْ فَكَحَلَهُمْ بِهَا وَطَرَحَهُمْ بِالْحَرَّةِ يَسْتَسْقُونَ فَمَا يُسْقَوْنَ حَتَّى مَاتُوا. قَالَ أَبُو قِلاَبَةَ: قَتَلُوا وَسَرَقُوا وَحَارَبُوا اللهَ وَرَسُولَهُ وَسَعَوْا فِي الأَرْضِ فَسَادًا.

[راجع: ٢٣٣]

सवार दौड़ाए, दोपहर से भी पहले वो पकड़कर लाये गये। उनके हाथ-पांव काट दिये गये। फिर आपके हुक्म से उनकी आँखों में सिलाई गर्म करके फेर दी गई और उन्हें हर्रह (मदीना की पथरीली ज़मीन) में डाल दिया गया। वो पानी मांगते थे लेकिन उन्हें नहीं दिया गया। यहाँ तक कि वो सब मर गये। (ऐसा ही उन्होंने ऊँटों के चराने वालों के साथ किया था, जिसका बदला उन्हें दिया गया) अबू क़िलाबा ने कहा कि उन्होंने क़त्ल किया था, चोरी की थी अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के साथ जंग की थी और ज़मीन में फ़साद बरपा करने की कोशिश की थी। (राजेअ: 233)

तश्रीह : तो ऐसे बेईमान, शरीर, पाजियों, नमक हरामों को सख़्त सज़ा देना ही चाहिये ताकि दूसरे लोगों को इबरत हो और अल्लाह के बन्दे उनके ज़ुल्मों से महफ़ूज़ रहें। इस हदीष़ की मुनासबत बाब के तर्जुमे से मुश्किल है क्योंकि उसमें गर्म गर्म सिलाईयाँ आँखों में फेरने का ज़िक्र है जो आग है मगर ये कहाँ मज़्कूर है कि उन्होंने भी मुसलमानों को आग से अ़ज़ाब दिया था। और शायद इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी आदत के मुवाफ़िक़ इस हदीष़ के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया है जिसको तैमी ने रिवायत किया। उसमें ये है कि उन लोगों ने भी मुसलमान चरवाहों के साथ ऐसा ही सुलूक किया था। (वहीदी)

١٥٣- بَابٌ

बाब 153 :

٣٠١٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((قَرَصَتْ نَمْلَةٌ نَبِيًّا مِنَ الأَنْبِيَاءِ، فَأَمَرَ بِقَرْيَةِ النَّمْلِ فَأُحْرِقَتْ، فَأَوْحَى اللهُ إِلَيْهِ أَنْ قَرَصَتْكَ نَمْلَةٌ أَحْرَقْتَ أُمَّةً مِنَ الأُمَمِ تُسَبِّحُ اللهَ)).

[طرفه في : ٣٣١٩].

3019. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि एक चींटी ने एक नबी (अ़ज़ीज़ या मूसा अलैहिस्सलाम) को काट लिया था। तो उनके हुक्म से चींटियों के सारे घर जला दिये गये। इस पर अल्लाह तआ़ला ने उनके पास वह्य भेजी कि अगर तुम्हें एक चींटी ने काट लिया था तो तुमने एक ऐसी ख़िल्क़त को जलाकर ख़ाक कर दिया जो अल्लाह की तस्बीह बयान करती थी। (दीगर मक़ाम : 3319)

कहते हैं कि ये पैग़म्बर एक ऐसी बस्ती पर से गुज़रे जिसको अल्लाह पाक ने बिलकुल तबाह कर दिया था। उन्होंने अ़र्ज़ किया परवरदिगार! इस बस्ती में तो क़सूर बे क़सूर हर तरह के लोग, लड़के, बच्चे, जानवर सब ही थे, तूने सबको हलाक कर दिया। फिर एक पेड़ के तले उतरे, एक चींटी ने उनको काट लिया, उन्होंने ग़ुस्सा होकर चींटियों का सारा बिल जला दिया। तब अल्लाह तआ़ला ने उनके मअ़रूज़ा का जवाब अदा किया कि तूने क्यूँ बेक़ुसूर चींटियों को हलाक कर दिया। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष़ से ये निकाला कि आग से अ़ज़ाब करना दुरुस्त है, जैसे उन पैग़म्बर ने किया। क़स्तलानी ने कहा इस हदीष़ से दलील

ली उसने जो मूज़ी जानवर का जलाना जाइज़ समझता है और हमारी शरीअत में चींटी और शहद की मक्खी को मार डालने से मुमानअत है। (वहीदी)

बाब 154 : (हर्बी काफ़िरों के) घरों और बाग़ों को जलाना

3020. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, कहा कि मुझसे जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़ुलहुलैफ़ा को (बर्बाद करके) मुझे राहत क्यूँ नहीं दे देते। ये ज़ुलहुलैफ़ा क़बीला ख़ष्अम का एक बुतख़ाना था और उसे कअबतुल यमानिया कहते थे। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं क़बीला अहमस के एक सौ पचास सवारों को लेकर चला। ये सब हज़रात बड़े अच्छे घुड़सवार थे। लेकिन मैं घोड़े की सवारी अच्छी तरह नहीं कर पाता था। आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे सीने पर (अपने हाथ से) मारा, मैंने अंगुश्त हाये-मुबारक का निशान अपने सीने पर देखा। फ़र्माया ऐ अल्लाह! घोड़े की पुश्त पर इसे ष़बात अता फ़र्मा, और उसे दूसरों को हिदायत की राह दिखाने वाला और ख़ुद हिदायत पाया हुआ बना, उसके बाद जरीर (रज़ि.) रवाना हुए, और ज़ुलहुलैफ़ा की इमारत को गिराकर उसमें आग लगा दी। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) को उसकी ख़बर भिजवाई। जरीर (रज़ि.) के क़ासिद (अबू अरतात हुसैन बिन रबीआ) ने ख़िदमते नबवी में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम! जिसने आप (ﷺ) को हक़ के साथ मब्ऊ़ष किया है। मैं उस वक़्त तक आपकी ख़िदमत में हाज़िर नहीं हुआ, जब तक हमने ज़ुलहुलैफ़ा को एक खाली पेट वाले ऊँट की तरह नहीं बना दिया, या (उन्होंने कहा) ख़ारिश वाले ऊँट की तरह (मुराद वीरानी से है) जरीर (रज़ि.) ने बयान किया कि ये सुनकर आप (ﷺ) ने क़बीला अहमस के सवारों और क़बीला के तमाम लोगों के लिये पाँच बार बरकतों की दुआ फ़र्माई। (दीगर मक़ाम : 3036, 3076, 3823, 4355, 4356, 4357, 6089, 6333)

١٥٤- بَابُ حَرْقِ الدُّورِ والنَّخِيْلِ

٣٠٢٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: قَالَ لِي جَرِيْرٌ قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلاَ تُرِيْحُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ)) - وَكَانَ بَيْتًا فِي خَثْعَمَ يُسَمَّى كَعْبَةَ الْيَمَانِيَةَ - قَالَ فَانْطَلَقْتُ فِي خَمْسِيْنَ وَمِائَةِ فَارِسٍ مِنْ أَحْمَسَ وَكَانُوا أَصْحَابَ خَيْلٍ، وَكُنْتُ لاَ أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ، فَضَرَبَ فِي صَدْرِيْ حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ أَصَابِعِهِ فِي صَدْرِي وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا)). فَانْطَلَقَ إِلَيْهَا فَكَسَرَهَا وَحَرَّقَهَا. ثُمَّ بَعَثَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ يُخْبِرُهُ فَقَالَ رَسُولُ جَرِيْرٍ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا جِئْتُكَ حَتَّى تَرَكْتُهَا كَأَنَّهَا جَمَلٌ أَجْوَفُ أَوْ أَجْرَبُ. قَالَ ((فَبَارَكَ فِي خَيْلِ أَحْمَسَ وَرِجَالِهَا خَمْسَ مَرَّاتٍ)).

[أطرافه في: ٣٠٣٦، ٣٠٧٦، ٣٨٢٣، ٤٣٥٥، ٤٣٥٦، ٤٣٥٧، ٦٠٨٩، ٦٣٣٣].

तश्रीह : ज़ुलहुलैफ़ा नामी बुत हर्बी काफ़िरों का मंदिर था, जहाँ वो जमा होते, और इस्लाम की न सिर्फ़ तौहीन करते बल्कि इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने की मुख़्तलिफ़ तदबीरें सोचा करते थे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उसे ख़त्म कराकर एक फ़साद के मर्कज़ को ख़त्म करा दिया ताकि आम मुसलमान सुकून हासिल कर सकें। ज़िम्मी काफ़िरों के इबादत ख़ाने मुसलमानों की हिफ़ाज़त में आ जाते हैं। लिहाज़ा उनके लिये हर दौर में इस्लामी सरबराहों ने बड़े-बड़े औक़ाफ़ मुक़र्रर

किये हैं और उनकी हिफ़ाज़त को अपना फ़र्ज़ समझा है जैसा कि इतिहास गवाह है। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

٣٠٢١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((حَرَّقَ النَّبِيُّ ﷺ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ)).
[راجع: ٢٣٢٦]

3021. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान बिन उ़यैयना ने ख़बर दी, उन्हें मूसा बिन उ़क़्बा ने, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (यहूद) बनू नज़ीर के खजूर के बाग़ात जलवा दिये थे। (राजेअ़ : 2326)

हालाते जंग मुख़्तलिफ़ होते हैं। कुछ दफ़ा जंगी ज़रूरियात के तहत दुश्मनों के खेतों और बाग़ात को भी जलाना पड़ता है। वरना वैसे आ़म हालात में खेतों और बाग़ों को जलाना बेहतर नहीं है।

١٥٥- بَابُ قَتْلِ النَّائِمِ الْمُشْرِكِ

बाब 155 : (ह़र्बी) मुश्रिक सो रहा हो तो उसका मार डालना दुरुस्त है

ये जब है कि उसको दा'वते इस्लाम पहुँच चुकी हो और वो कुफ़्र व शिर्क पर अड़ा रहे या उसके ईमान लाने से मायूसी हो चुकी हो जैसे अबू राफ़ेअ़ यहूदी था, जो कअ़ब बिन अशरफ़ की तरह नबी (ﷺ) को सताता था, आपकी हिज्व करता और मुश्रिकीन को आपसे लड़ने के लिये उभारा करता।

٣٠٢٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَهْطًا مِنَ الأَنْصَارِ إِلَى أَبِي رَافِعٍ لِيَقْتُلُوهُ، فَانْطَلَقَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَدَخَلَ حِصْنَهُمْ، قَالَ: فَدَخَلْتُ فِي مَرْبَطِ دَوَابَّ لَهُمْ، قَالَ: وَأَغْلَقُوا بَابَ الْحِصْنِ، ثُمَّ إِنَّهُمْ فَقَدُوا حِمَارًا لَهُمْ فَخَرَجُوا يَطْلُبُونَهُ، فَخَرَجْتُ فِيمَنْ خَرَجَ أُرِيهِمْ أَنَّنِي أَطْلُبُهُ مَعَهُمْ، فَوَجَدُوا الْحِمَارَ، فَدَخَلُوا وَدَخَلْتُ، وَأَغْلَقُوا بَابَ الْحِصْنِ لَيْلاً، فَوَضَعُوا الْمَفَاتِيحَ فِي كَوَّةٍ حَيْثُ أَرَاهَا، فَلَمَّا نَامُوا أَخَذْتُ الْمَفَاتِيحَ فَفَتَحْتُ بَابَ الْحِصْنِ، ثُمَّ دَخَلْتُ عَلَيْهِ

3022. हमसे अ़ली बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अंसार के चन्द आदमियों को अबू राफ़ेअ़ (यहूदी) को क़त्ल करने के लिये भेजा, उनमे से एक साहब (अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक रज़ि.) आगे चलकर उसके क़िले के अंदर दाख़िल हो गये। उन्होंने बयान किया कि अंदर जाने के बाद मैं उस मकान में घुस गया, जहाँ उनके जानवर बँधा करते थे। बयान किया कि उन्होंने क़िले का दरवाज़ा बन्द कर लिया, लेकिन इत्तिफ़ाक़ कि उनका एक गधा उनके मवेशियों में से गुम था। इसलिये वो उसे तलाश करने के लिये बाहर निकले। (इस ख़्याल से कि कहीं पकड़ा न जाऊँ) निकलने वालों के साथ मैं भी बाहर आ गया, ताकि उन पर ये ज़ाहिर कर दूँ कि मैं भी तलाश करने वालों में शामिल हूँ, आख़िर गधा उन्हें मिल गया, और वो फिर अंदर आ गये। मैं भी उनके साथ अंदर आ गया और उन्होंने क़िले का दरवाज़ा बन्द कर लिया, रात का वक़्त था, कुंजियो का गुच्छा उन्होंने एक ऐसे ताक़ में रखा, जिसे मैंने देख लिया था। जब वो सब सो गये तो मैंने चाबियों का गुच्छा उठाया

और दरवाज़ा खोलकर अबू राफ़ेअ के पास पहुँचा। मैंने उसे आवाज़ दी, अबू राफ़ेअ! उसने जवाब दिया और मैं फ़ौरन उसकी आवाज़ की तरफ़ बढ़ा और उस पर वार कर बैठा। वो चीखने लगा तो मैं बाहर चला आया। उसके पास से वापस आकर मैं फिर उसके कमरे में दाख़िल हुआ, गोया मैं उसकी मदद को पहुँचा था। मैंने फिर आवाज़ दी, अबू राफ़ेअ! इस बार मैंने अपनी आवाज़ बदल ली थी, उसने कहा कि क्या कर रहा है, तेरी माँ बर्बाद हो। मैंने पूछा, क्या बात पेश आई? वो कहने लगा, न मा'लूम कौन शख़्स मेरे कमरे में आ गया, और मुझ पर हमला कर बैठा है, उन्होंने कहा कि अब की बार मैंने अपनी तलवार उसके पेट पर रखकर इतनी ज़ोर से दबाई कि उसकी हड्डियों में उतर गई, जब मैं उसके कमरे से निकला तो बहुत दहशत में था। फिर क़िले की एक सीढ़ी पर मैं आया ताकि उससे नीचे उतर जाऊँ मगर मैं उस पर से गिर गया और मेरे पाँव में मोच आ गई, फिर जब मैं अपने साथियों के पास आया तो मैंने उनसे कहा कि मैं तो उस वक़्त तक यहाँ से नहीं जाऊँगा जब तक उसकी मौत का ऐलान ख़ुद न सुन लूँ। चुनाँचे मैं वहीं ठहर गया और मैंने रोने वाली औरतों से अबू राफ़ेअ हिजाज़ के सौदागर की मौत का ऐलान बुलन्द आवाज़ से सुना। उन्होंने कहा कि फिर मैं वहाँ से उठा, और मुझे उस वक़्त कुछ भी दर्द मा'लूम नहीं हुआ, फिर हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और आप (ﷺ) को उसकी बशारत दी। (दीगर मक़ाम : 3023, 4038, 4039, 4040)

فَقُلْتُ: يَا أَبَا رَافِعٍ، فَأَجَابَنِي، فَتَعَمَّدْتُ الصَّوْتَ فَضَرَبْتُهُ، فَصَاحَ، فَخَرَجْتُ، ثُمَّ جِئْتُ ثُمَّ رَجَعْتُ كَأَنِّي مُغِيثٌ فَقُلْتُ يَا أَبَا رَافِعٍ - وَغَيَّرْتُ صَوْتِي - فَقَالَ: مَا لَكَ لِأُمِّكَ الْوَيْلُ، قُلْتُ: مَا شَأْنُكَ؟ قَالَ: لاَ أَدْرِي مَنْ دَخَلَ عَلَيَّ فَضَرَبَنِي، قَالَ: فَوَضَعْتُ سَيْفِي فِي بَطْنِهِ، ثُمَّ تَحَامَلْتُ عَلَيْهِ حَتَّى قَرَعَ الْعَظْمَ، ثُمَّ خَرَجْتُ وَأَنَا دَهِشٌ، فَأَتَيْتُ سُلَّمًا لَهُمْ لأَنْزِلَ مِنْهُ فَوَقَعْتُ، فَوُثِئَتْ رِجْلِي، فَخَرَجْتُ إِلَى أَصْحَابِي فَقُلْتُ: مَا أَنَا بِبَارِحٍ حَتَّى أَسْمَعَ النَّاعِيَةَ، فَمَا بَرِحْتُ حَتَّى سَمِعْتُ نَعَايَا أَبِي رَافِعٍ تَاجِرِ أَهْلِ الْحِجَازِ. قَالَ: فَقُمْتُ وَمَا بِي قَلَبَةٌ حَتَّى أَتَيْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْنَاهُ)).

[أطرافه في: ٣٠٢٣، ٤٠٣٨، ٤٠٣٩، ٤٠٤٠].

3023. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी ज़ायदा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अंसार के चन्द आदमियों को अबू राफ़ेअ के पास (उसे क़त्ल करने के लिये) भेजा था। चुनाँचे रात में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक (रज़ि.) उसके क़िले में दाख़िल हुए और उसे सोते हुए क़त्ल किया। (राजेअ : 3022)

٣٠٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ أَبِيهِ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَهْطًا مِنَ الأَنْصَارِ إِلَى أَبِي رَافِعٍ، فَدَخَلَ عَلَيْهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَتِيكٍ بَيْتَهُ لَيْلاً فَقَتَلَهُ وَهُوَ نَائِمٌ)). [راجع: ٣٠٢٢]

तश्रीह : अब्दुल्लाह (रज़ि.) अबू राफ़ेअ की आवाज़ पहचानते थे, वहाँ अंधेरा छाया हुआ था, उन्होंने ये ख़्याल किया, ऐसा न हो मैं और किसी को मार डालूँ, इसलिये उन्होंने अबू राफ़ेअ को पुकारा और उसकी आवाज़ पर ज़र्ब लगाई। गो अबू राफ़ेअ को अब्दुल्लाह ने जगा दिया मगर ये जगाना सिर्फ़ उसकी जगह मा'लूम करने के लिये था। अबू राफ़ेअ वहीं पड़ा रहा, तो गोया सोता ही रहा। इसलिये बाब की मुताबक़त हासिल हुई। कुछ ने कहा कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया, जिसमें ये सराहत है कि अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अबू राफ़ेअ को सोते में मारा। ये अबू राफ़ेअ (सलाम बिन अबुल हक़ीक़ यहूदी) काफ़िरों को मुसलमानों पर जंग के लिये उभारता और हर वक़्त फ़साद कराने पर आमादा रहता था। इसलिये मुल्क में क़याम अमन के लिये उसका ख़त्म करना ज़रूरी हुआ और इस तरह अल्लाह तआला ने उस ज़ालिम को नेस्त व नाबूद कराया।

बाब 156 : दुश्मन से मुठभेड़ होने की आरज़ू न करना

١٥٦ - بَابُ لاَ تَمَنَّوا لِقَاءَ الْعَدُوِّ

3024. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आसिम बिन यूसुफ़ यरबूई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू इस्हाक़ फ़ज़ारी ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया, कि मुझसे उमर बिन उबैदुल्लाह के गुलाम सालिम अबुन् नज़्र ने बयान किया कि मैं उमर बिन उबैदुल्लाह का मुंशी था। सालिम ने बयान किया कि जब वो ख़वारिज से लड़ने के लिये रवाना हुए तो उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) का ख़त मिला। मैंने उसे पढ़ा तो उसमें उन्होंने लिखा था कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक लड़ाई के मौक़े पर इंतिज़ार किया, फिर जब सूरज ढल गया। (राजेअ : 2818)

٣٠٢٤ - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ يُوسُفَ الْيَرْبُوعِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الْفَزَارِيُّ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ أَبُو النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، كُنْتُ كَاتِبًا لَهُ قَالَ: كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أَوْفَى حِيْنَ خَرَجَ إِلَى الْحَرُورِيَّةِ فَقَرَأْتُهُ فَإِذَا فِيْهِ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَيَّامِهِ الَّتِي لَقِيَ فِيْهَا الْعَدُوَّ انْتَظَرَ حَتَّى مَالَتِ الشَّمْسُ)).

[راجع: ٢٨١٨]

3025. तो आप (ﷺ) ने लोगों को ख़िताब करते हुए फ़र्माया ऐ लोगों! दुश्मन से लड़ाई-भिड़ाई की तमन्ना न करो, बल्कि अल्लाह तआला से सलामती मांगो। हाँ! जब जंग छिड़ जाए तो फिर सब्र किये रहो और डटकर मुक़ाबला करो और जान लो कि जन्नत तलवारों के साये में है। फिर आपने यूँ दुआ की, ऐ अल्लाह! किताब (कुर्आन) के नाज़िल फ़र्माने वाले, ऐ बादलों के चलाने वाले! ऐ अहज़ाब (या'नी काफ़िरों की जमाअतों को ग़ज़व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर) शिकस्त देने वाले! हमारे दुश्मन को शिकस्त दे और उनके मुक़ाबले में हमारी मदद फ़र्मा। और मूसा बिन उक़्बा ने कहा कि मुझसे सालिम अबुन् नज़्र ने बयान किया कि मैं उमर बिन उबैदुल्लाह का मुंशी था। उनके पास हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) का ख़त आया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था

٣٠٢٥ - ثُمَّ قَامَ فِي النَّاسِ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ لاَ تَمَنَّوا لِقَاءَ الْعَدُوِّ وَسَلُوا اللهَ الْعَافِيَةَ، فَإِذَا لَقِيْتُمُوهُمْ فَاصْبِرُوا. وَاعْلَمُوا أَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلاَلِ السُّيُوفِ)). ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ، وَمُجْرِيَ السَّحَابِ، وَهَازِمَ الأَحْزَابِ، اهْزِمْهُمْ وَانْصُرْنَا عَلَيْهِمْ)). وَقَالَ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ: قَالَ حَدَّثَنِي سَالِمٌ أَبُو النَّضْرِ: كُنْتُ كَاتِبًا لِعُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، فَأَتَاهُ كِتَابُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى

कि दुश्मन से लड़ाई लड़ने की तमन्ना न करो। (राजेअ : 2933)

رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَمَنَّوا لِقَاءَ الْعَدُوِّ)).[راجع: ٢٩٣٣]

3026. अबू आमिर ने कहा, हमसे मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दुश्मन से लड़ने-भिड़ने की तमन्ना न करो, हाँ! अगर जंग शुरू हो जाए तो फिर स़ब्र से काम लो।

٣٠٢٦– وَقَالَ أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا مُغِيْرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَمَنَّوا لِقَاءِ الْعَدُوِّ، فَإِذَا لَقِيْتُمُوهُمْ فَاصْبِرُوا)).

बाब और ह़दीष़ की मंशा ज़ाहिर है कि दुश्मन से बर सरे पेकार रहने की कोशिश कोई अच्छी चीज़ नहीं है। सुलह़ सफ़ाई, अमन व अमान बहरहाल ज़रूरी हैं। इसलिये कभी भी ख़्वाह-मख़्वाह जंग न छेड़ी जाए न उसके लिये आरज़ू की जाए। हाँ जब सर से पानी गुज़र जाए और जंग बग़ैर कोई चारा-ए-कार न हो तो फिर स़ब्र और इस्तिक़ामत के साथ पूरी क़ुव्वत से दुश्मन से मुक़ाबला करना ज़रूरी है।

बाब 157 : लड़ाई मक्र व फ़रेब का नाम है

١٥٧– بَابُ الْحَرْبُ خُدْعَةٌ

या'नी लड़ाई में मक्र और तदबीर ज़रूरी है। इसका ये मत़लब नहीं कि अ़हद तोड़ दे या दग़ाबाज़ी करे वो तो ह़राम है। ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ में मुसलमानों के ख़िलाफ़ यहूद और क़ुरैश और ग़त़फ़ान सब मुत्तफ़िक़ हो गये थे, आँह़ज़रत (ﷺ) ने नईम बिन मसऊ़द (रज़ि.) को भेजकर उनमें नाइत्तिफ़ाक़ी करा दी, उस वक़्त आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि लड़ाई मक्र व फ़रेब ही का नाम है। या'नी इसमें दाँव चलाना और दुश्मन को धोखा देना ज़रूरी है। (वह़ीदी)

3027. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसरा (ईरान का बादशाह) बर्बाद व हलाक हो गया, अब उसके बाद किसरा नहीं आएगा। और क़ैसर (रोम का बादशाह) भी हलाक व बर्बाद हो गया, और उसके बाद (शाम में) कोई क़ैसर बाक़ी नहीं रह जाएगा। और उनके ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में तक़्सीम होंगे। (दीगर मक़ाम : 3120, 3618, 6630)

٣٠٢٧– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((هَلَكَ كِسْرَى، ثُمَّ لاَ يَكُونُ كِسْرَى بَعْدَهُ. وَقَيْصَرٌ لَيَهْلِكَنَّ، ثُمَّ لاَ يَكُونُ قَيْصَرٌ بَعْدَهُ. وَلَتُقْسَمَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيْلِ اللهِ)).

[أطرافه في: ٣١٢٠، ٣٦١٨، ٦٦٣٠].

3028. और आप (ﷺ) ने लड़ाई को मक्र व फ़रेब फ़र्माया। (दीगर मक़ाम : 3029)

٣٠٢٨– ((وَسَمَّى الْحَرْبَ خَدْعَةً)).

[طرفه في: ٣٠٢٩].

तश्रीह : उस ज़माने में रोम और ईरान में मुस्तह़कम ह़ुकूमतें क़ायम थीं। ईरानी बादशाह को लफ़्ज़े किसरा से और रूमी बादशाह को लफ़्ज़े क़ैसर से मुलक़्क़ब करते थे। इन मुल्कों में बादशाहों को अल्लाह के दर्जे में समझा जाता था और रिआ़या उनकी परस्तिश किया करती थी। आख़िर इस्लाम ऐसे ही मज़ालिम और इंसानी दुखों को ख़त्म करने आया और उसने ला इलाहा इल्लल्लाह का नारा बुलन्द किया कि ह़क़ीक़ी बादशाह सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आ़लमीन है, दुनिया में बादशाही का ग़ुरूर रखने वाले और रिआ़या का ख़ून चूसने वाले लोग झूठे-मक्कार हैं। आख़िर ऐसे मज़ालिम का हमेशा के लिये दोनों मुल्कों

से ख़ात्मा हो गया और अ़हदे ख़िलाफ़त में दोनों मुल्कों में इस्लामी परचम लहराने लगा। जिसके नीचे लोगों ने सुख और इत्मीनान की सांस ली और ये ज़ालिमाना शाहियत (राजतंत्र) दोनों मुल्कों से नेस्त व नाबूद हो गई।

3029. हमसे अबूबक्र बिन असरम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हे हम्माम बिन मुनब्बा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया लड़ाई क्या है? एक चाल है। (राजेअ़ : 3028)

٣٠٢٩- حَدَّثَنَا أَبُوبَكْرِ بْنِ أَصْرَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَمَّى النَّبِيُّ ﷺ الْحَرْبَ خِدْعَةً)). [راجع: ٣٠٢٨]

3030. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको इब्ने उ़ययना ने ख़बर दी, उन्हें अ़म्र ने, उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था, जंग तो एक चालबाज़ी का नाम है।

٣٠٣٠- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْحَرْبُ خِدْعَةٌ)).

मत़लब ये कि जो फ़रीक़ जंग में चुस्ती चालाकी से काम लेगा, जंग का पांसा उसके हाथ में होगा। पस मुसलमानों को ऐसे मौक़ों पर बहुत ज़्यादा होशियारी की ज़रूरत है। जंग में चुस्ती चालाकी बहरसूरत ज़रूरी है और इसी शक्ल में अल्लाह की मदद शामिले ह़ाल होती है।

बाब 158 : जंग में झूठ बोलना (मस्लिहत के लिये) दुरुस्त है

١٥٨- بَابُ الْكَذِبِ فِي الْحَرْبِ

तिर्मिज़ी की रिवायत में है कि तीन जगह झूठ बोलना दुरुस्त है। मर्द का अपनी बीवी से उसको राज़ी करने को और लड़ाई में और दो आदमियों मे सुलह कराने को, अब इख़्तिलाफ़ इसमें ये है कि ये स़रीह़ झूठ बोलना उन मक़ासिद में दुरुस्त है या तअ़रीज़ या'नी ऐसा कलाम कहना जिससे मुख़ात़ब एक मा'नी समझे वो झूठ हो, लेकिन मुतकल्लिम और दूसरा मा'नी मुराद ले और वो सच हो। एक रिवायत में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ऐसे मुक़ामों में तोरिया करते, मष़लन आपको एक मुक़ाम मे चलना होता तो दूसरे मुक़ाम का ह़ाल लोगों से पूछते ताकि लोग समझें कि आप वहाँ जाना चाहते हैं। नववी ने कहा तअ़रीज़ बेहतर है स़रीह़ झूठ से। (वह़ीदी)

3031. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कअ़ब बिन अशरफ़ का काम कौन तमाम करेगा? वो अल्लाह और उसके रसूल को बहुत अज़िय्यतें पहुँचा चुका है। मुह़म्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आप मुझे इजाज़त बख़्श देंगे कि मैं उसे क़त्ल कर आऊँ? आँह़ुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ। रावी ने बयान किया कि फिर मुह़म्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) कअ़ब यहूदी के पास आए और उससे कहने लगे कि नबी करीम (ﷺ) ने तो हमें थका दिया, और हमसे आप (ﷺ) ज़कात मांगते हैं। कअ़ब ने कहा क़सम अल्लाह की! अभी क्या है अभी

٣٠٣١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ لِكَعْبِ بْنِ الأَشْرَفِ، فَإِنَّهُ قَدْ آذَى اللهَ وَرَسُولَهُ؟)) قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ: أَتُحِبُّ أَنْ أَقْتُلَهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قَالَ فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنَّ هَذَا - يَعْنِي النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- قَدْ عَنَّانَا

और मुसीबत में पड़ोगे। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) इस पर कहने लगे कि बात ये है कि हमने उनकी पैरवी कर ली है। इसलिये उस वक़्त तक उसका साथ छोड़ना मुनासिब नहीं समझते हैं जब तक उनकी दा'वत का कोई अंजाम हमारे सामने न आ जाए। ग़र्ज़ मुहम्मद बिन मस्लमा उससे इसी त़रह बातें करते रहे। आख़िर मौक़ा पाकर उसे क़त्ल कर दिया। (राजेअ़ : 2510)

وَسَأَلْنَا الصَّدَقَةَ. قَالَ: وَأَيْضًا وَاللهِ لَتَمَلُّنَّهُ. قَالَ -: فَإِنَّا اتَّبَعْنَاهُ فَنَكْرَهُ أَنْ نَدَعَهُ حَتَّى نَنْظُرَ إِلَى مَا يَصِيرُ أَمْرُهُ. قَالَ : فَلَمْ يَزَلْ يُكَلِّمُهُ حَتَّى اسْتَمْكَنَ مِنْهُ فَقَتَلَهُ.

[راجع: ٢٥١٠]

तश्रीह : कअ़ब बिन अशरफ़ यहूदी मदीना में मुसलमानों का सख़्ततरीन दुश्मन था जो रोज़ाना मुसलमानों के ख़िलाफ़ नित नई चालें करता रहता था। यहाँ तक कि क़ुरैशे मक्का को भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काता और हमेशा मुसलमानों की घात में लगा रहता था लेकिन अल्लाह पाक को इस्लाम और मुसलमानों की बक़ा मंज़ूर थी इसलिये बई सूरत इस फ़सादी को ख़त्म करके उसे जहन्नम रसीद किया गया, सच है :

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़न्द ज़न फूँकों से ये चिराग़ बुझाया न जायेगा

अबू राफ़ेअ़ की त़रह ये मर्दूद भी मुसलमानों की दुश्मनी पर तुला हुआ था। रसूले करीम (ﷺ) की हिज्व करता और शिर्क को दीने इस्लाम से बेहतर बताता, मुश्रिकों को मुसलमानों पर हमला करने के लिये उकसाता, उनकी रुपयों से मदद करता। ह़ज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उसके ख़ात्मे के लिये इजाज़त मांगी कि मैं जो मुनासिब होगा आपकी निस्बत शिकायत के कलिमे कहूँगा, आप (ﷺ) ने इजाज़त दे दी। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) की इससे ये ग़र्ज़ थी कि कअ़ब को मेरा ए'तिबार पैदा हो, वरना वो पहले ही चौंक जाता और अपनी हिफ़ाज़त का बन्दोबस्त कर लेता। कुछ ने ये ए'तिराज़ किया है कि ह़दीष़ बाब के तर्जुमा के मुत़ाबिक़ नहीं है क्योंकि मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) का कोई झूठ इसमें मज़्कूर नहीं है। इसका जवाब ये है कि मुज्तहिदे मुत़्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ उसके दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया है जिसमें स़ाफ़ ये मज़्कूर है कि उन्होंने चलते वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) से इजाज़त ले ली थी कि मैं आपकी शिकायत करूँगा, जो चाहूँ वो कहूँगा, आप (ﷺ) ने इजाज़त दे दी उसमें झूठ बोलना भी आ गया। आख़िर मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कअ़ब को बातों बातों मे कहा यार! तेरे सर से क्या उ़म्दा ख़ुश्बू आती है। वो मर्दूद कहने लगा कि मेरे पास एक औ़रत है जो सारे अ़रब में अफ़ज़ल है। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा यार! ज़रा अपने बाल मुझको सूँघने दो उसने कहा सूँघो, मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) इस बहाने से उसके बाल दरम्याने सर से पकड़कर मज़बूत़ थाम लिये और साथियों को इशारा कर दिया, उन्होंने तलवार के एक ही वार से उसका सर क़लम कर दिया, इसी से बाब का मज़्मून ष़ाबित हुआ।

बाब 159 : जंग में ह़र्बी काफ़िर को अचानक धोखे से मार डालना

١٥٩ – بَابُ الْفَتْكِ بِأَهْلِ الْحَرْبِ

इसी चालाकी होशियारी का नाम जंग है जिसके बग़ैर चारा नहीं। आज के मशीनी दौर में भी दुश्मन की घात में बैठना अक़्वामे आ़लम का मा'मूल है। इस्लाम में ये इजाज़त सिर्फ़ ह़र्बी काफ़िरों के मुक़ाबले में है वरना धोखा बाज़ी किसी ह़ालत मे जाइज़ नहीं।

3032. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कअ़ब बिन अशरफ़ के लिये कौन हिम्मत करेगा? मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा क्या मैं उसे क़त्ल कर दूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! उन्होंने अ़र्ज़ किया कि फिर आप मुझे इजाज़त दें (कि मैं जा चाहूँ झूठ सच कहूँ) आप (ﷺ)

٣٠٣٢ – حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((مَنْ لِكَعْبِ بْنِ الأَشْرَفِ)) فَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ: أَتُحِبُّ أَنْ أَقْتُلَهُ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)) قَالَ: فَأْذَنْ لِي فَأَقُولَ. قَالَ:

ने फ़र्माया कि मेरी तरफ़ से इसकी इजाज़त है। (राजेअ : 2510)

((قَدْ فَعَلْتُ)). [راجع: ٢٥١٠]

यहाँ चूँकि कअ़ब बिन अशरफ़ पर धोखे से अचानक हमला करने का ज़िक्र है जो हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा ने किया था, इसी से बाब का मज़्मून ष़ाबित हुआ। मज़ीद तफ़्सील मज़्कूर हो चुकी है।

बाब 160 : अगर किसी से फ़साद या शरारत का अंदेशा हो तो उससे मक्र और फ़रेब कर सकते हैं

١٦٠- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الاِحْتِيَالِ، وَالْحَذَرِ مَعَ مَنْ يَخْشَى مَعَرَّتَهُ

3033. लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) इब्ने स़य्याद (यहूदी के बच्चे) की तरफ़ जा रहे थे। आपके साथ उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) भी थे (इब्ने स़य्याद के अजीबो-ग़रीब अह़वाल के बारे में आप (ﷺ) ख़ुद तहक़ीक़ करना चाहते थे) आप (ﷺ) को ख़बर दी गई थी कि इब्ने स़य्याद उस वक़्त खजूर की आड़ में मौजूद है। जब आप (ﷺ) वहाँ पहुँचे तो शाख़ों की आड़ में चलने लगे। (ताकि वो आपको देख न सके) इब्ने स़य्याद उस वक़्त एक चादर ओढ़े हुए चुपके-चुपके कुछ गुनगुना रहा था, उसकी माँ ने आँह़ज़रत (ﷺ) को देख लिया और पुकार उठी कि ऐ इब्ने स़य्याद! ये मुह़म्मद (ﷺ) आ पहुँचे, वो चौंक उठा, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर ये उसकी खबर न करती तो वो खोलता (या'नी उसकी बातों से उसका हाल खुल जाता)। (राजेअ़ : 1355)

٣٠٣٣- قَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: انْطَلَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ قِبَلَ ابْنِ صَيَّادٍ - فَحُدِّثَ بِهِ فِي نَخْلٍ - فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ النَّخْلَ، طَفِقَ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ وَابْنُ صَيَّادٍ فِي قَطِيفَةٍ لَهُ فِيهَا رَمْرَمَةٌ، فَرَأَتْ أُمُّ صَيَّادٍ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا صَافِ هَذَا مُحَمَّدٌ، فَوَثَبَ ابْنُ صَيَّادٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ تَرَكَتْهُ بَيَّنَ)). [راجع: ١٣٥٥]

तशरीह : इब्ने स़य्याद मदीना में एक यहूदी बच्चा था, जो काहिन और नजूमियों की तरह लोगों को बहकाया करता था और अपने आपको कभी नबी और रसूल भी कहने लगता, वो भी एक क़िस्म का दज्जाल ही था, क्योंकि दज्लो-फ़रेब उसका काम था। हज़रत उ़मर (रज़ि.) की राय उसके ख़त्म कर देने की थी, मगर आँह़ज़रत (ﷺ) जो रह़मतुल-लिल-आ़लमीन बनकर तशरीफ़ लाए थे आप (ﷺ) ने बहुत सी मुल्की व मिल्ली मस़ालेह की बिना पर उसे मुनासिब न समझा, सच है, **ला इकराहा फ़िद् दीनि** (अल् बक़रः : 256) दीनी मुआ़मलात में किसी पर ज़बरदस्ती करना जाइज़ नहीं है। राहे हिदायत दिखला देना रसूल (ﷺ) का काम है और इस पर चलाना स़िर्फ़ अल्लाह का काम है। **इन्नक ला तहदी मन अहबब्त व लाकिन्नल्लाह यहदी मंय्यशाउ.** (अल क़स़स़ : 56)

बाब का मत़लब इससे ष़ाबित हुआ कि आँह़ज़रत (ﷺ) शाख़ों की आड़ में चलकर इब्ने स़य्याद तक पहुँचे ताकि वो आपको देख न सके, इब्ने स़य्याद ने आपके उम्मियों के रसूल होने की तस्दीक़ की, जिससे उसने आपकी रिसालते आ़म्मा से इंकार भी किया, उम्मी के मा'नी अनपढ़ के हैं। अहले अ़रब में लिखने पढ़ने का रिवाज न था। उसके बावजूद हर फ़न के माहिर थे और बेपनाह क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा रखते थे बल्कि उनको अपने उम्मी होने पर फ़ख़्र था। आँह़ज़रत (ﷺ) भी उन ही में पैदा हुए और अल्लाह पाक ने आपको उम्मी होने के बावजूद उ़लूमुल अव्वलीन वल् आख़िरीन से मालामाल किया।

बाब 161 : जंग में शे'र पढ़ना और खाई खोदते

١٦١- بَابُ الرَّجَزِ فِي الْحَرْبِ،

वक़्त आवाज़ बुलन्द करना

وَرَفْعِ الصَّوتِ فِي حَفْرِ الْخَنْدَقِ

فِيهِ سَهْلٌ وَأَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَفِيهِ يَزِيدُ عَنْ سَلَمَةَ.

इस बाब में सहल और अनस (रज़ि.) ने अहादीष़े नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की हैं और यज़ीद बिन अबी उबैद ने सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) से भी इस बाब में एक हदीष़ रिवायत की है।

٣٠٣٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَوْمَ الْخَنْدَقِ وَهُوَ يَنْقُلُ التُّرَابَ حَتَّى وَارَى التُّرَابُ شَعْرَ صَدْرِهِ - وَكَانَ رَجُلاً كَثِيرَ الشَّعْرِ - وَهُوَ يَرْتَجِزُ بِرَجَزِ عَبْدِ اللهِ بْنِ رَوَاحَةَ: وَيَقُولُ:

اللَّهُمَّ لَوْلاَ أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا
وَلاَ تَصَدَّقْنَا وَلاَ صَلَّيْنَا
فَأَنْزِلَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا
وَثَبِّتِ الأَقْدَامَ إِنْ لاَقَيْنَا
إِنَّ الأَعْدَاءَ قَدْ بَغَوا عَلَيْنَا
إِذَا أَرَادُوا فِتْنَةً أَبَيْنَا

يَرْفَعُ بِهَا صَوْتَهُ)).[راجع: ٢٨٣٦]

3034. हमसे मुसद्दद बिन मुसरहिद ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह़वज़ ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने देखा कि ग़ज़्व-ए-अह़ज़ाब में (ख़न्दक़ खोदते वक़्त) रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुद मिट्टी उठा रहे थे। यहाँ तक कि सीना मुबारक के बाल मिट्टी से अट गए थे। आप (ﷺ) के (जिस्मे मुबारक पर) बाल बहुत घने थे। उस वक़्त आप (ﷺ) अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) का ये शे'र पढ़ रहे थे, (तर्जुमा)

ऐ अल्लाह! अगर तेरी हिदायत न होती तो हम कभी सीधा रास्ता न पाते,
न स़दक़ा कर सकते और न नमाज़ पढ़ते।
अब तू या अल्लाह! हमारे दिलों को सुकून और इत्मीनान अ़ता कर,
और अगर (दुश्मन से) मुठभेड़ हो जाए तो हमें ष़ाबित क़दम रखियो,
दुश्मनों ने हमारे ऊपर ज़्यादती की है।
जब भी वो हमको फ़ित्ना-फ़साद में मुब्तला करना चाहते हैं तो हम इंकार करते हैं।

आप ये शे'र बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहे थे। (राजेअ़ : 2836)

तश्रीह : ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम ने उन अश्आर का तर्जुमा उर्दू में यूँ किया है,

तू हिदायत गर न करता तो कहाँ मिलती नजात — कैसे पढ़ते हम नमाज़ें कैसे देते हम ज़कात
अब उतार हम पर तसल्ली ऐ शहेआली सिफ़ात — पाँव जमवा दे हमारे दे लड़ाई में ष़बात
बेसबब हम पर ये दुश्मन ज़ुल्म से चढ़ आए हैं — जब वो बहकाएँ हमें सुनते नहीं हम उनकी बात

बाब के तर्जुमे में ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **व कानल्मुसन्निफ अशार फित्तर्जुमति बिक़ौलिही व रफ़इस्स़ौति फी हफ़्रिल्खंदक़ि इला अन्न कराहत रफ़इस्स़ौति मुख़्तस्सतुन बिहालतिल्क़ितालि व ज़ालिक फीमा अख़रजहू अबू दाऊद मिन तरीक़ि कैस बिन उबाद काल कान अस्ह़ाबु रसूलिल्लाहि (ﷺ) यक्रहूनस्औत इन्दल्क़ितालि** (फत्ह)

या'नी ह़ज़रत इमाम (रह.) ने इसमें इशारा फ़र्माया है कि ऐन लड़ाई के वक़्त आवाज़ बुलन्द करना मकरूह है जैसा कि एक रिवायत में है कि अस्ह़ाबे रसूल लड़ाई के वक़्त आवाज़ बुलन्द करना मकरूह जानते थे। ह़ालते क़िताल के अ़लावा मकरूह नहीं है जैसा कि यहाँ ख़न्दक़ की खुदाई के मौक़े पर मज़्कूर है।

बाब 162 : जो घोड़े पर अच्छी तरह न जम सकता हो (उसके लिये दुआ करना)

١٦٢ - بَابُ مَنْ لاَ يَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ

3035. हमसे मुहम्मद बिन नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने और उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि जबसे मैं इस्लाम लाया, रसूले करीम (ﷺ) ने (पर्दा के साथ) मुझे (अपने घर में दाख़िल होने से) कभी नहीं रोका और जब भी आप मुझको देखते, ख़ुशी से आप मुस्कुराने लगते। (दीगर मक़ाम : 3822, 6090)

٣٠٣٥ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ نُمَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيْسَ عَنْ إِسْمَاعِيْلَ عَنْ قَيْسٍ عَنْ جَرِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَا حَجَبَنِي النَّبِيُّ ﷺ مُنْذُ أَسْلَمْتُ، وَلاَ رَآنِي إِلاَّ تَبَسَّمَ فِي وَجْهِي)).
[طرفاه في : ٣٨٢٢، ٦٠٩٠].

3036. एक दफ़ा मैंने आप (ﷺ) की ख़िदमत में शिकायत की कि मैं घोड़े की सवारी पर अच्छी तरह नहीं जम पाता हूँ, तो आपने मेरे सीने पर अपना दस्ते मुबारक मारा, और दुआ की ऐ अल्लाह! इसे घोड़े पर जमा दे और दूसरों को सीधा रास्ता दिखाने वाला बना दे और ख़ुद इसे भी सीधे रास्ते पर क़ायम रखियो। (राजेअ़ : 3020)

٣٠٣٦ - وَلَقَدْ شَكَوْتُ أَنِّي لاَ أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ، فَضَرَبَ بِيَدِهِ فِي صَدْرِي وَقَالَ ((اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا)).
[راجع: ٣٠٢٠]

मुजाहिद के लिये दुआ करना ष़ाबित हुआ। किसी भी उसकी ह़ाजत के बारे में हो। ह़ज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) घोड़े की सवारी में पुख़्ता नहीं थे। अल्लाह ने अपने ह़बीब (ﷺ) की दुआ से उनकी इस कमज़ोरी को दूर कर दिया। यही बुज़ुर्ग स़ह़ाबी हैं जिन्होने यमन के बुतख़ाना ज़ुल् ख़लस़ा को ख़त्म किया था जो यमन में का'बा शरीफ़ के मुक़ाबले पर बनाया गया था। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

बाब 163 : बोरिया जलाकर ज़ख़्म की दवा करना और औरत का अपने बाप के चेहरे से ख़ून धोना और ढाल में पानी भर-भरकर लाना

١٦٣ - بَابُ دَوَاءِ الْجُرْحِ بِإِحْرَاقِ الْحَصِيْرِ وَ غَسْلِ الْمَرْأَةِ عَنْ أَبِيْهَا الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ، وَحَمْلِ الْمَاءِ فِي التُّرْسِ.

ज़ख़्मों को ख़ुश्क करने के लिये बोरिया जलाकर उसकी राख इस्ते'माल करना लम्बे ज़माने से मा'मूल चला आ रहा है। मुजाहिदीन के लिये ऐसे मौक़े पर यही हिदायत है और ये भी कि मैदाने जिहाद वग़ैरह में अगर बाप ज़ख़्मी हो जाए तो उसकी लड़की उसकी हर मुम्किन ख़िदमत कर सकती है। यही मक़्स़दे-बाब है।

3037. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे अबू हाज़िम ने बयान किया, कहा कि सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) से शागिर्दों ने पूछा कि (जंगे उहुद में) नबी करीम (ﷺ) के ज़ख़्मों का इलाज किस दवा से किया गया? सहल (रज़ि.) ने

٣٠٣٧ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ قَالَ: ((سَأَلُوا سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: بِأَيِّ شَيْءٍ دُووِيَ جُرْحُ رَسُوْلِ

الله ﷺ؟ فَقَالَ: مَا بَقِيَ أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ أَعْلَمَ بِهِ مِنِّي، كَانَ عَلِيٌّ يَجِيءُ بِالْمَاءِ فِي تُرْسِهِ، وَكَانَتْ - يَعْنِي فَاطِمَةَ- تَغْسِلُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ، وَأُخِذَ حَصِيرٌ فَأُحْرِقَ، ثُمَّ حُشِيَ بِهِ جُرْحُ رَسُولِ اللهِ ﷺ)).

[راجع: ٢٤٣]

उस पर कहा कि अब सहाबा में कोई शख़्स भी ऐसा मौजूद नहीं है जो उसके बारे में मुझसे ज़्यादा जानता हो। हज़रत अली (रज़ि.) अपनी ढाल में पानी भर-भरकर ला रहे थे और सय्यदा फ़ातिमा (रज़ि.) आप (ﷺ) के चेहरे से ख़ून को धो रही थी। और एक बोरिया जलाया गया था और आपके ज़ख़्मों में उसी की राख को भर दिया गया था। (राजेअ : 243)

बाब और हदीष में मुताबक़त जाहिर है। जंगे उहुद में आँहज़रत (ﷺ) को काफ़ी ज़ख़्म आए थे, एक बोरिया जलाकर आपके ज़ख़्मों में उसकी राख को भरा गया, और चेहर-ए-मुबारक से ख़ून को धोया गया, सय्यदना अली (रज़ि.) सय्यदा फ़ातिमा (रज़ि.) ने उन ख़िदमतों को अंजाम दिया था, मैदाने जंग में औरतों का जंगी ख़िदमात अंजाम देना भी षाबित हुआ।

١٦٤- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّنَازُعِ وَالاخْتِلاَفِ فِي الْحَرْبِ، وَعُقُوبَةِ مَنْ عَصَى إِمَامَهُ

बाब 164 : जंग में झगड़ा और इख़्तिलाफ़ करना मकरूह है और जो सरदार लश्कर की नाफ़र्मानी करे, उसकी सज़ा का बयान

وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَلاَ تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ﴾ [الأنفال: ٤٦]. وَقَالَ قَتَادَةُ: الرِّيحُ الْحَرْبُ.

और अल्लाह तआला ने सूरह अन्फ़ाल में फ़र्माया, आपस में फूट न पैदा करो कि उससे तुम बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी. क़तादा ने कहा कि (आयत में) रीह से मुराद लड़ाई है।

या'नी इख़्तिलाफ़ करने से जंगी ताक़त तबाह हो जाएगी और दुश्मन तुम पर ग़ालिब हो जाएँगी।

٣٠٣٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ مُعَاذًا وَأَبَا مُوسَى إِلَى الْيَمَنِ قَالَ: ((يَسِّرَا وَلاَ تُعَسِّرَا، وَبَشِّرَا وَلاَ تُنَفِّرَا، وَتَطَاوَعَا وَلاَ تَخْتَلِفَا)).

[راجع: ٢٢٦١]

3038. हमसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे सईद बिन अबी बुर्दा ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे उनके दादा अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मुआज़ (रज़ि.) और अबू मूसा (रज़ि.) को यमन भेजा, आप (ﷺ) ने उस मौक़ा पर ये हिदायत फ़र्माई थी कि (लोगों के लिये) आसानी पैदा करना, उन्हें सख़्तियों में मुब्तला न करना, उनको ख़ुश रखना, नफ़रत न दिलाना, और तुम दोनों आपस में इत्तिफ़ाक़ रखना, इख़्तिलाफ़ न पैदा करना। (राजेअ : 2261)

तश्रीह : आयते मज़्कूरा फ़िल बाब एक ऐसी कलीदी हिदायत पर मुश्तमिल है जिस पर पूरी मिल्लत के तनज़्ज़ुल व तरक़्क़ी (पतन व उत्थान) का दारोमदार है। जब तक इस हिदायत पर अमल रहा मुसलमान दुनिया पर हुक्मरान रहे और जबसे बाहमी तनाज़ोअ व इफ़्तिराक़ शुरू हुआ, उम्मत की क़ुव्वत पारा-पारा हो कर रह गई। क़ुर्आन मजीद की बहुत सी आयतें और अहादीषे नबवी की बहुत सी मरवियात मौजूद हैं, जिनमें उम्मत को इत्तिफ़ाक़े बाहमी की ताकीद की गई और इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद और मुवद्दते बाहमी के फ़वाइद से आगाह किया गया है और तनाज़े व इफ़्तिराक़ की ख़राबियों से ख़बर दी गई है।

ख़ुद आयते बाब में ग़ैर मा'मूली तम्बीह मौजूद है कि तनाज़ोअ का नतीजा ये है कि तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और तुम बुज़दिल बन जाओगे। हवा उखड़ने का मतलब ज़ाहिर है कि ग़ैर अक़्वाम की नज़रों में बे वक़्अत हो जाओगे और जुर्अत व बहादुरी मफ़्क़ूद होकर तुम पर बुज़दिली छा जाएगी।

दौरे ह़ाज़रा (वर्तमान काल) में अरबों के बाहमी तनाज़ोअ का नतीजा सुक़ूते बैतुल मक़्दिस की शक्ल में मौजूद है कि मुट्ठी भर यहूदी करोड़ो मुसलमानों को नज़रअंदाज़ करके मस्जिदे अक़्सा पर क़ाबिज़ बने बैठे हैं।

ह़दीषे मुआज़ की हिदायात भी बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल हैं। लोगों के लिये शरई दायरे के अंदर अंदर हर मुम्किन आसानी पैदा करना, सख़्ती के हर पहलू से बचना, लोगों को ख़ुश रखने की कोशिश करना, कोई नफ़रत पैदा करने का काम न करना, ये वो क़ीमती हिदायतें हैं जो हर आ़लिम, मुबल्लिग़, ख़त़ीब, मुदर्रिस, मुर्शिद, हादी के पेशेनज़र रहनी ज़रूरी हैं। उन उ़लमा व मुबल्लिग़ीन के लिये भी ग़ौर का मुक़ाम है जो सख़्तियों और नफ़रतों के पैकर हैं। हदाहुमुल्लाह

3039. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूले करीम (ﷺ) ने जंगे उहुद के मौक़े पर (तीरंदाजों के) पचास आदमियों का अफ़सर अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को बनाया था। आप (ﷺ) ने उन्हें ताकीद कर दी थी कि अगर तुम ये भी देख लो कि परिन्दे हम पर टूट पड़े हैं। फिर भी अपनी जगह से मत हटना, जब तक मैं तुम लोगों को कहला न भेजूँ। इसी त़रह अगर तुम ये देखो कि कुफ़्फ़ार को हमने शिकस्त दे दी है और उन्हें पामाल कर दिया है फिर भी यहाँ से न टलना, जब तक मैं तुम्हें ख़ुद बुला न भेजूँ। फिर इस्लामी लश्कर ने कुफ़्फ़ार को शिकस्त दे दी। बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मैंने मुश्रिक औरतों को देखा कि तेज़ी के साथ भाग रही थीं। उनके पाज़ेब और पिण्डलियाँ दिखाई दे रही थीं। और वो अपने कपड़ों को उठाए हुए थीं। अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथियों ने कहा, कि ग़नीमत लूटो, ऐ क़ौम! ग़नीमत तुम्हारे सामने है। तुम्हारे साथी ग़ालिब आ गये हैं, अब डर किस बात का है। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने उनसे कहा क्या जो हिदायत रसूलुल्लाह (ﷺ) ने की थी, तुम उसे भूल गए? लेकिन वो लोग उसी पर अड़े रहे कि दूसरे अस्ह़ाब के साथ ग़नीमत जमा करने में शरीक रहेंगे। जब ये लोग (अकष़रियत) अपनी जगह छोड़कर चले आए तो उनके मुँह काफ़िरों ने फेर दिये और (मुसलमानों को) शिकस्त ज़दा पाकर भागते हुए आए, यही वो घड़ी थी (जिसका

٣٠٣٩- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يُحَدِّثُ قَالَ: جَعَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الرَّجَّالَةِ يَوْمَ أُحُدٍ - وَكَانُوا خَمْسِيْنَ رَجُلاً - عَبْدَ اللهِ بْنَ جُبَيْرٍ فَقَالَ: ((إِنْ رَأَيْتُمُونَا تَخْطَفُنَا الطَّيْرُ فَلاَ تَبْرَحُوا مَكَانَكُمْ هَذَا حَتَّى أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ، وَإِنْ رَأَيْتُمُونَا هَزَمْنَا الْقَومَ وَأَوْطَأْنَاهُمْ فَلاَ تَبْرَحُوا حَتَّى أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ)). فَهَزَمُوهُمْ. قَالَ: فَأَنَا وَاللهِ رَأَيْتُ النِّسَاءَ يَشْتَدِدْنَ، قَدْ بَدَتْ خَلاَخِلُهُنَّ وَأَسْوُقُهُنَّ، رَافِعَاتٍ ثِيَابَهُنَّ. فَقَالَ أَصْحَابُ عَبْدِ اللهِ بْنِ جُبَيْرٍ : الْغَنِيْمَةَ أَيْ قَوْمِ الْغَنِيْمَةَ، ظَهَرَ أَصْحَابُكُمْ فَمَا تَنْتَظِرُونَ؟ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ جُبَيْرٍ: أَنَسِيْتُمْ مَا قَالَ لَكُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالُوا: وَاللهِ لَنَأْتِيَنَّ النَّاسَ فَلَنُصِيْبَنَّ مِنَ الْغَنِيْمَةِ فَلَمَّا أَتَوهُمْ صُرِفَتْ وُجُوهُهُمْ، فَأَقْبَلُوا مُنْهَزِمِيْنَ، فَذَاكَ إِذْ

يَدْعُوهُمْ الرَّسُولُ فِي أُخْرَاهُمْ، فَلَمْ يَبْقَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَيْرُ اثْنَيْ عَشَرَ رَجُلاً، فَأَصَابُوا مِنَّا سَبْعِينَ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ أَصَابَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ يَوْمَ بَدْرٍ أَرْبَعِينَ وَمِائَةً وَسَبْعِينَ أَسِيرًا وَسَبْعِينَ قَتِيلاً، فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: أَفِي الْقَوْمِ مُحَمَّدٌ؟ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ. فَنَهَاهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُجِيبُوهُ. ثُمَّ قَالَ: أَفِي الْقَوْمِ ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ؟ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ. ثُمَّ قَالَ: أَفِي الْقَوْمِ ابْنُ الْخَطَّابِ؟ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَمَّا هَؤُلاَءِ فَقَدْ قُتِلُوا. فَمَا مَلَكَ عُمَرُ نَفْسَهُ فَقَالَ: كَذَبْتَ وَاللهِ يَا عَدُوَّ اللهِ، إِنَّ الَّذِينَ عَدَدْتَ لأَحْيَاءٌ كُلُّهُمْ، وَقَدْ بَقِيَ لَكَ مَا يَسُوءُكَ. قَالَ: يَوْمٌ بِيَوْمِ بَدْرٍ، وَالْحَرْبُ سِجَالٌ. إِنَّكُمْ سَتَجِدُونَ فِي الْقَوْمِ مُثْلَةً لَمْ آمُرْ بِهَا وَلَمْ تَسُؤْنِي. ثُمَّ أَخَذَ يَرْتَجِزُ: أُعْلُ هُبَلْ، أُعْلُ هُبَلْ. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلاَ تُجِيبُونَهُ؟)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ مَا نَقُولُ؟ قَالَ: ((قُولُوا: اللهُ أَعْلَى وَأَجَلُّ)). قَالَ: إِنَّ لَنَا الْعُزَّى وَلاَ عُزَّى لَكُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (أَلاَ تُجِيبُونَهُ) قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ مَا نَقُولُ؟ قَالَ: ((اللهُ مَوْلاَنَا وَلاَ مَوْلَى لَكُمْ)).

[أطرافه في : ٣٩٨٦، ٤٠٤٣، ٤٠٦٧، ٤٥٦١].

ज़िक्र सूरह आले इमरान में है कि) जब रसूले करीम (ﷺ) तुमको पीछे खड़े हुए बुला रहे थे। उससे यही मुराद है। उस वक़्त रसूले करीम (ﷺ) के साथ बारह अस्हाब के सिवा और कोई भी बाक़ी न रह गया था। आख़िर हमारे सत्तर आदमी शहीद हो गये। बद्र की लड़ाई में आँहज़रत (ﷺ) ने अपने सहाबा के साथ मुश्रिकीन के एक सौ चालीस आदमियों का नुक़्सान किया था, सत्तर उन में से क़ैदी थे और सत्तर मक़्तूल, (जब जंग ख़त्म हो गई तो एक पहाड़ पर खड़े होकर) अबू सुफ़यान ने कहा क्या मुहम्मद (ﷺ) अपनी क़ौम के साथ मौजूद हैं ? तीन बार उन्होंने यही पूछा। लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने जवाब देने से मना कर दिया था। फिर उन्होंने पूछा, क्या इब्ने अबी क़ुहाफ़ा (अबू बक्र रज़ि.) अपनी क़ौम में मौजूद हैं? ये सवाल भी तीन बार किया, फिर पूछा क्या इब्ने ख़त्ताब (उमर रजि) अपनी क़ौम में मौजूद हैं? ये भी तीन बार पूछा, फिर अपने साथियों की तरफ़ मुड़कर कहने लगे कि ये तीनों क़त्ल हो चुके हैं। उस पर उमर (रज़ि.) से न रहा गया और आप बोल पड़े कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! अल्लाह गवाह है कि तू झूठ बोल रहा है। जिनके तूने अभी नाम लिये थे वो सब ज़िन्दा हैं और अभी तेरा बुरा दिन आने वाला है। अबू सुफ़यान ने कहा अच्छा! आज का दिन बद्र का बदला है। और लड़ाई भी एक डोल की तरह (कभी इधर कभी उधर) तुम लोगों को अपनी क़ौम के कुछ लोग मुष्ला किये हुए मिलेंगे। मैंने इस तरह करने का कोई हुक्म (अपने आदमियों को) नहीं दिया था, लेकिन मुझे उनका ये अमल बुरा भी नहीं मा'लूम हुआ। उसके बाद वो फ़ख़िरया रजज़ पढ़ने लगा, हुबुल (बुत का नाम) बुलन्द रहे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोग इसका जवाब क्यूँ नहीं देते। सहाबा (रज़ि.) ने पूछा हम इसके जवाब में क्या कहें, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया कहो कि अल्लाह सबसे बुलन्द और सबसे बड़ा बुज़ुर्ग है। अबू सुफ़यान ने कहा हमारा मददगार उज़्ज़ा (बुत) है और तुम्हारा कोई भी नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जवाब क्यूँ नहीं देते, सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इसका जवाब क्या दिया जाए? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कहो कि अल्लाह हमारा हामी है और तुम्हारा हामी कोई नहीं।

(दीगर मक़ाम : 3986, 4043, 4067, 4561)

तश्रीह : जंगे उहुद इस्लामी तारीख़ का एक बड़ा हादषा है जिसमें मुसलमानों को जानी और माली काफ़ी नुक़्सान बर्दाश्त करना पड़ा। रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथियों को सख़्त ताकीद की थी कि हम भाग जाएँ या मारे जाएँ और परिन्दे हमारा गोश्त उचक-उचककर खा रहे हों, तुम लोग ये दर्रा हमारा हुक्म आए बग़ैर हर्गिज़ न छोड़ना, ये दर्रा बहुत ही नाज़ुक मुक़ाम था। वहाँ से मुसलमानों पर पीछे से हमला हो सकता था, अगर अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथी उस दर्रे को न छोड़ते तो काफ़िरों का लश्कर कभी पीछे से हमला न कर सकता था और मुसलमानों को शिकस्त न होती, मगर अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथियों ने जब मैदान मुसलमानों के हाथ देखा तो वो अम्वाले ग़नीमत लूटने के ख़्याल से दर्रा छोड़कर भाग निकले, और फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी राय क़यास के आगे उन्होंने बिलकुल फ़रामोश कर दिया, नतीजा ये हुआ कि काफ़िरों के उस अचानक हमले से मुसलमानों के पाँव उखड़ गये और बेशतर मुसलमान मुजाहिदीन ने राहे-फ़रार इख़्तियार कर ली। रसूले करीम (ﷺ) के साथ सिर्फ़ अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.), उमर फ़ारूक़ (रज़ि.), अली मुर्तज़ा (रज़ि.), अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअद बिन अबी वक़्क़ास, तलहा बिन उबैदुल्लाह, जुबैर बिन अवाम, अबू उबैदा बिन जर्राह, ख़ब्बाब बिन मुंज़िर, सअद बिन मुआज़ और उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) बाक़ी थे। सत्तर अकाबिर सहाबा शहीद हो गये। जिनमें हज़रत अमीर हम्ज़ा को सय्यदुश्शुहदा कहा जाता है। हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) जो उस वक़्त कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के लश्कर की कमान कर रहे थे, जंग के ख़ात्मे पर उन्होंने फ़ख़्रिया मुसलमानों को ललकारा और ये भी कहा कि मुसलमानों! तुम्हारे कुछ शुहदा मुषला किये मिलेंगे, या'नी उनके नाक-कान काटकर उनकी सूरतों को मस्ख़ कर दिया गया है। मैंने ऐसा हुक्म नहीं दिया, मगर मैं उसे बुरा भी नहीं समझता।

मुश्रिकों ने सबसे ज़्यादा गुस्ताख़ी हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) के साथ की थी। वहशी नामी एक गुलाम ने उन पर छुपकर वार किया, वो गिर गये। अबू सुफ़यान की बीवी हिन्दा ने अपने बाप और भाई का मारा जाना याद करके उनकी नअश का मुषला कर दिया और उनका कलेजा निकालकर चबाया और उनकी नअश पर खड़ी हुई और फ़ख़्रिया शे'र पढ़े।

हुबुल एक बुत का नाम था जो का'बा के बुतों में बड़ा माना जाता था। गोया अबू सुफ़यान ने फ़तहे जंग पर हुबुल की जय का नारा बुलन्द किया कि आज तेरा ग़लबा हुआ और अल्लाह वाले मग़्लूब हुए। उसके जवाब में आँहज़रत (ﷺ) ने हक़ीक़त अफ़रोज़ नारा अल्लाह आला व अजल के लफ़्ज़ों में बुलन्द फ़र्माया, जो इसलिये बुलन्द और बरतर षाबित हुआ कि बाद में हुबुल और तमाम बुतों का का'बा से ख़ात्मा हो गया और अज़्ज़ व जल्ल का नाम वहाँ हमेशा के लिये बुलन्द हो रहा है।

इस हदीष से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मतलब यूँ षाबित किया कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथ वालों ने अपने सरदार से इख़्तिलाफ़ किया और उनका कहा न माना, मोर्चा से हट गये, इसलिये सज़ा पाई, शिकस्त उठाई। यहीं से नस्से सरीह के सामने राय क़यास करने की इंतिहाई मुज़म्मत षाबित हुई मगर सद अफ़सोस कि उम्मत के एक कषीर तब्क़ा को इस राय व क़यास ने तबाह बर्बाद करके रख दिया है, नीज़ इफ़्तिराक़े उम्मत का अहम सबब तक़्लीदे जामिद है जिसने मुसलमानों को मुख़्तलिफ़ फ़िरक़ों में तक़्सीम कर दिया।

बाब 165 : अगर रात के वक़्त दुश्मन का डर पैदा हो (तो चाहिये कि हाकिम उसकी ख़बर ले)

١٦٥ - بَابُ إِذَا فَزِعُوا بِاللَّيْلِ

3040. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे षाबित ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) सबसे ज़्यादा हसीन, सबसे ज़्यादा सख़ी और सबसे ज़्यादा बहादुर थे। उन्होंने कहा कि एक बार रात के वक़्त अहले मदीना घबरा गये थे, क्योंकि एक आवाज़ सुनाई दे

٣٠٤٠ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ أَحْسَنَ النَّاسِ، وَأَجْوَدَ النَّاسِ، وَأَشْجَعَ النَّاسِ.

قَالَ وَقَدْ فَزِعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ لَيْلاً. سَمِعُوا صَوتًا. قَالَ: فَتَلَقَّاهُمُ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى فَرَسٍ لأَبِي طَلْحَةَ عُرْيٍ وَهُوَ مُقَلِّدٌ سَيْفَهُ فَقَالَ: لَمْ تُرَاعُوا لَمْ تُرَاعُوا. ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَجَدْتُهُ بَحْرًا. يَعْنِي الْفَرَسَ)). [راجع: ٢٦٢٧]

रही थी। फिर अबू तलहा (रज़ि.) के एक घोड़े पर जिसकी पीठ नंगी थी रसूले करीम (ﷺ) हक़ीक़ते हाल मा'लूम करने के लिये तन्हा मदीना के आसपास सबसे आगे तशरीफ़ ले गये। फिर आप (ﷺ) वापस आकर सहाबा (रज़ि.) से मिले तो तलवार आप (ﷺ) की गर्दन में लटक रही थी और आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि घबराने की कोई बात नहीं, घबराने की कोई बात नहीं। उसके बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने तो उसे दरिया की तरह पाया। (तेज़ दौड़ने में) आप (ﷺ) का इशारा घोड़े की तरफ़ था। (राजेअ : 2627)

कुछ दुश्मन क़बीलों की तरफ़ से मदीना मुनव्वरा पर अचानक शबख़ूनी का ख़तरा था और एक दफ़ा अंधेरी रात में किसी नामा'लूम आवाज़ पर ऐसा शुबहा हो गया था जिसकी तहक़ीक के लिये सबसे पहले ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) निकले और आप मदीना के चारों तरफ़ दूर-दूर तक पता लेकर वापस लौटे और मुसलमानो की तसल्ली दिलाई कि कोई ख़तरा नहीं है, इसी से बाब का मज़्मून षाबित हुआ।

बाब 166 : दुश्मन को देखकर बुलन्द आवाज़ से या सबाहा पुकारना

١٦٦ - بَابُ مَنْ رَأَى الْعَدُوَّ فَنَادَى بِأَعْلَى صَوْتِهِ :

يَا صَبَاحَاهُ. حَتَّى يُسْمِعَ النَّاسَ

क़ाल इब्नुल्मुनीर मौज़उ हाज़िहित्तर्जुमति अन्न हाज़िहिद्दअवत लैसत मिन दअवल्जाहिलिय्यति अल्मन्ही अन्हा लिअन्नहा इस्तिगाषतुन अलल्कुफ़्फ़ारि (फ़त्ह) या'नी इस तरह पुकारना मना नहीं है।

٣٠٤١- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ قَالَ: ((خَرَجْتُ مِنَ الْمَدِينَةِ ذَاهِبًا نَحْوَ الْغَابَةِ. حَتَّى إِذَا كُنْتُ بِثَنِيَّةِ الْغَابَةِ لَقِيَنِي غُلاَمٌ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوفٍ. قُلْتُ: وَيْحَكَ، مَا بِكَ؟ قَالَ: أُخِذَتْ لِقَاحُ النَّبِيِّ ﷺ. قُلْتُ: مَنْ أَخَذَهَا؟ قَالَ: غَطَفَانُ وَفَزَارَةُ. فَصَرَخْتُ ثَلاَثَ صَرَخَاتٍ أَسْمَعْتُ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا : يَا صَبَاحَاهُ، يَا صَبَاحَاهُ. ثُمَّ انْدَفَعْتُ حَتَّى أَلْقَاهُمْ وَقَدْ أَخَذُوهَا، فَجَعَلْتُ أَرْمِيهِمْ وَأَقُولُ : أَنَا ابْنُ الأَكْوَعِ. وَالْيَوْمَ يَوْمُ الرُّضَّعِ. فَاسْتَنْقَذْتُهَا

3041. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको यज़ीद बिन अबी उबैद ने ख़बर दी, उन्हें सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि मैं मदीना मुनव्वरा से ग़ाबा (शाम के रास्ते में एक मुक़ाम) जा रहा था, ग़ाबा की पहाड़ी पर अभी मैं पहुँचा था कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) का एक ग़ुलाम (रबाह) मुझे मिला। मैंने कहा, क्या बात पेश आई? कहने लगा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की दो दहील ऊँटनियाँ (दूध देने वालियाँ) छीन ली गई हैं। मैंने पूछा किसने छीना है? बताया कि क़बीला ग़त्फ़ान और फ़ज़ारा के लोगों ने। फिर मैंने तीन बार बहुत ज़ोर से चीख़कर या सबाहा, या सबाहा कहा। इतनी ज़ोर से कि मदीना के चारों तरफ़ मेरी आवाज़ पहुँच गई। उसके बाद मैं बहुत तेज़ी के साथ आगे बढ़ा, और डाकुओं तक जा पहुँचा, ऊँटनियाँ उनके साथ थीं , मैंने उन पर तीर बरसाना शुरू कर दिया, और कहने लगा, मैं अक्वा का बेटा सलमा हूँ और आज का दिन कमीनों की हलाकत का दिन है। आख़िर तमाम ऊँटनियाँ मैंने

مِنْهُمْ قَبْلَ أَنْ يَشْرَبُوا، فَأَقْبَلْتُ بِهَا أَسُوقُهَا، فَلَقِيَنِي النَّبِيُّ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ الْقَوْمَ عِطَاشٌ، وَإِنِّي أَعْجَلْتُهُمْ أَنْ يَشْرَبُوا سِقْيَهُمْ، فَابْعَثْ فِي إِثْرِهِمْ. فَقَالَ: ((يَا ابْنَ الأَكْوَعِ مَلَكْتَ فَأَسْجِحْ، إِنَّ الْقَوْمَ يُقْرَوْنَ فِي قَوْمِهِمْ)).

[طرفه في : ٤١٩٤].

उनसे छुड़ा लीं, अभी वो लोग पानी न पीने पाए थे और उन्हें हाँक कर वापस ला रहा था कि इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी मुझको मिल गए। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! डाकू प्यासे हैं और मैंने मारे तीरों के पानी भी नहीं पीने दिया। इसलिये उनके पीछे कुछ लोगों को भेज दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्नुल अक्वा! तू उन पर ग़ालिब हो चुका अब जाने दे, दरगुज़र कर वो तो अपनी क़ौम में पहुँच गये जहाँ उनकी मेहमानी हो रही है। (दीगर मक़ाम : 4194)

तश्रीह : लफ़्ज़ रज़अ, राज़ेअ की जमा है जिसका मा'नी पाजी, कमीना और बदमाश कुछ ने कहा बख़ील जो बुख़्ल की वजह से अपने जानवर का दूध मुँह से चूसता है दुहता नहीं कि कहीं दुहने की आवाज़ सुनकर दूसरे लोग न आ जाएँ और उनको दूध देना पड़े, एक बख़ील का ऐसा ही क़िस्सा मशहूर है। कुछ ने कहा कि बाब का तर्जुमा यूँ है आज मा'लूम हो जाए किसने शरीफ़ माँ का दूध पिया है और किसने कमीनी का।

अरब का क़ायदा है कि कोई आफ़त आती है तो ज़ोर से पुकारते हैं , या सबाहाह! या'नी ये सुबह मुसीबत की है, जल्द आओ और हमारी मदद करो। ग़ाबा एक मुक़ाम का नाम है मदीना से कई मील पर शाम की तरफ़। वहाँ पेड़ बहुत थे, वहीं के झाऊ से मिम्बरे नबवी बनाया गया था। ग़त्फ़ान और फ़ुज़ारा दो क़बीलों के नाम हैं सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने कहा था कि वो डाकू को पानी पीने को ठहरे होंगे, फौज के लोग उनको पा लेंगे और पकड़ लाएँगे। इब्ने सअद की रिवायत में है कि मेरे साथ सौ आदमी दीजिए तो मैं उनके साथ उनके अस्बाब को भी गिरफ्तार करके लाता हूँ। आप (ﷺ) ने जो जवाब दिया वो आपका मुअजज़ा था। वाक़ई वो डाकू अपने क़बीला ग़त्फ़ान में पहुँच चुके थे।

١٦٧ - بَابُ مَنْ قَالَ : خُذْهَا وَأَنَا ابْنُ فُلاَنٍ

وَقَالَ سَلَمَةُ: خُذْهَا وَأَنَا ابْنُ الأَكْوَعِ.

बाब 167 : हमला करते वक़्त यूँ कहना अच्छा ले मैं फ़लाँ का बेटा हूँ, सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने डाकुओं पर तीर चलाए और कहा, ले मैं फ़लाँ का बेटा हूँ

लड़ाई के वक़्त म जब दुश्मन पर वार करे ऐसा कहना जाइज़ है, और ये उस फ़ख़्र और तकब्बुर में शामिल नहीं है जो मना है क़ाल **इब्नुल्मुनीर मौक़उहा मिनल्अहकामि अन्नहा खारिजतुन अनिल्इफ़्तिख़ारि अल्मन्ही अन्हू लिइक़्तिजाइल्हालि ज़ालिक व हुव क़रीबुम्मिन जवाज़िल्इख़्तियालि बिल्ख़ाइल्मुअजमति फ़िल्हर्बि दून ग़ैरिहा.** (फ़त्ह)

٣٠٤٢ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: ((سَأَلَ رَجُلٌ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَقَالَ: يَا أَبَا عُمَارَةَ، أَوَلَّيْتُمْ يَومَ حُنَيْنٍ؟ قَالَ الْبَرَاءُ وَأَنَا أَسْمَعُ: أَمَّا رَسُولُ اللهِ ﷺ لَمْ يُوَلِّ يَوْمَئِذٍ، كَانَ أَبُو سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ آخِذًا بِعِنَانِ بَغْلَتِهِ، فَلَمَّا غَشِيَهُ الْمُشْرِكُونَ نَزَلَ فَجَعَلَ

3042. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से पूछा था, ऐ अबू अम्मारा! क्या आप लोग हुनैन की जंग में वाक़ई फ़रार हो गये थे? अबू इस्हाक़ ने कहा मैं सुन रहा था, बराअ (रज़ि.) ने ये जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उस दिन अपनी जगह से बिलकुल नहीं हटे थे। अबू सुफ़यान बिन हारिष़ बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब आपके खच्चर की लगाम थामे हुए थे, जिस वक़्त मुश्रिकीन ने आपको चारों तरफ़ से घेर लिया था तो आप

सवारी पर से उतरे और (तन्हा मैदान में आकर) फ़र्माने लगे मैं अल्लाह का नबी हूँ, इसमें बिलकुल झूठ नहीं। मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ। बराअ (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) से ज़्यादा बहादुर उस दिन कोई भी न था। (राजेअ़ : 2864)

يَقُولُ: ((أَنَا النَّبِيُّ لاَ كَذِبَ، أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ)). فَمَا رُئِيَ مِنَ النَّاسِ يَوْمَئِذٍ أَشَدُّ مِنْهُ)). [راجع: ٢٨٦٤]

तश्रीह : जंगे हुनैन का ज़िक्र कुर्आन मजीद में आया है, **व यौम हुनैनिन इज़ा अअजबत्कुम कष्रतुकुम** (अत् तौबा : 25) या'नी हुनैन की लड़ाई में तुमको तुम्हारी कष्रत ने घमण्ड और गुरूर में डाल दिया था जिसका नतीजा ये निकला कि तुम्हारी कष्रत ने तुमको कुछ भी फायदा न पहुँचाया और क़बीला हवाज़िन के तीरंदाजों ने आ़म मुसलमानों के मुँह मोड़ दिये। बाद में रसूले करीम (ﷺ) की इस्तिक़ामत व बहादुरी ने उखड़े हुए मुजाहिदीन के दिल बढ़ा दिये और ज़रा सी हिम्मत व बहादुरी ने मैदाने जंग का नक़्शा बदल दिया, उस मौक़े पर आँहज़रत (ﷺ) ने **अना अनन्नबी ला कज़िब** का नारा बुलन्द किया, मैदाने जंग में ऐसे क़ौमी नारे बुलन्द करना मज़्मूम नहीं है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का यही मक़्सद है।

अगर 168 : काफ़िर लोग एक मुसलमान के फ़ैसले पर राज़ी होकर अपने क़िले से उतर आएँ?

١٦٨ - بَابُ إِذَا نَزَلَ الْعَدُوُّ عَلَى حُكْمِ رَجُلٍ

3043. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू उमामा ने, जो सहल बिन हनीफ़ के लड़के थे कि अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया जब बनू क़ुरैज़ा सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) की ष़ालिषी (मध्यस्थता) की शर्त पर हथियार डालकर क़िले से उतर आए तो रसूले करीम (ﷺ) ने उन्हें (सअ़द रज़ि. को) बुलाया। आप वहीं क़रीब ही एक जगह ठहरे हुए थे (क्योंकि वे ज़ख़्मी थे) हज़रत सअ़द (रज़ि.) गधे पर सवार होकर आए, जब वो आप (ﷺ) के क़रीब पहुँचे तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने सरदार की तरफ़ खड़े हो जाओ (और उनको सवारी से उतारो) आख़िर आप उतरकर आँहज़रत (ﷺ) के क़रीब आकर बैठ गये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इन लोगों (बनू क़ुरैज़ा के यहूदी) ने आपकी ष़ालिषी की शर्त पर हथियार डाल दिये हैं। (इसलिये आप इनका फ़ैसला कर दें) उन्होंने कहा कि फिर मेरा फ़ैसला ये है कि इनमें जितने आदमी लड़ने वाले हैं, उन्हें क़त्ल कर दिया जाए और उनकी औरतों और बच्चों को ग़ुलाम बना लिया जाए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया तूने अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला किया है। (दीगर मक़ाम : 3804, 4121, 6262)

٣٠٤٣ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ هُوَ ابْنُ سَهْلِ ابْنِ حُنَيْفٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ بَنُو قُرَيْظَةَ عَلَى حُكْمِ سَعْدٍ هُوَ بْنُ مُعَاذٍ بَعَثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ - وَكَانَ قَرِيْبًا مِنْهُ - فَجَاءَ عَلَى حِمَارٍ، فَلَمَّا دَنَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قُومُوا إِلَى سَيِّدِكُمْ))، فَجَاءَ فَجَلَسَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ لَهُ: ((إِنَّ هَؤُلاَءِ نَزَلُوا عَلَى حُكْمِكَ)). قَالَ: فَإِنِّي أَحْكُمُ أَنْ تُقْتَلَ الْمُقَاتِلَةُ، وَأَنْ تُسْبَى الذُّرِّيَّةُ. قَالَ: ((لَقَدْ حَكَمْتَ فِيْهِمْ بِحُكْمِ الْمَلِكِ)).

[أطرافه في: ٣٨٠٤، ٤١٢١، ٦٢٦٢].

कुछ लोगों ने कहा कि हज़रत सअ़द (रज़ि.) कुछ बीमार थे, उनको सवारी से उतारने के लिये दूसरे की मदद दरकार थी, इसलिये आपने सहाबा (रज़ि.) को हुक्म दिया कि खड़े होकर उनको उतार लो, बाब के तर्जुमे की मुताबक़त ज़ाहिर है। एक रिवायत में यूँ है कि तूने वो हुक्म दिया जो अल्लाह ने सात आसमानों के ऊपर से दिया। (वहीदी)

हज़रत सअ़द (रज़ि.) का फ़ैसला हालाते हाज़रा के तहत बिलकुल मुनासिब था और उसके बग़ैर क़यामे अमन नामुम्किन था। वो बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों की फ़ितरत से वाक़िफ़ थे, उनका ये फ़ैसला यहूदी शरीअ़त के मुताबिक़ था।

बाब 169 : क़ैदी को क़त्ल करना और किसी को खड़ा करके निशाना बनाना

١٦٩- بَابُ قَتْلِ الأَسِيْرِ وَقَتْلِ الصَّبْرِ

जिसको अ़रबी में क़त्ले सब्र कहते हैं। वो ये है कि जानदार आदमी हो या जानवर उसको किसी झाड़ या पेड़ से बाँध देना और तीर या गोली का निशाना बनाना, इस बाब को लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उन लोगों का रद्द किया है जो क़ैदियों को क़त्ल करना जाइज़ नहीं रखते।

3044. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे मक्का के दिन जब शहर में दाख़िल हुए तो आपके सरे मुबारक पर ख़ूद था। आप जब उसे उतार रहे थे तो एक शख़्स (अबूबर्ज़ा असलमी) ने आकर आपको ख़बर दी कि इब्ने ख़त्तल (इस्लाम का बदतरीन दुश्मन) का'बा के पर्दे से लटका हुआ है। आपने फ़र्माया उसे वहीं क़त्ल कर दो। (राजेअ़ : 1864)

٣٠٤٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ ابْنَ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: ((اقْتُلُوهُ)).

[راجع: ١٨٤٦]

ये अ़ब्दुल्लाह बिन ख़त्तल कमबख़्त मुर्तद होकर एक मुसलमान का ख़ून करके काफ़िरों में मिल गया था और आँहज़रत (ﷺ) की और मुसलमानों की हिज्व (निन्दा) वेश्याओं से गवाता। ये हदीष उस हदीष की मुख़स्सस है कि जो शख़्स मस्जिदे हराम में आ जाए वो बेख़ौफ़ है और इससे ये निकला कि मस्जिदे हराम में हद्दे क़िसास लिया जा सकता है। ख़ूद, लोहे का टोप जो मैदाने जंग में सर के बचाने के लिये इस्ते'माल किया जाता था जिस तरह लोहे के कुर्ते (ज़िरह) से बाक़ी बदन को बचाया जाता था।

बाब 170 : अपने तईं क़ैद करा देना और जो शख़्स क़ैद न कराये उसका हुक्म

और क़त्ल के वक़्त दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना.

١٧٠- بَابُ هَلْ يَسْتَأْسِرُ الرَّجُلُ؟ وَمَنْ لَمْ يَسْتَأْسِرْ، وَمَنْ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ عِنْدَ الْقَتْلِ

3045. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें अ़म्र बिन अबी सुफ़यान बिन उसैद बिन जारिया षक़्फ़ी ने ख़बर दी, वो बनी ज़ुह्रा के हलीफ़ थे और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के दोस्त, उन्होंने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दस सहाबा की एक जमाअ़त कुफ़्फ़ार की जासूसी के लिये भेजी, उस जमाअ़त का अमीर आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के नाना आ़सिम बिन षाबित अंसारी (रज़ि.) को बनाया और जमाअ़त रवाना हो गई। जब ये लोग मुक़ामे हिदात पर पहुँचे जो उस्फ़ान और मक्का के बीच में है तो क़बीला हुज़ैल की

٣٠٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي سُفْيَانَ بْنِ أَسِيْدِ بْنِ جَارِيَةَ الثَّقَفِيُّ - وَهُوَ حَلِيْفٌ لِبَنِي زُهْرَةَ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي هُرَيْرَةَ - أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشَرَةَ رَهْطٍ سَرِيَّةً عَيْنًا، وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ

بْنَ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيَّ - جَدَّ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ - فَانْطَلَقُوا، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْهَدْأَةِ - وَهُوَ بَيْنَ عُسْفَانَ وَمَكَّةَ - وَذُكِرُوا لِحَيٍّ مِنْ هُذَيْلٍ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو لَحْيَانَ، فَنَفَرُوا لَهُمْ قَرِيبًا مِنْ مِائَتَيْ رَجُلٍ كُلُّهُمْ رَامٍ، فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ حَتَّى وَجَدُوا مَأْكَلَهُمْ تَمْرًا تَزَوَّدُوهُ مِنَ الْمَدِينَةِ فَقَالُوا هَذَا تَمْرُ يَثْرِبَ فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ فَلَمَّا رَآهُمْ عَاصِمٌ وَأَصْحَابُهُ لَجَؤُوا إِلَى فَدْفَدٍ، وَأَحَاطَ بِهِمُ الْقَوْمُ، فَقَالُوا لَهُمْ: انْزِلُوا وَأَعْطُونَا بِأَيْدِيكُمْ، وَلَكُمُ الْعَهْدُ وَالْمِيثَاقُ وَلاَ نَقْتُلُ مِنْكُمْ أَحَدًا. قَالَ عَاصِمُ بْنُ ثَابِتٍ أَمِيرُ السَّرِيَّةِ: أَمَّا أَنَا فَوَاللَّهِ لاَ أَنْزِلُ الْيَوْمَ فِي ذِمَّةِ كَافِرٍ، اللَّهُمَّ أَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ، فَرَمَوْهُمْ بِالنَّبْلِ، فَقَتَلُوا عَاصِمًا فِي سَبْعَةٍ. فَنَزَلَ إِلَيْهِمْ ثَلاَثَةُ رَهْطٍ بِالْعَهْدِ وَالْمِيثَاقِ، مِنْهُمْ خُبَيْبٌ الأَنْصَارِيُّ وَابْنُ دَثِنَةَ وَرَجُلٌ آخَرُ. فَلَمَّا اسْتَمْكَنُوا مِنْهُمْ أَطْلَقُوا أَوْتَارَ قِسِيِّهِمْ فَأَوْثَقُوهُمْ، فَقَالَ الرَّجُلُ الثَّالِثُ: هَذَا أَوَّلُ الْغَدْرِ، وَاللَّهِ لاَ أَصْحَبُكُمْ، إِنَّ فِي هَؤُلاَءِ لأُسْوَةً - يُرِيدُ الْقَتْلَى - فَجَرَّرُوهُ وَعَالَجُوهُ عَلَى أَنْ يَصْحَبَهُمْ فَأَبَى، فَقَتَلُوهُ، فَانْطَلَقُوا بِخُبَيْبٍ وَابْنِ دَثِنَةَ حَتَّى بَاعُوهُمَا بِمَكَّةَ بَعْدَ وَقِيعَةِ بَدْرٍ، فَابْتَاعَ خُبَيْبًا بَنُو الْحَارِثِ بْنِ عَامِرِ بْنِ نَوْفَلِ بْنِ عَبْدِ

एक शाख़ बनु लह्यान को किसी ने ख़बर दे दी और उस क़बीले के दो सौ तीरंदाज़ों की एक जमाअत उनकी तलाश में निकली, ये सब सहाबा के क़दमों के निशानों से अंदाज़ा लगाते हुए चलते-चलते आख़िर एक ऐसी जगह पर पहुँच गये जहाँ सहाबा ने बैठकर खजूरें खाई थीं, जो वो मदीना मुनव्वरा से अपने साथ लेकर चले थे। पीछा करने वालों ने कहा कि ये (गुठलियाँ) तो यस़्रिब (मदीना) की (खजूरों की) हैं और फिर क़दम के निशानों से अंदाज़ा करते हुए आगे बढ़ने लगे। आख़िर आ़सिम (रज़ि.) और उनके साथियों ने जब उन्हें देखा तो उन सबने एक पहाड़ की चोटी पर पनाह ली, मुश्रिकीन ने उनसे कहा कि हथियार डालकर नीचे उतर आओ, तुमसे हमारा अ़हद व पैमान है। हम किसी शख़्स को भी क़त्ल नहीं करेंगे। आ़सिम बिन स़ाबित (रज़ि.) मुहिम के अमीर ने कहा कि मैं तो आज किसी सूरत में भी एक काफ़िर की पनाह में नहीं उतरूँगा। ऐ अल्लाह! हमारी हालत से अपने नबी को ख़बर कर दे। इस पर उन काफ़िरों ने तीर बरसाने शुरू कर दिये और आ़सिम (रज़ि.) और सात दूसरे सहाबा को शहीद कर डाला और बाक़ी तीन सहाबी उनके अ़हद व पैमान पर उतर आए, ये ख़ुबैब अंसारी (रज़ि.), इब्ने दस़िना (रज़ि.) और एक तीसरे सहाबी (अ़ब्दुल्लाह बिन तारिक़ बलवी रज़ि.) थे। जब ये सहाबी उनके क़ाबू में आ गये तो उन्होंने अपनी कमानों के तांत उतारकर उनको उनसे बाँध लिया, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन तारिक़ (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! ये तुम्हारी पहली ग़द्दारी है। मैं तुम्हारे साथ हर्गिज़ न जाऊँगा बल्कि मैं तो उन्हीं हज़रात का उस्वा इख़्तियार करूँगा, उनकी मुराद शुह्दा से थी, मगर मुश्रिकीन उन्हें खींचने लगे और ज़बरदस्ती अपने साथ ले जाना चाहा। जब वो किसी तरह न गये तो उनको भी शहीद कर दिया। अब ये ख़ुबैब (रज़ि.) और इब्ने दस़िना (रज़ि.) को साथ लेकर चले और उनको मक्का में ले जाकर बेच दिया। ये जंगे बद्र के बाद का वाक़िया है। ख़ुबैब (रज़ि.) को हारिस़ बिन आ़मिर बिन नौफ़िल बिन अ़ब्दे मुनाफ़ के लड़कों ने ख़रीद लिया, ख़ुबैब (रज़ि.) ने ही बद्र की लड़ाई में हारिस़ बिन आ़मिर को क़त्ल किया था। आप उनके यहाँ कुछ दिनों तक क़ैदी बनकर रहे, (ज़ुहरी ने बयान किया) कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अयाज़ ने ख़बर दी और उन्हें हारिस़ की बेटी (ज़ैनब

रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब (उनको क़त्ल करने के लिये) लोग आए तो ज़ैनब से उन्हों ने मू-ए-ज़ेरे नाफ़ मूँडने के लिये उस्तरा मांगा। उन्होंने उस्तरा दे दिया, (ज़ैनब ने बयान किया) फिर उन्होंने मेरे एक बच्चे को अपने पास बुलाया, जब वो उनके पास गया तो मैं ग़ाफ़िल थी, ज़ैनब ने बयान किया कि फिर जब मैंने अपने बच्चे को उनकी रान पर बैठा हुआ देखा और उस्तरा उनके हाथ में था, तो मैं इस बुरी तरह घबरा गई कि ख़ुबैब (रज़ि.) भी मेरे चेहरे से समझ गये उन्होंने कहा, तुम्हें इसका डर होगा कि मैं इसे क़त्ल कर डालूँगा, यक़ीन करो मैं कभी ऐसा नहीं कर सकता। अल्लाह की क़सम! मैंने कोई क़ैदी ख़ुबैब (रज़ि.) से बेहतर कभी नहीं देखा। अल्लाह की क़सम! मैंने एक दिन देखा कि अंगूर का खोशा उनके हाथ में है और वो उसमे से खा रहे हैं। हालाँकि वो लोहे की ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे और मक्का में फलों का मौसम भी नहीं था। कहा करती थीं कि वो तो अल्लाह तआला की रोज़ी थी जो अल्लाह ने ख़ुबैब (रज़ि.) को भेजी थी। फिर जब मुश्रिकीन उन्हें हरम से बाहर लाये, ताकि हरम के हुदूद से निकलकर उन्हें शहीद कर दें तो ख़ुबैब (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुझे सिर्फ़ दो रकअत नमाज़ पढ़ लेने दो। उन्होंने उनको इजाज़त दे दी। फिर ख़ुबैब (रज़ि.) ने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और फ़र्माया, अगर तुम ये ख़याल न करने लगते कि मैं (क़त्ल से) घबरा रहा हूँ तो मैं इन रकअतों को और लम्बा करता। ऐ अल्लाह! इन ज़ालिमों से एक-एक को ख़त्म कर दे, (फिर ये अश्आर पढ़े) जबकि मैं मुसलमान होने की हालत में क़त्ल किया जा रहा हूँ, तो मुझे किसी क़िस्म की भी परवाह नहीं है। ख़्वाह अल्लाह के रास्ते में मुझे किसी पहलू पर भी पछाड़ा जाए, ये सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये है और अगर वो चाहे तो उस जिस्म के टुकड़ों में भी बरकत दे सकता है जिसकी बोटी-बोटी कर दी गई हो। आख़िर हारिष़ के बेटे (उक़्बा) ने उनको शहीद कर दिया। हज़रत ख़ुबैब (रज़ि.) से ही हर उस मुसलमान के लिये जिसे क़ैद करके क़त्ल किया जाए (क़त्ल से पहले) दो रकअतें मशरूअ हुई हैं। इधर हादष़ा के शुरू ही में हज़रत आसिम बिन ष़ाबित (रज़ि.) (मुहिम के अमीर) की दुआ अल्लाह तआला ने क़ुबूल कर ली थी (कि ऐ अल्लाह! हमारी

مَنَافٍ، وَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ قَتَلَ الْحَارِثَ بْنَ عَامِرٍ يَوْمَ بَدْرٍ، فَلَبِثَ خُبَيْبٌ عِنْدَهُمْ أَسِيْرًا فَأَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عِيَاضٍ أَنَّ بِنْتَ الْحَارِثِ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهُمْ حِيْنَ اجْتَمَعُوا اسْتَعَارَ مِنْهَا مُوسَى يَسْتَحِدُّ بِهَا فَأَعَارَتْهُ، فَأَخَذَ ابْنًا لِي وَأَنَا غَافِلَةٌ حِيْنَ أَتَاهُ، قَالَتْ: فَوَجَدْتُهُ مُجْلِسَهُ عَلَى فَخِذِهِ وَالْمُوسَى بِيَدِهِ، فَفَزِعْتُ فَزْعَةً عَرَفَهَا خُبَيْبٌ فِي وَجْهِي، فَقَالَ: تَخْشَيْنَ أَنْ أَقْتُلَهُ؟ مَا كُنْتُ لأَفْعَلَ ذَلِكَ. وَاللهِ مَا رَأَيْتُ أَسِيْرًا قَطُّ خَيْرًا مِنْ خُبَيْبٍ. وَاللهِ لَقَدْ وَجَدْتُهُ يَوْمًا يَأْكُلُ مِنْ قِطْفِ عِنَبٍ فِي يَدِهِ وَإِنَّهُ لَمُوثَقٌ فِي الْحَدِيْدِ وَمَا بِمَكَّةَ مِنْ ثَمَرٍ. وَكَانَتْ تَقُولُ إِنَّهُ لَرِزْقٌ مِنَ اللهِ رَزَقَهُ خُبَيْبًا. فَلَمَّا خَرَجُوا مِنَ الْحَرَمِ لِيَقْتُلُوهُ فِي الْحِلِّ قَالَ لَهُمْ خُبَيْبٌ: ذَرُونِي أَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ. فَتَرَكُوهُ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ قَالَ: لَوْ لاَ أَنْ تَظُنُّوا أَنَّ مَا بِي جَزَعٌ لَطَوَّلْتُهَا، اللَّهُمَّ أَحْصِهِمْ عَدَدًا. وَقَالَ:

مَا أُبَالِي حِيْنَ أُقْتَلُ مُسْلِمًا
عَلَى أَيِّ شِقٍّ كَانَ لِلهِ مَصْرَعِي
وَذَلِكَ فِي ذَاتِ الإِلَهِ، وَإِنْ يَشَأْ
يُبَارِكْ عَلَى أَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعِ

فَقَتَلَهُ ابْنُ الْحَارِثِ، فَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ سَنَّ الرَّكْعَتَيْنِ لِكُلِّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ قُتِلَ صَبْرًا. فَاسْتَجَابَ اللهُ لِعَاصِمِ بْنِ ثَابِتٍ يَوْمَ

हालत की ख़बर अपने नबी को दे दे) और नबी करीम (ﷺ) ने अपने स़हाबा को वो सब हालात बता दिये थे जिसे ये मुहिम दो चार हुई थी। कुफ़्फ़ारे कुरैश के कुछ लोगों को जब मा'लूम हुआ कि हज़रत आ़स़िम (रज़ि.) शहीद कर दिये गये तो उन्होंने उनकी लाश के लिये अपने आदमी भेजे ताकि उनकी जिस्म का कोई ऐसा हिस़्सा काट लाएँ जिससे उनकी शिनाख़्त हो सकती हो। आ़स़िम (रज़ि.) ने बद्र की जंग में कुफ़्फ़ारे कुरैश के एक सरदार (उ़क़्बा बिन अबी मुईत़) को क़त्ल किया था। लेकिन अल्लाह तआला ने भिड़ों का एक छत्ता आ़स़िम (रज़ि.) की नअ़श पर क़ायम कर दिया उन्होंने कुरैश के आदमियों से आ़स़िम की लाश को बचा लिया और वो उनके बदन का कोई टुकड़ा न काट सके। (दीगर मक़ाम : 3989, 4086, 7402)

اصِيبَ، فَأَخْبَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصْحَابَهُ خَبَرَهُمْ وَمَا أُصِيبُوا، وَبَعَثَ نَاسٌ مِنْ كُفَّارِ قُرَيْشٍ إِلَى عَاصِمٍ حِيْنَ حُدِّثُوا أَنَّهُ قُتِلَ لِيُؤْتَوا بِشَيْءٍ مِنْهُ يُعْرَفُ، وَكَانَ قَدْ قَتَلَ رَجُلاً مِنْ عُظَمَائِهِمْ يَوْمَ بَدْرٍ فَبُعِثَ عَلَى عَاصِمٍ مِثْلُ الظُّلَّةِ مِنَ الدَّبْرِ، فَحَمَتْهُ مِنْ رُسُلِهِمْ. فَلَمْ يَقْدِرُوا عَلَى أَنْ يَقْطَعُوا مِنْ لَحْمِهِ شَيْئًا)).

[أطرافه في: ٣٩٨٩، ٤٠٨٦، ٧٤٠٢].

तश्रीह : आ़स़िम बिन उ़मर (रज़ि.) की वालिदा जमीला आ़स़िम बिन स़ाबित की बेटी थीं। कुछ ने कहा ये आ़स़िम बिन उ़मर (रज़ि.) के मामूँ थे और जमीला उनकी बहन थीं। ख़ैर उन छः आदमियों को आप (ﷺ) ने अ़ज़्ल और क़ारा वालों की दरख़्वास्त पर भेजा था। वो जंगे उहुद के बाद आँहज़रत (ﷺ) के पास आए और आपसे अ़र्ज़ किया हम मुसलमान होना चाहते हैं। हमारे साथ चन्द स़हाबा (रज़ि.) को कर दीजिए जो हमको दीन की ता'लीम दें। आपने मरषद बिन अबी मरषद और ख़ालिद बिन बुकैर और ख़ुबैब बिन अ़दी और ज़ैद बिन दष़िना और अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ को उनके साथ कर दिया, रास्ते में बनू लह्यान के लोगों ने उन पर हमला किया और दग़ाबाज़ी से मार डाला। (वहीदी)

बाब 171 : (मुसलमान) क़ैदियों को आज़ाद कराना

١٧١- بَابُ فَكَاكِ الأَسِيْرِ. فِيْهِ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

इस बारे में हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) की एक हदीष़ नबी करीम (ﷺ) से मरवी है.

3046. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे अबू वाईल ने बयान किया और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आ़नी या'नी क़ैदी को छुड़ाया करो, भूखे को खिलाया करो और बीमार की अ़यादत किया करो। (दीगर मक़ाम : 5174, 5373, 5649, 7173)

٣٠٤٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فُكُّوا الْعَانِيَ - يَعْنِي الأَسِيْرَ - وَأَطْعِمُوا الْجَائِعَ، وَعُودُوا الْمَرِيْضَ)).[أطرافه في: ٥١٧٤، ٥٣٧٣، ٥٦٤٩، ٧١٧٣].

ये तीनों नेकियाँ ईमान व अख़्लाक़ की दुनिया में बड़ी अहमियत रखती हैं। मज़्लूम क़ैदी को आज़ाद कराना इतनी बड़ी नेकी है जिसके स़वाब का कोई अंदाज़ा नहीं किया जा सकता, इसी त़रह भूखों को खाना खिलाना वो अ़मल है जिसकी ता'रीफ़ बहुत सी आयाते क़ुर्आनी व अहादीष़े नबवी में वारिद हुई है और मरीज़ का मिज़ाज पूछना भी मस्नून त़रीक़ा है।

3047. हमसे अह्मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उनसे मुतर्रिफ़ ने बयान किया, उनसे आ़मिर ने बयान किया, और उनसे अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से पूछा, आप ह़ज़रात (अहले बैत) के पास किताबुल्लाह के सिवा और भी कोई वह्य है? आपने उसका जवाब दिया। उस ज़ात की क़सम! जिसने दाने को (ज़मीन) चीरकर (निकाला) और जिसने रूह को पैदा किया, मुझे तो कोई ऐसी वह्य मा'लूम नहीं (जो कुर्आन में न हो) अल्बत्ता समझ एक-दूसरी चीज़ है, जो अल्लाह किसी बन्दे को कुर्आन में अ़ता फ़र्माए (कुर्आन से त़रह-त़रह के मत़ालिब निकाले) या इस वरक़ में है। मैंने पूछा, इस वरक़ में क्या लिखा है? उन्होंने बतलाया कि दियत के अह़काम और क़ैदी का छुड़ाना और मुसलमान का काफ़िर के बदले में न मारा जाना, (ये मसाइल इस वरक़ में लिखे हुए हैं और बस)। (राजेअ़ : 111)

٣٠٤٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا مُطَرِّفٌ أَنَّ عَامِرًا حَدَّثَهُمْ عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قُلْتُ لِعَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ مِنَ الْوَحْيِ إِلاَّ مَا فِي كِتَابِ اللهِ؟ قَالَ: لاَ وَالَّذِي فَلَقَ الْحَبَّةَ وَبَرَأَ النَّسَمَةَ، مَا أَعْلَمُهُ إِلاَّ فَهْمًا يُعْطِيْهِ اللهُ رَجُلاً فِي الْقُرْآنِ، وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيْفَةِ. قُلْتُ: وَمَا فِي الصَّحِيْفَةِ قَالَ: الْعَقْلُ، وَفَكَاكُ الأَسِيْرِ، وَأَن لاَ يُقْتَلَ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ)). [راجع: ١١١]

तश्रीह : इससे उन शिया लोगों का रद्द होता है जो कहते हैं मआ़ज़-अल्लाह कुर्आन की और बहुत सी आयतें थीं जिनको आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़ाश (सार्वजनिक) नहीं किया बल्कि ख़ास़ ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) और अपने अहले बैत को बतलाईं, ये स़रीह़ झूठ है। आँह़ज़रत (ﷺ) जब अकेले बे-यार व मददगार मुश्रिकों में फंसे हुए थे उस वक़्त तो आपने कोई बात छुपाई ही नहीं, अल्लाह का पैग़ाम बेख़ौफ़ व ख़त़र सुना दिया, जिसमें मुश्रिकीन की और उनके मा'बूदों की खुली बुराइयाँ थीं। फिर जब आपके जानिषार व फ़िदाई सैंकड़ों स़ह़ाबा मौजूद थे आपको किसी का कुछ भी डर न था, आप अल्लाह का पैग़ाम कैसे छुपाकर रखते। अब रहीं वो रिवायतें जो शिया अपनी किताबों में अहले बैत से नक़ल करते हैं तो उनमें अकष़र झूठ और ग़लत़ और बनाई हुई हैं।

बाब का तर्जुमा लफ़्ज़, **व ला युक़्तलु मुस्लिमुन बिकाफ़िरिन** से निकला। क़स्त़लानी ने कहा जुम्हूर उ़लमा और अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है कि मुसलमान काफ़िर के बदले क़त्ल न किया जाएगा, और स़ह़ीह़ ह़दीष़ से यही ष़ाबित है लेकिन इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने एक ज़ईफ़ रिवायत से जिसको दारे क़ुत़्नी ने निकाला कि मुसलमान ज़िम्मी काफ़िर के बदल क़त्ल किया जाएगा, फ़त्वा दिया है। (वह़ीदी)

बाब 172 : मुश्रिकीन से फ़िदया लेना

١٧٢- بَابُ فِدَاءِ الْمُشْرِكِيْنَ

3048. हमसे इस्माईल बनी अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अंस़ार के कुछ लोगों ने रसूले करीम (ﷺ) से इजाज़त चाही और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप हमें इसकी इजाज़त दे दें कि हम अपने भांजे अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब का फ़िदया मुआफ़ कर दें,

٣٠٤٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ عُقْبَةَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رِجَالاً مِنَ الأَنْصَارِ اسْتَأْذَنُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ ائْذَنْ فَلْنَتْرُكْ

लेकिन आपने फ़र्माया, उनके फ़िदये में से एक दिरहम भी न छोड़ो। (राजेअ : 2537)

لابْنِ أُخْتِنَا عَبَّاسٍ فِدَاءَهُ. فَقَالَ: ((لاَ تَدَعُونَ مِنْهَا دِرْهَمًا)). [راجع: ٢٥٣٧]

3049. और इब्राहीम बिन त़हमान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बहरीन का ख़िराज आया तो ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ख़िदमते नबवी में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस माल से मुझे भी दीजिए क्योंकि (बद्र के मौक़े पर) मैंने अपना और अ़क़ील दोनों का फ़िदया अदा किया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर आप ले लें, चुनाँचे आपने उन्हें उनके कपड़े में नक़दी को बँधवा दिया। (राजेअ : 421)

٣٠٤٩- وَقَالَ إِبْرَاهِيْمُ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيْزِ بْنِ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ : أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَجَاءَهُ الْعَبَّاسُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَعْطِنِي، فَإِنِّي فَادَيْتُ نَفْسِي، وَفَادَيْتُ عَقِيْلاً، فَقَالَ: ((خُذْ، فَأَعْطَاهُ فِي ثَوْبِهِ)). [راجع: ٤٢١]

वल्ह़क़्क़ु अन्नल्मालल्मज़्कूर कान मिनल्ख़राजि अविल्जिज़्यति व हुमा मिम्मालिल्मस़ालिहि या'नी वो माल ख़िराज या जिज़्या का था इसलिये ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) को उसका लेना जाइज़ हुआ, तफ़्सीली बयान किताबुल जिज़्या में आएगा। इंशाअल्लाह तआ़ला)

3050. मुझसे मह़मूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने, उन्हें उनके बाप (जुबैर बिन मुत़इम रज़ि.) ने वो बद्र के क़ैदियों को छुड़ाने आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आए (वो अभी इस्लाम नहीं लाए थे) उन्होंने बयान किया कि मैंने सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने मग़्रिब की नमाज़ में सूरह तूर पढ़ी। (राजेअ : 765)

٣٠٥٠- حَدَّثَنِي مَحْمُودٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيْهِ - وَكَانَ جَاءَ فِي أُسَارَى بَدْرٍ - قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِالطُّورِ)). [راجع: ٧٦٥]

दोनों अह़ादीष़ में मुश्रिकीन से फ़िदया लेने का ज़िक्र है, मुश्रिकीन ख़्वाह अपने अ़ज़ीज़ रिश्तेदार ही क्यूँ न हों अस़ल रिश्ता दीन का रिश्ता है। ये है तो सब कुछ है, ये नहीं तो कुछ भी नहीं। ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) के फ़िदये के बारे में आपका इर्शाद गिरामी बहुत सी मस्लिह़तों पर मबनी था। वो आपके चचा थे, उनसे ज़रा सी भी रिआ़यत बरतना दूसरे लोगों के लिये सूए ज़न का ज़रिया बन सकता था, इसीलिये आपने ये फ़र्माया, जो ह़दीष़ में मज़्कूर है।

बाब 173 : अगर ह़र्बी काफ़िर मुसलमानों के मुल्क में बेअमान चला आए
(तो उसका मार डालना दुरुस्त है)

١٧٣- بَابُ الْحَرْبِيِّ إِذَا دَخَلَ دَارَ الإِسْلاَمِ بِغَيْرِ أَمَانٍ

3051. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे अबू उ़मेस उ़त्बा बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अयास बिन सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने, उनसे उनके बाप (सलमा रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास सफ़र में मुश्रिकों का एक जासूस आया। (आप ग़ज़्व-ए-हवाज़िन के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे) वो जासूस स़ह़ाबा की जमाअ़त में बैठा, बातें कीं, फिर वो

٣٠٥١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْعُمَيْسِ عَنْ إِيَاسِ بْنِ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ ﷺ عَيْنٌ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ - وَهُوَ فِي سَفَرٍ - فَجَلَسَ

عِنْدَ أَصْحَابِهِ يَتَحَدَّثُ، ثُمَّ انْفَتَلَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اطْلُبُوهُ، وَاقْتُلُوهُ، فَقَتَلْتُهُ، فَنَفَّلَهُ سَلَبَهُ)).

वापस चला गया, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि उसे तलाश करके मार डालो। चुनाँचे उसे (सलमा बिन अक्वा रज़ि. ने) क़त्ल कर दिया, और आँहज़रत (ﷺ) ने उसके हथियार और औज़ार क़त्ल करने वाले को दिलवा दिये।

١٧٤ - بَابُ يُقَاتَلُ عَنْ أَهْلِ الذِّمَّةِ وَلاَ يُسْتَرَقُّونَ

बाब 174 : ज़िम्मी काफ़िरों को बचाने के लिये लड़ना, उनका गुलाम लौण्डी न बनाना।

ज़िम्मी वो काफ़िर जो मुसलमानों की अमान में रहते हैं, उनको जिज़्या देते हैं। ऐसे काफ़िरों के जान व माल की हिफ़ाज़त मुसलमानों के ज़िम्मे है। अगर वो अहद तोड़ डालें और मुसलमानों को दग़ा दें तब तो उनको मारना और उनका लौण्डी गुलाम बनाना दुरुस्त है। (वहीदी)

٣٠٥٢ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((وَأُوصِيهِ بِذِمَّةِ اللهِ وَذِمَّةِ رَسُولِهِ ﷺ أَنْ يُوفَى لَهُمْ بِعَهْدِهِمْ، وَأَنْ يُقَاتَلَ مِنْ وَرَائِهِمْ، وَلاَ يُكَلَّفُوا إِلاَّ طَاقَتَهُمْ)).

[راجع: ١٣٩٢]

3052. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उन्हें हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने (वफ़ात से थोड़ी देर पहले) फ़र्माया कि मैं अपने बाद आने वाले ख़लीफ़ा को उसकी वसिय्यत करता हूँ कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (ﷺ) का (ज़िम्मियों से) जो अ़हद है उसको वो पूरा करे और ये कि उनकी हिमायत में उनके दुश्मनों से जंग करे और उनकी त़ाक़त से ज़्यादा कोई बोझ उन पर न डाला जाए। (राजेअ़ : 1392)

ज़िम्मी उन ग़ैर-मुस्लिमों को कहते हैं जो इस्लामी हुकूमत के हुदूद (क्षेत्राधिकार) में रहते हैं। इस्लाम में ऐसे तमाम ग़ैर-मुस्लिमों की जान व माल इ़ज़्ज़त व आबरू मुसलमानों की त़रह है और अगर उन पर किसी त़रफ़ से कोई आँच आती हो तो हुकूमते इस्लामी का फ़र्ज़ है कि उनकी हि़फ़ाज़त के लिये उनके दुश्मनों से अगर जंग भी करनी पड़े तो ज़रूर करें और उनसे कोई बद अ़हदी न करें। आख़िर में जिज़्या की त़रफ़ इशारा है कि वो इसी क़दर लगाया जाए जिसे वो बख़ुशी बर्दाश्त कर सकें।

١٧٥ - بَابُ جَوَائِزِ الْوَفْدِ

बाब 175 : जो काफ़िर दूसरे मुल्कों से ऐलची बनकर आएँ उनसे अच्छा सुलूक करना

तश्रीह : वफ़्द या'नी वो जमाअ़त जो अपने मुल्क वालों की त़रफ़ से बत़ौरे सफ़ारत (प्रवक्ता) के आती है, इस बाब में ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कोई ह़दीष़ बयान नहीं की, कुछ नुस्ख़ों में ये बाब मुअख़्ख़र और बाब हल यस्तशफ़उ अल्ख़ मुक़द्दम है और ये ज़्यादा मुनासिब है क्योंकि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ह़दीष़ इस बाब के मुत़ाबिक़ है और बाब हल यस्तशफ़उ से इसकी मुत़ाबक़त मुश्किल है। मैं कहता हूँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इन दोनों अब्वाब के लिये इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ह़दीष़ बयान की है। वफ़्द के साथ उ़म्दा सुलूक़ करने का तो उसमें साफ़ मज़्कूर है, अब ज़िम्मियों की सिफ़ारिश तो उसकी नफ़ी इमाम बुख़ारी (रह.) ने आपके इस फ़र्मान से निकाली कि मुश्रिकों को जज़ीर-ए-अ़रब के बाहर कर देना, मा'लूम हुआ उनकी सिफ़ारिश न सुनना चाहिये और उनके साथ जो मामला आपने किया या'नी इख़्राज उसका भी इस ह़दीष़ में ज़िक्र है। (वहीदी)

बाब 176 : ज़िम्मियों की सिफ़ारिश और उनसे कैसा मामला किया जाए?

١٧٦- بَابُ هَلْ يُسْتَشْفَعُ إِلَى أَهْلِ الذِّمَّةِ؟ وَمُعَامَلَتُهُمْ

3053. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे सुलैमान अहवल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जुमेरात के दिन, और मा'लूम है जुमेरात का दिन क्या है? फिर आप इतना रोये कि कंकरियाँ तक भीग गईं। आख़िर आपने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की बीमारी में शिद्दत इसी जुमेरात के दिन हुई थी। तो आप (ﷺ) ने स़हाबा से फ़र्माया कि क़लम दवात लाओ, ताकि मैं तुम्हारे लिये एक ऐसी किताब लिखवा जाऊँ कि तुम (मेरे बाद उस पर चलते रहो तो) कभी गुमराह न हो सको। इस पर स़हाबा में इख़्तिलाफ़ हो गया। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि नबी के सामने झगड़ा मुनासिब नहीं है। स़हाबा ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) (बीमारी की शिद्दत से) घबरा रहे हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा, अब मुझे मेरी हालत पर छोड़ दो, मैं जिस हाल में इस वक़्त हूँ वो उससे बेहतर है जो तुम कराना चाहते हो। आख़िर आप (ﷺ) ने अपनी वफ़ात के वक़्त तीन वसि़य्यतें फ़र्माई थीं। एक ये मुश्रिकीन को जज़ीर-ए-अ़रब से बाहर कर देना। दूसरे ये कि वुफ़ूद (प्रतिनिधि मण्डलों) से ऐसा ही सुलूक करते रहना, जैसे मैं करता रहा (उनकी ख़ातिरदारी ज़ियाफ़त वग़ैरह) और तीसरी हिदायत मैं भूल गया। और यअ़क़ूब बिन मुहम्मद ने बयान किया कि मैंने मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रहमान से जज़ीर-ए-अ़रब के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़र्माया कि मक्का, मदीना, यमामा और यमन (का नाम जज़ीर-ए-अ़रब) है। और यअ़क़ूब ने कहा कि अ़र्ज से तहामा शुरू होता है। (अ़र्ज मक्का और मदीना के रास्ते में एक मंज़िल का नाम है)। (राजेअ़ : 114)

٣٠٥٣- حَدَّثَنَا قَبِيْصَةُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ الأَحْوَلِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: يَوْمَ الْخَمِيْسِ وَمَا يَوْمُ الْخَمِيْسِ. ثُمَّ بَكَى حَتَّى خَضَبَ دَمْعُهُ الْحَصْبَاءَ، فَقَالَ: اشْتَدَّ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَجَعُهُ يَوْمَ الْخَمِيْسِ فَقَالَ: ((ائْتُونِي بِكِتَابٍ أَكْتُبُ لَكُمْ كِتَابًا لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ أَبَدًا)). فَتَنَازَعُوا، وَلاَ يَنْبَغِي عِنْدَ نَبِيٍّ تَنَازُعٌ. فَقَالُوا: هَجَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. قَالَ: ((دَعُونِي، فَالَّذِي أَنَا فِيْهِ خَيْرٌ مِمَّا تَدْعُونِي إِلَيْهِ)). وَأَوْصَى عِنْدَ مَوْتِهِ بِثَلاَثٍ: ((أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِيْنَ مِنْ جَزِيْرَةِ الْعَرَبِ، وَأَجِيْزُوا الْوَفْدَ بِنَحْوِ مَا كُنْتُ أُجِيْزُهُمْ، وَنَسِيْتُ الثَّالِثَةَ)). وَقَالَ يَعْقُوبُ بْنُ مُحَمَّدٍ: سَأَلْتُ الْمُغِيْرَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَزِيْرَةِ الْعَرَبِ فَقَالَ: مَكَّةُ وَالْمَدِيْنَةُ وَالْيَمَامَةُ وَالْيَمَنُ. وَقَالَ يَعْقُوبُ: وَالْعَرْجُ أَوَّلُ تِهَامَةَ.

[راجع: ١١٤]

तश्रीह : हिज्र के मा'नी बीमारी की ह़ालत में हिज़्यानी कैफ़ियत का होना। आँहज़रत (ﷺ) बीमारी और ग़ैर बीमारी हर ह़ालत में हिज़्यान से मह़फ़ूज़ थे। कुछ रिवायतों में हजर इस्तफ़्तमूहु है। या'नी क्या पैग़म्बर स़ाहब (ﷺ) की बातें हिज़्यान हैं? आपसे अच्छी तरह़ पूछ लो, समझ लो गोया ये उन लोगों का कलाम है जो किताब लिखवाने के ह़क़ में थे। कुछ ने कहा ये कलाम ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा था और क़रीना भी यही है क्यों कि वो किताब लिखे जाने के मुख़ालिफ़ थे। इस सूरत में हिज्र के मा'नी ये होंगे कि क्या आप दुनिया को छोड़ने वाले हैं? या'नी आप क्या वफ़ात पा जाएँगे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को घबराहट और रंज में ये ख़्याल समा गया था कि आप आपको मौत नहीं आ सकती, इस ह़ालत में किताब लिखने की क्या ज़रूरत है?

क़स्तलानी (रह.) ने कहा, ज़ाहिर ये है कि आप ह़ज़रत अबूबक्र (रजि) की ख़िलाफ़त लिखवाना चाहते थे, जैसे

इमाम मुस्लिम की रिवायत में है कि आपने हज़रत आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया, तू अपने बाप और भाई को बुला ले, मैं डरता हूँ कहीं कोई और ख़िलाफ़त की आरज़ू करे, अल्लाह और मुसलमान सिवाय अबूबक्र (रज़ि.) के और किसी की ख़िलाफ़त नहीं मानते।

वसाया-ए-नबवी में एक अहम वसिय्यत ये थी कि जज़ीर-ए-अरब में से मुश्रिकीन और यहूद व नसारा को निकाल दिया जाए, अरब का मुल्क तूल में अदन से इराक़ तक और अर्ज़ में जिद्दा से शाम तक है। और उसको जज़ीरा इसलिये फ़र्माया कि तीन तरफ़ समुन्दर उसको घेरे हुए है। ये वसिय्यत हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में पूरी की। मुल्के अरब को चारों दिशाओं से बहरे हिन्द व बहरे कुल्ज़ुम व बहरे फ़ारस व बहरे हब्शा ने घेरा हुआ है इसलिये इसे जज़ीरा कहा गया है।

हदीष के जुम्ला, **व ला यम्बग़ी इन्द नबिय्यिन तनाज़उन** पर अल्लामा क़स्तलानी लिखते हैं, **अज़्ज़ाहिरु अन्नहू मिन क़ौलिही (ﷺ) ला मिन क़ौलि इब्नि अब्बास कमा वक़अत्तस्रीह बिही फी किताबिल्इल्मि क़ालन्नबिय्यु (ﷺ) कुमू अन्नी व ला यम्बग़ी इन्दी अत्तनाज़अ इन्तिहा वज़्ज़ाहिरु अन्न हाज़ल्किताबल्लज़ी अरादहू इन्नमा हुव फिन्नस्सि अला ख़िलाफति अबी बक्र लाकिन्नहू अदल अन्हु मुअव्विलन अला मा हुव अस्लुहू मिन इस्तिख़्लाफिही फिस्सलाति लितनाज़ुइहिम वश्तद्द मर्ज़ुहू (ﷺ) व यदुल्लु अलैहि मा इन्द मुस्लिम अन आयशत अन्नहू (ﷺ) क़ाल उदई ली अबा बक्र व अख़ाकि अक्तुबु किताब फइन्नी अख़ाफु अंय्यतमन्ना मुतमन्निन व यक़ूलु क़ाइलुन अना औला व याबल्लाहु वल्मूमिनून इल्ला अबा बक्र व इन्दल्बज़्ज़ार मिन रिवायतिहा अन्नहू क़ाल इन्द इश्तिदादि मर्ज़िही ईतूनी बिदवातिन औ कतिफिन औ किर्तासिन अक्तबु लिअबी बक्र किताबन ला यख़्तलिफुन्नासु अलैहि षुम्म क़ाल मआज़ल्लाह अंय्यख़्तलिफ़न्नासु अला अबी बक्र फहाज़न्नस्सु सरीहुन अला तक़्दीमि ख़िलाफ़ति अबी बक्र.** (क़स्तलानी)

ज़ाहिर है कि अल्फ़ाज़ क़ूमूअन्नी ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ही के फ़रमूदा हैं ये इब्ने अब्बास (रज़ि.) के लफ़्ज़ नहीं हैं जैसा कि किताबुल इल्म में सराहत के साथ मौजूद है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे पास झगड़ना मुनासिब नहीं लिहाज़ा यहाँ से खड़े हो जाओ, और ये भी ज़ाहिर है कि जिस किताब के लिखने का आँहज़रत (ﷺ) ने इरादा फ़र्माया था वो किताब ख़िलाफ़त अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के बारे में आप लिखना चाहते थे। फिर आपने लोगों के तनाज़ोअ और अपनी तकलीफ़े मर्ज़ देखकर उस इरादे को तर्क कर दिया और इसलिये भी कि आप अपनी हयाते तय्यिबा ही में हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) को नमाज़ में इमाम बनाकर अपनी गद्दी उनके हवाले फ़र्मा चुके थे जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने वालिद अबूबक्र (रज़ि.) को बुला लो और अपने भाई को भी ताकि मैं एक किताब लिखवा दूँ, मैं डरता हूँ कि मेरे बाद कोई ख़िलाफ़त की तमन्ना लेकर खड़ा हो और कहे कि मैं इसका ज़्यादा मुस्तहिक़ हूँ। हालाँकि अल्लाह पाक ने और तमाम ईमान वालों ने इस अज़ीम ख़िदमत के लिये अबूबक्र (रज़ि.) ही को मुंतख़ब कर लिया है और बज़्ज़ार में उन्हीं की रिवायत से यूँ है कि आपने शिद्दते मर्ज़ में फ़र्माया, मेरे पास दवात काग़ज़ वग़ैरह लाओ कि मैं अबूबक्र (रज़ि.) के लिये दस्तावेज़ लिखवा दूँ, ताकि लोग इस पर इख़्तिलाफ़ न करें। फिर फ़र्माया कि अल्लाह की पनाह उससे कि लोग ख़िलाफ़ते अबूबक्र में इख़्तिलाफ़ करें। पस हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त पर ये नस्से सरीह है।

बाब 177 : वुफ़ूद से मुलाक़ात के लिये अपने को आरास्ता करना

١٧٧- بَابُ التَّجَمُّلِ لِلْوُفُودِ

3054. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि उमर (रज़ि.) ने देखा कि बाज़ार में एक

٣٠٥٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: وَجَدَ عُمَرُ حُلَّةَ إِسْتَبْرَقٍ

تَبَاعُ فِي السُّوقِ، فَأَتَى بِهَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ابْتَعْ هَذِهِ الْحُلَّةَ فَتَجَمَّلْ بِهَا لِلْعِيدِ وَالْوُفُودِ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا هَذِهِ لِبَاسُ مَنْ لاَ خَلاَقَ لَهُ - أَوْ إِنَّمَا يَلْبَسُ هَذِهِ مَنْ لاَ خَلاَقَ لَهُ)) - فَلَبِثَ مَا شَاءَ اللهُ. ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ بِجُبَّةِ دِيبَاجٍ، فَأَقْبَلَ بِهَا عُمَرُ حَتَّى أَتَى بِهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، قُلْتَ إِنَّمَا هَذِهِ لِبَاسُ مَنْ لاَ خَلاَقَ لَهُ، أَوْ إِنَّمَا يَلْبَسُ هَذِهِ مَنْ لاَ خَلاَقَ لَهُ، ثُمَّ أَرْسَلْتَ إِلَيَّ بِهَذِهِ. فَقَالَ: ((تَبِيعُهَا، أَوْ تُصِيبُ بِهَا بَعْضَ حَاجَتِكَ)).

[راجع: ٨٨٦]

रेशमी जोड़ा बिक रहा है। फिर उसे वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लाए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये जोड़ा आप ख़रीद लें और ईद और वुफ़ूद की मुलाक़ात पर उससे अपनी ज़ेबाइश फ़र्माया करें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये उन लोगों का लिबास है जिनका (आख़िरत में) कोई हिस्सा नहीं या (आपने ये जुम्ला फ़र्माया) इसे तो वही लोग पहन सकते हैं जिनका (आख़िरत में) कोई हिस्सा नहीं। फिर अल्लाह ने जितने दिनों चाहा हज़रत उ़मर (रज़ि.) ख़ामोश रहे। फिर जब एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके पास एक रेशमी जुब्बा भेजा तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) उसे लेकर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने तो ये फ़र्माया था कि ये उनका लिबास है जिनका (आख़िरत में) कोई हिस्सा नहीं, या (उ़मर रज़ि. ने ये बात कही कि) उसे वही लोग पहन सकते हैं जिनका (आख़िरत में) कोई हिस्सा नहीं। और फिर आप (ﷺ) ने यही मेरे पास इरसाल फ़र्मा दिया। इस पर आपने फ़र्माया कि (मेरे भेजने का मक़्सद ये था कि) तुम इसे बेच लो, या (फ़र्माया कि) इससे अपनी कोई ज़रूरत पूरी कर सको। (राजेअ़ : 886)

١٧٨- بَابُ كَيْفَ يُعْرَضُ الإِسْلاَمُ عَلَى الصَّبِيِّ؟

बाब 178 : बच्चे पर इस्लाम किस तरह पेश किया जाए

٣٠٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُمَرَ انْطَلَقَ فِي رَهْطٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ قِبَلَ ابْنِ صَيَّادٍ حَتَّى وَجَدُوهُ يَلْعَبُ مَعَ الْغِلْمَانِ عِنْدَ أُطُمِ بَنِي مَغَالَةَ وَقَدْ قَارَبَ يَوْمَئِذٍ ابْنُ صَيَّادٍ، لِيَحْتَلِمُ فَلَمْ يَشْعُرْ بِشَيْءٍ حَتَّى ضَرَبَ النَّبِيُّ ﷺ ظَهْرَهُ بِيَدِهِ، ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ:

3055. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) के साथ सहाबा की एक जमाअ़त जिनमें हज़रत उ़मर (रज़ि.) भी शामिल थे, इब्ने सय्याद (यहूदी लड़का) के यहाँ जा रही थी। आख़िर बनू मग़ाला (एक अंसारी क़बीले) के टीलों के पास बच्चों के साथ खेलते हुए उसे उन लोगों ने पा लिया, इब्ने सय्याद बालिग़ होने के क़रीब था। उसे (रसूले करीम ﷺ की आमद का) पता नहीं हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने (उसके क़रीब पहुँचकर) अपना हाथ उसकी पीठ पर मारा, और फ़र्माया क्या इसकी गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। इब्ने सय्याद ने आपकी तरफ़ देखा, फिर कहने लगा। हाँ! मैं गवाही देता हूँ कि आप अनपढ़ों के

नबी हैं। उसके बाद उसने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा क्या आप गवाही देते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? आपने उसका जवाब (सिर्फ़ इतना) दिया कि मैं अल्लाह और उसके (सच्चे) अंबिया पर ईमान लाया। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, तू क्या देखता है? उसने कहा कि मेरे पास एक ख़बर सच्ची आती है तो दूसरी झूठी भी। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि हक़ीक़ते हाल तुझ पर मुश्तबह हो गई है। आँहज़रत (ﷺ) ने उससे फ़र्माया, अच्छा मैंने तेरे लिये अपने दिल में एक बात सोची है (बता वो क्या बात है?) इब्ने सय्याद बोला कि दुख़, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़लील हो, कम्बख़्त! तू अपनी हैसियत से आगे न बढ़ सकेगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे इजाज़त हो तो मैं इसकी गर्दन मार दूँ लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर ये वही (दज्जाल) है तो तुम उस पर क़ादिर नहीं हो सकते और अगर दज्जाल नहीं है तो उसकी जान लेने में कोई ख़ैर नहीं। (राजेअ 1354)

((أَتَشْهَدَ أَنِّي رَسُولُ اللهِ ﷺ؟)). فَنَظَرَ إِلَيْهِ ابْنُ صَيَّادٍ فَقَالَ : أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ الأُمِّيِّينَ. فَقَالَ ابْنُ صَيَّادٍ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللهِ؟ قَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((آمَنْتُ بِاللهِ وَرُسُلِهِ)). قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَاذَا تَرَى؟)) قَالَ ابْنُ صَيَّادٍ : يَأْتِينِي صَادِقٌ وَكَاذِبٌ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خُلِطَ عَلَيْكَ الأَمْرُ)). قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي قَدْ خَبَأْتُ لَكَ خَبِيئًا)). قَالَ ابْنُ صَيَّادٍ: هُوَ الدُّخُ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اخْسَأْ، فَلَنْ تَعْدُوَ قَدْرَكَ)). قَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللهِ ائْذَنْ لِي فِيهِ أَضْرِبْ عُنُقَهُ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ يَكُنْهُ فَلَمْ تُسَلَّطَ عَلَيْهِ، وَإِنْ لَمْ يَكُنْ فَلاَ خَيْرَ لَكَ فِي قَتْلِهِ)).[راجع: ١٣٥٤]

3056. अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि (एक बार) उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) को साथ लेकर आँहज़रत (ﷺ) उस खजूर के बाग़ में तशरीफ़ लाए जिसमें इब्ने सय्याद मौजूद था। जब आप (ﷺ) बाग़ में दाख़िल हो गये तो खजूर के तनों की आड़ लेते हुए आप (ﷺ) आगे बढ़ने लगे। आप चाहते ये थे कि उसे आपकी मौजूदगी का एहसास न हो सके और आप उसकी बातें सुन लें। इब्ने सय्याद उस वक़्त अपने बिस्तर पर एक चादर ओढ़े पड़ा था और कुछ गुनगुना रहा था। इतने में उसकी माँ ने आँहुज़ूर (ﷺ) को देख लिया कि आप खजूर के तनों की आड़ लेकर आगे आ रहे हैं और उसे आगाह कर दिया कि ऐ साफ़! ये उसका नाम था, इब्ने सय्याद ये सुनते ही उछल पड़ा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि अगर उसकी माँ ने उसे यूँ ही रहने दिया होता तो हक़ीक़त खुल जाती। (राजेअ : 1355)

٣٠٥٦- قَالَ ابْنُ عُمَرَ: انْطَلَقَ النَّبِيُّ ﷺ وَأُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ يَأْتِيَانِ النَّخْلَ الَّذِي فِيهِ ابْنُ صَيَّادٍ، حَتَّى إِذَا دَخَلَ النَّخْلَ طَفِقَ النَّبِيُّ ﷺ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ وَهُوَ يَخْتِلُ أَنْ يَسْمَعَ مِنْ ابْنِ صَيَّادٍ شَيْئًا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ، وَابْنُ صَيَّادٍ مُضْطَجِعٌ عَلَى فِرَاشِهِ فِي قَطِيفَةٍ لَهُ فِيهَا رَمْزَةٌ، فَرَأَتْ أُمُّ ابْنِ صَيَّادٍ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ، فَقَالَتْ لاِبْنِ صَيَّادٍ: أَيْ صَافِ - وَهُوَ اسْمُهُ - فَثَارَ ابْنُ صَيَّادٍ ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ تَرَكَتْهُ بَيَّنَ)). [راجع: ١٣٥٥]

3057. सालिम ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सहाबा को

٣٠٥٧- وَقَالَ سَالِمٌ : قَالَ ابْنُ عُمَرَ ثُمَّ قَامَ النَّبِيُّ ﷺ فِي النَّاسِ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ

बِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ ذَكَرَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: ((إِنِّي أُنْذِرُكُمُوهُ، وَمَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ قَدْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ لَقَدْ أَنْذَرَ نُوحٌ قَوْمَهُ: وَلَكِنْ سَأَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلاً لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ: تَعْلَمُونَ أَنَّهُ أَعْوَرُ، وَإِنَّ اللهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ)).

[أطرافه في: ٣٣٣٧، ٣٤٣٩، ٤٤٠٢، ٦١٧٥، ٧١٢٣، ٧١٢٧، ٨٤٠٧].

ख़िताब किया, आपने अल्लाह तआला की षना बयान की, जो उसकी शान के मुताबिक़ थी। फिर दज्जाल का ज़िक्र फ़र्माया, और फ़र्माया कि मैं भी तुम्हें उसके (फित्नों से) डराता हूँ, कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी क़ौम को उसके फ़ित्नों से न डराया हो, नूह (अलै.) ने भी अपनी क़ौम को उससे डराया था लेकिन मैं उसके बारे में तुमसे एक ऐसी बात कहूँगा जो किसी नबी ने अपनी क़ौम से नहीं कही, और वो बात ये है कि दज्जाल काना होगा और अल्लाह तआला इससे पाक है। (दीगर मक़ाम : 3337, 3439, 4402, 6175, 7123, 7127, 8404)

तश्रीह : बाब का तर्जुमा अल्फ़ाज़ **अ तश्हदु अना रसूलुल्लाह** से निकलता है कि बच्चे के सामने इस्लाम इस तरह पेश किया जाए, आँहज़रत (ﷺ) को इब्ने सय्याद से चन्द बातें पूछना मंज़ूर थीं, आपने ख़याल किया कि अगर मैं ये कह दूँ कि तू झूठा है तू रसूल कहाँ से हुआ, तो शायद वो चिढ़ जाए और हमारा मक़्सद पूरा न हो, इसलिये ऐसा जामेअ जवाब दिया कि इब्ने सय्याद चिढ़ा भी नहीं और उसकी पैग़म्बरी का इंकार भी निकल आया। आँहज़रत (ﷺ) ने आयत, **यौमा तअतिस् समाउ बिदुख़ानिम् मुबीन** (अद् दुख़ान : 10) का तसव्वुर फ़र्माया था, इब्ने सय्याद ने, दुख़ान के लफ़्ज़ से सिर्फ़ दख़ बतलाया जैसे शैतानों की आदत होती है। सुनी सुनाई एक आध बात ले मरते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने हक़ीक़ी दज्जाल के बारे में बतलाया कि वो काना होगा, ये बड़े दज्जाल का ज़िक्र है। एक हदीष में है कि मेरी उम्मत में तीस झूठे दज्जाल पैदा होंगे, जो नुबुव्वत का दा'वा करेंगे। ये दज्जाल उम्मत में पैदा हो चुके हैं।

हिन्दुस्तान पंजाब में भी एक शख़्स नुबुव्वत का मुद्दई बनकर खड़ा हुआ। जिसने एक कषीर मख़्लूक़ को गुमराह कर दिया और अब तक उसके मुरीदीन (क़ादयानी या अहमदिया फ़िर्क़ा) सारी दुनिया में दज्ल फैलाने मे मशग़ूल हैं जो बज़ाहिर इस्लाम का नाम लेते हैं और दरपर्दा अपने फ़र्ज़ी नामो-निहाद रसूल की रिसालत की तब्लीग़ करते हैं और भी उन्होंने बहुत से ग़लत अक़ाइद ईजाद किये हैं। जो सरासर क़ुर्आन व अहादीष के ख़िलाफ़ हैं। उलमा-ए-इस्लाम ने बहुत सी किताबों में इस फ़िर्क़े क़ादयानिया का इन्कार किया है। हमारे मरहूम उस्ताद हज़रत मौलाना अबुल वफ़ा षनाउल्लाह अमृतसरी (रह.) ने भी इस फ़िर्क़े की तर्दीद में बेनज़ीर क़लमी ख़िदमात अंजाम दी हैं। **अल्लाहुम्मग़फ़िर्लहू वर्हम्हू वअफ़ु अन्हु व अक्रिम नुज़ुलहू आमीन** इस हदीष में तीन क़िस्से हैं। किताबुल जनाइज़ में ये हदीष मुफ़स्सल गुज़र चुकी है।

बाब 179 : रसूले करीम (ﷺ) का (यहूद से) यूँ फ़र्माना (दुनिया व आख़िरत में) सलामती पाओगे.

١٧٩ - بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْيَهُودِ: أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا

मक़्बरी ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से इस हदीष को नक़ल किया है।

قَالَهُ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ.

बाब 180 : अगर कुछ लोग जो दारुल हरब में मुक़ीम हैं, इस्लाम ले आएँ और वो माल व जायदाद मन्क़ूला व ग़ैर मन्क़ूला के मालिक है तो वो उन ही की होगी

١٨٠ - بَابُ إِذَا أَسْلَمَ قَوْمٌ فِي دَارِ الْحَرْبِ وَلَهُمْ مَالٌ وَأَرَضُونَ فَهِيَ لَهُمْ

ये बाब लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने हन्फ़िया का रद्द किया है। वो कहते हैं अगर हरबी काफ़िर मुसलमान होकर दारुल हरब में रहे फिर मुसलमान उस मुल्क को फ़त्ह करें तो जायदाद ग़ैर मन्क़ूला या'नी ज़मीन बाग़ वग़ैरह उसको न मिलेगी मुसलमानों की मिल्क हो जाएगी।

3058. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अ़ली बिन हुसैन ने, उन्हें अ़म्र बिन उ़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कल आप (मक्का में) कहाँ क़याम करेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अजी! अ़क़ील (रज़ि.) ने हमारे लिये कोई घर छोड़ा ही कब है? फिर फ़र्माया कि कल हमारा क़याम ख़ैफ़ बनी किनाना के मुक़ाम मुहस्सब में होगा, जहाँ पर क़ुरैश ने कुफ़्र पर क़सम खाई थी। वाकिया ये हुआ था कि बनी किनाना और क़ुरैश ने (यहीं पर) बनी हाशिम के ख़िलाफ़ इस बात की क़समें खाई थीं कि उनसे ख़रीद व फ़रोख़्त की जाए और न उन्हें अपने घरों में आने दें। ज़ुह्री ने कहा कि ख़ैफ़ वादी को कहते हैं। (राजेअ़ : 1588)

٣٠٥٨- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: ((قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَيْنَ تَنْزِلُ غَدًا - فِي حَجَّتِهِ - قَالَ: ((وَهَلْ تَرَكَ لَنَا عَقِيلٌ مَنْزِلاً؟)) ثُمَّ قَالَ: ((نَحْنُ نَازِلُونَ غَدًا بِخَيْفِ بَنِي كِنَانَةَ الْمُحَصَّبِ حَيْثُ قَاسَمَتْ قُرَيْشٌ عَلَى الْكُفْرِ)). وَذَلِكَ أَنَّ بَنِي كِنَانَةَ حَالَفَتْ قُرَيْشًا عَلَى بَنِي هَاشِمٍ أَنْ لاَ يُبَايِعُوهُمْ وَلاَ يُؤْوُوهُمْ)) قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَالْخَيْفُ الْوَادِي. [راجع: ١٥٨٨]

तश्रीह : हुआ ये था कि अबू त़ालिब अ़ब्दुल मुत्तलिब के बड़े बेटे थे। उनकी वफ़ात के बाद जाहिलियत की रस्म के मुवाफ़िक़ कुल मिल्क इम्लाक पर अबू त़ालिब ने क़ब्ज़ा कर लिया। जब अबू त़ालिब का इंतिक़ाल हुआ तो उनके इंतिक़ाल के कुछ दिन बाद आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत अ़ली (रज़ि.) तो मदीना मुनव्वरा हिजरत कर आए, अ़क़ील उस वक़्त तक ईमान न लाए थे, वो मक्का में ही रहे। उन्होंने तमाम जायदाद और मकानात बेचकर उसका रुपया ख़ूब उड़ाया। इस ह़दीष से बाब का मत़लब इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस त़रह़ निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने मक्का फ़तह होने के बाद भी उन मकानों और जायदाद की बेअ़ क़ायम रखी और अ़क़ील की मिल्कियत तस्लीम कर ली, तो जब अ़क़ील के तसर्रूफ़ात इस्लाम से पहले नाफ़िज़ हुए तो इस्लाम के बाद बत़रीक़े औला नाफ़िज़ रहेंगे।

व क़ालल्क़ुर्तुबी यहतमिलु अंय्यकून मुरादुल्बुख़ारी अन्नन्नबिय्य (ﷺ) मिन अहलि मक्कत बिअम्वालिहिम व दूरिहिम मिन क़ब्लि अंय्युसल्लिमू व सलकह्वाऊदी अश्शारिहु तरीक़ल्जम्इ फ़क़ाल लअ़ल्लहुम कतबू मर्रातिन फी मवात़िन. (फ़तह) या'नी शायद इमाम बुख़ारी (रह.) की मुराद ये है कि रसूले करीम (ﷺ) ने मक्का वालों पर उनके इस्लाम से पहले ही ये एह़सान फ़र्मा दिया था कि उनके माल और घर हर हालत में उनकी ही मिल्कियत तस्लीम कर लिये, इस त़रह़ अ़क़ील (रज़ि.) के लिये अपने घर सब पहले ही बख़्श दिये थे।

3059. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने हनी नामी अपने एक ग़ुलाम को (सरकारी) चरागाह का हाकिम बनाया, तो उन्हे ये हिदायत की, ऐ हनी! मुसलमानों से अपने हाथ रोके रखना (उन पर ज़ुल्म न करना) और मज़्लूम की बद्दुआ से हर वक़्त बचते रहना, क्योंकि मज़्लूम की दुआ क़ुबूल होती है। और हाँ! इब्ने औफ़ और इब्ने अ़फ़्फ़ान और उन जैसे (अमीर सह़ाबा) के मवेशियों के बारे में तुझे डरते रहना चाहिये। (या'नी उनके अमीर

٣٠٥٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اسْتَعْمَلَ مَوْلًى لَهُ يُدْعَى هُنَيًّا عَلَى الْحِمَى فَقَالَ: يَا هُنَيُّ اضْمُمْ جَنَاحَكَ عَنِ الْمُسْلِمِينَ، وَاتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ فَإِنَّ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ مُسْتَجَابَةٌ. وَأَدْخِلْ رَبَّ الصُّرَيْمَةِ وَرَبَّ

الْغَنِيْمَةِ، وَإِيَّايَ وَنَعَمَ ابْنِ عَوْفٍ وَنَعَمَ ابْنِ عَفَّانَ، فَإِنَّهُمَا إِنْ تَهْلِكْ مَاشِيَتُهُمَا يَرْجِعَانِ إِلَى نَخْلٍ وَزَرْعٍ، وَإِنَّ رَبَّ الصُّرَيْمَةِ وَرَبَّ الْغُنَيْمَةِ إِنْ تَهْلِكْ مَاشِيَتُهُمَا يَأْتِنِي بِبَنِيْهِ فَيَقُولُ: يَا أَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ، أَفَتَارِكُهُمْ أَنَا لاَ أَبَا لَكَ؟ فَالْمَاءُ وَالْكَلأُ أَيْسَرُ عَلَيَّ مِنَ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ، وَأَيْمُ اللهِ إِنَّهُمْ لَيَرَوْنَ أَنِّي قَدْ ظَلَمْتُهُمْ، إِنَّهَا لَبِلاَدُهُمْ، فَقَاتَلُوا عَلَيْهَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَأَسْلَمُوا عَلَيْهَا فِي الإِسْلاَمِ. وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ لاَ الْمَالُ الَّذِي أَحْمِلُ عَلَيْهِ فِي سَبِيْلِ اللهِ مَا حَمَيْتُ عَلَيْهِمْ مِنْ بِلاَدِهِمْ شِبْرًا)).

होने की वजह से दूसरे ग़रीबों के मवेशियों पर चरागाह में उन्हें मुक़द्दम रखना) क्योंकि अगर उनके मवेशी हलाक भी हो जाएँगे तो ये उमरा अपने खजूर के बाग़ात और खेतों से अपनी मआश हासिल कर सकते हैं। लेकिन गिने-चुने ऊँटों और गिनी-चुनी बकरियों का मालिक (ग़रीब) कि अगर उसके मवेशी हलाक हो गये, तो वो अपने बच्चों को लेकर मेरे पास आएगा और फ़रियाद करेगा या अमीरल मोमिनीन! या अमीरल मोमिनीन! (उनको पालना तेरा बाप न हो) तो क्या मैं उन्हें छोड़ दूँगा? इसलिये (पहले ही से) उनके लिये चारे और पानी का इंतिज़ाम कर देना मेरे लिये इससे ज़्यादा आसान है कि मैं उनके लिये सोने-चाँदी का इंतिज़ाम करूँ और अल्लाह की क़सम! वो (अहले मदीना) ये समझते होंगे कि मैंने उनके साथ ज़्यादती की है क्योंकि ये ज़मीनें उन्हीं की हैं। उन्होंने जाहिलियत के ज़माने में उसके लिये लड़ाइयाँ लड़ी हैं और इस्लाम लाने के बाद भी उनकी मिल्कियत को बहाल रखा गया है। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर वो अम्वाल (घोड़े वग़ैरह) न होते जिन पर जिहाद में लोगों को सवार करता हूँ तो उनके इलाक़ों मे एक बालिश्त ज़मीन को भी मैं चरागाह न बनाता।

तश्रीह : हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत उष्मान ग़नी (रज़ि.) दोनों मालदार थे, हज़रत उमर (रज़ि.) का मतलब ये था कि उनके तमव्वुल से मरऊब होकर उनके जानवरों को मुक़द्दम न किया जाए बल्कि ग़रीबों के जानवरों का हक़ पहले है। अगर ग़रीबों के जानवर भूखे मर गये तो बैतुलमाल से उनको नक़द वज़ीफ़ा देना पड़ेगा।

आख़िर हदीष में हज़रत उमर (रज़ि.) का जो क़ौल मरवी है उसी से बाब का तर्जुमा निकलता है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने ज़मीन की निस्बत फ़र्माया कि इस्लाम की हालत में भी उन ही की रही, तो मा'लूम हुआ कि काफ़िर की जायदाद ग़ैर-मन्क़ूला भी इस्लाम लाने के बाद उसी की मिल्क में रहती है गो वो काफ़िर दारुल हरब में रहे। (वहीदी)

बाब 181 : ख़लीफ़ा-ए-इस्लाम की तरफ़ से मरदुम शुमारी कराना

١٨١- بَابُ كِتَابَةِ الإِمَامِ النَّاسَ

कहते हैं कि ये मरदुम शुमारी (जनगणना) जंगे उहुद या जंगे ख़न्दक़ या सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर की गई।

٣٠٦٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ

3060. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो लोग इस्लाम का कलिमा पढ़ चुके हैं उनके

النَّبِيُّ ﷺ: ((اكْتُبُوا لِي مَنْ تَلَفَّظَ بِالإِسْلاَمِ مِنَ النَّاسِ)). فَكَتَبْنَا لَهُ أَلْفًا وَخَمْسَمِائَةِ رَجُلٍ. فَقُلْنَا: نَخَافُ وَنَحْنُ أَلْفٌ وَخَمْسُمِائَةٍ؟ فَلَقَدْ رَأَيْتُنَا ابْتُلِينَا حَتَّى إِنَّ الرَّجُلَ لَيُصَلِّي وَحْدَهُ وَهُوَ خَائِفٌ)).

नाम लिखकर मेरे पास लाओ। चुनाँचे हमने डेढ़ हज़ार मर्दों के नाम लिखकर आप (ﷺ) की ख़िदमत में पेश किये और हमने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया हमारी ता'दाद डेढ़ हज़ार हो गई है। अब हमको क्या डर है। लेकिन तुम देख रहे हो कि (आँहज़रत ﷺ के बाद) हम फ़ित्नों में इस तरह घिर गये हैं कि अब मुसलमान तन्हा नमाज़ पढ़ते हुए भी डरने लगा है।

حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الأَعْمَشِ ((فَوَجَدْنَاهُمْ خَمْسَمِائَةٍ)). قَالَ أَبُو مُعَاوِيَةَ: ((مَا بَيْنَ سِتِّمِائَةٍ إِلَى سَبْعِمِائَةٍ)).

हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा ने, और उनसे आ'मश ने (मज़्कूरा बाला सनद के साथ) कि हमने पाँच सौ मुसलमानों की ता'दाद लिखी (हज़ार का ज़िक्र इस रिवायत में नहीं हुआ) और अबू मुआ़विया ने (अपनी रिवायत में) यूँ बयान किया कि छः सौ से सात सौ तक।

अबू मुआ़विया की रिवायत को इमाम मुस्लिम और अह़मद और निसाई और इब्ने माजा ने निकाला है। **व सलक़द्दावदी अश्शारिह तरीक़लजम्इ फ़क़ाल लहुम कतबू मर्रतैन फ़ी मवातिन** या'नी ता'दाद में इख़्तिलाफ़ इसलिये हुआ कि शायद उन लोगों ने कई जगह मरदुम शुमारी (जनगणना) की हो, कुछ ने ये भी कहा कि डेढ़ हज़ार से मुराद मर्द व औ़रत और बच्चे गुलाम जो भी मुसलमान सब मुराद हैं और छः सौ से सात सौ तक ख़ास मर्द मुराद हैं और पाँच सौ से ख़ालिस लड़ने वाले मुराद हैं। **व फिल्ह़दीषि किताबति दवावीनल्जुयूशि व क़द यतअय्यनु ज़ालिक इन्दल्इहतियाजि इला तमीज़िम्मंय्युस्लिहु लिल्मुक़ाबलति बिमन ला युस्लिह.** (फ़त्ह)

हु़ज़ैफ़ा (रज़ि.) का मतलब ये था कि आँहज़रत (ﷺ) के अहदे मुबारक में तो हम डेढ़ हज़ार का शुमार होने पर निडर हो गये थे और अब हज़ारों-लाखों मुसलमान हैं, पर ह़क़ बात कहते हुए डरते हैं। कोई कोई तो डर के मारे अपनी नमाज़ अकेले पढ़ लेता है और मुँह से कुछ नहीं कह सकता। ये हु़ज़ैफ़ा (रज़ि.) ने उस ज़माने में कहा जब वलीद बिन उ़क़्बा ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की तरफ़ से कूफ़ा का ह़ाकिम था और नमाज़ें इतनी देर करके पढ़ता कि मआ़ज़ल्लाह। आख़िर कुछ मुत्तक़ी लोग अव्वले वक़्त नमाज़ पढ़ लेते फिर जमाअ़त में भी उसके डर से शरीक हो जाते।

٣٠٦١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِي مَعْبَدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي كُتِبْتُ فِي غَزْوَةِ كَذَا وَكَذَا، وَامْرَأَتِي حَاجَّةٌ، قَالَ: ((ارْجِعْ فَحُجَّ مَعَ امْرَأَتِكَ)). [راجع: ١٨٦٢]

3061. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अबू मअ़बद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरा नाम फ़लाँ जिहाद में जाने के लिये लिखा गया है। इधर मेरी बीवी ह़ज्ज करने जा रही है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर जा और अपनी बीवी के साथ ह़ज्ज कर आ। (राजेअ़ : 1862)

इससे भी नाम लिखे जाने का षुबूत हुआ, यही बाब का तर्जुमा है। ये भी मा'लूम हुआ कि कोई औ़रत ह़ज्ज को जाए तो ज़रूरी है कि उसका शौहर या कोई मह़रम उसके साथ हो।

बाब 182 : अल्लाह तआला कभी अपने दीन की मदद एक फ़ाजिर शख़्स से भी करा लेता है

١٨٢- بَابُ إِنَّ اللهَ يُؤَيِّدُ الدِّينَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ

3062. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने (दूसरी सनद) मुझसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें इब्ने मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक ग़ज़्वा में मौजूद थे। आप (ﷺ) ने एक शख़्स के बारे में जो अपने को मुसलमान कहता था, फ़र्माया कि ये शख़्स दोज़ख़ वालों में से है। जब जंग शुरू हुई तो वो शख़्स (मुसलमानों की तरफ़ से) बड़ी बहादुरी से लड़ा और ज़ख़्मी भी हो गया। सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जिसके बारे में आपने फ़र्माया था कि वो जहन्नम में जाएगा। आज तो वो बड़ी बे-जिगरी (निडरता) के साथ लड़ा है और (ज़ख़्मी होकर) मर भी गया है। आप (ﷺ) ने अब भी वही जवाब दिया कि वो जहन्नम में गया। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुम्किन था कि कुछ लोगों के दिल में कुछ शुब्हा पैदा हो जाता। लेकिन अभी लोग उसी ग़ौरो-फ़िक्र में पड़े थे कि किसी ने बताया कि अभी वो मरा नहीं है। अल्बत्ता ज़ख़्म कारी है। फिर जब रात आई तो उसने ज़ख़्मों की ताब न ला कर ख़ुदकुशी कर ली। जब आँहज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर मिली तो आपने फ़र्माया अल्लाहु अकबर! मैं गवाही देता हूँ कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। फिर आपने बिलाल (रज़ि.) को हुक्म दिया, और उन्होंने लोगों मे ये ऐलान किया कि मुसलमान के सिवा जन्नत में कोई और दाख़िल नहीं होगा और अल्लाह तआला कभी अपने दीन की इम्दाद किसी फ़ाजिर शख़्स से भी करा लेता है।

(दीगर मक़ाम : 4293, 4203, 6606)

٣٠٦٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. وَحَدَّثَنِي مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: شَهِدْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ لِرَجُلٍ مِمَّنْ يَدَّعِي الإِسْلاَمَ: ((هَذَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ)). فَلَمَّا حَضَرَ الْقِتَالُ قَاتَلَ الرَّجُلُ قِتَالاً شَدِيْدًا فَأَصَابَتْهُ جِرَاحَةٌ. فَقِيْلَ: يَا رَسُولَ اللهِ، الَّذِيْ قُلْتَ إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَإِنَّهُ قَاتَلَ الْيَومَ قِتَالاً شَدِيْدًا وَقَدْ مَاتَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِلَى النَّارِ)). قَالَ فَكَادَ بَعْضُ النَّاسِ أَنْ يَرْتَابَ. فَبَيْنَمَاهُمْ عَلَى ذَلِكَ إِذْ قِيْلَ إِنَّهُ لَمْ يَمُتْ، وَلَكِنْ بِهِ جِرَاحًا شَدِيْدًا. فَلَمَّا كَانَ مِنَ اللَّيْلِ لَمْ يَصْبِرْ عَلَى الْجِرَاحِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ، فَأُخْبِرَ النَّبِيُّ ﷺ بِذَلِكَ فَقَالَ: ((اللهُ أَكْبَرُ، أَشْهَدُ أَنِّي عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ)). ثُمَّ أَمَرَ بِلاَلاً فَنَادَى فِي النَّاسِ: ((أَنَّهُ لاَ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلاَّ نَفْسٌ مُسْلِمَةٌ، وَأَنَّ اللهَ لَيُؤَيِّدُ هَذَا الدِّيْنَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ)).

[أطرافه في: ٤٢٠٣،٤٢٩٣، ٦٦٠٦].

तश्रीह : कहते हैं उस शख़्स का नाम फ़ज़्मान था जो बज़ाहिर मुसलमान हो गया था, उसकी मुजाहिदाना कैफ़ियत देखकर शैतान ने बज़ाहिर तो लोगों को यूँ बहकाया कि ऐसा शख़्स जो अल्लाह की राह में इस तरह लड़कर मारा जाए क्यूँकर जहन्नमी हो सकता है। ये हदीष उस हदीष के ख़िलाफ़ नहीं है कि हम मुश्रिक से मदद न लेंगे क्योंकि वो एक मौक़े के साथ ख़ास है और जंगे हुनैन में सफ़्वान बिन उमय्या आपके साथ थे। हालाँकि वो मुश्रिक थे और दूसरे ये कि ये शख़्स बज़ाहिर तो मुसलमान

था। मगर आपको वह्य से मा'लूम हो गया कि ये मुनाफ़िक़ है और उसका ख़ात्मा बुरा होगा। (वह़ीदी)

बाब 183 : जो शख़्स मैदाने जंग में जबकि दुश्मन का ख़ौफ़ हो इमाम के किसी नए हुक्म के बग़ैर अमीरे लश्कर बन जाए

١٨٣- بَابُ مَنْ تَأَمَّرَ فِي الْحَرْبِ مِنْ غَيْرِ إِمْرَةٍ إِذَا خَافَ الْعَدُوَّ

इस्लाम पर कोई नाज़ुक वक़्त आ जाए कि मैदाने जंग मुसलमानों के हाथ से निकल रहा हो और क़यादत भी ख़त्म कर दी गई हो तो कोई भी समझदार आदमी फ़ौरी तौर पर कण्ट्रोल कर ले तो ये जाइज़ है जैसा कि ह़दीषे ज़ेल में ह़ज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) के अमीरे लश्कर बन जाने का ज़िक्र है।

3063. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़लय्या ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (मदीना में) ग़ज़्व-ए-मौता के मौक़े पर ख़ुत्बा दिया, (जबकि मुसलमान सिपाही मौता के मैदान में दादे शुजाअ़त दे रहे थे) आपने फ़र्माया, कि अब इस्लामी अ़लम ज़ैद बिन ह़ारिषा ने सम्भाला और उन्हें शहीद कर दिया गया, फिर जा'फ़र ने अ़लम अपने हाथ में उठा लिया और वो भी शहीद कर दिये गये। अब अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा ने अ़लम थामा, ये भी शहीद कर दिये गये। आख़िर ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने किसी नई हिदायत के बग़ैर इस्लामी अ़लम उठा लिया है। और उनके हाथ फ़तह हासिल हो गई, और मेरे लिये उसमें कोई ख़ुशी की बात नहीं थी या आपने फ़र्माया कि उनके लिये कोई ख़ुशी की बात नहीं थी कि वो (शुहदा) हमारे पास ज़िन्दा होते। (क्योंकि शहादत के बाद वो जन्नत में ऐश कर रहे हैं) और अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी थे। (राजेअ़ : 1246)

٣٠٦٣- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((أَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ فَأُصِيْبَ، ثُمَّ أَخَذَهَا جَعْفَرٌ فَأُصِيْبَ، ثُمَّ أَخَذَهَا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ فَأُصِيْبَ، ثُمَّ أَخَذَهَا خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ عَنْ غَيْرِ إِمْرَةٍ فَفُتِحَ عَلَيْهِ، وَمَا يَسُرُّنِي - أَوْ قَالَ: مَا يَسُرُّهُمْ - أَنَّهُمْ عِنْدَنَا. وَقَالَ: وَإِنَّ عَيْنَيْهِ لَتَذْرِفَانِ)).

[راجع: ١٢٤٦]

बाब 184 : मदद के लिये फ़ौज रवाना करना

١٨٤- بَابُ الْعَوْنِ بِالْمَدَدِ

3064. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अबी अ़दी और सहल बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी अ़रूबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में रअ़ल, ज़क्वान, उ़सय्या और बनू लह़यान क़बाईल के कुछ लोग आए और यक़ीन दिलाया कि वो लोग इस्लाम ला चुके हैं और उन्होंने अपनी काफ़िर क़ौम के मुक़ाबिल इमदाद और ता'लीम व तब्लीग़ के

٣٠٦٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ وَسَهْلُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَتَاهُ رِعْلٌ وَذَكْوَانُ وَعُصَيَّةُ وَبَنُو لِحْيَانَ فَزَعَمُوا أَنَّهُمْ قَدْ أَسْلَمُوا، وَاسْتَمَدُّوهُ عَلَى قَوْمِهِمْ، فَأَمَدَّهُمُ

लिये आपसे मदद चाही। तो नबी करीम (ﷺ) ने 70 अंसारियों को उनके साथ कर दिया। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हम उन्हें क़ारी कहा करते थे। वो लोग दिन में जंगल से लकड़ियाँ जमा करते और रात में नमाज़ पढ़ते रहते। ये हज़रात उन क़बीले वालों के साथ चले गये, लेकिन जब बीरे मऊना पर पहुँचे तो उन क़बीले वालों ने उन सहाबा के साथ दग़ा की और उन्हें शहीद कर डाला, हुज़ूर अकरम (रज़ि.) ने एक महीना तक (नमाज़ में) क़ुनूते-नाज़िला पढ़ी और रअ़ल और ज़क्वान और बनू लह्यान के लिये बद्दुआ करते रहे। क़तादा ने कहा कि हमसे अनस (रज़ि.) ने कहा कि (उन शुह्दा के बारे में) क़ुर्आन मजीद में हम ये आयत यूँ पढ़ते रहे (तर्जुमा) हाँ! हमारी क़ौम (मुस्लिम) को बता दो कि हम अपने रब से जा मिले। और वो हमसे राज़ी हो गया है और हमें भी उसने ख़ुश किया है। फिर ये आयत मन्सूख़ हो गई थी। (राजेअ़ : 1001)

النَّبِيُّ ﷺ بِسَبْعِينَ مِنَ الأَنْصَارِ، قَالَ أَنَسٌ: كُنَّا نُسَمِّيهِمُ الْقُرَّاءَ، يَحْطِبُونَ بِالنَّهَارِ وَيُصَلُّونَ بِاللَّيْلِ. فَانْطَلَقُوا بِهِمْ حَتَّى بَلَغُوا بِئْرَ مَعُونَةَ غَدَرُوا بِهِمْ وَقَتَلُوهُمْ. فَقَنَتَ شَهْرًا يَدْعُو عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَبَنِي لِحْيَانَ. قَالَ قَتَادَةُ: وَحَدَّثَنَا أَنَسٌ أَنَّهُمْ قَرَؤُوا بِهِمْ قُرْآنًا: أَلاَ بَلِّغُوا قَوْمَنَا، بِأَنَّا قَدْ لَقِيْنَا رَبَّنَا، فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا. ثُمَّ رُفِعَ ذَلِكَ بَعْدُ)).[راجع: ١٠٠١]

कहते हैं कि उन क़ारियों को आ़मिर बिन तुफ़ैल ने क़त्ल किया, उसने बनू सुलैम के आदमी उन पर जमा किये और रअ़ल और ज़क्वान और बनी लह्यान ने आ़सिम (रज़ि.) और उनके साथियों को क़त्ल किया, हज़रत ख़ुबैब (रज़ि.) को बेचा, आँहज़रत (रज़ि.) को दोनों की ख़बर हो गई इसलिये आपने दोनों के लिये बद्दुआ की।

बाब 185 : जिसने दुश्मन पर फ़तह पाई और फिर तीन दिन तक उनके मुल्क में ठहरा रहा

١٨٥- بَابُ مَنْ غَلَبَ الْعَدُوَّ، فَأَقَامَ عَلَى عَرْصَتِهِمْ ثَلاَثًا

3065. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन उ़बादा ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, कहा कि हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने अबू तलहा (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को जब किसी क़ौम पर फ़तह हासिल होती, तो मैदाने जंग में तीन रात क़याम करते। रौह बिन उ़बादा के साथ इस हदीष़ को मुआज़ और अ़ब्दुल आ़ला ने भी रिवायत किया। दोनों ने कहा हमसे सईद ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से, उन्होंने अनस से, उन्होंने अबू तलहा से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से।

(दीगर मक़ाम : 3976)

٣٠٦٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ : ((ذَكَرَ لَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ إِذَا ظَهَرَ عَلَى قَوْمٍ أَقَامَ بِالْعَرْصَةِ ثَلاَثَ لَيَالٍ)). تَابَعَهُ مُعَاذٌ وَعَبْدُ الأَعْلَى: ((حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ)).

[طرفه في : ٣٩٧٦].

बाब 186 : सफ़र में और जिहाद में माले ग़नीमत को तक़्सीम करना

١٨٦- بَابُ مَنْ قَسَمَ الْغَنِيْمَةَ فِي غَزْوِهِ وَسَفَرِهِ

وَقَالَ رَافِعٌ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِذِي الْحُلَيْفَةِ فَأَصَبْنَا غَنَمًا وَإِبِلاً، فَعَدَلَ عَشَرَةً مِنَ الْغَنَمِ بِبَعِيْرٍ.

और राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने कहा कि हम ज़ुलहुलैफ़ा में नबी करीम (ﷺ) के साथ थे, हमको बकरियाँ और ऊँट ग़नीमत मे मिले थे, और नबी करीम (ﷺ) ने दस बकरियों को एक ऊँट के बराबर क़रार देकर तक़्सीम की थी।

٣٠٦٦ - حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا أَخْبَرَهُ قَالَ: اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْجِعْرَانَةِ حَيْثُ قَسَمَ غَنَائِمَ حُنَيْنٍ.[راجع: ١٧٧٨]

3066. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उन्हें अनस (रज़ि.) ने ख़बर दी, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मक़ामे जिअराना से, जहाँ आपने जंगे हुनैन का माले ग़नीमत तक़्सीम किया था, उमरह का एहराम बाँधा था। (राजेअ : 1778)

हुनैन एक वादी है मक्का से तीन मील पर जहाँ पर बड़ी लड़ाई हुई थी। बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है कि आपने जिअराना में ऐन सफ़र में अम्वाले ग़नीमत तक़्सीम फ़र्माया, आजकल अय्यामे हज्ज में हरम शरीफ़ से जिअराना को हर वक़्त गाड़ियाँ मिलती हैं। 1970 के हज्ज में मुझको भी जिअराना जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। जहाँ एक वसीअ मस्जिद और कुँआ है, पुरफ़िज़ा जगह है।

١٨٧ - بَابُ إِذَا غَنِمَ الْمُشْرِكُوْنَ مَالَ الْمُسْلِمِ ثُمَّ وَجَدَهُ الْمُسْلِمُ

बाब 187 : किसी मुसलमान का माल मुश्रिकीन लूटकर ले जाएँ फिर (मुसलमानों के ग़लबे के बाद) वो माल उस मुसलमान को मिल गया

٣٠٦٧ - وَقَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((ذَهَبَ فَرَسٌ لَهُ فَأَخَذَهُ الْعَدُوُّ، فَظَهَرَ عَلَيْهِ الْمُسْلِمُوْنَ فَرُدَّ عَلَيْهِ فِي زَمَنِ رَسُولِ اللهِ ﷺ. وَأَبَقَ عَبْدٌ لَهُ فَلَحِقَ بِالرُّومِ، فَظَهَرَ عَلَيْهِمُ الْمُسْلِمُوْنَ فَرَدَّهُ عَلَيْهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ)).[طرفاه في : ٣٠٦٨، ٣٠٦٩].

3067. और अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने कहा, कि हमसे उबैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि उनका एक घोड़ा भाग गया था और दुश्मनों ने उसे पकड़ लिया था। फिर मुसलमानों को ग़लबा हासिल हुआ तो उनका घोड़ा उन्हें वापस कर दिया गया। ये वाक़िया रसूलल्लाह (ﷺ) के अहदे मुबारक का है। इसी तरह उनके एक ग़ुलाम ने भागकर रोम में पनाह ली थी। फिर जब मुसलमानों को उस मुल्क पर ग़लबा हासिल हुआ तो ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने उनका ग़ुलाम उन्हें वापस कर दिया। ये वाक़िया नबी करीम (ﷺ) के बाद का है। (दीगर मक़ाम : 3068, 3069)

तश्रीह : इस मसला में इख़्तिलाफ़ है। शाफ़िइया और अहले हदीष़ यही कहते हैं कि काफ़िर मुसलमानों के किसी माल के मालिक नहीं हो सकते और जब किसी मुसलमान का माल उनके पास मिले तो वो उस मुसलमान को दिला दिया जाएगा ख़्वाह माल तक़्सीम हो चुका हो या न हो चुका हो। और इमाम मालिक (रह.) और अहमद के नज़दीक तक़्सीम के बाद उनको नहीं दिलाया जाएगा। और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) फ़र्माते हैं कि काफ़िर जब माल लूट ले जाए और अपने मुल्क में पहुँच जाएँ तो वो उसके मालिक हो जाते हैं और इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब लाकर उनका रद्द किया है।

٣٠٦٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ أَنَّ عَبْدًا لاِبْنِ عُمَرَ أَبَقَ فَلَحِقَ

3068. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह उमरी ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने ख़बर दी कि इब्ने उमर (रज़ि.) का एक

بِالرُّوْمِ، فَظَهَرَ عَلَيْهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ فَرَدَّهُ عَلَى عَبْدِ اللهِ. وَأَنَّ فَرَسًا لابْنِ عُمَرَ عَارَ فَلَحِقَ بِالرُّوْمِ، فَظَهَرَ عَلَيْهِ فَرَدُّوهُ عَلَى عَبْدِ اللهِ)). [راجع: ٣٠٦٧]

गुलाम भागकर रोम के काफ़िरों में मिल गया था। फिर ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) की सरकर्दगी में (इस्लामी लश्कर ने) उस पर फ़तह पाई और ख़ालिद (रज़ि.) ने वो गुलाम उनको वापस कर दिया। और ये कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) का एक घोड़ा भागकर रोम पहुँच गया था। ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को जब रोम पर फ़तह हुई, तो उन्होंने वो घोड़ा भी अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को वापस कर दिया था। (राजेअ़ : 3067)

٣٠٦٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّهُ كَانَ عَلَى فَرَسٍ يَوْمَ لَقِيَ الْمُسْلِمُونَ، وَأَمِيْرُ الْمُسْلِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ بَعَثَهُ أَبُوبَكْرٍ، فَأَخَذَهُ الْعَدُوُّ، فَلَمَّا هُزِمَ الْعَدُوُّ رَدَّ خَالِدٌ فَرَسَهُ)). [راجع: ٣٠٦٧]

3069. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जिस दिन इस्लामी लश्कर की मुठभेड़ (रूमियों से) हुई तो वो एक घोड़े पर सवार थे। सालारे फौज हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की तरफ़ से ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) थे। फिर घोड़े को दुश्मनों ने पकड़ लिया, लेकिन जब उन्हें शिकस्त हुई तो हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने घोड़ा अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को वापस कर दिया। (राजेअ़ : 3067)

मा'लूम हुआ कि किसी मुसलमान का कोई माल किसी दुश्मन हर्बी काफ़िर के हवाले पड़ जाए तो फ़तहे इस्लाम के बाद वो माल उसके असली मालिक मुसलमान ही को मिलेगा वो अम्वाले ग़नीमत में दाख़िल नहीं किया जाएगा।

١٨٨- بَابُ مَنْ تَكَلَّمَ بِالْفَارِسِيَّةِ وَالرَّطَانَةِ

बाब 188 : फ़ारसी या और किसी भी अ़जमी ज़ुबान में बोलना

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَاخْتِلاَفُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ﴾ [الروم: ٢٢] وَقَالَ: ﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلاَّ بِلِسَانِ قَوْمِهِ﴾ [إبراهيم : ٤].

और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि (अल्लाह की निशानियों में) तुम्हारी ज़ुबान और रंग का इख़्तिलाफ़ भी है। और (अल्लाह तआ़ला का इर्शाद कि) हमने कोई रसूल नहीं भेजा, लेकिन ये कि वो अपनी क़ौम का हम ज़ुबान होता था। (इब्राहीम : 4)

इमाम बुख़ारी (रह.) का इस बाब के लाने से मतलब है कि हर एक ज़ुबान का सीखना और बोलना दुरुस्त है क्योंकि सब ज़ुबानें अल्लाह की तरफ़ से हैं। अंग्रेज़ी, हिन्दी का भी यही हुक्म है।

और दूसरी रिवायत में है **व इन मिन उम्मतिन इल्ला ख़ला फीहा नज़ीर** तो मा'लूम हुआ कि हर एक ज़ुबान पैग़म्बर की ज़ुबान है, क्योंकि उस क़ौम में जो पैग़म्बर आया होगा वो उन ही की ज़ुबान बोलता होगा। इन आयतों से ये षाबित हुआ कि अंग्रेज़ी, हिन्दी, मराठी, रूसी, जर्मनी ज़ुबानें सीखना और बोलना दुरुस्त है। ज़ुबानों का तअ़स्सुब इंसानी बदबख़्ती की दलील है, हर ज़ुबान से मुहब्बत करना ऐन मंशा-ए-इलाही है।

लफ़्ज़े रताना राअ की ज़ेर और ज़बर के साथ ग़ैर अ़रबी में बोलना। आयत, **वमा अर्सलना अल्ख़** में मुसन्निफ़ का इशारा है कि रसूलुल्लाह (ﷺ)) की रिसालत दुनिया की तमाम क़ौमों के लिये है इसलिये भी ज़रूरी है कि आप दुनिया की सारी ज़ुबानों की हिमायत करें। उनको ख़ुद या बज़रिया तर्जुमान समझें।

3070. हमसे अ़म्र बिन अ़ली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उन्हें ह़न्ज़ला बिन अबी सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन मीनाअ ने ख़बर दी, कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना। आपने बयान किया, कि मैंने (जंगे ख़ंदक़ में आँह़ज़रत ﷺ को भूखा पाकर चुपके से) अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमने एक छोटा सा बकरी का बच्चा ज़िब्ह किया है और एक स़ाअ़ जौ का आटा पकवाया है। इसलिये आप दो चार आदमियों को साथ लेकर तशरीफ़ लाएँ। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने बाआवाज़े बुलन्द फ़र्माया, ऐ ख़न्दक़ खोदने वालों! जाबिर ने दा'वत का खाना तैयार कर लिया है। आओ चलो, जल्दी चलो। (दीगर मक़ाम : 4101, 4102)

حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا حَنْظَلَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ قَالَ أَخْبَرَنَا سَعِيْدُ بْنُ مِيْنَاءَ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ ذَبَحْنَا بَهِيْمَةً لَنَا وَطَحَنْتُ صَاعًا مِنْ شَعِيْرٍ فَتَعَالَ أَنْتَ وَنَفَرٌ. فَصَاحَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((يَا أَهْلَ الْخَنْدَقِ، إِنَّ جَابِرًا قَدْ صَنَعَ سُوْرًا، فَحَيَّهَلاً بِكُمْ)).

[طرفاه في: ٤١٠١، ٤١٠٢].

तशरीह़ : लफ़्ज़े सूरन फ़ारसी है जो आपने इस्ते'माल किया, इसी से बाब का तर्जुमा स़ाबित हुआ। फसादाते इंसानी में बड़ा फ़साद ख़त़रनाक लिसानी (भाषागत या जुबानी) तअ़स्सुब भी है। ह़ालाँकि सारी जुबानें अल्लाह पाक ही की पैदा की हुई है। इस्लाम ने सख़्ती से इस तअ़स्सुब का मुक़ाबला किया है। आज के दौर में जुबानों पर भी दुनिया में बड़े-बड़े फ़सादात बरपा हैं जो सब जहालत व ज़लालत व कज-रवी के नतीजे हैं। जो लोग किसी भी जुबान से तअ़स्सुब बरतते हैं उनकी ये इंतिहाई ह़िमाक़त है।

लफ़्ज़ सूरन से दा'वत का खाना मुराद है ये फ़ारसी लफ़्ज़ है। ह़ज़रत इमाम (रह.) ने उस ह़दीष़ के ज़ुअ़फ़ पर भी इशारा किया है जिसमें मज़्कूर है कि दोज़ख़ी लोग फ़ारसी जुबान बोलेंगे।

3071. हमसे ह़ब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद बिन सईद ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे उम्मे ख़ालिद बिन्ते ख़ालिद बिन सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अपने वालिद के साथ ह़ाज़िर हुई, मैं उस वक़्त एक ज़र्द रंग की क़मीस़ पहने हुए थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, सनः सनः; अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि ये लफ़्ज़ ह़ब्शी ज़ुबान में उ़म्दा के मा'नी में बोला जाता है। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं मुह्रे नुबुव्वत के साथ (जो आपकी पुश्त पर थी) खेलने लगी तो मेरे वालिद ने मुझे डांटा, लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे मत डांटो, फिर आपने उम्मे ख़ालिद को (लम्बी उ़म्र की) दुआ़ दी कि इस क़मीस़ को ख़ूब पहन और पुरानी कर, फिर पहन और पुरानी कर, और फिर पहन और पुरानी कर। अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि चुनाँचे ये क़मीस़ इतने दिनों तक बाक़ी रही कि ज़ुबानों पर उसका चर्चा होने लगा। (दीगर मक़ाम : 3874, 5823)

٣٠٧١- حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ عَنْ خَالِدِ بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أُمِّ خَالِدٍ بِنْتِ خَالِدِ بْنِ سَعِيْدٍ قَالَتْ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ مَعَ أَبِي، وَعَلَيَّ قَمِيْصٌ أَصْفَرُ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((سَنَهْ سَنَهْ)). قَالَ عَبْدُ اللهِ: وَهِيَ بِالْحَبَشِيَّةِ: حَسَنَةٌ. قَالَتْ: فَذَهَبْتُ أَلْعَبُ بِخَاتَمِ النُّبُوَّةِ، فَزَبَرَنِي أَبِي. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((دَعْهَا)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَبْلِي وَأَخْلِقِي، ثُمَّ أَبْلِي وَأَخْلِقِي، ثُمَّ أَبْلِي وَأَخْلِقِي)). قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَبَقِيَتْ حَتَّى ذَكَرَ. [أطرافه في: ٣٨٧٤، ٥٨٢٣،

बाब का तर्जुमा इससे ये निकला कि आप (ﷺ) ने **सनः सनः** फ़र्माया जो ह़ब्शी ज़ुबान है उम्मे खालिद इतने दिनों ज़िन्दा रही कि वो कपड़ा पहनते पहनते काला हो गया। ये रसूले करीम (ﷺ) की दुआ की बरकत थी।

3072. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़सन बिन अ़ली (रज़ि.) ने स़दक़ा की खजूर में से (जो बैतुलमाल में आई थी) एक खजूर उठा ली और अपने मुँह के क़रीब ले गये। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें फ़ारसी ज़ुबान का ये लफ़्ज़ कहकर रोक दिया कि, कख़-कख़ क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि हम स़दक़ा नहीं खाया करते हैं। (राजेअ़ : 1485)

٣٠٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ أَخَذَ تَمْرَةً مِنْ تَمْرِ الصَّدَقَةِ فَجَعَلَهَا فِي فِيهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْفَارِسِيَّةِ: ((كِخْ، كِخْ، أَمَا تَعْرِفُ أَنَّا لاَ نَأْكُلُ الصَّدَقَةَ؟)). [راجع: ١٤٨٥]

तश्रीह़ : कख़ कख़ फ़ारसी ज़ुबान में बच्चों को डांटने के लिये कहते हैं जब वो कोई गंदा काम करें। इससे भी अ़रबी के अलावा दुसरी ज़ुबानों का इस्ते'माल जाइज़ ष़ाबित हुआ। ख़ुसूसन फ़ारसी ज़ुबान जो अ़र्से दराज़ से मुसलमानों की मह़बूब तरीन ज़ुबान रही है। जिसमें इस्लामियात का एक बड़ा ख़ज़ाना मह़फ़ूज़ है। मैदाने जंग में ह़स्बे ज़रूरत हर ज़ुबान का इस्ते'माल जाइज़ है।

फ़ारसी की वजहे तस्मिया ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब बयान फ़र्माते हैं, **क़ील अन्नहुम यन्तसिबून इला फ़ारस बिन कूमरष वख़्तुलिफ़ फ़ी कूमरष़ क़ील अन्नहू मिन ज़ुर्रियति साम बिन नूह व क़ील मिन ज़ुर्रियति याफ़ष़ बिन नूह व क़ील अन्नहू मिन आदम लिसुल्बिही व क़ील अन्नहू आदम नफ़्सुहू व क़ील लहुमुल्फ़ुर्सु लिअन्न जद्दहुमुल्आला वलदुन लहू सब्अ़तु अशर वलदन कान कुल्लु मिन्हुम शुजाअन फ़ारिसन फ़सम्मुल्फ़ुरूस** (फ़त्ह)

या'नी इस मुल्क के बाशिन्दे फ़ारस बिन कोमर्ष़ की त़रफ़ मन्सूब हैं जो साम बिन नूह़ या याफ़ष़ बिन नूह़ की औलाद में से हैं, कुछ ने उनको आदम का बेटा और कुछ ने ख़ुद आदम भी कहा है। ये भी कहा गया है कि उनके मूरिष़े आ़ला के सत्रह लड़के पैदा हुए जो सब बहादुर शहसवार थे इसलिये उनकी औलाद को फ़ारस कहा गया, वल्लाहु आलम।

बाब 189 : माले ग़नीमत में से तक़्सीम से पहले कुछ चुरा लेना

١٨٩- بَابُ الْغُلُولِ، وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ﴾ [آل عمران:١٦١]

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह आले इमरान में फ़र्माया, और जो कोई ख़यानत करेगा वो क़यामत में उसे लेकर आएगा।

3073. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे अबू ह़य्यान ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें ख़त्ताब फ़र्माया, और गुलूल (ख़यानत) का ज़िक्र फ़र्माया, इस जुर्म की हौलनाकी को वाज़ेह़ करते हुए फ़र्माया कि मैं तुमसे किसी को भी क़यामत के दिन इस ह़ालत में न पाऊँ कि उसकी गर्दन पर बकरी लदी हुई हो और वो चिल्ला रही हो या उसकी गर्दन पर घोड़ा लदा हुआ हो और वो चिल्ला रहा हो और

٣٠٧٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي حَيَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو زُرْعَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ فِينَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ الْغُلُولَ فَعَظَّمَهُ وَعَظَّمَ أَمْرَهُ، قَالَ: ((لاَ أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رَقَبَتِهِ شَاةٌ لَهَا ثُغَاءٌ عَلَى رَقَبَتِهِ فَرَسٌ لَهُ

वो शख़्स मुझसे कहे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी मदद फ़र्माइये लेकिन मैं ये जवाब दे दूँ कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। मैं तो (अल्लाह का पैग़ाम) तुम तक पहुँचा चुका था। और उसकी गर्दन पर ऊँट लदा हुआ और चिल्ला रहा हो और वो शख़्स कहे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी मदद फ़र्माइए। लेकिन मैं ये जवाब दूँगा कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता, मैं तो अल्लाह का पैग़ाम तुम्हें पहुँचा चुका था, या (वो इस हाल में आए कि) वो अपनी गर्दन पर सोना, चाँदी, अस्बाब लादे हुए हो और मुझसे कहे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी मदद कीजिए, लेकिन मैं उससे ये कह दूँ कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता, मैं अल्लाह तआला का पैग़ाम तुम्हें पहुँचा चुका था। या उसकी गर्दन पर कपड़े का टुकड़े हवा से हरकत कर रहे हों और वो कहे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी मदद कीजिए और मैं कह दूँ कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता, मैं तो (अल्लाह का पैग़ाम) पहले ही पहुँचा चुका था। और अय्यूब सुख़्तियानी ने भी अबू हय्यान से रिवायत किया है घोड़ा लादे देख जो हिनहिना रहा हो। (राजेअ : 1402)

حَمْحَمَةٌ، يَقُولُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَغِثْنِي، فَأَقُولُ : لاَ أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا، قَدْ أَبْلَغْتُكَ. وَعَلَى رَقَبَتِهِ بَعِيرٌ لَهُ رُغَاءٌ يَقُولُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَغِثْنِي، فَأَقُولُ: لاَ أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا، قَدْ أَبْلَغْتُكَ. وَعَلَى رَقَبَتِهِ صَامِتٌ فَيَقُولُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَغِثْنِي، فَأَقُولُ: لاَ أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا، قَدْ أَبْلَغْتُكَ. أَوْ عَلَى رَقَبَتِهِ رِقَاعٌ تَخْفِقُ، فَيَقُولُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَغِثْنِي، فَأَقُولُ: لاَ أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ)). وَقَالَ أَيُّوبُ عَنْ أَبِي حَيَّانَ فَرَسٌ لَهُ حَمْحَمَةٌ.

[راجع: ١٤٠٢]

तश्रीह : फ़तहे इस्लाम के बाद मैदाने जंग में जो भी माल मिलें वो माले ग़नीमत कहलाता है। उसे बाज़ाब्ता अमीरे इस्लाम के यहाँ जमा कराना होगा। बाद में शरई तक़्सीम के तहत वो माल दिया जाएगा। उसमें ख़यानत करने वाला अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा मुजरिम है जैसा कि इस हदीष़ में बयान हुआ है। बकरी, घोड़ा, ऊँट ये सब चीज़ें मिष़ाल के तौर पर बयान की गई हैं। रिवायत में ग़नीमत में से एक चादर के चुराने वाले को भी दोज़ख़ी कहा गया है। चुनाँचे वो हदीष़ आगे मज़्कूर है।

क़ालल्मुहलिब हाज़ल्हदीषु वईदुन लिमन अन्क़ज़हुल्लाहु अलैहि मिन अहलिल्मआसी व यहतमिलु अंय्यकूनल्हमलुल्मज़्कूर लाबुद्द मिन्हु उक़ूबतुन लहू बिज़ालिक लियफ़्तज़िह अला रूऊसिल्अश्हाद व अम्मा बअद ज़ालिक फइलल्लाहिल्अम्र फी तअज़ीबिही अविल्अफ़्वि अन्हु व क़ाल गैरुहू हाज़ल्हदीषु युफस्सिरु कौलहू अज़्ज़ व जल्ल याति बिमा गल्ल यौमल्क़ियामति अय याति हिबी हामिलन लहू अला रुक़्बतिही (फत्ह) या'नी इस हदीष़ मे वईद है अहले मआसी के लिये। अन्देशा है कि ये उठाना बतौरे अज़ाब उसके लिये ज़रूरी हो, ताकि वो सबके सामने ज़लील हो, बाद में अल्लाह को इख़्तियार है चाहे वो उसे अज़ाब दे, चाहे मुआफ़ कर दे। ये हदीष़ आयते-करीमा **यअति बिमा ग़ल्ल यौमल क़यामति** (आले इमरान : 161) की तफ़्सीर भी है कि वो आसी इस ख़यानत को क़यामत के दिन अपनी गर्दन पर उठाकर लाएगा।

बाब 190 : माले ग़नीमत में से ज़रा सी चोरी कर लेना

١٩٠ - بَابُ الْقَلِيلِ مِنَ الْغُلُولِ

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बाब की हदीष़ में नबी करीम (ﷺ) से ये रिवायत नहीं किया कि आपने चुराने वाले का अस्बाब जला दिया था और ये ज़्यादा सहीह है उस रिवायत से जिसमें जलाने का ज़िक्र है।

وَلَمْ يَذْكُرْ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ حَرَّقَ مَتَاعَهُ، وَهَذَا أَصَحُّ.

3074. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अम्र ने, उनसे सालिम बिन

٣٠٧٤ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ سَالِمِ بْنِ

अबी अल जअदि ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के सामान व अस्बाब पर एक साहब मुक़र्रर थे, जिनका नाम करकरा था। उनका इंतिक़ाल हो गया, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो तो जहन्नम में गया। सहाबा उन्हें देखने गये तो एक अबाअ जिसे ख़यानत करके उन्होंने छुपा लिया था उनके यहाँ मिली।

أَبِي الْجَعْدِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: ((كَانَ عَلَى ثَقَلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ كِرْكِرَةُ، فَمَاتَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هُوَ فِي النَّارِ))، فَذَهَبُوا يَنْظُرُونَ إِلَيْهِ فَوَجَدُوا عَبَاءَةً قَدْ غَلَّهَا)).

अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी रह) ने कहा कि मुहम्मद बिन सलाम ने (इब्ने उयेयना से नक़ल किया और) कहा ये लफ़्ज़ करकरा काफ़ के फ़त्हा के साथ है और इसी तरह मन्क़ूल है।

قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ قَالَ ابْنُ سَلاَمٍ: كَرْكَرَةُ: يَعْنِي بِفَتْحِ الْكَافِ. وَهُوَ مَضْبُوطٌ كَذَا.

मा'लूम हुआ कि माले ग़नीमत में से ज़रा सी चोरी भी हराम है जिसकी सज़ा यक़ीनन दोज़ख़ होगी। इस हदीष से उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि मोमिन गुनाहों की वजह से दोज़ख़ मे नहीं जाएगा। क़ुर्आन पाक ने साफ़ ऐलान किया है, **व मय्यगलुल याति बिमा गल्ल यौमल्क़यामति** (आले इमरान : 161) ख़यानत करने वाला ख़यानत की चीज़ को अपने सर पर उठाए क़यामत के दिन हाज़िर होगा। ये वो जुर्म है कि अगर किसी मुजाहिद से भी सरज़द हो तो उसका अमले जिहाद इससे बातिल हो जाता है जैसा कि हदीषे हाज़ा से ज़ाहिर हुआ, **व फिल्हदीषि तहरीमुन क़लीलुल्गुलूलि व कष़ीरुहू व क़ौलुहू हुव फिन्नार अय युअज़्ज़िबु अला मअसियतिन अविल्मुरादु हुव फिन्नार इंल्लम यअफिल्लाहु अन्हु.** (फ़त्ह)

बाब 191 : माले ग़नीमत के ऊँट, बकरियों को तक़्सीम से पहले ज़िब्ह करना मकरूह है

١٩١ - بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنْ ذَبْحِ الإِبِلِ وَالْغَنَمِ فِي الْمَغَانِمِ

3075. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना वज़ाह शकरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मसरूक़ ने, उनसे अबाया बिन रफ़ाआ ने और उनसे उनके दादा राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि मुक़ामे ज़ुल हुलैफ़ा में हमने नबी करीम (ﷺ) के साथ पड़ाव किया। लोग भूखे थे। इधर ग़नीमत में हमे ऊँट और बकरियाँ मिली थीं। आँहज़रत (ﷺ) लश्कर के पीछे के हिस्से में थे। लोगों ने (भूख के मारे) जल्दी की हाण्डियाँ चढ़ा दीं। बाद में नबी करीम (ﷺ) के हुक्म से उन हाँडियों को औंधा दिया गया फिर आपने ग़नीमत की तक़्सीम शुरू की दस बकरियों को एक ऊँट के बराबर रखा। इत्तिफ़ाक़ से माले ग़नीमत का एक ऊँट भाग निकला। लश्कर में घोड़ों की कमी थी। लोग उसे पकड़ने के लिये दौड़े लेकिन ऊँट ने सबको थका दिया। आख़िर एक सहाबी (ख़ुद राफ़ेअ रज़ि.) ने उसे तीर मारा। अल्लाह तआला के हुक्म से ऊँट जहाँ था वहीं रह गया। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इन (पालतू)

٣٠٧٥ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ جَدِّهِ رَافِعٍ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ فَأَصَابَ النَّاسَ جُوعٌ، وَأَصَبْنَا إِبِلاً وَغَنَماً - وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أُخْرَيَاتِ النَّاسِ - فَعَجِلُوا فَنَصَبُوا الْقُدُورَ، فَأَمَرَ بِالْقُدُورِ فَأُكْفِئَتْ ثُمَّ قَسَمَ، فَعَدَلَ عَشَرَةً مِنَ الْغَنَمِ بِبَعِيْرٍ، فَنَدَّ مِنْهَا بَعِيْرٌ، وَفِي الْقَوْمِ خَيْلٌ يَسِيْرٌ، فَطَلَبُوهُ فَأَعْيَاهُمْ، فَأَهْوَى إِلَيْهِ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَحَبَسَهُ اللهُ، فَقَالَ: ((هَذِهِ الْبَهَائِمُ لَهَا أَوَابِدُ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ، فَمَا نَدَّ عَلَيْكُمْ

जानवरों में भी जंगली जानवरों की तरह कुछ दफ़ा वहशत हो जाती है। इसलिये अगर उनमें से कोई क़ाबू में न आए तो उसके साथ ऐसा ही करो अबाया कहते हैं कि मेरे दादा (राफ़ेअ रज़ि.) ने ख़िदमते नबवी में अर्ज़ किया, कि हमें उम्मीद है या (ये कहा कि) डर है कि कल कहीं हमारी दुश्मनों से मुठभेड़ न हो जाए। इधर हमारे पास छुरी नहीं है। तो क्या हम बांस की खपच्चियों से ज़िबह कर सकते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो चीज़ ख़ून बहा दे और ज़िबह करते वक़्त उस पर अल्लाह तआला का नाम भी लिया गया हो, तो उसका गोश्त खाना हलाल है। अल्बत्ता वो चीज़ (जिससे ज़िबह किया गया हो) दांत और नाख़ून न होना चाहिये। तुम्हारे सामने मैं इसकी वजह भी बयान करता हू दांत तो इसलिये नहीं क्योंकि वो हड्डी है और नाख़ून इसलिये नहीं कि वो हब्शियों की छुरी हैं। (राजेअ: 2488)

فاصْنَعُوا بِهِ هَكَذَا))، فَقَالَ جَدِّي : إِنَّا نَرْجُوا - أو نَخَافُ - أَنْ نَلْقَى الْعَدُوَّ غَدًا، وَلَيْسَ مَعَنَا مُدَى، أَفَنَذْبَحُ بِالْقَصَبِ؟ فَقَالَ: مَا أَنْهَرَ الدَّمَ، وَذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ فَكُلْ، لَيْسَ السِّنُّ وَالظُّفْرُ. وَسَأُحَدِّثُكُمْ عَنْ ذَلِكَ: أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ، وَأَمَّا الظُّفْرُ فَمُدَى الْحَبَشَةِ)).

[راجع: ٢٤٨٨]

राफ़ेअ (रज़ि.) के कलाम का मतलब ये है कि तलवार से हम जानवारों को इसलिये नहीं काट सकते कि कल परसों जंग का अंदेशा है। ऐसा न हो तलवारें कुन्द हो जाएँ तो क्या हम बांस की खपच्चियों से काट लें कि उनमें भी धार होती है। हड्डी जिन्नों की ख़ूराक होती है ज़िबह करने से नजिस हो जाएगी। नाख़ुन हब्शियों की छुरियाँ हैं हब्शी उस वक़्त काफ़िर थे तो आपने उनकी मुशाबिहत से मना फ़र्माया। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **व मौज़उत्तर्जुमति मिन्हु अमरहू (ﷺ) बिइक्फाइल्कुदूरि फइन्नहू मुश्इरून बिकराहति मा सनक़ मिनज़्ज़ब्हि बिग़ैरि इज़्निन** (फ़त्ह) या'नी बाब का मतलब इससे ज़ाहिर है कि रसूले करीम (ﷺ) ने हाँडियों को उल्टा कर दिया। इसलिये कि बग़ैर इजाज़त उनका ज़बीहा मकरूह था। शोरबा बहा दिया गया। **व अम्मल्लहमु फलम यत्लफ बल युहमलु अला अन्नहू जुमिअ व रूद्द इलल्मगानिमि** या'नी गोश्त को तल्फ़ करने की बजाय जमा करके माले ग़नीमत में शामिल कर दिया गया। वल्लाहु आलम बिस्सवाब

बाब 192 : फ़तह की ख़ुशख़बरी देना

١٩٢ - بَابُ الْبِشَارَةِ فِي الْفُتُوحِ

3076. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबू ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि मुझसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि मुझसे जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़ुल ख़लसा (यमन के का'बे) को तबाह करके मुझे क्यूँ ख़ुश नहीं करते। ये ज़ुल ख़लसा (यमन के क़बीले) ख़ष्अम का बुतकदा (मन्दिर) था (जो का'बे के मुक़ाबिल बनाया था) जिसे का'बतु यमानिया कहते थे। चुनाँचे मैं (अपने क़बीले) अहमस के डेढ़ सौ सवारों को लेकर तैयार हो गया। ये सब अच्छे शहसवार

٣٠٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ قَالَ: قَالَ لِيْ جَرِيْرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قَالَ لِيْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلاَ تُرِيْحُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) وَكَانَ بَيْتًا فِيْهِ خَثْعَمُ يُسَمَّى كَعْبَةَ الْيَمَانِيَةَ. فَانْطَلَقْتُ فِي خَمْسِيْنَ وَمِائَةٍ مِنْ أَحْمَسَ - وَكَانُوا

थे। फिर मैंने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया कि मैं घोड़े पर अच्छी तरह से जम नहीं पाता तो आपने मेरे सीने पर (दस्ते मुबारक) मारा और मैंने आपकी उंगलियों का निशान अपने सीने पर देखा। आप (ﷺ) ने फिर ये दुआ दी, ऐ अल्लाह! उसे घोड़े पर जमा दे और उसे सहीह रास्ता दिखाने वाला बना दे और ख़ुद उसे भी राह पाया हुआ कर दे। फिर जरीर (रज़ि.) मुहिम पर रवाना हुए। और ज़ुल् ख़ल्सा को तोड़कर जला दिया। उसके बाद नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में खुशख़बरी भिजवाई। जरीर (रज़ि.) के क़ासिद (हुसैन बिन रबीआ) ने (ख़िदमते नबवी में) हाज़िर होकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ) उस ज़ात पाक की क़सम! जिसने आपको सच्चा नबी बनाकर मब्ऊष़ किया। मैं उस वक़्त तक आपकी ख़िदमत में हाज़िर नहीं हुआ जब तक वो बुतकदा जलकर ऐसा (स्याह) नहीं हो गया जैसा ख़ारिश वाला बीमार ऊँट स्याह हुआ करता है। ये सुनकर आँहज़रत (ﷺ) ने क़बीला अहमस के सवारों और उनके पैदल जवानों के लिये पाँच बार बरकत की दुआ की। मुसद्दद ने इस हदीष़ में यूँ कहा ज़ी ख़लसा ख़ष़अम क़बीले में एक घर था। (राजेअ़ : 3020)

أَصْحَابَ خَيْلٍ - فَأَخْبَرْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنِّي لاَ أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ، فَضَرَبَ فِي صَدْرِي حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ أَصَابِعِهِ فِي صَدْرِي، فَقَالَ : ((اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ، وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًا)). فَانْطَلَقَ إِلَيْهَا فَكَسَرَهَا وَحَرَّقَهَا، فَأَرْسَلَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُبَشِّرُهُ، فَقَالَ رَسُولُ جَرِيْرٍ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، مَا جِئْتُكَ حَتَّى تَرَكْتُهَا كَأَنَّهَا جَمَلٌ أَجْرَبُ. ((فَبَارَكَ عَلَى خَيْلِ أَحْمَسَ وَرِجَالِهَا خَمْسَ مَرَّاتٍ)). قَالَ مُسَدَّدٌ : ((بَيْتٌ فِي خَثْعَمَ)).

[راجع: ٣٠٢٠]

ख़ारिशज़दा ऊँट बाल वग़ैरह झड़कर काला और दुबला पड़ जाता है। इसी तरह ज़ुलख़लसा जल भुनकर छत वग़ैरह गिरकर काला पड़ गया था। बाब का मतलब इस तरह निकला कि जरीर (रज़ि.) ने काम पूरा करके आप (ﷺ) को ख़ुशख़बरी भेजी। फ़साद और बदअमनी के मर्कज़ों को ख़त्म करना, अमन क़ायम करने के लिये ज़रूरी है। ख़्वाह वो मर्कज़ मज़हब ही के नाम पर बनाए जाएँ जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने मदीना में एक मस्जिद को भी गिरा दिया जो मस्जिदे ज़रार के नाम से मशहूर हुई।

बाब 193 : (फ़तहे इस्लाम की) ख़ुशख़बरी देने वाले को इन्आम देना

١٩٣- بَابُ مَا يُعْطِي الْبَشِيْرُ

और कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) ने जब उन्हें तौबा के क़ुबूल होने की खुशख़बरी सुनाई गई तो खुशखबरी सुनाने वाले को दो कपड़े इन्आम दिये थे।

وَأَعْطَى كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ ثَوبَيْنِ حِيْنَ بُشِّرَ بِالتَّوْبَةِ

ये ख़ुशख़बरी सलमा बिन अक्वा या हम्ज़ा बिन अम्र असलमी ने दी थी। इस हदीष़ को हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल मग़ाज़ी में वस्ल किया है। इससे षाबित हुआ कि किसी भी अम्र की ख़ुशख़बरी सुनाने वाले को इन्आम दिया जाना मुस्तहब है। फिर जंग में फ़तह की बशारत तो बड़ी अहम चीज़ है। उसकी बशारत देने वाला यक़ीनन इन्आम का हक़दार है।

बाब 194 : फ़तहे मक्का के बाद वहाँ से हिजरत करने की जरूरत नहीं रही

١٩٤- بَابُ لاَ هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ

3077. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा

٣٠٧٧- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ

हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे त़ाऊस ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन फ़र्माया, अब हिजरत (मक्का से मदीना के लिये) बाक़ी नहीं रही, अल्बत्ता हुस्ने निय्यत और जिहाद बाक़ी है। इसलिये जब तुम्हें जिहाद के लिये बुलाया जाए तो फ़ौरन निकल जाओ। (राजेअ़ : 1349)

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ : ((لاَ هِجْرَةَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ. وَإِذَا اسْتُنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوا)). [راجع: ١٣٤٩]

तश्रीह : ख़ास़ मक्का से मदीना मुनव्वरा की हिजरत मुराद है। पहले जब मक्का दारुल इस्लाम नहीं था और मुसलमानों को वहाँ आज़ादी नहीं थी तो वहाँ से हिजरत ज़रूरी हुई। लेकिन अब मक्का इस्लामी हुकूमत के तह़त आ चुका। इसलिये यहाँ से हिजरत का कोई सवाल ही बाक़ी नहीं रहता। ये मा'नी हर्गिज़ नहीं कि सिरे से हिजरत का हुक्म ही ख़त्म हो गया क्योंकि जब तक दुनिया क़ायम है और जब तक कुफ़्र व इस्लाम की कश्मकश बाक़ी है, उस वक़्त तक हर उस ख़ित्ते से जहाँ मुसलमानों को अह़कामे इस्लाम पर अ़मल करने की आज़ादी न हो, दारुल इस्लाम की तरफ़ हिजरत करना फ़र्ज़ है।

हिजरत के लग़्वी मा'नी छोड़ना, इस्तिलाह़ में इस्लाम के लिये अपना वत़न छोड़कर दारुल इस्लाम में जाकर रहना, अगर ये हिजरत रज़ा-ए-इलाही के लिये मुक़र्ररा उसूलों के तह़त की जाए तो इस्लाम मे उसका बड़ा दर्जा है। और अगर दुनिया त़लबी या और कोई ग़र्ज़े फ़ासिद हो तो उस हिजरत का अल्लाह के नज़दीक कोई ष़वाब नहीं है। जैसा कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) शुरू ही में ह़दीष़, **इन्नमल आ़मालु बिन्नियात** नक़ल कर चुके हैं । इस पुरफ़ितन दौर में भी यही हुक्म है। जो लोग किसी मुल्क में मुहाजिर के नाम से मशहूर हों उनको ख़ुद फ़ैसला करना चाहिये वो मुहाजिर किस क़िस्म के हैं। **बलिल्इन्सानु अ़ला नफ़्सिही बस़ीरतुन व लौ अल्क़ा मआज़ीरा** (अल क़यामः 14-15) का यही मत़लब है कि लोगों को चाहिये कि वो ख़ुद गिरेबानों में मुँह डालकर देखें और अपने बारे में ख़ुद फ़ैसला कर लें।

3078. 79. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद ने, उन्हें अबू उ़ष़्मान नहदी ने और उनसे मजाशेअ़ बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मजाशेअ़ अपने भाई मुजालिद बिन मसऊ़द (रज़ि.) को लेकर ख़िदमते नबवी (ﷺ) में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि ये मुजालिद हैं। आपसे हिजरत पर बेअ़त करना चाहते हैं। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़तह़े मक्का के बाद अब हिजरत बाक़ी नहीं रहीं। हाँ मैं इस्लाम पर उनसे बेअ़त ले लूँगा। (राजेअ़ : 2962, 2963)

٣٠٧٨، ٣٠٧٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ عَنْ مُجَاشِعِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: جَاءَ مُجَاشِعٌ بِأَخِيهِ مُجَالِدِ بْنِ مَسْعُودٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: هَذَا مُجَالِدٌ يُبَايِعُكَ عَلَى الْهِجْرَةِ. فَقَالَ: ((لاَ هِجْرَةَ بَعْدَ فَتْحِ مَكَّةَ، وَلَكِنْ أُبَايِعُهُ عَلَى الإِسْلاَمِ)).[راجع: ٢٩٦٢، ٢٩٦٣]

इस ह़दीष़ में इब्तिदा-ए-इस्लाम की हिजरत अज़ मक्का बराए मदीना मुराद है। जब मक्का शरीफ़ फ़तह़ हो गया तो वहाँ से हिजरत का सवाल ही ख़त्म हो गया। रिवायत का यही मत़लब है।

3080. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया कि अ़म्र और इब्ने जुरैज बयान करते थे कि हमने अ़त़ा से सुना था, वो बयान करते थे कि मैं उ़बैद बिन उ़मैर

٣٠٨٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو وَابْنُ جُرَيْجٍ:

سَمِعْتُ عَطَاءً يَقُولُ: ذَهَبْتُ مَعَ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ إِلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا وَهِيَ مُجَاوِرَةٌ بِثَبِيرٍ فَقَالَتْ لَنَا ((انْقَطَعَتِ الْهِجْرَةُ مُنْذُ فَتَحَ اللهُ عَلَى نَبِيِّهِ ﷺ مَكَّةَ))

[طرفاه في : ٣٩٠٠، ٤٣١٢].

के साथ हज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उस वक़्त आप ष़बीर पहाड़ के क़रीब क़याम कर रही थीं। आपने हमसे फ़र्माया कि जब अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) को मक्का पर फ़तह दी थी, उसी वक़्त से हिजरत का सिलसिला ख़त्म हो गया था। (ष़बीर मशहूर पहाड़ है)। (दीगर मक़ाम : 3900, 4212)

١٩٥- بَابُ إِذَا اضْطُرَّ الرَّجُلُ إِلَى النَّظَرِ فِي شُعُورِ أَهْلِ الذِّمَّةِ

बाब 195 : ज़िम्मी या मुसलमान औरतों के ज़रूरत के वक़्त बाल देखना दुरुस्त है

وَالْمُؤْمِنَاتِ إِذَا عَصَيْنَ اللهَ، وَتَجْرِيدِهِنَّ

इस तरह उनका नंगा करना भी जब वो अल्लाह की नाफ़र्मानी करें

٣٠٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَوْشَبٍ الطَّائِفِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ قَالَ أَخْبَرَنَا حُصَيْنٌ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَكَانَ عُثْمَانِيًّا، فَقَالَ لاِبْنِ عَطِيَّةَ وَكَانَ عَلَوِيًّا: إِنِّي لأَعْلَمُ مَا الَّذِي جَرَّأَ صَاحِبَكَ عَلَى الدِّمَاءِ، سَمِعْتُهُ يَقُولُ: بَعَثَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالزُّبَيْرَ فَقَالَ: ((ائْتُوا رَوْضَةَ كَذَا، وَتَجِدُونَ بِهَا امْرَأَةً أَعْطَاهَا حَاطِبٌ كِتَابًا)). فَأَتَيْنَا الرَّوْضَةَ فَقُلْنَا: الْكِتَابَ. قَالَتْ: لَمْ يُعْطِنِي. فَقُلْنَا: لَتُخْرِجِنَّ أَوْ لأُجَرِّدَنَّكِ. فَأَخْرَجَتْ مِنْ حُجْزَتِهَا. فَأَرْسَلَ إِلَى حَاطِبٍ.

[راجع: ٣٠٠٧]

3081. मुझसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हौशब ताइफ़ी ने बयान किया, उनसे हुशैम ने बयान किया, उन्हें हुस़ैन ने ख़बर दी, उन्हें सअ़द बिन उ़बैदा ने और उन्हें अबी अ़ब्दुर्रहमान ने और वो उ़ष्मानी थे, उन्होंने इब्ने अ़तिया से कहा, जो अ़ल्वी थे, कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम्हारे स़ाहब (हज़रत अ़ली रज़ि.) को किसी चीज़ से ख़ून बहाने पर जुर्अत हुई, मैंने ख़ुद उनसे सुना, वो बयान करते थे कि मुझे और ज़ुबैर बिन अ़वाम (रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) ने भेजा। और हिदायत की कि रौज़-ए-ख़ाख़ पर जब तुम पहुँचो, तो तुम्हें एक औ़रत (सारा नामी) मिलेगी। जिसे हातिब इब्ने बल्तआ (रज़ि.) ने एक ख़त देकर भेजा है (तुम वो ख़त उससे लेकर आओ) चुनाँचे जब हम उस बाग़ तक पहुँचे हमने उस औ़रत से कहा ख़त ला। उसने कहा कि हातिब (रज़ि.) ने मुझे कोई ख़त नहीं दिया। हमने उससे कहा कि ख़त ख़ुद ब ख़ुद निकालकर दे दे वरना (तलाशी के लिये) तुम्हारे कपड़े उतार लिये जाएँगे। तब कहीं उसने खत़ अपने नेफ़े में से निकाल कर दिया। (जब हमने वो ख़त रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पेश किया, तो) आपने हातिब (रज़ि.) को बुला भेजा। (राजेअ़ : 3007)

فَقَالَ: لاَ تَعْجَلْ، وَاللهِ مَا كَفَرْتُ وَلاَ ازْدَدْتُ لِلإِسْلاَمِ إِلاَّ حُبًّا، وَلَمْ يَكُنْ أَحَدٌ مِنْ أَصْحَابِكَ إِلاَّ وَلَهُ بِمَكَّةَ مَنْ يَدْفَعُ اللهُ

उन्होंने (हाज़िर होकर) अ़र्ज़ किया। हुज़ूर! मेरे बारे में जल्दी न करें! अल्लाह की क़सम! मैंने न कुफ़्र किया है और न मैं इस्लाम से हटा हूँ, स़िर्फ़ अपने ख़ानदान की मुहब्बत ने इस पर मजबूर किया था। आप (ﷺ) के अस़्हाब (मुहाजिरीन) में कोई शख़्स़ ऐसा नहीं

بِهِ عَنْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ، وَلَمْ يَكُنْ لِيْ أَحَدٌ، فَأَحْبَبْتُ أَنْ أَتَّخِذَ عِنْدَهُمْ يَدًا. فَصَدَّقَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالَ عُمَرُ: دَعْنِي أَضْرِبْ عُنُقَهُ، فَإِنَّهُ قَدْ نَافَقَ. فَقَالَ : ((وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ اللهَ اطَّلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ: اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ)). فَهَذَا الَّذِيْ جَرَّأَهُ.

जिसके रिश्तेदार वग़ैरह मक्का मे न हों। जिनके ज़रिये अल्लाह तआला उनके ख़ानदान वालों और उनकी जायदाद की हिमायत हिफ़ाज़त न कराता हो। लेकिन मेरा वहाँ कोई भी आदमी नहीं, इसलिये मैंने चाहा कि उन मक्का वालों पर एक एहसान कर दूँ, नबी करीम (ﷺ) ने भी उनकी बात की तस्दीक़ फ़र्माई। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माने लगे कि मुझे उसका सर उतारने दीजिए, ये मुनाफ़िक़ हो गया है। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें क्या मा'लूम! अल्लाह तआला अहले बद्र के हालात से ख़ूब वाक़िफ़ था और वो ख़ुद अहले बद्र के बारे में फ़र्मा चुका है कि, जो चाहो करो। अबू अब्दुर्रहमान ने कहा, हज़रत अली (रज़ि.) को इसी इर्शाद ने (कि तुम जो चाहो करो, ख़ूँ-रेज़ी पर) दिलेर बना दिया है।

तश्रीह : अबू अब्दुर्रहमान का कलाम मुबालग़ा है। हज़रत अली (रज़ि.) की अल्लाह पर तक़्वा और परहेज़गारी से बईद है कि वो ख़ूने नाहक़ करें। इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष से ये निकाला कि ज़रूरत के वक़्त औरत की तलाशी लेना, उसका बरहना करना दुरुस्त है। कुछ रिवायतों में ये है कि उस औरत ने वो ख़त अपनी चोटी में से निकालकर दिया। इस पर हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **वल्जम्अ बैनहू व बैन रिवायति अख़रजत्हू मिन हजज़्तिहा अय मक़्अदल्इज़ारि लिअन्न अक़ीसतहा त़वीलतुन बिहैषु तस़िलु इला हजज़्तिहा फरबत्हू फी अक़ीसतिहा व गज़रत्हु बिहजज़्तिहा** (फ़तह) या'नी दोनों रिवायतों में मुत़ाबक़त ये है कि उस औरत के सर की चोटी इतनी लम्बी थी कि वो इज़ारबन्द बाँधने की जगह तक लटकी हुई थी, उस औरत ने उसको चुटिया के अंदर गूँधकर नीचे मक़्अद के पास इज़ार में टांक लिया था। चुनाँचे उस जगह से निकालकर दिया। रावियों ने जैसा देखा बयान कर दिया।

सलफ़े उम्मत में जो लोग हज़रत उष्मान (रज़ि.) को हज़रत अली (रज़ि.) पर फ़ज़ीलत देते हैं उन्हें उष्मानी कहते हैं और जो हज़रत अली (रज़ि.) को हज़रत उष्मान (रज़ि.) पर फ़ज़ीलत देते हैं उन्हें अल्वी कहते थे। ये इस्तिलाह एक ज़माने तक रही, फिर ख़त्म हो गई। अहले सुन्नत में ये अक़ीदा क़रार पाया कि किसी सहाबी को किसी पर फ़ौक़ियत नहीं देना चाहिये। वो सब अल्लाह के नज़दीक मक़्बूल हैं, उनमें फ़ाज़िल कौन है और मफ़्ज़ूल कौन, ये अल्लाह ही बेहतर जानता है। यूँ ख़ुलफ़ा-ए-अरबआ को हस्बे तर्तीब ख़िलाफ़त और सहाबा पर फौक़ियत हासिल है, फिर अशर-ए-मुबश्शरा को (रज़ि.अज्मईन)।

बाब 196 : ग़ाज़ियों के इस्तिक़बाल को जाना (जब वो जिहाद से लौटकर आएँ)

١٩٦ - بَابُ اسْتِقْبَالِ الْغُزَاةِ

٣٠٨٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ وَحُمَيْدُ بْنُ الأَسْوَدِ عَنْ حَبِيْبِ بْنِ الشَّهِيْدِ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ: ((قَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ لاِبْنِ جَعْفَرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ : أَتَذْكُرُ إِذْ تَلَقَّيْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنَا وَأَنْتَ وَابْنُ عَبَّاسٍ ؟ قَالَ:

3082. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबिल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ और हुमैद बिन अल् अस्वद ने बयान किया, उनसे हबीब बिन शहीद ने और उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) से कहा, तुम्हें वो क़िस्सा याद है जब मैं और तुम अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) तीनों आगे जाकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से मिले थे (आप ﷺ जिहाद से वापस आ रहे थे) अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र

ने कहा, हाँ याद है। और आँहज़रत (ﷺ) ने मुझको और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) को अपने साथ सवार कर लिया था, और तुम्हें छोड़ दिया था।

نَعَمْ، فَحَمَلَنَا وَتَرَكَكَ)).

तशरीह : ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **ज़ाहिरुहू अन्नल्क़ाइल फहमल्ना हुव अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़फ़र व अन्नल्मत्रूक हुव इब्नुज़्ज़ुबैर** या'नी ज़ाहिर है कि सवार होने वाले ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) हैं और मतरूक ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) हैं। मगर मुस्लिम में उसके बरअक्स मज़्कूर है। **व क़द नब्बह अयाज़ अला अन्नल्लज़ी वक़अ फिल बुख़ारी हुस्सवाब** या'नी क़ाज़ी अ़याज़ ने तम्बीह की है कि बुख़ारी का बयान ज़्यादा स़ह़ीह़ है। इससे ग़ाज़ियों का आगे बढ़कर इस्तिक़बाल करना ष़ाबित हुआ।

नीज़ इससे यतीमों का ज़्यादा ख़्याल रखना भी ष़ाबित हुआ क्योंकि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह के वालिद जा'फ़र बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) इंतिक़ाल कर चुके थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके यतीम बच्चे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) का दिल खुश करने के लिये सवारी पर उनको मुक़द्दम किया, अगर किसी स़ह़ाबी पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने कभी किसी अम्र में नज़रे इनायत फ़र्माई तो उस पर उस स़ह़ाबी के फ़ख़्र करने का जवाज़ भी ष़ाबित हुआ, किसी बुज़ुर्ग की त़रफ़ से किसी पर नज़रे इनायत हो तो वो आज बत़ौरे फ़ख़्र इसे बयान कर सकते हैं।

3083. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया कि साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) ने कहा, (जब रसूले करीम ﷺ ग़ज़्व-ए-तबूक़ से वापस तशरीफ़ ला रहे थे तो) हम सब बच्चे ष़निय्यतुल विदाअ़ तक आपका इस्तिक़बाल करने गए थे। (दीगर मक़ाम : 4426, 4427)

٣٠٨٣- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : ((قَالَ السَّائِبُ بْنُ يَزِيْدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، ذَهَبْنَا نَتَلَقَّى رَسُولَ اللهِ ﷺ مَعَ الصِّبْيَانِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ)). [طرفاه في : ٤٤٢٦، ٤٤٢٧].

मुजाहिदीन का वापसी पर पुरख़ुलूस इस्तिक़्बाल करना सुन्नत है। ह़ज़रत इमाम (रह.) इसी मक़्सद को बयान कर रहे हैं। मदीना के क़रीब एक घाटी तक लोग अपने मेहमानों को रुख़्सत करने जाया करते थे। इसी का नाम ष़निय्यतुल विदाअ़ क़रार दिया। ग़ज़्व-ए-तबूक़ की फ़ज़ीलत किताबुल मग़ाज़ी में आएँगी।

बाब 197 : जिहाद से वापस होते हुए क्या कहे

١٩٧- بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا رَجَعَ مِنَ الْغَزْوِ

3084. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) (जिहाद से) वापस होते तो तीन बार अल्लाहु अकबर कहते, और ये दुआ़ पढ़ते, इंशाअल्लाह हम अल्लाह की त़रफ़ लौटने वाले हैं। हम तौबा करने वाले हैं। अपने रब की इबादत करने वाले हैं। उसकी तअ़रीफ़ करने वाले और उसके लिये सज्दा करने वाले हैं। अल्लाह ने अपना वा'दा सच कर दिखाया, अपने बन्दे की मदद की, और काफ़िरों के लश्कर को उसी अकेले ने शिकस्त दे दी। (राजेअ़ : 1797)

٣٠٨٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا قَفَلَ كَبَّرَ ثَلاَثًا قَالَ: ((آيِبُونَ إِنْ شَاءَ اللهُ، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ، حَامِدُونَ، لِرَبِّنَا سَاجِدُونَ. صَدَقَ اللهُ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ)). [راجع: ١٧٩٧]

आइबून का मत़लब **अय नह्नु राजिऊन इलल्लाह** या'नी हम अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ करने वाले है।

3085. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया, और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि (ग़ज़्वा बनु लह्यान में जो 6 हिजरी में हुआ) अ़स्फ़ान से वापस होते हुए हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे। आप अपनी ऊँटनी पर सवार थे और आपने सवारी पर पीछे (उम्मुल मोमिनीन) ह़ज़रत स़फ़िया बिन्ते हुय्यि (रज़ि.) को बिठा लिया था। इत्तिफ़ाक़ से आपकी ऊँटनी फिसल गई और आप दोनों गिर गये। ये ह़ाल देखकर अबू त़लह़ा (रज़ि.) भी फ़ौरन अपनी सवारी से कूद पड़े और कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे, कुछ चोट तो नहीं लगी? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया पहले औरत की ख़बर लो। अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने एक कपड़ा अपने चेहरे पर डाल लिया, फिर ह़ज़रत स़फ़िया (रज़ि.) के क़रीब गये और वह कपड़ा उनके ऊपर डाल दिया। उसके बाद दोनों ह़ज़रात की सवारी दुरुस्त की, जब आप सवार हो गये तो हम आँह़ज़रत (ﷺ) के चारों त़रफ़ जमा हो गये। फिर जब मदीना दिखाई देने लगा तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये दुआ पढ़ी। हम अल्लाह की त़रफ़ वापस लौटने वाले हैं। तौबा करने वाले, अपने रब की इबादत करने वाले और उसकी ह़म्द पढ़ने वाले हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ये दुआ बराबर पढ़ते रहे यहाँ तक कि मदीना में दाख़िल हो गये। (राजेअ़ : 371)

٣٠٨٥- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ مَقْفَلَهُ مِنْ عُسْفَانَ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى رَاحِلَتِهِ، وَقَدْ أَرْدَفَ صَفِيَّةَ بِنْتَ حُيَيٍّ، فَعَثَرَتْ نَاقَتُهُ فَصُرِعَا جَمِيْعًا، فَاقْتَحَمَ أَبُو طَلْحَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ جَعَلَنِي اللهُ فِدَاءَكَ. قَالَ: ((عَلَيْكَ الْمَرْأَةَ)). فَقَلَبَ ثَوبًا عَلَى وَجْهِهِ وَأَتَاهَا فَأَلْقَاهُ عَلَيْهَا، وَأَصْلَحَ لَهُمَا مَرْكَبَهُمَا فَرَكِبَا، وَاكْتَنَفْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ. فَلَمَّا أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِيْنَةِ قَالَ: ((آيِبُونَ، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ)). فَلَمْ يَزَلْ يَقُولُ ذَلِكَ حَتَّى دَخَلَ الْمَدِيْنَةَ.

[راجع: ٣٧١]

तश्रीह : रिवायत में रावी से सह्व हो गया है। स़ह़ीह़ यूँ है कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) ख़ैबर से लौटे उस वक़्त ह़ज़रत स़फ़िया (रज़ि.) आपके साथ थीं क्योंकि ये ख़ातून आपको जंगे ख़ैबर मे मिली थीं जो 7 हिजरी में हुआ था। जंगे बनू लह़्यान 6 हिजरी में हुई है उस वक़्त ह़ज़रत स़फ़िया (रज़ि.) मौजूद न थीं। ह़ज़रत अबू तलह़ा (रज़ि.) अपने मुँह पर कपड़ा डालकर इसलिये आए कि ह़ज़रत स़फ़िया (रज़ि.) पर नज़र न पड़े। वापसी पर आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक पर अल्फ़ाज़ त़य्यिबा आइबून ताइबून जारी थे। बाब से यही वजहे मुनासबत है। अब भी सुन्नत यही है कि सफ़रे ह़ज्ज हो यो और कोई सफ़र ख़ैरियत से वापसी पर इस दुआ को पढ़ा जाए। औरत को अपने मर्द के पीछे ऊँटनी पर सवारी करना भी इस ह़दीष़ से ष़ाबित हुआ। **व फ़िल्ख़ैरिल्जारी इन्नमा क़ालत मिन अस्फ़ान लिअन्न गज़्वत ख़ैबर कानत उक़्बहा कअन्नहू लम यअतद बिल्इक़ामतिल्मुतख़ल्ललति बैनहुमा लितुक़ार बिहिमा** या'नी अ़स्फ़ान का लफ़्ज़ लाने की वजह ये भी हो सकती है कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर उसके बाद ही हुआ, इतने क़रीब कि रावी ने दरम्यानी अ़र्से को कोई अहमियत नहीं दी और दोनों को एक ही सत़ह़ पर रख लिया जैसा कि ह़दीष़े सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) में तह़रीम मुतआ़ के बारें में ग़ज़्व-ए-औत़ास का ज़िक्र आया है। ह़ालाँकि वो मक्का ही में ह़राम हो चुका था मगर औत़ास और मक्का में तक़ारुब की वजह से वो इसकी त़रफ़ मन्सूब कर दिया।

3086. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा

٣٠٨٦- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ قَالَ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ

हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि वो और अबू तलहा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के साथ थे, उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी सवारी पर पीछे बिठा रखा था। रास्ते में इत्तिफ़ाक़ से आपकी ऊँटनी फिसल गई और आँहज़रत (ﷺ) गिर गये और उम्मुल मोमिनीन भी गिर गईं। अबू तलहा (रज़ि.) ने यूँ कहा कि मैं समझता हूँ, उन्होंने भी अपने आपको ऊँट से गिरा दिया और आँहज़रत (ﷺ) के क़रीब पहुँचकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे कोई चोट तो हुज़ूर को नहीं आई? आपने फ़र्माया कि नहीं लेकिन तुम औरत की ख़बर लो। चुनाँचे उन्होंने एक कपड़ा अपने चेहरे पर डाल लिया, फिर उम्मुल मोमिनीन की तरफ़ बढ़े और वही कपड़ा उन पर डाल दिया। अब उम्मुल मोमिनीन खड़ी हो गईं। फिर अबू तलहा (रज़ि.) ने आप दोनों के लिये ऊँटनी को मज़बूत किया तो आप सवार हुए और सफ़र शुरू किया। जब मदीना मुनव्वरा के सामने पहुँच गये या रावी ने ये कहा कि जब मदीना दिखाई देने लगा तो नबी करीम (ﷺ) ने ये दुआ पढ़ी। हम अल्लाह की तरफ़ लौटने वाले हैं। तौबा करने वाले, अपने रब की इबादत करने वाले और उसकी ता'रीफ़ करने वाले हैं! आप (ﷺ) ये दुआ बराबर पढ़ते रहे, यहाँ तक कि मदीना में दाख़िल हो गये। (राजेअ : 371)

الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ أَقْبَلَ هُوَ وَأَبُو طَلْحَةَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، وَمَعَ النَّبِيِّ ﷺ صَفِيَّةُ، مُرْدِفُهَا عَلَى رَاحِلَتِهِ. فَلَمَّا كَانُوا بِبَعْضِ الطَّرِيْقِ عَثَرَتِ النَّاقَةُ فَصُرِعَ النَّبِيُّ ﷺ وَالْمَرْأَةُ، وَإِنَّ أَبَا طَلْحَةَ قَالَ أَحْسِبُ قَالَ: اقْتَحَمَ عَنْ بَعِيْرِهِ فَأَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ، جَعَلَنِي اللهُ فِدَاءَكَ، هَلْ أَصَابَكَ مِنْ شَيْءٍ؟ قَالَ: ((لاَ، وَلَكِنْ عَلَيْكَ بِالْمَرْأَةِ)). فَأَلْقَى أَبُو طَلْحَةَ ثَوْبَهُ عَلَى وَجْهِهِ فَقَصَدَ قَصْدَهَا، فَأَلْقَى ثَوْبَهُ عَلَيْهَا، فَقَامَتِ الْمَرْأَةُ، فَشَدَّ لَهُمَا عَلَى رَاحِلَتِهِمَا فَرَكِبَا، فَسَارُوا، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِظَهْرِ الْمَدِيْنَةِ – أَوْ قَالَ: أَشْرَفُوا عَلَى الْمَدِيْنَةِ – قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((آيِبُونَ، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ)). فَلَمْ يَزَلْ يَقُولُهَا حَتَّى دَخَلَ الْمَدِيْنَةَ. [راجع: ٣٧١]

ये भी जंगे ख़ैबर ही के बारे में है। दोनों अहादीष़ में अल्फ़ाज़े मुख़्तलिफ़ा के साथ एक ही वाक़िया बयान किया गया है। ये भी दोनों में मुत्तफ़िक़ है कि आँहज़रत (ﷺ) के साथ सफ़िया (रज़ि.) थीं, ग़ज़्वा बनू लहयान से इस वाक़िये का जोड़ नहीं है, जो 6 हिजरी में हुआ और हज़रत सफ़िया (रज़ि.) का इस्लाम और हरम में दाख़िला 7 हिजरी से मुता'ल्लिक़ है।

बाब 198 : सफ़र से वापसी पर नफ़्ल नमाज़ (बतौरे नमाज़े शुक्राना अदा करना)

١٩٨- بَابُ الصَّلاَةِ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ

3087. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे महारिब बिन दिष़ार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में था। जब हम मदीना पहुँचे तो आपने फ़र्माया कि

٣٠٨٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ

فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ قَالَ لِي: ((ادْخُلِ الْمَسْجِدَ فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ)).[راجع: ٤٤٣]

पहले मस्जिद में जा और दो रकअ़त (नफ़्ल) नमाज़ पढ़। (राजेअ़ : 443)

٣٠٨٨- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبٍ عَنْ أَبِيهِ وَعَمِّهِ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ كَعْبٍ عَنْ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ ضُحًى دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ)). [راجع: ٢٧٥٧]

3088. हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने, उनसे उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह) और चचा उ़बैदुल्लाह बिन कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब दिन चढ़े सफ़र से वापस होते तो बैठने से पहले मस्जिद मे जाकर दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़ते थे। (राजेअ़ : 2757)

सफ़रे जिहाद पर सफ़रे हज्ज वग़ैरह को भी क़यास किया जा सकता है। ऐसे लम्बे सफ़र से ख़ैरियत के साथ वापसी पर बतौरे शुक्राना दो रकअ़त नमाज़े नफ़्ल अदा करना अम्रे मस्नून है, अल्लाह हर मुसलमान को नसीब फ़र्माए, आमीन।

١٩٩- بَابُ الطَّعَامِ عِنْدَ الْقُدُومِ، وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يُفْطِرُ لِمَنْ يَغْشَاهُ

बाब 199 : मुसाफ़िर जब सफ़र से लौटकर आए तो लोगों को खाना खिलाए

और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) (जब सफ़र से वापस आते तो) मुलाक़ातियों के आने की वजह से रोज़ा नहीं रखते थे.

٣٠٨٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ نَحَرَ جَزُورًا أَوْ بَقَرَةً. زَادَ مُعَاذٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مُحَارِبٍ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ: اشْتَرَى مِنِّي النَّبِيُّ ﷺ بَعِيرًا بِأُوقِيَّتَيْنِ وَدِرْهَمٍ أَوْ دِرْهَمَيْنِ. فَلَمَّا قَدِمَ صِرَارًا أَمَرَ بِبَقَرَةٍ فَذُبِحَتْ فَأَكَلُوا مِنْهَا، فَلَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ أَمَرَنِي أَنْ آتِيَ الْمَسْجِدَ فَأُصَلِّيَ رَكْعَتَيْنِ، وَوَزَنَ لِي ثَمَنَ الْبَعِيرِ)). [راجع: ٤٤٣]

3089. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको वकीअ़ ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें मुहारिब बिन दष़ार ने और उन्हें जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लाए (ग़ज़्व-ए-तबूक़ या ज़ातुर्रिक़ाअ़ से) तो ऊँट या गाय ज़िबह्र की (रावी को शुब्हा है) मुआ़ज़ अ़म्बरी ने (अपनी रिवायत में) कुछ ज़्यादती के साथ कहा। उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुहारिब बिन दष़ार ने, उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझसे ऊँट ख़रीदा था। दो औक़िया और एक दिरहम या (रावी को शुब्हा है कि दो औक़िया) दो दिरहम में। जब आप मक़ामे स़िरार पर पहुँचे तो आपने हुक्म दिया और गाय ज़िबह्र की गई और लोगों ने उसका गोश्त खाया। फिर जब आप मदीना मुनव्वरा पहुँचे तो मुझे हुक्म दिया कि पहले मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ो, उसके बाद मुझे मेरे ऊँट की क़ीमत वज़न करके इनायत फ़र्माई। (राजेअ़ : 443)

तश्रीह : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) सफ़र में रोज़ा नहीं रखते थे न फ़र्ज़ न नफ़्ल, जब घर पर होते तो बकष्रत रोज़े रखा करते, अगरचे उनकी आ़दत ह़ालते इक़ामत में बकष्रत रोज़े रखने की थी, लेकिन जब आप सफ़र से वापस आते तो दो एक दिन इस ख़्याल से रोज़ा नहीं रखते थे कि मुलाक़ात के लिये लोग आएँगे और उनकी ज़ियाफ़त ज़रूरी है और ये भी ज़रूरी है कि मेज़बान, मेहमान के साथ खाए, इसलिये आप ऐसे मौक़े पर नफ़्ल रोज़ा छोड़ देते थे।

आप तहज्जुद पढ़ा करते, सुन्नते नबवी से बाल बराबर भी तजावुज़ न करते, बिदअ़त से इस क़दर नफ़रत करते कि एक बार एक मस्जिद में गये, वहाँ किसी ने अस्सलात अस्सलात पुकारा, तो आप ये कहकर खड़े हो गये, कि इस बिदअ़ती की मस्जिद से निकल चलो।

मुआ़ज़ की सनद बयान करने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि मुह़ारिब का सिमाअ़ जाबिर से ष़ाबित हो जाए। मुआ़ज़ की इस रिवायत को इमाम मुस्लिम ने वस्ल किया है। इस रिवायत को इमाम बुख़ारी (रह.) ने कई जगह बयान करके इससे बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया है। ता'ज्जुब है कि ऐसे फ़िक़्हे अहले ह़दीष़ के माहिर मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम को कुछ कोरे बातिन मुतअ़स्सिब मुज्तहिद नहीं मानते, जो ख़ुद उनकी कोरे बातिनी का षुबूत है।

3090. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुह़ारिब बिन दष़ार ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं सफ़र से वापस मदीना पहुँचा तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया कि मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़ो, स़िरार (मदीना मुनव्वरा से तीन मील की दूरी पर मश्रिक़ में) एक जगह का नाम है। (राजेअ़ : 443)

٣٠٩٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: ((قَدِمْتُ مِنْ سَفَرٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((صَلِّ رَكْعَتَيْنِ)). صِرَارٌ مَوْضِعٌ نَاحِيَةً بِالْمَدِيْنَةِ. [راجع: ٤٤٣]

इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब का तर्जुमा से मुश्किल है। कुछ ने कहा ये पहली ह़दीष़ ही का एक टुकड़ा है, इसकी मुनासबत से इसको ज़िक्र कर दिया। मा'लूम हुआ कि सफ़र से वापसी पर मस्जिद में जाकर शुक्राना के दो नफ़्ल पढ़ना मस्नून है।

57. किताबु फ़र्ज़िल ख़ुमुस

किताब ख़ुमुस के फ़र्ज़ होने का बयान

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : ख़ुमुस के फ़र्ज़ होने का बयान

١- بَابُ فَرْضِ الْخُمُسِ

लफ़्ज़ ख़ुमुस उस पाँचवें ह़िस्से पर बोला जाता है, जो अम्वाले ग़नीमत से निकालकर ख़ास़ मस़ारिफ़ में ख़र्च होता है। बाक़ी बचा मुजाहिदीन में तक़्सीम हो जाता है।

3091. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उनसे ज़ुहरी ने

٣٠٩١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ:

बयान किया, उन्हें ज़ैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन ने ख़बर दी और उन्हें हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया, जंगे बद्र के माले ग़नीमत से मेरे हिस़्से मे एक जवान ऊँटनी ख़ुमुस के माल में से दी थी, जब मेरा इरादा हुआ कि फ़ातिमा (रज़ि.) बिन्ते रसूलुल्लाह (ﷺ) से शादी करूं, तो बनी क़ेनक़ाअ (क़बीला यहूद) के एक स़ाहब से जो सुनार थे, मैंने ये तै किया कि वो मेरे साथ चले और हम दोनों इज़्ख़र घास (जंगल से) लाएँ। मेरा इरादा ये था कि मैं वो घास सुनारों को बेच दूँगा और उसकी क़ीमत से अपने निकाह का वलीमा करूँगा। अभी मैं इन दोनों ऊँटनियों का सामान, पालान और थैले और रस्सियाँ वग़ैरह जमा कर रहा था और ये दोनों ऊँटनियाँ एक अंस़ारी स़हाबी के घर के पास बैठी हुई थीं कि जब सारा सामान फ़राहम करके वापस आया तो क्या देखता हूँ कि मेरी दोनों ऊँटनियों के कोहान किसी ने काट दिये हैं। और उनके पेट चीरकर अंदर से उनकी कलेजी निकाल ली गई हैं। जब मैंने ये हाल देखा तो मैं बेइख़्तियार रो दिया। मैंने पूछा कि ये सब कुछ किसने किया है? तो लोगों ने बताया कि हम्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने और वो उसी घर में कुछ अंस़ार के साथ शराब पी रहे हैं। मैं वहाँ से वापस आ गया और सीधा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपकी ख़िदमत में उस वक़्त ज़ैद बिन हारिष़ा (रज़ि.) भी बैठे हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) मुझे देखते ही समझ गये कि मैं किसी बड़े स़दमे में हूँ। इसलिये आप (ﷺ) ने पूछा, अली! क्या हुआ? मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने आज के दिन जैसा स़दमा कभी नहीं देखा। हम्ज़ा (रज़ि.) ने मेरी दोनों ऊँटनियों पर ज़ुल्म कर दिया। दोनों के कोहान काट डाले और उनके पेट चीर डाले। अभी वो उसी घर में कई यारों के साथ शराब की मज्लिस जमाए हुए मौजूद हैं। नबी करीम (ﷺ) ने ये सुनकर अपनी चादर मांगी और उसे ओढ़कर पैदल चलने लगे। मैं और ज़ैद बिन हारिष़ा (रज़ि.) भी आपके पीछे-पीछे हुए। आख़िर जब वो घर आ गया जिसमें

أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيًّا قَالَ: ((كَانَتْ لِي شَارِفٌ مِنْ نَصِيبِي مِنَ الْمَغْنَمِ يَوْمَ بَدْرٍ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَعْطَانِي شَارِفًا مِنَ الْخُمُسِ، فَلَمَّا أَرَدْتُ أَنْ أَبْتَنِيَ بِفَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَاعَدْتُ رَجُلاً صَوَّاغًا مِنْ بَنِي قَيْنُقَاعَ أَنْ يَرْتَحِلَ مَعِيَ فَنَأْتِيَ بِإِذْخِرٍ أَرَدْتُ أَنْ أَبِيعَهُ الصَّوَّاغِينَ وَأَسْتَعِينَ بِهِ فِي وَلِيمَةِ عُرْسِي. فَبَيْنَمَا أَنَا أَجْمَعُ لِشَارِفَيَّ مَتَاعًا مِنَ الأَقْتَابِ وَالْغَرَائِرِ وَالْحِبَالِ، وَشَارِفَايَ مُنَاخَانِ إِلَى جَنْبِ حُجْرَةِ رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ، رَجَعْتُ حِينَ جَمَعْتُ مَا جَمَعْتُ، فَإِذَا شَارِفَايَ قَدْ أُجِبَّتْ أَسْنِمَتُهُمَا، وَبُقِرَتْ خَوَاصِرُهُمَا، وَأُخِذَ مِنْ أَكْبَادِهِمَا، فَلَمْ أَمْلِكْ عَيْنَيَّ حِينَ رَأَيْتُ ذَلِكَ الْمَنْظَرَ مِنْهُمَا، فَقُلْتُ: مَنْ فَعَلَ هَذَا؟ فَقَالُوا: فَعَلَ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، وَهُوَ فِي هَذَا الْبَيْتِ فِي شَرْبٍ مِنَ الأَنْصَارِ، فَانْطَلَقْتُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ -وَعِنْدَهُ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ- فَعَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ فِي وَجْهِي الَّذِي لَقِيتُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((مَا لَكَ؟)) فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ قَطُّ، عَدَا حَمْزَةُ عَلَى نَاقَتَيَّ فَأَجَبَّ أَسْنِمَتَهُمَا، وَبَقَرَ خَوَاصِرَهُمَا وَهَا هُوَ ذَا فِي بَيْتٍ مَعَهُ شَرْبٌ. فَدَعَا النَّبِيُّ ﷺ بِرِدَائِهِ فَارْتَدَى،

हम्ज़ा (रज़ि.) मौजूद थे तो आपने अंदर आने की इजाज़त चाही और अंदर मौजूद लोगों ने आपको इजाज़त दे दी। वो लोग शराब पी रहे थे। हम्ज़ा (रज़ि.) ने जो कुछ किया था। उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें मलामत करना शुरू की। हम्ज़ा (रज़ि.) की आँखें शराब के नशे में मख़्मूर और सुर्ख़ हो रही थीं। उन्होंने नज़र उठाकर आप (ﷺ) को देखा। फिर नज़र ज़रा और ऊपर उठाई, फिर वो आँहज़रत (ﷺ) के घुटनों पर नज़र ले गए उसके बाद निगाह और उठा के आप (ﷺ) की नाफ़ के क़रीब देखने लगे। फिर चेहरे पर जमा दी। फिर कहने लगे कि तुम सब मेरे बाप के गुलाम हो, ये हाल देखकर आँहज़रत (ﷺ) ने जब महसूस किया कि हम्ज़ा (रज़ि.) बिलकुल नशे में हैं, तो आप वहीं से उल्टे पाँव वापस आ गये और हम भी आपके साथ निकल आए। (राजेअ़ : 2089)

ثُمَّ انْطَلَقَ يَمْشِي، وَاتَّبَعْتُهُ أَنَا وَزَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ، حَتَّى جَاءَ الْبَيْتَ الَّذِي فِيهِ حَمْزَةُ فَاسْتَأْذَنَ، فَأَذِنُوا لَهُمْ، فَإِذَا هُمْ شَرْبٌ، فَطَفِقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَلُومُ حَمْزَةَ فِيمَا فَعَلَ، فَإِذَا حَمْزَةُ قَدْ ثَمِلَ مُحْمَرَّةً عَيْنَاهُ، فَنَظَرَ حَمْزَةُ رَسُولَ اللهِ ﷺ، ثُمَّ صَعَّدَ النَّظَرَ، فَنَظَرَ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، ثُمَّ صَعَّدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى سُرَّتِهِ، ثُمَّ صَعَّدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى وَجْهِهِ. ثُمَّ قَالَ حَمْزَةُ: هَلْ أَنْتُمْ إِلاَّ عَبِيدٌ لأَبِي؟ فَعَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنَّهُ قَدْ ثَمِلَ فَنَكَصَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى عَقِبَيْهِ الْقَهْقَرِي، وَخَرَجْنَا مَعَهُ)). [راجع: ٢٠٨٩]

तश्रीह : इस लम्बी हदीष़ को हज़रत इमाम यहाँ इसलिये लाए कि उसमें अम्वाले ग़नीमत के ख़ुमुस में से हज़रत अली (रज़ि.) को एक जवान ऊँटनी मिलने का ज़िक्र है। ये ऊँटनी उस माल में से थी जो अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श (रज़ि.) की मातहत फ़ौज ने हासिल किया था। ये जंगे बद्र से दो महीने पहले का वाक़िया है। उस वक़्त तक ख़ुमुस का हुक्म नहीं उतरा था। लेकिन अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श ने चार हिस्से तो फ़ौज में तक़्सीम कर दिये और पाँचवाँ हिस्सा अपनी राय से आँहज़रत (ﷺ) के लिये रख छोड़ा। फिर क़ुर्आन शरीफ़ में भी ऐसा ही हुक्म नाज़िल हुआ। दूसरी रिवायत में है कि उस वक़्त हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के पास एक गाने वाली भी थी जिसने गाने के दौरान उन जवान ऊँटनियों के कलेजे से कबाब बनाने और खाने की हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को तर्ग़ीब दिलाई और उस पर वो नशे की हालत में खड़े हुए और उन ऊँटनियों को काटकर उनके कलेजे निकाल लिये। हज़रत अली (रज़ि.) का सदमा भी जाइज़ था और अदब का लिहाज़ रखना भी ज़रूरी था, इसलिये वो गुस्सा को पीकर दरबारे रिसालत में हाज़िर हुए। आँहज़रत (ﷺ) मुक़द्दमा के हालात का मुआयना करने के लिये ख़ुद तशरीफ़ ले गये। हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) उस वक़्त नशे में चूर थे। शराब उस वक़्त तक हराम नहीं हुई थी, नशे की हालत में हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के मुँह से बेअदबी के अल्फ़ाज़ निकल गये। इब्ने अबी शैबा की रिवायत में है कि हज़रत हम्ज़ा के होश में आने के बाद रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को उन ऊँटनियों का तावान दिलाया।

3092. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) की साहबज़ादी फ़ातिमा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से मुतालबा किया था कि आँहज़रत (ﷺ) के उस तर्के से उन्हें उनकी मीराष़ का हिस्सा दिलाया जाए जो अल्लाह

٣٠٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ ((أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ ابْنَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ سَأَلَتْ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ بَعْدَ وَفَاةِ

तआला ने आँहज़रत (ﷺ) को फे की सूरत में दिया था। (जैसे फ़दक वग़ैरह)।

(दीगर मक़ाम : 3711, 4035, 4240, 6725)

رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنْ يَقْسِمَ لَهَا مِيرَاثَهَا مِمَّا تَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِمَّا أَفَاءَ اللهُ عَلَيْهِ)) [أطرافه في: ٣٧١١، ٤٠٣٥، ٤٢٤٠، ٦٧٢٥].

3093. अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने (अपनी हयात में) फ़र्माया था कि हमारा (गिरोहे अंबिया अलैहिमुस्सलाम का) वरषा तक़्सीम नहीं होता, हमारा तर्का सदक़ा है। फ़ातिमा (रज़ि.) ये सुनकर गुस्सा हो गईं और हज़रत अबूबक्र (रजि) से मुलाक़ात छोड़ दी और वफ़ात तक उनसे न मिलीं। वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद छः महीने ज़िन्दा रही थीं। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने कहा कि फ़ातिमा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) के ख़ैबर और फ़दक और मदीना के सदक़े की विराषत का मुतालबा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से किया था। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को इससे इंकार था, उन्होंने कहा कि मैं किसी भी ऐसे अमल को नहीं छोड़ सकता जिसे रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी ज़िन्दगी में करते रहे होंगे। (आइशा रज़ि. ने कहा कि) फिर आँहज़रत का मदीना का जो सदक़ा था वो हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत अब्बास (रज़ि.) को (अपने अहदे ख़िलाफ़त में) दे दिया। अल्बत्ता ख़ैबर और फ़दक की जायदाद को उमर (रज़ि.) ने रोक रखा और फ़र्माया कि ये दोनों रसूलुल्लाह (ﷺ) का सदक़ा हैं और उन हुक़ूक़ के लिये जो वक़्ती तौर पर पेश आते या वक़्ती हादषात के लिये रखी थीं। ये जायदाद उस शख़्स के इख़्तियार में रहेंगी जो ख़लीफ़ा -ए-वक़्त हो। ज़ुह्री ने कहा, चुनाँचे उन दोनों जायदादों का इंतिज़ाम आज तक (बज़रिया हुकूमत) इसी तरह होता चला आता है। (दीगर मक़ाम : 3713, 4036, 4241, 6726)

٣٠٩٣- ((فَقَالَ لَهَا أَبُوبَكْرٍ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ، مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)). فَغَضِبَتْ فَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَهَجَرَتْ أَبَا بَكْرٍ، فَلَمْ تَزَلْ مُهَاجِرَتَهُ حَتَّى تُوُفِّيَتْ، وَعَاشَتْ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ سِتَّةَ أَشْهُرٍ. قَالَتْ: وَكَانَتْ فَاطِمَةُ تَسْأَلُ أَبَابَكْرٍ نَصِيبَهَا مِمَّا تَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ خَيْبَرَ وَفَدَكَ، وَصَدَقَتَهُ بِالْمَدِينَةِ، فَأَبَى أَبُوبَكْرٍ عَلَيْهَا ذَلِكَ وَقَالَ: لَسْتُ تَارِكًا شَيْئًا كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَعْمَلُ بِهِ إِلاَّ عَمِلْتُ بِهِ، فَإِنِّي أَخْشَى إِنْ تَرَكْتُ شَيْئًا مِنْ أَمْرِهِ أَنْ أَزِيغَ، فَأَمَّا صَدَقَتُهُ بِالْمَدِينَةِ فَدَفَعَهَا عُمَرُ إِلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ، وَأَمَّا خَيْبَرُ وَفَدَكُ فَأَمْسَكَهَا عُمَرُ وَقَالَ: هُمَا صَدَقَةُ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَانَتَا لِحُقُوقِهِ الَّتِي تَعْرُوهُ وَنَوَائِبِهِ، وَأَمْرُهُمَا إِلَى وَلِيِّ الأَمْرِ، قَالَ فَهُمَا عَلَى ذَلِكَ إِلَى الْيَوْمِ)).[أطرافه في: ٣٧١٣، ٤٠٣٦، ٤٢٤١، ٦٧٢٦].

तश्रीह : इस लम्बी हदीष में बहुत से उमूर के साथ ख़ुमुस का भी ज़िक्र है। इसीलिये हज़रत इमाम उसे यहाँ लाए। आँहज़रत (ﷺ) ने अपने तर्के के बारे में वाज़ेह तौर पर फ़र्मा दिया कि हमारा तर्का तक़्सीम नहीं होता। वो जो भी हो सब सदक़ा है। लेकिन हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) से अपनी विराषत का मुतालबा किया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने हदीषे नबवी **ला नूरिषु मा तरक्नाहु सदक़तन** ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) से सुनी थी। इसलिये उसके ख़िलाफ़ क्यूँकर कर सकते थे। और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की नाराज़गी इस पर मबनी (आधारित) थी कि उनको इस हदीष की ख़बर न थी इसीलिये वो मतरूका जायदादे नबवी में अपने हिस्से की तालिब हुईं।

जायदाद की तफ़्सील ये है कि फ़दक एक मुक़ाम है मदीना से तीन मंज़िल दूरी पर, वहाँ की ज़मीन आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ास अपने लिये रखी थी और ख़ास मदीना में बनू नज़ीर के खजूर के बाग़ात, मुख़ैरीक़ के सात बाग़ात, अंसार की दी हुई अराज़ी, वादी-ए- क़ुरा की तिहाई ज़मीन वग़ैरह अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उन जायदादों की तक़्सीम से इंकार कर दिया। अगर आप हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का हिस्सा अलग कर देते तो फिर आपकी बीवियों का और हज़रत अब्बास (रज़ि.) का हिस्सा भी अलग-अलग करना पड़ता और वो तर्ज़े अमल जो आँहज़रत (ﷺ) का इस जायदाद में था पूरा करना मुम्किन न रहता। लिहाज़ा आपने तक़्सीम से इंकार कर दिया। जिसका मतलब ये था कि सब काम और सब मसारिफ़ (ख़र्चे) उसी तरह जारी रहें जिस तरह आँहज़रत (ﷺ) की हयाते दुनियवी मे किया करते थे, और ये उनका कमाले एहतियात और परहेज़गारी थी। बैहक़ी की रिवायत में है कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की बीमारी में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) उनकी अयादत के लिये गये और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को राज़ी कर लिया और वो राज़ी हो गयी थीं । हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) और हज़रत उमर (रज़ि.) अपनी ख़िलाफ़त में उन जायदादों से आप (ﷺ) की बीवियों के मसारिफ़ और दूसरे ज़रूरी मसारिफ़ अदा करते रहे लेकिन हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में बतौरे मुक़ा'आ के मरवान को फ़दक दे दिया। वो ख़ुद ग़नी थे उनको ये हाजत न थी कि फ़दक से अपने मसारिफ़ चलाते। (ख़ुलासा वहीदी)

व क़द जाअ फी किताबिल्मग़ाज़ी अन्न फातिमत जाअत तस्अलु नसीबहा मिम्मा तरक रसूलुल्लाहि (ﷺ) मिम्मा अफाअल्लाहु अलैहि वफ़्दक वमा बक़िय मिन ख़ुमुसि ख़ैबर व इला हाज़ा अशारल्बुख़ारी

3094. हमसे इस्हाक़ बिन मुहम्मद फ़रवी ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन अनस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे मालिक बिन औस बिन हदषान ने (ज़ुह्री ने बयान किया कि) मुहम्मद बिन जुबैर ने मुझसे (इसी आने वाली) हदीष का ज़िक्र किया था। इसलिये मैं ने मालिक बिन औस की ख़िदमत में ख़ुद हाज़िर होकर उनसे इस हदीष के बारे में (बतौरे तस्दीक़) पूछा उन्होंने कहा कि दिन चढ़ आया था और मैं अपने घरवालों के साथ बैठा था, इतने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का एक बुलाने वाला मेरे पास आया और कहा कि अमीरुल मोमिनीन आपको बुला रहे हैं। मैं उस क़ासिद के साथ ही चला गया और हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप एक तख़्त पर बोरिया बिछाए, बोरे पर कोई बिछौना न था, सिर्फ़ एक चमड़े के तकिये पर टेक दिये हुए बैठे थे। मैं सलाम करके बैठ गया। फिर उन्होंने फ़र्माया, मालिक! तुम्हारी क़ौम के कुछ लोग मेरे पास आए थे, मैंने उनके लिये कुछ हक़ीर सी इमदाद का फ़ैसला कर लिया है। तुम उसे अपनी निगरानी मे उनमे तक़्सीम करा दो, मैंने अर्ज़ किया, या अमीरल मोमिनीन! या अमीरल मोमिनीन अगर आप इस काम पर किसी और को मुक़र्रर कर देते तो बेहतर होता। लेकिन उमर (रज़ि.) ने यही इसरार किया कि नहीं, अपनी ही तहवील में बांट दो। अभी

٣٠٩٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْفَرْوِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسِ بْنِ الْحَدَثَانِ - وَكَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرٍ ذَكَرَ لِي ذِكْرًا مِنْ حَدِيثِهِ ذَلِكَ، فَانْطَلَقْتُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى مَالِكِ بْنِ أَوْسٍ فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ الْحَدِيثِ فَقَالَ مَالِكٌ- : بَيْنَمَا أَنَا جَالِسٌ فِي أَهْلِي حِينَ مَتَعَ النَّهَارُ، إِذَا رَسُولُ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ يَأْتِينِي فَقَالَ: أَجِبْ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى عُمَرَ، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ عَلَى رِمَالِ سَرِيرٍ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ فِرَاشٌ، مُتَّكِئٌ عَلَى وِسَادَةٍ مِنْ أَدَمٍ. فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ ثُمَّ جَلَسْتُ، فَقَالَ: يَا مَالِكُ إِنَّهُ قَدِمَ عَلَيْنَا مِنْ قَوْمِكَ أَهْلُ أَبْيَاتٍ، وَقَدْ أَمَرْتُ فِيهِمْ بِرَضْخٍ، فَاقْبِضْهُ، فَاقْسِمْهُ بَيْنَهُمْ، فَقُلْتُ:

में वहीं हाज़िर था कि अमीरुल मोमिनीन के दरबान यरफ़ा आए और कहा कि उष्मान बिन अफ़्फ़ान, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, ज़ुबैर बिन अवाम और सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) अंदर आने की इजाज़त चाहते हैं ? हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हाँ, उन्हें अंदर बुला लो। आपकी इजाज़त पर ये हज़रात दाख़िल हुए और सलाम करके बैठ गये। यरफ़ा भी थोड़ी देर बैठे रहे और फिर अंदर आकर अर्ज़ किया अली और अब्बास (रज़ि.) को भी अंदर आने की इजाज़त है? आपने फ़र्माया कि हाँ, उन्हें अंदर बुला लो। आपकी इजाज़त पर ये हज़रात भी अंदर तशरीफ़ ले आए और सलाम करके बैठ गये। अब्बास (रज़ि.) ने कहा, या अमीरल मोमिनीन! मेरा और इनका फ़ैसला कर दीजिए। उन हज़रात का झगड़ा उस जायदाद को लेकर था जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को बनी नज़ीर के अम्वाल में से (ख़ुमुस के तौर पर) इनायत फ़र्माई थी। इस पर हज़रत उष्मान और उनके साथ जो दीगर सहाबा थे कहने लगे, हाँ, अमीरुल मोमिनीन! उन हज़रात में फ़ैसला कर दीजिए और हर एक को दूसरे की तरफ़ से बेफ़िक्र कर दीजिए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, अच्छा, तो फिर ज़रा ठहरिये और दम ले लीजिए मैं आप लोगों से उस अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ जिसके हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं । क्या आप लोगों को मा'लूम है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि, हम पैग़म्बरों का कोई वारिष नहीं होता, जो कुछ हम (अंबिया) छोड़कर जाते हैं वो सदक़ा होता है, जिससे आँहज़रत (ﷺ) की मुराद ख़ुद अपनी ज़ाते गिरामी भी थी। उन हज़रात ने तस्दीक़ की, कि जी हाँ, बेशक आँहज़रत (ﷺ) ने ये फ़र्माया था। अब हज़रत उमर (रज़ि.) अली और अब्बास (रज़ि.) की तरफ़ मुख़ातिब हुए, उनसे पूछा। मैं आप हज़रात को अल्लाह की क़सम देता हूँ, क्या आप हज़रात को भी मा'लूम है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ऐसा फ़र्माया है या नहीं? उन्होंने भी उसकी तस्दीक़ की कि आँहज़रत (ﷺ) ने बेशक ऐसा फ़र्माया है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि अब मैं आप लोगों से इस मामले की शरह बयान करता हूँ। बात ये है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूले करीम (ﷺ) के लिये इस ग़नीमत का एक मख़्सूस हिस्सा मुक़र्रर कर दिया था। जिसे आँहज़रत (ﷺ)

يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، لَوْ أَمَرْتَ لَهُ غَيْرِي. قَالَ: فَاقْبِضْهُ أَيُّهَا الْمَرْءُ. فَبَيْنَمَا أَنَا جَالِسٌ عِنْدَهُ أَتَاهُ حَاجِبُهُ يَرْفَا فَقَالَ: هَلْ لَكَ فِي عُثْمَانَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَالزُّبَيْرِ وَسَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ يَسْتَأْذِنُونَ. قَالَ: نَعَمْ، فَأَذِنَ لَهُمْ، فَدَخَلُوا، فَسَلَّمُوا وَجَلَسُوا. ثُمَّ جَلَسَ يَرْفَا يَسِيرًا، ثُمَّ قَالَ: هَلْ لَكَ فِي عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَأَذِنَ لَهُمَا، فَدَخَلاَ، فَسَلَّمَا فَجَلَسَا فَقَالَ عَبَّاسٌ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، اقْضِ بَيْنِي وَبَيْنَ هَذَا - وَهُمَا يَخْتَصِمَانِ فِيمَا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ مِنْ بَنِي النَّضِيرِ - فَقَالَ الرَّهْطُ - عُثْمَانُ وَأَصْحَابُهُ - يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ اقْضِ بَيْنَهُمَا وَأَرِحْ أَحَدَهُمَا مِنَ الآخَرِ. فَقَالَ عُمَرُ: تَيْدَكُمْ، أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ الَّذِي بِإِذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ، هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ، مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ؟)) يُرِيدُ رَسُولُ اللهِ ﷺ نَفْسَهُ. قَالَ الرَّهْطُ: قَدْ قَالَ ذَلِكَ. فَأَقْبَلَ عُمَرُ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَقَالَ: أَنْشُدُكُمَا اللهَ أَتَعْلَمَانِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ قَالَ ذَلِكَ؟ قَالاَ: قَدْ قَالَ ذَلِكَ. قَالَ عُمَرُ: فَإِنِّي أُحَدِّثُكُمْ عَنْ هَذَا الأَمْرِ: إِنَّ اللهَ قَدْ خَصَّ رَسُولَهُ ﷺ فِي هَذَا الْفَيْءِ بِشَيْءٍ لَمْ يُعْطِهِ أَحَدًا غَيْرَهُ. ثُمَّ قَرَأَ: ﴿وَمَا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ - إِلَى قَوْلِهِ - قَدِيرٌ﴾ فَكَانَتْ هَذِهِ خَالِصَةً لِرَسُولِ اللهِ ﷺ، وَاللهِ مَا احْتَازَهَا دُونَكُمْ، وَلاَ

اسْتَأْثَرَ بِهَا عَلَيْكُمْ، قَدْ أَعْطَاكُمُوهُ وَبَثَّهَا فِيكُمْ حَتَّى بَقِيَ مِنْهَا هَذَا الْمَالُ، فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِمْ مِن هَذَا الْمَالِ، ثُمَّ يَأْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ مَجْعَلَ مَالِ اللَّهِ. فَعَمِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِذَلِكَ حَيَاتَهُ. أَنْشُدُكُمْ بِاللَّهِ، هَلْ تَعْلَمُونَ بِذَلِكَ؟ قَالُوا: نَعَمْ. ثُمَّ قَالَ لِعَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ: أَنْشُدُكُمَا اللَّهَ هَلْ تَعْلَمَانِ ذَلِكَ؟ قَالَ عُمَرُ: ثُمَّ تَوَفَّى اللَّهُ نَبِيَّهُ ﷺ فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ: أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَبَضَهَا أَبُوبَكْرٍ فَعَمِلَ فِيهَا بِمَا عَمِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُ فِيهَا لَصَادِقٌ بَارٌّ رَاشِدٌ تَابِعٌ لِلْحَقِّ. ثُمَّ تَوَفَّى اللَّهُ أَبَابَكْرٍ، فَكُنْتُ أَنَا وَلِيَّ أَبِي بَكْرٍ، فَقَبَضْتُهَا سَنَتَيْنِ مِنْ إِمَارَتِي أَعْمَلُ فِيهَا بِمَا عَمِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَمَا عَمِلَ فِيهَا أَبُوبَكْرٍ، وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنِّي فِيهَا لَصَادِقٌ بَارٌّ رَاشِدٌ تَابِعٌ لِلْحَقِّ. ثُمَّ جِئْتُمَانِي تُكَلِّمَانِي وَكَلِمَتُكُمَا وَاحِدَةٌ وَأَمْرُكُمَا وَاحِدٌ، جِئْتَنِي يَا عَبَّاسُ تَسْأَلُنِي نَصِيبَكَ مِنِ ابْنِ أَخِيكَ، وَجَاءَنِي هَذَا - يُرِيدُ عَلِيًّا - يُرِيدُ نَصِيبَ امْرَأَتِهِ مِنْ أَبِيهَا. فَقُلْتُ لَكُمَا: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ، مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)). فَلَمَّا بَدَا لِي أَنْ أَدْفَعَهُ إِلَيْكُمَا قُلْتُ: إِنْ شِئْتُمَا دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا عَلَى أَنَّ عَلَيْكُمَا عَهْدَ اللَّهِ وَمِيثَاقَهُ لَتَعْمَلاَنِ فِيهَا بِمَا عَمِلَ فِيهَا رَسُولُ اللَّهِ وَبِمَا عَمِلَ فِيهَا أَبُوبَكْرٍ وَبِمَا عَمِلْتُ فِيهَا مُنْذُ وَلِيتُهَا.

ने भी किसी दूसरे को नहीं दिया था। फिर आपने इस आयत की तिलावत की मा अफ़ाअल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन्हुम से अल्लाह तआ़ला के इर्शाद क़दीर तक और वो हिस्सा आँहज़रत (ﷺ) ने तुमको छोड़कर अपने लिये जोड़ न रखी, न ख़ास अपने खर्च में लाए बल्कि तुम ही लोगो को दीं और तुम्हारे ही कामों मे ख़र्च कीं। ये जो जायदाद बच रही है उसमें से आप अपनी बीवियों का साल भर का खर्चा लिया करते थे। उसके बाद जो बाक़ी बच जाता वो अल्लाह के माल में शरीक कर देते (जिहाद के सामान फ़राहम करने में) ख़ैर आँहज़रत (ﷺ) तो अपनी ज़िन्दगी में ऐसा ही करते रहे। हाज़िरीन तुमको अल्लाह की क़सम! क्या तुम ये नहीं जानते? उन्होंने कहा बेशक जानते हैं। फिर हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) से कहा मैं आप हजरात से भी अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ, क्या आप लोग ये नहीं जानते हैं? (दोनों हज़रात ने जवाब दिया कि हाँ!) फिर हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने यूँ फ़र्माया कि फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी करीम (ﷺ) को दुनिया से उठा लिया तो अबूबक्र (रज़ि.) कहने लगे कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का ख़लीफ़ा हूँ, और इसलिये उन्होंने (आँहज़रत ﷺ की इस मुख़्लिस़) जायदाद पर क़ब्ज़ा किया और जिस तरह आँहज़रत (ﷺ) उसमें से मसारिफ़ किया करते थे, वो करते रहे। अल्लाह ख़ूब जानता है कि अबूबक्र (रज़ि.) अपने इस तर्ज़े अ़मल में सच्चे मुख़्लिस़, नेकोकार और ह़क़ की पैरवी करने वाले थे। फिर अल्लाह तआ़ला ने अबूबक्र (रज़ि.) को भी अपने पास बुला लिया और अब मैं अबूबक्र (रज़ि.) का नाइब मुक़र्रर हुआ। मेरी ख़िलाफ़त को दो साल हो गये हैं और मैंने भी इस जायदाद को अपनी तहवील में रखा है। जो मसारिफ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) उसमें किया करते थे वैसा ही में भी करता रहा और अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं अपनी इस तर्ज़े अ़मल में सच्चा, मुख़्लिस़ और ह़क़ की पैरवी करने वाला हूँ। फिर आप दोनों मेरे पास मुझसे बातचीत करने आए और बिल इत्तिफ़ाक़ बातचीत करने लगे कि दोनों का मक़्सद एक था। अ़ब्बास! आप तो इसलिये तशरीफ़ लाए कि आपको अपने भतीजे (रसूलुल्लाह ﷺ) की मीरास़ का दा'वा मेरे सामने पेश करना था। फिर अ़ली

فَقُلْتُمَا: ادْفَعْهَا إِلَيْنَا، فَبِذَلِكَ دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا. فَأَنْشُدُكُمْ بِاللهِ، هَلْ دَفَعْتُهَا إِلَيْهِمَا بِذَلِكَ؟ قَالَ الرَّهْطُ: نَعَم. ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَقَالَ: أَنْشُدُكُمَا بِاللهِ هَلْ دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا بِذَلِكَ؟ قَالاَ: نَعَمْ، قَالَ: فَتَلْتَمِسَانِ مِنِّي قَضَاءً غَيْرَ ذَلِكَ؟ فَوَاللهِ الَّذِي بِإِذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ، لاَ أَقْضِي فِيْهَا قَضَاءً غَيْرَ ذَلِكَ، فَإِنْ عَجَزْتُمَا عَنْهَا فَادْفَعَاهَا إِلَيَّ، فَإِنِّي أَكْفِيْكُمَاهَا)).

[راجع: ٢٩٠٤]

(रज़ि.) से फ़र्माया कि आप इसलिये तशरीफ़ लाए कि आपको अपनी बीवी (ह़ज़रत फ़ातिमा रजि) का दा'वा पेश करना था कि उनके वालिद (रसूलुल्लाह ﷺ) की मीराष़ उन्हें मिलनी चाहिये, मैंने आप दोनों ह़ज़रात से अ़र्ज़ कर दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुद फ़र्मा गये कि हम पैग़म्बरों का कोई मीराष़ तक़्सीम नहीं होता, हम जो कुछ छोड़ जाते हैं वो स़दक़ा होता है। फिर मुझको ये मुनासिब मा'लूम हुआ कि मैं उन जायदादों को तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दूँ, तो मैंने तुमसे कहा, देखो अगर तुम चाहो तो मैं ये जायदादें तुम्हारे सुपुर्द कर देता हूँ, लेकिन इस अ़हद और इस इक़रार पर कि तुम उसकी आमदनी से वो सब काम करते रहोगे जो आँह़ज़रत (ﷺ) और अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) अपनी ख़िलाफ़त में करते रहे और जो काम मैं अपनी हुकूमत के शुरू से करता रहा। तुमने इस शर्त़ को क़ुबूल करके दरख़्वास्त की कि जायदादें हमको दे दो। मैंने उसी शर्त़ पर दे दी, ह़ाज़िरीन कहो मैंने ये जायदादें उसी शर्त़ पर उनके ह़वाले की हैं या नहीं? उन्होंने कहा, बेशक उसी शर्त़ पर आपने दी हैं। फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अ़ली (रज़ि.) और अ़ब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया, मैं तुमको अल्लाह की क़सम देता हूँ, मैंने उसी शर्त़ पर ये जायदादें आप ह़ज़रात के ह़वाले की हैं या नहीं? उन्होंने कहा बेशक। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा, फिर मुझसे किस बात का फ़ैस़ला चाहते हो? (क्या जायदाद को तक़्सीम कराना चाहते हो) क़सम अल्लाह की! जिसके हुक्म से ज़मीन और आसमान क़ायम हैं मैं तो उसके सिवा और कोई फ़ैस़ला करने वाला नहीं। हाँ! ये और बात है कि अगर तुमसे उसका इंतिज़ाम नहीं हो सकता तो फिर जायदाद मेरे सुपुर्द कर दो। मैं उसका भी काम देख लूँगा। (राजेअ़ : 2904)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उस जायदाद का इंतिज़ाम ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) और ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) के हाथों में दे दिया था। फिर भी ये ह़ज़रात ये मुक़द्दमा अ़दालते फ़ारूक़ी में लाए तो आपने ये तोज़ीही बयान दिया। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन।

इस लम्बी रिवायत में ये मल्ह़ूज़ रहे कि ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की नाराज़गी अबूबक्र (रज़ि.) से विराष़त के मसले में नहीं थी क्योंकि ये सबको मा'लूम हो गया था कि आँह़ुज़ूर (ﷺ) ने उसकी नफ़ी पहले ही कर दी थी कि अंबिया की विराष़त तक़्सीम नहीं होती और तमाम स़ह़ाबा ने इसे मान लिया था। ख़ुद ह़ज़रत फ़ातिमा, ह़ज़रत अ़ली, या ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.)

से भी किसी मौक़े पर उसकी नफ़ी मन्क़ूल नहीं बल्कि नज़ाअ सिर्फ़ उस माल के इंतिज़ाम व इंसिराम के मामले पर हुआ था। यही वजह थी कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसका इंतिज़ाम अहले बैत रिज़्वानुल्लाह अलैहिम के हाथ में दे भी दिया था। इस हदीष में ये भी है कि हुज़ूर अकरम (ﷺ) की वफ़ात के बाद सय्यिदा फ़ातिमा (रज़ि.) ने अबूबक्र (रज़ि.) से क़तअ ता'ल्लुक़ कर लिया था और अपनी वफ़ात तक नाराज़ रही थीं। मशहूर रिवायात में इसी तरह है लेकिन कुछ रिवायात से ये षाबित होता है कि जब फ़ातिमा (रज़ि.) नाराज़ हुईं तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उनकी ख़िदमत में पहुँचे और उस वक़्त तक नहीं उठे जब तक वो राज़ी नहीं हो गईं। मुअतबर मुसन्निफ़ीन ने उसकी तौषीक़ भी की है और वाक़िया ये है कि सहाबा की ज़िन्दगी ख़ुसूसन हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की सीरत से यही तर्ज़े अमल ज़्यादा जोड़ भी खाता है। (तफ़्हीमुल बुख़ारी)

यहाँ कोई ये ए'तिराज़ न करे कि जब आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि हम पैग़म्बरों का कोई वारिष नहीं होता और अबूबक्र (रज़ि.) ने भी इसी हदीष की बिना पर ये जायदाद हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के हवाले नहीं की, हालाँकि वो नाराज़ भी हुईं तो फिर उमर (रज़ि.) ने हदीष के ख़िलाफ़ क्यूँ किया और हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) के तरीक़ को क्यूँ मौक़ूफ़ किया? इसका जवाब ये है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस जायदाद को तक़्सीम नहीं किया, बल्कि उसका इंतिज़ाम करने वाला हज़रत अली और हजरत अब्बास (रज़ि.) को बना दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) के लिये ख़िलाफ़त के काम बहुत हो गये थे, उन जायदादों की निगरानी की फ़ुर्सत भी न थी। दूसरे हज़रत अली (रज़ि.) को ख़ुश कर देना भी मंज़ूर था और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से तक़्सीम की दरख़्वास्त की थी जो हदीष के ख़िलाफ़ होने की वजह से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने मंज़ूर न की।

बाब 2 : माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा अदा करना दीन ईमान में दाख़िल है

٢- بَابُ أَدَاءُ الْخُمُسِ مِنَ الدِّينِ

3095. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ज़ब्ई ने बयान किया, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि क़बीला अब्दुल क़ैस का वफ़्द (दरबारे रिसालत में) हाज़िर हुआ और अर्ज़ की या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारा ता'ल्लुक़ क़बीला रबीआ से है और क़बीला मुज़र के कुफ़्फ़ार हमारे और आपके बीच में बसते हैं। (इसलिये उनके ख़तरे की वजह से हम लोग) आपकी ख़िदमत में सिर्फ़ अदब वाले महीनों में हाज़िर हो सकते हैं। आप हमें कोई ऐसा वाज़ेह हुक्म फ़र्मा दीजिए जिस पर हम ख़ुद भी मज़बूती से क़ायम रहें और जो लोग हमारे साथ नहीं आ सके हैं उन्हें भी बता दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं तुम्हें चार चीज़ों का हुक्म देता हूँ और चार चीज़ों से रोकता हूँ (मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ) अल्लाह पर ईमान लाने का कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, नमाज़ क़ायम करने का, ज़कात देने का, रमज़ान के रोज़े रखने का, और इस बात का कि जो कुछ भी तुम्हें ग़नीमत का माल मिले। उसमें पाँचवाँ हिस्सा (ख़ुमुस) अल्लाह के लिय

٣٠٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ الضُّبَعِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَدِمَ وَفْدُ عَبْدِ الْقَيْسِ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا هَذَا الْحَيَّ مِنْ رَبِيْعَةَ، بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ كُفَّارُ مُضَرَ، فَلَسْنَا نَصِلُ إِلَيْكَ فِي الشَّهْرِ الْحَرَامِ، فَمُرْنَا بِأَمْرٍ نَأْخُذُ مِنْهُ وَنَدْعُو إِلَيْهِ مَنْ وَرَاءَنَا. قَالَ: ((آمُرُكُمْ بِأَرْبَعٍ، وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: الإِيْمَانِ بِاللهِ شَهَادَةِ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ - وَعَقَدَ بِيَدِهِ - وَإِقَامِ الصَّلاَةِ، وَإِيْتَاءِ الزَّكَاةِ، وَصِيَامِ رَمَضَانَ، وَأَنْ تُؤَدُّوا للهِ خُمُسَ مَا غَنِمْتُمْ. وَأَنْهَاكُمْ عَنِ الدُّبَّاءِ، وَالنَّقِيْرِ وَالْحَنْتَمِ،

निकाल दो और तुम्हें में दुब्बा, नक़ीर, हन्तुम और मुज़फ़्फ़त के इस्ते'माल से रोकता हूँ। (राजेअ : 53)

والمزفت)).[راجع: ٥٣]

दुब्बा कद्दू की तूम्बी और नक़ीर कुरैदी हुई लकड़ी के बर्तन, हन्तुम सब्ज़ लाखी बर्तन, और मुज़फ़्फ़त रोग़नी बर्तन, ये सब शराब रखने के लिये इस्ते'माल किये जाते थे। इसलिये उन सबको दूर फेंक देने का आप (ﷺ) ने हुक्म फ़र्माया, ख़ुमुस की अदायगी का ख़ास हुक्म दिया। यही बाब से वजहे मुनासबत है।

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद आपकी अज़्वाजे मुत्तहहरात के नफ़्क़ा का बयान

٣- باب نفقة نساء النبي ﷺ بعد وفاته

3096. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक बिन अनस (रज़ि.) ने बयान किया, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उन्हें अअरज ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे वारिष़ मेरे बाद एक दीनार भी न बांटे (मेरा तर्का तक़्सीम न करें) मैं जो छोड़ जाऊँ उसमें से मेरे आमिलों की तनख़्वाह और मेरी बीवियों का ख़र्च निकालकर बाक़ी सब सदक़ा है। (राजेअ : 2776)

٣٠٩٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَقْتَسِمُ وَرَثَتِي دِينَارًا، مَا تَرَكْتُ بَعْدَ نَفَقَةِ نِسَائِي، وَمَؤُونَةِ عَامِلِي، فَهُوَ صَدَقَةٌ)).[راجع: ٢٧٧٦]

या'नी जिस तरह इस्लामी हुकूमत के कारिन्दों की तनख़्वाह दी जाएँगी। अज़्वाजे मुत्तहहरात का नफ़्क़ा भी इसी तरह बैतुलमाल से अदा किया जाएगा।

3097. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूले करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो मेरे घर में आधे वस्क़ जौ के सिवा जो एक ताक़ में रखे हुए थे और कोई चीज़ ऐसी नहीं थी जो किसी जिगर वाले (जानदार) की ख़ूराक बन सकती। मैं उसी में से खाती रही और बहुत दिन गुज़र गये। फिर मैंने उसमें से नापकर निकालना शुरू किया तो वो जल्दी ख़त्म हो गये। (दीगर मक़ाम : 6451)

٣٠٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : ((تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَا فِي بَيْتِي مِنْ شَيْءٍ يَأْكُلُهُ ذُو كَبِدٍ، إِلاَّ شَطْرَ شَعِيرٍ فِي رَفٍّ لِي، فَأَكَلْتُ مِنْهُ حَتَّى طَالَ عَلَيَّ، فَكِلْتُهُ، فَفَنِيَ)).[طرفه في : ٦٤٥١].

तश्रीह : अल्लाह ने उस जौ में बरकत दी थी। जब हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उसको मापा, तो गोया तवक्कल में फ़र्क़ आ गया, बरकत जाती रही। ये जो दूसरी हदीष़ में है कि अनाज मापो उसमें तुम्हारे लिये बरकत होगी। उससे मुराद ये है कि खरीदते वक़्त या लेते वक़्त या जितना उसमें से निकालो वो माप लो, सबको मत मापो, अल्लाह पर भरोसा रखो। इस हदीष़ की मुनासबत बाब का तर्जुमा से ये है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) को ये जौ तर्का में नहीं मिले थे, बल्कि उनका ख़र्चा बैतुलमाल पर था। अगर ये खर्चा बैतुलमाल के ज़िम्मे न होता तो आप (ﷺ) की वफ़ात के बाद वो जौ उनसे ले लिये जाते।

3098. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने

٣٠٩٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, कहा कि मुझसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने अम्र बिन ह़ारिष़ से सुना, वो कहते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने (अपनी वफ़ात के बाद) अपने हथियार, एक सफ़ेद खच्चर, और एक ज़मीन जिसे आप ख़ुद स़दक़ा कर गये थे, के सिवा और कोई तर्का नहीं छोड़ा था। (2739)

عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ الْحَارِثِ قَالَ ((مَا تَرَكَ النَّبِيُّ ﷺ إِلاَّ سِلاَحَهُ وَبَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ، وَأَرْضًا تَرَكَهَا صَدَقَةً)). [۲۷۳۹]

बाब का तर्जुमा ह़दीष़ के अल्फ़ाज़ **व अरज़न तरकहा सदक़तन** से निकला क्योंकि अज़्वाजे मुत़ह्हरात का खर्चा उसी ज़मीन से दिया जाता था। जिसको आप (ﷺ) स़दक़ा कर गये थे। मज़ीद तफ़्सील पीछे गुज़र चुकी है।

बाब 4 : रसूले करीम (ﷺ) की बीवियों के घरों का उनकी त़रफ़ मन्सूब करना

٤- بَابُ مَا جَاءَ فِي بُيُوتِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ،

और अल्लाह पाक ने सूरह अह़ज़ाब में फ़र्माया कि, तुम लोग (अज़्वाजे मुत़ह्हरात) अपने घरों ही में इ़ज़्ज़त से रहा करो। और (उसी सूरह में फ़र्माया कि) नबी के घर में उस वक़्त तक न दाख़िल हो, जब तक तुम्हें इजाज़त न मिल जाए। (अल अह़ज़ाब : 53)

وَمَا نُسِبَ مِنَ الْبُيُوتِ إِلَيْهِنَّ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ﴾ [الأحزاب: ٣٣]، و﴿لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلاَّ أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ﴾ [الأحزاب: ٥٣].

तशरीह : मुज्तहिदे मुत़्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ये बाब मुनअ़क़िद करके बतलाना चाहते हैं कि अब्यात व हुज्राते नबवी आपकी ह़याते त़य्यिबा में जिस जिस त़ौर पर जिन जिन बीवियों को तक़्सीम थे। आपकी वफ़ात के बाद वो उसी त़रह रहे। उनमे कोई वरष़ा नहीं तक़्सीम किया गया और ये इसलिये कि आँह़ज़रत (ﷺ) ख़ुद फ़र्मा गये थे कि हमारा कोई तर्का तक़्सीम नहीं होता। गिरोहे अंबिया में अल्लाह का यही क़ानून रहा है, वो सिर्फ़ इ़ल्मे दीन की दौलत छोड़कर जाते हैं। ब सिलसिला तज़्किर-ए-ख़ुमुस इस मसले को भी बयान कर दिया गया और ख़ुमुस का ता'ल्लुक़ जिहाद से है। इसलिये ज़ैली त़ौर पर ये मसाइल किताबुल जिहाद में मज़्कूर है।

पहली आयत में घरों की निस्बत बीवियों की त़रफ़ फ़र्माई, दूसरी आयत में उन ही घरों को पैग़म्बर (ﷺ) के घर फ़र्माया। इससे ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मत़लब ष़ाबित किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) की बीवियों को जैसे आपकी वफ़ात के बाद अपने खर्चे का ह़क़ था। वैसे ही अपने अपने हुज्रों पर भी उनका ह़क़ था और उसकी वजह ये हुई कि अल्लाह तआ़ला ने उनको मुसलमानों की माँएं क़रार दिया और किसी और से उन पर निकाह़ ह़राम कर दिया। (वह़ीदी)

3099. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा और मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर और यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम(ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (मर्ज़ुल वफ़ात में) जब नबी करीम (ﷺ) का मर्ज़ बहुत बढ़ गया तो आपने सब बीवियों से इसकी इजाज़त चाही कि मर्ज़ के दिन आप मेरे घर में गुज़ारें। इसकी इजाज़त आप (ﷺ) को मिल गई थी।

٣٠٩٩- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى وَمُحَمَّدٌ قَالاَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ وَيُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: ((لَمَّا ثَقُلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ اسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي، فَأَذِنَّ لَهُ)).

(राजेअ : 198)

[راجع: ١٩٨]

3100. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अबी मुलैका से सुना। उन्होंने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे घर, मेरी बारी के दिन, मेरे हलक़ और सीने के दरम्यान टेक लगाए हुए वफ़ात पाई, अल्लाह तआला ने (वफ़ात के वक़्त) मेरे थूक और आँहज़रत (ﷺ) के थूक को एक साथ जमा कर दिया था, बयान किया (वो इस तरह कि) अब्दुर्रहमान (रज़ि.) (हज़रत आइशा रज़ि. के भाई) मिस्वाक लिये हुए अंदर आए। आप (ﷺ) उसे चबा न सके। इसलिये मैंने उसे अपने हाथ में ले लिया और मैंने उसे चबाने के बाद वो मिस्वाक आपके दांतों पर मली। (राजेअ : 890)

٣١٠٠- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا نَافِعٌ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْتِي، وَفِي نَوْبَتِي، وَبَيْنَ سَحْرِي وَنَحْرِي، وَجَمَعَ اللهُ بَيْنَ رِيْقِي وَرِيْقِهِ. قَالَتْ: دَخَلَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بِسِوَاكٍ فَضَعُفَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْهُ فَأَخَذْتُهُ فَمَضَغْتُهُ ثُمَّ سَنَنْتُهُ بِهِ)).

[راجع: ٨٩٠]

तश्रीह : वफ़ाते नबवी के बाद कुछ लोगों ने ये वहम फैलाना चाहा कि रसूले करीम (ﷺ) अपनी वफ़ात के वक़्त हज़रत अली (रज़ि.) को अपना वसी क़रार देकर गये हैं। ये बात हज़रत आइशा (रज़ि.) ने भी सुनी, इस पर आपने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के आख़िरी दिन पूरे तौर पर मेरे हुजरे में गुज़रे। उन दिनों में एक लम्हा भी मैंने आपको तन्हा नहीं छोड़ा। वफ़ात के वक्त हुज़ूर (ﷺ) अपना सरे मुबारक मेरी छाती पर रखे हुए थे। उन हालात में मैं नहीं समझ सकती कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को कब वसी क़रार दे दिया?

3101. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हज़रत अली बिन हुसैन ज़ैनुल आबेदीन ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत स़फ़िया (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मिलने के लिये हाज़िर हुईं। आँहज़रत (ﷺ) रमज़ान के आख़िरी अशरे का मस्जिद में ए'तिकाफ़ किये हुए थे। फिर वो वापस होने के लिये उठीं तो आँहज़रत (ﷺ) भी उनके साथ उठे। जब आँहज़रत (ﷺ) अपनी ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के दरवाज़े के क़रीब पहुँचे जो मस्जिदे नबवी के दरवाज़े से मिला हुआ था तो दो अंस़ारी स़हाबी (उसैद बिन हुज़ैर और अब्बाद बिन बिश्र रज़ि.) वहाँ से गुज़रे। और आँहज़रत (ﷺ) को उन्होंने सलाम किया और आगे बढ़ने लगे। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, ज़रा ठहर जाओ (मेरे साथ मेरी बीवी स़फ़िया रज़ि. हैं या'नी कोई दूसरा नहीं) उन दोनों ने अ़र्ज़ किया। सुब्हानल्लाह! या रसूलल्लाह (ﷺ)! उन हज़रात पर

٣١٠١- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ أَنَّ صَفِيَّةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا جَاءَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ تَزُورُهُ وَهُوَ مُعْتَكِفٌ فِي الْمَسْجِدِ - فِي الْعَشْرِ الأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ - ثُمَّ قَامَتْ تَنْقَلِبُ فَقَامَ مَعَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، حَتَّى إِذَا بَلَغَ قَرِيبًا مِنْ بَابِ الْمَسْجِدِ عِنْدَ بَابِ أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ مَرَّ بِهِمَا رَجُلاَنِ مِنَ الأَنْصَارِ فَسَلَّمَا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ ثُمَّ نَفَذَا، فَقَالَ لَهُمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((عَلَى رِسْلِكُمَا)). قَالاَ: سُبْحَانَ اللهِ يَا رَسُولَ

आपका ये फ़र्माना बड़ा शाक़ गुज़रा कि हज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि शैतान इंसान के अंदर इस तरह दौड़ता रहता है जैसे जिस्म में ख़ून दौड़ता है। मुझे यही ख़तरा हुआ कि कहीं तुम्हारे दिलों में भी कोई वस्वसा पैदा न हो जाए। (राजेअ : 2035)

اللهِ، وَكَبُرَ عَلَيْهِمَا ذَلِكَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ يَبْلُغُ مِنَ الإِنْسَانِ مَبْلَغَ الدَّمِ، وإِنِّي خَشِيْتُ أَنْ يَقْذِفَ فِي قُلُوبِكُمَا شَيْئًا)). [راجع: ٢٠٣٥]

तश्रीह : उन अस्हाबे किराम पर शाक़ इसलिये गुज़रा क्योंकि वो दोनों सच्चे मोमिन थे, उनको ये रंज हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने हमारी निस्बत ये ख़्याल फ़र्माया कि हम आप पर बदगुमानी करेंगे। दरहक़ीक़त आप (ﷺ) ने उनका ईमान बचा लिया, पैग़म्बरों की निस्बत एक ज़रा सी बदगुमानी करना भी कुफ़्र और बाइ़षे ज़वाले ईमान है, इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मत़लब यूँ निकाला कि दरवाज़े को उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) का दरवाज़ा कहा।

3102. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन अ़याज़ ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने, उनसे मुहम्मद बिन यह्या बिन ह़िब्बान ने, उनसे वासेअ़ बिन ह़िब्बान ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं (उम्मुल मोमिनीन) ह़फ़्सा (रज़ि.) के घर के ऊपर चढ़ा, तो देखा कि नबी करीम (ﷺ) क़ज़ा-ए-हाजत कर रहे थे। आप (ﷺ) की पीठ क़िब्ले की त़रफ़ थी और चेहरा मुबारक शाम की त़रफ़ था। (राजेअ : 145)

٣١٠٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ عَنْ وَاسِعِ بْنِ حَبَّانَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((ارْتَقَيْتُ فَوقَ بَيْتِ حَفْصَةَ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْضِي حَاجَتَهُ مُسْتَدْبِرَ الْقِبْلَةِ مُسْتَقْبِلَ الشَّأْمِ)).[راجع: ١٤٥]

घर को ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़ि.) की तरफ़ मन्सूब किया, उसी से बाब का मत़लब निकला।

3103. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अनस बिन अ़याज़ ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब अ़स्र की नमाज़ पढ़ते तो धूप अभी उनके हुज्रे में बाक़ी रहती थी। (राजेअ : 522)

٣١٠٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُصَلِّي الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ لَمْ تَخْرُجْ مِنْ حُجْرَتِهَا)).[راجع: ٥٢٢]

ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की तरफ़ हुज्रे को मन्सूब किया गया, इसी से बाब का मत़लब ष़ाबित हुआ। ये ह़दीष़ किताबुल मवाक़ीत में भी गुज़र चुकी है।

3104. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवेरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ुत़्बा देते हुए आइशा (रज़ि.) के हुज्रे की त़रफ़ इशारा किया और फ़र्माया कि इसी त़रफ़ से (या'नी मश्रिक़ की तरफ़ से) फ़ित्ने बरपा होंगे, तीन बार आप (ﷺ) ने इसी त़रह फ़र्माया कि यहीं से शैत़ान का सर

٣١٠٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَامَ النَّبِيُّ ﷺ خَطِيْبًا فَأَشَارَ نَحْوَ مَسْكَنِ عَائِشَةَ فَقَالَ: هَا هُنَا الْفِتْنَةُ - ثَلاَثًا - مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ

नमूदार होगा। (दीगर मक़ाम : 3279, 3511, 5296, 7092, 7093)

الشَّيْطَانِ)). [أطرافه في: ٣٢٧٩، ٣٥١١، ٥٢٩٦، ٧٠٩٢، ٧٠٩٣].

तश्रीह : अल्मुरादु बिकर्निश्शैतानि तर्फ़ुरासिही अय यदनी रासहू इलश्शम्सि फी वक्ति तुलूइहा फयकूनु-स्साजिदून लिश्शम्सि मिनल्कुफ़्फ़ारि कस्साजिदीन लहू व क़ील कर्नुहू उम्मतुहू व शीअतुहू व फी बअ़ज़िहा क़र्नुश्शम्सि (हाशिया बुख़ारी) या'नी क़र्नुश्शैतान से उसके सर का किनारा मुराद है। वो सूरज के निकलने के वक़्त उसकी त़रफ़ अपना सर कर देता है ताकि सूरज को सज्दा करने वाले काफ़िर उसको सज्दा करें। गोया वो उसी को सज्दा कर रहे हैं। कहा गया है कि क़र्न से मुराद उसके मानने वाले हैं, जो शैत़ान के पुजारी हैं। अ़ल्लामा ऐनी (रह.) फ़र्माते हैं कि मश्रिक़ से आप (ﷺ) ने इराक़ की सरज़मीन की त़रफ़ इशारा किया था, जो फ़िल् वाक़ेअ फ़ित्नों का मर्कज़ (केन्द्र) रही है।

3105. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक बिन अनस (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने, उन्हें अ़म्रह बिन्ते अ़ब्दुर्रहमान ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) उनके घर में मौजूद थे। अचानक उन्होंने सुना कि कोई साहब ह़फ़्स़ा (रज़ि.) के घर में अंदर आने की इजाज़त मांग रहे हैं। (आइशा रज़ि. ने बयान किया) मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप देखते नहीं, ये शख़्स घर में जाने की इजाज़त मांग रहा है। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि मेरा ख़याल है ये फ़लाँ स़ाह़ब हैं, ह़फ़्स़ा (रज़ि.) के रज़ाई चचा! रज़ाअ़त भी उन तमाम चीज़ों को ह़राम कर देती है जिन्हें विलादत ह़राम करती है। (राजेअ़ : 2644)

٣١٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ عَمْرَةَ ابْنَةِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ((أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ عِنْدَهَا، وَأَنَّهَا سَمِعَتْ صَوتَ إِنْسَانٍ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِ حَفْصَةَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِكَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أُرَاهُ فُلاَنًا - لِعَمِّ حَفْصَةَ مِنَ الرَّضَاعَةِ - الرَّضَاعَةُ تُحَرِّمُ مَا تُحَرِّمُ الْوِلاَدَةُ)). [راجع: ٢٦٤٤]

इसमें भी घर को ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) की त़रफ़ मन्सूब किया गया। जिससे बाब का मत़लब स़ाबित हुआ कि किसी बच्चे ने अपनी चाची का दूध पिया है तो चाचा रज़ाई बाप होगा। और चाचा के लड़के लड़कियाँ रज़ाई भाई-बहन होंगे। उनसे पर्दा भी नहीं है क्योंकि रज़ाअ़त से ये सब मह़रम बन जाते हैं।

बाब 5 : नबी करीम (ﷺ) की ज़िरह, अ़स़ा-ए-मुबारक, आप (ﷺ) की तलवार, प्याला और अंगूठी का बयान

٥- بَابُ مَا ذُكِرَ مِنْ دِرْعِ النَّبِيِّ ﷺ وَعَصَاهُ وَسَيْفِهِ وَقَدَحِهِ وَخَاتَمِهِ وَمَا اسْتَعْمَلَ الْخُلَفَاءُ بَعْدَهُ

और आप (ﷺ) के बाद जो ख़लीफ़ा हुए उन्होन ये चीज़ें इस्ते'माल कीं, उनको तक़्सीम नहीं किया, और आप (ﷺ) के मूए मुबारक और नअ़लैन (जूतों) और बर्तनों का बयान जिनको आपके अस्ह़ाब वग़ैरह ने आपकी वफ़ात के बाद (तारीख़ी तौर पर) मुतबर्रक समझा.

مِنْ ذَلِكَ مِمَّا لَمْ يُذْكَرْ قِسْمَتُهُ وَمِنْ شَعْرِهِ وَنَعْلِهِ وَآنِيَتِهِ مِمَّا تَبَرَّكَ أَصْحَابُهُ وَغَيْرُهُمْ بَعْدَ وَفَاتِهِ

अल्गरज़ु मिन हाज़िहित्तर्जुमति तष्बीतुन अन्नहू (ﷺ) लम यूरषु व ला बीअ़ मौजूदहू बल तुरिक बियदि मन स़ार इलैहि लित्तबर्रुकि बिही व लौ कान मीराष़न लबीअ़त व कुस्सिमत व लिहाज़ा क़ाल बअ़द ज़ालिक मिम्मा लम युज़्कर किस्मतुहू (फ़त्हुल्बारी) इस बाब की ग़र्ज़ इस अम्र को ष़ाबित करना है कि आप (ﷺ) का किसी को वारिष़ नहीं बनाया

और न आपका तर्का बेचा गया, बल्कि जिसकी तह्वील में वो तर्का पहुँच गया तबर्रुक के लिये उसी के पास छोड़ दिया गया और अगर आप (ﷺ) का तर्का मीराष़ होता तो वो बेचा जाता और तक़्सीम किया जाता। इसीलिये बाद में कहा गया कि उन चीज़ों का बयान जिनकी तक़्सीम ष़ाबित नहीं।

3106. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे षुमामा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि जब अबूबक्र (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए तो उन्होंने उनको (या'नी अनस रज़ि.) को) बहरीन (आ़मिल बनाकर) भेजा और एक परवाना लिखकर उनको दिया और उस पर नबी करीम (ﷺ) की अंगूठी की मुहर लगाई, मुहरे मुबारक पर तीन सत्रें कन्दा थीं, एक सत़र में मुहम्मद दूसरी में रसूल तीसरी में अल्लाह कुन्दा था। (राजेअ : 1448)

٣١٠٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ ثُمَامَةَ عَنْ أَنَسٍ ((أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لَمَّا اسْتُخْلِفَ بَعَثَهُ إِلَى الْبَحْرَيْنِ، وَكَتَبَ لَهُ هَذَا الْكِتَابَ وَخَتَمَهُ بِخَاتَمِ النَّبِيِّ ﷺ، وَكَانَ نَقْشُ الْخَاتَمِ ثَلاَثَةَ أَسْطُرٍ: مُحَمَّدٌ سَطْرٌ، وَرَسُولٌ سَطْرٌ، وَاللهُ سَطْرٌ)).
[راجع: ١٤٤٨]

तश्रीह : ये मुहर आँहज़रत (ﷺ) की थी उसका नक़्श इस त़रह था, मुहम्मद रसूलुल्लाह। बाब का मत़लब इससे यूँ निकला कि आँहज़रत (ﷺ) की मुहर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) इस्ते'माल करते रहे, उनके बाद ये मुहर हज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास रही, उनके बाद हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के पास, फिर उनके हाथ से उरैस कुँए में गिर गई बहुत ढूँढ़ा मगर न मिली। सच है, कुल्लु मन अ़लैहा फ़ान. (अर्‌रहमान : 26)

3107. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह असदी ने बयान किया, उनसे ईसा बिन त़ह्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने हमें दो पुराने जूते निकालकर दिखाए जिनमें दो तस्मे लगे हुए थे, उसके बाद फिर ष़ाबित बिनानी ने मुझसे अनस (रज़ि.) से बयान किया कि वो दोनों जूते नबी करीम (ﷺ) के थे। (दीगर मक़ाम : 5857, 5858)

٣١٠٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَسَدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ طَهْمَانَ قَالَ : أَخْرَجَ إِلَيْنَا أَنَسٌ نَعْلَيْنِ جَرْدَاوَيْنِ لَهُمَا قِبَالاَنِ، فَحَدَّثَنِي ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ بَعْدُ عَنْ أَنَسٍ أَنَّهُمَا نَعْلاَ النَّبِيِّ ﷺ.[طرفاه في : ٥٨٥٧، ٥٨٥٨].

3108. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़्फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अबू बुर्दा बिन अबू मूसा ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने हमे एक पेवन्द लगी हुई चादर निकालकर दिखाई और बतलाया कि इसी कपड़े में नबी करीम (ﷺ) की रूह क़ब्ज़ हुई थी। और सुलैमान बिन मुग़ीरह ने हुमैद से बयान किया, उन्होंने अबू बुर्दा से इतना ज़्यादा बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने यमन की बनी हुई एक मोटी इज़ार (तहबंद) और एक कम्बल उन्हीं कम्बलों में से जिनको तुम मल्बद (या'नी मोटा पेवन्द दार कहते हो) हमें

٣١٠٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: ((أَخْرَجَتْ إِلَيْنَا عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا كِسَاءً مُلَبَّدًا وَقَالَتْ: فِي هَذَا نُزِعَ رُوحُ النَّبِيِّ ﷺ. وَزَادَ سُلَيْمَانُ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْرَجَتْ إِلَيْنَا عَائِشَةُ إِزَارًا غَلِيْظًا مِمَّا يُصْنَعُ بِالْيَمَنِ، وَكِسَاءً مِنْ

هَذِهِ الَّتِي يَدْعُونَهَا الْمُلَبَّدَةَ)).
[طرفه في : ٥٨١٨].

निकालकर दिखाई। (दीगर मक़ाम : 5818)

तश्रीह : क़स्त़लानी ने कहा, शायद आपने बनज़रे तवाज़ोअ या इत्तिफ़ाक़न् इस कमली को ओढ़ लिया होगा न ये कि आप क़स्दन् पेवन्द की हुई कमली ओढ़ा करते, क्योंकि आदते शरीफ़ा ये थी कि जो कपड़ा मयस्सर आता उसको पहनते, कपड़े बहुत स़ाफ़ शफ़्फ़ाफ़, सुथरे-उजले पहनते। मगर बनाव-सिंगार से परहेज़ करते थे। आप (ﷺ) के जूते, आप (ﷺ) की कमली, आप (ﷺ) का प्याला, आप (ﷺ) की अंगूठी उन सबको बत़ौरे यादगार मह़फ़ूज़ रखा गया, मगर तक़्सीम नहीं किया गया। जिससे ष़ाबित हुआ कि स़ह़ाबा व ख़ुलफ़-ए-राशिदीन ने आप (ﷺ) के इर्शाद, **नहनु मआ़शरुल्अम्बिया** ला नूरिषु को पूरे त़ौर पर मल्ह़ूज़े नज़र रखा।

٣١٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنْ عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ سِيْرِيْنَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ قَدَحَ النَّبِيِّ ﷺ انْكَسَرَ فَاتَّخَذَ مَكَانَ الشَّعْبِ سِلْسِلَةً مِنْ فِضَّةٍ. قَالَ عَاصِمٌ: رَأَيْتُ الْقَدَحَ وَشَرِبْتُ فِيْهِ)).[طرفه في : ٥٦٣٨].

3109. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा ने, उनसे आसि़म ने, उनसे इब्ने सीरीन ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) का पानी पीने का प्याला टूट गया तो आपने टूटी हुई जगहों को चाँदी की ज़ंजीर से जोड़ लिया। आ़सि़म कहते हैं कि मैंने वो प्याला देखा है। और उसमें मैंने पानी भी पिया है। (दीगर मक़ाम : 5638)

मक़्सद ह़ज़रत इमाम का ये है कि अगर आप (ﷺ) का तर्का तक़्सीम किया जाता तो वो प्याला तक़्सीम होता, हालाँकि वो तक़्सीम नहीं हुआ। बल्कि ख़ुल्फ़ा उसे यूँ ही बत़ौरे तबर्रुक अपने पास मह़फ़ूज़ रखते चले आए। इसी त़रह़ पिछली अह़ादीष़ में आँह़ज़रत (ﷺ) के पुराने जूतों का ज़िक्र है और ह़दीषे़ आइशा (रज़ि.) में आप (ﷺ) की कमली और तहबन्द का ज़िक्र है। मा'लूम हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) की छोड़ी हुई चीज़ों में से कोई चीज़ तक़्सीम नहीं की गई।

٣١١٠- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجَرْمِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي أَنَّ الْوَلِيْدَ بْنَ كَثِيْرٍ حَدَّثَهُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَلْحَلَةَ الدِّيْلِي حَدَّثَهُ أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ حَدَّثَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ حُسَيْنٍ حَدَّثَهُ ((أَنَّهُمْ حِيْنَ قَدِمُوا الْمَدِيْنَةَ مِنْ عِنْدِ يَزِيْدَ بْنِ مُعَاوِيَةَ مَقْتَلَ حُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ لَقِيَهُ الْمِسْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ فَقَالَ لَهُ: هَلْ لَكَ إِلَيَّ مِنْ حَاجَةٍ تَأْمُرُنِي بِهَا؟ فَقُلْتُ لَهُ: لاَ. فَقَالَ فَهَلْ أَنْتَ مُعْطِيَّ سَيْفَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ يَغْلِبَكَ الْقَوْمُ عَلَيْهِ،

3110. हमसे सईद बिन मुह़म्मद जर्मी ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे वलीद बिन कष़ीर ने, उनसे मुहम्मद बिन अ़म्र बिन ह़ल्ह़ला दूली ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ली बिन ह़ुसैन (ज़ैनुल आ़बेदीन रह) ने बयान किया कि जब हम सब ह़ज़रात ह़ुसैन बिन अ़ली (रज़ि.) की शहादत के बाद यज़ीद बिन मुआ़विया के यहाँ से मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने आपसे मुलाक़ात की, और कहा अगर आपको कोई ज़रूरत हो तो मुझे हुक्म दीजिए, (ह़ज़रत ज़ैनुल आ़बेदीन ने बयान किया कि) मैंने कहा, मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। फिर मिस्वर (रज़ि.) ने कहा तो क्या आप मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की तलवार इनायत फ़र्माएँगे? क्योकि मुझे डर है कि कुछ लोग (बनू उमय्या) उसे आपसे न छीन लें और अल्लाह की क़सम! अगर वो तलवार आप मुझे इनायत कर दें तो कोई शख़्स भी जब तक मेरी जान

وَايْمُ اللهِ لَئِنْ أَعْطَيْتَنِيهِ لاَ يُخْلَصُ إِلَيْهِمْ أَبَدًا حَتَّى تُبْلَغَ نَفْسِي. إِنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ خَطَبَ ابْنَةَ أَبِي جَهْلٍ عَلَى فَاطِمَةَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ، فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَخْطُبُ النَّاسَ فِي ذَلِكَ عَلَى مِنْبَرِهِ هَذَا - وَأَنَا يَوْمَئِذٍ مُحْتَلِمٌ - فَقَالَ: ((إِنَّ فَاطِمَةَ مِنِّي، وَأَنَا أَتَخَوَّفُ أَنْ تُفْتَنَ فِي دِينِهَا. ثُمَّ ذَكَرَ صِهْرًا لَهُ مِنْ بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ فَأَثْنَى عَلَيْهِ فِي مُصَاهَرَتِهِ إِيَّاهُ قَالَ: حَدَّثَنِي فَصَدَقَنِي، وَوَعَدَنِي فَوَفَى لِي، وَإِنِّي لَسْتُ أُحَرِّمُ حَلاَلاً وَلاَ أُحِلُّ حَرَامًا، وَلَكِنْ وَاللهِ لاَ تَجْتَمِعُ بِنْتُ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِنْتُ عَدُوِّ اللهِ أَبَدًا)).

बाक़ी है इसे छीन नहीं सकेगा। फिर मिस्वर (रज़ि.) ने एक क़िस्सा बयान किया कि अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की मौजूदगी में अबू जहल की एक बेटी को पैग़ामे निकाह भेज दिया था। मैंने ख़ुद सुना कि इसी मसले पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने उसी मिम्बर पर खड़े होकर सहाबा को ख़िताब किया। मैं उस वक़्त बालिग़ था। आप (ﷺ) ने ख़ुत्बा में फ़र्माया कि फ़ातिमा मुझसे है और मुझे डर है कि कहीं वो (इस रिश्ते की वजह से) किसी गुनाह में न पड़ जाए कि अपने दीन में वो किसी फ़ित्ने में मुब्तला हो। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ानदान बनी अब्दे शम्स के एक अपने दामाद (आस़ बिन रबीअ) का ज़िक्र किया और दामादी से मुता'ल्लिक़ आपने उनकी ता'रीफ़ की, आपने फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे जो बात कही सच कही, जो वा'दा किया, उसे पूरा किया। मैं किसी हलाल (या'नी निकाह ष़ानी) को हराम नहीं कर सकता, और न किसी हराम को हलाल बनाता हूँ, लेकिन अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) की बेटी और अल्लाह के दुश्मन की बेटी एक साथ जमा नहीं होंगी।

तशरीह : **अना अख़ाफ़ु अन तुफ़्तन फ़ी दीनिहा** से मुराद ये कि अली (रज़ि.) दूसरी बीवी लाएँ और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) सौकनपने की अदावत से जो हर औरत के दिल में होती है, किसी गुनाह में मुब्तला हो जाएँ। मष़लन शौहर को सताएँ, उनकी नाफ़र्मानी करें या सौकन को बुरा-भला कह बैठें। दूसरी रिवायत में है कि आपने ये भी फ़र्माया कि अली (रज़ि.) का निकाहे ष़ानी यूँ मुम्किन है कि वो मेरी बेटी को तलाक़ दे दें और अबू जहल की बेटी से निकाह कर लें। जब हज़रत अली (रज़ि.) ने आपका ये इर्शाद सुना तो फ़ौरन ये इरादा तर्क कर दिया और जब तक हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ज़िन्दा रहीं उन्होंने कोई दूसरा निकाह नहीं किया। क़स्तलानी (रह.) ने कहा आपके इर्शाद से ये मा'लूम हुआ कि पैग़म्बर की बेटी और अल्लाह के दीन के दुश्मन की बेटी में जमा करना हराम है।

मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने ये क़िस्सा इसलिये बयान किया कि हज़रत ज़ेनुल आबेदीन की फ़ज़ीलत मा'लूम हो कि वो किस के पोते हैं, हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (रज़ि.) के, जिनके लिये आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) पर इताब (ग़ुस्सा) फ़र्माया और जिनको आँहज़रत (ﷺ) ने अपने बदन का एक टुकड़ा क़रार दिया। इससे हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई।

व फ़िल्फ़त्हि कालल्किर्मानी मुनासबतु ज़िक्रिल्मिस्वरि लिकिस्सति ख़ित्बति बिन्ति अबी जहल इन्द तलबिही लिस्सैफ़ि मिन जिहति अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) कान यहतरिज़ु अम्मा यूजिबु वुक़ूअत्तक्दीरि बैनल्अक़्रबाइ फकज़ालिक यम्बगी अन तुअ़तीनी अस्सैफ़ ला यहसुलु बैनक व बैन अक़्रबाइक कदूरतुन बिसबबिही या'नी मिस्वर (रज़ि.) ने बिन्ते अबू जहल की मंगनी का क़िस्सा इसलिये बयान किया जबकि उन्होंने हज़रत ज़ेनुल आबेदीन से तलवार का सवाल किया था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ऐसी चीज़ों से परहेज़ फ़र्माया करते थे जिनसे अक़रबा में बाहमी कदूरत पैदा हो। पस मुनासिब है कि आप ये तलवार मुझको दे दें ताकि आपके अक़रबा में उसकी वजह से आपसे कदूरत न पैदा हो।

٣١١١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سُوقَةَ عَنْ

3111. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सूक़ा ने, उनसे मुंज़िर

बिन यअ़ला ने और उनसे मुहम्मद बिन हनीफ़ा ने, उन्होंने कहा कि अगर हज़रत अ़ली (रज़ि.) हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) को बुरा कहने वाले होते तो उस दिन होते जब कुछ लोग हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के आ़मिलों की (जो ज़कात वसूल करते थे) शिकायत करने उनके पास आए। उन्होंने मुझसे कहा उ़ष्मान (रज़ि.) के पास जा और ये ज़कात का परवाना ले जा। उनसे कहना कि ये परवाना आँहज़रत (ﷺ) का लिखवाया हुआ है। तुम अपने आ़मिलों को हुक्म दो कि वो इसी के मुताबिक़ अ़मल करें। चुनाँचे मैं उसे लेकर हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उन्हें पैग़ाम पहुँचा दिया, लेकिन उन्होंने फ़र्माया कि हमें उसकी कोई ज़रूरत नहीं (क्योंकि हमारे पास इसकी नक़ल मौजूद है) मैंने जाकर हज़रत अ़ली (रज़ि.) से ये वाक़िया बयान किया, तो उन्होंने फ़र्माया कि अच्छा, फिर इस परवाने को जहाँ उठाया है वहीं रख दो। (दीगर मक़ाम : 3112)

مُنْذِرٍ عَنِ ابْنِ الْحَنَفِيَّةِ قَالَ: ((لَوْ كَانَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ذَاكِرًا عُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ذَكَرَهُ يَوْمَ جَاءَهُ نَاسٌ فَشَكَوْا سُعَاةَ عُثْمَانَ، فَقَالَ لِي عَلِيٌّ: اذْهَبْ إِلَى عُثْمَانَ فَأَخْبِرْهُ أَنَّهَا صَدَقَةُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَمُرْ سُعَاتَكَ يَعْمَلُونَ فِيْهَا. فَأَتَيْتُهُ بِهَا فَقَالَ: أَغْنِهَا عَنَّا. فَأَتَيْتُ بِهَا عَلِيًّا فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: ضَعْهَا حَيْثُ أَخَذْتَهَا)).

[طرفه في : ٣١١٢].

3112. हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन सूक़ा ने कहा कि मैंने मुंज़िर ष़ौरी से सुना, वो मुहम्मद बिन हन्फ़िया से बयान करते थे कि मेरे वालिद (अ़ली रज़ि.) ने मुझको कहा कि ये परवाना उ़ष्मान (रज़ि.) को ले जाकर दे आओ, इसमें ज़कात के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) के बयान कर्दा अह़कामात दर्ज हैं। (राजेअ़ : 3111)

٣١١٢- قَالَ الْحُمَيْدِيُّ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سُوقَةَ قَالَ: سَمِعْتُ مُنْذِرًا الثَّوْرِيَّ عَنِ ابْنِ الْحَنَفِيَّةِ قَالَ: أَرْسَلَنِي أَبِي، خُذْ هَذَا الْكِتَابَ فَاذْهَبْ بِهِ إِلَى عُثْمَانَ، فَإِنَّ فِيْهِ أَمْرَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الصَّدَقَةِ)). [راجع: ٣١١١]

तश्रीह : हुआ ये था कि मुहम्मद बिन हन्फ़िया के पास एक शख़्स ने हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) को बुरा कहा, उन्होंने कहा ख़ामोश! लोगों ने पूछा क्या तुम्हारे बाप या'नी हज़रत अ़ली (रज़ि.) हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) को बुरा कहते थे? तब मुहम्मद बिन हन्फ़िया ने ये क़िस्सा बयान किया, या'नी अगर हज़रत अ़ली (रज़ि.) उनको बुरा कहने वाले होते तो उस मौक़े पर कहते। इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब का तर्जुमा से ये है कि आपका लिखवाया हुआ परवाना हज़रत अ़ली (रज़ि.) के पास रहा। उन्होंने उससे काम लिया, इमाम बुख़ारी (रह.) ने ज़िरह और अ़सा और बालों के बारे में ह़दीष़ें बयान नहीं कीं, ह़ालाँकि बाब का तर्जुमा में उनका ज़िक्र है। मुम्किन है कि उन्होंने इशारा किया हो हज़रत आइशा (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ह़दीष़ों की त़रफ़ जो दूसरे बाबों में मज़्कूर हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ ये है कि वफ़ात के वक़्त आपकी ज़िरह एक यहूदी के पास गिरवी थी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ह़दीष़ ये है कि आप ह़ज्रे अस्वद को एक लकड़ी से चूमते थे। अनस (रज़ि.) की ह़दीष़ किताबुत् त़हारत में गुज़री, इसमें इब्ने सीरीन का ये क़ौल है कि हमारे पास आँहज़रत (ﷺ) के कुछ मूए मुबारक हैं और प्याला पर बाक़ी बर्तनों को क़यास कर सकते हैं। हुमैदी की सनद बयान करने से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि सुफ़यान का सिमाअ़ मुहम्मद बिन सक़ा से और मुहम्मद बिन सक़ा का मुंज़िर से बसराह़त मा'लूम हो जाए। (वह़ीदी)

बाब 6 : इस बात की दलील

कि ग़नीमत का पाँचवाँ ह़िस्सा रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में आपकी ज़रूरतों (जैसे ज़ियाफ़ते मेहमान, सामाने जिहाद की

٦- بَابُ الدَّلِيْلِ عَلَى أَنَّ الْخُمُسَ لِنَوَائِبِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَالْمَسَاكِيْنِ

وَإِيْثَارِ النَّبِيِّ ﷺ أَهْلَ الصُّفَّةِ وَالأَرَامِلَ حِيْنَ سَأَلَتْهُ فَاطِمَةُ وَشَكَتْ إِلَيْهِ الطَّحْنَ وَالرَّحَى أَنْ يُخْدِمَهَا مِنَ السَّبْي، فَوَكَّلَهَا إِلَى اللهِ.

तैयारी वग़ैरह) और मुहताजों के लिये था। क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने सुफ़्फ़ा वालों (मुहताजों) और बेवा औरतों की ख़िदमत हज़रत फ़ातिमा के आराम पर मुक़द्दम रखी। जब उन्होंने क़ैदियों में से एक ख़िदमतगार आपसे मांगा और अपनी तकलीफ़ का ज़िक्र किया, जो आटा गूंधने और पीसने में होती है। आप (ﷺ) ने उनका काम अल्लाह पर रखा।

कौलुहू अहलुस्सुफ़्फ़ति हुमुल्फ़ुक़राउ वल्मसाकीनुल्लज़ीन कानू यस्कुनून सुफ़्फ़त मस्जिदिन्नबिय्यि (ﷺ) वल्अरामिलु जम्अल्अर्मल अर्रजुजुलुल्लज़ी ला मर्अत लहू वल्अर्मलुल्लती ला ज़ौज लहा वल्अरमिलुल्मसाकीनु मिनर्रिजालि वन्निसाइ. (किर्मानी)

٣١١٣- حَدَّثَنَا بَدَلُ بْنُ الْمُحَبَّرِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِي الْحَكَمُ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى أَخْبَرَنَا عَلِيٌّ أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ اشْتَكَتْ مَا تَلْقَى مِنَ الرَّحَى مِمَّا تَطْحَنُهُ، فَبَلَغَهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُتِيَ بِسَبْيٍ، فَأَتَتْهُ تَسْأَلُهُ خَادِمًا فَلَمْ تُوَافِقْهُ، فَذَكَرَتْ لِعَائِشَةَ، فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ عَائِشَةُ لَهُ، فَأَتَانَا وَقَدْ دَخَلْنَا مَضَاجِعَنَا فَذَهَبْنَا لِنَقُومَ فَقَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمَا، حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمِهِ عَلَى صَدْرِي، فَقَالَ: أَلاَ أَدُلُّكُمَا عَلَى خَيْرٍ مِمَّا سَأَلْتُمَاهُ؟ إِذَا أَخَذْتُمَا مَضَاجِعَكُمَا فَكَبِّرَا اللهَ أَرْبَعًا وَثَلاَثِيْنَ، وَاحْمَدَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِيْنَ، وَسَبِّحَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِيْنَ، فَإِنَّ ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمَا مِمَّا سَأَلْتُمَاهُ)).

[أطرافه في: ٣٧٠٥، ٥٣٦١، ٥٣٦٢، ٦٣١٨].

3113. हमसे बदल बिन मुहब्बर ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे हकम ने ख़बर दी, कहा कि मैंने इब्ने अबी लैला से सुना, कहा मुझसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को चक्की पीसने की बहुत तकलीफ़ होती। फिर उन्हें मा'लूम हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास कुछ क़ैदी आए हैं। इसलिये वो भी उनमें से एक लौण्डी या गुलाम की दरख़्वास्त लेकर हाज़िर हुईं। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) मौजूद नहीं थे। वो हज़रत आइशा (रज़ि.) से इसके बारे में कहकर (वापस) चली आईं। फिर जब आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आप (ﷺ) के सामने उनकी दरख़्वास्त पेश कर दी। हज़रत अली (रज़ि.) कहते हैं कि उसे सुनकर आँहज़रत (ﷺ) हमारे यहाँ (रात ही को) तशरीफ़ लाए। जब हम अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे (जब हमने आँहज़रत ﷺ को देखा) तो हम लोग खड़े होने लगे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस तरह हो वैसे ही लेटे रहो। (फिर आप ﷺ मेरे और फ़ातिमा (रज़ि.) के बीच में बैठ गये और इतने क़रीब हो गये कि) मैंने आप (ﷺ) के दोनों क़दमों की ठण्डक अपने सीने पर पाई। उसके बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जो कुछ तुम लोगों ने (लौण्डी या गुलाम) मांगे हैं, मैं तुम्हें इससे बेहतर बात क्यूँ न बताऊँ, जब तुम दोनों अपने बिस्तर पर लेट जाओ, (तो सोने से पहले) अल्लाहु अकबर 34 बार और अल्हम्दु लिल्लाह 33 बार और सुब्हानल्लाह 33 बार पढ़ लिया करो, ये अमल बेहतर है उससे जो तुम दोनों ने मांगा है।
(दीगर मक़ाम : 3705, 5361, 5362, 6318)

अल्लाह तुमको इन कलिमात की वजह से ऐसी ताक़त देगा कि तुमको ख़ादिम की हाजत न रहेगी। अपना काम आप कर लोगी। बज़ाहिर ये हदीष बाब के तर्जुमे के मुताबिक़ नहीं है लेकिन इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा

किया है जिसे इमाम अहमद ने निकाला है। उसमें यूँ है क़सम अल्लाह की मुझसे यूँ नहीं हो सकता कि तुमको दूँ और सुफ़्फ़ा वालों को महरूम कर दूँ, जिनके पेट भूख की वजह से पेच खा रहे हैं। मेरे पास कुछ नहीं है जो उन पर खर्च करूँ, इन क़ैदियों को बेचकर उनकी क़ीमत उन पर खर्च करूँगा। इससे आँहज़रत (ﷺ) की शाने रहमत इस क़दर नुमायाँ हो रही है कि बार बार आप पर दुरूदो-सलाम पढ़ने को दिल चाहता है। (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

बाब 7 : सूरह अन्फ़ाल में अल्लाह तआला का इर्शाद कि जो कुछ तुम ग़नीमत में हासिल करो, बेशक उसका पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह के लिये है या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) उसको तक़्सीम करेंगे.

क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है मैं तो बांटने वाला हूँ, ख़ज़ान्ची और देने वाला तो सिर्फ़ अल्लाह पाक ही है।

٧- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿فَأَنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ﴾ [الأنفال: ٤١] يَعْنِي لِلرَّسُولِ قَسم ذَلِكَ
قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَخَازِنٌ، وَاللهُ يُعْطِي)).

क़ुर्आन शरीफ़ में ख़ुमुस के मसारिफ़ छः मज़्कूर हैं। अल्लाह और रसूल और नाते वाले और यतीम और मिस्कीन और मुसाफ़िर। अक्सर उलमा का मज़हब ये है कि अल्लाह का ज़िक्र महज़ ता'ज़ीम के लिये है और ख़ुमुस के पाँच ही हिस्से किये जाएँगे। एक हिस्सा अल्लाह और रसूल (ﷺ) का जो हाकिमे वक़्त लेगा और बाक़ी चार हिस्से नाते वालों और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों की ख़िदमत में खर्च होंगे। इसमें इख़्तिलाफ़ है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने हिस्से के मालिक होते हैं या नहीं? इमाम बुख़ारी (रह.) का मज़हब ये है कि मालिक नहीं होते बल्कि उसकी तक़्सीम आप (ﷺ) की तरफ़ मफ़ूज़ है।

3114. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सुलैमान, मंसूर और क़तादा ने, उन्होंने सालिम बिन अबी अल जअदि से सुना और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम अंसारियों के क़बीले में एक अंसारी के घर बच्चा पैदा हुआ तो उन्होंने बच्चे का नाम मुहम्मद रखने का इरादा किया और शुअबा ने मंसूर से रिवायत करके बयान किया है कि उन अंसारी ने बयान किया (जिनके यहाँ बच्चा पैदा हुआ था) कि मैं बच्चे को अपनी गर्दन पर उठाकर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और सुलैमान की रिवायत में है कि उनके यहाँ बच्चा पैदा हुआ, तो उन्होंने उसका नाम मुहम्मद रखना चाहा। आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि मेरे नाम पर नाम रखो, लेकिन मेरी कुन्नियत (अबुल क़ासिम) पर कुन्नियत न रखना, क्योंकि मुझे तक़्सीम करने वाला (क़ासिम) बनाया गया है। मैं तुममें तक़्सीम करने वाला (क़ासिम) बनाकर भेजा गया हूँ, मैं तुममें तक़्सीम करता हूँ। अम्र बिन मरज़ूक़ ने कहा कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, उनसे क़तादा ने बयान किया, उन्होंन

٣١١٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ وَمَنْصُورٍ وَقَتَادَةَ أَنَّهُمْ سَمِعُوا سَالِمَ بْنَ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: وُلِدَ لِرَجُلٍ مِنَّا مِنَ الأَنْصَارِ غُلاَمٌ، فَأَرَادَ أَنْ يُسَمِّيَهُ مُحَمَّدًا - قَالَ شُعْبَةُ فِي حَدِيْثِ مَنْصُورٍ: إِنَّ الأَنْصَارِيَّ قَالَ: حَمَلْتُهُ عَلَى عُنُقِي، فَأَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ. وَفِي حَدِيْثِ سُلَيْمَانَ: وُلِدَ لَهُ غُلاَمٌ فَأَرَادَ أَنْ يُسَمِّيَهُ مُحَمَّدًا - قَالَ: ((سَمُّوا بِاسْمِي وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي، فَإِنِّي إِنَّمَا جُعِلْتُ قَاسِمًا أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ)). وَقَالَ حُصَيْنٌ: بُعِثْتُ قَاسِمًا أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ. وَقَالَ عَمْرٌو: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ: سَمِعْتُ

सालिम से सुना और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से कि उन अंसारी सहाबी ने अपने बच्चे का नाम क़ासिम रखना चाहा तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन कुन्नियत पर न रखो। (दीगर मक़ाम : 3115, 3537, 6186, 6187, 6189, 6196)

سَالِمًا عَنْ جَابِرٍ: أَرَادَ أَنْ يُسَمِّيَهُ الْقَاسِمَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((سَمُّوا بِاسْمِي، وَلاَ تَكَنَّوا بِكُنْيَتِي)).

[أطرافه في: ٣١١٥، ٣٥٣٨، ٦١٨٦، ٦١٨٧، ٦١٨٩، ٦١٩٦].

तश्रीह : अबुल क़ासिम कुन्नियत रखने के बारे में इमाम मालिक (रह.) कहते हैं कि आपकी ह़यात में ये काम नाजाइज़ था। कुछ ने इसे मुमानअ़ते तंज़ीही क़रार दिया है। कुछ ने कहा मुहम्मद या अह़मद नामों के साथ अबुल क़ासिम कुन्नियत रखनी मना है। इमाम मालिक (रह.) के क़ौल को तरजीह़ हासिल है।

3115. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू सालिम ने, उनसे अबुल जअ़दि ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि हमारे क़बीला में एक शख़्स के यहाँ बच्चा पैदा हुआ, तो उन्होंने उसका नाम क़ासिम रखा, अंसार कहने लगे कि हम तुम्हें अबुल क़ासिम कहकर कभी नहीं पुकारेंगे और हम तुम्हारी आँख ठण्डी नहीं करेंगे। ये सुनकर वो अंसारी आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे घर एक बच्चा पैदा हुआ है। मैंने उसका नाम क़ासिम रखा है तो अंसार कहते हैं हम तेरी कुन्नियत अबुल क़ासिम नहीं पुकारेंगे और तेरी आँख ठण्डी नहीं करेंगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार ठीक कह रहे हैं मेरे नाम पर नाम रखो, लेकिन मेरी कुन्नियत मत रखो, क्योंकि क़ासिम मैं हूँ। (राजेअ़ : 3115)

٣١١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيِّ: قَالَ ((وُلِدَ لِرَجُلٍ مِنَّا غُلاَمٌ فَسَمَّاهُ الْقَاسِمَ، فَقَالَتِ الأَنْصَارُ: لاَ نَكْنِيكَ أَبَا الْقَاسِمِ وَلاَ نُنْعِمُكَ عَيْنًا. فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ وُلِدَ لِي غُلاَمٌ فَسَمَّيْتُهُ الْقَاسِمَ، فَقَالَتِ الأَنْصَارُ: لاَ نَكْنِيكَ أَبَا الْقَاسِمِ وَلاَ نُنْعِمُكَ عَيْنًا. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَحْسَنَتِ الأَنْصَارُ، سَمُّوا بِاسْمِي وَلاَ تَكَنَّوا بِكُنْيَتِي، فَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ)). [راجع: ٣١١٥]

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह.) ने इमाम सुफ़यान ष़ौरी की रिवायत लाकर इस अम्र को कुव्वत दी कि अंसारी ने अपने लड़के का नाम क़ासिम रखना चाहा था ताकि लोग उसे अबुल क़ासिम कहें मगर अंसार ने उसकी मुख़ालफ़त की जिसकी आँह़ज़रत (ﷺ) ने तह़सीन फ़र्माई। इसमें रावियों ने शुअ़बा से इख़्तिलाफ़ किया है। जैसे अबुल वलीद की रिवायत ऊपर गुज़री। उन्होंने ये कहा है कि अंसारी ने मुह़म्मद नाम रखना चाहा था।

क़ालश्शैख़ इब्नुल्हजर बय्यनल्बुखारी अल्इख्तिलाफ़ अ़ला शुअ़बत हल अरादल्अन्सारी अन्न इब्नहू मुहम्मदन अबिल्क़ासिम व अशार इला तर्जीहि अन्नहू अराद अंय्युसम्मियहू अल्क़ासिम बिरिवायति सुफ़्यान व हुवष़्ष़ौरी लहू अनिल्अअमश फसम्माहू अल्क़ासिम व यतरज्जहु अयज़न मिन हैषुल्मअ़ना लिअन्नहू लम यकअ अल्इन्कारू मिनल्अन्सारि अ़लैहि इल्ला हैषु लज़िम मिन तस्मिय्यति वलदिही अंय्यसग़ीर बिकुना अबल्क़ासिम इन्तिहा (हाशिया बुख़ारी) या'नी ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने शुअ़बा पर इख़्तिलाफ़ को बयान किया है जो इस बारे में वाक़ेअ़ है कि अंसारी क़ासिम रखना चाहता था या मुह़म्मद और इस तरजीह़ पर आपने इशारा फ़र्माया है कि वो क़ासिम रखना चाहता था मा'नी के लिह़ाज़ से भी इसी को तरजीह़ ह़ासिल है, अंसार का इंकार इसी वजह से था कि वो बच्चे का नाम क़ासिम रखकर ख़ुद को अबुल क़ासिम कहलाना चाहें ।

3116. हमसे हिब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उन्हें यूनुस ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उन्होंने मुआ़विया (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसके साथ अल्लाह तआ़ला भलाई चाहता है उसे दीन की समझ अ़ता करता है और देने वाला तो अल्लाह ही है मैं तो सिर्फ़ तक़्सीम करने वाला हूँ और अपने दुश्मनों के मुक़ाबले में ये उम्मते (मुस्लिमा) हमेशा ग़ालिब रहेगी। यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म (क़यामत) आ जाए और उस वक़्त भी वो ग़ालिब ही होंगे। (राजेअ़ : 71)

٣١١٦- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ، وَاللهُ الْمُعْطِي وَأَنَا الْقَاسِمُ، وَلاَ تَزَالُ هَذِهِ الأُمَّةُ ظَاهِرِينَ عَلَى مَنْ خَالَفَهُمْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ ظَاهِرُونَ)).[راجع: ٧١]

तश्रीह : रिवायत में आँहज़रत (ﷺ) के क़ासिम होने का ज़िक्र है, बाब से यही मुताबक़त की वजह है। दीनी फ़ुक़ाहत बिला शुब्हा अल्लाह का दीन है, ये जिसको मिल जाए। राय और क़यास की फ़ुक़ाहत और किताब व सुन्नत की रोशनी में दीन की फ़ुक़ाहत दो अलग-अलग चीज़ें हैं। दीनी फ़ुक़ाहत का बेहतरीन नमूना हज़रत उस्ताज़ शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी मरहूम की किताब हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा है, जिसकी एक-एक लाइन से दीनी फ़ुक़ाहत रोज़े रोशन की तरह अयाँ है, उसमें ज़ाहिर परस्तों के लिये भी तम्बीह है जो महज़ सरसरी नज़र से दीनी उमूर में फ़त्वेबाज़ी के आदी हैं, ऐसे लोग भी राय क़यास के ख़ूंगरों से मिल्लत के लिये कम नुक़्सानदेह नहीं हैं। मशहूर मक़ूला है कि, **यक मन इल्मरा देह मन अ़क़्ल बायद,** एक मन इल्म के लिये दस मन अ़क़्ल की भी ज़रूरत है। शैतान आ़लिम था मगर अ़क़्ल से कोरा, इसीलिये उसने अपनी राय को मुक़द्दम रखकर **इन्ना ख़ैरम् मिन्हु** का नारा लगाया और दरबारे इलाही में मतरूद क़रार पाया। ये हदीष किताबुल इल्म में भी मज़्कूर हो चुकी है मगर लफ़्ज़ों में ज़रा फ़र्क़ है।

ये जो फ़र्माया कि उम्मते इस्लामिया हमेशा मुख़ालिफ़ीन पर ग़ालिब रहेगी, सो ये मुत्लक़ ग़लबा मुराद है, ख़्वास सियासी तौर पर हो या हुज्जत और दलाइल के तौर पर हो, ये मुम्किन है कि मुसलमान सियासी तौर पर किसी ज़माने में कमज़ोर हो जाएँ, मगर अपनी मज़हबी ख़ूबियों के आधार पर अमल मे हमेशा अक़्वामे-आ़लम (दुनिया की अन्य क़ौमों) पर ग़ालिब रहेंगे। आज इस नाज़ुकतरीन दौर में तमाम मुसलमानों पर हर क़िस्म का इंहितात (कमी, ह्रास) तारी है। मगर बहुत सी ख़ूबियों के आधार पर आज भी दुनिया की सारी क़ौमें मुसलमानों का लोहा मानती हैं और क़यामत तक यही हाल रहेगा। गुज़िश्ता चौदह सदियों में मुसलमानों पर क़िस्म क़िस्म के ज़वाल आए मगर उम्मत ने उन सबका मुक़ाबला किया और इस्लाम अपनी मुम्ताज़ ख़ूबियों के आधार पर मज़ाहिबे आ़लम पर आज भी ग़ालिब है।

फ़क़ाहत से क़ुर्आन व हदीष की समझ मुराद है जो अल्लाह पाक अपने मख़्सूस बन्दों को अ़ता करता है। जैसा कि अल्लाह पाक ने हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) को ये फ़ुक़ाहत अ़ता की कि एक ही हदीष से कितने कितने मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया।

3117. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह ने बयान किया, कहा हमसे हिलाल ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी अ़म्र ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, न मैं तुम्हें कोई चीज़ देता हूँ, न तुमसे किसी चीज़ को रोकता हूँ। मैं तो सिर्फ़ तक़्सीम करने वाला हूँ। जहाँ-जहाँ का मुझे हुक्म होता है बस वहीं रख देता हूँ।

٣١١٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِلاَلٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَا أُعْطِيكُمْ وَلاَ أَمْنَعُكُمْ، أَنَا قَاسِمٌ أَضَعُ حَيْثُ أُمِرْتُ)).

अम्वाले-ग़नीमत पर इशारा है कि इसकी तक़्सीम अम्रे इलाही के मुताबिक़ मेरा काम है, देने वाला अल्लाह पाक ही है, इसलिये

जिसको जो कुछ मिल जाए उसे ख़ुशी के साथ क़ुबूल कर लेना चाहिये और जो मिलेगा वो ऐन उसके ह़क़ के मुताबिक़ ही होगा।

3118. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबुल अस्वद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी अ़याश ने बयान किया, और उनका नाम नोअ़मान था, उनसे ख़ौला बिन्ते क़ैस अंसारिया (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मैंने सुना, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि कुछ लोग अल्लाह तआ़ला के माल को बेजा उड़ाते हैं, उन्हें क़यामत के दिन आग मिलेगी।

٣١١٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيْدَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الأَسْوَدِ عَنِ ابْنِ أَبِي عَيَّاشٍ - وَاسْمُهُ نُعْمَانُ - عَنْ خَوْلَةَ الأَنْصَارِيَّةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ رِجَالاً يَتَخَوَّضُونَ فِي مَالِ اللهِ بِغَيْرِ حَقٍّ، فَلَهُمُ النَّارُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

अल्लाह के माल से यूँ तो सारे ही ह़लाल माल मुराद हैं जिनमें फ़िज़ूलख़र्ची करना गुनाहे अ़ज़ीम क़रार दिया गया है। मगर यहाँ अम्वाले ग़नीमत पर भी मुसन्निफ़ का इशारा है कि उसे नाह़क़ त़ौर पर ह़ासिल करना दुख़ूले नार (जहन्नम में दाख़िले) का मौजिब है। शरीअ़त ने उसकी तक़्सीम जिस त़ौर पर की है उसी त़ौर पर उसे ह़ासिल करना होगा।

बाब 8 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि तुम्हारे लिये ग़नीमत के माल ह़लाल किये गये

٨- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أُحِلَّتْ لَكُمُ الْغَنَائِمُ)).

और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि, अल्लाह तआ़ला ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वा'दा किया है जिसमें से ये (ख़ैबर की ग़नीमत) पहले ही दे दी है। तो ये ग़नीमत का माल (क़ुर्आन की रू से) सब लोगों का ह़क़ है मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने बयान फ़र्मा दिया कि कौन कौन इसके मुस्तह़िक़ हैं।

وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَعَدَكُمُ اللهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هَذِهِ﴾ الآيَةَ [الفتح: ٢٠] وَهِيَ لِلْعَامَّةِ حَتَّى يُبَيِّنَهُ الرَّسُولُ ﷺ

तशरीह़ : या'नी क़ुर्आन मुज्मल है इसकी रू से तो हर माले ग़नीमत में सारी दुनिया के मुसलमानों का ह़िस्सा होगा। मगर ह़दीष़ शरीफ़ से इसकी तशरीह़ हो गई कि हर ग़नीमत का माल उन लोगों का ह़क़ होगा जो लड़े और ग़नीमत ह़ासिल की, उसमें से पाँचवाँ ह़िस्सा ह़ाकिमे-वक़्त मुसलमानों के उ़मूमी मसालेह़ के लिये निकाल लेगा। इमाम बुख़ारी (रह.) की इस तक़रीर से उन लोगों का रद्द हुआ जो सिर्फ़ क़ुर्आन शरीफ़ को अ़मल करने के लिये काफ़ी समझते हैं और कहते हैं कि ह़दीष़ शरीफ़ की कोई ज़रूरत नहीं। ऐसे लोग क़ुर्आन मजीद के दोस्त नहीं कहे जा सकते बल्कि उनको क़ुर्आन मजीद का पहला दुश्मन समझना चाहिये जिसमें साफ़ कहा गया है, **व अन्ज़ल्ना इलैकज़्ज़िक्र लितुबय्यिन लिन्नास** (अन नह्ल : 44) या'नी मैंने इस किताब क़ुर्आन मजीद को ऐ रसूल! आपकी त़रफ़ उतारा है ताकि आप लोगों के सामने इसे अपनी ख़ुदादाद तशरीह़ के मुत़ाबिक़ पेश कर दो। आपकी तशरीह़ व तबय्युन का दूसरा नाम ह़दीष़ है। जिसके बग़ैर क़ुर्आन मजीद अपने मत़लब में मुकम्मल नहीं कहा जा सकता। आँह़ज़रत (ﷺ) की तशरीह़ भी वह्ये इलाही ही के ज़ेल में है जो वो **व मा यन्तिक़ु अनिल्हवा इन हुव इल्ला वह्युंय्यूह़ा** (अन् नज्म : 3-4) के तह़त है। फ़र्क़ इतना ही है कि क़ुर्आन मजीद वह्ये जली और ह़दीष़े नबवी वह्ये ख़फ़ी है जिसे वह्ये ग़ैर मत्लू कहा जाता है।

319. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ह़ुसैन ने बयान किया, उनसे आ़मिर ने और उनसे

٣١١٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ عَامِرٍ عَنْ عُرْوَةَ الْبَارِقِيِّ

उ़र्वा बारक़ी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, घोड़ों की पेशानियों से क़यामत तक ख़ैरो—बरकत (आख़िरत में) और ग़नीमत (दुनिया में) बँधी हुई है। (राजेअ़ : 2850)

رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ ((الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيْهَا الْخَيْرُ وَالأَجْرُ وَالْمَغْنَمُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). [راجع: ٢٨٥٠]

इशारा ये है कि जिहाद में शरीक होने वालों को इंशाअल्लाह माले ग़नीमत मिलेगा। इसका मतलब ये कि ग़नीमत का मुस्तह़िक़ हर शख़्स़ नहीं है। गोया आयत में जो इज्माल था उसकी तफ़्सील व वज़ाह़त सुन्नत ने कर दी है।

3120. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब किसरा मर जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा पैदा न होगा। और जब क़ैसर मर जाएगा तो उसके बाद कोई क़ैसर पैदा न होगा और उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम लोग उन दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे। (राजेअ़ : 3027)

٣١٢٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلاَ قَيْصَرَ بَعْدَهُ. وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتُنْفِقُنَّ كُنُوزَهُمَا فِي سَبِيْلِ اللهِ)). [راجع: ٣٠٢٧]

रसूले करीम (ﷺ) की ये पेशीनगोई ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ स़ह़ीह़ षाबित हुई कि ईरानी क़दीम सल्तनत ख़त्म हो गई और वहाँ हमेशा के लिये इस्लाम आ गया। शाम (सीरिया) में भी यही हुआ। उनके ख़ज़ानों का मुसलमानों के हाथ आना और उन ख़ज़ानों का फ़ी सबीलिल्लाह तक़्सीम होना मुराद है।

3121. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, उन्होंने जरीर से सुना, उन्होंने अ़ब्दुल मलिक से और उनसे जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब किसरा मर जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा पैदा न होगा और जब क़ैसर मर जाएगा तो उसके बाद कोई क़ैसर पैदा न होगा और उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है तुम लोग उन दोनों के खज़ाने अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे। (दीगर मक़ाम : 3619, 6629)

٣١٢١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ سَمِعَ جَرِيْرًا عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلاَ قَيْصَرَ بَعْدَهُ. وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتُنْفِقُنَّ كُنُوزَهُمَا فِي سَبِيْلِ اللهِ)).[طرفاه في: ٣٦١٩، ٦٦٢٩].

तश्रीह़ : रसूले करीम (ﷺ) की ये पेशीनगोई ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ स़ह़ीह़ षाबित हुई कि उ़रूजे इस्लाम के बाद क़दीम ईरानी सल्तनत का हमेशा के लिये ख़ात्मा हो गया और चौदह सौ साल से ईरान इस्लाम ही के ज़ेरे नगीं है। यही ह़ाल शाम का हुआ। उनके ख़ज़ाने जो हज़ारों सालों के जमा कर्दा थे, मुसलमानों के हाथ आए और वो मुस्तह़िक़्क़ीन में तक़्सीम कर दिये गये। सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)

3122. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको सय्यार बिन अबी सय्यार ने ख़बर दी, कहा हमसे यज़ीद फ़क़ीर ने बयान किया, कहा हमसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह

٣١٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ قَالَ أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ الْفَقِيْرُ قَالَ حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ

(ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे लिये (मुराद उम्मत है) ग़नीमत के माल हलाल किये गये हैं।

(राजेअ : 335)

رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أُحِلَّتْ لِيَ الْغَنَائِمُ)).

[راجع: ٣٣٥]

3123. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करे; जिहाद ही की निय्यत से निकले, अल्लाह के कलाम, (उसके वादे) को सच जानकर, तो अल्लाह उसका ज़ामिन है। या तो अल्लाह तआला उसको शहीद करके जन्नत में ले जाएगा, या उसको ष़वाब और ग़नीमत का माल दिलाकर उसके घर लौटा लाएगा। (राजेअ : 36)

٣١٢٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((تَكَفَّلَ اللهُ لِمَنْ جَاهَدَ فِي سَبِيلِهِ لاَ يُخْرِجُهُ إِلاَّ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِهِ، وَتَصْدِيقُ كَلِمَاتِهِ، بِأَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، أَوْ يَرْجِعَهُ إِلَى مَسْكَنِهِ الَّذِي خَرَجَ مِنْهُ مَعَ أَجْرٍ أَوْ غَنِيمَةٍ)).[راجع: ٣٦]

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का इशारा इस हदीष़ के लाने से भी यही है कि माले ग़नीमत जिहाद में शरीक होने वालों के लिये है और ये कि हक़ीक़ी मुजाहिद कौन है। इस पर भी इस हदीष़ में काफ़ी रोशनी डाली गई है। ऐसे मुजाहिदीन भी होते हैं जो महज़ हुसूले दुनिया व नाम व नमूद के लिये जिहाद करते हैं। जिनके लिये कोई अज्रो-ष़वाब नहीं है, बल्कि क़यामत के दिन उनको दोज़ख़ में धकेल दिया जाएगा कि तुम्हारे जिहाद करने का मक़्सद सिर्फ़ इतना ही था कि तुमको दुनिया में बहादुर कहकर पुकारा जाए। तुम्हारा ये मक़्सद दुनिया में तुमको हासिल हो गया। अब आख़िरत में जहन्नम के सिवा तुम्हारे लिये और कुछ नहीं है।

3124. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल के पैग़म्बरों में से एक नबी (यूशअ अलैहिस्सलाम) ने ग़ज़्वा करने का इरादा किया तो अपनी क़ौम से कहा कि मेरे साथ कोई ऐसा शख़्स जिसने अभी नई शादी की हो और बीवी के साथ कोई रात भी न गुज़ारी हो और वो रात गुज़ारना चाहता हो और वो शख़्स जिसने घर बनाया हो और अभी उसकी छत न पाट सका हो और वो शख़्स जिसने हामला बकरी या हामला ऊँटनियाँ ख़रीदी हूँ और उसे उनके बच्चे जनने का इंतिज़ार हो तो (ऐसे लोगों में से कोई भी) हमारे साथ जिहाद में न चले। फिर उन्होंने जिहाद किया, और जब उस आबादी (अरीजा) से क़रीब हुए तो अस्र का वक़्त हो

٣١٢٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((غَزَا نَبِيٌّ مِنَ الأَنْبِيَاءِ فَقَالَ لِقَوْمِهِ: لاَ يَتْبَعْنِي رَجُلٌ مَلَكَ بُضْعَ امْرَأَةٍ وَهُوَ يُرِيدُ أَنْ يَبْنِيَ بِهَا وَلَمَّا يَبْنِ بِهَا، وَلاَ أَحَدٌ بَنَى بُيُوتًا وَلَمْ يَرْفَعْ سُقُوفَهَا، وَلاَ أَحَدٌ اشْتَرَى غَنَمًا أَوْ خَلِفَاتٍ وَهُوَ يَنْتَظِرُ وِلاَدَهَا، فَغَزَا. فَدَنَا مِنَ الْقَرْيَةِ صَلاَةَ الْعَصْرِ أَوْ قَرِيبًا مِنْ ذَلِكَ، فَقَالَ لِلشَّمْسِ: إِنَّكِ

مَأْمُورَةٌ وَأَنَا مَأْمُورٌ، اللَّهُمَّ! احْبِسْهَا عَلَيْنَا، فَحُبِسَتْ حَتَّى فَتَحَ اللهُ، فَجَمَعَ الْغَنَائِمَ، فَجَاءَتْ - يَعْنِي النَّارَ - لِتَأْكُلَهَا فَلَمْ تَطْعَمْهَا، فَقَالَ: إِنَّ فِيكُمْ غُلُولاً، فَلْيُبَايِعْنِي مِنْ كُلِّ قَبِيلَةٍ رَجُلٌ، فَلَزِقَتْ يَدُ رَجُلٍ بِيَدِهِ، فَقَالَ: فِيكُمُ الْغُلُولُ، فَلْيُبَايِعْنِي قَبِيلَتُكَ، فَلَزِقَتْ يَدُ رَجُلَيْنِ أَوْ ثَلاَثَةٍ بِيَدِهِ، فَقَالَ: فِيكُمُ الْغُلُولُ، فَجَاؤُوا بِرَأْسٍ مِثْلِ رَأْسِ بَقَرَةٍ مِنَ الذَّهَبِ فَوَضَعُوهَا، فَجَاءَتِ النَّارُ فَأَكَلَتْهَا. ثُمَّ أَحَلَّ اللهُ لَنَا الْغَنَائِمَ، رَأَى ضَعْفَنَا وَعَجْزَنَا فَأَحَلَّهَا لَنَا)).

[طرفه في: ٥١٥٧].

गया या उसके क़रीब वक़्त हुआ। उन्होंने सूरज से फ़र्माया कि तू भी अल्लाह के फ़र्मान के ताबेअ़ है और मैं भी उसके फ़र्मान के ताबेअ़ हूँ। ऐ अल्लाह! हमारे लिये उसे अपनी जगह पर रोक दे। चुनाँचे सूरज रुक गया, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें फ़तह इनायत फ़र्माई। फिर उन्होंने अम्वाले ग़नीमत को जमा किया और आग उसे जलाने के लिये आई लेकिन जला न सकी, उस नबी ने फ़र्माया कि तुममें से किसी ने माले ग़नीमत में से चोरी की है। इसलिये हर क़बीले का एक आदमी आकर मेरे हाथ पर बेअ़त करे (जब बेअ़त करने लगे तो) एक क़बीला के शख़्स का हाथ उनके हाथ के साथ चिमट गया। उन्होंने फ़र्माया कि चोरी तुम्हारे ही क़बीले वालों ने की है। अब तुम्हारे क़बीले के सब लोग आएँ और बेअ़त करें। चुनाँचे उस क़बीले के दो या तीन आदमियों का हाथ इस तरह उनके हाथ से चिमट गया, तो आपने फ़र्माया कि चोरी तुम्हीं लोगों ने की है। (आख़िर चोरी मान ली गई) और वो लोग गाय के सर की तरह सोने का एक सर लाए (जो ग़नीमत में से चुरा लिया गया था) और उसे माले ग़नीमत में रख दिया, तब आग आई और उसे जला गई। फिर ग़नीमत अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये जाइज़ क़रार दे दी, हमारी कमज़ोरी और आजिज़ी को देखा। इसलिये हमारे वास्ते हलाल क़रार दे दी। (दीगर मक़ाम : 5157)

तश्रीह : हदीष में इस्राईली नबी यूशअ़ अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र है जो जिहाद को निकले थे कि नमाज़े अ़स्र का वक़्त हो गया। उन्होंने दुआ की, अल्लाह ने उनकी दुआ क़ुबूल कर ली, यही वो चीज़ है जिसे मुअजिज़ा कहा जाता है जिसका होना हक़ है। पहले ज़माने में अम्वाले ग़नीमत मुजाहिदीन के लिये हलाल नहीं था बल्कि आसमान से एक आग आती और उसे जला देती जो अल्लाह के नज़दीक क़ुबूलियत की दलील होती थी। अम्वाले ग़नीमत में ख़यानत करना पहले भी गुनाहे अ़ज़ीम था और अब भी यही हुक्म है। मगर उम्मते मुस्लिमा के लिये अल्लाह ने अम्वाले ग़नीमत को हलाल कर दिया है। वो शरीअ़त के हुक्म के मुताबिक़ तक़्सीम होंगे। कम ताक़ती और आजिज़ी से ये मुराद है कि मुसलमान मुफ़्लिस और नादार थे और अल्लाह की बारगाह में आजिज़ी और फ़िरौतनी से हाज़िर होते थे परवरदिगार को उनकी आजिज़ी पसन्द आई और ये सरफ़राज़ी हुई कि ग़नीमत के माल उनके लिये हलाल कर दिये गये।

हम उन बेवक़ूफ़ पादरियों से पूछते हैं जो ग़नीमत का माल लेना बड़ा ऐब जानते हैं कि तुम्हारे मज़हब वाले नसारा तो दूसरों के मुल्क के मुल्क और ख़ज़ाने हज़म कर जाते हैं। डकार तक नहीं लेते। जिस मुल्क को फ़तह करते हैं वहाँ सब मुअज़्ज़ज़ कामों पर अपनी क़ौम वालों को मामूर करते हैं, अहले मुल्क का ज़रा लिहाज़ नहीं रखते फिर ये लूट नहीं तो क्या है। लूट से भी बदतर है। लूट तो घड़ी भर होती है। और ज़ुल्मी इंतिक़ाम तो सैंकड़ों बरस तक होता रहता है। मआ़ज़ अल्लाह! इंजील शरीफ़ की वही मिष़ाल है कि अपनी आँख का तो शहतीर नहीं देखते और दूसरे की आँख का तिनका देखते हैं। (वह़ीदी)

बाब 9 : मालेग़नीमत उन लोगों को मिलेगा जो जंग में हाज़िर हों

٩- بَابُ الْغَنِيمَةُ لِمَنْ شَهِدَ الْوَقْعَةَ

3125. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने ख़बर दी, उन्हें इमाम मालिक ने, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने, उन्हें उनके वालिद ने कि उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, अगर मुसलमानों की आने वाली नस्लों का ख़याल न होता तो जो शहर भी फ़तह होता मैं उसे फ़ातिहों में इसी तरह तक़्सीम कर दिया करता जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर की तक़्सीम की थी। (राजेअ़ : 2334)

٣١٢٥- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((لَوْلاَ آخِرُ الْمُسْلِمِينَ مَا فَتَحْتُ قَرْيَةً إِلاَّ قَسَمْتُهَا بَيْنَ أَهْلِهَا كَمَا قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْبَرَ)). [راجع: ٢٣٣٤]

अकषर अइम्मा का फ़त्वा है कि जीते हुए मुल्क के लिये इमाम को इख़्तियार है वो चाहे तक़्सीम कर दे चाहे मुल्क के ख़ज़ाने के तौर पर रहने दे। लेकिन ये ख़िराज इस्लामी क़ायदे के मुवाफ़िक़ मुसलमानों ही पर ख़र्च किया जाए, या'नी मुहताजों, यतीमों की ख़बरगीरी, जिहाद के सामान और अस्बाब की तैयारी में। ग़र्ज़ ये कि मुल्क का महासिल बादशाह की मिल्क नहीं है बल्कि आम मुसलमानों और ग़ाज़ियों का माल है। बादशाह भी बतौर एक सिपाही के उसमें से अपना खर्च ले सकता है। ये शरई निज़ाम है मगर सद अफ़सोस कि आज ये बेशतर इस्लामी मुमालिक से मफ़्क़ूद है। **फल्यब्कि अलल्इस्लामि इन कान बाकियन**

बाब 10 : अगर कोई ग़नीमत हासिल करने के लिये लड़े (मगर निय्यत दीन की तरक़्क़ी भी हो) तो क्या षवाब कम होगा?

١٠- بَابُ مَنْ قَاتَلَ لِلْمَغْنَمِ هَلْ يَنْقُصُ مِنْ أَجْرِهِ؟

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मतलब इस बाब के लाने से ये है कि जिहाद में अगर अल्लाह का हुक्म बुलन्द करने की निय्यत हो और ज़िम्नन ये ग़र्ज़ भी हो कि माले ग़नीमत भी मिले तो इससे षवाब मे कुछ फ़र्क़ नहीं आता, जैसे जंगे बद्र में सहाबा क़ाफ़िला लूटने की ग़र्ज़ से निकले थे। अल्बत्ता अगर सिर्फ़ लूटमार ही ग़र्ज़ हो दीन की तरक़्क़ी मक़्सूद न हो तो षवाब कम तो क्या बल्कि कुछ भी षवाब नहीं मिलेगा।

3126. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने बयान किया, उन्होंने अबू वाइल से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि एक अअ़राबी (लाहक़ बिन ज़मीरह बाहिली) ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा एक शख़्स है जो ग़नीमत हासिल करने के लिये जिहाद में शरीक हुआ, एक शख़्स है जो इसलिये शिर्कत करता है कि उसकी बहादुरी के चर्चे ज़ुबानों पर आ जाएँ, एक शख़्स इसलिये लड़ता है कि उसकी धाक बैठ जाए, तो उनमें से अल्लाह के रास्ते में कौनसा होगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि जो शख़्स जंग में शिर्कत इसलिये करे ताकि अल्लाह का कलिमा (दीन) ही बुलन्द रहे।

٣١٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى الأَشْعَرِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ أَعْرَابِيٌّ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلْمَغْنَمِ، وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِيُذْكَرَ، وَيُقَاتِلُ لِيُرَى مَكَانُهُ، مَنْ فِي سَبِيلِ اللهِ؟ فَقَالَ: ((مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ اللهِ هِيَ الْعُلْيَا فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللهِ)). [راجع: ١٢٣]

फ़क़त वही अल्लाह के रास्ते में है। (राजेअ : 123)

इस्लामी जिहाद का मक़्सद वाहिद सिर्फ़ शरीअते इलाही की रोशनी में सारी दुनिया में अमन अमान क़ायम करना है, ज़मीन या दौलत का हासिल करना इस्लामी जिहाद का मंशा हर्गिज़ नहीं है। इसलिये तारीख़ से रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर है कि जिन मुल्कों ने इस्लाम के मक़ासिद से इश्तिराक किया, उन मुल्कों के सरबराहों को उनकी जगह पर क़ायम रखा गया। इस हदीष़ में मुजाहिदीने इस्लाम के लिये हिदायत है कि वो अम्वाले ग़नीमत के हुसूल के इरादे से हर्गिज़ जिहाद न करें बल्कि उनकी निय्यत ख़ालिस अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने की होनी ज़रूरी है। यूँ बसूरते फ़तह माले ग़नीमत भी उनको मिलेगा जो एक ज़िम्नी चीज़ है।

बाब 11 : ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन के पास ग़ैर लोग जो तोहफ़े भेजें उनका बांट देना और उनमें से जो लोग मौजूद न हो उनका हिस्सा छुपाकर महफ़ूज़ रखना

١١ - بَابُ قِسْمَةِ الإِمَامِ مَا يَقْدَمُ عَلَيهِ،وَيَخْبَأُ لِمَنْ لَمْ يَحْضُرْهُ أَوْ غَابَ عَنْهُ

3127. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में दीबाज की कुछ क़बाएँ तोहफ़े के तौर पर आई थीं। जिनमें सोने की घण्टियाँ लगी हुई थीं, उन्हें आँहज़रत (ﷺ) ने अपने चन्द अस्हाब में तक़्सीम कर दिया और एक क़बा मख़रमा बिन नौफ़िल (रज़ि.) के लिये रख ली। फिर मख़रमा आए और उनके साथ उनके साहबज़ादे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) भी थे। आप दरवाज़े पर खड़े हो गये और कहा कि मेरा नाम लेकर नबी करीम (ﷺ) को बुला ला। आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी आवाज़ सुनी तो क़बा लेकर बाहर तशरीफ़ लाए और उसकी घण्टियाँ उनके सामने कर दीं। फिर फ़र्माया अबू मिस्वर! ये क़बा मैंने तुम्हारे लिये छुपाकर रख ली थी, अबू मिस्वर! ये क़बा मैंने तुम्हारे लिये छुपाकर रख ली थी। मख़रमा (रज़ि.) ज़रा तेज़ तबीअ़त के आदमी थे। इब्ने उ़लय्या ने अय्यूब के वास्ते से ये हदीष़ (मुर्सलन ही) रिवायत की है। और हातिम बिन वरदान ने बयान किया कि हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने उनसे मिस्वर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के यहाँ कुछ क़बाएँ आई थीं, इस रिवायत की मुताबअ़त लैष़ ने इब्ने अबी मुलैका से की है। (राजेअ : 2599)

٣١٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أُهْدِيَتْ لَهُ أَقْبِيَةٌ مِنْ دِيبَاجٍ مُزَرَّرَةٌ بِالذَّهَبِ، فَقَسَمَهَا فِي أُنَاسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ، وَعَزَلَ مِنْهَا وَاحِدًا لِمَخْرَمَةَ بْنِ نَوفَلٍ، فَجَاءَ وَمَعَهُ ابْنُهُ الْمِسْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ، فَقَامَ عَلَى الْبَابِ، فَقَالَ: ادْعُهُ لِي، فَسَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ صَوتَهُ فَأَخَذَ قَبَاءً فَتَلَقَّاهُ بِهِ وَاسْتَقْبَلَهُ بِأَزْرَارِهِ فَقَالَ: ((يَا أَبَا الْمِسْوَرِ خَبَأْتُ هَذَا لَكَ، يَا أَبَا الْمِسْوَرِ خَبَأْتُ هَذَا لَكَ)) وَكَانَ فِي خُلُقِهِ شِدَّةٌ. وَرَوَاهُ ابْنُ عُلَيَّةَ عَنْ أَيُّوبَ وَقَالَ حَاتِمُ بْنُ وَرْدَانَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمِسْوَرِ ((قَدِمَتْ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَقْبِيَةٌ)). تَابَعَهُ اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ.

[راجع: ٢٥٩٩]

तश्रीह : हातिम बिन वरदान की रिवायत को ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब शहादतुल आ़मा में वस्ल किया है। मख़रमा (रज़ि.) में तबई गुस्सा था। जल्दी से गर्म हो जाते जैसे अकष़र तुनक मिज़ाज लोग होते हैं। इस हदीष़ से मा'लूम

हुआ कि इमाम या बादशाह को काफ़िर लोग जो तोह़फ़े तह़ाइफ़ भेजें उनका लेना इमाम को दुरुस्त है। और उसको इख़्तियार है कि जो चाहे ख़ुद रखे जो चाहे जिसको दे, ग़ैरों के तोहफ़े क़ुबूल करना भी इससे षाबित हुआ।

बाब 12 : नबी करीम (ﷺ) ने बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर की जायदाद किस त़रह तक़्सीम की थी?

और अपनी ज़रूरतों मे उनको कैसे खर्च किया?

١٢– بَابُ كَيْفَ قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ قُرَيْضَةَ وَالنَّضِيْرَ، وَمَا أَعْطَى مِنْ ذَلِكَ مِنْ نَوَائِبِهِ

3128. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबुल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर ने बयान किया, उनसे उनके बाप सुलैमान ने, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि स़ह़ाबा (अंसार) कुछ खजूर के पेड़ नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बत़ौरे तोह़फ़ा दे दिया करते थे लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर के क़बीलों पर फ़तह दी तो आँह़ज़रत (ﷺ) उसके बाद इस त़रह के हदये वापस फ़र्मा दिया करते थे। (राजेअ़ : 2630)

٣١٢٨– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ قَالَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كَانَ الرَّجُلُ يَجْعَلُ لِلنَّبِيِّ ﷺ النَّخَلاَتِ حَتَّى افْتَتَحَ قُرَيْظَةَ وَالنَّضِيْرَ، فَكَانَ بَعْدَ ذَلِكَ يَرُدُّ عَلَيْهِمْ)). [راجع: ٢٦٣٠]

तश्रीह : जब मुहाजिरीन अव्वल अव्वल मदीना में आए तो अकष़र नादार और मुह़ताज थे, अंसार ने अपने बाग़ात में उनको शरीक कर लिया था, आँह़ज़रत (ﷺ) को भी कई पेड़ दिये गए थे। जब बनी क़ुरैज़ा और बनी नज़ीर के बाग़ात बिन लड़े–भिड़े आँह़ज़रत (ﷺ) के क़ब्ज़े में आए तो वे आपका माल थे, मगर आपने उनसे कई बाग़ मुहाजिरीन में तक़्सीम कर दिये और उनको ये हुक्म दिया कि अब अंसार के बाग़ और पेड़ जो उन्होंने तुमको दिये थे, वो उनको वापस कर दो, और कई बाग़ आपने ख़ास अपने लिये रखे। उसमें से जिहाद का सामान किया जाता और दूसरी ज़रूरियात मष़लन आपकी बीवियों का खर्चा वग़ैरह पूरे किये जाते, ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये ह़दीष़ ज़िक्र करके उसी पूरे ख़र्च की त़रफ़ इशारा किया है जिससे बाब का मत़लब बख़ूबी निकलता है। (वह़ीदी)

बाब 13 : अल्लाह पाक ने मुजाहिदीने किराम को जो आँह़ज़रत (ﷺ) या दूसरे बादशाहाने इस्लाम के साथ होकर लड़े कैसी बरकत दी थी, उसका बयान

١٣– بَابُ بَرَكَةِ الْغَازِي فِي مَالِهِ حَيًّا وَمَيِّتًا، مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَوُلاَةِ الأَمْرِ

3129. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू उसामा से पूछा, क्या आप लोगों से हिशाम बिन उ़र्वा ने ये ह़दीष़ अपने वालिद से बयान की है कि उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा कि जमल की जंग के मौक़े पर जब ज़ुबैर (रज़ि.) खड़े हुए तो मुझे बुलाया मैं उनके पहलू में जाकर खड़ा हो गया, उन्होंने कहा बेटे! आज की लड़ाई में ज़ालिम मारा जाएगा या

٣١٢٩– حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: قُلْتُ لأَبِي أُسَامَةَ : أَحَدَّثَكُمْ هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ؟ قَالَ: ((لَمَّا وَقَفَ الزُّبَيْرُ يَوْمَ الْجَمَلِ دَعَانِي فَقُمْتُ إِلَى جَنْبِهِ فَقَالَ: يَا بُنَيَّ إِنَّهُ

لاَ يُقْتَلُ الْيَومَ إِلاَّ ظَالِمٌ أَوْ مَظْلُومٌ، وَإِنِّي لاَ أُرَانِي إِلاَّ سَأُقْتَلُ الْيَومَ مَظْلُومًا، وَإِنَّ مِنْ أَكْبَرِ هَمِّي لَدَيْنِي، أَفَتَرَى يُبْقِي دَيْنُنَا مِنْ مَالِنَا شَيْئًا؟ فَقَالَ : يَا بُنَيَّ، بِعْ مَا لَنَا، فَاقْضِ دَيْنِي. وَأَوْصَى بِالثُّلُثِ، وَثُلُثُهُ لِبَنِيهِ - يَعْنِي بَنِي عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، يَقُولُ : ثُلُثُ الثُّلُثِ - فَإِنْ فَضَلَ مِنْ مَالِنَا فَضْلٌ بَعْدَ قَضَاءِ الدَّيْنِ شَيْءٌ فَثُلُثُهُ لِوَلَدِكَ. قَالَ هِشَامٌ: وَكَانَ بَعْضُ وَلَدِ عَبْدِ اللهِ قَدْ وَازَى بَعْضَ بَنِي الزُّبَيْرِ - خُبَيْبٌ وَعَبَّادٌ - وَلَهُ يَومَئِذٍ تِسْعَةُ بَنِينَ وَتِسْعُ بَنَاتٍ. قَالَ عَبْدُ اللهِ فَجَعَلَ يُوصِينِي بِدَيْنِهِ وَيَقُولُ: يَا بُنَيَّ إِنْ عَجَزْتَ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ فَاسْتَعِنْ عَلَيْهِ مَوْلاَيَ. قَالَ: فَوَ اللهِ مَا دَرَيْتُ مَا أَرَادَ حَتَّى قُلْتُ: يَا أَبَتِ مَنْ مَوْلاَكَ؟ قَالَ: اللهُ. قَالَ: فَوَ اللهِ مَا وَقَعْتُ فِي كُرْبَةٍ مِنْ دَيْنِهِ إِلاَّ قُلْتُ: يَا مَوْلَى الزُّبَيْرِ اقْضِ عَنْهُ دَيْنَهُ، فَيَقْضِيهِ. فَقُتِلَ الزُّبَيْرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَلَمْ يَدَعْ دِينَارًا وَلاَ دِرْهَمًا، إِلاَّ أَرَضِينَ مِنْهَا الْغَابَةُ، وَإِحْدَى عَشْرَةَ دَارًا بِالْمَدِينَةِ، وَدَارَيْنِ بِالْبَصْرَةِ، وَدَارًا بِالْكُوفَةِ، وَدَارًا بِمِصْرَ. قَالَ: وَإِنَّمَا كَانَ دَيْنُهُ الَّذِي عَلَيْهِ إِنَّ الرَّجُلَ كَانَ يَأْتِيهِ بِالْمَالِ فَيَسْتَودِعُهُ إِيَّاهُ، فَيَقُولُ الزُّبَيْرُ: لاَ، وَلَكِنَّهُ سَلَفٌ، فَإِنِّي أَخْشَى عَلَيْهِ الضَّيْعَةَ. وَمَا وَلِيَ إِمَارَةً قَطُّ وَلاَ جِبَايَةَ خَرَاجٍ وَلاَ شَيْئًا إِلاَّ أَنْ يَكُونَ فِي غَزْوَةٍ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ أَوْ مَعَ أَبِي

मज़्लूम और मैं समझता हूँ कि आज मैं मज़्लूम क़त्ल किया जाऊँगा और मुझे सबसे ज़्यादा फ़िक्र अपने क़र्ज़ों की है। क्या तुम्हें भी कुछ अंदाज़ा है कि क़र्ज़ अदा करने के बाद हमारा कुछ माल बच सकेगा? फिर उन्होंने कहा बेटे! हमारा माल बेच करके उससे क़र्ज़ अदा कर देना। उसके बाद उन्होंने एक तिहाई की मेरे लिये और उस तिहाई के तीसरे हिस्से की वसिय्यत मेरे बच्चों के लिये की, या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के बच्चों के लिये। उन्होंने फ़र्माया था कि उस तिहाई के तीन हिस्से कर लेना और अगर क़र्ज़ की अदायगी के बाद हमारे अम्वाल मे से कुछ बच जाए तो उसका एक तिहाई तुम्हारे बच्चों के लिये होगा। हिशाम रावी ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) के कुछ लड़के ज़ुबैर (रज़ि.) के लड़कों के हम उ़म्र थे। जैसे ख़ुबैब और अ़ब्बाद। और ज़ुबैर (रज़ि.) के उस वक़्त नौ लड़के और नौ लड़कियाँ थीं। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर ज़ुबैर (रज़ि.) मुझे अपने क़र्ज़ के सिलसिले में वसिय्यत करने लगे और फ़र्माने लगे कि बेटा! अगर क़र्ज़ अदा करने से आ़जिज़ हो जाए तो मेरे मालिक व मौला से उसमें मदद चाहना। अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि क़सम अल्लाह की! मैं उनकी बात न समझ सका, मैंने पूछा कि बाबा आपके मौला कौन हैं? उन्होंने फ़र्माया कि अल्लाह पाक! अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया, क़सम अल्लाह की! क़र्ज़ अदा करने मे जो भी दुश्वारी सामने आई तो मैंने उसी त़रह दुआ की, कि ऐ ज़ुबैर के मौला! उनकी त़रफ़ से उनका क़र्ज़ अदा करा दे और अदायगी की सूरत पैदा हो जाती थी। चुनाँचे जब ज़ुबैर (रज़ि.) (उसी मौक़े पर) शहीद हो गये तो उन्होंने तर्का में दिरहम व दीनार नहीं छोड़े बल्कि उनका तर्का कुछ तो अराज़ी की सूरत मे था और उसी में ग़ाबा की ज़मीन भी शामिल थी। ग्यारह मकानात मदीना में थे, दो मकान बस़रा में थे, एक मकान कूफ़ा में था और एक मिस्र में था। अ़ब्दुल्लाह ने बयान कियाकि उन पर जो इतना सारा क़र्ज़ हो गया था उसकी सूरत ये हुई थी कि जब उनके पास कोई शख़्स़ अपना माल लेकर अमानत रखने आता तो आप उससे कहते कि नहीं अल्बत्ता उस सूरत में रख सकता हूँ कि ये मेरे ज़िम्मे बत़ौरे क़र्ज़ रहे क्योंकि मुझे उसके ज़ाये होने का भी डर है। ह़ज़रत ज़ुबैर

(रज़ि.) किसी इलाक़े के अमीर कभी नहीं बने थे। न वो ख़िराज वसूल करने पर कभी मुक़र्रर हुए और न कोई दूसरा ओहदा उन्होंने क़ुबूल किया, अल्बत्ता उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ और अबूबक्र व उमर और उष्मान (रज़ि.) के साथ जिहादों में शिर्कत की थी। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा कि जब मैंने उस रक़म का हिसाब लगाया जो उन पर क़र्ज़ थी तो उसकी ता'दाद बाईस लाख थी। बयान किया कि फिर ह़कीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से मिले तो पूछा, बेटे! मेरे (दीनी) भाई पर कितना क़र्ज़ रह गया है? अ़बदुल्लाह (रज़ि.) ने छुपाना चाहा और कह दिया कि एक लाख, उस पर ह़कीम (रज़ि.) ने कहा क़सम अल्लाह की! मैं तो नहीं समझता कि तुम्हारे पास मौजूद सरमाया से ये क़र्ज़ अदा हो सकेगा। अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अब कहा, कि अगर क़र्ज़ की ता'दाद बाईस लाख हुई फिर आपकी क्या राय होगी? उन्होंने फ़र्माया फिर तो ये क़र्ज़ तुम्हारी बर्दाश्त से भी बाहर है। ख़ैर अगर कोई दुश्वारी पेश आए तो मुझसे कहना, अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) ने ग़ाबा की जायदाद एक लाख सत्तर हज़ार में खरीदी थी, लेकिन अ़ब्दुल्लाह ने वो सोलह लाख में बेची। फिर उन्होंने ऐलान किया कि ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) पर जिसका क़र्ज़ हो वो ग़ाबा में आकर हमसे मिल ले, चुनाँचे अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) आए, उनका ज़ुबैर (रज़ि.) पर चार लाख रुपया चाहिये था। उन्होंने तो यही पेशकश की कि अगर तुम चाहो तो मैं ये क़र्ज़ छोड़ सकता हूँ, लेकिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि नहीं फिर उन्होंने कहा कि अगर तुम चाहो तो मैं सारे क़र्ज़ की अदायगी के बदले लूँगा। अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने इस पर भी यही कहा कि ताख़ीर की भी कोई ज़रूरत नहीं। आख़िर उन्होंने कहा कि फिर इस ज़मीन में मेरे हिस्से का क़ित़आ (टुकड़ा) मुक़र्रर करो। अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि आप अपने क़र्ज़ में यहाँ से यहाँ तक ले लीजिए। (रावी ने) बयान किया कि ज़ुबैर (रज़ि.) की जायदाद और मकानात वग़ैरह बेचकर उनका क़र्ज़ अदा कर दिया गया। और सारे क़र्ज़ की अदायगी हो गई। ग़ाबा की जायदाद में साढ़े चार हिस्से अभी बिक नहीं सके थे। इसलिये अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) मुआविया (रज़ि.) के यहाँ (शाम) तशरीफ़ ले गये, वहाँ

بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ. قَالَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ الزُّبَيْرِ: فَحَسَبْتُ مَا عَلَيْهِ مِنَ الدَّيْنِ فَوَجَدْتُهُ أَلْفَي أَلْفٍ وَمِائَتَي أَلْفٍ قَالَ: فَلَقِيَ حَكِيمُ بْنُ حِزَامٍ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ الزُّبَيْرِ فَقَالَ: يَا ابْنَ أَخِي: كَمْ عَلَى أَخِي مِنَ الدَّيْنِ؟ فَكَتَمَهُ فَقَالَ مِائَةُ أَلْفٍ. فَقَالَ حَكِيمٌ: وَاللّٰهِ مَا أَرَى أَمْوَالَكُمْ تَسَعُ لِهَذِهِ. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللّٰهِ: أَفَرَأَيْتَكَ إِنْ كَانَتْ أَلْفَي أَلْفٍ وَمِائَتَي أَلْفٍ؟ قَالَ: مَا أُرَاكُمْ تُطِيقُونَ هَذَا، فَإِنْ عَجَزْتُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ فَاسْتَعِينُوا بِي. قَالَ: وَكَانَ الزُّبَيْرُ اشْتَرَى الْغَابَةَ بِسَبْعِينَ وَمِائَةِ أَلْفٍ. فَبَاعَهَا عَبْدُ اللّٰهِ بِأَلْفِ أَلْفٍ وَسِتِّمِائَةِ أَلْفٍ : ثُمَّ قَامَ فَقَالَ : مَنْ كَانَ لَهُ عَلَى الزُّبَيْرِ حَقٌّ فَلْيُوَافِنَا بِالْغَابَةِ. فَأَتَاهُ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ جَعْفَرٍ – وَكَانَ لَهُ عَلَى الزُّبَيْرِ أَرْبَعُمِائَةِ أَلْفٍ – فَقَالَ لِعَبْدِ اللّٰهِ: إِنْ شِئْتُمْ تَرَكْتُهَا لَكُمْ. قَالَ عَبْدُ اللّٰهِ : لاَ. قَالَ : فَإِنْ شِئْتُمْ جَعَلْتُمُوهَا فِيمَا تُؤَخِّرُونَ إِنْ أَخَّرْتُمْ. فَقَالَ عَبْدُ اللّٰهِ: لاَ. قَالَ: قَالَ: فَاقْطَعُوا لِي قِطْعَةً. فَقَالَ عَبْدُ اللّٰهِ: لَكَ مِنْ هَا هُنَا إِلَى هَا هُنَا. قَالَ فَبَاعَ مِنْهَا فَقَضَى دَيْنَهُ فَأَوْفَاهُ. وَبَقِيَ مِنْهَا أَرْبَعَةُ أَسْهُمٍ وَنِصْفٌ، فَقَدِمَ عَلَى مُعَاوِيَةَ – وَعِنْدَهُ عَمْرُو بْنُ عُثْمَانَ وَالْمُنْذِرُ بْنُ الزُّبَيْرِ، وَابْنُ زَمْعَةَ – فَقَالَ لَهُ مُعَاوِيَةُ: كَمْ قُوِّمَتِ الْغَابَةُ : قَالَ : كُلُّ سَهْمٍ مِائَةُ أَلْفٍ. قَالَ: كَمْ بَقِيَ؟ قَالَ: أَرْبَعَةُ أَسْهُمٍ وَنِصْفٌ. قَالَ

الْمُنْذِرُ بْنُ الزُّبَيْرِ: قَدْ أَخَذْتُ سَهْمًا بِمِائَةِ أَلْفٍ. قَالَ عَمْرُو بْنُ عُثْمَانَ: قَدْ أَخَذْتُ سَهْمًا بِمِائَةِ أَلْفٍ. وَقَالَ ابْنُ زَمْعَةَ: قَدْ أَخَذْتُ سَهْمًا بِمِائَةِ أَلْفٍ. فَقَالَ مُعَاوِيَةُ كَمْ بَقِيَ؟ فَقَالَ: سَهْمٌ وَنِصْفٌ. قَالَ: أَخَذْتُهُ بِخَمْسِينَ وَمِائَةِ أَلْفٍ. قَالَ: وَبَاعَ عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ نَصِيبَهُ مِنْ مُعَاوِيَةَ بِسِتِّمِائَةِ أَلْفٍ. فَلَمَّا فَرَغَ ابْنُ الزُّبَيْرِ مِنْ قَضَاءِ دَيْنِهِ قَالَ بَنُو الزُّبَيْرِ: اقْسِمْ بَيْنَنَا مِيرَاثَنَا. قَالَ: لاَ وَاللهِ لاَ أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ حَتَّى أُنَادِيَ بِالْمَوْسِمِ أَرْبَعَ سِنِينَ: أَلاَ مَنْ كَانَ لَهُ عَلَى الزُّبَيْرِ دَيْنٌ فَلْيَأْتِنَا فَلْنَقْضِهِ. قَالَ: فَجَعَلَ كُلَّ سَنَةٍ يُنَادِي بِالْمَوْسِمِ. فَلَمَّا مَضَى أَرْبَعُ سِنِينَ قَسَمَ بَيْنَهُمْ. قَالَ: فَكَانَ لِلزُّبَيْرِ أَرْبَعُ نِسْوَةٍ، وَرَفَعَ الثُّلُثَ فَأَصَابَ كُلَّ امْرَأَةٍ أَلْفُ أَلْفٍ وَمِائَتَا أَلْفٍ)). فَجَمِيعُ مَالِهِ خَمْسُونَ أَلْفَ أَلْفٍ وَمِائَتَا أَلْفٍ.

अ़म्र बिन उ़ष्मान, मुंज़िर बिन ज़ुबैर और इब्ने ज़म्आ भी मौजूद थे। मुआ़विया (रज़ि.) ने उनसे पूछा कि ग़ाबा की जायदाद की क़ीमत कितनी तै हुई, उन्होंने बताया कि हर हिस्से की क़ीमत एक लाख तय पाई थी। मुआ़विया (रज़ि.) ने पूछा कि अब बाक़ी कितने हिस्से रह गये हैं? उन्होंने बताया कि साढ़े चार हिस्से, इस पर मुंज़िर बिन ज़ुबैर ने कहा कि एक हिस्सा एक लाख में मैं लेता हूँ, अ़म्र बिन उ़ष्मान ने कहा कि एक हिस्सा एक लाख में मैं लेता हूँ। इब्ने ज़म्आ ने कहा कि एक हिस्सा एक लाख में मैं लेता हूँ, उसके बाद मुआ़विया (रज़ि.) ने पूछा कि अब कितने हिस्से बाक़ी बचे हैं? उन्होंने कहा कि डेढ़ हिस्सा! मुआ़विया (रज़ि.) ने कहा कि फिर उसे मैं डेढ़ लाख में लेता हूँ। बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) ने अपना हिस्सा बाद में मुआ़विया (रज़ि.) को छः लाख में बेच दिया। फिर जब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) का क़र्ज़ की अदायगी कर चुके तो ज़ुबैर (रज़ि.) की औलाद ने कहा कि अब हमारी मीराष़ तक़्सीम कर दीजिए, लेकिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया, कि अभी तुम्हारी मीराष़ उस वक़्त तक तक़्सीम नहीं कर सकता, जब तक चार साल तक अय्यामे ह़ज्ज में ऐलान न करा लूँ कि जिस शख़्स का भी ज़ुबैर (रज़ि.) पर क़र्ज़ हो वो हमारे पास आए और अपना क़र्ज़ ले जाए, रावी ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अब हर साल अय्यामे ह़ज्ज में इसका ऐलान कराना शुरू किया और जब चार साल गुज़र गये तो अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उनकी मीराष़ तक़्सीम कर दी, रावी ने बयान किया कि ज़ुबैर (रज़ि.) की चार बीवियाँ थीं और अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने (वसिय्यत के मुत़ाबिक़) तिहाई हिस्सा बची हुई रक़म में से निकाल लिया था, फिर भी हर बीवी के हिस्से में बारह बारह लाख की रक़म आई, और कुल जायदाद ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) की पाँच करोड़ दो लाख हुई।

तश्रीह : ये ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अ़वाम (रज़ि.) हैं, कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह क़ुरैशी है। उनकी वालिदा ह़ज़रत स़फ़िया (रज़ि.) अ़ब्दुल मुत्तलिब की बेटी और आँह़ज़रत (ﷺ) की फूफी हैं ये और उनकी वालिदा शुरू ही में इस्लाम ले आए थे। जबकि उनकी उ़म्र सोलह साल की थी। ये तमाम ग़ज़्वात में आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ रहे। अ़शर–ए–मुबश्शरह में से हैं। जंगे जमल में शहीद हुए, ये जंग ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के दरम्यान माहे जमादिल अव्वल 36 हिजरी में बाबुल बस़रा में हुई थी। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ऊँट पर सवार थीं इसलिये इसका नाम जंगे जमल रखा गया। लड़ाई की वजह ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) का ख़ूने नाह़क़ था। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) क़ातिलीने उ़ष्मान (रज़ि.) से क़िस़ास़ की त़लबगार थीं। ये जंग इसी बिना पर हुई।

इस ह़दीष़ के ज़ेल मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम फ़र्माते हैं :–

जंगे जमल 36 हिजरी में हुई, जो मुसलमानों की ख़ानाजंगी (गृहयुद्ध) की बदतरीन मिष़ाल है, फ़रीक़ेन में एक त़रफ़ सरबराह ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) थे और दूसरी त़रफ़ ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) थीं। ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के साथ थे। हुआ ये था कि ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) के क़ातिल ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के लश्कर में शरीक हो गये थे। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) और उनके साथी ये चाहते थे कि वो क़ातिलीने उ़ष़्मान फ़ौरन उनके ह़वाले कर दिये जाएँ ताकि उनसे क़िस़ास़ लिया जाए। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ये फ़र्माते थे कि जब तक अच्छी त़रह़ दरयाफ़्त और तह़क़ीक़ न हो मैं किस त़रह़ किसी को तुम्हारे ह़वाले कर सकता हूँ कि तुम उनका ख़ून नाह़क़ करो। यही झगड़ा था जो समझने और समझाने से त़ै न हुआ। दोनों त़रफ़ वालों को जोश था। आख़िर नौबत जंग तक पहुँची बाक़ी ख़िलाफ़त की कोई तकरार न थी। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के साथ जो स़ह़ाबा (रज़ि.) थे वो सब ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की ख़िलाफ़त तस्लीम कर चुके थे।

जब लड़ाई शुरू हुई तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को बुलाकर आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़दीष़ याद दिलाई कि ज़ुबैर एक दिन ऐसा होगा, तुम अ़ली (रज़ि.) से लड़ोगे और तुम ज़ालिम होगे। ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) ये ह़दीष़ सुनते ही मैदाने जंग से लौट गये। रास्ते में ये एक मुक़ाम पर सो गये। अ़म्र बिन जरमूज़ मर्दूद ने वादी अस् सबाअ़ में सोते हुए उनको क़त्ल कर दिया और उनका सर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के पास लाया। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना है कि ज़ुबैर (रज़ि.) का क़ातिल दोज़ख़ी है।

बाब 14 : अगर इमाम किसी शख़्स़ को सिफ़ारत पर भेजे या किसी ख़ास़ जगह ठहरने का हुक्म दे तो क्या उसका भी ह़िस्स़ा (ग़नीमत में) होगा?

١٤– بَابُ إِذَا بَعَثَ الإِمَامُ رَسُولاً فِي حَاجَةٍ، أَو أَمَرَهُ بِالْمَقَامِ، هَلْ يُسْهَمُ لَهُ؟

3130. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, कहा हमसे उ़ष़्मान बिन मौहब ने बयान किया, और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में शरीक न हो सके थे। उनके निकाह़ में रसूले करीम (ﷺ) की एक साहबज़ादी थीं और वो बीमार थीं। उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें भी उतना ही ष़वाब मिलेगा जितना बद्र में शरीक होने वाले किसी शख़्स़ को, और उतना ही ह़िस्स़ा भी मिलेगा। (दीगर मक़ाम : 3698, 3704, 4066, 4513, 4514, 4566, 4650, 4651, 7095)

٣١٣٠– حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَوْهَبٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِنَّمَا تَغَيَّبَ عُثْمَانُ عَنْ بَدْرٍ فَإِنَّهُ كَانَ تَحْتَهُ بِنْتُ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَكَانَتْ مَرِيْضَةً، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ لَكَ أَجْرَ رَجُلٍ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا وَسَهْمَهُ)).

[أطرافه في: ٣٦٩٨، ٣٧٠٤، ٤٠٦٦، ٤٥١٣، ٤٥١٤، ٤٥٦٦، ٤٥١٣، ٤٥١٤، ٤٦٥٠، ٤٦٥١، ٧٠٩٥].

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने इसी ह़दीष़ के मुवाफ़िक़ हुक्म दिया है कि जो शख़्स़ इमाम के हुक्म से बाहर गया हो, या ठहर गया हो उसका भी ह़िस्स़ा माले ग़नीमत में लगाया जाए और इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम मालिक (रह.) और अह़मद (रह.) इसके ख़िलाफ़ कहते हैं और इस ह़दीष़ को ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) के ह़क़ में ख़ास़ क़रार देते हैं।

बाब 15 : इस बात की दलील कि पाँचवाँ

١٥– بَابُ وَمِنَ الدَّلِيْلِ عَلَى أَنَّ

हिस्सा मुसलमानों की ज़रूरतों के लिये है वो वाक़िया है कि हवाज़िन की क़ौम ने

الْخُمُسَ لِنَوَائِبِ الْمُسْلِمِينَ مَا سَأَلَ هَوَازِنُ النَّبِيَّ ﷺ

अपने दूध नाते की वजह से जो आँहज़रत (ﷺ) के साथ था, आपसे दरख़्वास्त की, उनके माल क़ैदी वापस हों तो आपने लोगों से मुआफ़ कराया कि अपना हक़ छोड़ दो और ये भी दलील है कि आप (ﷺ) लोगों को उस माल में से देने का वा'दा करते जो बिला जंग हाथ आया था और ख़ुमुस में से इन्आम देने का और ये भी दलील है कि आपने ख़ुमुस में से अंसार को दिया और जाबिर (रज़ि.) को ख़ैबर की खजूर दी।

-بِرَضَاعِهِ فِيهِمْ- فَتَحَلَّلَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ، وَمَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَعِدُ النَّاسَ أَنْ يُعْطِيَهُمْ مِنَ الْفَيْءِ وَالأَنْفَالِ مِنَ الْخُمُسِ، وَمَا أَعْطَى الأَنْصَارَ، وَمَا أَعْطَى جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ تَمْرَ خَيْبَرَ.

3131,32. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझको लैष़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि उ़र्वा कहते थे कि मरवान बिन ह़कम और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि जब हवाज़िन का वफ़्द रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपने मालों और क़ैदियों की वापसी का सवाल किया, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि सच्ची बात मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है। उन दोनों चीज़ों मे से तुम एक ही वापस ले सकते हो। अपने क़ैदी वापस ले लो या फिर माल ले लो, और मैंने तुम्हारा इंतिज़ार भी किया। आँहज़रत (ﷺ) ने तक़्रीबन दस दिन तक त़ाइफ़ से वापसी पर उनका इंतिज़ार किया और जब ये बात उन पर वाज़ेह हो गई कि आँहज़रत (ﷺ) उनकी सिर्फ़ एक ही चीज़ (क़ैदी या माल) वापस कर सकते हैं तो उन्होंने कहा कि हम अपने क़ैदी ही वापस लेना चाहते हैं। अब आँहज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों को ख़ित़ाब किया, आप (ﷺ) ने अल्लाह की शान के मुत़ाबिक़ हम्दो-ष़ना बयान करने के बाद फ़र्माया, अम्मा बअ़द! तुम्हारे ये भाई अब हमारे पास तौबा करके आए हैं और मैं मुनासिब समझता हूँ कि उनके क़ैदी उन्हें वापस कर दिये जाएँ। इसीलिये जो शख़्स अपनी ख़ुशी से गनीमत के अपने हिस्से के (क़ैदी) वापस करना चाहता है वो कर दे और जो शख़्स चाहता हो कि उसका हिस्सा बाक़ी रहे और हमें जब उसके बाद सबसे पहली ग़नीमत मिले ता

٣١٣١، ٣١٣٢- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ : حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: وَزَعَمَ عُرْوَةُ أَنَّ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ وَمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ حِيْنَ جَاءَهُ وَفْدُ هَوَازِنَ مُسْلِمِينَ فَسَأَلُوهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَسَبْيَهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَحَبُّ الْحَدِيْثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ، فَاخْتَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ: إِمَّا السَّبْيَ وَإِمَّا الْمَالَ، وَقَدْ كُنْتُ اسْتَأْنَيْتُ بِهِمْ)) - وَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ انْتَظَرَ آخِرَهُمْ بِضْعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً حِيْنَ قَفَلَ مِنَ الطَّائِفِ - فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ غَيْرُ رَادٍّ إِلَيْهِمْ إِلاَّ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ قَالُوا: فَإِنَّا نَخْتَارُ سَبْيَنَا، فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي الْمُسْلِمِينَ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ هَؤُلاَءِ قَدْ جَاءُونَا تَائِبِيْنَ، وَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ

إِلَيْهِمْ سَبْيَهُمْ، مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُطَيِّبَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نُعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ أَوَّلِ مَا يُفِيءُ اللهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ)). فَقَالَ النَّاسُ قَدْ طَيَّبْنَا ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ لَهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّا لاَ نَدْرِي مَنْ أَذِنَ مِنْكُمْ فِي ذَلِكَ مِمَّنْ لَمْ يَأْذَنْ، فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا عُرَفَاؤُكُمْ أَمْرَكُمْ))، فَرَجَعَ النَّاسُ. فَكَلَّمَهُمْ عُرَفَاؤُهُمْ ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ قَدْ طَيَّبُوا فَأَذِنُوا. فَهَذَا الَّذِي بَلَغَنَا عَنْ سَبْيِ هَوَازِنَ)).

[راجع: ٢٣٠٧، ٢٣٠٨]

उसमें से उसके ह़िस्से की अदायगी कर दी जाए तो वे भी अपने क़ैदी वापस कर दे, (और जब हमें दूसरी ग़नीमत मिलेगी तो उसका ह़िस्सा अदा कर दिया जाएगा) इस पर सह़ाबा किराम (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम अपनी ख़ुशी से उन्हें अपने ह़िस्से वापस कर देते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन हमें ये मा'लूम न हो सका कि किन लोगों ने अपनी ख़ुशी से इजाज़त दी और किन लोगों ने नहीं दी है। इसलिये सब लोग (अपने ख़ैमों में) वापस चले जाएँ और तुम्हारे सरदार लोग तुम्हारी बात हमारे सामने आकर बयान करें। सब लोग वापस चले गये और उनके सरदारों ने इस मसले पर बातचीत की और फिर आँह़ज़रत (ﷺ) को आकर ख़बर दी कि सब लोग ख़ुशी से इजाज़त देते हैं। यही वो ख़बर है जो हवाज़िन के क़ैदियों के सिलसिले में हमें मा'लूम हुई है। (राजेअ : 2307, 2308)

तश्रीह : क़ौमे हवाज़िन में आप (ﷺ) की अव्वलीन दाया ह़लीमा सअ़दिया थीं। इब्ने इस्ह़ाक़ ने मग़ाज़ी में निकाला है कि हवाज़िन वालों ने आँह़ज़रत (ﷺ) से यूँ अ़र्ज़ किया था आप उन औरतों पर एह़सान कीजिए जिनका आपने दूध पिया है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसी बिना पर हवाज़िन वालों को भाई क़रार दिया और मुजाहिदीन से फ़र्माया कि वो अपने अपने ह़िस्से के लौण्डी ग़ुलाम इनको वापस कर दें, चुनाचे ऐसा ही किया गया। इस ह़दीष़ में कई एक तमद्दुनी उमूर भी बतलाए गये हैं जिनमे अक़्वाम में नुमाइन्दगी का उसूल भी शामिल है जिसे इस्लाम ने सिखाया है इसी उसूल पर मौजूदा जम्हूरी तर्ज़े ह़ुकूमत वजूद में आया है। इस रिवायत की सनद में मरवान बिन ह़कम का भी नाम आया है, इस पर मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरह़ूम फ़र्माते हैं :–

मरवान ने न तो आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना है, न आप (ﷺ) की सुह़बत ह़ासिल की है। उसके आ़माल बहुत ख़राब थे और इसी वजह से लोगों ने ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) पर त़अ़न किया है कि मरवान से रिवायत करते हैं। ह़ालाँकि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अकेले मरवान से रिवायत नहीं की, बल्कि मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़ि.) के साथ, जो सह़ाबी हैं, रिवायत की है और अकष़र ऐसा भी होता है कि कुछ बुरा शख़्स ह़दीष़ की रिवायत में सच्चा और बाएह़तियात़ होता है तो मुह़द्दिष़ीन इससे रिवायत करते हैं। और कोई शख़्स बहुत नेक और स़ालेह़ होता है लेकिन वो इ़बादत या दूसरे इ़ल्म में मस़रूफ़ रहने की वजह से ह़दीष़ के अल्फ़ाज़ और मतन का ख़ूब ख़्याल नहीं रख पाता है, तो मुह़द्दिष़ीन उससे रिवायत नहीं करते हैं या उसकी रिवायत को ज़ईफ़ जानते हैं। ऐसी बहुत सी मिष़ालें मौजूद हैं। मुज्तहिदीने इ़ज़ाम में कुछ ह़ज़रात तो ऐसे हैं जिनका त़रीक़-ए-कार इस्तिख़्राज व इस्तिम्बाते मसाइल इज्तिहाद के त़रीक़ पर था। कुछ फ़िक़्ह और ह़दीष़ दोनों के जामेअ़ थे। बहरहाल ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) अपनी जगह पर मुज्तहिदे मुत़्लक़ हैं। अगर वो किसी जगह मरवान जैसे लोगों की रिवायत नक़ल करते हैं तो उनके साथ किसी और मुअ़तबर शाहिद को भी पेश कर देते हैं। जो उनके कमाले एह़तियात़ की दलील है और इस बिना पर उन पर त़अ़न करना मह़ज़ तअ़स्सुब और कोरे बात़िनी का षुबूत देना है।

٣١٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ قَالَ حَدَّثَنَا

3133. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा कि हमसे ह़म्माद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान

किया, उनसे अबू क़िलाबा ने बयान किया और (अय्यूब ने एक दूसरी सनद के साथ इस तरह रिवायत की है कि) मुझसे क़ासिम बिन आसिम कुलैबी ने बयान किया और कहा कि क़ासिम की हदीष़ (अबू क़िलाबा की हदीष़ की बनिस्बत) मुझे ज़्यादा अच्छी तरह याद है, ज़हदम से, उन्हों ने बयान किया कि हम अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) की मज्लिस में ह़ाज़िर थे (खाना लाया गया और) वहाँ मुर्ग़ी का ज़िक्र होने लगा। बनी तमीम अल्लाह के एक आदमी सुर्ख़ रंग वाले वहाँ मौजूद थे। ग़ालिबन मवाली में से थे। उन्हें भी अबू मूसा (रज़ि.) ने खाने पर बुलाया, वो कहने लगे कि मैंने मुर्ग़ी को गन्दी चीज़ें खाते एक बार देखा था तो मुझे बड़ी नफ़रत हुई और मैंने क़सम खा ली कि अब कभी मुर्ग़ी का गोश्त न खाऊँगा । ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि क़रीब आ जाओ (तुम्हारी क़सम पर) मैं तुमसे एक ह़दीष़ इस सिलसिले में बयान करता हूँ, क़बीला अशअ़र के चन्द लोगों को साथ लेकर मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में (ग़ज़्व-ए-तबूक़ के लिये) हाज़िर हुआ और सवारी की दरख़्वास्त की। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे लिये सवारी का इंतिज़ाम नहीं कर सकता, क्योंकि मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो तुम्हारी सवारी के काम आ सके, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत मे ग़नीमत के कुछ ऊँट आए, तो आप (ﷺ) ने हमारे बारे में पूछा, और फ़र्माया कि क़बीला अशअ़र के लोग कहाँ हैं ? चुनाँचे आप (ﷺ) ने पाँच ऊँट हमें दिये जाने का हुक्म दिया, ख़ूब मोटे–ताज़े और फ़रबा। जब हम चलने लगे तो हमने आपस में कहा कि जो नामुनासिब त़रीक़ा हमने इख़्तियार किया उससे आँह़ज़रत (ﷺ) के इस अ़तिये मे हमारे लिये कोई बरकत नहीं हो सकती। चुनाँचे हम फिर आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हमने पहले जब आपसे दरख़्वास्त की थी तो आपने क़सम खाकर फ़र्माया था कि मैं तुम्हारी सवारी का इंतिज़ाम नहीं कर सकूँगा। शायद आप हजरत (ﷺ) को वो क़सम याद न रही हो, लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मैंने तुम्हारी सवारी का इंतिज़ाम वाक़ई नहीं किया, वो अल्लाह तआ़ला है जिसने तुम्हें ये सवारियाँ दे दी हैं। अल्लाह की क़सम! तुम उस पर यक़ीन रखो कि इंशाअल्लाह जब भी मैं कोई क़सम खाऊँ, फिर मुझ पर ये बात

أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ. قَالَ: وَحَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ عَاصِمٍ الْكُلَيْبِيُّ - وَأَنَا لِحَدِيثِ الْقَاسِمِ أَحْفَظُ - عَنْ زَهْدَمٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ أَبِي مُوسَى، فَأُتِيَ ذِكْرُ دَجَاجَةٍ وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَيْمِ اللهِ أَحْمَرُ كَأَنَّهُ مِنَ الْمَوَالِي، فَدَعَاهُ لِلطَّعَامِ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُهُ يَأْكُلُ شَيْئًا فَقَذِرْتُهُ فَحَلَفْتُ لاَ آكُلَ. فَقَالَ: هَلُمَّ فَلأُحَدِّثْكُمْ عَنْ ذَلِكَ: إِنِّي أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَفَرٍ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ نَسْتَحْمِلُهُ، فَقَالَ: ((وَاللهِ لاَ أَحْمِلُكُمْ، وَمَا عِنْدِي مَا أَحْمِلُكُمْ)). وَأُتِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنَهْبِ إِبِلٍ فَسَأَلَ عَنَّا فَقَالَ: أَيْنَ النَّفَرُ الأَشْعَرِيُّونَ؟ فَأَمَرَ لَنَا بِخَمْسِ ذَوْدٍ غُرِّ الذُّرَى، فَلَمَّا انْطَلَقْنَا قُلْنَا: مَا صَنَعْنَا؟ لاَ يُبَارَكُ لَنَا. فَرَجَعْنَا إِلَيْهِ فَقُلْنَا: إِنَّا سَأَلْنَاكَ أَنْ تَحْمِلَنَا، فَحَلَفْتَ أَنْ لاَ تَحْمِلَنَا، أَفَنَسِيتَ؟ قَالَ: ((لَسْتُ أَنَا حَمَلْتُكُمْ، وَلَكِنَّ اللهَ حَمَلَكُمْ، وَإِنِّي وَاللهِ إِنْ شَاءَ اللهُ لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلاَّ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَتَحَلَّلْتُهَا)).

[أطرافه في: ٤٣٨٥، ٤٤٥١، ٥٥١٧، ٥٥١٨، ٦٦٢٣، ٦٦٤٩، ٦٦٧٨، ٦٦٨٠، ٦٧١٨، ٦٧١٩، ٦٧٢١، ٧٥٥٥].

ज़ाहिर हो जाए कि बेहतर और मुनासिब तर्ज़े अमल इसके सिवा में है तो मैं वही करूँगा जिसमें अच्छाई होगी और क़सम का कफ़्फ़ारा दे दूँगा। (दीगर मक़ाम : 4385, 4451, 5517, 5518, 6623, 6649, 6678, 6680, 6718, 6719, 6721, 7555)

अबू मूसा का ये मतलब था कि तू ने भी जो क़सम खा ली है कि मुर्ग़ी न खाऊँगा ये क़सम अच्छी नहीं है कि मुर्ग़ी हलाल जानवर है। फ़राग़त से खा और क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर दे, बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने अशअरियों को अपने हिस्से या'नी ख़ुमुस में से ये ऊँट दिये। अबू मूसा और उनके साथियों ने ये ख़्याल किया कि शायद आँहज़रत (ﷺ) को वो क़सम याद न रही हो कि मैं तुमको सवारियाँ नहीं देने का और हमने आपको याद नहीं दिलाया, गोया फ़रेब से हम ये ऊँट ले आए, ऐसे काम में भलाई क्यूँ कर हो सकती है। इसी सफ़ाई के लिये उन्हों ने मुराजिअत की जिससे मामला साफ़ हो गया।

٣١٣٤ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعَثَ سَرِيَّةً فِيهَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ قِبَلَ نَجْدٍ فَغَنِمُوا إِبِلاً كَثِيرَةً، فَكَانَتْ سِهْمَانُهُمْ اثْنَي عَشَرَ بَعِيرًا أَوْ أَحَدَ عَشَرَ بَعِيرًا، وَنُفِّلُوا بَعِيرًا بَعِيرًا)).[طرفه في : ٤٣٣٨].

3134. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नजद की तरफ़ एक लश्कर रवाना किया। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) भी लश्कर के साथ थे। ग़नीमत के तौर पर ऊँटों की एक बड़ी ता'दाद इस लश्कर को मिली इसलिये उसके हर सिपाही को हिस्से में भी बारह बारह ग्यारह ग्यारह ऊँट मिले थे और एक एक ऊँट और इन्आ़म में मिला। (दीगर मक़ाम : 4338)

और ज़ाहिर है कि लश्कर के सरदार ने ये इन्आ़म ख़ुमुस में से दिया होगा। गो ये फ़ेअ़ल लश्कर के सरदार का था मगर आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में हुआ, आप (ﷺ) ने सुना होगा और उस पर सुकूत फ़र्माया तो वो हुज्जत हुआ।

٣١٣٥ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يُنَفِّلُ بَعْضَ مَنْ يَبْعَثُ مِنَ السَّرَايَا لأَنْفُسِهِمْ خَاصَّةً سِوَى قَسْمِ عَامَّةِ الْجَيْشِ)).

3135. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको लैष़ ने ख़बर दी, उन्हें अ़क़ील ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने और उन्हे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) कुछ मुहिमों के मौक़े पर उसमें शरीक होने वालों को ग़नीमत के आ़म हिस्सों के अलावा (ख़ुमुस वग़ैरह में से) अपने तौर पर भी दिया करते थे।

٣١٣٦ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَلَغَنَا مَخْرَجُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ بِالْيَمَنِ، فَخَرَجْنَا

3136. हमसे मुहम्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की हिजरत की ख़बर हमें मिली, तो हम यमन में थे। इसलिये हम भी आपकी ख़िदमत में मुहाजिर की हैष़ियत से हाज़िर होने के लिये रवाना हुए। मैं था, मेरे दो भाई थे।

(मेरी उम्र उन दोनों से कम थी, दोनों भाईयों में) एक अबू बुर्दा (रज़ि.) थे और दूसरे अबू रहम। या उन्होंने ये कहा कि अपनी क़ौम के चन्द अफ़राद के साथ या ये कहा 53 या 52 आदमियों के साथ (ये लोग रवाना हुए थे) हम कश्ती में सवार हुए तो हमारी कश्ती नज्जाशी के मुल्क हब्शा पहुँच गई और वहाँ हमें जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) अपने दूसरे साथियों के साथ मिले। जा'फ़र (रज़ि.) ने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें यहाँ भेजा था और हुक्म दिया था कि हम यहीं रहें। इसलिये आप लोग भी हमारे साथ यहीं ठहर जाएँ। चुनाँचे हम भी वहीं ठहर गये। और फिर सब एक साथ (मदीना) हाज़िर हुए, जब हम ख़िदमते नबवी पहुँचे, तो आँहज़रत (ﷺ) ख़ैबर फ़तह कर चुके थे। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने (दूसरे मुजाहिदों के साथ) हमारा भी हिस्सा माले ग़नीमत में लगाया। या उन्होंने ये कहा कि आपने ग़नीमत में से हमें भी अता किया, हालाँकि आप (ﷺ) ने किसी ऐसे शख़्स का ग़नीमत में हिस्सा नहीं लगाया जो लड़ाई में शरीक न रहा हो। सिर्फ़ उन्हीं लोगों को हिस्सा मिला था, जो लड़ाई मे शरीक हुए थे। अल्बत्ता हमारे कश्ती के साथियों और जा'फ़र और उनके साथियों को भी आपने ग़नीमत में शरीक किया था। (हालाँकि हम लोग लड़ाई में शरीक नहीं हुए थे)। (दीगर मक़ाम : 3876, 4230, 4233)

مُهَاجِرِيْنَ إِلَيْهِ - أَنَا وَأَخَوَانِ لِي أَنَا أَصْغَرُهُمْ: أَحَدُهُمَا أَبُو بُرْدَةَ وَالآخَرُ أَبُورُهْمِ - وَ إِمَّا قَالَ فِي بِضْعٍ وَإِمَّا قَالَ فِي ثَلاَثَةٍ وَخَمْسِيْنَ أَوْ اثْنَيْنِ وَخَمْسِيْنَ رَجُلاً مِنْ قَوْمِي، فَرَكِبْنَا سَفِيْنَةً، فَأَلْقَتْنَا سَفِيْنَتُنَا إِلَى النَّجَاشِيِّ بِالْحَبَشَةِ، وَوَافَقْنَا جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأَصْحَابَهُ عِنْدَهُ، فَقَالَ جَعْفَرٌ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَنَا هَا هُنَا، وَأَمَرَنَا بِالإِقَامَةِ، فَأَقِيْمُوا مَعَنَا. فَأَقَمْنَا مَعَهُ حَتَّى قَدِمْنَا جَمِيْعًا، فَوَافَقْنَا النَّبِيَّ ﷺ حِيْنَ افْتَتَحَ خَيْبَرَ، فَأَسْهَمَ لَنَا - أَوْ قَالَ: فَأَعْطَانَا - مِنْهَا، وَمَا قَسَمَ لأَحَدٍ غَابَ عَنْ فَتْحِ خَيْبَرَ مِنْهَا شَيْئًا، إِلاَّ لِمَنْ شَهِدَ مَعَهُ، إِلاَّ أَصْحَابَ سَفِيْنَتِنَا مَعَ جَعْفَرٍ وَأَصْحَابِهِ، قَسَمَ لَهُمْ مَعَهُمْ)).

[أطرافه في: ٣٨٧٦، ٤٢٣٠، ٤٢٣٣].

ज़ाहिर ये है कि ये हिस्सा आप (ﷺ) ने माले ग़नीमत में से दिलवाया न कि ख़ुमुस में से, फिर बाब की मुनासबत क्यूँकर होगी, मगर जब इमाम को माले ग़नीमत में जो दूसरे मुजाहिदीन का हक़ है ऐसा तसर्रुफ़ करना जाइज़ हुआ तो ख़ुमुस में बतरीक़े औला जाइज़ होगा जो ख़ास़ इमाम के सुपुर्द किया जाता है। पस बाब का मतलब हासिल हो गया।

3137. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय़ना ने, कहा हमसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने, और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जब बहरीन से वसूल होकर मेरे पास माल आएगा तो मैं तुम्हें इस तरह इस तरह, इस तरह (तीन लप) दूँगा उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई और बहरीन का माल उस वक़्त तक नहीं आया। फिर जब वहाँ से माल आया तो अबूबक्र (रज़ि.) के हुक्म से मुनादी ने ऐलान किया कि जिसका भी नबी करीम (ﷺ) पर कोई क़र्ज़ हो या आपका कोई

٣١٣٧- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ لَقَدْ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا)). فَلَمْ يَجِيءْ حَتَّى قُبِضَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَلَمَّا

جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَمَرَ أَبُوبَكْرٍ مُنَادِيًا فَنَادَى: مَن كَانَ لَهُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَيْنٌ أَوْ عِدَةٌ فَلْيَأْتِنَا فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَقَالَ لِيْ كَذَا وَكَذَا. فَحَثَا لِيْ ثَلاثًا. وَجَعَلَ سُفْيَانُ يَحْثُو بِكَفَّيْهِ جَمِيْعًا، ثُمَّ قَالَ لَنَا: هَكَذَا قَالَ لَنَا ابْنُ الْمُنْكَدِرِ. وَقَالَ مَرَّةً فَأَتَيْتُ أَبَا بَكْرٍ فَسَأَلْتُ فَلَمْ يُعْطِنِي ثُمَّ أَتَيْتُهُ فَلَمْ يُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُهُ الثَّالِثَةَ فَقُلْتُ: سَأَلْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي ثُمَّ سَأَلْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، ثُمَّ سَأَلْتُكَ فَلَمْ يُعْطِنِي، فَإِمَّا أَنْ تُعْطِيَنِي وَإِمَّا أَنْ تَبْخَلَ عَنِّي. قَالَ: قُلْتَ تَبْخَلُ عَلَيَّ، مَا مَنَعْتُكَ مِنْ مَرَّةٍ إِلاَّ وَأَنَا أُرِيْدُ أَنْ أُعْطِيَكَ)) قَالَ سُفْيَانُ: وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرٍ فَحَثَا لِي حَثْيَةً وقَالَ: عُدَّهَا، فَوَجَدْتُهَا خَمْسَ مِائَةٍ فَقَالَ: فَخُذْ مِثْلَهَا مَرَّتَيْنِ وقَالَ يَعْنِي ابْنَ الْمُنْكَدِرِ: وَأَيُّ دَاءٍ أَدْوَأُ مِنَ الْبُخْلِ.

वा'दा हो तो हमारे पास आए। मैं अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये फ़र्माया था। चुनाँचे उन्होंने तीन लप भरकर मुझे दिया। सुफ़यान बिन उ़ययना ने अपने दोनों हाथों से इशारा करके (लप भरने की) कैफ़ियत बताई फिर हमसे सुफ़यान ने बयान किया कि इब्ने मुंकदिर ने भी हमसे इसी त़रह़ बयान किया था। और एक बार सुफ़यान ने (साबिक़ा सनद के साथ) बयान किया कि जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि मैं अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो उन्होंने मुझे कुछ नहीं दिया। फिर मैं ह़ाज़िर हुआ, और इस बार भी मुझे कुछ नहीं दिया। फिर मैं तीसरी बार ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि मैंने एक बार आपसे मांगा और आपने इनायत नहीं किया। दोबारा मांगा, फिर भी आपने इनायत नहीं किया और फिर मांगा लेकिन आपने इनायत नहीं किया। अब या आप मुझे दीजिए या फिर मेरे बारे में बुख़्ल से काम लीजिए, ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि तुम कहते हो कि मेरे मामले में बुख़्ल से काम लेता है। हालाँकि तुम्हें देने से जब भी मैंने मुँह फेरा तो मेरे दिल में ये बात होती थी कि तुम्हें कभी न कभी देना ज़रूर है। सुफ़यान ने बयान किया कि हमसे अ़म्र ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन अ़ली ने और उनसे जाबिर ने, फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझे एक लप भरकर दिया और फ़र्माया कि इसे शुमार कर मैंने शुमार किया तो पाँच सौ की ता'दाद थी, उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि इतना ही दो बार और ले ले। और इब्नुल मुंकदिर ने बयान किया (कि अबूबक्र रज़ि. ने फ़र्माया था) बुख़्ल से ज़्यादा बदतरीन और क्या बीमारी हो सकती है।

ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का पहली बार में न देना किसी मस्लिह़त से था ताकि जाबिर (रज़ि.) को मा'लूम हो जाए उसका देना कुछ उन पर बत़ौरे क़र्ज़ के लाज़िम नहीं है बल्कि बत़ौरे तबर्रुअ़ के देना है।

٣١٣٨- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِيْنَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَيْنَمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقْسِمُ

3138. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे कुर्रह बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मक़ामे जिअ़राना में ग़नीमत तक़्सीम कर रहे थे कि एक शख़्स ज़ुल् ख़ुवेसिरा ने आपसे कहा, इंसाफ़ से काम

غَنِيمَةً بِالْجِعْرَانَةِ إِذْ قَالَ لَهُ رَجُلٌ: اعْدِلْ. فَقَالَ لَهُ: ((شَقِيتَ إِنْ لَمْ أَعْدِلْ)).

[راجع: ٢٢٩٦]

लीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मैं भी इंसाफ़ से काम न लूँ तो तू बदबख़्त हुआ। (राजेअ : 2296)

शक़ीत का लफ़्ज़ दोनों तरह मन्क़ूल है या'नी बसैग़ा हाज़िर और बसैग़ा मुतकल्लिम। पहले का मतलब ये है कि अगर मैं ही ग़ैर आदिल (अन्यायी) हूँ तो फिर तू तो बदनसीब हुआ क्योंकि तू मेरा ताबेअ है। जब मुर्शिद और मत्बूअ आदिल न हो तो मुरीद का क्या ठिकाना और ये हदीष आइन्दा पूरे तौर से मज़्कूर होगी। बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुमुस में से अपनी राय के मुवाफ़िक़ किसी को कम ज़्यादा दिया होगा, जब तो ज़ुल् ख़ुवेसिरा ने ये ए'तिराज़ किया, क्योंकि बाक़ी चार हिस्से तो बराबर सब मुजाहिदीन में तक़्सीम होते हैं। मगर उसका ए'तिराज़ ग़लत था कि उसने आँहज़रत (ﷺ) की बाबत ऐसा गुमान किया। जबकि आप (ﷺ) से बढ़कर बनी नोअे इंसान मे कोई आदिल मुंसिफ़ पैदा नहीं हुआ, न होगा।

١٦- بَابُ مَا مَنَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الأَسَارَى مِنْ غَيْرِ أَنْ يُخَمِّسَ

बाब 16 : आँहज़रत (ﷺ) का एहसान रखकर क़ैदियों को मुफ़्त छोड़ देना, और ख़मुस वग़ैरह न निकालना

बाब का मतलब ये है कि ग़नीमत का माल इमाम के इख़्तियार में है। अगर चाहे तो तक़्सीम करने से पहले वो काफ़िरों को फेर दे। या उनके क़ैदी मुफ़्त आज़ाद कर दे। तक़्सीम के बाद फिर वो माल मुजाहिदीन की मिल्क हो जाता है।

٣١٣٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ فِي أَسَارَى بَدْرٍ: ((لَوْ كَانَ الْمُطْعِمُ بْنُ عَدِيٍّ حَيًّا ثُمَّ كَلَّمَنِي فِي هَؤُلاَءِ النَّتْنَى لَتَرَكْتُهُمْ لَهُ)).

[طرفه في : ٤٠٢٤].

3139. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें मुहम्मद बिन ज़ुबैर ने और उन्हें उनके वालिद (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने बद्र के क़ैदियों के बारे में फ़र्माया था कि अगर मुत्इम बिन अदी (जो कुफ़्र की हालत में मर गये थे) ज़िन्दा होते और नजिस, नापाक लोगों की सिफ़ारिश करते तो मैं उनकी सिफ़ारिश से उन्हें (फ़िदया लिये बग़ैर) छोड़ देता। (दीगर मक़ाम : 4024)

आयते करीमा **इन्नमल मुश्रिकूना नजिस** (अत् तौबा : 28) की बिना पर उनको नजिस कहा, शिर्क ऐसी ही नजासत है। मगर हजार अफ़सोस कि आज कितने नामो–निहाद मुसलमान भी इस नजासत में आलूदा हो रहे हैं।

١٧- بَابُ وَمِنَ الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ الْخُمُسَ لِلإِمَامِ، وَأَنَّهُ يُعْطِي بَعْضَ قَرَابَتِهِ دُونَ بَعْضٍ مَا قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ لِبَنِي الْمُطَّلِبِ وَبَنِي هَاشِمٍ مِنْ خُمُسِ خَيْبَرَ.

قَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ: لَمْ يَعُمَّهُمْ بِذَلِكَ وَلَمْ يَخُصَّ قَرِيبًا دُونَ مَنْ أَحْوَجُ

बाब 17 : उसकी दलील कि ख़ुमुस में इमाम को इख़्तियार है वो उसे अपने कुछ (मुस्तहिक़)

रिश्तेदारों को भी दे सकता है। और जिसको चाहे न दे, दलील ये है कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर के ख़ुमुस में से बनी हाशिम और बनी अब्दुल मुत्तलिब को दिया, (और दूसरे क़ुरैश को न दिया) उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने तमाम रिश्तेदारों को नहीं दिया और उसकी भी रिआयत नहीं की

-إِلَيْهِ، وَإِنْ كَانَ الَّذِي أُعْطِيَ لَمَّا يَشْكُوا إِلَيْهِ مِنَ الْحَاجَةِ، وَلَمَّا مَسَّتْهُمْ فِي جَنْبِهِ مِنْ قَوْمِهِمْ وَحُلَفَائِهِمْ.

कि जो क़रीबी रिश्तेदार हो उसी को दें बल्कि जो ज़्यादा मुहताज होता, आप उसे इनायत फ़र्माते, ख़्वाह रिश्ते में वो दूर ही क्यूँ न हो। अगरचे आपने जिन लोगों को दिया वो यही देखकर वो मुहताजी का आपसे शिकवा करते थे और ये भी देखकर कि आँहज़रत (ﷺ) की जांबदारी और त़रफ़दारी में उनको जो नुक़्सान अपनी क़ौम वालों और उनके हम क़िस्मों से पहुँचा (वो बहुत था)

٣١٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: مَشَيْتُ أَنَا وَعُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، أَعْطَيْتَ بَنِي الْمُطَّلِبِ وَتَرَكْتَنَا. وَنَحْنُ وَهُمْ مِنْكَ بِمَنْزِلَةٍ وَاحِدَةٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : ((إِنَّمَا بَنُ الْمُطَّلِبِ وَبَنُو هَاشِمٍ شَيْءٌ وَاحِدٌ)). قَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ وَزَادَ: ((قَالَ جُبَيْرٌ: وَلَمْ يَقْسِمِ النَّبِيُّ ﷺ لِبَنِي عَبْدِ شَمْسٍ وَلاَ لِبَنِي نَوْفَلَ. وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ: عَبْدُ شَمْسٍ وَهَاشِمٌ وَالْمُطَّلِبُ إِخْوَةٌ لأُمٍّ. وأُمُّهُم عَاتِكَةُ بِنْتُ مُرَّةَ. وَكَانَ نَوْفَلُ أَخَاهُمْ لأَبِيهِمْ)).

[طرفاه في : ٣٥٠٢، ٤٢٢٩].

3140. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे इब्ने मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं और उ़ष्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने बनू मुत्तलिब को तो इनायत किया लेकिन हमको छोड़ दिया, हालाँकि हमको आपसे वही रिश्ता है जो बनू मुत्तलिब को आपसे है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि बनू मुत्तलिब और बनू हाशिम एक ही है। लैष़ ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया और (इस रिवायत में) ये ज़्यादती की कि जुबैर (रज़ि.) ने कहा नबी करीम (ﷺ) ने बनू अ़ब्दे शम्स और बनू नौफ़िल को नहीं दिया था, और इब्ने इस्हाक़ (स़ाहिबे मग़ाज़ी) ने कहा है कि अ़ब्दे शम्स, हाशिम और मुत्तलिब एक माँ से थे, और उनकी माँ का नाम आ़तिका बिन्ते मुर्रह था और नौफ़िल बाप की त़रफ़ से उनके भाई थे। (उनकी माँ दूसरी थीं)। (दीगर मक़ाम : 3502, 4229)

١٨- بَابُ مَنْ لَمْ يُخَمِّسِ الأَسْلاَبَ وَمَنْ قَتَلَ قَتِيلاً فَلَهُ سَلَبُهُ مِنْ غَيْرِ أَنْ يُخَمِّسَ، وَحُكْمُ الإِمَامِ فِيهِ

बाब 18 : मक़्तूल के जिस्म पर जो सामान हो (कपड़े हथियार वग़ैरह) वो सामान तक़्सीम में शरीक होगा न उसमें से ख़ुमुस लिया जाएगा बल्कि वो सारा क़ातिल को मिलेगा और इमाम का ऐसा हुक्म देने का बयान

٣١٤١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ الْمَاجِشُونِ عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوفٍ عَنْ

3141. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यूसुफ़ बिन माजिशून ने, उनसे स़ालेह बिन इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे स़ालेह के दादा

أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ : بَيْنَا أَنَا وَاقِفٌ فِي الصَّفِّ يَوْمَ بَدْرٍ، فَنَظَرْتُ عَنْ يَمِينِي وَشِمَالِي، فَإِذَا أَنَا بِغُلاَمَيْنِ مِنَ الأَنْصَارِ حَدِيثَةٍ أَسْنَانُهُمَا تَمَنَّيْتُ أَنْ أَكُونَ بَيْنَ أَضْلَعَ مِنْهُمَا، فَغَمَزَنِي أَحَدُهُمَا فَقَالَ: يَا عَمِّ هَلْ تَعْرِفُ أَبَا جَهْلٍ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، مَا حَاجَتُكَ إِلَيْهِ يَا ابْنَ أَخِي؟ قَالَ: أُخْبِرْتُ أَنَّهُ يَسُبُّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَئِنْ رَأَيْتُهُ لاَ يُفَارِقُ سَوَادِي سَوَادَهُ حَتَّى يَمُوتَ الأَعْجَلُ مِنَّا. فَتَعَجَّبْتُ لِذَلِكَ، فَغَمَزَنِي الآخَرُ فَقَالَ لِي مِثْلَهَا، فَلَمْ أَنْشَبْ أَنْ نَظَرْتُ إِلَى أَبِي جَهْلٍ يَجُولُ فِي النَّاسِ فَقُلْتُ: أَلاَ إِنَّ هَذَا صَاحِبُكُمَا الَّذِي سَأَلْتُمَانِي، فَابْتَدَرَاهُ بِسَيْفَيْهِمَا فَضَرَبَاهُ حَتَّى قَتَلاَهُ. ثُمَّ انْصَرَفَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرَاهُ . فَقَالَ : ((أَيُّكُمَا قَتَلَهُ؟)) قَالَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا: أَنَا قَتَلْتُهُ. فَقَالَ: ((هَلْ مَسَحْتُمَا سَيْفَيْكُمَا؟)) قَالاَ: لاَ. فَنَظَرَ فِي السَّيْفَيْنِ فَقَالَ: ((كِلاَكُمَا قَتَلَهُ)). وَسَلَبَهُ لِمُعَاذِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْجَمُوحِ. وَكَانَا مُعَاذَ ابْنَ عَفْرَاءَ وَمُعَاذَ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْجَمُوحِ.

[طرفاه في : ٣٩٦٤، ٣٩٨٨].

(अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र की लड़ाई में, मैं सफ़ के साथ खड़ा हुआ था। मैंने जो दाएँ–बाएँ जानिब देखा, तो मेरे दोनों तरफ़ क़बीला अंसार के दो नौ उम्र लड़के थे। मैंने आरज़ू की काश! मैं उनसे ज़बरदस्त ज़्यादा उम्र वालों के बीच होता। एक ने मेरी तरफ़ इशारा किया, और पूछा चचा! आप अबू जहल को भी पहचानते हैं? मैंने कहा कि हाँ! लेकिन बेटे तुम लोगों को उससे क्या काम है? लड़के ने जवाब दिया मुझे मा'लूम हुआ है कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) को गालियाँ देता है, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मुझे वो मिल गया तो उस वक़्त तक मैं उससे जुदा न होऊँगा जब तक हममें से कोई जिसकी क़िस्मत में पहले मरना होगा, मर न जाए, मुझे उस पर बड़ी हैरत हुई। फिर दूसरे ने इशारा किया और वही बातें उसने भी कहीं। अभी चन्द मिनट ही गुज़रे थे कि मुझे अबू जहल दिखाई दिया जो लोगों में (कुफ़्फ़ार के लश्कर में) घूमता फिर रहा था। मैंने उन लड़कों से कहा कि जिसके बारे में तुम लोग मुझसे पूछ रहे थे, वो सामने (फिरता हुआ नज़र आ रहा) है। दोनों ने अपनी तलवारें सम्भाल लीं और उस पर झपट पड़े और हमला करके उसे क़त्ल कर डाला। उसके बाद रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत मे हाज़िर होकर आपको ख़बर दी, आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि तुम दोनों में से किसने उसे मारा है? दोनों जवानों ने कहा कि मैंने क़त्ल किया है। इसलिये आपने उनसे पूछा कि क्या अपनी तलवारें तुमने साफ़ कर ली हैं? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि नहीं। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों तलवारों को देखा और फ़र्माया कि तुम दोनों ही ने उसे मारा है। और उसका सारा सामान मुआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह को मिलेगा। वो दोनों नौजवान मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा और मुआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह थे। मुहम्मद ने कहा कि यूसुफ़ ने सालेह से सुना और इब्राहीम ने अपने बाप से सुना। (दीगर मक़ाम : 3964, 3988)

तश्रीह : हुआ ये था कि मुआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह ने उस मर्दूद को बेदम किया था तो असल क़ातिल वही हुए, उन्हीं को आपने अबू जहल का सामान दिलाया और मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा का दिल ख़ुश करने के लिये आपने यूँ फ़र्माया कि तुम दोनों ने मारा है। अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने ख़याल किया कि ये बच्चे नातजुर्बेकार हैं, मा'लूम नहीं जंग के वक़्त ठहर सकते हैं या नहीं, अगर ये भागे तो मा'लूम नहीं मेरे दिल की भी क्या हालत हो, उनको ये मा'लूम न था कि ये दोनों बेशा शुजाअ़त के शेर और बूढ़ों से भी ज़्यादा दिलेर हैं, उन अंसारी बच्चों ने लोगों से अबू जहल मर्दूद का हाल सुना था कि उसने

आँहज़रत (ﷺ) को कैसी-कैसी ईज़ाएँ दी थीं। चूँकि ये मदीना वाले थे लिहाज़ा अबू जहल की सूरत नहीं पहचानते थे। ईमान का जोश उनके दिलों में था, उन्होंने ये चाहा कि मारें तो बड़े मूज़ी को मारें, उसी मर्दूद का काम तमाम करें। जिसमें वो कामयाब हुए। रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन

कुछ रिवायतों में अबू जहल के क़ातिल मुआज़ और मुअव्वज़ उफ़रा के बेटे बतलाए गए हैं। और इब्ने मसऊद (रज़ि.) को भी शामिल किया गया है। अन्देशा है कि ये लोग भी बाद में शरीके क़त्ल हो गये हों।

3142. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे इब्ने अफ़लह ने, उनसे अबू क़तादा के गुलाम अबू मुहम्मद ने और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-हुनैन के साल हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रवाना हुए। फिर जब हमारा दुश्मन से सामना हुआ तो (इब्तिदा में) इस्लामी लश्कर हारने लगा। इतने में मैंने देखा कि मुश्रिकीन के लश्कर का एक शख़्स एक मुसलमान के ऊपर चढ़ा हुआ है। इसलिये मैं फ़ौरन ही घूम पड़ा और उसके पीछे से आकर तलवार उसकी गर्दन पर मारी। अब वो शख़्स मुझ पर टूट पड़ा, और मुझे इतनी ज़ोर से उसने भींचा कि मेरी रूह जैसे क़ब्ज़ होने को थी। आख़िर जब उसको मौत ने आ दबोचा, तब कहीं जाकर उसने मुझे छोड़ा। उसके बाद मुझे उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मिले, तो मैंने उनसे पूछा कि मुसलमान अब किस हालत में हैं? उन्होंने कहा कि जो अल्लाह का हुक्म था वही हुआ। लेकिन मुसलमान हारने के बाद फिर मुक़ाबला पर सम्भल गये तो नबी करीम (ﷺ) बैठ गये और फ़र्माया कि जिसने भी किसी काफ़िर को क़त्ल किया हो और उस पर वो गवाह भी पेश कर दे तो मक़्तूल का सारा साज़ो-सामान उसे ही मिलेगा। (अबू क़तादा रज़ि. ने कहा) मैं भी खड़ा हुआ। और मैंने कहा कि मेरी तरफ़ से कौन गवाही देगा? लेकिन (जब मेरी तरफ़ से कोई न उठा तो) मैं बैठ गया। फिर दोबारा आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि (आज) जिसने काफ़िर को क़त्ल किया और उस पर उसकी तरफ़ से कोई गवाह भी हो तो मक़्तूल का सारा सामान उसे मिलेगा। इस बार फिर मैंने खड़े होकर कहा कि मेरी तरफ़ से कौन गवाही देगा? और फिर मुझे बैठना पड़ा।

٣١٤٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنِ ابْنِ أَفْلَحَ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ عَنْ قَتَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ حُنَيْنٍ، فَلَمَّا الْتَقَيْنَا كَانَتْ لِلْمُسْلِمِيْنَ جَوْلَةٌ، فَرَأَيْتُ رَجُلاً مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ عَلاَ رَجُلاً مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ، فَاسْتَدَبَرْتُ حَتَّى أَتَيْتُهُ مِنْ وَرَائِهِ حَتَّى ضَرَبْتُهُ بِالسَّيْفِ عَلَى حَبْلِ عَاتِقِهِ، فَأَقْبَلَ عَلَيَّ فَضَمَّنِي ضَمَّةً وَجَدْتُ مِنْهَا رِيْحَ الْمَوْتِ، ثُمَّ أَدْرَكَهُ الْمَوتُ فَأَرسَلَنِي، فَلَحِقْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فَقُلْتُ: مَا بَالُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَمرُ اللهِ، ثُمَّ إِنَّ النَّاسَ رَجَعُوا، وَجَلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: ((مَنْ قَتَلَ قَتِيْلاً لَهُ عَلَيْهِ بَيِّنَةٌ فَلَهُ سَلَبُهُ)). فَقُمْتُ فَقُلْتُ: مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ ثُمَّ جَلَسْتُ. ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ قَتَلَ قَتِيْلاً لَهُ عَلَيْهِ بَيِّنَةٌ فَلَهُ سَلَبُهُ)) - فَقُمْتُ فَقُلْتُ: مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ ثُمَّ جَلَسْتُ. ثُمَّ قَالَ الثَّالِثَةَ مِثْلَهُ، فَقُمْتُ

فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَا لَكَ يَا أَبَا قَتَادَةَ؟)) فَاقْتَصَصْتُ عَلَيْهِ الْقِصَّةَ، فَقَالَ رَجُلٌ: صَدَقَ يَا رَسُولَ اللهِ! وَسَلَبُهُ عِنْدِي، فَأَرْضِهِ عَنِّي. قَالَ أَبُوبَكْرٍ الصِّدِّيقُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: لاَهَا اللهِ، إِذًا لاَ يَعْمِدُ إِلَى أَسَدٍ مِنْ أُسُدِ اللهِ يُقَاتِلُ عَنِ اللهِ وَرَسُولِهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِيْكَ سَلَبَهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((صَدَقَ)). فَأَعْطَاهُ فَبِعْتُ الدِّرْعَ، فَابْتَعْتُ بِهِ مَخْرَفًا فِي بَنِي سَلِمَةَ، فَإِنَّهُ لأَوَّلُ مَالٍ تَأَثَّلْتُهُ فِي الإِسْلاَمِ)).

[راجع: ٢١٠٠]

तीसरी बार फिर आँहज़रत (ﷺ) ने वही इर्शाद दोहराया और इस बार जब मैं खड़ा हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद ही दरयाफ़्त फ़र्माया, किस चीज़ के बारे कह रहे हो) अबू क़तादा! मैंने आँहज़रत (ﷺ) के सामने सारा वाक़िया बयान कर दिया, तो एक साहब (अस्वद बिन ख़ुज़ाई असलमी) ने बताया कि अबू क़तादा सच कहते हैं , या रसूलल्लाह (ﷺ)! और इस मक़्तूल का सामान मेरे पास महफ़ूज़ है। और मेरे हक़ में उन्हें राज़ी कर दीजिए (कि वो मक़्तूल का सामान मुझसे न लें) लेकिन अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा कि नहीं अल्लाह की क़सम! अल्लाह के एक शेर के साथ, जो अल्लाह और उसके रसूल के लिये लड़े, आँहज़रत (ﷺ) ऐसा नहीं करेंगे कि उनका सामान तुम्हें दे दें, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अबूबक्र ने सच कहा है। फिर आपने सामान अबू क़तादा (रज़ि.) को अता फ़र्माया। अबू क़तादा ने कहा कि फिर उसकी ज़िरह बेचकर मैंने बनी सलमा मे एक बाग़ ख़रीद लिया। और ये पहला माल था जो इस्लाम लाने के बाद मैंने हासिल किया था। (राजेअ : 2100)

इस हदीष़ से भी यही ष़ाबित हुआ कि मक़्तूल काफ़िर का सामान क़ातिल मुजाहिद ही का हक़ है जो उसे मिलना चाहिये, मगर ये ख़ुद अमीरे लश्कर उसको तहक़ीक़ करने के बाद देंगे।

١٩- بَابُ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْطِي الْمُؤَلَّفَةَ قُلُوبُهُمْ وَغَيْرَهُمْ مِنَ الْخُمُسِ وَنَحْوِهِ

رَوَاهُ عَبْدُاللهِ بْنُ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 19 : तालीफ़े क़ुलूब के लिये आँहज़रत (ﷺ) का कुछ काफ़िरों वग़ैरह (नौ मुस्लिमों या पुराने मुसलमानों) को ख़ुमुस में से देना,

इसको अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत किया है।

٣١٤٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَعُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ حَكِيْمَ بْنَ حِزَامٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ قَالَ لِي: ((يَا حَكِيْمُ، إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرٌ حُلْوٌ، فَمَنْ أَخَذَهُ بِسَخَاوَةِ

3143. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़र्याबी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने कि हकीम बिन हज़ाम (रज़ि.) ने बयान किया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कुछ रुपया मांगा तो आप (ﷺ) ने मुझे अ़ता किया, फिर दोबारा मैंने मांगा और इस बार भी आपने अ़ता किया, फिर इर्शाद फ़र्माया, हकीम! ये माल देखने में सरसब्ज़ बहुत मीठा और मज़ेदार है लेकिन जो शख़्स इसे दिल की बेतम्अ़ी के साथ ले उसके माल में तो बरकत होती है और जो शख़्स उसे लालच और हिर्स के साथ

نَفْسٍ بُورِكَ لَهُ فِيهِ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِإِشْرَافِ نَفْسٍ لَمْ يُبَارَكْ لَهُ فِيهِ، وَكَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلاَ يَشْبَعُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى)). قَالَ حَكِيمٌ: فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لاَ أَرْزَأُ أَحَدًا بَعْدَكَ شَيْئًا حَتَّى أُفَارِقَ الدُّنْيَا، فَكَانَ أَبُوبَكْرٍ يَدْعُو حَكِيمًا لِيُعْطِيَهُ الْعَطَاءَ فَيَأْبَى أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ شَيْئًا، ثُمَّ إِنَّ عُمَرَ دَعَاهُ لِيُعْطِيَهُ فَأَبَى أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ، فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ، إِنِّي أَعْرِضُ عَلَيْهِ حَقَّهُ الَّذِي قَسَمَ اللهُ لَهُ مِنْ هَذَا الْفَيْءِ فَيَأْبَى أَنْ يَأْخُذَهُ. فَلَمْ يَرْزَأْ حَكِيمٌ أَحَدًا مِنَ النَّاسِ بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ حَتَّى تُوُفِّيَ)).

[راجع: ١٤٧٢]

ले तो उसके माल में बरकत नहीं होती, बल्कि उसकी मिषाल उस शख़्स जैसी है जो खाए जाता है लेकिन उसका पेट नहीं भरता और ऊपर का हाथ (देने वाला) नीचे के हाथ (लेने वाले) से बेहतर होता है हकीम बिन हज़ाम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके बाद अब मैं किसी से कुछ भी नहीं माँगूंगा, यहाँ तक कि इस दुनिया में से चला जाऊँ। चुनाँचे (आँहज़रत ﷺ की वफ़ात के बाद) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उन्हें देने के लिये बुलाते, लेकिन वो उसमें से एक पैसा भी लेने से इंकार कर देते। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) (अपने ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में) उन्हें देने के लिये बुलाते और उनसे भी लेने से उन्होंने इंकार कर दिया था। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस पर कहा कि मुसलमानों! मैं उन्हें उनका हक़ देता हूँ जो अल्लाह तआ़ला ने फ़ै के माल से उनका हिस्सा मुक़र्रर किया है। लेकिन ये उसे भी क़ुबूल नहीं करते। हकीम बिन हज़ाम (रज़ि.) की वफ़ात हो गई लेकिन आँहज़रत (ﷺ) के बाद उन्होंने किसी से कोई चीज़ नहीं ली। (राजेअ़ : 1472)

तश्रीह : बाब का तर्जुमा इससे निकला कि हज़रत हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) नये-नये मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए थे, आपने उनकी तालीफ़े क़ल्ब के लिये उनको दो-दो बार रुपया दिया। बाद में आँहज़रत का इर्शादे गिरामी सुनकर हज़रत हकीम (रज़ि.) ताहयात अपने वादे को निभाया और अपना जाइज़ हक़ भी छोड़ दिया कि कहीं नफ़्स को इस तरह मुफ़्तख़ोरी की आ़दत न हो जाए। मर्दाने हक़ ऐसे ही होते हैं जो इस दुनिया में किब्रियते अहमर का हुक्म रखते हैं। इल्ला माशा अल्लाह। आज की दुनिया में जिसे ऐसी बातें करता पाऊँ उसके अंदर जाइज़ा लोगे तो मा'लूम होगा कि यही ख़ुद दुनिया का बदतरीन हरीस़ (लालची) है इल्ला माशा अल्लाह। यही हाल बहुत से मुद्दइयाने तदय्युन का है जो ज़ाहिर में बड़े हक़ गो और अंदरूने ख़ाना बदतरीन, बद मामला षाबित होते हैं। इल्ला मन रहिमहुल्लाह

٣١٤٤ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُ كَانَ عَلَيَّ اعْتِكَافُ يَوْمٍ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَفِيَ بِهِ. قَالَ: وَأَصَابَ عُمَرُ جَارِيَتَيْنِ مِنْ سَبْيِ حُنَيْنٍ فَوَضَعَهُمَا فِي بَعْضِ بُيُوتِ مَكَّةَ، قَالَ فَمَنَّ رَسُولُ

3144. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ज़मान-ए-जाहिलियत (कुफ़्र) में मैंने एक दिन ए'तिकाफ़ की मन्नत मानी थी, तो रसूले करीम (ﷺ) ने उसे पूरा करने का हुक्म दिया। नाफेअ़ ने बयान किया कि हुनैन के क़ैदियों में से उमर (रज़ि.) को दो बांदियाँ मिली थीं। तो आपने उन्हें मक्का के किसी घर में रखा। उन्होंने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने हुनैन के क़ैदियों पर एहसान किया (और सब को मुफ़्त आज़ाद कर दिया) तो

गलियों में वो दौड़ने लगे। उमर (रज़ि.) ने कहा, अ़ब्दुल्लाह! देखो तो ये क्या मामला है। उन्होंने बताया कि रसूले करीम (ﷺ) ने उन पर एहसान किया है और हुनैन के तमाम क़ैदी मुफ़्त आज़ाद कर दिये गये हैं)। ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि फिर जा उन दोनों लड़कियों को भी आज़ाद कर दे। नाफ़ेअ़ ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मक़ामे जिइ़राना से उ़मरह का एहराम नहीं बाँधा था। अगर आँह़ज़रत (ﷺ) वहाँ से उ़मरह का एहराम बाँधते तो अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) को ये ज़रूर मा'लूम होता। (राजेअ़ : 2032)

اللهِ ﷺ عَلَى سَبِي حُنَيْنٍ، فَجَعَلُوا يَسْعَوْنَ فِي السِّكَكِ، فَقَالَ عُمَرُ: يَا عَبْدَ اللهِ انْظُرْ مَا هَذَا؟ فَقَالَ: مَنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى السَّبْيِ، قَالَ: اذْهَبْ فَأَرْسِلِ الْجَارِيَتَيْنِ. قَالَ: نَافِعٌ: وَلَمْ يَعْتَمِرْ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنَ الْجِعْرَانَةِ، وَلَوِ اعْتَمَرَ لَمْ يَخْفَ عَلَى عَبْدِ اللهِ)). [راجع: ٢٠٣٢]

और जरीर बिन ह़ाज़िम ने जो अय्यूब से रिवायत की, उन्होंने नाफ़ेअ़ से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से, उसमें यूँ है कि (वो दोनों बान्दियाँ जो उ़मर (रज़ि.) को मिली थीं) ख़ुमुस में से थीं। (ए'तिकाफ़ के बारे में ये रिवायत) मअ़मर ने अय्यूब से नक़ल की है, उनसे नाफ़ेअ़ ने उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने नज़्र का हिस्सा जो रिवायत किया है उसमें एक दिन का लफ़्ज़ नहीं है।

وَزَادَ جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ وَقَالَ: ((مِنَ الْخُمُسِ)). وَرَوَاهُ مَعْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ فِي النَّذْرِ وَلَمْ يَقُلْ ((يَوْمًا)).

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ुमुस में से दो लौण्डियाँ बतौरे एहसान ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को दीं। रिवायत में आँह़ज़रत (ﷺ) का जिइ़राना से उ़मरह का एहराम न बाँधना मज़्कूर है। ह़ालाँकि दूसरे बहुत से लोगों ने नक़ल किया है कि आप जब हुनैन और ताइफ़ से फ़ारिग़ हुए तो आप (ﷺ) ने जिइ़राना से उ़मरे का एहराम बाँधा और इष्बात नफ़ी पर मुक़द्दम है। मुम्किन है अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) को इसकी ख़बर हो लेकिन उन्होंने नाफ़ेअ़ से न बयान किया हो, इस ह़दीष़ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि कोई शख़्स ह़ालते कुफ़्र में कोई नेक काम करने की नज़्र माने तो इस्लाम लाने के बाद वो नज़्र पूरी करनी होगी। हुनैन के क़ैदियों को भी बिला मुआवज़ा आज़ाद कर देना इंसानियत परवरी के सिलसिले में रसूले करीम (ﷺ) का वो अ़ज़ीम कारनामा है जिस पर उम्मते मुस्लिमा हमेशा नाज़ाँ रहेगी।

3145. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, कहा हमसे हसन बस़री ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़म्र बिन तग़्लिब (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुछ लोगों को दिया और कुछ लोगों को नहीं दिया। ग़ालिबन जिन लोगों को आप (ﷺ) ने नहीं दिया था, उनको नागवार हुआ। तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मैं कुछ ऐसे लोगों को देता हूँ कि मुझे जिनके बिगड़ जाने (इस्लाम से फिर जाने) और बेसब्री का डर है। और कुछ लोग ऐसे हैं जिन पर मैं भरोसा करता हूँ, अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों में भलाई और बेनियाज़ी रखी है (उनको मैं नही देता) अ़म्र बिन

٣١٤٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ تَغْلِبَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَعْطَى رَسُولُ اللهِ ﷺ قَوْمًا وَمَنَعَ آخَرِيْنَ، فَكَأَنَّهُمْ عَتِبُوا عَلَيْهِ فَقَالَ: ((إِنِّي أُعْطِي قَوْمًا أَخَافُ ظَلَعَهُمْ وَجَزَعَهُمْ، وَأَكِلُ أَقْوَامًا إِلَى مَا جَعَلَ اللهُ فِي قُلُوبِهِمْ مِنَ الْخَيْرِ وَالْغِنَى، مِنْهُمْ

तग़्लिब (रज़ि.) कहा करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी निस्बत ये जो कलिमा फ़र्माया अगर उसके बदले सुर्ख़ ऊँट मिलते तो भी मैं इतना ख़ुश नहीं होता। अबू आसिम (रज़ि.) ने जरीर से बयान किया कि मैंने हसन बसरी (रह.) से सुना, वो बयान करते थे कि हमसे अम्र बिन तग़्लिब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास माल या क़ैदी आए थे और उन्हीं को आपने तक़्सीम किया था। (राजेअ : 923)

عَمْرُو بْنُ تَغلِبَ))، فَقَالَ عَمْرُو بْنُ تَغلِبَ: مَا أُحِبُّ أَنَّ لِي بِكَلِمَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ حُمْرَ النَّعَمِ)). زَادَ أَبُو عَاصِمٍ عَنْ جَرِيْرٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ: ((حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ تَغلِبَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أُتِيَ بِمَالٍ – أَوْ بِسَبْيٍ – فَقَسَمَهُ. بِهَذَا)). [راجع: ٩٢٣]

तश्रीह : हदीष और बाब में मुताबक़त ये कि आँहज़रत (ﷺ) ने अम्वाले ग़नीमत को अपनी सवाब दीद के मुताबिक़ तक़्सीम फ़र्माया, जिसमें अहमतरीन इस्लामी मसालेह शामिल थे, ए'तिराज़ करने वालों को भी आपने अहसन तरीक़ से मुत्मइन कर दिया। षाबित हुआ कि ऐसे मौक़ों पर ख़लीफ़ा-ए-इस्लाम को कुछ ख़ुसूसी इख़्तियारात दिये गये हैं, मगर उनका फ़र्ज़ है कि कोई ज़ाती ग़र्ज़े फ़ासिद (व्यक्तिगत बुरा स्वार्थ) बीच में शामिल न हो, महज़ अल्लाह व रसूल की रज़ा व इस्लाम की सरबुलन्दी मद्देनज़र हो, रिवायत में मज़्कूर हज़रत अम्र बिन तग़्लिब (रज़ि.) अब्दी हैं। क़बीला अब्दुल क़ैस से उनका ता'ल्लुक़ है, मशहूर अंसारी सहाबी हैं। (रज़ि.)

3146. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़ुरैश को मैं उनका दिल मिलाने के लिये देता हूँ, क्योंकि उनकी जाहिलियत (कुफ़्र) का ज़माना अभी ताज़ा गुज़रा है। (उनकी दिलजोई करना ज़रूरी है)। (दीगर मक़ाम : 3147, 3528, 3778, 4331, 4332, 4333, 4334, 4337, 5860, 6762, 7441)

٣١٤٦– حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي أُعْطِي قُرَيْشًا أَتَأَلَّفُهُمْ، لأَنَّهُمْ حَدِيْثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَّةٍ)). [أطرافه في : ٣١٤٧، ٣٥٢٨، ٣٧٧٨، ٤٣٣١، ٤٣٣٢، ٤٣٣٣، ٤٣٣٤، ٤٣٣٧، ٥٨٦٠، ٦٧٦٢، ٧٤٤١].

3147. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को क़बीला हवाज़िन के अम्वाल में से ग़नीमत दी और आप (ﷺ) क़ुरैश के कुछ आदमियों को (तालीफ़े क़ल्ब की ग़र्ज़ से) सौ सौ ऊँट देने लगे तो कुछ अंसारी लोगों ने कहा अल्लाह तआला रसूलुल्लाह(ﷺ) की बख़्शिश करे। आप क़ुरैश को तो दे रहे हैं और हमें छोड़ दिया। हालाँकि उनका ख़ून अभी तक हमारी तलवारों से टपक रहा है। (क़ुरैश के लोगों को हाल ही मे हमने

٣١٤٧– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ نَاسًا مِنَ الأَنْصَارِ قَالُوا لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَمْوَالِ هَوَازِنَ مَا أَفَاءَ، فَطَفِقَ يُعْطِي رِجَالاً مِنْ قُرَيْشٍ الْمِائَةَ مِنَ الإِبِلِ، فَقَالُوا: يَغْفِرُ اللهُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يُعْطِي

قُرَيْشًا وَيَدَعُنَا وَسُيُوفُنَا تَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ، قَالَ أَنَسٌ: فَحُدِّثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَقَالَتِهِمْ، فَأَرْسَلَ إِلَى الأَنْصَارِ فَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ، وَلَمْ يَدْعُ مَعَهُمْ أَحَدًا غَيْرَهُمْ، فَلَمَّا اجْتَمَعُوا جَاءَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا كَانَ حَدِيثٌ بَلَغَنِي عَنْكُمْ؟)) قَالَ لَهُ فُقَهَاؤُهُمْ أَمَّا ذَوُو رَأْيِنَا فَلَمْ يَقُولُوا شَيْئًا. وَأَمَّا أُنَاسٌ مِنَّا حَدِيثَةٌ أَسْنَانُهُمْ فَقَالُوا: يَغْفِرُ اللهُ لِرَسُولِ اللهِ يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَتْرُكُ الأَنْصَارَ، وَسُيُوفُنَا تَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنِّي لأُعْطِي رِجَالاً حَدِيثٌ عَهْدُهُمْ بِكُفْرٍ، أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالأَمْوَالِ، وَتَرْجِعُوا إِلَى رِحَالِكُمْ بِرَسُولِ اللهِ، فَوَ اللهِ مَا تَنْقَلِبُونَ بِهِ خَيْرٌ مِمَّا يَنْقَلِبُونَ بِهِ)). قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، قَدْ رَضِينَا. فَقَالَ لَهُمْ: ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً شَدِيدَةً، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْحَوْضِ)). قَالَ أَنَسٌ: فَلَمْ نَصْبِرْ)). [راجع: ٣١٤٦]

मारा, उनके शहर को हम ही ने फ़तह किया) अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) को जब ये ख़बर पहुँची तो आप (ﷺ) ने अंसार को बुलाया और उन्हें चमड़े के एक डेरे में जमा किया, उनके सिवा किसी दूसरे सहाबी को आपने नहीं बुलाया। जब सब अंसारी लोग जमा हो गये तो आँहज़रत (ﷺ) भी तशरीफ़ लाए और पूछा कि आप लोगों के बारे में जो बात मुझे मा'लूम हुई वो कहाँ तक सहीह है? अंसार के समझदार लोगों ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम में जो अक़्ल वाले हैं, वो तो कोई ऐसी बात ज़ुबान पर नहीं लाए हैं, हाँ चन्द नौ उम्र लड़के हैं, उन्होंने ही ये कहा है कि अल्लाह रसूलुल्लाह (ﷺ) की बख़्शिश करे, आप (ﷺ) क़ुरैश को तो दे रहे हैं और हमको नहीं देते हालाँकि हमारी तलवारों से अभी तक उनके ख़ून के क़तरे टपक रहे हैं। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं कुछ ऐसे लोगों को देता हूँ जिनका कुफ़्र का ज़माना अभी गुज़रा है। (और उनको देकर उनका दिल मिलाता हूँ) क्या तुम इस पर ख़ुश नहीं हो कि जब दूसरे लोग माल व दौलत लेकर वापस जा रहे होंगे, तो तुम लोग अपने घरों को रसूलुल्लाह (ﷺ) को लेकर वापस जा रहे होंगे। अल्लाह की क़सम! तुम्हारे साथ जो कुछ वापस जा रहा है वो उससे बेहतर जो दूसरे लोग अपने साथ वापस ले जाएँगे। सब अंसारियों ने कहा बेशक या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम इस पर राज़ी और ख़ुश हैं। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, मेरे बाद तुम ये देखोगे कि तुम पर दूसरे लोगों को मुक़द्दम किया जाएगा, उस वक़्त तुम सब्र करना, (दंगा-फ़साद न करना) यहाँ तक कि अल्लाह तआला से जा मिलो और उसके रसूल (ﷺ) से हौज़े कौषर पर। अनस (रज़ि.) ने बयान किया, फिर हमसे सब्र न हो सका। (राजेअ : 3146)

तश्रीह : ये लोग क़ुरैश के सरदार और रईस थे जो हाल ही में मुसलमान हुए थे, आप (ﷺ) ने उनकी दिलजोई के लिये उनको बहुत सामान दिया। उन लोगों के नाम ये थे। अबू सुफ़यान, मुआविया बिन अबी सुफ़यान, हकीम बिन हिज़ाम, हारिष बिन हारिष, हारिष बिन हिशाम, सहल बिन अम्र, हवेतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा, अलाअ बिन हारिषा षक़फ़ी, उययना बिन हुसैन, सफ़्वान बिन उमय्या, अक़रअ बिन हाबिस, मालिक बिन औफ़, इन हज़रात को रसूले करीम (ﷺ) ने जो भी कुछ दिया उसका ज़िक्र साफ़ तारीख़ में बाक़ी रह गया, मगर अंसार का आपने अपनी ज़ाते गिरामी से जो शर्फ़ बख़्शा वो रहती दुनिया तक के लिये दरख़्शाँ व ताबाँ है। जिस शर्फ़ की बरकत से मदीना मुनव्वरा को वो ख़ास शर्फ़ हासिल है जो दुनिया में किसी भी शहर को नसीब नहीं।

अम्वाले हवाज़िन के बारे में जो गनीमत में हासिल हुआ, साहिबे लम्आत लिखते हैं, **मा अफ़ाअल्लाहु फ़ी हाज़ल्इब्हामि तफ्ख़ीमुन व तक्षीरुन लिमा अफाअ फइन्नल्फैअल्हासिल मिन्हुम कान अज़ीमन कषीरन मिम्मा ला युअद्दु व ला युहसा व जाअ फि रिवायाति सित्तत आलाफ़ मिनस्सबिय्यि व अर्बउंव इश्रुन अल्फम्मिनल्इबिलि व अर्बअत आलाफ औक़िय्यतिन मिनल्फ़िज़्ज़ति व अक्षर अर्बईन अल्फ़ शातिन** (हाशिया बुख़ारी करातिशी जिल्द 1, पेज 445) या'नी अम्वाले हवाज़िन इस क़दर हासिल हुआ जिसका शुमार करना भी मुश्किल है। रिवायात में क़ैदियों की ता'दाद छः हज़ार, और चौबीस हज़ार ऊँट और चार हज़ार औक़िया चाँदी और चालीस हज़ार से ज़्यादा बकरियाँ मज़्कूर हुई हैं ।

٣١٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ جُبَيْرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جُبَيْرُ بْنُ مُطْعِمٍ أَنَّهُ بَيْنَا هُوَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ النَّاسُ مُقْبِلاً مِنْ حُنَيْنٍ عَلِقَتْ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ الأَعْرَابُ يَسْأَلُونَهُ حَتَّى اضْطَرُّوهُ إِلَى سَمُرَةٍ فَخَطِفَتْ رِدَاءَهُ، فَوَقَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَعْطُونِي رِدَائِي، فَلَو كَانَ عَدَدُ هَذِهِ الْعِضَاهِ نَعَمًا لَقَسَمْتُهُ بَيْنَكُمْ ثُمَّ لاَ تَجِدُونِي بَخِيْلاً وَلاَ كَذُوبًا وَلاَ جَبَانًا)). [راجع: ٢٨٢١]

3148. हमसे अब्दुल अज़ीज बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे अम्र बिन मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्इम ने ख़बर दी कि मेरे बाप मुहम्मद बिन जुबैर ने कहा, और उन्हें जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे। आपके साथ और भी सहाबा थे। हुनैन के जिहाद से वापसी हो रही थी। रास्ते में कुछ बद्दू आपसे लिपट गये। (लूट का माल) आपसे मांगते थे। वो आपसे ऐसा लिपटे कि आप (ﷺ) को एक बबूल के पेड़ की तरफ़ धकेल ले गये। आपकी चादर उसमे अटककर रह गई। उस वक़्त आप ठहर गये। आपने फ़र्माया कि (भाईयों) मेरी चादर तो दे दो। अगर मेरे पास उन कांटे दरख़्तों की ता'दाद में ऊँट होते तो वो भी तुममें तक़्सीम कर देता। तुम मुझे बख़ील झूठा और बुज़दिल हर्गिज़ नहीं पाओगे। (राजेअ: 2821)

बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है कि इमाम को इख़्तियार है माले ग़नीमत जिन लोगों को चाहे मस्लिहतन तक़्सीम कर सकता है। ऐनी ने कहा **व मुताबक़तुन लित्तर्जुमति तस्तानिसु मिन क़ौलिही लिक़िस्मति बैनिकुम.**

٣١٤٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنْتُ أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَعَلَيْهِ بُرْدٌ نَجْرَانِيٌّ غَلِيْظُ الْحَاشِيَةِ، فَأَدْرَكَهُ أَعْرَابِيٌّ فَجَذَبَهُ جَذْبَةً شَدِيْدَةً حَتَّى نَظَرْتُ إِلَى صَفْحَةِ عَاتِقِ النَّبِيِّ ﷺ قَدْ أَثَّرَتْ بِهِ حَاشِيَةُ

3149. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान कियार, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ जा रहा था। आप नज्रान की बनी हुई चौड़े हाशिये की एक चादर ओढ़े हुए थे। इतने में एक देहाती ने आपको घेर लिया और ज़ोर से आपको खींचा, मैंने आपके शाने को देखा, उस पर चादर के कोने का निशान पड़ गया, ऐसा खींचा। फिर कहने लगा, अल्लाह का माल जो आपके पास है। उसमें से कुछ मुझको दिलाइए। आप (ﷺ) ने उसकी तरफ़ देखा और हंस दिये।

الزَّادِ مِن شِدَّةِ جَذْبَتِهِ ثُمَّ قَالَ : مُرْ لِيْ مِنْ مَالِ اللهِ الَّذِيْ عِنْدَكَ. فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ فَضَحِكَ ثُمَّ أَمَرَ لَهُ بِعَطَاءٍ)).

[طرفاه في : ٥٨٠٩، ٦٠٨٨].

फिर आप (ﷺ) ने उसे देने का हुक्म फ़र्माया (आख़िरी जुम्ला में से बाब का तर्जुमा निकलता है)

(दीगर मक़ाम : 5809, 6088)

٣١٥٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ حُنَيْنٍ آثَرَ النَّبِيُّ ﷺ أُنَاسًا فِي الْقِسْمَةِ : فَأَعْطَى الأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ مِائَةً مِنَ الإِبِلِ. وَأَعْطَى عُيَيْنَةَ مِثْلَ ذَلِكَ. وَأَعْطَى أُنَاسًا مِنْ أَشْرَافِ الْعَرَبِ فَآثَرَهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْقِسْمَةِ. قَالَ رَجُلٌ: وَاللهِ إِنَّ هَذِهِ الْقِسْمَةَ مَا عُدِلَ فِيْهَا وَمَا أُرِيْدَ بِهَا وَجْهُ اللهِ. فَقُلْتُ وَاللهِ لأُخْبِرَنَّ النَّبِيَّ ﷺ. فَأَتَيْتُهُ فَأَخْبَرْتُهُ. فَقَالَ: ((فَمَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ يَعْدِلِ اللهُ وَرَسُولُهُ؟ رَحِمَ اللهُ مُوسَى. قَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)).

[أطرافه في: ٣٤٠٥، ٤٣٣٥، ٤٣٣٦، ٦٠٥٩، ٦١٠٠، ٦٢٩١، ٦٣٣٦].

3150. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाईल ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि हुनैन की लड़ाई के बाद नबी करीम (ﷺ) ने (ग़नीमत की) तक़्सीम में कुछ लोगों को ज़्यादा दिया। जैसे अक़रअ़ा बिन ह़ाबिस (रज़ि.) को सौ ऊँट दिये, इतने ही ऊँट उ़ययना बिन हुस़ैन (रज़ि.) को दिये और कई अ़रब के अशराफ़ लोगों को इसी त़रह़ तक़्सीम में ज़्यादा दिया। इस पर एक शख़्स़ (मुअ़त्तब बिन क़ुशीर मुनाफ़िक़) ने कहा, कि अल्लाह की क़सम! इस तक़्सीम में न तो अ़दल को मल्हूज़ रखा गया है और न अल्लाह की ख़ुशनूदी का ख़्याल हुआ। मैंने कहा कि वल्लाह! उसकी ख़बर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को ज़रूर दूँगा। चुनाँचे मैं आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ, और आपको उसकी ख़बर दी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने सुनकर फ़र्माया कि अगर अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) भी अ़दल न करे तो फिर कौन अ़दल करेगा? अल्लाह तआ़ला मूसा (अलै.) पर रह़म करे कि उनको लोगों के हाथ इससे भी ज़्यादा तकलीफ़ पहुँची लेकिन उन्होंने स़ब्र किया। (दीगर मक़ाम : 3405, 4335, 4336, 6059, 6100, 6291, 6336)

आपने उस मुनाफ़िक़ को सज़ा नहीं दिलवाई, क्योंकि वो अपने क़ौल से इंकारी हो गया या सिर्फ़ एक शख़्स़ अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की गवाही थी और एक की गवाही पर जुर्म षाबित नहीं हो सकता, या आप (ﷺ) ने उसको सज़ा देना मस्लिह़त न समझा हो। **क़ालल क़स्तलानी लम यन्कुल अन्नहू (ﷺ) आ़कबहू.**

व फिल्मक़ास़िदि क़ाल क़ाज़ी अ़याज़ हुक्मुश्शरइ अन्न मन सब्बन्नबिय्य (ﷺ) कफ़र व युक़्तलु व लाकिन्नहू लम युक़्तल तालीफ़न लिग़ैरिहिम व लिअल्ला यश्तहिर फ़िन्नासि अन्नहू (ﷺ) यक़्तुलु अस़्ह़ाबहू फ़यन्फ़िरू या'नी आँह़ज़रत (ﷺ) को गाली देने वाला काफ़िर हो जाता है। जिसकी सज़ा शरअ़न क़त्ल है मगर आपने मस्लिह़तन उसको नहीं मारा।

٣١٥١- حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ:

3151. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया,

कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ज़ुबैर (रज़ि.) को जो ज़मीन इनायत की थी, मैं उसमें से गुठलियाँ (सूखी खजूरें) अपने सर पर लाया करती थी। वो जगह मेरे घर से दो मील फ़र्सख़ की दो तिहाई पर थी। अबू ज़म्रह ने हिशाम से बयान किया और उन्होंने अपने बाप से (मुरसलन) बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ज़ुबैर (रज़ि.) को बनी नज़ीर की अराज़ी में से एक ज़मीन मुक़त्तअ के तौर पर दी थी।

أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: ((كُنْتُ أَنْقُلُ النَّوَى مِنْ أَرْضِ الزُّبَيْرِ الَّتِي أَقْطَعَهُ رَسُولُ اللهِ عَلَى رَأْسِي. وَهِيَ مِنِّي عَلَى ثُلُثَي فَرْسَخٍ)). وَقَالَ أَبُو ضَمْرَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَقْطَعَ الزُّبَيْرَ أَرْضًا مِنْ أَمْوَالِ بَنِي النَّضِيرِ)).

हाफ़िज़ ने कहा मैंने इस तअलीक़ को मौसूलन नहीं पाया, उसके बयान करने से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि अबू ज़म्रह ने अबू उसामा के ख़िलाफ़ इस ह़दीष़ को मुरसलन रिवायत किया है न कि मौसूलन। आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को कुछ जागीर इनायत की, इसी से बाब का मतलब निकला कि इमाम ख़ुमुस वग़ैरह में से ह़स्बे मस्लिहत तक़्सीम करने का मुख़्तार है।

3152. मुझसे अह़मद बिन मिक़्दाम ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हसमे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि उ़मर ने यहूद व नस़ारा को सरज़मीने हिजाज़ से निकालकर दूसरी जगह आबाद कर दिया था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब ख़ैबर फ़तह किया आपका भी इरादा हुआ था कि यहूदियों को यहाँ से निकाल दिया जाए। जब आपने फ़तह पाई, तो उस वक़्त वहाँ की कुछ ज़मीन यहूदियों के क़ब्ज़े में थी। लेकिन फिर यहूदियों ने आँहज़रत (ﷺ) से दरख़्वास्त की, आप ज़मीन उन्हीं के पास रहने दें। वो (खेतों और बाग़ों में) काम किया करेंगे। और आधी पैदावार लेंगे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा जब तक हम चाहेंगे उस वक़्त तक के लिये तुम्हें इस शर्त पर यहाँ रहने देंगे। चुनाँचे ये लोग वहीं रहे और फिर उ़मर (रज़ि.) ने उन्हें अपने दौरे ख़िलाफ़त में (मुसलमानों के ख़िलाफ़ उनके फ़ित्नों और साजिशों की वजह से यहूदे ख़ैबर को) तैमाअ या अरीह़ा की त़रफ़ निकाल दिया था। (राजेअ : 2285)

٣١٥٢ - حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ قَالَ حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ أَجْلَى الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى مِنْ أَرْضِ الْحِجَازِ، وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَمَّا ظَهَرَ عَلَى أَهْلِ خَيْبَرَ أَرَادَ أَنْ يُخْرِجَ الْيَهُودَ مِنْهَا. وَكَانَتِ الأَرْضُ - لَمَّا ظَهَرَ عَلَيْهَا - لِلْيَهُودِ وَلِلرَّسُولِ وَلِلْمُسْلِمِينَ. فَسَأَلَ الْيَهُودُ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنْ يَتْرُكَهُمْ عَلَى أَنْ يَكْفُوا الْعَمَلَ وَلَهُمْ نِصْفُ الثَّمَرِ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((نُقِرُّكُمْ عَلَى ذَلِكَ مَا شِئْنَا)). فَأُقِرُّوا، حَتَّى أَجْلاَهُمْ عُمَرُ فِي إِمَارَتِهِ إِلَى تَيْمَاءَ أَوْ أَرِيحَا)). [راجع: ٢٢٨٥]

तश्रीह : हाफ़िज़ स़ाहब फ़र्माते हैं, वल्मुरादु बिक़ौलिही लम्मा ज़हर अ़लैहा फतह अक्षरहा क़ब्ल अंय्यस्अलहुल्यहूद व अंय्युस़ालिहूहु फकानत लिल्यहूद कुल्लुहा स़ालहहुम अ़ला अंय्युसल्लिमू लहुल्अर्ज़ु कानतिल्अर्ज़ु लिल्लाहि व लिरसूलिही व क़ाल इब्नुल्मुनीर अहादीषुल्बाबि मुत़ाबक़तुल्लित्तर्जुमति

इल्ला हाज़ल्अख़ीर फलैस फीहि लिल्अताइ ज़िक्रुन व लाकिन फीहि ज़िक्रु जिहातिन क़द उलिम मिम्मकानिन आख़र अन्नहा कानत ज़िहात अताइन फबिहाज़त्तरीक़ तदख़ुलु तहतत्तर्जुमति वल्लाहु आलमु (फ़त्हुल बारी) या'नी मुराद ये है कि ज़मीने ख़ैबर को फ़तह करने के बाद यहूद से मुआहिदा हो गया था। पहले वो सब ज़मीनें उन ही की थीं। बाद में ग़लब-ए-इस्लाम के बाद वो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की हो गई थीं। उसमें एक तरह से उन ज़मीनों को बतौरे बख़्शिश देना भी मक़्सूद है। बाब का तर्जुमा से उसी में मुताबक़त है। इस हदीष़ से मुआमलात के बहुत से मसाईल निकलते हैं जिनको हज़रत इमाम ने जगह जगह बयान फ़र्माया है।

बाब 20 : अगर खाने की चीज़ें काफ़िरों के मुल्क में हाथ आ जाएँ

٢٠- بَابُ مَا يُصِيبُ مِنَ الطَّعَامِ فِي أَرْضِ الْحَرْبِ

अल्जुम्हूर अला जवाज़ि अख़िज़ल्ग़ानिमीन मिनल्क़ूति व मा यस्लुहू बिही व कुल्लु तआमिन युअतादु अक्लुहू उमूमन व कज़ालिक अल्फ़द्दवाब्बि सवाअन कान क़ब्लल्क़िस्मति और बअदहा बिइज़्निल्इमामि व बिग़ैरि इज़्निही. (फ़त्हुल बारी) या'नी जुम्हूर का यही फ़त्वा है कि खाने-पीने की चीज़ों को ग़नीमत पाने वाले पहले तक़्सीम से पहले और खा सकते हैं। इसी तरह चारा है, इसे भी अपने जानवरों को खिला-पिला सकते हैं।

3153. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर के महल का मुहासिरा किये हुए थे। किसी शख़्स ने एक कुप्पी फेंकी जिसमें चर्बी भरी हुई थी। मैं उसे लेने के लिये लपका, लेकिन मुड़कर जो देखा तो पास ही नबी करीम (ﷺ) मौजूद थे। मैं शर्म से पानी पानी हो गया। (दीगर मक़ाम : 4224, 5508)

٣١٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا مُحَاصِرِيْنَ قَصْرَ خَيْبَرَ، فَرَمَى إِنْسَانٌ بِجِرَابٍ فِيْهِ شَحْمٌ، فَنَزَوْتُ لِآخُذَهُ، فَالْتَفَتُّ فَإِذَا النَّبِيُّ ﷺ، فَاسْتَحْيَيْتُ مِنْهُ)).

[طرفاه في: ٤٢٢٤، ٥٥٠٨].

यहीं से बाब का तर्जुमा निकला क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मना नहीं किया।

3154. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि (नबी करीम ﷺ के ज़माने में) ग़ज़्वों में हमें शहद और अंगूर मिलता था हम उसे उसी वक़्त खा लेते। (तक़्सीम के लिये उठाकर न रखते)

٣١٥٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ((كُنَّا نُصِيْبُ فِي مَغَازِيْنَا الْعَسَلَ وَالْعِنَبَ، فَنَأْكُلُهُ وَلاَ نَرْفَعُهُ)).

इस हदीष़ से ये निकला कि खाने-पीने की जो चीज़ें रखने से ख़राब होती हैं तक़्सीम से पहले उनके इस्ते'माल में कोई हर्ज नहीं जैसे तरकारियाँ मेवे वग़ैरह।

3155. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे शैबानी ने बयान किया, कहा मैंने इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि जंगे ख़ैबर के मौक़े पर फ़ाक़ों पर फ़ाक़े होने लगे। आख़िर जिस दिन ख़ैबर फ़तह हुआ तो (माले ग़नीमत में) घरेलू गधे भी हमें

٣١٥٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: ((أَصَابَتْنَا مَجَاعَةٌ لَيَالِيَ

مِلو चुनाँचे उन्हें ज़िबह करके (पकाना शुरू कर दिया गया) जब हाँडियों में जोश आने लगा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुनादी ने ऐलान किया कि हाँडियों को उलट दो और घरेलू गधे के गोश्त में से कुछ न खाओ। अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कुछ लोगों ने उस पर कहा कि ग़ालिबन आँहज़रत (ﷺ) ने इसलिये रोका है कि अभी तक उसमें से ख़ुमुस नहीं निकाला गया था। लेकिन कुछ दूसरे स़हाबा ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने गधे का गोश्त क़त़ई तौर पर हराम क़रार दिया है। (शैबानी ने बयान किया कि) मैंने सईद बिन जुबैर (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसे क़त़ई तौर पर हराम कर दिया था। (दीगर मक़ाम : 4220, 4222, 4224, 5526)

خَيْبَرَ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ خَيْبَرَ وَقَعْنَا فِي الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ فَانْتَحَرْنَاهَا، فَلَمَّا غَلَتِ الْقُدُورُ نَادَى مُنَادِي رَسُولِ اللهِ ﷺ أَكْفِئُوا الْقُدُورَ فَلاَ تَطْعَمُوا مِنْ لُحُومِ الْحُمُرِ شَيْئًا)). قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَقُلْنَا إِنَّمَا نَهَى النَّبِيُّ ﷺ لأَنَّهَا لَمْ تُخَمَّسْ. قَالَ: وَقَالَ آخَرُونَ حَرَّمَهَا الْبَتَّةَ. وَسَأَلْتُ سَعِيْدَ بْنَ جُبَيْرٍ فَقَالَ: حَرَّمَهَا الْبَتَّةَ.
[أطرافه في: ٤٢٢٠، ٤٢٢٢، ٤٢٢٤، ٥٥٢٦].

58. किताबुल जिज़्या वल मुवादिअत

किताब जिज़्या वग़ैरह के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : जिज़्या का और काफ़िरों से एक मुद्दत तक लड़ाई न करने का बयान

١- بَابُ الْجِزْيَةِ وَالْمُوَادَعَةِ، مَعَ أَهْلِ الذِّمَّةِ وَالْحَرْبِ

और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद कि, उन लोगों से जंग करो जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाए और न आख़िरत के दिन पर और न उन चीज़ों को वो हराम मानते हैं जिन्हें अल्लाह व रसूल (ﷺ) ने हराम क़रार दिया है और न दीने हक़ को उन्होंने क़ुबूल किया (बल्कि उल्टे वो लोग तुम्हीं को मिटाने और इस्लाम को ख़त्म करने के लिये जंग पर आमादा हो गये)। उन लोगों से जिन्हें किताब दी गई थी (मष़लन यहूद व नस़ारा) यहाँ तक (मुदाफ़िअ़त करो) कि वो तुम्हारे ग़लबा की वजह से जिज़्या देना क़ुबूल कर लें और वो तुम्हारे मुक़ाबले पर दब गये हों। (स़ाग़िरून के मा'नी) अजिल्ला

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى :
﴿ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لاَ يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَلاَ بِالْيَوْمِ الآخِرِ وَلاَ يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللهُ وَرَسُولُهُ وَلاَ يَدِيْنُونَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ﴾ [التوبة: ٢٩] أَذِلاَّءُ. وَمَا جَاءَ فِي أَخْذِ الْجِزْيَةِ مِنَ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسِ وَالْعَجَمِ وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ

ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ : قُلْتُ لِمُجَاهِدٍ مَا شَأْنُ أَهْلِ الشَّامِ عَلَيْهِمْ أَرْبَعَةُ دَنَانِيرَ، وَأَهْلُ الْيَمَنِ عَلَيْهِمْ دِينَارٌ؟ قَالَ: جُعِلَ ذَلِكَ مِنْ قِبَلِ الْيَسَارِ.

के हैं। और इन अहादीष़ का ज़िक्र जिनमें यहूद, नसारा, मजूस, और अहले अजम से जिज़्या लेने का बयान हुआ है। इब्ने उ़यैना ने कहा, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने कहा कि मैंने मुजाहिद से पूछा, इसकी क्या वजह है कि शाम के अहले किताब पर चार दीनार (जिज़्या) है और यमन के अहले किताब पर सिर्फ़ एक दीनार! तो उन्होंने कहा कि शाम के काफ़िर ज़्यादा मालदार हैं ।

इसको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने वस्ल किया है। मा'लूम हुआ कि जिज्या की कमी बेशी के लिये इमाम को इख़्तियार है। जिज़्या के नाम से ह़क़ीरी रक़म ग़ैर–मुस्लिम रिआ़या पर इस्लामी हुकूमत की त़रफ़ से एक ह़िफ़ाज़ती टेक्स है जिसकी अदायगी उन ग़ैर–मुस्लिमों की वफ़ादारी का निशान है और इस्लामी हुकूमत पर ज़िम्मेदारी है कि उनके माल व जान व मज़ हब की पूरे त़ौर पर ह़िफ़ाज़त की जाएगी। अगर इस्लामी हु कूमत इस बारे में नाकाम रह जाए तो उसे जिज़्या लेने का कोई ह़क़ न होगा। **कमा ला यख़्फ़ा**

(लफ़्ज़ अजिल्ला से आगे कुछ नुस्ख़ों में ये इ़बारत ज़ाईद है, **वल्मस्कनतु मस्दरुल्मिस्कीन अस्कनु मिन फुलानिन अह़वजु मिन्हु व लम यज़्हब इलस्सुकून.**

٣١٥٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ عَمْرًا قَالَ: ((كُنْتُ جَالِسًا مَعَ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ وَعَمْرِو بْنِ أَوْسٍ فَحَدَّثَهُمَا بَجَالَةُ سَنَةَ سَبْعِينَ - عَامَ حَجَّ مُصْعَبُ بْنُ الزُّبَيْرِ بِأَهْلِ الْبَصْرَةِ - عِنْدَ دَرَجِ زَمْزَمَ قَالَ: كُنْتُ كَاتِبًا لِجَزْءِ بْنِ مُعَاوِيَةَ عَمِّ الأَحْنَفِ، فَأَتَانَا كِتَابُ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَبْلَ مَوْتِهِ بِسَنَةٍ، فَرِّقُوا بَيْنَ كُلِّ ذِي مَحْرَمٍ مِنَ الْمَجُوسِ. وَلَمْ يَكُنْ عُمَرُ أَخَذَ الْجِزْيَةَ مِنَ الْمَجُوسِ)).

3156. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अ़म्र बिन दीनार से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं जाबिर बिन ज़ैद और अ़म्र बिन औस के साथ बैठा हुआ था तो उन दोनों बुज़ुर्गों से बजाला ने बयान किया कि 70 हिजरी में जिस साल मुस़्अ़ब बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बस़रा वालो के साथ ह़ज किया था। ज़मज़म की सीढ़ियों के पास उन्होने बयान किया था कि मैं अह़नफ़ बिन क़ैस (रज़ि.) के चचा जिज़्आ बिन मुआ़विया का कातिब था। तो वफ़ात से एक साल पहले उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का एक मक्तूब हमारे पास आया कि जिस पारसी ने अपनी महरम औरत को बीवी बनाया हो तो उनको जुदा कर दो और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने पारसियों से जिज़्या नहीं लिया था।

٣١٥٧- حَتَّى شَهِدَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَخَذَ الْجِزْيَةَ مِنْ مَجُوسِ هَجَرَ)).

3157. लेकिन जब अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने गवाही दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हजर के पारसियों से जिज़्या लिया था। (तो वो भी लेने लगे थे)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि पारसियों को भी हुक्म अहले किताब का सा है। इमाम शाफ़िई और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने निकाला कि पारसी अहले किताब थे, फिर उनके सरदार ने बदतमीज़ी की, अपनी बहन से सुह़बत की और दूसरों को भी ये समझाया कि उसमें कोई क़बाह़त नहीं है आदम (अलैहिस्सलाम) अपनी लड़कियों का निकाह़ अपने लड़कों से कर देते थे। कुछ लोगों ने उसका कहना माना और जिन्होंने इंकार किया, उनको उसने मार डाला। आख़िर उनकी किताब मिट गई और

मौता में मर्फ़ूअ ह़दीष़ है कि पारसियों के साथ अहले किताब का सुलूक़ करो।

3158. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने कहा कि मुझसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने और उन्हें अ़म्र बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने ख़बर दी। वो बनी आ़मिर बिन लवी के ह़लीफ़ थे और जंगे बद्र में शरीक थे। उन्होंने उनको ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू उ़बैदह बिन जर्राह़ (रज़ि.) को बह़रीन जिज़्या वसूल करने के लिये भेजा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने बह़रीन के लोगों से सुलह़ की थी और उन पर अ़लाअ बिन ह़ज़रमी (रज़ि.) को ह़ाकिम बनाया था। जब अबू उ़बैदह (रज़ि.) बह़रीन का माल लेकर आए तो अंसार को मा'लूम हो गया कि अबू उ़बैदह (रज़ि.) आ गये हैं। चुनाँचे फ़ज्र की नमाज़ सब लोगों ने नबी करीम (ﷺ) के साथ पढ़ी। जब आँह़ज़रत (ﷺ) नमाज़ पढ़ा चुके तो लोग आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने आये। आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हें देखकर मुस्कुराए और फ़र्माया कि मेरा ख़याल है कि तुमने सुन लिया है कि अबू उ़बैदह कुछ लेकर आए हैं ? अंसार (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया जी हाँ! या रसूलल्लाह (ﷺ)! आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, और उस चीज़ के लिये तुम पुर उम्मीद रहो। जिससे तुम्हें ख़ुशी होगी, लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे बारे में मुह़ताजी और फ़क़्र से नहीं डरता। मुझे अगर डर है तो उस बात का कुछ दुनिया के दरवाज़े तुम पर इस त़रह़ खोल दिये जाएँगे जैसे तुमसे पहले लोगों पर खोल दिये गये थे, तो ऐसा न हो कि तुम भी उनकी त़रह़ एक-दूसरे से जलने लगो और ये जलना तुमको भी उसी त़रह़ तबाह कर दे जैसा कि पहले लोगों को किया था।

٣١٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَمْرَو بْنَ عَوْفٍ الأَنْصَارِيَّ- وَهُوَ حَلِيفٌ لِبَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ، وَكَانَ شَهِدَ بَدْرًا - أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ إِلَى الْبَحْرَيْنِ يَأْتِي بِجِزْيَتِهَا، وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ صَالَحَ أَهْلَ الْبَحْرَيْنِ وَأَمَّرَ عَلَيْهِمُ الْعَلاَءَ بْنَ الْحَضْرَمِيِّ، فَقَدِمَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَسَمِعَتِ الأَنْصَارُ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ فَوَافَتْ صَلاَةَ الصُّبْحِ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ. فَلَمَّا صَلَّى بِهِمُ الْفَجْرَ انْصَرَفَ، فَتَعَرَّضُوا لَهُ، فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ رَآهُمْ وَقَالَ: ((أَظُنُّكُمْ قَدْ سَمِعْتُمْ أَنَّ أَبَا عُبَيْدَةَ قَدْ جَاءَ بِشَيْءٍ))، قَالُوا: أَجَلْ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ ((فَأَبْشِرُوا وَأَمِّلُوا مَا يَسُرُّكُمْ، فَوَ اللهِ لاَ الْفَقْرَ أَخْشَى عَلَيْكُمْ، وَلَكِنْ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُبْسَطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا، وَتُهْلِكَكُمْ كَمَا أَهْلَكَتْهُمْ)).

सुब्ह़ानल्लाह! क्या उ़म्दा नसीह़त फ़र्माई, मुसलमानों को। जितनी दौलतें और रियासतें तबाह हुईं वो इसी आपस के रश्क और ह़सद और ना इत्तिफ़ाक़ी की वजह से हुईं। आज भी अ़रब मुमालिक को देखा जा सकता है कि यहूदी उनकी छातियों पर सवार हैं और वो आपस मे लड़ लड़कर कमज़ोर हो रहे हैं।

3159. हमसे फ़ज़ल बिन यअ़क़ूब ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र अर् रक़्क़ी ने, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन

٣١٥٩- حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ الرَّقِّيُّ قَالَ

حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا
سَعِيدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ الثَّقَفِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا بَكْرُ
بْنُ عَبْدِ اللهِ الْمُزَنِيُّ وَزِيَادُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ
حَيَّةَ قَالَ: ((بَعَثَ عُمَرُ النَّاسَ فِي أَفْنَاءِ
الأَمْصَارِ يُقَاتِلُونَ الْمُشْرِكِينَ، فَأَسْلَمَ
الْهُرْمُزَانُ، فَقَالَ: إِنِّي مُسْتَشِيرُكَ فِي
مَغَازِيَّ هَذِهِ. قَالَ: نَعَمْ، مَثَلُهَا وَمَثَلُ مَنْ
فِيهَا مِنَ النَّاسِ مِنْ عَدُوِّ الْمُسْلِمِينَ مَثَلُ
طَائِرٍ لَهُ رَأْسٌ وَلَهُ جَنَاحَانِ وَلَهُ رِجْلاَنِ،
فَإِنْ كُسِرَ أَحَدُ الْجَنَاحَيْنِ نَهَضَتِ
الرِّجْلاَنِ بِجَنَاحٍ وَالرَّأْسِ. فَإِنْ كُسِرَ
الْجَنَاحُ الآخَرُ نَهَضَتِ الرِّجْلاَنِ وَالرَّأْسُ.
وَإِنْ شُدِخَ الرَّأْسُ ذَهَبَتِ الرِّجْلاَنِ
وَالْجَنَاحَانِ وَالرَّأْسُ. فَالرَّأْسُ كِسْرَى
وَالْجَنَاحُ قَيْصَرُ وَالْجَنَاحُ الآخَرُ فَارِسُ.
فَمُرِ الْمُسْلِمِينَ فَلْيَنْفِرُوا إِلَى كِسْرَى.
وَقَالَ بَكْرٌ وَزِيَادٌ جَمِيعًا عَنْ جُبَيْرِ بْنِ
حَيَّةَ : قَالَ فَنَدَبَنَا عُمَرُ. وَاسْتَعْمَلَ عَلَيْنَا
النُّعْمَانَ بْنَ مُقَرِّنٍ. حَتَّى إِذَا كُنَّا بِأَرْضِ
الْعَدُوِّ، وَخَرَجَ عَلَيْنَا عَامِلُ كِسْرَى فِي
أَرْبَعِينَ أَلْفًا، فَقَامَ تَرْجُمَانٌ فَقَالَ:
لِيُكَلِّمْنِي رَجُلٌ مِنْكُمْ. فَقَالَ الْمُغِيرَةُ:
سَلْ عَمَّا شِئْتَ. قَالَ : مَا أَنْتُمْ؟ قَالَ :
نَحْنُ أُنَاسٌ مِنَ الْعَرَبِ كُنَّا فِي شَقَاءٍ شَدِيدٍ
وَبَلاَءٍ شَدِيدٍ. نَمَصُّ الْجِلْدَ وَالنَّوَى مِنَ
الْجُوعِ. وَنَلْبَسُ الْوَبَرَ وَالشَّعَرَ. وَنَعْبُدُ
الشَّجَرَ وَالْحَجَرَ. فَبَيْنَا نَحْنُ كَذَلِكَ إِذْ

सुलैमान ने, कहा हमसे सईद बिन उ़बैदुल्लाह षक़फ़ी ने बयान किया, उनसे बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़्नी और ज़ियाद बिन जुबैर दोनों ने बयान किया और उनसे जुबैर बिन ख़य्या ने बयान किया कि कुफ़्फ़ार से जंग के लिये उ़मर (रज़ि.) ने फौजों को (फ़ारस के) बड़े बड़े शहरों की त़रफ़ भेजा था। (जब लश्कर क़ादसिया पहुँचा और लड़ाई का नतीजा मुसलमानों के ह़क़ में निकला) तो हुर्मुज़ान (शोस्तर का ह़ाकिम) इस्लाम ले आया। उ़मर (रज़ि.) ने इससे फ़र्माया, कि मैं तुमसे उन (मुमालिक फ़ारस वग़ैरह) पर फौज भेजने के सिलसिले में मश्वरा चाहता हूँ (कि पहले उन तीन मुक़ामों फ़ारस, अस्फ़हान और अज़र बैजान में कहाँ से लड़ाई शुरू की जाए) उसने कहा जी हाँ! इस मुल्क की मिषाल और उसमें रहने वाले इस्लाम दुश्मन बाशिन्दों की मिषाल एक परिन्दे जैसी है जिसका सर है, दो बाज़ू हैं। अगर उसका एक बाज़ू तोड़ दिया जाए तो वो अपने दोनों पांव पर एक बाज़ू और एक सर के साथ खड़ा रह सकता है। अगर दूसरा बाज़ू भी तोड़ दिया जाए तो दोनों पांव और सर के साथ खड़ा रह सकता है। लेकिन अगर सर तोड़ दिया जाए तो दोनों पांव दोनों बाज़ू और सर सब बेकार रह जाता है। पस सर तो किसरा है, एक बाज़ू क़ैसर है और दूसरा फ़ारस! इसलिये आप मुसलमानों को हुक्म दे दें कि पहले वो किसरा पर ह़मला करें और बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह और जियाद बिन जुबैर दोनों ने बयान किया कि उनसे जुबैर बिन ह़य्यि ने बयान किया कि हमें ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने (जिहाद के लिये) बुलाया और नोअ़मान बिन मुक़र्रिन (रज़ि.) को हमारा अमीर मुक़र्रर किया। जब हम दुश्मन की सरज़मीन (नहावन्द) के क़रीब पहुँचे तो किसरा का एक अफ़सर चालीस हज़ार का लश्कर साथ लिये हुए हमारे मुक़ाबले के लिये बढ़ा। फिर एक तर्जुमान ने आकर कहा कि तुममें से कोई एक शख़्स (मामलात पर) बातचीत करे, मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने (मुसलमानों की नुमाइन्दगी की और) फ़र्माया कि जो तुम्हारे मुत़ालिबात हों, उन्हें बयान करो। उसने पूछा आख़िर तुम लोग हो कौन? मुग़ीरह (रज़ि.) ने कहा कि हम अ़रब के रहने वाले हैं, हम इंतिहाई बदबख़्तों और मुसीबतों में मुब्तला थे। भूख की शिद्दत में हम चमड़े, और गुठलियाँ चूसा करते थे। ऊन और बाल हमारी पोशाक थी और पत्थरों और पेड़ों की हम इबादत किया करते थे। हमारी मुसीबतें इसी त़रह क़ायम थीं कि आसमान और ज़मीन के

रब ने, जिसका ज़िक्र अपनी तमाम अ़ज़्मत व जलाल के साथ बुलन्द है। हमारी त़रफ़ हमारी ही तरह़ (के इंसानी आ़दात व ख़स़ाइस़ रखने वाला) एक नबी भेजा। हम उसके बाप और माँ को जानते हैं। अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि हम तुमसे उस वक़्त तक जंग करते रहें। जब तक तुम स़िर्फ़ एक अल्लाह की इबादत न करने लगो। या फिर इस्लाम न क़ुबूल करने की सूरत में जिज़्या देना क़ुबूल कर लो और हमारे नबी करीम (ﷺ) ने हमें अपने रब का ये पैग़ाम भी पहुँचाया है कि (इस्लाम के लिये लड़ते हुए) जिहाद में हमारा जो आदमी भी क़त्ल किया जाएगा वो ऐसी जन्नत में जाएगा, जो उसने कभी नहीं देखी और जो लोग हममें से ज़िन्दा बाक़ी रह जाएँगे वो (फ़तह़ ह़ास़िल करके) तुम पर ह़ाकिम बन सकेंगे। (मुग़ीरह रज़ि. ने ये बातचीत तमाम करके नोअ़मान रज़ि. से कहा लड़ाई शुरू करो)। (दीगर मक़ाम : 7530)

بَعَثَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الأَرَضِيْنَ - تَعَالَى ذِكْرُهُ وجَلَّتْ عَظَمَتُهُ - إِلَيْنَا نَبِيًّا مِنْ أَنْفُسِنَا نَعْرِفُ أَبَاهُ وَأُمَّهُ فَأَمَرَنَا نَبِيُّنَا رَسُولُ رَبِّنَا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نُقَاتِلَكُمْ حَتَّى تَعْبُدُوا اللهَ وَحْدَهُ. أَوْ تُؤَدُّوا الْجِزْيَةَ. وَأَخْبَرَنَا نَبِيُّنَا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وسَلَّم عَنْ رِسَالَةِ رَبِّنَا أَنَّهُ مَنْ قُتِلَ مِنَّا صَارَ إِلَى الْجَنَّةِ فِي نَعِيْمٍ لَمْ يَرَ مِثْلَهَا قَطُّ. وَمَنْ بَقِيَ مِنَّا مَلَكَ رِقَابَكُمْ)).

[طرفه في : ٧٥٣٠].

3160. नोअ़मान (रज़ि.) ने कहा तुमको अल्लाह पाक ऐसी कई लड़ाइयों में आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ शरीक रख चुका है। और उसने (लड़ाई में देर करने पर) तुमको न शर्मिन्दा किया न ज़लील किया और मैं तो आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ लड़ाई में मौजूद था। आपका क़ायदा था अगर सुबह़ सवेरे लड़ाई शुरू न करते और दिन चढ़ जाता तो उस वक़्त तक ठहरे रहते कि सूरज ढल जाए, हवाएँ चलने लगें, नमाज़ों का वक़्त आ पहुँचे।

٣١٦٠- فَقَالَ النُّعْمَانُ : رُبَّمَا أَشْهَدَكَ اللهُ مِثْلَهَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُنَدِّمْكَ وَلَمْ يُخْزِكَ وَلَكِنِّي شَهِدْتُ الْقِتَالَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، كَانَ إِذَا لَمْ يُقَاتِلْ فِي أَوَّلِ النَّهَارِ انْتَظَرَ حَتَّى تَهُبَّ الأَرْوَاحُ. وَتَحْضُرَ الصَّلَوَاتُ)).

तश्रीह़ : हुआ ये कि लश्करे इस्लाम ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में ईरान की त़रफ़ चला। जब क़ादसिया में पहुँचा तो यज़्दगर बादशाहे ईरान ने एक बड़ी फौज उसके मुक़ाबले के लिये रवाना की। 14 हिजरी में ये जंग वाक़ेअ़ हुई, जिसमें मुसलमानों को काफ़ी नुक़्सान पहुँचा, त़लीह़ा असदी और अ़म्र बिन मअ़द यक्रिब और ज़रार बिन ख़त्ताब जैसे इस्लामी बहादुर शहीद हो गये। बाद में अल्लाह पाक ने काफ़िरों पर एक तेज़ आँधी भेजी। उनके डेरे ख़ैमे सब उखड़ गये, इधर से मुसलमानों ने ह़मला किया, वो भागे, उनका नामी गिरामी पहलवान रुस्तम स़ानी मारा गया और मुसलमानी फ़ौज पीछा करती हुई मरायन पहुँची, वहाँ का रईस हुर्मुज़ान मह़सूर हो गया, आख़िर उसने अमान चाही और ख़ुशी से मुसलमान हो गया।

अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) जो फौज के सरदार थे, उन्होंने उनको ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास भेज दिया। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उसकी इ़ज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़र्माई, इसे अ़क़्लमन्द और स़ाह़िबे तदबीर पाकर उसको मुशीरे ख़ास़ बनाया, चुनाँचे हुर्मज़ान ने किसरा के बारे में स़ह़ीह़ मश्वरा दिया। हर चन्द वो रोम का बादशाह था मगर उस ज़माने में किसरा का मर्तबा सब बादशाहों से ज़्यादा था, उसका तबाह होना ईरान और रोम दोनों के ज़वाल का सबब बना, किसरा की फौज का सरदार ज़ुल्

जनाहैन नामी सरदार था, जो ख़च्चर से गिरा और उसका पेट फट गया। सख़्त जंग के बाद काफ़िरों को हज़ीमत (शिकस्त) हुई, मज़ीद तफ़्सील आगे आएगी।

बाब 2 : अगर बस्ती के हाकिम से सुलह हो जाए तो बस्ती वालों से भी सुलह समझी जाएगी

٢- بَابُ إِذَا وَادَعَ الإِمَامُ مَلِكَ الْقَرْيَةِ، هَلْ يَكُونُ ذَلِكَ لِبَقِيَّتِهِمْ؟

3161. हमसे सहल बिन बक्कार ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अम्र बिन यह्या ने, उनसे अब्बास साएदी ने और उनसे अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) के साथ हम ग़ज़्व-ए-तबूक़ में शरीक थे। ईला के हाकिम (योहन्ना बिन रोवबा) ने आँहज़रत (ﷺ) को एक सफ़ेद ख़च्चर भेजा और आप (ﷺ) ने उसे एक चादर बतौरे ख़िल्अत के और एक तहरीर के ज़रिये उसके मुल्क पर उसे ही हाकिम बाक़ी रखा। (राजेअ : 1481)

٣١٦١- حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ بَكَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى عَنْ عَبَّاسٍ السَّاعِدِيِّ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: ((غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ تَبُوكَ، وَأَهْدَى مَلِكُ أَيْلَةَ لِلنَّبِيِّ ﷺ بَغْلَةً بَيْضَاءَ، وَكَسَاهُ بُرْدًا، وَكَتَبَ لَهُ بِبَحْرِهِمْ)).

[راجع: ١٤٨١]

ये रिवायत इब्ने इस्हाक़ में यूँ है कि जब आप (ﷺ) तबूक़ को जा रहे थे, तो योहन्ना बिन रोवबा ईला का हाकिम आपकी ख़िदमत में आया। उसने जिज़्या देना क़ुबूल कर लिया, और आपने उससे सुलह करके सनदे अमान लिखकर दे दी, इससे बाब का तर्जुमा यूँ निकला कि आपने योहन्ना से सुलह की तो सारे ईला वाले अमन और सुलह में आ गए।

बाब 3 : आँहज़रत (ﷺ) ने जिन काफ़िरों को अमान दी (अपने ज़िम्मे में लिया) उनके अमान को क़ायम रखने की वसिय्यत करना

٣- بَابُ الْوَصَاةِ بِأَهْلِ ذِمَّةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَالذِّمَّةُ الْعَهْدُ، وَالإِلُّ الْقَرَابَةُ

ज़िम्मे कहते हैं अहद और इक़रार को और आल का लफ़्ज़ जो क़ुर्आन में आया है उसके मा'नी रिश्तेदारी के हैं।

3162. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू जम्रह ने बयान किया, कहा कि मैंने जुवेरिया बिन क़ुदामा तमीमी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना था, (जब वो ज़ख़्मी हुए) आपसे हमने अर्ज़ किया था कि हमें कोई वसिय्यत कीजिए! तो आपने फ़र्माया कि मैं तुम्हें अल्लाह तआला के अहद की (जो तुमने ज़िम्मियों से किया है) वसिय्यत करता हूँ (कि उसकी हिफ़ाज़त में कोताही न करना) क्योंकि वो तुम्हारे नबी का ज़िम्मा है और तुम्हारे घरवालों की रोज़ी है (कि जिज़्या के रुपया से तुम्हारे बाल–बच्चों की गुज़रान होती है)। (राजेअ : 1392)

٣١٦٢- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو جَمْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ جُوَيْرِيَةَ بْنَ قُدَامَةَ التَّمِيمِيَّ قَالَ: ((سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : قُلْنَا أَوْصِنَا يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، قَالَ: أُوصِيكُمْ بِذِمَّةِ اللهِ، فَإِنَّهُ ذِمَّةُ نَبِيِّكُمْ، وَرِزْقُ عِيَالِكُمْ)).

[راجع: ١٣٩٢]

तश्रीह : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) की ये वो आलीशान वसिय्यत है जिस पर इस्लाम हमेशा नाज़ाँ रहेगा। उससे ज़ाहिर है कि इस्लामी जिहाद का मंशा ग़ैर–मुस्लिम क़ौमों को मिटाना या सताना हर्गिज़ नहीं है। फिर भी कुछ मुतअस्सिब लोगों ने जिहाद के सिलसिले में इस्लाम को मलामत का शिकार बनाया है जिनके जवाब में ख़तीबुल इस्लाम हज़रत मौलाना अब्दुर्रऊफ़ साहब झण्डानगरी नाज़िमे जामिआ सिराजुल उलूम झण्डा नगर नेपाल ने एक तफ़्सीली मक़ाला मर्हमत फ़र्माया है। जिसे हम मौलाना के शुक्रिया के साथ यहाँ दर्ज करते हैं। जिसके मुतालअे से नाज़िरीने बुख़ारी शरीफ़ की मा'लूमात में बेश अज़ बेश इज़ाफ़ा होगा। मौलाना तहरीर फ़र्माते हैं: –

जिहाद के मफ़्हूम से बेख़बरी पर अहले यूरोप मुस्तश्रिक़ीन ये ए'तिराज़ करते हैं कि जिहाद ग़ैर–मुस्लिमों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने का नाम है। अगरचे उन ग़ैर–मुस्लिमों ने मुसलमानों पर कोई ज़्यादती और उनके साथ कोई दुश्मनी न की हो, लेकिन अहले यूरोप सरासर किज़्ब व इफ़्तिराअ से काम लेते हैं क्योंकि अदना तअम्मुल से ये ए'तिराज़ ग़लत और बातिल षाबित हो जाता है। सूरह अन्फ़ाल व सूरह बक़रः में ये तफ़्सील मौजूद है जिससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि दीन के अंदर ज़बरदस्ती नहीं है। अस़ल मे क़ुर्आने करीम में कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन और यहूद व नसारा के साथ जंग व किताल की जो आयात हैं उनसे नावाक़िफ़ों को सरसरी मुतालआ से ये ग़लतफ़हमी पैदा होती है कि इस्लाम तमाम मज़ाहिब का दुश्मन है, मगर ये ग़लतफ़हमी उन आयात के पसमंज़र से नावाक़फ़ियत के सबब पैदा हो गई है। वाक़िया ये है कि ग़ैर–मुस्लिमों की दो क़िस्में हैं, एक वो जो इस्लाम और मुसलमानों के मुआनिद और उनके दुश्मन हैं, दूसरे वो जिनको मुसलमानों से कोई मुख़ासिमत और दुश्मनी नहीं है उन दोनों के लिये अहकाम जुदा जुदा हैं।

जो ग़ैर–मुस्लिम मुसलमानों के दुश्मन और दरपे आज़ार नहीं हैं उनका हुक्म जुदा है। उनके साथ दुनियावी ता'ल्लुक़ात और हुस्ने सुलूक की मुमानअत नहीं है। इर्शाद है :–

ला यन्हाकुमुल्लाहु अनिल्लज़ीन लम युक़ातिलूकुम फ़िद्दीनि व लम युख़्रिजुकुम मिन दियारिकुम इन तबर्रूहुम व तुक़्सितू इलैहिम इन्नल्लाह युहिब्बुल मुक़्सितीन. इन्नमा यन्हाकुमुल्लाहु अनिल्लज़ीन क़ातलूकुम फ़िद्दीनि व अख़रजूकुम मिन दियारिकुम व ज़ाहरू अ़ला इख़्राजिकुम अन तवल्लौहुम व मंय्यतवल्लाहुम फ़उलाइक हुमुज़्ज़ालिमून. (अल मुम्तहिना : 8-9)

या'नी जो लोग तुमसे दीन के बारे में जंग नहीं करते और जिन्होंने तुमको तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, उनके साथ अहसानो सुलूक और अदल व इंसाफ़ का बर्ताव करने से अल्लाह तुमको मना नहीं करता। अल्लाह तो सिर्फ़ उन्ही लोगों से दोस्ती करने से मना करता है जो दीन के बारे में तुमसे लड़े और जिन्होंने तुमको तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने मे मुख़ालिफ़ों की मदद की, जो ऐसे लोगों से दोस्ती रखेगा, वो ज़ालिमों में से होगा।

और जो ग़ैर–मुस्लिम मुसलमानों से अदावत रखते हैं और उनको मिटाने जलाने और बर्बाद करने के दर पे रहते हैं उनसे दोस्ती क़त्अन हराम है और उनके क़त्ल के जवाब में क़त्ल व क़िताल के अहकाम मौजूद हैं । लेकिन ऐसी जंग में भी ज़ुल्म व ज़्यादती की मुमानअत मौजूद है। इर्शाद है, **व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ीन युक़ातिलूनकुम व ला तअतदू इन्नल्लाहा ला युहिब्बुल मुअतदीन.** और जो तुमसे लड़े तुम भी अल्लाह के रास्ते में उनसे लड़ो, मगर किसी क़िस्म की ज़्यादती न करो, अल्लाह ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता।

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने जिहाद के बारे में जो तफ़्सील लिखी है। उसका ख़ुलासा ये है कि दुश्मन से जिहाद तलवार, अस्लहा के ज़रिये सिर्फ़ उसी वक़्त ज़रूरी है जबकि मुसलमानों पर कुफ़्फ़ार ज़्यादती और दुश्मनी का खुल्लम खुल्ला रवैया इख़्तियार किये हुए हों।

इमाम इब्ने तैमिया (रह.) ने मज्मूआ रसाईल **तहत क़िताल्लिल्कुफ़्फ़ार** में सराहत की है कि क़ुर्आन करीम में इर्शाद है **ला इक्राह फ़िद्दीन** दीन में ज़बरदस्ती नहीं है। **फ़लौ कानल्काफ़िरु युक़्तलु हत्ता युस्लिम लकान हाज़ा आज़मुल्इक्राहि अलद्दीन** पस अगर मसला शरई ये हो कि जब काफ़िर मुसलमान न हो तो उसको क़त्ल कर दिया जाए तो मज़हब पर जबर व इकराह की उससे बड़ी शक्ल और क्या है?

इस्लाम का मक़्सद महज़ काफ़िरों को क़त्ल कर डालना और उनके अम्वाल व जायदाद को ह़ासिल कर लेना नहीं है बल्कि जिहाद का मत़लब इस्तिलाए इस्लाम है जो दीने ह़क़ है और दरअसल ह़क़ीक़तन दीन व दुनिया का ए'तिदाल व तवाज़ुन इस्लाम के निज़ाम में मुज़्मर (पोशीदा) है। इसको तमाम आलम में आम करना मक़्सूद है। जैसा कि इर्शाद है, **अल्लज़ीन आमनू युक़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ीन कफरु युक़ातिलून फ़ी सबीलित्ताग़ूति फक़ातिलू औलियाअश्शैतानि इन्न कैदश्शैतानि कान ज़ईफ़ा**

इसी मा'नी में दूसरी जगह इर्शाद है **वक्तुलूहुम हत्ता ला तकून फित्नतव्वं यकूनद्दीनु लिल्लाहि फइनिन्तहौ फला उ़दवान इल्ला अलज़्ज़ालिमीन** (अल बक़रः 193) या'नी और उनसे जिहाद करो, यहाँ तक कि फ़ित्ना बाक़ी न रहे (और दीन अल्लाह ही का हो जाए) पस अगर वो बाज़ आ जाएँ, तो फिर ज़्यादती न करो मगर ज़ालिमों पर)

अगर इस्लाम का मक़्सद महज़ क़िताले कुफ़्फ़ार होता तो फिर औरतों, बच्चों, बूढ़ों, मा'ज़ूरों, और गोशागीर फ़क़ीरों को किताल के हुक्म से क्यूँ अलग किया जाता? क्योंकि इल्लते कुफ्र तो सब में मुश्तरक है। हालाँकि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से इसी त़रह़ मरवी है कि **ला तक़्तुलु जुरिय्यतन व ला असीफन व ला शैखन फानियन व ला तिफ़लन सगीरन व ला इम्रातन** या'नी छोटे बच्चों, बेगार में पकड़े हुए मज़दूरों, कमज़ोर और बूढ़ों, नाबालिग़ लड़कों और औरतों को क़त्ल न करो। (अस्सियास्तुश्शरइय्यतु पेज 51, मुअता मअ़हू मस्वा जिल्द षानी पेज 132)

इसी त़रह़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अमीरे लश्कर ह़ज़रत उसामा (रज़ि.) से फ़ुर्माया था कि देखो ख़यानत न करना, फरेब न करना और दुश्मन का हाथ पांव मत काटना, छोटे बच्चों, बूढ़ों और औरतों को क़त्ल न करना। और उन लोगों को कुछ न कहना जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी इबादतगाहों, गिरजाघरों मे वक़्फ़ कर दी हो। (सिद्दीक़े अकबर मोअल्लिफ़ा मौलाना सईद अह़मद अकबर आबादी बह़वाला त़बरी पेज नं. 329)

शैख़ुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया (रह.) इस ह़दीष़ को नक़्ल करने के बाद लिखते हैं कि अगर कुफ्र का इक़्तिदार फ़ित्ने की वजह बन जाए तो फ़ित्ना को ख़त्म करने के लिये क़िताल ज़रूरी है या नहीं? फ़र्माते हैं, **फमंल्लम यमनइल्मुस्लिमीन मिन इक़ामतिद्दीनिल्इस्लामि लम यकुन मुज़िर्रतुन कुफ़्रुहू इल्ला अला नफ़्सिही** (अस्सियासतुश्शरइय्या इब्नि तैमिया पेज 59)

जिज़्या भी इस्लाम के इक़्तिदार व बालादस्ती को तस्लीम करने की ग़र्ज़ से है, वरना महज़ तह़सील ख़िराज व जिज़्या इस्लाम का हर्गिज़ मक़्सद न था। ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) ने ख़ुरासान के आ़मिल जर्राह़ बिन अ़ब्दुल्लाह को इसलिये मुअ़त्तल कर दिया कि उन्होंने जिज़्या को कम देखकर नौ मुस्लिमों से कहा कि तुम लोग इसलिये इस्लाम ले आए हो कि जिज़्या से बच जाओ। ये बात ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ तक पहुँची तो आ़मिल को मअ़ज़ूल (निलम्बित) करते हुए एक सुनहरा मक़ूला तह़रीर फ़र्माया कि, ह़ज़रत मुह़म्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) दुनिया में दा'वते-ह़क़ के लिये भेजे गये थे। आप ख़िराज व जिज़्या के मुह़स्सिल बनाकर नहीं भेजे गये थे। (अल बिदाया वन् निहाया जिल्द तासेअ़ पेज नं. 188)

बहरह़ाल इस्लाम का मक़्सद हुसूले-इक़्तिदार व इस्तिलाअ सिर्फ़ इसलिये है ताकि दीन व दुनिया में ए'तिदाल व तवाज़ुन और अमन व अमान क़ायम रहे और निज़ामे इस्लाम के ज़रिये अक़्वामे आ़लम को सुकूने क़ल्ब और अमन व इस्तिक़लाल के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने के मौक़े ह़ासिल हों।

बाब 4 : आँह़ज़रत (ﷺ) का बह़रीन से (मुजाहिदीन को कुछ मआ़श) देना और बह़रीन की आमदनी और जिज़्या में से किसी को कुछ देने का वा'दा करना उसका बयान और उसका कि जो माल काफ़िरों से बिन लड़े हाथ आए या जिज़्या वो किन लोगों में तक़्सीम किया जाए

٤- بَابُ مَا أَقْطَعَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، وَمَا وَعَدَ مِنْ مَالِ الْبَحْرَيْنِ وَالْجِزْيَةِ وَلِمَنْ يُقْسَمُ الْفَيْءُ وَالْجِزْيَةُ؟

3163. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर

٣١٦٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ

ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को बुलाया, ताकि बहरीन में उनके लिये कुछ ज़मीन लिख दें। लेकिन उन्होंने अ़र्ज़ किया कि नहीं! अल्लाह की क़सम! (हमें उसी वक़्त वहाँ ज़मीन इनायत कीजिए) जब इतनी ज़मीन हमारे भाई क़ुरैश (मुहाजिरीन) के लिये भी आप लिखें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, जब तक अल्लाह को मंज़ूर है ये मआ़श उनको भी (या'नी क़ुरैशवालों को) मिलती रहेगी। लेकिन अंसार यही इसरार करते रहे कि क़ुरैशवालों के लिये भी सनदें लिख दीजिए। जब आपने अंसार से फ़र्माया, कि मेरे बाद तुम ये देखोगे कि दूसरों को तुम पर तरजीह दी जाएगी, लेकिन तुम सब्र से काम लेना, यहाँ तक कि तुम आख़िर में मुझसे आकर मिलो। (जंग और फ़साद न करना)। (राजेअ़ : 2376)

حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ: دَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الأَنْصَارَ لِيَكْتُبَ لَهُمْ بِالْبَحْرَيْنِ، فَقَالُوا لاَ وَاللهِ حَتَّى تَكْتُبَ لإِخْوَانِنَا مِنْ قُرَيْشٍ بِمِثْلِهَا، فَقَالَ: ((ذَاكَ لَهُمْ مَا شَاءَ اللهُ عَلَى ذَلِكَ يَقُولُونَ لَهُ. قَالَ : فَإِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعدِي أَثَرَةً، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوني)).

[راجع: ٢٣٧٦]

3164. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे रवहा बिन क़ासिम ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया कि जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि अगर हमारे पास बहरीन से रुपया आया, तो मैं तुम्हें इतना, इतना और इतना (तीन लप) दूँगा। फिर जब आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई और उसके बाद बहरीन का रुपया आया तो अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अगर किसी से कोई देने का वा'दा किया हो तो वो हमारे पास आए। चुनाँचे मैं हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि अगर बहरीन का रुपया हमारे यहाँ आया तो मैं तुम्हें इतना, इतना और इतना दूँगा। इस पर उन्होंने फ़र्माया कि अच्छा एक लप भरो, मैंने एक लप भरी, तो उन्होंने फ़र्माया, कि इसे शुमार करो, मैंने शुमार किया तो पाँच सौ था, फिर उन्होंने मुझे डेढ़ हज़ार इनायत फ़र्माया।

(राजेअ़ : 2296)

٣١٦٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: أَخْبَرَنِي رَوْحُ بْنُ الْقَاسِمِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ لِي: ((لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ قَدْ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا)). فَلَمَّا قُبِضَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَجَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ قَالَ أَبُوبَكْرٍ: مَنْ كَانَتْ لَهُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عِدَةٌ فَلْيَأْتِنِي، فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ كَانَ قَالَ لِي: لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ لأَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا. فَقَالَ لِي: احْثُهُ. فَحَثَوْتُ حَثْيَةً. فَقَالَ لِي: عُدَّهَا. فَعَدَدْتُهَا، فَإِذَا هِيَ خَمْسُمِائَةٍ، فَأَعْطَانِي أَلْفًا وَخَمْسُمِائَةٍ.

[راجع: ٢٢٩٦]

3165. और इब्राहीम बिन त़हमान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के यहाँ बहरीन से ख़िराज का रुपया आया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे मस्जिद में फैला दो, बह़रीन का वो माल उन तमाम अम्वाल मे सबसे ज़्यादा था जो अब तक रसूलुल्लाह (ﷺ) के यहाँ आ चुके थे। इतने में अ़ब्बास (रज़ि.) तशरीफ लाए और कहने लगे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे भी इनायत कीजिए (मैं ज़ेरे-बार/क़र्ज़दार हूँ) क्योंकि मैंने (बद्र के मौक़े पर) अपना भी फ़िदया अदा किया था और अक़ील (रज़ि.) का भी! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा ले लीजिए। चुनाँचे उन्होंने अपने कपड़े में रुपया भर लिया, (लेकिन उठा न सका) तो उसमें से कम करने लगे। लेकिन कम करने के बाद भी उठ न सका तो अ़र्ज़ किया कि आँहुज़ूर (ﷺ) किसी को हुक्म दें कि उठाने में मेरी मदद करे, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐसा नहीं हो सकता । उन्होंने कहा कि फिर आप ख़ुद ही उठवा दें। फ़र्माया कि ये भी नहीं हो सकता। फिर अ़ब्बास (रज़ि.) ने उसमें से कुछ कम किया, लेकिन उस पर भी न उठा सके तो कहा कि किसी को हुक्म दीजिए कि वो उठा दे, फ़र्माया कि नहीं ऐसा नहीं हो सकता, उन्होंने कहा, फिर आप ही उठा दें, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि ये भी नहीं हो सकता। आख़िर उसमें से उन्हें फिर कम करना पड़ा और तब कहीं जाकर उसे अपने काँधे पर उठा सके और लेकर जाने लगे। आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त तक उन्हें बराबर देखते रहे, जब तक वो हमारी नज़रों से छुप न गये। उनके हिरस़ पर आप (ﷺ) ने तअ़ज्जुब किया, और आप उस वक़्त तक वहाँ से न उठे जब तक वहाँ एक दिरहम भी बाक़ी रहा। (राजेअ़ : 421)

٣١٦٥- وَقَالَ إِبْرَاهِيْمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيْزِ بْنِ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسٍ ((أُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ فَقَالَ: انْثُرُوهُ فِي الْمَسْجِدِ، فَكَانَ أَكْثَرَ مَالٍ أُتِيَ بِهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِذْ جَاءَهُ الْعَبَّاسُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَعْطِنِي، إِنِّي فَادَيْتُ نَفْسِي وَفَادَيْتُ عَقِيلاً. فَقَالَ: خُذْ. فَحَثَا فِي ثَوْبِهِ، ثُمَّ ذَهَبَ يُقِلُّهُ فَلَمْ يَسْتَطِعْ فَقَالَ: مُرْ بَعْضَهُمْ يَرْفَعْهُ عَلَيَّ، قَالَ: لاَ. قَالَ: فَارْفَعْهُ أَنْتَ عَلَيَّ، قَالَ: لاَ. فَنَثَرَ مِنْهُ ثُمَّ ذَهَبَ يُقِلُّهُ فَلَمْ يَرْفَعْهُ فَقَالَ: فَمُرْهُ بَعْضَهُمْ يَرْفَعْهُ عَلَيَّ، قَالَ: لاَ. فَارْفَعْهُ أَنْتَ عَلَيَّ، قَالَ: لاَ. فَنَثَرَ ثُمَّ احْتَمَلَهُ عَلَى كَاهِلِهِ ثُمَّ انْطَلَقَ، فَمَا زَالَ يُتْبِعُهُ بَصَرَهُ حَتَّى خَفِيَ عَلَيْنَا، عَجَبًا مِنْ حِرْصِهِ، فَمَا قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَثَمَّ مِنْهَا دِرْهَمٌ)).

[راجع: ٤٢١]

बाब 5 : किसी ज़िम्मी काफ़िर को नाह़क़ मार डालना कैसा गुनाह है?

٥- بَابُ إِثْمِ مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا بِغَيْرِ جُرْمٍ

3166. हमसे क़ैस बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हसन बिन अ़म्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुजाहिद ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी

٣١٦٦- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ حَدَّثَنَا مُجَاهِدٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ

عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا لَمْ يَرِحْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ، وَإِنَّ رِيْحَهَا تُوجَدُ مِنْ مَسِيْرَةِ أَرْبَعِيْنَ عَامًا)). [طرفه في : ٦٩١٤].

करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने किसी ज़िम्मी को (नाहक़) क़त्ल किया वो जन्नत की ख़ुश्बू भी न पा सकेगा । हालाँकि जन्नत की खुश्बू चालीस साल की राह से सूँघी जा सकती है। (दीगर मक़ाम : 6914)

٦- بَابُ إِخْرَاجِ الْيَهُودِ مِنْ جَزِيْرَةِ الْعَرَبِ

बाब 6 : यहूदियों को अरब के मुल्क से निकालकर बाहर करना

وَقَالَ عُمَرُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أُقِرُّكُمْ مَا أَقَرَّكُمُ اللهُ)).

और हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने (ख़ैबर के यहूदियों से) फ़र्माया कि मैं तुम्हेंउस वक़्त तक यहाँ रहने दूँगा जब तक अल्लाह तुमको यहाँ रखे।

٣١٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدٌ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((انْطَلِقُوا إِلَى يَهُودَ))، فَخَرَجْنَا حَتَّى جِئْنَا بَيْتَ الْمِدْرَاسِ فَقَالَ ((أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا، وَاعْلَمُوا أَنَّ الأَرْضَ للهِ وَرَسُولِهِ، إِنِّي أُرِيْدُ أَنْ أُجْلِيَكُمْ مِنْ هَذِهِ الأَرْضِ، فَمَنْ يَجِدْ مِنْكُمْ بِمَالِهِ شَيْئًا فَلْيَبِعْهُ، وَإِلاَّ فَاعْلَمُوا أَنَّ الأَرْضَ للهِ وَرَسُولِهِ)). [طرفاه في : ٦٩٤٤، ٧٣٤٨].

3167. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसेलैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद (अबू सईद) ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, हम अभी मस्जिदे नबवी में मौजूद थे कि नबी करीम तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि यहूदियों की त़रफ़ चलो। चुनाँचे हम रवाना हुए और जब बैतुल मिदरास (यहूदियों का मदरसा) पहुँचे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि इस्लाम लाओ तो सलामती के साथ रहोगे और समझ लो कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है। और मेरा इरादा है कि तुम्हें इस मुल्क से निकाल दूँ, फिर तुममें से अगर किसी की जायदाद की क़ीमत आए तो उसे बेच डाले। अगर तुम इस पर तैयार नहीं हो, तो तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल ही की है। (दीगर मक़ाम : 6944, 7348)

रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी ह़याते तय्यिबा ही में यहूदियों को मदीना से निकालने की निय्यत कर ली थी, मगर आपकी वफ़ात हो गई। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में उनकी मुसलसल ग़द्दारियों और साज़िशों की वजह से उनको वहाँ से निकाल दिया।

٣١٦٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي مُسْلِمٍ الأَحْوَلِ سَمِعَ سَعِيْدَ بْنَ جُبَيْرٍ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: يَوْمُ الْخَمِيْسِ وَمَا يَوْمُ الْخَمِيْسِ. ثُمَّ بَكَى حَتَّى بَلَّ

3168. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे सुलैमान अह़वल ने, उन्होंने सईद बिन जुबैर से सुना और उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, आपने जुमेरात के दिन का ज़िक्र करते हुए कहा, तुम्हें मा'लूम है कि जुमेरात का दिन, हाय! ये कौनसा दिन है? उसके बाद वो इतना रोये कि उनके आंसुओं से कंकरियाँ तर हो गईं । सईद ने कहा कि

دَمْعُهُ الْحَصَى. قُلْتُ: يَا ابْنَ عَبَّاسٍ مَا يَوْمُ الْخَمِيسِ؟ قَالَ اشْتَدَّ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَجَعُهُ فَقَالَ: ((ائْتُونِي بِكَتِفٍ أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لاَ تَضِلُّوا بَعْدَهُ أَبَدًا)). فَتَنَازَعُوا. وَلاَ يَنْبَغِي عِنْدَ نَبِيٍّ تَنَازُعٌ. فَقَالُوا: مَا لَهُ؟ أَهَجَرَ؟ اسْتَفْهِمُوهُ. فَقَالَ: ذَرُونِي، فَالَّذِي أَنَا فِيهِ خَيْرٌ مِمَّا تَدْعُونِي إِلَيْهِ. فَأَمَرَهُمْ بِثَلاَثٍ قَالَ أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِينَ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَأَجِيزُوا الْوَفْدَ بِنَحْوِ مَا كُنْتُ أُجِيزُهُمْ، وَالثَّالِثَةُ خَيْرٌ إِمَّا أَنْ سَكَتَ عَنْهَا، وَإِمَّا أَنْ قَالَهَا فَنَسِيتُهَا)) قَالَ سُفْيَانُ: هَذَا مِنْ قَوْلِ سُلَيْمَانَ. [راجع: ١١٤]

मैंने अ़र्ज़ किया, या अबू अ़ब्बास! जुमेरात के दिन से क्या मतलब है? उन्होंने कहा कि इसी दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) की तकलीफ़ (मर्ज़ुल वफ़ात) में शिद्दत पैदा हुई थी और आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मुझे (लिखने का) कागज़ दे दो ताकि मैं तुम्हारे लिये एक ऐसी किताब लिख जाऊँ, जिसके बाद तुम कभी गुमराह न हो। इस पर लोगों का इख़्तिलाफ़ हो गया फिर आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद ही फ़र्माया कि नबी की मौजूदगी में झगड़ना ग़ैर मुनासिब है, दूसरे लोग कहने लगे, भला किया आँहज़रत (ﷺ) बेकार बातें फ़र्माएंगे अच्छा, फिर पूछ लो, ये सुनकर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मुझे मेरी हालत पर छोड़ दो, क्योंकि इस वक़्त में जिस आलम में हूँ, वो इससे बेहतर है जिसकी तरफ़ तुम मुझे बुला रहे हो। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने तीन बातों का हुक्म दिया, कि मुश्रिकों को जज़ीर-ए-अ़रब से निकाल देना और वुफ़ूद के साथ उसी तरह ख़ातिर तवाजोह का मामला करना, जिस तरह मैं किया करता था। तीसरी बात कुछ भली सी थी, या तो सईद ने उसको बयान न किया, या मैं भूल गया। सुफ़यान ने कहा ये जुम्ला (तीसरी बात कुछ भली सी थी) सुलैमान अह़वल का कलाम है। और ये थी कि उसामा का लश्कर तैयार कर देना, या नमाज़ की हिफ़ाज़त करना, या लौण्डी गुलामों से अच्छा सुलूक करना। (राजेअ : 114)

तश्रीह : **अहजर अल्हम्जतु लिल्इस्तिफ़्हामिल्इन्कारी लिअन्न मअ़न हजर हिज़्युन व इन्नमा जाअ मन क़ाइलुहू इस्तिफहामन लिल्इन्कारि अ़ला मन क़ाल ला तक्तुबू अय तत्रुकू अम्र रसूलिल्लाहि (ﷺ) व ला तज़अलूहु कअम्रिम्मन हजर फी कलमिही लिअन्नहू (ﷺ) ला यहजुरू कज़ा फित्तीबी** या'नी यहाँ हम्ज़ा इस्तिफ़्हाम इंकार के लिये है। जिसका मतलब ये कि जिन लोगों ने कहा था कि हुज़ूर (ﷺ) को अब लिखवाने की तकलीफ़ न दो, उनसे कहा गया कि हुज़ूर (ﷺ) को हिज़्यान नहीं हो गया है इसलिये आप (ﷺ) को हिज़्यान वाले पर क़यास करके तर्क न करो। आपसे हिज़्यान हो ये नामुम्किन है। इस सिलसिले की तफ़्सीली बह़ष इसी पारा में गुज़र चुकी है।

किताब के लिखे जाने पर सहाबा का इख़्तिलाफ़ इस वजह से हुआ था कि कुछ सहाबा ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) को इस शिद्दते तकलीफ़ में मज़ीद तकलीफ़ न देनी चाहिये।

बाद में ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ख़ामोश हो गये। जिसका मतलब ये कि अगर लिखवाना फ़र्ज़ होता तो आप किसी के कहने से ये फ़र्ज़ तर्क न करते, फ़क़त मस्लिहत के तहत एक बात ज़हन में आई थी, बाद में आपने ख़ुद उसे ज़रूरी नहीं समझा। मन्कूल है कि आप ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी के बारे में क़तई फ़ैसला लिखकर जाना चाहते थे ताकि बाद में इख़्तिलाफ़ न हो। इसीलिये आप (ﷺ) ने ख़ुद अपने मर्ज़ुल मौत में ह़ज़रत सिद्दीक़ अकबर (रज़ि.) को मिम्बर व मेहराब हवाले कर दिया था।

बाब 7 : अगर काफ़िर मुसलमानों से दग़ा करें तो उनको मुआफ़ी दी जा सकती है या नहीं?

٧- بَابُ إِذَا غَدَرَ الْمُشْرِكُونَ بِالْمُسْلِمِينَ هَلْ يُعْفَى عَنْهُمْ؟

3169. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ख़ैबर फ़तह हुआ तो (यहूदियों की तरफ़ से) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बकरी का या ऐसे गोश्त का हदिया पेश किया गया जिसमें ज़हर था। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि जितने यहूदी यहाँ मौजूद हैं। उन्हें मेरे पास जमा करो, चुनाँचे वो सब आ गये। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि देखो, मैं तुमसे एक बात पूछूंगा। क्या तुम लोग सहीह सहीह जवाब दोगे? सबने कहा जी हाँ, आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, तुम्हारे बाप कौन थे? उन्होंने कहा कि फ़लाँ! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि तुम झूठ बोलते हो, तुम्हारे बाप तो फ़लाँ थे। सबने कहा कि आप सच फ़र्माते हैं। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मैं तुमसे एक और बात पूछूं तो तुम सहीह वाक़िया बयान कर दोगे? सबने कहा, जी हाँ, ऐ अबुल क़ासिम! और अगर हम झूठ भी बोलें तो आप हमारे झूठ को इसी तरह पकड़ लेंगे जिस तरह आपने अभी हमारे बाप के बारे में हमारे झूठ को पकड़ लिया, हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने उसके बाद दरयाफ़्त फ़र्माया कि दोज़ख़ मे जाने वाले कौन लोग होंगे? उन्होंने कहा कि कुछ दिनों के लिये तो हम उसमें दाख़िल हो जाएँगे लेकिन फिर आप लोग हमारी जगह दाख़िल कर दिये जाएँगे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम उसमें बर्बाद रहो, अल्लाह गवाह है कि हम तुम्हारी जगह उसमें कभी दाख़िल नहीं किये जाएँगे। फिर आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि अगर मैं तुमसे कोई बात पूछूँ तो क्या तुम मुझसे सहीह वाक़िया बता दोगे? इस बार भी उन्होंने यही कहा कि हाँ! ऐ अबुल क़ासिम! आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त तो क्या तुमने इस बकरी के गोश्त में ज़हर मिलाया है? उन्होंने कहा जी हाँ, आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि तुमने ऐसा क्यूँ किया?

٣١٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَاةٌ فِيْهَا سُمٌّ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((اجْمَعُوا إِلَيَّ مَنْ كَانَ هَا هُنَا مِنْ يَهُودَ))، فَجُمِعُوا لَهُ، فَقَالَ: ((إِنِّي سَائِلُكُمْ عَنْ شَيْءٍ، فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْهُ؟)) فَقَالُوا نَعَمْ. قَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ أَبُوكُمْ؟)) قَالُوا: فُلاَنٌ فَقَالَ: ((كَذَبْتُمْ، بَلْ أَبُوكُمْ فُلاَنٌ)) قَالُوا: صَدَقْتَ. قَالَ: ((فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُ عَنْهُ فَقَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ وَإِنْ كَذَبْنَا عَرَفْتَ كِذْبَنَا كَمَا عَرَفْتَهُ فِي أَبِيْنَا فَقَالَ لَهُمْ مَنْ أَهْلُ النَّارِ؟)) قَالُوا: نَكُونُ فِيْهَا يَسِيْرًا، ثُمَّ تَخلُفُونَا فِيْهَا. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اخْسَؤُوا فِيْهَا، وَاللهِ لاَ نَخْلُفُكُمْ فِيْهَا أَبَدًا)). ثُمَّ قَالَ: ((هَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنْهُ؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ. قَالَ: ((هَلْ جَعَلْتُمْ فِي هَذِهِ الشَّاةِ سُمًّا)) قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ: ((مَا حَمَلَكُمْ عَلَى

ذَلِكَ؟)) قَالُوا أَرَدْنَا : إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا نَسْتَرِيحُ، وَإِنْ كُنْتَ نَبِيًّا لَمْ يَضُرُّكَ)).
[طرفاه في : ٤٢٤٩، ٥٧٧٧].

उन्होंने कहा कि हमारा मक़्सद ये था कि आप झूठे हैं (नुबुव्वत में) तो हमें आराम मिल जाएगा और अगर आप वाक़ई नबी हैं तो ये ज़हर आपको कोई नुक़्सान न पहुँचा सकेगा। (दीगर मक़ाम : 4249, 5777)

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आप (ﷺ) ने उस यहूदी औरत ज़ैनब बिन्ते हारिष़ नामी को, जिसने ज़हर मिलाया था कुछ सज़ा न दी, बल्कि मुआफ़ कर दिया, मगर जब बिश्र बिन बराअ सहाबी (रज़ि.) जिन्होंने उस गोश्त में से कुछ खा लिया था, मर गये तो आपने उनका क़िसास लिया और उस औरत को क़त्ल करा दिया।

٨ – بَابُ دُعَاءِ الإِمَامِ عَلَى مَنْ نَكَثَ عَهْدًا

बाब 8 : वादे तोड़ने वालों के हक़ में इमाम की बद्दुआ

٣١٧٠– حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا قَالَ ثَابِتُ بْنُ يَزِيْدَ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ الْقُنُوتِ قَالَ: قَبْلَ الرُّكُوعِ. فَقُلْتُ إِنَّ فُلاَنًا يَزْعَمُ أَنَّكَ قُلْتَ بَعْدَ الرُّكُوعِ، فَقَالَ: كَذَبَ. ثُمَّ حَدَّثَنَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَنَتَ شَهْرًا بَعْدَ الرُّكُوعِ يَدْعُو عَلَى أَحْيَاءٍ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ قَالَ: بَعَثَ أَرْبَعِيْنَ أَوْ سَبْعِيْنَ – يَشُكُّ فِيْهِ – مِنَ الْقُرَّاءِ إِلَى أُنَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ، فَعَرَضَ لَهُمْ هَؤُلاَءِ فَقَتَلُوهُمْ، وَكَانَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَهْدٌ، فَمَا رَأَيْتُهُ وَجَدَ عَلَى أَحَدٍ مَا وَجَدَ عَلَيْهِمْ)).
[راجع: ١٠٠١]

3170. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ष़ाबित बिन यज़ीद ने बयान किया, हमसे आ़सिम अह़वल ने, कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से दुआ़ए क़ुनूत के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि रुकूअ़ से पहले होनी चाहिये, मैंने अ़र्ज़ किया कि फ़लाँ साहब (मुहम्मद बिन सीरीन) तो कहते हैं कि आपने कहा था कि रुकूअ़ के बाद होती है, अनस (रज़ि.) ने इस पर कहा कि उन्होने ग़लत़ कहा है। फिर उन्होंने हम से ये ह़दीष़ बयान की कि नबी करीम (ﷺ) ने एक महीने तक रुकूअ़ के बाद दुआ़ए क़ुनूत की थी और आपने उसमें क़बीला बनू सुलैम के क़बीलों के ह़क़ में बद्दुआ की थी। उन्होंने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने चालीस या सत्तर क़ुर्आन के आ़लिम स़ह़ाबा की जमाअ़त, रावी को शक था, मुश्रिकीन के पास भेजी थी। लेकिन ये बनी सुलैम के लोग (जिनका सरदार आमिर बिन त़ुफ़ैल था) उनके आड़े आए और उन्हें मार डाला। ह़ालाँकि नबी करीम (ﷺ) से उनका मुआ़हिदा था। (लेकिन उन्होंने दग़ा दी) आँह़ज़रत (ﷺ) को किसी मामले पर इतना रंजीदा और गमगीन नहीं देखा जितना उन स़ह़ाबा की शहादत पर आप रंजीदा थे। (राजेअ़ : 1001)

तश्रीह़ : क्योंकि ये लोग क़ारी और आ़लिम थे। अगर ये ज़िन्दा रहते तो उनसे हज़ारों लोगों को फ़ायदा पहुँचता। इसीलिये एक सच्चे आ़लिम की मौत को जहान की मौत कहा गया है।

क़ुनूते नाज़िला रुकूअ़ से पहले और बाद के बारे में शैख़ुल ह़दीष़ मौलाना उस्ताज़ उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब मुबारकपुरी फ़र्माते हैं :–

रवाहु इब्नुल्मुन्ज़िर अन अनसिन बिलफ़्ज़ि अन्न बअ़ज़ अस्हाबिहीन्नबिय्यि (ﷺ) क़नतू फी

सलातिल्फ़ज्रि क़ब्लर्रूकूइ व बअ़ज़ुहुम बअ़दर्रूकुइ व हाज़ा कुल्लुहू यदुल्लु अ़ला इख़्तिलाफ़ि अ़मलिस्सहाबति फी महल्लि कुनूतिल्मक्तूबति फक़नत बअ़जुहुम क़ब्लर्रूकूइ व बअ़ज़ुहुम बअ़दुहू व अम्मन्नबिय्यु (ﷺ) फलम यष्बुत अन्हुल्कुनुतु फिल्मक्तूबति इल्ला इन्दन्नाज़िलतिलायक़्नुतु फिन्नाज़िलति इल्ला अबदर्रूकूइ हाज़ा मा तहक्ककुन ली वल्लाहु आलमु (मिर्आतुल्मफ़ातीह जिल्द 2, पेज 224) या'नी ह़ज़रत अनस (रज़ि.) की उसी रिवायत को इब्ने मुंज़िर ने इस त़रह़ रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के कुछ स़ह़ाब-ए-रसूल (ﷺ) फ़ज्र में कुनूत रुकूअ़ से पहले पढ़ते, कुछ रुकूअ़ के बाद पढ़ते और उन सबसे मा'लूम होता है कि फ़र्ज़ नमाज़ों मे महल्ले कुनूत के बारे में स़ह़ाबा में इख़्तिलाफ़ था और नबी करीम (ﷺ) से फ़र्ज़ नमाज़ों में सिवाय कुनूते नाज़िला के और कोई क़बाह़त ष़ाबित नहीं हुई, आपने सिर्फ़ कुनूते नाज़िला पढ़ी और वो रुकूअ़ के बाद पढ़ी है मेरी तह़क़ीक़ यही है वल्लाहु आलम।

इमाम नववी इस्तिह़बाबुल कुनूत में फ़र्माते हैं, व महल्लुल्कुनूति बअ़द रफ़इर्रासि फिर्रूकूइ फिर्रक्अ़तिल्आख़िरति या'नी कुनूत पढ़ने का महल आख़िरी रकअ़त में रुकूअ़ से सर उठाने के बाद हैं। इस ह़दीष़ में ह़ज़रत अनस (रज़ि.) के बयान के मुता'ल्लिक़ कुनूत का ता'ल्लुक़ उनकी अपनी मा'लूमात की ह़द तक है वल्लाहु आलम।

बाब 9 : (मुसलमान) औरतें अगर किसी (ग़ैर-मुस्लिम) को अमान और पनाह दें?

٩- بَابُ أَمَانِ النِّسَاءِ وَجِوَارِهِنَّ

3171. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हे उमर बिन उबैदुल्लाह के गुलाम अबुन् नज़्र ने, उन्हे उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब के गुलाम अबू मुर्रह ने ख़बर दी, उन्होंने उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब (रज़ि.) से सुना, आप बयान करती थीं कि फ़तह़े मक्का के मौक़े पर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई (मक्का में) मैंने देखा कि आप ग़ुस्ल कर रहे थे और फ़ात़िमा (रज़ि.) आपकी स़ाह़बज़ादी पर्दा किये हुए थीं। मैंने आपको सलाम किया, तो आपने दरयाफ़्त किया कि कौन स़ाह़िबा हैं? मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब हूँ, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, आओ अच्छी आईं, उम्मे हानी! फिर जब आप (ﷺ) ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हुए तो आप (ﷺ) ने खड़े होकर आठ रकअ़त चाश्त की नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) सिर्फ़ एक कपड़ा जिस्मे अत़्हर पर लपेटे हुए थे। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी माँ के बेटे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) कहते हैं कि वो एक शख़्स़ को जिसे मैं पनाह दे चुकी हूँ, क़त्ल किये बग़ैर नहीं रहेंगे। ये शख़्स़ हबीरा का फ़लाँ लड़का (जअ़दह) है आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उम्मे हानी! जिसे तुमने पनाह दे दी, उसे हमारी त़रफ़ से भी पनाह है। उम्मे हानी (रज़ि.) ने बयान किया कि ये वक़्त चाश्त का था। (राजेअ़ : 280)

٣١٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ أَنَّ أَبَا مُرَّةَ مَوْلَى أُمِّ هَانِىءٍ ابْنَةِ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أُمَّ هَانِىءٍ ابْنَةَ أَبِي طَالِبٍ تَقُولُ: ((ذَهَبْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ فَوَجَدْتُهُ يَغْتَسِلُ وَفَاطِمَةُ ابْنَتُهُ تَسْتُرُهُ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: ((مَنْ هَذِهِ؟)) فَقُلْتُ أَنَا أُمُّ هَانِىءٍ بِنْتُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ: ((مَرْحَبًا بِأُمِّ هَانِىءٍ))، فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ غُسْلِهِ قَامَ فَصَلَّى ثَمَانَ رَكَعَاتٍ مُلْتَحِفًا فِي ثَوبٍ وَاحِدٍ. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، زَعَمَ ابْنُ أُمِّي عَلِيٌّ أَنَّهُ قَاتِلٌ رَجُلاً قَدْ أَجَرْتُهُ، فُلاَنُ ابْنُ هُبَيْرَةَ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ أَجَرْنَا مَنْ أَجَرْتِ يَا أُمَّ هَانِىءٍ)) قَالَتْ أُمُّ هَانِىءٍ: وَذَلِكَ ضُحًى. [راجع: ٢٨٠]

हबीरा उम्मे हानी के शौहर थे, जअ़दह उनके बेटे थे। ये समझ में नहीं आता कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) अपने भांजे को क्यूँ मारते,

कुछ ने कहा फ़लाँ इब्ने हबीरा से ह़ारिष़ बिन हिशाम मख़्ज़ूमी मुराद है। ग़र्ज़ ह़दीष़ से ये निकला कि औरत का पनाह देना दुरुस्त है। चारों इमामों का यही क़ौल है। कुछ ने कहा इमाम को इख़्तियार है। चाहे उस अमान को मंजूर करे चाहे न करे।

बाब 10 : मुसलमान सब बराबर हैं अगर एक अदना मुसलमान किसी काफ़िर को पनाह दे तो सब मुसलमानों को क़ुबूल करना चाहिये

١٠- بَابُ ذِمَّةُ الْمُسْلِمِيْنَ وَجِوَارُهُمْ وَاحِدَةٌ، يَسْعَى بِهَا أَدْنَاهُمْ

٣١٧٢- حَدَّثَنِي قَالَ مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا وَكِيْعٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((خَطَبَنَا عَلِيٌّ فَقَالَ: مَا عِنْدَنَا كِتَابٌ نَقْرَؤُهُ إِلاَّ كِتَابُ اللهِ وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيْفَةِ، فَقَالَ: فِيْهَا الْجِرَاحَاتُ، وَأَسْنَانُ الإِبِلِ، وَالْمَدِيْنَةِ حَرَمٌ مَا بَيْنَ عَيْرٍ إِلَى كَذَا، فَمَنْ أَحْدَثَ فِيْهَا حَدَثًا أَوْ آوَى فِيْهَا مُحْدِثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ، لاَ يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلاَ عَدْلٌ، وَمَنْ تَوَلَّى غَيْرَ مَوَالِيْهِ فَعَلَيْهِ مِثْلُ ذَلِكَ. وَذِمَّةُ الْمُسْلِمِيْنَ وَاحِدَةٌ، فَمَنْ أَخْفَرَ مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ مِثْلُ ذَلِكَ)).

[راجع: ١١١]

3172. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको वकीअ़ ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके बाप (यज़ीद बिन शुरैक तैमी) ने बयान किया कि अ़ली (रज़ि.) ने हमारे सामने ख़ुत्बा दिया, जिसमें फ़र्माया कि किताबुल्लाह और उस वरक़ में जो कुछ है , उसके सिवा और कोई किताब (अह़काम शरीअ़त के) ऐसी हमारे पास नहीं जिसे हम पढ़ते हों, फिर आपने फ़र्माया कि उसमें ज़ख़्मों के क़िसास़ के अह़काम हैं और दियत में दिये जाने वाले की उम्र के अह़काम हैं और ये कि मदीना ह़रम है अ़यरि पहाड़ी से फ़लाँ (उहुद पहाड़ी) तक। इसलिये जिस शख़्स़ ने कोई नई बात (शरीअ़त के अंदर दाख़िल की) या किसी ऐसे शख़्स़ को पनाह दी तो उस पर अल्लाह, मलाइका और इंसान सबकी ला'नत है, न उसकी कोई फ़र्ज़ इबादत क़ुबूल होगी और न नफ़्ल। और ये बयान है जो लौण्डी ग़ुलाम अपने मालिक के सिवा किसी दूसरे को मालिक बनाए उस पर भी इस त़रह़ (ला'नत) है। और मुसलमान मुसलमान सब बराबर हैं हर एक का ज़िम्मा यकसाँ है। पस जिस शख़्स़ ने किसी मुसलमान की पनाह में (जो किसी काफ़िर को दी गई हो) दख़ल अंदाज़ी की तो उस पर भी इसी त़रह़ ला'नत है। (राजेअ़ : 111)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) भी इसी मुरव्वजा क़ुर्आन मजीद को पढ़ते थे, सूरतों की कुछ तक़्दीम व ताख़ीर और बात है। अब जो कोई ये समझे कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) या दूसरे अहले बैत के पास कोई और क़ुर्आन था जो कामिल था और मुरव्वजा क़ुर्आन मजीद नाक़िस़ है, उस पर भी अल्लाह और फ़रिश्तों की और सारे अंबिया किराम की त़रफ़ से फटकार और ला'नत है।

बाब 11 : अगर काफ़िर लड़ाई के वक़्त घबराकर अच्छी त़रह यूँ न कह सकें हम मुसलमान हुए और यूँ कहने लगें हमने दीन बदल दिया, दीन बदल दिया तो क्या हुक्म है?

١١- بَابُ إِذَا قَالُوا صَبَأْنَا وَلَمْ يُحْسِنُوا أَسْلَمْنَا

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.)

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: ((فَجَعَلَ خَالِدٌ يَقْتُلُ،

فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ أَبْرَأُ إِلَيْكَ مَا صَنَعَ خَالِدٌ)). وَقَالَ عُمَرُ: إِذَا قَالَ مَتْرَسْ فَقَدْ آمَنَهُ، إِنَّ اللهَ يَعْلَمُ الأَلْسِنَةَ كُلَّهَا. وَقَالَ: تَكَلَّمْ. لاَ بَأْسَ.

ने (बनी हिदबा की जंग में) काफ़िरों को मारना शुरू कर दिया, हालाँकि वो कहते जाते थे। हमने दीन बदल दिया, हमने दीन बदल दिया, आँहज़रत (ﷺ) ने जब ये हाल सुना तो फ़र्माया, या अल्लाह! मैं तो ख़ालिद के काम से बेज़ार हूँ, और हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, कहा जब कि (मुसलमान) ने (किसी फ़ारसी आदमी से) कहा कि मतरस (मत डरो) तो गोया उसने उसे अमान दे दी, क्योंकि अल्लाह तआ़ला तमाम ज़ुबानों को जानता है और हज़रत उमर (रज़ि.) ने (हुर्मुज़ान से) कहा (जब उसे मुसलमान गिरफ़्तार करके लाए) कि जो कुछ कहना हो कहो, डरो मत।

तश्रीह : साबी के मा'नी अपने पुराने दीन से निकल जाना, मतलब ये है कि ग़ैर-मुस्लिम इस्लाम में दाख़िल होने के लिये सिर्फ़ ये कहे कि मैंने अपने पुराने दीन को छोड़ दिया है, क्योंकि उसे इस्लाम के बारे में कुछ ज़्यादा मा'लूमात नहीं, इसलिये वो इतना नहीं कह सका कि मैं इस्लाम लाया, तो क्या उसे मुसलमान समझ लिया जाएगा। जबकि क़रीना भी मौजूद हो कि उसकी मुराद इस्लाम में दाख़िल होने से ही है, तो साबी हो गये। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने उनके इस लफ़्ज़ को दुख़ूले इस्लाम के बारे में नहीं समझा, इसलिये आपने उनको क़त्ल किया जैसा कि शारेहीने बुख़ारी लिखते हैं :–

फजअल खालिदुन अय तफिक खालिदुब्नुल्वलीद यक़्तुलु मन कान यक़ूलु सबाना हैषु ज़न्न अन्न लफ़्ज़त सबाना इन्दल्इज़्ज़ि अनित्तलफ़्फ़ुज़ि बिअस्लम्ना ला यक्फ़ी फिल्ख़बरि अनिल्इस्लाम बल ला बुद्द मिनत्तस्रीहि बिल्इस्लाम फक़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) इन्नी बरीउम्मिम्मा सनअ ख़ालिद व लम अकुन राज़ियन बिक़त्लिहिम कज़ा फिल्किर्मानी वल्ख़ैरुल्जारी अल्ख़ या'नी हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने उनके लफ़्ज़ सबाना को दुख़ूले इस्लाम के लिये काफ़ी न समझा बल्कि उनके ख़याल में अस्लमना कहना ज़रूरी था। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं ख़ालिद की इस हरकते क़त्ल से राज़ी नहीं हूँ।

मा'लूम हुआ कि कोई नावाक़िफ़ आदमी किसी इशारा किनाया से भी इस्लाम क़ुबूल कर ले, तो उसका इस्लाम सहीह तसव्वुर किया जाएगा। इस बारे में नस्से क़ुर्आनी मौजूद है। **वला तक़ूलु लिमन अल्क़ा इलैकुस्सलाम लस्त मूमिनन** (अन् निसा : 94) या'नी जो तुमको इस्लामी नाते के तौर पर अस्सलामु अलैयकुम कहे, तुम उनको ये न कहो कि तू मोमिन नहीं है। इस्लाम ज़ाहिर ही का नाम है जो ज़ाहिर मे इस्लाम का दम भरे और कलिमा तौहीद पढ़े उसे ज़ाहिरी हैषियत में मुसलमान ही कहेंगे। रहा बातिन का मामला वो अल्लाह के हवाले है।

١٢ - بَابُ الْمُوَادَعَةِ وَالْمُصَالَحَةِ مَعَ الْمُشْرِكِيْنَ بِالْمَالِ وَغَيْرِهِ، وَإِثْمِ مَنْ لَمْ يَفِ بِالْعَهْدِ

बाब 12 : मुश्रिकों से माल वग़ैरह पर सुलह करना, लड़ाई छोड़ देना, और जो कोई अहद पूरा न करे उसका गुनाह

وَقَوْلِهِ : ﴿ وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا ﴾ [الأنفال : ٦١] الآيَةَ.

और (सूरह अन्फ़ाल में) अल्लाह का ये फ़र्माना कि, अगर काफ़िर सुलह की तरफ़ झुकें तो तू भी सुलह की तरफ़ झुक जा, अख़ीर आयत तक।

٣١٧٣ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بِشْرٌ هُوَ ابْنُ الْمُفَضَّلِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ

3173. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने, कहा हमसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे बुशैर बिन यसार ने और उनसे सहल बिन अबी हष्मा ने बयान

بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ قَالَ: انْطَلَقَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَهْلٍ وَمُحَيِّصَةُ بْنُ مَسْعُودِ بْنِ زَيْدٍ إِلَى خَيْبَرَ، وَهُوَ يَوْمَئِذٍ صُلْحٌ، فَتَفَرَّقَا، فَأَتَى مُحَيِّصَةُ إِلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ سَهْلٍ وَهُوَ يَتَشَحَّطُ فِي دَمِهِ قَتِيلاً، فَدَفَنَهُ، ثُمَّ قَدِمَ الْمَدِينَةَ فَانْطَلَقَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ سَهْلٍ وَمُحَيِّصَةُ وَحُوَيِّصَةُ ابْنَا مَسْعُودٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَهَبَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ يَتَكَلَّمُ، فَقَالَ: ((كَبِّرْ كَبِّرْ)) - وَهُوَ أَحْدَثُ الْقَوْمِ - فَسَكَتَ، فَتَكَلَّمَا، فَقَالَ: ((أَتَحْلِفُونَ وَتَسْتَحِقُّونَ قَاتِلَكُمْ)) - أَوْ صَاحِبَكُمْ - قَالُوا: وَكَيْفَ نَحْلِفُ وَلَمْ نَشْهَدْ وَلَمْ نَرَ؟ قَالَ: ((فَتُبْرِئُكُمْ يَهُودُ بِخَمْسِينَ)). فَقَالُوا: كَيْفَ نَأْخُذُ أَيْمَانَ قَوْمٍ كُفَّارٍ؟ فَعَقَلَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ عِنْدِهِ)).

[راجع: ٢٧٠٢]

किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन सहल और महीस़ा बिन मसऊ़द बिन ज़ैद (रज़ि.) ख़ैबर गये। उन दिनों (ख़ैबर के यहूदियों से मुसलमानों की) सुलह थी। फिर दोनों हज़रात (ख़ैबर पहुँचकर अपने अपने कामों के लिये) जुदा हो गये। उसके बाद महीस़ा (रज़ि.) अ़ब्दुल्लाह बिन सहल (रज़ि.) के पास आए, तो क्या देखते हैं कि वो ख़ून में लौट रहे हैं। किसी ने उनको क़त्ल कर डाला, ख़ैर महीस़ा (रज़ि.) ने अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को दफ़न कर दिया। फिर मदीना आए, उसके बाद अ़ब्दुर्रहमान बिन सहल (अ़ब्दुल्लाह रज़ि. के भाई) और मसऊ़द के दोनों साहबज़ादे महीस़ा और हुवैसा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, बातचीत अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने शुरू की, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि जो तुम लोगों में उ़म्र में बड़े हों, वो बात करें। अ़ब्दुर्रहमान सबसे कम उ़म्र थे, वो चुप हो गये। और मुहैस़ा और हुवैस़ा ने बात शुरू की। आपने दरयाफ़्त किया, क्या तुम लोग इस पर क़सम खा सकते हो, कि जिस शख़्स़ को तुम क़ातिल कह रहे हो, उस पर तुम्हारा हक़ ष़ाबित हो सके। उन लोगों ने अ़र्ज़ किया कि हम एक ऐसे मामले में किस तरह क़सम खा सकते हैं जिसको हमने ख़ुद आँखों से न देखा हो। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर क्या यहूद तुम्हारे दावे से अपनी बराअत अपनी तरफ़ से पचास क़समें खा करके कर दें? उन लोगों ने अ़र्ज़ किया कि कुफ़्फ़ार की क़समों का हम किस तरह ए'तिबार कर सकते हैं। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद अपने पास से उनकी दियत अदा कर दी। (राजेअ़ : 2702)

तश्रीह : बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपने पास से दियत अदा करके ख़ैबर के यहूदियों से सुलह क़ायम रखी, बाब का ये तर्जुमा जो कोई अ़हद को पूरा न करे उसका गुनाह ह़दीष़ से नहीं निकलता। शायद ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) को इस बाब में कोई ह़दीष़ लिखनी मंज़ूर थी मगर इत्तिफ़ाक़ न हुआ या इस मज़्मून की ह़दीष़ उनको उनकी शर्त के मुताबिक़ न मिली। क़ातिल पर ह़क़ ष़ाबित होने से मक़्तूल के आदमियों को दियत देनी होगी। वो क़ातिल अगर क़त्ल का इक़रार कर ले तो क़िस़ास़ भी लिया जा सकता है ये क़सामत की सूरत है। उसमें मुद्दई से पचास क़समें ली जाती हैं कि मेरा गुमान फ़लाँ शख़्स़ पर है कि उसी ने मारा है।

उससे आँहज़रत (ﷺ) की सुलह जोई, अमन पसन्द पॉलिसी, फ़राख़दिली भी ष़ाबित हुई, बावजूद ये कि मक़्तूल एक मुसलमान था जो यहूद के माहौल मे क़त्ल हुआ, मगर आँहज़रत (ﷺ) ने यहूदियों की इस ह़रकत को नज़रअंदाज़ कर दिया, ताकि अमन की फ़िज़ा क़ायम रहे और कोई त़वील फ़साद न खड़ा हो जाए, आपने मुसलमान मक़्तूल के वारिष़ों को ख़ुद बैतुल माल से दियत अदा कर दी, ऐसे वाक़ियात से उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये जो इस्लाम को तलवार के ज़ोर पर फैलाने का ग़लत़ प्रोपेगण्डा करते रहते हैं। मज़ाहिब की दुनिया में सिर्फ़ इस्लाम ही एक ऐसा मज़हब है जो बनी नोअ़े इंसान को ज़्यादा से ज़्यादा अमन देने का ह़ामी है।

बाब 13 : अहद पूरा करने की फ़ज़ीलत

١٣- بَابُ فَضْلِ الْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ

3174. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़ द ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी, और उन्हें अबू सुफ़यान बिन हर्ब (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हिरक़्ल (फ़र्मांरवा-ए-रोम) ने उन्हें क़ुरैश के क़ाफ़िले के साथ भेजा, (ये लोग शाम उस ज़माने में तिजारत की ग़र्ज़ से गये हुए थे) जब आँहज़रत (ﷺ) ने अबू सुफ़यान से (सुलह हुदेबिया में) क़ुरैश के काफ़िरों के मुक़द्दमा में सुलह की थी। (राजेअ़ : 7)

٣١٧٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سُفْيَانَ بْنَ حَرْبٍ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ هِرَقْلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ فِي رَكْبٍ مِنْ قُرَيْشٍ كَانُوا تُجَارًا بِالشَّامِ فِي الْمُدَّةِ الَّتِي مَادَّ فِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ أَبَا سُفْيَانَ فِي كُفَّارِ قُرَيْشٍ)). [راجع: ٧]

या'नी सुलह़ हुदैबिया जो 6 हिजरी में हुई, ये ह़दीष़ मुफ़स्सल गुज़र चुकी है। उसमें ये बयान है कि हिरक़्ल ने कहा कि पैग़म्बर दग़ा या'नी अ़हदशिकनी नहीं करते, उसी से इमाम बुख़ारी ने बाब का मत़लब निकाला कि अ़हद का पूरा करना अंबिया की ख़स़लत है जो बड़ी फ़ज़ीलत रखती है और अ़हद तोड़ना दग़ाबाज़ी करना हर शरीअ़त में मना है।

बाब 14 : अगर किसी ज़िम्मी ने किसी पर जादू कर दिया तो क्या उसे मुआ़फ़ किया जा सकता है?

١٤- بَابُ هَلْ يُعْفَى عَنِ الذِّمِّيِّ إِذَا سَحَرَ؟

इब्ने वहब ने बयान किया, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी कि इब्ने शिहाब (रह.) से किसी ने पूछा, क्या अगर किसी ज़िम्मी ने किसी पर जादू कर दिया तो उसे क़त्ल कर दिया जाए? उन्होंने बयान किया कि ये ह़दीष़ हम तक पहुँची है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू किया गया था। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी वजह से जादू करने वाले को क़त्ल नहीं करवाया था और आप पर जादू करने वाला अहले किताब में से था।

وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي يُونُسُ: ((عَنِ ابْنِ شِهَابٍ سُئِلَ: أَعَلَى مَنْ سَحَرَ مِنْ أَهْلِ الْعَهْدِ قَتْلٌ؟ قَالَ: بَلَغَنَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ صُنِعَ لَهُ ذَلِكَ فَلَمْ يَقْتُلْ مَنْ صَنَعَهُ، وَكَانَ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ)).

ज़ाहिरन इब्ने शिहाब की दलील पूरी नहीं होती क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) अपनी ज़ात के लिये किसी से बदला नहीं लेते थे। दूसरे उसके जादू से आपको कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा था, सिर्फ़ ज़रा तख़य्युल पैदा हो गया था कि आप कोई काम न करते और ख़्याल आता कि कर चुके हैं । अल्लाह ने उसकी भी ख़बर देकर ये आफ़त आपके ऊपर से दूर कर दी, आपने उस जादूगर को क़त्ल नहीं कराया, बल्कि मुआ़फ़ कर दिया। इसी से बाब का मज़्मून ष़ाबित होता है।

3175. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि

٣١٧٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ:

नबी करीम (ﷺ)पर जादू कर दिया गया था। तो कुछ दफ़ा ऐसा होता कि आप समझते कि मैंने फ़लाँ काम कर लिया है। हालाँकि आपने वो काम न किया होता। (दीगर मक़ाम : 2268, 5763, 5765, 5766, 6063, 6391)

حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ سُحِرَ حَتَّى كَانَ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ صَنَعَ شَيْئًا وَلَمْ يَصْنَعْهُ)). [أطرافه في: ٢٢٦٨، ٥٧٦٣، ٥٧٦٥، ٥٧٦٦، ٦٠٦٣، ٦٣٩١].

बाब 15 : दग़ाबाज़ी करना कैसा गुनाह है?

١٥- بَابُ مَا يُحْذَرُ مِنَ الْغَدْرِ

وَقَوْلِهِ تَعَالَى:

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि,

और अगर ये काफ़िर लोग आपको धोखा देना चाहें (ऐ नबी ﷺ) तो अल्लाह आपके लिये काफ़ी है। आख़िर तक।

﴿وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللهُ﴾ الآية [الأنفال: ٦٢]

3176. मुझसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अलाअ बिन ज़ुबेर ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मैंने बुस्र बिन उ़बैदुल्लाह से सुना, उन्होंने अबू इदरीस से सुना, कहा कि मैंने औ़फ़ बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि मैं ग़ज़्व-ए-तबूक़ के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप उस वक़्त चमड़े के एक ख़ेमे में तशरीफ़ फ़र्मा थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि क़यामे क़यामत की छः निशानियाँ शुमार कर लो, मेरी मौत, फिर बैतुल मक़्दिस की फ़तह, फिर एक वबा जो तुममें शिद्दत से फैलेगी जैसे बकरियों में ताऊ़न फैल जाती है। फिर माल की कष़रत इस दर्जा में होगी कि एक शख़्स सौ दीनार भी अगर किसी को देगा तो उस पर भी वो नाराज़ होगा। फिर फ़ित्ना इतना तबाहकुन आ़म होगा कि अ़रब का कोई घर बाक़ी न रहेगा जो उसकी लपेट में न आ गया होगा। फिर सुलह जो तुम्हारे और बनी अल् अस्फ़र (नसारा-ए-रोम) के बीच होगी, लेकिन वो दग़ा करेंगे और एक अ़ज़ीम लश्कर के साथ तुम पर चढ़ाई करेंगे। उसमें अस्सी झण्डे होंगे और हर झण्डे के मातहत बारह हज़ार फ़ौज होगी (या'नी नौ लाख साठ हज़ार फौज से वो तुम पर हमलावर होंगे)।

٣١٧٦- حَدَّثَنِي الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الْوَلِيْدُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنِ الْعَلاَءِ بْنِ زَبْرٍ قَالَ: سَمِعْتُ بُسْرَ بْنَ عُبَيْدِ اللهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا إِدْرِيْسَ قَالَ: سَمِعْتُ عَوْفَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ - وَهُوَ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ - فَقَالَ: ((اعْدُدْ سِتًّا بَيْنَ يَدَي السَّاعَةِ: مَوْتِي، ثُمَّ فَتْحُ بَيْتِ الْمَقْدِسِ، ثُمَّ مُوتَانٌ يَأْخُذُ فِيْكُمْ كَقُعَاصِ الْغَنَمِ، ثُمَّ اسْتِفَاضَةُ الْمَالِ حَتَّى يُعْطَى الرَّجُلُ مِائَةَ دِيْنَارٍ فَيَظَلُّ سَاخِطًا، ثُمَّ فِتْنَةٌ لاَ يَبْقَى مِنَ الْعَرَبِ إِلاَّ دَخَلَتْهُ، ثُمَّ هُدْنَةٌ تَكُونُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ بَنِي الأَصْفَرِ فَيَغْدِرُونَ، فَيَأْتُونَكُمْ تَحْتَ ثَمَانِيْنَ غَايَةً، تَحْتَ كُلِّ غَايَةٍ اثْنَا عَشَرَ أَلْفًا)).

तश्रीह : पहली दूसरी निशानी तो हो चुकी है या'नी ताऊ़ने अ़म्वास (प्लेग की बीमारी) जो हज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में आया था जिसमें हज़ारों मुसलमान मर गये थे। चौथी निशानी भी हो चुकी है, मुसलमान रोम और ईरान की फ़तह से बेहद मालदार हो गये थे। पाँचवीं निशानी कहते हैं हो चुकी है जिससे बनू उ़मय्या का फ़ित्ना मुराद है। छठी निशानी क़यामत के क़रीब होगी, इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि दग़ाबाज़ी करना काफ़िरों का काम है और ये भी क़यामत की एक निशानी है कि दग़ाबाज़ी आ़म हो जाएगी।

बाब 16 : अ़हद क्यूँकर वापस किया जाए?

١٦– بَابُ كَيْفَ يُنْبَذُ إِلَى أَهْلِ الْعَهْدِ؟

और अल्लाह पाक ने सूरह अन्फ़ाल में फ़र्माया कि, अगर आपको किसी क़ौम की तरफ़ से दग़ाबाज़ी का डर हो तो आप उनका अ़हद मा'क़ूल तौर से उनको वापस कर दें आख़िर आयत तक।

وَقَوْلُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَى سَوَاءٍ﴾ الآيَةَ [الأنفال : ٥٨]

मा'क़ूल तरीक़ा ये है कि उनको कहला भेजे, भाई हमारा तुम्हारा दोस्ती का अ़हद टूट गया, ये नहीं कि दफ़अ़तन उन पर हमला कर बैठे।

3177. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने (हज्जतुल विदाअ़से पहले वाले हज्ज के मौक़े पर) दसवीं ज़िल हिज्ज के दिन कुछ दूसरे लोगों के साथ मुझे भी मिना में ये ऐलान करने भेजा था कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज्ज करने न आए और कोई शख़्स बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगे होकर न करे और हज्जे अकबर का दिन दसवीं तारीख़ ज़िलहिज्ज का दिन है। इसे हज्जे अकबर इसलिये कहा गया कि लोग (उमरह को) हज्जे अस़्ग़र कहने लगे थे, तो अबूबक्र (रज़ि.) ने इस साल मुश्रिकों से जो अ़हद लिया था उसे वापस कर दिया, और दूसरे साल हज्जतुल विदाअ़ में जब आँहज़रत (ﷺ) ने हज्ज किया तो कोई मुश्रिक शरीक नहीं हुआ। (राजेअ़ : 369)

٣١٧٧– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَنِي أَبُوبَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِيْمَنْ يُؤَذِّنُ يَوْمَ النَّحْرِ بِمِنًى: لاَ يَحُجُّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ، وَلاَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ. وَيَوْمُ الْحَجِّ الأَكْبَرِ يَوْمُ النَّحْرِ، وَإِنَّمَا قِيْلَ: ((الأَكْبَرِ)) مِنْ أَجْلِ قَوْلِ النَّاسِ ((الْحَجُّ الأَصْغَرُ)) فَنَبَذَ أَبُو بَكْرٍ إِلَى النَّاسِ فِي ذَلِكَ الْعَامِ، فَلَمْ يَحُجَّ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ الَّذِي حَجَّ فِيْهِ النَّبِيُّ ﷺ مُشْرِكٌ)). [راجع: ٣٦٩]

मा'लूम हुआ कि हज्जे अकबर हज्ज ही का नाम है और ये जो अ़वाम में मशहूर है कि हज्जे अकबर वो हज्ज है जिसमें अ़रफ़ा का दिन जुमा को पड़े, उस बारे में कोई स़ह़ीह़ ह़दीष़ नहीं है।

बाब 17 : मुआ़हिदा करने के बाद दग़ाबाज़ी करने वाले पर गुनाह

١٧– بَابُ إِثْمِ مَنْ عَاهَدَ ثُمَّ غَدَرَ

और सूरह अन्फ़ाल में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि, वो लोग (यहूद) आप जिनसे मुआ़हदा करते हैं, और फिर हर बार वो दग़ाबाज़ी करते हैं, और वो बाज़ नहीं आते।

وَقَوْلِهِ: ﴿الَّذِيْنَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ، وَهُمْ لاَ يَتَّقُونَ﴾ [الأنفال : ٥٦]

3178. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुर्रह ने, उनसे मसरूक़ ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने बयान

٣١٧٨– حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ

किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, चार आदतें ऐसी हैं कि अगर ये चारों किसी एक शख़्स में जमा हो जाएँ तो वो पक्का मुनाफ़िक़ है। वो शख़्स जो बात करे तो झूठ बोले, और जब वा'दा करे, तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे। और जब मुआहदा करे तो उसे पूरा न करे। और जब किसी से लड़े तो गाली-गुलूच पर उतर आए। और अगर किसी शख़्स के अंदर इन चारों आदतों में से एक ही आदत है, तो उसके अंदर निफ़ाक़ की एक आदत है जब तक कि वो उसे छोड़ न दे। (राजेअ : 34)

عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَرْبَعُ خِلاَلٍ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا خَالِصًا: مَنْ إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ، وَإِذَا خَاصَمَ فَجَرَ. وَمَنْ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنْهُنَّ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنَ النِّفَاقِ حَتَّى يَدَعَهَا)). [راجع: ٣٤]

मक़्सद ये है कि वा'दा ख़िलाफ़ी करना मुसलमान की शान नहीं है वो वा'दा ख़्वाह काफ़िरों से ही क्यूँ न किया गया हो, फिर जो वा'दा ग़ैरों से सियासी सतह पर किया जाए उसकी और भी ऊँची हैषियत है, उसे पूरा करना मुसलमान के लिये ज़रूरी हो जाता है। इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने सुलह हुदैबिया को पूरे तौर पर निभाया, हालाँकि उसमें क़ुरैश की कई शर्तें सरासर नामा'कूल थीं, मगर **अल्करीमु इज़ा वअद वफ़ा** मशहूर मक़ूला है।

3179. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान षौरी ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें इब्राहीम तैमी ने, उन्हें उनके बाप (यज़ीद बिन शुरैक तैमी) ने और उनसे अली (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने नबी करीम (ﷺ) से बस यही क़ुर्आन मजीद लिखा और जो कुछ इस वरक़ में है, नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मदीना आइर पहाड़ी और फ़लाँ (कुदा) पहाड़ी के दरम्यान तक हरम है। पस जिसने यहाँ (दीन में) कोई नई चीज़ दाख़िल की या किसी ऐसे शख़्स को उसके हुदूद में पनाह दी तो उस पर अल्लाह तआला, मलाइका और इंसान सबकी ला'नत होगी। न उसका कोई फ़र्ज़ क़ुबूल और न नफ़्ल क़ुबूल होगा। और मुसलमान, मुसलमान पनाह देने में सब बराबर हैं। मा'मूली से मा'मूली मुसलमान (औरत या ग़ुलाम) किसी काफ़िर को पनाह दे सकते हैं। और जो कोई किसी मुसलमान का क्या हुआ अहद तोड़ डाले उस पर अल्लाह और मलाइका और इंसान सबकी ला'नत होगी, न उसकी कोई फ़र्ज़ इबादत क़ुबूल होगी और न नफ़्ल! और जिस ग़ुलाम या लौण्डी ने अपने आक़ा अपने मालिक की इजाज़त के बग़ैर किसी दूसरे को अपना मालिक बना लिया, तो उस पर अल्लाह और मलाइका और इंसान सबकी ला'नत होगी, न उसकी कोई फ़र्ज़ इबादत मक़्बूल होगी और न नफ़्ल। (राजेअ : 111)

٣١٧٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا كَتَبْنَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ إِلاَّ الْقُرْآنَ، وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْمَدِينَةُ حَرَامٌ مَا بَيْنَ عَائِرٍ إِلَى كَذَا، فَمَنْ أَحْدَثَ حَدَثًا أَوْ آوَى مُحْدِثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يُقْبَلُ مِنْهُ عَدْلٌ وَلاَ صَرْفٌ. وَذِمَّةُ الْمُسْلِمِينَ وَاحِدَةٌ يَسْعَى بِهَا أَدْنَاهُمْ، فَمَنْ أَخْفَرَ مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلاَ عَدْلٌ. وَمَنْ وَالَى قَوْمًا بِغَيْرِ إِذْنِ مَوَالِيهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلاَ عَدْلٌ)). [راجع: ١١١]

3180. अबू मूसा (मुहम्मद बिन मुषन्ना) ने बयान किया कि हमसे

٣١٨٠- قَالَ أَبُو مُوسَى: حَدَّثَنَا هَاشِمُ

بْنُ الْقَاسِمِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا لَمْ تَجْتَبُوا دِيْنَارًا وَلاَ دِرْهَمًا؟ فَقِيْلَ لَهُ: وَكَيْفَ تَرَى ذَلِكَ كَائِنًا يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: إِيْ وَالَّذِي نَفْسُ أَبِي هُرَيْرَةَ بِيَدِهِ، عَنْ قَوْلِ الصَّادِقِ الْمَصْدُوقِ. قَالُوا : عَمَّ ذَلِكَ؟ قَالَ: تُنْتَهَكُ ذِمَّةُ اللهِ وَذِمَّةُ رَسُولِهِ ﷺ، فَيَشُدُّ اللهُ عَزَّوَجَلَّ قُلُوبَ أَهْلِ الذِّمَّةِ فَيَمْنَعُونَ مَا فِي أَيْدِيهِمْ)).

हाशिम बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद सईद बिन अ़म्र ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब (जिज़्या और ख़िराज में से) न तुम्हें दिरहम मिलेगा और न दीनार! इस पर किसी ने कहा। कि जनाब अबू हुरैरह (रज़ि.) तुम कैसे समझते हो कि ऐसा होगा? अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा हाँ उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में अबू हुरैरह (रज़ि.) की जान है। ये स़ादिक़ व मस्दूक़ (ﷺ) का फ़र्मान है। लोगों ने पूछा था कि ये कैसे हो जाएगा? तो आपने फ़र्माया, जबकि अल्लाह और उसके रसूल का अ़हद (इस्लामी हुकूमत ग़ैर-मुस्लिमों से उनकी जान व माल की हिफ़ाज़त के बारे में) तोड़ा जाने लगे, तो अल्लाह तआ़ला भी ज़िम्मियों के दिलों को सख़्त कर देगा और वो जिज़्या देना बन्द कर देंगे (बल्कि लड़ने को मुस्तैद होंगे)।

यहाँ भी मक़्सूदे बाब इससे ह़ासिल हुआ कि जब मुसलमान ज़िम्मी लोगों से मुआहिदा करके उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी करेंगे और ज़िम्मियों को सताने लगेंगे, तो अल्लाह पाक ज़िम्मियों को सख़्त दिल बना देगा और वो जिज़्या बन्द कर देंगे। मा'लूम हुआ कि ग़ैरों से जो भी सुलहे अमन का मुआहिदा किया जाए, आख़िर वक़्त तक उसको मल्हूज़ रखना ज़रूरी है।

١٨ - بَابٌ

बाब 18 :

٣١٨١ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو حَمْزَةَ قَالَ: سَمِعْتُ الأَعْمَشَ قَالَ: ((سَأَلْتُ أَبَا وَائِلٍ: شَهِدْتَ صِفِّيْنَ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَسَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ حُنَيْفٍ يَقُولُ: اتَّهِمُوا رَأْيَكُمْ، رَأَيْتُنِي يَوْمَ أَبِي جَنْدَلَ وَلَو أَسْتَطِيعُ أَنْ أَرُدَّ أَمْرَ النَّبِيِّ ﷺ لَرَدَدْتُهُ، وَمَا وَضَعْنَا أَسْيَافَنَا عَلَى عَوَاتِقِنَا لأَمْرٍ يُفْظِعُنَا إِلاَّ أَسْهَلْنَ بِنَا إِلَى أَمْرٍ نَعْرِفُهُ غَيْرَ أَمْرِنَا هَذَا)). [أطرافه في: ٣١٨٢، ٤١٨٩، ٤٨٤٤، ٧٣٠٨].

3181. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अबू हम्ज़ा ने ख़बर दी, कहा कि मैंने आ'मश से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अबू वाईल से पूछा, क्या आप स़िफ़्फ़ीन की जंग में मौजूद थे? उन्होंने बयान किया कि हाँ (मैं था) और मैंने सहल बिन हुनीफ़ (रज़ि.) को ये कहते सुना था कि तुम लोग ख़ुद अपनी राय को ग़लत समझो, जो आपस में लड़ते मरते हो। मैंने अपने तईं देखा जिस दिन अबू जन्दल आया। (या'नी हुदैबिया के दिन) अगर मैं आँहज़रत (ﷺ) का हुक्म फेर सकता तो उस दिन फेर देता और हमने जब किसी मुसीबत में डरकर तलवारें अपने कँधों पर रखीं तो वो मुसीबत आसान हो गई। हमको उसका अंजाम मा'लूम हो गया। मगर यही एक लड़ाई है (जो सख़्त मुश्किल है उसका अंजाम बेहतर नहीं मा'लूम होता)। (दीगर मक़ाम : 3182, 4189, 4844, 7308)

٣١٨٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ

3182. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने, उनसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने, उनसे

عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو وَائِلٍ قَالَ: ((كُنَّا بِصِفِّينَ، فَقَامَ سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ فَقَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ اتَّهِمُوا أَنْفُسَكُمْ، فَإِنَّا كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ وَلَوْ نَرَى قِتَالاً لَقَاتَلْنَا، فَجَاءَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَهُمْ عَلَى الْبَاطِلِ؟ فَقَالَ: ((بَلَى)). فَقَالَ: أَلَيْسَ قَتْلاَنَا فِي الْجَنَّةِ وَقَتْلاَهُمْ فِي النَّارِ؟ قَالَ: ((بَلَى)). قَالَ: فَعَلَى مَا نُعْطِي الدَّنِيَّةَ فِي دِينِنَا؟ أَنَرْجِعُ وَلَمَّا يَحْكُمُ اللهُ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ؟ فَقَالَ: ((يَا ابْنَ الْخَطَّابِ إِنِّي رَسُولُ اللهِ، وَلَنْ يُضَيِّعَنِي اللهُ أَبَدًا)). فَانْطَلَقَ عُمَرُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ مَا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: إِنَّهُ رَسُولُ اللهِ، وَلَنْ يُضَيِّعَهُ اللهُ أَبَدًا. فَنَزَلَتْ سُورَةُ الْفَتْحِ، فَقَرَأَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى عُمَرَ إِلَى آخِرِهَا، فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَوَ فَتْحٌ هُوَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). [راجع: ٣١٨١]

उनके बाप अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन स्याह ने, उनसे ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू वाईल ने बयान किया कि हम मुक़ामे स़िफ़्फ़ीन मे डेरे डाले हुए थे। फिर सहल बिन ह़नीफ़ (रज़ि.) खड़े हुए और फ़र्माया ऐ लोगों ! तुम ख़ुद अपनी राय को ग़लत़ समझो। हम स़ुलह ह़ुदैबिया के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे, अगर हमें लड़ना होता तो उस वक़्त ज़रूर लड़ते। उ़मर (रज़ि.) उस मौक़े पर आए (या'नी ह़ुदेबिया में) और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम ह़क़ पर और वो बात़िल पर नहीं हैं? आहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्यूँ नहीं! उ़मर (रज़ि.) ने कहा क्या हमारे मक़्तूल जन्नत में और उनके मक़्तुल जहन्नम में नहीं जाएँगे? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि क्यूँ नहीं! फिर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि फिर हम अपने दीन के मामले में क्यूँ दबें? क्या हम (मदीना) वापस चले जाएँगे, और हमारे और उनके दरम्यान अल्ल़ाह कोई फ़ैसला नहीं करेगा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इब्ने ख़त्ताब! मैं अल्ल़ाह का रसूल हूँ और अल्ल़ाह मुझे कभी बर्बाद नहीं करेगा। उसके बाद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास गये और उनसे वही सवालात किये, जो नबी करीम (ﷺ) से अभी कर चुके थे। उन्होंने भी यही कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) अल्ल़ाह के रसूल हैं और अल्ल़ाह उन्हें कभी बर्बाद नहीं होने देगा। फिर सूरह फ़तह नाज़िल हुई और आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को उसे आख़िर तक पढ़कर सुनाया, तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया क्या यही फ़तह है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! बिला शक यही फ़तह है। (राजेअ : 3181)

तश्रीह : ह़ज़रत सहल बिन ह़नीफ़ (रज़ि.) लड़ाई में किसी त़रफ़ भी शरीक नहीं थे। इसलिये दोनों गिरोह उनको इल्ज़ाम दे रहे थे। उसका जवाब उन्होंने ये दिया कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें मुसलमानों से लड़ने का हुक्म नहीं दिया था। ये तो ख़ुद तुम्हारी ग़लती है कि अपनी ही तलवार से अपने ही भाईयों को क़त्ल कर रहे हो। बहुत से दूसरे स़ह़ाबा भी ह़ज़रत मुआविया (रज़ि.) और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के झगड़े में शरीक नहीं थे। ह़ज़रत सहल (रज़ि.) का मत़लब ये था कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने काफ़िरों के मुक़ाबले में जंग में जल्दी न की और उनसे सुलह़ कर ली तो तुम मुसलमानों से लड़ने के लिये क्यूँ पिले पड़े हो। ख़ूब सोच लो कि ये जंग जाइज़ है या नहीं, और इसका अंजाम क्या होगा? जंगे स़िफ़्फ़ीन जब हुई तो तमाम जहाँ के काफ़िरों ने ये ख़बर सुनकर शादयाने बजाये कि अब मुसलमानों का ज़ोर आपस ही में खर्च होने लगा। हम सब बाल बाल बचे रहेंगे।

आज भी यही ह़ाल है कि मुसलमानों में सियासी, मज़हबी आपसी इतनी लड़ाइयाँ हैं कि आज के दुश्मनाने इस्लाम देख देखकर ख़ुश हो रहे हैं । मुसलमानों का ये ह़ाले बद न होता तो उनका क़िब्ल-ए-अव्वल मग़ज़ूब क़ौम यहूद के हाथ न जाता

। मुस्लिम अ़रब क़ौमों की ख़ानाजंगी ने आज उम्मत को ये बुरा दिन भी दिखलाया कि यहूदी आज मुसलमानों के सर पर सवार हो रहे हैं।

सहल (रज़ि.) की ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब से यूँ है कि जब क़ुरैश ने अ़हदशिकनी की तो अल्लाह ने उनको सज़ा दी और मुसलमानों को उन पर ग़ालिब कर दिया। सहल बिन ह़नीफ़ (रज़ि.) ने जंगे स़िफ़्फ़ीन के मौक़े पर जो कहा उसका मतलब ये था कि सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर क़ुरैश ने मुसलमानों की बड़ी तौहीन की थी फिर भी आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे लड़ना मुनासिब न जाना और हम आपके हुक्म के ताबेअ़ रहे, उसी त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों पर हाथ उठाने से मना किया है। मैं क्यूँकर मुसलमानों को मारूँ, ये सहल (रज़ि.) ने उस वक़्त कहा जब लोगों ने उनको मलामत की कि स़िफ़्फ़ीन में मुक़ातला क्यूँ नहीं करते? स़िफ़्फ़ीन नामी फ़ुरात नदी के किनारे एक गांव था। जहाँ ह़ज़रत अ़ली और मुआविया (रज़ि.) के बीच जंग हुई थी।

3183. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हातिम ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि क़ुरैश से जिस ज़माने में रसूले करीम (ﷺ) ने (हुदैबिया की) सुलह की थी, उसी मुद्दत में मेरी वालिदा (क़ुतेला) अपने बाप (हारिष़ बिन मुदरक) को साथ लेकर मेरे पास आईं, वो इस्लाम में दाख़िल नहीं हुई थीं। (उ़र्वा ने बयान किया कि) ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) ने इस बारे में आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी वालिदा आई हुई हैं और मुझसे रग़बत के साथ मिलना चाहती हैं, तो क्या मैं उनके साथ स़िलारह़मी करूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! उनके साथ स़िलारह़मी कर। (राजेअ़ : 2620)

٣١٨٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَسْمَاءَ ابْنَةِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَدِمَتْ عَلَيَّ أُمِّيْ وَهِيَ مُشْرِكَةٌ فِي عَهْدِ قُرَيْشٍ إِذْ عَاهَدُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمُدَّتِهِمْ مَعَ أَبِيْهَا، فَاسْتَفْتَتْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ أُمِّي قَدِمَتْ عَلَيَّ وَهِيَ رَاغِبَةٌ، أَفَأَصِلُهَا؟ قَالَ : ((نَعَمْ، صِلِيْهَا)).
[راجع: ٢٦٢٠]

तश्रीह : बाब से इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त इस त़रह़ है कि उनकी वालिदा भी क़ुरैश के काफ़िरों में शामिल थीं और चूँकि उनसे और आँह़ज़रत (ﷺ) से सुलह़ थी, इसलिये रसूले करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) को इजाज़त दी कि अपनी वालिदा से अच्छा सुलूक़ करें।

बाब 19 : तीन दिन या एक मुअ़य्यन मुद्दत के लिये सुलह़ करना

١٩- بَابُ الْمُصَالَحَةِ عَلَى ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ أَوْ وَقْتٍ مَعْلُومٍ

3184. हमसे अह़मद बिन उ़ष़्मान बिन ह़कीम ने बयान किया, कहा हमसे शुरैह़ बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा मुझसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब उ़मरह़ करना चाहा तो आपने मक्का में दाख़िला के लिये मक्का के लोगों से इजाज़त लेने के लिये आदमी भेजा। उन्होंने इस शर्त के साथ (इजाज़त दी) कि मक्का में तीन दिन से ज़्यादा

٣١٨٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ بْنِ حَكِيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُرَيْحُ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ يُوسُفَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي الْبَرَاءُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا أَرَادَ أَنْ يَعْتَمِرَ أَرْسَلَ إِلَى أَهْلِ

مَكَّةَ يَسْتَأْذِنُهُمْ لِيَدْخُلَ مَكَّةَ، فَاشْتَرَطُوا عَلَيْهِ أَنْ لاَ يُقِيمَ بِهَا إِلاَّ ثَلاَثَ لَيَالٍ، وَلاَ يَدْخُلُهَا إِلاَّ بِجُلُبَّانِ السِّلاَحِ، وَلاَ يَدْعُوَ مِنْهُمْ أَحَدًا. قَالَ: فَأَخَذَ يَكْتُبُ الشَّرْطَ بَيْنَهُمْ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ: فَكَتَبَ: هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ. فَقَالُوا: لَوْ عَلِمْنَا أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ لَمْ نَمْنَعْكَ وَلَبَايَعْنَاكَ، وَلَكِنْ اكْتُبْ: هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ. فَقَالَ: ((أَنَا وَاللهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، وَأَنَا وَاللهِ رَسُولُ اللهِ)). قَالَ: وَكَانَ لاَ يَكْتُبُ، قَالَ فَقَالَ لِعَلِيٍّ: ((امْحُ رَسُولَ اللهِ)). فَقَالَ عَلِيٌّ: وَاللهِ لاَ أَمْحَاهُ أَبَدًا. قَالَ: ((فَأَرِنِيهِ))، قَالَ: فَأَرَاهُ إِيَّاهُ، فَمَحَاهُ النَّبِيُّ ﷺ بِيَدِهِ. فَلَمَّا دَخَلَ وَمَضَتِ الأَيَّامُ أَتَوْا عَلِيًّا فَقَالُوا: مُرْ صَاحِبَكَ فَلْيَرْتَحِلْ. فَذَكَرَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: ((نَعَمْ)). فَارْتَحَلَ.

[راجع: ١٧٨١]

क़याम न करें। हथियार नियाम में रखे बग़ैर दाख़िल न हों और (मक्का के) किसी आदमी को अपने साथ (मदीना) न ले जाएँ (अगरचे वो जाना चाहे) उन्होंने बयान किया कि फिर उन शराइत को अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने लिखना शुरू किया और इस तरह, ये मुहम्मद अल्लाह के रसूल के सुलहनामे की तहरीर है। मक्का वालों ने कहा कि अगर हम जान लेते कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो फिर आपको रोकते ही नहीं बल्कि आप पर ईमान लाते, इसलिये तुम्हें यूँ लिखना चाहिये, ये मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के सुलहनामे की तहरीर है। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह गवाह है कि मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूँ और अल्लाह गवाह है कि मैं अल्लाह का रसूल भी हूँ। आँहज़रत (ﷺ) लिखना नहीं जानते थे। रावी ने बयान किया कि आप (ﷺ) ने अली (रज़ि.) से फ़र्माया, रसूलुल्लाह (ﷺ) का लफ़्ज़ मिटा दे, हज़रत अली (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि अल्लाह की क़सम! ये लफ़्ज़ तो मैं कभी न मिटाऊँगा, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर मुझे दिखलाओ, रावी ने बयान किया कि अली (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) को वो लफ़्ज़ दिखाया। और आप (ﷺ) ने ख़ुद अपने हाथ से उसे मिटा दिया। फिर जब आँहज़रत (ﷺ) मक्का तशरीफ़ ले गये और (तीन) दिन गुज़र गये तो क़ुरैश हज़रत अली (रज़ि.) के पास आए और कहा कि अब अपने साथियों से कहो कि अब यहाँ से चले जाएँ (अली रज़ि. ने बयान किया कि) मैंने इसका ज़िक्र आँहज़रत (ﷺ) से किया, तो आपने फ़र्माया कि हाँ, चुनाँचे आप वहाँ से रवाना हो गये। (राजेअ : 1781)

तश्रीह : हज़रत अली (रज़ि.) का इंकार हुक्मउदूली और मुख़ालफ़त के तौर पर न था बल्कि आँहज़रत (ﷺ) की मुहब्बत और ख़ैर-ख़्वाही और जोशे ईमान की वजह से था। इसलिये कोई गुनाह हज़रत अली (रज़ि.) पर न हुआ। यहाँ से शिया हज़रात को सबक़ लेना चाहिये कि जैसे हज़रत अली (रज़ि.) ने महज़ मुहब्बत की वजह से आँहज़रत (ﷺ) के फ़र्मान के ख़िलाफ़ किया, वैसा ही हज़रत उमर (रज़ि.) ने भी क़िस्स-ए-क़िरतास में आँहज़रत (ﷺ) की तकलीफ़ के ख़्याल से लिखे जाने में मुख़ालफ़त की। दोनों की निय्यत बख़ैर थी। **कारे पाकाँ अज़ क़यास खूद मगीर** एक जगह हुस्ने-ज़न करना, दूसरी जगह बदज़नी सरीह इंसाफ़ से दूर है।

٢٠- بَابُ الْمُوَادَعَةِ مِنْ غَيْرِ وَقْتٍ، وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أُقِرُّكُمْ عَلَى مَا أَقَرَّكُمُ اللهُ))

बाब 20 : नामा'लूम मुद्दत के लिये सुलह करना

और नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर के यहूदियों से फ़र्माया था, मैं उस वक़्त तक तुम्हें यहाँ रहने दूँगा, जब तक अल्लाह तआला चाहेगा।

इसी से बाब का मतलब षाबित हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने ग़ैर मुक़र्ररा मुद्दत के लिये यहूदे ख़ैबर से मामला फ़र्माया। जो हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने तक बाक़ी रहा। फिर यहूदियों की मुसलसल शरारतों और नापाक साज़िशों की बिना पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनका जलावतन कर देना मुनासिब समझा और उनको जलावतन कर दिया। सद अफ़सोस! कि इस चौदहवीं सदी में वही यहूदी आज इस्लाम के क़िब्ल-ए-अव्वल पर क़ब्ज़ा करके मुसलमानों के मुँह आ रहे हैं। ख़ज़लहुमुल्लाह (आमीन)

बाब 21 : मुश्रिकों की लाशों को कुँए में फिंकवा देना

٢١- بَابُ طَرْحِ جِيَفِ الْمُشْرِكِيْنَ فِي الْبِئْرِ، وَلاَ يُؤْخَذُ لَهُمْ ثَمَنٌ

और उनकी लाशों की (अगर उनके वरषा देना भी चाहें तो भी) क़ीमत न लेना.

तश्रीह: हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब की हदीष से दूसरा मतलब इस तरह निकाला कि अगर आँहज़रत (ﷺ) चाहते तो बद्र की मक़्तूलीन की लाशें मक्का के काफ़िरों के हाथ बेच सकते थे क्योंकि वो मक्का के रईस थे और उनके रिश्तेदार बहुत मालदार थे, मगर आपने ऐसा इरादा न किया और लाशों को अंधे कुँए में डलवा दिया। कुछ ने कहा कि इमाम बुख़ारी (रह.) दूसरे मतलब की हदीष को अपनी शर्त पर न होने की वजह से न ला सके, लेकिन उन्होंने इस तरफ़ इशारा कर दिया। जिसको इब्ने इस्हाक़ ने मग़ाज़ी में निकाला कि मुश्रिकीन नौफ़िल बिन अब्दुल्लाह की लाश के बदल जो खन्दक़ में घुस आया था और वहीं मारा गया, आँहज़रत (ﷺ) को रुपया देते रहे, लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हमको उसकी क़ीमत दरकार नहीं है न उसकी लाश। ज़ुह्री ने कहा मुश्रिक दस हज़ार दिरहम उस लाश के बदल मुआवज़ा देने पर राज़ी थे। (वहीदी)

3185. हमसे अब्दान बिन उष्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मेरे बाप ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें अबू इस्हाक़ ने, उन्हें अम्र बिन मैमून ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मक्का में (शुरू इस्लाम के ज़माने में) रसूलुल्लाह (ﷺ) सज्दा की हालत में थे और क़रीब ही क़ुरैश के कुछ लोग बैठे हुए थे। फिर उक़्बा बिन अबी मुईत ऊँट की ओझड़ी लाया और नबी करीम (ﷺ) की पीठ पर उसे डाल दी। नबी करीम (ﷺ) सज्दा से अपना सर न उठा सके। आख़िर फ़ातिमा (रज़ि.) आईं और आप (ﷺ) की पीठ पर से उस ओझड़ी को हटाया, और जिसने ये हरकत की थी उसे बुरा भला कहा, नबी करीम (ﷺ) ने भी बद् दुआ की कि ऐ अल्लाह! क़ुरैश की इस जमाअत को पकड़। ऐ अल्लाह अबू जहल बिन हिशाम, उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, उक़्बा बिन अबी मुईत, उमय्या बिन ख़ल्फ़ या उबई बिन ख़ल्फ़ को बर्बाद कर। फिर मैंने देखा कि ये सब बद्र की लड़ाई में क़त्ल कर दिये गये और एक कुँए में उन्हें डाल दिया गया था। सिवा उमय्या या उबई के कि ये शख़्स बहुत भारी भरकम था। जब उसे सहाबा ने खींचा तो कुँए में डालने से पहले ही उसके जोड़—जोड़ अलग हो गये।

٣١٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ بْنُ عُثْمَانَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ سَاجِدًا وَحَوْلَهُ نَاسٌ مِنْ قُرَيْشٍ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ إِذْ جَاءَهُ عُقْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ بِسَلَى جَزُوْرٍ فَقَذَفَهُ عَلَى ظَهْرِ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمْ يَرْفَعْ رَأْسَهُ حَتَّى جَاءَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ فَأَخَذَتْ مِنْ ظَهْرِهِ وَدَعَتْ عَلَى مَنْ صَنَعَ ذَلِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ عَلَيْكَ الْمَلأَ مِنْ قُرَيْشٍ، اللَّهُمَّ عَلَيْكَ أَبَا جَهْلِ بْنَ هِشَامٍ وَعُتْبَةَ بْنَ رَبِيْعَةَ وَشَيْبَةَ بْنَ رَبِيْعَةَ وَعُقْبَةَ بْنَ أَبِي مُعَيْطٍ وَأُمَيَّةَ بْنَ خَلَفٍ - أَوْ أُبَيَّ بْنَ خَلَفٍ)) - فَلَقَدْ رَأَيْتُهُمْ قُتِلُوا يَوْمَ بَدْرٍ فَأُلْقُوا فِي بِئْرٍ، غَيْرَ أُمَيَّةَ - أَوْ أُبَيٍّ - فَإِنَّهُ كَانَ رَجُلاً ضَخْمًا، فَلَمَّا

جُزُورٌ تَقَطَّعَتْ أَوْصَالُهُ قَبْلَ أَنْ يُلْقَى فِي الْبِئْرِ)). [راجع: ٢٤٠]

(राजेअ : 240)

क़रीब ही एक ऊँटनी ने बच्चा जना था। मुश्रिकीन उसकी बच्चादानी का सामान मलबा उठाकर ले आए और ये हरकत की जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने जब पानी सर से गुज़र गया, तो उनके हक़ में ये बद्दुआ की जिसका रिवायत में ज़िक्र है। बाब और हदीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है। लफ़्ज़ सला जज़ूर इज़ाफ़त के साथ है। (मुराद ऊँटनी की बच्चादानी)

٢٢- بَابُ إِثْمِ الْغَادِرِ لِلْبَرِّ وَالْفَاجِرِ

बाब 22 : दग़ाबाज़ी करने वाले पर गुनाह ख़्वाह किसी नेक आदमी के साथ हो या बेअमल के साथ

٣١٨٦، ٣١٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ - وَعَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ - عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ))، قَالَ أَحَدُهُمَا، يُنْصَبُ - وَقَالَ الآخَرُ : يُرَى - يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُعْرَفُ بِهِ.

3186,87. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सुलैमान आ'मश ने, उसे अबू वाईल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने और ष़ाबित ने अनस (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन हर दग़ाबाज़ के लिये एक झण्डा होगा, उनमें से एक साहब ने ये बयान किया कि वो झण्डा (उसके पीछे) गाड़ दिया जाएगा और दूसरे साहब ने बयान किया कि उसे क़यामत के दिन सब देखेंगे, उसके ज़रिये उसे पहचाना जाएगा।

एक रिवायत में है कि ये झण्डा उसकी मक़अ़द पर लगाया जाएगा। ग़र्ज़ ये है कि उसकी दग़ाबाज़ी से तमाम अहले महशर मुत्तलअ़ होंगे और नफ़रत करेंगे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसी बुरी आदतों से बचाए। आमीन

٣١٨٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يُنْصَبُ لِغَدْرَتِهِ)). [أطرافه في: ٦١٧٧، ٦١٧٨، ٦٩٦٦، ٧١١١].

3188. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर दग़ाबाज़ के लिये क़यामत के दिन एक झण्डा होगा जो उसकी दग़ाबाज़ी की अ़लामत के तौर पर (उसके पीछे) गाड़ दिया जाएगा। (दीगर मक़ाम : 6177, 6178, 6966, 7111)

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) किताबु जिहाद को ख़त्म करते हुए इन अहादीष़ को लाकर ये बतला रहे हैं कि इस्लाम में नाहक़ क़त्ल व ग़ारत, फ़साद व दग़ाबाज़ी हर्गिज़ हर्गिज़ जाइज़ नहीं है। अगर कोई मुसलमान इन हरकतों का मुर्तकिब होगा तो उनका वो ख़ुद ज़िम्मेदार होगा। इस्लाम को उससे कोई ज़रर न पहुँच सकेगा।

٣١٨٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ

3189. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे

طاوُس عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ: ((لاَ هِجْرَةَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ، وَإِذَا اسْتُنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوا)). وَقَالَ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ: ((إِنَّ هَذَا الْبَلَدَ حَرَّمَهُ اللهُ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ، فَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَإِنَّهُ لَمْ يَحِلَّ الْقِتَالُ فِيهِ لأَحَدٍ قَبْلِي، وَلَمْ يَحِلَّ لِي إِلاَّ سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ، فَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، لاَ يُعْضَدُ شَوْكُهُ، وَلاَ يُنَفَّرُ صَيْدُهُ، وَلاَ يَلْتَقِطُ لُقَطَتَهُ إِلاَّ مَنْ عَرَّفَهَا، وَلاَ يُخْتَلَى خَلاَهُ)). فَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِلاَّ الإِذْخِرَ، فَإِنَّهُ لِقَيْنِهِمْ وَلِبُيُوتِهِمْ. قَالَ: ((إِلاَّ الإِذْخِرَ)). [راجع: ١٣٤٩]

ताऊस ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन फ़र्माया था, अब (मक्का से) हिजरत फ़र्ज़ नहीं रही, अल्बत्ता जिहाद की निय्यत और जिहाद का हुक्म बाक़ी है। इसलिये जब तुम्हें जिहाद के लिये निकाला जाए तो फ़ौरन निकल जाओ और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन ये भी फ़र्माया था कि जिस दिन अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन पैदा किये, उसी दिन इस शहर (मक्का) को हरम क़रार दे दिया। पस ये शहर अल्लाह की हुर्मत के साथ क़यामत तक के लिये हराम ही रहेगा, और मुझसे पहले यहाँ किसी के लिये लड़ना जाइज़ नहीं किया गया। पस अब ये मुबारक शहर अल्लाह तआला की हुर्मत के साथ क़यामत तक के लिये हराम है, इसकी हुदूद में न (किसी पेड़ का) कांटा तोड़ा जाए, न यहाँ के शिकार को सताया जाए, और कोई यहाँ की गिरी हुई चीज़ न उठाए सिवा उस शख़्स के जो (मालिक तक चीज़ को पहुँचाने के लिये) ऐलान करे और न यहाँ की हरी, घास काटी जाए। इस पर अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इज़्ख़र की इजाज़त दे दीजिए क्योंकि ये यहाँ के सुनारों और घरों की छतों पर डालने के काम आती है। तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा इज़्ख़र की इजाज़त है। (राजेअ : 1349)

तश्रीह : ये ह़दीष पहले भी कई बार गुज़र चुकी है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसमें इस बात की त़रफ़ इशारा किया है कि बावजूद ये कि वो हुर्मत वाला शहर था और वहाँ लड़ना अल्लाह ने किसी के लिये दुरुस्त नहीं किया, मगर चूँकि मक्का वालों ने दग़ा की और आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ जो अ़हद बाँधा था वो तोड़ दिया, बनू ख़ुज़ाआ के मुक़ाबले पर बनू बक्र की मदद की तो अल्लाह तआ़ला ने उस जुर्म की सज़ा में ऐसे हुर्मत वाले शहर में भी उनका मारना और क़त्ल करना अपने रसूल (ﷺ) के लिये दुरुस्त कर दिया। इससे ये निकला कि दग़ाबाज़ी बड़ा गुनाह है और उसकी सज़ा बहुत सख़्त है। बाब का यही मत़लब है।

ख़ातिमा

अल्हम्दुलिल्लाह षुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह कि आज जुमा का दिन है चाश्त का वक़्त है। ऐसे मुबारक दिन में पारा बारह की तस्वीद से फ़राग़त हासिल कर रहा हूँ, ये तवील पारा अज़ अव्वल ता आख़िर किताबुल जिहाद पर मुश्तमिल था, जिसमें बहुत से ज़िम्नी मसाइल भी आ गये। इस्लामी जिहाद के मा लहू व मा अलैहि को जिस तफ़सील से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी इस मुबारक किताब में क़ुर्आन मजीद व फ़रामीने सरकारे रिसालत मआब (ﷺ) की रोशनी पेश फ़र्माया है उससे ज़्यादा नामुम्किन था। साथ ही इस्लामी नज़रिया सियासत, इस्लामी तर्ज़े हुकूमत, ग़ैर–मुस्लिमों से मुसलमानों का बर्ताव, आदाबे जिहाद और बहुत से तमद्दुनी मसाईल पर इस क़दर तफ़सील से बयानात आ गये हैं कि बग़ौर मुतालआ करने वालों के दिल व दिमाग़ रोशन हो जाएँगे और आज के बदतरीन दौर में जबकि इंकारे मज़हब की बुनियाद पर तहज़ीब व तरक़्क़ी के राग अलापे जा रहे हैं। जिसके नतीजे बद में सारा आलम इंसानियत बदअम्नी व बद अख़्लाक़ी का शिकार होता चला जा रहा है। कम अज़्कम नौजवानाने इस्लाम के लिये जिनको अल्लाह ने सलीम फ़ित्रत अता की है इस मुबारक किताब के इस पारे का मुतालआ उनको बहुत कुछ बसीरत अता करेगा।

ख़ादिम ने तर्जुमा और तशरीहात में कोशिश की है कि अहादीष पाक के हर लफ़्ज़ को अहसन तौर पर बामुहावरा उर्दू में मुंतक़िल कर दिया जाए और इख़्तिसार व एजाज़ के साथ कोई गोशा तश्न-ए-तक्मील (अधूरा) न रहे। अब ये माहिरीने फ़न ही फ़ैसला करेंगे कि मैं इस पाकीज़ा मक़्सद में कहाँ तक कामयाबी हासिल कर सका हूँ। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि मुझसे किस क़दर लग़्ज़िशें हुई होंगी जिनका मैं पहले ही ए'तिराफ़ करता हूँ और उन उलमा-ए-किराम व फ़ुज़्ला–ए–इज़ाम का पेशगी शुक्रिया अदा करता हूँ जो मुझको किसी भी वाक़ई ग़लती पर ख़बर देकर मुझको नज़रे षानी का मौक़ा देंगे और अल इंसान मुरक्कब मिनल् ख़ताइ वन् निस्यानि के तहत मुझे मा'ज़ूर समझेंगे।

या अल्लाह! जिस तरह तूने मुझको यहाँ तक पहुँचाया और इन पारों को मुकम्मल कराया, बाक़ी अजज़ा को भी मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा और मेरे जितने भी क़द्रदान हैं जो इस मुबारक किताब की ख़िदमत व इशाअत व मुतालआ में हिस्सा ले रहे हैं उन सबको या अल्लाह! जज़ा-ए-ख़ैर अता कर और उसे उन सबके लिये क़यामत के दिन वसील-ए-नजात का सबब बना, आमीन (बिरह्मतिका या अरहमर् राहिमीन)

नाचीज़ ख़ादिम

मुहम्मद राज़ अस् सलफ़ी अद् देहलवी

मुक़ीम मस्जिद अहले हदीष 4121

अजमेरी गेट देहली, इण्डिया,

21 जमादिष् षानी 1391 हिजरी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

तेरहवां पारा

59. किताब बदउल ख़ल्क़

किताब इस बयान में कि मख़्लूक़ की पैदाइश क्यूंकर शुरू हुई?

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

١ – بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِ اللهِ تعَالَى :

﴿وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ، وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ﴾ [الروم : ٢٧]

قَالَ الرَّبِيْعُ بْنُ خُثَيْمٍ وَالْحَسَنُ : كُلٌّ عَلَيْهِ هَيِّنٌ. وَهَيْنٌ : مِثْل لَيْن ولَيِّن، ومَيْت ومَيِّت.وَضَيْقٌ وَضَيِّقٌ.

﴿ أَفَعَيِينَا ﴾: أَفَأَعْيَا عَلَيْنَا. حِيْنَ أَنْشَأَكُمْ وَأَنْشَأَ خَلْقَكُمْ.

﴿لُغُوب﴾: النَّصَبُ. ﴿أَطْوَارًا﴾: طَوْرًا كَذَا، وَطَوْرًا كَذَا. عَدَا طَوْرَه : إِي قَدْرَه.

बाब 1 :

और अल्लाह पाक ने (सूरह रूम में) जो फ़र्माया उसकी तफ़्सीर कि अल्लाह ही है जिसने मख़्लूक़ को पहली बार पैदा किया, और वही फिर दोबारा (मौत के बाद) ज़िन्दा करेगा और ये (दोबारा ज़िन्दा करना) तो उस पर और भी आसान है।

और रबीआ बिन ख़ुषैम और इमाम हसन बसरी ने कहा कि यूँ तो दोनों या'नी (पहली बार पैदा करना फिर दोबारा ज़िन्दा कर देना) उसके लिये बिलकुल आसान है। (लेकिन एक को या'नी पैदाईश के बाद दोबारा ज़िन्दा करने को ज़्यादा आसान ज़ाहिर करने के ए'तिबार से कहा) हयनुन और हय्यिनुन को लयनुन और लय्यिनुन, मयतुन और मय्यितुन , ज़यक़ुन और ज़य्यिक़ुन की तरह (मुशद्दद और मुख़फ़्फ़) दोनों तरह पढ़ना जाइज़ है और सूरह क़ाफ़ में जो लफ़्ज़ अफ़ऐना आया है, उसके मा'नी हैं कि क्या मुझे पहली बार पैदा करने ने आजिज़ कर दिया था। जब उस अल्लाह ने

तुमको पैदा कर दिया था और तुम्हारे माद्दे को पैदा किया और उसी सूरत में (अल्लाह तआला के इर्शाद में) लुग़ूब के मा'नी थकन के हैं और सूरह नूह में जो फ़र्माया अत्वारन उसके मा'नी ये हैं कि मुख़्तलिफ़ सूरतों में तुम्हें पैदा किया। कभी नुत्फ़ा, ऐसे ख़ून की फुटकी, फिर गोश्त फिर हड्डी पोस्त। अरब लोग बोला करते हैं अदा तौरहू या'नी फ़लाँ अपने मर्तबे से बढ़ गया। यहाँ अत्वार के मा'नी रुत्बे के हैं।

क़ुर्आन शरीफ़ में सूरह मरयम में लफ़्ज़ **व हुवा हय्यिन** आया है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस मुनासबत से इस लफ़्ज़ की तशरीह कर दी कि रबीआ और हसन के क़ौल में ये लफ़्ज़ आया है और सूरह क़ाफ़ और सूरह नूह के लफ़्ज़ों की तशरीह इसलिये कि उन आयतों में आसमान और ज़मीन और इंसान की पैदाइश का बयान है और ये बाब भी उसी बयान में है।

3190. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें जामेअ बिन शद्दाद ने, उन्हें सफ़्वान बिन मुहरिज़ ने और उनसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि बनी तमीम के कुछ लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने उनसे फ़र्माया कि ऐ बनी तमीम के लोगों! तुम्हें बशारत हो। वो कहने लगे कि बशारत जब आपने हमको दे दी है तो अब हमें कुछ माल भी दे दीजिए। उस पर आँहज़रत (ﷺ) के चेहरा मुबारक का रंग बदल गया, फिर आपकी ख़िदमत में यमन के लोग आए तो आपने उनसे भी फ़र्माया कि ऐ यमन के लोगों! बनू तमीम के लोगों ने तो ख़ुशख़बरी को कुबूल नहीं किया, अब तुम उसे कुबूल कर लो। उन्होंने अर्ज़ किया कि हमने कुबूल किया। फिर आप मख़्लूक़ और अर्शे इलाही की इब्तिदा के बारे में बातचीत करने लगे। इतने मे एक (नामा'लूम) शख़्स आया और कहा कि इमरान! तुम्हारी ऊँटनी भाग़ गई। (इमरान रज़ि. कहते हैं) काश! मैं आपकी मज्लिस से न उठता तो बेहतर होता। (दीगर मक़ाम : 3191, 4365, 4386, 7418)

٣١٩٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُحْرِزٍ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((جَاءَ نَفَرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((يَا بَنِي تَمِيمٍ أَبْشِرُوا)). قَالُوا: بَشَّرْتَنَا فَأَعْطِنَا. فَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ. فَجَاءَهُ أَهْلُ الْيَمَنِ، فَقَالَ: ((يَا أَهْلَ الْيَمَنِ اقْبَلُوا الْبُشْرَى إِذْ لَمْ يَقْبَلْهَا بَنُو تَمِيمٍ)). قَالُوا: قَبِلْنَا. فَأَخَذَ النَّبِيُّ ﷺ يُحَدِّثُ بَدْءَ الْخَلْقِ وَالْعَرْشِ. فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا عِمْرَانُ رَاحِلَتُكَ تَفَلَّتَتْ. لَيْتَنِي لَمْ أَقُمْ)). [أطرافه في: ٣١٩١، ٤٣٦٥، ٤٣٨٦، ٧٤١٨].

तशरीह : आँहज़रत (ﷺ) ने बनू तमीम को इस्लाम लाने की वजह से आख़िरत की भलाई की ख़ुशख़बरी दी थी। बनू तमीम के लोगों ने अपनी कम अक़्ली से ये समझा कि आप दुनिया का माल व दौलत देने वाले हैं उनकी इस सोच से आप (ﷺ) को दुख हुआ।

3191. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़ियाष़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे जामेअ बिन शद्दाद ने बयान किया, उनसे सफ़्वान बिन मुहरिज़ ने और उनसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ

٣١٩١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنَا جَامِعُ بْنُ شَدَّادٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُحْرِزٍ أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ

और अपने ऊँट को मैंने दरवाज़े पर ही बाँध दिया था। उसके बाद बनी तमीम के कुछ लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया ऐ बनू तमीम! ख़ुशख़बरी क़ुबूल करो। उन्होंने दोबारा कहा कि जब आपने हमें ख़ुशख़बरी दी है तो अब माल भी दीजिए। फिर यमन के चन्द लोग ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए। आप (ﷺ) ने उनसे भी यही फ़र्माया कि ख़ुशख़बरी क़ुबूल कर लो ऐ यमन वालों! बनू तमीम वालों ने तो नहीं क़ुबूल की। वो बोले या रसूलल्लाह (ﷺ)! ख़ुशख़बरी हमने क़ुबूल की। फिर वो कहने लगे हम इसलिये हाज़िर हुए हैं ताकि आपसे इस (आलम की पैदाइश) का हाल पूछें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला अज़ल से मौजूद था और उसके सिवा कोई चीज़ मौजूद न थी और उसका अर्श पानी पर था। लौहे महफ़ूज़ में उसने हर चीज़ को लिख लिया था। फिर अल्लाह तआला नें आसमान व ज़मीन को पैदा किया। (अभी ये बातें हो ही रही थीं कि) एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी कि इब्नुल हुसैन! तुम्हारी ऊँटनी भाग गई। मैं उसके पीछे दौड़ा। देखा तो वो सराब की आड़ में है (मेरे और उसके बीच में सराब हाइल है या'नी वो रेती जो धूप में पानी की तरह चमकती है) अल्लाह तआला की क़सम, मेरा दिल बहुत पछताया कि काश, मैंने उसे छोड़ दिया होता (और आँहज़रत ﷺ की हदीष़ सुनी होती)। (राजेअ : 3190)

حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَقَلْتُ نَاقَتِي بِالْبَابِ. فَأَتَاهُ نَاسٌ مِنْ بَنِي تَمِيْمٍ فَقَالَ: ((اقْبَلُوا الْبُشْرَى يَا بَنِي تَمِيْمٍ)). قَالُوا: قَدْ بَشَّرْتَنَا فَأَعْطِنَا (مَرَّتَيْنِ). ثُمَّ دَخَلَ عَلَيْهِ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ فَقَالَ: ((اقْبَلُوا الْبُشْرَى يَا أَهْلَ الْيَمَنِ إِذْ لَمْ يَقْبَلْهَا بَنُو تَمِيْمٍ)). قَالُوا : قَبِلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ. قَالُوا: جِئْنَاكَ نَسْأَلُكَ عَنْ هَذَا الأَمْرِ. قَالَ: ((كَانَ اللهُ وَلَمْ يَكُنْ شَيْءٌ غَيْرُهُ. وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ. وَكَتَبَ فِي الذِّكْرِ كُلَّ شَيْءٍ. وَخَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ)). فَنَادَى مُنَادٍ: ذَهَبَتْ نَاقَتُكَ يَا ابْنَ الْحُصَيْنِ. فَانْطَلَقْتُ فَإِذَا هِيَ يَقْطَعُ دُوْنَهَا السَّرَابُ. فَوَ اللهِ لَوَدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ تَرَكْتُهَا)).

[راجع: ٣١٩٠]

3192. और ईसा ने रक़्बा से रिवायत किया, उन्होंने क़ैस बिन मुस्लिम से, उन्होंने त़ारिक़ बिन शिहाब से, उन्होंने बयान किया कि मैंने उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, आपने कहा कि एक बार नबी करीम (ﷺ) ने मिम्बर पर खड़े होकर हमें वा'ज़ फ़र्माया और इब्तिदा-ए-ख़ल्क़ के बारे में हमें ख़बर दी। यहाँ तक कि जब जन्नत वाले अपनी मंज़िलों में दाख़िल हो जाएँगे और जहन्नम वाले अपने ठिकानों को पहुँच जाएँगे (वहाँ तक सारी तफ़्सील को आपने बयान फ़र्माया) जिसे इस हदीष़ को याद रखना था उसने याद रखा और जिसे भूलना था वो भूल गया।

٣١٩٢- وَرَوَى عِيْسَى عَنْ رَقَبَةَ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ قَالَ: ((سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَامَ فِيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَامًا، فَأَخْبَرَنَا عَنْ بَدْءِ الْخَلْقِ حَتَّى دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ مَنَازِلَهُمْ وَأَهْلُ النَّارِ مَنَازِلَهُمْ، حَفِظَ ذَلِكَ مَنْ حَفِظَهُ، وَنَسِيَهُ مَنْ نَسِيَهُ)).

तश्रीह: इस हदीष़ से मा'लूम होता है कि अल्लाह के सिवा सब चीज़ें हादिष़ और मख़्लूक़ हैं। अ़र्श, फ़र्श आसमान व ज़मीन सब में इतनी बात है कि अ़र्श उसका और सब चीज़ों से पहले वजूद रखता था। मगर हादिष़ और मख़्लूक़ वो भी है। ग़र्ज़ इस हदीष़ से हुकमा का मज़हब बातिल हुआ जो अल्लाह के सिवा मादे और इदराक या'नी अक़्ल और आसमान और ज़मीन सब चीज़ों को क़दीम मानते हैं और उन सूफ़िया का भी रद्द होता है जो रूहे इंसानी को मख़्लूक़ नहीं कहते। इस हदीष़ से मा'लूम हुआ कि अल्लाह ने सबसे पहले पानी को पैदा किया, फिर ज़मीन व आसमान वग़ैरह वजूद में आए।

٣١٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ عَنْ أَبِي أَحْمَدَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ((أُرَاهُ يَقُولُ اللهُ قَالَ: شَتَمَنِي ابْنُ آدَمَ)). وَمَا يَنْبَغِي لَهُ أَنْ يَشْتُمَنِي وَيُكَذِّبُنِي وَمَا يَنْبَغِي لَهُ. أَمَّا شَتْمُهُ فَقَوْلُهُ : إِنَّ لِي وَلَدًا. وَأَمَّا تَكْذِيبُهُ فَقَوْلُهُ: لَيْسَ يُعِيدُنِي كَمَا بَدَأَنِي)).

[طرفاه في: ٤٩٧٤، ٤٩٧٥].

3193. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, उनसे अबू अह़मद ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि इब्ने आदम ने मुझे गाली दी और उसके लिये मुनासिब न था कि वो मुझे गाली देता। उसने मुझे झुठलाया और उसके लिये ये भी मुनासिब न था। उसकी गाली ये है कि वो कहता है, मेरा बेटा है और उसका झुठलाना ये है कि वो कहता है कि जिस तरह अल्लाह ने मुझे पहली बार पैदा किया, दोबारा (मौत आने के बाद) वो मुझे ज़िन्दा नहीं कर सकेगा। (दीगर मक़ाम : 4974, 4975)

तश्रीह: मौत के बाद उख़्रवी ज़िन्दगी का तसव्वुर वो है जिस पर तमाम अंबिया किराम का इत्तिफ़ाक़ रहा है, तौरात, ज़बूर, इंजील, क़ुर्आन यहाँ तक कि इस मुल्क (हिन्दुस्तान) की मज़हबी किताबों में भी मरने के बाद एक नई ज़िन्दगी का तसव्वुर मौजूद है। उसके बावजूद कुफ़्फ़ार ने हमेशा इस अ़क़ीदे की तक्ज़ीब की और इसे नामुम्किन क़रार दिया है और इस पर बहुत से इस्तिह़लात पेश करते चले आ रहे हैं जो सब बातिले महज़ और तवह्हुमाते फ़ासिदा है। इस हदीष़ में इस अ़क़ीदे पर वज़ाहत की गई है कि आख़िरत की ज़िन्दगी का इंकार करना अल्लाह पाक को झुठलाना है। जिस अल्लाह ने इंसान को पहला वजूद अ़ता फ़र्माया, उसके लिये इंसान को दोबारा ज़िन्दा करना क्यूँ मुश्किल हो सकता है। ऐसा ही बातिल अ़क़ीदा ईसाइयों का है जो अल्लाह के लिये इब्नियत ष़ाबित करते हैं। हालाँकि ये शाने बारी तआ़ला के ऊपर बहुत ही बेहूदा इल्ज़ाम है, वो अल्लाह ऐसे इल्ज़ामात से बरी है और ऐसी बेहूदा बात मुँह से निकालना और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा क़रार देना बहुत ही बड़ा झूठ है। जो सरासर ग़लत बईद अज़्अ़क़्ल व बेहूदगी है। सच है **कुल हुवल्लाहु अह़द अल्लाहुस्समद लम यलिद वलम यूलद व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद** (इख़्लास : 1-4)

٣١٩٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُغِيْرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقُرَشِيُّ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَمَّا قَضَى اللهُ الْخَلْقَ كَتَبَ فِي كِتَابِهِ، فَهُوَ عِنْدَهُ فَوقَ الْعَرْشِ: إِنَّ

3194. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमेस मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रहमान क़ुरशी ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ को पैदा कर चुका तो अपनी किताब (लौहे महफ़ूज़) में, जो उसके पास अ़र्श पर मौजूद है, उसने लिखा कि मेरी रहमत मेरे ग़ुस्से पर ग़ालिब है।

(दीगर मक़ाम : 7404, 7412, 2413, 7553, 7554)

رَحْمَتِي غَلَبَتْ غَضَبِي)). [أطرافه في: ٧٤٠٤، ٧٤١٢، ٢٤٥٣، ٧٥٥٣، ٧٥٥٤].

तश्रीह : इस हदीष़ से भी इब्तिदा-ए-ख़ल्क़ पर रोशनी डालना मक़सूद है। सिफ़ाते इलाही के लिये जो अल्फ़ाज़ वारिद हो गये हैं उनकी हक़ीक़त अल्लाह के हवाले करना और ज़ाहिर पर बिला चूँ चरा ईमान लाना यही सलामती का रास्ता है। त़ीबी ने कहा कि रह़मत के ग़ालिब होने में इशारा है कि रह़मत के मुस्तह़िक़्क़ीन भी ता'दाद के लिहाज़ से ग़ज़ब के मुस्तह़िक़्क़ीन पर ग़ालिब रहेंगे, रह़मत ऐसे लोगों पर भी होगी जिनसे नेकियाँ का सुदूर ही नहीं हुआ। बरख़िलाफ़ उसके ग़ज़ब उन ही लोगों पर होगा जिनसे गुनाहों का सुदूर ष़ाबित होगा। **अल्लाहुम्मर्हम अलैना या अर्हमर्राहिमीन**

बाब 2 : सात ज़मीनों का बयान

٢- بَابُ مَا جَاءَ فِي سَبْعِ أَرَضِيْنَ، وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿اللهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الأَرْضِ مِثْلَهُنَّ، يَتَنَزَّلُ الأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، وَأَنَّ اللهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا﴾ [الطلاق: ١٢]. ﴿وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ﴾: السَّمَاءُ. ﴿سَمْكَهَا﴾: بِنَاءَهَا. كَانَ فِيْهَا حَيَوَانٌ ﴿الْحُبُكُ﴾: اسْتِوَاؤُهَا وَحُسْنُهَا. ﴿وَأَذِنَتْ﴾: سَمِعَتْ وَأَطَاعَتْ. ﴿وَأَلْقَتْ﴾: أَخْرَجَتْ مَا فِيْهَا مِنَ الْمَوْتَى. ﴿وَتَخَلَّتْ﴾ عَنْهُمْ. ﴿طَحَاهَا﴾ دَحَاهَا. ﴿السَّاهِرَةِ﴾: وَجْهُ الأَرْضِ، كَانَ فِيْهَا الْحَيَوَانُ نَوْمُهُمْ وَسَهَرُهُمْ.

और अल्लाह तआला ने सूरह त़लाक़ में फ़र्माया कि अल्लाह तआला ही वो ज़ात है जिसने पैदा किये सात आसमान और आसमान ही की त़रह ज़मीनें। अल्लाह तआला के अह़काम उनके दरम्यान उतरते हैं। ये इसलिये ताकि तुमको मा'लूम हो कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है और अल्लाह तआला ने हर चीज़ को अपने इल्म के ए'तिबार से घेर रखा है और सूरह त़ूर में वस्सक़फ़ल मर्फ़ूअ से मुराद आसमान है और सूरह वन् नाज़िआत में जो (रफ़अ समकहा) है समक के मा'नी इमारत की बुनियाद के हैं। और सूरह वज़् ज़ारियात में जो हुबुक का लफ़्ज़ आया है उसके मा'नी बराबर होना या'नी हमवार और ख़ूबसूरत होना। सूरह इज़स् समाउन् शक़्क़त में जो लफ़्ज़ अज़िनत है उसका मा'नी सुन लिया और मान लिया, और लफ़्ज़ अल्क़त का मा'नी जितने मुर्दे उसमें थे उनको निकालकर बाहर डाल दिया, ख़ाली हो गई। और सूरह वन् नाज़िआत में जो साहिर का लफ़्ज़ त़हाहा है उसके मा'नी बिछाया और सूरह वन् नाज़िआत में जो साहिरह का लफ़्ज़ है उसके मा'नी रूऐ ज़मीन के हैं, वहीं जानदार रहते और सोते और जागते हैं।

जिनके लिये ज़मीन गोया बिछौना है जो अल्लाह पाक ने ख़ुद बिछा दिया है। जिसके बारे में ये इर्शादे इलाही भी है **मिन्हा खलक़्नाकुम व फीहा नुईदुकुम व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा** (त़ाहा : 55) या'नी मैंने तुमको इसी ज़मीन से पैदा किया, और इसी में तुमको लौटा दूंगा और क़यामत के दिन क़ब्रों से तुमको निकालकर मैदाने क़यामत में ह़ाज़िर करूंगा।

नस़्से कुर्आनी से सात आसमानों और उन्ही की त़रह़ सात ज़मीनों का वजूद ष़ाबित हुआ है। पस जो उनका इंकार करे वो गोया कुर्आन का इंकारी है। अब सात आसमानों और सात ज़मीनों की बेह़द खोज में लगना इंसानी हुदूद इख़्तियारात से आगे तजावुज़ (उल्लंघन) करना है।

तू कारे ज़मीन रांको साख़्ती बआसमाँ नेज़ पर दाख़्ती

3195. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन उ़लय्या ने ख़बर दी, उन्हें अ़ली बिन मुबारक ने कहा, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिष़ ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनका एक-दूसरे साहब से एक ज़मीन के बारे में झगड़ा था। वो हज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनसे वाक़िया बयान किया। उन्होंने (जवाब में) फ़र्माया, अबू सलमा! किसी की ज़मीन (के नाहक़ लेने) से बचो, क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर एक बालिश्त के बराबर भी किसी ने (ज़मीन के बारे में) ज़ुल्म किया तो (क़यामत के दिन) सात ज़मीनों का तौक़ उसे पहनाया जाएगा। (राजेअ: 2453)

٣١٩٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْمُبَارَكِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - وَكَانَتْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أُنَاسٍ خُصُومَةٌ فِي أَرْضٍ، فَدَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ فَذَكَرَ لَهَا ذَلِكَ - فَقَالَتْ : يَا أَبَا سَلَمَةَ اجْتَنِبِ الأَرْضَ، فَإِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ ظَلَمَ قِيدَ شِبْرٍ طُوِّقَهُ مِنْ سَبْعِ أَرَضِيْنَ)). [راجع: ٢٤٥٣]

3196. हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मूसा बिन उ़क़्बा ने, उन्हें सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि जिसने किसी की ज़मीन में से कुछ नाहक़ ले लिया, तो क़यामत के दिन उसे सात ज़मीनों तक धंसाया जाएगा। (राजेअ: 2454)

٣١٩٦- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ عَنْ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَخَذَ شَيْئًا مِنَ الأَرْضِ بِغَيْرِ حَقِّهِ خُسِفَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى سَبْعِ أَرَضِيْنَ)). [راجع: ٢٤٥٤]

इन अहादीष़ से सात ज़मीनों का षुबूत हासिल हुआ। जिससे ज़ाहिर हुआ कि क़ुर्आन व हदीष़ की रोशनी में आसमानों और ज़मीनों का सात सात होना एक अटल हक़ीक़त है।

3197. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अय्यूब सुख़ितयानी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन सीरीन ने बयान किया, उनसे अबूबक्र के साहबज़ादे (अ़ब्दुर्रहमान) ने बयान किया और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़माना घूम फिरकर उसी हालत पर आ गया जैसे उस दिन था जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने आसमान और ज़मीन की पैदाइश की थी। साल बारह महीनों का होता है, चार महीने उसमें से हुर्मत के हैं। तीन तो पे दर पे (लगातार)। ज़ीक़अ़दा, ज़िल्हिज्ज और मुहर्रम और (चौथा) रजब मुज़र जो जमादिल उख़रा और शाबान के बीच में पड़ता है।

٣١٩٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيْرِيْنَ عَنِ ابْنِ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الزَّمَانُ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ اللهُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ. السَّنَةُ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا، مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ : ثَلاَثَةٌ مُتَوَالِيَاتٌ - ذُو الْقَعْدَةِ وَذُو الْحِجَّةِ وَالْمُحَرَّمُ - وَرَجَبُ مُضَرَ الَّذِي بَيْنَ جُمَادَى

(राजेअ़ : 97)

وَشَعْبَانَ)). [راجع: ٦٧]

तश्रीह : हुआ ये था कि अरबों की ये भी एक जहालत थी कि वो कभी मुहर्रम को सफ़र कर देते। कहीं अपने अग़राज़े फ़ासिदा के तहत ज़िल्हिज्ज को मुहर्रम बना देते। ग़र्ज़ कुछ अजीब ख़ब्त मचा रखा था। आँहज़रत (ﷺ) को अल्लाह पाक ने सहीह महीना बतला दिया। ज़माना के घूम आने से यही मतलब है कि जो असल महीना उस दिन से शुरू हुआ था, जिस दिन उसने ज़मीन आसमान पैदा किये थे। इसी हिसाब से अब सहीह महीना क़ायम हो गया। उससे क़मरी महीनों की फ़ज़ीलत भी षबित हुई, जिनसे माह व साल का हिसाब ऐन फ़ित्रत के मुताबिक़ है। जिसका दिन शाम को ख़त्म होता और सुबह से शुरू होता है। उसका महीना कभी तीस दिन का और कभी 29 दिन का होता है। उसका हिसाब हर मुल्क में रूइयते हिलाल पर मौक़ूफ़ है।

٣١٩٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ سَعِيدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ: أَنَّهُ خَاصَمَتْهُ أَرْوَى - فِي حَقٍّ زَعَمَتْ أَنَّهُ انْتَقَصَهُ لَهَا - إِلَى مَرْوَانَ، فَقَالَ سَعِيدٌ: أَنَا أَنْتَقِصُ مِنْ حَقِّهَا شَيْئًا؟ أَشْهَدُ لَسَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((مَنْ أَخَذَ شِبْرًا مِنَ الأَرْضِ ظُلْمًا فَإِنَّهُ يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ سَبْعِ أَرَضِينَ)). قَالَ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: لِي سَعِيدُ بْنُ زَيْدٍ: ((دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ . .)). [راجع: ٢٤٥٢]

3198. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) ने कि अर्वा बिन्ते अबी औस से उनका एक (ज़मीन के) बारे में झगड़ा हुआ। जिसके बारे में अरवा कहती थी कि सईद ने मेरी ज़मीन छीन ली। ये मुक़द्दमा ख़लीफ़ा मरवान के यहाँ फ़ैसला के लिये गया जो मदीना का हाकिम था। सईद (रज़ि.) ने कहा भला क्या मैं उनका हक़ दबा लूँगा, मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना है कि जिसने एक बालिश्त ज़मीन भी ज़ुल्म से किसी की दबा ली तो क़यामत के दिन सातों ज़मीनों का तौक़ उसकी गर्दन में डाला जाएगा। इब्ने अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, और उनसे सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद था (तब आपने ये हदीष बयान की थी)। (राजेअ़ : 2452)

٣- بَابُ فِي النُّجُومِ

बाब 3 : सितारों का बयान

وَقَالَ قَتَادَةُ ﴿وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ﴾ [الملك:٥]: خَلَقَ هَذِهِ النُّجُومَ لِثَلاَثٍ: جَعَلَهَا زِينَةً لِلسَّمَاءِ، وَرُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ، وَعَلاَمَاتٍ يُهْتَدَى بِهَا، فَمَنْ تَأَوَّلَ فِيهَا بِغَيْرِ ذَلِكَ أَخْطَأَ وَأَضَاعَ نَصِيبَهُ وَتَكَلَّفَ مَا لاَ عِلْمَ لَهُ بِهِ.

क़तादा ने (क़ुर्आन मजीद की इस आयत के बारे में), कि मैंने ज़ीनत दी आसमाने दुनिया को (तारों के) चराग़ों से कहा कि अल्लाह तआला ने उन सितारों को तीन फ़ायदे के लिये पैदा किया है। उन्हें आसमान की ज़ीनत बनाया, शयातीन पर मारने के लिये बनाया। और (रात की अंधेरियों मे) उन्हें सहीह रास्ते पर चलते रहने के लिये निशानात क़रार दिया। पस जिस शख़्स ने उनके सिवा दूसरी बातें कहीं, उसने ग़लती की, अपना हिस्सा तबाह

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿هَشِيمًا﴾ مُتَغَيِّرًا. وَالأَبُّ: مَا يَأْكُلُ الأَنْعَامُ. وَالأَنَامُ الْخَلْقُ. بَرْزَخٌ: حَاجِبٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿أَلْفَافًا﴾: مُلْتَفَّةً. وَالْغُلْبُ: الْمُلْتَفَّةُ. فِرَاشًا : مِهَادًا. كَقَوْلِهِ: ﴿وَلَكُمْ فِي الأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ﴾، ﴿نَكِدًا﴾ : قَلِيلاً.

किया (अपना वक़्त ज़ाया किया या अपना ईमान खोया) और जो बात ग़ैब की मा'लूम नहीं हो सकती उसको उसने मा'लूम करना चाहा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि सूरह कहफ़ में लफ़्ज़ हशीम है उसका मा'नी मवेशियों का चारा। ये लफ़्ज़ सूरह अ़बस में है और सूरह रहमान में लफ़्ज़ अल अनाम बामा'नी मख़्लूक़ है और लफ़्ज़ बरज़ख़ बमा'नी पर्दा है। और मुजाहिद ताबेई ने कहा कि लफ़्ज़ अल्फ़ाफ़ा बमा'नी मुतल्लफ़ा है। उसके मा'नी गहरे लिपटे हुए। अल ग़लब भी बमा'नी अल् मुतल्लफा और लफ़्ज़ फ़िराशा बमा'नी मिहादा है। जैसे अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया। वलकुम फ़िल् अरज़ि मुस्तक़र्र (मुस्तक़र्र भी बमा'नी मिहाद है) और सूरह अअ़राफ़ में जो लफ़्ज़ नकिदा है उसका मा'नी थोड़ा है।

तश्रीह : हज़रत क़तादा के क़ौल को अ़ब्द बिन हुमैद ने वस्ल किया है। उससे सितारा शनासों (ज्योतिषियों) का रद्द हुआ जो गुमान करते हैं कि सितारों से लोगों पर असर पड़ता है। सच फ़र्माया कि **कज़िबल्मुन्जिमून व रब्बिल कअ़बति** का'बा के रब की क़सम नजूमी झूठे हैं जो सितारों को जुम्ला ताष़ीरात का मालिक बताते हैं।

٤- بَابُ صِفَةِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ ﴿بِحُسْبَانٍ﴾

बाब 4 : सूरह रहमान की उस आयत की तफ़्सीर कि सूरज और चाँद दोनों हिसाब से चलते हैं

قَالَ مُجَاهِدٌ كَحُسْبَانِ الرَّحَى. وَقَالَ غَيْرُهُ : بِحِسَابٍ وَمَنَازِلَ لاَ يَعْدُوَانِهَا. حُسْبَانٌ: جَمَاعَةُ الْحِسَابِ، مِثْلُ شِهَابٍ وَشُهْبَانٍ. ضُحَاهَا: ضَوْؤُهَا. أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ: لاَ يَسْتُرُ ضَوْءُ أَحَدِهِمَا ضَوْءَ الآخَرِ، وَلاَ يَنْبَغِي لَهُمَا ذَلِكَ. سَابِقُ النَّهَارِ : يَتَطَالَبَانِ حَثِيثَانِ. نَسْلَخُ: نُخْرِجُ أَحَدَهُمَا مِنَ الآخَرِ، وَنُجْرِي كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا. وَاهِيَةٌ: وَهْيُهَا تَشَقُّقُهَا. أَرْجَائِهَا: مَا لَمْ يَنْشَقَّ مِنْهَا، فَهِيَ عَلَى حَافَتَيْهَا كَقَوْلِكَ: عَلَى أَرْجَاءِ الْبِئْرِ. أَغْطَشَ وَجَنَّ: أَظْلَمَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: كُوِّرَتْ تُكَوَّرُ حَتَّى يَذْهَبَ ضَوْؤُهَا. وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ:

मुजाहिद ने कहा या'नी चक्की की तरह घूमते हैं और दूसरे लोगों ने यूँ कहा या'नी हिसाब से मुक़र्ररह मंजिलों में फ़िरते हैं, ज़्यादा नहीं बढ़ सकते। लफ़्ज़े हुस्बान हिसाब की जमा है। जैसे लफ़्ज़ शिहाब की जमा शह्बान है। और सूरह वश् शम्स मे जो लफ़्ज़ ज़ुहाहा आया है। ज़ुहा रोशनी को कहते हैं और सूरह यासीन में जो ये आया है कि सूरज चाँद को नहीं पा सकता, या'नी एक की रोशनी दूसरे को मांद नहीं कर सकती न उनको ये बात सज़ावार है और उसी सूरत में जो अल्फ़ाज़ वल्लैलु साबिक़ुन्नहार हैं उनका मतलब ये कि दिन और रात हर एक-दूसरे के त़ालिब होकर लपके जा रहे हैं और उसी सूरह में लफ़्ज़ अन्सलख़ा का मा'नी ये है कि दिन को रात से और रात को दिन से मैं निकाल लेता हूं और सूरह हाक़्क़ा में जो वाहिया का लफ़्ज़ है। वहिया के मा'नी फट जाना, और उसी सूरत में जो ये है (वल मलकु अ़ला अरजाइहा) या'नी फ़रिश्ते आसमानों के किनारों पर होंगे जब तक वो फटेगा नहीं। जैसे कहते हैं वो कुँए के किनारे पर है और वन् नाज़िआ़त में जो लफ़्ज़ व अग़्तशा और सूरह

جَمَعَ مِنْ دَابَّةٍ. اتَّسَقَ : اسْتَوَى. بُرُوجًا: مَنَازِلَ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ. الْحَرُورُ بِالنَّهَارِ مَعَ الشَّمْسِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : الْحَرُورُ بِاللَّيْلِ، وَالسَّمُومُ بِالنَّهَارِ. يُقَالُ : يُولِجُ يُكَوِّرُ وَلِيجَةً، كُلُّ شَيْءٍ أَدْخَلْتَهُ فِي شَيْءٍ.

अन्आम में लफ़्ज़ जन्ना है उनके मा'नी अंधेरी के हैं। या'नी अंधियारी की और अंधियारी हुई और इमाम हसन बस़री ने कहा कि सूरह इज़श्शम्सु में कुव्विरत का जो लफ़्ज़ है उसका मा'नी ये है जब लपेट कर तारीक कर दिया जाएगा और सूरह अन् शक़्क़त में जो वमा वसक़ का लफ़्ज़ है उसके मा'नी जो इकट्ठा करे। उसी सूरह में इत्तसक़ का मा'नी सीधा हुआ और सूरह फ़ुर्क़ान में जो बुरूजा का लफ्ज़ है। बुरूज सूरज और चाँद की मंज़िलों को कहते हैं और सूरह फ़ातिर में जो हुरूर का लफ़्ज़ है। उसके मा'नी धूप की गर्मी के हैं। और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, हुरूर रात की गर्मी और समूम दिन की गर्मी। और सूरह फ़ातिर में जो यूलिजु का लफ़्ज़ है उसके मा'नी लपेटता है अंदर दाख़िल करता है। और सूरह तौबा में जो वलीजतु का लफ़्ज़ है उसके मा'नी अंदर घुसा हुआ या'नी राज़दार दोस्त।

٣١٩٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَبِي ذَرٍّ حِيْنَ غَرَبَتِ الشَّمْسُ : ((أَتَدْرِي أَيْنَ تَذْهَبُ؟)) قُلْتُ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: ((فَإِنَّهَا تَذْهَبُ حَتَّى تَسْجُدَ تَحْتَ الْعَرْشِ، فَتَسْتَأْذِنَ فَيُؤْذَنُ لَهَا، وَيُوشِكُ أَنْ تَسْجُدَ فَلاَ يُقْبَلُ مِنْهَا، وَتَسْتَأْذِنَ فَلاَ يُؤْذَنُ لَهَا: فَيُقَالُ لَهَا: ارْجِعِي مِنْ حَيْثُ جِئْتِ، فَتَطْلُعُ مِنْ مَغْرِبِهَا)). فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا، ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ﴾ [يس: ٣٨]. [أطرافه في: ٤٨٠٢، ٤٨٠٣، ٧٤٢٤، ٧٤٣٣].

3199. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके बाप यज़ीद बिन शुरैक ने और उनसे अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने, जब सूरह गुरूब हुआ तो उनसे पूछा कि तुमको मा'लूम है ये सूरज कहाँ जाता है? मैंने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह व उसके रसूल ही को इल्म है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये जाता है और अ़र्श के नीचे पहुँचकर पहले सज्दा करता है। फिर (दोबारा आने की) इजाज़त चाहता है और उसे इजाज़त दी जाती है और वो दिन भी क़रीब है, जब ये सज्दा करेगा तो उसका सज्दा क़ुबूल न होगा और इजाज़त चाहेगा लेकिन इजाज़त न मिलेगी बल्कि उससे कहा जाएगा कि जहाँ से आया था वहीं वापस चला जा। चुनाँचे उस दिन वो मग़रिब ही से निकलेगा। अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान वश्शम्सु तज्रि लिमुस्तक़र्रिल्लहा ज़ालिक तक़्दीरुल अ़ज़ीज़िल् अ़लीम (यासीन : 38) में इसी तरफ़ इशारा है।

(दीगर मक़ाम : 4802, 4803, 7424, 7433)

तश्रीह : इस ह़दीष़ में मुंकिरीने ह़दीष़ ने कई अंदेशे पैदा किये हैं, एक ये कि सूरज ज़मीन के नीचे जाता है न अर्श के नीचे। और दूसरी रिवायत में ये मज़्मून मौजूद है **तग़रुबु फ़ी औनिन् ह़मिअतिन्** दूसरे ये कि ज़मीन और आसमान गोल हैं तो सूरज हर वक़्त अ़र्श के नीचे है। फिर ख़ास़ ग़ुरूब के वक़्त जाना क्या मा'नी? तीसरे सूरज एक बेरूह़ और बे अ़क़्ल जिस्म है उसका सज्दा करना और उसको इजाज़त होने के क्या मा'नी? चौथे अकष़र ह़कीमों ने मुशाहिदे से मा'लूम किया है कि ज़मीन मुतह़र्रिक (गतिमान) और सूरज साकिन (स्थिर) है तो सूरज के चलने के क्या मा'नी?

पहले इश्काल का जवाब ये है कि जब ज़मीन करवी हुई तो हर त़रह़ से अर्श के नीचे हुई इसलिये ग़ुरूब के वक़्त ये कह सकते हैं कि सूरज ज़मीन के नीचे गया और अ़र्श के नीचे गया। दूसरे इश्काल का जवाब ये है कि बेशक हर नुक़्ते और हर मुक़ाम पर सूरज अ़र्श के नीचे है और वो हर वक़्त अपने मालिक के लिये सज्दा कर रहा है और उससे आगे बढ़ने की इजाज़त मांग रहा है लेकिन चूँकि हर मुल्क वालों का मग़्रिब और मश्रिक़ मुख़्तलिफ़ है इसलिये तुलूअ़ और ग़ुरूब के वक़्त को ख़ास़ किया। तीसरे इश्काल का जवाब ये है कि ये कहाँ से मा'लूम हुआ कि सूरज बेजान और बेअक़्ल है। बहुत सी आयात व अह़ादीष़ से सूरज और चाँद और ज़मीन और आसमान सबका अपने अपने दर्जा में स़ाह़िबे रूह़ होना ष़ाबित है। चौथे इश्काल का जवाब ये है कि बहुत से ह़कीम इस अम्र के भी क़ाइल हैं कि ज़मीन साकिन (स्थिर) है और सूरज उसके गिर्द घूमता है और इस बारे में त़रफ़ैन (पक्षकारों) के दलाइल मुतआरिज़ है और ज़ाहिर क़ुर्आन व ह़दीष़ से तो सूरज और चाँद और तारों ही की ह़रकत निकलती है। (मुख़्तस़र अज़ वह़ीदी)

आयते शरीफ़ा, **वश्शम्सु तज्रीलिमुस्तकर्रिल्लहा** (यासीन 38) में मुस्तक़र्र से मुराद बक़ा-ए-आलम का इंक़िताअ़ है या'नी **इला इन्क़िताइ बक़ाइ मुद्दतिल्आलमि व अम्मा कौलुहू मुस्तक़र्रूल्लहा तहतल्अर्शि फला युन्करू अंय्यकून लहा इस्तिक्राउन तहतल्अर्शि मिन हैषु ला नुदरिकुहू व ला नुशाहिदुहू व इन्नमा अख़बर अन ग़ैबिन फला नुकज़्ज़िबुहू व ला नकीफुहू लिअन्न इल्मना ला युहीतु बिही इन्तिहा कलामुत्तीबी**

3200. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन फ़िरोज़ दानाज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन सूरज और चाँद दोनों तारीक (बेनूर) हो जाएँगे।

٣٢٠٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ الْمُخْتَارِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ الدَّانَاجُ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ مُكَوَّرَانِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

3201. हमसे यह़्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने ख़बर दी, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके बाप क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र ने, और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया। वो नबी करीम (ﷺ) से नक़ल करते थे कि आपने फ़र्माया कि सूरज और चाँद मे किसी की मौत व ह़यात की वजह से ग्रहण नहीं लगता। बल्कि ये अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से एक निशानी है।

٣٢٠١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْقَاسِمِ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يُخْبِرُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لاَ يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلاَ لِحَيَاتِهِ، وَلَكِنَّهُمَا آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ

इसलिये जब तुम उनको देखो तो नमाज़ पढ़ा करो। (राजेअ : 1042)

الله، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَصَلُّوا)).
[راجع: ١٠٤٢]

3202. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अ़ताअ बिन यसार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सूरज और चाँद अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं किसी की मौत व ज़िन्दगी से उनमें ग्रहण नहीं लगता। इसलिये जब तुम ग्रहण देखो तो अल्लाह की याद में लग जाया करो।

٣٢٠٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللهِ، لاَ يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلاَ لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ ذَلِكَ فَاذْكُرُوا اللهَ)).

क्योंकि ये सारे इंक़िलाबात कुदरते इलाही के तहत होते रहते हैं पस ऐसे मौक़ों पर ख़ुसूसियत के साथ अल्लाह को याद करना और नमाज़ पढ़ना ईमान की तरक़्क़ी का ज़रिया है।

3203. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे उ़र्वा ने ख़बर दी, और उन्हें उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जिस दिन सूरज ग्रहण लगा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) (मुसल्ले पर) खड़े हुए। अल्लाहु अकबर कहा और बड़ी देर तक क़िरात करते रहे। फिर आप (ﷺ) ने रुकूअ़ किया, एक बहुत लम्बा रुकूअ़, फिर सर उठाकर समिअ़ल्लाहुलिमन ह़मिदा कहा और पहले की त़रह खड़े हो गये। इस क़याम में भी लम्बी क़िरअत की। अगरचे पहली किरअत से कम थी और फिर रुकूअ़ में चले गये और देर तक रुकूअ़ में रहे, अगरचे पहले रुकूअ़ से ये कम था। उसके बाद सज्दा किया, एक लम्बा सज्दा, दूसरी रकअ़त में भी आप (ﷺ) ने इसी त़रह किया और उसके बाद सलाम फेरा तो सूरज साफ़ हो चुका था। अब आप (ﷺ) ने स़हाबा को ख़ित़ाब किया और सूरज और चाँद ग्रहण के बारे में बतलाया कि ये अल्लाह तआला की निशानियों में से निशानी हैं और उनमे किसी की मौत व हयात की वजह से ग्रहण नहीं लगता, इसलिये जब तुम ग्रहण देखो तो फौरन नमाज़ की त़रफ़ लपक जाओ।

٣٢٠٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَوْمَ خَسَفَتِ الشَّمْسُ قَامَ فَكَبَّرَ وَقَرَأَ قِرَاءَةً طَوِيلَةً، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلاً، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، وَقَامَ كَمَا هُوَ فَقَرَأَ قِرَاءَةً طَوِيلَةً وَهِيَ أَدْنَى مِنَ الْقِرَاءَةِ الأُولَى، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلاً وَهِيَ أَدْنَى مِنَ الرَّكْعَةِ الأُولَى، ثُمَّ سَجَدَ سُجُودًا طَوِيلاً، ثُمَّ فَعَلَ فِي الرَّكْعَةِ الآخِرَةِ مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ سَلَّمَ وَقَدْ تَجَلَّتِ الشَّمْسُ، فَخَطَبَ النَّاسَ فَقَالَ فِي كُسُوفِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ: ((إِنَّهُمَا آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللهِ، لاَ يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلاَ لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَافْزَعُوا إِلَى

(राजेअ : 1044) الصَّلاَةِ)). [راجع: ١٠٤٤]

आज चाँद और सूरज के ग्रहण की जो वजह बयान की जाती हैं वो भी शाने क़ुदरत ही के मज़ाहिर हैं, लिहाज़ा ह़दीषे सह़ीह़ा और क़ुर्आन में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है।

3204. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया और उनसे अबू मसऊद अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सूरज और चाँद में किसी की मौत व ह़यात पर ग्रहण नहीं लगता। बल्कि ये अल्लाह की निशानियों में से निशानी हैं इसलिये जब तुम उनमें ग्रहण देखो तो नमाज़ पढ़ो। (राजेअ : 1941)

٣٢٠٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لاَ يَنْكَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلاَ لِحَيَاتِهِ، وَلَكِنَّهُمَا آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَصَلُّوا)). [راجع: ١٩٤١]

तश्रीह़ : इन तमाम अह़ादीष़ में किसी न किसी त़रह़ से चाँद और सूरज का ज़िक्र आया है इसलिये उनको यहाँ नक़ल किया गया है। उनके बारे में जो कुछ ज़ुबाने रिसालत मआब (ﷺ) से मन्क़ूल हुआ उससे आगे बढ़कर बोलना मुसलमान के लिये रवा नहीं है। आज के ह़ालात ने चाँद और सूरज के वजूद को मज़ीद वाज़ेह़ कर दिया है।

अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद में फ़र्माया कि **ला तस्जुदू लिश्शम्सि व ला लिल्क़मरि** (हामीम अस्सज्दा: 37) या'नी चाँद और सूरज को सज्दा न करो, ये तो अल्लाह पाक की पैदा की हुई मख़्लूक़ हैं। सज्दा करने के क़ाबिल सिर्फ़ अल्लाह है जिसने इन सबको वजूद बख़्शा।

चाँद पर जाने के दावेदार ने जो कुछ बतलाया है उससे भी क़ुर्आन पाक की तस्दीक़ होती है कि चाँद भी दीगर मख़्लूक़ात की त़रह़ एक मख़्लूक़ है वो कोई देवी देवता या मा फ़ौक़ल मख़्लूक़ कोई और चीज़ नहीं है।

बाब 5 : अल्लाह पाक का सूरह अअ़राफ़ में ये इर्शाद कि, वो अल्लाह तआला ही है जो अपनी रह़मत (बारिश) से पहले ख़ुशख़बरी देने वाली हवाओं को भेजता है

٥- بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ﴾ [الأعراف: ٥٧]

सूरह बनी इस्राईल में क़ासिफ़ा का जो लफ़्ज़ है उसके मा'नी सख़्त हवा जो हर चीज़ को रौंद डाले। सूरह ह़ज्ज में जो लफ़्ज़ लवाक़ेह़ है उसके मा'नी मलाक़ेह़ जो मल्क़ेह़ा की जमा है या'नी ह़ामिला कर देने वाली। सूरह बक़र: में जो इअ़सार का लफ़्ज़ है तो इअ़सार बगोले को कहते हैं जो ज़मीन से आसमान तक एक सतून की त़रह है। उसमें आग होती है। सूरह आले इमरान में जो स़िर्रा का लफ़्ज़ है उसके मा'नी पाला (सर्दी) नुशूरा के मा'नी जुदा जुदा।

قَاصِفًا: تَقْصِفُ كُلَّ شَيْءٍ. لَوَاقِحَ: مَلاَقِحَ مُلْقِحَةً. إِعْصَارٌ: رِيحٌ عَاصِفٌ تَهُبُّ مِنَ الأَرْضِ إِلَى السَّمَاءِ كَعَمُودٍ فِيهِ نَارٌ. صِرٌّ: بَرْدٌ. نُشُرًا: مُتَفَرِّقَةً.

स़ह़ीह़ ये है कि **लवाक़ेह़ लाक़िह़तुन** की जमा या'नी वो हवाएँ जो पानी को उठाए चलती हैं। आयते करीमा **व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रियाह बुश्रन बैन यदैय रह़मतिही** (अल आराफ़ : 57) में लफ़्ज़ बुशरा की जगह नुशरा पढ़ा है या'नी हर त़रफ़ से

जुदा चलने वाली हवाएँ लवाक़िह़ लाक़ितुन की जमा है या'नी वो हवाएँ जो पानी को उठाए हुए चलती हैं गोया ह़ामला हैं। मौलाना जमालुद्दीन अफ़ग़ानी कहते हैं कि ह़ामला करने वाली हवा का मा'नी उसूले नबातात की रू से ठीक है क्योंकि इल्मे नबातात में ष़ाबित हुआ है कि हवा नर पेड़ का माद्दा उड़ाकर मादा पेड़ पर ले जाती है। इस वजह से पेड़ ख़ूब फलता फूलता है गोया हवा दरख़्तों को ह़ामला करती है। तह़क़ीक़ात से भी यही मुशाहिदा हुआ है।

3205. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बादे स़बा (मश्रिक़ी हवा) के ज़रिया मेरी मदद की गई और क़ौमे आ़द, बादे दबूर (मग़रिबी हवा) से हलाक कर दी गई थी। (राजेअ़ : 1035)

٣٢٠٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نُصِرْتُ بِالصَّبَا أُهْلِكَتْ عَادٌ بِالدَّبُورِ))

[راجع: ١٠٣٥]

3206. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अ़ता ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) बादल का कोई ऐसा टुकड़ा देखते जिससे बारिश की उम्मीद होती तो आप कभी आगे आते, कभी पीछे जाते, कभी घर के अंदर तशरीफ़ लाते, कभी बाहर आ जाते और चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल जाता लेकिन जब बारिश होने लगती तो फिर ये क़ैफ़ियत बाक़ी न रहती। एक बार ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने उसके बारे में आपसे पूछा। तो आपने फ़र्माया। मैं नहीं जानता मुम्किन है ये बादल भी वैसा ही हो जिसके बारे में क़ौमे आ़द ने कहा था, जब उन्होंने बादल को अपनी वादियों की त़रफ़ आते देखा था। आख़िर आयत तक (कि उनके लिये रह़मत का बादल आया है, हालाँकि वो अ़ज़ाब का बादल था)। (दीगर मक़ाम : 4829)

٣٢٠٦- حَدَّثَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا رَأَى مَخِيْلَةً فِي السَّمَاءِ أَقْبَلَ وَأَدْبَرَ وَدَخَلَ وَخَرَجَ وَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ، فَإِذَا أَمْطَرَتِ السَّمَاءُ سُرِّيَ عَنْهُ، فَعَرَّفَتْهُ عَائِشَةُ ذَلِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا أَدْرِي! كَمَا قَالَ قَوْمٌ: ﴿فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ﴾)) الآية [الأحقاف : ٢٤].

[طرفه في : ٤٨٢٩].

तश्रीह: हवा भी अल्लाह की एक मख़्लूक़ है जो मुख़्तलिफ़ ताष़ीर रखती है और मख़्लूक़ात की ज़िन्दगी में जिसका क़ुदरत ने बड़ा दख़ल रखा है। क़ौमे आ़द पर अल्लाह ने क़ह़त का अ़ज़ाब नाज़िल किया। उन्होंने अपने कुछ लोगों को मक्का शरीफ़ भेजा कि वहाँ जाकर बारिश की दुआ़ करें। मगर वहाँ वो लोग ऐ़श व इ़शरत में पड़कर दुआ़ करना भूल गये इधर क़ौम की बस्तियों पर बादल छाये। क़ौम ने समझा कि ये हमारे उन आदमियों की दुआ़ओं का अष़र है। मगर उस बादल ने अ़ज़ाब की शक्ल इख़्तियार करके उस क़ौम को तबाह कर दिया।

बाब 6 : फ़रिश्तों का बयान

٦- بَابُ ذِكْرِ الْمَلاَئِكَةِ

मिन जुम्ला उसूले ईमान में एक ये भी है कि अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान लाए। वो अल्लाह के मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे हैं। उनके जिस्म लत़ीफ़ हैं वो हर शक्ल में जाहिर हो सकते हैं। वो सब नेक और अल्लाह के ताबेदार बन्दे हैं। फ़रिश्तों का इंकार करना कुफ़्र है। उनके वजूद पर तमाम कुतुबे आसमानी व अंबिया-ए-किराम का इत्तिफ़ाक़ है।

क़ाल जुम्हुरू अहलिल्कलामि मिनल्मुस्लिमीन अल्मलाइकतु अज्सामुन लत़ीफतुन उअ़त़ीयत क़ुदरतुन अलत्तशक्कुलि बिअश्कालिन मुख़्तलिफतिन व मसाकिनुहा अस्समावातव अब्त़लमन क़ाल इन्नहल्कवाकिबु औ इन्नहल्अन्फसुल्ख़ैरतुल्लती फारकत अज्सादहा व ग़ैरहू ज़ालिक मिनल्अक़्वालिल्लती ला यूजदु

फ़िल्अदिल्लतिस्सम्इय्यति शैउम्मिन्हा (फ़त्हुल बारी)

या'नी जुम्ला अहले कलाम मुस्लिमीन का ये क़ौल है कि फ़रिश्ते अज्सामे लतीफ़ा हैं जिनको ये क़ुदरत दी गई है कि वो मुख़्तलिफ़ शक्लें इख़्तियार करने की क़ुदरत रखते हैं। (जो उनको अल्लाह की त़रफ़ से मिली हुई है) उनका मस्कन (ठिकाना) आसमान है और जिन लोगों ने कहा कि फ़रिश्तों से तारे मुराद हैं या वो अच्छी रूहें जो अपने जिस्मों से जुदा हो चुकी हैं, मुराद हैं। ये सारे क़ौल बातिल हैं जिनकी दलील किताब व सुन्नत से नहीं है।

ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम को यहूदी फ़रिश्तों में से अपना दुश्मन समझते हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने सूरह वस्‌स़ाफ़्फ़ात में बयान किया कि **लनहनुस्स़ाफ़्फ़ून** में मुराद मलायका हैं।

तश्रीह : यहूदी अपनी जिहालत से जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) को अपना दुश्मन समझते और कहते थे कि हमारे राज़ की बातें वही आँह़ज़रत (ﷺ) से कह जाता है या ये कि ये हमेशा अ़ज़ाब ही लेकर उतरता है। उस अष़र को ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाबुल हुज्रा में वस्ल किया है। **लनहनुस्स़ाफ़्फ़ून** फ़रिश्तों की ज़ुबान से नक़ल किया कि हम क़तार बाँधने वाले अल्लाह की पाकी बयान करने वाले हैं। इस अष़र को त़बरानी ने वस्ल किया है।

3207. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने (दूसरी सनद) और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात़ ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अ़रूबा और हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा हमसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे मालिक बिन स़अ़सअ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। मैं एक दफ़ा बैतुल्लाह के क़रीब नींद और बेदारी के बीच की ह़ालत में था। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने दो आदमियों के दरम्यान लेटे हुए एक तीसरे आदमी का ज़िक्र फ़र्माया। उसके बाद मेरे पास सोने का एक त़श्त लाया गया, जो ह़िक्मत और ईमान से भर दिया गया। उसके बाद मेरे पास एक सवारी लाई गई। सफ़ेद, ख़च्चर से छोटी और गधे से बड़ी या'नी बुर्राक़, मैं उस पर सवार होकर जिब्राईल (अलै.) के साथ चला। जब हम आसमाने दुनिया पर पहुँचे तो पूछा गया कि ये कौन स़ाहब हैं ? उन्होंने कहा कि जिब्राईल। पूछा गया कि आपके साथ और कौन स़ाहब आए हैं? उन्होंने बताया कि मुहम्मद (ﷺ) पूछा गया कि क्या उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? उन्होंने कहा

٣٢٠٧- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ. وَقَالَ لِيْ خَلِيْفَةُ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ وَهِشَامٌ قَالاَ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ صَعْصَعَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَيْنَا أَنَا عِنْدَ الْبَيْتِ بَيْنَ النَّائِمِ وَالْيَقْظَانِ - وَذَكَرَ يَعْنِي رَجُلاً بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ - فَأُتِيْتُ بِطِسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مَلِيءَ حِكْمَةً وَإِيْمَانًا. فَشُقَّ مِنَ النَّحرِ إِلَى مَرَاقِ الْبَطْنِ، ثُمَّ غُسِلَ الْبَطْنُ بِمَاءِ زَمْزَمَ، ثُمَّ مُلِيءُ حِكْمَةً وَإِيْمَانًا. وَأُتِيْتُ بِدَابَّةٍ أَبْيَضَ دُوْنَ الْبَغْلِ وَفَوقَ الْحِمَارِ الْبُرَاقِ، فَانْطَلَقْتُ مَعَ جِبْرِيْلَ، حَتَّى أَتَيْنَا السَّمَاءَ الدُّنْيَا، قِيْلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيْلُ. قِيْلَ : مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيْلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ. قَالَ: نَعَمْ. قِيْلَ: مَرْحَبًا بِهِ؛ وَلَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَاءَ.

कि हाँ उस पर जवाब आया कि अच्छी कुशादा जगह आने वाले क्या ही मुबारक हैं, फिर मैं आदम (अलैहिस्सलाम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़र्माया, आओ प्यारे बेटे और अच्छे नबी। उसके बाद हम दूसरे आसमान पर पहुँचे यहाँ भी वही सवाल हुआ। कौन स़ाहब हैं ? कहा कि जिब्रईल (अलै.), सवाल हुआ, आपके साथ कोई और स़ाहब भी आए हैं? कहा कि मुहम्मद (ﷺ), सवाल हुआ, उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? कहा कि हाँ। अब इधर से जवाब आया, अच्छी कुशादा जगह आए हैं, आने वाले क्या ही मुबारक हैं। उसके बाद में ईसा और यह्या (अलैहिस्सलाम) से मिला, उन हज़रात ने भी ख़ुश आमदीद, मरहबा कहा अपने भाई और नबी को। फिर हम तीसरे आसमान पर आए यहाँ भी सवाल हुआ कौन स़ाहब हैं? जवाब मिला जिब्रईल, सवाल हुआ, आपके साथ भी कोई है? कहा कि मुहम्मद (ﷺ), सवाल हुआ, उन्हे बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? उन्होंने बताया कि हाँ, अब आवाज़ आई अच्छी कुशादा जगह आए आने वाले क्या ही स़ालेह हैं, यहाँ यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) से मैं मिला और उन्हें सलाम किया, उन्होंने फ़र्माया, अच्छी कुशादा जगह आए हो मेरे भाई और नबी, यहाँ से हम चौथे आसमान पर आए उस पर भी यही सवाल हुआ, कौन साहब, जवाब दिया कि जिब्रईल, सवाल हुआ, आपके साथ और कौन स़ाहब हैं ? कहा कि मुहम्मद (ﷺ) हैं। पूछा क्या उन्हें लाने के लिये आपको भेजा गया था, जवाब दिया कि हाँ, फिर आवाज़ आई, अच्छी कुशादा जगह आए क्या ही अच्छे आने वाले हैं। यहाँ मैं इदरीस (अलैहिस्सलाम) से मिला और सलाम किया, उन्होंने फ़र्माया, मरहबा, भाई और नबी। यहाँ से हम पाँचवे आसमान पर आए। यहाँ भी सवाल हुआ कि कौन स़ाहब? जवाब दिया कि जिब्रईल, पूछा गया और आपके साथ और कौन स़ाहब आए हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ), पूछा गया, उन्हें बुलाने के लिये भेजा गया था? कहा कि हाँ, आवाज़ आई, अच्छी कुशादा जगह आए हैं। आने वाले क्या ही अच्छे हैं। यहाँ हम हारून (अलैहिस्सलाम) से मिले और मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़र्माया, मुबारक, मेरे भाई और नबी, तुम अच्छी

فَأَتَيْتُ عَلَى آدَمَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنِ ابْنٍ وَنَبِيٍّ. فَأَتَيْنَا السَّمَاءَ الثَّانِيَةَ. قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ. قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، وَلَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْتُ عَلَى عِيسَى وَيَحْيَى، فَقَالاَ: مَرْحَبًا بِكَ: مِنْ أَخٍ وَنَبِيٍّ. فَأَتَيْنَا السَّمَاءَ الثَّالِثَةَ. قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قِيلَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، وَلَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْتُ يُوسُفَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخٍ وَنَبِيٍّ. فَأَتَيْنَا السَّمَاءَ الرَّابِعَةَ، قِيلَ مَنْ هَذَا؟ قِيلَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيلَ: مُحَمَّدٌ ﷺ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، وَلَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْتُ عَلَى إِدْرِيسَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخٍ وَنَبِيٍّ. فَأَتَيْنَا السَّمَاءَ الْخَامِسَةَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قِيلَ جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قِيلَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ وَلَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْنَا عَلَى هَارُونَ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخٍ وَنَبِيٍّ. فَأَتَيْنَا عَلَى السَّمَاءِ السَّادِسَةِ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قِيلَ جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيلَ: مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَقَدْ

कुशादा जगह आए, यहाँ से हम छठे आसमान पर आए, यहाँ भी सवाल हुआ, कौन साहब? जवाब दिया कि जिब्राईल, पूछा गया, आपके साथ और कोई है? कहा कि, हाँ मुहम्मद (ﷺ) हैं, पूछा गया, क्या उन्हें बुलाया गया था कहा हाँ, कहा अच्छी कुशादा जगह आए हैं, अच्छे आने वाले हैं। यहाँ मैं मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिला और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़र्माया, मेरे भाई और नबी अच्छी कुशादा जगह आए, जब मैं वहाँ से आगे बढ़ने लगा तो वो रोने लगे किसी ने पूछा, बुज़ुर्गवार आप क्यूँ रो रहे हैं? उन्होंने फ़र्माया, कि ऐ अल्लाह! ये नौजवान जिसे मेरे बाद नुबुव्वत दी गई, उसकी उम्मत में से जन्नत में दाख़िल होने वाले, मेरी उम्मत के जन्नत में दाख़िल होने वाले लोगों से ज़्यादा होंगे। उसके बाद हम सातवें आसमान पर आए, यहाँ भी सवाल हुआ कि कौन साहब हैं? जवाब दिया कि जिब्राईल, सवाल हुआ कि कोई साहब आपके साथ भी हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ), पूछा, उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? मरहबा, अच्छे आने वाले। यहाँ मैं इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से मिला और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़र्माया, मेरे बेटे और नबी, मुबारक, अच्छी कुशादा जगह आए हो, उसके बाद मुझे बैतुल मअमूर दिखाया गया। मैंने जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) से उसके बारे में पूछा, तो उन्होंने बतलाया कि ये बैतुल मअमूर है। उसमें सत्तर हज़ार फ़रिश्ते रोज़ाना नमाज़ पढ़ते हैं और एक बार जो पढ़कर उससे निकल जाता है तो फिर कभी दाख़िल नहीं होता। और मुझे सिदरतुल मुन्तहा भी दिखाया गया, उसके फल ऐसे थे जैसे मक़ामे हिज्र के मटके होते हैं और पत्ते ऐसे थे जैसे हाथी के कान, उसकी जड़ से चार नहरें निकलती थीं, दो नहरें तो बातिनी थीं और दो ज़ाहिरी, मैंने जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) से पूछा तो उन्होंने बताया कि जो दो बातिनी नहरें हैं वो तो जन्नत में हैं और दो ज़ाहिरी नहरें दुनिया में नील और फ़रात हैं। उसके बाद मुझ पर पचास वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ की गई। मैं जब वापस हुआ और मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिला तो उन्होंने पूछा कि क्या करके आए हो? मैंने अर्ज़ किया कि पचास नमाज़ें मुझ पर फ़र्ज़ की गई हैं। उन्होंने कहा कि इंसानों को मैं तुमसे

أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ مَرْحَبًا بِهِ، وَلَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْتُ عَلَى مُوسَى فَسَلَّمْتُ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخٍ وَنَبِيٍّ. فَلَمَّا جَاوَزْتُ بَكَى، فَقِيلَ: مَا أَبْكَاكَ؟ قَالَ: يَا رَبِّ، هَذَا الْغُلاَمُ الَّذِي بُعِثَ بَعْدِي يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِهِ أَفْضَلُ مِمَّا يَدْخُلُ مِنْ أُمَّتِي. فَأَتَيْنَا السَّمَاءَ السَّابِعَةَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قِيلَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيلَ: مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ مَرْحَبًا بِهِ وَلَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْتُ عَلَى إِبْرَاهِيمَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنِ ابْنٍ وَنَبِيٍّ. فَرُفِعَ لِي الْبَيْتُ الْمَعْمُورُ، فَسَأَلْتُ جِبْرِيلَ فَقَالَ: هَذَا بَيْتُ الْمَعْمُورِ، يُصَلِّي فِيهِ كُلَّ يَوْمٍ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ، إِذَا خَرَجُوا لَمْ يَعُودُوا إِلَيْهِ آخِرَ مَا عَلَيْهِمْ. وَرُفِعَتْ لِيْ سِدْرَةُ الْمُنْتَهَى، فَإِذَا نَبِقُهَا كَأَنَّهُ قِلاَلُ هَجَرَ، وَوَرَقُهَا كَأَنَّهُ آذَانُ الْفُيُولِ، فِي أَصْلِهَا أَرْبَعَةُ أَنْهَارٍ : نَهْرَانِ بَاطِنَانِ وَنَهْرَانِ ظَاهِرَانِ. فَسَأَلْتُ جِبْرِيلَ فَقَالَ: أَمَّا الْبَاطِنَانِ فَفِي الْجَنَّةِ، وَأَمَّا الظَّاهِرَانِ: النِّيلُ وَالْفُرَاتُ. ثُمَّ فُرِضَتْ عَلَيَّ خَمْسُونَ صَلاَةً، فَأَقْبَلْتُ حَتَّى جِئْتُ مُوسَى فَقَالَ: مَا صَنَعْتَ؟ قُلْتُ: فُرِضَتْ عَلَيَّ خَمْسُونَ صَلاَةً. قَالَ أَنَا أَعْلَمُ بِالنَّاسِ مِنْكَ، عَالَجْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَشَدَّ الْمُعَالَجَةِ، وَإِنَّ أُمَّتَكَ لاَ تُطِيقُ، فَارْجِعْ

إِلَى رَبِّكَ فَسَلْهُ. فَرَجَعْتُ فَسَأَلْتُهُ، فَجَعَلَهَا أَرْبَعِينَ، ثُمَّ مِثْلَهُ ثُمَّ ثَلاَثِينَ، ثُمَّ مِثْلَهُ فَجَعَلَ عِشْرِينَ، ثُمَّ مِثْلَهُ فَجَعَلَ عَشْرًا. فَأَتَيْتُ مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ فَجَعَلَهَا خَمْسًا: فَأَتَيْتُ مُوسَى فَقَالَ: مَا صَنَعْتَ؟ قُلْتُ؟: جَعَلَهَا خَمْسًا. فَقَالَ مِثْلَهُ : قُلْتُ : فَسَلَّمْتُ. فَنُودِيَ: إِنِّي قَدْ أَمْضَيْتُ فَرِيضَتِي، وَخَفَّفْتُ عَنْ عِبَادِي، وَأَجْزِي الْحَسَنَةَ عَشْرًا)). وَقَالَ هَمَّامُ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((فِي الْبَيْتِ الْمَعْمُورِ)).

[أطرافه في: ٣٣٩٣، ٣٤٣٠، ٣٨٨٧].

ज़्यादा जानता हूँ, बनी इस्राईल का मुझे बड़ा तजुर्बा हो चुका है। तुम्हारी उम्मत भी इतनी नमाज़ों की ताक़त नहीं रखती, इसलिये अपने रब की बारगाह में दोबारा हाज़िरी दो। और कुछ कमी की दरख़्वास्त करो। मैं वापस हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ें चालीस वक़्त की कर दीं। फिर भी मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी बात (या'नी तख़्फ़ीफ़ कराने) पर इसरार करते रहे। इस बार तीस वक़्त की रह गईं। फिर उन्होंने वही फ़र्माया तो अब बीस वक़्त की अल्लाह तआ़ला ने कर दीं। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने वही फ़र्माया और इस बार बारगो रब्बुल इ़ज़्ज़त में मेरी दरख़्वास्त की पेशी पर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दस कर दिया। मैं जब मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास आया तो अब भी उन्होंने कम कराने के लिये अपना इस्रार जारी रखा। और इस बार अल्लाह तआ़ला ने पाँच वक़्त की कर दीं। अब मैं मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिला, तो उन्होंने फिर दरयाफ़्त किया कि क्या हुआ? मैंने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने पाँच कर दी हैं। इस बार भी उन्होंने कम कराने का इस्रार किया। मैंने कहा कि अब तो मैं अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द कर चुका। फिर आवाज़ आई। मैंने अपना फ़रीज़ा (पाँच नमाज़ों का) जारी कर दिया। अपने बन्दों पर तख़्फ़ीफ़ कर चुका और मैं एक नेकी का बदला दस गुना देता हूँ। और हम्माम ने कहा, उनसे क़तादा ने, उनसे हसन ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बैतुल मअ़मूर के बारे में अलग रिवायत की है। (दीगर मक़ाम : 3393, 3430, 3887)

तश्रीह : ये तवील ह़दीष़ मेअ़राज के वाक़िये से मुता'ल्लिक़ है। इमाम बुख़ारी (रह.) उसको यहाँ इसलिये लाए कि इसमें फ़रिश्तों का ज़िक्र है और ये फ़रिश्ते बेशुमार हैं। दूसरी ह़दीष़ में है कि आसमान में बालिश्त भर जगह ख़ाली नहीं जहाँ एक फ़रिश्ता अल्लाह के लिये सज्दा न कर रहा हो।

मेअ़राज का आग़ाज़ ह़तीम से हुआ। जहाँ नबी अकरम (ﷺ) ह़ज़रत ह़म्ज़ा (रज़ि.) और ह़ज़रत जा'फ़र (रज़ि.) के दरम्यान सोये हुए थे। वहाँ से आपका ये मुबारक सफ़र बुर्राक़ के ज़रिये शुरू हुआ, जो बर्क़ बमा'नी बिजली से मुश्तक़ है। मेअ़राज बरह़क़ है उसका मुंकिर गुमराह और ख़ाती (ख़ताकार) है। तफ़्सील के लिये कुतुबे शुरूह़ मुलाह़िज़ा हों।

क़ालल्क़ाज़ी अयाज़ इख़्तलफ़ू फ़िल्इस्राइ इलस्समावाति फ़क़ील अन्नहू फ़िल्मनामि वल्ह़क़्क़ुल्लज़ी अ़लैहिल्जुम्हूरू अन्नहू अस्रा बिजसदिही फइन क़ील बैनन्नाइमि वल्यक़्ज़ान यदुल्लु अ़ला अन्नहू रुया नौमिन कुल्ना ला हुज्जत फीहि इज़ क़द यकूनु ज़ालिक हाल अव्वलि वुसूलिल्मुल्कि इलैहि व लैस फीहि यदुल्लु अ़ला कौनिही फइन्नमा जीअल्किस्सतु कुल्लुहा व क़ालल्हाफ़िज़ु अब्दुल्ह़क़ फिल्जम्इ बैनस्सह़ीहैन व मा रवा शरीक अ़न अनसिन अन्नहू कान नाइमन फहुव ज़ियादतुन मज्हूलतुन व क़द रवल्हुफ़्फ़ाज़ुल्मुत्तक़ून वल्अइम्मतुल्मह़ूरून

कइब्नि शिहाब व ष़ाबितुल्बनाइ व क़तादा अन अनस व लम याति अहदुम्मिन्हुम बिहा व शरीकुन बिल्हाफ़िज़ अन्हु अहलुल्हदीष़ि (फ़त्हुल बारी) इस त़वील इबारत का ख़ुलास़ा यही है कि मेअ़राज जिस्मानी ही ह़क़ है।

आप (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी पर ह़ज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का रोना इस ख़ुशी की बिना पर था कि अल्लाह तआ़ला ने उस नौजवान को मुख़्तसर उम्र देने के बावजूद अपनी नेअ़मतों से किस क़दर नवाज़ा और कैसे कैसे दरजाते आलिया अ़ता फ़र्माए हैं। ये रोना फ़रह़त से था न कि ह़सद और बुग़्ज़ से **फइन्न ज़ालिक ला यलीक़ु बिस़िफातिल्अम्बियाइ वल्अख़्लाक़िल्अजिल्लति मिन औलियाइ क़ालहुल्ख़त्ताबी**

3208. हमसे ह़सन बिन रबीआ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह़्वस़ ने, उनसे आ'मश ने, उनसे ज़ैद बिन वहब ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हमसे स़ादिक़ुल मस़्दूक़ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बयान किया और फ़र्माया कि तुम्हारी पैदाइश की तैयारी तुम्हारी माँ के पेट में चालीस दिन तक (नुत़्फ़ा की सूरत में) की जाती है। इतने ही दिनों तक फिर एक बस्ता ख़ून की सूरत में इख़्तियार किये रहता है और फिर वो इतने ही दिनों तक एक मुज़्ग़ा गोश्त रहता है। उसके बाद अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ता भेजता है और उसे चार बातों (के लिखने) का हुक्म देता है। उससे कहा जाता है कि उसके अ़मल, उसका रिज़्क़, उसकी मुद्दते ज़िन्दगी और ये कि बद है या नेक, लिख ले। अब उस नुत्फ़े मे रूह़ डाली जाती है। (याद रख) एक शख़्स़ (ज़िन्दगी भर नेक) अ़मल करता रहता है और जब जन्नत और उसके बीच स़िर्फ़ एक हाथ का फ़ास़ला रह जाता है तो उसकी तक़्दीर सामने आ जाती है और दोज़ख़ वालों के अ़मल शुरू कर देता है। इसी त़रह़ एक शख़्स़ (ज़िन्दगी भर बद) अ़मल करता रहता है और जब दोज़ख़ और उसके दरम्यान स़िर्फ़ एक हाथ का फ़ास़ला रह जाता है तो उसकी तक़्दीर ग़ालिब आ जाती है और जन्नत वालों के काम शुरू कर देता है। (दीगर मक़ाम : 3332, 6594, 7454)

٣٢٠٨– حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيْعِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهَبٍ قَالَ عَبْدُ اللهِ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ– وَهُوَ الصَّادِقُ الْمَصْدُوقُ – قَالَ: ((إِنَّ أَحَدَكُمْ يُجْمَعُ خَلْقُهُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِيْنَ يَوْمًا، ثُمَّ يَكُونُ عَلَقَةً مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ يَكُونُ مُضْغَةً مِثْلَ ذَلِكَ. ثُمَّ يَبْعَثُ اللهُ مَلَكًا يُؤْمَرُ بِأَرْبَعِ كَلِمَاتٍ وَيُقَالُ لَهُ: اكْتُبْ عَمَلَهُ وَرِزْقَهُ وَأَجَلَهُ وَشَقِيٌّ أَوْ سَعِيْدٌ. ثُمَّ يُنْفَخُ فِيْهِ الرُّوحُ، فَإِنَّ الرَّجُلَ مِنْكُمْ لَيَعْمَلُ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ إِلاَّ ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ كِتَابُهُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ. وَيَعْمَلُ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّارِ إِلاَّ ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ)).

[أطرافه في: ٣٣٣٢، ٦٥٩٤، ٧٤٥٤].

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि जब मर्द औरत से सुह़बत करता है तो मर्द का पानी औरत के हर रग व पे में समा जाता है। सातवें दिन अल्लाह उसको इकट्ठा करके उससे एक सूरत जोड़ता है। फिर नफ़्से नात़िक़ा चौथे चिल्ले में या'नी चार महीने के बाद उससे मुता'ल्लिक़ हो जाता है। जो लोग ए'तिराज़न कहते हैं कि चार माह से क़ब्ल ही ह़मल में जान पड़ जाती है उनका जवाब ये है कि ह़दीष़ में रूह़ से नफ़्से नात़िक़ा मुदारिका की मुराद है उसे रूहे इंसानी कहा जाता है और रूहे हैवानी पहले ही से बल्कि नुत्फ़े के अंदर भी मौजूद रहती है लिहाज़ा ए'तिराज़ बात़िल हुआ। इस ह़दीष़ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि ए'तिबार ख़ात्मा का है इसलिये आदमी कैसे ही अच्छे काम कर रहा हो फिर भी ख़राबी-ए-ख़ात्मा से डरते रहना चाहिये। बुज़ुर्गों ने तजुर्बा किया है कि जो लोग ह़दीष़ शरीफ़ से मुह़ब्बत रखते हैं और इसी फ़न्ने शरीफ़ में मशग़ूल रहते हैं। अकष़र उनकी उम्र लम्बी होती है और ख़ात्मा बिल ख़ैर नस़ीब होता है। या अल्लाह! अपने ह़क़ीर बन्दे मुह़म्मद दाऊद राज़ को भी ह़दीष़ की ये बरकात अ़त़ा फ़र्माइयो और मेरे तमाम मुआ़विनीने किराम को जिनकी ह़दीष़ दोस्ती ने मुझको इस अ़ज़ीम ख़िदमत के अंजाम देने के लिये

आमादा किया। अल्लाह पाक उन सबको बरकाते दारेन से नवाज़ियो। आमीन षुम्म आमीन।

3209. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़्लद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी, उन्हे नाफ़ेअ ने, उन्होंने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। और इस रिवायत की मुताबअ़त अबू आ़सिम ने इब्ने जुरैज से की है कि मुझे मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से फ़र्माता है कि अल्लाह तआ़ला फ़लाँ शख़्स से मुहब्बत करता है। तुम भी इससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) भी उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तमाम अहले आसमान को पुकार कर कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़लाँ शख़्स से मुहब्बत रखता है। इसलिये तुम सब लोग उससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे तमाम आसमान वाले उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। उसके बाद रूए ज़मीन वाले भी उसको मक़्बूल समझते हैं। (दीगर मक़ाम : 6040, 7485)

٣٢٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا مَخْلَدٌ، قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَتَابَعَهُ أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِيْ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَحَبَّ اللهُ الْعَبْدَ نَادَى جِبْرِيْلَ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحْبِبْهُ، فَيُحِبُّهُ جِبْرِيْلُ. فَيُنَادِي جِبْرِيْلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ. إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحِبُّوهُ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ. ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الأَرْضِ)).
[طرفاه في : ٦٠٤٠، ٧٤٨٥].

तश्रीह : इस्माईल की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि जब अल्लाह किसी बन्दे से दुश्मनी करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से ज़ाहिर करता है फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) और सारे फ़रिश्ते उसके दुश्मन हो जाते हैं यहाँ तक कि रूए ज़मीन पर उसके लिये बुराई फैल जाती है। इस ह़दीष़ से अल्लाह के कलाम में आवाज़ और पुकार षाबित हुई और उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में स़ौत (आवाज़) और ह़ुरूफ़ नहीं हैं।

3210. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें लैष़ ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हहरा आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया था कि फ़रिश्ते अ़नान मे उतरते हैं और अ़नान से मुराद बादल हैं। यहाँ फ़रिश्ते उन कामों का ज़िक्र करते हैं जिनका फ़ैसला आसमान में हो चुका होता है। और यहीं से शयातीन कुछ बातें चोरी छुपे उड़ा लेते हैं। फिर काहिनों को उसकी ख़बर कर देते

٣٢١٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ - وَهُوَ السَّحَابُ - فَتَذْكُرُ الأَمْرَ قُضِيَ فِي السَّمَاءِ، فَتَسْتَرِقُ الشَّيَاطِيْنُ السَّمْعَ

فَتَسْمَعُهُ فَتُوحِيهِ إِلَى الْكُهَّانِ، فَيَكْذِبُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ)).
[أطرافه في: ٣٢٨٨، ٥٧٦٢، ٦٢١٣، ٧٥٦١].

हैं और ये काहिन सौ झूठ अपनी त़रफ़ से मिलाकर बयान करते हैं। (दीगर मक़ाम : 3288, 5762, 6213, 7561)

٣٢١١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَالأَغَرِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ كَانَ عَلَى كُلِّ بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ الْمَلاَئِكَةُ يَكْتُبُونَ الأَوَّلَ فَالأَوَّلَ، فَإِذَا جَلَسَ الإِمَامُ طَوَوا الصُّحُفَ وَجَاؤُوا يَسْتَمِعُونَ الذِّكْرَ)). [راجع: ٩٢٩]

3211. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा और अग़र ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब जुमा का दिन आता है तो मस्जिद के हर दरवाज़े पर फ़रिश्ते खड़े हो जाते हैं और सबसे पहले आने वाले और फिर उसके बाद आने वालों को नम्बर वार लिखते जाते हैं। फिर जब इमाम (ख़ुत्बे के लिये मिम्बर पर) बैठ जाता है तो ये फ़रिश्ते अपने रजिस्टर बन्द कर लेते हैंऔर ज़िक्र सुनने लग जाते हैं (ये ह़दीष़ किताबुल जुम्आ में मज़्कूर हो चुकी है यहाँ फ़रिश्तों का वजूद ष़ाबित करना मक़्सूद है)। (राजेअ़ : 929)

٣٢١٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((مَرَّ عُمَرُ فِي الْمَسْجِدِ وَحَسَّانُ يُنْشِدُ فَقَالَ: كُنْتُ أُنْشِدُ فِيهِ وَفِيهِ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْكَ. ثُمَّ الْتَفَتَ إِلَى أَبِي هُرَيْرَةَ فَقَالَ: أَنْشُدُكَ بِاللهِ أَسَمِعْتَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((أَجِبْ عَنِّي، اللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ؟)) قَالَ : نَعَمْ)).
[راجع: ٤٥٣]

3212. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो ह़स्सान (रज़ि.) शे'र पढ़ रहे थे। उन्होंने मस्जिद में शे'र पढ़ने पर नापसन्दीदगी फ़र्माई तो ह़स्सान (रज़ि.) ने कहा कि मैं उस वक़्त यहाँ शे'र पढ़ा करता था जब आपसे बेहतर शख़्स (आँह़ज़रत ﷺ) यहाँ तशरीफ़ रखते थे। फिर ह़ज़रत ह़स्सान (रज़ि.) ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की त़रफ़ मुतवज्जह हुए और कहा कि मैं तुमसे अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ क्या रसूलल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते तुमने नहीं सुना था कि ऐ ह़स्सान! (कुफ़्फ़ारे मक्का को) मेरी त़रफ़ से जवाब दे। ऐ अल्लाह! रूहुल क़ुदस के ज़रिये ह़स्सान की मदद कर। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि हाँ बेशक (मैंने सुना था)। (राजेअ़ : 453)

इससे ह़म्दो—नअ़त के अश्आर पढ़ने और कहने का जवाज़ ष़ाबित हुआ।

٣٢١٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنِ الْبَرَاءِ

3213. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने और उनसे बराअ बिन

رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِحَسَّانَ ((اهْجُهُمْ -أَوْ هَاجِهِمْ- وَجِبْرِيلُ مَعَكَ))

[أطرافه في: ٤١٢٣، ٤١٢٤، ٦١٥٣].

आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हस्सान (रज़ि.) से फ़र्माया, मुश्रिकीने मक्का की तुम भी हिज्व करो या (ये फ़र्माया कि) उनकी हिज्व का जवाब दो, जिब्रईल (अलै.) तुम्हारे साथ हैं। (दीगर मक़ाम : 4123, 4124, 6153)

तश्रीह : फिर हज़रत हस्सान (रज़ि.) ने ऐसा जवाब दिया कि मुश्रिकीन के धुंए उड़ गये। उनकी सारी हक़ीक़त खोलकर रख दी। एक शे'र हज़रत हस्सान (रज़ि.) का ये है। **लना फी कुल्लि यौमिन मिम्मअरकिन, सबाबुन औ कितालुन औ हिजाउन.**

या'नी हम तो हर रोज़ सामान की तैयारी में मशग़ूल हैं तुमसे जंग करने में या तुमको जवाबन गाली देने में या तुम्हारे हिज्व करने में। मा'लूम हुआ कि मस्जिद में दीनी इस्लामी अश्आर का पढ़ना जाइज़ है।

٣٢١٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا وَهَبُ بْنُ جَرِيْرٍ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ حُمَيْدَ بْنَ هِلاَلٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى غُبَارٍ سَاطِعٍ فِي سِكَّةِ بَنِي غَنْمٍ. زَادَ مُوسَى : مَوكِبَ جِبْرِيْلَ)).

3214. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको वहब बिन जरीर ने ख़बर दी, उनसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हुमैद बिन हिलाल से सुना और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जैसे वो गुबार मेरी नज़रों के सामने है। मूसा ने रिवायत में यूँ ज़्यादती की कि, हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) के (साथ आने वाले) सवार फ़रिश्तों की वजह से। जो गुबार ख़ानदाने बनू ग़नम की गली में उठा था।

बनू ग़नम क़बीला ख़ज़रज की एक शाख़ है जो अंसार में से थे, हज़रत अबू अय्यूब अंसारी उसी ख़ानदान से थे।

٣٢١٥- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّ الْحَارِثَ بْنَ هِشَامٍ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَيْفَ يَأْتِيْكَ الْوَحْيُ؟ قَالَ: ((كُلُّ ذَاكَ يَأْتِيْنِي الْمَلَكُ أَحْيَانًا فِي مِثْلِ صَلْصَلَةِ الْجَرَسِ، فَيَفْصِمُ عَنِّي وَقَدْ وَعَيْتُ مَا قَالَ، وَهُوَ أَشَدُّهُ عَلَيَّ، وَيَتَمَثَّلُ لِي الْمَلَكُ أَحْيَانًا رَجُلاً فَيُكَلِّمُنِي، فَأَعِي مَا يَقُولُ)).

[راجع: ٢]

3215. हमसे फ़र्वा बिन अबी मुग़राअ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हारिष़ बिन हिशाम (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि वह्य आपके पास किस तरह आती है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कई तरह से आती है। कभी फ़रिश्ते के ज़रिये आती है तो वो घंटी बजने की आवाज़ की तरह नाज़िल होती है। जब वह्य ख़त्म हो जाती है तो जो कुछ फ़रिश्ते ने नाज़िल किया होता है, मैं उसे पूरी तरह याद कर चुका होता हूँ। वह्य उतरने की ये सूरत मेरे लिये बहुत दुश्वार होती है। कभी फ़रिश्ता मेरे सामने एक मर्द की सूरत में आ जाता है वो मुझसे बातें करता है और जो कुछ कह जाता है मैं उसे पूरी तरह याद कर लेता हूँ। (राजेअ़ : 2)

नुज़ूले वह्य की तफ़्सीलात पारा अव्वल किताबुल वह्य में तफ़्सील से लिखी गई है।

٣٢١٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ

3216. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा

قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيلِ اللهِ دَعَتْهُ خَزَنَةُ الْجَنَّةِ: أَيْ فُلُ هَلُمَّ)). فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ ذَاكَ الَّذِي لاَ تَوَى عَلَيْهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ)). [راجع: ١٨٩٧]

हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कषीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह के रास्ते में जो शख़्स किसी चीज़ का भी जोड़ा दे, तो जन्नत के चौकीदार फ़रिश्ते उसे बुलाएँगे कि ऐ फ़लाँ इस दरवाज़े से अंदर आ जा। अबूबक्र (रज़ि.) ने इस पर कहा कि ये तो वो शख़्स होगा जिसे कोई नुक़्सान न होगा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे उम्मीद है कि तू भी उन्हीं में से होगा। (राजेअ़ : 1897)

अल्लाह की राह में जो चीज़ भी ख़र्च की जाए वो जोड़े की शक्ल में ज़्यादा बेहतर है जैसे कपड़ों के दो जोड़े या दो रुपये या दो क़ुर्आन शरीफ़ वग़ैरह वग़ैरह। ये बेहतरीन सदक़ा होगा। यहाँ फ़रिश्तों का अहले जन्नत को बुलाना उनका वजूद और उनका हम कलाम होना षाबित करना मक़्सूद है।

٣٢١٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنِ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: ((يَا عَائِشَةُ، هَذَا جِبْرِيلُ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلاَمَ))، فَقَالَتْ وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ تَرَى مَا لاَ أَرَى. تُرِيْدُ النَّبِيَّ ﷺ)).
[أطرافه في: ٣٧٦٨، ٦٢٠١، ٦٢٤٩، ٦١٥٣].

3217. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया, ऐ आइशा! ये जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आए हैं, तुमको सलाम कह रहे हैं। आइशा (रज़ि.) ने जवाब में कहा, व अ़लैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहि बरकातुहू। आप वो चीज़ें देखते हैं जिन्हे मैं नहीं देख सकती, आइशा (रज़ि.) की मुराद नबी करीम (ﷺ) से थी। (दीगर मक़ाम : 3768, 6201, 6249, 6153)

٣٢١٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ. ح. قَالَ: وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ عُمَرَ بْنِ ذَرٍّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِجِبْرِيلَ: ((أَلاَ تَزُورُنَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُورُنَا؟ قَالَ : فَنَزَلَتْ : ﴿وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلاَّ بِأَمْرِ رَبِّكَ، لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا﴾)) [مريم: ٦٤]. [طرفاه في : ٤٧٣١،

3218. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे इमर बिन ज़र्र ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे इमर बिन ज़र्र ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अलै.) से एक मर्तबा फ़र्माया, हमसे मुलाक़ात के लिये जितनी मर्तबा आप आते हैं उससे ज़्यादा क्यूँ नहीं आते? बयान किया कि उस पर ये आयत नाज़िल हुई, और हम नहीं उतरते लेकिन तेरे रब के हुक्म से, उसी का है जो कुछ कि हमारे सामने है और जो कुछ हमारे पीछे है, आख़िर आयत तक। (दीगर मक़ाम : 4731, 7455)

मा'लूम हुआ कि फ़रिश्ते हैं और वो हुक्मे इलाही के ताबेअ़ हैं ।

3219. हमसे इस्माईल बिन अबी इदरीस ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिब्राईल (अलै.) ने क़ुर्आन मजीद मुझे (अ़रब के) एक ही मुहावरे के मुताबिक़ पढ़कर सिखाया था, लेकिन मैं उसमें बराबर इज़ाफ़ा की ख़्वाहिश का इज़्हार करता रहा, यहाँ तक कि अ़रब के सात मुहावरों पर उसका नुज़ूल हुआ। (दीगर मक़ाम : 4991)

٣٢١٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَقْرَأَنِي جِبْرِيْلُ عَلَى حَرْفٍ، فَلَمْ أَزَلْ أَسْتَزِيْدُهُ حَتَّى انْتَهَى إِلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ)).

[طرفه في: ٤٩٩١].

तश्रीह : क़ुर्आन मजीद की सात क़िरअतों पर इशारा है। जिनका तफ़्सीली षुबूत सहीह रिवायात व अहादीष़ से है। जैसा कि हर ज़ुबान में मुख़्तलिफ़ मुक़ामात की ज़ुबान का इख़्तिलाफ़ होता है। अ़रब में हर क़बीला एक अलग दुनिया में रहता था, जिनमें मुहावरे बल्कि ज़ेर, ज़बर तक के फ़र्क़ को इंतिहाई दर्जे में मल्हूज़ रखा जाता था, मक़्सद ये है कि क़ुर्आन मजीद अगरचे एक ही है। लेकिन क़िरअत के ए'तिबार से ख़ुद अल्लाह पाक ने उसकी सात क़िरअतें क़रार दी हैं।

इस हदीष़ के यहाँ लाने से हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) का वजूद और उनके मुख़्तलिफ़ कारनामे बयान करना मक़्सूद है। ख़ास़ तौर पर वह्य लाने के लिये यही फ़रिश्ता मुक़र्रर है। जैसा कि मुख़्तलिफ़ आयात व अहादीष़ से ष़ाबित है। क़ुर्आन मजीद की क़िरअते सब्आ़ पर उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है। मुतादविल और मशहूर क़िरअत यही है जो उम्मत में मा'मूल है।

3220. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सबसे ज़्यादा सख़ी थे और आपकी सख़ावत रमज़ान शरीफ़ के महीने में और बढ़ जाती, जब हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) आपसे मुलाक़ात के लिये हर रोज़ आने लगते। हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) आप (ﷺ) से रमज़ान की हर रात में मुलाक़ात के लिये आते और आपसे क़ुर्आन का दौर किया करते थे। आँहज़रत (ﷺ) ख़ुसूसन इस दौर में जब हज़रत जिब्राईल (अलै.) रोज़ाना आपसे मुलाक़ात के लिये आते तो आप ख़ैरात व बरकात में तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़्यादा सख़ी हो जाते थे और अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक से रिवायत है, उनसे मअ़मर ने इसी इस्नाद

٣٢٢٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ، وَكَانَ أَجْوَدَ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَانَ حِيْنَ يَلْقَاهُ جِبْرِيْلُ، وَكَانَ جِبْرِيْلُ يَلْقَاهُ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ فَيُدَارِسُهُ الْقُرْآنَ. فَلَرَسُولُ اللهِ ﷺ حِيْنَ يَلْقَاهُ جِبْرِيْلُ أَجْوَدُ مِنَ الرِّيْحِ الْمُرْسَلَةِ)). وَعَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ. وَرَوَى أَبُو

के साथ इसी तरह बयान किया और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने नक़ल किया नबी करीम (ﷺ) से कि हज़रत जिब्रईल (अलै.) आँहज़रत (ﷺ) के साथ क़ुर्आन मजीद का दौर किया करते थे। (राजेअ : 6)

هُرَيْرَةَ وَفَاطِمَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ((أَنَّ جِبْرِيْلَ كَانَ يُعَارِضُهُ الْقُرْآنَ)).
[راجع: ٦]

तश्रीह : या'नी हर साल में एक बार आते मगर जिस साल में आपकी वफ़ात हुई तो हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने दो बार हाज़िरे ख़िदमत होकर दौर किया। कहते हैं कि ज़ैद बिन षाबित की क़िरअत आँहज़रत (ﷺ) के अख़ीर दौर के मुवाफ़िक़ है। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की जो रिवायात मज़्कूर हुई हैं उनको ख़ुद हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब अलामाते नबविया और फ़ज़ाइलुल क़ुर्आन में वस्ल किया है।

3221. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने एक दिन अस्र की नमाज़ कुछ देर करके पढ़ाई। उस पर उर्वा बिन ज़ुबैर (रह.) ने उनसे कहा। लेकिन जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) (नमाज़ का तरीक़ा आँहज़रत ﷺ को सिखाने के लिये) नाज़िल हुए और रसूलुल्लाह (ﷺ) के आगे होकर आपको नमाज़ पढ़ाई। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा, उर्वा! आपको मा'लूम भी है आप क्या कह रहे हैं? उर्वा ने कहा कि (और सुन लो) मैंने बशीर बिन अबी मसऊद से सुना और उन्होंने अबू मसऊद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि हज़रत जिब्रईल (अलै.) नाज़िल हुए और उन्होंने मुझे नमाज़ पढ़ाई। मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी, फिर (दूसरे वक़्त की) उनके साथ मैंने नमाज़ पढ़ी, फिर उनके साथ मैंने नमाज़ पढ़ी, फिर मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी, फिर मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी, अपनी उँगलियों पर आपने पाँचों नमाज़ों को गिनकर बताया। (राजेअ : 521)

٣٢٢١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيْزِ أَخَّرَ الْعَصْرَ شَيْئًا، فَقَالَ لَهُ عُرْوَةُ : أَمَا إِنَّ جِبْرِيْلَ قَدْ نَزَلَ فَصَلَّى أَمَامَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ عُمَرُ: اعْلَمْ مَا تَقُولُ يَا عُرْوَةُ، قَالَ: سَمِعْتُ بَشِيْرَ بْنَ أَبِي مَسْعُودٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا مَسْعُودٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((نَزَلَ جِبْرِيْلُ فَأَمَّنِي فَصَلَّيْتُ مَعَهُ، ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ، ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ، ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ، ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ، يَحْسُبُ بِأَصَابِعِهِ خَمْسَ صَلَوَاتٍ)).
[راجع: ٥٢١]

तश्रीह : हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आप (ﷺ) को अमली तौर पर औक़ाते नमाज़ की ता'लीम देने आए थे। चुनाँचे अव्वल वक़्त और आख़िर वक़्त दोनों में पाँचों नमाज़ों को पढ़कर आपको बतलाया। यहाँ हदीष में इस पर इशारा है। उर्वा बिन ज़ुबैर ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) को ताख़ीर नमाज़ अस्र पर टोका और हदीषे मज़्कूर बतौरे दलील पेश फ़र्माई फिर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के इस्तिफ़्सार पर हदीष मअ सनद बयान की, जिसे सुनकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को यक़ीन कामिल हासिल हो गया। इस हदीष से नमाज़े अस्र का अव्वल वक़्त पर अदा करना षाबित हुआ। जैसा कि जमाअत अहले हदीष का मा'मूल है। उन लोगों का अमल ख़िलाफ़ सुन्नत भी मा'लूम हुआ जो अस्र की नमाज़ ताख़ीर करके पढ़ते हैं। कुछ लोग तो बिलकुल ग़ुरूब के वक़्त नमाज़ अस्र अदा करने के आदी हैं, ऐसे लोगों को मुनाफ़िक़ कहा गया है।

3222. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे हबीब बिन

٣٢٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ حَبِيْبٍ

अबी षाबित ने, उनसे ज़ैद बिन वहब ने और उनसे अबू ज़र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिब्रईल (अलै.) कह गये हैं कि तुम्हारी उम्मत का जो आदमी उस हालत में मरेगा कि वो अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराता रहा होगा, तो वो जन्नत में दाख़िल होगा या (आपने ये फ़र्माया कि) जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा। ख़्वाह उसने अपनी ज़िन्दगी मे ज़िना किया हो, ख़्वाह चोरी की हो। और ख़्वाह ज़िना और चोरी करता हो। (राजेअ : 1237)

بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهَبٍ عَنْ أَبِي ذَرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((قَالَ لِي جِبْرِيْلُ: مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِكَ لاَ يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، أَوْ لَمْ يَدْخُلِ النَّارَ. قَالَ : وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: وَإِنْ)). [راجع: ١٢٣٧]

तश्रीह : मतलब ये है कि अल्लाह पाक चाहेगा तो उनको मुआफ़ कर देगा और अगर चाहेगा तो उनको गुनाहों की सज़ा देकर बाद में जन्नत में दाख़िल कर देगा। बशर्ते कि वो दुनिया में कभी शिर्क के मुर्तकिब न हुए हों क्योंकि मुश्रिक के लिये अल्लाह ने जन्नत को क़त्अन ह़राम कर दिया है। वो नामो–निहाद मुसलमान ग़ौर करें जो बुज़ुर्गों के मज़ारात पर जाकर शिर्किया अफ़आल का इर्तिकाब करते हैं, क़ब्रों पर सज्दा और त़वाफ़ करते हैं। उनके मुश्रिक होने में कोई शक नहीं है, ऐसे लोग हर्गिज़ जन्नत में न जाएँगे ख़्वाह कितने ही नेक काम करते हों, अल्लाह ने अपने नबी करीम (ﷺ) के बारे में ख़ुद फ़र्मा दिया है। **लइन अश्रक्त लयहिबत़न्न अ़मलुक व लतकुनन्न मिनल्ख़ासिरीन** (अज़्ज़ुमर : 65) ऐ रसूल! अगर आप भी शिर्क कर बैठें तो आपकी सारी नेकियाँ बर्बाद हो जाएगी और आप ख़सारा उठाने वालों में से हो जाएँगे। किरमानी ने कहा कि रिवायत मे ऐसे गुनाहगारों के दोज़ख़ में न दाख़िल होने से मुराद उन का हमेशगी का दुख़ूल मुराद है। **व यजिबुत्तावीलु बिमिष्लिही जम्अन बैनल्आयाति वल्अह़ादीषि** (किर्मानी)

3223. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़रिश्ते आगे–पीछे ज़मीन पर आते–जाते रहते हैं, कुछ फ़रिश्ते रात के हैं और कुछ दिन के और ये फ़ज्र और अस्र की नमाज़ में जमा हो जाते हैं। फिर वो फ़रिश्ते जो तुम्हारे यहाँ रात में रहे। अल्लाह के हुज़ूर में जाते हैं, अल्लाह तआला उनसे दरयाफ़्त फ़र्माता है, —हालाँकि वो सबसे ज़्यादा जानने वाला है— कि तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा, वो फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं कि जब हमने उन्हें छोड़ा तो वो (फ़ज्र की) नमाज़ पढ़ रहे थे। और इसी त़रह जब हम उनके यहाँ गये थे, जब भी वो (अ़स्र की) नमाज़ पढ़ रहे थे। (राजेअ : 555)

٣٢٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((الْمَلاَئِكَةُ يَتَعَاقَبُونَ: مَلاَئِكَةٌ بِاللَّيْلِ وَمَلاَئِكَةٌ بِالنَّهَارِ، وَيَجْتَمِعُونَ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ وَالْعَصْرِ، ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ الَّذِيْنَ بَاتُوا فِيْكُمْ فَيَسْأَلُهُمْ – وَهُوَ أَعْلَمُ – فَيَقُولُ: كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي؟ فَيَقُولُونَ: تَرَكْنَاهُمْ يُصَلُّونَ، وَأَتَيْنَاهُمْ يُصَلُّونَ)).

[راجع: ٥٥٥]

तश्रीह : इन जुम्ला अहादीष के लाने से मुज्तहिद मुत़्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ फ़रिश्तों का वजूद षाबित करना है। जिन पर ईमान लाना अरकाने ईमान से है। फ़रिश्तों में ह़ज़रत जिब्रईल (अलै.), मीकाईल (अलै.), इस्राफ़ील (अलैहिस्सलाम) ज़्यादा मशहूर हैं। बाक़ी उनकी ता'दाद इतनी है जिसे अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, वो सब अल्लाह के बन्दे हैं, अल्लाह के फ़र्मांबरदार हैं। उसकी इजाज़त बग़ैर वो दम भी नहीं मार सकते न वो किसी नफ़ा–नुक़्सान के मालिक हैं।

बाब 7 : इस ह़दीष़ के बयान में कि जब एक तुम्हारा (जहरी नमाज़ में सूरह फ़ातिहा के ख़त्म पर बाआवाज़े बुलन्द) आमीन कहता तो फ़रिश्ते भी आसमान पर (ज़ोर से) आमीन कहते हैं और इस त़रह़ दोनों की ज़ुबान से एक साथ (बाआवाज़े बुलन्द) आमीन निकलती है तो बन्दे के गुज़रे हुए तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं।

٧- بَابُ إِذَا قَالَ أَحَدُكُمْ ((آمِينَ)) وَالْمَلاَئِكَةُ فِي السَّمَاءِ فَوَافَقَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उस ह़दीष़ की त़रफ़ इशारा किया है जिसमें जहरी नमाज़ों में सूरह फ़ातिह़ा के ख़त्म पर आमीन बिल जहर या'नी बुलन्द आवाज़ से आमीन बोलने की फ़ज़ीलत वारिद हुई है, उम्मत में सवादे आ'ज़म का यही मा'मूल है। यहाँ तक कि मसालिके अरबआ (चारों मसलकों) में से तीनों मसलक शाफ़िई, मालिकी, ह़ंबली सब आमीन बिल जहर के क़ाइल और आमिल हैं। मगर बहुत से ह़नफ़ी ह़ज़रात न सिर्फ़ इस सुन्नत से नफ़रत करते हैं और उस सुन्नत पर अमल करने वालों को ह़िक़ारत की नज़र से देखते हैं बल्कि कुछ जगह अपनी मस्जिदों में ऐसे लोगों को नमाज़ अदा करने से रोकते हैं जो जहरी आमीन पढ़ते हैं। ये बहुत ही ज़्यादा अफ़सोसनाक हरकत है। बहुत से मुन्सिफ़ मिज़ाज ह़नफ़ी अकाबिर उ़लमा ने उसका सुन्नत होना तस्लीम किया है और उसके आमिलीन को ष़वाबे सुन्नत का ह़क़दार बतलाया है। काश! सारे बिरादरान ऐसे उमूरे मस्नूना पर लड़ना झगड़ना छोड़कर इत्तिफ़ाक़ व इत्तिह़ादे मिल्लत पैदा करें और उम्मत को इंतिशार से निकालें। आमीन बिल जहर का मस्नून होना और दलाइले मुख़ालिफ़ीन का जवाब पीछे तफ़्सील से लिखा जा चुका है। यहाँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस ह़दीष़ को इसलिये लाए कि फ़रिश्तों का वजूद और उनका कलाम करना ष़ाबित किया जाए।

3224. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा हमको जुरैज ने ख़बर दी, उनसे क़ासिम बिन मुह़म्मद ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के लिये एक तकिया भरा, जिस पर तस्वीरें बनी हुई थीं। वो ऐसा हो गया जैसे नक़्शी तकिया होता है। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो दरवाज़े पर खड़े हो गये और आपके चेहरे का रंग बदलने लगा। मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमसे क्या ग़लती हुई? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तकिया कैसा है? मैं ने अ़र्ज किया, ये तो मैंने आपके लिये बनाया है ताकि आप इस पर टेक लगा सकें। इस पर आपने फ़र्माया, क्या तुम्हें नहीं मा'लूम कि फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें कोई तस्वीर होती है और ये कि जो शख़्स भी तस्वीर बनाएगा, क़यामत के दिन उसे उस पर अ़ज़ाब दिया जाएगा। उससे कहा जाएगा कि जिसकी मूरत तूने बनाई, अब उसे ज़िन्दा भी करके दिखा। (राजेअ़ : 2105)

٣٢٢٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مَخْلَدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ إِسْمَاعِيْلَ بْنِ أُمَيَّةَ أَنَّ نَافِعًا حَدَّثَهُ أَنَّ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ حَدَّثَهُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((حَشَوْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وِسَادَةً فِيْهَا تَمَاثِيْلُ كَأَنَّهَا نُمْرُقَةٌ، فَجَاءَ فَقَامَ بَيْنَ الْبَابَيْنِ وَجَعَلَ يَتَغَيَّرُ وَجْهُهُ، فَقُلْتُ: مَا لَنَا يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((مَا بَالُ هَذِهِ؟)) وِسَادَةٌ قُلْتُ وِسَادَةٌ جَعَلْتُهَا لَكَ لِتَضْطَجِعَ عَلَيْهَا. قَالَ: ((أَمَا عَلِمْتِ أَنَّ الْمَلاَئِكَةَ لاَ تَدْخُلُ بَيْتًا فِيْهِ صُورَةٌ وَأَنَّ مَنْ صَنَعَ الصُّوْرَةَ يُعَذَّبُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَقُولُ أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ))

जानदारों की सूरत बनाना इससे नाजाइज़ होना ष़ाबित हुआ और यही ठीक है और फ़रिश्तों का वजूद भी ष़ाबित हुआ और ये भी कि वो नेकी देखकर ख़ुश होते हैं और बदी देखकर नाख़ुश होते हैं।

3225. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने, और उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि मैंने अबू त़लहा (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें कुत्ते हों और उसमें भी नहीं जिसमें मूरत हो। (दीगर मक़ाम : 3226, 3322, 4002, 5949, 5968)

٣٢٢٥- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا طَلْحَةَ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ ((لاَ تَدْخُلُ الْمَلاَئِكَةُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلاَ صُورَةُ تَمَاثِيلَ)).[أطرافه في : ٣٢٢٦، ٣٣٢٢، ٤٠٠٢، ٥٩٤٩، ٥٩٦٨].

इससे भी फ़रिश्तों का वजूद और नेकी बदी से उनका अष़र लेना ष़ाबित हुआ।

3226. हमसे अहमद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा हमको अ़म्र बिन हारिष़ ने ख़बर दी, उनसे बुकैर बिन अशज ने बयान किया, उनसे बुस्र बिन सईद ने बयान किया और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया और (रावी ह़दीष़) बुस्र बिन सईद के साथ उ़बैदुल्लाह ख़ौलानी भी रिवायते ह़दीष़ में शरीक हैं, जो कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा मैमूना (रज़ि.) की परवरिश में थे। उन दोनों से ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया कि उनसे अबू त़लहा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, फ़रिश्ते उस घर में नहीं दाख़िल होते जिसमें (जानदार की) तस्वीर हो। बुस्र ने बयान किया कि फिर ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) बीमार पड़े और हम उनकी अ़यादत के लिये उनके घर गये। घर में एक पर्दा पड़ा हुआ था और उस पर तस्वीर बनी हुई थी। मैंने उ़बैदुल्लाह ख़ौलानी से कहा, क्या उन्होंने हमसे तस्वीरों के बारे में एक ह़दीष़ नहीं बयान की थी? उन्होंने बताया कि ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने ये भी कहा था कि कपड़े पर अगर नक़्शो–निगार हों (जानदार की तस्वीर न हो) तो वो इस हुक्म से अलग है। क्या आपने ह़दीष़ का ये हिस़्सा नहीं सुना था? मैंने कहा कि नहीं।

٣٢٢٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَمْرٌو أَنَّ بُكَيْرَ بْنَ الأَشَجِّ حَدَّثَهُ أَنَّ بُسْرَ بْنَ سَعِيْدٍ حَدَّثَهُ أَنَّ زَيْدَ بْنَ خَالِدٍ الْجُهَنِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ - وَمَعَ بُسْرِ بْنِ سَعِيْدٍ عُبَيْدُ اللهِ الْخَوْلاَنِيُّ الَّذِيْ كَانَ فِي حَجْرِ مَيْمُونَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ- حَدَّثَهُمَا زَيْدُ بْنُ خَالِدٍ أَنَّ أَبَا طَلْحَةَ حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ تَدْخُلُ الْمَلاَئِكَةُ بَيْتًا فِيْهِ صُورَةٌ)). قَالَ بُسْرٌ: فَمَرِضَ زَيْدُ بْنُ خَالِدٍ، فَعُدْنَاهُ، فَإِذَا نَحْنُ فِي بَيْتِهِ بِسِتْرٍ فِيْهِ تَصَاوِيْرُ، فَقُلْتُ لِعُبَيْدِ اللهِ الْخَوْلاَنِيِّ: أَلَمْ يُحَدِّثْنَا فِي التَّصَاوِيْرِ؟ فَقَالَ: إِنَّهُ قَالَ: ((إِلاَّ رَقْمٌ فِي ثَوْبٍ)). أَلاَ سَمِعْتَهُ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: بَلَى

उन्होंने बताया कि जी हाँ! हज़रत ज़ैद ने ये भी बयान किया था।

قَدْ ذَكَرَ.

मा'लूम हुआ कि फ़रिश्ते उमूरे मआसी (नाफ़र्मानी के कामों) से नफ़रत करते हैं। जानदार की तस्वीर बनाना भी अल्लाह के नज़दीक मअसियत है। इसलिये जिस घर में ऐसी तस्वीर हो उसमें रहमत के फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते हैं, वो घर रहमते इलाही से महरूम होता है। इर्शादे नबवी (ﷺ) में जो कुछ वारिद हुआ वो बरहक़ है। उसमें कुरेद करना बिदअत है। फ़रिश्ते रूहानी मख़्लूक़ हैं। वो जैसे हैं ऐसे ही उनके कारनामे हैं। हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद के घर में पर्दे के कपड़े पर ग़ैर जानदार की तस्वीरें थीं जो इस हुक्म से अलग हैं।

3227. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे अम्र ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके बाप अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) से जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने आने का वा'दा किया था (लेकिन नहीं आए) फिर जब आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे वजह पूछी, उन्होंने कहा कि हम किसी भी ऐसे घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें तस्वीर या कुत्ता मौजूद हो। (दीगर मक़ाम : 5960)

٣٢٢٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرٌو عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((وَعَدَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جِبْرِيْلُ فَقَالَ: إِنَّا لاَ نَدْخُلُ بَيْتًا فِيْهِ صُوْرَةٌ وَلاَ كَلْبٌ)).

[طرفه في: ٥٩٦٠].

जो कुत्ते हिफ़ाज़त के लिये पाले जाएँ वो इस हुक्म से अलग हैं, जैसा कि दीगर रिवायात में वज़ाहत मौजूद है। रिवायत में एक रावी का नाम अम्र नक़ल हुआ है, जो सहीह नहीं है। सहीह नुस्ख़ा में उमर है जो मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अब्दुल्लाह बिन उमर के बेटे हैं और यही दुरुस्त है।

3228. हमसे इस्माईल बिन इदरीस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे सुमय ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब (नमाज़ में) इमाम कहे कि समिअल्लाहुलिमन हमिदा तो तुम कहा करो, अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द क्योंकि जिसका ज़िक्र मलायका के साथ मुवाफ़िक़ हो जाता है उसके पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। (राजेअ : 796)

٣٢٢٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الإِمَامُ سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، فَقَالُوا: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). [راجع: ٧٩٦]

इमाम के साथ मुक़्तदी का समिअल्लाहुलिमन हमिदा कहना फ़िर अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द पढ़ना या इमाम के समिअल्लाहु लिमन हमिदा के बाद मुक़्तदी का ख़ाली रब्बना लकल हम्द कहना दोनों उमूर जाइज़ हैं। तफ़्सील पीछे मज़्कूर हो चुकी है।

3229. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह ने बयान किया, उनसे मेरे बाप ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी अम्र ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई शख़्स नमाज़ की वजह से जब तक कहीं ठहरा रहेगा उसका

٣٢٢٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ هِلاَلِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ

النَّبِيَّ ، قَالَ: ((إِنَّ أَحَدَكُمْ فِي صَلاَةٍ مَا دَامَتِ الصَّلاَةُ تَحْبِسُهُ، وَالْمَلاَئِكَةُ تَقُولُ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، مَا لَمْ يَقُمْ مِنْ صَلاَتِهِ أَوْ يُحْدِثْ)). [راجع:١٧٦]

ये सारा वक़्त नमाज़ में शुमार होगा और फ़रिश्ते उसके लिये ये दुआ करते रहेंगे कि ऐ अल्लाह! उसकी मग़्फ़िरत फ़र्मा, और उस पर अपनी रहमत नाजिल कर (उस वक़्त तक) जब तक वो नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अपनी जगह से उठ न जाए या बात न करे। (राजेअ : 176)

इससे फ़रिश्तों का नेक दुआएँ करना षाबित हुआ।

٣٢٣٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ عَطَاءٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَعْلَى عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ عَلَى الْمِنْبَرِ: ﴿وَنَادَوْا يَا مَالِكُ﴾ قَالَ سُفْيَانُ فِي قِرَاءَةِ عَبْدِ اللهِ : وَنَادَوْا يَا مَالِ)).

[طرفاه في : ٣٢٦٦، ٤٨١٩].

3230. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह ने, उनसे स़फ़्वान बिन यअ़ला ने और उनसे उनके वालिद (यअ़ला बिन उमय्या रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आप मिम्बर पर सूरह अह़ज़ाब की इस आयत की तिलावत फ़र्मा रहे थे, व नादौ या मालिक और वो दोज़ख़ी पुकारेंगी, ऐ मालिक! (ये जहन्नम के दारोग़ा का नाम है) और सुफ़यान ने कहा कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की क़िरअत में यूँ है (व नादौ या माल)। (दीगर मक़ाम : 3266, 4819)

तश्रीह : पूरी आयत यूँ है **व नादौ या मालिकु लियक़्ज़ि अ़लैना रब्बुक क़ाल इन्नकुम माकिषून** (अज़्ज़ुख़रुफ़ : 77) या'नी दोज़ख़ी, दारोग़ा-ए-दोज़ख़, मालिक को पुकारेंगे कि अपने रब से कहो कि वो हमको मौत दे दे वो जवाब देगा कि तुम मरने वाले नहीं हो, बल्कि सब हमेशा इसी अ़ज़ाब में मुब्तला रहोगे। इससे भी फ़रिश्तों का वजूद और उनका मुख़्तलिफ़ ख़िदमात पर मामूर होना षाबित हुआ। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की क़िरअत में लफ़्ज़ व नादौ या माल या मालिक का मुख़फ़्फ़फ़ है। मतलब दोनों का एक ही है कि दोज़ख़ी दोज़ख़ के दारोग़ा मालिक को पुकारेंगे। इससे भी फ़रिश्तों का वजूद षाबित हुआ।

٣٢٣١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ: أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَتْهُ أَنَّهَا قَالَتْ لِلنَّبِيِّ ﷺ: هَلْ أَتَى عَلَيْكَ يَوْمٌ كَانَ أَشَدَّ مِنْ يَوْمِ أُحُدٍ؟ قَالَ: ((لَقَدْ لَقِيتُ مِنْ قَوْمِكِ مَا لَقِيتُ، وَكَانَ أَشَدَّ مَا لَقِيتُ مِنْهُمْ يَوْمَ الْعَقَبَةِ إِذْ عَرَضْتُ نَفْسِي عَلَى ابْنِ عَبْدِ يَا

3231. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा, उनसे उ़र्वा ने कहा और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि उन्होने नबी करीम (ﷺ) से पूछा, क्या आप पर कोई दिन उहुद के दिन से भी ज़्यादा सख़्त गुज़रा है? आप (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि तुम्हारी क़ौम (क़ुरैश) की त़रफ़ से मैंने कितनी मुसीबतें उठाई हैं लेकिन उस सारे दौर में अ़क़्बा का दिन मुझ पर सबसे ज़्यादा सख़्त था ये वो मौक़ा था जब मैंने (त़ाईफ़ के सरदार) किनाना इब्ने अ़ब्द यालैल बिन अ़ब्दे किलाल के यहाँ अपने आपको पेश किया था।

لَيْل بْنِ عَبْدِ كُلاَلٍ فَلَمْ يُجِبْنِي إِلَى مَا أَرَدْت، فَانْطَلَقْتُ. وَأَنَا مَهْمُومٌ، عَلَى وَجْهِي، فَلَمْ أَسْتَفِقْ إِلاَّ وَأَنَا بِقَرْنِ الثَّعَالِبِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي، فَإِذَا أَنَا بِسَحَابَةٍ قَدْ أَظَلَّتْنِي، فَنَظَرْتُ فَإِذَا فِيهَا جِبْرِيْلُ، فَنَادَانِي فَقَالَ: إِنَّ اللهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ لَكَ وَمَا رَدُّوا عَلَيْكَ، وَقَدْ بَعَثَ اللهُ إِلَيْكَ مَلَكَ الْجِبَالِ لِتَأْمُرَهُ بِمَا شِئْتَ فِيهِمْ، فَنَادَانِي مَلَكُ الْجِبَالِ فَسَلَّمَ عَلَيَّ ثُمَّ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ، فَقَالَ: ذَلِكَ فِيمَا شِئْتَ، إِنْ شِئْتَ أَنْ أُطْبِقَ عَلَيْهِمُ الأَخْشَبَيْنِ)). فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((بَلْ أَرْجُو أَنْ يُخْرِجَ اللهُ مِنْ أَصْلاَبِهِمْ مِنْ يَعْبُدُ اللهَ وَحْدَهُ لاَ يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا)). [طرفه في : ٧٣٨٩].

लेकिन उसने (इस्लाम क़ुबूल नहीं किया और) मेरी दा'वत को रद्द कर दिया। मैं वहाँ से इंतिहाई रंजीदा होकर वापस हुआ। फिर जब मैं क़नुष ष़आलिब पहुँचा, तब मुझको कुछ होश आया, मैंने अपना सर उठाया तो क्या देखता हूँ कि बदली का एक टुकड़ा मेरे ऊपर साया किये हुए है और मैंने देखा कि हज़रत जिब्रईल (अलै.) उसमें मौजूद हैं, उन्होंने मुझे आवाज़ दी और कहा कि अल्लाह तआला आपके बारे में आपकी क़ौम की बातें सुन चुका और जो उन्होंने रद्द किया है वो भी सुन चुका। आपके पास अल्लाह तआला ने पहाड़ों का फ़रिश्ता भेजा है, आप उनके बारे मे जो चाहें उसका उसे हुक्म दे दें। उसके बाद मुझे पहाड़ों के फ़रिश्ते ने आवाज़ दी, उन्होंने मुझे सलाम किया और कहा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! फिर उन्होंने भी वही बात कही, आप जो चाहें (उसका मुझे हुक्म फ़र्माएँ) अगर आप चाहें तो मैं दोनों तरफ़ के पहाड़ उन पर लाकर मिला दूँ (जिनसे वो चकनाचूर हो जाएँ) नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे तो इसकी उम्मीद है कि अल्लाह तआला उनकी नस्ल से ऐसी औलाद पैदा करेगा जो अकेले अल्लाह की इबादत करेगी, और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएगी। (दीगर मक़ाम : 7389)

तश्रीह : ये ताइफ़ का मशहूर वाक़िया है जब आँहज़रत (ﷺ) अपने शफ़ीक़ चचा अबू तालिब के इंतिक़ाल के बाद बग़र्ज़ तब्लीग़े इस्लाम ताइफ़ तशरीफ़ ले गये थे, आप (ﷺ) ने वहाँ के सरदारों को ख़ुसूसियत के साथ इस्लाम की दा'वत दी, मगर वो लोग बदतमीज़ी से पेश आए और आपके पीछे बदमाश लड़कों को लगा दिया जिनकी हरकतों से आपको सख़्त तकलीफ़ का सामना हुआ, मगर उन हालात मे भी आपने उन पर अ़ज़ाब पसन्द नहीं किया, बल्कि उनकी हिदायत की दुआ फ़र्माई जो क़ुबूल हुई। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष़ को लाकर उससे भी फ़रिश्तों का वजूद ष़ाबित फ़र्माया। अख़्शबैन से मुराद मक्का के दो मशहूर पहाड़ जबले अबू क़ुबैस और जबले क़ेअक़ेआन मुराद है।

लफ़्ज़ ऊ़क़्बा जो रिवायत में आया है ये ताईफ़ की तरफ़ एक घाटी का नाम है। ताईफ़ की तरफ़ आप (ﷺ) शव्वाल 10 नबवी में तशरीफ़ ले गए थे। पहले वहाँ के लोगों ने ख़ुद आपको बुला भेजा था बाद में वो मुख़ालिफ़ हो गये और उन्होंने आप (ﷺ) पर पत्थर मारे, एक पत्थर आपकी ऐड़ी में लगा और आप ज़ख़्मी हो गये। इस क़दर सताने के बावजूद आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ-ए-ख़ैर फ़र्माई।

٣٢٣٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَأَلْتُ زِرَّ بْنَ حُبَيْشٍ عَنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى، فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾ [النجم: ٩]

3232. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ शैबानी ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़िर्र बिन हुबैश से अल्लाह तआला के (सूरह नज्म में) इर्शाद (फ़कान क़ाबा क़वसयनि औ अदना फ़औहा इला अ़ब्दिही मा औहा) के बारे में पूछा, तो उन्होंने बयान किया

قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ مَسْعُودٍ أَنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ.

[طرفاه في: ٤٨٥٦، ٤٨٥٧].

कि हमसे इब्ने मसऊद (रज़ि.) न बयान किया था आँहज़रत (ﷺ) हज़रत जिब्रइल (अलैहिस्सलाम) को (अपनी अस़ली सूरत में) देखा, तो उनके छः सौ बाज़ू थे। (दीगर मक़ाम : 4856, 4857)

٣٢٣٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ﴿لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى﴾ قَالَ: ((رَأَى رَفْرَفًا أَخْضَرَ سَدَّ أُفُقَ السَّمَاءِ)).

[طرفه في: ٤٨٥٨].

3233. हमसे ह़फ़्स बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने (अल्लाह तआ़ला के इर्शाद) लक़द रआ मन आयाति रब्बिहिल कुब्रा के बारे में बतलाया कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक सब्ज़ रंग का बिछौना देखा था जो आसमान में सारे किनारों को घेरे हुए था। (दीगर मक़ाम : 4858)

इस पर ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) बैठे हुए थे या उनके पर थे।

٣٢٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ قَالَ أَنْبَأَنَا الْقَاسِمُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((مَنْ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ أَعْظَمَ، وَلَكِنْ قَدْ رَأَى جِبْرِيلَ فِي صُورَتِهِ وَخَلْقِهِ سَادًّا مَا بَيْنَ الأُفُقِ)).

[أطرافه في : ٣٢٣٥، ٤٦١٢، ٤٨٥٥، ٧٣٨٠، ٧٥٣١].

3234. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी ने बयान किया, उनसे इब्ने औ़न ने, कहा हमको क़ासिम ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जिसने गुमान किया कि ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा था तो उसने बड़ी झूठी बात ज़ुबान से निकाली, लेकिन आप (ﷺ) ने जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को (मेअ़राज की रात में) उनकी अस़ल सूरत में देखा था। उनके वजूद आसमान का किनारा ढांप लिया था। (दीगर मक़ाम : 3235, 4612, 4855, 7380, 7531)

٣٢٣٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنِ ابْنِ الأَشْوَعِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: ((قُلْتُ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: فَأَيْنَ قَوْلُهُ: ﴿ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى، فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى﴾؟ قَالَتْ: ذَاكَ جِبْرِيلُ كَانَ يَأْتِيهِ فِي صُورَةِ الرَّجُلِ، وَإِنَّمَا أَتَاهُ هَذِهِ الْمَرَّةَ فِي صُورَتِهِ

3235. मुझसे मुह म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन अबी ज़ाइदा ने बयान किया, उनसे सईद बिन अल अश्वआ ने, उनसे शअ़बी ने और उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा (उनके उ स कहने पर कि आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह तआ़ला को देखा नहीं था) फिर अल्लाह तआ़ला के उस इर्शाद (षुम्मा दना फ़तदल्ला फ़कान क़ाब कौसेनि औ अदना) के बारे में आपका क्या ख़याल है? उन्होंने कहा कि ये आयत तो जिब्रईल (अलै.) के बारे में है, वो इंसानी शक्ल मे आँहज़रत (ﷺ) के पास आया करते थे और इस मर्तबा अपनी इस शक्ल में

आए थे जो असली थी और उन्होंने ने तमाम आसमान के किनारों को ढांप लिया था। (राजेअ : 3234)

الَّتِيْ هِيَ صُورَتُهُ، فَسَدَّ الأُفُقَ)).

[راجع: ٣٢٣٤]

तश्रीह : शबे मेअ़राज में आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह को देखा था या नहीं, उस बारे में उ़लमा में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत आइशा (रज़ि.) का ख़्याल यही है कि आपने अल्लाह पाक को नहीं देखा। बहरहाल आयते मज़्कूरा के बारे में हज़रत आयशा (रज़ि.) ने उन लोगों का रद्द किया जो उससे आपका दीदारे इलाही षाबित करते हैं। फ़र्माया कि आयत में जिसकी क़ुर्बत का ज़िक्र है। इससे हज़रत ज़िब्रईल (अलैहिस्सलाम) मुराद हैं।

व क़ालन्नववी अर्राजिह अल्मुख़्तार इन्द अक्षरिल्उ़लमाइ अन्नहू रअहू बि बस्रिही वल्लाहु आ़लम वत्तवक्कुफ़ फ़ीहा लिअदमिद्दलाइलिल्वाज़िहति अ़ला अहदिल्जानिबैनि खैर या'नी इमाम नववी (रह.) ने कहा कि अकषर उ़लमा के नज़दीक यही राजेह है कि आप (ﷺ) ने अपनी आँखों से अल्लाह तआ़ला को देखा चूँकि किसी ख़्याल की ताईद में वाज़ेह दलाइल नहीं हैं, इसलिये इस मसले में ख़ामोश रहना बेहतर है।

3236. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे अबू रजाअ ने बयान किया, उनसे समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने आज रात (ख़्वाब में) देखा कि दो शख़्स मेरे पास आए। उन दोनों ने मुझे बताया कि वो जो आग जला रहा है। वो जहन्नम का दारोग़ा मालिक नामी फ़रिश्ता है। मैं जिब्रईल (अलै.) हूँ और ये मीकाइल हैं। (राजेअ : 845)

٣٢٣٦- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو رِجَاءٍ عَنْ سَمُرَةَ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ أَتَيَانِيْ قَالاَ : الَّذِيْ يُوقِدُ النَّارَ مَالِكٌ خَازِنُ النَّارِ، وَأَنَا جِبْرِيْلُ، وَهَذَا مِيْكَائِيْلُ)).

[راجع:٨٤٥]

ये एक तवील हदीष का टुकड़ा है जो पारा नम्बर छः में गुज़र चुकी है। यहाँ उससे फ़रिश्तों का वजूद षाबित करना मक़्सूद है।

3237. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी मर्द ने अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाया, लेकिन उसने आने से इंकार कर दिया और मर्द उस पर ग़ुस्सा होकर सो गया, तो सुबह तक फ़रिश्ते उस औ़रत पर ला'नत करते रहते हैं। इस रिवायत की मुताबअ़त, अबू हम्ज़ा, इब्ने दाऊद और अबू मुआ़विया ने आ'मश के वास्ते से की है। (दीगर मक़ाम : 5193, 5194)

٣٢٣٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا قَالَ أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا دَعَا الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ إِلَى فِرَاشِهِ فَأَبَتْ، فَبَاتَ غَضْبَانَ عَلَيْهَا، لَعَنَتْهَا الْمَلاَئِكَةُ حَتَّى تُصْبِحَ)). تَابَعَهُ شُعْبَةُ وَأَبُو حَمْزَةَ وَابْنُ دَاوُدَ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ. [طرفاه في : ٥١٩٣، ٥١٩٤].

तश्रीह : अबू अ़वाना के साथ इस हदीष को शुअ़बा और अबू हम्ज़ा और अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद और अबू मुआ़विया ने भी आ'मश से रिवायत किया है। शुअ़बा की रिवायत ख़ुद मुअल्लिफ़ ने किताबुन्निकाह में वस्ल की है और अबू हम्ज़ा की रिवायत मौसूलन नहीं मिली और इब्ने दाऊद की रिवायत मुसद्दद ने अपनी बड़ी मुस्नद में वस्ल की और अबू मुआ़विया की रिवायत इमाम मुस्लिम और निसाई ने मौसूलन निकाली है।

इस हदीष को यहाँ लाने से फ़रिश्तों का वजूद षाबित करना मक़्सूद है कि वो ऐसी नाफ़र्मान औ़रत पर अल्लाह के हुक्म से रात भर ला'नत भेजते रहते हैं। इससे ये भी षाबित होता कि मर्द की इताअ़त औ़रत के लिये कितनी ज़रूरी है। मर्द की ख़्वाहिश

की क़द्र न करना औरत के लिये बदबख़्ती का सबब बन सकता है। औरत की ज़ीनत यही है कि बच्चे से उसकी गोद भरपूर हो और बच्चे के लिये मर्द से मिलाप ज़रूरी था जिसके लिये औरत ने इंकार कर दिया। मुम्किन है इसी मिलाप में उसको औलाद की नेअमत हासिल हो जाती, उसके अलावा और भी बहुत से मसालेह हैं जिनकी बिना पर औरत के लिये मर्द की इताअत ज़रूरी है। अदमे इताअत की सूरत में बहुत से फ़सादात पैदा हो सकते हैं।

3238. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको लैष ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मैंने अबू सलमा से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया था कि (पहले ग़ारे हिरा में जो हज़रत जिब्रईल अलै. मुझको सूरह इक़रा पढ़ाकर गये थे उसके बाद) मुझ पर वह्य का नुज़ूल (तीन साल) बन्द रहा। एक बार में कहीं जा रहा था कि मैंने आसमान मे से एक आवाज़ सुनी और नज़र आसमान की तरफ़ उठाई, मैंने देखा कि वही फ़रिश्ता जो ग़ारे हिरा में मेरे पास आया था (या'नी हज़रत जिब्रईल अलै.) आसमान और ज़मीन के दरम्यान एक कुर्सी पर बैठा हुआ है। मैं उन्हें देखकर इतना डर गया कि ज़मीन पर गिर पड़ा फिर मैं अपने घर आया और कहने लगा कि मुझे कुछ ओढ़ा दो, मुझे कुछ ओढ़ा दो। उसके बाद अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की। (या अय्युहल मुद्दष्षिर) अल्लाह तआला के इर्शाद, फ़हजुर तक। अबू सलमा (रज़ि.) ने कहा कि आयत में वर्रजज़ा से बुत मुराद हैं। (राजेअ : 4)

٣٢٣٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((ثُمَّ فَتَرَ عَنِّي الْوَحْيُ فَتْرَةً، فَبَيْنَا أَنَا أَمْشِي سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ، فَرَفَعْتُ بَصَرِي قِبَلَ السَّمَاءِ فَإِذَا الْمَلَكُ الَّذِيْ جَاءَنِي بِحِرَاءَ قَاعِدٌ عَلَى كُرْسِيٍّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، فَجُئِثْتُ مِنْهُ حَتَّى هَوَيْتُ إِلَى الأَرْضِ، فَجِئْتُ أَهْلِي فَقُلْتُ: زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ﴾. قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: وَالرُّجْزُ الأَوْثَانُ)).[راجع:٤]

इस्लाम के नज़दीक बुत परस्ती एक गन्दा अमल है। इसीलिये बुत परस्तों को **इन्नमल्मुश्रिकून नजसुन** (अत् तौबा : 28) कहा गया है कि शिर्क करने वाले गन्दे हैं। वो बुतों के पुजारी हों या क़ब्रों के दोनों का अल्लाह के नज़दीक एक ही दर्जा है।

3239. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरेअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अरूबा ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल आलिया ने और उनसे तुम्हारे नबी के चचाज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, शबे मेअराज में मैंने मूसा (रज़ि.) को देखा था। गन्दुमी रंग, क़द लम्बा और बाल घुँघराले थे, ऐसे लगते थे जैसे क़बीला शनुवह का कोई शख़्स हो और मैंने ईसा (अलै.) को भी देखा था।

٣٢٣٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ: وَقَالَ لِيْ خَلِيْفَةُ: قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ حَدَّثَنَا ابْنُ عَمِّ نَبِيِّكُمْ - يَعْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا - عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَيْتُ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِي مُوسَى رَجُلاً آدَمَ طُوَالاً جَعْدًا كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنُوءَةَ،

وَرَأَيْتُ عِيْسَى رَجُلاً مَرْبُوعًا، مَرْبُوعَ الْخَلْقِ إِلَى الْحُمْرَةِ وَالْبَيَاضِ، سَبْطَ الرَّأْسِ، وَرَأَيْتُ مَالِكًا خَازِنَ النَّارِ، وَالدَّجَّالَ فِي آيَاتٍ أَرَاهُنَّ اللهُ إِيَّاهُ، فَلاَ تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ. قَالَ أَنَسٌ وَأَبُوبَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: تَحْرُسُ الْمَلاَئِكَةُ الْمَدِيْنَةَ مِنَ الدَّجَّالِ)).

[طرفه في : ٣٣٩٦].

दरम्याना क़द, मियाना जिस्म, रंग सुर्ख़ी और सफ़ेदी लिये हुए और सर के बाल सीधे थे (या'नी घुंघराले नहीं थे) और मैंने जहन्नम के दारोग़ा को भी देखा और दज्जाल को भी, मिन जुम्ला इन आयात के जो अल्लाह तआला ने मुझको दिखाई थीं (सूरह सज्दा में उसी का ज़िक्र है कि) पस (ऐ नबी ﷺ!) उनसे मुलाक़ात के बारे में आप किसी क़िस्म का शक व शुब्हा न करें, या'नी मूसा (अलै.) से मिलने में। अनस और अबूबक्र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से यूँ बयान किया कि जब दज्जाल निकलेगा, तो फ़रिश्ते दज्जाल से मदीना की हिफ़ाज़त करेंगे। (दीगर मक़ाम : 3396)

उन दोनों रिवायतों को ख़ुद इमाम बुख़ारी ने किताबुल हज्ज और किताबुल फ़ितन में रिवायत किया है।

٨- بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ الْجَنَّةِ وَأَنَّهَا مَخْلُوقَةٌ

बाब 8 : जन्नत का बयान और ये बयान कि जन्नत पैदा हो चुकी है

इसी तरह दोज़ख़ दोनों मौजूद हैं, जुम्ला अहले सुन्नत का ये मुत्तफ़क़ा अक़ीदा है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं,

अय मौजूदतुन अल्आन व अशार बिज़ालिक इलर्रद्दि अला मन ज़अम मिनल मुअतजिलति अन्नहा ला तूजदु इल्ला यौमिल्क़ियामति व क़द ज़करल्बुख़ारी फिल्बाबि रिवायातुन कषीरतु दाल्लतुन अला मा तर्जम बिही फमिन्हा मा यतअल्लक़ु बिकौनिहा मौजूदतुन अल्आन व मिन्हा मा यतअल्लक़ु बिसिफ़तिहा व अस्रहु मिम्मा ज़करहू फी ज़ालिक मा अख़रजहू अहमद व अबू दाऊद बिइस्नादिन क़विय्यिन अन अबी हुरैरत अनिन्नबिय्यि (ﷺ) क़ाल लम्मा खलक़ल्लाहुल्जन्नत क़ाल लिज़िब्राइल इज़्हब फन्ज़ुर इलैहा अल्हदीष़ (फ़त्हुल बारी)

या'नी जन्नत अब मौजूद है और उसमें मुअतज़िला की तर्दीद है जो कहते हैं कि जन्नत क़यामत ही के दिन पैदा होगी। मुसन्निफ़ ने यहाँ कई अहादीष़ ज़िक्र की हैं। जिनसे जन्नत का वजूद षाबित होता है और कुछ अहादीष़ जन्नत की सिफ़ात से मुता'ल्लिक़ हैं और इस बारे में ज़्यादा स़रीह वो हदीष़ है जिसको अहमद और अबू दाऊद ने सहीह सनद के साथ रिवायत किया है कि जब अल्लाह पाक ने जन्नत को पैदा किया तो हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) से फ़र्माया कि जाओ और जन्नत को देखो।

قَالَ أَبُو الْعَالِيَةِ: ﴿مُطَهَّرَةٌ﴾: مِنَ الْحَيْضِ وَالْبَوْلِ وَالْبُزَاقِ. ﴿كُلَّمَا رُزِقُوا﴾: أُتُوا بِشَيْءٍ، ثُمَّ أُتُوا بِآخَرَ. ﴿قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ﴾: أُوتِيْنَا مِنْ قَبْلُ. ﴿وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا﴾: يُشْبِهُ بَعْضُهُ بَعْضًا وَيَخْتَلِفُ فِي الطُّعُوْمِ. ﴿قُطُوفُهَا﴾: يَقْطِفُوْنَ كَيْفَ شَاؤُوا ﴿دَانِيَةٌ﴾: قَرِيْبَةٌ. ﴿الأَرَائِكُ﴾: السُّرُرُ. وَقَالَ الْحَسَنُ: النَّضْرَةُ فِي

अबुल आलिया ने कहा (सूरह बक़र: में) जो लफ़्ज़ अज़्वाजे मुतह्हरात आया है उसका मा'नी ये है कि जन्नत की हूरें हैज़ और पेशाब और थूक और सब गन्दगियों से पाक साफ़ होंगी और जो ये आया है कुल्ल मा रुज़िक़ू मिन्हा मिन् ष़मरतिर् रिज़्क़न आख़िर आयत तक उसका मतलब ये है कि जब उनके पास एक मेवा लाया जाएगा फिर दूसरा मेवा तो जन्नती कहेंगे ये तो वही मेवा है जो हमको पहले मिल चुका है। मुतशाबिहा के मा'नी सूरत और रंग मे मिले-जुले होंगे लेकिन मज़े में जुदा जुदा होंगे (सूरह हाक़्क़ा) में) जो लफ़्ज़ क़ुतू फ़ुहा दानिया आया है उसका मतलब ये है कि बहिश्त के मेवे ऐसे नज़दीक होंगे कि बहिश्ती लोग खड़े-बैठे जिस

तरह चाहेंगे उनको तोड़ सकेंगे। दानिया का मा'नी नज़दीक के हैं, अराइका के मा'नी तख़्त के हैं, इमाम हसन बसरी ने कहा लफ़्ज़ नज़रति मुँह की ताज़गी को और लफ़्ज़ सुरूर दिल की ख़ुशी को कहते हैं। और मुजाहिद ने कहा सलसबीला के मा'नी तेज़ बहने वाली और लफ़्ज़ ग़ोल के मा'नी पेट के दर्द के हैं। युन्ज़फ़ून के मा'नी ये कि उनकी अक़्ल में फ़ितूर नहीं आएगा (जैसा कि दुनियावी शराब से आ जाता है) और हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा (सूरह नबा में) जो दिहाक़ा का लफ़्ज आया है उसके मा'नी लबालब भरे हुए के हैं। लफ़्ज़ कवाकिब के मा'नी पिस्तान उठे हुए के हैं। लफ़्ज़ रहीक़ के मा'नी जन्नत की शराब, तस्नीम वो अ़र्क़ जो बहिश्तों की शराब के ऊपर डाला जाएगा। बहिश्ती उसको पियेंगे। और लफ़्ज़ ख़िताम (सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन में) के मा'नी मुहर की मिट्टी (जिससे वहाँ की शराब की बोतलों पर मुहर लगी हुई होगी) नज़्ज़ाख़तान (सूरह रहमान में) दो जोश मारते हुए चश्मे, लफ्ज़ मौज़ूअति (सूरह वाक़िया में) का मा'नी जड़ाव बना हुआ, उसी से लफ़्ज़ व ज़ीनुन्नाक़ा निकला है। या'नी ऊँटनी की झोल वो भी बनी हुई होती है और लफ़्ज़ कूब का मा'नी जिसकी जमा अक्वाब (सूरह वाक़िया में) है, कूज़ा जिसमें न कान हो न कुण्डा और लफ़्ज़ अबारीक़ इबरीक़ की जमा वो कूज़ा जो कान और कुण्डा रखता हो। और लफ़्ज़ अ़रबा (सूरह वाक़िया मे) उ़रूब की जमा है जैसे स़बूर की जमा सुबुर आती है। मक्का वाले उ़रूब को अ़रिबतु और मदीना वाले ग़ंजा और इराक़ वाले शक्ला कहते हैं। उन सबसे वो औ़रत मुराद है जो अपने शौहर की आ़शिक़ हो। और मुजाहिद ने कहा लफ्ज़ रूह (सूरह वाक़िया में है) का मा'नी बहिश्त और फ़राख़ी रिज़्क़ के हैं। रेहान का मा'नी (जो उसी सूरह में है) रिज़्क़ के हैं और लफ्ज़ मंज़ूद (सूरह वाक़िया) का मा'नी केले के हैं। मख़्ज़ूद वे बेर जिसमें कांटा न हो मेवे के बोझ से झुका हुआ है कुछ लोग कहते हैं लफ़्ज़ अ़रब (जो सूरह वाक़िया में है) उसके मा'नी वो औ़रतें जो अपने शौहर की महबूबा हों, मस्कूब का मा'नी (जो उसी सूरह में है) बहता हुआ पानी। और लफ़्ज़ व फ़ुरुश मर्फ़ूआ (सूरह वाक़िया) का मा'नी बिछौने ऊँचे या'नी ऊपर तले बिछे हुए। लफ़्ज़ लग़्व जो उसी सूरह में है। उसके मा'नी ग़लत झूठ के हैं। लफ्ज़ ताष़ीमा जो उसी सूरह में है उसका

الْوُجُوهِ، وَالسُّرُورُ فِي الْقَلْبِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿سَلْسَبِيلًا﴾: حَدِيدَةُ الْجِرْيَةِ. ﴿غَوْلٌ﴾ : وَجَعُ الْبَطْنِ. ﴿يُنْزَفُونَ﴾ : لاَ تَذْهَبُ عُقُولُهُمْ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿دِهَاقًا﴾ : مُمْتَلِئًا. ﴿كَوَاعِبَ﴾: نَوَاهِدَ. ﴿الرَّحِيقُ﴾ : الْخَمْرُ. ﴿التَّسْنِيمِ﴾ : يَعْلُو شَرَابَ أَهْلِ الْجَنَّةِ. ﴿خِتَامُهُ﴾: طِينُهُ. ﴿مِسْكٌ﴾. ﴿نَضَّاخَتَانِ﴾: فَيَّاضَتَانِ. يُقَالُ: ﴿مَوْضُونَةٌ﴾: مَنْسُوجَةٌ. مِنْهُ ((وَضِينُ النَّاقَةِ)). وَ((الْكُوبُ)) مَا لاَ أُذُنَ لَهُ وَلاَ عُرْوَةَ. وَ((الأَبَارِيقُ)) ذَوَاتُ الآذَانِ وَالْعُرَا. ﴿عُرُبًا﴾. مُثَقَّلَةً. وَاحِدُهَا عَرُوبٌ، مِثْلُ صَبُورٍ وَصُبُرٍ. يُسَمِّيهَا أَهْلُ مَكَّةَ ((الْعَرِبَةَ)) وَأَهْلُ الْمَدِينَةِ ((الْغَنِجَةَ)) وَأَهْلُ الْعِرَاقِ ((الشَّكِلَةَ)). وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿رَوْحٌ﴾: جَنَّةٌ وَرَخَاءٌ. ﴿وَالرَّيْحَانُ﴾: الرِّزْقُ. وَ﴿الْمَنْضُودُ﴾: الْمَوْزُ. وَ﴿الْمَخْضُودُ﴾: الْمُوقَرُ حَمْلاً، وَيُقَالُ أَيْضًا: لاَ شَوْكَ لَهُ. وَالْعُرُبُ : الْمُحَبَّبَاتُ إِلَى أَزْوَاجِهِنَّ. وَيُقَالُ: ﴿مَسْكُوبٌ﴾: جَارٍ. وَ﴿فُرُشٍ مَرْفُوعَةٍ﴾ : بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ. ﴿لَغْوًا﴾: بَاطِلاً. ﴿تَأْثِيمًا﴾: كَذِبًا. ﴿أَفْنَانٌ﴾: أَغْصَانٌ. ﴿وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ﴾: مَا يُجْتَنَى قَرِيبٌ. ﴿مُدْهَامَّتَانِ﴾ : سَوْدَاوَانِ مِنَ الرِّيِّ.

मा'नी भी झूठ के हैं । लफ़्ज़ अफ़नान जो सूरह रहमान में है। उसके मा'नी शाख़ें डालियाँ और वजनल् जन्नतैनि दान का मा'नी बहुत ताज़गी और शादाबी की वजह से वो काले हो रहे होंगे।

मुज्तहिदे आज़म हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस बाब में उन अकषर अल्फ़ाज़ के मआनी व मतालिब बयान कर दिये जो जन्नत की ता'रीफ़ में कुर्आन मजीद में इस्तेमाल हुए हैं। अल्लाह पाक लिखने वाले और पढ़ने वालों को जन्नत की ये जुम्ला नेअमतें अता करे। आमीन।

3240. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई शख़्स मरता है तो (रोज़ाना) सुबह व शाम दोनों वक़्त उसका ठिकाना (जहाँ वो आख़िरत में रहेगा) उसे दिखलाया जाता है। अगर वो जन्नती है तो जन्नत में अगर वो दोज़ख़ी है तो दोज़ख़ में। (राजेअ : 1379)

٣٢٤٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا مَاتَ أَحَدُكُمْ فَإِنَّهُ يُعْرَضُ عَلَيْهِ مَقْعَدُهُ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ، فَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَمِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ. وَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَمِنْ أَهْلِ النَّارِ)).

[راجع: ١٣٧٩]

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं कि ये वाज़ेहतर दलील है कि जन्नत व दोज़ख़ उस वक़्त मौजूद हैं और वो उनके अहल को रोज़ाना दिखलाई जाती हैं, पूरा दुख़ूल क़यामत के दिन होगा।

3241. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सल्म बिन ज़रीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू रजाअ ने बयान किया और उनसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने जन्नत में झांक कर देखा तो जन्नतियों में ज़्यादती ग़रीबों की नज़र आई और मैंने दोज़ख़ में झांककर देखा तो दोज़ख़ियों में ज़्यादती औरतों की नज़र आई।

(दीगर मक़ाम : 5198, 6449, 6546)

٣٢٤١- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا سَلْمُ بْنُ زَرِيرٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اطَّلَعْتُ فِي الْجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ، وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ)).

[أطرافه في : ٥١٩٨، ٦٤٤٩، ٦٥٤٦].

जन्नत में ग़रीबों से मुवह्हिद, मुत्तबओ सुन्नत ग़रीब लोग मुराद हैं जो दीनदार मालदारों से कितने ही बरस पहले जन्नत में दाख़िल कर दिये जाएँगे और दोज़ख़ में ज़्यादा औरतें नज़र आईं, जो नाशुक्री और लान–तान करने वाली आपस में हसद और बुग़्ज़ रखने वाली होती हैं।

3242. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, कहा कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको सईद बिन

٣٢٤٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ

मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे, तो आपने फ़र्माया कि मैं ने ख़्वाब में जन्नत देखी, मैंने उसमें एक औरत को देखा जो एक महल के किनारे वुज़ू कर रही थी। मैंने पूछा कि ये महल किसका है? तो फ़रिश्तों ने बताया कि ये उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का महल है। मुझे उनकी ग़ैरत याद आई और मैं वहाँ से फ़ौरन लौट आया। ये सुनकर उमर (रज़ि.) रो दिये और कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं आपके साथ भी ग़ैरत करूँगा? (दीगर मक़ाम : 3680, 5227, 7023, 7025)

أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِذْ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي فِي الْجَنَّةِ، فَإِذَا امْرَأَةٌ تَتَوَضَّأُ إِلَى جَانِبِ قَصْرٍ، فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ فَقَالُوا: لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، فَذَكَرْتُ غَيْرَتَهُ، فَوَلَّيْتُ مُدْبِرًا. فَبَكَى عُمَرُ وَقَالَ: أَعَلَيْكَ أَغَارُ يَا رَسُولَ اللهِ)).
[أطرافه في : ٣٦٨٠، ٥٢٢٧، ٧٠٢٣، ٧٠٢٥].

तशरीह : इन सारी अहादीष़ को यहाँ लाने से हज़रत इमाम का मक़्सद जन्नत और उसकी नेअमतों का ष़ाबित करना है। नीज़ ये भी कि जन्नत महज़ कोई ख़्वाब व ख़्याल की चीज़ नहीं है बल्कि वो एक ष़ाबित और बरहक़ चीज़ है जिसको अल्लाह पाक पैदा कर चुका है और उसकी सारी मज़्कूरा नेअमतें अपना वजूद रखती हैं। इस सिलसिले मे हज़रत इमाम ने मुख़्तलिफ़ नेअमतों का ज़िक्र करते हुए जन्नत के मुख़्तलिफ़ कवाईफ़ पर इस्तिदलाल फ़र्माया है। जो लोग मुसलमान होने के बावजूद जन्नत के बारे में किसी शैतानी वस्वसा में गिरफ़्तार हों, उनको फ़ौरन तौबा करके अल्लाह और रसूल की फ़रमूदा बातों पर ईमान और यक़ीन रखना चाहिये। इससे ये भी मा'लूम हुआ कि बहिश्त मौजूद है, पैदा हो चुकी है। वहाँ हर एक जन्नती के मकानात और सामान वग़ैरह सब तैयार हैं ।

हज़रत उमर (रज़ि.) का क़त्ई जन्नती होना भी इस हदीष़ से और बहुत सी हदीषों से ष़ाबित हुआ। हज़रत उमर (रज़ि.) ख़ुशी के मारे रो दिये और ये जो कहा कि क्या मैं आप पर ग़ैरत करूँगा, उसका मतलब ये है कि आप तो मेरे बुज़ुर्ग हैं। मेरे मुरब्बी हैं। गैरत तो बराबर वाले से होती है न कि मालिक और मुरब्बी से।

3243. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू इमरान जूनी से सुना, उनसे अबूबक्र बिन अब्दुल्लाह बिन क़ैस अशअरी ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, (जन्नतियों का) ख़ैमा किया है। एक मोती है खोलदार जिसकी बुलन्दी ऊपर को तीस मील तक है। उसके हर किनारे पर मोमिन की एक बीवी होगी जिसे दूसरे न देख सकेंगे।

अबू अब्दुस्समद और हारिष़ बिन उबैद ने अबू इमरान से (बजाय तीस मील के) साठ मील बयान किया। (दीगर मक़ाम : 4879)

٣٢٤٣- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا عِمْرَانَ الْجَوْنِيَّ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ الأَشْعَرِيِّ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْمَةُ دُرَّةٌ مُجَوَّفَةٌ طُولُهَا فِي السَّمَاءِ ثَلاَثُونَ مِيْلاً فِي كُلِّ زَاوِيَةٍ مِنْهَا لِلْمُؤْمِنِ أَهْلٌ لاَ يَرَاهُمُ الآخَرُونَ)).
قَالَ أَبُوعَبْدِ الصَّمَدِ وَالْحَارِثُ بْنُ عُبَيْدٍ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ: ((سِتُّونَ مِيْلاً)).
[طرفه في : ٤٨٧٩].

3244. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला का इर्शाद है कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिये वो चीज़ें तैयार कर रखी हैं, जिन्हें न आँखों ने देखा, न कानों ने सुना और न किसी इंसान के दिल में उनका कभी ख़्याल गुज़रा है। अगर जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो, पस कोई शख़्स नहीं जानता कि उसकी आँखों की ठण्डक के लिये क्या क्या चीज़ें छुपा कर रखी गई हैं। (दीगर मक़ाम : 4779, 4780, 7498)

٣٢٤٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَالَ اللهُ: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِيْنَ مَا لاَ عَيْنٌ رَأَتْ، وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ. فَاقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ﴾.

[أطرافه في : ٤٧٧٩، ٤٧٨٠، ٧٤٩٨].

ये आयत सूरह अलिफ़ लाम मीम सज्दा में है। क़यामत के दिन ये ईमानवालों के आमाले सालिहा का बदला होगा जो बिज़्ज़रूर उनको मिलेगा।

3245. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हे हम्माम बिन मुनब्बा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में दाख़िल होने वाले सबसे पहले गिरोह के चेहरे ऐसे रोशन होंगे जैसे चौदहवीं का चाँद रोशन होता है। न उसमें थूकेंगे न उनकी नाक से कोई आलाइश आएगी और न पेशाब, पाख़ाना करेंगे। उनके बर्तन सोने के होंगे। कंघे सोने-चाँदी के होंगे। अंगेठियों का ईंधन ऊ़द का होगा। पसीना मुश्क जैसा ख़ुश्बूदार होगा और हर शख़्स की दो बीवियाँ होंगी। जिनका हुस्न ऐसा होगा कि पिण्डलियों का गुदा गोश्त के ऊपर से दिख रहा होगा। न जन्नतियों मे आपस मे कोई इख़्तिलाफ़ होगा और न बुग़्ज़ व इनाद, उनके दिल एक होंगे और सुबह व शाम अल्लाह पाक की तस्बीह व तहलील में मशग़ूल रहा करेंगे।

(दीगर मक़ाम : 3246, 3256, 3327)

٣٢٤٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَلِجُ الْجَنَّةَ صُورَتُهُمْ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ، لاَ يَبْصُقُونَ فِيْهَا وَلاَ يَمْتَخِطُونَ وَلاَ يَتَغَوَّطُونَ. آنِيَتُهُمْ فِيْهَا الذَّهَبُ، أَمْشَاطُهُمْ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَمَجَامِرُهُمُ الأَلُوَّةِ، وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ. وَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ يُرَى مُخُّ سُوقِهِمَا مِنْ وَرَاءِ اللَّحْمِ مِنَ الْحُسْنِ. لاَ اخْتِلاَفَ بَيْنَهُمْ وَلاَ تَبَاغُضَ، قُلُوبُهُمْ قَلْبٌ وَاحِدٌ، يُسَبِّحُونَ اللهَ بُكْرَةً وَعَشِيًّا)).

[أطرافه في : ٣٢٤٦، ٣٢٥٤، ٣٣٢٧].

3246. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में दाख़िल होने वाले सबसे पहले गिरोह के चेहरे

٣٢٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ

ऐसे रोशन हों गे जैसे चौदहवीं का चाँद होता है। जो गिरोह उसके बाद दाख़िल होगा उनके चेहरे सबसे ज़्यादा चमकदार सितारे जैसे रोशन होंगे। उनके दिल एक होंगे कि कोई भी इख़्तिलाफ़ उनमें आपस मे न होगा और न एक–दूसरे से बुग़्ज़ व हसद होगा। हर शख़्स की दो बीवियाँ होंगी, उनकी ख़ूबसूरती ऐसी होगी कि उनकी पिण्डलियों का गूदा गोश्त के ऊपर से दिखाई देगा। वो सुबह शाम अल्लाह की तस्बीह करते रहेंगे न उनको कोई बीमारी होगी, न उनकी नाक मे कोई आलाइश आएगी और न थूक आएगा। उनके बर्तन सोने और चाँदी के और कंघे सोने के होंगे और उनकी अंगेठियों का ईंधन अल्वा का होगा, अबुल यमान ने बयान किया कि अल्वा से ऊदे हिन्दी मुराद है। और उनका पसीना मुश्क जैसा होगा। मुजाहिद ने कहा कि इब्कार से मुराद अव्वले फ़ज्र है और वल्अशी से मुराद सूरज का इतना ढल जाना कि वो ग़ुरूब होता नज़र आने लगे। (राजेअ : 3245)

الله ﷺ قَالَ: ((أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ، وَالَّذِينَ عَلَى إِثْرِهِمْ كَأَشَدِّ كَوْكَبٍ إِضَاءَةً، قُلُوبُهُمْ عَلَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ. لاَ اخْتِلاَفَ بَيْنَهُمْ وَلاَ تَبَاغُضَ، لِكُلِّ امْرِىءٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ: كُلُّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا يُرَى مُخُّ سَاقِهَا مِنْ وَرَاءِ لَحْمِهَا مِنَ الْحُسْنِ. يُسَبِّحُونَ اللهَ بُكْرَةً وَعَشِيًّا. وَلاَ يَسْقَمُونَ، وَلاَ يَمْتَخِطُونَ وَلاَ يَبْصُقُونَ. آنِيَتُهُمُ الذَّهَبُ وَالْفِضَّةُ، وَأَمْشَاطُهُمُ الذَّهَبُ، وَقُودُ مَجَامِرِهِمُ الأَلُوَّةُ – قَالَ أَبُو الْيَمَانِ: يَعْنِي الْعُودَ – وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ)). وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الإِبْكَارُ أَوَّلُ الْفَجْرِ، وَالْعَشِيُّ مَيْلُ الشَّمْسِ أَنْ تَغْرُبَ.

[راجع: ٣٢٤٥]

3247. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र मुक़द्दमी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार या (आपने ये फ़र्माया कि) सात लाख की एक जमाअ़त जन्नत में एक ही वक़्त में दाख़िल होंगी और उन सबके चेहरे ऐसे चमकेंगे जैसे चौदहवीं का चाँद चमकता है। (दीगर मक़ाम : 6543, 6554)

٣٢٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيَدْخُلَنَّ مِنْ أُمَّتِي سَبْعُونَ أَلْفًا – أَوْ سَبْعُمِائَةِ أَلْفٍ – لاَ يَدْخُلُ أَوَّلُهُمْ حَتَّى يَدْخُلَ آخِرُهُمْ، وُجُوهُهُمْ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ)).

[طرفاه في : ٦٥٤٣، ٦٥٥٤].

3248. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ज़अ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे शैबान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में सुन्दस (एक ख़ास क़िस्म का रेशम) का एक जुब्बा

٣٢٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((أُهْدِيَ لِلنَّبِيِّ ﷺ

जُبَّةُ سُنْدُسٍ، وَكَانَ يَنْهَى عَنِ الْحَرِيْرِ، فَعَجِبَ النَّاسُ مِنْهَا، فَقَالَ: ((وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، لَمَنَادِيْلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الْجَنَّةِ أَحْسَنُ مِنْ هَذَا)).[راجع: ٢٦١٥]

तोहफ़ा मे पेश किया गया। आप (मर्दों के लिये) रेशम के इस्ते'माल से पहले ही मना फ़र्मा चुका थे। लोगों ने इस जुब्बे को बहुत ही पसन्द किया, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के रूमाल इससे बेहतर होंगे। (राजेअ : 2615)

٣٢٤٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ سُفْيَانَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِثَوْبٍ مِنْ حَرِيْرٍ، فَجَعَلُوا يَعْجَبُوْنَ مِنْ حُسْنِهِ وَلِيْنِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَمَنَادِيْلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الْجَنَّةِ أَفْضَلُ مِنْ هَذَا)).

[أطرافه في : ٣٨٠٢، ٥٨٣٦، ٦٦٤٠].

3249. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि रसूलुल्लाह की ख़िदमत में रेशम का एक कपड़ा पेश किया गया उसकी ख़ूबसूरती और नज़ाकत ने लोगों को हैरत में डाल दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में सअद बिन मुआज़ के रूमाल इससे बेहतर और अफ़ज़ल हैं। (दीगर मक़ाम : 3802, 5836, 6640)

आँहज़रत (ﷺ) का इर्शाद ये था कि दुनिया की कोई बड़ी से बड़ी नेअमत एक जन्नती के नाक मुँह पूँछने के रूमाल से ज़्यादा कोई क़द्र व क़ीमत नहीं रखती।

٣٢٥٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَوْضِعُ سَوْطٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا)). [راجع: ٢٧٩٤]

3250. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में एक कोड़े की जगह दुनिया से और जो कुछ दुनिया में है, सबसे बेहतर है। (राजेअ : 2794)

٣٢٥١- حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عَبْدِ الْمُؤْمِنِ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيْرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لاَ يَقْطَعُهَا)).

3251. हमसे रौह बिन अब्दुल मोमिन ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरेअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में एक पेड़ है जिसके साये में एक सवार सौ साल तक चल सकता है और फिर भी उसको तय न कर सकेगा।

सूरह वाक़िया में अल्लाह पाक ने जन्नत के साये के बारे में फ़र्माया, **वज़िल्लिम् मम्दूद** (अल् वाक़िया : 30) या'नी वहाँ पेड़ों

का साया दूर–दराज़ तक फैला हुआ होगा। या अल्लाह हम सब इस किताब के क़द्रदानों को जन्नत का वो साया अ़ता फ़र्मा।

अहादीष़ व आयात से रोज़े–रोशन की तरह वाज़ेह है कि जन्नत एक मुजस्सम ह़क़ीक़त का नाम है जो लोग जन्नत को महज़ ख़्वाब व ख़्याल की ह़द तक मानते हैं वो ख़तरनाक ग़लती में मुब्तला हैं। ऐसे ग़लत ख़्याल वालों के लिये अगर जन्नत महज़ एक ख़्वाब नाक़ाबिले ता'बीर ही बनकर रह जाए तो अ़जब नहीं है, **अल्लाहुम्म ला तज्अ़ल्ना मिन्हुम आमीन।**

٣٢٥٢– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا هِلاَلُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَمْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيْرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ سَنَةٍ، وَاقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ : ﴿وَظِلٍّ مَمْدُوْدٍ﴾.

[طرفه في: ٤٨٨١].

3252. हमसे मुह़म्मद बिन सिनान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अ़ली ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी अ़म्र ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में एक पेड़ है जिसके साये में एक सवार सौ साल तक चल सकेगा और अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो, व ज़िल्लिम् मम्दूद और लम्बा साया।

(दीगर मक़ाम : 4881)

٣٢٥٣– ((وَلَقَابُ قَوْسِ أَحَدِكُمْ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ أَوْ تَغْرُبُ)). [راجع:٢٧٩٣]

3253. और किसी शख़्स के लिये एक कमान के बराबर जन्नत में जगह इस पूरी दुनिया से बेहतर है जिस पर सूरज तुलूअ़ और ग़ुरूब होता है। (राजेअ़ : 2793)

٣٢٥٤– حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ هِلاَلٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُوْرَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ، وَالَّذِيْنَ عَلَى آثَارِهِمْ كَأَحْسَنِ كَوْكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ إِضَاءَةً، قُلُوبُهُمْ عَلَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ، لاَ تَبَاغُضَ بَيْنَهُمْ وَلاَ تَحَاسُدَ، لِكُلِّ امْرِىءٍ زَوْجَتَانِ مِنَ الْحُوْرِ الْعِيْنِ، يُرَى مُخُّ سُوقِهِنَّ مِنْ وَرَاءِ الْعَظْمِ وَاللَّحْمِ)).

3254. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन फ़ुलैह़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे बाप ने बयान किया, उनसे हिलाल ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी अ़म्र ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि सबसे पहला गिरोह वो जो जन्नत में दाख़िल होगा। उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाद की तरह रोशन होंगे। जो गिरोह उसके बाद दाख़िल होगा उनके चेहरे आसमान पर मोती की तरह चमकने वाले सितारों में जो सबसे ज़्यादा रोशन सितारा होता है इस जैसे रोशन होंगे, सबके दिल एक जैसे होंगे न उनमें बुग़्ज़ व फ़साद होगा और न ह़सद, हर जन्नती की दो हूरें ऐ़न बीवियाँ होगी, इतनी ह़सीन कि उनकी पिण्डली की हड्डी और गोश्त के अंदर का गूदा भी देखा जा सकेगा।

٣٢٥٥– حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ

3255. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे

शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अदी बिन ष़ाबित ने ख़बर दी, कहा कि मैं ने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के (साहबज़ादे) इब्राहीम (रज़ि.) का इंतिक़ाल हुआ, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत मे उसे एक दूध पिलाने वाली अना के हवाले कर दिया गया है (जो उनको दूध पिलाती है)। (राजेअ़ : 1382)

حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ أَخْبَرَنِي قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَمَّا مَاتَ إِبْرَاهِيْمُ قَالَ : إِنَّ لَهُ مُرْضِعًا فِي الْجَنَّةِ)).

[راجع:١٣٨٢]

3256. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक बिन अनस (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे स़फ़्वान बिन सुलैम ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नती लोग अपने से बुलन्द कमरे वालों को ऊपर इसी त़रह देखेंगे जैसे चमकते सितारे को जो सुबह के वक़्त रह गया हो, आसमान के किनारे पूरब या पश्चिम में देखते हैं। उनमें एक—दूसरे से अफ़ज़ल होगा। लोगों ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये तो अंबिया के महल होंगे जिन्हें उनके सिवा और कोई न पा सकेगा। आपने फ़र्माया कि नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। ये उन लोगों के लिये होंगे जो अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाए और अंबिया की तस्दीक़ की।

(दीगर मक़ाम : 6556)

٣٢٥٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ يَتَرَاءَوْنَ أَهْلَ الْغُرَفِ مِنْ فَوْقِهِمْ كَمَا يَتَرَاءَوْنَ الْكَوْكَبَ الدُّرِّيَّ الْغَابِرَ فِي الأُفُقِ مِنَ الْمَشْرِقِ أَوِ الْمَغْرِبِ، لِتَفَاضُلِ مَا بَيْنَهُمْ. قَالُوا : يَا رَسُولَ اللهِ، تِلْكَ مَنَازِلُ الأَنْبِيَاءِ لاَ يَبْلُغُهَا غَيْرُهُمْ؟ قَالَ: بَلَى وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، رِجَالٌ آمَنُوا بِاللهِ وَصَدَّقُوا الْمُرْسَلِيْنَ)).

[طرفه في : ٦٥٥٦].

जो लोग दुनिया में अंबियाई तरीक़े-कार पर पर कारबन्द रहे और इस्लाम क़ुबूल करके आ़माले स़ालिहा में ज़िन्दगी गुज़ारी, ये महल उन ही के होंगे, अल्लाहुम्म अज्अ़ल्ना मिन्हुम आमीन.

बाब 9 : जन्नत के दरवाज़ों का बयान

٩- بَابُ صِفَةِ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने (अल्लाह के रास्ते मे किसी चीज़ का) एक जोड़ा ख़र्च किया, उसे जन्नत के दरवाज़े से बुलाया जाएगा उस बाब में उ़बादा बिन स़ामित ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है।

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الْجَنَّةِ)) فِيْهِ عُبَادَةُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

3257. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन मुत़र्रिफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअ़द स़ाएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। उनमें एक दरवाज़े का नाम रय्यान है। जिससे दाख़िल होने वाले

٣٢٥٧- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُطَرِّفٍ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((فِي الْجَنَّةِ ثَمَانِيَةُ

सिर्फ़ रोज़ेदार होंगे। (राजेअ : 1896)

أبْوَاب، فِيهَا بَابٌ يُسَمَّى الرَّيَّانُ لاَ يَدْخُلُهُ إِلاَّ الصَّائِمُونَ)). [راجع:١٨٩٦]

बाब 10 : दोज़ख़ का बयान और ये बयान कि दोज़ख़ बन चुकी है, वो मौजूद है

١٠- بَابُ صِفَةِ النَّارِ وَأَنَّهَا مَخْلُوقَةٌ

सूरह नबा मे जो लफ़्ज़ ग़साक़ा आया है उसका मा'नी पीप लहू, अरब लोग कहते हैं ग़स्क़त अयनुहू उसकी आँख बह रही है यग़्सिक़ुल जरह ज़ख़्म बह रहा है। ग़स्साक़ और ग़सीक़ दोनों के एक ही मा'नी हैं। ग़िस्लीन का लफ़्ज़ जो सूरह हाक़्क़ा में है उसका मा'नी धोवन या'नी किसी चीज़ के धोने में जैसे आदमी का ज़ख़्म हो या ऊँट का जो निकले फ़िअ़लीन के वज़न पर ग़ुस्ल से मुश्तक़ है। इक्रिमा ने कहा ह़सब का लफ़्ज़ जो सूरह अंबिया में है मा'नी ह़तब या'नी ईंधन के हैं। ये लफ़्ज़ ह़ब्शी ज़ुबान का है दूसरों ने कहा, ह़ासिबन का मा'नी जो सूरह बनी इस्राईल में है तुन्द हुआ, आँधील और ह़ासिब उसको भी कहते हैं जो हवा उड़ाकर लाए। उसी से लफ़्ज़ ह़सब जहन्नम निकला है जो सूरह अंबिया में है। या'नी दोज़ख़ में झोंके जाएँगे वो उसके ईंधन बनेंगे। अरब लोग कहते हैं ह़सब फ़िल् अरज़ि या'नी वो ज़मीन में चला गया। ह़सब ह़स्बाअ से निकला है।या'नी पथरीली कंकरियाँ। स़दीद का लफ़्ज़ जो सूरह इब्राहीम में है उसका मा'नी पीप और लहू के हैं। ख़बत का लफ़्ज़ जो सूरह बनी इस्राईल में है उसका मा'नी बुझ जाएगी। तूरून का लफ़्ज़ जो सूरह वाक़िया मे है उसका मा'नी आग सुलगाते हो, कहते हैं अवरैतु या'नी मैंने आग सुलगाई। मुक़्वीन का लफ़्ज़ जो सूरह वाक़िया में है ये लफ़्ज़ क़ै से निकला है। क़ै उजाड़ ज़मीन को कहते हैं और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने सिवाउल जहीम की तफ़्सीर में कहा जो सूरह स़ाफ़्फ़ात में है दोज़ख़ का बीचो-बीच का हिस्सा, लशौबा मिन ह़मीम (जो इसी सूरह में है) उसका मा'नी ये है कि दोज़ख़ियों के खाने में गर्म खोलता हुआ पानी मिलाया जाएगा। अल्फ़ाज़ ज़फ़ीर और शहीक़ जो सूरह हूद में हैं उनके मा'नी आवाज़ से रोना और आहिस्ता से रोना, लफ़्ज़ वरदा जो सूरह मरयम में है या'नी प्यासे, लफ़्ज़ ग़या जो इसी सूरह में है। या'नी टूटा नुक़्स़ान, और मुजाहिद

﴿غَسَّاقًا﴾: يُقَالُ غَسَقَتْ عَيْنُهُ. وَيَغْسِقُ الْجُرْحُ. وَكَأَنَّ الْغَسَاقَ وَالْغَسِيقَ وَاحِدٌ. ﴿غِسْلِينٍ﴾: كُلُّ شَيْءٍ غَسَلْتَهُ فَخَرَجَ مِنْهُ شَيْءٌ فَهُوَ غِسْلِينٌ. فِعْلِينٌ مِنَ الْغَسْلِ، مِنَ الْجُرْحِ وَالدَّبَرِ. وَقَالَ عِكْرِمَةُ: ﴿حَصَبُ جَهَنَّمَ﴾: حَطَبُ بِالْحَبَشِيَّةِ. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿حَاصِبًا﴾: الرِّيحُ الْعَاصِفُ، وَالْحَاصِبُ مَا تَرْمِي بِهِ الرِّيحُ. وَمِنْهُ حَصَبُ جَهَنَّمَ: يُرْمَى بِهِ فِي جَهَنَّمَ. هُمْ حَصَبُهَا. وَيُقَالُ : حَصَبَ فِي الأَرْضِ ذَهَبَ، وَالْحَصَبُ مُشْتَقٌّ مِنْ حَصْبَاءِ الْحِجَارَةِ. ﴿صَدِيدٌ﴾: قَيْحٌ وَدَمٌ. ﴿خَبَتْ﴾: طَفِئَتْ. ﴿تُورُونَ﴾: تَسْتَخْرِجُونَ أَوْرَيْتُ، أَوْقَدْتُ. ﴿لِلْمُقْوِينَ﴾: لِلْمُسَافِرِينَ. وَالْقِيُّ: الْقَفْرُ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿صِرَاطُ الْجَحِيمِ﴾: سَوَاءُ الْجَحِيمِ وَوَسَطُ الْجَحِيمِ. ﴿لَشَوْبًا مِنْ حَمِيمٍ﴾: يُخْلَطُ طَعَامُهُمْ وَيُسَاطُ بِالْحَمِيمِ. ﴿زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ﴾: صَوْتٌ شَدِيدٌ وَصَوْتٌ ضَعِيفٌ. ﴿وِرْدًا﴾: عِطَاشًا. ﴿غَيًّا﴾: خُسْرَانًا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿يُسْجَرُونَ﴾: تُوقَدُ بِهِمُ النَّارُ. ﴿وَنُحَاسٌ﴾: الصُّفْرُ

يُصَبُّ عَلَى رُؤُوسِهِمْ. ﴿يُقَالُ ذُوقُوا﴾: بَاشِرُوا وَجَرِّبُوا، وَلَيْسَ هَذَا مِنْ ذَوْقِ الْفَمِ. ﴿مَارِجٍ﴾ : خَالِصٌ مِنَ النَّارِ، مَرَجَ الأَمِيْرُ رَعِيَّتَهُ إِذَا خَلاَّهُمْ يَعْدُو بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ. ﴿مَرِيْجٍ﴾: مُلْتَبِسٌ. مَرَجَ أَمْرُ النَّاسِ: اخْتَلَطَ. ﴿مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ﴾: مَرَجْتَ دَابَّتَكَ تَرَكْتَهَا.

ने कहा लफ़्ज़ युस्जरून जो सूरह मोमिन में है, या'नी आग का ईंधन बनेंगे। लफ़्ज़ नुहास जो सूरह रहमान में है उसका मा'नी तांबा जो पिघलाकर उनके सिरों पर डाला जाएगा। लफ़्ज़ ज़ूक़ू जो कई सूरतों में आया है उसका मा'नी ये है कि अज़ाब को देखो, मुँह से चखना मुराद नहीं है। लफ़्ज़ मआरिज जो सूरह रहमान में है या'नी ख़ालिस आग। अरब लोग कहते हैं, मरजल अमीरु रइय्यतहू या'नी बादशाह अपनी रइय्यत को छोड़ बैठा, वो एक-दूसरे पर ज़ुल्म कर रहे हैं। लफ़्ज़ मरीज जो सूरह क़ाफ़ में है, या'नी मिला हुआ, मुश्तबह कहते हैं मरज अम्रुन्नास अख़्तलत या'नी लोगों का मामला सब ख़लत-मलत हो गया। लफ़्ज़ मरजल बहरैनि जो सूरह रहमान में है मरज्त दाब्बतक से निकला है, या'नी तू ने अपना जानवर छोड़ दिया है।

٣٢٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُهَاجِرٍ أَبِي الْحَسَنِ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ وَهْبٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ : ((كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَقَالَ : أَبْرِدْ، ثُمَّ قَالَ : أَبْرِدْ، حَتَّى فَاءَ الْفَيْءُ - يَعْنِي لِلتُّلُولِ - ثُمَّ قَالَ: أَبْرِدُوا بِالصَّلاَةِ. فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ))

[راجع: ٥٣٥]

3258. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहाजिर अबुल हसन ने बयान किया कि मैंने ज़ैद बिन वहब से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अबू ज़र्र (रज़ि.) से सुना वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) एक सफ़र में थे (जब हज़रत बिलाल रज़ि. ज़ुहर की अज़ान देने उठे तो) आपने फ़र्माया कि वक़्त ज़रा ठण्डा हो लेने दो, फिर दोबारा (जब वो अज़ान के लिये उठे तो फिर) आपने उन्हें यही हुक्म दिया कि वक़्त और ठण्डा हो लेने दो, यहाँ तक कि टीलों के नीचे से साया ढल गया, उसके बाद आपने फ़र्माया कि नमाज़ ठण्डे औक़ात में पढ़ा करो क्योंकि गर्मी की शिद्दत जहन्नम की भाप से पैदा होती है। (राजेअ: 535)

٣٢٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ ذَكْوَانَ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَبْرِدُوا بِالصَّلاَةِ، فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ)).

[راجع: ٥٣٨]

3259. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे ज़क्वान ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, नमाज़ ठण्डे वक़्त में पढ़ा करो, क्योंकि गर्मी शिद्दते जहन्नम की भाप से पैदा होती है। (राजेअ: 538)

٣٢٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو

3260. हमसे अबुल यमान ने बयान किया कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू

सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जहन्नम ने अपने रब के हुज़ूर में शिकायत की और कहा कि मेरे रब! मेरे ही कुछ हिस़्से ने कुछ को खा लिया है। अल्लाह तआ़ला ने उसे दो सांसों की इजाज़त दी, एक सांस जाड़े में और एक गर्मी में। तुम इंतिहाई गर्मी और इंतिहाई सर्दी जो उन मौसमों में देखते हो, उसका यही सबब है। (राजेअ़ : 537)

سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اشْتَكَتِ النَّارُ إِلَى رَبِّهَا فَقَالَتْ: رَبِّ أَكَلَ بَعْضِي بَعْضًا، فَأَذِنَ لَهَا بِنَفَسَيْنِ: نَفَسٍ فِي الشِّتَاءِ وَنَفَسٍ فِي الصَّيْفِ، فَأَشَدُّ مَا تَجِدُونَ فِي الْحَرِّ، وَأَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الزَّمْهَرِيْرِ)). [راجع: ٥٣٧]

तश्रीह : ये अस्बाब बातिनी हैं। जिनको जैसे रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, इसी त़रह तस्लीम कर लेना और मज़ीद कुरेद न करना ही अहले ईमान के लिये ज़रूरी है जो लोग उमूरे बातिन को अपनी मह़दूद अ़क़्ल के पैमाने से नापना चाहते हैं, उनको सिवाय घाटे और ईमान में ख़राबी के और कुछ ह़ासिल नहीं होता। मुंकिरीने ह़दीष़ ने अपनी कोरे बातिनी की बिना पर ऐसी अह़ादीष़ को ख़ुसूसियत से तन्क़ीद का निशाना बनाया है वो इतना नहीं समझ पाते कि ऐसे इस्तिआ़रात ख़ुद क़ुर्आन करीम में भी बहुत जगह इस्ते'माल किये गये हैं जैसे इर्शाद है **इन मिन शैइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व लाकिल्ला तफ़्क़हून तस्बीहहुम** (बनी इस्राईल : 44) या'नी कायनात की हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह़ पढ़ती है मगर तुम उनकी कैफ़ियत नहीं समझ सकते। या जैसे आयत **यौम नक़ूल लिजहन्नम हलिम्तलति व तक़ूलु हल मिम्मज़ीद** (क़ाफ़ : 30) में नार व दोज़ख़ का कलाम करना मज़्कूर है। मुंकिरीने ह़दीष़ जो मह़ज़ क़ुर्आन पर ईमान का दा'वा करते हैं वो ऐसे क़ुर्आनी इस्तिआ़रात के बारे में क्या तन्क़ीद करेंगे।

ष़ाबित हुआ कि आ़लमे बरज़ख़ बातिनी, आ़लम आख़िरत, आ़लमे जन्नत उन सबके लिये जो जो कवाइफ़ जिन जिन लफ़्ज़ों में क़ुर्आन व ह़दीष़ में वारिद हुए हैं उनको उनके ज़ाहिरी मआ़नी की ह़द तक तस्लीम करके आगे ज़ुबान बन्द करना ईमान वालों की शान है यही लोग रासिख़ीन फ़िल् इल्म और यही लोग अल्लाह के नज़दीक समझदार हैं। जअ़ल्नल्लाहु मिन्हुम आमीन!

3261. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़मिर अ़ब्दुल मलिक अ़क़्दी ने बयान किया, उनसे हम्माम बिन यह़्या ने बयान किया, उनसे अबू जमरह नस़र बिन इमरान स़बई ने बयान किया कि मैं मक्का में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में बैठा करता था। वहाँ मुझे बुख़ार आने लगा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि इस बुख़ार को ज़मज़म के पानी से ठण्डा कर, क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जहन्नम की भाप के अष़र से आता है, इसलिये इसे पानी से ठण्डा कर लिया करो या ये फ़र्माया कि ज़मज़म के पानी से। ये शक हम्माम रावी को हुआ है।

٣٢٦١- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ هُوَ الْعَقَدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ الضُّبَعِيِّ قَالَ: كُنْتُ أُجَالِسُ ابْنَ عَبَّاسٍ بِمَكَّةَ، فَأَخَذَتْنِي الْحُمَّى فَقَالَ: أَبْرِدْهَا عَنْكَ بِمَاءِ زَمْزَمَ، فَإِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ، فَأَبْرِدُوهَا بِالْمَاءِ، أَوْ قَالَ: بِمَاءِ زَمْزَمَ. شَكَّ هَمَّامٌ)).

स़फ़रावी बुख़ारात में ठण्डे पानी से ग़ुस्ल करना मुफ़ीद है। आजकल शदीद बुख़ार की ह़ालत में डॉक्टर बर्फ का इस्ते'माल कराते हैं। लिहाज़ा आबे ज़मज़म के बारे में जो कहा गया है, वो बिलकुल सिद्क़ और स़वाब है। बुख़ार की ह़रारत भी एक ह़रारत है जिसे दोज़ख़ की ह़रारत का हिस़्सा क़रार देना बईद अज़्अ़क़्ल नहीं है। फ़फ़हम।

3262. मुझसे अ़म्र बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन महदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने, उनसे उ़बाया बिन रिफ़ाआ़ ने बयान किया, कहा मुझको राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने ख़बर दी कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया था कि बुख़ार जहन्नम के जोश मारने के अष़र से होता है इसलिये इसे पानी से ठण्डा कर लिया करो। (दीगर मक़ाम : 5723)

٣٢٦٢- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْحُمَّى مِنْ فَوْرِ جَهَنَّمَ، فَأَبْرِدُوهَا عَنْكُمْ بِالْمَاءِ)).

[طرفه في :٥٧٢٣].

3263. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबेर ने बयान किया, और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बुख़ार जहन्नम की भाप के अष़र से होता है इसे पानी से ठण्डा कर लिया करो। (दीगर मक़ाम : 5725)

٣٢٦٣- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ، فَأَبْرِدُوهَا بِالْمَاءِ)).[طرفه في: ٥٧٢٥].

3264. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बुख़ार जहन्नम की भाप के अष़र से होता है इसलिये इसे पानी से ठण्डा कर लिया करो। (दीगर मक़ाम : 5723)

٣٢٦٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ، فَأَبْرِدُوهَا بِالْمَاءِ)).[طرفه في: ٥٧٢٣].

3265. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हारी (दुनिया की) आग जहन्नम की आग के मुक़ाबले में (अपनी गर्मी और हलाकतख़ेज़ी में) सत्तरवाँ हिस़्सा है। किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह! (कुफ़्फ़ार और गुनाहगारों के अ़ज़ाब के लिये तो) ये हमारी दुनिया की आग भी बहुत थी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि दुनिया की आग के मुक़ाबले में जहन्नम की आग उनहत्तर गुना बढ़कर है।

٣٢٦٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((نَارُكُمْ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ. قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً، قَالَ: فُضِّلَتْ عَلَيْهِنَّ بِتِسْعَةٍ وَسِتِّينَ جُزْءًا كُلُّهُنَّ مِثْلُ حَرِّهَا)).

3266. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने,

٣٢٦٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ عَطَاءً يُخْبِرُ

عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَعْلَى عَنْ أَبِيْهِ: ((سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ عَلَى الْمِنْبَرِ: ((وَنَادَوا يَا مَالِكُ)).[راجع: ٣٢٣٠]

उन्होंने अ़ता से सुना, उन्होंने स़फ़्वान बिन यअ़ला से ख़बर दी। उन्होंने अपने वालिद के वास्ते से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को मिम्बर पर इस त़रह़ आयत पढ़ते सुना। व नादौ या मालिक (और वो दोज़ख़ी पुकारेंगे, ऐ मालिक!)। (राजेअ़ : 3230)

٣٢٦٧- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قِيْلَ لأُسَامَةَ لَوْ أَتَيْتَ فُلاَنًا فَكَلَّمْتَهُ، قَالَ: إِنَّكُمْ لَتَرَوْنَ أَنِّي لاَ أُكَلِّمُهُ إِلاَّ أُسْمِعُكُمْ، إِنِّي أُكَلِّمُهُ فِي السِّرِّ دُونَ أَنْ أَفْتَحَ بَابًا أَكُونُ أَوَّلَ مَنْ فَتَحَهُ، وَلاَ أَقُولُ لِرَجُلٍ - أَنْ كَانَ عَلَيَّ أَمِيْرًا - إِنَّهُ خَيْرُ النَّاسِ، بَعْدَ شَيْءٍ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا: وَمَا سَمِعْتَهُ يَقُولُ: قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((يُجَاءُ بِالرَّجُلِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ، فَتَنْدَلِقُ أَقْتَابُهُ فِي النَّارِ، فَيَدُورُ كَمَا يَدُورُ الْحِمَارُ بِرَحَاهُ، فَيَجْتَمِعُ أَهْلُ النَّارِ عَلَيْهِ فَيَقُولُونَ أَيْ فُلاَنُ مَا شَأْنُكَ؟ أَلَيْسَ كُنْتَ تَأْمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ؟ قَالَ: كُنْتُ آمُرُكُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَلاَ آتِيْهِ، وَأَنْهَاكُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَآتِيْهِ))، رَوَاهُ غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنِ الأَعْمَشِ.

[طرفه في: ٧٠٩٨].

3267. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से किसी ने कहा कि अगर आप फ़लाँ स़ाहब (उ़ष़्मान रज़ि.) के यहाँ जाकर उनसे बातचीत करो तो अच्छा है (ताकि वो ये फ़साद दबाने की तदबीर करें) उन्होंने कहा क्या तुम लोग ये समझते हो कि मैं उनसे तुमको सुनाकर (तुम्हारे सामने ही) बात करता हूँ, मैं तन्हाई में उनसे बातचीत करता हूँ इस त़रह़ पर कि फ़साद का दरवाज़ा नहीं खोलता, मैं ये भी नहीं चाहता कि सबसे पहले मैं फ़साद का दरवाज़ा खोलूँ और मैं आँह़ज़रत (ﷺ) से एक ह़दीष़ सुनने के बाद ये भी नहीं कहता कि जो शख़्स़ मेरे ऊपर सरदार हो वो सब लोगों में बेहतर है। लोगों ने पूछा कि आपने आँह़ज़रत (ﷺ) से जो ह़दीष़ सुनी है वो क्या है? ह़ज़रत उसामा ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) को मैंने ये फ़र्माते सुना था कि क़यामत के दिन एक शख़्स़ को लाया जाएगा और जहन्नम में डाल दिया जाएगा। आग में उसकी आंतें बाहर निकल आएँगी और वो शख़्स़ इस तरह़ चक्कर काटने लगेगा जैसे गधा अपनी चक्की पर गर्दिश किया करता है। जहन्नम में डाले जाने वाले उसके क़रीब आकर जमा हो जाएँगे और उससे कहेंगे, ऐ फ़लाँ! आज ये तुम्हारी क्या ह़ालत है? क्या तुम हमें अच्छे काम करने के लिये नहीं कहते थे, और क्या तुम बुरे कामों से हमे मना नहीं करते थे? वो शख़्स़ कहेगा जी हाँ, मैं तुम्हें अच्छे कामों के करने का हुक्म देता था लेकिन मैं ख़ुद नहीं करता था। बुरे कामों से तुम्हें मना भी करता था, लेकिन मैं ख़ुद किया करता था। इस ह़दीष़ को गुन्दर ने भी शुअ़बा से, उन्होंने आ'मश से रिवायत किया है। (दीगर मक़ाम : 7098)

١١- بَابُ صِفَةِ إِبْلِيْسَ وَجُنُودِهِ

बाब 11 : इब्लीस और उसकी फ़ौज का बयान

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿يُقْذَفُونَ﴾: يُرْمَوْنَ. ﴿دُحُورًا﴾: مَطْرُودِينَ. ﴿وَاصِبٌ﴾: دَائِمٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿مَدْحُورًا﴾: مَطْرُودًا، يُقَالُ: ﴿مَرِيدًا﴾: مُتَمَرِّدًا. بَتَّكَهُ: قَطَّعَهُ. ﴿وَاسْتَفْزِزْ﴾: اسْتَخِفَّ. ﴿بِخَيْلِكَ﴾: الْفُرْسَانِ. وَالرَّجْلُ: الرَّجَّالَةُ، وَاحِدُهَا رَاجِلٌ، مِثْلُ صَاحِبٍ وَصَحْبٍ، وَتَاجِرٍ وَتَجْرٍ. ﴿لأَحْتَنِكَنَّ﴾: لأَسْتَأْصِلَنَّ. ﴿قَرِينٌ﴾: شَيْطَانٌ.

और मुजाहिद ने कहा (सूरह वस्साफ़्फ़ात में) लफ़्ज़ युक़्ज़फ़ून का मा'नी फेंके जाते हैं (इसी सूरह में) दुहूरा के मा'नी धुत्कारे हुए के हैं। इसी सूरह में लफ़्ज़ वासिब का मा'नी हमेशा का है और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा (सूरह अअ़राफ़ में) लफ़्ज़ मदहूरा का मा'नी धुत्कारा हुआ, मर्दूद (और सूरह निसा में) मरीदा का मा'नी मुतमर्रद व शरीर के हैं। इसी सूरह में फ़ल् यब्तकुन बतक से निकला है या'नी चीरा, काटा। (सूरह बनी इस्राईल में) वस्तफ़्ज़िज़ का मा'नी उनको हल्का कर दे। इसी सूरह में ख़ैल का मा'नी सवार और रजुल या'नी प्यादे। या'नी अर्रजालतु इसका मुफ़रद राजिल जैसे सहब का मुफ़रद साहब और तजर का मुफ़रद ताजिर इसी सूरह में लफ़्ज़ ल अह्तनिकन्ना का मा'नी जड़ से उखाड़ दूँगा। सूरह साफ़्फ़ात में लफ़्ज़ क़रीन के मा'नी शैतान के हैं।

तश्रीह : ये बाब लाकर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उन मुलाहिदा का रद्द किया जो शैतान के वजूद का इंकार करते हैं और कहते हैं कि हमारा नफ़्स ही शैतान है बाक़ी इबलीस का अलग से कोई वजूद नहीं है। क़स्तलानी ने कहा इबलीस एक शख़्स है रूहानी जो आग से पैदा हुआ है और वो जिन्नों और शैतानों का बाप है। जैसे आदम आदमियों के बाप हैं। कुछ ने कहा वो फ़रिश्तों में से था अल्लाह की नाफ़र्मानी से मर्दूद हो गया और जिन्नों की फ़ेहरिस्त मे दाख़िल किया गया।

٣٢٦٨- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عِيسَى عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((سُحِرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)). وَقَالَ اللَّيْثُ: كَتَبَ إِلَيَّ هِشَامٌ أَنَّهُ سَمِعَهُ وَوَعَاهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((سُحِرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَانَ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ يَفْعَلُ الشَّيْءَ وَمَا يَفْعَلُهُ، حَتَّى كَانَ ذَاتَ يَوْمٍ دَعَا وَدَعَا ثُمَّ قَالَ: أَشَعَرْتِ أَنَّ اللهَ أَفْتَانِي فِيمَا فِيهِ شِفَائِي؟ أَتَانِي رَجُلاَنِ فَقَعَدَ أَحَدُهُمَا عِنْدَ رَأْسِي وَالآخَرُ عِنْدَ رِجْلَيَّ، فَقَالَ أَحَدُهُمَا لِلآخَرِ: مَا وَجَعُ الرَّجُلِ؟ قَالَ: مَطْبُوبٌ. قَالَ: وَمَنْ طَبَّهُ؟

3268. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) पर (जब आप ﷺ हुदैबिया से लौटे थे) जादू हुआ था। लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया कि मुझे हिशाम ने लिखा था, उन्होंने अपने वालिद से सुना था और याद रखा था और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया था कि नबी करीम (ﷺ) पर जादू किया गया था। आपके ज़हन में ये बात होती थी कि फ़लाँ काम मैं कर रहा हूँ हालाँकि आप उसे न कर रहे होते। आख़िर एक दिन आपने दुआ की फिर दुआ की कि अल्लाह पाक इस जादू का अष़र दफ़ा कर दे। उसके बाद आपने आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम्हें मा'लूम भी हुआ अल्लाह तआ़ला ने मुझे वो तदबीर बता दी है जिसमें मेरी शिफ़ा मुक़द्दर है। मेरे पास दो आदमी आए, एक तो मेरे सर की तरफ़ बैठ गये और दूसरा पांव की तरफ़। फिर एक ने दूसरे से कहा, उन्हें बीमारी क्या है? दूसरे आदमी ने

जवाब दिया कि इन पर जादू हुआ है। उन्होंने पूछा, जादू इन पर किसने किया है? जवाब दिया कि लबीद बिन आ़सिम यहूदी ने, पूछा कि वो जादू (टोटा) रखा किस चीज़ में है? कहा कि कँघे में, कितान में और खजूर के खुश्क ख़ोशे के ग़िलाफ़ में। पूछा, और ये चीज़ें हैं कहाँ? कहा कि बीरे ज़रवान में। फिर नबी करीम (ﷺ) वहाँ तशरीफ़ ले गये और वापस आए तो ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया, वहाँ के खजूर के पेड़ ऐसे हैं कि जैसे शैत़ान की खोपड़ी। मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा, वो टोना आपने निकलवाया भी? आपने फ़र्माया कि नहीं मुझे तो अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद शिफ़ा दी और मैंने उसे इस ख़्याल से नहीं निकलवाया कि कहीं उसकी वजह से लोगों में कोई झगड़ा खड़ा कर दूँ। उसके बाद वो कुँआ पाट दिया गया। (राजेअ़ : 3175)

قَالَ: لَبِيْدُ بْنُ الأَعْصَمِ. قَالَ: فِيْمَاذَا؟ قَالَ: فِي مُشْطٍ وَمُشَاقَةٍ وَجُفِّ طَلْعَةٍ ذَكَرٍ. قَالَ: فَأَيْنَ هُوَ؟ قَالَ: فِي بِئْرِ ذَرْوَانَ. فَخَرَجَ إِلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ لِعَائِشَةَ حِيْنَ رَجَعَ: نَخْلُهَا كَأَنَّهُ رُؤُوسُ الشَّيَاطِيْنِ. فَقُلْتُ: اسْتَخْرَجْتَهُ؟ فَقَالَ: لاَ. أَمَّا أَنَا فَقَدْ شَفَانِيَ اللهُ، وَخَشِيْتُ أَنْ يُثِيْرَ ذَلِكَ عَلَى النَّاسِ شَرًّا. ثُمَّ دُفِنَتِ الْبِئْرُ)).

[راجع: ٣١٧٥]

तश्रीह : एक रिवायत में है कि इस जादू के अषर से आपको ऐसा मा'लूम होता था कि औ़रतों से सुह़बत कर रहे हैं। ह़ालाँकि ऐसा कुछ नहीं था। कहने का मत़लब यह है कि इस सह़र का अष़र आप (ﷺ) के कुछ ख़्यालात पर हुआ। बाक़ी वह़्य और तब्लीग़े रिसालत में इसका कोई अष़र न हो सका। इतना सा जो अष़र हुआ उसमें भी अल्लाह पाक की कुछ मस्लिह़त थी।

मदीना में बनी ज़ुरैक़ के बाग़ मे एक कुँआँ था उसका नाम बीरे ज़रवान था। अगर आप इस जादू को निकलवाते तो सब में ख़बर उड़ जाती तो मुसलमान लोग इस यहूदी मर्दूद को मार डालते, मा'लूम नहीं क्या क्या फ़सादात हो जाते। दूसरी रिवायत में है कि आपने उसको निकलवाकर देखा लेकिन उसके खुलवाने का मंतर नहीं कराया। एक रिवायत में है कि उस यहूदी ने आँह़ज़रत (ﷺ) की मूरत मोम से बनाकर उसमे सूईयाँ गाड़ दी थीं और तांत में ग्यारह गिरहें दी थीं। अल्लाह ने मुअ़व्वज़तैन की सूरतें उतारीं, आप उनकी एक एक आयत पढ़ते जाते तो एक एक गिरह खुलती जाती। इसी त़रह़ जब उस मूरत में से सूई निकालते तो उसको तकलीफ़ होती, उसके बाद आराम हो जाता। (वह़ीदी)

दोनों रिवायात मे तत़्बीक़ ये है कि उस वक़्त आपने उसे नहीं निकलवाया, बाद में किसी दूसरे वक़्त उसे निकलवाया और उसकी उस तफ़्सील को मुलाह़िज़ा फ़र्माया।

3269. हमसे इस्माईल बिन अबी उवेस ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे भाई (अ़ब्दुल ह़मीद) ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे यह़्या बिन सईद ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। जब कोई तुम में से सोया हुआ होता है, तो शैत़ान उसके सर की गुद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है ख़ूब अच्छी त़रह से और हर गिरोह पर ये अफ़सून फूँक देता है कि अभी बहुत रात बाक़ी है। पड़ा सोता रह। लेकिन अगर वो शख़्स

٣٢٦٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يَعْقِدُ الشَّيْطَانُ عَلَى قَافِيَةِ رَأْسِ أَحَدِكُمْ - إِذَا هُوَ نَامَ - ثَلاَثَ عُقَدٍ، يَضْرِبُ عَلَى كُلِّ عُقْدَةٍ

जागकर अल्लाह का ज़िक्र शुरू करता है तो एक गिरह खुल जाती है। फिर जब वुज़ू करता है तो दूसरी गिरह खुल जाती है। फिर जब नमाज़े फ़ज्र पढ़ता है तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है और सुबह को ख़ुशमिज़ाज व ख़ुशदिल रहता है वरना बदमिज़ाज, सुस्त रहकर वो दिन गुज़ारता है। (राजेअ़ : 1142)

مَكَانَهَا: عَلَيْكَ لَيْلٌ طَوِيْلٌ، فَارْقُدْ. فَإِنِ اسْتَيْقَظَ فَذَكَرَ اللهَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَإِنْ تَوَضَّأَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَإِنْ صَلَّى انْحَلَّتْ عُقَدُهُ كُلُّهَا فَأَصْبَحَ نَشِيْطًا طَيِّبَ النَّفْسِ، وَإِلاَّ أَصْبَحَ خَبِيْثَ النَّفْسِ كَسْلاَنَ)). [راجع: ١١٤٢]

3270. हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं हाज़िरे ख़िदमत था तो नबी करीम (ﷺ) के सामने एक ऐसे शख़्स का ज़िक्र आया, जो रात भर दिन चढ़ते तक पड़ा सोता रहा हो, आपने फ़र्माया कि ये ऐसा शख़्स है जिसके कान या दोनों कानों में शैतान ने पेशाब कर दिया है। (राजेअ़ : 1144)

٣٢٧٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُوْرٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ذُكِرَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ رَجُلٌ نَامَ لَيْلَةً حَتَّى أَصْبَحَ، قَالَ: ((ذَاكَ رَجُلٌ بَالَ الشَّيْطَانُ فِي أُذُنَيْهِ، أَوْ قَالَ : فِي أُذُنِهِ)). [راجع: ١١٤٤]

तश्रीह : ये ह़दीष़ क्या है गोया तमाम स़ेह़त और फ़रह़त के नुस्ख़ों का ख़ुलासा है। तजुर्बे से भी ऐसा ही मा'लूम हुआ है, जो लोग तहज्जुद के वक़्त से या सुबह़ सवेरे से उठकर त़हारत करते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं उनका सारा दिन चैन और आराम और ख़ुशी से गुज़रता है और जो लोग सुबह़ को दिन चढ़े तक सोते पड़े रहते हैं वो अक्ष़र बीमार और सुस्त मिज़ाज काहिल रहते हैं। तमाम ह़कीमों और डॉक्टरों ने इस पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि सुबह़ सवेरे बेदार होना और सुबह़ की हवाख़ोरी करना इन्सानी स़ेह़त के लिये बेह़द मुफ़ीद है।

मैं (ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम) कहता हूँ जो लोग सुबह़ सवेरे उठकर त़हारत से फ़ारिग़ होकर नमाज़ और ज़िक्रे इलाही में मस़रूफ़ रहते हैं उनको अल्लाह तआ़ला रिज़्क़ की वुस्अ़त देता है और उनके घरों में बेह़द बरकत और ख़ुशी रहती है और जो लोग सुबह़ की नमाज़ नहीं पढ़ते, दिन चढ़े तक सोते रहते हैं वो अक्ष़र इफ़्लास (ग़रीबी) और बीमारी में मुब्तला होते हैं उनके घरो में नहूसत फैल जाती है। अगरचे सब नमाज़ें फ़र्ज़ हैं मगर फ़ज्र की नमाज़ का और ज़्यादा ख़्याल रखना चाहिये, क्योंकि दुनिया की स़ेह़त और ख़ुशी इससे ह़ासिल होती है। (वह़ीदी)

3271. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे मंसूर ने उनसे सालिम बिन अल जअ़दि ने, उनसे कुरैब ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई शख़्स अपनी बीवी के पास आता है और ये दुआ़ पढ़ता है, अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, ऐ अल्लाह! हमसे शैत़ान को दूर रख और जो कुछ हमें तू दे (औलाद) उससे भी शैत़ान को दूर रख। फिर अगर उनके यहाँ बच्चा पैदा होता है शैत़ान उसे कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता। (राजेअ़ : 141)

٣٢٧١- حَدَّثَنَا مُوْسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ مَنْصُوْرٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ كُرَيْبٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَمَا إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا أَتَى أَهْلَهُ وَقَالَ: بِسْمِ اللهِ، اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا، فَرُزِقَا وَلَدًا، لَمْ يَضُرَّهُ الشَّيْطَانُ)). [راجع: ١٤١]

ये अपनी औरत से जिमाअ करते वक़्त पढ़ने की दुआए मस्नूना है। जिसके बहुत से फ़वाइद हैं जो तजुर्बे से मा'लूम होंगे।

٣٢٧٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا طَلَعَ حَاجِبُ الشَّمْسِ فَدَعُوا الصَّلاَةَ حَتَّى تَبْرُزَ، وَإِذَا غَابَ حَاجِبُ الشَّمْسِ فَدَعُوا الصَّلاَةَ حَتَّى تَغِيبَ)). [راجع: ٥٠٩]

3272. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दह ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उर्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब सूरज का ऊपर का किनारा निकल आए तो नमाज़ न पढ़ो जब तक वो पूरी तरह ज़ाहिर न हो जाए और जब ग़ुरूब होने लगे तब भी उसी वक़्त तक के लिये नमाज़ छोड़ दो जब तक बिलकुल ग़ुरूब न हो जाए। (राजेअ: 509)

٣٢٧٣ - ((وَلاَ تَحَيَّنُوا بِصَلاَتِكُمْ طُلُوعَ الشَّمْسِ وَلاَ غُرُوبَهَا، فَإِنَّهَا تَطْلُعُ بَيْنَ قَرْنَيْ شَيْطَانٍ. أَوِ الشَّيْطَانِ، لاَ أَدْرِي أَيَّ ذَلِكَ قَالَ هِشَامٌ)).

3273. और नमाज़ सूरज के निकलने और डूबने के वक़्त न पढ़ो, क्योंकि सूरज शैतान के सर के या शैतानों के सर के दोनों कोनों के बीच में से निकलता है। अब्दह ने कहा मैं नहीं जानता हिशाम ने शैतान का सर कहा या शैतानों का।

होता ये हे कि शैतान तुलूअ और ग़ुरूब के वक़्त अपना सर सूरज पर रख देता है कि सूरज के पूजने वालों का सज्दा शैतान के लिये हो।

٣٢٧٤ - حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((إِذَا مَرَّ بَيْنَ يَدَيْ أَحَدِكُمْ شَيْءٌ وَهُوَ يُصَلِّي فَلْيَمْنَعْهُ، فَإِنْ أَبَى فَلْيَمْنَعْهُ، فَإِنْ أَبَى فَلْيُقَاتِلْهُ، فَإِنَّمَا هُوَ شَيْطَانٌ)).

3274. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन बिलाल ने, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तुममें से नमाज़ पढ़ने में किसी शख़्स के सामने से कोई गुज़रे तो उसे गुज़रने से रोको, अगर वो न रुके तो फिर रोको और अगर अब भी न रुके तो उससे लड़ो वो शैतान है।

٣٢٧٥ - وَقَالَ عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وَكَّلَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ بِحِفْظِ زَكَاةِ رَمَضَانَ: فَأَتَانِي آتٍ فَجَعَلَ يَحْثُو مِنَ الطَّعَامِ، فَأَخَذْتُهُ فَقُلْتُ: لأَرْفَعَنَّكَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ - فَذَكَرَ الْحَدِيثَ فَقَالَ -: إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَاقْرَأْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ، لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنَ

3275. और उ़ष्मान बिन हैष़म ने बयान किया, कहा हमसे औफ़ ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मर्तबा स़दक़-ए-फ़ित्र के ग़ल्ले की हिफ़ाज़त पर मुझे मुक़र्रर किया, एक शख़्स आया और दोनों हाथों से अनाज लप भर—भरकर लेने लगा। मैंने उसे पकड़ लिया और कहा कि अब मैं तुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पेश करूँगा। फिर उन्होंने आख़िर तक हदीष़ बयान की। इस (चोर) ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कहा कि जब तुम अपने बिस्तर पर सोने के लिये लेटने लगो तो आयतल कुर्सी पढ़ लिया करो, उसकी बरकत से अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम पर एक निगाहबान

मुक़र्रर हो जाएगा और शैतान तुम्हारे क़रीब सुबह तक न आ सकेगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि बात तो उसने सच्ची कही है अगरचे वो ख़ुद झूठा है। वो शैतान था। (राजेअ : 2311)

اللهِ حَافِظٌ، وَلاَ يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ حَتَّى تُصْبِحَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَكَ وَهُوَ كَذُوبٌ، ذَاكَ شَيْطَانٌ)). [راجع: ٢٣١١]

3276. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुममें से किसी के पास शैतान आता है और तुम्हारे दिल मे पहले तो ये सवाल पैदा करता है कि फ़लाँ चीज़ किसने पैदा की, फ़लाँ चीज़ किसने पैदा की? और आख़िर में बात यहाँ तक पहुँचाता है कि ख़ुद तुम्हारे रब को किसने पैदा किया? जब किसी शख़्स को ऐसा वस्वसा डाले तो उसे अल्लाह से पनाह मांगनी चाहिये, शैतानी ख़याल को छोड़ दे।

٣٢٧٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَأْتِي الشَّيْطَانُ أَحَدَكُمْ فَيَقُولُ: مَنْ خَلَقَ كَذَا؟ مَنْ خَلَقَ كَذَا؟ حَتَّى يَقُولَ: مَنْ خَلَقَ رَبَّكَ؟ فَإِذَا بَلَغَهُ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللهِ وَلْيَنْتَهِ)).

तश्रीह : शैतान ये वस्वसा इस तरह डालता है कि दुनिया में सब चीज़ें उ़लुल और मा'लूमात और अस्बाब और मुसब्बाब हैं या'नी एक चीज़ से दूसरी चीज़ पैदा होती है वो चीज दूसरी से मष़लन बेटा बाप से, बाप दादा से, दादा परदादा से, अख़ीर में इंतिहा अल्लाह तक होती है। तो शैतान ये कहता है कि तो फिर ख़ुदा की भी कोई इल्लत होगी। उस मर्दूद का जवाब अऊ़ज़ुबिल्लाह पढ़ना है। अगर ख़्वामख़ाह अ़क़्ली जवाब माँगे तो जवाब ये है कि अगर अज़ल में बराबर इलल और मा'लूमात का सिलसिला चला जाए और किसी इल्लत पर ख़त्म न हो तो फिर लाज़िम आता है कि मअ़ बिल् अ़र्ज़ बग़ैर माअ़ बिज़्ज़ात के मौजूद हो और ये मह़ाल है।

पस मालूम हुआ कि इस सिलसिले में इंतिहा एक ऐसी ज़ाते मुक़द्दस पर है जो इल्लते मह़ज़ा है और वो किसी की मअ़लूल नहीं और वो मौजूद बिज़्ज़ात है अपने वजूद में किसी की मुह़ताज नहीं। वही ज़ाते मुक़द्दस अल्लाह है। बेहतर ये है कि ऐसे अ़क़्ली ढकोसलों में न पड़े और **अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम** पढ़कर अपने मालिके ह़क़ीक़ी से मदद चाहे। वो शैतान का वस्वसा दूर कर देगा जैसे उसने ख़ुद फ़र्माया है, **इन्न इबादी लैस लक अ़लैहिम सुल्तान** या'नी ऐ शैतान! मेरे ख़ास़ बन्दों पर तेरी कोई दलील नहीं चल सकेगी। **सदक़ल्लाहु तबारक व तआ़ला.**

3277. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे तैमयीन के मौला इब्ने अबी अनस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) को ये कहते सुना था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं । जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को जंजीरों में जकड़ दिया जाता है।

٣٢٧٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي أَنَسٍ مَوْلَى التَّيْمِيِّينَ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا دَخَلَ رَمَضَانُ فُتِّحَتْ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ وَسُلْسِلَتِ

(राजेअ : 1898)

الشَّيَاطِيْنُ)). [راجع: ١٨٩٨]

3278. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने, कहा हमसे अम्र बिन दीनार ने, कहा कि मुझे सईद बिन जुबैर ने ख़बर दी, कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा (नोफ़ बकाली कहता है कि ख़िज़्र के पास जो मूसा गये थे वो दूसरे मूसा थे) तो उन्होंने कहा कि हमसे उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने रफ़ीक़े सफ़र (यूशा बिन नून) से फ़र्माया कि हमारा खाना ला, उस पर उन्होंने बताया कि आपको मा'लूम भी है जब हमने चट्टान पर पड़ाव डाला था तो मैं मछली वहीं भूल गया (और अपने साथ न ला सका) और मुझे उसे याद रखने से सिर्फ़ शैतान ने ग़ाफ़िल रखा और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस वक़्त तक कोई थकन मा'लूम नहीं की जब तक उस हद से न गुज़र लिये, जहाँ का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया था। (राजेअ : 174)

٣٢٧٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرٌو قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ جُبَيْرٍ قَالَ: قُلْتُ لابْنِ عَبَّاسٍ فَقَالَ: حَدَّثَنَا أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((إِنَّ مُوسَى قَالَ لِفَتَاهُ: آتِنَا غَدَاءَنَا، قَالَ: أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيْتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيْهِ إِلاَّ الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ. وَلَمْ يَجِدْ مُوسَى النَّصَبَ حَتَّى جَاوَزَ الْمَكَانَ الَّذِيْ أَمَرَ اللهُ بِهِ)).

[راجع: ١٧٤]

3279. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप मश्रिक़ की त़रफ़ इशारा करके फ़र्मा रहे थे कि हाँ! फ़ित्ना इसी त़रफ़ से नमूदार होगा जहाँ से शैत़ान के सर का कोना निकलता है। (राजेअ : 3014)

٣٢٧٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يُشِيْرُ إِلَى الْمَشْرِقِ فَقَالَ: هَا إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا، إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا، مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ)).

[راجع: ٣١٠٤]

3280. हमसे यह़्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अ़ता बिन अबी रिबाह ने ख़बर दी, और उन्हें हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, रात का अंधेरा शुरू होने पर या रात शुरू होने पर अपने बच्चों को अपने पास (घर में) रोक लो, क्योंकि शयात़ीन उसी वक़्त फैलना शुरू करते हैं । फिर जब इशा के वक़्त में से एक घड़ी गुज़र जाए तो उन्हें छोड़ दो (चलें–फिरें)

٣٢٨٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا اسْتَجْنَحَ اللَّيْلُ - أَوْ كَانَ جُنْحُ اللَّيْلِ - فَكُفُّوا صِبْيَانَكُمْ فَإِنَّ الشَّيَاطِيْنَ تَنْتَشِرُ حِيْنَئِذٍ، فَإِذَا ذَهَبَ سَاعَةٌ مِنَ

الْعِشَاء فَخَلُّوهُمْ، وَأَغْلِقْ بَابَكَ وَاذْكُرِ اسْمَ اللهِ، وَأَطْفِىءْ مِصْبَاحَكَ وَاذْكُرِ اسْمَ اللهِ، وَأَوْكِ سِقَاءَكَ وَاذْكُرِ اللهَ، وَخَمِّرْ إِنَاءَكَ وَاذْكُرِ اسْمَ اللهِ وَلَوْ تَعْرُضُ عَلَيْهِ شَيْئًا)). [أطرافه في: ٣٣٠٤، ٣٣١٦، ٥٦٢٣، ٥٦٢٤، ٦٢٩٥، ٦٢٩٦].

फिर अल्लाह का नाम लेकर अपना दरवाज़ा बन्द करो, अल्लाह का नाम लेकर अपना चिराग़ बुझा दो, पानी के बर्तन अल्लाह का नाम लेकर ढंक दो, (और अगर ढक्कन न हो) तो दरम्यान में ही कोई चीज़ रख दो। (दीगर मक़ाम : 3304, 3316, 5623, 5624, 6295, 6296)

ज़मीन पर फैलने वाले शैत़ानों से मुराद यहाँ बदमाश जिन्न हैं। कुछ ने कहा सांप मुराद हैं। अकष़र सांप उस वक़्त अपने बिलों से हवा खाने के लिये निकलते हैं। ज़ाहिरे ह़दीष़ की बिना पर शयात़ीन निकलते, ज़मीन पर फैलते और बनी आदम को नुक़्सान पहुँचाने की कोशिश करते हैं। **आमन्ना व स़द्दक़ना वल्लाहु आ़लम बि ह़क़ीक़तिल हाल.**

٣٢٨١- حَدَّثَنِي مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ حُيَيٍّ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مُعْتَكِفًا، فَأَتَيْتُهُ أَزُورُهُ لَيْلاً، فَحَدَّثْتُهُ ثُمَّ قُمْتُ فَانْقَلَبْتُ، فَقَامَ مَعِيَ لِيَقْلِبَنِي - وَكَانَ مَسْكَنُهَا فِي دَارِ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ - فَمَرَّ رَجُلاَنِ مِنَ الأَنْصَارِ، فَلَمَّا رَأَيَا النَّبِيَّ ﷺ أَسْرَعَا. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عَلَى رِسْلِكُمَا، إِنَّهَا صَفِيَّةُ بِنْتُ حُيَيٍّ)) فَقَالاَ: سُبْحَانَ اللهِ يَا رَسُولَ اللهِ. قَالَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ يَجْرِي مِنَ الإِنْسَانِ مَجْرَى الدَّمِ، وَإِنِّي خَشِيتُ أَنْ يَقْذِفَ فِي قُلُوبِكُمَا سُوءًا. أَوْ قَالَ: شَيْئًا)). [راجع: ٢٠٣٥]

3281. हमसे मह़मूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें ज़ेनुल आ़बेदीन अ़ली बिन हुसैन (रज़ि.) ने और उनसे स़फ़िया बिन्ते हुय्यि (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ए'तिकाफ़ में थे तो मैं रात के वक़्त आपसे मुलाक़ात के लिये (मस्जिद में) आई, मै आपसे बातें करती रही, फिर जब वापस होने के लिये खड़ी हुई तो आप भी मुझे छोड़ आने के लिये खड़े हुए। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत स़फ़िया (रज़ि.) का मकान उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के मकान ही में था। उसी वक़्त दो अंस़ारी स़हाबा (उसैद बिन हुज़ैर और उ़बादा बिन बशीर) गुज़रे। जब उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) को देखा तो तेज़ चलने लगे। आपने उनसे फ़र्माया, ज़रा ठहर जाओ ये स़फ़िया बिन्ते हुय्यि हैं। उन दोनों स़हाबा ने अ़र्ज़ किया, सुब्ह़ानल्लाह! या रसूलल्लाह (ﷺ)! (क्या हम भी आपके बारे में कोई शुब्हा कर सकते हैं?) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि शैत़ान इंसान के अंदर ख़ून की त़रह दौड़ता रहता है इसलिये मुझे डर लगा कि कहीं तुम्हारे दिलों में भी कोई वस्वसा न डाल दे, या आपने (लफ़्ज़ सूअ की जगह) लफ़्ज़ शयआ फ़र्माया। मा'नी एक ही हैं। (राजेअ़ : 2035)

मा'लूम हुआ कि इंसान को किसी के लिये ज़ रा भी शुब्हा पैदा करने का मौक़ा न देना चाहिये, आँह़ज़रत (ﷺ) ने यही सोचकर उनके सामने अस़ल मामला रख दिया, और उनको ग़लत़ वस्वसे से बचा लिया लिया।

٣٢٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ

3282. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा ने, उनसे

आ'मश ने, उनसे अदी बिन ष़ाबित ने और उनसे सुलैमान बिन सुर्द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बैठा हुआ था और क़रीब ही) दो आदमी आपस में गाली—गलूच कर रहे थे कि एक शख़्स का मुँह सुर्ख़ हो गया और गर्दन की रगें फूल गईं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे एक ऐसा कलिमा मा'लूम है कि अगर ये शख़्स उसे पढ़ ले तो उसका ग़ुस्सा जाता रहेगा। अगर ये शख़्स पढ़ ले। (तर्जुमा) मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह की शैत़ान मर्दूद से। तो उसका ग़ुस्सा जाता रहेगा। लोगों ने उस पर उससे कहा कि नबी करीम (ﷺ) फ़र्मा रहे हैं कि तुम्हें शैत़ान से अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिये, उसने कहा, क्या मैं कोई दीवाना हूँ? (दीगर मक़ाम : 6048, 6115)

عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدٍ قَالَ: ((كُنْتُ جَالِسًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَرَجُلاَنِ يَسْتَبَّانِ، فَأَحَدُهُمَا احْمَرَّ وَجْهُهُ وَانْتَفَخَتْ أَوْدَاجُهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي لأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا ذَهَبَ عَنْهُ مَا يَجِدُ، لَوْ قَالَ: أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ ذَهَبَ عَنْهُ مَا يَجِدُ. قَالُوا لَهُ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: تَعَوَّذْ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَقَالَ: وَهَلْ بِي جُنُونٌ؟)).

[طرفاه في : ٦٠٤٨، ٦١١٥].

वो समझा कि शैत़ान से पनाह जब ही मांगते हैं जब आदमी दीवाना हो जाए हालाँकि ग़ुस्सापन भी दीवानापन या जुनून ही है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा शायद ये शख़्स मुनाफ़िक़ या बिलकुल गुनाहगार क़िस्म का होगा।

3283. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अबी अल जअदि ने, उनसे कुरैब ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई शख़्स जब अपनी बीवी के पास जाए और ये दुआ पढ़ ले। ऐ अल्लाह! मुझे शैत़ान से दूर रख और जो मेरी औलाद पैदा हो, उसे भी शैत़ान से दूर रखियो। फिर उस सुहबत से अगर कोई बच्चा पैदा हो तो शैत़ान उसे कोई नुक़्सान न पहुँचा सकेगा और न उस पर तसल्लुत़ क़ायम रख सकेगा। शुअबा ने बयान किया और हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे सालिम ने, उनसे कुरैब ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ऐसी रिवायत की। (राजेअ : 141)

٣٢٨٣- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا قَالَ شُعْبَةُ حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ كُرَيْبٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ أَنْ أَحَدَكُمْ إِذَا أَتَى أَهْلَهُ قَالَ : اللَّهُمَّ جَنِّبْنِي الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنِي، فَإِنْ كَانَ بَيْنَهُمَا وَلَدٌ لَمْ يَضُرُّهُ الشَّيْطَانُ وَلَمْ يُسَلَّطْ عَلَيْهِ)). قَالَ: وَحَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ سَالِمٍ عَنْ كُرَيْبٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ. مِثْلَهُ.

[راجع: ١٤١]

3284. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा नमाज़ पढ़ी और फ़ारिग़ होने के बाद फ़र्माया कि शैत़ान मेरे सामने आ गया था और नमाज़ तुड़वाने की कोशिशें शुरू कर दी थीं। लेकिन अल्लाह तआला न

٣٢٨٤- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ صَلَّى صَلاَةً فَقَالَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ عَرَضَ لِي فَشَدَّ عَلَيَّ يَقْطَعُ

मुझे उस पर ग़ालिब कर दिया। फिर हदीष़ को तफ़्सील के साथ आख़िर तक बयान किया। (राजेअ़ : 461)

الصَّلاَةَ عَلَيَّ، فَأَمْكَنَنِي اللهُ مِنْهُ. فَذَكَرَهُ)). [راجع: ٤٦١]

3285. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाती है तो शैत़ान अपनी पीठ फेरकर गूज़ मारता हुआ भागता है। जब अज़ान ख़त्म हो जाती है तो वापस आ जाता है। फिर जब तक्बीर होने लगती है तो भाग खड़ा होता है और जब तक्बीर ख़त्म हो जाती है तो फिर वापस आ जाता है और आदमी के दिल में वस्वसे डालने लगता है कि फ़लाँ बात याद कर और फ़लाँ बात याद कर, नतीजा ये होता है कि उसको भी याद नहीं रहता कि तीन रकअ़त नमाज़ पढ़ी थी या चार रकअ़त, जब ये याद न रहे तो सहम के दो सज्दे करे। (राजेअ़ : 608)

٣٢٨٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا نُودِيَ بِالصَّلاَةِ أَدْبَرَ الشَّيْطَانُ وَلَهُ ضُرَاطٌ، فَإِذَا قُضِيَ أَقْبَلَ. فَإِذَا ثُوِّبَ بِهَا أَدْبَرَ، فَإِذَا قُضِيَ أَقْبَلَ حَتَّى يَخْطِرَ بَيْنَ الإِنْسَانِ وَقَلْبِهِ فَيَقُولُ : اذْكُرْ كَذَا وَكَذَا، حَتَّى لاَ يَدْرِي أَثَلاَثًا صَلَّى أَمْ أَرْبَعًا، فَإِذَا لَمْ يَدْرِ ثَلاَثًا صَلَّى أَوْ أَرْبَعًا سَجَدَ سَجْدَتَيِ السَّهْوِ)). [راجع: ٦٠٨]

जैसा शैत़ान है वैसा ही उसका गूज़ मारना भी है। अज़ान से नफ़रत करके वो भागता है और इस ज़ोर से भागता है कि उसका गूज़ निकलने लगता है। **आमन्ना व सदक़्क़ना मा क़ालन्नबिय्यु (ﷺ)** बहुत से इंसाननुमा शैत़ान भी है जो अज़ान जैसी प्यारी आवाज़ से नफ़रत करते हैं, उसके रोकने के जतन करते रहते हैं। ऐसे लोग बज़ाहिर इंसान दर हक़ीक़त ज़ुर्रियाते शैत़ान (शैत़ान की सन्तान) हैं। **क़ातलहुमुल्लाहु अन्ना युफ़कून.**

3286. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, शैत़ान हर इंसान की पैदाइश के वक़्त अपनी उँगली से उसके पहलू में कचोके लगाता है सिवाए ईसा बिन मरयम (अलै.) के जब उन्हें वो कचोके लगाने गया तो पर्दे पर लगा हुआ था (जिसके अंदर बच्चा रहता है। उसकी रसाई वहाँ तक न हो सकी, अल्लाह ने ह़ज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को उसकी इस ह़रकत से मह़फ़ूज़ रखा)। (दीगर मक़ाम : 3431, 4548)

٣٢٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((كُلُّ بَنِي آدَمَ يَطْعُنُ الشَّيْطَانُ فِي جَنْبَيْهِ بِإِصْبَعِهِ حِينَ يُولَدُ، غَيْرَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ذَهَبَ يَطْعُنُ فَطَعَنَ فِي الْحِجَابِ)). [طرفاه في : ٣٤٣١، ٤٥٤٨].

3287. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह ने, उनसे इब्राहीम ने और उनसे अल्क़मा ने बयान किया कि मैं शाम पहुँचा तो लोगों ने कहा, अबू दर्दा आए उन्होंने कहा, क्या तुम लोगों में वो शख़्स है जिसको अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल की ज़ुबान पर (या'नी आपके

٣٢٨٧- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنِ الْمُغِيرَةِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: قَدِمْتُ الشَّامَ، قَالُوا: أَبُو الدَّرْدَاءِ، قَالَ: ((أَفِيكُمُ الَّذِي أَجَارَهُ اللهُ

ज़माने से) शैत़ान से बचा रखा है।

مِنَ الشَّيْطَانِ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ)).

हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, और उनसे मुग़ीरह ने यही ह़दीष़, उसमें ये है, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी की ज़ुबानी शैत़ान से अपनी पनाह में लेने का ऐलान किया था, आपकी मुराद ह़ज़रत अ़म्मार (रज़ि.) से थी। (दीगर मक़ाम : 3742, 3743, 3761, 4943, 4944, 6278)

حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُغِيْرَةَ وَقَالَ: ((الَّذِي أَجَارَهُ اللهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ. يَعْنِي عَمَّارًا)).
[أطرافه في: ٣٧٤٢، ٣٧٤٣، ٣٧٦١، ٤٩٤٣، ٤٩٤٤، ٦٢٧٨].

मत़लब ये कि अ़म्मार शैत़ानी अग़वे में नहीं आएँगे। ऐसा ही हुआ कि अ़म्मार ख़लीफ़-ए-बरह़क़ या'नी ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ रहे और बाग़ियों में शरीक़ न हुए, इस ह़दीष़ से ह़ज़रत अ़म्मार की बड़ी फ़ज़ीलत निकली, वो ख़ास आँह़ज़रत (ﷺ) के जानिष़ार थे।

3288. ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि लैष़ बिन सअ़द ने कहा कि मुझसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने, उनसे अबुल अस्वद ने, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, फ़रिश्ते अब्र में आपस में किसी अम्र में जो ज़मीन में होने वाला होता है बातें करते हैं। इनान से मुराद बादल है। तो शयात़ीन उसमें से कोई एक कलिमा सुन लेते हैं और वही काहिनों के कान में इस तरह़ लाकर डालते हैं जैसे शीशे का मुँह मिलाकर उसमें कुछ छोड़ते हैं और वो काहिन उसमें सौ झूठ अपनी त़रफ़ से मिलाते हैं।

(राजेअ़ : 3210)

٣٢٨٨- قَالَ: وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي خَالِدُ بْنُ يَزِيْدَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ أَنَّ أَبَا الأَسْوَدِ أَخْبَرَهُ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمَلاَئِكَةُ تَتَحَدَّثُ فِي الْعَنَانِ - وَالْعَنَانُ الْغَمَامُ - بِالأَمْرِ يَكُوْنُ فِي الأَرْضِ - فَتَسْمَعُ الشَّيَاطِيْنُ الْكَلِمَةَ فَتَقُرُّهَا فِي أُذُنِ الْكَاهِنِ كَمَا تُقَرُّ الْقَارُوْرَةُ، فَيَزِيْدُوْنَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ)). [راجع: ٣٢١٠]

शीशे मे कुछ डालना मंज़ूर होता है तो उसका मुँह उस त़रफ़ से लगाते हैं जिसमें अ़र्क़ पानी वग़ैरह कोई चीज़ होती है ताकि बाहर न गिरे। इसी त़रह़ शैत़ान काहिनों के कान से मुँह लगाकर ये बात उनके कान में चुपके से फूँक देते हैं।

3289. हमसे आ़स़िम बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जम्हाई शैत़ान की त़रफ़ से है। पस जब किसी को जम्हाई आए तो जहाँ तक हो सके उसे रोके क्योंकि जब कोई (जम्हाई लेते हुए) हा-हा करता है तो शैत़ान उस पर हंसता है।

(दीगर मक़ाम : 6223, 6226)

٣٢٨٩- حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنْ سَعِيْدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((التَّثَاؤُبُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَالَ هَا ضَحِكَ الشَّيْطَانُ)). [طرفاه في: ٦٢٢٣، ٦٢٢٦].

मा'लूम हुआ कि जम्हाई (उबासी) लेते वक़्त ह़त्तल इम्कान अपने मुँह को बन्द करके आवाज़ को बन्द करके आवाज़ न निकलने दे क्योंकि ये सुस्ती की अ़लामत है।

3290. हमसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने हमें अपने वालिद उर्वा से ख़बर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि उहुद की लड़ाई मे जब मुश्रिकीन को शिकस्त हो गई तो इब्लीस ने चलाकर कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दों! (या'नी मुसलमानों) अपने पीछे वालों से बचो, चुनाँचे आगे के मुसलमान पीछे की तरफ़ पलटे और पीछे वालों को (जो मुसलमान ही थे) उनको उन्होंने मारना शुरू कर दिया। हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने देखा तो उनके वालिद यमान (रज़ि.) भी पीछे थे। उन्होंने बहुत बार कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दों ! ये मेरे वालिद हैं, ये मेरे वालिद हैं। लेकिन अल्लाह गवाह है कि लोगों ने जब तक उन्हें क़त्ल न कर लिया न छोड़ा। बाद में हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने सिर्फ़ इतना कहा कि ख़ैर, अल्लाह तुम्हें मुआफ़ करे (कि तुमने ग़लतफ़हमी से एक मुसलमान को मार डाला)। उर्वा ने बयान किया कि फिर हुज़ैफ़ा (रज़ि.) अपने वालिद के क़ातिलों के लिये बराबर मग़्फ़िरत मांगते रहे। यहाँ तक कि अल्लाह से जा मिले। (दीगर मक़ाम : 3824, 4065, 6668, 6883, 6890)

٣٢٩٠- حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ هِشَامٌ : أَخْبَرَنَا عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ هُزِمَ الْمُشْرِكُونَ، فَصَاحَ إِبْلِيسُ: أَيْ عِبَادَ اللهِ، أُخْرَاكُمْ، فَرَجَعَتْ أُولاَهُمْ فَاجْتَلَدَتْ هِيَ وَأُخْرَاهُمْ، فَنَظَرَ حُذَيْفَةُ فَإِذَا هُوَ بِأَبِيهِ الْيَمَانِ، فَقَالَ: أَيْ عِبَادَ اللهِ، أَبِي أَبِي. فَوَاللهِ مَا احْتَجَزُوا حَتَّى قَتَلُوهُ فَقَالَ حُذَيْفَةُ : غَفَرَ اللهُ لَكُمْ. قَالَ عُرْوَةُ: فَمَا زَالَتْ فِي حُذَيْفَةَ مِنْهُ بَقِيَّةُ خَيْرٍ حَتَّى لَحِقَ بِاللهِ)).

[أطرافه في : ٣٨٢٤، ٤٠٦٥، ٦٦٦٨، ٦٨٨٣، ٦٨٩٠].

आँहज़रत (ﷺ) को मा'लूम हुआ तो हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को उनके बाप की दियत आप दिलाने गये। लेकिन हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने वो भी मुसलमानों को मुआफ़ कर दी, सुब्हानल्लाह! सहाबा (रज़ि.) की एक एक नेकी हमारी उम्रभर की इबादत से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है।

3291. हमसे हसन बिन रबीअ ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अहवस ने, उनसे अश्अष ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मसरूक़ ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से नमाज़ में इधर—उधर देखने के बारे में पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शैतान की एक उचक है जो वो तुममें से एक की नमाज़ में से कुछ उचक लेता है।

(राजेअ : 751)

٣٢٩١- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ عَنْ أَشْعَثَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الْتِفَاتِ الرَّجُلِ فِي الصَّلاَةِ فَقَالَ: ((هُوَ اخْتِلاَسٌ يَخْتَلِسُهُ الشَّيْطَانُ مِنْ صَلاَةِ أَحَدِكُمْ)).

[راجع: ٧٥١]

3292. (दूसरी सनद) हमसे अबुल मुग़ीरह ने बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने (मिष़्ल रिवायते साबिक़ा की हदीष़ बयान की)।

मुझसे सुलैमान बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने

٣٢٩٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ قَالَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ قَالَ حَدَّثَنَا

बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी कषीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने बयान किया, और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा ख़्वाब अल्लाह तआला की तरफ़ से है और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से है। इसलिये अगर कोई बुरा और डरावना ख़्वाब देखे तो बाईं तरफ़ थू-थू करके शैतान के शर से अल्लाह की पनाह मांगे। इस अमल से शैतान उसे कोई नुक़्सान न पहुँचा सकेगा। (दीगर मक़ाम : 5747, 6984, 6986, 6995, 6996, 7005)

الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ مِنَ اللهِ، وَالْحُلُمُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا حَلَمَ أَحَدُكُمْ حُلُمًا يَخَافُهُ فَلْيَبْصُقْ عَنْ يَسَارِهِ وَلْيَتَعَوَّذْ بِاللهِ مِنْ شَرِّهَا، فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ)). [أطرافه في: ٥٧٤٧، ٦٩٨٤، ٦٩٨٦، ٦٩٩٥، ٦٩٩٦، ٧٠٠٥].

3293. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबूबक्र के गुलाम सुमय ने, उन्हें अबू सालेह ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स दिन भर में सौ मर्तबा ये दुआ पढ़ेगा (तर्जुमा) नहीं है कोई मा'बूद, सिवा अल्लाह तआला के, उसका कोई शरीक नहीं, मुल्क उसी का है और तमाम ता'रीफ़ उसी के लिये है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। तो उसे दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर षवाब मिलेगा। सौ नेकियाँ उसके नाम-ए-आमाल में लिखी जाएँगी और सौ बुराईयाँ उससे मिटा दी जाएँगी। इस रोज़ दिन भर ये दुआ शैतान से उसकी हिफ़ाज़त करती रहेगी। यहाँ तक कि शाम हो जाए और कोई शख़्स इससे बेहतर अमल लेकर न आएगा, मगर जो उससे भी ज़्यादा ये कलिमा पढ़ ले। (दीगर मक़ाम : 6403)

٣٢٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سُمَيٍّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ كَانَتْ لَهُ عَدْلَ عَشْرِ رِقَابٍ، وَكُتِبَتْ لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ وَمُحِيَتْ عَنْهُ مِائَةُ سَيِّئَةٍ وَكَانَتْ لَهُ حِرْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ يَوْمَهُ ذَلِكَ حَتَّى يُمْسِيَ، وَلَمْ يَأْتِ أَحَدٌ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلاَّ أَحَدٌ عَمِلَ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ)) [أطرافه في: ٦٤٠٣].

या'नी दो सौ या तीन सौ बार इसको इससे भी षवाब मिलेगा। क़स्तलानी (रह.) ने कहा ये कलिमा हर रोज़ सौ बार पे दर पे पढ़े या थोड़ा थोड़ा करके, हर हाल में वही षवाब मिलेगा लेकिन ये बेहतर है कि सुबह सवेरे और रात होते ही सौ-सौ बार पढ़े, ताकि दिन और रात दोनों में शैतान के शर से महफ़ूज़ रहे।

3294. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे सालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल हमीद बिन अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दफ़ा उमर (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त चाही।

٣٢٩٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: ((اسْتَأْذَنَ

उस वक़्त चन्द क़ुरैशी औरतें (ख़ुद आपकी बीवियाँ) आपके पास बैठी आपसे बातचीत कर रही थीं और आपसे (ख़र्च में) बढ़ाने का सवाल कर रही थीं, ख़ूब आवाज़ बुलन्द करके। लेकिन ज्यों ही हज़रत उमर (रज़ि.) ने इजाज़त चाही, वो ख़वातीन जल्दी से पर्दे के पीछे चली गईं। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त दी। आँहज़रत (ﷺ) मुस्कुरा रहे थे। उमर (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह तआला हमेशा आपको हंसाता रखे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने फ़र्माया कि मुझे उन औरतों पर ता'ज्जुब हुआ अभी अभी मेरे पास थीं, लेकिन जब तुम्हारी आवाज़ सुनी तो पर्दे के पीछे जल्दी से भाग गईं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, लेकिन आप या रसूलल्लाह (ﷺ)! ज़्यादा इसके मुस्तहिक़ थे कि आपसे ये डरतीं, फिर उन्होंने कहा, ऐ अपनी जान की दुश्मनों! मुझसे तो तुम डरती हो और आँहज़रत (ﷺ) से नहीं डरतीं। अज़्वाजे मुतह्हरात बोलीं कि वाक़िया यही है क्योंकि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) के बरख़िलाफ़ मिज़ाज में बहुत सख़्त हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर शैतान भी कहीं रास्ते में तुमसे मिल जाए तो, झट वो ये रास्ता छोड़कर दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लेता है। (दीगर मक़ाम : 3683, 6085)

عُمَرُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَعِنْدَهُ نِسَاءٌ مِنْ قُرَيْشٍ يُكَلِّمْنَهُ وَيَسْتَكْثِرْنَهُ عَالِيَةً أَصْوَاتُهُنَّ، فَلَمَّا اسْتَأْذَنَ عُمَرُ قُمْنَ يَبْتَدِرْنَ الْحِجَابَ فَأَذِنَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يَضْحَكُ، فَقَالَ عُمَرُ: أَضْحَكَ اللهُ سِنَّكَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ: ((عَجِبْتُ مِنْ هَؤُلاَءِ اللاَّتِي كُنَّ عِنْدِي، فَلَمَّا سَمِعْنَ صَوْتَكَ ابْتَدَرْنَ الْحِجَابَ)). قَالَ عُمَرُ : فَأَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ كُنْتَ أَحَقَّ أَنْ يَهَبْنَ. ثُمَّ قَالَ: أَيْ عَدُوَّاتِ أَنْفُسِهِنَّ، أَتَهَبْنَنِي وَلاَ تَهَبْنَ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ قُلْنَ : ((نَعَمْ، أَنْتَ أَفَظُّ وَأَغْلَظُ مِنْ رَسُولِ اللهِ)). قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، مَا لَقِيَكَ الشَّيْطَانُ قَطُّ سَالِكًا فَجًّا إِلاَّ سَلَكَ فَجًّا غَيْرَ فَجِّكَ)).[طرفاه في : ٣٦٨٣، ٦٠٨٥].

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि शैतान हज़रत उमर (रज़ि.) के साये से भागता है। राफ़ज़ियों ने इस हदीष़ की सिहत पर ए'तिराज़ किया है जो सरासर जहालत और नफ़्सानियत पर आधारित है। आँहज़रत (ﷺ) बादशाहे वक़्त रहमतुल् लिल् आलमीन थे और बादशाहों का रहम व करम इस दर्जा होता है कि बदमाशों को भी बादशाह से फ़ज़्ल व करम की तवक़्क़ो होती है। हज़रत उमर (रज़ि.) कोतवाल की तरह थे। कोतवाल का असली फ़र्ज़ यही होता है कि बदमाशों और डाकुओं को पकड़े और बदमाश जितना कोतवाल से डरते हैं, उतना बादशाह से नहीं डरते।

3295. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने, उनसे ईसा बिन तलहा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई शख़्स सोकर उठे और फिर वुज़ू करे तो तीन मर्तबा नाक झाड़े क्योंकि शैतान रातभर उसकी नाक के नथुने पर बैठा रहता है। (जिससे आदमी पर सुस्ती ग़ालिब आ जाती है। पस नाक झाड़ने से वो सुस्ती दूर हो जाएगी)।

٣٢٩٥- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ يَزِيْدَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عِيْسَى بْنِ طَلْحَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا اسْتَيْقَظَ أُرَاهُ أَحَدُكُمْ - مِنْ مَنَامِهِ فَتَوَضَّأَ فَلْيَسْتَنْثِرْ ثَلاَثًا، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَبِيْتُ عَلَى خَيْشُومِهِ)).

इन तमाम अहादीष़ से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने शयातीन का वजूद ष़ाबित किया है और जिन-जिन सूरतों से बनी आदम को गुमराह करते हैं, उनमे से अकष़र सूरतें इन अहादीष़ में मज़्कूर हो गई हैं। शैतान के वजूद का इंकार करने वाले क़ुर्आन व ह़दीष़ की रोशनी में मुसलमान कहलाने के ह़क़दार नहीं हैं। बाब और अहादीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 12 : जिन्नों का बयान और उनको ष़वाब और अ़ज़ाब का होना

١٢- بَابُ ذِكْرِ الْجِنِّ وَثَوَابِهِمْ وَعِقَابِهِمْ

क्योंकि अल्लाह ने (सूरह अन्आम में) फ़र्माया, ऐ जिन्नों और इन्सानों! क्या तुम्हारे पास तुम्हारे ही में से रसूल नहीं आए? जो मेरी आयतें तुमको सुनाते रहे आख़िर तक। (क़ुर्आन मजीद मे सूरह जिन्न में) बख़सा बमा'नी नुक़्सान के है । मुजाहिद ने कहा सूरह अस्स़ाफ़्फ़ात में जो ये है कि काफ़िरों ने परवरदिगार और जिन्नात में नाता ठहराया है, क़ुरैश कहा करते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं और उनकी माँए सरदार जिन्नों की बेटियाँ हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनके जवाब में फ़र्माया, जिन्न जानते हैं कि उन काफ़िरों को हिसाब किताब देने के लिये ह़ाज़िर होना पड़ेगा (सूरह यासीन में जो ये है) वहुम लहुम जुन्दुम् मह़ज़ुरून या'नी हिसाब के वक़्त ह़ाज़िर किये जाएँगे।

لِقَوْلِهِ: ﴿يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي -إِلَى قَوْلِهِ- عَمَّا يَعْمَلُونَ﴾. ﴿بَخْسًا﴾: نَقْصًا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا﴾: قَالَ كُفَّارُ قُرَيْشٍ: الْمَلاَئِكَةُ بَنَاتُ اللهِ وَأُمَّهَاتُهُمْ بَنَاتُ سَرَوَاتِ الْجِنِّ، قَالَ اللهُ : ﴿وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ﴾: سَتُحْضَرُونَ لِلْحِسَابِ. ﴿جُنْدٌ مُحْضَرُونَ﴾: عِنْدَ الْحِسَابِ.

तश्रीह़ : नेचरियों (प्रकृतिवादी) और दहरियों (भौतिकतावादी लोगों) ने जहाँ फ़रिश्तों और शैतान का इंकार किया है, वहाँ जिन्नों का भी इंकार किया है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा जिन्नों का वजूद क़ुर्आन मजीद और ह़दीष़ और इज्माअ़े उम्मत और तवातुर से ष़ाबित है और फ़लासफ़ा और नेचरियों का इंकार क़ाबिले ए'तिबार नहीं। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह पाक ने आदम (अलैहिस्सलाम) से दो हज़ार बरस पहले जिन्नों को पैदा फ़र्माया था। (वह़ीदी)

3296. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी सअ़स़आ़ अंस़ारी ने और उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी कि उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कहा मैं देखता हूँ कि तुमको जंगल में रहकर बकरियाँ चराना बहुत पसन्द है। इसलिये जब कभी अपनी बकरियों के साथ तुम किसी बयाबान में मौजूद हो और (वक़्त होने पर) नमाज़ के लिये अज़ान दो तो अज़ान को जहाँ तक भी कोई इंसान, जिन्न या कोई चीज़ भी सुनेगी तो क़यामत के दिन उसके लिये गवाही देगी। ह़ज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कहा कि ये ह़दीष़ मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी

٣٢٩٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَعْصَعَةَ الأَنْصَارِيِّ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ : ((أَنَّ أَبَا سَعِيْدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لَهُ : إِنِّي أَرَاكَ تُحِبُّ الْغَنَمَ وَالْبَادِيَةَ، فَإِذَا كُنْتَ فِي غَنَمِكَ وَ بَادِيَتِكَ فَأَذَّنْتَ بِالصَّلاَةِ فَارْفَعْ صَوْتَكَ بِالنِّدَاءِ، فَإِنَّهُ لاَ يَسْمَعُ مَدَى صَوْتِ الْمُؤَذِّنِ جِنٌّ وَلاَ إِنْسٌ وَلاَ شَيْءٌ إِلاَّ شَهِدَ لَهُ يَوْمَ

थी। (राजेअ : 209)

الْقِيَامَةِ. قَالَ أَبُو سَعِيْدٍ: سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ)). [راجع: ٦٠٩]

इस हदीष़ में मुअज़्ज़िन की अज़ान की आवाज़ को जिन्नों के सुनने का भी का ज़िक्र है। इससे जिन्नों का वजूद ष़ाबित हुआ और ये भी कि जिन्न क़यामत के दिन कुछ इंसानों के आमाले ख़ैर जैसे अज़ान पर अल्लाह के यहाँ उस बन्दे के हक़ में ख़ैर की गवाही देंगे। जिन्नों का ज़िक्र आने से बाब का मत़लब ष़ाबित हुआ।

बाब 13 : और अल्लाह तआला का सूरह जिन्न में फ़र्माना, और जब मैंने आपकी त़रफ़ जिन्नो की एक जमाअत को भेज दिया, अल्लाह तआला के इर्शाद, उलाइका फ़ी ज़लालिम् मुबीन तक

١٣- بَابُ قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ:
﴿وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِنَ الْجِنِّ - إِلَى قَوْلِهِ - أُولَئِكَ فِي ضَلاَلٍ مُبِيْنٍ﴾. ﴿مَصْرِفًا﴾: مَعْدِلاً. ﴿صَرَفْنَا﴾: أَيْ وَجَّهْنَا.

सूरह कहफ़ में लफ़्ज़ मस्रिफ़ा बमा'नी लौटने की जगह के है। सूरह जिन्न में लफ़्ज़ स़रफ़्ना का मा'नी मुतवज्जह किया, भेज दिया।

इस बाब के ज़ेल ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने सिर्फ़ आयते क़ुर्आनी के नक़ल पर इक्तिफ़ा किया, जिसमें इशारा है कि जिन्नों का वजूद क़ुर्आनी नस से ष़ाबित है। जिससे ये ष़ाबित हुआ कि बहुत जिन्न आँहज़रत (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक से क़ुर्आन शरीफ़ सुनकर मुसलमान हो गये। जिनके ह़ालात बतलाने के लिये सूरह जिन्न नाज़िल हुई, यही बाब की आयात से मुत़ाबक़त है।

बाब 14 : अल्लाह तआला का सूरह बक़रः में इर्शाद, और हमने ज़मीन पर हर त़रह़ के जानवर फैला दिये

١٤- بَابُ قَوْلِهِ تَعَالَى:
﴿وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ﴾
قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الثُّعْبَانُ الْحَيَّةُ الذَّكَرُ مِنْهَا، يُقَالُ الْحَيَّاتُ أَجْنَاسٌ: الْجَانُّ وَالأَفَاعِي وَالأَسَاوِدُ. ﴿آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا﴾ فِي مُلْكِهِ وَسُلْطَانِهِ. يُقَالُ: ﴿صَافَّاتٍ﴾ بُسُطٌ أَجْنِحَتَهُنَّ ﴿يَقْبِضْنَ﴾ يَضْرِبْنَ بِأَجْنِحَتِهِنَّ.

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (क़ुर्आन मजीद में) लफ़्ज़ ष़ुअबान नर सांप के लिये आया है कुछ ने कहा, सांपों की कई क़िस्में होती हैं। जान जो सफ़ेद बारीक हो, अफ़ाइ, ज़हरदार सांप और अस्वद काला नाग (वग़ैरह) सूरह हूद में आख़िज़ुम बिनासियतिहा से मुराद ये है कि हर जानवर की पेशानी थामे हुए है। या'नी हर जानवर उसकी मिल्क और उसकी हुकूमत में है। लफ़्ज़ स़ाफ़्फ़ात जो सूरह मुल्क में है, उसके मा'नी अपने पर फैलाए हुए और उसी सूरह में लफ़्ज़ यक़्बिज़्ना बमा'नी अपने बाज़ुओं को समेटे हुए के है।

٣٢٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ

3297. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे सालिम ने बयान

किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आप मिम्बर पर ख़ुत्बा देते हुए फ़र्मा रहे थे कि सांपों को मार डाला करो (ख़ुसूसन) उनको जिनके सिरों पर दो नुक़्ते होते हैं और दुम बुरीदा सांप को भी, क्योंकि दोनों आँख की रोशनी तक ख़त्म कर देते हैं और ह़मल तक गिरा देते हैं।

(दीगर मक़ाम : 3310, 3312, 4016)

يَخْطُبُ عَلَى الْـمِنْبَرِ يَقُولُ: ((اقْتُلُوا الْـحَيَّاتِ وَاقْتُلُوا ذَا الطُّفْيَتَيْنِ وَالأَبْتَرَ، فَإِنَّهُمَا يَطْمِسَانِ الْبَصَرَ وَيَسْتَسْقِطَانِ الْـحَبَلَ)).

[أطرافه في: ٣٣١٠، ٣٣١٢، ٤٠١٦].

3298. अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि एक मर्तबा मैं एक सांप को मारने की कोशिश कर रहा था कि मुझसे अबू लुबाबा (रज़ि.) ने पुकारकर कहा कि उसे न मारो, मैंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तो सांपों के मारने का हुक्म दिया था। उन्होंने बताया कि बाद में फिर आंहज़रत (ﷺ) ने घरों में रहने वाले सांपों को जो जिन्न होते हैं दफ़अ़तन मार डालने से मना किया। (दीगर मक़ाम : 3311, 3313)

٣٢٩٨- ((قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَبَيْنَا أَنَا أُطَارِدُ حَيَّةً لأَقْتُلَهَا، فَنَادَانِي أَبُو لُبَابَةَ : لاَ تَقْتُلْهَا. فَقُلْتُ : إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ أَمَرَ بِقَتْلِ الْـحَيَّاتِ. فَقَالَ : إِنَّهُ نَهَى بَعْدَ ذَلِكَ عَنْ ذَوَاتِ الْبُيُوتِ، وَهِيَ الْعَوَامِرُ)).

[طرفاه في : ٣٣١١، ٣٣١٣].

3299. और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने भी इस ह़दीष़ को मअ़मर से रिवायत किया, उसमें यूँ है कि मुझको अबू लुबाबा (रज़ि.) ने देखा या मेरे चचा ज़ैद बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने और मअ़मर के साथ इस ह़दीष़ को यूनुस और इब्ने उ़ययना और इस्ह़ाक़ कल्बी और ज़ुबैदी ने भी ज़ुहरी से रिवायत किया और स़ालेह़ और इब्ने अबी ह़फ़्स़ा और इब्ने मज्मअ़ ने भी ज़ुहरी से, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से उसमें यूँ है कि मुझको अबू लुबाबा (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़त्ताब (दोनों) ने देखा।

٣٢٩٩- ((وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ: فَرَآنِي أَبُو لُبَابَةَ، أَوْ زَيْدُ بْنُ الْـخَطَّابِ. وَتَابَعَهُ يُونُسُ وَابْنُ عُيَيْنَةَ وَإِسْحَاقُ الْكَلْبِيُّ وَالزُّبَيْدِيُّ. وَقَالَ صَالِحٌ وَابْنُ أَبِي حَفْصَةَ وَابْنُ مُجَمِّعٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ: رَآنِي أَبُو لُبَابَةَ وَزَيْدُ بْنُ الْـخَطَّابِ)).

अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक की रिवायत को इमाम मुस्लिम और इमाम अह़मद और त़बरानी ने, और यूनुस की रिवायत को मुस्लिम ने और इब्ने उ़ययना को इमाम अह़मद ने वस़्ल किया, इस्ह़ाक़ की रिवायत उनके नुस्ख़े में मौसूल है, स़ालेह़ की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने वस़्ल किया है। इब्ने अबी ह़फ़्स़ा की रिवायत में उनके नुस्ख़े में मौसूल है, इब्ने मज्मआ़ की रिवायत को बग़वी और इब्नुस्सकन ने वस़्ल किया है।

घरेलू सांपों के बारे में मुस्लिम की रिवायत में है कि आपने उनके लिये ये इर्शाद फ़र्माया कि तीन दिन तक उनको डराओ कि हमारे घर से चले जाओ, अगर फिर भी वो न निकलें तो उनको मार डालो, सांपों में काला सांप सबसे बदतर है। उसके ज़हर से आदमी दम भर में मर जाता है। कहते हैं सांप की उ़म्र हज़ार साल होती है। हर साल में एक दफ़ा कैंचुली बदलता है।

बाब 15 : मुसलमान का बेहतरीन माल बकरियाँ हैं जिनको चराने के लिये पहाड़ो की चोटियों पर फिरता रहे

١٥- بَابُ خَيْرُ مَالِ الْـمُسْلِمِ غَنَمٌ يَتْبَعُ بِهَا شَعَفَ الْجِبَالِ

3300. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने

٣٣٠٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ

قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَعْصَعَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُوشِكُ أَنْ يَكُونَ خَيْرَ مَالِ الرَّجُلِ غَنَمٌ يَتْبَعُ بِهَا شَعَفَ الْجِبَالِ وَمَوَاقِعَ الْقَطْرِ، يَفِرُّ بِدِينِهِ مِنَ الْفِتَنِ)). [راجع: ١٩]

कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी स़अ़स़आ ने, उनसे उनके वालिद ने, और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, एक ज़माना आएगा जब मुसलमान का सबसे उ़म्दा माल उसकी वो बकरियाँ होंगी जिन्हें वो पहाड़ की चोटियों और बारिश की वादियों में लेकर चला जाएगा ताकि इस त़रह़ अपने दीन व ईमान को फ़ित्नों से बचा ले। (राजेअ़ : 19)

٣٣٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((رَأْسُ الْكُفْرِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ، وَالْفَخْرُ وَالْخُيَلاَءُ فِي أَهْلِ الْخَيْلِ وَالإِبِلِ، وَالْفَدَّادِينَ أَهْلَ الْوَبَرِ، وَالسَّكِينَةُ فِي أَهْلِ الْغَنَمِ)). [أطرافه في : ٣٤٩٩، ٤٣٨٨، ٤٣٨٩، ٤٣٩٠].

3301. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने ख़बर दी, उन्हें अअ़रज ने ख़बर दी, और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कुफ़्र की चोटी मश्रिक़ में है और फ़ख़्र और तकब्बुर करना घोड़े वालों, ऊँट वालों और ज़मींदारों में होता है जो (उ़मूमन) गांव के रहने वाले होते हैं और बकरी वालों में दिल जम्ई होती है। (दीगर मक़ाम : 3499, 4388, 4389, 4390)

पूरब में कुफ़्र की चोटी फ़र्माई, क्यूँकि अ़रब के मुल्क से ईरान, तूरान ये सब मश्रिक़ में वाक़ेअ़ हैं और उस ज़माने में यहाँ के बादशाह बड़े मग़रूर थे। ईरान के बादशाह ने आपका ख़त़ फाड़ डाला था।

٣٣٠٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَمْرٍو أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ : أَشَارَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِيَدِهِ نَحْوَ الْيَمَنِ فَقَالَ: ((الإِيْمَانُ يَمَانٍ هَا هُنَا، أَلاَ إِنَّ الْقَسْوَةَ وَغِلَظَ الْقُلُوبِ فِي الْفَدَّادِينَ عِنْدَ أُصُولِ أَذْنَابِ الإِبِلِ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنَا الشَّيْطَانِ فِي رَبِيعَةَ وَمُضَرَ)).

[أطرافه في : ٣٤٩٨، ٤٣٨٧، ٥٣٠٣].

3302. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया कि मुझसे क़ैस ने बयान किया और उनसे उ़क़्बा बिन अ़म्र बिन अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यमन की त़रफ़ अपने हाथ से इशारा करते हुए फ़र्माया कि ईमान तो इधर है यमन में! हाँ, और क़सावत और सख़्तदिली उन लोगों मे है जो ऊँटों की दुमे पकड़े चलते रहते हैं। जहाँ से शैत़ान की चोटियाँ नमूदार होंगी, या'नी रबीआ़ और मुज़र की क़ौमों में। (दीगर मक़ाम : 3498, 4387, 5303)

तश्रीह : यमन वाले बग़ैर जंग और बग़ैर तकलीफ़ के अपनी रग़्बत और ख़ुशी से मुसलमान हो गये थे आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी ता'रीफ़ फ़र्माई और उसमें इस बात का इशारा है कि यमन वाले क़विय्युल ईमान (मज़बूत ईमान) रहेंगे

बनिस्बत और दूसरे मुल्क वालों के। यमन मे बड़े–बड़े औलिया अल्लाह और आ़मिलीन बिल ह़दीष़ गुज़रे हैं। आख़िरी ज़माने में अ़ल्लामा क़ाज़ी मुह़म्मद बिन अ़ली शौकानी यमनी ह़दीष़ के बड़े आ़लिम गुज़रे हैं। उनसे पहले अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन इस्माईल अमीर वग़ैरह। (वह़ीदी)

3303. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने, उनसे अअ़रज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब मुर्ग़ की बांग सुनो तो अल्लाह से उसके फ़ज़्ल का सवाल किया करो, क्योंकि उसने फ़रिश्ते को देखा है और जब गधे की आवाज़ सुनो तो शैत़ान से अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि उसने शैत़ान को देखा है।

٣٣٠٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيْعَةَ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَاسْأَلُوا اللهَ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا، وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيْقَ الْحِمَارِ فَتَعَوَّذُوا بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ رَأَى شَيْطَانًا)).

ह़ाफ़िज़ ने कहा इस ह़दीष़ से मुर्ग़ की फ़ज़ीलत निकली। अबू दाऊद ने ब सनदे स़ह़ीह़ निकाला कि मुर्ग़ को बुरा मत कहो वो नमाज़ के लिये बुलाता है या'नी नमाज़ के वक़्त जगा देता है। इस ह़दीष़ से ये भी निकला कि नेक लोगों की सुह़बत में दुआ़ करना मुस्तह़ब है क्योंकि क़ुबूल होने की उम्मीद ज़्यादा होती है।

3304. हमसे इस्ह़ाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको रौह़ बिन उ़बादा ने ख़बर दी, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब रात का अंधेरा शुरू हो या (आपने ये फ़र्माया कि) जब शाम हो जाए तो अपने बच्चों को अपने पास रोक लिया करो, क्योंकि शयात़ीन उसी वक़्त फैलते हैं। अल्बत्ता जब एक घड़ी रात गुज़र जाए तो उन्हें छोड़ दो, और अल्लाह का नाम लेकर दरवाज़े बन्द कर लो, क्योंकि शैत़ान किसी बन्द दरवाज़े को नहीं खोल सकता, इब्ने जुरैज ने बयान किया कि मुझे अ़म्र बिन दीनार ने ख़बर दी कि उन्होंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से बिलकुल इसी त़रह़ ह़दीष़ सुनी थी जिस त़रह़ मुझे अ़त़ा ने ख़बर दी थी, अल्बत्ता उन्होंने उसका ज़िक्र नहीं किया कि, अल्लाह का नाम लो। (राजेअ़ : 3280)

٣٣٠٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا رَوْحٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا كَانَ جُنْحُ اللَّيْلِ - أَو أَمْسَيْتُمْ - فَكُفُّوا صِبْيَانَكُمْ، فَإِنَّ الشَّيَاطِيْنَ تَنْتَشِرُ حِيْنَئِذٍ، فَإِذَا ذَهَبَتْ سَاعَةٌ مِنَ اللَّيْلِ فَحَلُّوهُمْ وَأَغْلِقُوا الأَبْوَابَ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللهِ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَفْتَحُ بَابًا مُغْلَقًا)). قَالَ وَأَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِيْنَارٍ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ نَحْوَ مَا أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ وَلَمْ يَذْكُرْ ((وَاذْكُرُو اسْمَ اللهِ)).

[راجع: ٣٢٨٠]

3305. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे

٣٣٠٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ

वुहैब ने, उनसे ख़ालिद ने, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल में कुछ लोग ग़ायब हो गये (उनकी सूरतें मस्ख़ हो गईं यानी बदल गईं)। मेरा तो ये ख़याल है कि उन्हें चूहे की सूरत में मस्ख़ कर दिया गया क्योंकि चूहों के सामने जब ऊँट का दूध रखा जाता है तो वो उसे नहीं पीते (क्योंकि बनी इस्राईल के दीन में ऊँट का गोश्त हराम था) और अगर बकरी का दूध रखा जाए तो पी जाते हैं। फिर मैंने ये हदीष़ कअब अह़बार से बयान की तो उन्होंने (हैरत से) पूछा, क्या वाक़ई आपने आँह़ज़रत (ﷺ) से ये हदीष़ सुनी है? कई मर्तबा उन्होंने ये सवाल किया। इस पर मैंने कहा (कि आँह़ज़रत ﷺ से नहीं सुनी तो फिर किससे) क्या मैं तौरात पढ़ा करता हूँ? (कि उससे नक़ल करके बयान करता हूँ)

حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ خَالِدٍ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((فُقِدَتْ أُمَّةٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ لاَ يُدْرَى مَا فَعَلَتْ، وَإِنِّي لاَ أُرَاهَا إِلاَّ الْفَأْرَ: إِذَا وُضِعَ لَهَا أَلْبَانُ الإِبِلِ لَمْ تَشْرَبْ، وَإِذَا وُضِعَ لَهَا أَلْبَانُ الشَّاءِ شَرِبَتْ)). فَحَدَّثْتُ كَعْبًا فَقَالَ: أَنْتَ سَمِعْتَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُهُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ لِيْ مِرَارًا. فَقُلْتُ: أَفَأَقْرَأُ التَّوْرَاةَ؟.

इसमें इख़्तिलाफ़ है कि मम्सूख़ लोगों की नस्ल रहती है या नहीं? जुम्हूर के नज़दीक नहीं रहती और बाब की ह़दीष़ को इस पर मह़मूल किया है कि उस वक़्त तक आप पर वह़्य न आई होगी, इसीलिये आपने गुमान के तौर पर फ़र्माया। (वह़ीदी)

3306. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, उनसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा ने, उन्हों ने आइशा (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने गिरगिट (छिपकली) के बारे में फ़र्माया था कि वो मूज़ी जानवर है लेकिन मैंने आपसे उसे मार डालने का हुक्म नहीं सुना था और सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) बताते थे कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे मार डालने का हुक्म दिया है। (राजेअ : 1831)

٣٣٠٦- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عُفَيْرٍ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ يُحَدِّثُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِلْوَزَغِ: ((الْفُوَيْسِقُ)). وَلَمْ أَسْمَعْهُ أَمَرَ بِقَتْلِهِ. وَزَعَمَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ بِقَتْلِهِ)). [راجع: ١٨٣١]

3307. हमसे सदक़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने उयैना ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल हमीद बिन जुबेर बिन शैबा ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उन्हें उम्मे शुरेक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने गिरगिट को मार डालने का हु क्म फ़र्माया है। (दीगर मक़ाम : 3359)

٣٣٠٧- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيْدِ بْنِ جُبَيْرِ بن شَيْبَةَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أُمَّ شَرِيْكٍ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَهَا بِقَتْلِ الأَوْزَاغِ)). [طرفه في : ٣٣٥٩].

3308. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे

٣٣٠٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ

अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस सांप के सर पर दो नुक़्ते होते हैं, उन्हें मार डाला करो, क्योंकि वो अंधा बना देते हैं और हमल को भी नुक़्सान पहुँचाते हैं।

अबू उसामा के साथ इसको हम्माद बिन सलमा ने भी रिवायत किया। (दीगर मक़ाम : 3309)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اقْتُلُوا ذَا الطُّفْيَتَيْنِ، فَإِنَّهُ يَطْمِسُ الْبَصَرَ وَيُصِيبُ الْحَبَلَ)).
تَابَعَهُ حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ : ((أَخْبَرَنَا أُسَامَةُ)).
[طرفه في: ٣٣٠٩].

3309. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दुम बुरीदा सांप को मार डालने का हुक्म दिया और फ़र्माया कि ये आँखों को नुक़्सान पहुँचाता है और हमल को साक़ित कर देता है। (राजेअ़ : 3308)

٣٣٠٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِقَتْلِ الأَبْتَرِ وَقَالَ : إِنَّهُ يُصِيبُ الْبَصَرَ وَيُذْهِبُ الْحَبَلَ)).
[راجع: ٣٣٠٨]

या'नी उनमें ज़हरीला माद्दा इतना ज़ोरदार अ़षर रखता है कि उसकी तेज़ निगाही अगर किसी की आँख से टकरा जाए तो बसारत के ज़ाइल होने (अंधा होने) का डर है। इसी तरह हामिला औरतों का हमल साक़ित करने के लिये भी उनकी तेज़ निगाही ख़तरनाक है। फिर ज़हर किस क़दर मुहलिक (नुक़्सानदायक) होगा उसका अंदाज़ा भी नहीं किया जा सकता।

3310. हमसे अ़म्र बिन अ़ली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया उनसे अबू यूनुस क़ुशैरी (हातिम बिन अबी स़ग़ीरा) ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) सांपो को पहले मार डाला करते थे। लेकिन बाद में उन्हें मारने से खुद ही मना करने लगे। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपनी एक दीवार गिरवाई तो उसमें से एक सांप की कैंचुली निकली, आपने फ़र्माया कि देखो, वो सांप कहाँ है। स़हाबा (रज़ि.) ने तलाश किया (और वो मिल गया तो) आपने फ़र्माया कि इसे मार डालो, मैं भी इसी वजह से सांपों को मार डाला करता था। (राजेअ़ : 3297)

٣٣١٠- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ أَبِي يُونُسَ الْقُشَيْرِيِّ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ يَقْتُلُ الْحَيَّاتِ، ثُمَّ نَهَى قَالَ: ((إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ هَدَمَ حَائِطًا لَهُ فَوَجَدَ فِيهِ سِلْخَ حَيَّةٍ فَقَالَ: ((انْظُرُوا أَيْنَ هُوَ فَنَظَرُوا فَقَالَ: اقْتُلُوهُ))، فَكُنْتُ أَقْتُلُهَا لِذَلِكَ)).
[راجع: ٣٢٩٧]

3311. फिर मेरी मुलाक़ात एक दिन अबू लुबाबा से हुई तो उन्होंने मुझे ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि पतले या सफ़ेद सांपों को न मारा करो। अल्बत्ता दुम कटे हुए सांप को जिस पर दो सफ़ेद धारियाँ होती हैं उसको मार डालो, क्योंकि ये इतना ज़हरीला होता है कि हामिला के हमल को गिरा देता है और आदमी को अंधा बना देता है। (राजेअ़ : 3298)

٣٣١١- فَلَقِيتُ أَبَا لُبَابَةَ فَأَخْبَرَنِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقْتُلُوا الْجِنَّانَ إِلاَّ كُلَّ أَبْتَرَ ذِي طُفْيَتَيْنِ، فَإِنَّهُ يُسْقِطُ الْوَلَدَ وَيُذْهِبُ الْبَصَرَ فَاقْتُلُوهُ)).
[راجع: ٣٢٩٨]

तश्रीह : पहले जो ह़दीष़ गुज़री है उसमें धारियाँ वाले, और बेदुम के सांप के मारने का हुक्म फ़र्माया। यहाँ भी उसके मारने का हुक्म दिया, जिसमें ये दोनों बातें मौजूद हों वो और भी ज़्यादा ज़हरीला होगा। ये ह़दीष़ अगली ह़दीष़ के ख़िलाफ़ नहीं है। मत़लब ये है कि जिस सांप में इन दोनों में से कोई सिफ़त या दोनों सिफ़तें पाई जाती हो उसको मार डालो। (वह़ीदी)

3312. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया और उनसे नाफ़ेअ ने कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) सांपों को मार डाला करते थे। (राजेअ : 3297)

٣٣١٢- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ كَانَ يَقْتُلُ الْحَيَّاتِ.

[راجع: ٣٢٩٧]

3313. फिर उनसे अबू लुबाबा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने घरों के पतले या सफ़ेद सांपों को मारने से मना किया है तो उन्होंने मारना छोड़ दिया। (राजेअ : 3298)

٣٣١٣- فَحَدَّثَهُ أَبُو لُبَابَةَ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ قَتْلِ جِنَّانِ الْبُيُوتِ، فَأَمْسَكَ عَنْهَا)). [راجع: ٣٢٩٨]

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अभी पीछे आयते शरीफ़ा, **वबष़्ष़ा फ़ीहा मिन कुल्लि दाब्बति** (अल् बक़र: : 164) के ज़ेल बाब मुनअक़िद किया था। इन तमाम अह़ादीष़ का ता'ल्लुक़ इसी बाब के साथ है। दरम्यान में बकरी का ज़िम्नी त़ौर पर ज़िक्र आ गया था। इसकी हिमायत के पेशे-नज़र इसके लिये अलग बाब बांधना मुनासिब जाना। फिर बकरी की अह़ादीष़ के बाद बाब ज़ेरे आयत **व बष़्ष़ फ़ीहा मिन कुल्लि दाब्बतिन** (अल बक़र : 164) के ज़ेल इन तमाम अह़ादीष़ को लाए जिनमे हैवानात की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों का ज़िक्र हुआ है। **फ़तदब्बर वफ़्फ़क़कल्लाह**

बाब 16 : पाँच बहुत ही बुरे (इंसान को तकलीफ़ देने वाले) जानवर हैं, जिनको ह़रम में भी मार डालना दुरुस्त है

بَاب خَمْسٌ مِنَ الدَّوَابِّ فَوَاسِقُ يُقْتَلْنَ فِي الْحَرَمِ

3314. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरेअ ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पाँच जानवर मूज़ी हैं, उन्हें ह़रम मे भी मारा जा सकता है (तोह़ल में बत़रीक़े औला उनका मारना जाइज़ होगा) चूहा, बिच्छू, चील, कौआ और काट लेने वाला कुत्ता। (राजेअ : 1829)

٣٣١٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَمْسٌ فَوَاسِقُ يُقْتَلْنَ فِي الْحَرَمِ: الْفَأْرَةُ وَالْعَقْرَبُ وَالْحُدَيَّا وَالْغُرَابُ وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ)).

[راجع: ١٨٢٩]

स़ेह़ते इंसानी के लिहाज़ से भी ये जानवर बहुत मुज़िर (नुक़्सानदेह) हैं। अगर उनमे से हर जानवर को उसके मुज़िर अष़रात की रोशनी मे देखा जाए तो ह़दीषे़ नबवी का बयान स़ाफ़ त़ौर पर ज़हन नशीन हो जाएगा।

3315. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार

٣٣١٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ

ने और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पाँच जानवर ऐसे हैं जिन्हें अगर कोई शख़्स हालते एह़राम में भी मार डाले तो उस पर कोई गुनाह नहीं। बिच्छू, चूहा, काट लेने वाला कुत्ता, कौआ और चील। (राजेअ़ : 1826)

عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((خَمْسٌ مِنَ الدَّوَابِّ مَنْ قَتَلَهُنَّ وَهُوَ مُحْرِمٌ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ: الْعَقْرَبُ وَالْفَأْرَةُ وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ وَالْغُرَابُ وَالْحِدَأَةُ)). [راجع: ١٨٢٦]

3316. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे कष़ीर ने, उनसे अ़ता ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पानी के बर्तनों को ढंक लिया करो, मशकीज़ों (के मुँह) को बाँध लिया करो, दरवाज़े बन्द कर लिया करो और अपने बच्चों को अपने पास जमा कर लिया करो, क्योंकि शाम होते ही जिन्नात (रूए ज़मीन पर) फैलते हैं और उचकते फिरते हैं और सोते वक़्त चिराग़ बुझा लिया करो, क्योंकि मूज़ी (चूहा) कुछ औक़ात जलती बत्ती को खींच लाता है और इस त़रह सारे घर को जला देता है। इब्ने जुरैज और ह़बीब ने भी इसको अ़ता से रिवायत किया, उसमें जिन्नात के बदले में शयात़ीन मज़्कूर हैं। (राजेअ़ : 3280)

٣٣١٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ كَثِيرٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا رَفَعَهُ قَالَ: ((خَمِّرُوا الآنِيَةَ، وَأَوْكُوا الأَسْقِيَةَ، وَأَجِيفُوا الأَبْوَابَ، وَاكْفِتُوا صِبْيَانَكُمْ عِنْدَ الْعِشَاءِ، فَإِنَّ لِلْجِنِّ انْتِشَارًا وَخَطْفَةً، وَأَطْفِئُوا الْمَصَابِيحَ عِنْدَ الرُّقَادِ فَإِنَّ الْفُوَيْسِقَةَ رُبَّمَا اجْتَرَّتِ الْفَتِيلَةَ فَأَحْرَقَتْ أَهْلَ الْبَيْتِ)). قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ وَحَبِيبٌ عَنْ عَطَاءٍ: ((فَإِنَّ لِلشَّيَاطِينِ)). [راجع: ٣٢٨٠]

जिन्नात और शयात़ीन कुछ दफ़ा सांप की शक्ल में ज़मीन पर फैलकर ख़ास़ त़ौर पर रात में इंसानों की तकलीफ़ का सबब बन जाते हैं, ह़दीष़ का मफ़्हूम यही है।

3317. हमसे अ़ब्दह बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमको यह़्या बिन आदम ने ख़बर दी, उन्हें इस्राईल ने, उन्हें मंसूर ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें अ़ल्क़मा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि (मुक़ामे मिना में) हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ार में बैठे हुए थे कि आयत, वल मुर्सलाति उ़रफ़ा नाज़िल हुई, अभी हम आपकी ज़ुबाने मुबारक से उसे सुन ही रहे थे कि एक बिल में से एक सांप निकला। हम उसे मारने के लिये झपटे, लेकिन वो भाग गया और अपने बिल में दाख़िल हो गया, आँह़ज़रत (ﷺ) ने) उस पर फ़र्माया, तुम्हारे हाथ से वो उसी तरह बच निकला, जैसे तुम उसके निशान से बच गये और यह़्या ने इस्राईल से रिवायत किया है, उनसे आ'मश ने, उनस इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने इसी

٣٣١٧- حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي غَارٍ، فَنَزَلَتْ: ﴿وَالْمُرْسَلاَتِ عُرْفًا﴾ فَإِنَّا لَنَتَلَقَّاهَا مِنْ فِيهِ إِذْ خَرَجَتْ حَيَّةٌ مِنْ جُحْرِهَا، فَابْتَدَرْنَاهَا لِنَقْتُلَهَا، فَسَبَقَتْنَا فَدَخَلَتْ فِي جُحْرِهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وُقِيَتْ شَرَّكُمْ كَمَا وُقِيتُمْ شَرَّهَا)). وَعَنْ إِسْرَائِيلَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ

إبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ . مِثْلَهُ. قَالَ: ((وَإِنَّا لَنَتَلَقَّاهَا مِنْ فِيهِ رَطْبَةً)). وَتَابَعَهُ أَبُو عَوَانَةَ عَنْ مُغِيرَةَ. وَقَالَ حَفْصٌ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَسُلَيْمَانُ بْنُ قَرْمٍ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللهِ.[راجع: ١٨٣٠]

तरह रिवायत किया और कहा कि हम आँहज़रत (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक से इस सूरह को ताज़ा-ब-ताज़ा सुन रहे थे और इस्राईल के साथ इस हदीष़ को अबू अवाना ने मुग़ीरह से रिवायत किया और ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ और अबू मुआविया और सुलैमान बिन क़रम ने भी आ'मश से बयान किया, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने। (राजेअ : 1830)

अबू अवाना की रिवायत को ख़ुद मुअल्लिफ़ ने किताबुत् तफ़्सीर में और ह़फ़्स की रिवायत को भी मुअल्लिफ़ ने किताबुल ह़ज्ज में और अबू मुआविया की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने वस्ल किया, सुलैमान बिन क़रम की रिवायत को ह़ाफ़िज़ ने कहा, मैंने मौसूलन नहीं पाया।

٣٣١٨- حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((دَخَلَتِ امْرَأَةٌ النَّارَ فِي هِرَّةٍ رَبَطَتْهَا، فَلَمْ تُطْعِمْهَا، وَلَمْ تَدَعْهَا تَأْكُلُ مِنْ خَشَاشِ الأَرْضِ)). قَالَ: وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. مِثْلَهُ. [راجع: ٢٣٦٥]

3318. हमसे नस़र बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल आ़ला ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बयान किया, एक औरत एक बिल्ली के सबब से दोज़ख़ में गई। उसने बिल्ली को बाँधकर रखा न तो उसे खाना दिया और न ही छोड़ा कि वो कीड़े-मकोड़े खाकर अपनी जान बचा लेती। अ़ब्दुल आ़ला ने कहा और हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह रिवायत किया। (राजेअ : 2365)

मा'लूम हुआ कि मख़्लूक़ात को जान-बूझकर कुछ भी तकलीफ़ देना अल्लाह के नज़दीक सख़्त मअ़यूब और गुनाहे अ़ज़ीम है।

٣٣١٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((نَزَلَ نَبِيٌّ مِنَ الأَنْبِيَاءِ تَحْتَ شَجَرَةٍ فَلَدَغَتْهُ نَمْلَةٌ، فَأَمَرَ بِجَهَازِهِ فَأُخْرِجَ مِنْ تَحْتِهَا، ثُمَّ أَمَرَ بِبَيْتِهَا فَأُحْرِقَ بِالنَّارِ، فَأَوْحَى اللهُ إِلَيْهِ: فَهَلاَّ نَمْلَةً وَاحِدَةً؟)). [راجع: ٣٠١٩]

3319. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गिरोहे अंबिया में से एक नबी एक पेड़ के साये में उतरे, वहाँ उन्हें किसी एक चींटी ने काट लिया। तो उन्होंने हुक्म दिया, उनका सारा सामान पेड़ के तले से उठा लिया गया। फिर चींटियों का सारा छत्ता जलवा दिया। इस पर अल्लाह तआ़ला ने उन पर वह्य भेजी कि तुमको तो एक ही चींटी ने काटा था, फ़क़त उसी को जलाना था। (राजेअ : 3019)

ग़लत तर्जुमे का एक नमूना :—

बड़े अफ़सोस से कहना पड़ता है कि आजकल हमारे मुअज़्ज़ज़ उलमा-ए-किराम बुख़ारी शरीफ़ के कई अनुवाद निकाल रहे हैं। मगर उनके तराजिम (अनुवाद) और तशरीहात में लफ़्ज़ी और मअनवी बहुत सी ग़लतियाँ मौजूद हैं। यहाँ तक कि कुछ जगह हदीष़ का मफ़्हूम कुछ होता है और ये हज़रात उसके बरअक्स तर्जुमा कर जाते हैं। उसकी एक मिषाल यहाँ भी मौजूद है। हदीष़ के अल्फ़ाज़ **फअमर बिजहाज़िही फउख़िरज मिन तहतिहा** का तर्जुमा तफ़्हीमुल बुख़ारी (देवबन्दी) में यूँ किया गया है :

तो उन्होंने उसके छत्ते को पेड़ के नीचे से निकालने का हुक्म दिया। वो निकाला गया। ये तर्जुमा बिलकुल ग़लत है, सहीह वो है जो हमने किया है, जैसा कि अहले इल्म पर रोशन है।

बाब 17 : उस हदीष़ के बयान में जब मक्खी पानी या खाने में गिर जाए तो उसको डुबो दे क्योंकि उसके एक पर में बीमारी होती है और दूसरे पर में शिफ़ा होती है

١٧ – بَابُ إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي شَرَابِ أَحَدِكُمْ فَلْيَغْمِسْهُ فَإِنَّ فِي إِحْدَى جَنَاحَيْهِ دَاءً وَفِي الأُخْرَى شِفَاءً

3320. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे उत्बा बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे उबैद बिन हुनैन ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना। वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब मक्खी किसी के पीने (या खाने की चीज़) में पड़ जाए तो उसे डुबो दे और फिर निकालकर फेंक दे क्योंकि उसके एक पर में बीमारी है और दूसरे (पर) में शिफ़ा होती है। (दीगर मक़ाम : 5782)

٣٣٢٠ – حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُتْبَةُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ بْنُ حُنَيْنٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي شَرَابِ أَحَدِكُمْ فَلْيَغْمِسْهُ ثُمَّ لِيَنْزِعْهُ، فَإِنَّ فِي إِحْدَى جَنَاحَيْهِ دَاءً وَالأُخْرَى شِفَاءً)). [طرفه في : ٥٧٨٢].

3321. हमसे हसन बिन सबाह ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ अज़्रक़ ने बयान किया, कहा हमसे औफ़ ने बयान किया, उनसे हसन और इब्ने सीरीन ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक फ़ाहिशा औरत सिर्फ़ इस वजह से बख़्शी गई कि वो एक कुत्ते के क़रीब से गुज़र रही थी, जो एक कुँए के क़रीब खड़ा प्यासा हांफ रहा था। ऐसा मा'लूम होता था कि वो प्यास की शिद्दत से अभी मर जाएगा। उस औरत ने अपना मोज़ा निकाला और उसमें अपना दुपट्टा बाँधकर पानी निकाला और उस कुत्ते को पिला दिया, तो उसकी बख़्शिश उसी (नेकी) की वजह से हो गई। (दीगर मक़ाम : 3467)

٣٣٢١ – حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الأَزْرَقُ قَالَ حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنِ الْحَسَنِ وَابْنِ سِيْرِيْنَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((غُفِرَ لاِمْرَأَةٍ مُومِسَةٍ مَرَّتْ بِكَلْبٍ عَلَى رَأْسِ رَكِيٍّ يَلْهَثُ، قَالَ: كَادَ يَقْتُلُهُ الْعَطَشُ – فَنَزَعَتْ خُفَّهَا فَأَوْثَقَتْهُ بِخِمَارِهَا فَنَزَعَتْ لَهُ مِنَ الْمَاءِ، فَغُفِرَ لَهَا بِذَلِكَ)). [طرفه في : ٣٤٦٧].

3322. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैं ने ज़ुह्री से इस ह़दीष़ को इस त़रह याद रखा कि मुझको कोई शक ही नहीं, जैसे इसमें शक नहीं कि तू उस जगह मौजूद है। (उन्होंने ने बयान किया कि) मुझे उ़बैदुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने और उन्हें अबू त़लहा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, (रह़मत के) फ़रिश्ते उन घरों में नहीं दाख़िल होते जिनमें कुत्ता या (जानदार की) तस्वीर हो। (राजेअ़ : 2325)

٣٣٢٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَفِظْتُهُ مِنَ الزُّهْرِيِّ كَمَا أَنَّكَ هَا هُنَا، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَدْخُلُ الْمَلاَئِكَةُ بَيْتًا فِيْهِ كَلْبٌ وَلاَ صُوْرَةٌ)). [راجع: ٢٣٢٥]

3323. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने कुत्तों को मारने का हुक्म फ़र्माया है।

٣٣٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَمَرَ بِقَتْلِ الْكِلاَبِ)).

शिकार के लिये या घर बार की रखवाली के लिये कुत्ते पालने की इजाज़त दी गई है। पागल या जो कुत्ते इंसानों के दुश्मन हों और काटने के लिये दौड़ते हों उन्हें मारने का आपने हुक्म दिया है आपकी मुराद तमाम कुत्तों से नहीं।

3324. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स कुत्ता पाले, उसके अ़मले नेक में से रोज़ाना एक क़ीरात़ (ष़वाब) कम कर दिया जाता है, खेत के लिये या मवेशी के लिये जो कुत्ते पाले जाएँ वो उससे अलग हैं। (राजेअ़ : 2322)

٣٣٢٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ أَمْسَكَ كَلْبًا يَنْقُصُ مِنْ عَمَلِهِ كُلَّ يَومٍ قِيْرَاطٌ، إِلاَّ كَلْبَ حَرْثٍ أَوْ كَلْبَ مَاشِيَةٍ)). [راجع: ٢٣٢٢]

कुत्ते ज़रूर कभी न कभी किसी न किसी क़िस्म का नुक़्सान ज़रूर कर देते हैं, इस नुक़्सान के बदले उसके पालने वाले पर ज़िम्मेदारी होगी, ह़िफ़ाज़त के लिये जो कुत्ते पाले जाएँ उन पर ज़रूर मालिक का कंट्रोल होगा लिहाज़ा वो अलग किये गये।

3325. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझे यज़ीद बिन ख़ुसैफ़ा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे साइब बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्होंने सुफ़यान बिन अबी ज़ुहैर शनवी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, कि जिसने कोई कुत्ता पाला। न तो पालने वाले का मक़्सद खेत की ह़िफ़ाज़त है और न

٣٣٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ قَالَ أَخْبَرَنِي يَزِيْدُ بْنُ خُصَيْفَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي السَّائِبُ بْنُ يَزِيْدَ سَمِعَ سُفْيَانَ بْنَ زُهَيْرٍ الشَّنَئِيَّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: ((مَنِ اقْتَنَى كَلْبًا لاَ

يُغْنِي عَنْهُ زَرْعًا وَلاَ ضَرْعًا نَقَصَ مِنْ عَمَلِهِ كُلَّ يَوْمٍ قِيرَاطٌ)). فَقَالَ السَّائِبُ: أَنْتَ سَمِعْتَ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: إِيْ وَرَبِّ هَذِهِ الْقِبْلَةِ. [راجع: ٢٣٢٣]

मवेशियों की, तो रोज़ाना उसके नेक अ़मल में से एक क़ीरात़ (ष़वाब) की कमी हो जाती है। साईब ने पूछा, क्या तुमने ख़ुद ये ह़दीष़ रसूले करीम (ﷺ) से सुनी थी? उन्होंने कहा, हाँ! इस क़िब्ला के रब की क़सम (मैंने ख़ुद इस ह़दीष़ को रसूले करीम ﷺ से सुना है)। (राजेअ़ : 2323)

60. किताब अह़ादीषुल अंबिया

किताब अंबिया (अलैहि.) के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तशरीह : अल्ह़म्दुलिल्लाह! आज जबकि दौराने सफ़र दक्षिण भारत में मुह़तरम अल्ह़ाज मुह़म्मद इब्राहीम स़ाह़ब त्रिचनापल्ली के यहाँ मुक़ीम हूँ, किताब बदउल ख़ल्क़ पूरी हुई और किताबुल अंबिया का आग़ाज़ हुआ जिसमें मुख़्तलिफ़ नबियों के ह़ालात मज़कूर होंगे। बाब बदउल ख़ल्क़ में ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) कई ऐसी अह़ादीष़ भी लाए हैं जिनका बज़ाहिर ता'ल्लुक़ बाब के तर्जुमे से मा'लूम नहीं होता। किरमानी ने ये तौजीह की है कि इस बाब में बदउल ख़ल्क़ का ज़िक्र था तो इमाम बुख़ारी (रह.) ने उसमें कुछ मख़्लूक़ात का भी ज़िक्र कर दिया, जैसे कुत्ता, चूहा वग़ैरह। वल्लाहु आलम।

मख़्लूक़ात में आसमान व ज़मीन, इंसान, हैवान सब ही दाख़िल हैं। इसी ह़क़ीक़त को वाज़ेह़ करने के लिये आप मुख़्तलिफ़ क़िस्म की अह़ादीष़ इस बाब के ज़ेल में लाए ताकि फ़रामीने रसूले करीम (ﷺ) की रोशनी मे हर क़िस्म की मख़्लूक़ात के कुछ ह़ालात मा'लूम हो सकें। अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) की ता'दाद के मुता'ल्लिक़ एक ह़दीष़ वारिद हुई है कि दुनिया में कुल एक लाख और चौबीस ह़ज़ार नबी आए। जिनमें रसूल या'नी स़ाह़िबे शरीअ़त और किताब तीन सौ तेरह हैं। उन सब नबियों के आख़िर में ख़ातिमुर्रसूल हमारे नबी (ﷺ) हैं। ख़ुद क़ुर्आन शरीफ़ से ष़ाबित है कि आप ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के अष़र में जो ये वारिद है कि सात ज़मीनें हैं और हर ज़मीन में एक नबी है तुम्हारे नबी की तरह़। तो अव्वल तो ये अष़र शाज़ है। दूसरे इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं है। मुम्किन है कि और ज़मीनों के नबी हमारे नबी (अलै.) से पहले आ चुके हों और हमारे पैग़म्बर (अलै.) उनके भी बाद तशरीफ़ लाए हों तो वो सब पैग़म्बर अपनी अपनी ज़मीनों के ख़ातिमुल अंबिया हुए और हमारे पैग़म्बर (अलै.) सब पैग़म्बरों के ख़ातिम हुए।

ख़त्मे नुबुव्वत का अ़क़ीदा उम्मत का मुसल्लमा अ़क़ीदा है जिस पर तमाम मकातिबे फ़िक्र इस्लामी का इत्तिफ़ाक़ है मगर कुछ अ़र्सा पहले यहाँ हिन्दुस्तान में एक स़ाह़ब पैदा हुए और उन्होंने इस अ़क़ीदे को मस्ख़ करने के लिये मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तावीलात का जाल फैलाकर बहुत से लोगों को इस बारे में मुतज़लज़ल (डगमग) कर दिया। फिर ये साह़ब ख़ुद भी नुबुव्वत के दावेदार बन बैठे और कितने लोगों का अपना मुरीद बना लिया, उनसे मुराद मिर्ज़ा ग़ुलाम अह़मद स़ाह़ब क़ादयानी हैं जो अ़र्सा पहले वफ़ात पा चुके हैं। मगर उनके जानशीन पूरी उम्मते इस्लामी से कटकर अपना एक अलग दीन बनाए हुए हैं।

जो मुसलमान अल्लाह और रसूल पर पुख़्ता ईमान रखते हैं उनको हर्गिज़ ऐसे लोगों के ज़ाल में न आना चाहिये, ख़त्मे नुबुव्वत के ख़िलाफ़ अक़ीदा बनाकर नुबुव्वत का दा'वा करके ह़ज़रत सय्यदना मुह़म्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) के तख़्ते नुबुव्वत पर क़ब्ज़ा करना है। जिसका पूरी शिद्दत से मुक़ाबला करना हर उस मुसलमान का फ़र्ज़ है जो अल्लाह को मा'बूदे बरह़क़ और रसूले करीम (ﷺ) के रसूले बरह़क़ और ख़ातिमुन्नबिय्यीन होने का अक़ीदा रखता है। तफ़्सीलात के लिये मुसन्नफ़ात ह़ज़रत फ़ातेह़े क़ादियान मौलाना अबुल वफ़ाअ ष़नाउल्लाह स़ाह़ब अमृतसरी (रह.) का मुतालआ ज़रूरी है। जो ख़ास़ इसी मिशन पर ह़ज़रत मौलाना मरहूम ने तह़रीर फ़र्माई हैं और भी बहुत से उ़लमा ने इस मौज़ूअ़ पर बहुत सी फ़ाज़िलाना किताबें लिखी हैं। जज़ाहुमुल्लाहु ख़ैरल जज़ा।

लफ़्ज़ अंबिया नबी की जमा है जो नुबुव्वत से है। जिसके मा'नी ख़बर देने के हैं। कुछ ख़ास़ाने इलाही बराहे-रास्त अल्लाह पाक से ख़बर पाकर दुनिया को ख़बरें देते हैं। यही नबी हैं। **वन्नुबुव्वतु निअ़मतुन यमुन्नु बिल्लाहि अ़ला मन शाअ व ला यब्लुगुहा अह़दुन बि इल्मिही व ला कश्फिही वला यस्तहिक़्क़ुहा इस्तिअ़दादि विलायतिही व वक़अ फ़ी ज़िक्रि अ़ददिल्अम्बियाइ ह़दीषु अबी ज़र्रिन मर्फ़ूअ़न अन्नहुम मिअत अल्फ़िन व अर्बअ़तुव्वंइशरुन अल्फ़न अर्रूसुलु मिन्हुम ष़लाष़ मिअतिन व ष़लाष़ अशर सह़्ह़हू इब्नु हिब्बान** (फ़त्हुल बारी) या'नी अल्लाह पाक मह़ज़ अपने फ़ज़लो करम से जिसे चाहता है अ़ता करता है नुबुव्वत किसी को उसके इल्म या कशफ़ या इस्तेदादे विलायत की बिना पर नहीं ह़ासिल होती। ये मह़ज़ अल्लाह की त़रफ़ से एक वहबी नेअ़मत है। अंबिया की ता'दाद के बारे में मर्फ़ूअ़न ह़दीषे अबूज़र में आया है कि उनकी ता'दाद एक लाख और चौबीस हज़ार है जिनमें तीन सौ तेरह रसूल हैं और बाक़ी सब नबी हैं। रिसालत का मुक़ाम नुबुव्वत से और भी बुलन्द व बाला है। वल्लाहु अ़ालम बिस़्स़वाब।

बाब 1 : ह़ज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और उनकी औलाद की पैदाइश के बयान में

١ - بَابُ خَلْقِ آدَمَ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِ وَذُرِّيَّتِهِ

(सूरह रह़मान में लफ़्ज़) स़लस़ाल के मा'नी ऐसे गारे के हैं जिसमें रेत मिली हो और वो इस त़रह से बजने लगे जैसे पकी हुई मिट्टी बजती है। कुछ ने कहा स़लस़ाल के मा'नी मनतन या'नी बदबूदार के हैं। अस़ल में ये लफ़्ज़ स़ल से निकला है। फ़ कलिमा मुकर्रर कर दिया या जैसे स़र स़रा स़र्र से। अ़रब लोग कहते हैं सर्रलबाब या सरसरलबाब जब बन्द करने से दरवाज़े मे से आवाज़ निकले जैसे कब्कबति कब से निकला है। सूरह आराफ़ में लफ़्ज़ फ़मर्रत बिही का मा'नी चलती फिरती रही, ह़मल की मुद्दत पूरी की, (सूरह आराफ़ में) लफ़्ज़ अल्ला ला तस्जुद का मा'नी अन तस्जुद के हैं या'नी तुझको सज्दा करने से किस बात ने रोका। ला का लफ़्ज़ यहाँ ज़ाइद है।

﴿صَلْصَالٍ﴾: طِيْنٌ خُلِطَ بِرَمْلٍ، فَصَلْصَلَ كَمَا يُصَلْصِلُ الْفَخَّارُ، وَيُقَالُ مُنْتِنٌ يُرِيْدُوْنَ بِهِ صَلَّ، كَمَا يُقَالُ صَرَّ الْبَابُ وَصَرْصَرَ عِنْدَ الإِغْلاَقِ، مِثْلُ كَبْكَبْتُهُ يَعْنِي كَبَبْتُهُ. ﴿فَمَرَّتْ بِهِ﴾ بِهَا اسْتَمَرَّ الْحَمْلُ فَأَتَمَّتْهُ. ﴿أَنْ لاَ تَسْجُدَ﴾: أَنْ تَسْجُدَ.

बाब 2 : अल्लाह तआला का सूरह बक़र: मे ये फ़र्माना, ऐ रसूल! वो वक़्त याद करो जब आपके रब ने फ़रिश्तों से कहा मैं ज़मीन में एक (क़ौम

باب وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلاَئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي

الأرض خليفة﴾ [البقرة: ٣٠].

को) जानशीन बनाने वाला हूँ

(ख़लीफ़ा के ये भी एक मा'नी हैं कि उनमें सिलसिलेवार एक के बाद दूसरे उनके क़ायम मुक़ाम होते रहेंगे)

قال ابن عباس: ﴿لما عليها حافظ﴾: إلا عليها حافظ. ﴿في كبد﴾: في شدة خلق. ﴿ورياشا﴾: المال. وقال غيره: الرياش والريش واحد وهو ما ظهر من اللباس. ﴿ما تمنون﴾: النطفة في أرحام النساء. وقال مجاهد: ﴿إنه على رجعه لقادر﴾: النطفة في الإحليل. كل شيء خلقه فهو ﴿شفع﴾: السماء شفع. ﴿والوتر﴾: الله عز وجل. ﴿في أحسن تقويم﴾: في أحسن خلق، ﴿أسفل سافلين﴾: إلا من آمن. ﴿خسر﴾: ضلال، ثم استثنى إلا من آمن. ﴿لازب﴾: لازم. ﴿ننشئكم﴾: في أي خلق نشاء. ﴿نسبح بحمدك﴾: نعظمك. وقال أبو العالية: ﴿فتلقى آدم من ربه كلمات﴾: فهو قوله: ﴿ربنا ظلمنا أنفسنا﴾. ﴿فأزلهما﴾: فاستزلهما. و﴿يتسنه﴾ يتغير. ﴿آسن﴾ متغير. و﴿المسنون﴾: المتغير. ﴿حمأ﴾: جمع حمأة وهو الطين المتغير. ﴿يخصفان﴾: أخذ الخصاف ﴿من ورق الجنة﴾ يؤلفان الورق ويخصفان بعضه إلى بعض. ﴿سوآتهما﴾: كناية عن فرجيهما. ﴿ومتاع إلى حين﴾: ها هنا

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, सूरह त़ारिक़ में जो लम्मा अ़लैहा हाफ़िज़ के अल्फ़ाज़ हैं, यहाँ लम्मा इल्ला के मा'नी में है या'नी कोई जान नहीं मगर उस पर अल्लाह की त़रफ़ से एक निगाहबान मुक़र्रर है, (सूरह बलद में जो) फ़ी कबद का लफ़्ज़ आया है मकबद के मा'नी सख़्ती के हैं। और (सूरह आराफ़ में) जो रियाशा का लफ़्ज़ आया है रियाश उसकी जमा है या'नी माल, ये ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की तफ़्सीर है दूसरों ने कहा, रियाश और रयशा का एक ही मा'नी है या'नी ज़ाहिरी लिबास और (सूरह वाक़िया में) जो तम्नून का लफ़्ज़ आया है उसके मा'नी नुत़्फ़ा के हैं जो तुम औरतों के रहम में (जिमाअ के वक़्त) डालते हो। (और सूरह त़ारिक़ में है) इन्नहू अ़ला रज्इही लक़ादिर मुजाहिद ने कहा उसके मा'नी ये हैं कि वो अल्लाह मनी को फिर ज़कर में लौटा सकता है (इसको फ़रयाबी ने वस्ल किया, अकष़र लोगों ने ये मा'नी किये हैं कि वो अल्लाह आदमी के लौटाने या'नी क़यामत में पैदा करने पर भी क़ादिर है) (और सूरह सज्दा में) कुल्लू शेइन ख़लक़हू का मा'नी ये है कि हर चीज़ को अल्लाह ने जोड़े जोड़े बनाया है। आसमान ज़मीन का जोड़ है (जिन्न आदमी का जोड़ है, सूरज चाँद का जोड़ है) और त़ाक़ अल्लाह की ज़ात है जिसका कोई जोड़ नहीं है। सूरह तीन में है फ़ी अह़सनि तक़्वीम या'नी अच्छी सूरत अच्छी ख़िल्क़त में हमने इंसान को पैदा किया। (अस्फ़ला साफ़िलीन इल्ला मन आमन) या'नी फिर आदमी को मैंने पस्त से पस्ततर कर दिया (दोज़ख़ी बना दिया) मगर जो ईमान लाया। (सूरह अ़स्र में) फ़ी ख़ुस्र का मा'नी गुमराही में फिर ईमानवालों को मुस्तष्ना किया। (फ़र्माया अल्लज़ीन आमनू) सूरह वस्साफ़्फ़ात में लाज़िब का मा'नी लाज़िम (या'नी चिमटती हुई लेसदार) सूरह वाक़िया में अल्फ़ाज़ (व नुन्शिउकुम फ़ीमा ला तअ़लमून) या'नी जिस सूरत में मैं चाहूं तुमको बना दूं। (सूरह बक़रः में) नस्बिहु बि हम्दिका या'नी फ़रिश्तों ने कहा कि हम तेरी बड़ाई बयान करते हैं। अबुल आ़लिया ने कहा इसी सूरह में जो है फ़तलक़्क़ा आदम मिर्रब्बिही कलिमातिन वो कलिमे ये हैं। रब्बना

إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، الْحِيْنَ عِنْدَ الْعَرَبِ : مِنْ سَاعَةٍ إِلَى مَا لاَ يُحْصَى عَدَدُهُ. ﴿قَبِيْلُهُ﴾: جِيلُهُ الَّذِي هُوَ مِنْهُمْ.

ज़लमना अन्फ़ुसाना इसी सूरह में फ़अज़ल्लहुमा का मा'नी या'नी उनको डिगा दिया फिसला दिया। (इसी सूरह में है) लम यतसन्नह या'नी बिगड़ा तक नहीं। इसी से (सूरह मुहम्मद में) लफ़्ज़ आसिन है या'नी बिगड़ा हुआ (बदबूदार पानी) इसी से सूरह हिज्र में लफ़्ज़ मसनून है। या'नी बदली हुई बदबूदार (इसी सूरह में) हमअ का लफ़्ज़ है जो हम्अतुन की जमा है या'नी बदबूदार कीचड़ (सूरह आराफ़ मे) लफ़्ज़ यख़्सिफ़ान के मा'नी या'नी दोनों आदम और हव्वा ने बहिश्त के पत्तों को जोड़ना शुरू कर दिया। एक पर एक रखकर अपना सतर छुपाने लगे। लफ़्ज़ सवआतिहिमा से मुराद शर्मगाह हैं। लफ़्ज़ मताउन इलाहीन में हीन से क़यामत मुराद है, अरब लोग एक घड़ी से लेकर बेइंतिहा मुद्दत तक को हीन कहते हैं। क़बीला से मुराद शैतान का गिरोह जिसमें वो ख़ुद है।

हज़रत मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी आदत के मुताबिक़ कुर्आन शरीफ़ की मुख़्तलिफ़ सूरतों के मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के मआनी यहाँ वाज़ेह फ़र्माए हैं। उन अल्फ़ाज़ का ज़िक्र ऐसे ऐसे मक़ामात पर आया है जहाँ किसी न किसी तरह से इस किताबुल अंबिया से मुता'ल्लिक़ किसी न किसी तरह से कुछ मज़ामीन बयान हुए हैं। यहाँ उन अकष़र सूरतों को ब्रेकेट में हमने बतला दिया है, वहाँ वो अल्फ़ाज़ तलाश करके आयाते सियाक़ व सिबाक़ से पूरे मतालिब को मा'लूम किया जा सकता है। इन तमाम आयतों और उनके मज़्कूरा बाला अल्फ़ाज़ की पूरी तफ़्सील तवालत (विस्तार) के डर से यहाँ छोड़ा गया है।

अल्लाह पाक ख़ैरियत के साथ इस पारे को भी पूरा कराए कि वो ही मालिक व मुख़्तार है। अल् मरक़ूम बतारीख़ 15 शव्वाल 1391 हिजरी त्रिचनापल्ली बर मकान हाजी मुहम्मद इब्राहीम साहब अदामल्लाहु इक़्बालहुम आमीन।

٣٣٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَلَقَ اللهُ آدَمَ وَطُولُهُ سِتُّونَ ذِرَاعًا، ثُمَّ قَالَ: اذْهَبْ فَسَلِّمْ عَلَى أُولَئِكَ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ فَاسْتَمِعْ مَا يُحَيُّونَكَ، تَحِيَّتُكَ وَتَحِيَّةُ ذُرِّيَّتِكَ. فَقَالَ: السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ فَقَالُوا: السَّلاَمُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ. فَزَادُوهُ: وَرَحْمَةُ اللهِ فَكُلُّ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ آدَمَ، فَلَمْ يَزَلِ

3326. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह पाक ने आदम (अलै.) को पैदा किया तो उनको साठ हाथ लम्बा बनाया। फिर फ़र्माया कि जा और उन मलाइका को सलाम कर, देखना किन लफ़्ज़ों में वो तुम्हारे सलाम का जवाब देते हैं क्योंकि वही तुम्हारा और तुम्हारी औलद का तरीक़-ए-सलाम होगा। आदम (अलै.) (गये और) कहा, अस्सलामु अलैयकुम फ़रिश्तों ने जवाब दिया, व अस्सलामु अलैक व रहमतुल्लाह। उन्होंने व रहमतुल्लाह का जुम्ला बढ़ा दिया, पस जो कोई भी जन्नत में दाख़िल होगा वो आदम (अलै.) की शक्ल और क़ामत पर दाख़िल होगा, आदम (अलै.) के बाद

इंसानों में अब तक क़द छोटे होते रहे। (दीगर मक़ाम : 6227)

الْخَلْقُ يَنْقُصُ حَتَّى الآنَ)).

[طرفه في : ٦٢٢٧].

तश्रीह : छोटे होते होते इस हद को पहुँच गये जिस हद पर ये उम्मत है। इब्ने कुतैबा ने कहा कि आदम बे रीश व बुरुव्वत थे, घुँघराले बाल और निहायत खूबसूरत थे। क़स्तलानी (रह.) ने कहा बहिश्ती सब उन ही की सूरत पर और हुस्न व जमाल के साथ जन्नत में दाख़िल होंगे और दुनिया में जो रंग की स्याही या बदसूरती है वो जाती रहेगी। या अल्लाह राक़िम (लेखक) को भी इसी सूरत जन्नत का दाख़िला नसीब कीजियो और उन सब भाईयों मर्दों और औरतों को भी जो बुख़ारी शरीफ़ का ये मुक़ाम मुतालआ फ़र्माते वक़्त बा आवाज़े बुलन्द आमीन कहें।

3327. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे अम्मारा ने उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सबसे पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा उनकी सूरतें ऐसी रोशन होंगी जैसे चौदहवीं का चाँद रोशन होता है, फिर जो लोग उसके बाद दाख़िल होंगे वो आसमान के सबसे ज़्यादा रोशन सितारे की तरह चमकते होंगे। न तो उन लोगों को पेशाब की ज़रूरत होगी न टट्टी की, न वो थूकेंगे न नाक से आलाइश निकालेंगे। उनके कंघे सोने के होंगे और उनका पसीना मुश्क की तरह होगा। उनकी अंगीठियों में ख़ुश्बूदार ऊद जलता होगा, ये निहायत पाकीज़ा ख़ुश्बूदार ऊद होगा। उनकी बीवियाँ बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी। सबकी सूरतें एक होंगी या'नी अपने वालिद आदम (अलैहिस्सलाम) के क़द व क़ामत पर साठ-साठ हाथ ऊँचे होंगे। (राजेअ : 3245)

٣٣٢٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ عُمَارَةَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ أَوَّلَ زُمْرَةٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ، ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُونَهُمْ عَلَى أَشَدِّ كَوكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ إِضَاءَةً، لاَ يَبُولُونَ وَلاَ يَتَغَوَّطُونَ وَلاَ يَتْفِلُونَ وَلاَ يَمْتَخِطُونَ، أَمْشَاطُهُمُ الذَّهَبُ وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ وَمَجَامِرُهُمُ الأَلُوَّةُ، الأَنْجُوجُ عُودُ الطِّيْبِ، وَأَزْوَاجُهُمُ الْحُورُ الْعِيْنُ عَلَى خَلْقِ رَجُلٍ وَاحِدٍ عَلَى صُورَةِ أَبِيْهِمْ آدَمَ سِتُّونَ ذِرَاعًا فِي السَّمَاءِ)). [راجع: ٣٢٤٥]

बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है। ये हदीष़ ऊपर भी गुज़र चुकी है।

3328. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके बाप ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने, उनसे (उम्मुल मोमिनीन) उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला हक़ बात से नहीं शर्माता, तो क्या अगर औरत को एहतिलाम हो तो उस पर भी गुस्ल होगा? आपने फ़र्माया कि हाँ बशर्ते कि वो तरी देख ले, उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) को इस बात पर हंसी आ गई और फ़र्माने लगीं,

٣٣٢٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ: أَنَّ أُمَّ سُلَيْمٍ قَالَتْ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ اللهَ لاَ يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ، فَهَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ الْغُسْلُ إِذَا احْتَلَمَتْ؟ قَالَ: ((نَعَمْ، إِذَا رَأَتِ الْمَاءَ)). فَضَحِكَتْ أُمُّ سَلَمَةَ فَقَالَتْ:

क्या ओरत को भी एहतिलाम होता है? आपने फ़र्माया, (अगर ऐसा नहीं है) तो फिर बच्चे में (माँ की) मुशाबिहत कहाँ से आती है। (राजेअ़ : 130)

تَحْتَلِمُ الْمَرْأَةُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَمَا يُشْبِهُ الْوَلَدُ؟)). [راجع: ١٣٠]

3329. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मरवान फ़ज़ारी ने ख़बर दी। उन्हें हुमैद ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) को जब रसूले करीम (ﷺ) के मदीना तशरीफ़ लाने की ख़बर मिली तो वो आपकी ख़िदमत में आए और कहा कि मैं आपसे तीन चीज़ों के बारे में पूछूँगा जिन्हें नबी के सिवा और कोई नहीं जानता। क़यामत की सबसे पहली अ़लामत क्या है? वो कौनसा खाना है जो सबसे पहले जन्नतियों को खाने के लिये दिया जाएगा? और किस चीज़ की वजह से बच्चा अपने बाप के मुशाबेह होता है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिब्रईल (अलै.) ने अभी अभी मुझे आकर उसकी ख़बर दी है। इस पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि मलायका में तो यही यहूदियों के दुश्मन हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत की सबसे पहली अ़लामत एक आग की सूरत में ज़ाहिर होगी जो लोगों को मश्रिक़ से मग़रिब की तरफ़ हाँक ले जाएगी। सबसे पहला खाना जो अहले जन्नत की दा'वत के लिये पेश किया जाएगा, वो मछली की कलेजी पर जो टुकड़ा लटका रहता है वो होगा और बच्चे की मुशाबिहत का जहाँ तक ता'ल्लुक़ है तो जब मर्द औरत के क़रीब जाता है उस वक़्त अगर मर्द की मनी पहल कर जाती है तो बच्चा उसी की शक्ल व सूरत पर होता है। अगर औरत की मनी पहल कर जाए तो फिर बच्चा औरत की शक्ल व सूरत पर होता है। (ये सुनकर) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) बोल उठे, मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। फिर अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यहूद इंतिहा की झूठी क़ौम है। अगर आपके दरयाफ़्त करने से पहले मेरे इस्लाम क़ुबूल करने के बारे में उन्हें इल्म हो गया तो आप (ﷺ) के सामने मुझ पर हर तरह की तोहमतें धरनी शुरू कर देंगे। चुनाँचे कुछ यहूदी आए और हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) घर के अंदर छुपकर बैठ गये। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा तुम लोगों में अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम कौन साहब हैं? सारे यहूदी कहने लगे वो हममें से सबसे बड़े

٣٣٢٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا الْفَزَارِيُّ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَلَغَ عَبْدَ اللهِ بْنَ سَلاَمٍ مَقْدَمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ، فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنِّي سَائِلُكَ عَنْ ثَلاَثٍ لاَ يَعْلَمُهُنَّ إِلاَّ نَبِيٌّ، مَا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ؟ وَمَا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ؟ وَمِنْ أَيِّ شَيْءٍ يَنْزِعُ الْوَلَدُ إِلَى أَبِيهِ وَمِنْ أَيِّ شَيْءٍ يَنْزِعُ إِلَى أَخْوَالِهِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَخْبَرَنِي بِهِنَّ آنِفًا جِبْرِيلُ)). قَالَ: فَقَالَ عَبْدُ اللهِ: ذَاكَ عَدُوُّ الْيَهُودِ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((أَمَّا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ فَنَارٌ تَحْشُرُ النَّاسَ مِنَ الْمَشْرِقِ إِلَى الْمَغْرِبِ. وَأَمَّا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فَزِيَادَةُ كَبِدِ حُوتٍ. وَأَمَّا الشَّبَهُ فِي الْوَلَدِ فَإِنَّ الرَّجُلَ إِذَا غَشِيَ الْمَرْأَةَ فَسَبَقَهَا مَاؤُهُ كَانَ الشَّبَهُ لَهُ، وَإِذَا سَبَقَ مَاؤُهَا كَانَ الشَّبَهُ لَهَا)). قَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ. ثُمَّ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ الْيَهُودَ قَوْمٌ بُهُتٌ، إِنْ عَلِمُوا بِإِسْلاَمِي قَبْلَ أَنْ تَسْأَلَهُمْ بَهَتُونِي عِنْدَكَ. فَجَاءَتِ الْيَهُودُ، وَدَخَلَ عَبْدُ اللهِ الْبَيْتَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَيُّ

आलिम और सबसे बड़े आलिम के साहबज़ादे हैं । हममें सबसे ज़्यादा बेहतर और हममें सबसे बेहतर के साहबज़ादे हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, अगर अब्दुल्लाह मुसलमान हो जाएँ तो फिर तुम्हारा क्या ख़याल होगा? उन्होंने कहा, अल्लाह तआला उन्हें उससे महफ़ूज़ रखे। इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बाहर तशरीफ़ लाए और कहा, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा और कोई इलाह नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। अब वो सब उनके बारे में कहने लगे कि हममें से सबसे बदतरीन और सबसे बदतरीन का बेटा है, वहीं वो उनकी बुराई करने लगे। (दीगर मक़ाम : 3911, 3938, 4480)

رَجُلٍ فِيكُمْ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ؟)) قَالُوا: أَعْلَمُنَا وَابْنُ أَعْلَمِنَا، وَأَخْيَرُنَا وَابْنُ أَخْيَرِنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَفَرَأَيْتُمْ إِنْ أَسْلَمَ عَبْدُ اللهِ؟)) قَالُوا: أَعَاذَهُ اللهُ مِنْ ذَلِكَ. فَخَرَجَ عَبْدُ اللهِ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ. فَقَالُوا: شَرُّنَا وَابْنُ شَرِّنَا. وَوَقَعُوا فِيهِ)).

[أطرافه في : ٣٩١١، ٣٩٣٨، ٤٤٨٠].

तश्रीह : हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम यहूद के बड़े आलिम थे जो आँहज़रत (ﷺ) को देखकर फ़ौरन ही सदाक़ते-मुहम्मदी के क़ाइल हो गये और इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू। ये जो कुछ लोग नक़ल करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन सलाम ने आँहज़रत (ﷺ) से हज़ार सवाल किये थे, ये ग़लत है इसी तरह हज़ार मसला का रिसाला भी मस्नूई (बनावटी) है। ता'ज्जुब है कि मुसलमान ऐसे झूठे रिसालों को पढ़ें और हदीष की सहीह किताबें न देखें। इसी तरह सुबह का सितारा, व क़ाइक़ुल अख़्बार और मुनहब्बहात और दलाइलुल ख़ैरात की अकषर रिवायतें मौज़ूअ हैं।

आग से मुता'ल्लिक़ एक रिवायत यूँ है कि क़यामत उस वक़्त तक न आएगी जब तक हिजाज़ में एक ऐसी आग न निकले जिसकी रोशनी बसरा के ऊँटों की गर्दनों को रोशन कर देगी। ये रिवायत सहीह मुस्लिम और हाकिम में है। इमाम नववी (रह.) इस हदीष की शरह में लिखते हैं कि ये आग हमारे ज़माने 654 हिजरी में मदीना में ज़ाहिर हुई और ये आग इस क़दर बड़ी थी कि मदीना के पूर्वी छोर से लेकर पहाड़ी तक फैली हुई थी, इसका हाल शाम और तमाम शहरों में बतवातुर मा'लूम हुआ और हमसे उस शख़्स ने बयान किया जो उस वक़्त मदीना में जमादिष् षानी में मदीना में एक सख़्त धमाका हुआ, फिर बड़ा ज़लज़ला आया जो हर घड़ी बढ़ता रहा। यहाँ तक कि पाँचवीं तारीख़ को बहुत बड़ी आग पहाड़ी में क़ुरेज़ा के मुहल्ले के क़रीब नमूदार हुई, जिसको हम मदीना के अंदर अपने घरों से इस तरह देखते थे कि गोया वो हमारे क़रीब ही है। हम उसे देखने को चढ़े तो देखा कि पहाड़ आग बनकर बह रहे हैं और इधर उधर शोले बनकर जा रहे हैं। आग के शोले पहाड़ मा'लूम हो रहे थे। मुहल्लों के बराबर चिंगारियाँ उड़ रही थी। यहाँ तक कि ये आग मक्का मुकर्रमा और सेहरा से भी नज़र आती थी, ये हालत एक माह से ज़्यादा रही। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा बहवाला अबू शाम्मा वाक़िआत 654 हिजरी)

अल्लामा जहबी ने भी उस आग का ज़िक्र किया है (मुख़्तसर तारीख़ुल इस्लाम ज़हबी, जिल्द : 2 / पेज नं. 121 हैदराबाद)। हाफ़िज़ सियूती लिखते हैं कि बहुत से लोगों से जो बसरा मे उस वक़्त मौजूद थे ये शहादत मन्क़ूल है कि उन्होंने रात को उसकी रोशनी में बसरा के ऊँटों की गर्दनें देखीं। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सियूती 654 हिजरी) ख़ुलासा अज़्सीरतुन्नबी, जिल्द 3 पेज नं. 712)

3330. हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया (अब्दुर्रज़्ज़ाक़ की) रिवायत की

٣٣٣٠- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ

तरह कि अगर क़ौमे बनी इस्राईल न होती तो गोश्त न सड़ा करता और अगर हव्वा न होतीं तो औरत अपने शौहर से दग़ा न करती।

النَّبِيِّ ﷺ نَحْوَهُ يَعْنِي ((لَوْ لاَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَمْ يَخْنَزِ اللَّحْمَ، وَلَوْلاَ حَوَّاءَ لَمْ تَخُنْ أُنْثَى زَوْجَهَا)).

तश्रीह : बनी इस्राईल को मन्न व सलवा बतौरे इन्आमे इलाही मिला करता था और उन्हें उसके जमा करने की मुमानअत थी, मगर उन्होंने जमा करना शुरू कर दिया। सज़ा के तौर पर सलवा का गोश्त सड़ा दिया गया, उसी तरफ़ हदीष शरीफ़ में इशारा है। इसी तरह सबसे पहले हज़रत हव्वा (अलैहिस्सलाम) ने शैतान की साज़िश से हज़रत आदम (अलैहि.) को जन्नत के पेड़ के खाने की तरग़ीब दिलाई थी। यही आदत उनकी औलाद में भी पैदा हो गई। ख़यानत से यही मुराद है। अब औरतों मे आम बेवफ़ाई इसी फ़ितरत का नतीजा है। वो टेढ़ी पसली से पैदा हुई है, जैसा कि दर्ज ज़ेल हदीष में मज़्कूर है।

3331. हमसे अबू कुरैब और मूसा बिन हिज़ाम ने बयान किया, कहा कि हमसे हुसैन बिन अली ने बयान किया, उनसे ज़ायदा ने, उनसे मैसरह अश्जई ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, औरतों के बारे में मेरी वसिय्यत का हमेशा ख़याल रखना, क्योंकि औरत पसली से पैदा की गई है। पसली में भी सबसे ज़्यादा टेढ़ा ऊपर का हिस्सा होता है। अगर कोई शख़्स इसे बिलकुल सीधी करने की कोशिश करे तो अंजाम यह होगा कि टूट जाएगी और अगर उसे वो यूँ ही छोड़ देगा तो फिर हमेशा टेढ़ी ही रह जाएगी। पस औरतों के बारे में मेरी नसीहत मानो, औरतों से अच्छा सुलूक करो। (दीगर मक़ाम : 5184, 5186)

٣٣٣١- حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ وَمُوسَى بْنُ حِزَامٍ قَالاَ: حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ زَائِدَةَ عَنْ مَيْسَرَةَ الأَشْجَعِيِّ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ، فَإِنَّ الْمَرْأَةَ خُلِقَتْ مِنْ ضِلَعٍ، وَإِنَّ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ أَعْلاَهُ، فَإِنْ ذَهَبْتَ تُقِيمُهُ كَسَرْتَهُ، وَإِنْ تَرَكْتَهُ لَمْ يَزَلْ أَعْوَجَ، فَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ)).

[طرفاه في : ٥١٨٤، ٥١٨٦].

3332. हमसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे ज़ैद बिन वहब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया और आप सच्चों के सच्चे थे कि इंसान की पैदाइश उसकी माँ के पेट में पहले चालीस दिन तक पूरी की जाती है। फिर वो उतने ही दिनों तक अल्क़ा या'नी ग़लीज़ और जामिद ख़ून की सूरत में रहता है। फिर उतने ही दिनो के लिये मुज़्ग़ा (गोश्त का लोथड़े) की शक्ल इख़्तियार कर लेता है। फिर (चौथे चिल्ला में) अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता को चार बातों का हुक्म देकर भेजता है। पस वो फ़रिश्ता उसके अमल, उसकी मुद्दते ज़िन्दगी, रोज़ी और ये कि वो नेक है या बद, को लिख लेता है। उसके बाद उसमें रूह फूँकी

٣٣٣٢- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَهَبٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ الصَّادِقُ الْمَصْدُوقُ ((إِنَّ أَحَدَكُمْ يُجْمَعُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِينَ يَوْمًا، ثُمَّ يَكُونُ عَلَقَةً مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ يَكُونُ مُضْغَةً مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ يَبْعَثُ اللهُ إِلَيْهِ مَلَكًا بِأَرْبَعِ كَلِمَاتٍ: فَيَكْتُبُ عَمَلَهُ، وَأَجَلَهُ، وَرِزْقَهُ، وَشَقِيٌّ أَوْ سَعِيدٌ. ثُمَّ يُنْفَخُ فِيهِ

जाती है। पस इंसान (ज़िन्दगी भर) दोज़ख़ियों के काम करता रहता है और जब उसके और दोज़ख़ के बीच सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है तो उसकी तक़्दीर सामने आती है और वो जन्नतियों के काम करने लगता है और जन्नत में चला जाता है। इसी तरह एक इंसान जन्नतियों के काम करता रहता है और जब उसके और जन्नत के बीच सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है तो उसकी तक़्दीर सामने आती है और वो जहन्नमियों के काम शुरू कर देता है और दोज़ख़ में चला जाता है। (राजेअ : 3208)

الرُّوحُ. فَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلاَّ ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيَدْخُلُ الْجَنَّةَ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلاَّ ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فَيَدْخُلُ النَّارَ)).

[راجع: ٣٢٠٨]

3333. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने माँ के रहम के लिये एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर दिया है वो फ़रिश्ता अ़र्ज़ करता है, ऐ रब! ये नुत्फ़ा है, ऐ रब! ये मुज़्ग़ा है। ऐ रब! ये अ़ल्क़ा है। फिर जब अल्लाह तआ़ला उसे पैदा करने का इरादा करता है तो फ़रिश्ता पूछता है, ऐ रब! ये मर्द है या ऐ रब! ये औरत है, ऐ रब! ये बद है या नेक? उसकी रोज़ी क्या है? और मुद्दते ज़िन्दगी कितनी है? चुनाँचे उसी के मुताबिक़ माँ के पेट ही में सब कुछ फ़रिश्ता लिख लेता है। (राजेअ : 318)

٣٣٣٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ وَكَّلَ فِي الرَّحِمِ مَلَكًا فَيَقُولُ: يَا رَبِّ نُطْفَةٌ، يَا رَبِّ عَلَقَةٌ يَا رَبِّ مُضْغَةٌ. فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْلُقَهَا قَالَ : يَا رَبِّ أَذَكَرٌ أَمْ أُنْثَى؟ يَا رَبِّ أَشَقِيٌّ أَمْ سَعِيدٌ؟ فَمَا الرِّزْقُ؟ فَمَا الأَجَلُ؟ فَيُكْتَبُ كَذَلِكَ فِي بَطْنِ أُمِّهِ)).

[راجع: ٣١٨]

बच्चा अपनी उसी फ़ितरत पर पैदा होता है और धीरे–धीरे नविश्त-ए-तक़्दीर उसके सामने आता रहता है।

3334. हमसे क़ैस बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन हारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इमरान जवनी ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि अल्लाह तआ़ला (क़यामत के दिन) उस शख़्स से पूछेगा जिसे दोज़ख़ का सबसे हल्का अ़ज़ाब किया गया होगा। अगर दुनिया में तुम्हारी कोई चीज़ होती तो क्या तू इस अ़ज़ाब से नजात पाने के लिये उसे बदले में दे सकता था? वो शख़्स कहेगा कि जी हाँ उस पर अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि जब तू आदम की पीठ में था तो मैंने तुझसे उससे भी मा'मूली चीज़ का मुतालबा किया था। (रोज़े अज़ल में) कि मेरा किसी को भी शरीक न

٣٣٣٤- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ عَنْ أَنَسٍ يَرْفَعُهُ: ((إِنَّ اللهَ يَقُولُ لأَهْوَنِ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا: لَوْ أَنَّ لَكَ مَا فِي الأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ كُنْتَ تَفْتَدِي بِهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَقَدْ سَأَلْتُكَ مَا هُوَ أَهْوَنُ مِنْ هَذَا وَأَنْتَ فِي صُلْبِ آدَمَ: أَنْ لاَ تُشْرِكَ بِي، فَأَبَيْتَ إِلاَّ الشِّرْكَ)).

ठहराना, लेकिन (जब तू दुनिया में आया तो) उसी शिर्क का अमल इख़्तियार किया। (दीगर मक़ाम : 6538, 6557)

[طرفاه في : ٦٥٣٨، ٦٥٥٧].

तश्रीह : तमाम अंबिया व रसूल (अलै.) का अव्वलीन पैग़ाम यही रहा कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया जाए, तमाम आसमानी किताबें इस मसला पर इत्तिफ़ाक़े कामिल रखती हैं। क़ुर्आन मजीद की बहुत सी आयतों में शिर्क की तर्दीद बड़े वाज़ेह और मुदल्लल अल्फ़ाज़ में मौजूद है जिनको नक़ल किया जाए तो एक दफ़्तर तैयार हो जाएगा। मगर सद अफ़सोस कि दूसरी उम्मतों की तरह बहुत से नादान मुसलमानों को भी शैतान ने गुमराह कर के शिर्क में गिरफ़्तार करा दिया। अक़ीदत व मुहब्बत बुज़ुर्गान के नाम से उनको धोखा दिया और वो भी मुश्रिकीने मक्का की तरह यही कहने लगे, **मा नअबुदुहुम इल्ला लियुक़र्रिबूना इलल्लाहि ज़ुल्फ़ा** (अज़्ज़ुमर : 3) हम उन बुज़ुर्गो को सिर्फ़ इसीलिये मानते हैं कि ये हमको अल्लाह के नज़दीक पहुँचा दें, ये हमारे वसीले हैं जिनके पूजने से अल्लाह मिलता है। ये शैतान का वो फ़रेब है जो हमेशा मुश्रिक क़ौमों के लिये ज़लालत व गुमराही का सबब बना है। आज बहुत से बुज़ुर्गों के मज़ारों पर नादान मुसलमान वो सब हरकतें करते हैं जो एक बुतपरस्त बुत के सामने करता है। उठते बैठते उनका नाम लेते हैं, इमदाद के लिये उनकी दुहाई देते हैं। या ग़ौष़ या अली वग़ैरह उनके वज़ाइफ़ बने हुए हैं। जहाँ तक क़ुर्आन और सुन्नत की तशरीहात हैं ऐसे लोग खुले शिर्क के मुर्तकिब हैं और मुश्रिकीन के लिये अल्लाह ने जन्नत को हराम कर दिया है। अक़ीद-ए-तौहीद जो इस्लाम ने पेश किया है, वो हर्गिज़ उन ख़ुराफ़ात के लिये जवाज़ का दर्जा नहीं देता। अल्लाह पाक ऐसे नामो-निहाद मुसलमानों को हिदायत बख़्शे। आमीन।

3335. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़ियाष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुर्रह ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब भी कोई इंसान ज़ुल्म से क़त्ल किया जाता है तो आदम (अलै.) के सबसे पहले बेटे (क़ाबील) के नाम-ए-आमाल में भी उस क़त्ल का गुनाह लिखा जाता है क्योंकि क़त्ले नाहक़ की बिना सबसे पहले उसीने क़ायम की थी। (दीगर मक़ाम : 6867, 7321)

٣٣٣٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُرَّةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُقْتَلُ نَفْسٌ ظُلْمًا إِلاَّ كَانَ عَلَى ابْنِ آدَمَ الأَوَّلِ كِفْلٌ مِنْ دَمِهَا، لأَنَّهُ أَوَّلُ مَنْ سَنَّ الْقَتْلَ)).

[طرفاه في : ٦٨٦٧، ٧٣٢١].

तश्रीह : इंसान का ख़ूने नाहक़ तमाम अंबिया की शरीअतों मे संगीन जुर्म क़रार दिया गया है। इंसान किसी भी क़ौम, मज़हब, नस्ल से ता'ल्लुक़ रखता हो उसका नाहक़ क़त्ल हर शरीअत में ख़ास तौर पर शरीअते इस्लामी मे गुनाहे कबीरा बतलाया गया है। तअज्जुब है उन मुआनिदीने इस्लाम पर जो वाज़ेह तशरीहात के होते हुए इस्लाम पर नाहक़ ख़ूँरेज़ी का इल्ज़ाम लगाते हैं। अगर कोई मुसलमान इंफ़िरादी या इज्तिमाई तौर पर ये जुर्म करता है तो वे ख़ुद उसका ज़िम्मेदार है। इस्लाम की निगाह में वो सख़्त मुजरिम है। चूँकि क़ाबील ने उस जुर्म का रास्ता अव्वलीन तौर पर इख़्तियार किया, अब जो भी ये रास्ता इख़्तियार करेगा उसका गुनाह क़ाबील पर भी बराबर डाला जाएगा हर नेकी और बदी के लिये यही उसूल है।

बाब 2 : रूहों के जत्थे हैं झुण्ड के झुण्ड

٢- بَابُ الأَرْوَاحُ جُنُودٌ مُجَنَّدَةٌ

3336. इमाम बुख़ारी ने कहा कि लैष़ बिन सअ़द ने रिवायत किया यह्या बिन सईद अंसारी से, उनसे अम्र ने, और उनसे हज़रत

٣٣٣٦- قَالَ: وَقَالَ اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ

आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि रूहों के झुण्ड के झुण्ड अलग अलग थे। फिर वहाँ जिन रूहों में आपस में पहचान थी उनमें यहाँ भी मुहब्बत होती है और जो वहाँ ग़ैर थीं यहाँ भी वो ख़िलाफ़ रहती हैं और यह्या बिन अय्यूब ने भी इस हदीष़ को रिवायत किया, कहा मुझसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, आख़िर तक।

عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الأَرْوَاحُ جُنُودٌ مُجَنَّدَةٌ، فَمَا تَعَارَفَ مِنْهَا ائْتَلَفَ، وَمَا تَنَاكَرَ مِنْهَا اخْتَلَفَ)). وَقَالَ يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ : حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ بِهَذَا.

तश्रीह : किताबुल अंबिया के शुरू में हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र हुआ। इस सिलसिले में मुनासिब था कि आदमियत के कुछ नेक व बद ख़साइल, उसकी फ़ितरत पर रोशनी डाली जाए, ताकि आदमी की फ़ितरत पढ़ने वालों के सामने आ सके। इसलिये हज़रत इमाम (रह.) इन अहादीष़े मज़्कूरा को यहाँ लाए।

अब हदीष़ आदम (अलैहिस्सलाम) के बाद हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्रे ख़ैर शुरू होता है जिनको क़ुर्आन में अब्दे-शकूर के नाम से पुकारा गया है, आप रिक़्क़ते क़ल्ब से बकष़रत रोया करते थे, इसीलिये लफ़्ज़े नूह से मशहूर हो गये वल्लाहु आलम।

रूहें आलमे अज़ल में लशकरों की तरह यकजा थीं जिन रूहों में वहाँ बाहमी तआरुफ़ (आपसी परिचय) हो गया उनसे दुनिया में भी किसी न किसी दिन मिलाप हो ही जाता है और जिनमें बाहमी तआरुफ़ न हो सका वो दुनिया में भी बाहमी तौर पर मेल नहीं खाती हैं। उसके तहत मुहतरम मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने शरहे वहीदी में एक मुफ़स्सल नोट तहरीर फ़र्माया है जो क़ारेईने किराम के लिये दिलचस्पी का मोजिब होगा। मौलाना फ़र्माते हैं :–

बग़ैर मुनासिबे रूहानी के मुहब्बत हो ही नहीं सकती, एक बुज़ुर्ग का क़ौल है अगर मोमिन ऐसी मज्लिस मे जाए जहाँ सौ मुनाफ़िक़ बैठे हुए और एक मोमिन हो तो वो मोमिन ही के पास बैठेगा और अगर मुनाफ़िक़ उसी मज्लिस में जाए जहाँ सौ मोमिन हों और एक मुनाफ़िक़ हो तो उसकी तसल्ली मुनाफ़िक़ ही के पास बैठने से होगी। इसी मज़्मून में एक शायर ने कहा कुन्द हम जिन्स बहाम जिन्स परवाज़ कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़, (वहीदी)

दिली दोस्ती जो ख़ालिस़ अल्लाह के लिये बिला ग़र्ज़ होती है बग़ैर इत्तिहादे रूहानी के नहीं हो सकती। एक बिदअती कभी किसी मुवह्हिद मुत्तबअे-सुन्नत का दोस्त और उसी तरह सख़्त क़िस्म का मुक़ल्लिद अहले हदीष़ का ख़ैरख़्वाह नहीं हो सकता एक मजलिस में इत्तिफ़ाक़ से एक मौलवी स़ाहब जो ज़हमिया के हम मश्रब हैं मुझसे मिले और एक बेअमल जाहिल शख़्स से कहने लगे हममें और तुममें **अल्अर्वाहु जुनूदुन मुजन्नदतुन** इसी हदीष़ की रू से इत्तिहाद है मैंने उनका दिल लेने को कहा क्या आपके साथ ये इत्तिहाद नहीं है? उन्होंने कहा नहीं। मुझको उनकी सच्चाई पर ता'ज्जुब हुआ। वाक़ई जहमी और अहले हदीष़ में किसी तरह इत्तिहाद नहीं हो सकता। जिस दिन से ये सहीह बुख़ारी मुतर्जम छपना शुरू हुई है क्या कहूँ कुछ लोगों के दिल पर सांप लौटता है और हदीष़ की किताब इस उम्दगी के साथ तबअ होने से देखकर आप ही आप जले मरते हैं। इत्तिहाद और इख़्तिलाफ़े रूहानी का अष़र इसी से मा'लूम कर लेना चाहिये हालाँकि इस्लाम का दा'वा करते हैं मगर हदीष़ शरीफ़ की इशाअत नापसन्द करते हैं और नाचीज़ मुतर्जिम पर झूठे इत्तिहाम धरकर ये चाहते हैं कि किसी तरह ये तर्जुमा अधूरा रह जाए। **वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल्काफ़िरून** (अस्सफ़ : 8) (वहीदी)

हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने अपने ज़माने के हासिदों का ये हाल लिखा है। मगर आजकल भी मामला तक़रीबन ऐसा ही है। जो नाचीज़ (मुहम्मद दाऊद राज़) के सामने आ रहा है। कितने हासिदीन इशाअते बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू का अ़ज़ीम काम देखकर हसद की आग मे जले जा रहे है। अल्लाह पाक उनके हसद से महफ़ूज़ रखे और इस ख़िदमत को पूरा कराए। आमीन।

बाब 3 : हज़रत नूह (अलै.) का बयान में

٣- بَابُ قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ :

सूरह हूद में अल्लाह तआला का इर्शाद, और हमने नूह (अलै.) को

﴿وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمِهِ﴾ [هود ٢٥]

को उनकी क़ौम के पास अपना रसूल बनाकर भेजा। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने (कुर्आन मजीद की उसी सूरह हूद में) बादियर्रायि के बारे में कहा कि वो चीज़ हमारे सामने ज़ाहिर हो। अक़्लई या'नी रोक ले ठहर जा व फ़ारत्तन्नूरू या'नी पानी उस तन्नूर में से उबल पड़ा और इक्रिमा ने कहा कि (तन्नूर बमा'नी) सत्हे ज़मीन के है और मुजाहिद ने कहा कि अल्जूदी जज़ीरा का एक पहाड़ है। दजला फ़रात के बीच में और सूरह मोमिन में लफ़्ज़ दाब बमा'नी ह़ाल है।

﴿قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿بَادِيَ الرَّأْيِ﴾: مَا ظَهَرَ لَنَا. ﴿أَقْلِعِي﴾: أَمْسِكِي. ﴿وَفَارَ التَّنُّورُ﴾: نَبَعَ الْمَاءُ. وَقَالَ عِكْرِمَةُ: وَجْهُ الأَرْضِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿الْجُودِيِّ﴾: جَبَلٌ بِالْجَزِيرَةِ. ﴿دَأْبِ﴾ : مِثْلُ حَالٍ.

बाब 4 : सूरह नूह में अल्लाह का ये फ़र्माना। हमने नूह़ को उसकी क़ौम की त़रफ़ भेजा। उससे कहा कि अपनी क़ौम को तकलीफ़ का अज़ाब आने से पहले डरा। आख़िर सूरह तक और सूरह यूनुस मे फ़र्माना, ऐ रसूल! नूह़ की ख़बर उन पर तिलावत कर, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा था कि ऐ क़ौम! अगर मेरा यहाँ ठहरना और अल्लाह तआला की आयात को तुम्हारे सामने बयान करना तुम्हें ज़्यादा नागवार गुज़रता है। अल्लाह तआला के इर्शाद मिनल् मुस्लिमीन तक.

٤- بَاب قَوْلُ اللهِ تَعَالَى﴿ إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ إِلَى آخِرِ السُّورَةِ [نوح: ١-٢٨].
﴿وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللهِ -إِلَى قَوْلِهِ- مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾

3337. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें ज़ुहरी ने कि सालिम ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) लोगों में ख़ुत्बा सुनाने खड़े हुए। पहले अल्लाह तआला की, उसकी शान के मुताबिक़ षना बयान की, फिर दज्जाल का ज़िक्र फ़र्माया, और फ़र्माया कि मैं तुम्हें दज्जाल के फ़ित्ने से डराता हूँ और कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी क़ौम को उससे न डराया हो। नूह़ (अलै.) ने अपनी क़ौम को उससे डराया था। लेकिन मैं तुम्हें उसके बारे में एक ऐसी बात बताता हूँ जो किसी नबी ने भी अपनी क़ौम को नहीं बताई थी, तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि दज्जाल काना होगा, और अल्लाह तआला इस ऐ़ब से पाक है। (राजेअ़ : 3057)

٣٣٣٧- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَالِمٌ : وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي النَّاسِ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ ذَكَرَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: ((إِنِّي لأُنْذِرُكُمُوهُ، وَمَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ أَنْذَرَهُ قَوْمَهُ، لَقَدْ أَنْذَرَ نُوحٌ قَوْمَهُ، وَلَكِنِّي أَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلاً لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ : تَعْلَمُونَ أَنَّهُ أَعْوَرُ، وَأَنَّ اللهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ)).
[راجع: ٣٠٥٧]

3338. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, हमसे शैबान ने बयान

٣٣٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ

किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्यूँ न मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में एक ऐसी बात बता दूँ जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई। वो काना होगा और जन्नत और जहन्नम जैसी चीज़ लाएगा। पस जिसे वो जन्नत कहेगा दरह क़ीक़त वही जहन्नम होगी और मैं तुम्हें उसके फ़ित्ने से इसी तरह डराता हूँ, जैसे नूह (अलै.) ने अपनी क़ौम को डराया था। (राजेअ़ : 3057)

يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ أُحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا عَنِ الدَّجَّالِ مَا حَدَّثَ بِهِ نَبِيٌّ قَوْمَهُ: إِنَّهُ أَعْوَرُ، وَإِنَّهُ يَجِيءُ مَعَهُ بِمِثَالِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَالَّتِي يَقُولُ إِنَّهَا الْجَنَّةُ هِيَ النَّارُ، وَإِنِّي أُنْذِرُكُمْ كَمَا أَنْذَرَ بِهِ نُوحٌ قَوْمَهُ)). [راجع: ٣٠٥٧]

तश्रीह : अल्लाह पाक अपने बन्दों को आज़माने के लिये दज्जाल को पहले कुछ कामों की त़ाक़त दे देगा फिर बाद में उसकी आजिज़ी ज़ाहिर कर देगा, ऐसी सूरत ख़ुद बता देगी कि वो अल्लाह नहीं है। अह़ादीष़ में नूह (अलै.) का ज़िक्र आया है बाब से यही मुनासबत है।

3339. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) नूह (अलै.) बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होंगे। अल्लाह तआ़ला दरयाफ़्त करेगा, क्या (मेरा पैग़ाम) तुमने पहुँचा दिया था? नूह (अलै.) अ़र्ज़ करेंगे मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था, ऐ रब्बुल इ़ज़्ज़त! अब अल्लाह तआ़ला उनकी उम्मत से पूछेगा, क्या (नूह अलै. ने) ने तुम तक मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो जवाब देंगे नहीं, हमारे पास तेरा कोई नबी नहीं आया। इस पर अल्लाह तआ़ला नूह (अलै.) से पूछेगा, इसके लिये आपकी त़रफ़ से कोई गवाही भी दे सकता है? वो अ़र्ज़ करेंगे कि मुहम्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत (के लोग मेरे गवाह हैं) चुनाँचे हम उस बात की शहादत देंगे कि नूह (अलै.) ने पैग़ामे अल्लाह अपनी क़ौम तक पहुँचा दिया था और यही मफ़्हूम अल्लाह जल्ला ज़िक्रुहू के इस इर्शाद का है कि, और इसी त़रह हमने तुम्हें उम्मते वस्त़ बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाही दो और वस्त़ के मा'नी दरम्यानी के हैं। (दीगर मक़ाम : 4487, 7349)

٣٣٣٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنِ زِيَادٍ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَجِيْءُ نُوحٌ وَأُمَّتُهُ. فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى : هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ أَيْ رَبِّ. فَيَقُولُ لأُمَّتِهِ : هَلْ بَلَّغَكُمْ؟ فَيَقُولُونَ : لاَ، مَا جَاءَنَا مِنْ نَبِيٍّ. فَيَقُولُ لِنُوحٍ مَنْ يَشْهَدُ لَكَ؟ فَيَقُولُ: مُحَمَّدٌ ﷺ وَأُمَّتُهُ، فَنَشْهَدُ أَنَّهُ قَدْ بَلَّغَ، وَهُوَ قَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ﴾ [البقرة: ١٤٣] وَالْوَسَطُ الْعَدْلُ.

[طرفاه في : ٤٤٨٧، ٧٣٤٩].

3340. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन नस़र ने बयान किया, हमसे मुहम्मद बिन उ़बैद ने बयान किया, हमसे अबू ह़य्यान यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.)

٣٣٤٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ:

ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक दा'वत में शरीक थे। आप (ﷺ) की ख़िदमत में बाजू का गोश्त पेश किया गया जो आपको बहुत पसन्द था। आपने उस दस्त की हड्डी का गोश्त दांतों से निकालकर खाया। फिर फ़र्माया कि मैं क़यामत के दिन लोगों का सरदार होऊँगा। तुम्हें मा'लूम है कि किस तरह अल्लाह तआला (क़यायमत के दिन) तमाम मख़्लूक़ को एक चटियल मैदान में जमा करेगा? इस तरह कि देखने वाला सबको एक साथ देख सकेगा। आवाज़ देने वाले की आवाज़ हर जगह सुनी जा सकेगी और सूरज बिलकुल क़रीब हो जाएगा। एक शख़्स अपने क़रीब के दूसरे शख़्स से कहेगा, देखते नहीं कि सब लोग कैसी परेशानी में मुब्तला हैं? और मुसीबत किस हद तक पहुँच चुकी है? क्यों न किसी ऐसे शख़्स की तलाश की जाए जो अल्लाह पाक की बारगाह में हम सबकी शिफ़ाअत के लिये जाए। कुछ लोगों का मश्वरा होगा कि दादा आदम (अलै.) उसके लिये मुनासिब हैं। चुनाँचे लोग उनकी ख़िदमत में हाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे, ऐ बाबा आदम! आप इंसानों के दादा हैं। अल्लाह पाक ने आपको अपने हाथ से पैदा किया था, अपनी रूह आपके अंदर फूँकी थी, मलाइका को हुक्म दिया था और उन्होंने आपको सज्दा किया था और जन्नत में आपको (पैदा करने के बाद) ठहराया था, आप अपने रब के हुज़ूर में हमारी शिफ़ाअत कर दें। आप ख़ुद मुलाहिज़ा फ़र्मा सकते हैं कि हम किस दर्जा उलझन और परेशानी में मुब्तला हैं। वो फ़र्माएँगे कि (गुनाहगारों पर) अल्लाह तआला आज इस दर्जा ग़ज़बनाक है कि कभी इतना ग़ज़बनाक नहीं हुआ था और न आइन्दा कभी होगा और मुझे पहले ही पेड़ (जन्नत) के खाने से मना कर चुका था लेकिन मैं इस फ़र्मान को बजा लाने में कोताही कर गया। आज तो मुझे अपनी ही पड़ी है। (नफ़्सी-नफ़्सी) तुम लोग किसी और के पास जाओ। हाँ, नूह (अलै.) के पास जाओ। चुनाँचे सब लोग नूह (अलै.) की ख़िदमत में हाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे, ऐ नूह (अलै.)! आप (आदम अलै. के बाद) रूए ज़मीन पर सबसे पहले नबी हैं और अल्लाह तआला ने आपको अ़ब्दे शकूर कहकर पुकारा है। आप मुलाहिज़ा फ़र्मा सकते हैं कि आज हम कैसी मुसीबत व परेशानी में मुब्तला हैं?

((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي دَعْوَةٍ، فَرُفِعَتْ إِلَيْهِ الذِّرَاعُ – وَكَانَتْ تُعْجِبُهُ. فَنَهَسَ مِنْهَا نَهْسَةً وَقَالَ: ((أَنَا سَيِّدُ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. هَلْ تَدْرُونَ بِمَنْ يَجْمَعُ اللهُ الأَوَّلِيْنَ وَالآخِرِيْنَ فِي صَعِيْدٍ وَاحِدٍ. فَيُبْصِرُهُمُ النَّاظِرُ، وَيُسْمِعُهُمُ الدَّاعِيُ، وَتَدْنُو مِنْهُمُ الشَّمْسُ، فَيَقُولُ بَعْضُ النَّاسِ: أَلاَ تَرَوْنَ إِلَى مَا أَنْتُمْ فِيْهِ، إِلَى مَا بَلَغَكُمْ؟ أَلاَ تَنْظُرُونَ إِلَى مَنْ يَشْفَعُ لَكُمْ إِلَى رَبِّكُمْ؟ فَيَقُولُ بَعْضُ النَّاسِ: أَبُوكُمْ آدَمُ. فَيَأْتُونَهُ فَيَقُولُونَ يَا آدَمُ أَنْتَ أَبُو الْبَشَرِ، خَلَقَكَ اللهُ بِيَدِهِ، وَنَفَخَ فِيْكَ مِنْ رُوْحِهِ، وَأَمَرَ الْمَلاَئِكَةَ فَسَجَدُوا لَكَ، وَأَسْكَنَكَ الْجَنَّةَ. أَلاَ تَشْفَعُ لَنَا إِلَى رَبِّكَ؟ أَلاَ تَرَى مَا نَحْنُ فِيْهِ وَمَا بَلَغَنَا؟ فَيَقُولُ: رَبِّيْ غَضِبَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلاَ يَغْضَبُ بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَنَهَانِي عَنِ الشَّجَرَةِ فَعَصَيْتُ. نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِهِ، اذْهَبُوا إِلَى نُوحٍ. فَيَأْتُونَ نُوحًا فَيَقُولُونَ : يَا نُوحُ أَنْتَ أَوَّلُ الرُّسُلِ إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ، وَسَمَّاكَ اللهُ عَبْدًا شَكُورًا. أَمَا تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيْهِ؟ أَلاَ تَرَى إِلَى مَا بَلَغَنَا؟ أَلاَ تَشْفَعُ لَنَا إِلَى رَبِّكَ؟ فَيَقُولُ : رَبِّي غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلاَ يَغْضَبُ بَعْدَهُ مِثْلَهُ. نَفْسِي نَفْسِي، ائْتُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَيَأْتُونِي، فَأَسْجُدُ تَحْتَ الْعَرْشِ، فَيُقَالُ: يَا

مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، وَسَلْ تُعْطَهْ)). قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ : لاَ أَحْفَظُ سَائِرَهُ.
[طرفاه في : ٣٣٦١، ٤٧١٢].

आप अपने रब के हुज़ूर में हमारी शिफ़ाअत कर दीजिए। वो भी यही जवाब देंगे कि मेरा रब आज इस दर्जा ग़ज़बनाक है कि उससे पहले कभी ऐसा ग़ज़बनाक नहीं हुआ था और न कभी उसके बाद इतना ग़ज़बनाक होगा। आज तो मुझे ख़ुद अपनी ही फ़िक्र है। (नफ़्सी-नफ़्सी) तुम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में जाओ। चुनाँचे वो लोग मेरे पास आएँगे। मैं (उनकी शिफ़ाअत के लिये) अर्श के नीचे सज्दे में गिर पडूँगा। फिर आवाज़ आएगी, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! सर उठाओ और शिफ़ाअत करो, तुम्हारी शिफ़ाअत क़ुबूल की जाएगी। मांगो तुम्हें दिया जाएगा। मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह ने बयान किया कि सारी हदीष में याद न रख सका। (दीगर मक़ाम : 2261, 4712)

٣٣٤١- حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيِّ بْنِ نَصْرٍ أَخْبَرَنَا أَبُو أَحْمَدَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيْدَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَرَأَ : ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾ مِثْلَ قِرَاءَةِ الْعَامَّةِ)).
[أطرافه في: ٣٣٤٥، ٣٣٧٦، ٤٨٦٩، ٤٨٧٠، ٤٨٧١، ٤٨٧٢، ٤٨٧٣].

3341. हमसे नस्र बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू अहमद ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान ने, उन्हें अबू इस्हाक़ ने, उन्हें अस्वद बिन यज़ीद ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (आयत) फ़हल मिम् मुद्दकिर मशहूर क़िरअत के मुताबिक़ (इदग़ाम के साथ) तिलावत फ़र्माई थी। (दीगर मक़ाम : 3345, 3376, 4869, 4870, 4871, 4872, 4873)

तश्रीह : कुछ ने मुज़क्कर ज़ाल के साथ पढ़ा है। चूँकि इस रिवायत में ह़ज़रत नूह़ (अलै.) का ज़िक्र है इसलिये इस ह़दीष़ को यहाँ लाया गया है। ह़ज़रत आदम (अलै.) के बाद ह़ज़रत नूह़ (अलै.) बहुत अ़ज़ीम रसूल गुज़रे हैं। क़ुर्आन मजीद में उनका बयान कई जगह आया है। (स़ल्लल्लाहु अ़लैहिम अ़ज्मईन)

٤- بَابٌ

बाब 4 : इल्यास (अलैहिस्सलाम) का बयान

﴿ وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ، إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلاَ تَتَّقُونَ أَتَدْعُونَ بَعْلاً وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ اللهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ آبَائِكُمُ الأَوَّلِيْنَ فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ إِلاَّ عِبَادَ اللهِ الْمُخْلَصِيْنَ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الآخِرِيْنَ﴾ [الصافات : ٢٣] قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : يُذْكَرُ بِخَيْرٍ. ﴿سَلاَمٌ عَلَى آلِ

सूरह स़ाफ़्फ़ात में अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया और बेशक इल्यास रसूलों में से थे। जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम (अल्लाह को छोड़कर बुतों की इबादत करने से) डरते क्यों नहीं हो? तुम बअ़ ल (बुत) की तो इबादत करते हो और सबसे अच्छे पैदा करने वाले की इबादत को छोड़ते हो। अल्लाह ही तुम्हारा रब है और तुम्हारे बाप दादाओं का भी। लेकिन उनकी क़ौम ने उन्हें झुठलाया। पस बेशक वो सब लोग (अ़ज़ाब के लिये) ह़ाज़िर किये जाएँगे। सिवाए अल्लाह के बन्दों के जो मुख़्लिस़ थे और मैंने बाद में आन

يَاسِيْنَ، إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ، إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ [الصافات: ١٣٠]. يُذْكَرُ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ وَابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ إِلْيَاسَ هُوَ إِدْرِيْسُ.

वाली उम्मतों में उनका ज़िक्रे ख़ैर छोड़ा है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने तरकना अलैहि फिल आख़रीन के बारे में कहा कि भलाई के साथ उन्हें याद किया जाता रहेगा। सलामती हो इल्यासीन पर, बेशक मैं इसी तरह मुख़्लिसीन को बदला देता हूं। बेशक वो मेरे मुख़्लिस बन्दों में से था। इब्ने अब्बास और इब्ने मसऊद (रज़ि.) से रिवायत है कि इल्यास, इदरीस (अलै.) का नाम था।

तश्रीह : ये इल्यास बिन यासीन बिन हारून थे। हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद भेजे गये थे। कुछ के नज़दीक इल्यास से हज़रत इदरीस (अलैहिस्सलाम) ही मुराद हैं। मगर इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसको सहीह नहीं समझा, इसलिये हज़रत इदरीस (अलैहिस्सलाम) के लिये नीचे का बाब अलग बाँधा है।

٥- بَابُ ذِكْرِ إِدْرِيْسَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَهُوَ جَدُّ أَبِي نُوحٍ، وَيُقَالُ جَدُّ نُوحٍ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ

बाब 5 : हज़रत इदरीस (अलै.) का बयान हज़रत नूह (अलै.) के वालिद के दादा थे

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا﴾

और ये भी कहा गया है कि ख़ुद नूह (अलै.) के दादा थे और अल्लाह तआला का फ़र्माना कि, और मैंने उनको बुलन्द मकान (आसमान) पर उठा लिया था।

٣٣٤٢- قَالَ عَبْدَانُ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ. ح. وَ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَنْبَسَةُ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ أَنَسٌ: كَانَ أَبُو ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((فُرِجَ عَنْ سَقْفِ بَيْتِي وَأَنَا بِمَكَّةَ، فَنَزَلَ جِبْرِيْلُ فَفَرَجَ صَدْرِي، ثُمَّ غَسَلَهُ بِمَاءِ زَمْزَمَ، ثُمَّ جَاءَ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مُمْتَلِىءٍ حِكْمَةً وَإِيْمَانًا فَأَفْرَغَهَا فِي صَدْرِي ثُمَّ أَطْبَقَهُ، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي فَعَرَجَ بِي إِلَى السَّمَاءِ، فَلَمَّا جَاءَ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا قَالَ جِبْرِيْلُ لِخَازِنِ السَّمَاءِ: افْتَحْ. قَالَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا جِبْرِيْلُ، قَالَ: مَعَكَ أَحَدٌ؟ قَالَ: مَعِيَ مُحَمَّدٌ، قَالَ: أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَافْتَحْ. فَلَمَّا عَلَوْنَا السَّمَاءَ إِذَا رَجُلٌ عَنْ يَمِيْنِهِ أَسْوِدَةٌ وَعَنْ

3342. अब्दान ने कहा कि हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी और उन्हें ज़ुह्री ने, (दूसरी सनद) और हमसे अहमद बिन सालेह ने बयान किया, कहा हमसे अम्बसा ने, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू ज़र (रज़ि.) बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे घर की छत खोली गई। मेरा क़याम उन दिनों मक्का में था। फिर जिब्रईल (अलै.) उतरे और मेरा सीना चाक किया और उसे ज़मज़म के पानी से धोया। उसके बाद सोने का एक तश्त लाए जो हिक्मत और ईमान से लबरेज़ था, उसे मेरे सीने में उण्डेल दिया। फिर मेरा हाथ पकड़कर आसमान की तरफ़ लेकर चले, जब आसमाने दुनिया पर पहुँचे तो जिब्रईल (अलै.) ने आसमान के दारोग़ा से कहा कि दरवाज़ा खोलो, पूछा कि कौन साहब है? उन्होंने जवाब दिया कि मैं जिब्रईल, फिर पूछा कि आपके साथ कोई और साहब भी हैं? जवाब दिया कि मेरे साथ मुहम्मद (ﷺ) हैं, पूछा कि उन्हें लाने के लिये आपको भेजा गया था। जवाब दिया कि हाँ, अब दरवाज़ा खुला, जब हम आसमान पर पहुँचे तो वहाँ एक बुज़ुर्ग से मुलाक़ात हुई, कुछ इंसानी रूहें

يَسَارِهِ أَسْوِدَةٌ، فَإِذَا نَظَرَ قِبَلَ يَمِينِهِ ضَحِكَ، وَإِذَا نَظَرَ قِبَلَ شِمَالِهِ بَكَى، فَقَالَ مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالاِبْنِ الصَّالِحِ. قُلْتُ: مَنْ هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: هَذَا آدَمُ، وَهَذِهِ الأَسْوِدَةُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ نَسَمُ بَنِيهِ، فَأَهْلُ الْيَمِينِ مِنْهُمْ أَهْلُ الْجَنَّةِ، وَالأَسْوِدَةُ الَّتِي عَنْ شِمَالِهِ أَهْلُ النَّارِ. فَإِذَا نَظَرَ قِبَلَ يَمِينِهِ ضَحِكَ وَإِذَا نَظَرَ قِبَلَ شِمَالِهِ بَكَى. ثُمَّ عَرَجَ بِي جِبْرِيلُ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الثَّانِيَةَ فَقَالَ لِخَازِنِهَا : افْتَحْ، فَقَالَ لَهُ خَازِنُهَا مِثْلَ مَا قَالَ الأَوَّلُ، فَفَتَحَ. قَالَ أَنَسٌ: فَذَكَرَ أَنَّهُ وَجَدَ فِي السَّمَاوَاتِ إِدْرِيسَ وَمُوسَى وَعِيسَى وَإِبْرَاهِيمَ، وَلَمْ يُثْبِتْ لِي كَيْفَ مَنَازِلُهُمْ، غَيْرَ أَنَّهُ قَدْ ذَكَرَ أَنَّهُ وَجَدَ آدَمَ فِي السَّمَاءِ الدُّنْيَا وَإِبْرَاهِيمَ فِي السَّادِسَةِ. وَقَالَ أَنَسٌ: فَلَمَّا مَرَّ جِبْرِيلُ بِإِدْرِيسَ قَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالأَخِ الصَّالِحِ. فَقُلْتُ مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا إِدْرِيسُ. ثُمَّ مَرَرْتُ بِمُوسَى فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالأَخِ الصَّالِحِ، قُلْتُ مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا مُوسَى. ثُمَّ مَرَرْتُ بِعِيسَى فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالأَخِ الصَّالِحِ، قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ : عِيسَى. ثُمَّ مَرَرْتُ بِإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالاِبْنِ الصَّالِحِ، قُلْتُ : مَنْ هَذَا؟ قَالَ : هَذَا إِبْرَاهِيمُ- قَالَ: وَأَخْبَرَنِي ابْنُ حَزْمٍ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ

उनके दाएँ जानिब थी और कुछ बाएँ जानिब, जब वो दाएँ तरफ़ देखते तो हंस देते और जब बाएँ तरफ़ देखते तो रो पड़ते। उन्होंने कहा ख़ुश आमदीद, नेक नबी नेक बेटे! मैंने पूछा, जिब्रईल (अलै.)! ये स़ाहब कौन बुज़ुर्ग हैं? तो उन्होंने बताया कि ये आदम (अलै.) हैं और ये इंसानी रूहें उनके दाएँ और बाएँ तरफ़ थीं उनकी औलाद बनी आदम की रूहें थीं उनके जो दाएँ तरफ़ थीं वो जन्नती थीं और जो बाएँ तरफ़ थीं वो जहन्नमी थीं, इसीलिये जब वो दाएँ तरफ़ देखते तो मुस्कुराते और जब बाएँ तरफ़ देखते तो रोते थे। फिर जिब्रईल (अलै.) मुझे ऊपर लेकर चढ़े और दूसरे आसमान पर आए, उस आसमान के दारोग़ा से भी उन्होंने कहा कि दरवाज़ा खोलो, उन्होंने भी उसी तरह के सवालात किये जो पहले आसमान पर हो चुके थे, फिर दरवाज़ा खोला, अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने तफ़्स़ील से बताया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुख़्तलिफ़ आसमानों पर इदरीस, मूसा, ईसा और इब्राहीम (अलै.) को पाया, लेकिन उन्होंने उन अंबिया किराम के मक़ामात की कोई तख़्स़ीस़ नहीं की, सिर्फ़ इतना कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने आदम (अलै.) को आसमाने दुनिया (पहले आसमान पर) पाया और इब्राहीम (अलै.) को छठे पर और ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर जब जिब्रईल (अलै.) इदरीस (अलै.) के पास से गुज़रे तो उन्होंने कहा ख़ुश आमदीद, नेक नबी नेक भाई, मैंने पूछा कि ये कौन स़ाहब हैं? जिब्रईल (अलै.) ने बताया कि ये इदरीस (अलै.) हैं, फिर मैं ईसा (अलै.) के पास से गुज़रा, उन्होंने भी कहा ख़ुश आमदीद नेक नबी नेक भाई, मैंने पूछा ये कौन स़ाहब हैं? तो बताया कि ईसा (अलै.)। फिर मैं इब्राहीम (अलै.) के पास से गुज़रा तो उन्होंने फ़र्माया कि ख़ुश आमदीद नेक नबी और नेक बेटे, मैंने पूछा ये कौन स़ाहब हैं? जवाब दिया कि ये इब्राहीम (अलै.) हैं, इब्ने शिहाब से ज़ुह्री ने बयान किया और मुझे अय्यूब बिन ह़ज़म ने ख़बर दी कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और अबू ह़य्या अंसारी (रज़ि.) बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया फिर मुझे ऊपर लेकर चढ़े और मैं इतने बुलन्द मुक़ाम पर पहुँच गया जहाँ से क़लम के लिखने की आवाज़ स़ाफ़ सुनने लगी थी, अबूबक्र बिन

हज़म ने बयान किया और अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया फिर अल्लाह तआला ने पचास वक़्त की नमाज़ें मुझ पर फ़र्ज़ कीं। मैं उस फ़रीज़े के साथ वापस हुआ और जब मूसा (अलै.) के पास से गुज़रा तो उन्होंने पूछा कि आपकी उम्मत पर क्या फ़र्ज़ की गई है? मैंने जवाब दिया कि पचास वक़्त की नमाज़ें उन पर फ़र्ज़ हुई है। उन्होंने कहा कि आप अपने रब के पास वापस जाएँ, क्योंकि आपकी उम्मत में इतनी नमाज़ों की ताक़त नहीं है, चुनाँचे मैं वापस हुआ और रब्बुल आलमीन के दरबार में मुराजिअत की, उसके नतीजे में उसका एक हिस्सा कम कर दिया गया, फिर मैं मूसा (अलै.) के पास आया और इस बार भी उन्होंने कहा कि अपने रब से फिर मुराजिअत करें फिर उन्होंने अपनी तफ़्सीलात का ज़िक्र किया कि रब्बुल आलमीन ने एक हिस्से की फिर कमी कर दी, फिर मैं मूसा (अलै.) के पास आया और उन्हे ख़बर की, उन्हों ने कहा कि आप अपने रब से मुराजिअत करें, क्योंकि आपकी उम्मत में उसकी भी ताक़त नहीं है, फिर मैं वापस हुआ और अपने रब से फिर मुराजिअत की, अल्लाह तआला ने इस बार फ़र्मा दिया कि नमाज़ें पाँच वक़्त की कर दी गईं और ष़वाब पचास नमाज़ों ही का बाक़ी रखा गया, मेरा क़ौल बदला नहीं करता। फिर मैं मूसा (अलै.) के पास आया तो उन्होंने अब भी ज़ोर दिया कि अपने रब से आपको फिर मुराजिअत करनी चाहिये। लेकिन मैंने कहा कि मुझे अल्लाह पाक से बार-बार दरख़्वास्त करते हुए अब शर्म आती है। फिर जिब्रईल (अलै.) मुझे लेकर आगे बढ़े और सिदरतुल मुन्तहा के पास लाए जहाँ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के रंग नज़र आए, जिन्होंने उस पेड़ को छुपा रखा था मैं नहीं जानता कि वो क्या थे। उसके बाद मुझे जन्नत में दाख़िल किया गया तो मैंने देखा कि मोती के गुम्बद बने हुए हैं और उसकी मिट्टी मुश्क की तरह ख़ुश्बूदार थी। (राजेअ : 349)

وَأَبَا حَبَّةَ الأَنْصَارِيَّ كَانَا يَقُولاَن : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ثُمَّ عُرِجَ بِي حَتَّى ظَهَرْتُ لِمُسْتَوَى أَسْمَعُ صَرِيْفَ الأَقْلاَمِ. قَالَ ابْنُ حَزْمٍ وَأَنَسُ بْنُ مَالِكٍ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَرَضَ اللهُ عَلَيَّ خَمْسِيْنَ صَلاَةً، فَرَجَعْتُ بِذَلِكَ حَتَّى أَمُرَّ بِمُوسَى فَقَال مُوسَى : مَا الَّذِي فُرِضَ عَلَى أُمَّتِكَ؟ قُلْتُ: فَرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسِيْنَ صَلاَةً، قَالَ: فَرَاجِعْ رَبَّكَ، فَإِنَّ أُمَّتَكَ لاَ تُطِيْقُ ذَلِكَ، فَرَاجَعْتُ، فَرَاجَعْتُ رَبِّي، فَوَضَعَ شَطْرَهَا. فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ : رَاجِعْ رَبَّكَ، فَذَكَرَ مِثْلَهُ فَوَضَعَ شَطْرَهَا، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ : رَاجِعْ رَبَّكَ، فَإِنَّ أُمَّتَكَ لاَ تُطِيْقُ ذَلِكَ، فَرَجَعْتُ فَرَاجَعْتُ رَبِّي فَقَالَ : هِيَ خَمْسٌ وَخَمْسُون، لاَ يُبَدَّلُ الْقَولُ لَدَيَّ، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ: رَاجِعْ رَبَّكَ، فَقُلْتُ: قَدِ اسْتَحْيَيْتُ مِنْ رَبِّي. ثُمَّ انْطَلَقَ حَتَّى أَتَى السِّدْرَةَ الْمُنْتَهَى، فَغَشِيَهَا أَلْوَانٌ لاَ أَدْرِي مَا هِيَ. ثُمَّ أُدْخِلْتُ فَإِذَا فِيْهَا جَنَابِذُ اللُّؤْلُؤِ، وَإِذَا تُرَابُهَا الْمِسْكُ)).

[راجع: ٣٤٩]

तश्रीह : इस ह़दीष़ शरीफ़ में ह़ज़रत इदरीस (अलै.) का ज़िक्रे ख़ैर आया। इसी मुनासबत से इसे यहाँ दर्ज किया गया। मेअ़राज का वाक़िया अपनी जगह पर बयान किया जाएगा, इंशाअल्लाह

नोट : ह़दीषे़ मेअ़राज में ये अ़क़ीदा लाज़िमन रखना चाहिये कि मेअ़राजे जिस्मानी बरह़क़ है और उसमें सीना चाक होने वग़ैरह

वग़ैरह जितने भी कवाइफ़ मज़्कूर हुए हैं अपने ज़ाहिरी मआनी के लिहाज़ से सब बरहक़ हैं। ज़ाहिर पर ईमान लाना और दीगर कवाइफ़ अल्लाह के हवाले करना ईमान वालों का शेवा है। इसमें मज़ीद कुरैद करना जाइज़ नहीं।

बाब 6 : अल्लाह तआला ने फ़र्माया,

और क़ौमे आद की तरफ़ मैंने उनके भाई हूद को (नबी बनाकर) भेजा उन्होंने कहा, ऐ क़ौम! अल्लाह की इबादत करो।

और सूरह अहक़ाफ़ में अल्लाह तआला ने फ़र्माया, कि जब हूद (अलै.) ने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़ या'नी रेत के मैदानों में डराया, अल्लाह तआला का इर्शाद, यूँ ही मैं बदला देता हूं मुजरिम क़ौमों को, तक। इस बाब में अता इब्ने अबी रिबाह और सुलैमान बिन यसार ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत की है। उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

٦- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿وَإِلَى عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللهَ﴾ [هود : ٥٠] وَقَوْلِهِ : ﴿إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالأَحْقَافِ - إِلَى قَوْلِهِ - كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ﴾ [الأحقاف : ٢١]

فِيهِ عَنْ عَطَاءٍ وَسُلَيْمَانَ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

अता की रिवायत को मुवल्लिफ़ ने सूरह अहक़ाफ़ की तफ़्सीर में और सुलैमान की रिवाएयत को मुवल्लिफ़ ने ही वस्ल किया है। अहक़ाफ़ हक़्फ़ की जमा है, क़ौमे आद रेत के ऊँचे टीलों पर आबाद थी। इसीलिये उनकी बस्तियों को लफ़्ज़े अहक़ाफ़ से मौसूम किया गया है, यमन में एक वादी का नाम अहक़ाफ़ था जहाँ आद की क़ौम रहती थी। क़तादा का क़ौल है कि यमन में समन्दर के किनारे रेत के टीलों में क़ौमे आद के लोग बस्ते थे। कुर्आन मजीद में एक सूरह अहक़ाफ़ के नाम से मौसूम है। जिसमें क़ौमे आद पर अज़ाब जो आया उसकी तफ़्सील बयान हुई है।

बाब

(और सूरह हाक़्क़ा में) अल्लाह तआला ने फ़र्माया, लेकिन क़ौमे आद, तो उन्हें एक निहायत तेज़ आँधी से हलाक किया गया, जो बड़ी ग़ज़बनाक थी। इब्ने उयैना ने (आयत के लफ़्ज़) आतिया की तशरीह में कहा कि (अय अतत अलल ख़ुज़ानि) या'नी वो अपने दारोग़ा फ़रिश्तों के क़ाबू से बाहर हो गई जिसे अल्लाह ने उन पर मुतवातिर सात रात और आठ दिन तक मुसल्लत किया (आयत में) लफ़्ज़े हुसूमन बमा'नी मुतताबिआ है। या'नी वो पे दर पे चलती रही (एक मिनट भी नहीं रुकी) पस अगर तू उस वक़्त मौजूद होता तो उस क़ौम को वहाँ यूँ गिरा हुआ देखता कि गोया वो खोखली खजूरों के तने पड़े हैं, सो क्या तुझको उनमें से कोई भी बचा हुआ नज़र आता है।

باب

قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ : ﴿وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ﴾ [الحاقة: ٨] شديدةٍ ﴿عَاتِيَةٍ﴾. قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: عَتَتْ عَلَى الْخُزَّانِ ﴿سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَانِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا﴾ مُتَتَابِعَةً ﴿فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ﴾ أُصُولُهَا، ﴿فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ﴾ بَقِيَّةٍ.

(आतिया) का मतलब ये है कि उस हवा ने हुक्मे इलाही से अपने दारोग़ा फ़रिश्ते की भी एक न सुनी और एक दम निकल भागी। जैसे इमाम बुख़ारी (रह.) ने सुफ़यान बिन उयैना से नक़ल किया, कुछ ने कहा तर्जुमा यूँ है कि वो क़ौमे आद पर ग़ालिब आ गई या'नी उनके रोके से न रुक सकी, हवा के अज़ाब अब भी आते रहते हैं।

3343. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हकम ने, उनसे मुजाहिद ने, और

٣٣٤٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ

उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर) पुरवाई हवा से मेरी मदद की गई और क़ौमे आ़द पछुवा हवा से हलाक कर दी गई थी। (राजेअ़ : 1035)

ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نُصِرْتُ بِالصَّبَا، وَأُهْلِكَتْ عَادٌ بِالدَّبُورِ)). [راجع: ١٠٣٥]

3344. (हज़रत इमाम बुख़ारी रह. ने कहा) कि इब्ने कष़ीर ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे इब्ने अबी नुऐ़म ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने (यमन से) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में कुछ सोना भेजा तो आपने उसे चार आदमियों में तक़्सीम कर दिया, अक़्रअ़ बिन हाबिस हन्ज़ली षुम्मल मजाशेई, ऊ़ययना बिन बद्र फ़ुज़ारी, ज़ैद ताई बनू निब्हान वाले और अ़ल्क़मा बिन अ़लाष़ आ़मरी बनू किलाब वाले, उस पर क़ुरैश और अंसार के लोगों को ग़ुस्सा आया और कहने लगे कि आँहज़रत (ﷺ) ने नजद के बड़ों को तो दिया और हमें नज़रअंदाज़ कर दिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं सिर्फ़ उनके दिल मिलाने के लिये उन्हें देता हूँ (क्योंकि अभी हाल ही में ये लोग मुसलमान हुए हैं) फिर एक शख़्स सामने आया, उसकी आँखें धंसी हुई थीं, कले फूले हुए थे, पेशानी भी उठी हुई, दाढ़ी बहुत घनी थी और सर मुंडा हुआ था। उसने कहा ऐ मुहम्मद (ﷺ)! अल्लाह से डरो! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मैं ही अल्लाह की नाफ़र्मानी करूँगा तो फिर उसकी फ़र्मांबरदारी कौन करेगा? अल्लाह तआ़ला ने मुझे रूए ज़मीन पर दयानतदार बनाकर भेजा है क्या तुम मुझे अमीन नहीं मानते? उस शख़्स की उस गुस्ताख़ी पर एक सहाबी ने उसके क़त्ल की इजाज़त चाही, मेरा ख़याल है कि ये हज़रत ख़ालिद बिन वलीद थे, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें इससे रोक दिया, फिर वो शख़्स वहाँ से चलने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इस शख़्स की नस्ल से या (आप ﷺ ने फ़र्माया कि) इस शख़्स के बाद उसी की क़ौम से ऐसे लोग झूठे मुसलमान पैदा होंगे, जो क़ुर्आन की तिलावत तो करेंगे, लेकिन क़ुर्आन मजीद उनकी हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, दीन से वो इस तरह निकल जाएँगे जैसे तीर कमान से निकल जाता है, ये

٣٣٤٤- قَالَ: قَالَ ابْنُ كَثِيْرٍ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ ابْنِ أَبِي نُعْمٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَرْسَلَ عَلِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِذُهَيْبَةٍ، فَقَسَمَهَا بَيْنَ الأَرْبَعَةِ: الأَقْرَعِ بْنِ حَابِسٍ الْحَنْظَلِيِّ ثُمَّ الْمُجَاشِعِيِّ، وَعُيَيْنَةَ بْنِ بَدْرٍ الْفَزَارِيِّ، وَزَيْدٍ الطَّائِيِّ ثُمَّ أَحَدِ بَنِي نَبْهَانَ، وَعَلْقَمَةَ بْنِ عُلاَثَةَ الْعَامِرِيِّ ثُمَّ أَحَدِ بَنِي كِلاَبٍ. فَغَضِبَتْ قُرَيْشٌ وَالأَنْصَارُ قَالُوا: يُعْطِي صَنَادِيْدَ أَهْلِ نَجْدٍ وَيَدَعُنَا. قَالَ: ((إِنَّمَا أَتَأَلَّفُهُمْ)). فَأَقْبَلَ رَجُلٌ غَائِرُ الْعَيْنَيْنِ مُشْرِفُ الْوَجْنَتَيْنِ نَاتِئُ الْجَبِيْنِ كَثُّ اللِّحْيَةِ مَحْلُوقٌ فَقَالَ: اتَّقِ اللهَ يَا مُحَمَّدُ، فَقَالَ: ((مَنْ يُطِعِ اللهَ إِذَا عَصَيْتُ؟ أَيَأْمَنُنِي اللهُ عَلَى أَهْلِ الأَرْضِ فَلاَ تَأْمَنُونِي؟)) فَسَأَلَهُ رَجُلٌ قَتْلَهُ - أَحْسِبُهُ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ - فَمَنَعَهُ، فَلَمَّا وَلَّى قَالَ: ((إِنَّ مِنْ ضِئْضِئِ هَذَا - أَوْ فِي عَقِبِ هَذَا - قَوْمٌ يَقْرَؤُونَ الْقُرْآنَ لاَ يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ، يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّيْنِ مُرُوقَ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ، يَقْتُلُونَ أَهْلَ الإِسْلاَمِ وَيَدَعُونَ أَهْلَ الأَوْثَانِ، لَئِنْ أَنَا أَدْرَكْتُهُمْ لأَقْتُلَنَّهُمْ قَتْلَ عَادٍ)).

[أطرافه في: ٣٦١٠، ٤٣٠١، ٤٦٦٧،

मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और बुतपरस्तों को छोड़ देंगे, अगर मेरी ज़िन्दगी उस वक़्त तक बाक़ी रहे तो मैं उनको इस तरह क़त्ल करूँगा जैसे क़ौमे आद का (अज़ाबे इलाही से) क़त्ल हुआ था कि एक भी बाक़ी न बचा। (दीगर मक़ाम : 3610, 4301, 4667, 5057, 6163, 6931, 6933, 7432, 5762)

٥٠٥٨، ٦١٦٣، ٦٩٣١، ٦٩٣٣، ٧٤٣٢، ٥٧٦٢].

तश्रीह : इस हदीष़ के आख़िर में क़ौमे आद के अज़ाबे इलाही से हलाक होने का ज़िक्र है इस मुनासबत से ये हदीष़ यहाँ दर्ज की गई। जिस बदबख़्त गिरोह का यहाँ ज़िक्र हुआ है ये ख़ारजी थे जिन्होंने हज़रत अली (रज़ि.) के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया उन पर कुफ़्र का फ़त्वा लगाया, ख़ुद इत्तिबाऐ क़ुर्आन का दा'वा किया। आख़िर हज़रत अली (रज़ि.) से मुक़ाबले में ये लोग मारे गये, दीनदारी का दा'वा करने और दूसरे मुसलमानों को बनज़रे हिक़ारत देखने वाले आज भी बहुत से लोग मौजूद हैं, लम्बे लम्बे कुर्ते पहने हुए हाथों में तस्बीह लटकाए हुए, बग़लों में क़ुर्आन दबाए हुए मगर उनके दिलों को देखो तो भेड़िये मा'लूम होते हैं।

3345. हमसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अस्वद ने, कहा कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना आप आयत फ़हल मिम् मुद्दकिर की तिलावत फ़र्मा रहे थे। (राजेअ़ : 3341)

٣٣٤٥- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ يَزِيْدَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيْلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ: ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾. [راجع: ٣٣٤١]

ये आयत सूरह क़मर मे क़ौमे आद के क़िस्से में भी आई है। इस मुनासबत से ये हदीष़ बयान की।

बाब 7 : याजूज व माजूज का बयान

٧- بَابُ قِصَّةِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ

अल्लाह तआ़ला ने सूरह कहफ़ में फ़र्माया वो लोग कहने लगे याजूज माजूज लोग मुल्क में बहुत फ़साद मचा रहे हैं।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿قَالُوا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الأَرْضِ﴾ الكهف: ٩٤

तश्रीह : ये दोनों क़बीलों के नाम हैं जो याफ़ष़ बिन नूह़ की औलाद में हैं। कुछ ने कहा याजूज तुर्क लोग हैं और माजूज एक दूसरा गिरोह है। क़यामत के क़रीब ये लोग बहुत ग़ालिब होंगे और हर तरफ़ से निकल पड़ेंगे, उनका निकलना क़यामत की एक निशानी है। जो लोग याजूज माजूज के वजूद में शुब्हा करते हैं वो अहमक़ हैं, याजूज माजूज आदमी हैं, कोई अ़जूबा नहीं है और जो रिवायतें उनके क़द व क़ामत के बारे में मन्कूल हैं उनकी सनदें सह़ीह़ नहीं। तौरात शरीफ़ में याजूज माजूज का ज़िक्र है, कुछ ने कहा याजूज रूसी लोग हैं और माजूज तातारी कुछ ने कहा कि माजूज अंग्रेज़ हैं (वहीदी)। सह़ीह़ बात यही है कि हक़ीक़ते ह़ाल को अल्लाह ही बेहतर जानता है अहले ईमान का काम इर्शादे इलाही को आमन्ना व सद्दक़ना कहना है।

अल्लाह तआ़ला का ये फ़र्माना, और आपसे (ऐ रसूल) ज़ुलक़रनेन (बादशाह) के बारे में ये लोग पूछते हैं। (आप फ़र्मा दें कि उनका क़िस्सा मैं अभी तुम्हारे सामने बयान करता हूँ मैंने उसे ज़मीन की हुकूमत दी थी और मैंने उसको हर तरह का सामान अ़ता किया था फिर वो एक सिम्त चल निकला, अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, तुम

﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ﴾ [الكهف: ٨٣] ﴿قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا﴾ : فَاتَّبَعَ سَبَبًا : طَرِيْقًا. إِلَى قَوْلِهِ :

लोग मेरे पास लोहे की चादरें लाओ, तक। ज़ुबुर का वाहिद ज़बरह है और ज़बरह टुकड़े को कहते हैं, यहाँ तक कि जब उसने उन दोनों पहाड़ों के बराबर दीवार उठा दी। सदफ़ैन से पहाड़ मुराद हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से (बयनस्‌ सदफ़ैन की दूसरी क़िरअत भी अल जबलैन (दो पहाड़) के मा'नी में है, ख़रजा बमा'नी महसूले उज्रत, ज़ुलक़रनेन ने (उमला से) कहा कि अब उस दीवार को आग से धोंको यहाँ तक कि जब उसे आग बना दिया तो कहा अब मेरे पास पिघला हुआ सीसा व तांबा लाओ तो मैं उस पर डाल दूँ उफ़्रिग़ अलैहि क़ित्रा) के मा'नी हैं कि मैं उस पर पिघला हुआ सीसा डाल दूँ (क़ित्र के मा'नी) कुछ ने लोहे (पिघले हुए से) किये हैं और कुछ ने पीतल से, इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने उसका मा'नी तांबा बताया है। फिर क़ौमे याजूज व माजूज के लोग (इस सद के बाँध) उस पर चढ़ न सके यज़्हरूहु से इस्तिफ़आल का सेग़ा है। इसीलिये इस्ताअ यस्तीऊ, यस्ततीऊ भी पढ़ते हैं और याजूज माजूज उसमें सूराख़ भी न कर सके। ज़ुलक़रनेन ने कहा कि ये मेरे परवरदिगार की एक रहमत है फिर जब मेरे परवरदिगार का मुक़र्ररा वा'दा आ पहुँचेगा तो वो उस दीवार का दक्का या'नी ज़मीनदोज़ कर देगा, अरब के लोग उसी से बोलते हैं नाक़तिं दक्का जिससे मुराद वो ऊँट है जिसकी कोहान न हो। और वद्दक्दाकु मिनल अर्ज़ि की मिषाल वो ज़मीन जो हमवार होकर सख़्त हो गई हो, ऊँची न हो और मेरे रब का वा'दा बरहक़ है और उस रोज़ मैं उनको इस तरह छोड़ दूंगा कि कुछ उनका कुछ से गडमड हो जाएगा। यहाँ तक कि जब याजूज माजूज को खोल दिया जाएगा और वो हर बुलन्दी से दौड़ पड़ेंगे। क़तादा ने कहा कि हदब के मा'नी टीले के हैं। एक सहाबी ने रसूले करीम (ﷺ) से अर्ज़ किया कि मैंने इस दीवार को धारीदार चादर की तरह देखा है जिसकी एक धारी सुर्ख़ है और एक काली है, उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वाक़ई तुमने उसको देखा है।

﴿آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ﴾ وَاحِدُهَا زُبْرَةٌ وَهِيَ الْقِطَعُ ﴿حَتَّى إِذَا سَاوَى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ﴾ يُقَالُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ الْجَبَلَيْنِ. وَالسُّدَّيْنِ : الْجَبَلَيْنِ. خَرْجًا أَجْرًا. ﴿قَالَ انْفُخُوا حَتَّى إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا﴾ أَصُبَّ عَلَيْهِ رَصَاصًا، وَيُقَالُ الْحَدِيدُ، وَيُقَالُ الصُّفْرُ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: النُّحَاسُ، ﴿فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ﴾ يَعْلُوهُ، اِسْتَطَاعَ : اسْتَفْعَلَ مِنْ طَعْتُ لَهُ، فَلِذَلِكَ فُتِحَ اسْطَاعَ يَسْطِيعُ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ اسْتَطَاعَ يَسْتَطِيعُ. ﴿وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا. قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّي. فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ﴾ أَلْزَقَهُ بِالأَرْضِ. وَنَاقَةٌ دَكَّاءُ : لاَ سَنَامَ لَهَا. وَالدَّكْدَاكُ مِنَ الأَرْضِ مِثْلُهُ حَتَّى صَلُبَ مِنَ الأَرْضِ وَتَلَبَّدَ. ﴿وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا. وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ، حَتَّى إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ﴾ قَالَ قَتَادَةُ: حَدَبٍ أَكَمَةٌ. قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: رَأَيْتُ السَّدَّ مِثْلَ الْبُرْدِ الْمُحَبَّرِ. قَالَ: ((قَدْ رَأَيْتَهُ)).

तश्रीह : हुआ ये था कि दोनो तरफ़ दो ऊँचे पहाड़ थे बीच में रास्ता खुला हुआ था, उसमें से याजूज माजूज के लोग घुस आते और ग़रीब रिआया को सताते। ज़ुल्क़रनेन ने ये दीवार लोहे की बनाकर उनका रास्ता ही बन्द कर दिया।

कुछ कम अक़्ल लोग इस क़िस्से पर ए'तिराज़ करते हैं कि अगर ये दीवार बनी होती तो आजकल ज़रूर उसका पता लग जाता क्योंकि दुनिया की छानबीन आजकल बहुत हो चुकी है और कोई मुल्क और जज़ीरा ऐसा बाक़ी नहीं रहा जहाँ खोजी न पहुँचे हों। उनका जवाब ये है कि आँहज़रत (ﷺ) के अहदे मुबारक में तो ये दीवार मौजूद थी सहीह हदीष में है कि आपने फ़र्माया आज याजूज माजूज की सदमे इतना खुल गया। बाद के लिये भी हमारा अक़ीदा वही है जो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है। ये ज़रूरी नहीं है कि खोजियों ने सारे आलम का पता लगा लिया हो जिन लोगों ने दीवारे चीन को सद्दे सिकन्दरी समझा है उन्होंने ग़लती की है क्योंकि चीन की दीवार बहुत लम्बी है और वो लोहे की नहीं है इसे चीन के एक बादशाह ने बनवाया था। मज़्कूरा ज़ुलक़रनेन से सिकन्दरे आज़म मुराद है। जिन्होंने दीने इब्राहीमी क़ुबूल कर लिया था, सिकन्दरे यूनानी मुराद नहीं है ये बाद के ज़माने में मसीह (अलैहि) से पहले पैदा हुआ है।

3346. हमसे यह्या बिन बुकेर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबेर ने और उनसे हज़रत ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने, उनसे उम्मे हबीबा बिन्ते अबी सुफ़यान ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उनके यहाँ तशरीफ़ लाए आप कुछ घबराए हुए थे फिर आपने फ़र्माया अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, मुल्के अरब में उस बुराई की वजह से बर्बादी आ जाएगी जिसके दिन क़रीब आने को हैं, आज याजूज माजूज ने दीवार में इतना सूराख़ कर दिया है फिर आँहज़रत (ﷺ) ने अंगूठे और उसके क़रीब की उंगली से हल्क़ा बनाकर बतलाया। उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) ने बयान किया कि मैनें सवाल किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम उसके बावजूद हलाक कर दिये जाएँगे कि हममें नेक लोग भी मौजूद होंगे? आपने फ़र्माया कि जब फ़िस्क़ व फ़िजूर बढ़ जाएगा (तो यक़ीनन बर्बादी होगी)। (दीगर मक़ाम : 3598, 7059, 7135)

٣٣٤٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ أَبِي سَلَمَةَ حَدَّثَتْهُ عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ بِنْتِ أَبِي سُفْيَانَ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُنَّ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا فَزِعًا يَقُولُ : ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ مَا قَدِ اقْتَرَبَ، فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذِهِ)) - وَحَلَّقَ بِإِصْبَعِهِ الإِبْهَامَ وَالَّتِي تَلِيْهَا - قَالَتْ زَيْنَبُ بِنْتِ جَحْشٍ: فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَنَهْلِكُ وَفِيْنَا الصَّالِحُونَ قَالَ: ((نَعَمْ، إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ)).

[أطرافه في : ٣٥٩٨، ٧٠٥٩، ٧١٣٥].

3347. हमें मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने, उनसे इब्ने ताऊस ने, उनसे उनके वालिद ताऊस ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह पाक याजूज माजूज की दीवार से इतना खोल दिया है, फिर आपने अपनी उँगलियों से नव्वे (90) का अदद बनाकर बतलाया। (दीगर मक़ाम : 7136)

٣٣٤٧- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((فَتَحَ اللهُ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلَ هَذِهِ، وَعَقَدَ بِيَدِهِ تِسْعِينَ)).

[طرفه في : ٧١٣٦].

तशरीह : अक़्दे अनामिल में उसकी सूरत यूँ है कि ख़िन्सिर और बिन्सिर को बन्द करे और कलिमे की उँगली बन्द कर दे, अंगूठे को बीच की उंगली पर रखे। क़स्तलानी ने कहा उससे ये मक़्सूद नहीं है कि इतना ही सा ख़ुला है, एक रिवायत में यूँ है कि याजूज माजूज रोज़ उसको खोदते हैं थोड़ी ही रह जाती है तो कहते हैं कल आकर तोड़ लेंगे, अल्लाह तआ़ला

रात भर मे फिर उसको वैसा ही मज़बूत कर देता है, जब टूटने का वक़्त आ पहुँचेगा उस रोज़ यूँ कहेंगे कल इंशाअल्लाह आकर तोड़ डालेंगे, इस रात में वो दीवार वैसी ही रहेगी सुबह को तोड़कर निकल पड़ेंगे। (वहीदी)

3348. मुझसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू सालेह ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला (क़यामत के दिन) फ़र्माएगा, ऐ आदम! आदम (अलै.) अर्ज़ करेंगे मैं इताअत के लिये हाज़िर हूँ, मुस्तैद हूँ, सारी भलाइयाँ सिर्फ़ तेरे ही हाथ में हैं। अल्लाह तआला फ़र्माएगा, जहन्नम में जाने वालों को (लोगों में से अलग) निकाल लो। हज़रत आदम (अलै.) अर्ज़ करेंगे। ऐ अल्लाह! जहन्नमियों की ता'दाद कितनी है? अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि हर एक हज़ार में से नौ सौ निन्नावे। उस वक़्त (की हौलनाकी और वहशत से) बच्चे बूढ़े हो जाएँगे और हर हामिला औरत अपने हमल गिरा देगी। उस वक़्त तुम (डर व दहशत से) लोगो को मदहोशी के आलम में देखोगे, हालाँकि वो बेहोश न होंगे। लेकिन अल्लाह का अज़ाब बड़ा ही सख़्त होगा। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! वो एक शख़्स हममें से कौन होगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें बशारत हो, वो एक आदमी तुममें से होगा और एक हज़ार दोज़ख़ी याजूज माजूज की क़ौम से होंगे फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मुझे उम्मीद है कि तुम (उम्मते मुस्लिमा) तमाम जन्नत वालों के एक तिहाई होओगे। फिर हमने अल्लाहु अक्बर कहा तो आपने फ़र्माया कि मुझे उम्मीद है कि तुम तमाम जन्नत वालों के आधे होगे फिर हमने अल्लाहु अक्बर कहा। फिर आपने फ़र्माया कि (महशर में) तुम लोग तमाम इंसानों के मुक़ाबले में इतने होगे जितने किसी सफ़ेद बैल के जिस्म पर एक काला बाल, या जितने किसी काले बैल के जिस्म पर एक सफ़ेद बाल होता है। (दीगर मक़ाम : 4741, 6530, 7483)

٣٣٤٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنِ الأَعْمَشِ حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: يَا آدَمُ. فَيَقُولُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، وَالْخَيْرُ فِي يَدَيْكَ. فَيَقُولُ: أَخْرِجْ بَعْثَ النَّارِ. قَالَ: وَمَا بَعْثُ النَّارِ؟ قَالَ: مِنْ كُلِّ أَلْفٍ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِيْنَ. فَعِنْدَهُ يَشِيْبُ الصَّغِيْرُ، وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا، وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى، وَلَكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيْدٌ)). قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، وَأَيُّنَا ذَلِكَ الْوَاحِدُ؟ قَالَ: ((أَبْشِرُوا فَإِنَّ مِنْكُمْ رَجُلاً وَمِنْ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ أَلْفٌ. ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنِّي أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا رُبُعَ أَهْلِ الْجَنَّةِ. فَكَبَّرْنَا. فَقَالَ: أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ. فَكَبَّرْنَا. فَقَالَ: أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا نِصْفَ أَهْلِ الْجَنَّةِ. فَكَبَّرْنَا فَقَالَ: مَا أَنْتُمْ فِي النَّاسِ إِلاَّ كَالشَّعْرَةِ السَّوْدَاءِ فِي جِلْدِ ثَوْرٍ أَبْيَضَ، أَوْ كَشَعْرَةٍ بَيْضَاءَ فِي جِلْدِ ثَوْرٍ أَسْوَدَ)).

[أطرافه في : ٤٧٤١، ٦٥٣٠، ٧٤٨٣].

तश्रीह : बाब का तर्जुमा इस फ़िक़रे से निकलता है कि तुममें से एक आदमी के मुक़ाबिल याजूज माजूज में से हज़ार आदमी पड़ते हैं क्योंकि उससे याजूज माजूज की ऐसी कष़रते नस्ल मा'लूम होती है कि उम्मते इस्लामिया उन काफ़िरों का हज़ारवाँ हिस्सा होगी। याजूज माजूज दो क़बीलों के नाम हैं जो याफ़ष़ बिन नूह की औलाद में से हैं। क़यामत के क़रीब ये

लोग बहुत होंगे और हर त़रफ़ से निकल पड़ेंगे। उनका निकलना क़यामत की एक निशानी है जो लोग याजूज माजूज के वजूद में शुब्हा करते हैं वो ख़ुद अह़मक़ हैं। ह़दीष़ से उम्मते मुह़म्मदिया का बकष़रत जन्नती होना भी ष़ाबित हुआ मगर जो लोग कलिम-ए-इस्लाम पढ़ने के बावजूद क़ब्रों, ता'ज़ियों, झण्डों की पूजा-पाठ में मशग़ूल हैं वो कभी भी जन्नत में नहीं जाएँगे। इसलिये कि वो मुश्रिक हैं और मुश्रिकों के लिये अल्लाह तआ़ला ने जन्नत को क़त़्अ़न ह़राम कर दिया है जैसा कि आयते शरीफ़ा **इन्नल्लाह ला यग़फिरू अंय्युश्रक बिही** (अन् निसा : 48) से ज़ाहिर है।

बाब 8 : (सूरह निसा में) अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि,

٨- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَاتَّخَذَ اللهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلاً﴾ [النساء ١٦٥] وَقَوْلِهِ : ﴿إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ﴾ [النحل : ١٢٠] وَقَوْلِهِ: ﴿إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لأَوَّاهٌ حَلِيمٌ﴾ [التوبة: ١١٤]. وَقَالَ أَبُو مَيْسَرَةَ: الرَّحِيمُ بِلِسَانِ الْحَبَشَةِ.

और अल्लाह ने इब्राहीम को ख़लील बनाया, और (सूरह नह़्ल में) अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि, बेशक इब्राहीम (तमाम ख़ूबियों का मज्मूआ़ होने की वजह से ख़ुद) एक उम्मत थे, अल्लाह तआ़ला के मुत़ीअ़ व फ़र्मांबरदार, एक त़रफ़ होने वाले और (सूरह तौबा में) अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि, बेशक इब्राहीम निहायत नरम त़बीअ़त और बड़े ही बुर्दबार थे। अबू मैसरा (अ़म्र बिन शुरह़बील) ने कहा कि (अवाह) ह़ब्शी ज़ुबान में रह़ीम के मा'नी में है।

3349. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उनसे मुग़ीरह बिन नोअ़मान ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोग ह़श्र में नंगे पाँव, नंगे जिस्म और बिन ख़त्ना उठाए जाओगे फिर आपने उस आयत की तिलावत की कि, जैसा कि मैंने पैदा किया था पहली मर्तबा, मैं ऐसे ही लौटाऊँगा। ये मेरी त़रफ़ से एक वा'दा है जिसको मैं पूरा करके रहूंगा (सूरह अंबिया) और अंबिया में सबसे पहले ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) को कपड़ा पहनाया जाएगा और मेरे अस्ह़ाब में से कुछ को जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जाएगा तो मैं पुकार उठूँगा कि ये तो मेरे अस्ह़ाब हैं, मेरे अस्ह़ाब! लेकिन मुझे बताया जाएगा कि आपकी वफ़ात के बाद उन लोगों ने फिर कुफ़्र इख़्तियार कर लिया था। उस वक़्त मैं भी वही जुम्ला कहूँगा जो नेक बन्दे (ईसा अलै.) कहेंगे कि, जब तक मैं उनके साथ था उन पर निगरान था। अल्लाह तआ़ला के इर्शाद अल ह़कीम तक। (दीगर मक़ाम : 3447, 4625, 4626, 4740, 5624, 6525, 6526)

٣٣٤٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ النُّعْمَانِ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّكُمْ تُحْشَرُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً. ثُمَّ قَرَأَ: ﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيْدُهُ، وَعْدًا عَلَيْنَا، إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ﴾ وَأَوَّلُ مَنْ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ. وَإِنَّ أُنَاسًا مِنْ أَصْحَابِي يُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ، فَأَقُولُ: أُصَيْحَابِي، أُصَيْحَابِي. فَيُقَالُ : إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ، فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ: ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ - إِلَى قَوْلِهِ - الْحَكِيْمُ﴾.

[أطرافه في : ٣٤٤٧، ٤٦٢٥، ٤٦٢٦،

मुराद वो लोग हैं जो आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में मुर्तद हो गये थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे जिहाद किया। ये देहात के वो बदवी थे जो बराए नाम इस्लाम में दाख़िल हो गये थे और आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के साथ ही फिर मुर्तद होकर इस्लाम के ख़िलाफ़ मुक़ाबले के लिये खड़े हो गये थे जो या तो मुनाफ़िक़ थे या इस्लाम के ग़लबा से ख़ौफ़ज़दा होकर इस्लाम में दाख़िल हो गए थे और उन्होंने इस्लाम से कभी कोई दिलचस्पी सिरे से ली ही नहीं थी। उन मुर्तदीन ने ख़िलाफ़ते इस्लामिया के ख़िलाफ़ जंग की और शिकस्त खाई या क़त्ल किये गये।

٣٣٥٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَخِي عَبْدُ الْحَمِيْدِ عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ عَنْ سَعِيْدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَلْقَى إِبْرَاهِيْمُ أَبَاهُ آزَرَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَعَلَى وَجْهِ آزَرَ قَتَرَةٌ وَغَبَرَةٌ، فَيَقُولُ لَهُ إِبْرَاهِيْمُ: أَلَمْ أَقُلْ لَكَ لاَ تَعْصِنِي؟ فَيَقُولُ: فَالْيَوْمَ لاَ أَعْصِيْكَ. فَيَقُولُ إِبْرَاهِيْمُ : يَا رَبِّ إِنَّكَ وَعَدْتَنِي أَنْ لاَ تُخْزِيَنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ، فَأَيُّ خِزْيٍ أَخْزَى مِنْ أَبِي الأَبْعَدِ؟ فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى: ((إِنِّي حَرَّمْتُ الْجَنَّةَ عَلَى الْكَافِرِيْنَ. ثُمَّ يُقَالُ : يَا إِبْرَاهِيْمُ مَا تَحْتَ رِجْلَيْكَ، فَيَنْظُرُ فَإِذَا هُوَ بِذِيْخٍ مُلْتَطِخٍ، فَيُؤْخَذُ بِقَوَائِمِهِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ)).

[طرفاه في : ٤٧٦٨، ٤٧٦٩].

3350. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि मुझे मेरे भाई अ़ब्दुल ह़मीद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी ज़िब ने, उन्हें सईद मक़्बरी ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) अपने वालिद आज़र से क़यामत के दिन जब मिलेंगे तो उनके (वालिद के) चेहरे पर स्याही और ग़ुबार होगा। ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) कहेंगे कि क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि मेरी मुख़ालफ़त न कीजिए। वो कहेंगे कि आज मैं आपकी मुख़ालफ़त नहीं करता। ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! तूने वा'दा किया था कि मुझे क़यामत के दिन रुस्वा नहीं करेगा। आज इस रुस्वाई से बढ़कर और कौनसी रुस्वाई होगी कि मेरे वालिद तेरी रह़मत से सबसे ज़्यादा दूर हैं। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि मैंने जन्नत काफ़िरों पर हराम क़रार दी है। फिर कहा जाएगा कि ऐ इब्राहीम! तुम्हारे क़दमों के नीचे क्या चीज़ है? वो देखेंगे तो एक ज़िबह किया हुआ जानवर ख़ून में लथड़ा हुआ वहाँ पड़ा होगा और फिर उसके पाँव पकड़कर उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा। (दीगर मक़ाम : 4768, 4769)

तशरीह : इस ह़दीष़ से उन नामोनिहाद मुसलमानों को इबरत पकड़नी चाहिये जो औलिया अल्लाह के बारे में झूठी ह़िकायात व करामात गढ़-गढ़कर उनको बदनाम करते हैं। मष़लन ये कि बड़े पीर जीलानी स़ाह़ब ने रूहों की थैली ह़ज़रत इ़ज़राईल (अलै.) से छीन ली जिनमें मोमिन व काफ़िर सबकी रूहें थीं और वो सब जन्नत में दाख़िल हो गये। ऐसे बहुत से क़िस्से बहुत से बुज़ुर्गों के बारे में मुश्रिकीन ने गढ़ रखे हैं। जब ह़ज़रत ख़लीलुल्लाह जैसे पैग़म्बर क़यामत के दिन अपने बाप के काम न आ सकेंगे तो और दूसरे किसी की क्या मजाल है कि बग़ैर इज़्ने इलाही किसी मुरीद या शागिर्द को बख़्शवा सकें।

٣٣٥١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّ بُكَيْرًا حَدَّثَهُ عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ

3351. हमसे यह़्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने ख़बर दी, उनसे बुकैर ने बयान किया, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के मौला कुरैब ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.)

ने कि नबी करीम (ﷺ) बैतुल्लाह में दाख़िल हुए तो उसमें हज़रत इब्राहीम और हज़रत मरयम (अलै.) की तस्वीरें देखीं, आपने फ़र्माया कि क़ुरैश को क्या हो गया? हालाँकि उन्हें मा'लूम है कि फ़रिश्ते किसी ऐसे घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें तस्वीरें रखी हों, ये हज़रत इब्राहीम (अलै.) की तस्वीर है और वो भी पांसा फेंकते हुए। (राजेअ़ : 398)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْبَيْتَ فَوَجَدَ فِيْهِ صُوْرَةَ إِبْرَاهِيْمَ وَصُوْرَةَ مَرْيَمَ فَقَالَ ﷺ: أَمَّا هُمْ فَقَدْ سَمِعُوا أَنَّ الْمَلاَئِكَةَ لاَ تَدْخُلُ بَيْتًا فِيْهِ صُوْرَةٌ، هَذَا إِبْرَاهِيْمُ مُصَوَّرٌ، فَمَا لَهُ يَسْتَقْسِمُ)). [راجع: ٣٩٨]

तश्रीह : अरब के मुश्रिकों ने हज़रत इब्राहीम (अलै.) की मूर्ति बनाकर उनके हाथ में पांसे का तीर दिया था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीर को पांसा बनाना, उससे जुआ खेलना या फ़ाल निकालना किसी भी नबी की शान नहीं हो सकती। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि मक्का के काफ़िर जब सफ़र वग़ैरह पर निकलते तो उन पांसों से फ़ाल निकाला करते थे। इस हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि बतौरे मा'बूद किसी बुत को पूजा जाए या किसी नबी और वली की क़ब्र या मूरत को, शिर्क होने में दोनों बराबर हैं। जो नादान मुसलमान कहते हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ में जिस शिर्क की मज़म्मत है वो काफ़िरों की बुतपरस्ती मुराद है। हम मुसलमान औलिया अल्लाह को महज़ बतौरे वसीला पूजते हैं। उन नादानों का ये कहना सरासर फ़रेब नफ़्स है।

3352. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हे मअमर ने, उन्हें अय्यूब ने, उन्हे इक्रिमा ने और उन्हें हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जब बैतुल्लाह मे तस्वीरें देखीं तो अंदर उस वक़्त तक दाख़िल न हुए जब तक वो मिटा न दी गईं और आपने इब्राहीम (अलै.) और इस्माईल (अलै.) की तस्वीरें देखीं कि उनके हाथों में तीर (पांसे के) थे तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह उन पर बर्बादी लाए। वल्लाह उन हज़रात ने कभी तीर नहीं फेंके। (राजेअ़ : 398)

٣٣٥٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ لَمَّا رَأَى الصُّوَرَ فِي الْبَيْتِ لَمْ يَدْخُلْ حَتَّى أَمَرَ بِهَا فَمُحِيَتْ. وَرَأَى إِبْرَاهِيْمَ وَإِسْمَاعِيْلَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ بِأَيْدِيْهِمَا الأَزْلاَمُ فَقَالَ: قَاتَلَهُمُ اللهُ، وَاللهِ إِنِ اسْتَقْسَمَا بِالأَزْلاَمِ قَطُّ)) [راجع: ٣٩٨]

या'नी उन बुज़ुर्गों ने फ़ाल निकालने के लिये कभी तीर इस्ते'माल नहीं किये, वो ऐसी बेहूदा हरकात से ख़ुद ही बेज़ार थे। ऐसे ही वो बुज़ुर्ग भी हैं जिनकी क़ब्रों पर ढोल ताशे बजाए जा रहे हैं।

3353. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! सबसे ज़्यादा शरीफ़ कौन है? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो। सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि हम हुज़ूर (ﷺ) से इसके बारे में नहीं पूछते। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर अल्लाह के नबी यूसुफ़ (अलै.) बिन नबी अल्लाह बिन नबी अल्लाह बिन ख़लीलुल्लाह (सबसे ज़्यादा शरीफ़

٣٣٥٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدُ بْنُ أَبِي سَعِيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((قِيْلَ يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَتْقَاهُمْ. فَقَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ، قَالَ: فَيُوسُفُ نَبِيُّ اللهِ ابْنُ نَبِيِّ اللهِ ابْنُ خَلِيْلِ

हैं) सहाबा ने कहा हम उसके बारे मे भी नहीं पूछते। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा अरब के ख़ानदानों के बारे में तुम पूछना चाहते हो। सुनो जो जाहिलियत मे शरीफ़ थे इस्लाम में भी वो शरीफ़ हैं जबकि दीन की समझ उन्हें आ जाए। अबू उसामा और मुअतमिर ने उबैदुल्लाह (रज़ि.) से बयान किया, उनसे सईद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।
(दीगर मक़ाम : 3374, 3383, 3490, 4689)

اللهِ. قَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ: فَعَنْ مَعَادِنِ الْعَرَبِ تَسْأَلُونَ؟ خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلاَمِ إِذَا فَقِهُوا)). قَالَ أَبُو أُسَامَةَ وَمُعْتَمِرٌ: ((عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ)). [أطرافه في : ٣٣٧٤، ٣٣٨٣، ٣٤٩٠، ٤٦٨٩].

3354. हमसे मुअम्मल ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे औफ़ ने, कहा हमसे अबू रजाआ ने, कहा हमसे समुरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आज की रात मेरे पास (ख़्वाब में) दो फ़रिश्ते (जिब्रईल और मीकाईल अलै.) आए। फिर ये दोनों फ़रिश्ते मुझे साथ लेकर एक लम्बे क़द के बुज़ुर्ग के पास गये, वो इतने लम्बे थे कि उनका सर में नहीं देख पाता था और ये हज़रत इब्राहीम (अलै.) थे।
(राजेअ : 845)

٣٣٥٤- حَدَّثَنَا مُؤَمَّلٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ حَدَّثَنَا عوفٌ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ حَدَّثَنَا سَمُرَةُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتِيَانِ، فَأَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ طَوِيْلٍ لاَ أَكَادُ أَرَى رَأْسَهُ طُولاً، وَإِنَّهُ إِبْرَاهِيْمُ ﷺ)). [راجع: ٨٤٥]

3355. हमसे बुयान बिन अम्र ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, कहा हमको इब्ने औन ने ख़बर दी, उन्हें मुजाहिद ने और उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, आपके सामने लोग दज्जाल का तज़्किरा कर रहे थे कि उसकी पेशानी पर लिखा हुआ होगा, काफिर या (यूँ लिखा होगा) कफ़र हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) से मैंने ये हदीष़ नहीं सुनी थी। अल्बत्ता आपने एक मर्तबा ये हदीष़ बयान की कि इब्राहीम (अलै.) (की शक्ल व वज़अ मा'लूम करने) के लिये तुम अपने स़ाहब को देख सकते हो और हज़रत मूसा (अलै.) का बदन गठा हुआ, गन्दुमी, एक सुर्ख़ ऊँट पर सवार थे जिसकी नकेल खजूर की छाल की थी। जैसे मैं उन्हें इस वक़्त तक भी देख रहा हूँ कि वो अल्लाह की बड़ाई बयान करते हुए वादी में उतर रहे हैं।
(राजेअ : 1555)

٣٣٥٥- حَدَّثَنَا بَيَانُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا النَّضْرُ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ مُجَاهِدٍ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا - وَذَكَرُوا لَهُ الدَّجَّالَ بَيْنَ عَيْنَيْهِ مَكْتُوبٌ كَافِرٌ أَوْ ك ف ر - قَالَ: لَمْ أَسْمَعْهُ، وَلَكِنَّهُ قَالَ : أَمَّا إِبْرَاهِيْمُ فَانْظُرُوا إِلَى صَاحِبِكُمْ، وَأَمَّا مُوسَى فَجَعْدٌ آدَمُ عَلَى جَمَلٍ أَحْمَرَ مَخْطُومٍ بِخُلْبَةٍ ؛ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ انْحَدَرَ فِي الْوَادِي يُكَبِّرُ)). [راجع: ١٥٥٥]

स़ाहब के लफ़्ज़ से ये इशारा आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी ज़ाते मुबारक की तरफ़ किया था क्योंकि आप हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से बहुत ज़्यादा मुशाबेह थे।

3356. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रहमान अल क़ुरशी ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) ने अस्सी साल की उम्र मे बसौले से ख़त्ना किया। (दीगर मक़ाम : 6298)

٣٣٥٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا مُغِيْرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقُرَشِيُّ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اخْتَتَنَ إِبْرَاهِيْمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ وَهُوَ ابْنُ ثَمَانِيْنَ سَنَةً بِالْقَدُّومِ)).[طرفه في: ٦٢٩٨].

उसी उम्र में उनको ख़त्ने का हुक्म आया, उस्तरा पास न था इसलिये हुक्मे इलाही की ता'मील में ख़ुद ही बसौले से ख़त्ना कर लिया। अबू यअ़ला की रिवायत मे इतनी स़राह़त है। कुछ मुंकिरीने ह़दीष़ ने इस ह़दीष़ पर भी ए'तिराज़ किया है जो उनकी ह़िमाक़त की दलील है। जब एक इंसान ख़ुदकुशी कर सकता है। ख़ुद अपने हाथ से अपनी गर्दन काट सकता है तो ह़ज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का ख़ुद बसौले से ख़त्ना कर लेना कौनसी ता'ज्जुब की बात है और अस्सी साल की उम्र में ख़त्ने पर ए'तिराज़ करना भी ह़िमाक़त है जब हुक्मे इलाही हुआ, उसकी ता'मील की गई। मुंकिरीने ह़दीष़ मह़ज़ अ़क़्ल से कोरे हैं।

हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, फिर यही ह़दीष़ नक़ल की लेकिन पहली रिवायत में क़दूम ब तशदीदे दाल है और उसमें क़दूम बतख़फ़ीफ़े दाल है। दोनों के मा'नी एक ही हैं या'नी बसौला (जो बढ़इयों का एक मशहूर हथियार होता है उसे बस्वा भी कहते हैं)

शुऐ़ब के साथ इस ह़दीष़ को अ़ब्दुर्रहमान बिन इस्ह़ाक़ ने भी अबुज़्ज़िनाद से रिवायत किया है और अ़ज्लान ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से और मुहम्मद बिन अ़म्र ने अबू सलमा से रिवायत किया है, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से।

حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ وَقَالَ: ((بِالْقَدُومِ)) مُخَفَّفَةً.
تَابَعَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ. وَتَابَعَهُ عَجْلاَنُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ. وَرَوَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ.

तश्रीह : ह़ज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को उसी उम्र में ख़त्ने का हुक्म आया, उस वक़्त उस्तरा उनके पास न था। ताख़ीर मुनासिब नहीं समझी और उसी सूरत से हुक्मे इलाही अदा किया, अबू यअ़ला की रिवायत में उसकी स़राह़त मौजूद है। अ़ब्दुर्रहमान बिन इस्ह़ाक़ की रिवायत को मुसद्दद ने अपनी मुस्नद में और इ़ज्लान की रिवायत को इमाम अह़मद ने और मुह़म्मद बिन अ़म्र की रिवायत को अबू यअ़ला ने वस़्ल किया है।

3357. हमसे सईद बिन तलीद रुअ़यनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे जरीर बिन हाज़िम ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब सुख़्तियानी ने, उन्हें मुह़म्मद बिन सीरीन ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया रसूलल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इब्राहीम (अलै.) ने तोरिया तीन मर्तबा के सिवा और कभी नहीं किया।

٣٣٥٧- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ تَلِيْدٍ الرُّعَيْنِيُّ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهَبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَمْ يَكْذِبْ إِبْرَاهِيْمُ عَلَيْهِ

السَّلاَمُ إِلاَّ ثَلاَثَ كَذَبَاتٍ)).

[راجع: ٢٢١٧]

(राजेअ़ : 2217)

तोरिया का मतलब ये है कि वाक़िया कुछ और हो लेकिन कोई शख़्स किसी ख़ास मस्लिहत की वजह से उसे दो मआनी वाले अल्फ़ाज़ के साथ इस अंदाज़ में कहे कि सुनने वाला असल वाक़िये को न समझ सके बल्कि उसका ज़हन ख़िलाफ़े वाक़िया चीज़ की तरफ़ मुन्तक़िल हो जाए। शरीअ़त ने कुछ मख़सूस हालात में उसकी इजाज़त दी है।

٣٣٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَحْبُوبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((لَمْ يَكْذِبْ إِبْرَاهِيْمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ إِلاَّ ثَلاَثَ كَذَبَاتٍ : ثِنْتَيْنِ مِنْهُنَّ فِي ذَاتِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ : قَوْلُهُ : ﴿إِنِّي سَقِيْمٌ﴾ وَقَوْلِهِ : ﴿بَلْ فَعَلَهُ كَبِيْرُهُمْ هَذَا﴾ وَقَالَ : بَيْنَا هُوَ ذَاتَ يَوْمٍ وَسَارَةُ إِذْ أَتَى عَلَى جَبَّارٍ مِنَ الْجَبَابِرَةِ، فَقِيْلَ لَهُ : إِنَّ هَا هُنَا رَجُلاً مَعَهُ امْرَأَةٌ مِنْ أَحْسَنِ النَّاسِ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَسَأَلَهُ عَنْهَا فَقَالَ : مَنْ هَذِهِ؟ قَالَ: أُخْتِي. فَأَتَى سَارَةَ قَالَ : يَا سَارَةُ لَيْسَ عَلَى وَجْهِ الأَرْضِ مُؤْمِنٌ غَيْرِي وَغَيْرُكِ، وَإِنَّ هَذَا سَأَلَنِي فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّكِ أُخْتِي، فَلاَ تُكَذِّبِيْنِي. فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا، فَلَمَّا دَخَلَتْ عَلَيْهِ ذَهَبَ يَتَنَاوَلُهَا بِيَدِهِ فَأُخِذَ. فَقَالَ : ادْعِي اللهَ لِيْ وَلاَ أَضُرُّكِ، فَدَعَتِ اللهَ فَأُطْلِقَ. ثُمَّ تَنَاوَلَهَا الثَّانِيَةَ فَأُخِذَ مِثْلَهَا أَوْ أَشَدَّ، فَقَالَ : ادْعِي اللهَ لِيْ وَلاَ أَضُرُّكِ، فَدَعَتْ فَأُطْلِقَ. فَدَعَا بَعْضَ حَجَبَتِهِ فَقَالَ : إِنَّكُمْ لَمْ تَأْتُونِيْ بِإِنْسَانٍ، إِنَّمَا أَتَيْتُمُونِي بِشَيْطَانٍ. فَأَخْدَمَهَا هَاجَرَ. فَأَتَتْهُ وَهُوَ قَائِمٌ

3358. हमसे मुहम्मद बिन महबूब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्राहीम (अलै.) ने तीन बार झूठ बोला था, दो उनमें से ख़ालिस अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की रज़ा के लिये थे। एक तो उनका फ़र्माना (बतौरे तोरिया के) कि मैं बीमार हूँ, और दूसरा उनका ये फ़र्माना कि बल्कि ये काम तो उनके बड़े (बुत) ने किया है और बयान किया कि एक बार इब्राहीम (अलै.) और सारा अ़लैहिस्सलाम एक ज़ालिम बादशाह की हुदूदे सल्तनत से गुज़र रहे थे। बादशाह को ख़बर मिली कि यहाँ एक शख़्स आया हुआ है और उसके साथ दुनिया की एक बेहद ख़ूबसूरत औरत है। बादशाह ने इब्राहीम (अलै.) के पास अपना आदमी भेजकर उन्हें बुलवाया और हज़रत सारा (अलै.) के मुता'ल्लिक़ पूछा कि ये कौन हैं ? हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने फ़र्माया कि ऐ सारा! यहाँ मेरे और तुम्हारे सिवा और कोई भी मोमिन नहीं है और इस बादशाह ने मुझसे पूछा तो मने उससे कह दिया कि तुम मेरी (दीनी ए'तिबार से) बहन हो। इसलिये अब तुम कोई ऐसी बात न कहना जिससे मैं झूठा बनूँ। फिर उस ज़ालिम ने हज़रत सारा (अलै.) को बुलवाया और जब वो उसके पास गईं तो उसने उनकी तरफ़ हाथ बढ़ाना चाहा लेकिन फ़ौरन ही पकड़ लिया गया। फिर वो कहने लगा कि मेरे लिये अल्लाह से दुआ करो (कि इस मुसीबत से नजात दे) मैं अब तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुँचाऊँगा, चुनाँचे उन्होंने अल्लाह से दुआ की और वो छोड़ दिया गया। लेकिन फिर दूसरी मर्तबा उसने हाथ बढ़ाया और इस मर्तबा भी उसी तरह पकड़ लिया गया, बल्कि उससे भी ज़्यादा सख़्त और फिर कहने लगा कि अल्लाह से मेरे लिये दुआ करो, मैं अब तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुँचाऊँगा । सारा (अलै.) ने दुआ की और वो छोड़ दिया गया। उसके बाद उसने अपने किसी ख़िदमतगार को बुलाकर कहा कि तुम लोग मेरे पास किसी इंसान को नहीं लाए हो, ये तो कोई सरकश जिन्न है (जाते हुए) सारा (अलै.) के लिये उसने

يُصَلِّي، فَأَوْمَأَ بِيَدِهِ: مَهْيَمْ؟ قَالَتْ: رَدَّ اللهُ كَيْدَ الْكَافِرِ -أَوِ الْفَاجِرِ- فِي نَحْرِهِ، وَأَخْدَمَ هَاجَرَ. قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: تِلْكَ أُمُّكُمْ يَا بَنِي مَاءِ السَّمَاءِ)).

[راجع: ٢٢١٧]

हाजरा (अलै.) को ख़िदमत के लिये दिया। जब सारा आईं तो इब्राहीम (अलै.) खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे। आपने हाथ के इशारे से उनका हाल पूछा। उन्हों ने कहा कि अल्लाह तआला ने काफ़िर या (ये कहा कि) फ़ाजिर के फ़रेब को उसी के मुँह पर दे मारा और हाजरा को ख़िदमत के लिये दिया। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि ऐ बनी माउस्समाअ (ऐ आसमानी पानी की औलाद! या'नी अहले अ़रब) तुम्हारी वालिदा यही (हज़रत हाजरा अलै.) हैं। (राजेअ़ : 2217)

तशरीह : रिवायत में हज़रत इब्राहीम (अलै.) के बारे में तीन झूठ का ज़िक्र है जो ह़क़ीक़त में झूठ न थे क्योंकि लफ़्ज़े झूठ अंबिया (अलै.) की शान से बहुत दूर है। ऐसे झूठ को दूसरे लफ़्ज़ों में तोरिया कहा जाता है। एक तोरिया वो है जिसका ज़िक्र क़ुर्आन पाक में आया है कि उन्होंने अपनी क़ौम के साथ जाने से इंकार करते हुए कहा था कि **इन्नी सक़ीमुन** में अपने दुख की वजह से चलने से मजबूर हूँ। वो दुख क़ौम के अफ़्आल और ह़रकाते बद देखकर दिल के दुखी होने पर इशारा था। अंबिया अ़लैहिस्सलाम व मुस्लिह़ीन अपनी क़ौम की ख़राबियों पर दिल से कुढ़ते रहते थे। आयत का यही मत़लब है। इसको तोरिया करके लफ़्ज़े झूठ से ता'बीर किया गया। दूसरा ज़ाहिरी झूठ जो इस ह़दीष़ में मज़्कूर है हज़रत सारा (अलै.) को उस ज़ालिम बादशाह से बचाने के लिये अपनी बहन क़रार देना। ये दीनी ए'तिबार से था। दीनी ए'तिबार से सारे मोमिन मर्द और औरत एक–दूसरे के भाई बहन होते हैं। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मुराद यही थी। तीसरा झूठ बुतों के बारे में था क़ुर्आन मजीद में वारिद हुआ है कि उन्होंने अपनी क़ौम के बुतख़ाने को उजाड़कर कुल्हाड़ा बड़े बुत के हाथ में दे दिया था और दरयाफ़्त करने पर फ़र्माया था कि ये काम उस बड़े बुत ने किया होगा। बुतपरस्तों की ह़िमाक़त ज़ाहिर करने के लिये ये त़ंज़ के त़ौर पर फ़र्माया था। बत़ौरे तोरिया उसे भी झूठ के लफ़्ज़ से ता'बीर नहीं किया गया है। बहरह़ाल इस ह़दीष़ पर भी मुंकिरीने ह़दीष़ का ए'तिराज़ महज़ ह़िमाक़त है। अल्लाह उनको नेक समझ अ़ता करे, आमीन। रिवायत में अ़रबों को आसमान से पानी पीने वाली क़ौम कहा गया है क्योंकि अहले अ़रब का ज़्यादातर गुज़रान बारिश ही पर है। अगरचे आजकल वहाँ कुँए और नहरें बनाई जा रही हैं और ये सऊ़दी हुकूमत के कारनामे हैं। **अय्यदल्लाहु बिनस्रिहिलअ़ज़ीज़** (आमीन)। हज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) इस बादशाह की बेटी थीं जिसे उसने बरकत ह़ासिल करने के लिये हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के ह़रम में दाख़िल कर दिया था।

٣٣٥٩- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى- أَوِ ابْنُ سَلاَمٍ عَنْهُ- أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أُمِّ شَرِيْكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَمَرَ بِقَتْلِ الْوَزَغِ وَقَالَ

3359. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, या इब्ने सलाम ने (हमसे बयान किया उ़बैदुल्लाह बिन मूसा के वास्ते से) उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल ह़मीद बिन जुबैर ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें हज़रत उम्मे शुरैक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने गिरगिट को मारने का हुक्म दिया था और फ़र्माया था कि उसने हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की आग पर फूँका था।

كَانَ يَنْفُخُ عَلَى إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامِ)).

(2307)

[٢٣٠٧]

या'नी उसने फूँकें मारकर आग को और भड़काने की कोशिश की थी। ये गिरगिट एक मशहूर ज़हरीला जानवर है जो हर वक़्त अपने रंग भी बदलता रहता है। जिसे मारने का हुक्म ख़ुद ह़दीष़ शरीफ़ में है और उसे मारने पर षवाब भी है। रिवायत में उसकी ह़रकते बद का ज़िक्र है, ये भी वाक़िया बिलकुल बरह़क़ है क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जो फ़र्मा दिया उसमें शक व शुब्हा हो ही नहीं सकता।

٣٣٦٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا حَدَّثَنَا أَبِي الأَعْمَشُ قَالَ : حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، أَيُّنَا لاَ يَظْلِمُ نَفْسَهُ؟ قَالَ: ((لَيْسَ كَمَا تَقُولُونَ، ﴿لَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ : بِشِرْكٍ. أَوَلَمْ تَسْمَعُوا إِلَى قَوْلِ لُقْمَانَ لابْنِهِ ﴿يَا بُنَيَّ لاَ تُشْرِكْ بِاللهِ، إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾)). [راجع: ٣٢]

3360. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत उतरी, जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी क़िस्म के ज़ुल्म की मिलावट न की, तो हमने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हममें ऐसा कौन होगा जिसने अपनी जान पर ज़ुल्म न किया होगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि वाक़िया वो नहीं जो तुम समझते हो, जिसने अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट न की, (में ज़ुल्म से मुराद) शिर्क है क्या तुमने लुक़्मान (अलै.) की अपने बेटे को ये नस़ीह़त नहीं सुनी कि, ऐ बेटे! अल्लाह के साथ शिर्क न करना, बेशक शिर्क बहुत ही बड़ा ज़ुल्म है। (राजेअ़ : 32)

किरमानी ने कहा कि आयते मज़्कूरा में बाद ही ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) का ज़िक्र आया है। यही बाब से मुनासबत है। कुछ ने कहा कि आयत **अल्लज़ीन आमनू व लम यल्बिसू ईमानहुम बिज़ुल्म** (अल अन्आम : 82) ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) ही का मक़ूला है और ह़ाकिम ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से निकाला कि ये आयत ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) और उनके साथ वालों के ह़क़ में है।

٩- بَابُ يَزِفُّونَ : النَّسَلاَنُ فِي الْمَشْيِ

बाब 9 : सूरह स़ाफ़्फ़ात में जो लफ़्ज़ यज़िफ़्फ़ून वारिद हुआ है, उसके मा'नी हैं दौड़कर चले

٣٣٦١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ أَبِي حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا بِلَحْمٍ، فَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ يَجْمَعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ، فَيُسْمِعُهُمُ الدَّاعِيَ وَيَنْفُذُهُمُ الْبَصَرُ، وَتَدْنُو الشَّمْسُ

3361. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम बिन नस़्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे अबू ह़य्यान ने, उनसे अबू ज़रआ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक मर्तबा गोश्त पेश किया गया तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन अव्वलीन व आख़िरीन को एक हमवार और वसीअ़ मैदान में जमा करेगा, इस त़रह कि पुकारने वाला सबको अपनी बात सुना सकेगा और देखने वाला सबको एक साथ देख सकेगा (क्योंकि मैदान हमवार होगा, ज़मीन की त़रह

مِنْهُمْ - فَذَكَرَ حَدِيْثَ الشَّفَاعَةِ - فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيْمَ فَيَقُولُونَ : أَنْتَ نَبِيُّ اللهِ وَخَلِيْلُهُ مِنَ الأَرْضِ، اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، فَيَقُولُ - فَذَكَرَ كَذَبَاتِهِ - نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى مُوسَى)). تَابَعَهُ أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.
[راجع: ٣٣٤٠]

गोल न होगा) और लोगों से सूरज बिलकुल क़रीब हो जाएगा। फिर आपने शिफ़ाअ़त का ज़िक्र किया कि लोग ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) की ख़िदमत में हाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे कि आप रूए ज़मीन पर अल्लाह के नबी और ख़लील हैं। हमारे लिये अपने रब के ह़ुज़ूर में शिफ़ाअ़त कीजिए, फिर उन्हें अपने झूठ (तोरिया) याद आ जाएँगे और कहेंगे कि आज तो मुझे अपनी ही फ़िक्र है। तुम लोग ह़ज़रत मूसा (अलै.) के पास जाओ। अबू हुरैरह (रज़ि.) के साथ ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से इस ह़दीष़ की रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3340)

इस ह़दीष़ से उन जाहिल नादान मुसलमानों की मज़म्मत निकली जो अपने मस्नूई इमामों और पीरों पर भरोसा किये बैठे हैं कि क़यामत के दिन वो उनको बख़्शवा लेंगे। मुक़ल्लिदीने अइम्म-ए-अरबआ में से अकष़र जाहिलों का यही ख़्याल है कि उनके इमाम उनकी बख़्शिश के ज़िम्मेदार हैं, ऐसे नाक़िस ख़्यालात से हर मुसलमान को बचना ज़रूरी है।

٣٣٦٢- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيْدٍ أَبُو عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيْرٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((يَرْحَمُ اللهُ أُمَّ إِسْمَاعِيْلَ، لَوْ لاَ أَنَّهَا عَجِلَتْ لَكَانَ زَمْزَمُ عَيْنًا مَعِيْنًا)). [راجع: ٢٣٦٨]

3362. मुझसे अबू अ़ब्दुल्लाह अह़मद बिन सईद ने बयान किया, हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन सईद बिन जुबैर ने, उनसे उनके वालिद सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह इस्माईल (अलै.) की वालिदा (ह़ज़रत हाजरा) पर रह़म करे, अगर उन्होंने जल्दी न की होती (और ज़मज़म के पानी के गिर्द मुँडेर न बनाती) तो आज वो एक बहता हुआ चश्मा होता। (राजेअ़ : 2368)

٣٣٦٣- قَالَ الأَنْصَارِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ أَمَّا كَثِيْرُ بْنُ كَثِيْرٍ فَحَدَّثَنِي قَالَ: ((إِنِّي وَعُثْمَانَ بْنَ أَبِي سُلَيْمَانَ جُلُوسٌ مَعَ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ فَقَالَ : مَا هَكَذَا حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ، قَالَ : أَقْبَلَ إِبْرَاهِيْمُ بِإِسْمَاعِيْلَ وَأُمِّهِ عَلَيْهِمُ السَّلاَمُ - وَهِيَ تُرْضِعُهُ - مَعَهَا شَنَّةٌ لَمْ يَرْفَعْهُ، ثُمَّ جَاءَ بِهَا إِبْرَاهِيْمُ وَبِابْنِهَا إِسْمَاعِيْلَ)). [راجع: ٢٣٦٨]

3363. मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने कहा कि हमसे इसी त़रह़ ये ह़दीष़ इब्ने जुरैज ने बयान किया लेकिन कष़ीर बिन कष़ीर ने मुझसे यूँ बयान किया कि मैं और उ़ष़्मान बिन अबू सुलैमान दोनों सईद बिन जुबैर के पास बैठे हुए थे, इतने में उन्होंने कहा कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने मुझसे ये ह़दीष़ इस त़रह़ बयान नहीं की बल्कि यूँ कहा कि इब्राहीम (अलै.) अपने बेटे इस्माईल (अलै.) और उनकी वालिदा ह़ज़रत हाजरा (अलै.) को लेकर मक्का की सरज़मीन की त़रफ़ आए ह़ज़रत हाजरा (अलै.) इस्माईल (अलै.) को दूध पिलाती थीं। उनके साथ एक पुरानी मश्क थी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने इस ह़दीष़ को मर्फ़ूअ़ नहीं किया। (राजेअ़ : 2368)

तश्रीह़ : ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) वही मश्क भर पानी ह़ज़रत हाजरा को देकर उनको और उनके दूध पीते बच्चे को उस उजाड़ बयाबान जंगल में बेआब व दाना मह़ज़ अल्लाह के भरोसे पर छोड़कर चले आए। जब वो पानी ख़त्म हो

गया और बच्चा प्यास से बेक़रार होने लगा तो ह़ज़रत हाजरा (अलै.) घबराकर पानी की तलाश में निकलीं, उन्होंने स़फ़ा व मरवा पहाड़ियों के बीच सात चक्कर लगाए लेकिन पानी का निशान न मिला। आख़िर ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) उतरे और उन्होंने ज़मीन पर अपना एक पर मारा जिससे ज़मज़म का चश्मा ज़ाहिर हो गया। ह़ज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) ने उस चश्मे का पानी एक मेड़ बनाकर रोक दिया। वो हौज़ की शक्ल में हो गया। आज तक ये चश्मा क़ायम है जिसको ज़मज़म कहते हैं और उसका पानी बरकत वाला है। ह़दीष़ में आया है कि ज़मज़म का पानी जिस मक़्सद के लिये पिया जाए अल्लाह पाक उसे पूरा कर देता है। इस ह़दीष़ में ज़मज़म के बारे में ये अल्फ़ाज़ वारिद हैं कि अगर ह़ज़रत हाजरा उस पर मेड़ न लगातीं तो **लकान ऐनन मईनन** वो एक बहता हुआ चश्मा होता। कुछ तर्जुमा करने वालों ने यहाँ तर्जुमा में ये और इज़ाफ़ा कर दिया है कि (रूए ज़मीन पर) वो एक बहता हुआ चश्मा होता। रूए ज़मीन से तर करने वालों की अगर सारी ज़मीन या'नी रबअ मस्कन मुराद है तो ये ख़ुद उनका इज़ाफ़ा है। ह़दीष़ में सिर्फ़ यही है कि वो एक बहता हुआ चश्मा होता। तर्जुमा में ऐसे इज़ाफ़ात ही से मुंकिरीने ह़दीष़ को मौक़ा मिला है कि वो ह़दीष़ के ख़िलाफ़ अपनी हफ़्वाते बातिला से अवाम को गुमराह करें। अआज़नल्लाह अन्हुम आमीन।

3364. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब सुख़्तियानी और कष़ीर बिन कष़ीर बिन मुत्तलिब बिन अबी विदाआ़ ने। ये दोनों कुछ ज़्यादा और कमी के साथ बयान करते हैं, वो दोनों सईद बिन जुबैर से कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, औरतों में कमरपट्टा बाँधने का रिवाज इस्माईल (अलै.) की वालिदा (हाजरा अलै.) से चला है। सबसे पहले उन्होंने कमरपट्टा इसलिये बाँधा था ताकि सारा (अलै.) उनका सुराग़ न पाएँ (वो जल्द भाग जाएँ) फिर उन्हें और उनके बेटे इस्माईल को साथ लेकर इब्राहीम (अलै.) मक्का में आए, उस वक़्त अभी वो इस्माईल (अलै.) को दूध पिलाती थीं। इब्राहीम (अलै.) ने दोनों को एक बड़े दरख़्त के पास बिठा दिया जो उस जगह था जहाँ अब ज़मज़म है मस्जिद की बुलन्द जानिब में। उन दिनों मक्का में कोई इंसान नहीं था। इसलिये वहाँ पानी भी नहीं था। इब्राहीम (अलै.) ने उन दोनों को वहीं छोड़ दिया और उनके लिये एक चमड़े के थैले में खजूर और एक मश्क मे पानी रख दिया। फिर इब्राहीम (अलै.) (अपने घर के लिये) रवाना हुए। उस वक़्त इस्माईल (अलै.) की वालिदा उनके पीछे पीछे आईं और कहा कि ऐ इब्राहीम (अलै.)! इस खुश्क जंगल में जहाँ कोई भी आदमी और कोई चीज़ मौजूद नहीं, आप हमें छोड़कर कहाँ जा रहे हैं? उन्होंने कई दफ़ा इस बात को दोहराया लेकिन इब्राहीम (अलै.) उनकी तरफ़ देखते नहीं थे। आख़िर हाजरा (अलै.) ने पूछा क्या अल्लाह तआ़ला ने आपको उसका हुक्म दिया है? इब्राहीम (अलै.) ने फ़र्माया कि हाँ, इस पर हाजरा (अलै.) बोल उठीं कि

٣٣٦٤- حَدَّثَنِيْ عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ وَكَثِيرِ بْنِ كَثِيرِ بْنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ أَبِي وَدَاعَةَ - يَزِيْدُ أَحَدُهُمَا عَلَى الآخَرِ - عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ((أَوَّلَ مَا اتَّخَذَ النِّسَاءُ الْمِنْطَقَ مِنْ قِبَلِ أُمِّ إِسْمَاعِيْلَ اتَّخَذَتْ مِنْطَقًا لِتُعَفِّيَ أَثَرَهَا عَلَى سَارَةَ، ثُمَّ جَاءَ بِهَا إِبْرَاهِيْمُ وَبِابْنِهَا إِسْمَاعِيْلَ. وَهِيَ تُرْضِعُهُ - حَتَّى وَضَعَهُمَا عِنْدَ الْبَيْتِ عِنْدَ دَوْحَةٍ فَوقَ زَمْزَمَ فِي أَعْلَى الْمَسْجِدِ، وَلَيْسَ بِمَكَّةَ يَوْمَئِذٍ أَحَدٌ، وَلَيْسَ بِهَا مَاءٌ فَوَضَعَهُمَا هُنَالِكَ، وَوَضَعَ عِنْدَهُمَا جِرَابًا فِيْهِ تَمْرٌ وَسِقَاءً فِيْهِ مَاءٌ، ثُمَّ قَفَّى إِبْرَاهِيْمُ مُنْطَلِقًا، فَتَبِعَتْهُ أُمُّ إِسْمَاعِيْلَ فَقَالَتْ : يَا إِبْرَاهِيْمُ أَيْنَ تَذْهَبُ وَتَتْرُكُنَا بِهَذَا الْوَادِيْ الَّذِيْ لَيْسَ فِيْهِ إِنْسٌ وَلاَ شَيْءٌ، فَقَالَتْ لَهُ ذَلِكَ مِرَارًا، وَجَعَلَ لاَ يَلْتَفِتُ إِلَيْهَا. فَقَالَتْ لَهُ : آللهُ الَّذِيْ أَمَرَكَ بِهَذَا؟ قَالَ :

फिर अल्लाह तआला हमारी हिफ़ाज़त करेगा, वो हमको हलाक नहीं करेगा। चुनाँचे वो वापस आ गईं और इब्राहीम (अलै.) रवाना हो गये जब वो ष़निय्या पहाड़ी पर पहुँचे जहाँ से वो दिखाई नहीं देते थे तो इधर रुख़ किया, जहाँ अब का'बा है (जहाँ पर हाजरा और इस्माईल अलै. को छोड़कर आए थे) फिर आपने दोनों हाथ उठाकर ये दुआ की ऐ मेरे रब! मैंने अपनी औलाद को उस बेआब व दाना मैदान में ठहराया है (सूरह इब्राहीम) यश्कुरून तक। इधर इस्माईल (अलै.) की वालिदा उनको दूध पिलाने लगीं और ख़ुद पानी पीने लगीं। आख़िर जब मश्क का सारा पानी ख़त्म हो गया तो वो प्यासी रहने लगीं और उनके लख़्ते जिगर भी प्यासे रहने लगे। वो अब देख रही थीं कि सामने उनका बेटा (प्यास की शिद्दत से) पेच व ताब खा रहा है या (कहा कि) ज़मीन पर लौट रहा है। वो वहाँ से हट गईं क्योंकि उस हालत में बच्चे को देखने से उनका दिल बेचैन होता था। स़फ़ा पहाड़ी वहाँ से नज़दीक तर थी। वो (पानी की तलाश में) उस पर चढ़ गईं और वादी की त़रफ़ रुख़ करके देखने लगीं कि कहीं कोई इंसान नज़र आए लेकिन कोई इंसान नज़र नहीं आया, वो स़फ़ा से उतर गईं और जब वादी में पहुँची तो अपना दामन उठा लिया (ताकि दौड़ते वक़्त न उलझें) और किसी परेशान ह़ाल की त़रह दौड़ने लगीं फिर वादी से निकलकर मरवा पहाड़ी पर आईं और उस पर खड़ी होकर देखने लगीं कि कहीं कोई इंसान नज़र आए लेकिन कोई नज़र नहीं आया। इस त़रह उन्होंने सात चक्कर लगाए। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (सफ़ा व मरवा के दरम्यान) लोगों के लिये दौड़ना इसी वजह से मशरूअ हुआ। (सातवीं मर्तबा) जब वो मरवा पर चढ़ीं तो उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी, उन्होंने कहा, ख़ामोश! ये ख़ुद अपने ही से वो कह रही थीं और फिर आवाज़ की त़रफ़ उन्होंने कान लगा दिये। आवाज़ अब भी सुनाई दे रही थीं और फिर उन्होंने कहा कि तुम्हारी आवाज़ मैंने सुनी। अगर तुम मेरी कोई मदद कर सकते हो तो करो। क्या देखती हैं कि जहाँ अब ज़मज़म (का कुँआ) है, वहीं एक फ़रिश्ता मौजूद है। फ़रिश्ते ने अपनी ऐड़ी से ज़मीन में गड्ढा कर दिया, या ये कहा कि अपने बाज़ू से, जिससे वहाँ पानी उबल आया। ह़ज़रत हाजरा ने उसे हौज़ की शक्ल में बना दिया और अपने हाथ से इस त़रह कर दिया (ताकि पानी बहने न पाए) और चुल्लू से पानी

نَعَمْ. قَالَتْ : إِذَنْ لاَ يُضَيِّعُنَا. ثُمَّ رَجَعَتْ. فَانْطَلَقَ إِبْرَاهِيْمُ حَتَّى إِذَا كَانَ عِنْدَ الثَّنِيَّةِ حَيْثُ لاَ يَرَوْنَهُ اسْتَقْبَلَ بِوَجْهِهِ الْبَيْتَ ثُمَّ دَعَا بِهَؤُلاَءِ الْكَلِمَاتِ وَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: ﴿رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ - حَتَّى بَلَغَ - يَشْكُرُونَ﴾. وَجَعَلَتْ أُمُّ إِسْمَاعِيْلَ تُرْضِعُ إِسْمَاعِيْلَ وَتَشْرَبُ مِنْ ذَلِكَ الْمَاءِ، حَتَّى إِذَا نَفِدَ مَا فِي السِّقَاءِ عَطِشَتْ وَعَطِشَ ابْنُهَا، وَجَعَلَتْ تَنْظُرُ إِلَيْهِ يَتَلَوَّى - أَوْ قَالَ: يَتَلَبَّطُ - فَانْطَلَقَتْ كَرَاهِيَةَ أَنْ تَنْظُرَ إِلَيْهِ، فَوَجَدَتِ الصَّفَا أَقْرَبَ جَبَلٍ فِي الأَرْضِ يَلِيْهَا، فَقَامَتْ عَلَيْهِ، ثُمَّ اسْتَقْبَلَتِ الْوَادِيَ تَنْظُرُ هَلْ تَرَى أَحَدًا، فَلَمْ تَرَ أَحَدًا، فَهَبَطَتْ مِنَ الصَّفَا، حَتَّى إِذَا بَلَغَتِ الْوَادِيَ رَفَعَتْ طَرَفَ دِرْعِهَا، ثُمَّ سَعَتْ سَعْيَ الإِنْسَانِ الْمَجْهُودِ حَتَّى جَاوَزَتِ الْوَادِيَ، ثُمَّ أَتَتِ الْمَرْوَةَ فَقَامَتْ عَلَيْهَا وَنَظَرَتْ هَلْ تَرَى أَحَدًا، فَلَمْ تَرَ أَحَدًا، فَفَعَلَتْ ذَلِكَ سَبْعَ مَرَّاتٍ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ .قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((فَذَلِكَ سَعْيُ النَّاسِ بَيْنَهُمَا)). فَلَمَّا أَشْرَفَتْ عَلَى الْمَرْوَةِ سَمِعَتْ صَوْتًا فَقَالَتْ: صَهٍ -تُرِيْدُ نَفْسَهَا- ثُمَّ تَسَمَّعَتْ أَيْضًا فَقَالَتْ : قَدْ أَسْمَعْتَ إِنْ كَانَ عِنْدَكَ غِوَاثٌ، فَإِذَا هِيَ بِالْمَلَكِ عِنْدَ مَوْضِعِ زَمْزَمَ، فَبَحَثَ بِعَقِبِهِ

अपने मशकीज़े में डालने लगीं। जब वो भर चुकीं तो वहाँ से चश्मा फिर उबल पड़ा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह! उम्मे इस्माईल (अलै.) पर रहम करे, अगर ज़मज़म को उन्होंने यूँ ही छोड़ दिया होता या आपने फ़र्माया कि चुल्लू से मशकीज़े न भरा होता तो ज़मज़म एक बहते हुए चश्मे की सूरत में होता। बयान किया कि फिर हाजरा (अलै.) ने ख़ुद भी वो पानी पिया और अपने बेटे को भी पिलाया। उसके बाद उनसे फ़रिश्ते ने कहा कि अपने बर्बाद होने का डर हर्गिज़ न करना क्योंकि यहीं अल्लाह का घर होगा, जिसे ये बच्चा और इसका बाप ता'मीर करेंगे और अल्लाह अपने बन्दों को ज़ाये नहीं करता, अब जहाँ बैतुल्लाह है, उस वक़्त वहाँ टीले की त़रह ज़मीन उठी हुई थीं। सैलाब का धारा आता और उसके दाएँ—बाएँ से ज़मीन काटकर ले जाता। इस त़रह वहाँ के दिन व रात गुज़रते रहे और आख़िर एक दिन क़बीला जुरहुम के कुछ लोग वहाँ से गुज़रे या (आपने ये फ़र्माया कि) क़बीला जुरहुम के चन्द घराने मुक़ामे कुदाअ (मक्का का बालाई ह़िस्सा) के रास्ते से गुज़रकर मक्का के नशीबी इलाक़े में उन्होंने पड़ाव किया (क़रीब ही) उन्होंने मंडलाते हुए कुछ परिन्दे देखे, उन लोगों ने कहा कि ये परिन्दा पानी पर मंडला रहा है। ह़ालाँकि उससे पहले जब भी हम इस मैदान से गुज़रे हैं यहाँ पानी का नाम व निशान न था। आख़िर उन्होंने अपना एक आदमी या दो आदमी भेजे। वहाँ उन्होंने वाक़ई पानी पाया चुनाँचे उन्होंने वापस आकर पानी की ख़बर दी। अब ये सब लोग यहाँ आए। रावी ने बयान किया कि इस्माईल (अलै.) की वालिदा उस वक़्त पानी पर ही बैठी हुई थीं। उन लोगों ने कहा कि क्या आप हमे अपने पड़ौस में पड़ाव डालने की इजाज़त देंगी। हाजरा (अलै.) ने फ़र्माया कि हाँ लेकिन इस शर्त पर कि पानी पर तुम्हारा कोई ह़क़ न होगा। उन्होंने उसे तस्लीम कर लिया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अब उम्मे इस्माईल को पड़ौसी मिल गये। इंसानों की मौजूदगी उन के लिये दिलजोई का बाइ़ष हुई। उन लोगों ने ख़ुद भी यहाँ क़याम किया और अपने क़बीले के दूसरे लोगों को भी बुलवा लिया और वो सब लोग भी यहीं आकर बस गये। इस त़रह यहाँ उनके कई घराने आकर आबाद हो गये और बच्चा (इस्माईल अलै. जुरहुम के बच्चों में)

- أَوْ قَالَ بِجَنَاحِهِ - حَتَّى ظَهَرَ الْمَاءُ، فَجَعَلَتْ تَحُوضُهُ وَتَقُولُ بِيَدِهَا هَكَذَا، وَجَعَلَتْ تَغْرِفُ مِنَ الْمَاءِ فِي سِقَائِهَا وَهُوَ يَفُورُ بَعْدَ مَا تَغْرِفُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَرْحَمُ اللهُ أُمَّ إِسْمَاعِيلَ لَوْ تَرَكَتْ زَمْزَمَ - أَوْ قَالَ: لَوْ لَمْ تَغْرِفْ مِنَ الْمَاءِ لَكَانَتْ زَمْزَمُ عَيْنًا مَعِينًا)). قَالَ : فَشَرِبَتْ وَأَرْضَعَتْ وَلَدَهَا، فَقَالَ لَهَا الْمَلَكُ : لاَ تَخَافُوا الضَّيْعَةَ، فَإِنَّ هَا هُنَا بَيْتَ اللهِ يَبْنِي هَذَا الْغُلاَمُ وَأَبُوهُ، وَإِنَّ اللهَ لاَ يُضِيعُ أَهْلَهُ. وَكَانَ الْبَيْتُ مُرْتَفِعًا مِنَ الأَرْضِ كَالرَّابِيَةِ، تَأْتِيهِ السُّيُولُ فَتَأْخُذُ عَنْ يَمِيْنِهِ وَشِمَالِهِ، فَكَانَتْ كَذَلِكَ حَتَّى مَرَّتْ بِهِمْ رُفْقَةٌ مِنْ جُرْهُمَ - أَوْ أَهْلُ بَيْتٍ مِنْ جُرْهُمَ - مُقْبِلِيْنَ مِنْ طَرِيقِ كَدَاءَ، فَنَزَلُوا فِي أَسْفَلِ مَكَّةَ، فَرَأَوْا طَائِرًا عَائِفًا، فَقَالُوا: إِنَّ هَذَا الطَّائِرَ لَيَدُورُ عَلَى مَاءٍ، لَعَهْدُنَا بِهَذَا الْوَادِي وَمَا فِيهِ مَاءٌ، فَأَرْسَلُوا جَرِيًّا أَوْ جَرِيَّيْنِ فَإِذَا هُمْ بِالْمَاءِ، فَرَجَعُوا فَأَخْبَرُوهُمْ بِالْمَاءِ، فَأَقْبَلُوا - قَالَ وَأُمُّ إِسْمَاعِيلَ عِنْدَ الْمَاءِ - فَقَالُوا: أَتَأْذَنِيْنَ لَنَا أَنْ نَنْزِلَ عِنْدَكِ؟ فَقَالَتْ: نَعَمْ، وَلَكِنْ لاَ حَقَّ لَكُمْ فِي الْمَاءِ. قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((فَأَلْفَى ذَلِكَ أُمَّ إِسْمَاعِيلَ وَهِيَ تُحِبُّ الإِنْسَ))، فَنَزَلُوا، وَأَرْسَلُوا إِلَى أَهْلِيهِمْ

जवान हुआ और उनसे अ़रबी सीख ली। जवानी में इस्माईल (अलै.) ऐसे ख़ूबसूरत थे कि आप पर सबकी नज़रें उठती थीं और सबसे ज़्यादा आप भले लगते थे। चुनाँचे जुरहुम वालों ने आपकी अपने क़बीले की एक लड़की से शादी कर दी। फिर इस्माईल (अलै.) की वालिदा (हाजरा अलै.) का इंतिक़ाल हो गया। इस्माईल (अलै.) की शादी के बाद इब्राहीम (अलै.) यहाँ अपने छोड़े हुए ख़ानदान को देखने आए। इस्माईल (अलै.) घर पर नहीं थे। इसलिये आपने उनकी बीवी से इस्माईल (अलै.) के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि रोज़ी की तलाश में कहीं गये हैं। फिर आपने उनसे उनकी मआ़श वग़ैरह के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि हालत अच्छी नहीं है, बड़ी तंगी से गुज़रे औक़ात होती है। इस तरह उन्होंने शिकायत की। इब्राहीम (अलै.) ने उनसे फ़र्माया कि जब तुम्हारा शौहर आए तो उनसे मेरा सलाम कहना और ये भी कहना कि वो अपने दरवाज़े की चौखट बदल डालें। फिर जब इस्माईल (अलै.) वापस तशरीफ़ लाए तो जैसे उन्होंने कुछ उंसियत सी, महसूस की और दरयाफ़्त किया, क्या कोई साहब यहाँ आए थे? उनकी बीवी ने बताया कि हाँ एक बुज़ुर्ग इस इस शक्ल के यहाँ आए थे और आपके बारे में पूछ रहे थे, मैंने उन्हें बताया (कि आप बाहर गये हुए हैं) फिर उन्होंने पूछा कि तुम्हारी गुज़रे औक़ात का क्या हाल है? तो मैंने उनसे कहा कि हमारी गुज़रे औक़ात बड़ी तंगी से होती है। इस्माईल (अलै.) ने दरयाफ़्त किया कि उन्होंने तुम्हें कुछ नसीहत भी की थी? उनकी बीवी ने बताया कि हाँ मुझसे उन्होंने कहा था कि आपको सलाम कह दूँ और वो ये भी कह गये हैं कि आप अपने दरवाज़े की चौखट बदल दें। इस्माईल (अलै.) ने फ़र्माया कि वो बुज़ुर्ग मेरे वालिद थे और मुझे ये हुक्म दे गये हैं कि मैं तुम्हें जुदा कर दूँ, अब तुम अपने घर जा सकती हो। चुनाँचे इस्माईल (अलै.) ने उन्हें तलाक़ दे दी और बनी जुरहुम ही में एक दूसरी औरत से निकाह कर लिया। जब तक अल्लाह तआ़ला को मंज़ूर रहा, इब्राहीम (अलै.) उनके यहाँ नहीं आए। फिर जब कुछ दिनों के बाद वो तशरीफ़ लाए तो इस मर्तबा भी इस्माईल (अलै.) घर पर मौजूद नहीं थे। आप उनकी बीवी के यहाँ गये और उनसे इस्माईल (अलै.) के बारे में पूछा। उन्होंन

فَنَزَلُوا مَعَهُمْ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِهَا أَهْلُ أَبْيَاتٍ مِنْهُمْ، وَشَبَّ الْغُلاَمُ وَتَعَلَّمَ الْعَرَبِيَّةَ مِنْهُمْ، وَأَنْفَسَهُمْ وَأَعْجَبَهُمْ حِينَ شَبَّ، فَلَمَّا أَدْرَكَ زَوَّجُوهُ امْرَأَةً مِنْهُمْ. وَمَاتَتْ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ، فَجَاءَ إِبْرَاهِيمُ بَعْدَ مَا تَزَوَّجَ إِسْمَاعِيلُ يُطَالِعُ تَرِكَتَهُ، فَلَمْ يَجِدْ إِسْمَاعِيلَ، فَسَأَلَ امْرَأَتَهُ عَنْهُ فَقَالَتْ: خَرَجَ يَبْتَغِي لَنَا، ثُمَّ سَأَلَهَا عَنْ عَيْشِهِمْ وَهَيْئَتِهِمْ فَقَالَتْ: نَحْنُ بِشَرٍّ، نَحْنُ فِي ضِيقٍ وَشِدَّةٍ. فَشَكَتْ إِلَيْهِ. قَالَ: فَإِذَا جَاءَ زَوْجُكِ فَاقْرَئِي عَلَيْهِ السَّلاَمَ وَقُولِي لَهُ يُغَيِّرْ عَتَبَةَ بَابِهِ. فَلَمَّا جَاءَ إِسْمَاعِيلُ كَأَنَّهُ آنَسَ شَيْئًا فَقَالَ : هَلْ جَاءَكُمْ مِنْ أَحَدٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، جَاءَنَا شَيْخٌ كَذَا وَكَذَا، فَسَأَلَنَا عَنْكَ فَأَخْبَرْتُهُ، وَسَأَلَنِي كَيْفَ عَيْشُنَا، فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّا فِي جَهْدٍ وَشِدَّةٍ. قَالَ: فَهَلْ أَوْصَاكِ بِشَيْءٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ السَّلاَمَ، وَيَقُولُ : غَيِّرْ عَتَبَةَ بَابِكَ. قَالَ: ذَاكِ أَبِي، قَدْ أَمَرَنِي أَنْ أُفَارِقَكِ، الْحَقِي بِأَهْلِكِ. فَطَلَّقَهَا، وَتَزَوَّجَ مِنْهُمْ أُخْرَى. فَلَبِثَ عَنْهُمْ إِبْرَاهِيمُ مَا شَاءَ اللهُ، ثُمَّ أَتَاهُمْ بَعْدُ فَلَمْ يَجِدْهُ، فَدَخَلَ عَلَى امْرَأَتِهِ فَسَأَلَهَا عَنْهُ فَقَالَتْ: خَرَجَ يَبْتَغِي لَنَا. قَالَ: كَيْفَ أَنْتُمْ؟ وَسَأَلَهَا عَنْ عَيْشِهِمْ وَهَيْئَتِهِمْ فَقَالَتْ: نَحْنُ بِخَيْرٍ وَسَعَةٍ، وَأَثْنَتْ عَلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ. فَقَالَ: مَا طَعَامُكُمْ؟ قَالَتِ: اللَّحْمُ. قَالَ فَمَا

شَرَابُكُمْ؟ قَالَتْ : الْمَاءُ. قَالَ: اللّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي اللَّحْمِ وَالْمَاءِ. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ يَوْمَئِذٍ حَبٌّ)) وَلَوْ كَانَ لَهُمْ دَعَا لَهُمْ فِيْهِ، قَالَ: فَهُمَا لاَ يَخْلُو عَلَيْهِمَا أَحَدٌ بِغَيْرِ مَكَّةَ إِلاَّ لَمْ يُوَافِقَاهُ. قَالَ: فَإِذَا جَاءَ زَوْجُكِ فَاقْرَئِي عَلَيْهِ السَّلاَمَ، وَمُرِيْهِ يُثْبِتُ عُتْبَةَ بَابِهِ. فَلَمَّا جَاءَ إِسْمَاعِيْلُ قَالَ : هَلْ أَتَاكُمْ مِنْ أَحَدٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، أَتَانَا شَيْخٌ حَسَنُ الْهَيْئَةِ- وَأَثْنَتْ عَلَيْهِ - فَسَأَلَنِي عَنْكَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَسَأَلَنِي كَيْفَ عَيْشُنَا فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّا بِخَيْرٍ. قَالَ : فَأَوْصَاكِ بِشَيْءٍ؟ قَالَتْ : نَعَمْ، هُوَ يَقْرَأُ عَلَيْكَ السَّلاَمَ، وَيَأْمُرُكَ أَنْ تُثْبِتَ عَتَبَةَ بَابِكَ. قَالَ : ذَاكِ أَبِي، وَأَنْتِ الْعَتَبَةُ، أَمَرَنِي أَنْ أُمْسِكَكِ. ثُمَّ لَبِثَ عَنْهُمْ مَا شَاءَ اللهُ، ثُمَّ جَاءَ بَعْدَ ذَلِكَ وَإِسْمَاعِيْلُ يَبْرِي نَبْلاً لَهُ تَحْتَ دَوْحَةٍ قَرِيْبًا مِنْ زَمْزَمَ، فَلَمَّا رَآهُ قَامَ إِلَيْهِ، فَصَنَعَا كَمَا يَصْنَعُ الْوَالِدُ بِالْوَلَدِ وَالْوَلَدُ بِالْوَالِدِ. ثُمَّ قَالَ: يَا إِسْمَاعِيْلُ، إِنَّ اللهَ أَمَرَنِي بِأَمْرٍ. قَالَ: فَاصْنَعْ مَا أَمَرَكَ رَبُّكَ. قَالَ : وَتُعِيْنُنِي؟ قَالَ : وَأُعِيْنُكَ. قَالَ : فَإِنَّ اللهَ أَمَرَنِي أَنْ أَبْنِيَ هَا هُنَا بَيْتًا - وَأَشَارَ إِلَى أَكَمَةٍ مُرْتَفِعَةٍ عَلَى مَا حَوْلَهَا- قَالَ : فَعِنْدَ ذَلِكَ رَفَعَا الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ، فَجَعَلَ إِسْمَاعِيْلُ يَأْتِي بِالْحِجَارَةِ وَإِبْرَاهِيْمُ يَبْنِي. حَتَّى إِذَا ارْتَفَعَ الْبِنَاءُ جَاءَ بِهَذَا الْحَجَرِ فَوَضَعَهُ

बताया कि हमारे लिये रोज़ी तलाश करने गये हैं। इब्राहीम (अलै.) ने पूछा कि तुम लोगों का हाल कैसा है? आपने उनकी गुज़र-बसर और दूसरे हालात के बारे में पूछा, उन्होंने बताया कि हमारा हाल बहुत अच्छा है, बड़ी फ़राख़ी है, उन्होंने इसके लिये अल्लाह की ता'रीफ़ व ष़ना की। इब्राहीम (अलै.) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि तुम लोग खाते क्या हो? उन्होंने बताया कि गोश्त! आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि पीते क्या हो? बताया कि पानी! इब्राहीम (अलै.) ने उनके लिये दुआ की, ऐ अल्लाह! इनके गोश्त और पानी में बरकत नाज़िल फ़र्मा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन दिनो उन्हें अनाज मयस्सर नहीं था। अगर अनाज भी उनके खाने में शामिल होता तो ज़रूर आप उसमें भी बरकत की दुआ करते। सिर्फ़ गोश्त और पानी की ख़ूराक में हमेशा गुज़ारा करना मक्का के सिवा और किसी ज़मीन पर भी मुवाफ़िक़ नहीं पड़ता। इब्राहीम (अलै.) ने (जाते हुए) उससे फ़र्माया कि जब तुम्हारे शौहर वापस आ जाएँ तो उनसे मेरा सलाम कहना और उनसे कह देना कि वो अपने दरवाज़े की चौखट बाक़ी रखें। जब इस्माईल (अलै.) तशरीफ़ लाए तो पूछा कि क्या यहाँ कोई आया था? उन्होंने बताया कि जी हाँ एक बुज़ुर्ग, बड़ी अच्छी शक्ल व सूरत के आए थे। बीवी ने आने वाले बुज़ुर्ग की बड़ी ता'रीफ़ की फिर उन्होंने मुझसे आपके बारे में पूछा (कि कहाँ है?) और मैंने बता दिया, फिर उन्होंने पूछा कि तुम्हारी गुज़र बसर का क्या हाल है? तो मैंने बताया कि हम अच्छी हालत में हैं। इस्माईल (अलै.) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि क्या उन्होंने तुम्हें कोई वसिय्यत भी की थी? उन्होंने कहा जी हाँ! उन्होंने आपको सलाम कहा था और हुक्म दिया था कि अपने दरवाज़े की चौखट को बाक़ी रखें। इस्माईल (अलै.) ने फ़र्माया कि ये बुज़ुर्ग मेरे वालिद थे, चौखट तुम हो और आप मुझे हुक्म दे गये हैं कि मैं तुम्हें अपने साथ रखूँ। फिर जितने दिनों अल्लाह तआला को मंज़ूर रहा, के बाद इब्राहीम (अलै.) उनके यहाँ तशरीफ़ लाए तो देखा कि इस्माईल (अलै.) ज़मज़म के क़रीब एक बड़े पेड़ के साये में (जहाँ इब्राहीम अलै. उन्हें छोड़ गये थे) अपने तीर बना रहे हैं। जब इस्माईल (अलै.) ने इब्राहीम (अलै.) को देखा तो उनकी तरफ़ खड़े हो गये और जिस तरह एक बाप अपने बेटे के साथ और बेटा

अपने बाप के साथ मुहब्बत करता है वही तर्ज़े अमल उन दोनों ने भी एक-दूसरे के साथ इख़्तियार किया। फिर इब्राहीम (अलै.) ने फ़र्माया, इस्माईल अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है। इस्माईल (अलै.) ने अर्ज़ किया, आपके रब ने जो हुक्म आपको दिया है आप उसे ज़रूर पूरा करें । उन्होंने फ़र्माया और तुम भी मेरी मदद कर सकोगे? अर्ज़ किया कि मैं आपकी मदद करूँगा। फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं इसी मुक़ाम पर अल्लाह का एक घर बनाऊँ और आपने एक और ऊँचे टीले की तरफ़ इशारा किया कि उसके चारों तरफ़! हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस वक़्त उन दोनों ने बैतुल्लाह की बुनियाद पर इमारत की ता'मीर शुरू की। इस्माईल (अलै.) पत्थर उठा उठाकर लाते और इब्राहीम (अलै.) ता'मीर करते जाते थे। जब दीवारें बुलन्द हो गईं तो इस्माईल (अलै.) ये पत्थर लाए और इब्राहीम (अलै.) के लिये उसे रख दिया। अब इब्राहीम (अलै.) उस पत्थर पर खड़े होकर ता'मीर करने लगे, इस्माईल (अलै.) पत्थर देते जाते थे और दोनों ये दुआ पढ़ते जाते थे। हमारे रब! हमारी ये ख़िदमत तू क़ुबूल कर बेशक तू बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है। फ़र्माया कि ये दोनों ता'मीर करते रहे और बैतुल्लाह के चारों तरफ़ घूम-घूमकर ये दुआ पढ़ते रहे। ऐ हमारे रब! हमारी तरफ़ से ये ख़िदमत क़ुबूल फ़र्मा। बेशक तू बड़ा सुनने वाला बहुत जानने वाला है। (राजेअ : 2368)

لَهُ، فَقَامَ عَلَيْهِ وَهُوَ يَبْنِي وَإِسْمَاعِيْلُ يُنَاوِلُهُ الْحِجَارَةَ، وَهُمَا يَقُولاَنِ: ﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ﴾ قَالَ: فَجَعَلاَ يَبْنِيَانِ حَتَّى يَدُورَا حَوْلَ الْبَيْتِ وَهُمَا يَقُولاَنِ: ﴿ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ﴾)).

[راجع: ٢٣٦٨]

3365. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर अब्दुल मलिक बिन अम्र ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उनसे कषीर बिन कषीर ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्राहीम (अलै.) और उनकी बीवी (हज़रत सारा) के दरम्यान जो कुछ झगड़ा होना था जब वो हुआ तो आप इस्माईल (अलै.) और उनकी वालिदा (हज़रत हाजरा अलै.) को लेकर निकले, उनके साथ एक मशकीज़ा था। जिसमें पानी था, इस्माईल (अलै.) की वालिदा उसी मशकीज़े का पानी पीती रहीं और अपना दूध अपने बच्चे को पिलाती रहीं। जब इब्राहीम (अलै.) मक्का पहुँचे तो उन्हें एक बड़े दरख़्त के पास ठहराकर अपने घर वापस जाने लगे। इस्माईल (अलै.) की वालिदा उनके पीछे-पीछे आईं। जब मुक़ामे कुदा पर पहुँचे तो उन्होंने पीछे से

٣٣٦٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عَمْرٍو قَالَ : حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ كَثِيْرِ بْنِ كَثِيْرٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((لَمَّا كَانَ بَيْنَ إِبْرَاهِيْمَ وَبَيْنَ أَهْلِهِ مَا كَانَ خَرَجَ بِإِسْمَاعِيْلَ وَأُمِّ إِسْمَاعِيْلَ، وَمَعَهُمْ شَنَّةٌ فِيْهَا مَاءٌ، فَجَعَلَتْ أُمُّ إِسْمَاعِيْلَ تَشْرَبُ مِنَ الشَّنَّةِ فَيَدِرُّ لَبَنُهَا عَلَى صَبِيِّهَا حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ فَوَضَعَهَا تَحْتَ دَوْحَةٍ ثُمَّ رَجَعَ

आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! हमें किस पर छोड़कर जा रहे हो? उन्होंने कहा कि अल्लाह पर! हाजरा (अलै.) ने कहा कि फिर मैं अल्लाह पर ख़ुश हूँ। बयान किया कि फिर हज़रत हाजरा अपनी जगह पर वापस चली आईं और उसी मशकीज़े से पानी पीती रहीं और अपना दूध अपने बच्चे का पिलाती रहीं जब पानी ख़त्म हो गया तो उन्होंने सोचा कि इधर-उधर देखना चाहिये, मुम्किन है कि कोई आदमी नज़र आ जाए। रावी ने बयान किया कि यही सोचकर वो सफ़ा (पहाड़ी) पर चढ़ गईं और चारों तरफ़ देखा कि शायद कोई नज़र आ जाए लेकिन कोई नज़र न आया। फिर जब वादी में उतरीं तो दौड़कर मरवा तक आईं। इसी तरह कई चक्कर लगाए, फिर सोचा कि चलूँ ज़रा बच्चे को तो देखूँ किस हालत में है। चुनाँचे आईं और देखा तो बच्चा उसी हालत में था (जैसे तकलीफ़ के मारे) मौत के लिये तड़प रहा हो। ये हाल देखकर उनसे सब्र न हो सका, सोचा चलो दोबारा देखूँ मुम्किन है कि कोई आदमी नज़र आ जाए, आईं और सफ़ा पहाड़ पर चढ़ गईं और चारों तरफ़ नज़र फेर-फेरकर देखती रहीं लेकिन कोई नज़र न आया। इस तरह हज़रत हाजरा (अलै.) ने सात चक्कर लगाए फिर सोचा, चलो देखूँ बच्चा किस हालत में है? उसी वक़्त उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने (आवाज़ से मुख़ातिब होकर) कहा कि अगर तुम्हारे पास कोई भलाई है तो मेरी मदद करो। वहाँ जिब्राईल (अलै.) मौजूद थे। उन्होंने अपनी ऐड़ी से यूँ किया (इशारा करके बताया) और ज़मीन ऐड़ी से खोदी। रावी ने बयान किया कि इस अमल के नतीजे मे वहाँ से पानी फूट पड़ा। उम्मे इस्माईल डरीं। (कहीं ये पानी ग़ायब न हो जाए) फिर वो ज़मीन खोदने लगीं। रावी ने बयान किया कि अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर वो पानी को यूँ ही रहने देतीं तो पानी ज़मीन पर बहता रहता। ग़र्ज़ हाजरा (अलै.) ज़मज़म का पानी पीती रहीं और अपना दूध अपने बच्चे को पिलाती रहीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उसके बाद क़बीला जुरहुम के कुछ लोग वादी के नशीब से गुज़रे उन्हें वहाँ परिन्दे नज़र आए। उन्हें ये कुछ ख़िलाफ़े आदत मा'लूम हुआ। उन्होंने आपस में कहा कि परिन्दे तो सिर्फ़ पानी ही पर (इस तरह) मँडला सकता है। उन लोगों ने अपना आदमी वहाँ भेजा। उसने जाकर देखा तो वाक़ई वहाँ पानी मौजूद था। उसने आकर अपने क़बीले वालों को ख़बर दी तो ये सब लोग यहाँ आ गये और

إِبْرَاهِيمُ إِلَى أَهْلِهِ، فَاتَّبَعَتْهُ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ حَتَّى لَمَّا بَلَغُوا كَدَاءَ نَادَتْهُ مِنْ وَرَائِهِ : يَا إِبْرَاهِيمُ إِلَى مَنْ تَتْرُكُنَا؟ قَالَ : إِلَى اللهِ. قَالَتْ : رَضِيتُ بِاللهِ. قَالَ : فَرَجَعَتْ فَجَعَلَتْ تَشْرَبُ مِنَ الشَّنَّةِ وَيَدِرُّ لَبَنُهَا عَلَى صَبِيِّهَا، حَتَّى لَمَّا فَنِيَ الْمَاءُ قَالَتْ: لَوْ ذَهَبْتُ فَنَظَرْتُ لَعَلِّي أُحِسُّ أَحَدًا. قَالَ: فَذَهَبَتْ فَصَعِدَتِ الصَّفَا فَنَظَرَتْ وَنَظَرَتْ هَلْ تُحِسُّ أَحَدًا؟ فَلَمْ تُحِسَّ أَحَدًا. فَلَمَّا بَلَغَتِ الْوَادِيَ سَعَتْ وَأَتَتِ الْمَرْوَةَ، فَفَعَلَتْ ذَلِكَ أَشْوَاطًا، ثُمَّ قَالَتْ: لَوْ ذَهَبْتُ فَنَظَرْتُ مَا فَعَلَ - تَعْنِي الصَّبِيَّ - فَذَهَبَتْ فَنَظَرَتْ لَعَلِّي فَإِذَا هُوَ عَلَى حَالِهِ كَأَنَّهُ يَنْشَغُ لِلْمَوْتِ فَلَمْ تُقِرَّهَا نَفْسُهَا قَالَتْ لَوْ ذَهَبْتُ فَنَظَرْتُ أُحِسُّ أَحَدًا، فَذَهَبَتْ فَصَعِدَتِ الصَّفَا فَنَظَرَتْ وَنَظَرَتْ فَلَمْ تُحِسَّ أَحَدًا، حَتَّى أَتَمَّتْ سَبْعًا، ثُمَّ قَالَتْ : لَوْ ذَهَبْتُ فَنَظَرْتُ مَا فَعَلَ، فَإِذَا هِيَ بِصَوْتٍ، فَقَالَتْ: أَغِثْ إِنْ كَانَ عِنْدَكَ خَيْرٌ، فَإِذَا جِبْرِيلُ، قَالَ: فَقَالَ بِعَقِبِهِ هَكَذَا، وَغَمَزَ عَقِبَهُ عَلَى الأَرْضِ، قَالَ: فَانْبَثَقَ الْمَاءُ، فَدَهَشَتْ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ فَجَعَلَتْ تَحْفِرُ، قَالَ: فَقَالَ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((لَوْ تَرَكَتْهُ كَانَ الْمَاءُ ظَاهِرًا))، قَالَ: فَجَعَلَتْ تَشْرَبُ مِنَ الْمَاءِ وَيَدِرُّ لَبَنُهَا عَلَى صَبِيِّهَا. قَالَ فَمَرَّ نَاسٌ مِن جُرْهُمَ بِبَطْنِ الْوَادِي فَإِذَا هُمْ

بِطَيْرٍ، كَأَنَّهُمْ أَنْكَرُوا ذَاكَ، وَقَالُوا : مَا يَكُونُ الطَّيْرُ إِلاَّ عَلَى مَاءٍ، فَبَعَثُوا رَسُولَهُمْ فَنَظَرَ، فَإِذَا هُمْ بِالْمَاءِ، فَأَتَاهُمْ فَأَخْبَرَهُمْ، فَأَتَوا إِلَيْهَا فَقَالُوا : يَا أُمَّ إِسْمَاعِيلَ أَتَأْذَنِيْنَ لَنَا أَنْ نَكُونَ مَعَكِ، أَوْ نَسْكُنَ مَعَكِ؟ فَبَلَغَ ابْنُهَا فَنَكَحَ فِيهِمْ امْرَأَةً. قَالَ: ثُمَّ إِنَّهُ بَدَا لإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ لأَهْلِهِ : إِنِّي مُطَّلِعٌ تَرِكَتِي. قَالَ : فَجَاءَ فَسَلَّمَ فَقَالَ : أَيْنَ إِسْمَاعِيلُ؟ فَقَالَتِ امْرَأَتُهُ : ذَهَبَ يَصِيْدُ. قَالَ : قُولِي لَهُ إِذَا جَاءَ : غَيِّرْ عَتَبَةَ بَابِكَ. فَلَمَّا جَاءَ أَخْبَرَتْهُ، قَالَ: أَنْتِ ذَاكِ، فَاذْهَبِي إِلَى أَهْلِكِ. قَالَ: ثُمَّ إِنَّهُ بَدَا لإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ لأَهْلِهِ: إِنِّي مَطَّلِعٌ تَرِكَتِي. قَالَ فَجَاءَ فَقَالَ: أَيْنَ إِسْمَاعِيلُ؟ فَقَالَتِ امْرَأَتُهُ: ذَهَبَ يَصِيْدُ، فَقَالَتْ: أَلاَ تَنْزِلُ فَتَطْعَمَ وَتَشْرَبَ؟ فَقَالَ: وَمَا طَعَامُكُمْ، وَمَا شَرَابُكُمْ؟ قَالَتْ: طَعَامُنَا اللَّحْمُ وَشَرَابُنَا الْمَاءُ - قَالَ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي طَعَامِهِمْ وَشَرَابِهِمْ. قَالَ: فَقَالَ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((بَرَكَةٌ بِدَعْوَةِ إِبْرَاهِيمَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)). قَالَ: ثُمَّ إِنَّهُ بَدَا لإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ لأَهْلِهِ: إِنِّي مُطَّلِعٌ تَرِكَتِي، فَجَاءَ فَوَافَقَ إِسْمَاعِيلَ مِنْ وَرَاءِ زَمْزَمَ يُصْلِحُ نَبْلاً لَهُ، فَقَالَ: يَا إِسْمَاعِيلُ إِنَّ رَبَّكَ أَمَرَنِي أَنْ أَبْنِيَ لَهُ بَيْتًا. قَالَ: أَطِعْ رَبَّكَ. قَالَ: إِنَّهُ قَدْ أَمَرَنِي أَنْ تُعِيْنَنِي عَلَيْهِ، قَالَ: إِذَنْ أَفْعَلَ - أَوْ كَمَا قَالَ. قَالَ: فَقَامَا فَجَعَلَ إِبْرَاهِيمُ

कहा कि ऐ उम्मे इस्माईल! क्या आप हमें अपने साथ रहने की या (ये कहा कि) अपने साथ क़याम करने की इजाज़त देंगी? फिर उनके बेटे (इस्माईल अलै.) बालिग़ हुए और क़बीला जुरहुम ही की एक लड़की से उनका निकाह हो गया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर इब्राहीम (अलै.) को ख़याल आया और उन्होंने अपनी अहलिया (हज़रत सारा अलै.) से फ़र्माया कि मैं जिन लोगों को (मक्का में) छोड़ आया था उनकी ख़बर लेने जाऊँगा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर इब्राहीम (अलै.) मक्का तशरीफ़ लाए और सलाम करके दरयाफ़्त फ़र्माया कि जब वो आईं तो उनसे कहना कि अपने दरवाज़े की चौखट बदल डालें। जब इस्माईल (अलै.) आए तो उनकी बीवी ने वाक़िया की इत्तिला दी। इस्माईल (अलै.) ने फ़र्माया कि तुम्हीं हो (जिसे बदलने के लिये इब्राहीम अलै. कह गये हैं) अब तुम अपने घर जा सकती हो। बयान किया कि फिर एक मुद्दत के बाद दोबारा इब्राहीम (अलै.) को ख़याल हुआ और उन्होंने अपनी बीवी से फ़र्माया कि मैं जिन लोगों को छोड़ आया हूँ उन्हें देखने जाऊँगा। रावी ने बयान किया कि इब्राहीम (अलै.) तशरीफ़ लाए और पूछा कि इस्माईल (अलै.) कहाँ हैं? उनकी बीवी ने बताया कि शिकार के लिये गये हैं। उन्होंने ये भी कहा कि आप ठहरिये और खाना तनावुल फ़र्मा लीजिए। इब्राहीम (अलै.) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि तुम लोग खाते पीते क्या हो? उन्होंने बताया कि गोश्त खाते हैं और पानी पीते हैं। आपने दुआ की कि ऐ अल्लाह! उनके खाने और उनके पानी में बरकत नाज़िल फ़र्मा। बयान किया कि अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया, इब्राहीम (अलै.) की उस दुआ की बरकत अब तक चली आ रही है। रावी ने बयान किया कि फिर (तीसरी बार) इब्राहीम (अलै.) को एक मुद्दत के बाद ख़याल हुआ और अपनी अहलिया से उन्होंने कहा कि जिनको मैं छोड़ आया हूँ उनकी ख़बर लेने मक्का जाऊँगा। चुनाँचे आप तशरीफ़ लाए और इस मर्तबा इस्माईल (अलै.) से मुलाक़ात हुई, जो ज़मज़म के पीछे अपने तीर ठीक कर रहे थे। इब्राहीम (अलै.) ने फ़र्माया, ऐ इस्माईल! तुम्हारे रब ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं यहाँ उसका एक घर बनाऊँ, बेटे ने अर्ज़ किया कि फिर आप अपने रब का हुक्म बजा लाइये। उन्होंने फ़र्माया और मुझे ये भी हुक्म दिया है कि तुम इस काम में मेरी मदद करो। अर्ज़ किया कि मैं उसके लिये तैयार हूँ या इसी क़िस्म के और अल्फ़ाज़ अदा किये। रावी ने

يَبْنِي وَإِسْمَاعِيلُ يُنَاوِلُهُ الْحِجَارَةَ، وَيَقُولاَنِ: ﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾)). قَالَ: حَتَّى ارْتَفَعَ الْبِنَاءُ وَضَعُفَ الشَّيْخُ عَلَى نَقْلِ الْحِجَارَةِ فَقَامَ عَلَى حَجَرِ الْمَقَامِ فَجَعَلَ يُنَاوِلُهُ الْحِجَارَةَ وَيَقُولاَنِ: ﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾.

[راجع: ٢٣٦٨]

बयान किया कि फिर दोनों बाप बेटे उठे। इब्राहीम (अलै.) दीवारें उठाते थे और इस्माईल (अलै.) उन्हे पत्थर ला लाकर देते थे और दोनों ये दुआ करते जाते थे। ऐ हमारे रब! हमारी तरफ़ से ये ख़िदमत कुबूल कर। बेशक तू बड़ा सुनने वाला, बहुत जानने वाला है। रावी ने बयान किया कि आख़िर जब दीवार बुलन्द हो गई और बुजुर्ग (इब्राहीम अलै.) को पत्थर (दीवार पर) रखने में दुश्वारी हुई तो वो मुक़ामे (इब्राहीम) के पत्थर पर खड़े हुए और इस्माईल (अलै.) उनको पत्थर उठा उठा कर देते जाते और उन हज़रात की ज़ुबान पर ये दुआ जारी थी। ऐ हमारे रब! हमारे तरफ़ से इसे कुबूल फ़र्मा ले। बेशक तू बड़ा सुनने वाला बहुत जानने वाला है। (राजेअ : 2368)

तशरीह : इस तवील (लम्बी) हदीष में बहुत से उमूर मज़्कूर हुए हैं। शुरू में हज़रत हाजरा (अलैहस्सलाम) के कमरपट्टा बाँधने का ज़िक्र है जिससे औरत जल्द चल फिरकर कामकाज आसानी से कर सकती है। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है, ताकि उस कमरपट्टा से अपने पांव के निशान जो रास्ते में पड़ते हैं वो मिटाती जाएँ ताकि हज़रत सारा (अलैहस्सलाम) उनका पता न पा सकें। हुआ ये था कि हज़रत सारा (अलैहस्सलाम) को कोई औलाद न थी (बाद में हुई) और हज़रत हाजरा (अलैहस्सलाम) जो एक शाहे मिस्र की शाहज़ादी थीं और जिसे उस बादशाह ने उस ख़ानदान की बरकतें देखकर हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के हरम मे दाख़िल कर दिया था चुनाँचे हज़रत हाजरा को हमल रह गया और हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) आलमे वजूद में आए। हज़रत सारा (अलैहिस्सलाम) के रश्क में बहुत इज़ाफ़ा हो गया, तो उस डर से हज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) घर से निकलीं और हज़रत इस्माईल (अलै.) को भी साथ ले लिया और कमर से पट्टा बाँधा ताकि उसके ज़रिये अपने पांव के निशानात को मिटाती चलें। इस तरह हज़रत सारा उनका पता न पा सकीं। इस तरह हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने उनको मक्का की बे-आब व ग्याह सरज़मीन पर ला बसाया जहाँ अल्लाह पाक ने उनके हाथों अपना घर नये सिरे से ता'मीर कराया। जुरहुम जिसका ज़िक्र रिवायत में आया है, यमन का एक क़बीला है। यही क़बीला हज़रत हाजरा से इजाज़त लेकर यहाँ आबाद हुआ और जवान होने पर हज़रत इस्माईल (अलै.) की उसी ख़ानदान में शादी हो गई। पहली शादी को हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने पसन्द नहीं फ़र्माया जो इशारे से तलाक़ के लिये कह गए। दूसरी बीवी को साबिरा व शाकिरा पाकर उनसे ख़ुशी का इज़्हार फ़र्माया, बेशक इन वाक़िआत में अहले बसीरत के लिये बहुत से हिदायत के सबक़ छुपे हुए हैं, जिनको समझने के लिये नज़रे बसीरत की ज़रूरत है। अल्लाह पाक हर बुख़ारी शरीफ़ मुतालआ करने वाले भाई को नज़रे बसीरत अता फ़र्माए, आमीन।

١٠- بَابٌ

बाब 10 :

٣٣٦٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قُلْتُ: يَا رَسُولَ

3366. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके वालिद यज़ीद बिन शुरैक ने बयान किया कि मैंने हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)!

اللهِ أَيُّ مَسْجِدٍ وُضِعَ فِي الأَرْضِ أَوَّلَ؟ قَالَ : الْمَسْجِدُ الْحَرَامِ. قَالَ : قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ : الْمَسْجِدُ الأَقْصَى قُلْتُ : كَمْ كَانَ بَيْنَهُمَا؟ قَالَ : أَرْبَعُونَ سَنَةً. ثُمَّ أَيْنَمَا أَدْرَكَتْكَ الصَّلاَةُ بَعْدُ فَصَلِّهْ، فَإِنَّ الْفَضْلَ فِيهِ)). [طرفه في : ٣٤٢٥].

सबसे पहले रूए ज़मीन पर कौनसी मस्जिद बनी है? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मस्जिदे हराम। उन्होंने बयान किया कि फिर मैंने अ़र्ज़ किया और उसके बाद? फ़र्माया कि मस्जिद अक़्सा (बैतुल मक़्दिस) मैंने अ़र्ज़ किया इन दोनों की ता'मीर के बीच मे कितना फ़ासला है? आपने फ़र्माया कि चालीस साल। फिर फ़र्माया अब जहाँ भी तुझको नमाज़ का वक़्त हो जाए वहाँ नमाज़ पढ़ ले। बड़ी फ़ज़ीलत नमाज़ पढ़ना है। (दीगर मक़ाम : 3425)

तश्रीह : मुंकिरीने ह़दीष़ ने इस रिवायत को भी तख़्त-ए-मश्क़ बनाकर ह़दीषे नबवी से मुसलमानों को बदज़न करने की नापाक कोशिश की है और ये शुब्हा यहाँ ज़ाहिर किया है कि का'बा को तो ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) ने बनाया था और मस्जिद अक़्सा को ह़ज़रत सुलैमान (अलै.) ने बनाया और उन दोनों में हज़ार साल से भी ज़्यादा का फ़ासला है। इस शुब्हा का जवाब ये है कि ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) ने का'बा को पहले पहल नहीं बनाया था बल्कि का'बा की पहली बनावट ह़ज़रत आदम (अलै.) के हाथों हुई है तो मुम्किन है का'बा बनने के चालीस साल बाद ख़ुद ह़ज़रत आदम (अलै.) ने या उनकी औलाद में से किसी ने मस्जिद अक़्सा की बुनियाद रखी हो। ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) और ह़ज़रत सुलैमान (अलै.) की दोनों बनावट से उन मक़ामाते मुक़द्दसा की तजदीद मुराद है। शारेह़ीने ह़दीष़ लिखते हैं, **व युर्फ़उल्इश्कालु बिअंय्युक़ाल अल्आयतु वल्हदीषु ला यदुल्लानि अ़ला बिनाइ इब्राहीम व सुलैमान लिमा बनया इब्तिदाअन वज़्उहुमा लहुमा बल ज़ालिक तज्दीदुन लिमा कान अस्ससहू गैरूहुमा व बदाहू व क़दरूविय अन्न अव्वल मम्बनल्बैत आदमु व अ़ला हाज़ा फयजूज़ु अंय्यकून गैरूहू मिव्वंलदिही वज़अ बैतल्मक़्दिस मिम्बअ़दिही अर्बईन सनतन इन्तिहा क़ुल्तु बल आदमु हुवल्लज़ी वज़अ़हू अयज़न कालल्हाफ़िज़ु इब्नु हजर फी किताबिही अत्तीजानलिइब्नि हिशाम इन्न आदम लम्मा बनल्कअ़बत अमरहुल्लाहु तआ़ला अस्सैर इला बैतिल्मक़्दिस व अंय्यब्नियहू फबनाहू व नसक फीहि** (सुनन नसई जिल्द अव्वल, पेज 112) या'नी आयत और ह़दीष़ दोनों का इश्काल यूँ रफ़ा किया जा सकता है कि दोनों इस अम्र पर दलालत नहीं करती हैं कि उन दोनों की इब्तिदाई बुनियाद उन दोनों बुज़ुर्गों ने रखी है बल्कि ह़क़ीक़त ये है कि दोनों की इब्तिदाई बुनियाद ग़ैरों के हाथों की है और ये दोनों ह़ज़रात इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और ह़ज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) उन दोनों मुक़ामात की तजदीद करने वाले हैं और मरवी है कि शुरू में बैतुल्लाह को ह़ज़रत आदम (अलै.) ने बनाया और उसकी बुनियाद पर मुम्किन है कि उनकी औलाद में से किसी ने उनके चालीस साल बाद बैतुल मक़्दिस की बुनियाद रखी हो। मैं कहता हूँ कि ख़ुद आदम (अलै.) ने उसकी भी बुनियाद रखी है जैसा कि ह़ाफ़िज़ इब्ने हजर ने नक़ल किया है कि जब ह़ज़रत आदम (अलै.) ने का'बा को बनाया तो अल्लाह तआ़ला ने उनको हुक्म फ़र्माया कि बैतुल मक़्दिस जाएँ और उसकी बुनियाद रखें। चुनाँचे वो तशरीफ़ लाए और बैतुल मक़्दिस को बनाया और वहाँ इबादते इलाही बजा लाए।

अ़ल्लामा सनदी फ़र्माते हैं, **लैसल्मुरादु बिनाउ इब्राहीम लिल्मस्जिदिल्हरामि व बिनाउ सुलैमान लिल्मस्जिदिल्अक़्सा फइन्न बैनहुमा मुद्दतुन तवीलतुन बलिल्मुरादु अल्बिनाउ सिवल्हाज़ैनिल्बिनाऐन** (हवाला मज़्कूर) या'नी ह़दीष़ में उन दोनों मसाजिद की इब्राहीमी और सुलैमानी बुनियादें मुराद नहीं हैं। उनके दरम्यान तो तवील मुद्दत का फ़ासला है बल्कि उन दोनों के सिवा इब्तिदाई बिना मुराद हैं। बाइबिल तवारीख़ 2 बाब 3 आयात 1–2 में मज़्कूर है कि बैतुल मक़्दिस को ह़ज़रत सुलैमान (अलै.) ने अपने आबा व अज्दाद की पुरानी निशानियों पर ता'मीर किया था जिससे भी वाज़ेह है कि बैतुल मक़्दिस के अव्वल बानी ह़ज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) नहीं हैं।

٣٣٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ

3367. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे मुत्तलिब के आज़ादकर्दा ग़ुलाम अ़म्र बिन अबी अ़म्र ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उहुद पहाड़ को देखकर फ़र्माया कि ये पहाड़

हमसे मुहब्बत रखता है और हम उससे मुहब्बत रखते हैं। ऐ अल्लाह! हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने मक्का मुकर्रमा को हुर्मत वाला शहर क़रार दिया था और मैं मदीना के दो पत्थरीले इलाक़े के दरम्यानी इलाक़े के हिस्से को हुर्मत वाला क़रार देता हूँ। इस हदीष को अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ: 371)

عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طَلَعَ لَهُ أُحُدٌ فَقَالَ: هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ، اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ، وَإِنِّي أُحَرِّمُ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا)). رَوَاهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٣٧١]

तश्रीह : उहुद पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है। मुहब्बत रखना हक़ीक़तन मुराद है क्योंकि अल्लाह पाक ने अपनी हर मख़्लूक़ को उसकी शान के मुताबिक़ इल्म व इदराक दिया है जैसे कि आयत **व इन मिन शैइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही** (बनी इस्राईल :44) में मुराद है। इस हदीष से मदीना मुनव्वरा की हुर्मत भी मक्कतुल मुकर्रमा के समान षाबित हुई। जो हज़रात हुर्मते मदीना के क़ाइल नहीं हैं उनको इस पर मज़ीद ग़ौर करने की ज़रूरत है। ये हदीष किताबुल हज्ज में गुज़र चुकी है। उसमें हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र है इसलिये इस बाब में लाए।

3368. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को इब्ने अबीबक्र ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें मा'लूम नहीं कि जब तुम्हारी क़ौम ने का'बा की (नई) ता'मीर की तो का'बा की इब्राहीमी बुनियाद को छोड़ दिया। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! फिर आप इब्राहीमी बुनियादों के मुताबिक दोबारा उसकी ता'मीर क्यूँ नहीं कर देते? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम्हारी क़ौम का ज़माना कुफ्र से क़रीब न होता (तो मैं ऐसा ही करता) अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि जबकि ये हदीष हज़रत आइशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है तो मेरा ख़याल है कि हुज़ूर (ﷺ) ने उन दोनों रुक्नों के, जो हज्रे अस्वद के क़रीब हैं, बोसा लेने को सिर्फ़ इसी वजह से छोड़ा था कि बैतुल्लाह हज़रत इब्राहीम (अलै.) की बुनियाद पर नहीं बना है (ये दोनों रुक्न आगे हट गये हैं) इस्माईल बिन अबी उवैस ने इस हदीष में अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र कहा। (राजेअ: 126)

٣٣٦٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ أَبِي بَكْرٍ أَخْبَرَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَلَمْ تَرَيْ أَنَّ قَوْمَكِ بَنَوا الْكَعْبَةَ اقْتَصَرُوا عَنْ قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلاَ تَرُدُّهَا عَلَى قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ؟ فَقَالَ: لَوْ لاَ حِدْثَانُ قَوْمِكِ بِالْكُفْرِ)). فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ: لَئِنْ كَانَتْ عَائِشَةُ سَمِعَتْ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ مَا أَرَى أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ تَرَكَ اسْتِلاَمَ الرُّكْنَيْنِ اللَّذَيْنِ يَلِيَانِ الْحِجْرَ إِلاَّ أَنَّ الْبَيْتَ لَمْ يُتَمَّمْ عَلَى قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ. وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ ((عَبْدُ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ)). [راجع: ١٢٦]

या'नी अब्दुल्लाह को अबूबक्र का पोता कहा है। कुछ नुस्खों में अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र है। तो मतलब ये होगा कि इस रिवायत में उनका नाम अब्दुल्लाह मज़्कूर है और तनीसी की रिवायत में सिर्फ़ इब्ने अबीबक्र था। इस्माईल की रिवायत को ख़ुद मुअल्लिफ़ ने तफ़्सीर में वस्ल किया है।

3369. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक बिन अनस ने ख़बर दी। उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन मुहम्मद बिन अ़म्र बिन ह़ज़्म ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें अ़म्र बिन सुलैम ज़रक़ी ने, उन्होंने कहा मुझको अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम आप पर किस तरह दरूद भेजा करें? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों पर और उनकी औलाद पर जैसा कि तू ने रहमत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर और अपनी बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों और औलाद पर जैसा कि तूने बरकत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर। बेशक तो इंतिहाई ख़ूबियों वाला और अ़ज़्मत वाला है। (दीगर मक़ाम : 6360)

٣٣٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُمْ قَالُوا: ((يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: قُولُوا: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ: إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ)). [طرفه في : ٦٣٦٠].

आल से मुराद वो लोग हैं जिन पर ज़कात ह़राम है। आपके अहले बैत या'नी ह़ज़रत अ़ली और ह़ज़रत फ़ातिमा और ह़ज़रत ह़सन व हुसैन (रज़ि.) हैं। दरूद से मुराद ये है कि आपकी नस्ल बरकत के साथ दुनिया में हमेशा बाक़ी रहे।

3370. हमसे क़ैस बिन ह़फ़्स और मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू कुर्रह मुस्लिम बिन सालिम हम्दानी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा कअ़ब बिन उ़जरह (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कहा क्यूँ न मैं तुम्हें (ह़दीष़ का) एक तोह़फ़ा पहुँचा दूँ जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ मुझे ये तोह़फ़ा ज़रूर इनायत फ़र्माइये। उन्होंने बयान किया कि हमने आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा था या रसूलल्लाह (ﷺ) हम आप पर और आपके अहले बैत पर किस तरह दरूद भेजा करें? अल्लाह तआ़ला ने सलाम भेजने का तरीक़ा तो हमें ख़ुद ही सिखा दिया है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद (ﷺ) पर और आले मुहम्मद (ﷺ) पर जैसा कि तूने अपनी रहमत नाज़िल फ़र्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम (ﷺ) पर। बेशक तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और

٣٣٧٠- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ وَمُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالاَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنِ زِيَادٍ حَدَّثَنَا أَبُو قُرَّةَ مُسْلِمُ بْنُ سَالِمٍ الْهَمْدَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عِيْسَى سَمِعَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي لَيْلَى قَالَ: لَقِيَنِي كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ فَقَالَ: أَلاَ أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً سَمِعْتُهَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَقُلْتُ: بَلَى فَأَهْدِهَا لِيْ، فَقَالَ: سَأَلْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ الصَّلاَةُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ، فَإِنَّ اللهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ. قَالَ : ((قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ

आले मुहम्मद पर जैसा कि तू ने बरकत नाज़िल फ़र्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर। बेशक तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बड़ी अज़्मत वाला है। (दीगर मक़ाम : 4797, 6357)

إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)).

[طرفاه في : ٤٧٩٧، ٦٣٥٧].

तश्रीह : अहले बैत या'नी हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा और हस्नैन मुराद हैं।

3371. हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मिन्हाल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हज़रत ह़सन व हुसैन (रज़ि.) के लिये पनाह त़लब किया करते थे और फ़र्माते थे कि तुम्हारे बुज़ुर्ग दादा (इब्राहीम अलै.) भी उन कलिमात के ज़रिये अल्लाह की पनाह इस्माईल और इस्हाक़ (अलै.) के लिये मांगा करते थे, मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के पूरे पूरे कलिमात के ज़रिये हर एक शैत़ान से और हर ज़हरीले जानवर से और हर नुक़्सान पहुँचाने वाली नज़रे बद से।

٣٣٧١- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الْمِنْهَالِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَوِّذُ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ وَيَقُولُ: إِنَّ أَبَاكُمَا كَانَ يُعَوِّذُ بِهَا إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ)).

तश्रीह : मुज्तहिदे मुत्लक़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ तक जिस क़दर अह़ादीष़ इस बाब के तह़त में बयान की हैं उन सब में किसी न किसी पहलू से ह़ज़रत इब्राहीम और आले इब्राहीम का ज़िक्र मौजूद है और बाब और अह़ादीष़ में यही वजहे मुनासबत है। ज़िम्नी त़ौर पर अह़ादीष़ में और भी बहुत से मसाइल का ज़िक्र आ गया है जो तदबीर करने से मा'लूम किये जा सकते हैं। दरूद से मुराद दीन व दुनिया की वो बरकतें जो अल्लाह पाक ने ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) और उनकी औलाद को अ़त़ा फ़र्माईं कि आज भी बेशतर अक़्वामे आ़लम का नस्ली ता'ल्लुक़ ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) से मिलता है और बिला शक अल्लाह पाक ने यही बरकात ह़ज़रत सय्यदना मुह़म्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) को अ़त़ा की हैं कि आपका कलिमा पढ़ने वाले आज रूए ज़मीन पर करोड़ों-करोड़ की ता'दाद में मौजूद हैं और रोज़ाना पंजवक़्ता फ़िज़ाए आसमानी में आपकी रिसालते ह़क़्क़ा का ऐलान इस शान से किया जाता है कि दुनिया के तमाम पेशवायाने मज़हब में नज़ीर नामुम्किन है। **अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्व अ़ला आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम आमीन**

बाब 11 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह ह़िज्र में फ़र्माया, ऐ नबी! उन लोगों को इब्राहीम (अलै.) के मेहमानों का क़िस्सा सुनाइये

١١- بَابُ قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ﴾ الآية [الحجر: ٥١] ﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ: رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى﴾ إِلَى قَوْلِهِ : ﴿وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾ الآية [البقرة : ٢٦٠]

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया, ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को ज़िन्दा किस त़रह़ करेगा लेकिन ये स़िर्फ़ में इसलिये चाहता हूँ कि मेरे दिल को और ज़्यादा इत़्मीनान हो जाए तक।

तश्रीह : मतलब ये है कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने जो ये सवाल बारगाहे इलाही में किया उसकी वजह ये न थी कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) को अल्लाह की क़ुदरत में कोई शक था, मआज़ल्लाह अदना से मोमिन को भी उसमें शक नहीं है तो इब्राहीम (अलै.) तो अल्लाह के ख़लील थे, उनको क्यूँकर शक हो सकता था। ग़र्ज़ सिर्फ़ ये है कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) को मुर्दों के जिलाए जाने पर कामिल यक़ीन था मगर उन्होंने ये चाहा कि ये यक़ीन और बढ़ जाए या'नी मुशाहिदा भी कर लें। इसलिये कि ऐनुल यक़ीन का मर्तबा इल्मुल यक़ीन के मर्तबे से बढ़ा हुआ है। मशहूर क़ौल है, सुनी हुई चीज़ देखी हुई की तरह हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) इस हदीष के ज़ेल में फ़र्माते हैं कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) का ये सवाल महज़ मज़ीद दर मज़ीद इत्मीनाने क़ल्ब के हुसूल के लिये था जैसा कि ख़ुद क़ुर्आन मजीद मे ये बतफ़्सील मौजूद है। **रवत्तब्रानी वब्नु अबी हातिम मिन तरीकिस्सदी क़ाल लम्मत्ताखज़ल्लाहु इब्राहीम खलीला इस्ताज़नहू मलिकुल्मौत अंय्युबश्शिरहू फअज़िन लहू फ़जकर किस्सत मअहू फी कैफ़िय्यति कब्ज़ि रूहिल्काफ़िर वल्मूमिन क़ाल फक़ाम इब्राहीमु यदऊ रब्बहू रब्बि अरिनी कैफ़ तुहयिल्मौता हत्ता आलम अन्नी खलीलुक व मिन तरीक़ि अलिय्यिब्नि अबी तल्हत अन्हु लआलमु इन्नक तुहिब्बुनी इज़ा दअवतुक व इला हाज़ा जनहल्काज़ी अबू बक्र अल्बाक़िलानी** (फ़त्हुल बारी) या'नी जब अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम (अलै.) को अपना ख़लील बनाया तो मलकुल मौत ये बशारत देने के लिये उनके पास आए और साथ ही उन्हों ने काफ़िर व मोमिन की रूहों को क़ब्ज़ करने की कैफ़ियत भी सुनाई। ये सुनकर हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने दुआ की कि परवरदिगार! मुझको भी दिखला कि तू किस तरह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा। मेरी ये दुआ कुबूल कर ताकि मैं जान लूँ कि मैं तेरा ख़लील हूँ। दूसरी रिवायत के मुताबिक़ ये है कि, ताकि मैं जान लूँ कि तू मुझको दोस्त रखता है और मैं जब भी तुझसे कुछ दुआ करूँगा तो ज़रूर तू इसे कुबूल कर लेगा। मज़ीद तफ़्सीलात के लिये फ़तहुल बारी के उस मुक़ाम का मुतालआ किया जाए।

3372. हमसे अहमद बिन सालेह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने हिशाब ने, उन्हें अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान और सईद बिन मुसय्यिब ने, उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, हम हज़रत इब्राहीम (अलै.) के मुक़ाबले में शक करने के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं जबकि उन्होंने कहा था कि मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को ज़िन्दा किस तरह करता है। अल्लाह तआला ने फ़र्माया, क्या तुम ईमान नहीं लाए, उन्होंने अर्ज़ किया कि क्यूँ नहीं, लेकिन ये सिर्फ़ इसलिये ताकि मेरे दिल को और ज़्यादा इत्मीनान हो जाए। और अल्लाह लूत (अलै.) पर रहम करे कि वो ज़बरदस्त रुक्न (या'नी ख़ुदावन्दे करीम) की पनाह लेते थे और अगर मैं उतनी मुद्दत तक क़ैदख़ाने मे रहता जितनी मुद्दत तक यूसुफ़ (अलै.) रहे थे तो मैं बुलाने वाले बात ज़रूर मान लेता। (दीगर मक़ाम : 3375, 3387, 4537, 4694, 6992)

٣٣٧٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَسَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((نَحْنُ أَحَقُّ مِنْ إِبْرَاهِيْمَ إِذْ قَالَ: ﴿رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتَى. قَالَ: أَوَلَمْ تُؤْمِنْ؟ قَالَ : بَلَى وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾، وَيَرْحَمُ اللهُ لُوطًا لَقَدْ كَانَ يَأْوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيْدٍ، وَلَوْ لَبِثْتُ فِي السِّجْنِ طُولَ مَا لَبِثَ يُوسُفُ لأَجَبْتُ الدَّاعِيَ)).

[أطرافه في : ٣٣٧٥، ٣٣٨٧، ٤٥٣٧، ٤٦٩٤، ٦٩٩٢].

तश्रीह : या'नी क़ैद से छूटना ग़नीमत समझता। हज़रत यूसुफ़ (अलै.) के सब्र पर आफ़रीन है कि इतनी मुद्दत तक क़ैद में रहने के बाद भी उस बुलाने वाले के बुलावे पर न निकले जो बादशाह की तरफ़ से आया था और पहले अपनी सफ़ाई के ख़्वाहाँ हुए। ये आँहज़रत (ﷺ) ने तवाजोअ की राह से फ़र्माया और हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) का मर्तबा बढ़ाने के लिये

वरना आँहज़रत (ﷺ) का सब्र व इस्तिक़्लाल भी कुछ कम न था। आँ चे ख़ूबाँ हमा दारंद तु तन्हा दारी (वहीदी)

बाब 12 : (हज़रत इस्माईल अलैहि. का बयान) और अल्लाह तआला का फ़र्मान, और याद करो इस्माईल को किताब में बेशक वो वा'दे के सच्चे थे

١٢- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ﴾ [مريم : ٥٤]

3373. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) क़बीला असलम की एक जमाअत से गुज़रे जो तीरंदाज़ी में मुक़ाबला कर रही थी। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ बनू इस्माईल! तीरंदाज़ी किये जाओ क्योंकि तुम्हारे बुज़ुर्ग दादा भी तीरंदाज़ थे और मैं बनू फ़लाँ के साथ हूँ। रावी ने बयान किया कि ये सुनते ही दूसरे फ़रीक़ ने तीरंदाज़ी बन्द कर दी। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या बात हुई, तुम लोग तीर क्यों नहीं चलाते? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! जब आप फ़रीक़ मुक़ाबिल के साथ हो गये तो अब हम किस तरह तीर चला सकते हैं। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया मुक़ाबला जारी रखो, मैं तुम सबके साथ हूँ। (राजेअ : 2899)

٣٣٧٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى نَفَرٍ مِنْ أَسْلَمَ يَنْتَضِلُونَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ارْمُوا بَنِي إِسْمَاعِيْلَ فَإِنَّ أَبَاكُمْ كَانَ رَامِيًا، وَأَنَا مَعَ بَنِي فُلاَنٍ. قَالَ: فَأَمْسَكَ أَحَدُ الْفَرِيْقَيْنِ بِأَيْدِيْهِمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا لَكُمْ لاَ تَرْمُونَ؟ فَقَالُوا : يَا رَسُولَ اللهِ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَهُمْ؟ قَالَ: ارْمُوا وَأَنَا مَعَكُمْ كُلِّكُمْ)).
[راجع: ٢٨٩٩]

रिवायत में सय्यिदना इस्माईल (अलै.) का ज़िक्र है। बाब और हदीष़ में यही वजह मुनासबत है। ये भी मा'लूम हुआ कि बाप-दादा के अच्छे कामों को फ़ख़्र के साथ अपनाना बेहतर तरीक़ा है।

बाब 13 : हज़रत इस्हाक़ बिन इब्राहीम (अलै.) का बयान इस बाब मे इब्ने उमर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है।

١٣- بَابُ قِصَّةِ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ فِيْهِ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

उन दोनों हदीष़ों को ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह.) ने वस्ल किया है। इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीष़ से मुराद वो रिवायत है अल करीम बिन अल करीम बिन अल करीम यूसुफ़ बिन यअक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (अलै.) हैं क्योंकि उसमें हज़रत इस्हाक़ और उनके क़रीम होने का बयान है।

बाब 14 : हज़रत यअक़ूब (अलै.) का बयान और अल्लाह तआला का सूरह बक़रः में यूँ फ़र्माना कि, क्या तुम लोग उस वक़्त मौजूद थे जब यअक़ूब (अलै.) की मौत हाज़िर हुई। आख़िर आयत व नहनु लहू मुस्लिमून तक.

١٤- بَابُ ﴿أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ﴾ إِلَى قَوْلِهِ : ﴿وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ﴾ الآيَةَ [البقرة : ١٣٣]

3374. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमने मुअ़तमिर बिन सुलैमान से सुना, उन्होंने उबैदुल्लाह उमरी से, उन्होंने सईद बिन अबी सईद मक़्बरी से और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से पूछा गया, सबसे ज़्यादा शरीफ़ कौन है? आपने फ़र्माया कि जो सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी हो, वो सबसे ज़्यादा शरीफ़ है। सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारे सवाल का मक़्सद ये नहीं है। आपने फ़र्माया कि फिर सबसे ज़्यादा शरीफ़ यूसुफ़ नबी अल्लाह बिन नबी अल्लाह (यअ़क़ूब) बिन नबी अल्लाह (इस्हाक़) बिन ख़लीलुल्लाह (इब्राहीम अलै.) थे सहाबा ने अ़र्ज़ किया, हमारे सवाल का मक़्सद ये भी नहीं है। आपने फ़र्माया कि क्या तुम लोग अ़रब के शरीफ़ों के बारे में पूछना चाहते हो? सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। आपने फ़र्माया कि फिर जाहिलियत में जो लोग शरीफ़ और अच्छे आ़दात व अख़्लाक़ के थे वो इस्लाम लाने के बाद भी शरीफ़ और अच्छे समझे जाएँगे जबकि वो दीन की समझ भी हासिल करें। (राजेअ : 3353)

٣٣٧٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ سَمِعَ الْمُعْتَمِرَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي سَعِيْدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((قِيْلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: مَنْ أَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَكْرَمُهُمْ أَتْقَاهُمْ. قَالُوا يَا نَبِيَّ اللهِ لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ : فَأَكْرَمُ النَّاسِ يُوسُفُ نَبِيُّ اللهِ ابْنُ نَبِيِّ اللهِ ابْنِ نَبِيِّ اللهِ ابْنِ خَلِيْلِ اللهِ. قَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ : فَعَنْ مَعَادِنِ الْعَرَبِ تَسْأَلُونِي؟ قَالُوا : نَعَمْ. قَالَ : فَخِيَارُكُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُكُمْ فِي الإِسْلاَمِ إِذَا فَقِهُوا)).

[راجع: ٣٣٥٣]

रिवायत में हज़रत यअ़क़ूब (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र आया है यही बाब से मुनासबत की वजह है।

बाब 15 :

١٥- بَابٌ

(हज़रत लूत अलै. का बयान) और अल्लाह तआ़ला का सूरह नमल में फ़र्माना कि मैंने लूत को भेजा, उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम जानते हुए भी क्यूँ फ़हश काम करते हो। तुम आख़िर क्यूँ औरतों को छोड़कर मर्दों से अपनी शहवत बुझाते हो, कुछ नहीं तुम महज़ जाहिल लोग हो, इस पर उनकी क़ौम का जवाब उसके सिवा और कुछ नहीं हुआ कि उन्होंने कहा, आले लूत को अपनी बस्ती से निकाल दो। ये लोग बड़े पाकबाज़ बनते हैं। पस मैंने लूत को और उनके ताबेदारों को नजात दी। सिवा उनकी बीवी के। मैंने उसके बारे में फ़ैसला कर दिया था कि वो अ़ज़ाब वालों में बाक़ी रहने वाली होगी और हमने उन पर पत्थरों की बारिश बरसाई। पस डराए हुए लोगों पर बारिश का अ़ज़ाब बड़ा ही सख़्त था।

﴿وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَومِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ، أَ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ، بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ. فَمَا كَانَ جَوَابَ قَومِهِ إِلاَّ أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ. فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلاَّ امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِيْنَ، وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ﴾ [النمل ٤٥-٥٨].

3375. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला हज़रत लूत (अलै.) की मग़्फ़िरत फ़र्माए

٣٣٧٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ:

कि वो ज़बरदस्त रुक्न (या'नी अल्लाह) की पनाह में गए थे। (राजेअ : 3372)

(يَغْفِرُ اللهُ لِلُوطٍ إِنْ كَانَ لَيَأْوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيدٍ)). [راجع: ٣٣٧٢]

तश्रीह : इस हदीष़ के ज़ेल हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं, **यगफिरुल्लाहु लिलूत इन कान लयावी इला रुक्निन शदीद अय इलल्लाहि सुब्हानिहो व तआला युशीरु इला क़ौलिही तआला लौ अन्न ली बिकुम क़ुव्वतन औ आवा इला रुक्निन शदीद व युक़ालु अन्न क़ौम लूतिन लम यकुन फीम अहदुन यज्तमिइ मअहू फी नसबिही लिअन्नहुम मिन सदूम व हिय अनिश्शामि व कान अस्लु इब्राहीम व लूत मिनल्इराक़ि फलम्मा हाजर इब्राहीमु इलश्शामि हाजर मअहू लूतुन फबअ़ष़ल्लाहु लुतन इला अहलि सदूम फ़क़ाल लौ अन्न ली अकारिबु व अशीरतुन लकुन्तु अस्तन्सिरू बिहिम अलैकुम लियदफ़क़ अन ज़ैफ़ानी व लिहाज़ा जाअ फी बअ़ज़ि तुरूकि हाज़ल्हदीष़ि कमा अखरजहू अहमद मिन तरीक़ि मुहम्मद बिन अम्र अन सबी सल्मत अन अबी हुरैरत अनिन्नबिय्यि (ﷺ) काल क़ाल लूत औ अन्न ली बिकुम क़ुव्वतन औ आवी इला रुक्निन शदीदिन क़ाल फ़इन्नहू कान यावी इला रुक्निन शदीदिन अय इला अशीरतिही लाकिन्नहू लम यावि इलैहिम व आवा इलल्लाहि** (पारा 13, फ़त्हुल बारी पेज 244)

या'नी अल्लाह पाक लूत (अलै.) की मग़्फ़िरत फ़र्माए। उनका सहारा तो बहुत ही मज़्बूत था या'नी अल्लाह पाक उनका सहारा था, गोया आँहज़रत (ﷺ) ने इर्शादे बारी तआला **औ आवी इला रुक्निन शदीद** (हूद : 80) की तरफ़ इशारा फ़र्माया है। कहा जाता है कि क़ौम लूत में कोई भी नस्बी आदमी लूत से मुतअल्लिक़ नहीं था इसलिये कि उस बस्ती वाले सदूम से थे जो शाम से है और इब्राहीम (ﷺ) और लूत (अलै.) की असल नस्ल इराक़ वालों से थी जब हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने शाम की तरफ़ हिजरत की तो हज़रत लूत (अलै.) ने भी उनके साथ हिजरत की। फिर अल्लाह ने हज़रत लूत (अलै.) को सदूम वालों की तरफ़ मब्क़ष फ़र्माया। इसीलिये उन्होंने ये जुम्ला कहा कि अगर मेरे भी मददगार, अक़ारिब व अइज़्ज़ा और ख़ानदान वाले होते तो मैं उनसे तुम्हारे मुक़ाबले पर मदद हासिल करता ताकि वो मेरे मेहमानों से तुमको दफ़ा करते। इसीलिये कुछ रिवायात में मरवी है कि बिला शक हज़रत लूत अपनी मदद के लिये एक अपना ख़ानदान रखते थे लेकिन उन्होंने उनकी पनाह नहीं ली बल्कि अल्लाह पाक की तरफ़ पनाह हासिल की।

क़ौमे लूत और उनकी बद किरदारियों का तज़्किरा क़ुर्आन मजीद में कई जगह हुआ है। बद अख़्लाक़ी और बेईमानी में ये क़ौम बढ़ गई थी। अल्लाह पाक ने उनकी बस्तियों को नेस्त व नाबूद कर दिया। कहा जाता है कि जहाँ आज बहीरा मुरदार वाक़ेअ है उसी जगह उस क़ौम की बस्तियाँ थीं। वल्लाहु आलम।

बाब 16 :

(सूरह हिज्र में अल्लाह तआला ने फ़र्माया) फिर जब आले लूत के पास हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते आए तो लूत ने कहा कि तुम लोग तो किसी अंजान मुल्क वाले मा'लूम होते हो, (सूरह वज़्ज़ारियात में) मूसा (अलै.) के ज़िक्र में, बिरुक्निही से मुराद वो लोग हैं जो फ़िरऔन के साथ था क्योंकि वो उसके क़ुव्वत बाज़ू थे (सूरह हूद में) वला तर्कनू का मा'नी मत झुको (सूरह हूद में) अन्करहुम, नकरिहुम और वस्तन्करहुम का एक ही मा'नी है (सूरह हूद में यहरऊन का मा'नी डरते हैं (सूरह हिज्र में) दाबिर के मा'नी आख़िर दम है (सूरह हिज्र में) स़यहता का मा'नी हलाकत (सूरह हिज्र में) लिल् मुतवस्सिमीन का मा'नी देखने वालों के लिये (सूरह हिज्र में) लबि सबील का मा'नी रास्ते के हैं (या'नी रास्ते में)

١٦- بَابُ ﴿فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ، قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ﴾ [الحجر : ٦٢]، ﴿بِرُكْنِهِ﴾: بِمَنْ مَعَهُ لأَنَّهُمْ قُوَّتُهُ. ﴿تَرْكَنُوا﴾: تَمِيلُوا. فَأَنْكَرَهُمْ وَنَكِرَهُمْ وَاسْتَنْكَرَهُمْ وَاحِدٌ. ﴿يُهْرَعُونَ﴾: يُسْرِعُونَ. ﴿دَابِرَ﴾ : آخِرَ. ﴿صَيْحَةً﴾ : هَلَكَةً. ﴿لِلْمُتَوَسِّمِينَ﴾: لِلنَّاظِرِينَ. ﴿لَبِسَبِيلٍ﴾ : لَبِطَرِيقٍ.

तश्रीह : बाब के ज़ेल लफ़्ज़ बिरुक्निही आया है या'नी क़ुव्वत। रुक्न के मा'नी क़ुव्वत, ज़ोर। ये लफ़्ज़ तो हज़रत मूसा (अलै.) के क़िस्से में वारिद हुआ है और हज़रत लूत (अलै.) के क़िस्से में भी रुक्न का लफ़्ज़ आया है। अब

आविया इला रुक्निन शदीद) (हूद : 80) इसलिये इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसको ज़िक्र कर दिया वस्तन्करहुम का लफ़्ज़ उन फ़रिश्तों के बाब में है जो हज़रत इब्राहीम (अलै.) के पास बतौरे मेहमानों के आए थे। मगर चूँकि यही फ़रिश्ते फिर हज़रत लूत (अलै.) के पास गये थे, इस मुनासबत की वजह से उसका भी ज़िक्र कर दिया। कुछ ने कहा लूत के क़िस्से में भी **इन्नकुम क़ौमुम् मुन्करून** (अल हिज्र : 62) वारिद है और नकिरहुम इसी से है। लफ़्ज़ सयहति आयते शरीफ़ा **फ़अख़ज़त्हुमुस्सैहतु मुश्रिकीन** (अल हिज्र : 73) में है जो हज़रत लूत की उम्मत के बारे में है। नीज़ आयत में जो सूरह यासीन में है, **इन कानत इल्ला सैहतंव वाहिदतन** (यासीन : 53) लफ़्ज़ सयहति मज़्कूर है।

3376. हमसे महमूद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अहमद ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अस्वद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़हल मिम् मुद्दकिर पढ़ा था। (राजेअ : 3341)

٣٣٧٦- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ: ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾)). [راجع: ٣٣٤١]

ये आयत सूरह क़मर में हज़रत लूत के क़िस्से में वारिद है। इस मुनासबत से इस हदीष को इस बाब में भी ज़िक्र कर दिया है। जैसे पहले भी कई बार गुज़र चुकी है।

बाब 17 :

(क़ौमे षमूद और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का बयान) **अल्लाह पाक का सूरह आराफ़ में फ़र्माना हमने षमूद की तरफ़ उनके भाई सालेह अलैहिस्सलाम को भेजा (सूरह हिज्र में) जो फ़र्माया, हिज्र वालों ने पैग़म्बरों को झुठलाया। हिज्र षमूद वालों का शहर था लेकिन (सूरह अन्आम में) जो हर्फ़ हिज्र आया है वहाँ हिज्र के मा'नी हराम और मम्नूअ के हैं । अरब लोग कहते हैं हिज्र महजूर या'नी हराम व मम्नूअ और हिज्र इमारत को भी कहते हैं और जिस ज़मीन को घेर लिया जाए (दीवार या बाड़े से) उसी से ख़ाना का'बा के हतीम को हिज्र कहते हैं । हतीम महतूम से निकला है। महतूम के मा'नी टूटा हुआ। पहले वो काबा के अंदर था। उसको तोड़कर बाहर कर दिया इसलिये हतीम कहने लगे) जैसे क़तील मक़्तूल से, और मादयान घोड़ी को भी। हिज्र के मा'नी अक़्ल के भी हैं जैसे हिजी के मा'नी भी अक़्ल के हैं (सूरह फ़ज्र में है)। (हल फ़ी ज़ालिका क़समुल लिज़ी हिज्र) और हिज्रुल यमामा (हिजाज़ और यमन के बीच में) एक मुक़ाम का नाम है।**

١٧- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا﴾ [الأعراف: ٧٣] ﴿كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ﴾ [الحجر: ٨٠]. الْحِجْرِ مَوضِعُ ثَمُود. وأَمَّا ﴿حَرْثٌ حِجْرٌ﴾: حَرَام، وَكُلُّ مَمْنُوعٍ فَهُوَ حِجْر، وَمِنْهُ: ((حِجْرٍ مَحْجُورٍ)). وَالْحِجرُ كُلُّ بِنَاءٍ بَنَيْتَهُ، وَمَا حَجَرتَ عَلَيْهِ مِنَ الأَرْضِ فَهُوَ حِجْرٌ، وَمِنْهُ سُمِّيَ حَطِيمُ الْبَيْتِ حِجرًا، كَأَنَّهُ مُشْتَقٌّ مِنْ مَحْطُوم، مِثْلُ قَتِيل من مَقْتُول، وَيُقَالُ للأُنْثَى مِنَ الْخَيْلِ الحِجرُ، وَيُقَالُ لِلْعَقْلِ: حِجر. وحِجىً وأما حِجْرُ الْيَمَامَةِ فَهُوَ الْمَنْزِلُ.

तश्रीह : षमूद अरब का एक क़बीला था। उनके दादा का नाम षमूद बिन आमिर बिन इरम बिन साम बिन नूह था इसलिये उनको षमूद कहने लगे। अल्लाह ने हज़रत सालेह (अलै.) को पैग़म्बर बनाकर उन लोगों की तरफ़ भेजा। क़ुर्आन मजीद में इनका ज़िक्र बकषरत आया है।

2377. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन

٣٣٧٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

ड़ययना ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन ड़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़म्आ ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) से सुना (ख़ुत्बे के दौरान) आपने उस क़ौम का ज़िक्र किया जिन्हों ने ऊँटनी को ज़िब्ह कर दिया था। आपने फ़र्माया कि (अल्लाह की क़सम भेजी हुई) उस (ऊँटनी को) ज़िबह करने वाला क़ौम का एक बहुत ही बाइज़्ज़त आदमी (क़ैदारनामी) था, जैसे हमारे ज़माने में अबू ज़म्आ (अस्वद बिन मुत्तलिब) है। (दीगर मक़ाम : 4942, 5204, 6042)

حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَمْعَةَ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ - وَذَكَرَ الَّذِي عَقَرَ النَّاقَةَ - قَالَ انْتَدَبَ لَهَا رَجُلٌ ذُو عِزٍّ وَمَنَعَةٍ فِي قَوْمِهِ كَأَبِي زَمْعَةَ)).

[أطرافه في: ٤٩٤٢، ٥٢٠٤، ٦٠٤٢].

3378. हमसे मुहम्मद बिन मिस्कीन अबुल हसन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन हस्सान बिन हय्यान अबू ज़करिया ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब हिज्र (ष़मूद की बस्ती) में ग़ज़्व-ए-तबूक़ के लिये जाते हुए पड़ाव किया तो आपने स़हाबा (रज़ि.) को हुक्म फ़र्माया कि यहाँ के कुँओं का पानी न पीना और न अपने बर्तनों में साथ लेना। स़हाबा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि हमने तो उससे अपना आटा भी गूँध लिया है और पानी अपने बर्तनों में भी रख लिया है। हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया कि गुंधा हुआ आटा फेंक दिया जाए और अबू ज़र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है कि जिसने आटा उस पानी से गूँध लिया हो (वो उसे फेंक दे)। (दीगर मक़ाम : 3379)

٣٣٧٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِينٍ أَبُو الْحَسَنِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ بْنِ حَيَّانَ أَبُو زَكَرِيَّاءَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا : ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمَّا نَزَلَ الْحِجْرَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ أَمَرَهُمْ أَنْ لاَ يَشْرَبُوا مِنْ بِئْرِهَا وَلاَ يَسْتَقُوا مِنْهَا، فَقَالُوا : قَدْ عَجَنَّا مِنْهَا وَاسْتَقَيْنَا، فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَطْرَحُوا ذَلِكَ الْعَجِينَ وَيُهْرِيقُوا ذَلِكَ الْمَاءَ)). وَيُرْوَى عَنْ سَبْرَةَ بْنِ مَعْبَدٍ وَأَبِي الشُّمُوسِ : ((إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ بِإِلْقَاءِ الطَّعَامِ)). وَقَالَ أَبُو ذَرٍّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنِ اعْتَجَنَ بِمَائِهِ)).[طرفه في: ٣٣٧٩].

तश्रीह : सब्रह की ह़दीष़ को त़बरानी और अबू नुऐम ने और अबुश्शमूस की रिवायत को त़बरानी और इब्ने मुन्दह ने और अबू ज़र की रिवायत को बज़्ज़ार ने वस़्ल किया है। चूँकि उस मुक़ाम पर अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल हुआ था लिहाज़ा आपने वहाँ के पानी को इस्ते'माल करने से मना फ़र्माया, ऐसा न हो कि उससे दिल सख़्त हो जाएँ या कोई और बीमारी पैदा हो जाए।

3379. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अनस बिन अ़याज़ ने बयान किया, उनसे ड़बैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि स़हाबा ने नबी करीम (ﷺ) के साथ ष़मूद की बस्ती हिज्र में पड़ाव किया तो वहाँ के कुँओं का पानी अपने बर्तनों में भर लिया और आटा भी उस पानी से गूँध लिया। लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें हुक्म

٣٣٧٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ ((أَنَّ النَّاسَ نَزَلُوا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَرْضَ ثَمُودَ، الْحِجْرَ، وَاسْتَقَوْا

दिया कि जो पानी उन्होंने अपने बर्तनों मे भर लिया उसे उण्डेल दें और गुँधा हुआ आटा जानवरों को खिला दें। उसके बजाय हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें ये हुक्म दिया कि उस कुँए से पानी लें जिससे स़ालेह (अलै.) की ऊँटनी पानी पिया करती थी। (राजेअ़ : 3378)

مِنْ بِئْرِهَا وَاعْتَجَنُوا بِهِ، فَأَمَرَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يُهْرِيقُوا مَا اسْتَقَوا مِنْ بِئْرِهَا وَأَنْ يَعْلِفُوا الإِبِلَ الْعَجِينَ، وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَسْتَقُوا مِنَ الْبِئْرِ الَّتِي كَانَ تَرِدُهَا النَّاقَةُ)). تَابَعَهُ أُسَامَةُ عَنْ نَافِعٍ.[راجع: ٣٣٧٨]

3380. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझको सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब मुक़ामे ह़िज्र से गुज़रे तो फ़र्माया कि उन लोगों की बस्ती में जिन्होंने ज़ुल्म किया था न दाख़िल हो, लेकिन उस स़ूरत में कि तुम रोते हुए हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम पर भी वही अ़ज़ाब आ जाए जो उन पर आया था। फिर आपने अपने चादर चेहर-ए-मुबारक पर डाल ली। आप उस वक़्त कजावे पर तशरीफ़ रखते थे। (राजेअ़ : 433)

٣٣٨٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ ﷺ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا مَرَّ بِالْحِجْرِ قَالَ : ((لاَ تَدْخُلُوا مَسَاكِنَ الَّذِينَ ظَلَمُوا إِلاَّ أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ أَنْ يُصِيبَكُمْ مَا أَصَابَهُمْ. ثُمَّ تَقَنَّعَ بِرِدَائِهِ وَهُوَ عَلَى الرَّحْلِ)). [راجع: ٤٣٣]

अल्लाह के अ़ज़ाब से किस क़दर डरना चाहिये और अल्लाह और रसूल (ﷺ) की खुल्लम ख़ुला मुख़ालफ़त करने वालों से कितना बचना चाहिये, ये मज़्कूरा ह़दीष़ों से ज़ाहिर है कि उन लोगों की बस्ती का पानी भी न लेने दिया और उस पानी से जो आटा गूँध लिया था, उसे भी जानवरों के आगे डाल देने का हुक्म आपने फ़र्माया। अल्लाहुम्मह़फ़िज़्ना

3381. मुझसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उन्होंने यूनुस से सुना, उन्होंने ज़ुह्री से, उन्होंने सालिम से और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम्हें उन लोगों की बस्ती से गुज़रना पड़े जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था तो रोते हुए गुज़रो। कहीं तुम्हें भी वो अ़ज़ाब आ न पकड़े जिसमें ये ज़ालिम लोग गिरफ़्तार किये गये थे।

٣٣٨١- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا وَهْبٌ حَدَّثَنَا أَبِي سَمِعْتُ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَدْخُلُوا مَسَاكِنَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ - إِلاَّ أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ - أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلَ مَا أَصَابَهُمْ)).

अगरचे ये ह़दीष़ तमाम मुत्लक़ बद किरदारों को शामिल है मगर आपने ये ह़दीष़ उस वक़्त फ़र्माई जब आप ह़िज्र पर से गुज़रे जहाँ षमूद की क़ौम बस्ती थी जैसे पिछली रिवायत से मा'लूम होता है।

बाब 18 : ह़ज़रत यअ़क़ूब (अलै.) का बयान, अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया कि क्या तुम उस वक़्त

١٨- بَابٌ
﴿أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ

मौजूद थे जब ह़ज़रत यअ़क़ूब (अलै.) की मौत ह़ाज़िर हुई

الْمَوْتُ﴾ [البقرة : ١٣٣]

3382. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुस्समद ने ख़बर दी, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, शरीफ़ बिन शरीफ़ बिन शरीफ़ बिन शरीफ़, यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम (अलै.) थे। (दीगर मक़ाम : 3390, 4688)

٣٣٨٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((الْكَرِيْمُ ابْنُ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ: يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمُ السَّلاَمُ)).[طرفاه في : ٣٣٩٠، ٤٦٨٨].

इस रिवायत में ह़ज़रत यअ़क़ूब (अलै.) का ज़िक्रे ख़ैर हुआ है। यही बाब से मुनासबत की वजह है जो पहले भी गुज़र चुका है यहाँ इख़्तिसार के साथ एक दूसरी रिवायत में इस वाक़िये का बयान करना मक़्सूद है।

बाब 19 : ह़ज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) का बयान अल्लाह पाक ने फ़र्माया कि बेशक यूसुफ़ और उनके भाईयों के वाक़ियात में पूछने वालों के लिये क़ुदरत की बहुत सी निशानियाँ हैं

١٩- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٌ لِلسَّائِلِيْنَ﴾ [يوسف : ٧]

3383. मुझसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उन्हें सईद बिन अबी सईद ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी (ﷺ) से पूछा गया कि सबसे ज़्यादा शरीफ़ आदमी कौन है? आपने फ़र्माया, जो अल्लाह का डर सबसे ज़्यादा रखता हो, स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि हमारे सवाल का मक़्सद ये नहीं है। आपने फ़र्माया कि फिर सबसे ज़्यादा शरीफ़ अल्लाह के नबी यूसुफ़ बिन नबीउल्लाह बिन नबीउल्लाह बिन ख़लीलुल्लाह हैं। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि हमारे सवाल का मक़्सद ये भी नहीं है। आपने फ़र्माया अच्छा तुम लोग अ़रब के ख़ानदानों के बारे में पूछना चाहते हो। देखो! लोगों की मिस़ाल खानों की सी है (किसी खान में से अच्छा माल निकलता है किसी में से बुरा) जो लोग तुममें से ज़मान-ए-जाहिलियत में शरीफ़ और बेहतर अख़्लाक़ के थे वही इस्लाम के बाद भी अच्छे और शरीफ़ हैं बशर्ते कि वो दीन की समझ हासिल करें।

٣٣٨٣- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ عَنْ أَبِي أُسَامَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ : أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ أَبِي سَعِيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((سُئِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَتْقَاهُمْ لِلهِ. قَالُوا : لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ: فَأَكْرَمُ النَّاسِ يُوسُفُ نَبِيُّ اللهِ ابْنُ نَبِيِّ اللهِ ابْنِ نَبِيِّ اللهِ ابْنِ خَلِيْلِ اللهِ. قَالُوا : لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ: فَعَنْ مَعَادِنِ الْعَرَبِ تَسْأَلُونِي؟ النَّاسُ مَعَادِنُ، خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلاَمِ إِذَا فَقِهُوا)).

حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنِي عَبْدَةُ عَنْ عُبَيْدِ

मुझसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अब्दह ने ख़बर दी, उन्हें उबैदुल्लाह ने, उन्हें सईद ने, उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से यही हदीष़ रिवायत की। (राजेअ : 3353)

اللهِ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا.[راجع: ٣٣٥٣]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि इस्लाम में बुनियाद शराफ़त दीनदारी और दीन की समझ हासिल करना है जिसे लफ़्ज़ फ़ुक़ाहत से याद किया गया है। दूसरी हदीष़ में है **मंय्युरिदिल्लाहु बिही खैरन युफक़्क़िहहु फ़िद्दीन** अल्लाह तआला अपने जिस बन्दे पर नज़रे करम करता है। इस सिलसिले में उम्मत के सामने ज़िन्दा मिषालें मुहद्दिषीने किराम की हैं जिनको अल्लाह पाक ने दीनी फ़ुक़ाहत से नवाज़ा कि आज इस्लाम उन ही की ख़ूबसूरत कोशिशों से ज़िन्दा है कि सीरते नबवी अहादीषे सहीहा की रोशनी में मुकम्मल तौर पर मुतालआ की जा सकती है। अल्लाह पाक जुम्ला मुहद्दिषीन किराम व मुज्तहिदीने इज़ाम को उम्मत की तरफ़ से हज़ारों हज़ार जज़ाएँ अता फ़र्माए और क़यामत के दिन सबको फ़िरदौसे बरीं में जमा करे और मुझ नाचीज़ गुनाहगार अदना ख़ादिम और मेरे क़द्रदानों को बारी तआला हश्र के मैदान में अपने हबीबे-पाक और जुम्ला बुज़ुर्गाने ख़ास की रफ़ाक़त अता फ़र्माए आमीन।

3384. हमसे बदल बिन महब्बिर ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने बयान किया। उन्होंने उर्वा बिन ज़ुबैर से सुना और उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने (मर्ज़ुल मौत में) उनसे फ़र्माया, अबूबक्र से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएँ, आइशा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि वो बहुत नरम दिल हैं, आपकी जगह जब खड़े होंगे तो उन पर रिक़्क़त तारी हो जाएगी। हुज़ूर (ﷺ) उन्हें दोबारा यही हुक्म दिया। लेकिन उन्होंने भी दोबारा यही उज़्र बयान किया, शुअबा ने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने तीसरी या चौथी बार फ़र्माया कि तुम तो यूसुफ़ (अलै.) की साथवालियाँ हो। (ज़ाहिर में कुछ बातिन में कुछ) अबूबक्र (रज़ि.) से कहो, नमाज़ पढ़ाएँ। (राजेअ : 198)

٣٣٨٤- حَدَّثَنَا بَدَلُ بْنُ الْمحَبَّرِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ قَالَ : قَالَ: سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا : ((مُرِي أَبَا بَكْرٍ يُصَلِّي بِالنَّاسِ)). قَالَتْ : إِنَّهُ رَجُلٌ أَسِيفٌ، مَتَى يَقُمْ مَقَامَكَ رَقَّ. فَعَادَ، فَعَادَتْ. قَالَ شُعْبَةُ : فَقَالَ فِي الثَّالِثَةِ – أَوِ الرَّابِعَةِ –: ((إِنَّكُنَّ صَوَاحِبُ يُوسُفَ، مُرُوا أَبَا بَكْرٍ..)). [راجع: ١٩٨]

3385. हमसे रबीआ बिन यह्या बसरी ने बयान किया, कहा हमसे ज़ायदा ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने, उनसे अबू बुर्दा बिन अबी मूसा ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब बीमार पड़े तो आपने फ़र्माया कि अबूबक्र से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएँ। आइशा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि अबूबक्र (रज़ि.) निहायत नरमदिल इंसान हैं लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने दोबारा यही हुक्म फ़र्माया और उन्होंने भी वही उज़्र दोहराया। आख़िर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनसे कहो नमाज़ पढ़ाएँ। तुम तो यूसुफ़ (ﷺ) की साथ वालियाँ हो (ज़ाहिर कुछ बातिन कुछ) चुनाँचे अबूबक्र (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) की

٣٣٨٥- حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ يَحْيَى الْبَصْرِيُّ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى عَنْ أَبِيهِ قَالَ : ((مَرِضَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ. فَقَالَتْ عَائِشَةُ: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ رَجُلٌ – فَقَالَ مِثْلَهُ، فَقَالَتْ مِثْلَهُ – فَقَالَ : مُرُوهُ، فَإِنَّكُنَّ صَوَاحِبُ يُوسُفَ – فَأَمَّ أَبُوبَكْرٍ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ)).

ज़िन्दगी में इमामत की और हुसैन बिन अली ज़अफ़ी ने ज़ायदा से रजुलुन रक़ीक़ के अल्फ़ाज़ नक़ल किये कि अबूबक्र नरम दिल आदमी हैं। (राजेअ : 678)

وَقَالَ حُسَيْنٌ عَنْ زَائِدَةَ ((رَجُلٌ رَقِيْقٌ)). [راجع: ٦٧٨]

यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की साथ वालियों से वे औरतें मुराद हैं जिनको ज़ुलैख़ा ने जमा किया था जिन्होंने बज़ाहिर ज़ुलैख़ा को उसकी मुहब्बत पर मलामत की थी मगर दिल से सब हज़रत यूसुफ़ (अलै.) के हुस्न से मुताष्षिर थीं। आँहज़रत (ﷺ) का मक़सद इस जुम्ले से ये था कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के बारे में तुम्हारी ये राय ज़ाहिरी तौर पर है वरना दिल से उनकी इमामत तस्लीम है।

3386. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई, ऐ अल्लाह! अयाश बिन अबी रबीआ को नजात दे, ऐ अल्लाह! सलमा बिन हिशाम को नजात दे, ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद को नजात दे, ऐ अल्लाह तमाम ज़ईफ़ और कमज़ोर मुसलमानों को नजात दे। ऐ अल्लाह! क़बीला मुज़र को सख़्त गिरफ़्त में पकड़ ले। ऐ अल्लाह! यूसुफ़ (अलै.) के ज़माने की सी क़हतसाली इन (ज़ालिमों) पर नाज़िल फ़र्मा।

٣٣٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ أَنْجِ عَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيْعَةَ، اللَّهُمَّ أَنْجِ سَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيْدَ بْنَ الْوَلِيْدِ اللَّهُمَّ أَنْجِ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ. اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ، اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا سِنِيْنَ كَسِنِي يُوسُفَ)).

3387. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा इब्ने अख़ी जुवेरिया ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुवेरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनको सईद बिन मुसय्यिब और अबू उबैदह ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला लूत (अलै.) पर रहम करे कि वो ज़बरदस्त रुक्न (या'नी अल्लाह करीम) की पनाह लेते थे और अगर मैं इतनी मुद्दत तक क़ैद में रहता जितनी यूसुफ़ (अलै.) रहे थे और फिर मेरे पास (बादशाह का आदमी) बुलाने के लिये आता तो मैं फ़ौरन उसके साथ चला जाता। (राजेअ : 3372)

٣٣٨٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ ابْنِ أَخِي جُوَيْرِيَةَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَنَّ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَأَبَا عُبَيْدٍ أَخْبَرَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَرْحَمُ اللهُ لُوطًا، لَقَدْ كَانَ يَأْوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيْدٍ، وَلَوْ لَبِثْتُ فِي السِّجْنِ مَا لَبِثَ يُوسُفُ ثُمَّ أَتَانِي الدَّاعِي لأَجَبْتُهُ)). [راجع: ٣٣٧٢]

आँहज़रत (ﷺ) हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के सब्र व इस्तिक़्लाल की ता'रीफ़ बयान फ़र्मा रहे हैं कि उन्होंने अपनी बराअत का साफ़ शाही ऐलान हुए बग़ैर जेलख़ाना छोड़ना पसन्द नहीं फ़र्माया। रब्बिस्सिज्नु अहब्बु इलय्य मिम्मा यदऊननी (यूसुफ़ : 33) आयत से भी उनके मुक़ामे रिफ़अत व अज़ीम मर्तबत का इज़्हार होता है। सल्लल्लाहु अलैहिम अज्मईन, आमीन। अल्लाह के प्यारों की यही शान होती है।

3388. हमसे मुहम्मद बिन सलमा ने बयान किया, कहा हमको

٣٣٨٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا

ابْنُ فُضَيْلٍ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ : ((سَأَلْتُ أُمَّ رُومَانَ وَهِيَ أُمُّ عَائِشَةَ عَمَّا قِيلَ فِيهَا مَا قِيلَ قَالَتْ : بَيْنَمَا أَنَا مَعَ عَائِشَةَ جَالِسَتَانِ، إِذْ وَلَجَتْ عَلَيْنَا امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ وَهِيَ تَقُولُ: فَعَلَ اللهُ بِفُلاَنٍ وَفَعَلَ. قَالَتْ: فَقُلْتُ: لِمَ؟ قَالَتْ: إِنَّهُ نَمى ذِكْرَ الْحَدِيثِ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ: أَيُّ حَدِيثٍ؟ فَأَخْبَرَتْهَا. قَالَتْ: فَسَمِعَهُ أَبُوبَكْرٍ وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، فَخَرَّتْ مَغْشِيًّا عَلَيْهَا، فَمَا أَفَاقَتْ إِلاَّ وَعَلَيْهَا حُمَّى بِنَافِضٍ. فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا لِهَذِهِ؟)) قُلْتُ حُمَّى أَخَذَتْهَا مِنْ أَجْلِ حَدِيثٍ تُحُدِّثَ بِهِ. فَقَعَدَتْ فَقَالَتْ: وَاللهِ لَئِنْ حَلَفْتُ لاَ تُصَدِّقُونَنِي، وَلَئِنِ اعْتَذَرْتُ لاَ تَعْذِرُونَنِي، فَمَثَلِي وَمَثَلُكُمْ كَمَثَلِ يَعْقُوبَ وَبَنِيهِ، وَاللهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ. فَانْصَرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَنْزَلَ اللهُ مَا أَنْزَلَ، فَأَخْبَرَهَا فَقَالَتْ: بِحَمْدِ اللهِ لاَ بِحَمْدِ أَحَدٍ)).

[أطرافه في : ٤١٤٣، ٤٦٩١، ٤٧٥١].

मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने ख़बर दी, कहा हमसे हुसैन ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि मैंने आइशा (रज़ि.) की वालिदा उम्मे रुम्मान (रज़ि.) से आइशा (रज़ि.) के बारे में जो बोहतान तराशा गया था उसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि आइशा (रज़ि.) के साथ बैठी हुई थी कि एक अंसारिया औरत हमारे यहाँ आई और कहा कि अल्लाह फ़लाँ (मस्तह बिन अषाषा) को तबाह कर दे और वो उसे तबाह कर भी चुका। उन्होंने बयान किया कि मैंने कहा, आप ये क्या कह रही हैं? उन्होंने बताया कि उसी ने तो ये झूठ मशहूर किया है। फिर अंसारिया औरत ने हज़रत आइशा पर तोहमत का सारा वाक़िया बयान किया (हज़रत आइशा रज़ि.) ने (अपनी वालिदा से) पूछा कि कौनसा वाक़िया है? तो उनकी वालिदा ने उन्हें वाक़िया की तफ़्सील बताई। आइशा (रज़ि.) ने पूछा कि क्या ये क़िस्सा अबूबक्र (रज़ि.) और रसूलुल्लाह (ﷺ) को भी मा'लूम हो गया है? उनकी वालिद ने बताया कि हाँ। ये सुनते ही हज़रत आइशा (रज़ि.) बेहोश होकर गिर पड़ीं और जब होश आया तो जाड़े के साथ बुख़ार चढ़ा हुआ था। फिर नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और दरयाफ़्त किया कि इन्हें क्या हुआ? मैंने कहा कि एक बात उनसे ऐसी कही गई थी और उसी के सदमे से उनको बुख़ार आ गया है। फिर हज़रत आइशा (रज़ि.) उठकर बैठ गईं और कहा अल्लाह की क़सम! अगर मैं क़सम ख़ाऊँ जब भी आप लोग मेरी बात नहीं मान सकते और अगर कोई उ़ज़्र बयान करूँ तो उसे भी तस्लीम नहीं कर सकते। बस मेरी और आप लोगों की मिषाल यअ़क़ूब (अलै.) और उनके बेटों की सी है (कि उन्होंने अपने बेटों की मनगढ़त कहानी सुनकर फ़र्माया था कि) जो कुछ तुम कह रहे हो मैं उस पर अल्लाह ही की मदद चाहता हूँ। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) वापस तशरीफ़ ले गए और अल्लाह तआ़ला को जो कुछ मंज़ूर था वो नाज़िल फ़र्माया। जब आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी ख़बर आइशा (रज़ि.) को दी तो उन्होंने कहा कि उसके लिये मैं सिर्फ़ अल्लाह का शुक्र अदा करती हूँ किसी और का नहीं। (दीगर मक़ाम : 4143, 4691, 4751)

तश्रीह : हज़रत यूसुफ़ (अलै.) और उनके भाइयों के ज़िक्र से बाब का तर्जुमा निकलता है और शायद इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष के दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ भी इशारा किया हो जिसमें यूँ है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने दौराने बातचीत

यूँ कहा कि मुझको हज़रत यअ़क़ूब (अलै.) का नाम याद न आया तो मैंने यूसुफ़ का बाप कह दिया।

3389. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा कि मुझे उ़र्वा ने ख़बर दी कि उन्होंने नबी करीम(ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा आ़इशा (रज़ि.) से आयत के बारे में पूछा, ह़त्ता इजस तयअसरुसुलु ज़न्नू अन्नहुम कुज़्ज़िबू (तशदीद के साथ) है या कुज़िबू (बग़ैर तशदीद के) या'नी यहाँ तक कि जब अंबिया नाउम्मीद हो गये और उन्हें ख़्याल गुज़रने लगा कि उन्हें झुठला दिया गया तो अल्लाह की मदद पहुँची तो उन्होंने कहा कि (ये तशदीद के साथ है और मत़लब ये है कि) उनकी क़ौम ने उन्हें झुठलाया था। मैंने अ़र्ज़ किया कि फिर मा'नी कैसे बनेंगे, पैग़म्बरों को यक़ीन था ही कि उनकी क़ौम उन्हें झुठला रही है। फिर क़ुर्आन में लफ़्ज़ ज़न्न गुमान और ख़्याल के मा'नी में इस्ते'माल क्यूँ किया गया? आ़इशा (रज़ि.) ने कहा ऐ छोटे से उ़र्वा! बेशक उनको तो यक़ीन था मैंने कहा तो शायद उस आयत मे बग़ैर तशदीद के कुज़िबू होगा या'नी पैग़म्बर ये समझे कि अल्लाह ने जो उनकी मदद का वा'दा किया था वो ग़लत़ था। आ़इशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, मआ़ज़ल्लाह! अंबिया अपने रब के साथ भला ऐसा गुमान कर सकते हैं। आ़इशा (रज़ि.) ने कहा मुराद ये है कि पैग़म्बरों के ताबेदार लोग जो अपने मालिक पर ईमान लाए थे और पैग़म्बरों की तस्दीक़ की थी उन पर जब मुद्दत तक अल्लाह की आज़माइश रही और मदद आने में देर हुई और पैग़म्बर लोग अपनी क़ौम के झुठलाने वालों से नाउम्मीद हो गये (समझे कि अब वो ईमान नहीं लाएँगे) और उन्होंने ये गुमान किया कि जो लोग उनके ताबेदार बने हैं वो भी उनको झूठा समझने लगेंगे, उस वक़्त अल्लाह की मदद आ पहुँची। अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी रह) ने कहा कि इस्तयअसू, इफ़्तफ्अलू के वज़न पर है जो यइसत मिन्हू से निकला है, अय मिन यूसुफ़ (सूरह यूसुफ़ की आयत का एक जुम्ला है या'नी ज़ुलैख़ा यूसुफ़ (अलै.) से नाउम्मीद हो गई) ला त यअसू मिर् रवहि़ल्ला (यूसुफ़ : 87) या'नी अल्लाह से उम्मीद रखवाना उम्मीद न हो। (दीगर मक़ाम : 4525, 4695, 4696)

٣٣٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرَأَيْتِ قَولَ اللهِ : ((حَتَّى إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا﴾ أَوْ كُذِبُوا، قَالَتْ: بَلْ كَذَّبَهُمْ قَوْمُهُمْ، فَقُلْتُ وَاللهِ لَقَدِ اسْتَيْقَنُوا أَنَّ قَوْمَهُمْ كَذَّبُوهُمْ وَمَا هُوَ بِالظَّنِّ. فَقَالَتْ: يَا عُرَيَّةُ، لَقَدِ اسْتَيْقَنُوا بِذَلِكَ، فَقُلْتُ: فَلَعَلَّهَا ((أَوْ كُذِبُوا)) قَالَتْ: مَعَاذَ اللهِ، لَمْ تَكُنْ الرُّسُلُ تَظُنُّ ذَلِكَ بِرَبِّهَا، وَأَمَّا هَذِهِ الآيَةُ قَالَتْ : هُمْ أَتْبَاعُ الرُّسُلِ الَّذِيْنَ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَصَدَّقُوهُمْ وَطَالَ عَلَيْهِمُ الْبَلاَءُ وَاسْتَأْخَرَ عَنْهُمُ النَّصْرُ، حَتَّى إِذَا اسْتَيْأَسَتْ مِمَّنْ كَذَّبَهُمْ مِنْ قَوْمِهِمْ وَظَنُّوا أَنَّ أَتْبَاعَهُمْ كَذَّبُوهُمْ جَاءَهُمْ نَصْرُ اللهِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: ﴿اسْتَيْأَسُوا﴾ اسْتَفْعَلُوا مِنْ يَئِسْتُ. ﴿مِنْهُ﴾ مِنْ يُوسُفَ ﴿لاَتَيْأَسُوا مِن رَوْحِ اللهِ﴾ مَعْنَاهُ الرَّجَاءُ.

[أطرافه في : ٤٥٢٥، ٤٦٩٥، ٤٦٩٦].

3390. मुझे अ़ब्दह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे

٣٣٩٠- أَخْبَرَنِي عَبْدَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ

अ़ब्दुस्समद ने बयान किया। उनसे अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, शरीफ़ बिन शरीफ़ बिन शरीफ़ बिन शरीफ़, यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (अलै.) हैं। (राजेअ़ : 3382)

الصَّمَدِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((الْكَرِيْمُ ابْنُ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنَ إِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمُ السَّلاَمُ)).
[راجع: ٣٣٨٢]

इन तमाम रिवायतों में किसी न किसी सिलसिले से यूसुफ़ (अलै.) का ज़िक्रे ख़ैर आया है। इसीलिये उनको इस बाब के ज़ेल बयान किया गया।

बाब 20 : (सूरह अंबिया में) अल्लाह तआ़ला का

फ़र्मान और अय्यूब को याद करो जब उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे बीमारी ने आ घेरा है और तू अरहमुर्राहिमीन है। जो (सूरह स़ाद में) उर्कुज़ बिरिज्लिक बमा'नी इज़्रिब (या'नी अपना पांव ज़मीन पर मार) यरकुज़ून बमा'नी यइदून, (सूरह अंबिया में) या'नी दौड़ते हैं)

٢٠- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ﴾. ﴿ارْكُضْ﴾: اضْرِبْ. ﴿يَرْكُضُونَ﴾ : يَعْدُونَ.

3391. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जुअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अय्यूब (अलै.) नंगे ग़ुस्ल कर रहे थे कि सोने की टिड्डियाँ उन पर गिरने लगीं। वो उनको अपने कपड़े में जमा करने लगे। उनके परवरदिगार ने उनको पुकारा कि ऐ अय्यूब! जो कुछ तुम देख रहे हो (सोने की टिड्डियाँ) क्या मैंने तुम्हें इससे बेपरवाह नहीं कर दिया है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि स़हीह है, ऐ रब्बुल इज़्ज़त लेकिन तेरी बरकत से मैं किस तरह बेपरवाह हो सकता हूँ। (राजेअ़ : 279)

٣٣٩١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا أَيُّوبُ يَغْتَسِلُ عُرْيَانًا خَرَّ عَلَيْهِ رِجْلُ جَرَادٍ مِنْ ذَهَبٍ، فَجَعَلَ يَحْثِي فِي ثَوْبِهِ فَنَادَى رَبُّهُ: يَا أَيُّوبُ أَلَمْ أَكُنْ أَغْنَيْتُكَ عَمَّا تَرَى؟ قَالَ : بَلَى يَا رَبِّ وَلَكِنْ لاَ غِنَى لِيْ عَنْ بَرَكَتِكَ)).
[راجع: ٢٧٩]

बाब 21 : (सूरह मरयम में अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया) और याद करो किताब (क़ुर्आन मजीद)

में मूसा (अलै.) को कि वो चुना हुआ बन्दा और रसूल व नबी था और मैंने तूर की दाहिनी तरफ़ से उन्हें आवाज़ दी और सरगोशी के लिये उन्हें नज़दीक बुलाया और उनके लिये अपनी मेहरबानी से हमने उनके भाई हारून (अलै.) को नबी बनाया। वाहिद,

٢١- بَابُ قَوْلِ اللهِ :

﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَى إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولاً نَبِيًّا. وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا﴾ كَلَّمَهُ. ﴿وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ

هَارُونَ نَبِيًّا﴾ يُقَالُ لِلْوَاحِدِ وَالاِثْنَيْنِ وَالْجَمِيْعِ : نَجِيٌّ. وَيُقَالُ : خَلَصُوا نَجِيًّا اعْتَزَلُوا نَجِيًّا، وَالْجَمِيْعُ أَنْجِيَةٌ يَتَنَاجَوْنَ.

तस्निया और जमा सबके लिये लफ़्ज़ नजिय्यन बोला जाता है। सूरह यूसुफ़ में है ख़लसू नजिय्यन या'नी अकेले में जाकर मश्विरा करने लगे (अगर नजिय्यन का लफ़्ज़ मुफ़रद के लिये इस्ते'माल हुआ हो तो) उसकी जमा अन्जियतुन होगी। सूरह मुजादिला में लफ़्ज़ यतनाजवना भी इसी से निकला है।

तश्रीह : इस्राईली पैग़म्बरों में हज़रत मूसा (अलै.) जलीलुल क़द्र साहिबे-शरीअत नबी हैं। उनके ज़िक्रे ख़ैर में क़ुर्आन मजीद की बेशतर आयात नाज़िल हुई हैं। उनकी पैदाइश और बाद की पूरी ज़िन्दगी क़ुदरते इलाही का बेहतरीन नमूना है। वक़्त की एक जाबिर हुकूमत से टक्कर लेना बल्कि उसका तख़्ता उलट देना ये हज़रत मूसा (अलै.) का वो कारनामा है जो रहती दुनिया तक याद रहेगा। अल्लाह पाक ने उन पर अपनी मुक़द्दस किताब तौरात नाज़िल फ़र्माई जिसके बारे में क़ुर्आन मजीद की शहादत है, **इन्ना अन्ज़ल्नत्तौरात फ़ीहा हुदव्वं नूर** (अल माइदा : 44)

٢٢ - بَابُ

﴿وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيْمَانَهُ - إِلَى - مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ﴾ [غافر : ٢٨].

बाब 22 : अल्लाह तआला ने फ़र्माया) और फ़िरऔन के ख़ानदान के एक मोमिन मर्द (शम्आन नामी) ने कहा जो अपने ईमान को पोशीदा रखे हुए था, अल्लाह तआला के इर्शाद मुस्रिफ़ कज़्ज़ाब तक।

٣٣٩٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ سَمِعْتُ عُرْوَةَ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا : ((فَرَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى خَدِيْجَةَ يَرْجُفُ فُؤَادُهُ، فَانْطَلَقَتْ بِهِ إِلَى وَرَقَةَ بْنِ نَوْفَلٍ - وَكَانَ رَجُلاً تَنَصَّرَ، يَقْرَأُ الإِنْجِيْلَ بِالْعَرَبِيَّةِ - فَقَالَ وَرَقَةُ: مَاذَا تَرَى؟ فَأَخْبَرَهُ، فَقَالَ وَرَقَةُ: هَذَا النَّامُوسُ الَّذِي أَنْزَلَ اللهُ عَلَى مُوسَى، وَإِنْ أَدْرَكَنِي يَوْمُكَ أَنْصُرْكَ نَصْرًا مُؤَزَّرًا)). النَّامُوسُ: صَاحِبُ السِّرِّ الَّذِي يُطْلِعُهُ بِمَا يَسْتُرُهُ عَنْ غَيْرِهِ.

[راجع: ٣]

3392. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने उर्वा बिन ज़ुबैर से सुना, उन्होंने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, फिर नबी करीम (ﷺ) (ग़ारे हिरा से) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के पास लौट आए तो आपका दिल धड़क रहा था। हजरत ख़दीजा (रज़ि.) आपको वरक़ा बिन नौफ़िल के पास ले गईं, वो नसरानी हो गये थे और इंजील को अरबी में पढ़ते थे। वरक़ा ने पूछा कि आप क्या देखते हैं? आपने उन्हें बताया तो उन्होंने कहा कि यही हैं वो नामूस जिन्हें अल्लाह तआला ने मूसा (अलै.) के पास भेजा था और अगर मैं तुम्हारे ज़माने तक जिन्दा रहा तो मैं तुम्हारी पूरी मदद करूँगा। नामूस महरमे राज़ को कहते हैं जो ऐसे राज़ से भी आगाह हो जो आदमी दूसरों से छुपाए। (राजेअ : 3)

٢٣ - بَابُ قَوْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ :

﴿وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيْثُ مُوسَى إِذْ رَأَى نَارًا - إِلَى قوله - بِالْوَادِي الْمُقَدَّسِ طُوًى﴾ [طه : ٩-١٢] ﴿آنَسْتُ﴾ أَبْصَرْتُ

बाब 23 : अल्लाह तआला का (सूरह ताहा) में फ़र्माना

ऐ नबी तू ने मूसा (अलै.) का क़िस्सा सुना है जब उन्होंने आग देखी। आख़िर आयत बिलवादिल मुक़द्दसि तुवा, तक। आनस्तु का मा'नी मैंने आग देखी (तुम यहाँ ठहरो) मैं उसमें से एक चिंगारी

﴿نَارًا لَعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ﴾ الآيَةَ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿الْمُقَدَّسِ﴾: الْمُبَارَكُ. ﴿طُوًى﴾: اسْمُ الْوَادِي. ﴿سِيرَتَهَا﴾: حَالَتَهَا. ﴿وَالنُّهَى﴾: التُّقَى. ﴿بِمَلْكِنَا﴾: بِأَمْرِنَا. ﴿هَوَى﴾: شَقِيَ. ﴿فَارِغًا﴾: إِلاَّ مِنْ ذِكْرِ مُوسَى. ﴿رِدْءًا﴾: كَيْ يُصَدِّقَنِي، وَيُقَالُ: مُغِيثًا، أَوْ مُعِينًا. ﴿يَبْطُشُ، وَيَبْطِشُ﴾. ﴿يَأْتَمِرُونَ﴾: يَتَشَاوَرُونَ. وَالْجِذْوَةُ. قِطْعَةٌ غَلِيظَةٌ مِنَ الْخَشَبِ لَيْسَ فِيهَا لَهَبٌ. ﴿سَنَشُدُّ﴾: سَنُعِينُكَ، كُلَّمَا عَزَّزْتَ شَيْئًا فَقَدْ جَعَلْتَ لَهُ عَضُدًا. وَقَالَ غَيْرُهُ: كُلَّمَا لَمْ يَنْطِقْ بِحَرْفٍ، أَوْ فِيهِ تَمْتَمَةٌ أَوْ فَأْفَأَةٌ فَهِيَ: ﴿عُقْدَةٌ﴾. ﴿أَزْرِي﴾: ظَهْرِي. ﴿فَيُسْحِتَكُمْ﴾: فَيُهْلِكَكُمْ. ﴿الْمُثْلَى﴾: تَأْنِيثُ الأَمْثَلِ، يَقُولُ: بِدِينِكُمْ، يُقَالُ: خُذِ الْمُثْلَى خُذِ الأَمْثَلَ. ﴿ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا﴾ يُقَالُ: هَلْ أَتَيْتَ الصَّفَّ الْيَوْمَ؟ يَعْنِي الْمُصَلَّى الَّذِي يُصَلَّى فِيهِ. ﴿فَأَوْجَسَ﴾: أَضْمَرَ خَوْفًا، فَذَهَبَتِ الْوَاوُ مِنْ ﴿خِيفَةً﴾ لِكَسْرَةِ الْخَاءِ. ﴿فِي جُذُوعِ النَّخْلِ﴾: عَلَى جُذُوعِ. ﴿خَطْبُكَ﴾: بَالُكَ. ﴿مِسَاسَ﴾: مَصْدَرُ مَاسَّهُ مِسَاسًا. ﴿لَنَنْسِفَنَّهُ﴾: لَنُذْرِيَنَّهُ ﴿الضَّحَاءُ﴾: الْحَرُّ. ﴿قُصِّيهِ﴾: اتَّبِعِي أَثَرَهُ، وَقَدْ يَكُونُ أَنْ تَقُصَّ الْكَلاَمَ ﴿نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ﴾. ﴿عَنْ جُنُبٍ﴾ عَنْ بُعْدٍ، وَعَنْ جَنَابَةٍ وَعَنِ اجْتِنَابٍ وَاحِدٌ.

तुम्हारे पास लेकर आता हूँ। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, मुक़द्दस का मा'नी मुबारक। तुवा उस वादी का नाम था जहाँ अल्लाह पाक ने ह़ज़रत मूसा (अलै.) से कलाम किया था। सीरतुहा या'नी पहली ह़ालत पर। नुहा या'नी परहेज़गारी। बिमल्किना या'नी अपने इख़्तियार से। हवा या'नी बदबख़्त हुआ। फ़ारिग़न या'नी मूसा के सिवा और कोई ख़्याल दिल में न रहा। रिदआ या'नी फ़रियादरस या मददगार। यब्तिशु बिज़म्मि ता और यब्तिश बिकसरि ता दोनों त़रह क़िरअत है। यातमिरून या'नी मश्वरा करते हैं। जिज़्वतन या'नी लकड़ी का एक मोटा टुकड़ा जिसमें से आग का शोला न निकले (सिर्फ़ उसके मुँह पर आग रोशन हो) सनशद्दु अज़ुदक या'नी तेरी मदद करेंगे। जब तू किसी चीज़ को ज़ोर दे गोया तूने उसको अ़ज़ुद बाज़ू दिया। (ये सब तफ़्सीरें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल हैं) औरों ने कहा उक़्दतुन का मा'नी ये है कि ज़ुबान से कोई ह़र्फ़ यहाँ तक कि तयाफ़ भी न निकल सके। अज़्री या'नी पीठ फ़युस्हितकुम या'नी तुमको हलाक करे। मुष़्ला, अम्ष़ल की मुअन्नष़ है। या'नी तुम्हारा दीन ख़राब करना चाहते हैं । अ़रब लोग कहते हैं। ख़ुज़िल मुष़्ला ख़ुज़िल अम्ष़ल या'नी अच्छी रविश, अच्छा त़रीक़ा सम्भाल। षुम्मा उइतू स़फ़्फ़ा या'नी क़तार बाँधकर आओ। अ़रब लोग कहते हैं आज तू स़फ़ में गया या नहीं या'नी नमाज़ के मुक़ाम पर। फ़औजस या'नी मूसा का दिल धड़कने लगा ख़ीफ़ता की अस़ल ख़वफ़ता थी वाव को बवजहे कसरा मा क़बल के य से बदल दिया गया, फ़ी जज़ूअन नख़्ल या'नी अ़ला जज़ूअन् नख़्ल। ख़त्बुका या'नी तेरा ह़ाल। मिसास मस़दर है मास्सा मिसास से। ला मिसास या'नी तुझको कोई न छुए, न तू किसी को छुए। लिनफ़्सिही या'नी हम उसको राख करके दरिया में उड़ा देंगे। ला तज़् ही जुहा से है या'नी गर्मी। क़ुस़्सीहि या'नी उसके पीछे पीछे चली जा कभी क़ुस़्स़ का मा'नी कहना और बयान करना भी आता है। (सूरह यूसुफ़ में) इसी से नह़नु नक़ुस़्सु अ़लयका नब्अहुम है। लफ़्ज़ अ़न जुनुब और अ़न् जनाबतुन सबका मा'नी एक ही है या'नी दूर से। मुजाहिद (रह.) ने कहा अ़ला क़दरि या'नी वा'दा पर। ला तनिया या'नी सुस्ती न करो। यबसा या'नी ख़ुश्क मिन ज़ीनतिल क़ौम।

قَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿عَلَى قَدَرٍ﴾: مَوعِدٍ. ﴿لاَ تَنِيَا﴾: لاَ تَضْعُفَا. ﴿يَبَسًا﴾: يَابِسًا. ﴿مِنْ زِيْنَةِ الْقَومِ﴾: الْحُلِيُّ الَّذِي اسْتَعَارُوا مِنْ آلِ فِرْعَونَ. ﴿فَقَذَفْتُهَا﴾: أَلْقَيْتُهَا. ﴿أَلْقَى﴾: صَنَعَ ﴿فَنَسِيَ﴾: مُوسَى: هُمْ يَقُولُونَهُ الرَّبُّ أَنْ لاَ يَرْجِعَ إِلَيْهِمْ قَولاً فِي الْعِجْلِ.

या'नी ज़ेवर में से जो बनी इस्राईल न फ़िरऑन वालों से मांगकर लिये थे। फ़क़ज़फ़तहा या'नी मैंने उसको डाल दिया। अल्क़ा या'नी बनाया। फ़ नसिय उसका मतलब ये है कि सामरी और उसके लोग कहते हैं कि मूसा (अलै.) ने ग़लती की जो उस बछड़े को अल्लाह न समझकर दूसरी जगह चल दिया। इन्ना ला यरजिउ इलयहिम क़ौला। या'नी वो बछड़ा उनकी बात का जवाब नहीं दे सकता था।

तशरीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ क़ुर्आन मजीद के बहुत से उन अल्फ़ाज़ की वज़ाहत फ़र्माई है जो मुख़्तलिफ़ आयात में ज़िक्रे-मूसा (अलै.) के सिलसिले से वारिद हुआ है। क़ुर्आन पाक का मुताअला करने वालों के लिये मौक़ा ब मौक़ा उन अल्फ़ाज़ का समझना भी ज़रूरी है और ऐसे शाएक़ीने किराम के लिये बुख़ारी शरीफ़ के उस मुक़ाम से बेहतरीन रोशनी मिल सकेगी। अल्लाह पाक हर मुसलमान मर्द और औरत को क़ुर्आन पाक और बुख़ारी शरीफ़ का मुतालआ करने और ग़ौर व तदब्बुर के साथ उनको समझने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए आमीन। ये बात हर भाई को याद रखनी चाहिए कि क़ुर्आन व हदीष़ के समझने के लिये सरसरी मुतालआ काफ़ी नहीं है। जो लोग महज़ सरसरी मुतालआ करके उन पाकीज़ा उलूम के माहिर बनना चाहते हैं वो एक ख़तरनाक ग़लती में मुब्तला हैं बल्कि क़ुर्आन व हदीष़ को गहरी निगाह से बार बार मुतालआ करने की ज़रूरत है। सच है, **वल्लज़ीन जाहदू फ़ीना लनहदियन्नहुम सुबुलना** (अल अन्कबूत : 69) आयते शरीफ़ा के मज़्कूरा मुजाहदा में किताब व सुन्नत का बनज़रे बसीरत गहरा मुतालआ करना भी दाख़िल है। वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

٣٣٩٣- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ صَعْصَعَةَ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ حَدَّثَهُمْ عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِيَ بِهِ، حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الْخَامِسَةَ فَإِذَا هَارُونُ، قَالَ: هَذَا هَارُونُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ)). تَابَعَهُ ثَابِتٌ وَعَبَّادُ بْنُ أَبِي عَلِيٍّ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٣٢٠٧]

3393. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उनसे हज़रत मालिक बिन सअसआ (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे उस रात के मुता'ल्लिक़ बयान किया जिसमें आपको मेअराज हुआ कि जब आप पाँचवें आसमान पर तशरीफ़ ले गए तो वहाँ हारून (अलै.) से मिले। जिब्राईल (अलै.) ने बताया कि ये हारून (अलै.) हैं, उन्हें सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया तो उन्होंने जवाब देते हुए फ़र्माया, ख़ुश आमदीद, सालेह भाई और सालेह नबी। इस हदीष़ को क़तादा के साथ ष़ाबित बिनानी और अब्बाद बिन अबी अली ने भी अनस (रज़ि.) से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ : 3207)

कुछ नुस्ख़ों में इस मुक़ाम पर बाब नम्बर 22 जो गुज़िश्ता सफ़्हात में गुज़रा है बयान हुआ है। अल्बत्ता उसके तहत कोई हदीष़ ज़िक्र नहीं हुई।

٢٤- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

बाब 24 : (सूरह ताहा में) अल्लाह तआला का

फ़र्मान और क्या तुझको मूसा का वाक़िया मा'लूम हुआ है और (सूरह निसा में) अल्लाह तआला ने मूसा (अलै.) से कलाम किया।

﴿وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى - وَكَلَّمَ اللهُ مُوسَى تَكْلِيمًا﴾

अल्लाह का कलाम करना बरहक़ है जिस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है और उसमें कुरेद करना बिदअत है।

3394. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस रात की कैफ़ियत बयान की जिसमें आपको मेअराज हुआ कि मैंने मूसा (अलै.) को देखा कि वो एक दुबले पतले सीधे बालों वाले आदमी हैं। ऐसा मा'लूम होता था कि क़बीला शन्वह में से हों और मैंने ईसा (अलै.) को भी देखा, वो म्याना क़द और निहायत सुर्ख़ व सफ़ेद रंग वाले थे। ऐसे तरोताज़ा और पाक व साफ़ कि मा'लूम होता था कि अभी ग़ुस्लख़ाना से निकले हैं और मैं इब्राहीम (अलै.) से उनकी औलाद में सबसे ज़्यादा मुशाबेह हूँ। फिर दो बर्तन मेरे सामने लाए गये। एक में दूध था और दूसरे में शराब थी। जिब्रईल (अलै.) ने कहा कि दोनों चीज़ों में से आपका जो जी चाहे पीजिए, मैंने दूध का प्याला अपने हाथ में ले लिया और उसे पी गया। मुझसे कहा गया कि आपने फ़ितरत को इख़्तियार किया (दूध आदमी की पैदाइशी ग़िज़ा है) अगर उसके बजाय आपने शराब पी होती तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती। (दीगर मक़ाम : 3437, 4709, 5576, 5603)

٣٣٩٤- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِي رَأَيْتُ مُوسَى وإِذَا رَجُلٌ ضَرْبٌ رَجِلٌ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنُوءَةِ، وَرَأَيْتُ عِيسَى فَإِذَا رَجُلٌ رَبْعَةٌ أَحْمَرُ كَأَنَّمَا خَرَجَ مِنْ دِيمَاسٍ، وَأَنَا أَشْبَهُ وَلَدِ إِبْرَاهِيمَ بِهِ. ثُمَّ أُتِيتُ بِإِنَاءَيْنِ فِي أَحَدِهِمَا لَبَنٌ وَفِي الآخَرِ خَمْرٌ فَقَالَ: اشْرَبْ أَيَّهُمَا شِئْتَ، فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ فَشَرِبْتُهُ، فَقِيلَ: أَخَذْتَ الْفِطْرَةَ، أَمَا إِنَّكَ لَوْ أَخَذْتَ الْخَمْرَ غَوَتْ أُمَّتُكَ)).

[أطرافه في: ٣٤٣٧، ٤٧٠٩، ٥٥٧٦، ٥٦٠٣].

3395. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अबुल आलिया ने बयान किया और उनसे तुम्हारे नबी के चचाज़ाद भाई या'नी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया किसी शख़्स को यूँ न कहना चाहिये कि मैं यूनुस बिन मत्ता से बेहतर हों, हुज़ूर (ﷺ) ने उनका नाम उनके वालिद की तरफ़ मन्सूब करके लिया। (दीगर मक़ाम : 3413, 4630, 7539)

٣٣٩٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ: قَالَ سَمِعْتُ أَبَا الْعَالِيَةِ حَدَّثَنَا ابْنُ عَمِّ نَبِيِّكُمْ - يَعْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ - عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ: أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنَ مَتَّى. وَنَسَبَهُ إِلَى أَبِيهِ)).

[أطرافه في: ٣٤١٣، ٤٦٣٠، ٧٥٣٩].

3396. और हुज़ूर (ﷺ) ने शबे मेअराज का ज़िक्र करते हुए

٣٣٩٦- وَذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ

فَقَالَ: ((مُوسَى آدَمُ طُوَالٌ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنُوءَةَ. وَقَالَ: عِيسَى جَعْدٌ مَرْبُوعٌ، وَذَكَرَ مَالِكًا خَازِنَ النَّارِ، وَذَكَرَ الدَّجَّالَ)). [ر حع: ٣٢٣٩]

फ़र्माया कि मूसा (अलै.) गुन्दमी रंग और लम्बे कद के थे। ऐसा मा'लूम होता था जैसे क़बीला शनूआ के कोई स़ाहब हों और फ़र्माया कि ईसा (अलै.) घुँघराले बाल वाले और म्याना क़द के थे और हुज़ूर (ﷺ) ने जहन्नम के दारोग़ा मालिक का भी ज़िक्र किया और दज्जाल का भी। (राजेअ़ : 3239)

٣٣٩٧ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ السَّخْتِيَانِيُّ عَنِ ابْنِ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ وَجَدَهُمْ يَصُومُونَ يَوْمًا - يَعْنِي عَاشُورَاءَ - فَقَالُوا: هَذَا يَوْمٌ عَظِيمٌ، وَهُوَ يَوْمٌ نَجَّى اللهُ فِيهِ مُوسَى، وَأَغْرَقَ آلَ فِرْعَوْنَ، فَصَامَ مُوسَى شُكْرًا لِلَّهِ. فَقَالَ: أَنَا أَوْلَى بِمُوسَى مِنْهُمْ، فَصَامَهُ وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ)). [راجع: ٢٠٠٤]

3397. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर के स़ाहबज़ादे (अ़ब्दुल्लाह) ने अपने वालिद से और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो वहाँ के लोग एक दिन या'नी आ़शूरा के दिन रोज़ा रखते थे। उन लोगों (यहूदियों) ने बताया कि ये बड़ी अ़ज़्मत वाला दिन है, उसी दिन अल्लाह तआ़ला ने मूसा (अलै.) को नजात दी थी और आले फ़िरऔन को ग़र्क़ किया था। उसके शुक्र में मूसा (अलै.) ने इस दिन का रोज़ा रखा था। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं मूसा (अलै.) का इनसे ज़्यादा क़रीब हूँ। चुनाँचे आपने ख़ुद भी उस दिन का रोज़ा रखना शुरू किया और स़हाबा को भी उसका हुक्म दिया। (राजेअ़ : 2004)

इन जुम्ला मरवियात में ह़ज़रत मूसा (अलै.) का ज़िक्रे ख़ैर वारिद हुआ है। अह़ादीष़ और बाब में यही मुनासबत है। दीगर उमूरे मज़्कूरा ज़िम्नन ज़िक्र में आ गये हैं।

٢٥ - بَابٌ

बाब 25 :

قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَوَاعَدْنَا مُوسَى ثَلاَثِينَ لَيْلَةً وَأَتْمَمْنَاهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً. وَقَالَ مُوسَى لأَخِيهِ هَارُونَ: اخْلُفْنِي فِي قَوْمِ وَأَصْلِحْ، وَلاَ تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ. وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ: رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ، قَالَ: لَنْ تَرَانِي - إِلَى قَوْلِهِ - وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ﴾. يُقَالُ دَكَّهُ: زَلْزَلَهُ فَدُكَّتَا، فَدُكِكْنَ جَعَلَ الْجِبَالَ كَالْوَاحِدَةِ كَمَا قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: ﴿إِنَّ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ

सूरह आ़राफ़ में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, और हमने मूसा से तीस रात का वा'दा किया फिर उसमें दस रातों का और इज़ाफ़ा कर दिया और इस तरह उनके रब की मेअ़याद चालीस रातें पूरी कर दीं। और मूसा (अलै.) ने अपने भाई हारून (अलै.) से कहा कि मेरी ग़ैर मौजूदगी में मेरी क़ौम में मेरे ख़लीफ़ा रहो। और उनके साथ नरम रविय्या रखना और मुफ़्सिदों के रास्ते पर मत चलना। फिर जब मूसा (अलै.) हमारे ठहराए हुए वक़्त पर (एक चिल्ला के) बाद आए और उनके रब ने उनसे बातचीत की तो उन्होंने अ़र्ज़ किया मेरे परवरदिगार! मुझे अपना दीदार करा कि मैं तुझको देख लूँ। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि तुम मुझे हर्गिज़ न देख सकोगे, अल्लाह तआ़ला के आख़िर इर्शाद व अना अव्वलुल मूमिनीन तक। अ़रब लोग बोलते हैं दक्का या'नी उसे हिला दिया। इसी से है (सूरह ह़ाक्क़ा में) फ़दुक्कता दक्कतवं वाह़िदा तस़्निया का सेग़ा इस तरह दुरुस्त

हुआ कि यहाँ पहाड़ों को एक चीज़ फ़र्ज़ किया और ज़मीन को एक चीज़ क़ायदे के मुवाफ़िक़ यूँ होना था फ़दकक्ना बसेग़ा जमा। उसकी मिष़ाल वो है जो सूरह अंबिया में है, इन्नस् समावाति वल अरज़ि कानता रत्क़ा और यूँ नहीं फ़र्माया कुन रतक़ा बसेग़ा जमा (हालाँकि क़यास यही चाहता था) रत्क़ा के मा'नी जुड़े हुए मिले हुए। उश्रिबू (जो सूरह बक़रः में है) उस शरिब से निकला है जो रंगने के मा'नों में आता है जैसे अरब लोग कहते हैं ष़ौबुन मुशर्रबुन या'नी रंगा हुआ कपड़ा (सूरह अअ़राफ़ में) नतक़्ना का मा'नी हमने उठा लिया।

كَانَتَا رَتْقًا﴾ وَلَمْ يَقُلْ كُنَّ رَتْقًا: مُلْتَصِقَتَيْنِ. ﴿أُشْرِبُوا﴾ ثَوْبٌ مُشَرَّبٌ مَصْبُوغٌ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿انْبَجَسَتْ﴾ انْفَجَرَتْ. ﴿وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ﴾ : رَفَعْنَا.

3398. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे अ़म्र बिन यह्या ने, उनसे उनके वालिद यह्या बिन अ़म्मारा ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन सब लोग बेहोश हो जाएँगे, फिर सबसे पहले मैं होश में आऊँगा और देखूँगा कि मूसा अ़र्श के पायों में से एक पाया थामे हुए हैं। अब मुझे ये मा'लूम नहीं कि वो मुझसे पहले होश में आ गये होंगे या (बेहोश ही नहीं किये गये होंगे बल्कि) उन्हें कोहे तूर की बेहोशी का बदला मिला होगा। (राजेअ़ : 2412)

٣٣٩٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((النَّاسُ يَصْعَقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفِيْقُ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى آخِذٌ بِقَائِمَةٍ مِنْ قَوَائِمِ الْعَرْشِ، فَلاَ أَدْرِي أَفَاقَ قَبْلِي أَمْ جُوزِيَ بِصَعْقَةِ الطُّورِ)).[راجع: ٢٤١٢]

3399. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जोअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर बनी इस्राईल न होते (सल्वा का गोश्त जमा न करते) तो गोश्त कभी न सड़ता। और अगर हव्वा न होतीं (या'नी हज़रत आदम अलै. से दग़ा न करतीं) तो औरत अपने शौहर की ख़यानत कभी न करती।

٣٣٩٩- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ لاَ بَنُو إِسْرَائِيْلَ لَمْ يَخْنَزِ اللَّحْمُ، وَلَوْلاَ حَوَّاءُ لَمْ تَخُنْ أُنْثَى زَوْجَهَا الدَّهْرَ)).

मत़लब ये है कि गोश्त को जमा करने की आदत बनी इस्राईल में पैदा हुई। पस गोश्त सड़ना शुरू हो गया। अगर ये आदत इख़्तियार न करते तो और गोश्त को बरवक़्त खा लिया जाता तो उसके सड़ने का सवाल ही पैदा न होता। इसी त़रह हज़रत हव्वा (अलै.) हज़रत आदम (अलै.) से दग़ा न करतीं तो उनकी बेटियों में भी ये आदत पैदा न होती। अल्लाह पाक मुंकिरीने ह़दीष़ को समझ दे कि फ़हमे ह़दीष़ के लिये वो अ़क़्ले सलीम से काम लें।

बाब 26 सूरह अअ़राफ़ में तूफ़ान से मुराद सैलाब का तूफ़ान है बकष़रत अम्वात को भी तूफ़ान कहते हैं

٢٦- بَابُ طُوفَانٍ مِنَ السَّيْلِ وَيُقَالُ: لِلْمَوتِ الْكَثِيْرِ : طُوفَانٌ

﴿الْقُمَّلُ﴾: الْحُمْنَانُ يُشْبِهُ صِغَارَ الْحَلَمِ. ﴿حَقِيقٌ﴾ حَقٌّ. ﴿سُقِطَ﴾: كُلُّ مَنْ نَدِمَ فَقَدْ سُقِطَ فِي يَدِهِ.

अल्कुम्मल उस चीचड़ी को कहते हैं जो छोटी जूँ के मुशाबेह होती है। हक़ीक़ बमा'नी हक़ लाज़िम। सुक़ित बमा'नी नादिम हुआ। जो शख़्स शर्मिन्दा होता है उसके लिये अरब लोग कहते हैं सुक़ित फ़ियदिही तो (गोया) वो अपने हाथ में गिर पड़ा।

तश्रीह : या'नी कभी हाथ को दांतों से शिद्दते ग़म में काटता है और कभी हाथ से दूसरी हरकतें करता है जो ग़म व अलम को ज़ाहिर करती हैं। सूरह अअराफ़ की पूरी आयत ये है। **फ़अर्सल्ना अलैहिमुत्तूफ़ान वल्जराद वल्कुम्मल वज़्ज़फ़ादिअ वद्दम आयातिन मुफ़स्सलातिन फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम्मुज्रिमीन** (अल आराफ़ : 33) या'नी हमने फ़िरऔनियों पर तूफ़ान का अज़ाब नाज़िल किया (एक हफ़्ता बराबर पानी बरसता रहा) और टिड्डी दल भेजा और जूएँ और मेंढ़क बकष़रत पैदा हो गये और ख़ून का अज़ाब नाज़िल किया जो हमारी क़ुदरत के खुले हुए निशानात थे। उन सबको देखते हुए भी वो लोग मुतकब्बिर और मुजरिम ही बने रहे। उन अज़ाबों का ज़िक्र तौरात में भी आया है। नीज़ लिखा है कि दरिया-ए-नील का पानी लहू की तरह हो गया था और तमाम मछलियाँ मर गई थीं (ख़ुरूज) हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ पर उन ही से मुता'ल्लिक़ चन्द अल्फ़ाज़ की वज़ाहत की है।

٢٧- بَابُ حَدِيْثُ الْخَضِرِ مَعَ مُوسَى عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ

बाब 27 : हज़रत ख़िज़्र और हज़रत मूसा (अलै.) के वाक़िआत

٣٤٠٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ أَخْبَرَهُ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ تَمَارَى هُوَ وَالْحُرُّ بْنُ قَيْسٍ الْفَزَارِيُّ فِي صَاحِبِ مُوسَى، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: هُوَ خَضِرٌ، فَمَرَّ بِهِمَا أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ، فَدَعَاهُ ابْنُ عَبَّاسٍ فَقَالَ: إِنِّي تَمَارَيْتُ أَنَا وَصَاحِبِيْ هَذَا فِي صَاحِبِ مُوسَى الَّذِيْ سَأَلَ السَّبِيْلَ إِلَى لُقِيِّهِ، هَلْ سَمِعْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَذْكُرُ شَأْنَهُ؟ قَالَ: نَعَمْ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَمَا مُوسَى فِي مَلأٍ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: هَلْ تَعْلَمُ أَحَدًا أَعْلَمَ مِنْكَ؟ قَالَ: لاَ. فَأَوْحَى اللهُ إِلَى مُوسَى: بَلَى عَبْدُنَا خَضِرٌ،

3400. हमसे अम्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि हुर बिन क़ैस फ़ुज़ारी (रज़ि.) से स़ाहिबे मूसा (अलै.) के बारे में उनका इख़्तिलाफ़ हुआ। फिर हज़रत उबई बिन कअब (रज़ि.) वहाँ से गुज़रे तो अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने उन्हें बुलाया और कहा कि मेरा अपने उन साथी से स़ाहिबे मूसा के बारे में इख़्तिलाफ़ हो गया है जिनसे मुलाक़ात के लिये मूसा (अलै.) ने रास्ता पूछा था, क्या रसूलल्लाह (ﷺ) से आपने उनके बारे में कुछ सुना है? उन्होंने कहा जी हाँ, मैंने हुज़ूर (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि मूसा (अलै.) बनी इस्राईल की एक जमाअत में तशरीफ़ रखते थे कि एक शख़्स ने उनसे पूछा, क्या आप किसी ऐसे शख़्स को जानते हैं जो इस तमाम ज़मीन पर आपसे ज़्यादा इल्म रखने वाला हो? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं। इस पर अल्लाह तआला ने मूसा (अलै.) पर वह्य नाज़िल की कि क्यूँ नहीं, हमारा बन्दा ख़िज़्र है। मूसा (अलै.) ने उन तक पहुँचने का

فَسَأَلَ مُوسَى السَّبِيلَ إِلَيْهِ، فَجُعِلَ لَهُ الْحُوتُ آيَةً، وَقِيلَ لَهُ: إِذَا فَقَدْتَ الْحُوتَ فَارْجِعْ فَإِنَّكَ سَتَلْقَاهُ، فَكَانَ يَتْبَعُ الْحُوتَ فِي الْبَحْرِ، فَقَالَ لِمُوسَى فَتَاهُ: أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيهِ إِلاَّ الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ. فَقَالَ مُوسَى: ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي، فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا، فَوَجَدَا خَضِرًا، فَكَانَ مِنْ شَأْنِهِمَا الَّذِي قَصَّ اللهُ فِي كِتَابِهِ)). [راجع: ٧٤]

रास्ता पूछा ता उन्हें मछली को उसकी निशानी के तौर पर बताया गया और कहा गया कि जब मछली गुम हो जाए (तो जहाँ गुम हुई हो वहाँ) वापस आ जाना वहीं उनसे मुलाक़ात होगी। चुनाँचे मूसा (अलै.) दरिया में (सफ़र के दौरान) मछली की बराबर निगरानी करते रहे। फिर उनसे उनके रफ़ीक़े सफ़र ने कहा कि आपने ख़याल नहीं किया जब हम चट्टान के पास ठहरे तो मैं मछली के बारे में आपको बताना भूल गया था और मुझे शैतान ने उसे याद रखने से ग़ाफ़िल रखा। मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि उसी की तो हमें तलाश है चुनाँचे ये बुज़ुर्ग उसी रास्ते से पीछे की तरफ़ लौटे और हज़रत ख़िज़्र (अलै.) से मुलाक़ात हुई उन दोनों के वो हालात हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपनी किताब में बयान फ़र्माया है। (राजेअ : 74)

तश्रीह : क़ुर्आन मजीद की सूरह कहफ़ में हज़रत ख़िज़्र और हज़रत मूसा (अलै.) की उस मुलाक़ात का ज़िक्र तफ़्सील से आया है। वहाँ मुतालआ करने से मा'लूम होगा कि बहुत से ज़ाहिरी उमूर क़ाबिले ए'तिराज़ नज़र आ जाते हैं मगर उनकी हक़ीक़त खुलने पर उनका हक़ होना तस्लीम करना पड़ता है। इसलिये फ़त्वा देने में हर हर पहलू पर ग़ौर करना ज़रूरी होता है। अल्लाह पाक उलमा व फ़ुक़हा सबको नेक समझ अता करे कि वो हज़रत ख़िज़्र और हज़रत मूसा (अलै.) के वाक़िया से बसीरत हासिल करें। आमीन।

٣٤٠١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ قَالَ: ((قُلْتُ لابْنِ عَبَّاسٍ إِنَّ نَوْفًا الْبَكَالِيَّ يَزْعُمُ أَنَّ مُوسَى صَاحِبَ الْخَضِرِ لَيْسَ هُوَ مُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ، إِنَّمَا هُوَ مُوسَى آخَرُ، فَقَالَ: كَذَبَ عَدُوُّ اللهِ، حَدَّثَنَا أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : أَنَّ مُوسَى قَامَ خَطِيبًا فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ فَسُئِلَ : أَيُّ النَّاسِ أَعْلَمُ؟ فَقَالَ: أَنَا. فَعَتَبَ اللهُ عَلَيْهِ إِذْ لَمْ يَرُدَّ الْعِلْمَ إِلَيْهِ فَقَالَ لَهُ : بَلَى، لِي عَبْدٌ بِمَجْمَعِ الْبَحْرَيْنِ هُوَ أَعْلَمُ مِنْكَ. قَالَ : أَيْ رَبِّ وَمَنْ لِي بِهِ؟ - وَرُبَّمَا قَالَ

3401. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय्ना ने बयान किया, कहा हमसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मुझे सईद बिन जुबैर ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से अर्ज़ किया कि नौफ़ बक्काली ये कहता है कि मूसा, साहब ख़िज़्र बनी इस्राईल के मूसा नहीं हैं बल्कि वो दूसरे मूसा हैं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह के दुश्मन ने बिलकुल ग़लत बात कही है। हज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते हुए हमसे बयान किया कि मूसा (अलै.) बनी इस्राईल को खड़े होकर ख़िताब फ़र्मा रहे थे कि उनसे पूछा गया कौनसा शख़्स सबसे ज़्यादा इल्म वाला है, उन्होंने फ़र्माया कि मैं। इस पर अल्लाह तआला ने उन पर इताब (गुस्सा) फ़र्माया क्योंकि उन्होंने इल्म की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं की। अल्लाह तआला ने उनसे फ़र्माया कि क्यूँ नहीं मेरा एक बन्दा है जहाँ दो दरिया आकर मिलते हैं वहाँ रहता है और तुमसे ज़्यादा इल्म वाला है। उन्होंने अर्ज़

किया ऐ रब्बुल आलमीन! मैं उनसे किस तरह मिल सकूँगा? सुफ़यान ने (अपनी रिवायत में ये अल्फ़ाज़) बयान किये कि, ऐ रब! वकीफ़ ली बह, अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि एक मछली पकड़कर उसे अपने थैले में रख लेना, जहाँ वो मछली गुम हो जाए बस मेरा वो बन्दा वहीं तुमको मिलेगा। कुछ दफ़ा रावी ने (बजाय फ़हुवा षम्मा) ... कहा। चुनाँचे मूसा (अलै.) ने मछली ले ली और उसे एक थैले में रख लिया। फिर वो और एक उनके रफ़ीक़े सफ़र यूशा बिन नून रवाना हुए, जब ये चट्टान पर पहुँचे तो सर से टेक लगाई, मूसा (अलै.) को नींद आ गई और मछली तड़पकर निकली और दरिया के अंदर चली गई और उसने दरिया में अपना रास्ता बना लिया। अल्लाह तआ़ला ने मछली से पानी के बहाव को रोक दिया और वो मेहराब की तरह हो गई, उन्होंने वाज़ेह किया कि यूँ मेहराब की तरह। फिर ये दोनों उस दिन और रात के बाक़ी हिस्से में चलते रहे, जब दूसरा दिन आया तो मूसा (अलै.) ने अपने रफ़ीक़े सफ़र से फ़र्माया कि अब हमारा खाना लाओ क्योंकि हम अपने इस सफ़र में बहुत थक गये हैं। मूसा (अलै.) ने उस वक़्त तक कोई थकान महसूस नहीं की थी जब तक वो उस मुक़र्ररा जगह से आगे न बढ़ गये जिसका अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हुक्म दिया था। उनके रफ़ीक़ ने कहा कि देखिए तो सही जब हम चट्टान पर उतरे थे तो मैं मछली (के बारे में कहना) आपसे भूल गया और मुझे उसकी याद से शैतान ने ग़ाफ़िल रखा और उस मछली ने तो वहीं (चट्टान के क़रीब) दरिया में अपना रास्ता अजीब तौर पर बना लिया था। मछली को तो रास्ता मिल गया और ये दोनों हैरान थे। मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि यही वो जगह थी जिसकी तलाश में हम निकले हैं। चुनाँचे ये दोनों उसी रास्ते से पीछे की तरफ़ वापस हुए और जब उस चट्टान पर पहुँचे तो वहाँ एक बुज़ुर्ग अपना सारा जिस्म एक कपड़े में लपेटे हुए मौजूद थे। हज़रत मूसा (अलै.) ने उन्हें सलाम किया और उन्होंने जवाब दिया फिर कहा कि तुम्हारे ख़ित्ते में सलाम का रिवाज कहाँ से आ गया? मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि मैं मूसा हूँ। उन्होंने पूछा, बनी इस्राईल के मूसा? फ़र्माया कि जी हाँ। मैं आपकी ख़िदमत में इसलिये हाज़िर हुआ हूँ कि आप

سُفْيَانُ: أَيْ رَبِّ وَكَيْفَ لِيْ بِهِ؟- قَالَ: تَأْخُذُ حُوتًا فَتَجْعَلَهُ فِي مِكْتَلٍ، حَيْثُمَا فَقَدْتَ الْحُوتُ فَهُوَ ثَمَّ - وَرُبَّمَا قَالَ: فَهُوَ ثَمَّهْ - وَأَخَذَ حُوتًا فَجَعَلَهُ فِي مِكْتَلٍ ثُمَّ انْطَلَقَ هُوَ وَفَتَاهُ يُوشَعُ بْنُ نُونٍ حَتَّى أَتَيَا الصَّخْرَةَ وَضَعَا رُؤُوسَهُمَا، فَرَقَدَ مُوسَى، وَاضْطَرَبَ الْحُوتُ فَخَرَجَ فَسَقَطَ فِي الْبَحْرِ، فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا، فَأَمْسَكَ اللهُ عَنِ الْحُوتِ جِرْيَةَ الْمَاءِ فَصَارَ مِثْلَ الطَّاقِ - فَقَالَ: هَكَذَا مِثْلُ الطَّاقِ - فَانْطَلَقَا يَمْشِيَانِ بَقِيَّةَ لَيْلَتِهِمَا وَيَوْمِهِمَا، حَتَّى إِذَا كَانَ مِنَ الْغَدِ قَالَ لِفَتَاهُ : آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا. وَلَمْ يَجِدْ مُوسَى النَّصَبَ حَتَّى جَاوَزَ حَيْثُ أَمَرَهُ اللهُ. قَالَ لَهُ فَتَاهُ: أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيْتُ الْحُوتَ، وَمَا أَنْسَانِيْهِ إِلاَّ الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ، وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا، فَكَانَ لِلْحُوتِ سَرَبًا وَلَهُمَا عَجَبًا. قَالَ لَهُ مُوسَى : ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي، فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا - رَجَعَا يَقُصَّانِ آثَارَهُمَا - حَتَّى انْتَهَيَا إِلَى الصَّخْرَةِ، فَإِذَا رَجُلٌ مُسَجًّى بِثَوبٍ، فَسَلَّمَ مُوسَى، فَرَدَّ عَلَيْهِ فَقَالَ: وَأَنَّي بِأَرْضِكَ السَّلاَمُ قَالَ: أَنَا مُوسَى، قَالَ مُوسَى بَنِي إِسْرَائِيْلَ؟ قَالَ: نَعَمْ، أَتَيْتُكَ لِتُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا. قَالَ: يَا مُوسَى إِنِّي عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللهِ

मुझे वो नफ़ाबख़्श इल्म सिखा दें जो आपको सिखलाया गया है। उन्होंने फ़र्माया ऐ मूसा! मेरे पास अल्लाह का दिया हुआ एक इल्म है अल्लाह तआला ने मुझे वो इल्म सिखाया है और आप उसको नहीं जानते। इसी तरह आपके पास अल्लाह का दिया हुआ एक इल्म है अल्लाह तआला ने आपको सिखाया है और मैं उसे नहीं जानता। मूसा (अलै.) ने कहा क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ उन्होंने कहा कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर पाएँगे और वाक़ई आप उन कामों के बारे में सब्र कर भी कैसे सकते हैं जो आपके इल्म में नहीं हैं। अल्लाह तआला का इर्शाद है इम्रन तक आख़िर मूसा और ख़िज़्र (अलै.) दरिया के किनारे किनारे चले। फिर उनके करीब से एक कश्ती गुज़री। उन हज़रात ने कहा कि उन्हें भी कश्ती वाले कश्ती पर सवार कर लें। कश्ती वालों ने ख़िज़्र (अलै.) को पहचान लिया और कोई मज़दूरी लिये बग़ैर उनको सवार कर लिया। जब ये हज़रात उस पर सवार हो गये तो एक चिड़िया आई और कश्ती के एक किनारे बैठकर उसने पानी में अपनी चोंच को एक या दो मर्तबा डाला। ख़िज़्र (अलै.) ने फ़र्माया ऐ मूसा! मेरे और आपके इल्म की वजह से अल्लाह के इल्म में इतनी भी कमी नहीं हुई जितनी इस चिड़िया के दरिया में चोंच मारने से दरिया के पानी में कमी हुई होगी। इतने में ख़िज़्र (अलै.) ने कुल्हाड़ी उठाई और उसी कश्ती में से एक तख़्ता निकाल लिया, मूसा (अलैहि.) ने नज़र उठाई तो वो अपनी कुल्हाड़ी से तख़्ता निकाल चुके थे। इस पर हज़रत मूसा (अलै.) बोल पड़े कि ये आपने क्या किया? जिन लोगों ने हमें बग़ैर किसी उजरत के सवार कर लिया उन्हीं की कश्ती पर आपने बुरी नज़र डाली और उसे चीर दिया कि सारे कश्ती वाले डूब जाएँ। उसमें कोई शुब्हा नहीं कि आपने निहायत नागवार काम किया। हज़रत ख़िज़्र (अलै.) ने फ़र्माया, क्या मैंने आपसे पहले ही नहीं कह दिया था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते। मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि (ये बेसब्री अपने वा'दा को भूल जाने की वजह से हुई, इसलिये) आप उस चीज़ का मुझसे मुवाख़िज़ा न करें जो मैं भूल गया था और मेरे मामले में तंगी न करें। ये पहली बात हज़रत मूसा (अलै.) से भूल

عَلَّمَنِيهُ اللهُ لاَ تَعْلَمُهُ، وَأَنْتَ عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللهِ عَلَّمَكَهُ اللهُ لاَ أَعْلَمُهُ. قَالَ: هَلْ أَتَّبِعُكَ؟ قَالَ: إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا، وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَى مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا - إِلَى قَوْلِهِ - إِمْرًا. فَانْطَلَقَا يَمْشِيَانِ عَلَى سَاحِلِ الْبَحْرِ، فَمَرَّتْ بِهِمَا سَفِينَةٌ كَلَّمُوهُمْ أَنْ يَحْمِلُوهُمْ، فَعَرَفُوا الْخَضِرَ فَحَمَلُوهُ بِغَيْرِ نَوْلٍ. فَلَمَّا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ جَاءَ عُصْفُورٌ فَوَقَعَ عَلَى حَرْفِ السَّفِينَةِ، فَنَقَرَ فِي الْبَحْرِ نَقْرَةً أَوْ نَقْرَتَيْنِ، قَالَ لَهُ الْخَضِرُ : يَا مُوسَى، مَا نَقَصَ عِلْمِي وَعِلْمُكَ مِنْ عِلْمِ اللهِ إِلاَّ مِثْلَ مَا نَقَصَ هَذَا الْعُصْفُورُ بِمِنْقَارِهِ مِنَ الْبَحْرِ. إِذْ أَخَذَ الْفَأْسَ فَنَزَعَ لَوْحًا، فَلَمْ يَفْجَأْ مُوسَى إِلاَّ وَقَدْ قَلَعَ لَوْحًا بِالْقَدُّومِ، فَقَالَ لَهُ مُوسَى: مَا صَنَعْتَ؟ قَوْمٌ حَمَلُونَا بِغَيْرِ نَوْلٍ عَمَدْتَ إِلَى سَفِينَتِهِمْ فَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا، لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا. قَالَ: أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا؟ قَالَ: لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ، وَلاَ تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا. فَكَانَتِ الأُولَى مِنْ مُوسَى نِسْيَانًا. فَلَمَّا خَرَجَا مِنَ الْبَحْرِ مَرُّوا بِغُلاَمٍ يَلْعَبُ مَعَ الصِّبْيَانِ، فَأَخَذَ الْخَضِرُ بِرَأْسِهِ فَقَلَعَهُ بِيَدِهِ هَكَذَا - وَأَوْمَأَ سُفْيَانُ بِأَطْرَافِ أَصَابِعِهِ كَأَنَّهُ يَقْطِفُ شَيْئًا - فَقَالَ لَهُ مُوسَى: ﴿أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ؟ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا. قَالَ :

कर हुई थीं फिर जब दरियाई सफ़र ख़त्म हुआ तो उनका गुज़र एक बच्चे के पास से हुआ जो दूसरे बच्चों के साथ खेल रहा था। हज़रत ख़िज़्र (अलै.) ने उसका सर पकड़कर अपने हाथ से (धड़ से) जुदा कर दिया। सुफ़यान ने अपने हाथ से (जुदा करने की कैफ़ियत बताने के लिये) इशारा किया जैसे वो कोई चीज़ तोड़ रहे हों। उस पर हज़रत मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि आपने एक जान को ज़ाया कर दिया। किसी दूसरी जान के बदले में भी ये नहीं था। बिला शुब्हा आपने एक बुरा काम किया। ख़िज़्र (अलै.) ने फ़र्माया, क्या मैंने आपसे पहले ही नहीं कहा था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते। हज़रत मूसा (अलै.) ने कहा, अच्छा इसके बाद अगर मैं ने आपसे कोई बात पूछी तो फिर आप मुझे साथ न ले चलियेगा, बेशक आप मेरे बारे में हद्दे उ़ज़्र को पहुँच चुके हैं। फिर ये दोनों आगे बढ़े और जब एक बस्ती में पहुँचे तो बस्ती वालों से कहा कि वो उन्हें अपना मेहमान बना लें, लेकिन उन्होंने इंकार किया। फिर उस बस्ती मे उन्हें एक दीवार दिखाई दी जो बस गिरने ही वाली थी। ख़िज़्र (अलै.) ने अपने हाथ से यूँ इशारा किया। सुफ़यान ने (कैफ़ियत बताने के लिये) इस तरह इशारा किया जैसे वो कोई चीज़ ऊपर की तरफ़ फेर रहे हों। मैंने सुफ़यान से माइला का लफ़्ज़ सिर्फ़ एक बार सुना था। हज़रत मूसा (अलै.) ने कहा कि ये लोग तो ऐसे थे कि हम उनके यहाँ आए और उन्होंने हमारी मेज़बानी से भी इंकार किया। फिर उनकी दीवार आपने ठीक कर दी, अगर आप चाहते तो उसकी उज्रत उनसे ले सकते थे। हज़रत ख़िज़्र (अलै.) ने फ़र्माया कि बस यहाँ से मेरे और आपके दरम्यान जुदाई हो गई जिन बातों पर आप सब्र नहीं कर सके, मैं उनकी तावील व तौजीह अब तुम पर वाज़ेह करूँगा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हमारी तो ख़्वाहिश ये थी कि मूसा (अलै.) सब्र करते और अल्लाह तआला तक्वीनी वाक़ियात हमारे लिये बयान करता। सुफ़यान ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह हज़रत मूसा (अलै.) पर रहम करे, अगर उन्होंने सब्र किया होता तो उनके (मज़ीद वाक़ियात) हमें मा'लूम होते। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने (जुम्हूर की क़िरअत वराअहुम के बजाय) इमामहुम मलिकुय्याख़ु ज़ू कुल्ला सफ़ीनतिन ग़स्बा) पढ़ा है।

أَلَـمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا؟ قَالَ: إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلاَ تُصَاحِبْنِي، قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا. فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا، فَأَبَوا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا، فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُرِيْدُ أَنْ يَنقَضَّ﴾ مَائِلاً - أَوْ مَا بِيَدِهِ هَكَذَا، وَأَشَارَ سُفْيَانُ كَأَنَّهُ يَمْسَحُ شَيْئًا إِلَى فَوق، فَلَمْ أَسْمَعْ سُفْيَانَ يَذْكُرُ ((مَائِلاً)) إِلاَّ مَرَّةً - قَالَ: قَوْمٌ أَتَيْنَاهُمْ فَلَمْ يُطْعِمُونَا وَلَـمْ يُضَيِّفُونَا، عَمَدْتَ إِلَى حَائِطِهِمْ ﴿لَوْ شِئْتَ لاتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا. قَالَ: هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ، سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيْلِ مَا لَـمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا﴾. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((وَدِدْنَا أَنَّ مُوسَى كَانَ صَبَرَ فَقَصَّ اللهُ عَلَيْنَا مِنْ خَبَرِهِمَا)). قَالَ سُفْيَانُ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَرْحَمُ اللهُ مُوسَى لَوْ كَانَ صَبَرَ يُقَصُّ عَلَيْنَا مِنْ أَمْرِهِمَا)) قَالَ: وَقَرَأَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَكَانَ أَمَامَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ صَالِحَةٍ غَصْبًا. وَأَمَّا الْغُلاَمُ فَكَانَ كَافِرًا وَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ. ثُمَّ قَالَ لِيْ سُفْيَانُ: سَمِعْتُهُ مِنْهُ مَرَّتَيْنِ وَحَفِظْتُهُ مِنْهُ. قِيْلَ لِسُفْيَانَ: حَفِظْتَهُ قَبْلَ أَنْ تَسْمَعَهُ مِنْ عَمْرٍو أَوْ تَحَفَّظْتَهُ مِنْ إِنْسَانٍ؟ فَقَالَ: مِمَّنْ أَتَحَفَّظُهُ، وَرَوَاهُ أَحَدٌ عَنْ عَمْرٍو غَيْرِي؟ سَمِعْتُهُ مِنْهُ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا وَحَفِظْتُهُ مِنْهُ)).

[راجع: ٧٤]

और वो बच्चा (जिसकी हज़रत ख़िज़्र अलै. ने जान ली थी) काफ़िर था और उसके वालिदैन मोमिन थे। फिर मुझसे सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने ये ह़दीष़ अम्र बिन दीनार से दो मर्तबा सुनी थी और उन्हीं से (सुनकर) याद की थी। सुफ़यान ने किसी से पूछा था कि क्या ये ह़दीष़ आपने अम्र बिन दीनार से सुनने से पहले ही किसी दूसरे शख़्स से सुनकर (जिसने अम्र बिन दीनार से दो मर्तबा सुनी हो) याद की थी? या (उसके बजाय ये जुम्ला कहा) हफ़िज़्तहू मिन इन्सानिन (शक अली बिन अ़ब्दुल्लाह को था) तो सुफ़यान ने कहा कि दूसरे किसी शख़्स से सुनकर मैं याद करता, क्या इस ह़दीष़ को अम्र बिन दीनार से मेरे सिवा किसी और ने भी रिवायत किया हैं? मैंने उनसे ये ह़दीष़ दो या तीन मर्तबा सुनी और उन्हीं से सुनकर याद की। (राजेअ : 74)

٣٤٠٢- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيْدٍ الأَصْبهانِيُّ أخبرنَا ابْنُ الْمُبارَكِ عَنْ مَعْمَرٍ عنْ همَّام بْن مُنبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ الله عَنْهُ عن النَّبيِّ ﷺ قَالَ : ((إِنَّمَا سُمِّيَ الْخضِرُ لأنَّهُ جَلَسَ عَلَى فَرْوَةٍ بَيْضاءَ، فَإذَا هِيَ تَهتَزُّ منْ خَلْفِهِ خَضْرَاءَ)).

3402. हमसे मुहम्मद बिन सईद अस्बहानी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़िज़्र(अलै.) का ये नाम इस वजह से हुआ कि वो एक सूखी ज़मीन (जहाँ सब्ज़ी का नाम भी न था) पर बैठे। लेकिन ज्यों ही वो वहाँ से उठे तो वो जगह सर सब्ज़ होकर लहलहाने लगी।

तश्रीह : कहते हैं ह़ज़रत ख़िज़्र (अलै.) का नाम बुलिया बिन मल्कान बिन क़ानेअ़ बिन आयबा बिन शालिख़ बिन अर्फ़क्ख़शद बिन साम बिन नूह़ (अलै.) है। वो ह़ज़रात इब्राहीम (अलै.) से पहले पैदा हो चुके थे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि वो ह़ज़रत आदम (अलै.) के सुल्बी बेटे थे और भी मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं । बक़ौल क़स्तलानी (रह.) अकष़र उ़लमा व सूफ़िया कहते हैं कि वो ज़िन्दा हैं मगर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) और मुह़क़्क़िक़ीने उम्मत अहले ह़दीष़ ने कहा है कि वो मौजूद नहीं हैं। वल्लाहु आलम बिस्सवाब। उनके बैठने से ज़मीन का सरसब्ज़ होना उनकी करामत थी। औलिया अल्लाह की करामत बरहक़ है बशर्ते कि स़ह़ीह़ तौर पर ष़ाबित हो। मनघड़त न हो मगर ये करामत मह़ज़ अल्लाह तआ़ला का अ़तिया होती है। औलिया अल्लाह हर वक़्त उसके मुह़ताज हैं । फ़रवति बेज़ात की तफ़्सीर में इमाम इब्ने ह़जर लिखते हैं। **अल्फर्वतु क़ील हिय जिल्दतु वल्हिल्अर्ज़ि जलस अ़लैहा फअम्बतत व सारत खिज़्रन व जाज़ फिल्खज़्रि फत्हुल्खाइ व कस्रिहा वख्तुलिफ़ फ़ी नुबुव्वतिही क़ालष़्ष़अलबी कान फ़ी ज़मनि इब्राहीमल्ख़लील व क़ालल्अक्ष़रून अन्नहू हय्युन मौजूदुन अल्यौम इला आख़िरिही कज़ा फिल्किर्मानी क़ालल्ऐनी वल्मुत़ाबक़तु मिन हदीष़ि अन्नल्ख़िज़्र मज़्कूरुन फीहि कज़ा फिल्फत्हि.**

रिवायत में जिस शख़्स नौफ़िल बक्काली का ज़िक्र है अहले दमिश्क़ से एक फ़ाज़िल था। और ये भी मरवी है कि ये कअ़ब अह़बार का भतीजा था, उसका ख़्याल था कि साह़िबे ख़िज़्र मूसा बिन मैशा हैं जो तौरात की बिना पर रसूल हैं मगर स़ह़ीह़ बात यही है कि ये साह़िबे ख़िज़्र ह़ज़रत मूसा बिन इमरान (अलै.) थे। मज्मउ़ल बह़रैन जिसका ज़िक्र है वो जगह है जहाँ बह़रे फ़ारस और बह़रे रूम मिलते हैं । मछली जो नाश्ता के लिये साथ में भूनकर रखी गई थी जब ह़ज़रत मूसा (अलै.)

उसे साथ लेकर सख़रह के पास पहुँचे तो वहाँ आबे ह़यात का चश्मा था जिससे वो मछली ज़िन्दा होकर दरिया में कूद गई। ह़ज़रत ख़िज़्र (अलै.) के कामों पर ह़ज़रत मूसा (अलै.) के ए'तिराज़ात ज़ाहिरी ह़ालात की बिना पर थे। ह़ज़रत ख़िज़्र (अलै.) ने जब ह़क़ाईक़ का इज़्हार किया तो ह़ज़रत मूसा (अलै.) के लिये बजुज़ तस्लीम के कोई चारा न था। मज़ीद तफ़्सीलात तफ़सीर की किताबों में मुलाह़िज़ा की जा सकती है।

बाब 28 :

٢٨ – بَابٌ

٣٤٠٣– حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قِيْلَ لِبَنِي إِسْرَائِيْلَ: ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ، فَبَدَّلُوا وَدَخَلُوا يَزْحَفُونَ عَلَى أَسْتَاهِهِمْ وَقَالُوا حَبَّةٌ فِي شَعْرَةٍ)).

[طرفاه في : ٤٤٧٩، ٤٦٤١].

3403. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन नस़्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे ह़म्माम बिन मुनब्बा ने और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल को हुक्म हुआ था कि बैतुल मक़्दिस में सज्दा व रुकूअ़ करते हुए दाख़िल हों और ये कहते हुए कि ऐ अल्लाह! हमको बख़्श दे। लेकिन उन्होंने उसको उल्टा किया और अपने कूल्हों के बल घसीटते हुए दाख़िल हुए और ये कहते हुए ह़ब्बतु फ़ी शअ़रा (या'नी बालियों में दाने ख़ूब हों) दाख़िल हुए। (दीगर मक़ाम : 4479, 4661)

परवरदिगार से हंसी-ठ्ठा के तौर पर ये कहना शुरू किया तो अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हुए।

٣٤٠٤– حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنِ الْحَسَنِ وَمُحَمَّدٍ وَخِلاَسٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مُوسَى كَانَ رَجُلاً حَيِيًّا سِتِّيْرًا لاَ يُرَى مِنْ جِلْدِهِ شَيْءٌ اسْتِحْيَاءً مِنْهُ، فَآذَاهُ مَنْ آذَاهُ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ فَقَالُوا: مَا يَسْتَتِرُ هَذَا التَّسَتُّرَ إِلاَّ مِنْ عَيْبٍ بِجِلْدِهِ: إِمَّا بَرَصٌ وَإِمَّا أُدْرَةٌ، وَإِمَّا آفَةٌ. وَإِنَّ اللهَ أَرَادَ أَنْ يُبَرِّئَهُ مِمَّا قَالُوا لِمُوسَى، فَخَلاَ يَوْمًا وَحْدَهُ فَوَضَعَ ثِيَابَهُ عَلَى الْحَجَرِ ثُمَّ اغْتَسَلَ، فَلَمَّا فَرَغَ أَقْبَلَ إِلَى ثِيَابِهِ لِيَأْخُذَهَا، وَإِنَّ الْحَجَرَ عَدَا بِثَوْبِهِ. فَأَخَذَ مُوسَى عَصَاهُ فَطَلَبَ الْحَجَرَ. فَجَعَلَ

3404. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे रौह़ बिन उ़बादा ने बयान किया, उनसे औ़फ़ बिन अबू जमीला ने बयान किया, उनसे इमाम ह़सन बस़री और मुह़म्मद बिन सीरीन और ख़िलास बिन अ़म्र ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि ह़ज़रत मूसा (अलै.) बड़े ही शर्म वाले और बदन ढांपने वाले थे। उनकी ह़या की वजह से उनके बदन का कोई ह़िस्सा भी नहीं देखा जा सकता था। बनी इस्राईल के जो लोग उन्हें अज़िय्यत पहुँचाने के दर पे थे, वो क्यूँ बाज़ रह सकते थे, उन लोगों ने कहना शुरू किया कि इस दर्जा बदन छुपाने का एहतिमाम सिर्फ़ इसलिये है कि उनके जिस्म में ऐ़ब है या कोढ़ है या उनके ख़ुस्यतैन बढ़े हुए हैं या फिर कोई बीमारी है। इधर अल्लाह तआ़ला को ये मंज़ूर हुआ कि मूसा (अलै.) की उनकी ह़फ़्वात से पाकी दिखलाए। एक दिन ह़ज़रत मूसा (अलै.) अकेले ग़ुस्ल करने के लिये आए और एक पत्थर पर अपने कपड़े (उतारकर) रख दिये। फिर ग़ुस्ल शुरू किया। जब फ़ारिग़ हुए तो कपड़े उठाने के लिये बढ़े लेकिन पत्थर उनके कपड़ों समेत भागने लगा। ह़ज़रत मूसा (अलै.) ने अपना अ़स़ा उठाया

يَقُولُ: ثَوبِي حَجَر، ثَوبِي حَجَر. حَتَّى انْتَهَى إِلَى مَلَإٍ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ فَرَأَوْهُ عُرْيَانًا أَحْسَنَ مَا خَلَقَ اللهُ وَأَبْرَأَهُ مِمَّا يَقُولُونَ وَقَامَ الْحَجَرُ فَأَخَذَ ثَوبَهُ فَلَبِسَهُ وَطَفِقَ بِالْحَجَرِ ضَرْبًا بِعَصَاهُ فَوَ اللهِ إِنَّ بِالْحَجَرِ لَنَدَبًا مِنْ أَثَرِ ضَرْبِهِ ثَلاَثًا أَوْ أَرْبَعًا أَوْ خَمْسًا، فَذَلِكَ قَوْلُهُ : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوا مُوسَى فَبَرَّأَهُ اللهُ مِمَّا قَالُوا : وَكَانَ عِنْدَ اللهِ وَجِيهًا﴾ [الأحزاب: ٦٩].

[راجع: ٢٧٨]

और पत्थर के पीछे दौड़े ये कहते हुए कि पत्थर! मेरा कपड़ा दे दे। आख़िर बनी इस्राईल की एक जमाअत तक पहुँच गये और उन सबने आपका नंगा देख लिया, अल्लाह की मख़लूक़ में सबसे बेहतर हालत में और इस तरह अल्लाह तआला ने तोहमत से उनकी बरात कर दी। अब पत्थर भी रुक गया और आपने कपड़ा उठाकर पहना। फिर पत्थर को अपने असा से मारने लगे। अल्लाह की क़सम! उस पत्थर पर हज़रत मूसा (अलै.) के मारने की वजह से तीन या चार या पाँच निशान पड़ गये थे। अल्लाह तआला के इस फ़र्मान, तुम उनकी तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा (अलै.) को अज़िय्यत दी थी, फिर उनकी तोहमत से अल्लाह तआला ने उन्हें बरी क़रार दिया और वो अल्लाह की बारगाह में बड़ी शान वाले और इ़ज़्ज़त वाले थे में इसी वाक़िया की तरफ़ इशारा है। (राजेअ : 278)

हदीष़ में हज़रत मूसा (अलै.) और बनी इस्राईल का ज़िक्र है। बाब से यही मुनासबत है। कुर्आन पाक की आयत **या अय्युहल्लज़ीन आमनू ला तकूनू कल्लज़ीन आज़ो मूसा** (अल अहज़ाब : 69) में इसी वाक़िया की तरफ़ इशारा है।

٣٤٠٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ قَسْمًا. فَقَالَ رَجُلٌ : إِنَّ هَذِهِ لَقِسْمَةٌ مَا أُرِيدَ بِهَا وَجْهُ اللهِ. فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَغَضِبَ حَتَّى رَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ، ثُمَّ قَالَ : ((يَرْحَمُ اللهُ مُوسَى، قَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)). [راجع: ٣١٥٠]

3305. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू वाईल से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा माल तक़्सीम किया, एक शख़्स ने कहा कि ये एक ऐसी तक़्सीम है जिसमें अल्लाह की रज़ाजोई का कोई लिहाज़ नहीं किया गया। मैंने आँहुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको इसकी ख़बर दी। आप गुस्सा हुए और मैंने आपके चेहरा मुबारक पर गुस्से के आष़ार देखे। फिर फ़र्माया, अल्लाह हज़रत मूसा (अलै.) पर रहम करे, उनको इससे भी ज़्यादा अज़िय्यतें दी गई थी मगर उन्होंने स़ब्र किया। (राजेअ : 3150)

कहने वाला एक मुनाफ़िक़ था। आँहज़रत (ﷺ) ने उस मुनाफ़िक़ की बकवास पर स़ब्र किया और उस बारे में हज़रत मूसा (अलै.) का ज़िक्र किया। यही बाब से वजहे मुनासबत है।

٢٩- بَابُ ﴿يَعْكِفُونَ عَلَى أَصْنَامٍ لَهُمْ﴾ [الأعراف : ١٣٨]

बाब 29 : अल्लाह पाक का (सूरह आराफ़ में)

﴿مُتَبَّرٌ﴾: خُسْرَانٌ. ﴿وَلِيُتَبِّرُوا﴾: يُدَمِّرُوا.

फ़र्माना कि वो अपने बुतों की पूजा कर रहे थे और इसी सूरत में मुतब्बरुन के मा'नी तबाही, नुक़्सान। सूरह बनी इस्राईल में वलि युतब्बिर का मा'नी ख़राब करें। मा अलव का मा'नी जिस जगह

हुकूमत पाएँ, ग़ालिब हों। ﴿مَا عَلَوا﴾: مَا غَلَبُوا.

सूरह बनी इस्राईल का लफ़्ज़ वलियत्तब्बिरु गो हज़रत मूसा (अलै.) के क़िस्से के बारे में न था मगर मुतब्बरुन और उसका माद्दा एक होने से उसको यहाँ बयान कर दिया और लफ़्ज़ मा अ़लौ, लि युतब्बरु के बाद सूरह बनी इस्राईल में मज़्कूर था इसलिये उसको भी बयान कर दिया।

3406. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि (एक मर्तबा) हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (सफ़र में) पीलू के फल तोड़ने लगे। आपने फ़र्माया कि जो स्याह हों उन्हें तोड़ो, क्योंकि वो ज़्यादा लज़ीज़ होता है। सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज़्मईन ने अ़र्ज़ किया, क्या हुज़ूर (ﷺ) ने कभी बकरियाँ चराई हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने बकरियाँ न चराई हों।
(दीगर मक़ाम : 5453)

٣٤٠٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ نَجْنِي الْكَبَاثَ، وَإِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((عَلَيْكُمْ بِالأَسْوَدِ مِنْهُ فَإِنَّهُ أَطْيَبُ)). قَالُوا: أَكُنْتَ تَرْعَى الْغَنَمَ؟ قَالَ : ((وَهَلْ مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ وَقَدْ رَعَاهَا؟)).
[طرفه في : ٥٤٥٣].

तश्रीह : इस हदीष़ में चूँकि सब पैग़म्बरों का ज़िक्र है तो उनमें हज़रत मूसा (अलै.) भी आ गये बल्कि नसाई की रिवायत में हज़रत मूसा (अलै.) का ज़िक्र सराहत के साथ मौजूद है। बकरियाँ हर पैग़म्बर ने इसलिये चराई हैं कि उनके चराने के बाद फिर आदमियों के चराने का काम उनको सौंपा जाता है। कुछ ने कहा इसलिये कि लोग ये समझ लें कि नुबुव्वत और पैग़म्बरी अल्लाह की देन है जिसे वो अपने नातवाँ बन्दों को देता है या'नी चरवाहों को, दुनिया के मग़रूर लोग इससे महरूम रहते हैं। **क़ाल फ़िल्फ़त्हि वल्मुनासिबु बिक़स़सि मूसा मिन जिहति उमूमिन क़ौलुहू व हल मिन नबिय्यिन इल्ला व क़द रआहा फदखल फीहि मूसा**

बाब 30 : अल्लाह तआ़ला का सूरह बक़रः में फ़र्माना,

वो वक़्त याद करो जब मूसा (अलै.) ने अपनी क़ौम से कहा कि, अल्लाह तआ़ला तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़िबह करो, आख़िर आयत तक।

٣٠- بَابُ ﴿وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً﴾ الآيَةَ [البقرة: ٦٧].

इसका मुख़्तसर वाक़िया ये है कि बनी इस्राईल में एक शख़्स बड़ा मालदार था जिसकी लड़की थी और एक भतीजा था। भतीजे ने वराष़त और लड़की से शादी की तिमआ मे अपने चचा का क़त्ल कर डाला और लाश को दूसरी जगह ले जाकर डाल दिया। फिर सुबह ख़ुद ही शोरो-गुल, रोना-पीटना शुरू किया और जहाँ लाश को डाला था वहाँ के रहने वालों के ज़िम्मे उस ख़ून को लगाया। अहले मुहल्ला इस क़िस्से को हज़रत मूसा (अलै.) के पास ले गए। आपने ये हुक्म फ़र्माया जो सूरह बक़रः की आयात मज़्कूरा में तफ़्सील के साथ मौजूद है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस बारे में अपने शराइत के मुताबिक़ कोई हदीष़ नहीं पाई। लिहाज़ा आयाते क़ुर्आनी पर इशारा करना काफ़ी समझा। इन आयात में मुश्किल अल्फ़ाज़ की वज़ाहत भी इसी सिलसिले में है।

अबुल आ़लिया ने कहा कि (क़ुर्आन मजीद में लफ़्ज़) अल अ़वान) नौजवान और बूढ़े के दरम्यान के मा'नी में है। फ़ाक़ेअ़ बमा'नी साफ़। ला ज़लूल या'नी जिसे काम ने निढाल और ला

قَالَ أَبُو الْعَالِيَةِ: الْعَوَانُ النَّصَفُ بَيْنَ الْبِكْرِ وَالْهَرِمَةِ. ﴿فَاقِعٌ﴾: صَافٍ. ﴿لاَ ذَلُولٌ﴾: لَمْ يُذِلَّهَا الْعَمَلُ ﴿تُثِيرُ

لْأَرْضَ﴾: لَيْسَتْ بِذَلُولٍ تُثِيرُ الأَرْضَ وَلاَ تَعْمَلُ فِي الْحَرْثِ. ﴿مُسَلَّمَةٌ﴾: مِنَ الْعُيُوبِ. ﴿لاَ شِيَةَ﴾: بَيَاضٌ. ﴿صَفْرَاءُ﴾: إِنْ شِئْتَ سَوْدَاءُ وَيُقَالُ صَفْرَاءُ كَقَوْلِهِ: ﴿جِمَالاَتٌ صُفْرٌ﴾. ﴿فَادَّارَأْتُمْ﴾ اخْتَلَفْتُمْ.

लागर न कर दिया हो। तुष़िरुल अरज़ा या'नी वो इतनी कमज़ोर न हो कि ज़मीन न जोत सके और न खेती बाड़ी के काम की हो। मुसल्लमतु या'नी स़हीह सालिम और उयूब से पाक हो। ला शैय या'नी दाग़ी (न हो) स़फ़राअ अगर तुम चाहो तो उसके मा'नी स्याह के भी हो सकते हैं और ज़र्द के भी जैसे जिमालातुन सुफ़ुर में है। फ़द्दारातुम बमा'नी फ़ख़्तलफ़्तुम तुमने इख़्तिलाफ़ किया। मज़ीद मा'लूमात के लिये इन मुक़ामाते क़ुर्आन का मुतालआ ज़रूरी है जहाँ ये अल्फ़ाज़ आए हैं।

٣١- بَابُ وَفَاةِ مُوسَى، وَذِكْرِهِ مَا بَعْدَهُ

बाब 31 : ह़ज़रत मूसा (अलै.) की वफ़ात और उनके बाद के ह़ालात का बयान

٣٤٠٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أُرْسِلَ مَلَكُ الْمَوْتِ إِلَى مُوسَى عَلَيْهِمُ السَّلاَمُ، فَلَمَّا جَاءَهُ صَكَّهُ، فَرَجَعَ إِلَى رَبِّهِ فَقَالَ: أَرْسَلْتَنِي إِلَى عَبْدٍ لاَ يُرِيدُ الْمَوْتَ. قَالَ: ارْجِعْ إِلَيْهِ فَقُلْ لَهُ يَضَعُ يَدَهُ عَلَى مَتْنِ ثَوْرٍ، فَلَهُ بِمَا غَطَّتْ يَدُهُ بِكُلِّ شَعْرَةٍ سَنَةٌ. قَالَ: أَيْ رَبِّ، ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ : ثُمَّ الْمَوْتُ. قَالَ: فَالآنَ. قَالَ : فَسَأَلَ اللَّهَ أَنْ يُدْنِيَهُ مِنَ الأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ رَمْيَةً بِحَجَرٍ. قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((لَوْ كُنْتُ ثَمَّ لأَرَيْتُكُمْ قَبْرَهُ إِلَى جَانِبِ الطَّرِيقِ تَحْتَ الْكَثِيبِ الأَحْمَرِ)). قَالَ: وَأَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ حَدَّثَنَا أَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَهُ.

3407. हमसे यह़्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन ताऊस ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआला ने ह़ज़रत मूसा (अलै.) के पास मलकुल मौत को भेजा, जब मलकुल मौत ह़ज़रत मूसा (अलै.) के पास आए तो उन्हों ने चांटा मारा (क्योंकि वो इंसान की सूरत में आया था) मलकुल मौत, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में वापस हुए और अ़र्ज़ किया कि तूने अपने एक ऐसे बन्दे के पास मुझे भेजा जो मौत के लिये तैयार नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि दोबारा उनके पास जाओ और कहो कि अपना हाथ किसी बैल की पीठ पर रखें, उनके हाथ में जितने बाल उसके आ जाएँ उनमें से हर बाल के बदले एक साल की उम्र उन्हें दी जाएगी (मलकुल मौत दोबारा आए और अल्लाह तआला का फ़ैसला सुनाया) ह़ज़रत मूसा (अलै.) बोले ऐ रब! फिर उसके बाद क्या होगा? अल्लाह तआला ने फ़र्माया फिर मौत है। ह़ज़रत मूसा (अलै.) ने अ़र्ज़ किया कि फिर अभी क्यूँ न आ जाए। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर ह़ज़रत मूसा (अलै.) ने अल्लाह तआला से दुआ की कि बैतुल मक़्दिस से मुझे इतना क़रीब कर दिया जाए कि (जहाँ उनकी क़ब्र हो वहाँ से) अगर कोई पत्थर फेंके तो वो बैतुल मक़्दिस तक पहुँच सके। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मैं वहाँ मौजूद

होता तो बैतुल मक़्दिस में, मैं तुम्हें उनकी क़ब्र दिखाता जो रास्त के किनारे पर है, रेत के सुर्ख़ टीले से नीचे। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम ने बयान किया कि हमें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनको अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी त़रह बयान किया।

तशरीह : मलकुल मौत ह़ज़रत मूसा (अलै.) के पास इंसानी सूरत में आए थे। लिहाज़ा आदमी जानकर आपने उनको त़माचा मारा, ये चीज़ अ़क़्ल से दूर नहीं है। मगर मुंकिरीने ह़दीष़ को बहाना चाहिये। उन्होंने इस ह़दीष़ को भी तख़्त-ए-मश्क़ (प्रेक्टिस बोर्ड) बनाया है जो सरासर उनकी जहालत है। जब ह़ज़रत मूसा (अलै.) को ह़क़ीक़त मा'लूम हुई तो उन्होंने अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात के शौक़ में मौत ही को पसन्द किया। हमारे ह़ुज़ूर (ﷺ) से भी आख़िर वक़्त में यही कहा गया था आपने भी रफ़ीक़े आ़ला से इल्ह़ाक़ के लिये दुआ़ की जो क़ुबूल हुई। कहा गया है कि मूसा (अलै.) ने ख़ुद बैतुल मक़्दिस में दफ़न होने की दुआ़ इसलिये नहीं की कि आपको बनी इस्राईल की त़रफ़ से ख़त़रा था कि वो आपकी क़ब्र को पूजने लग जाएँगे जैसा कि मुश्रिकीन का ह़ाल है कि अपने अंबिया व स़ालेहीन (नेक लोगों) के मज़ारात को इ़बादतगाह बनाते चले आ रहे हैं। हमारे ह़ुज़ूर (ﷺ) को भी का'बा शरीफ़ से ढाई सौ मील दूर मदीना त़य्यिबा में अल्लाह ने आरामगाह नस़ीब फ़र्माई। अगर ह़ुज़ूर (ﷺ) मक्कतुल मुकर्रमा में दफ़न होते तो उम्मते इस्लामिया के जाहिलों की त़रफ़ से भी यही ख़त़रा था। फिर भी आँह़ज़रत (ﷺ) ने दुआ़ फ़र्माई कि या अल्लाह! मेरी क़ब्र को वष़्न (बुत) न बनाइयो कि लोग यहाँ आकर पूजा-पाठ शुरू कर दें। अल्ह़म्दुलिल्लाह! ह़ुज़ूर (ﷺ) की दुआ़ क़ुबूल हुई और आज तक मुसलमान नुमा मुश्रिकों को वहाँ आपकी क़ब्र की पूजा करने की हिम्मत नहीं है।

3408. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान और सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुसलमानों की जमाअ़त के एक आदमी और यहूदियों में से एक शख़्स का झगड़ा हुआ। मुसलमान ने कहा कि उस ज़ात की क़सम जिसने मुहम्मद (ﷺ) को सारी दुनिया में बरगुज़ीदा बनाया, क़सम खाते हुए उन्होंने ये कहा। इस पर यहूदी ने कहा, क़सम है उस ज़ात की जिसने मूसा (अलै.) को सारी दुनिया में बरगुज़ीदा बनाया। इस पर मुसलमान ने अपना हाथ उठाकर यहूदी को थप्पड़ मार दिया। वो यहूदी, नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आया और अपने और मुसलमान के झगड़े की आपको ख़बर दी। आपने उसी मौक़े पर फ़र्माया कि मुझे ह़ज़रत मूसा (अलै.) पर तरजीह मत दिया करो। लोग क़यामत के दिन बेहोश कर दिये जाएँगे और सबसे पहले मैं होश में आऊँगा फिर देखूँगा कि ह़ज़रत मूसा (अलै.) अ़र्श का पाया पकड़े हुए खड़े हैं। अब मुझे मा'लूम नहीं कि वो भी बेहोश होने वालों में थे और

٣٤٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَسَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : اسْتَبَّ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَرَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ، فَقَالَ الْمُسْلِمُ : وَالَّذِي اصْطَفَى مُحَمَّدًا ﷺ عَلَى الْعَالَمِيْنَ - فِي قَسَمٍ يُقْسِمُ بِهِ - فَقَالَ الْيَهُودِيُّ: وَالَّذِيْ اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْعَالَمِيْنَ. فَرَفَعَ الْمُسْلِمُ عِنْدَ ذَلِكَ يَدَهُ فَلَطَمَ الْيَهُودِيَّ، فَذَهَبَ الْيَهُودِيُّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَخْبَرَهُ الَّذِي كَانَ مِنْ أَمْرِهِ وَأَمْرِ الْمُسْلِمِ، فَقَالَ: ((لاَ تُخَيِّرُونِي عَلَى مُوسَى، فَإِنَّ النَّاسَ يَصْعَقُونَ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفِيْقُ، فَإِذَا مُوسَى بَاطِشٌ بِجَانِبِ

मुझसे पहले ही होश में आ गए या उन्हें अल्लाह तआला ने बेहोश होने वालों में ही नहीं रखा था। (राजेअ : 2411)

الْعَرْشِ، فَلاَ أَدْرِي أَكَانَ فِيْمَنْ صَعِقَ فَأَفَاقَ قَبْلِي، أَوْ كَانَ مِمَّنِ اسْتَثْنَى اللهُ)). [راجع: ٢٤١١]

तश्रीह : या'नी मुझको दूसरे नबियों पर इस तरह फ़ज़ीलत न दो कि उनकी तौहीन निकले। या ये हुक्म उस वक़्त का है जब आपको ये नहीं बतलाया गया था कि आप तमाम पैग़म्बरों से अफ़ज़ल हैं। या ये मतलब है कि अपनी राय से फ़ज़ीलत न दो जितना शरअ़ में वारिद हुआ है उतना ही कहो। ह़श्र में बेहोश न होने वालों का इस्तिष़्ना इस आयत में है, **नुफ़िख फ़िस्सूरि फ़सइक़ मन फ़िस्समावाति व मन फ़िल्अर्जि इल्ला मन शाअल्लाहु** (अज़्ज़ुमर : 68) या'नी जिस वक़्त सूर फूँका जाएगा तो सब अहले मह़शर बेहोश हो जाएँगे मगर जिसको अल्लाह चाहेगा वो बेहोश न होगा, मुम्किन है कि ह़ज़रत मूसा भी इस इस्तिष़्ना में शामिल हों।

3409. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ह़ज़रत मूसा (अलै.) और ह़ज़रत आदम (ﷺ) ने आपस में बह़ष़ की। ह़ज़रत मूसा (अलै.) ने उनसे कहा कि आप आदम हैं जिन्हें उनकी लग़्ज़िश ने जन्नत से निकाला। ह़ज़रत आदम (अलै.) बोले और आप मूसा (अलै.) हैं कि जिन्हें अल्लाह तआला ने अपनी रिसालत और अपने कलाम से नवाज़ा, फिर भी आप मुझे एक ऐसे मामले पर मलामत करते हैं जो अल्लाह तआला ने मेरी पैदाइश से भी पहले मुक़द्दर कर दिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, चुनाँचे ह़ज़रत आदम (अलै.) ह़ज़रत मूसा (अलै.) पर ग़ालिब आ गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये जुम्ला दो मर्तबा फ़र्माया। (दीगर मक़ाम : 4736, 4738, 6614, 7515)

٣٤٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((احْتَجَّ آدَمُ وَمُوسَى، فَقَالَ لَهُ مُوسَى: أَنْتَ آدَمُ الَّذِي أَخْرَجَتْكَ خَطِيْئَتُكَ مِنَ الْجَنَّةِ. فَقَالَ لَهُ آدَمُ : أَنْتَ مُوسَى الَّذِي اصْطَفَاكَ اللهُ بِرِسَالاَتِهِ وَبِكَلاَمِهِ ثُمَّ تَلُومُنِي عَلَى أَمْرٍ قُدِّرَ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ أُخْلَقَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى مَرَّتَيْنِ)).[أطرافه في : ٤٧٣٦، ٤٧٣٨، ٦٦١٤، ٧٥١٥].

इस ह़दीष़ में भी ह़ज़रत मूसा (अलै.) का ज़िक्रे ख़ैर है कि अल्लाह तआला ने उनको चुन लिया और पैग़म्बरी अ़ता फ़र्माई। बाब और ह़दीष़ में यही मुनासबत की वजह है।

3410. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन नुमैर ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि मेरे सामने तमाम उम्मतें लाई गईं और मैंने देखा कि एक बहुत बड़ी जमाअ़त आसमान के किनारों पर छाई

٣٤١٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حُصَيْنُ بْنُ نُمَيْرٍ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا قَالَ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ، وَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيْرًا سَدَّ الأُفُقَ، فَقِيْلَ: هَذَا

हुई है। फिर बताया गया कि ये अपनी क़ौम के साथ ह़ज़रत मूसा (अलै.) हैं। (दीगर मक़ाम : 5705, 5752, 6472, 6541)

مُوسَى فِي قَوْمِهِ)). [أطرافه في : ٥٧٠٥، ٥٧٥٢، ٦٤٧٢، ٦٥٤١].

बाब 32 : अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, और ईमान वालों के लिये अल्लाह तआ़ला फ़िरऔ़न की बीवी की मिषाल बयान करता है

٣٢- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : وَضَرَبَ اللهُ مَثَلاً لِلَّذِيْنَ آمَنُوا امْرَأَةَ فِرْعَوْنَ - إِلَى قَوْلِهِ - وَكَانَتْ مِنَ الْقَانِتِيْنَ﴾ [التحريم : ١١]

अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान वकानत मिनल् क़ानेतीन तक

3411. हमसे यह्या बिन जअ़फर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे मुर्रह हम्दानी ने और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मर्दों में तो बहुत से कामिल लोग उठे लेकिन औ़रतों में फ़िरऔ़न की बीवी आसिया और मरयम बिन्ते इमरान अ़लैहिमुस्सलाम के सिवा और कोई कामिल नहीं पैदा हुई, हाँ औ़रतों पर ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे तमाम खानों पर ष़रीद की फ़ज़ीलत है। (दीगर मक़ाम : 3433, 3769, 5418)

٣٤١١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا وَكِيْعٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ عَنْ مُرَّةَ الْهَمَدَانِيِّ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَمَلَ مِنَ الرِّجَالِ كَثِيْرٌ، وَلَمْ يَكْمُلْ مِنَ النِّسَاءِ إِلاَّ آسِيَةُ امْرَأَةُ فِرْعَوْنَ وَمَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ، وَإِنَّ فَضْلَ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيْدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ)).

[أطرافه في : ٣٤٣٣، ٣٧٦٩، ٥٤١٨].

तश्रीह : ष़रीद उस खाने को कहते हैं जो रोटी और शोरबा मिलाकर बनाया जाता है। कमाल से मुराद यहाँ वो कमाल है जो विलायत से बढ़कर नुबुव्वत के क़रीब पहुँचा, मगर नुबुव्वत न मिली हो। इस तावील की ज़रूरत इसलिये हुई कि वली तो बहुत सी औ़रतें गुज़री हैं और पैग़म्बर कोई औ़रत नहीं गुज़री। इस पर इज्माअ़ है मगर अशअ़री ने कहा है कि छः औ़रतें पैग़म्बर गुज़री हैं ह़व्वा, सारा, मूसा की वालिदा, हाजरा, आसिया और मरयम। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

बाब 33 : क़ारून का बयान, बेशक क़ारून, मूसा (अलै.) की क़ौम में से था, अल आयति (सूरह क़सस़)

٣٣- بَابُ ﴿إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى﴾ الآية [القصص : ٧٦]

(आयत में) लतनुऊ बमअ नी लतष्कुलु या'नी भारी होती थीं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ऊलुल क़ुव्वत की तफ़्सीर में कहा कि उसकी कुँजियों को लोगों की एक ताक़तवर जमाअ़त भी न उठा पाती थी। अल फ़रिहीन उतराने वाले वयकअन्न, अलम तरा अन्न की तरह है। अल्लाह यब्सितुर्रिज़्क़ा लिमय्यंशाऊ व यक़्दिरु या'नी क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ में फ़राख़ी कर देता है और जिसके लिये चाहता है तंगी कर

﴿لَتَنُوءُ﴾: لَتُثْقِلُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿أُولِي الْقُوَّةِ﴾: لاَ يَرْفَعُهَا الْعُصْبَةُ مِنَ الرِّجَالِ. يُقَالُ: ﴿الْفَرِحِيْنَ﴾: الْمَرِحِيْنَ. ﴿وَيْكَأَنَّ اللهَ﴾ مِثْلُ ﴿أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ﴾ يُوَسِّعُ عَلَيْهِ وَيُضَيِّقُ.

देता है।

कहते हैं क़ारून हज़रत मूसा (अलै.) का चचाज़ाद भाई था मगर दुनियावी दौलत में मग़रूर होकर काफ़िर हो गया। हालाँकि तौरात का आलिम था मगर दुनियादारी ने उसे इस हद तक गुमराह कर दिया कि आख़िर नतीजा वो हुआ जो क़ुर्आन में मज़्कूर है।

बाब 34 : इस बयान में कि व इला मदयना अख़ाहुम शुअयबा से अहले मदयन मुराद हैं क्योंकि एक शहर था बहरे क़ुल्ज़ुम पर

٣٤- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿وَإِلَى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا﴾ [الأعراف: ٨٥، هود: ٨٤، العنكبوت: ٣٦] إلى أَهلِ مَدْيَن، لأَنَّ مَدْيَنَ بَلَدٌ، وَمِثْلُهُ: ﴿وَاسْأَلِ الْقَرْيَةَ﴾ وَاسْأَلِ الْعِيْرَ يَعْنِي أَهْلَ الْقَرْيَةِ وَأَهْلَ الْعِيْرِ، ﴿وَرَاءَكُمْ ظِهْرِيًّا﴾ لَمْ يَلْتَفِتُوا إِلَيْهِ، يُقَالُ إِذَا لَمْ تُقْضَ حَاجَتُهُ: ظَهَرْتَ حَاجَتِي، وَجَعَلْتَنِي ظِهْرِيًّا. قَالَ: الظِّهْرِيُّ أَنْ تَأْخُذَ مَعَكَ دَابَّةً أَوْ وِعَاءً تَسْتَظْهِرُ بِهِ. ﴿مَكَانَتِهِمْ﴾ وَمَكَانُهُمْ وَاحِدٌ. ﴿يَغْنَوا﴾: يَعِيْشُوا. ﴿يَأْيَسُ﴾: يَحْزَنُ ﴿آسَى﴾: أَحْزَنُ. وَقَالَ الْحَسَنُ: ﴿إِنَّكَ لأَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ﴾ يَسْتَهْزِئُونَ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿لَيْكَةُ﴾: الأَيْكَةُ. ﴿يَوْمِ الظُّلَّةِ﴾: إِظْلاَلُ الْعَذَابِ عَلَيْهِمْ

उसकी मिस़ाल जैसे सूरह यूसुफ़ में फ़र्माया वस्अलिल क़र्यत वस्अलिल् ईरा या'नी बस्ती वालों से और क़ाफ़िला वालों से पूछ ले। ज़िहरिय्या या'नी इधर उधर फिरकर नहीं देखते। अरब लोग जब उनका काम न निकले तो कहते हैं ज़हरत हाजती व जअ़ल्तनी ज़िहरिय्या तूने मेरा काम पसे पुश्त डाल दिया, या मुझको पसे पुश्त कर दिया। ज़िहरी उस जानवर या ज़र्फ़ को कहते हैं जिसको तू अपनी क़ुव्वत बढ़ाने के लिये साथ रखे मकानतिहिम और मकानहुम दोनों का एक ही मा'नी है। लम यग़्नौ ज़िन्दा नहीं रहे थे वहाँ बसे ही न थे (सूरह माइदा में) फ़ला तास रंजीदा न हो, सूरह आराफ़ में) आसा रंजीदा हों, ग़म करो। इमाम हसन बस़री ने कहा (सूरह हूद में) काफ़िरों का जो ये क़ौल नक़ल किया। (इन्नक लअन्त हकीमुर्रशीद) तो ये काफ़िरों ने ठट्ठे के त़ौर पर कहा था। मुजाहिद ने कहा सूरह शुअ़रा में लयकता से मुराद एकता है या'नी झाड़ी में। यौमुज़् ज़िल्लति या'नी जिस दिन अज़ाब एक सायबान की शक्ल में नमूदार हुआ (अब्र में से आग बरसी)।

बाब 35 : हज़रत यूनुस (अलै.) का बयान

٣٥- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ﴾ - إِلَى قَوْلِهِ- ﴿وَهُوَ مُلِيْمٌ﴾ [الصافات: ١٣٩] قَالَ مُجَاهِدٌ: مُذْنِبٌ. الْمَشْحُونُ: الْمُوقَرُ. ﴿فَلَوْ لاَ أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ﴾ الآيَة ﴿فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ﴾ بِوَجْهِ الأَرْضِ ﴿وَهُوَ سَقِيْمٌ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْ

सूरह स़ाफ्फ़ात में अल्लाह तआला का फ़र्माना, और बेशक यूनुस (अलै.) आख़िर आयत वहुवा मुलीम तक। मुजाहिद ने कहा मुलीम गुनाहगार, अल मशहून बोझल भरी हुई। फ़लवला इन्नहू काना मिनल मुसब्बिहीन। आख़िर तक। फ़नबज़्नाहू बिल्अराइ का मा'नी रूए ज़मीन यक़्तीन वो पेड़ जो अपनी जड़ पर खड़ा नहीं रहता जैसे कद्दू वग़ैरह। व अरसल्ना इला मिअता अल्फ़ अव यज़ीदूना फ़ आमिनू फ़ मत्तअ़ना हुम इलाहीन (सूरह नून में

شَجَرَة مِنْ يَقْطِين﴾ مِنْ غَيْرِ ذَاتِ أَصْلٍ، الدُّبَاءِ وَنَحْوِهِ. ﴿وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيْدُونَ، فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَى حِيْنٍ﴾. ﴿ وَلاَ تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَى وَهُوَ مَكْظُومٌ﴾ [القلم : ٤٨]، ﴿كَظِيْمٌ﴾: وَهُوَ مَغْمُومٌ.

फ़र्माया) मक्ज़ूम जो क़ज़ीम के मा'नी में है या'नी मग़्मूम रंजीदा।

٣٤١٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي الأَعْمَشُ ح. حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ إِنِّي خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ)) زَادَ مُسَدَّدٌ : ((يُونُسَ بْنُ مَتَّي)). [طرفه في : ٤٦٠٣، ٤٨٠٤].

3412. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मुझसे आ'मश ने बयान किया (दूसरी सनद) हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई शख़्स मेरे बारे में ये न कहे कि मैं ह़ज़रत यूनुस (अलै.) से बेहतर हूँ। मुसद्दद ने यूनुस बिन मत्ता (अलै.) के लफ़्ज़ बढ़ाकर रिवायत किया। (दीगर मक़ाम : 4603, 4804)

٣٤١٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ إِنِّي خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَى. وَنَسَبَهُ إِلَى أَبِيْهِ)). [راجع: ٣٣٩٥]

3413. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल आ़लिया ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि किसी शख़्स के लिये मुनासिब नहीं कि मुझे यूनुस बिन मता से बेहतर क़रार दे। आपने उनके वालिद की त़रफ़ मन्सूब करके उनका नाम लिया था। (राजेअ़ : 3395)

तश्रीह : ह़ज़रत यूनुस (अलै.) को क़ुर्आन मजीद ने ज़ुन्नून या'नी मछली वाला भी कहा है जिन्हों ने मछली के पेट में जाकर आयते करीमा, **ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तुम मिनज़्ज़ालिमीन** का विर्द किया था। अल्लाह तआ़ला ने उसकी बरकत से उनको मछली के पेट से ज़िन्दा बाहर निकाल लिया। इस आयते करीमा के विर्द में अब भी यही ताष़ीर है।

٣٤١٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ عَنِ اللَّيْثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيْزِ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْفَضْلِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : بَيْنَمَا يَهُودِيٌّ يَعْرِضُ سِلْعَتَهُ أُعْطِيَ بِهَا شَيْئًا كَرِهَهُ،

3414. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मर्तबा लोगों को एक यहूदी अपना सामान दिखा रहा था लेकिन उसे उसकी जो क़ीमत लगाई गई उस पर वो राज़ी न था। इसलिये कहने लगा कि हर्गिज़ नहीं,

उस ज़ात की क़सम जिसने मूसा को तमाम इंसानों में बरगुज़ीदा क़रार दिया। ये लफ़्ज़ एक अंसारी सहाबी ने सुन लिया और खड़े होकर उन्होंने एक थप्पड़ उसके मुँह पर मारा और कहा कि नबी करीम (ﷺ) अभी हममें मौजूद हैं और तू इस तरह क़सम खाता है कि उस ज़ात की क़सम जिसने हज़रत मूसा (अलै.) को तमाम इंसानों में बरगुज़ीदा क़रार दिया। इस पर वो यहूदी आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा, ऐ अबुल क़ासिम! मेरा मुसलमानों के साथ अमन व सुलह का अहद व पैमान है। आँहज़रत (ﷺ) ने उस सहाबी से पूछा कि तुमने उसके मुँह पर तमाचा क्यों मारा? उन्होंने वजह बयान की तो आप ग़ुस्से हो गये इस क़दर कि ग़ुस्से के आसार चेहर-ए-मुबारक पर नुमायाँ हो गये। फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला के अंबिया में आपस में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत न दिया करो, जब सूर फूँका जाएगा तो आसमान व ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ पर बेहोशी तारी हो जाएगी, सिवा उनके जिन्हें अल्लाह तआला चाहेगा। फिर दूसरी मर्तबा सूर फूँका जाएगा और सबसे पहले मुझे उठाया जाएगा, लेकिन मैं देखूँगा कि मूसा (अलै.) अर्श को पकड़े हुए खड़े होंगे, अब मुझे मा'लूम नहीं कि ये उन्हीं तूर की बेहोशी का बदला दिया गया होगा या मुझसे भी पहले उनकी बेहोशी ख़त्म कर दी गई होगी। (राजेअ : 2411)

فَقَالَ: لاَوَالَّذِيْ اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْبَشَرِ، فَسَمِعَهُ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَامَ فَلَطَمَ وَجْهَهُ وَقَالَ : تَقُولُ وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْبَشَرِ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ أَظْهُرِنَا؟ فَذَهَبَ إِلَيْهِ فَقَالَ : أَبَا الْقَاسِمِ، إِنَّ لِيْ ذِمَّةً وَعَهْدًا، فَمَا بَالُ فُلاَنٍ لَطَمَ وَجْهِي؟ فَقَالَ: لِمَ لَطَمْتَ وَجْهَهُ؟ فَذَكَرَهُ فَغَضِبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى رُئِيَ فِي وَجْهِهِ، ثُمَّ قَالَ : ((لاَ تُفَضِّلُوا بَيْنَ أَنْبِيَاءِ اللهِ، فَإِنَّهُ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَيَصْعَقُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ إِلاَّ مَنْ شَاءَ اللهُ، ثُمَّ يُنْفَخُ فِيهِ أُخْرَى فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ بُعِثَ، فَإِذَا مُوسَى آخِذٌ بِالْعَرْشِ، فَلاَ أَدْرِي أَحُوسِبَ بِصَعْقَتِهِ يَوْمَ الطُّورِ، أَمْ بُعِثَ قَبْلِي)).

[راجع: ٢٤١١]

3415. और मैं तो ये भी नहीं कह सकता कि कोई शख़्स हज़रत यूनुस बिन मता से बेहतर है। (दीगर मक़ाम : 3416, 4604, 4631, 4805)

٣٤١٥- ((وَلاَ أَقُولُ إِنَّ أَحَدًا أَفْضَلُ مِنْ يُونُسَ بْنَ مَتَى)). [أطرافه في: ٣٤١٦، ٤٦٠٤، ٤٦٣١، ٤٨٠٥].

3416. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उन्होंने हुमैद बिन अब्दुर्रहमान से सुना और उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी शख़्स के लिये ये कहना लायक़ नहीं कि मैं हज़रत यूनुस बिन मता से अफ़ज़ल हूँ। (राजेअ : 3415)

٣٤١٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ سَمِعْتُ حُمَيْدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَى)). [راجع: ٣٤١٥]

तश्रीह : या'नी अपनी राय और अ़क़्ल से क्योंकि फ़ज़ीलत एक मख़्फ़ी अम्र है। उसका अल्लाह के इल्म पर छोड़ना बेहतर है मगर चूँकि दूसरी ह़दीष़ों में उसकी स़राहत आ गई कि आँह़ज़रत (ﷺ) सब अंबिया के सरदार हैं, इसलिये आपको उनसे बेहतर कहना जाइज़ हुआ मगर अदब के साथ कि दूसरे पैग़म्बरों की तौहीन न हो (वह़ीदी)

बाब 36 : अल्लाह पाक का (सूरह आराफ़ में) ये फ़र्माना उन यहूदियों से उस बस्ती (ईला) का ह़ाल पूछ जो समुन्दर के नज़दीक थी

٣٦- بَابُ ﴿وَاسْأَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ﴾ [الأعراف : ١٦٣] :

ये लोग हफ़्ते के दिन ज़्यादती करने लगे। शुर्रअन या'नी शवारेअ़, पानी पर तैरती हुई। आख़िर आयत (कू नू क़िरदतन ख़ासेईन) तक

يَعْدُونَ، يَتَجَاوَزُونَ فِي السَّبْتِ ﴿إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا - شَوَارِعَ. إِلَى قَوْلِهِ - كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ﴾.

उन बस्ती वालों ने ह़ीला साज़ी से काम लिया कि हफ़्ता के दिन मछली का शिकार छोड़ा मगर उस दिन मछलियाँ बकष़रत आतीं और ये उनको रोककर एक जगह घेर रखते फिर दूसरे दिनों में शिकार करते। इसी ह़रकत का आयते मज़्कूरा में ज़िक्र है। स़द अफ़सोस कि मुसलमानों में भी ऐसे फ़ुक़हा-ए-किराम पैदा हो गये हैं जिन्होंने किताबुल ह़ियल या'नी ह़ीलासाज़ी के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े बतलाने के लिये किताबें लिख डालीं और इस बारे में यहूदियों से भी आगे बढ़ गये। अल्लाह सबको स़िराते मुस्तक़ीम नस़ीब करे। आमीन।

बाब 37 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद और दी मैंने दाऊद (अलै.) को ज़बूर,

٣٧ - بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا﴾ [النساء : ١٦٣، الإسراء : ٥٥]

अज़्ज़ुबर बमा'नी अल कुतुब उसका वाह़िद ज़बूर है। ज़बरतु बमा'नी कतबतु मैं ने लिखा। और बेशक हमने दाऊद को अपने पास से फ़ज़्ल दिया (और हमने कहा था कि) ऐ पहाड़! उनके साथ तस्बीह़ पढ़ा करो। मुजाहिद (रह.) ने कहा कि (अविब्बी मअ़हू) के मा'नी सब्बिह़ी मअ़हू है और परिन्दों को भी हमने उनके साथ तस्बीह़ पढ़ने का हुक्म दिया और लोहे को उनके लिये नरम कर दिया था कि उससे ज़िरहें बनाईं। साबिग़ात के मा'नी दरूअ़ के हैं या'नी ज़िरहें। वक़द्दरा फ़िस्सरदि) का मा'नी हैं, और बनाने में एक ख़ास़ अंदाज़ रख (या'नी ज़िरह की) कीलों और ह़ल्क़े के बनाने में। कीलों को इतना बारीक भी न कर कि ढीली हो जाएँ और न उतनी बड़ी हों कि ह़ल्क़ा टूट जाए और अच्छे अ़मल करो। बेशक तुम जो भी अ़मल करोगे मैं उसे देख रहा हूँ।

﴿الزُّبُرُ﴾: الْكُتُبُ وَاحِدُهَا زَبُورٌ. زَبَرْتُ: كَتَبْتُ. ﴿وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلاً، يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ﴾ [سبأ : ١٠-١١]. قَالَ مُجَاهِدٌ سَبِّحِي مَعَهُ. ﴿وَالطَّيْرَ، وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ. أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ﴾ : الدُّرُوعَ ﴿وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ﴾ الْمَسَامِيرِ وَالْحَلَقِ، وَلاَ يُدِقَّ الْمِسْمَارَ فَيَتَسَلْسَلَ، وَلاَ تَعْظُمْ فَيَفْصِمَ. ﴿أَفْرِغْ﴾ : أَنْزِلْ. ﴿بَسْطَةً﴾: زِيَادَةً وَفَضْلاً. ﴿وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ﴾.

3417. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम

٣٤١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ

ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हज़रत दाऊद (अलै.) के लिये कुर्आन (या'नी ज़बूर) की क़िरअत बहुत आसान कर दी गई थी। चुनाँचे वो अपनी सवारी पर ज़ीन कसने का हुक्म देते और ज़ीन कसी जाने से पहले ही पूरी ज़बूर पढ़ लेते थे और आप सिर्फ़ अपने हाथों की कमाई खाते थे। उसकी रिवायत मूसा बिन उक़्बा ने की, उनसे सफ़्वान ने, उनसे अता बिन यसार ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ : 2073)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خُفِّفَ عَلَى دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ الْقُرْآنُ، فَكَانَ يَأْمُرُ بِدَوَابِّهِ فَتُسْرَجُ، فَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَبْلَ أَنْ تُسْرَجَ دَوَابُّهُ، وَلاَ يَأْكُلُ إِلاَّ مِنْ عَمَلِ يَدِهِ)) رَوَاهُ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ صَفْوَانَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٢٠٧٣]

तश्रीह : इस क़दर जल्द ज़बूर पढ़ लेना हज़रत दाऊद (अलै.) का एक मुअजिज़ा था। लेकिन अब आम मुसलमानों के लिये कुर्आन का ख़त्म तीन दिन से पहले करना सुन्नत के ख़िलाफ़ है। जिसने कुर्आन पाक तीन दिन से पहले और तीन से कम में ख़त्म किया उसने कुर्आन फ़हमी का हक़ अदा नहीं किया। हज़रत दाऊद (अलै.) अपने सब भाइयों में पस्त क़द थे इसलिये लोग उनको हिक़ारत की नज़र से देखते थे। लेकिन अल्लाह पाक ने हज़रत दाऊद (अलै.) को उनके भाइयों पर फ़ज़ीलत दी और उन पर ज़बूर नाज़िल फ़र्माई। इस तरह इंजील का फ़िक़रा सहीह हुआ कि जिस पत्थर को मेअमारों ने ख़राब देखकर फेंक दिया था, वही महल के कोने का सदरे नशीन हुआ। हज़रत दाऊद (अलै.) को अल्लाह तआला ने लोहे का काम बतौरे मुअजज़ा अता फ़र्माया कि लोहा उनके हाथ में मोम हो जाता और वो उनसे ज़िरहें और मुख़्तलिफ़ सामान बनाते। यही उनका ज़रिया-ए-मआश था। हदीष शरीफ़ में उनके रोज़े की भी ता'रीफ़ की गई है और कुर्आन मजीद में उनकी इबादत व रियाज़त और इनाबत इलल्लाह को बड़े अच्छे अंदाज़ में बयान किया गया है।

3418. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर मिली कि मैंने कहा है कि अल्लाह की क़सम! जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगा, दिन में रोज़े रखूँगा और रात भर इबादत किया करूँगा । रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे पूछा कि क्या तुम्हीं ने ये कहा है कि अल्लाह की क़सम जब तक ज़िन्दा रहूँगा दिन भर रोज़े रखूँगा और रात भर इबादत करूँगा? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ मैंने ये जुम्ला कहा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसे निभा नहीं सकोगे, इसलिये रोज़ा भी रखा करो और बग़ैर रोज़े के भी रहा करो और रात मे इबादत भी किया करो और सोया भी करो। हर महीने में तीन दिन रोज़ा रखा करो, क्योंकि हर नेकी का बदला दस गुना मिलता है इस तरह रोज़े का ये तरीक़ा भी (ष़वाब के ए'तिबार से) ज़िन्दगी भर के रोज़े जैसा हो जाएगा। मैंने कहा कि मैं इससे अफ़ज़ल तरीक़ा की ताक़त रखता हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल

٣٤١٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَهُ وَأَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا قَالَ: أُخْبِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنِّي أَقُولُ : وَاللهِ لأَصُومَنَّ النَّهَارَ وَلأَقُومَنَّ اللَّيْلَ مَا عِشْتُ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَنْتَ الَّذِي تَقُولُ : وَاللهِ لأَصُومَنَّ النَّهَارَ وَلأَقُومَنَّ اللَّيْلَ مَا عِشْتُ؟)) قُلْتُ : قَدْ قُلْتُهُ. قَالَ : ((إِنَّكَ لاَ تَسْتَطِيْعُ ذَلِكَ، فَصُمْ وَأَفْطِرْ، وَقُمْ وَنَمْ، وَصُمْ مِنَ الشَّهْرِ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ فَإِنَّ الْحَسَنَةَ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، وَذَلِكَ مِثْلُ صِيَامِ الدَّهْرِ)).

فَقُلْتُ: إِنِّي أُطِيْقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَصُمْ يَوْمًا وَأَفْطِرْ يَوْمَيْنِ)). قَالَ: قُلْتُ : إِنِّي أُطِيْقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ)). قَالَ : ((فَصُمْ يَوْمًا وَأَفْطِرْ يَوْمًا، وَذَلِكَ صِيَامُ دَاوُدَ وَهُوَ أَعْدَلُ الصِّيَامِ)). قُلْتُ : إِنِّي أُطِيْقُ أَفْضَلَ مِنْهُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((لاَ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ)).
[راجع: ١١٣١]

(ﷺ)! आपने उस पर फ़र्माया कि फिर एक दिन रोज़ा रखा करो और दो दिन बग़ैर रोज़े के रहा करो। उन्होंने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं इससे भी अफ़ज़ल तरीक़े की ताक़त रखता हूँ। आपने फ़र्माया कि फिर एक दिन रोज़ा रखा करो और एक दिन बग़ैर रोज़ा के रहा करो, ह़ज़रत दाऊद (अलै.) के रोज़े का तरीक़ा भी यही था और यही सबसे अफ़ज़ल तरीक़ा है। मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं इससे भी अफ़ज़ल तरीक़े की ताक़त रखता हूँ। आपने फ़र्माया कि उससे अफ़ज़ल और कोई तरीक़ा नहीं। (राजेअ़ : 1131)

٣٤١٩- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ حَدَّثَنَا حَبِيْبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلَمْ أُنَبَّأْ أَنَّكَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ؟ فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ : فَإِنَّكَ إِذَا فَعَلْتَ هَجَمَتِ الْعَيْنُ، وَنَفِهَتِ النَّفْسُ، صُمْ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ، فَذَلِكَ صَوْمُ الدَّهْرِ، أَوْ كَصَوْمِ الدَّهْرِ. قُلْتُ : إِنِّي أَجِدُ بِي - قَالَ مِسْعَرٌ : يَعْنِي قُوَّةً - قَالَ : فَصُمْ صَوْمَ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ، وَكَانَ يَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمًا، وَلاَ يَفِرُّ إِذَا لاَقَى)).
[راجع: ١١٣١]

3419. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अर ने बयान किया, कहा हमसे ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने बयान किया, उनसे अबुल अ़ब्बास ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, क्या मेरी ये ख़बर स़ह़ीह़ है कि तुम रात भर इबादत करते हो और दिन भर (रोज़ाना) रोज़ा रखते हो? मैंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। आपने फ़र्माया लेकिन अगर तुम इसी तरह करते रहे तो तुम्हारी आँखें कमज़ोर हो जाएँगी और तुम्हारा जी उकता जाएगा। हर महीने मे तीन रोज़े रखा करो कि यही (ष़वाब के ए'तिबार से) ज़िन्दगी भर का रोज़ा है, या (आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि) ज़िन्दगी भर के रोज़े की तरह है। मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं अपने में मह़सूस करता हूँ, मिस्अर ने बयान किया कि आपकी मुराद क़ुव्वत से थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर ह़ज़रत दाऊद (अलै.) के रोज़े की तरह रोज़े रखा करो। वो एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहा करते थे और अगर दुश्मन से मुक़ाबला करते तो मैदान से भागा नहीं करते थे। (राजेअ़ : 1131)

अह़ादीषे मज़्कूरा में ह़ज़रत दाऊद (अलै.) का ज़िक्र है। बाब से यही वजहे मुताबक़त है।

٣٨- بَابُ أَحَبُّ الصَّلاَةِ إِلَى اللهِ صَلاَةُ دَاوُدَ، وَأَحَبُّ الصِّيَامِ إِلَى اللهِ صِيَامُ دَاوُدَ : كَانَ

बाब 38 : ह़ज़रत दाऊद (अलै.) का बयान

सूरह बनी इस्राईल में अल्लाह ने फ़र्माया कि उसकी बारगाह में सबसे पसन्दीदा नमाज़ दाऊद (अलै.) की नमाज़ है और सबसे

पसन्दीदा रोज़ा हज़रत दाऊद (अलै.) का रोज़ा है। वो (इब्तिदाई) आधी रात मे सोया करते और एक तिहाई रात में इबादत किया करते थे। फिर जब रात का छटा हिस्सा बाक़ी रह जाता तो सोया करते। इसी तरह एक दिन रोज़ा रखा करत और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहा करते। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने भी उसी के बारे में कहा था कि जब भी सेहर के वक़्त मेरे यहाँ नबी करीम (ﷺ) मौजूद रहे तो सोये हुए होते थे।

يَنَامُ نِصْفَ اللَّيْلِ، وَيَقُومُ ثُلُثَهُ وَيَنَامُ سُدُسَهُ. وَيَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمًا قَالَ عَلِيٌّ : وَهُوَ قَوْلُ عَائِشَةَ : ((مَا أَلْفَاهُ السَّحَرُ عِنْدِي إِلاَّ نَائِمًا)).

3420. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अ़म्र बिन औस ष़क़फ़ी ने, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था, अल्लाह तआ़ला के नज़दीक रोज़े का सबसे पसन्दीदा तरीक़ा दाऊद (अलै.) का तरीक़ा था। आप एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहते थे। इसी तरह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक नमाज़ का सबसे ज़्यादा पसन्दीदा तरीक़ा हज़रत दाऊद (अलै.) की नमाज़ का तरीक़ा था, आप आधी रात तक सोते और एक तिहाई ह़िस्से में इबादत किया करते थे, फिर बक़िया छटे ह़िस्से में भी सोते थे। (राजेअ़ : 1131)

٣٤٢٠ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَوْسٍ الثَّقَفِيُّ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو قَالَ : قَالَ لِيْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَحَبُّ الصِّيَامِ إِلَى اللهِ صِيَامُ دَاوُدَ، كَانَ يَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمًا. وَأَحَبُّ الصَّلاَةِ إِلَى اللهِ صَلاَةُ دَاوُدَ، كَانَ يَنَامُ نِصْفَ اللَّيْلِ وَيَقُومُ ثُلُثَهُ وَيَنَامُ سُدُسَهُ)). [راجع: ١١٣١]

हज़रत दाऊद (अलै.) का रोज़ा हमेशा रोज़ा रखने से अफ़ज़ल है क्योंकि हमेशा रोज़ा रखने में नफ़्स को रोज़े की आ़दत हो जाती है और आ़दत की वजह से इबादत के लिये जो मशक़्क़त होनी चाहिये वो बाक़ी नहीं रहती। हज़रत दाऊद (अलै.) आधी रात के बाद उठकर तहज्जुद पढ़ते, फिर सो जाते, फिर सुबह की नमाज़ के लिये उठते। ये और ज़्यादा मुश्किल और नफ़्स पर ज़्यादा शाक़ (भारी) है।

बाब 39 : अल्लाह पाक का सूरह स़ाद में फ़र्माना, हमारे ज़ोरदार बन्दे दाऊद का ज़िक्र कर, वो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ होने वाला था.

٣٩- بَابُ ﴿وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الأَيْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ - إِلَى قَوْلِهِ - وَفَصْلَ الْخِطَابِ﴾ [ص:١٧-٢٠]

अल्लाह तआ़ला के इर्शाद व फ़स़लल ख़ित़ाब तक (या'नी फ़ैसला करने वाली तक़रीर हमने उन्हें अ़ता की थी) मुजाहिद ने कहा कि फ़स्लुल ख़ित़ाब से मुराद फ़ैसले की सूझ-बूझ है। वला तुश्तित़ या'नी बेइंसाफ़ी न कर और हमें सीधी राह बता, ये शख़्स मेरा भाई है उसके पास निन्नावे नअ़जअ (दुम्बियाँ) हैं, औरत के लिये भी नअ़जत का लफ़्ज़ इस्ते'माल होता है और नअ़जत बकरी को भी कहते हैं, और मेरे पास सिर्फ़ एक दुम्बी है, सो ये कहता है वो भी मुझको दे डाल, ये कफ़लहा ज़करिया की तरह है बमा'नी

قَالَ مُجَاهِدٌ: الْفَهْمُ فِي الْقَضَاءِ. ﴿وَلاَ تُشْطِطْ﴾: لاَ تُسْرِفْ. ﴿وَاهْدِنَا إِلَى سَوَاءِ الصِّرَاطِ. إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً﴾ - يُقَالُ لِلْمَرْأَةِ : نَعْجَةٌ، وَيُقَالُ لَهَا أَيْضًا : شَاةٌ - ﴿وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ، فَقَالَ : أَكْفِلْنِيهَا﴾ - مِثْلُ ﴿وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا﴾: ضَمَّهَا -

ज़म्मह़ा और बातचीत में मुझे दबाता है। दाऊद (अलै.) ने कहा कि उसने तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने की दरख़्वास्त करके व ाक़ई तुझ पर ज़ुल्म किया और अकष़र साझी यूँ ही एक-दूसरे के ऊपर ज़ुल्म किया करते हैं , अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, इन्नमा फ़तन्नाहु तक। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (फ़तन्नाहु के मा'नी हैं) हमने उनका इम्तिहान किया। उ़मर (रज़ि.) उसकी क़िरअत ताअ की तशदीद के साथ फ़तन्नाहु किया करते थे, सो उन्होंने अपने परवरदिगार के सामने तौबा की और वो झुक पड़े और रुजूअ़ हुए।

﴿وعزّني﴾: غلبني، صار أعزّ مني، أعززته: جعلته عزيزا ﴿في الخطاب﴾ يقال: المحاورة. ﴿قال لقد ظلمك بسؤال نعجتك إلى نعاجه، وإن كثيرا من الخلطاء﴾ الشركاء ﴿ليبغي - إلى قوله - إنما فتناه﴾ قال ابن عباس : اختبرناه. وقرأ عمر : ﴿فتّناه﴾ - بتشديد التاء - ﴿فاستغفر ربه وخر راكعا وأناب﴾.

तशरीह : कुछ ने कहा कि ह़ज़रत दाऊद (अलै.) ने एक कम सौ बीवियाँ रखकर फिर किसी की ह़सीन बीवी देखी। उनके दिल में उस औरत को ह़ासिल करने का ख़्याल आया। अल्लाह पाक ने उस ख़्याल पर भी उनको मलामत की और दो फ़रिश्तों को मुद्दई और मुद्दआ़ अलैहि बनाकर उन ही से फ़ैसला कराया जो ह़क़ था। पहले तो ह़ज़रत दाऊद (अलै.) को ख़्याल न आया, फिर समझ गये कि ये सब मेरे ही ह़स्बे ह़ाल है। उस वक़्त अल्लाह के डर से रोए और इस्तिग़्फ़ार किया। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि ये जो कुछ मुफ़स्सिरीन ने दास्तान लिखी है कि ह़ज़रत दाऊद (अलै.) एक औरत के बाल खुले देखकर उस पर आ़शिक़ हो गये थे और उसके शौहर को क़त्ल करा दिया, ये सब झूठ है। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा कि जो कोई ये क़िस्सा ह़ज़रत दाऊद (अलै.) का नाम लेकर बयान करेगा मैं उसको एक सौ साठ कोड़े मारूँगा।

3421. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे सहल बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़व्वाम से सुना, उनसे मुजाहिद ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा, क्या मैं सूरह स़ाद में सज्दा किया करूँ? तो उन्होंने आयत वमिन ज़ुर्रियतिही दाऊदा व सुलैमान की तिलावत की (फ़बिहुदाहुमुक़् तदिह) तक। नेज़ उन्होंने कहा कि तुम्हारे नबी (ﷺ) उन लोगों में से थे जिन्हें अंबिया (अलै.) की इक़्तिदा का हुक्म था। (दीगर मक़ाम : 4632, 4806, 4807)

٣٤٢١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ : سَمِعْتُ الْعَوَّامَ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: ((قُلْتُ لابْنِ عَبَّاسٍ أَسْجُدُ فِي ص؟ فَقَرَأَ: ﴿وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ - حَتَّى أَتَى - فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ﴾ فَقَالَ: نَبِيُّكُمْ ﷺ مِمَّنْ أُمِرَ أَنْ يَقْتَدِيَ بِهِمْ)).

[أطرافه في: ٤٦٣٢، ٤٨٠٦، ٤٨٠٧].

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस ह़दीष़ को किताबुत् तफ़्सीर में भी निकाला है। उसमे ये है कि आपने सूरह स़ाद में सज्दा किया। हमारे रसूले करीम (ﷺ) को जो अगले रसूलों की इक़्तिदा करने का हुक्म हुआ, उसका मतलब ये है कि अक़ाइद व उसूल सब पैग़म्बरों के एक हैं गो फ़ुरूआ़त में किसी क़दर इख़्तिलाफ़ है।

3422. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि सूरह स़ाद का सज्दा ज़रूरी नहीं, लेकिन मैंने नबी करीम(ﷺ) को इस

٣٤٢٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ:

सूरह में सज्दा करते देखा है।

(राजेअ : 1069)

((لَيْسَ ص مِنْ عَزَائِمِ السُّجُودِ، وَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْجُدُ فِيهَا)). [راجع: ١٠٦٩]

गो हदीष इस बाब से ता'ल्लुक़ नहीं रखती मगर सूरह साद में हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) का बयान है और उसमें सज्दा भी हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) की तौबा क़ुबूल होने के शुक्रिया में है, इस मुनासबत से उसको यहाँ बयान कर दिया।

बाब 40 : अल्लाह तआला का इर्शाद

٤٠- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

और मैंने दाऊद को सुलैमान (बतौर बेटा) अता फ़र्माया, वो बहुत अच्छा बन्दा था, बहुत ही रुजूअ होने वाला और तवज्जह करने वाला। सुलैमान का ये कहना कि मालिक मेरे मुझको ऐसी बादशाहत दे कि मेरे सिवा किसी को मयस्सर न हो। और सूरह तौबा में अल्लाह तआला का फ़र्मान, और ये लोग पीछे लग गये उस इल्म के जो सुलैमान की बादशाहत में शैतान पढ़ा करते थे। और सूरह सबा में फ़र्माया, (मैंने) सुलैमान (अलै.) के लिये हवा को (ताबेअ) कर दिया कि उसकी सुबह की मंज़िल महीना भर की होती और उसकी शाम की मंज़िल महीना भर की होती और क़ित्र या'नी हमने उनके लिये लोहे का चश्मा बहा दिया (व असल्ना लहू अयनल क़ित्र बमा'नी) व अज़ब्ना लहू अैनल हदीद है और जिन्नात में कुछ वो थे जो उनके आगे उनके परवरदिगार के हुक्म से ख़ूब काम करते थे। आख़िर आयत मिम् महारिब तक। मुजाहिद ने कहा कि महारिब वो इमारतें जो महलों से कम हों तमाषील तस्वीरें और लगन और जवाब या'नी हौज़ जैसे ऊँटों के लिये हौज़ हुआ करते हैं। और (बड़ी बड़ी) जमी हुई देगें आयतुश्शकूर तक। फिर जब मैंने उन पर मौत का हुक्म जारी कर दिया तो किसी चीज़ ने उनकी मौत का पता न दिया बजुज़ एक ज़मीन के कीड़े (दीमक) के कि वो उनके असा को खाता रहा, सो जब वो गिर पड़े तब जिन्नात ने जाना कि वो मर गये। अल्लाह तआला के फ़र्मान मुहीन तक सुलैमान (अलै.) कहने लगे कि मैं उस माल की मुहब्बत में परवरदिगार की याद से ग़ाफ़िल हो गया, फ़ तफ़िक़ा मस्हा अल्ख़ या'नी उसने घोड़ों की अयाल और अगाड़ी पछाड़ी की रस्सियों पर हाथ फेरना शुरू कर दिया। अल् अस्फ़ाद बमा'नी अल विषाक़ बेड़ियाँ जंजीरें। मुजाहिद ने कहा कि अस्साफ़िनात, सफ़्फ़नल फ़रसुन से मुश्तक़ है, उस वक़्त बोलते हैं जब घोड़ा एक पाँव उठाकर खुर की नोक पर खड़ा हो जाए, अल जियाद या'नी दौड़ने में तेज़। जसदन बमा'नी शैतान

﴿وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ، نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ﴾ [ص : ٣٠] الرَّاجِعُ : الْمُنِيبُ. وَقَوْلُهُ : ﴿ هَبْ لِي مُلْكًا لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي﴾ [ص: ٣٥] وَقَوْلُهُ: ﴿وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيَاطِيْنُ عَلَى مُلْكِ سُلَيْمَانَ﴾ [البقرة : ١٠٢]، ﴿وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ﴾ - أَذَبْنَا لَهُ عَيْنَ الْحَدِيْدِ - ﴿وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ إِلَى مِنْ مَحَارِيْبَ﴾ [سبأ: ١٢] قَالَ مُجَاهِدٌ: بُنْيَانٌ مَا دُونَ الْقُصُورِ ﴿وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ﴾ كَالْحِيَاضِ لِلإِبِلِ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كَالْجَوْبَةِ مِنَ الأَرْضِ ﴿وَقُدُورٍ رَاسِيَاتٍ اعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا وَقَلِيْلٌ مِنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ. فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلاَّ دَابَّةُ الأَرْضِ - الأَرَضَةُ - تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ﴾ عَصَاهُ ﴿فَلَمَّا خَرَّ - إِلَى قَوْلِهِ - الْمُهِيْنِ﴾ [سبأ:١٣-١٤]. ﴿حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي. فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالأَعْنَاقِ﴾ يَمْسَحُ أَعْرَافَ الْخَيْلِ وَعَرَاقِيْبَهَا. ﴿الأَصْفَادِ﴾ الْوَثَاقِ.

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿الصَّافِنَاتُ﴾: صَفَنَ الْفَرَسُ رَفَعَ إِحْدَى رِجْلَيْهِ حَتَّى تَكُونَ عَلَى طَرَفِ الْحَافِرِ. ﴿الْجِيَادُ﴾: السِّرَاعُ. ﴿جَسَدًا﴾: شَيْطَانًا. ﴿رُخَاءً﴾: طَيِّبَةً. ﴿حَيْثُ أَصَابَ﴾: حَيْثُ شَاءَ. ﴿فَامْنُنْ﴾: أَعْطِ. ﴿بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾: بِغَيْرِ حَرَجٍ.

(जो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम) की अंगूठी पहनकर उनकी कुर्सी पर बैठ गया था।) रुख़ाअ नर्मी से, ख़ुशी से। हयषु अस़ाबा या'नी जहाँ वो जाना चाहते फ़म्नुन अअ़ति के मा'नी में है, जिसको चाहे दे। बिग़ैरि ह़िसाब बग़ैर किसी तकलीफ़ के, बिना हर्ज।

तश्रीह : फ़तफ़िक़ अल्ख़ की ये तफ़्सीर इमाम बुख़ारी (रह.) ने की है कि वो घोड़ों का मुलाहिज़ा फ़र्माने लगे। अकषर मुफ़स्सिरीन ने ये मा'नी किये हैं कि उनके पाँव और गर्दनें तलवार से काटने लगे। चूँकि उनके देखने में अ़स्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई थी।

٣٤٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ((إِنَّ عِفْرِيتًا مِنَ الْجِنِّ تَفَلَّتَ الْبَارِحَةَ لِيَقْطَعَ عَلَيَّ صَلاَتِي، فَأَمْكَنَنِي اللهُ مِنْهُ، فَأَخَذْتُهُ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَرْبِطَهُ عَلَى سَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ حَتَّى تَنْظُرُوا إِلَيْهِ كُلُّكُمْ، فَذَكَرْتُ دَعْوَةَ أَخِي سُلَيْمَانَ ﴿رَبِّ هَبْ لِي مُلْكًا لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي﴾ فَرَدَدْتُهُ خَاسِئًا)). عِفْرِيتٌ : مُتَمَرِّدٌ مِنْ إِنْسٍ أَوْ جَانٍّ، مِثْلُ زِبْنِيَةٍ جَمَاعَتُهَا الزَّبَانِيَةُ. [راجع: ٤٦١]

3423. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक सरकश जिन्न कल रात मेरे सामने आ गया ताकि मेरी नमाज़ ख़राब कर दे लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे उस पर क़ुदरत दे दी और मैंने उसे पकड़ लिया। फिर मैंने चाहा कि उसे मस्जिद के किसी सुतून से बाँध दूँ ताकि तुम सब लोग भी देख सको। लेकिन मुझे अपने भाई ह़ज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की दुआ याद आ गई कि, या अल्लाह! मुझे ऐसी सल्तनत दे जो मेरे सिवा और किसी को मयस्सर न हो, इसलिये मैंने उसे नामुराद वापस कर दिया। इफ़्रीत सरकश के मा'नी में है, ख़्वाह इंसानों में से हो या जिन्नों में से। (राजेअ : 461)

रिवायत में ह़ज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र है, बाब से यही मुनासबत है। ह़ज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की दुआ आयत **रब्बिग़्फ़िरली वहब ली मुल्कल् ला यम्बग़ी लि अहदिम् मिम् बअ़दि** (स़ाद : 35) मज़्कूर है।

٣٤٢٤- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ

3424. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सुलैमान बिन दाऊद (अलै.) ने कहा कि आज रात में अपनी सत्तर बीवियों के पास जाऊँगा और हर बीवी

एक शहसवार जनेगी जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करेगा। उनके साथी ने कहा इंशाअल्लाह, लेकिन उन्होंने नहीं कहा। चुनाँचे किसी बीवी के यहाँ भी बच्चा नहीं हुआ, सिर्फ़ एक के यहाँ हुआ और उसकी भी एक जानिब बेकार थी। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर हज़रत सुलैमान (अलै.) इंशाअल्लाह कह देते (तो सबके यहाँ बच्चे पैदा होते) और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते। शुऐब और इब्ने अबुज़्ज़िनाद ने (बजाय सत्तर के) नब्बे कहा है और यही बयान ज़्यादा सहीह है।

دَاوُدَ : لأَطُوفَنَّ اللَّيْلَةَ عَلَى سَبْعِينَ امْرَأَةً تَحْمِلُ كُلُّ امْرَأَةٍ فَارِسًا يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللهِ. فَقَالَ لَهُ صَاحِبُهُ : إِنْ شَاءَ اللهُ. فَلَمْ يَقُلْ، وَلَمْ تَحْمِلْ شَيْئًا إِلاَّ وَاحِدًا سَاقِطًا أَحَدَ شِقَّيْهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَوْ قَالَهَا لَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللهِ)). قَالَ شُعَيْبٌ وَابْنُ أَبِي الزِّنَادِ ((تِسْعِينَ)) وَهُوَ أَصَحُّ.

3425. मुझसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम तैमी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! सबसे पहले कौनसी मस्जिद बनाई गई थी? फ़र्माया कि मस्जिदे हराम! मैंने सवाल किया, उसके बाद कौनसी? फ़र्माया कि मस्जिदे अक़्सा। मैंने सवाल किया और उन दोनों की ता'मीर का बीच का फ़ासला कितना था? फ़र्माया कि चालीस साल। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस जगह भी नमाज़ का वक़्त हो जाए फ़ौरन नमाज़ पढ़ लो तुम्हारे लिये तमाम रूए ज़मीन मस्जिद है। (राजेअ : 336)

٣٤٢٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ مَسْجِدٍ وُضِعَ أَوَّلُ؟ قَالَ: ((الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ)). قَالَتْ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((ثُمَّ الْمَسْجِدُ الأَقْصَى)) قُلْتُ: كَمْ كَانَ بَيْنَهُمَا؟ قَالَ: ((أَرْبَعُونَ)). ثُمَّ قَالَ : ((حَيْثُمَا أَدْرَكَتْكَ الصَّلاَةُ فَصَلِّ وَالأَرْضُ لَكَ مَسْجِدٌ)).[راجع: ٣٣٦]

इसकी बाब से मुनासबत ये है कि उसमें मस्जिदे अक़्सा का ज़िक्र है जिसकी पहली ता'मीर बहुत क़दीम (पुरानी) है मगर बाद में हज़रत सुलैमान (अलै.) ने उसे बनाया। का'बा शरीफ़ की भी पहली ता'मीर बहुत क़दीम है मगर हज़रत इब्राहीम ने उसकी तजदीद फ़र्माई। दोनों इमारतों की पहली बुनियादों में चालीस साल का फ़ासला है। इस तरह मुंकिरीने हदीष़ का ए'तिराज़ ग़लत हो गया जो वो इस हदीष़ पर वारिद करते हैं। उम्मत में गुमराह फ़िर्क़े बहुत पैदा हुए मगर मुंकिरीने हदीष़ ने उन तमाम गुमराह फ़िर्क़ों से आगे क़दम बढ़ाकर बुनियादे इस्लाम को ढहाने की कोशिश की है। **क़ातलहुमुल्लाहु अन्ना यूफ़कून**

3426. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मेरी और तमाम इंसानों की मिष़ाल एक ऐसे शख़्स की सी है जिसने आग रोशन की हो। फिर परवाने और कीड़े मकोड़े उसमें गिरने लगे हों।

٣٤٢٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَثَلِي وَمَثَلُ النَّاسِ كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا، فَجَعَلَ الْفَرَاشُ وَهَذِهِ الدَّوَابُّ تَقَعُ فِي النَّارِ)).

3427. और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि दो औरतें थीं और दोनों के साथ दोनों के बच्चे थे। इतने में एक भेड़िया आया और एक औरत के बच्चे को उठा ले गया। उन दोनों में से एक औरत ने कहा भेड़िया तुम्हारे बेटे को ले गया है और दूसरी ने कहा कि तुम्हारे बेटे को ले गया है। दोनों दाऊद (अलै.) के यहाँ अपना मुक़द्दमा ले गईं। आपने बड़ी औरत के हक़ में फ़ैसला कर दिया। उसके बाद वो दोनों हज़रत सुलैमान (अलै.) बिन दाऊद (अलै.) के यहाँ आईं और उन्हें उस झगड़े की ख़बर दी। उन्होंने फ़र्माया कि अच्छा छुरी लाओ। इस बच्चे के दो टुकड़े करके दोनों के बीच बराबर बांट दो। छोटी औरत ने ये सुनकर कहा, अल्लाह आप पर रहम करे। ऐसा न कीजिए, मैंने मान लिया कि ये इसी बड़ी का लड़का है। इस पर सुलैमान (अलै.) ने उस छोटी के हक़ में फ़ैसला किया। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैंने सिक्कीन का लफ़्ज़ उसी दिन सुना, वरना हम हमेशा (छुरी के लिये) मुदया का लफ़्ज़ बोला करते थे। (दीगर मक़ाम : 6769)

٣٤٢٧- ((وقَالَ : كانتِ امْرأتان معهما ابناهما، جاء الذِّئْبُ فَذَهَبَ بابْنِ إِحْداهما. فقالتْ صاحِبَتُها إِنَّمَا ذَهَبَ بابْنِكِ، وقالت الأُخْرَى: إِنَّمَا ذَهَبَ بابْنِكِ. فتحاكمتا إِلَى داوُدَ فَقَضَى بهِ لِلْكُبْرَى، فخرجتا عَلَى سُلَيْمَانَ بْنَ داوُدَ عَلَيْهما السَّلامُ فأخْبَرَتاهُ فَقَالَ: ائْتُونِي بالسِّكِّينِ أشُقُّهُ بَيْنَهُمَا. فَقَالَتِ الصُّغْرَى: لا تَفْعَلْ يرْحمُكَ الله. هُوَ ابْنُها، فَقَضَى بِهِ للصُّغْرى. قَالَ أبوهُرَيْرَةَ رَضِيَ الله عَنْهُ: والله إنْ سمِعْتُ بالسِّكِّينِ إلاَّ يومَئذٍ، وَمَا كُنَّا نَقُولُ إلاَّ الْمُدْيَةُ)).

[طرفه في : ٦٧٦٩].

इन जुम्ला अहादीषे मज़्कूरा में ज़िम्नी तौर पर हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र आया है। इसीलिये इन अहादीष को यहाँ दर्ज किया गया। बाब से यही वजहे मुनासबत है। मज़ीद तफ़्सील किताबुत्तफ़्सीर में आएगी। इंशाअल्लाह।

बाब 41 : हज़रत लुक़्मान (अलै.) और सूरह लुक़्मान में अल्लाह तआला ने फ़र्माया,

बेशक दी थी हमने लुक़्मान को हिक्मत या'नी ये कहा कि अल्लाह का शुक्र अदा कर आयत इन्नल्लाहा ला युहिब्बु कुल्ला मुख़्तालिन फ़ख़ूर तक। ला तुसइर या'नी अपना चेहरा न फेर।

٤١- بابُ قَولِ الله تَعَالَى: ﴿وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ لله - إِلَى قَوْلِهِ - إنَّ الله لاَ يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ﴾ [لقمان : ١٢-١٨]. ﴿وَلاَ تُصَعِّرْ﴾ : الإعْرَاضُ بالْوَجْهِ.

हज़रत लुक़्मान (अलैहिस्सलाम) अपने ज़माने के एक दाना हकीम थे, कुछ रिवायात में है कि उन्होंने हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) का ज़माना पाया और उनसे फ़ैज़ भी हासिल किया, जुम्हूर का क़ौल यही है कि यही एक दाना हकीम थे नबी न थे। कुछ लोगों ने उनको नबी कहा है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

3428. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत, जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में ज़ुल्म की मिलावट नहीं की, नाज़िल हुई तो नबी करीम (ﷺ) के सहाबा ने अर्ज़ किया कि हममें ऐसा कौन होगा जिसने

٣٤٢٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ الله قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ : ﴿الَّذِيْنَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ [الأنعام : ٨٢] قَالَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ: أَيُّنَا لَمْ

يَلْبِسْ إِيْمَانَهُ بِظُلْمٍ؟ فَنَزَلَتْ: ﴿لاَ تُشْرِكْ بِاللهِ، إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ﴾ [لقمان: ١٣]. [راجع: ٣٢]

अपने ईमान में ज़ुल्म नहीं किया होगा। इस पर ये आयत नाज़िल हुई, अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहरा। बेशक शिर्क ही ज़ुल्मे अ़ज़ीम है। (राजेअ़ : 32)

ये रिवायत ऊपर गुज़र चुकी है। इस रिवायत में गो हज़रत लुक़्मान (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र नहीं है मगर चूँकि उसके बाद वाली रिवायत में है और ये आयत हज़रत लुक़्मान (अलैहिस्सलाम) ही का क़ौल है लिहाज़ा बाब की मुनासबत ज़ाहिर है।

٣٤٢٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عِيْسَى بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ : ﴿الَّذِيْنَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ شَقَّ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّنَا لاَ يَظْلِمُ نَفْسَهُ؟ قَالَ: لَيْسَ ذَلِكَ، إِنَّمَا هُوَ الشِّرْكُ، أَلَمْ تَسْمَعُوا مَا قَالَ لُقْمَانُ لاِبْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ : ﴿يَا بُنَيَّ لاَ تُشْرِكْ بِاللهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ﴾. [راجع: ٣٢]

3429. मुझसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत, जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट नहीं की, नाज़िल हुई तो मुसलमानों पर बड़ा शाक़ गुज़रा और उन्होंने अ़र्ज़ किया हममें कौन ऐसा हो सकता है जिसने अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट न की होगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसका ये मत़लब नहीं, ज़ुल्म से मुराद आयत में शिर्क है। क्या तुमने नहीं सुना कि हज़रत लुक़्मान (अलै.) ने अपने बेटे से कहा था उसे नसीहत करते हुए कि, ऐ बेटे! अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क बड़ा ही ज़ुल्म है। (राजेअ़ : 32)

٤٢- بَابُ ﴿وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلاً أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ﴾ الآيَة [يس: ١٣]

﴿فَعَزَّزْنَا﴾ قَالَ مُجَاهِدٌ : شَدَّدْنَا.

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿طَائِرُكُمْ﴾: مَصَائِبُكُمْ

बाब 42 : और उनके सामने बस्ती वालों की मिष़ाल बयान कर, अल आयति

फ़अ़ज़्ज़ज़ना के मा'नी में मुजाहिद ने कहा कि हमने उन्हें कुव्वत पहुँचाई, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि त़ाइरुकुम के मा'नी तुम्हारी मुसीबतें हैं।

सूरह यासीन की इन आयात में जिन पैग़म्बरों का ज़िक्र है, ये हज़रत यह्या से पहले भेजे गये थे, उनका नाम योहन्ना और बोलिस था, तीसरे का नाम षमऊन था। इमाम बुख़ारी (रह.) इस बाब में कोई ह़दीष़ न ला सके क्योंकि इस बारे में कोई ह़दीष़ उनकी शर्त़ के मुत़ाबिक़ न मिली होगी। उन पैग़म्बरों की तौह़ीद व तब्लीग़ और शहादत का तज़्किरा सूरह यासीन में मुफ़स्सल मौजूद है। क़रिया से मुराद शहरे इंत़ाकिया है।

٤٣- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿ذِكْرُ رَحْمَةِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّاء، إِذْ نَادَى رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا. قَالَ : رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا - إِلَى

बाब 43 : हज़रत ज़करिया (अलै.) का बयान

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह मरयम में फ़र्माया (ये) तेरे परवरदिगार के रहमत (फ़र्माने) का तज़्किरा है अपने बन्दे ज़करिया पर जब उन्होंने अपने रब को आहिस्ता पुकारा, कहा ऐ परवरदिगार! मेरी

قوله - ﴿لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا﴾ [مريم : ٣-٧]. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : مَثَلاً. يُقَالُ : ﴿رَضِيًّا﴾ : مَرْضِيًّا. ﴿عِتِيًّا﴾ : عَصِيًّا، عَتَا يَعْتُو. ﴿قَالَ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلاَمٌ - إِلَى قَوْلِهِ - ثَلاَثَ لَيَالٍ سَوِيًّا﴾ وَيُقَالُ صَحِيحًا ﴿فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ، فَأَوْحَى إِلَيْهِمْ أَنْ سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا﴾. ﴿فَأَوْحَى﴾ : فَأَشَارَ. ﴿يَا يَحْيَى خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ - إِلَى قَوْلِهِ - وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا﴾. ﴿حَفِيًّا﴾ : لَطِيفًا. ﴿عَاقِرًا﴾ : الذَّكَرُ وَالأُنْثَى سَوَاءٌ.

हड्डियाँ कमज़ोरी हो गई हैं और सर में बालों की सफ़ेदी फैल पड़ी है। आयत लम नज्अल लहू मिन क़ब्लि समिय्या तक।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि रज़िय्या, मरज़िय्या के मा'नी में इस्ते'माल हुआ है। अतिया बमा'नी असिय्या है। अता यअतू से मुश्तक़ है। ज़करिया (अलै.) बोले, ऐ परवरदिगार! मेरे यहाँ लड़का कैसे पैदा होगा? आयत ष़लाष़ा लयालिन सविय्या तक। (सविय्या बमा'नी) स़हीहा है। फिर वो अपनी क़ौम के रूबरू हुज्रा में से बरआमद हुआ और इशारा किया कि अल्लाह की पाकी सुबह व शाम बयान किया करो। फ़अवहा बमा'नी फ़अशार है। ऐ यह्या! किताब को मज़्बूत पकड़, आयत व यौमा युब्अषु हय्या तक। हफ़िया बमा'नी लतीफ़ा। आक़िरा, मुअन्नष़ और मुज़क्कर दोनों के लिये आता है।

इस्राईली नबियों में ज़करिया का मुक़ाम बहुत बुलन्द है। हज़रत मरयम (अलैहिस्सलाम) की परवरिश उन ही की निगरानी में हुई थी। अल्लाह तआला ने बुढ़ापे में उनको बतौरे मुअजिज़ा हज़रत यह्या (अलैहिस्सलाम) जैसा फ़रज़न्दे रशीद (नेक बेटा) अता फ़र्माया, इन आयात में उन ही का ज़िक्र है। इन आयात के मुश्किल अल्फ़ाज़ की भी वज़ाहत यहाँ पर कर दी गई। तफ़्सील के लिये सूरह मरयम का मुतालआ कर लिया जाए।

٣٤٣٠- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا هَمَّامُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ صَعْصَعَةَ: ((أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ حَدَّثَهُمْ عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِيَ بِهِ : ثُمَّ صَعِدَ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الثَّانِيَةَ، فَاسْتَفْتَحَ. قِيلَ مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: أَرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا يَحْيَى وَعِيسَى وَهُمَا ابْنَا خَالَةٍ. قَالَ : هَذَا يَحْيَى وَعِيسَى، فَسَلِّمْ عَلَيْهِمَا، فَسَلَّمْتُ، فَرَدَّا، ثُمَّ قَالاَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ)). [راجع: ٣٢٠٧]

3430. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उनसे मालिक बिन सअसआ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने शबे मेअराज के बारे में बयान फ़र्माया कि फिर आप ऊपर चढ़े और दूसरे आसमान पर तशरीफ़ ले गए। फिर दरवाज़ा खोलने के लिये कहा। पूछा गया, कौन हैं? कहा कि जिब्रईल (अलै.)। पूछा गया, आपके साथ कौन हैं? कहा कि मुहम्मद (ﷺ), पूछा गया, क्या उन्हें लाने के लिये भेजा गया था? कहा कि जी हाँ। फिर जब मैं वहाँ पहुँचा तो ईसा और यह्या (अलै.) वहाँ मौजूद थे। ये दोनों नबी आपस में ख़ालाज़ाद भाई हैं। जिब्रईल (अलै.) ने बताया कि ये यह्या और ईसा (अलै.) हैं। उन्हें सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया, दोनो ने जवाब दिया और कहा ख़ुश आमदीद नेक भाई और नेक नबी। (राजेअ: 3207)

रिवायत में हज़रत यह्या (अलै.) का ज़िक्र है यही बाब की वजहे मुनासबत है। हज़रत ईसा (अलै.) की वालिदा हज़रत मरयम

(अलै.) और हज़रत यह्या (अलै.) की वालिदा हज़रत ऐशाअ माँ जाई बहनें थीं जिनकी माँ का नाम ह़िना है। मरयम सुरयानी लफ़्ज़ है जिसके मा'नी ख़ादिमा के हैं। किरमानी व फ़तह वग़ैरह।

बाब 44 : हज़रत ईसा (अलै.) और हज़रत मरयम (अलै.) का बयान

٤٤- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

सूरह मरयम में अल्लाह तआला का इर्शाद, और किताब में मरयम का ज़िक्र कर जब वो अपने घरवालों से अलग होकर एक शर्क़ी मकान में चली गईं (और वो वक़्त याद करो) जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरयम! अल्लाह तुझको ख़ुशख़बरी दे रहा है, अपनी तरफ़ एक कलिमा की, बेशक अल्लाह ने आदम और नूह और आले इब्राहीम और आले इमरान को तमाम जहाँ पर बरगुज़ीदा बनाया। आयत यरज़ुक़ु मय्यंशाउ बिग़ैरि हिसाब तक। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि आले इमरान से मुराद ईमानदार लोग हैं जो इमरान की औलाद में हों जैसे आले इब्राहीम और आले यसीन और आले मुहम्मद (ﷺ) से भी वही लोग मुराद हैं जो मोमिन हों। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं, अल्लाह ने फ़र्माया, हज़रत इब्राहीम (अलै.) के नज़दीक वाले वही लोग हैं जो उनकी राह पर चलते है। या'नी जो मोमिन मुवह्हिद हैं। आल का लफ़्ज़ असल में अहल था। आले यअक़ूब या'नी अहले यअक़ूब (ह को हम्ज़ा से बदल दिया) तस़्ग़ीर में फिर अस़ल की तरफ़ ले जाते हैं तब अहील कहते हैं।

﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا﴾ [مريم : ١٦]. ﴿إِذْ قَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ﴾ [آل عمران : ٤٥]. ﴿إِنَّ اللهَ اصْطَفَى آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ - إِلَى قَوْلِهِ - يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾ [آل عمران :٣٣]. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿وَآلَ عِمْرَانَ﴾. الْمُؤْمِنُونَ مِنْ آلِ إِبْرَاهِيمَ وَآلِ عِمْرَانَ وَآلِ يَاسِينَ وَآلِ مُحَمَّدٍ ﷺ. يَقُولُ: ﴿إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ﴾ [آل عمران :٦٨]. وَهُمُ الْمُؤْمِنُونَ. وَيُقَالُ: ﴿آلُ يَعْقُوبَ﴾ أَهْلُ يَعْقُوبَ. فَإِذَا صَغَّرُوا : ((آل)) ثُمَّ رَدُّوهُ إِلَى الأَصْلِ : قَالُوا : أُهَيْل.

मकानन शरक़िया का मतलब ये मा'लूम होता है कि हज़रत मरयम हैकल (ख़ानकाह) छोड़कर जहाँ उनकी परवरिश हुई अपने आबाई वत़न नास़िरा चली गईं। ये यरूशलम के शिमाल मश्रिक़ (उत्तर-पूर्व) में वाक़ेअ है और बाशिन्दगाने यरूशलम के लिये मश्रिक़ का हुक्म रखता है। इंजील से भी उसकी तस्दीक़ होती है क्योंकि वो मामले का महल्ले वक़ूअ नास़िरा ही बतलाते हैं। देखो किताब लूक़ा।

3431. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा उन्होंने कहा कि मुझसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया, कहा कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि हर एक बनी आदम जब पैदा होता है तो पैदाइश के वक़्त शैत़ान उसे छूता है और बच्चा शैत़ान के छूने से ज़ोर से चीखता है। सिवाय मरयम और उनके बेटे ईसा (अलै.) के। फिर अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि (उसकी वजह मरयम

٣٤٣١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ : ((مَا مِنْ بَنِي آدَمَ مَوْلُودٌ إِلاَّ يَمَسُّهُ الشَّيْطَانُ حِيْنَ يُولَدُ فَيَسْتَهِلُّ صَارِخًا مِنْ مَسِّ

(अलै.) की वालिदा की ये दुआ है कि ऐ अल्लाह!) मैं उसे (मरयम को) और उसकी औलाद को शैतानि रजीम से तेरी पनाह में देती हूँ।

الشَّيْطَانُ، غَيْرَ مَرْيَمَ وَابْنِهَا. ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ : ﴿وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ﴾ [آل عمران :٣٦].

बाब 45 : अल्लाह तआला ने फ़र्माया,

और (वो वक़्त याद कर) जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरयम! बेशक अल्लाह ने तुझको बरगुज़ीदा किया है और पलीदी से पाक किया है और तुझको दुनिया जहाँ की औरतों के मुक़ाबले में बरगुज़ीदा किया। ऐ मरयम! अपने रब की इबादत करती रह और सज्दा करती रह और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करती रह, ये (वाक़ियात) ग़ैब की ख़बरों मे से हैं जो मैं आप पर वह्य कर रहा हूँ और आप उन लोगों के पास नहीं थे जब वो अपने क़लम डाल रहे थे कि उनमें से कौन मरयम को पा ले और आप न उस वक़्त उनके पास थे जब वो आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे थे। यक्फ़ुलु यज़ुम्मु के मा'नी में बोलते हैं, या'नी मिला लेवे। कफ़ल्लहा या'नी ज़म्महा मिला लिया, (कुछ क़िरअतों में) तख़्फ़ीफ़ के साथ है। ये वो किफ़ालत है जो क़र्ज़ों वग़ैरह में की जाती है या'नी ज़मानत वो दूसरा मा'नी है।

٤٥- بَابٌ ﴿وَإِذْ قَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ. يَا مَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ. ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ، وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلاَمَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ، وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ﴾ [آل عمران ٤٢] يُقَالُ ﴿يَكْفُلُ﴾ يَضُمُّ. كَفَلَهَا ضَمَّهَا مُخَفَّفَةً، لَيْسَ مِنْ كَفَالَةِ الدُّيُونِ وَشِبْهِهَا.

3432. मुझसे अहमद बिन अबी रिजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़र ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र से सुना, कहा कि मैंने हज़रत अ़ली (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि मरयम बिन्ते इमरान (अपने ज़माने में) सबसे बेहतरीन ख़ातून थीं और इस उम्मत की सबसे बेहतरीन ख़ातून हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) हैं। (दीगर मक़ाम : 3815)

٣٤٣٢- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا النَّضْرُ عَنْ هِشَامٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي قَالَ : سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ جَعْفَرٍ قَالَ : سَمِعْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((خَيْرُ نِسَائِهَا مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ، وَخَيْرُ نِسَائِهَا خَدِيجَةُ)).

[طرفه في : ٣٨١٥].

बाब 46 : अल्लाह पाक का सूरह आले इमरान में फ़र्माना, जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम!

फ़इन्नमा यक़ूलु लहू कुन फ़यकून तक। युबश्शिरुकि और व युबश्शिरुका (मज़ीद और मुजर्रद) दोनों के एक मा'नी हैं। वजीहा का मा'नी शरीफ़। इब्राहीम नख़ई ने कहा। मसीह सिद्दीक़ को कहते हैं। मुजाहिद ने कहा कहला का मा'नी बुर्दबार। अकमहु

٤٦- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِذْ قَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ يَا مَرْيَمُ - إِلَى قَوْلِهِ - فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ﴾ [آل عمران :٤٥-٤٨]. ﴿يُبَشِّرُكِ﴾: وَيَبْشُرُكِ وَاحِدٌ. ﴿وَجِيهًا﴾: شَرِيفًا. وَقَالَ

إِبْرَاهِيمُ: الْمَسِيحُ الصِّدِّيقُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الْكَهْلُ الْحَلِيمُ. وَالأَكْمَهُ مَنْ يُبْصِرُ بِالنَّهَارِ وَلاَ يُبْصِرُ بِاللَّيْلِ. وَقَالَ غَيْرُهُ: مَنْ يُولَدُ أَعْمَى.

जो दिन को देखे, पर रात को न देखे। ये मुजाहिद का क़ौल है। ओरों ने कहा अकमहू के मअ़नी मादर ज़ाद अँधे के हैं।

आयाते मज़्कूरा में हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की पैदाइश का ज़िक्र है जो बग़ैर बाप के महज़ अल्लाह के हुक्म से पैदा हुए। जिन नामो-निहाद मुसलमानों ने हज़रत ईसा (अलै.) की इस हक़ीक़त से इंकार किया है उनका क़ौल बातिल है। क़ुर्आन पाक में साफ़ मौजूद है, **इन्न मष़ल ईसा इन्दल्लाहि कमष़लि आदम ख़लक़हू मिन तुराबिन षुम्म क़ाल लहू कुन फयकून** (आले इमरान : 59) **सदक़ल्लाहु तआ़ला आमन्ना बिही व सद्दक़ना क़ौलुहू अल्मसीहु अस्सिद्दीक़ कालत्तब्री मुरादु इब्राहीम बिज़ालिक अन्नल्लाह मसहहू फतहरहू मिनज़्ज़ुनूबि फहुव फईलुन बिमअ़ना मफ़ऊलुन व युक़ालु सुम्मिय बिज़ालिक लिअन्नहू कान ला यम्सहु ज़ा आहतिन इल्ला बरिअ व सुम्मियद्दज्जालु बिही लिअन्नहू यम्सहुल्अर्ज़ व क़ील लिकौनिही मम्सूहुल्ऐन.** (फत्हुल बारी)

٣٤٣٣- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ: سَمِعْتُ مُرَّةَ الْهَمْدَانِيَّ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيْدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ. كَمُلَ مِنَ الرِّجَالِ كَثِيْرٌ، وَلَمْ يَكْمُلْ مِنَ النِّسَاءِ إِلاَّ مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ وَآسِيَةُ امْرَأَةُ فِرْعَونَ)). [راجع: ٣٤١١]

3433. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मुर्रह ने, उन्होंने कहा कि मैंने हम्दानी से सुना। वो हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया औरतों पर आइशा की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे तमाम खानों पर ष़रीद की। मर्दों मे से तो बहुत से कामिल हो गुज़रे हैं लेकिन औरतों में मरयम बिन्ते इमरान और फ़िरऔन की बीवी आसिया के सिवा और कोई कामिल पैदा नहीं हुई। (राजेअ़ : 3411)

٣٤٣٤- وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : حَدَّثَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((نِسَاءُ قُرَيْشٍ خَيْرُ نِسَاءٍ رَكِبْنَ الإِبِلَ: أَحْنَاهُ عَلَى طِفْلٍ، وَأَرْعَاهُ عَلَى زَوْجٍ فِي ذَاتِ يَدِهِ)). يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَلَى إِثْرِ ذَلِكَ: وَلَمْ تَرْكَبْ مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ بَعِيْرًا قَطُّ. تَابَعَهُ ابْنُ أَخِي الزُّهْرِيِّ وَإِسْحَاقُ الْكَلْبِيُّ

3434. और इब्ने वहब ने बयान किया कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि ऊँट पर सवार होने वालियों (अ़रबी ख़वातीन) में सबसे बेहतरीन क़ुरैशी ख़वातीन हैं। अपने बच्चे पर सबसे ज़्यादा मुहब्बत व शफ़क़त करने वाली और अपने शौहर के माल व अस्बाब की सबसे बेहतर निगराँ व मुहाफ़िज़। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ये हदीष़ बयान करने के बाद कहते थे कि मरयम बिन्ते इमरान ऊँट पर कभी सवार नहीं हुई थीं। यूनुस के साथ इस हदीष़ को ज़ुहरी के भतीजे और इस्हाक़ कल्बी ने भी ज़ुहरी से रिवायत किया है।

(दीगर मक़ाम : 5082, 5365)

عَنِ الزُّهْرِيِّ.[طرفاه في: ٥٠٨٢، ٥٣٦٥].

बाब 47 : अल्लाह तआ़ला का सूरह मरयम में फ़र्माना, ऐ अहले किताब! अपने दीन में ग़ुलू (सख़्ती और तशद्दुद) न करो

٤٧- بَابُ قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ : ﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لاَ تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلاَ تَقُولُوا عَلَى اللهِ إِلاَّ الْحَقَّ، إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ، فَآمِنُوا بِاللهِ وَرُسُلِهِ وَلاَ تَقُولُوا ثَلاَثَةٌ انْتَهُوا خَيْرًا لَكُمْ إِنَّمَا اللهُ إِلَهٌ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ، لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ، وَكَفَى بِاللهِ وَكِيلاً﴾ [النساء : ١٧١].
وَقَالَ أَبُو عُبَيْدٍ : ﴿وَكَلِمَتُهُ﴾ كُنْ فَكَانَ.
وَقَالَ غَيْرُهُ : ﴿وَرُوحٌ مِنْهُ﴾ : أَحْيَاهُ فَجَعَلَهُ رُوحًا ﴿وَلاَ تَقُولُوا ثَلاَثَةٌ﴾.

और अल्लाह तआ़ला की निस्बत वही बात कहो जो सच है। मसीह ईसा बिन मरयम (अलै.) तो बस अल्लाह के एक पैग़म्बर ही हैं और उसका एक कलिमा जिसे अल्लाह ने मरयम तक पहुँचा दिया और एक रूह है उसकी तरफ़ से। पस अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और ये न कहो कि अल्लाह तीन हैं, उससे बाज़ आ जाओ। तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है। अल्लाह तो बस एक ही मा'बूद है, वो पाक है उससे कि उसके बेटा हो। उसका है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह ही का कारसाज़ होना काफ़ी है। अबू उबैद ने बयान किया कि कलिमतुहू से मुराद अल्लाह तआ़ला का ये फ़र्माना कि हो जा और वो हो गया और दूसरों ने कहा कि व रूहुम मिन्हू से मुराद ये है कि अल्लाह ने उन्हें ज़िन्दा किया और रूह डाली और ये न कहो कि अल्लाह तीन हैं।

नसारा के अ़क़ीद-ए-तष्लियत (ट्रिनिटी) की तर्दीद है जो रूहुल क़ुदुस और मरयम और ईसा तीनों को मिलाकर एक अल्लाह के क़ाइल हैं। ये ऐसा बातिल अ़क़ीदा है जिस पर अ़क़्ल और नक़्ल से सहीह़ दलील पेश नहीं की जा सकती मगर ईसाई दुनिया आज तक उस फ़ासिद अ़क़ीदे पर जमी हुई है। आयत **वला तक़ूलू षलाषतुन** में इसी बातिल अ़क़ीदे का ज़िक्र है।

3435. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, उनसे औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे उमैर बिन हानी ने बयान किया, कहा कि मुझसे जुनादा बिन अबी उमय्या ने बयान किया और उनसे उबादा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने गवाही दी कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, वो वहदहु ला शरीक है और ये है कि मुहम्मद (ﷺ) उसके बन्दे और रसूल हैं और ये कि ईसा (अलै.) उसके बन्दे और रसूल हैं और उसका कलिमा हैं, जिसे पहुँचा दिया था अल्लाह ने मरयम तक और एक रूह हैं उसकी तरफ़ से और ये कि जन्नत हक़ है और दोज़ख़ हक़ है तो उसने जो भी अ़मल किया होगा (आख़िर) अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत में दाख़िल करेगा। वलीद ने बयान किया कि मुझसे इब्ने जाबिर ने बयान किया, उनसे उमैर ने और जुनादा ने और अपनी रिवायत में ये ज़्यादा किया (ऐसा

٣٤٣٥- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ عَنِ الأَوْزَاعِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي عُمَيْرُ بْنُ هَانِئٍ قَالَ : حَدَّثَنِي جُنَادَةُ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ عَنْ عُبَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ شَهِدَ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَأَنَّ عِيسَى عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ، أَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةَ عَلَى مَا كَانَ مِنَ الْعَمَلِ)). قَالَ الْوَلِيدُ: حَدَّثَنِي ابْنُ جَابِرٍ عَنْ عُمَيْرٍ عَنْ

शख़्स) जन्नत के आठ दरवाज़ों में से जिससे चाहे (दाख़िल होगा)।

جَنادةَ وزاد منْ أبْوابِ الْجَنّةِ الثّمانِيَةِ أيها شاءَ.

बाब 48 : सूरह मरयम में अल्लाह तआला ने फ़र्माया (उस) किताब में मरयम का ज़िक्र कर जब वो अपने घरवालों से अलग होकर

एक पूरब रुख़ मकान में चली गई। लफ़्ज़ अम्बज़त नबज़ा से निकला है जैसे हज़रत यूनुस के क़िस्से में फ़र्माया नबज़्नाहू या'नी मैंने उनको डाल दिया। शरक़िया पूरब रुख़ (या'नी मस्जिद से या उनके घर से पूरब की तरफ़) फ़ा जाउहा के मा'नी उसको लाचार और बेक़रार कर दिया। तसाक़त गिरेगा। क़ज़िया दूर। फ़रिया बड़ा या बुरा। नसिय्या नाचीज़। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ऐसा ही कहा। दूसरों ने कहा नसी कहते हैं हक़ीर चीज़ को (ये सदी से मन्क़ूल है) अबू वाइल ने कहा कि मरयम ये समझी कि परहेज़गार वही होता है जो अक़्लमन्द होता है। जब उन्होंने कहा (जिब्रईल अलै. को एक जवान मर्द की शक्ल में देखकर) अगर तू परहेज़गार है अल्लाह से डरता है। वकीअ ने इस्राईल से नक़ल किया, उन्होंने अबू इस्हाक़ से, उन्होंने बराअ बिन आज़िब से सरिय्या सुरयानी ज़ुबान में छोटी नहर को कहते हैं।

٤٨- بابُ ﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذْ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا﴾ [مريم : ١٦]. فَنَبَذْنَاهُ : أَلْقَيْنَاهُ : اعْتَزَلَتْ شَرْقِيًّا: مِمَّا يَلِي الشَّرْقِ. ﴿فَأَجَاءَهَا﴾: أَفْعَلْتُ مِن جِئْتُ، وَيُقَالُ: أَلْجَأَهَا اضْطَرَّهَا، ﴿تَسَاقَطْ﴾ : تَسْقُطْ. ﴿قَصِيًّا﴾ : قَاصِيًا. ﴿فَرِيًّا﴾ عَظِيمًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿نَسِيًّا﴾ : لَمْ أَكُنْ شَيْئًا. وَقَالَ غَيْرُهُ النَّسِيُّ : الْحَقِيرُ. وَقَالَ أَبُو وَائِلٍ : عَلِمتْ مَرْيَمُ أَنَّ التَّقِيَّ ذُو نُهْيَةٍ حِينَ قَالَتْ : ﴿إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا﴾. وَقَالَ وَكِيعٌ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ: ﴿سَرِيًّا﴾ نَهْرٌ صَغِيرٌ بِالسُّرْيَانِيَّةِ.

3436. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया गोद में तीन बच्चों के सिवा और किसी ने बात नहीं की। अव्वल ईसा (अलै.) (दूसरे का वाक़िया ये है कि) बनी इस्राईल में एक बुज़ुर्ग थे, नाम जुरैज था। वो नमाज़ पढ़ रहे थे कि उनकी माँ ने उन्हें पुकारा। उन्होंने (अपने दिल में) कहा कि मैं वालिदा का जवाब दूँ या नमाज़ पढ़ता रहूँ? उस पर उनकी वालिदा ने (ग़ुस्सा होकर) बद्दुआ की, ऐ अल्लाह! उस वक़्त तक उसे मौत न आए जब तक ये ज़ानिया औरतों का मुँह न देख ले। जुरैज अपने इबादतख़ाने में रहा करते थे। एक मर्तबा उनके सामने एक फ़ाहिशा औरत आई और उनसे बदकारी चाही लेकिन उन्होंने (उसकी ख़्वाहिश पूरी

٣٤٣٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَمْ يَتَكَلَّمْ فِي الْمَهْدِ إِلاَّ ثَلاَثَةٌ: عِيسَى. وَكَانَ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ جُرَيْجٌ كَانَ يُصَلِّي، جَاءَتْهُ أُمُّهُ فَدَعَتْهُ، فَقَالَ : أُجِيبُهَا أَوْ أُصَلِّي؟ فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ لاَ تُمِتْهُ حَتَّى تُرِيَهُ وُجُوهَ الْمُومِسَاتِ، وَكَانَ جُرَيْجٌ فِي صَوْمَعَتِهِ، فَتَعَرَّضَتْ لَهُ امْرَأَةٌ وَكَلَّمَتْهُ فَأَبَى، فَأَتَتْ رَاعِيًا فَأَمْكَنَتْهُ مِنْ نَفْسِهَا،

फَوَلَدَتْ غُلاَمًا، فَقَالَتْ: مِنْ جُرَيْجٍ، فَأَتَوهُ فَكَسَرُوا صَوْمَعَتَهُ وَأَنْزَلُوهُ وَسَبُّوهُ، فَتَوَضَّأَ وَصَلَّى، ثُمَّ أَتَى الْغُلاَمَ فَقَالَ: مَنْ أَبُوكَ يَا غُلاَمُ؟ قَالَ: الرَّاعِي، قَالُوا: نَبْنِي صَوْمَعَتَكَ مِنْ ذَهَبٍ؟ قَالَ: لاَ، إِلاَّ مِنْ طِيْنٍ. وَكَانَتْ امْرَأَةٌ تُرْضِعُ ابْنًا لَهَا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ، فَمَرَّ بِهَا رَجُلٌ رَاكِبٌ ذُو شَارَةٍ، فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ اجْعَلْ ابْنِي مِثْلَهُ، فَتَرَكَ ثَدْيَهَا وَأَقْبَلَ عَلَى الرَّاكِبِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلْنِي مِثْلَهُ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى ثَدْيِهَا يَمَصُّهُ، قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمَصُّ إِصْبَعَهُ، ثُمَّ مُرَّ بِأَمَةٍ فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلْ ابْنِي مِثْلَ هَذِهِ. فَتَرَكَ ثَدْيَهَا فَقَالَ: اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِثْلَهَا، فَقَالَتْ: لِمَ ذَاكَ؟ فَقَالَ: الرَّاكِبُ جَبَّارٌ مِنَ الْجَبَابِرَةِ، وَهَذِهِ الأَمَةُ يَقُولُونَ: سَرَقْتِ زَنَيْتِ وَلَمْ تَفْعَلْ)).

[راجع: ١٢٠٦]

करने से) इंकार किया। फिर एक चरवाहे के पास आई और उसे अपने ऊपर क़ाबू दे दिया। उससे एक बच्चा पैदा हुआ और उसने उन पर ये तोहमत धरी कि ये जुरैज का बच्चा है। उनकी क़ौम के लोग आए और उनका इबादतख़ाना तोड़ दिया, उन्हें नीचे उतार कर लाए और उन्हें गालियाँ दीं। फिर उन्होंने वुज़ू करके नमाज़ पढ़ी, उसके बाद बच्चे के पास आए और उससे पूछा कि तेरा बाप कौन है? बच्चा (अल्लाह तआला के हुक्म से) बोल पड़ा कि चरवाहा है उस पर (उनकी क़ौम शर्मिन्दा हुई और) कहा कि हम आपका इबादतख़ाना सोने का बनाएँगे। लेकिन उन्होंने कहा हर्गिज़ नहीं, मिट्टी ही का बनेगा (तीसरा वाक़िया) और बनी इस्राईल की औरत थी, अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। क़रीब से एक सवार निहायत इज़्ज़त वाला और ख़ुशपोश गुज़रा, उस औरत ने दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को भी उसी जैसा बना दे लेकिन बच्चा (अल्लाह के हुक्म से) बोल पड़ा कि ऐ अल्लाह! मुझे उस जैसा न बनाना। फिर उसके सीने से लगकर दूध पीने लगा। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जैसे मैं इस वक़्त भी देख रहा हूँ कि नबी करीम (ﷺ) अपनी उँगली चूस रहे हैं (बच्चे के दूध पीने लगने की कैफ़ियत बतलाते वक़्त) फिर एक बांदी उसके क़रीब से ले जाई गई (जिसे उसके मालिक मार रहे थे) तो उस औरत ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को उस जैसा न बनाना। बच्चे ने फिर उसका पिस्तान छोड़ दिया और कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे उसी जैसा बना दे। उस औरत ने पूछा। ऐसा तू क्यों कह रहा है? बच्चे ने कहा कि वो सवार ज़ालिमों में से एक ज़ालिम शख़्स था और उस बांदी से लोग कह रहे थे कि तुमने चोरी की और ज़िना किया हालाँकि उसने कुछ भी नहीं किया था। (राजेअ : 1206)

वो पाकदामन अल्लाह की नेक बन्दी थी। उन तीनों बच्चों के कलाम करने का ता'ल्लुक़ सिर्फ़ बनी इस्राईल से है। उनके अलावा कुछ दूसरे बच्चों ने भी बचपन में कलाम किया है।

٣٤٣٧- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ ح. وَحَدَّثَنِي مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ

3437. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने (दूसरी सनद) मुझसे महमूद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा

मुझको सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस रात मेरी मेअराज हुई, मैंने ईसा (अलै.) से मुलाक़ात की थी। रावी ने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनका हुलिया बयान किया कि वो.... मेरा ख़याल है कि मअमर ने कहा.... दराज़ क़ामत और सीधे बालों वाले थे जैसे क़बीला शनूआ के लोग होते हैं। आपने बयान किया कि मैंने ईसा (अलै.) से भी मुलाक़ात की। आँहज़रत (ﷺ) ने उनका भी हुलिया बयान फ़र्माया कि दरम्याना क़द और सुर्ख़ व सफेद थे, जैसे अभी अभी गुस्लख़ाने से बाहर आए हों और मैंने इब्राहीम (अलै.) से भी मुलाक़ात की थी और मैं उनकी औलाद में उनसे सबसे ज़्यादा मुशाबेह हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे पास दो बर्तन लाए गए, एक में दूध था और दूसरे में शराब। मुझसे कहा गया कि जो आपका जी चाहे ले लो। मैंने दूध का बर्तन ले लिया और पी लिया। उस पर मुझसे कहा गया कि फ़ित्रत की तरफ़ आपने राह पा ली, या फ़ित्रत को आपने पा लिया। उसके बजाय अगर आप शराब का बर्तन लेते तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती।

(राजेअ : 3394)

عن الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِيْ: لَقِيْتُ مُوسَى، قَالَ : فَنَعَتَهُ فَإِذَا رَجُلٌ حَسِبْتُهُ قَالَ مُضْطَرِبٌ رَجِلُ الرَّأْسِ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنُوءَةَ. قَالَ: وَلَقِيْتُ عِيْسَى، فَنَعَتَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: رَبْعَةٌ أَحْمَرُ، كَأَنَّمَا خَرَجَ مِنْ دِيْمَاسٍ - يَعْنِي الْحَمَّامَ - وَرَأَيْتُ إِبْرَاهِيْمَ وَأَنَا أَشْبَهُ وَلَدِهِ بِهِ. قَالَ: وَأُتِيْتُ بِإِنَاءَيْنِ أَحَدُهُمَا لَبَنٌ وَالآخَرُ فِيْهِ خَمْرٌ، فَقِيْلَ لِي: خُذْ أَيَّهُمَا شِئْتَ، فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ فَشَرِبْتُهُ، فَقِيْلَ لِي : هُدِيْتَ الْفِطْرَةَ - أَوْ أَصَبْتَ الْفِطْرَةَ - أَمَا إِنَّكَ لَوْ أَخَذْتَ الْخَمْرَ غَوَتْ أُمَّتُكَ)).

[راجع: ٣٣٩٤]

3438. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको इस्राईल ने ख़बर दी, कहा हमको उ़ष्मान बिन मुग़ीरह ने ख़बर दी, उन्हें मुजाहिद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने ईसा, मूसा, और इब्राहीम (अलै.) को देखा। ईसा (अलै.) निहायत सुर्ख़ घुँघराले बाल वाले और चौड़े सीने वाले थे और मूसा (अलै.) गन्दुमी रंग, लम्बा कद और सीधे बालों वाले थे जैसे कोई क़बीला ज़ुत्त का आदमी हो।

٣٤٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرٍ أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيْلُ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْمُغِيْرَةِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ عِيْسَى وَمُوسَى وَإِبْرَاهِيْمَ، فَأَمَّا عِيْسَى فَأَحْمَرُ جَعْدٌ عَرِيْضُ الصَّدْرِ، وَأَمَّا مُوسَى فَآدَمُ جَسِيْمٌ سَبْطٌ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ الزُّطِّ)).

ज़ुत्त सूडान का एक क़बीला या यहूद, जहाँ के लोग दुबले पतले लम्बे क़द के होते हैं। ज़ुत्त से जाट का लफ़्ज़ बना है जो हिन्दुस्तान की एक मशहूर क़ौम है जो हिन्दू और मुसलमान दोनों मज़ाहिब से ता'ल्लुक़ रखते हैं। रिवायत में **अ़न मुजाहिदिन अ़न इब्नि उ़मर** नाक़िलीन का सह्व है अस़ल में स़हीह़ ये है अ़न मुजाहिद अ़न इब्ने अ़ब्बास।

3439. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ज़म्रह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मूसा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह

٣٤٣٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَبُو ضَمْرَةَ حَدَّثَنَا مُوسَى عَنْ نَافِعٍ

(रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दिन लोगों के सामने दज्जाल का ज़िक्र किया और फ़र्माया कि उसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला काना नहीं है, लेकिन दज्जाल दाहिनी आँख से काना होगा, उसकी आँख उठे हुए अंगूर की तरह होगी। (राजेअ : 3057)

قالَ عَبْدُ اللهِ: ذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا بَيْنَ ظَهْرَيِ النَّاسِ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ، أَلاَ إِنَّ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ أَعْوَرُ الْعَيْنِ الْيُمْنَى، كَأَنَّ عَيْنَهُ عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ)). [راجع: ٣٠٥٧]

3440. और मैंने रात का'बा के पास ख़्वाब में एक गन्दुमी रंग के आदमी को देखा जो गन्दुमी रंग के आदमियों में शक्ल के ए'तिबार से सबसे ज़्यादा हसीन व जमील था। उसके सर के बाल शानों तक लटक रहे थे, सर से पानी टपक रहा था और दोनों हाथ दो आदमियों के शानों पर रखे हुए वो बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे थे। मैंने पूछा कि ये कौन बुज़ुर्ग हैं? तो फ़रिश्तों ने बताया कि ये मसीह इब्ने मरयम हैं। उसके बाद मैंने एक शख़्स को देखा, सख़्त और मुड़े हुए बालों वाला जो दाहिनी आँख से काना था। उसे मैंने इब्ने क़तन से सबसे ज़्यादा शक्ल में मिलता हुआ पाया, वो भी एक शख़्स के शानों पर अपने दोनों हाथ रखे हुए बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था। मैंने पूछा, ये कौन है? फ़रिश्तों ने बताया कि ये दज्जाल है। इस रिवायत की मुताबअत उबैदुल्लाह ने नाफ़ेअ से की है। (दीगर मक़ाम : 3441, 5902, 6999)

٣٤٤٠- وَأَرَانِي اللَّيْلَةَ عِنْدَ الْكَعْبَةِ فِي الْمَنَامِ، فَإِذَا رَجُلٌ آدَمُ كَأَحْسَنِ مَا يُرَى مِنْ أُدْمِ الرِّجَالِ، تَضْرِبُ لِمَّتُهُ بَيْنَ مَنْكِبَيْهِ، رَجِلُ الشَّعْرِ يَقْطُرُ رَأْسُهُ مَاءً، وَاضِعًا يَدَيْهِ عَلَى مَنْكِبَي رَجُلَيْنِ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ. فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالُوا: هَذَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ. ثُمَّ رَأَيْتُ رَجُلاً وَرَاءَهُ جَعْدًا قَطِطًا أَعْوَرَ عَيْنِ الْيُمْنَى كَأَشْبَهِ مَنْ رَأَيْتُ بِابْنِ قَطَنٍ، وَاضِعًا يَدَيْهِ عَلَى مَنْكِبَيْ رَجُلٍ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ، فَقُلْتُ مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: الْمَسِيحُ الدَّجَّالُ.
تَابَعَهُ عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ.
[أطرافه في : ٣٤٤١، ٥٩٠٢، ٦٩٩٩،

3441. हमसे अहमद बिन मुहम्मद मक्की ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्राहीम बिन सअद से सुना, कहा कि मुझसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि हर्गिज़ नहीं। अल्लाह की क़सम! नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत ईसा के बारे में ये नहीं फ़र्माया था कि वो सुर्ख़ थे बल्कि आपने ये फ़र्माया था कि मैंने ख़्वाब में एक मर्तबा बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हुए अपने को देखा, उस वक़्त मुझे एक साहब नज़र आए जो गन्दुमी रंग लटके हुए बाल वाले थे, दो आदमियों के दरम्यान उनका सहारा लिये हुए और सर से पानी साफ़ कर रहे थे। मैंने पूछा कि आप कौन हैं? तो फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि आप इब्ने मरयम (अलै.) हैं। इस पर मैंने उन्हें ग़ौर से देखा तो मुझे एक और शख़्स

٣٤٤١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَكِّيُّ قَالَ: سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: لاَ وَاللهِ، مَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعِيسَى أَحْمَرُ، وَلَكِنْ قَالَ: ((بَيْنَمَا أَنَا نَائِمٌ أَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ، فَإِذَا رَجُلٌ آدَمُ سَبْطُ الشَّعْرِ يُهَادَى بَيْنَ رَجُلَيْنِ يَنْطِفُ رَأْسُهُ مَاءً - أَوْ يُهَرَاقُ رَأْسُهُ مَاءً - فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: ابْنُ مَرْيَمَ.

भी दिखाई दिया जो सुर्ख़, मोटा, सर के बाल मुड़े हुए और दाहिनी आँख से काना था, उसकी आँख ऐसी दिखाई देती थी जैसे उठा हुआ अंगूर हो, मैंने पूछा कि ये कौन है? तो फ़रिश्तों ने बताया कि ये दज्जाल है। उससे शक्ल व सूरत में इब्ने क़त़न बहुत ज़्यादा मुशाबेह था। ज़ुह्री ने कहा कि ये क़बीला ख़ुज़ाआ का एक शख़्स था जो जाहिलियत के ज़माने में मर गया था। (राजेअ : 3440)

فذهبتُ ألتفتُ فإذا رَجُلٌ أحمرُ جَسِيمٌ جَعْدُ الرَّأسِ أعْوَرُ عَيْنِهِ الْيُمْنَى كَأَنَّ عَيْنَهُ عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ، قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: هَذَا الدَّجَّالُ. وَأَقْرَبُ النَّاسِ بِهِ شَبَهًا ابْنُ قَطَنٍ. قَالَ الزُّهْرِيُّ: رَجُلٌ مِنْ خُزَاعَةَ هَلَكَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ)).

[راجع: ٣٤٤٠]

तश्रीह : जिस रिवायत में ह़ज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की निस्बत जअ़द का लफ़्ज़ आया है तो उसके मा'नी घुँघराले बाल वाले नहीं हैं, वरना ये ह़दीष़ उसके मुख़ालिफ़ होगी। इसीलिये हमने जअ़द के मा'नी इस ह़दीष़ में गठे हुए जिस्म के किये हैं और मुताबक़त इस त़रह़ भी हो सकती है कि ख़फ़ीफ़ घुँघराले बाल तेल डालने या पानी से भिगोने या बातचीत करने से सीधे हो जाते हैं। (वह़ीदी)

3442. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि मैं इब्ने मरयम (अलै.) से दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा क़रीब हूँ, अंबिया अ़लाती भाइयो की त़रह़ हैं और मेरे और ईसा (अलै.) के दरम्यान कोई नबी नहीं है। (दीगर मक़ाम : 3443)

٣٤٤٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِابْنِ مَرْيَمَ، وَالأَنْبِيَاءُ أَوْلاَدُ عَلاَّتٍ لَيْسَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ نَبِيٌّ)). [طرفه في : ٣٤٤٣].

तश्रीह : आप (ﷺ) भी पैग़म्बर वो भी पैग़म्बर, आपके और उनके बीच में दूसरा कोई पैग़म्बर नहीं है। ख़ुद ह़ज़रत ईसा (अलै.) ने इंजील में आपकी बशारत दी कि मेरे बाद तसल्ली देने वाला आएगा और वो तुमको बहुत सी बातें बतलाएगा जो मैंने नहीं बतलाई क्योंकि वो भी वहीं से इ़ल्म ह़ासिल करेगा जहाँ से मैं ह़ासिल करता हूँ। एक इंजील में साफ़ आँह़ज़रत (ﷺ) का नाम मज़्कूर है लेकिन नसारा ने उसको छुपा डाला है। इस शरारत का कोई ठिकाना है। कहते हैं कि फ़ार क़लीत़ के मा'नी भी सराहा हुआ हैं या'नी मुह़म्मद (ﷺ)।

3443. हमसे मुह़म्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे फुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे हिलाल बिन अ़ली ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी अ़म्र ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं ईसा बिन मरयम (अलै.) से और लोगों की बनिस्बत ज़्यादा क़रीब हूँ, दुनिया में भी और आख़िरत में भी और अंबिया (अलै.) अ़लाती भाइयों (की त़रह़) हैं। उनके मसाइल में अगरचे इख़्तिलाफ़ है लेकिन दीन सबका एक ही है। और इब्राहीम बिन त़ह्मान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने,

٣٤٤٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا هِلاَلُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، وَالأَنْبِيَاءُ إِخْوَةٌ لِعَلاَّتٍ أُمَّهَاتُهُمْ شَتَّى وَدِينُهُمْ وَاحِدٌ)). وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ مُوسَى بْنِ

उनसे सफ़्वान बिन सुलैम ने, उनसे अता बिन यसार ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। (राजेअ : 3443)

عُقْبَةَ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. [راجع: ٣٤٤٣]

अलाती भाई वो जिनका बाप एक हो, माँ जुदा जुदा हों। इसी तरह तमाम अंबिया का दीन एक है और फ़ुरूई मसाइल जुदा जुदा हैं।

3444. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ईसा इब्ने मरयम (अलै.) ने एक शख़्स को चोरी करते हुए देखा फिर उससे दरयाफ़्त फ़र्माया तूने चोरी की है? उसने कहा कि हर्गिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा और कोई मा'बूद नहीं। हज़रत ईसा (अलै.) ने फ़र्माया कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया और मेरी आँखों को धोखा हुआ।

٣٤٤٤- وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَى عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَجُلاً يَسْرِقُ، فَقَالَ لَهُ: أَسَرَقْتَ؟ قَالَ: كَلاَّ وَاللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ. فَقَالَ عِيْسَى: آمَنْتُ بِاللهِ، وَكَذَّبْتُ عَيْنِي)).

तश्रीह : या'नी मोमिन झूठी क़सम नहीं खा सकता जब उसने क़सम खा ली तो मा'लूम हुआ कि वो सच्चा है। आँख से ग़लती मुम्किन है मषलन उसके जैसा कोई दूसरा शख़्स हो। या दरहक़ीक़त उसका फ़ेअ़ल चोरी न हो। उस माल में उसका कोई हक़ मुतअ़य्यन हो। बहुत से एहतिमाल हो सकते हैं। कुछ ने कहा ऐसा कहने से हज़रत ईसा की मुराद ये थी कि मोमिन को मोमिन की क़सम पर ऐसा भरोसा होना चाहिये जैसे आँख से देखने पर बल्कि इससे ज़्यादा। कुछ ने ये कहा मतलब ये था कि क़ाज़ी को अपने इल्म और मुशाहिदे पर हुक्म देना दुरुस्त नहीं जब तक बाक़ायदा जुर्म के लिये षुबूत मुहय्या न हो जाए। (वहीदी)

3445. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुहरी से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे उबैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, उन्होंने हज़रत उमर (रज़ि.) को मिम्बर पर ये कहते सुना था कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, मुझे मेरे मर्तबे से ज़्यादा न बढ़ाओ जैसे ईसा इब्ने मरयम (अलै.) को नसारा ने उनके मर्तबे से ज़्यादा बढ़ा दिया है। मैं तो सिर्फ़ अल्लाह का बन्दा हूँ, इसलिये यही कहा करो (मेरे बारे में) कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। (राजेअ : 2462)

٣٤٤٥- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ سَمِعَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ عَلَى الْمِنْبَرِ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَى ابْنَ مَرْيَمَ، فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا : عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ)). [راجع: ٢٤٦٢]

तश्रीह : अल्लाह का ग़ुलाम, अल्लाह के हबीब, अल्लाह के ख़लील, अशरफ़ुल अंबिया आपकी ता'रीफ़ की हद यही है। जब क़ुर्आन में आपको अल्लाह का बन्दा फ़र्माया ये आयत उतरी, **लम्मा क़ाम अ़ब्दुल्लाहि** (अल जिन्न : 19) तो आप निहायत ही ख़ुश हुए अल्लाह की उ़बूदियते ख़ालिसा बहुत बड़ा मर्तबा है। ये जाहिल क्या जानें। उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) की नअ़त यही समझ रखी है कि आपको अल्लाह बना दें या अल्लाह से भी एक दर्जा आगे चढ़ा दें। **कबुरत कलिमतन तख़रूजु मिन अफ़्वाहिहिम.** (वहीदी)

3446. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको स़ॉलेह बिन ह़य्यि ने ख़बर दी कि ख़ुरासान के एक शख़्स ने शअ़बी से पूछा तो उन्होंने बयान किया कि मुझे अबू बुर्दा ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बयान किया, अगर कोई शख़्स अपनी लौण्डी को अच्छी त़रह अदब सिखलाए और पूरे त़ौर पर उसे दीन की ता'लीम दे। फिर उसे आज़ाद करके उससे निकाह़ कर ले तो उसे दो गुना स़वाब मिलता है और वो शख़्स जो पहले ह़ज़रत ईसा (अलै.) पर ईमान रखता था, फिर मुझ पर ईमान लाया तो उसे भी दो गुना स़वाब मिलता है और वो ग़ुलाम जो अपने रब का भी डर रखता है और अपने आक़ा की भी इत़ाअ़त करता है तो उसे भी दोगुना स़वाब मिलता है। (राजेअ़ : 97)

٣٤٤٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا صَالِحُ بْنُ حَيٍّ أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَهْلِ خُرَاسَانَ قَالَ لِلشَّعْبِيِّ : فَقَالَ الشَّعْبِيُّ أَخْبَرَنِي أَبُو بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَدَّبَ الرَّجُلُ أَمَتَهُ فَأَحْسَنَ تَأْدِيبَهَا، وَعَلَّمَهَا فَأَحْسَنَ تَعْلِيمَهَا، ثُمَّ أَعْتَقَهَا فَتَزَوَّجَهَا كَانَ لَهُ أَجْرَانِ. وَإِذَا آمَنَ بِعِيسَى ثُمَّ آمَنَ بِي فَلَهُ أَجْرَانِ. وَالْعَبْدُ إِذَا اتَّقَى رَبَّهُ وَأَطَاعَ مَوَالِيَهُ فَلَهُ أَجْرَانِ)). [راجع: ٩٧]

तश्रीह़ : ख़ुरासान के नामा'लूम शख़्स ने शअ़बी से कहा कि लोग यूँ कहते हैं कि अगर आदमी उम्मे वलद को आज़ाद करके फिर उससे निकाह़ करे तो ऐसा है जैसे अपनी क़ुर्बानी के जानवर पर सवार हुआ, तो इमाम शअ़बी ने ये बयान किया जो आगे मज़्कूर है।

3447. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुग़ीरह बिन नोअ़मान ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) तुम लोग नंगे पाँव, नंगे बदन और बग़ैर ख़त्ना के उठाए जाओगे। फिर आपने इस आयत की तिलावत की, जिस त़रह मैंने उन्हें पहली मर्तबा पैदा किया था इसी त़रह मैं दोबारा लौटाऊँगा, ये मेरी जानिब से वा'दा है और बेशक मैं उसे पूरा करने वाला हूँ, फिर सबसे पहले ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) को कपड़ा पहनाया जाएगा। फिर मेरे अस्ह़ाब को दाईं (जन्नत की) त़रफ़ ले जाया जाएगा। लेकिन कुछ को बाईं (जहन्नम की) त़रफ़ ले जाया जाएगा। मैं कहूँगा कि ये तो मेरे अस्ह़ाब हैं लेकिन मुझे बताया जाएगा कि जब आप उनसे जुदा हुए तो उसी वक़्त उन्होंने इर्तिदाद इख़्तियार कर लिया था। मैं उस वक़्त वही कहूँगा जो अ़ब्दुस्सालेह़ (नेक बन्दा) ईसा इब्ने मरयम (अलै.) ने कहा था कि जब तक मैं उनमें मौजूद था उनकी निगरानी करता रहा लेकिन जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनका निगाहबान है और तू हर चीज़ पर निगाहबान है। आयत अल अ़ज़ीज़ुल ह़कीम तक मुहम्मद

٣٤٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ النُّعْمَانِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((تُحْشَرُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً. ثُمَّ قَرَأَ ﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ﴾. فَأَوَّلُ مَنْ يُكْسَى إِبْرَاهِيمُ. ثُمَّ يُؤْخَذُ بِرِجَالٍ مِنْ أَصْحَابِي ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ، فَأَقُولُ أَصْحَابِي، فَيُقَالُ : إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ، فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ: ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ، فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ، وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ. إِلَى قَوْلِهِ

बिन यूसुफ़ ने बयान किया अबू अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है और उनसे क़ुबैसा ने बयान किया कि ये वो मुर्तदीन हैं जिन्होंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के अ़हदे ख़िलाफ़त में कुफ्र इख़्तियार किया था, और जिनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने जंग की थी। (राजेअ़ : 3349)

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ)). قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ الْفِرَبْرِيُّ: ذُكِرَ عِنْدَ أَبِي عَبْدِ اللهِ عَنْ قَبِيصَةَ قَالَ: ((هُمُ الْمُرْتَدُّونَ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَى عَهْدِ أَبِي بَكْرٍ، فَقَاتَلَهُمْ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ)). [راجع: ٣٣٤٩]

और वो अहले बिदअ़त भी धुत्कार दिये जाएँगे जिन्होंने क़िस्म क़िस्म की बिदआ़त से इस्लाम को मस्ख़ कर डाला था जैसा कि दूसरी रिवायत में है कि उनको हौज़े कौषर से रोक दिया जाएगा। ख़ुद मा'लूम होने पर आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माएँगे, सुहक़न लिमन ग़य्यर बअ़दी दीनन उनके लिये दूरी हो जिन्होंने मेरे बाद मेरे दीन को बदल डाला। इन तमाम बयान की गई अहादीष में किसी न किसी तरह से हज़रत ईसा (अलै.) का ज़िक्र आया है। इसलिये उनको यहाँ लाया गया और यही बाब से वजहे मुनासबत है।

बाब 49 : हज़रत ईसा बिन मरयम (अलै.) का आसमान से उतरना

٤٩ - بَابُ نُزُولِ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ

3448. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हों ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, वो ज़माना क़रीब है कि ईसा बिन मरयम (अलै.) तुम्हारे दरम्यान एक आदिल हाकिम की हैषियत से नाज़िल होंगे। वो स़लीब को तोड़ देंगे, सुअर को मार डालेंगे और जिज़्या मौक़ूफ़ कर देंगे। उस वक़्त माल की इतनी क़ष़रत हो जाएगी कि कोई उसे लेने वाला नहीं मिलेगा। उस वक़्त का एक सज्दा दुनिया व मा फ़ीहा से बढ़कर होगा। फिर हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो, और कोई अहले किताब ऐसा नहीं होगा जो ईसा की मौत से पहले उस पर ईमान न लाए और क़यामत के दिन वो उन पर गवाह होंगे। (राजेअ़ : 2222)

٣٤٤٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَيُوشِكَنَّ أَنْ يَنْزِلَ فِيكُمْ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا عَدْلاً، فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ، وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيرَ، وَيَضَعَ الْجِزْيَةَ، وَيَفِيضَ الْمَالُ حَتَّى لاَ يَقْبَلَهُ أَحَدٌ، حَتَّى تَكُونَ السَّجْدَةُ الْوَاحِدَةُ خَيْرًا مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا)). ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: وَاقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلاَّ لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ، وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا﴾.
[راجع: ٢٢٢٢]

आयत का मतलब ये हुआ कि क़यामत के क़रीब जो यहूद व नस़ारा होंगे और हज़रत ईसा उनके ज़माने में नाज़िल होंगे तो उस ज़माने के अहले किताब उनके ऊपर ईमान ले आएँगे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से ऐसा ही मन्क़ूल है।

3449. हमसे इब्ने बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे ह़ज़रत अबू क़तादा अंसारी (रज़ि.) के ग़ुलाम नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारा उस वक़्त क्या ह़ाल होगा जब ईसा इब्ने मरयम तुममें उतरेंगे (तुम नमाज़ पढ़ रहे होगे) और तुम्हारा इमाम तुम ही में से होगा। इस रिवायत की मुताबअ़त अ़क़ील और औज़ाई ने की। (राजेअ़ : 2222)

٣٤٤٩- حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيكُمْ وَإِمَامُكُمْ مِنْكُمْ)) تَابَعَهُ عُقَيْلٌ وَالأَوْزَاعِيُّ. [راجع: ٢٢٢٢]

तश्रीह : आख़िर ज़माने में ह़ज़रत ईसा बिन मरयम (अलै.) के आसमान से नाज़िल होने पर उम्मते इस्लामिया का इज्माअ़ है। आयते क़ुर्आनी **व इन्ना मिन अहलिल किताब** अल्ख़ इस अ़क़ीदा पर नस़्से क़तई है और अह़ादीषे स़ह़ीह़ा इस बारे में मौजूद हैं। उस आख़री ज़माने में चन्द नेचरिस्ट (प्रकृतिवादी) क़िस्म के लोगों ने इस अ़क़ीदे का इंकार किया और पंजाब के एक शख़्स मिर्ज़ा क़ादयानी ने इस इंकार को बहुत कुछ उछाला और तमाम मुसलमानाने सलफ़ व ख़लफ़ के ख़िलाफ़ उनकी मौत का झूठा अ़क़ीदा मशहूर किया, जो स़रीह़ बात़िल है। किसी भी रासिख़ुल ईमान मुसलमान को ऐसे बद अ़क़ीदा लोगों की हफ़्वात से मुताष़्षिर नहीं होना चाहिये।

बाब 50 : बनी इस्राईल के वाक़ियात का बयान

٥٠- بَابُ مَا ذُكِرَ عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ

3450. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे रबई बिन ह़िराश ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़क़्बा बिन अ़म्र (रज़ि.) ने ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से कहा, क्या आप वो ह़दीष़ हमसे नहीं बयान करेंगे जो आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी? उन्होंने कहा कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि जब दज्जाल निकलेगा तो उसके साथ आग और पानी दोनों होंगे लेकिन लोगों को जो आग दिखाई देगी वो ठण्डा पानी होगा और लोगों को जो ठण्डा पानी दिखाई देगा तो वो जलाने वाली आग होगी। इसलिये तुममें से जो कोई उसके ज़माने में हो तो उसे उसमें गिरना चाहिये जो आग होगी क्योंकि वही इंतिहाई शीरीं और ठण्डा पानी होगा। (दीगर मक़ाम : 7130)

٣٤٥٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ قَالَ: قَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو لِحُذَيْفَةَ: أَلاَ تُحَدِّثُنَا مَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((إِنَّ مَعَ الدَّجَّالِ إِذَا خَرَجَ مَاءً وَنَارًا، فَأَمَّا الَّذِي يَرَى النَّاسُ أَنَّهَا النَّارُ فَمَاءٌ بَارِدٌ، وَأَمَّا الَّذِي يَرَى النَّاسُ أَنَّهُ مَاءٌ بَارِدٌ فَنَارٌ تُحْرِقُ. فَمَنْ أَدْرَكَ مِنْكُمْ فَلْيَقَعْ فِي الَّذِي يُرَى أَنَّهَا نَارٌ، فَإِنَّهُ عَذْبٌ بَارِدٌ)). [طرفه في : ٧١٣٠].

3451. ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि पहले ज़माने में एक शख़्स के पास मलकुल मौत उनकी रूह क़ब्ज़ करने आए तो उनसे पूछा गया कोई अपनी नेकी तुम्हें याद है? उन्होंने कहा कि मुझे तो याद नहीं पड़ती,

٣٤٥١- قَالَ حُذَيْفَةُ: ((وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: إِنَّ رَجُلاً كَانَ فِيمَنْ قَبْلَكُمْ أَتَاهُ الْمَلَكُ لِيَقْبِضَ رُوحَهُ، فَقِيلَ لَهُ : هَلْ عَمِلْتَ مِنْ

उनसे दोबारा कहा गया कि याद करो? उन्होंने कहा कि मुझे कोई अपनी नेकी याद नहीं, सिवा उसके कि मैं दुनिया में लोगों के साथ ख़रीद व फ़रोख़्त किया करता था और लेन-देन किया करता था, जो लोग ख़ुशहाल होते उन्हें तो मैं (अपना क़र्ज़ वसूल करते वक़्त) मुहलत दिया करता था और तंग हाथ वालों को मुआफ़ कर दिया कर था। अल्लाह तआला ने उन्हें उसी पर जन्नत में दाख़िल किया। (राजेअ : 2077)

خَيْرٍ؟ قَالَ: مَا أَعْلَمُ. قِيْلَ لَهُ : انْظُرْ. قَالَ : مَا أَعْلَمُ شَيْئًا، غَيْرَ أَنِّي كُنْتُ أُبَايِعُ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا فَأُجَازِيْهِمْ، فَأُنْظِرُ الْمُوسِرَ وَأَتَجَاوَزُ عَنِ الْمُعْسِرِ، فَأَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةَ)). [راجع: ٢٠٧٧]

3452. और हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि एक शख़्स की मौत का जब वक़्त आ गया और वो अपनी ज़िन्दगी से बिलकुल मायूस हो गया तो उसने अपने घरवालों को वसिय्यत की कि जब मेरी मौत हो जाए तो मेरे लिये बहुत सारी लकड़ियाँ जमा करना और उनमें आग लगा देना। जब आग मेरे गोश्त को जला चुके और आख़िर हड्डी को भी जला दे तो उन जली हुई हड्डियों को पीस डालना और किसी तेज़ हवा वाले दिन का इंतिज़ार करना और (ऐसे किसी दिन) मेरी राख को दरिया में बहा देना। उसके घरवालों ने ऐसा ही किया। लेकिन अल्लाह तआला ने उसकी राख को जमा किया और उससे पूछा ऐसा तूने क्यूँ करवाया था? उसने जवाब दिया कि तेरे ही डर से ऐ अल्लाह! अल्लाह तआला ने उसी वजह से उसकी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी। हज़रत उक़्बा बिन अम्र (रज़ि.) ने कहा कि मैंने आपको ये फ़र्माते सुना था कि ये शख़्स कफ़न चोर था। (दीगर मक़ाम : 3479, 6480)

٣٤٥٢- فَقَالَ: ((وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ : إِنَّ رَجُلاً حَضَرَهُ الْمَوتُ، فَلَمَّا يَئِسَ مِنَ الْحَيَاةِ أَوْصَى أَهْلَهُ: إِذَا أَنَا مِتُّ فَاجْمَعُوا لِي حَطَبًا كَثِيْرًا أَوقِدُوا فِيْهِ نَارًا، حَتَّى إِذَا أَكَلَتْ لَحْمِي وَخَلَصَتْ إِلَى عَظْمِي فَامْتَحَشَتْ، فَخُذُوهَا فَاطْحَنُوهَا ثُمَّ انْظُرُوا يَومًا رَاحًا فَاذْرُوهُ فِي الْيَمِّ. فَفَعَلُوا. فَجَمَعَهُ فَقَالَ لَهُ : لِمَ فَعَلْتَ ذَلِكَ؟ قَالَ : مِنْ خَشْيَتِكَ. فَغَفَرَ اللهُ لَهُ)) قَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو: ((وَأَنَا سَمِعْتُهُ يَقُولُ ذَاكَ، وَكَانَ نَبَّاشًا)). [طرفاه في : ٣٤٧٩، ٦٤٨٠].

जिस शख़्स का ज़िक्र हुआ है वो बनी इस्राईल से था, बाब से यही वजहे मुनासबत है। मुर्दों को जलाना ऐसे ही ग़लत तसव्वुरात का नतीजा है जो ख़िलाफ़े फ़ित्रत है। इंसान की असल मिट्टी से है लिहाज़ा मरने के बाद उसे मिट्टी में दफ़न करना फ़ित्रत का तक़ाज़ा है।

3452,54. मुझसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझको मअमर और यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर नज़अ की हालत तारी हुई तो आप अपनी चादर चेहरा मुबारक पर बार-बार डाल लेते फिर जब शिद्दत बढ़ती तो उसे हटा देते थे। हुज़ूर (ﷺ) ने उसी हालत में फ़र्माया था, अल्लाह तआला की ला'नत हो

٣٤٥٣، ٣٤٥٤- حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنِي مَعْمَرٌ وَيُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَائِشَةَ وَابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالاَ : لَمَّا نُزِلَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ طَفِقَ يَطْرَحُ خَمِيصَةً عَلَى وَجْهِهِ، فَإِذَا اغْتَمَّ كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ وَهُوَ

كَذَلِكَ: ((لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ. يُحَذِّرُ مَا صَنَعُوا)).

[راجع: ٤٣٥، ٤٣٦]

यहूद व नसारा पर कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लिया। आँहुज़ूर (ﷺ) इस उम्मत को उनके किये से डराना चाहते थे। (राजेअ़ : 435, 436)

٣٤٥٥– حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ فُرَاتٍ الْقَزَّازِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا حَازِمٍ قَالَ: قَاعَدْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ خَمْسَ سِنِيْنَ، فَسَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيْلَ تَسُوسُهُمُ الأَنْبِيَاءُ، كُلَّمَا هَلَكَ نَبِيٌّ خَلَفَهُ نَبِيٌّ، وَإِنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي، وَسَيَكُونُ خُلَفَاءُ فَيَكْثُرُونَ)). قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: ((فُوا بِبَيْعَةِ الأَوَّلِ فَالأَوَّلِ، أَعْطُوهُمْ حَقَّهُمْ، فَإِنَّ اللهَ سَائِلُهُمْ عَمَّا اسْتَرْعَاهُمْ)).

3455. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे फ़रात क़ज़ार ने बयान किया, उन्होंने अबू हाज़िम से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की मज्लिस में पाँच साल तक बैठा हूँ। मैंने उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की ये ह़दीष़ बयान करते सुना कि आपने फ़र्माया बनी इस्राईल के अंबिया उनकी सियासी रहनुमाई भी किया करते थे, जब भी उनका कोई नबी हलाक हो जाता तो दूसरे उनकी जगह आ मौजूद होते, लेकिन याद रखो मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा। हाँ मेरे नाइब होंगे और बहुत होंगे। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि उनके बारे में आपका हमें क्या हुक्म है। आपने फ़र्माया कि सबसे पहले जिससे बेअ़त कर लो, बस उसी की वफ़ादारी पर क़ायम रहो और उनका जो ह़क़ है उसकी अदायगी में कोताही न करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला उनसे क़यामत के दिन उनकी रिआ़या के बारे में सवाल करेगा।

ख़ुलफ़ा की इत़ाअ़त के साथ ख़ुलफ़ा को भी उनकी ज़िम्मेदारियों के अदा करने पर तवज्जह दिलाई गई है। अगर वो ऐसा न करेंगे, उनको अल्लाह की अ़दालत में सख़्ततरीन रुस्वाई का सामना करना होगा, आज नामोनिहाद जुम्हूरियत के दौर में कुर्सियों पर आने वाले लोगों के लिये भी यही हुक्म है कि वो अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास करें मगर कितने कुर्सीनशीन हैं जो अपनी ज़िम्मेदारियों को सोचते हैं, उनको सिर्फ़ वोट मांगने के वक़्त कुछ याद आता है बाद में सब भूल जाते हैं इल्ला माशा अल्लाह।

٣٤٥٦– حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَتَتَّبِعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ شِبْرًا بِشِبْرٍ وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ، حَتَّى لَوْ سَلَكُوا جُحْرَ ضَبٍّ

3456. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोग पहली उम्मतों के तरीक़ों की क़दम-ब-क़दम पैरवी करोगे यहाँ तक कि अगर वो लोग किसी साहिना के सूराख़ में दाख़िल हुए हों तो तुम भी उसमें दाख़िल होगे। हमने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आपकी

मुराद पहली उम्मतों से यहूद व नसारा हैं? आपने फ़र्माया फिर कौनसा हो सकता है?

(दीगर मक़ाम : 7320)

لَسَلَكْتُمُوهُ. قُلْنَا : يَا رَسُولَ اللهِ، الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى؟ قَالَ : فَمَنْ؟)).

[طرفه في : ٧٣٢٠].

तश्रीह : आपका मतलब ये था कि तुम अंधाधुंध यहूद और नसारा की तक़्लीद करने लगोगे, फ़िक्र और ताम्मुल का माद्दा तुमसे निकल जाएगा। हमारे ज़माने में मुसलमान ऐसे ही अंधे बन गये हैं, यहूद व नसारा ने जिस तरह अपने दीन को बर्बाद किया उनसे भी बढ़कर मुसलमानों ने बिदअतें ईजाद करके इस्लाम का हुलिया बदल दिया है, क़ब्रपरस्ती, इमाम परस्ती मुसलमानों का शिआर बन गई हैं, इनमें इस क़दर फ़िर्क़े पैदा हो गये कि यहूद व नसारा से आगे उनका क़दमत है, शिया और सुन्नी नामों से जो तफ़रीक़-दर-तफ़रीक़ होते हुए सैंकड़ों फ़िर्क़ों तक नौबत पहुँच चुकी है, किताब व सुन्नत का सिर्फ़ नाम बाक़ी रह गया है।

3457. हमसे इमरान बिन मैसरा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि (नमाज़ के लिये ऐलान के तरीक़े पर बहष़ करते वक़्त) सहाबा ने आग और नाक़ूस का ज़िक्र किया, लेकिन कुछ ने कहा कि ये तो यहूद व नसारा का तरीक़ा है। आख़िर बिलाल (रज़ि.) को हुक्म हुआ कि अज़ान में (कलिमात) दो-दो बार कहें और तक्बीर में एक एक दफ़ा। (राजेअ : 603)

٣٤٥٧- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((ذَكَرُوا النَّارَ وَالنَّاقُوسَ فَذَكَرُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى، فَأُمِرَ بِلاَلٌ أَنْ يَشْفَعَ الأَذَانَ وَأَنْ يُوتِرَ الإِقَامَةَ)).[راجع: ٦٠٣]

इबादत के लिये आग जलाकर या नाक़ूस बजाकर लोगों को बुलाना आज भी अकष़र धर्मों का मा'मूल है। इस्लाम ने इस तरीक़े को नापसन्द करके अज़ान का बेहतरीन तरीक़ा जारी किया जो पाँच औक़ात फ़ज़ा-ए-आसमानी में पुकारकर कही जाती है, जिसमें अक़ीदा-ए-तौहीद व रिसालत का ऐलान होता है और बेहतरीन लफ़्ज़ों में मुसलमानों को इबादत के लिये बुलाया जाता है। रिवायत में यहूद व नसारा का ज़िक्र है यही बाब से मुनासबत है। रिवायत में इकहरी तक्बीर कहने का ज़िक्र साफ़ लफ़्ज़ों में मौजूद है, मगर इस ज़माने में अकष़र बिरादराने मिल्लत, इकहरी तक्बीर सुनकर सख़्त नफ़रत का इज़्हार करते हैं जो उनकी नावाक़फ़ियत की खुली दलील है, इकहरी तक्बीर सुन्नते नबवी है उससे इंकार हर्गिज़ जाइज़ नहीं है, अल्लाह पाक हमारे मुहतरम बिरादरान को तौफ़ीक़ दे कि वो ऐसा ग़लत तअस्सुब दिलों से दूर कर दें।

3458. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) कोख पर हाथ रखने को नापसन्द करती थीं और फ़र्माती थीं कि इस तरह यहूद करते हैं।

इस रिवायत की मुताबअ़त शुअ़बा ने आ'मश से की है।

٣٤٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا كَانَتْ تَكْرَهُ أَنْ يَجْعَلَ يَدَهُ فِي خَاصِرَتِهِ وَتَقُولُ: إِنَّ الْيَهُودَ تَفْعَلُهُ)).

تَابَعَهُ شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ.

कोख पर हाथ रखने की आदत यहूद की थी और उससे तकब्बुर का भी इज़्हार होता है। इसीलिये नापसन्द क़रार दिया गया। ज़िम्नन यहूद का ज़िक्र है यही बाब से वजहे मुनासबत है।

3459. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारा ज़माना पिछली उम्मतों के मुक़ाबले में ऐसा है जैसे अ़स्र से मग़रिब तक का वक़्त है, तुम्हारी मिष़ाल यहूद व नस़ारा के साथ ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने कुछ मज़दूर लिये और कहा कि मेरा काम आधे दिन तक कौन एक एक क़ीरात़ की उज्रत पर करेगा? यहूद ने आधे दिन तक एक एक क़ीरात़ की मज़दूरी पर काम करना तै कर लिया। फिर उस शख़्स ने कहा कि आधे दिन से अ़स्र की नमाज़ तक मेरा काम कौन शख़्स एक एक क़ीरात़ की मज़दूरी पर करेगा। अब नस़ारा एक एक क़ीरात़ की मज़दूरी पर आधे दिन से अ़स्र के वक़्त तक मज़दूरी करने पर तैयार हो गये। फिर उस शख़्स ने कहा कि अ़स्र की नमाज़ से सूरज डूबने तक दो दो क़ीरात़ पर कौन शख़्स मेरा काम करेगा? तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि वो तुम्हीं लोग हो जो दो दो क़ीरात़ की मज़दूरी पर अ़स्र से सूरज डूबने तक काम करोगे, तुम आगाह रहो कि तुम्हारी मज़दूरी दी गई है। यहूद व नस़ारा इस फ़ैसले पर ग़ुस्सा हो गये और कहने लगे कि काम तो हम ज़्यादा करें और मज़दूरी हमीं को कम मिले। अल्लाह तआ़ला ने उनसे फ़र्माया क्या मैंने तुम्हें तुम्हारा ह़क़ देने में कोई कमी की है? उन्होंने कहा कि नहीं। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि फिर ये अफ़ज़ल है, मै जिसे चाहूँ ज़्यादा दूँ। (राजेअ़ : 557)

٣٤٥٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا أَجَلُكُمْ - فِي أَجَلِ مَنْ خَلاَ مِنَ الأُمَمِ - مَا بَيْنَ صَلاَةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغْرِبِ الشَّمْسِ. وَإِنَّمَا مَثَلُكُمْ وَمَثَلُ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى كَرَجُلٍ اسْتَعْمَلَ عُمَّالاً فَقَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي إِلَى نِصْفِ النَّهَارِ عَلَى قِيْرَاطٍ قِيْرَاطٍ؟ فَعَمِلَتِ الْيَهُودُ إِلَى نِصْفِ النَّهَارِ عَلَى قِيْرَاطٍ قِيْرَاطٍ. ثُمَّ قَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي مِنْ نِصْفِ النَّهَارِ إِلَى صَلاَةِ الْعَصْرِ عَلَى قِيْرَاطٍ قِيْرَاطٍ؟ فَعَمِلَتِ النَّصَارَى مِنْ نِصْفِ النَّهَارِ إِلَى صَلاَةِ الْعَصْرِ عَلَى قِيْرَاطٍ قِيْرَاطٍ. ثُمَّ قَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِيْ مِنْ صَلاَةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغْرِبِ الشَّمْسِ عَلَى قِيْرَاطَيْنِ قِيْرَاطَيْنِ؟ أَلاَ فَأَنْتُمُ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ مِنْ صَلاَةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغْرِبِ الشَّمْسِ عَلَى قِيْرَاطَيْنِ قِيْرَاطَيْنِ، أَلا لَكُمُ الأَجْرُ مَرَّتَيْنِ. فَغَضِبَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى فَقَالُوا: نَحْنُ أَكْثَرُ عَمَلاً وَأَقَلُّ عَطَاءً، قَالَ اللهُ: هَلْ ظَلَمْتُكُمْ مِنْ حَقِّكُمْ شَيْئًا؟ قَالُوا: لاَ. قَالَ: فَإِنَّهُ فَضْلِي، أُعْطِيْهِ مَنْ شِئْتُ)).

[راجع: ٥٥٧]

तशरीह : यहूद व नस़ारा और मुसलमान मज़हबी दुनिया की ये तीन अ़ज़ीम क़ौमें हैं, जिनको आसमानी किताबें दी गई हैं, उनके अ़लावा दुनिया की दूसरी क़ौमों में भी इल्हामे रब्बानी का इल्क़ाअ हुआ है मगर अब उनकी तारीख़ मुस्तनद नहीं है। बहरहाल ये तीन क़ौमें आज भी दुनिया में अपने क़दीम दआ़वी के साथ मौजूद हैं जिनमें मुसलमान क़ौम एक ऐसे दीन की अ़लमबरदार है जो नासिख़ुल अदयान होने का मुद्दई है, उनको अल्लाह ने ये फ़ज़ीलत बख़्शी है कि हर नेक काम पर उनको न सिर्फ़ दोगुना बल्कि दस गुना तक अज्र मिलता है। ह़दीष़ में यही तम्ष़ील बयान की गई है। क़ीरात़ चार जौ के बराबर वज़न

को कहते हैं, कुछ आमाले सालेहा (नेक आमाल) का षवाब दस से भी ज़्यादा कई सौ गुना तक मिलता है।

3460. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अम्र ने, उनसे ताऊस ने, उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा अल्लाह तआला फ़लाँ को तबाह करे। उन्हें क्या मा'लूम नहीं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था, यहूद पर अल्लाह की ला'नत हो, उनके लिये चर्बी हराम हुई तो उन्होंने उसे पिघलाकर बेचना शुरू कर दिया। इस रिवायत को इब्ने अब्बास (रज़ि.) के साथ जाबिर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ : 2223)

٣٤٦٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَاتَلَ اللهُ فُلاَنًا، أَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ حُرِّمَتْ عَلَيْهِمُ الشُّحُومُ فَجَمَلُوهَا فَبَاعُوهَا)). تَابَعَهُ جَابِرٌ وَأَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٢٢٣]

तश्रीह : फ़लाँ से मुराद समुरह बिन जुन्दब हैं जिन्होंने काफ़िरों से जिज़्या में शराब वसूल कर ली थी और उसको बेचकर उसका पैसा बैतुलमाल को रवाना कर दिया, समुरह ने अपनी राय से ये इज्तिहाद किया था कि उसमें कोई क़बाहत नहीं, उन्होंने ये हदीष नहीं सुनी थी, इसलिये हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको कोई सज़ा नहीं दी। (वहीदी)

3461. हमसे अबू आसिम ज़िहाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, कहा हमसे हस्सान बिन अतिया ने बयान किया, उनसे अबू कब्शा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरा पैग़ाम लोगों को पहुँचाओ! अगरचे एक ही आयत हो और बनी इस्राईल के वाक़ियात तुम बयान कर सकते हो, उसमें कोई हर्ज नहीं और जिसने मुझ पर क़स्दन झूठ बाँधा तो उसे अपने जहन्नम के ठिकाने के लिये तैयार रहना चाहिये।

٣٤٦١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ عَطِيَّةَ عَنْ أَبِي كَبْشَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً، وَحَدِّثُوا عَنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ وَلاَ حَرَجَ، وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

वाक़ियाते बनी इस्राईल बयान करने में कोई हर्ज नहीं है मगर इस ख़्याल से कि न उनकी तस्दीक़ हो न तक्ज़ीब सिवा उनके जो सहीह सनद से षाबित हों।

3462. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे सॉलेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, यहूद व नसारा (दाढ़ी वग़ैरह) में ख़िज़ाब नहीं लगाते, तुम लोग उसके ख़िलाफ़ तरीक़ा इख़्तियार करो (या'नी ख़िज़ाब लगाया करो)।

(दीगर मक़ाम : 5799)

٣٤٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى لاَ يَصْبُغُونَ، فَخَالِفُوهُمْ)).

[طرفه في : ٥٨٩٩].

तश्रीह : ह़दीष़ में यहूद व नसारा का ज़िक्र है यही बाब से वजहे मुनासबत है मेहन्दी का ख़िज़ाब मुराद है जिसे दाढ़ी और सर पर लगाना मस्नून है, इस ह़दीष़ से ये भी निकला कि यहूद व नसारा की तहज़ीब की बजाय इस्लामी तहज़ीब, इस्लामी तर्ज़े अमल इख़्तियार करना ज़रूरी है और अंधाधुंध उनके मुक़ल्लिदीन बनकर उनकी बदतरीन तहज़ीब को इख़्तियार करना बड़ी दनाइत है मगर अफ़सोस कि आज बेशतर नामनिहाद मुसलमान उसी तहज़ीब के दिलदादा बने हुए हैं, जिन रिवायतों में इज़ाल-ए-शैब या'नी सफ़ेद बालों के ख़त्म की नहीं आई है, वो नही स्याह ख़िज़ाब के बारे में है जो मना है। मुस्लिम शरीफ़ में है, **क़ालन्नबिय्यु ग़य्यरूहू व जन्निबुस्सवाद** या'नी सफ़ेद बालों को मुतग़य्यर कर दो मगर स्याह ख़िज़ाब से बचो। जो लोग जानते हैं कि दाढ़ी बढ़ाना इसलिये सुन्नत है कि ये यहूद की तहज़ीब की मुख़ालफ़त करना है उनको मा'लूम होना चाहिये कि बालों का सफ़ेद ही रखना भी यहूदी तहज़ीब है जैसा कि यहाँ बयान मौजूद है फिर उस तहज़ीब की मुख़ालफ़त में मेहन्दी का ख़िज़ाब करना इतना ही ज़रूरी है जितना दाढ़ी का बढ़ाना ज़रूरी है मगर अकष़र मुसलमान हैं जो आधी बात याद रखते हैं, आधी को भूल जाते हैं। बहरहाल इस्लामी तहज़ीब एक मुकम्मल बेहतरीन तहज़ीब है, आज मग़रिबियत के फ़िदाई इस्लामी तहज़ीब छोड़नेवाले शक्ल व सूरत व लिबास वग़ैरह वग़ैरह से अल्लाह के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हैं जो ऐसा लिबास अपनाते हुए भी जिसको पहनकर न आराम से खा सकते हैं न बैठ सकते हैं फिर उस लिबास पर मगन हैं।

3463. मुझसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा मुझसे ह़ज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे ह़सन ने, कहा हमसे ह़ज़रत जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह ने उसी मस्जिद में बयान किया (ह़सन ने कहा कि) उन्होंने जब हमसे बयान किया हम उसे भूले नहीं और न हमें उसका अंदेशा है कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ इस ह़दीष़ की निस्बत ग़लत़ की होगी, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पिछले ज़माने में एक शख़्स़ (के हाथ में) ज़ख़्म हो गया था और उसे उससे बड़ी तकलीफ़ थी, आख़िर उसने छुरी से अपना हाथ काट लिया उसका नतीजा ये हुआ कि ख़ून बहने लगा और उसी से वो मर गया फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि मेरे बन्दे ने ख़ुद मेरे पास आने में जल्दी की इसलिये मैंने भी जन्नत को उस पर ह़राम कर दिया।
(राजेअ़ : 1364)

٣٤٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ: حَدَّثَنَا جُنْدُبُ بْنُ عَبْدِ اللهِ فِي هَذَا الْمَسْجِدِ، وَمَا نَسِيْنَا مُنْذُ حَدَّثَنَا، وَمَا نَخْشَى أَنْ يَكُونَ جُنْدُبٌ كَذَبَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَانَ فِيْمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ رَجُلٌ بِهِ جُرْحٌ فَجَزِعَ فَأَخَذَ سِكِّيْنًا فَحَزَّ بِهَا يَدَهُ، فَمَا رَقَأَ الدَّمُ حَتَّى مَاتَ، قَالَ اللهُ تَعَالَى: بَادَرَنِي عَبْدِي بِنَفْسِهِ، حَرَّمْتُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ)).
[راجع: ١٣٦٤]

पिछले ज़माने के एक शख़्स़ का ज़िक्र ह़दीष़ में वारिद हुआ, यही बाब की मुनासबत है, ह़दीष़ से ये ज़ाहिर हुआ कि ख़ुदकुशी करने वाले पर जन्नत ह़राम है, इन तमाम अह़ादीष़ में अहले किताब का ज़िक्र किसी न किसी त़ौर पर बताया है इसीलिये इनको यहाँ दर्ज किया गया है।

बाब 51 : बनी इस्राईल के एक कोढ़ी और एक नाबीना और एक गंजे का बयान

٥١- بَابُ حَدِيْثُ أَبْرَصَ وَأَعْمَى وَأَقْرَعَ فِي بَنِي إِسْرَائِيْلَ

3467. मुझसे अह़मद बिन इस्ह़ाक़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन आ़स़िम ने बयान किया, उनसे हम्माम ने बयान किया, उनसे इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा मुझस

٣٤٦٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ

अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी ह़म्ज़ा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना (दूसरी सनद) और मुझसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, उन्हें हम्माम ने ख़बर दी, उनसे इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी अ़म्र ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि बनी इस्राईल में तीन शख़्स थे, एक कोढ़ी, दूसरा अंधा और तीसरा गंजा, अल्लाह तआ़ला ने चाहा कि उनका इम्तिहान ले। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने उनके पास एक फ़रिश्ता भेजा। फ़रिश्ता पहले कोढ़ी के पास आया और उससे पूछा कि तुम्हें सबसे ज़्यादा क्या चीज़ पसन्द है? उसने जवाब दिया कि अच्छा रंग और अच्छी चमड़ी क्योंकि मुझसे लोग परहेज़ करते हैं। बयान किया कि फ़रिश्ते ने उस पर अपना हाथ फेरा तो उसकी बीमारी दूर हो गई और उसका रंग भी ख़ूबसूरत हो गया और चमड़ी भी अच्छी हो गई। फ़रिश्ते ने पूछा किस त़रह़ का माल तुम ज़्यादा पसन्द करोगे? उसने कहा कि ऊँट! या उसने गाय कही, इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह को इस सिलसिले में शक था कि कोढ़ी और गंजे दोनों में से एक ने ऊँट की ख़्वाहिश की थी और दूसरे ने गाय की। चुनाँचे उसे ह़ामला ऊँटनी दी गई और कहा गया कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें इसमें बरकत देगा, फिर फ़रिश्ता गंजे के पास आया और उससे पूछा कि तुम्हें क्या चीज़ पसन्द है? उसने कहा कि उ़म्दह बाल और मेरा मौजूदा ऐ़ब ख़त्म हो जाए, क्योंकि लोग इसकी वजह से मुझसे परहेज़ करते हैं। बयान किया कि फ़रिश्ते ने उसके सर पर हाथ फेरा और उसका ऐ़ब दूर हो गया और उसके बजाय उ़म्दा बाल आ गये। फ़रिश्ते ने पूछा, किस त़रह़ का माल पसन्द करोगे? उसने कहा कि गाय! बयान किया कि फ़रिश्ते ने उसे ह़ामला गाय दे दी और कहा कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें इसमें बरकत देगा। फिर अंधे के पास फ़रिश्ता आया और कहा कि तुम्हें क्या चीज़ पसन्द है? उसने कहा कि अल्लाह तआ़ला मुझे आँखों की रोशनी दे दे ताकि मैं लोगों को देख सकूँ। बयान किया कि फ़रिश्ते ने हाथ फेरा और अल्लाह तआ़ला ने उसकी बीनाई उसे वापस कर दी। फिर पूछा कि किस

الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ح. وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنِ رَجَاءٍ أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((إِنَّ ثَلاَثَةً فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ أَبْرَصَ وَأَعْمَى وَأَقْرَعَ بَدَا اللهِ عَزَّ وَجَلَّ أَنْ يَبْتَلِيَهُمْ فَبَعَثَ إِلَيْهِمْ مَلَكًا، فَأَتَى الأَبْرَصَ فَقَالَ: أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: لَوْنٌ حَسَنٌ وَجِلْدٌ حَسَنٌ، قَدْ قَذِرَنِي النَّاسُ. قَالَ: فَمَسَحَهُ فَذَهَبَ عَنْهُ، فَأُعْطِيَ لَوْنًا حَسَنًا وَجِلْدًا حَسَنًا. فَقَالَ : أَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: الإِبِلُ - أَوْ قَالَ : الْبَقَرُ - هُوَ شَكَّ فِي ذَلِكَ : إِنَّ الأَبْرَصَ وَالأَقْرَعَ قَالَ أَحَدُهُمَا : الإِبِلُ، وَقَالَ الآخَرُ: الْبَقَرُ: فَأُعْطِيَ نَاقَةً عُشَرَاءَ، وَأَتَى الأَقْرَعَ فَقَالَ : أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ : شَعَرٌ حَسَنٌ وَيَذْهَبُ عَنِّي هَذَا، قَدْ قَذِرَنِي النَّاسُ. قَالَ فَمَسَحَهُ فَذَهَبَ، وَأُعْطِيَ شَعَرًا حَسَنًا. قَالَ: فَأَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: الْبَقَرُ. قَالَ: فَأَعْطَاهُ بَقَرَةً حَامِلاً، وَقَالَ يُبَارَكُ لَكَ فِيهَا. وَأَتَى الأَعْمَى فَقَالَ: أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: يَرُدُّ اللهُ إِلَيَّ بَصَرِي فَأُبْصِرُ بِهِ النَّاسَ. قَالَ : فَمَسَحَهُ،

तरह का माल तुम पसन्द करोगे? उसने कहा कि बकरियाँ! फ़रिश्ते ने उसे हामला बकरी दे दी। फिर तीनों जानवरों के बच्चे पैदा हुए, यहाँ तक कि कोढ़ी के ऊँटों से उसकी वादी भर गई, गंजे की गाय बैल से उसकी वादी भर गई और अंधे की बकरियों से उसकी वादी भर गई। फिर दोबारा फ़रिश्ता अपनी उसी पहली शक्ल में कोढ़ी के पास आया और कहा कि मैं एक निहायत मिस्कीन व फ़क़ीर आदमी हूँ, सफ़र का तमाम सामान व अस्बाब ख़त्म हो चुका है और अल्लाह तआ़ला के सिवा और किसी से ह़ाजत पूरी होने की उम्मीद नहीं, लेकिन मैं तुमसे उसी ज़ात का वास्ता देकर जिसने तुम्हें अच्छा रंग और अच्छा चमड़ा और अच्छा माल अ़ता किया, एक ऊँट का सवाल करता हूँ जिससे सफ़र को पूरा कर सकूँ। उसने फ़रिश्ते से कहा कि मेरे ज़िम्मे हुक़ूक़ और बहुत से हैं। फ़रिश्ते ने कहा, ग़ालिबन मैं तुम्हें पहचानता हूँ, क्या तुम्हें कोढ़ की बीमारी नहीं थी जिसकी वजह से लोग तुमसे घिन खाते थे। तुम एक फ़क़ीर और क़ल्लाश थे। फिर तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने ये चीज़ें अ़ता कीं? उसने कहा कि ये सारी दौलत तो मेरे बाप दादा से चली आ रही है। फ़रिश्ते ने कहा कि अगर तुम झूठे हो तो अल्लाह तुम्हें अपनी पहली ह़ालत पर लौटा दे। फिर फ़रिश्ता गंजे के पास अपनी उसी पहली सूरत में आया और उससे भी वही दरख़्वास्त की और उसने भी वही कोढ़ी वाला जवाब दिया। फ़रिश्ते ने कहा कि अगर तुम झूठे हो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें अपनी पहली ह़ालत पर लौटा दे, उसके बाद फ़रिश्ता अंधे के पास आया, अपनी उसी पहली सूरत में और कहा कि मैं एक मिस्कीन आदमी हूँ, सफ़र के तमाम सामान ख़त्म हो चुके हैं और सिवा अल्लाह तआ़ला के किसी से ह़ाजत पूरी होने की तवक़्क़ुअ नहीं। मैं तुमसे उस ज़ात का वास्ता देकर जिसने तुम्हें तुम्हारी बीनाई वापस दी है, एक बकरी मांगता हूँ जिससे अपने सफ़र की ज़रूरियात पूरी कर सकूँ। अंधे ने जवाब दिया कि वाक़ई मैं अंधा था और अल्लाह तआ़ला ने मुझे अपने फ़ज़्ल से बीनाई अ़ता की और वाक़ई मैं फ़क़ीर और मोहताज था और अल्लाह तआ़ला ने मुझे मालदार बनाया। तुम जितनी बकरियाँ चाहो ले सकते हो, अल्लाह की क़सम! जब तुमने अल्लाह का वास्ता दिया है तो जितना भी तुम्हारी जी चाहे ले जाओ, मैं तुम्हें हर्गिज़ नहीं रोक

رَدَّ اللهُ إِلَيْهِ بَصَرَهُ. قَالَ : فَأَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ : الْغَنَمُ، فَأَعْطَاهُ شَاةً وَالِدًا، فَأُنْتِجَ هَذَانِ وَوَلَّدَ هَذَا، فَكَانَ لِهَذَا وَادٍ مِنْ إِبِلٍ، وَلِهَذَا وَادٍ مِنْ بَقَرٍ، وَلِهَذَا وَادٍ مِنَ الْغَنَمِ. ثُمَّ إِنَّهُ أَتَى الأَبْرَصَ فِي صُورَتِهِ وَهَيْئَتِهِ. فَقَالَ: رَجُلٌ مِسْكِينٌ تَقَطَّعَتْ بِهِ الْحِبَالُ فِي سَفَرِهِ فَلاَ بَلاَغَ الْيَوْمَ إِلاَّ بِاللهِ ثُمَّ بِكَ، أَسْأَلُكَ - بِالَّذِي أَعْطَاكَ اللَّوْنَ الْحَسَنَ وَالْجِلْدَ وَالْحَسَنَ وَالْمَالَ - بَعِيرًا أَتَبَلَّغُ عَلَيْهِ فِي سَفَرِيْ. فَقَالَ لَهُ: إِنَّ الْحُقُوقَ كَثِيرَةٌ. فَقَالَ لَهُ : كَأَنِّي أَعْرِفُكَ، أَلَمْ تَكُنْ أَبْرَصَ يَقْذَرُكَ النَّاسُ، فَقِيرًا فَأَعْطَاكَ اللهُ؟ فَقَالَ: لَقَدْ وَرِثْتُ لِكَابِرٍ عَنْ كَابِرٍ. فَقَالَ: إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ اللهُ إِلَى مَا كُنْتَ. وَأَتَى الأَقْرَعَ فِي صُورَتِهِ وَهَيْئَتِهِ، فَقَالَ لَهُ مِثْلَ مَا قَالَ لِهَذَا، فَرَدَّ عَلَيْهِ مِثْلَ مَا رَدَّ عَلَيْهِ هَذَا، فَقَالَ: إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ اللهُ إِلَى مَا كُنْتَ. وَأَتَى الأَعْمَى فِي صُورَتِهِ فَقَالَ : رَجُلٌ مِسْكِينٌ وَابْنُ سَبِيلٍ وَتَقَطَّعَتْ بِهِ الْحِبَالُ فِي سَفَرِهِ، فَلاَ بَلاَغَ الْيَوْمَ إِلاَّ بِاللهِ ثُمَّ بِكَ، أَسْأَلُكَ بِالَّذِي رَدَّ عَلَيْكَ بَصَرَكَ شَاةً أَتَبَلَّغُ بِهَا فِي سَفَرِيْ. فَقَالَ : قَدْ كُنْتُ أَعْمَى فَرَدَّ اللهُ بَصَرِي، وَفَقِيرًا فَقَدْ أَغْنَانِي، فَخُذْ مَا شِئْتَ، فَوَاللهِ لاَ أَجْهَدُكَ الْيَوْمَ بِشَيْءٍ أَخَذْتَهُ لِلهِ. فَقَالَ : أَمْسِكْ مَالَكَ، فَإِنَّمَا ابْتُلِيتُمْ، فَقَدْ

رَضِيَ اللهُ عَنْكَ، وَسَخِطَ عَلَى صَاحِبَيْكَ)). [طرفه في : ٦٦٥٣].

सकता। फ़रिश्ते ने कहा कि तुम अपना माल अपने पास रखो, ये तो सिर्फ़ इम्तिहान था और अल्लाह तआ़ला तुमसे राज़ी और ख़ुश है और तुम्हारे दोनों साथियों से नाराज़ है। (दीगर मक़ाम : 6653)

तश्रीह : आयते कुर्आनी, **लइन शकरतुम ल अज़ीदन्नकुम** (इब्राहीम : 7) अगर मेरा शुक्र करोगे तो नेअ़मत ज़्यादा दूँगा और अगर नाशुक्री करोगे तो मेरा अ़ज़ाब भी सख़्त है, इस आयत की तफ़्सीर इस ह़दीष़ से बख़ूबी वाज़ेह़ है। रिवायत के आख़िर में नाबीना के अल्फ़ाज़ ला अज्हदुक मन्कूल हैं या'नी तू कितनी भी बकरियाँ ले ले मैं तुझसे वापस नहीं मांगूगा कुछ नुस्ख़ों में ला अह़मदुक है। फिर तर्जुमा यूँ होगा कि मैं तेरी ता'रीफ़ उस वक़्त तक नहीं करूँगा जब तक जो तुझे दरकार है वो अल्लाह के नाम पर न ले लेगा। इंसान की फ़ितरत है वो बहुत जल्द अपनी पहली ह़ालत को भूल जाता है, ख़ास़ तौर पर माल व दौलत वाले जो बेशतर ग़रीब होते हैं फिर वो दौलतमन्द बन जाते हैं और भूल जाते हैं कि वो पहले क्या थे। ऐसे लोगों को अल्लाह से डरना चाहिये जो अल्लाह दौलत देने पर क़ादिर है, वो वापस लेने पर भी इसी त़रह़ क़ादिर है और ये रोज़ाना होता रहता है देखने को नज़रे बस़ीरत दरकार है।

बाब 52 : अस्ह़ाबे कहफ़ का बयान

٥٢- بَابٌ ﴿أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ﴾ ﴿الْكَهْفِ﴾: الْفَتْحُ فِي الْجَبَلِ. ﴿وَالرَّقِيمِ﴾: الْكِتَابُ. ﴿مَرْقُومٌ﴾ : مَكْتُوبٌ، مِنَ الرَّقْمِ. ﴿رَبَطْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ﴾: أَلْهَمْنَاهُمْ صَبْرًا. ﴿شَطَطًا﴾ : إِفْرَاطًا. ﴿الْوَصِيدُ﴾: الْفِنَاءُ، وَجَمْعُهُ وَصَائِدُ وَوُصُدٌ، وَيُقَالُ : الْوَصِيدُ الْبَابُ. ﴿مُؤْصَدَةٌ﴾ : مُطْبَقَةٌ، آصَدَ الْبَابَ وَأَوْصَدَ. ﴿بَعَثْنَاهُمْ﴾: أَحْيَيْنَاهُمْ. ﴿أَزْكَى﴾ أَكْثَرُ رَيْعًا. ﴿فَضَرَبَ اللهُ عَلَى آذَانِهِمْ﴾: فَنَامُوا. ﴿رَجْمًا بِالْغَيْبِ﴾ : لَمْ يَسْتَبِنْ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿تَقْرِضُهُمْ﴾: تَتْرُكُهُمْ.

सूरह कहफ़ में अल्लाह ने फ़र्माया है, ऐ पैग़म्बर! क्या तू समझा कि कहफ़ और रक़ीम मेरी क़ुदरत की निशानियों में अजीब थे, कहफ़ पहाड़ में जो दर्रा हो, रक़ीम के मा'नी लिखी हुई किताब, मरक़ूम के मा'नी भी लिखी हुई रबत़ना अ़ला क़ुलूबिहिम हमने उनके दिलों में स़ब्र डाला, शत़त़ा ज़ुल्म और ज़्यादती, वस़ीद के मा'नी लगन और स़हन, उसकी जमा वस़ाइद और वस़द आती है, वस़ीद दरवाज़े को भी कहते हैं (दहलीज़) को मूसदतुन जो सूरह हुमज़ा में है या'नी बन्द दरवाज़ा लगी हुई अ़रब लोग कहते हैं। स़दल बाब और अव स़द्दल बाब या'नी दरवाज़ा बन्द किया, बअ़ष़ना हमने उनको ज़िन्दा कर दिया। अज़्का या'नी ज़्यादा सोने वाला या पाकीज़ा, ख़ुश-मज़ा या सुस्त। फ़ज़रबल्लाहु अ़ला अज़ानिहिम या'नी अल्लाह तआ़ला ने उनको सुला दिया, रज्मम् बिल ग़ैबि या'नी बे दलील (मह़ज़ गुमान अटकल पच्चू) मुजाहिद ने कहा तक़्रिज़ुहुम या'नी छोड़ देता है, कतरा जाता है। सूरह कहफ़ में उन जवानों का तफ़्स़ीली ज़िक्र मौजूद है।

तश्रीह : उसका मुफ़स़्स़ल बयान किताबुत्तफ़्सीर में आएगा। इंशाअल्लाह! इमाम बुख़ारी (रह.) ने अस्ह़ाबे कहफ़ के बाब में कोई ह़दीष़ बयान नही की शायद उनको अपनी शर्त पर कोई ह़दीष़ नहीं मिली, अ़ब्द बिन हुमैद ने उनका क़िस़्स़ा तूल के साथ ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है, मगर मौक़ूफ़ है। रक़ीम वो तख़्ता जिस पर अस्ह़ाबे कहफ़ के नाम लिखे हुए थे। (अल्ह़म्दुलिल्लाह कि पारा नम्बर 13 भी ख़ैरियत के साथ ख़त्म हुआ)

अ़र्ज़े-मुतर्जिम

(अनुवादक की गुज़ारिशात)

क़ारेईने किराम! अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के फ़ज़्ल व एहसानो-करम से स़ह़ीह़ बुख़ारी (शरह मुहम्मद दाऊद राज़ रह.) की तीसरी जिल्द आपके हाथों में सौंपी जा रही है। पहली व दूसरी जिल्द से यक़ीनन आपने फ़ैज़ ह़ासिल किया होगा। इस तीसरी जिल्द में आप बहुत सारे ऐसे अनछुए मसाइल के बारे में जानकारी ह़ासिल करेंगे, जिनकी हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमियत है। पहली जिल्द के पेज नं. 23-24 पर इसी कॉलम में काफ़ी-कुछ वज़ाहत की जा चुकी है चन्द अहम व ज़रूरी बातें इसलिये दोहराई जा रही है ताकि शुरूआती दो जिल्द पढ़ चुके क़ारेईन व मुअ़तरिज़ीन के सवालात के तसल्लीबख़्श जवाब मिल सके।

01. **बेहद सावधानी के साथ इसकी तस़्ह़ीह़ व नज़रे-स़ानी की गई है ताकि ग़लती की कम से कम गुंजाइश रहे, इसके लिये अ़रबी के माहिर आ़लिम मौलाना जमशेद आ़लम सलफ़ी की ख़िदमात बेहद सराहनीय रही है। कुछ हज़रात ने अ़रबी हर्फ़ (ث) के लिये हिन्दी अक्षर 'स़' इस्ते'माल पर ए'तिराज़ जताया है, स़ह़ीह़ बुख़ारी की आठों जिल्दों के कवर पेज पर ह़दीस़ 'इन्नमल अअ़मालु बिन्निय्यात' छपी है जिसका मा'नी है, 'अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है।' हमारी निय्यत यह है कि अ़रबी-उर्दू का हर हर्फ़ अलग नज़र आए। रहा सवाल उच्चारण का तो उसके लिये हमारी गुज़ारिश है कि नीचे लिखी इबारत का ग़ौर से मुतालआ़ करें।**
02. **इस किताब की हिन्दी को उर्दू के मुवाफ़िक़ बनाने की भरपूर कोशिश की गई है इसके लिये उर्दू के कुछ ख़ास़ हर्फ़ों को अलग तरह से लिखा गया ह** मिस़ाल के तौर पर :- (ا) के लिये अ, (ع) के लिये अ़; (ث) के लिये स़, (س) के लिये **स**, (ش) के लिये श, (ص) के लिये **स़**; (ح) के लिये **ह़**, (ه) के लिये ह, (خ) के लिये **ख़**, (غ) के लिये **ग़**, (ف) के लिये **फ़**, (ک) के लिये **क**, (ق) के लिये **क़** लिखा गया है। (ج) के लिये **ज** का इस्तेमाल किया गया है लेकिन ज़ाल (ذ) ज़े (ز) ज़ाद (ض) ज़ोय (ظ) के लिये मजबूरी में एक ही हुरूफ़ **ज़** का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इन हर्फ़ों के लिये स़ह़ीह़ विकल्प हमें नज़र नहीं आया। आपको यह बता देना मुनासिब होगा कि उर्दू ज़बान के कुछ हुरूफ़ ऐसे हैं कि अगर उनकी जगह कोई दूसरा हुरूफ़ लिख दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे एक लफ़्ज़ उर्दू में पाँच तरह से लिखा जाता है; **असीर,** अलिफ़ (ا)-सीन (س) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है **क़ैदी**। **अस़ीर,** अलिफ़ (ا) स़े (ث) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है **ख़ालिस़**। **अ़सीर** अ़ेन (ع) सीन (س) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **मुश्किल**। **अ़स़ीर** अ़ेन (ع) स़ाद (ص) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **अंगूर की चाशनी (शीरा)**। **अ़स़ीर** अ़ेन (ع) स़े (ث) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **धूल**। कहने का मतलब ये है कि इस किताब में स़ह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) के लिये हद-दर्जा कोशिश की गई है।
03. **मैं एक बार फिर ये दोहराना मुनासिब समझता हूँ कि यह किताब अ़ल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) की शरह का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें न कुछ घटाया गया है, न बढ़ाया गया है और न ही अनुवादक द्वारा किसी मैटर की एडीटिंग की गई है। लिहाज़ा हर तशरीह (व्याख्या) से अनुवादक सहमत हो, ये ज़रूरी नहीं है।**

इस किताब की कम्पोज़िंग, तस़्ह़ीह़ (त्रुटि संशोधन) और कवर डिज़ाइनिंग में मेरे जिन साथियों की मेहनत जुड़ी हैं, उन सब पर अल्लाह की रहमतें, बरकतें व सलामती नाज़िल हों। **ऐ अल्लाह! मेरे वालिद-वालदा को अपने अ़र्श के साये तले, अपनी रहमत की पनाह नस़ीब फ़र्मा जिनकी दुआ़ओं के बदले तूने मुझे दीने-इस्लाम का फ़हम अ़ता किया। ऐ अल्लाह! हमारी ख़ताओं और कोताहियों से दरगुज़र फ़र्माते हुए तू हमसे राज़ी हो जा और हमें रोज़े आख़िरत वो नेअ़मतें अ़ता फ़र्मा, जिनका तूने अपने बन्दों से वा'दा फ़र्माया है।** आमीन! तक़ब्बल या रब्बल आ़लमीन!!

व स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला नबिय्यिना व अ़ला आलिही व अस़्ह़ाबिही व अत्बाइहि व बारिक व सल्लिम.

सलीम ख़िलजी.

मुनाजात (दुआएं)

हकीम मुहम्मद सिद्दीक़ ग़ौरी

रब्बे-आज़म अर्शे-आज़म पर है तेरा इस्तवा,
तू है आली, तू है आला, तू ही है रब्बुलउला।

हम्द, पाकी किबरियाई मेरे सुब्हानो-हमीद
सिर्फ़ है तेरे लिये जितनी तू चाहे किबरिया।

लामकां, बेख़ानमां, तू है नही हरगिज़ रफ़ीअ
अर्श पर है तू यक़ीनन, है पता मुझको तेरा।

अर्श पर होकर भी तू मेरी रगे-जां से क़रीब
इतना मेरे पास है मै कह नही सकता ज़रा।

अर्श पर है ज़ात तेरी, इल्मो-कुदरत से क़रीब
तू हमारे पास है ऐ हाज़िरो-नाज़िर ख़ुदा।

अर्श पर है तू यक़ीनन और वह 'मकतूब' भी
'तेरी रहमत है फ़जू तेरे ग़ज़ब से ऐ ख़ुदा।

अरबो खरबो रहमते हो, बरकते लाखो सलाम,
उन पर उनकी आल पर जो है मुहम्मद मुस्तफ़ा।

क़ाबिले-तारीफ़ तू है मेरे रब्बुल आलमीन
तू है रहमानो-रहीमो-मालिके-यौमे-जज़ा।।

हम तुझी को पूजते है तू ही इक माबूद है
हम मदद चाहते नही, हरगिज़ कभी तेरे सिवा।

तू है ज़ाहिर, तू है बातिन, अव्वलो-आख़िर है तू
फ़क़्र भी तू दूर कर दे क़र्ज़ भी या रब मेरा।

मै ज़मीनो-आसमां पर डालता हूं जब नज़र
कोई भी पाता नही हू मै 'ख़ुदा' तेरे सिवा।

चाँद-तारे दे रहे है अपने सानेअ की ख़बर
तेरी कुदरत से अयां है बिलयक़ीन होना तेरा।

मै तुझे कुछ जानता हू, तेरे कुछ औसाफ़ भी
तू क़यामत मे भी होगा जाना-पहचाना मेरा।

तू मेरा ज़ाकिर रहे मै भी रहूं ज़ाकिर तेरा
हो ज़मीं पर ज़िक्र तेरा आसमां मे हो मेरा।

क़ल्बे-मुज़्तर को सुकूं मिल जाए तेरी याद से
और तेरे ज़िक्र से हो मुत्मइन ये दिल मेरा।

रोज़ो-शब, सुब्ह मसा, आठो पहर, चौसठ घड़ी
तू ही तू दिल मे रहे कोई न हो तेरे सिवा।

मै हमेशा याद रक्खूं अपनी मजलिस मे तुझे
तू भी मुझको याद रक्खे अपनी मजलिस मे सदा।

बन्द तेरी याद से मेरी ज़ुबां या रब न हो
मरते दम तक, मरते दम भी ज़िक्र हो लब पर तेरा।

ज़िन्दगी दुश्वार हो तेरी मुहब्बत के बग़ैर
माही-ए-बेआब हो बेज़िक्र ये बन्दा तेरा।

मै दुआ के वक़्त तुझ से इतना हो जाऊं क़रीब
गोया तहतुलअर्श मे हूं तेरे क़दमो मे पड़ा।

हालते सद-यास मे भी ऐ ख़ुदा तेरी क़सम
जी न हारूं और मै करता रहूं तुझसे दुआ।

बह रही हो मेरी आँखे मेरी गर्दन हो झुकी
नाक रगड़े, पस्त होकर, तुझसे मै मांगूं दुआ।

तेरे आगे आजिज़ाना, दस्त बस्ता, सर नगूं
मै रहूं या रब खड़ा भी तेरे क़दमो मे पड़ा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो तेरी नेअमत की क़सम
जैसे कोई तीर हो अपने निशाने पे लगा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो जिस से टल जाएं पहाड़
ग़ार वालो से भी बढ़कर तेरी रहमत से ख़ुदा।

हर मेरी तौबा हो ऐसी जो अगर तक़्सीम हो
तेरे बन्दो पर तो बख़्शे जाएं लाखो बे-सज़ा।

नेकियो मे तू बदल दे और उनको बख़्श दे
उम्र भर के अगले पिछले सब गुनाहो को ख़ुदा।

हज मेरे मबरूर हो सब कोशिशे मशकूर हो
दे तिजारत तू भी वह जिसमे न हो घाटा ज़रा।

तेरी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हो मेरी कुल ज़िन्दगी
खाना पीना, चलना फिरना, बैठना उठना मेरा।

जो क़सम खाई या खाऊं तुझ पे करके ऐतमाद
मअ फ़लाहे दोजहां के साथ पूरी हो ख़ुदा।

मै न छोडूं, मै न छोडूं संगे-दर तेरा कभी
आ गया हूं, आ पड़ा हूं, तेरे दर पर ऐ ख़ुदा।

हर नज़ाई कोई शय हो मै तेरी तौफ़ीक़ से
सिर्फ़ चाहूं तुझसे या तेरे नबी से फ़ैसला।

उम्र भर मेरी नज़र इस पर रहे हो जुस्तजू
तूने या रब क्या कहा? मुस्तफ़ा ने क्या कहा?

आख़िरत मे अपनी या रब कितनी ही मख़्लूक़ पर
मुझ को मेरी आल को तू फ़ौक़ियत करना अता।

उम्र मेरी आख़री है दिन है मरने के क़रीब
मै रहूं गिरयां के तू ख़न्दां मिले मुझसे ख़ुदा।

फ़ज़्ल फ़रमा मरते दम तक मै रहूं इस हाल मे
तुझ से हो उम्मीद बेहद डर भी हो मुझको तेरा।

मै रहूं बेचैन बेहद तुझसे मिलने के लिये
जान जब निकले तो तड़पे कब वह हो तन से जुदा।

मौत की ताख़ीर भी हो मौत ही मेरे लिए
हो दमे-आख़िर मुझे इतना तेरा शौक़े लिक़ा।

बख़्श दे तू, रहम कर, आला रफ़ीक़ो से मिलूं
हो मुझे उस वक़्त बेहद शौक़ मिलने का तेरा।

'क़ौल साबित' पर रहूं साबित ख़ुदाया हो नसीब
ला इलाहा इल्ला अल्लाह पे मरना मेरा।

आख़री हिचकी मुझे दे तेरी रहमत की ख़बर
आँख जब बन्द हो तो देखूं तेरी जन्नत की फ़िज़ा।

तेरी रहमत की तरफ़ हो मेरा दुनिया से ख़ुरूज
जांकनी के वक़्त पाऊं मुज़दा हाए जांफ़िज़ा।

क्या मेरा मस्कन ज़मीनो-आसमां तक रो पड़े
मेरे मरने पर ख़ुदाया अर्श हिल जाए तेरा।

'रब्बे राज़ी की तरफ़ चल हो के राज़ी तू निकल'
रूह से मेरी फ़रिश्ते यह कहे वक़्ते क़ज़ा।

तेरी रहमत के फ़रिश्ते मुझको लेने के लिए
आएं वह, लेकर चढ़े, मुझको जहां है तू ख़ुदा।

रूह का जब आसमां मे हो फ़रिश्तो पर वरूद
हो यही उनकी सदाएं 'मरहबा सद मरहबा।'

'क़द्दे मुनी, क़द्दे मुनी ले चलो जल्दी चलो'
जब जनाज़ा ले चले कहता रहे बन्दा तेरा।

तू मुसल्ली हो मलाइक भी तेरे हो बिलख़ुसूस
मुझ ग़रीबो-बेनवा का जब जनाज़ा हो पड़ा।

हो मेरा मस्कन वहां, तुझ को जहां भी हो पसन्द
जो ज़मी हो तुझको पियारी वह बने मदफ़न मेरा।

कर चुके जब दफ़्न मुझको आए जब मुन्कर नकीर
'रब्बे सब्बित रब्बे सब्बितनी' हो लब पर ऐ ख़ुदा।

क़ब्र हो मुश्ताक़ मेरी उसका बेहतर हो सुलूक
पाऊं मै आग़ोश मादर की तरह उसको ख़ुदा।

ज़िन्दगी के इस सफ़र मे तू मेरा साहिब रहे
कुल मेरे पसमान्दगां मे तू ख़लीफ़ा हो मेरा।

तू सफ़र मे भी 'हज़र मे' क़ब्र मे भी हश्र मे
मेहरबां मुझ पर रहे बेहद निगहबां भी मेरा।

जांकनी हो, क़ब्र हो या हश्र हो या पुलसिरात
सहल तेरे फ़ज़्ल से हो मरहला इक इक मेरा।

'रब्बे सल्लिम रब्बे सल्लिम हसबुना नेअमुलवकील'
हश्र के कुल मरहलो मे हो यही कलमा मेरा।

रोज़े महशर हो तेरे रूए मुबारक पर नज़र
जब तेरी पिण्डली खुले सज्दे मे हो बन्दा तेरा।

अर्श का साया मिले सातो तरह से हश्र मे
मुझको, मेरी आल को जो हो क़यामत तक ख़ुदा।

गो पलक झपके न झपके मुझसे तै हो पुलसिरात
इस कठिन मंज़िल मे मेरी मेरे मौला काम आ।

'जल्द इसको पार कर यह सर्द कर देगा मुझे'
जब जहन्नुम पर से गुज़रूं वह कहे तुझको ख़ुदा।

आएगा बन्दा तेरा इक दिन कफ़न पहने हुए
तेरे आगे, बख़्श देना आफ़ियत करना अता।

रास्ता सीधा दिखा, इनआम कर हम पर मदाम
उम्मते-अहमद मे मुझको ख़ास दर्जा कर अता।

उम्र भर की कुल ख़ताएं उनकी ग़ाफ़िर बख़्श दे
तू मेरे मां-बाप की कर मग़्फ़िरत बेइन्तिहा।